



दैवत-संहिता ।

(५)

अश्विनौ-देवता ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल.

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तोत्रिके बंबई निवासी विश्वस्तोत्रि
संपूर्ण ' दैवत-संहिता ' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वाध्याय मण्डल, पारडी

संवत् २०१४, शक १८८०, सन् १९५८

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवळेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य २) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवळेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

“ अश्विनौ ” देवता का स्वरूप ।

वेदों में “अश्विनौ” देवता है। इस देवताका मन्त्र-संग्रह इस भूमिका के साथ पाठकों के सामने रखा जाता है। इस संग्रह में ६८९ मन्त्र हैं। इनमें ऋग्वेद के ६३३, वा० यजुर्वेद के ७, सामका १, अथर्व के ११ मंत्र हैं। सब मिलकर ६५२ मंत्र हुए। शेष ३७ मंत्र अश्विनद्विचारी देवतागण के हैं। ये सब मिलकर ६८९ होते हैं। अन्य पुनरुक्त मंत्रोंकी गणना यहां की नहीं है। इन देवतामंत्रों के ऋषि ये हैं—

१ कक्षीवान् दैर्घतमसः	८३
२ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	५६
३ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३९
४ ब्रह्मातिथिः काण्वः	३७
५ घोषा काक्षीवती	२८
६ प्रस्कण्वः काण्वः	२५
७ कुत्स आंगिरसः	२५
८ श्यावाश्व आत्रेयः	२४
९ अथर्व	२४
१० सध्वंसः काण्वः	२३
११ शशकर्णः काण्वः	२१
१२ प्रजापतिः [यजुः]	२१
१३ पौर आत्रेयः	२०
१४ विमना वैयश्वः	१९
१५ सोभरिः काण्वः	१८
१६ गोपवन आत्रेयः	१८
१७ पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ	१४
१८ हिरण्यस्तूप आंगिरसः	१२
१९ दीर्घतमा औचध्यः	१२
२० गृत्समदः शौनकः	१२
२१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	११
२२ भूतांशः काश्यपः	११
२३ औमोऽत्रिः	११
२४ विश्वामित्रो गाथिनः	९
२५ वामदेवो गौतमः	९

२६ अवस्युरात्रेयः	९
२७ ससवधिरात्रेयः	९
२८ कृष्ण आंगिरसः	९
२९ प्रगाथः काण्वः	६
३० कृष्णो घुम्नीको वासिष्ठः	६
३१ अत्रिः सांख्यः	६
३२ मेधातिथिः काण्वः	५
३३ कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिः	५
३४ जगदग्निर्भागवः	५
३५ मेध्यः काण्वः	४
३६ मधुच्छेदा वैश्वामित्रः	३
३७ शुनःशेष आजीगर्तिः	३
३८ गौतमो राहुगणः	३
३९ परुच्छेपो देवोदासिः	३
४० नाभाकः काण्वः	३
४१ विमद ऐन्द्रः	३
४२ विश्वामित्रः	३
४३ सुहस्त्यो घौषेयः	२
४४ सुकीर्तिः काक्षीवतः	२
४५ हरिम्बिठिः काण्वः	१
४६ त्वष्टा प्राजापत्यः	१
४७ अश्विनौ वैवस्वतौ	१
४८ ब्रह्मा	१

इस तरह मन्त्रसंख्या ऋषियोंके द्वारा देखी मिलती है। अब अश्विनी देवता के विषय में ब्राह्मणग्रंथों में जो निर्वचन मिलता है, वह यहां देते हैं—

अश्विनौ देवता के विषय में ब्राह्मणवचन

अश्विनौ देवता के विषयमें ब्राह्मण-ग्रंथोंमें निम्नलिखित निर्वचन मिलते हैं, जो इस देवता-स्वरूप के बताने में सहायक हो सकते हैं—

इमे द्व वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षं अश्विनौ, इमे हीदं सर्वं आशुवतां, पुष्करस्त्रजाविति अग्निरेवास्यै [पृथिव्यै]

पुष्करं आदित्योऽस्यै [दिवे] । [शं. ब्रा. ४।१।५।१६]
श्रोत्रे अश्विनौ । [शं. ब्रा. १२।१।१।१३]

नासिके अश्विनौ । [शं. ब्रा. १२।१।१।१४]

तत्रो ह वा इमौ पुरुषाविवाक्षयोः । एतावेवाश्विनौ ।

[शं. ब्रा. १२।१।१।१२]

अश्विनावध्वर्युः । [ऐ. ब्रा. १।१८; शं. ब्रा. १।१।२।१७;]

३।१।४।३; तै. ब्रा. ३।२।२।१; गो. ब्रा. ४०. २।६]

अश्विनौ वै देवानां भिषजौ ।

[ऐ. ब्रा. १।१८; कौ. ब्रा. १८।१]

मुख्यौ वा अश्विनौ [यजुस्] । [शं. ब्रा. ४।१।५।१९]

इयेताविव हि अश्विनौ । [शं. ब्रा. ५।५।४।१]

स योनी वा अश्विनौ । [शं. ब्रा. ५।३।१।८]

अश्विनाविव रूपेण [भूयासं] । [मं. ब्रा. २।४।१४]

आश्विनं द्विकपालं पुरोडाशं निर्वपति ।

[शं. ब्रा. ५।३।१।८]

आश्विनो द्विकपालः [पुरोडाशः] । तां. ब्रा. २।१।१०।२३]

वसन्तग्रीष्मावेवाभ्यां अश्विनाऽऽभ्यां [अवरुन्धे] ।

[शं. ब्रा. १२।८।२।३४]

अश्विभ्यां आनाः । [तै. ब्रा. १।५।१।१३]

अथ यदेनं [अग्निं] द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यामरणीभ्यां
मन्यन्ति, द्वौ वा अश्विनौ, तदस्याश्विनं रूपम् ।

[ऐ. ब्रा. ३।४]

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनोर्बाहुभ्याम् ।

[तै. ब्रा. २।१।५।२]

गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम् । [ऐ. ब्रा. ४।९]

तदश्विना उदजयतां रासमेन । [कौ. ब्रा. १८।१]

इममेव लोकमाश्विनेन [अवरुन्धे] ।

[शं. ब्रा. १२।८।२।३२]

अश्विनमम्बाह तदसुं लोकं [दिवं] आप्नोति ।

[कौ. ब्रा. १।१।२।१८।२]

(१) सब का भक्षण करते हैं, इसलिये द्यावापृथिवी ये दोनों लोक अश्विनौ हैं, (२) दोनों कान, (३) दोनों नाक, (४) दोनों आंख अश्विनौ हैं, (५) दोनों अध्वर्यु अश्विनौ हैं, (६) ये दोनों देवों के वैद्य हैं, (७) एक ही स्थानसे ये दोनों उत्पन्न हैं, (८) गर्दभ के रथ से अश्विनी देव आते हैं ।

उक्त वचनोंसे जो निर्वचन मिलते हैं, वे ये हैं । ' बहुत खानेवाले, बहुत व्यापनेवाले ' ये ' अश्व ' धातुके अर्थ हैं । ये ही यहां इन निर्वचनोंमें दीख रहे हैं । कान, नाक और आंख अपनी शक्तिसे विश्व को व्यापते हैं, आंख तो अपनी शक्ति से सब विश्व व्यापता है । इसलिये ये इंद्रिय अश्विनौ हैं । मनुष्यशरीरमें अश्विनौ के ये रूप हैं । वैद्य अपनी चिकित्सा से बीमारी को घेरता और उसका नाश करता है । अध्वर्यु यज्ञप्रक्रिया को व्यापते हैं । इस तरह इन निर्वचनों का तात्पर्य है । इन निर्वचनों को देखने के बाद अब निरुक्त के वचन देखिये—

अथातो द्युस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमागामिनौ भवतः । अश्विनौ यद् व्यश्नुवाते सर्वं, रसेनान्यो, ज्योतिषान्यः । अश्वैरश्विनावित्यौर्णवामः । तत् कावश्विनौ ? द्यावापृथिव्यावित्येके । अहोरात्रावित्येके । सूर्या-चन्द्रमसावित्येके । राजानौ पुण्यकृतावित्यैतिहासिकाः । तयोः काल ऊर्ध्वमधरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टममनु, तमोभागो हि मध्यमः ज्योतिर्भाग आदित्यः ॥ १ ॥

तयोः समानकालयोः समानकर्मणोः संस्तुतप्राययोरसं-स्त्वेनैषोऽद्धर्चो भवति-वासात्यो अन्य उच्यते, उषः पुत्रस्तवान्य इति ॥ २ ॥

इह चेह च जातौ संस्तूयते पापेनालिप्यमानतया तन्वा नामभिश्च स्वैः । जिष्णुर्वामन्यः सुमहतो बलस्येरयिता मध्यमः, दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊर्ध्व आदित्यः ॥ ३ ॥

प्रातर्युजा विबोधयाश्विनावेह गच्छताम् । [ऋ. १।२२।१]
प्रातर्योगिनौ विबोधयाश्विनाविहागच्छताम् ।

[निरुक्त अ. १३।१]

सृण्वेव जर्भरी तुर्फरीतु नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका ।

उदन्यजेव जेमना मदेरु ता मे जरायवजरं मरायु ॥

[ऋ. १०।१०६।६]

सृण्वेवेति द्विविधा सृणिर्भवति भर्ता च हन्ता च, तथा अश्विनौ चापि भर्तारौ, जर्भरी भर्तारावित्यर्थः, तुर्फरीतु हन्तारौ । नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका- नितोशस्यापर्यं नैतोशं, नैतोशेव तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ । उदन्यजेव जेमना मदेरु- उदन्यजेवेत्युदकजे इव रत्ने सामुद्रे चान्द्रमसे वा । जेमने जयमाने, जेमना मदेरु । ता मे जरायवजरं

मरायु, एतज्जरायुजं शरीरं शरदं अजीर्णम् ॥ ५ ॥

[निरुक्त. १३।५]

अब शुलोक की देवताओंकी व्याख्या करते हैं । इनमें अश्विदेव प्रथम आनेवाले होते हैं । हे सब व्यापते हैं, इनमें एक रस से व्यापता है और दूसरा प्रकाश से व्यापता है । और्णवाम ऋषि का मत है कि, अश्विदेवोंके पास बहुत घोड़े थे, घोड़े पास रखने के कारण उनका नाम अश्विनौ हुआ । कौन भला ये अश्विनौ हैं ? ‘द्यु और पृथिवी’ ऐसा कई मानते हैं, ‘दिन और रात्री’ ऐसा कई समझते हैं, ‘सूर्य और चन्द्र’ ऐसा कह्यों का मत है, ऐतिहासिक लोग मानते हैं कि, ये पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा हुए थे । इनका समय आधीरात व्यतीत होनेके पश्चात् का है, जब प्रकाश फटने लगता है, तब इनका उदय होता है । इस काल में जो अन्धकार का भाग है, वह मध्यम देवता है और जो ज्योति का भाग है, वह आदित्य का भाग है । इस तरह अन्धकार और प्रकाश इस समय इकट्ठे रहते हैं, ये ही अश्विनौ हैं ।

ये दोनों देव एक ही काल में आते हैं, एक ही कर्म करते हैं । इनका वर्णन ‘वसातिषु स्म०’ आदि मन्त्र में किया है । इनमें से एक रात्री का और दूसरा उषा का पुत्र कहलाता है । अथवा इनमें से एक बड़े बल का प्रेरक है और दूसरा शुलोक का पुत्र आदित्य है । ये प्रातःकाल में आनेवाले हैं, ऐसा [प्रातयुजा०] मन्त्र में कहा है ।

[सृण्येव०] जिस प्रकार दात्री पोषण करनेवाली और नाश करनेवाली अर्थात् दोनों प्रकार की होती है, वैसे ही अश्विनौ में से एक देव पोषक है और दूसरा नाशक है ।

इस तरह निरुक्त का अश्विनौ देवताओंके विषय में स्पष्टीकरण है । ब्राह्मणग्रन्थों के कथनों के अनुसार ही निरुक्तकारने अपना मत दिया है [१] द्यावा-पृथिवी, [२] सूर्य-चन्द्र, [३] अहो-रात्रि, [४] पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा, [५] अंधेरा-प्रकाश, तथा [६] पोषक-संहारक इतने स्वरूप बताने के कारण अश्विनौ के विषय में किसी तरह का निश्चय नहीं होता । इसलिये वेदके मंत्रों में अश्विनौ देवता के स्वरूप के विषय में अधिक खोज करना चाहिये । देखिये मंत्रों में क्या वर्णन आया है—

अश्विनौ देवता और ‘तीन’ संख्या

अश्विनौ देवता के वर्णन में ‘तीन’ [३] इस संख्या का महत्त्व विशेष दीखता है देखिये—

त्रिश्चिन्ना अद्या भवतं नवेदसा । [१२; ऋ. १।३।१]

आज तीन वार तुम हमारे बनो ।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे० । त्रयः स्कंभासः० ।

त्रिनक्तं यायस्त्रिर्वश्विना दिवा ॥ [१३; ऋ. १।३।२]

हे अश्विदेवो ! तुम्हारे रथ के तीन चक्र हैं, तीन खंभे लगाये हैं । तुम दिन में तथा रात्रीमें तीन तीन वार जाते हो ।

समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्ष-
तम् । त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यं
उषसश्च पिन्वतम् । [१४; ऋ. १।३।३]

आज एक ही दिन में तीन वार आओ और आज भी तीन वार आकर मधुसिंचन करो । आप दिनमें तथा रात्रीमें तीन तीन वार आकर पुष्टिकारक अन्न प्रदान करो ।

त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुवते जने त्रिःसुग्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम् ।
त्रिर्नान्यं वहतमश्विना युवं त्रिःपृक्षो अस्मे अक्षरेव
पिन्वतम् ॥ [१५; ऋ. १।३।४]

तुम हमारे पास तीन वार आओ, अपने भक्त के पास तीन वार जाओ, सुरक्षाके लिये तीन वार जाओ, तीन वार शिक्षा दो । हमारे पास तीन वार आनन्द लाओ तथा तीन वार अन्न प्रदान करो ।

त्रिर्नो रथिं वहतं अश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं
धियः । त्रिःसौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नखिष्ठं वां सूरैः
दुहिता रुहद्रथम् । [१६; ऋ. १।३।५]

‘हमारे पास तीन वार संपत्ति ले आओ, इस देवकर्म में तीन वार हमारी रक्षा करो, तीन वार हमें सौभाग्य देओ, तीन वार अन्न दो, तुम्हारे तीन स्थानवाले रथ पर सूर्य की पुत्री आरूढ़ हुई है ।

त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिःपार्थिवानि त्रिरुदत्त-
मज्जयः त्रिधातु शर्मं वहतं शुभस्पती । [१७; ऋ. १।३।६]

हमें तीन वार दिव्य, पार्थिव और जलोद्भव औषधियाँ देते रहो; तथा तीनगुणा सुख हमें देते रहो ।

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीम
शायतम् । त्रिचो नासत्या रथ्या परावत० ।

[१८; ऋ. १।३४।७]

तीन वार प्रति दिन यज्ञ करते हैं । पृथ्वीके चारों ओर तुम
तीन वार घूमते हो । रथसे तीन वार तुम दूर जाते हो ।

क त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।

[ऋ. १।३४।९]

तुम्हारा त्रिकोणवाला रथ तीन चक्रोंवाला और तीन
बैठनेके स्थानों से युक्त है ।

आ नो नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-
माश्विना । प्रायुस्सारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो
भवतं सचाभुवा । [२२; ऋ. १।३४।११]

हे अश्विदेवो ! ३३ देवों को साथ लेकर मधुर रस का
पान करने के लिये यहाँ आओ । हमारी आयु बढ़ाओ, रोग
दूर करो, शत्रु का नाश करो और हमारे सहायक बनो ।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता सुपेक्षासा रथेनायातमश्विना ।

[४०; ऋ. १।४७।२]

तीन बैठकोंवाले त्रिकोणी सुंदर रथसे हे अश्विदेवो ! आओ ।

अवाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो० त्रिबन्धुरो० ।

[१६५; ऋ. १।१५७।३]

तं युञ्जाथो० त्रिबन्धुरो० यस्त्रिचक्रः ।

[२०२; ऋ. १।१८३।१]

अश्विदेवों का रथ त्रिकोणी है, तीन चक्रों से युक्त है,
बैठने के तीन स्थान उस में हैं ।

इस तरह अश्विदेवों के वर्णन में 'तीन' संख्याका बड़ा
महत्त्व है ।

अश्विदेव वैद्य हैं

युवं ह रथो भिषजा भेषजेभिः । [१६८; ऋ. १।१५७।६]

'आप के पास औषधियाँ हैं, इसलिये आप वैद्य हैं ।'
इससे स्पष्ट हो जाता है कि, अश्विदेव बड़े वैद्य हैं, उनके
पास बहुत औषध हैं और वे रोगियों की चिकित्सा करते
हैं । इनके वैद्य होनेके विषय में हम कुछ और मन्त्र यहाँ
रखते हैं, पाठक इनका विशेष विचार करें ।

अश्विनौ देवताभौ का चिकित्सक होना सर्वत्र प्रसिद्ध है ।
इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है—

वृद्ध को तरुण बनाया

अश्विदेवों ने अति जीर्ण च्यवनऋषि को तरुण बनाया
था, यह कायाकल्प का प्रयोग अश्विदेवों ने किया था, यह
बात जैसी पुराणों में वैसी वेदमंत्रों में भी दीखती है—

जुजुरुषो नासत्योत वरिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्त्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम् ।

[८६; ऋ. १।११६।१०]

हे अश्विदेवो ! तुमने च्यवननामक एक वृद्ध के शरीर
से कवच जैसी खाल उतार कर [बुढ़ापा दूर किया और]
उस की आयु बढ़ायी और तरुण कन्याओंका पति बनाया ।

यहाँ कायाकल्प के प्रयोग का कुछ वर्णन है । [च्यव-
नात् जुजुरुषः वरिं द्रापिं इव प्रामुञ्चतं] वृद्ध च्यवन ऋषि
के शरीर से कवच के समान संपूर्ण बुढ़ापा दूर किया ।
शरीर से जैसा कोट या कुडता निकाल देते हैं, उस प्रकार
शरीर से खाल निकाल कर उसको तरुण बनाया । यहाँ
[द्रापिं प्रामुञ्चतं] चोगा उतारने का स्पष्ट उल्लेख है ।
सांप-नाग- भी अपने शरीर से चोगा उतारता है और
फिर तरुण बनता है । सब शरीर से चर्म ऊपर की पतली
स्वचा सांप के समान निकालने से शरीर पुनः तरुण हो
जाता है ऐसा यहाँ प्रतीत होता है । आर्यवैद्यक ग्रंथोंमें
जो कायाकल्प वर्णन किये हैं, उनमें भी कुटिरप्रवेशविधिसे
कायाकल्पों का सेवन करनेसे शरीर की चमड़ी उतर जाती
है और नवीन चमड़ी आती है, इस आशय के विधान हैं ।
इस विषय में सत्य क्या है, इसका विचार उत्तम वैद्यों को
करना उचित है ।

'च्यवनप्राश' अवलेह का वर्णन वैद्यक ग्रंथोंमें है, जो
च्यवन के पुनः तरुण बनने का स्मरण कराता है ।

इस मन्त्र में वृद्ध को 'दीर्घायु' करने का भी उल्लेख
है, तथा अनेक तरुणियों के साथ [कनीनां पतिं] विवाह
च्यवनने किया, ऐसा भी कहा है । वृद्ध को तरुण बनाया,
दीर्घायु बनाया और अनेक तरुणियों का पति भी बनाया
गया था । यह अश्विदेवोंने अपने किंचित्सा के बलसे
किया था । इस विषय में और मन्त्र देखिये—

युवं च्यवानं अश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः
शचीभिः ॥ [११४; ऋ. १।११७।१३]

पुनश्च्यवानं चक्रथुः युवानम् ॥ [ऋ. १।११।८६]

विभिश्च्यवानं अश्विना नियाथः ॥ [ऋ. ५।७५।५]

प्र च्यवानाञ्जुजुखो वविं अत्कं न मुञ्चथः ।

युवा यदी कृथः पुनरा कामं ऋष्वे वध्वः ॥

[२७२; ऋ. ५।७४।५]

उत त्यद्वां जुरते अश्विना भूच्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।

अधि यद्वर्ष इत ऊती अथः । [ऋ. ७।६८ । ६]

युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं । [ऋ. ७।७१।५]

युनं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।

[५८६; ऋ. १०।३९।४]

इन मन्त्रों का तात्पर्य यही है कि, अश्विदेव [च्यवानं नियाथः] च्यवन ऋषि के पास गये, उस वृद्ध ऋषि की चिकित्सा उन्होंने की, [वविं अत्कं न मुञ्चथः] चोगे के समान सब खाल उतार दी, जिस से उस ऋषि का बुढ़ापा दूर हुआ, [पुनः युवानं चक्रथुः] फिर से उसको जवान बनाया, वार्धक्य से उस की मुक्तता की, जैसा पुराना रथ [यथा रथं] कारीगर दुरुस्त करके नया बनाते हैं, वैसा ही च्यवन ऋषि को फिर से तरुण बनाया, यह च्यवन ऋषि अश्विदेवों को हवि अर्पण करता था। यह सब कार्य [शचीभिः] अपनी अद्भुत चिकित्सा की शक्तियों से अथवा औषधिविशेषों के प्रयोग से उन्होंने ने किया था। जो च्यवन चलने-फिरने में भी असमर्थ था, वही [चरथाय] अच्छी तरह धूमने लगा और [वध्वः कामं] क्रीसम्बन्धका कामविकार उस में जाग्रत किया। अर्थात् यह ठीक तरह तरुण हुआ। इसी तरह वन्दनके विषयमें भी कहा है—

युवं वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया रथं न दत्ता करणा

समिन्वथः । [ऋ. १।११९।७]

उद् वन्दनं ऐरयतं स्वईशे । [ऋ. १।११२।५]

प्र दीर्वेण वन्दनस्तार्यायुषा । [ऋ. १।११९।६]

हे अश्विदेवो ! तुमने वन्दन को निकृष्ट वृद्धावस्था को पहुँचे वन्दन को, उत्तम दृष्टि देकर, रथ दुरुस्त करने के समान तरुण अथवा दृष्टपुष्ट बनाया और [दीर्वेण आयुषा प्र तारि] दीर्घायु बनाया ।

रथ दुरुस्त करने के समान इसका शरीर तुमने नाना औषधों के प्रयोग से ठीक बनाया। प्रसूतिकर्म में अश्वि-देवों की प्रवीणता थी, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र

में उल्लेख है—

क्षेत्रादा विप्रं जनयः ।

[ऋ. १।११९।७]

क्षेत्र से [अर्थात् माता के गर्भाशय से] ब्राह्मणपुत्रको जन्म दिया। अर्थात् प्रसूतिकर्म की प्रवीणता से पुत्र को जन्म देकर माता की मुक्तता प्रसूति-वेदनाओं से की। इस मन्त्र में अश्विदेवों की प्रसूतिकर्म में प्रवीणता बतायी है।

घायल को दुरुस्त किया

त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तं उज्जीवसे ऐरयतं सुदानू ॥ [ऋ. १।११७।२४]

तीन स्थान पर कटे या जखमी हुए श्याव को पुनः जीवन देकर चलने-फिरने योग्य बना दिया।

तीन स्थान पर जिस के करीब-करीब टुकड़े हो चुके थे, ऐसे जखमी के टूटे भागों को पुनः जोड़ दिया और उस को अच्छी तरह चलने-फिरने योग्य बना दिया।

च्यवनऋषि की कथा शतपथब्राह्मण में निम्नलिखित प्रकार आ गयी है और उसमें अश्विदेवों का यही सम्बन्ध वर्णन किया गया है, वह कथा देखिये—

च्यवनो वा भागवः, च्यवनो वाङ्गिरसः, तदेव जीर्णिः कृत्यारूपो जहे ॥ १ ॥ शर्यातो ह वा इदं मानवो ग्रामेण चचार । स तदेव प्रतिवेशो निविवेशे तस्य कुमारः क्रीडन्त इमं जीर्णिं कृत्यारूपमनर्थं मन्यमाना लोष्टैर्विपिपिपुः ॥ २ ॥ स शर्यातेभ्यश्चुक्रोध । तेभ्योऽसंज्ञां चचार, पितैव पुत्रेण युयुधे, आता आत्रा ॥ ३ ॥ शर्यातो ह वा ईक्षां चक्रे । यत्किमकरं तस्मादिदमापदीति स गोपालांश्चाविपालांश्च संह्वयित्वा उवाच ॥ ४ ॥ स हो-वाच । को वो अद्येह किंचिद्वाक्षीदिति, ते होचुः, पुरुष एवायं जीर्णिः कृत्यारूपः शेते, तमनर्थं मन्यमानाः कुमारा लोष्टैर्ग्याक्षिपाक्षिति, स विदांचकार स वै च्यवन इति ॥ ५ ॥ स रथं युक्त्वा । सुकन्यां शर्यातीमुपाधाय प्रसिष्यन्द, स आजगाम, यत्रर्षिरास तत् ॥ ६ ॥ स हो-वाच । ऋषे नमस्ते यन्नावेदिषं तेनाहिंसिषमिषं सुकन्या तथा तेऽपह्नुवे संजानीतां मे ग्राम इति, तस्य ह तत एव ग्रामः संजज्ञे स ह तत एव शर्यातो मानव उद्युयुजे नेदपरं हिनसानीति ॥ ७ ॥ अश्विनौ ह वा इदं मिषज्य-न्तौ चेरतुः । तौ सुकन्यामुपेतुः, तस्यां मिथुनमीषाते, तन्न जज्ञौ ॥ ८ ॥ तौ होचतुः । सुकन्ये कमिमं जीर्णिं

कृत्यारूपमुपशेष आवाप्तमुपेहीति, सा होवाच, यस्यै मां पितादाज्ञैवाहं तं जीवन्तं हास्यामीति, तद्वायमृ-
विराजज्ञौ ॥ ९ ॥ स होवाच । सुकन्ये किं त्वेतदवोचता-
मिति, तस्मा एतद्वाचचक्षे, स ह व्याख्यात उवाच,
यदि त्वैतत्पुनर्ब्रुवतः सा त्वं ब्रूताञ्च वै सुसर्वाविव स्थो,
न सुसमृद्धाविवाथ मे पतिं निन्दथ इति, तौ यदि
त्वाव्रवतः, केनावामसर्वौ स्वः, केनासमृद्धाविति, सा
त्वं ब्रूतापतिं नु मे पुनर्युवाणं कुरुतमथ वां वक्ष्यामीति,
तां पुनरुपेयतुस्तां हैतदवोचतुः ॥ १० ॥ तौ होचतुः ।
एतं हृदमभ्यवहर, स येन वयसा कमिष्यते तेनोदैष्य-
तीति, तं हृदमभ्यवजहार, स येन वयसा चक्रमे तेनो-
देष्यायेति ॥ १२ ॥ [श. ब्रा. ४।१।५।१-१२]

च्यवननामक एक ऋषि था, जो भृगुकुलका समझा जाता है, अथवा आंगीरसकुलका भी माना जाता है । वह अति जीर्ण होकर, मरियलसा होकर एक स्थान पर पड़ा था । उस स्थान पर मनुवंश का शर्यात राजा आया । उस राजा के लडके वहाँ खेलने लगे । उन लडकों ने उस अति जीर्ण ऋषिके मुँह जैसे शरीर पर पत्थर मारे । इससे ऋषि को क्रोध आया, जिससे राजा के राज्य में सब प्रजा-जनों की बुद्धि नष्ट हुई, वे आपस में लड़ने लगे । पिता पुत्रसे और भाई भाईसे लड़ने लगा । राजा शर्यात सोचने लगा कि, मैंने ऐसा क्या बुरा कर्म किया कि, जिसके कारण यह ऐसी आपत्ति आ गयी । उसने गवालि्यों को बुलाकर पूछा कि तुमने यहाँ कुछ देखा है ? वे बोले कि, यह जो अति जीर्ण मुर्दासा पड़ा है, वह मरा है, ऐसा मान कर तुम्हारे कुमारोंने उस पर पत्थर मारे, वह च्यवन ऋषि है, ऐसा उस राजाने जान लिया । पश्चात् अपनी कन्या को रथ पर बिठलाकर वह उस ऋषिके पास पहुँचा और उससे बोला कि 'हे ऋषि ! नमस्ते । मुझे तुम्हारा ज्ञान नहीं था, इसलिये तुमको बहुत कष्ट पहुँचे । क्षमा करो । यह मेरी पुत्री है, यह तुम्हारे लिये अर्पण करता हूँ । इसको प्राप्त करके सन्तुष्ट होओ । मेरे राज्य में जो बलबा उठा है, वह शान्त होवे ।' तब ऋषि सन्तुष्ट हुआ और राज का बलबा शान्त हुआ । यह देखकर शर्यात राजाने प्रतिज्ञा की कि, मैं अब इसके बाद किसी को कष्ट नहीं दूँगा । उस ऋषि के आश्रम के पास अश्विदेव किसी की चिकित्सा करने

के लिये आये थे, उन्होंने सुकन्याको देखा और उस तरुणी की इच्छा की । पर उस कन्याने उसके प्रस्ताव का स्वीकार नहीं किया । तब वे उससे पूछने लगे कि, 'हे सुकन्ये 'तुम इस मुर्दा बने जीर्ण के पास क्यों रहती है ? तू हमारा स्वीकार कर ।' तब वह कन्या बोली कि- 'मेरे पिताने जिसको मेरा दान किया है, जब तक वह जीवित है, तब तक मैं उसे नहीं छोड़ूंगी ।' सुकन्या का यह भाषण ऋषिने जान लिया, तब वह उस स्त्रीसे बोले कि, जिस समय ये अश्विनी कुमार फिर से तुम्हें ऐसा भाषण करने लगेंगे, तब तुम उनसे कहना कि- 'तुम मेरे पति की निंदा करते हो, परन्तु तुम तो अपूर्ण और सौभाग्यहीन से हो । यदि तुम मेरे पतिको पुनः तरुण बनाओगे, तब सुपूर्ण तथा भाग्यसंपन्न बनाने का उपाय बताऊँगी ।' सुकन्याने ऐसा अश्विनीकुमारों से कहा, तब वे बोले कि यदि तुम्हारा पति इस तालाव में गोता लगावे, तब जिस आयुका स्मरण करके वह गोता लगावेगा, उसी आयु को ऊपर आनेके पूर्व प्राप्त करेगा ।' वैसा किया गया और च्यवन ऋषि उस तालावमें गोता लगाते ही तरुण बन गये । तब अश्विदेवोंने सौभाग्यसंपन्न बननेका मार्ग पूछा, तब उस ऋषिने यज्ञमें, हविर्भाग प्राप्त करनेका उपाय बताया । अश्विनीकुमार मानवों में जाते हैं, हर किसी की चिकित्सा करते हैं, इसलिये हमारी पांक्ति में बैठ कर हविर्भाग सेवन नहीं कर सकेंगे, ऐसा इन्द्रने निषेध किया, पर ऋषि के सामर्थ्य से इस समय से अश्विनी देवों को यज्ञमें हविर्भाग मिलने लगा ।'

संक्षेप से यह कथा शतपथ ब्राह्मण में है । यही कथा पुराणों में अधिक विस्तृत रूपवाली हो गयी है । इस कथा का संबंध वेद के पूर्वोक्त मंत्रों के साथ स्पष्ट है ।

अन्धे को आँख दिये

अश्विनी देवोंने अन्धे को आँख और पंगु को चलने योग्य पांव दिये, यह चमत्कार निम्नलिखित मंत्र में है—

याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृत्यः । [५९; ऋ. १।१।२।८]

अनेक अपनी शक्तियों के द्वारा परावृजका अन्धत्व दूर करके उत्तम दृष्टिसे युक्त तथा उसका लंगडेपन हटा के उस

को उत्तम चलने फिरनेवाला बना दिया । ऐसा ही वर्णन इन्द्र के लिये भी आया है—

नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्
स्सास्युक्थयः । [ऋ. २।१३।१२]

अन्धे और लूले परावृज को नीच अवस्था से उच्च बना कर (उत्तम दृष्टि से संपन्न और चलने फिरनेवाले बनाकर) कीर्तिमान और यशस्वी बना दिया ।

जैसी परावृजको दृष्टि दी, वैसी ही ऋज्राश्वको भी अश्वि-देवोंने दृष्टि दी, देखिये—

शतं मेषान् वृक्ष्ये चक्षदानं ऋज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्त दस्त्रा भिषजाव-
नर्वन् । [११; ऋ. १।११६।१६]

शतं मेषान् वृक्ष्ये मामहानं तमः प्रणीतमश्विन
पित्रा । आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय
चक्रथुर्विचक्षे ॥ १७ ॥

शुनमन्धाय भरमङ्गयस्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।
जारः कनीन हव चक्षदानं ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥
[११८-११९; ऋ० १।११७।१७-१८]

श्रुतं गायत्रं तकवानस्य ... आक्षी शुभस्पती दन् ।
[ऋ० १।१२०।१६]

ऋज्राश्वने एकसौ एक मेष भेड़िये को खाने दिये, यह देख कर उसके पिताने उस ऋज्राश्व को अन्धा बना दिया । परन्तु अश्विदेवोंने इस ऋज्राश्वके आँख पुनः देखने योग्य बना दिये ।

कवि को आँख दिये

उतो कवि पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे ।
[ऋ. १।११६।१४]

‘दृष्टि की इच्छा से प्रार्थना करनेवाले कवि को उत्तम आँख दिये ।’ संभवतः यह दृष्टि कविकी क्रान्तदृष्टि होगी । बहुत करके इस स्थान पर की दृष्टि कान्य की दृष्टि है । तथापि पाठकों को ऐसे मंत्रों का विशेष विचार करना चाहिए ।

मद्य के १०० घड़े

शतं कुम्भां असिञ्चतं सुरायाः । [ऋ. १।११६।७]
शतं कुम्भां असिञ्चतं मधूनाम् । [ऋ. १।११७।६]

२ [दै. अश्विनौ]

“सुरा के अथवा मधू के १०० घट तुमने भर दिये ।” यहाँ सुरा, आसव, मद्य, मधु, अरिष्ट आदि पद किस पदार्थ का बोध कराते हैं, इसका निर्णय वैद्यों को करना चाहिये । अश्विदेव वैद्य हैं, यह वेद में सुप्रसिद्ध है । वैद्यों के पास आसव के १०० घट भर कर रहे, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ‘मधु’ एक मीठा पेय है, यह मद्य नहीं है । ‘सुरा’ भाप से पुनः पानी बनाया जाता है, उसका नाम है (Distilled Water) झुंडायंत्रसे जो अर्क निकालते हैं, वह सुरा है । इसमें इस तरह जो मद्य बनता है, वह भी शामिल है, पर इसका केवल यही अर्थ है, यह बात नहीं है । वृष्टिबद्ध, भाँपसे बना जल आदि भी इसके अर्थ हैं । अतः वैद्योंको इस सुरा तथा मधुके विषय में अधिक खोज करके निर्णय करना उचित है ।

विश्वला को लोहेकी टांग लगाई

विश्वलानामक राजपुत्री की एक टांग युद्ध में कट गयी थी । वह काटकर उस स्थानपर अश्विदेवोंने लोहेकी टांग लगा दी और उस स्त्रीको चलने फिरने योग्य बना दिया, यह बात निम्नलिखित मन्त्रों में है—

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जंघामायसीं विश्वलायै धने हिते सर्ववे प्रत्यक्षत्तम् ॥
[ऋ. १।११६।१५]

सं विश्वलां नासत्यारिणीतम् । [ऋ. १।११७।११]
यामिर्विश्वलां बनसामथस्यं सहस्रमीकह आजाव-
जिन्वतम् । [ऋ. १।११२।१०]

प्रति जंघां विश्वलाया अधत्तम् । [ऋ. १।११८।८]
धियंजिन्वा धिष्यया विश्वलावसू । [१।१८२।१]
युवं सद्यो विश्वलामेतवे कृथः । [१०।३९।८]

अथर्ववेदी कुल में उत्पन्न (खेलस्य) खेल राजा की पुत्री विश्वला (धने हिते) युद्ध में गयी थी । उसकी एक टांग टूट गयी । अश्विदेवोंने इस को लोहे की टांग (आयसीं जंघां) लगा दी । जिससे वह (सर्ववे) चलने फिरने योग्य बनी । इसकी यह जखम भी अश्वि-देवोंने ठीक बना दी, इसलिये अश्विदेवों को (विश्वला वसू) विश्वला को निवासयोग्य बनानेवाले इस अर्थ का नाम प्राप्त हुआ ।

दधीची ऋषि को घोड़े का सिर

दधीची ऋषि को घोड़े का सिर लगाने के उल्लेख वेद-मंत्रों में अनेक बार आ गये हैं देखिये—

दध्यह्वं यन्मध्वाथर्वणो वां अश्वस्य शीर्ष्णां प्र यदी-
मुवाच । [ऋ. १।११६।१२]

आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्वं शिरः प्रत्यैरयतम् ।

[ऋ. १।११७।२२]

अथर्वकुल में उत्पन्न दधीची ऋषि के लिये तुमने घोड़े का सिर लगाया । इस अश्व के मुख से उस ऋषिने तुम दोनों को मधुविद्या सिखायी ।

यहां अश्वका सिर ऋषि के मस्तक के स्थान पर लगा देने का उल्लेख है । मनुष्य के कण्ठ पर घोड़े का सिर लग नहीं सकता, इसलिये यह उल्लेख विशेष अलंकार का सूचक है । अध्यात्मविद्या के सम्बन्ध में यह खोज करनेयोग्य वर्णन है । मधुविद्या दधीची ऋषि के पास थी, इन्द्रने यह विद्या दधीची को सिखायी थी । दधीची से यह विद्या अश्वि-देवोंको प्राप्त हुई । इस सम्बन्ध की कथा-पुराणों में लंबी-चौड़ी है । यह सब वैदिक और पौराणिक सारस्वत एक-त्रित करके सब की मिलकर खोज करने का विचार है । स्वतंत्र लेखरूप से यह लेख प्रकाशित किया जायगा ।

रेभका वर्णन

रेभ के विषयमें अश्विदेवों की सहायता का वर्णन निम्न-लिखित मंत्रों में है—

यामी रेभं निवृत्तं सितं अद्भ्यः । [ऋ. १।११२।५]

विप्रुतं रेभं उदनि प्रवृक्तं उन्निन्यथुः ।

[ऋ. १।११६।२४]

अश्वं न गूढं अश्विना दुरेवैः ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
संतं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः न वां जूर्यन्ति पूर्या
कृतानि ॥ [ऋ. १।११७।४]

रेभ ऋषिको दुष्टोंने जखमी करके जल में डुबाया था । उसको आपने ऊपर निकाला और उसके अवयव फिर से ठीक कर दिये । यह अश्विदेवों का कर्म बड़ा प्रशंसनीय है और यह वैद्यकक्रिया के साथ संबंध रखता है । दूटे-फूटे अवयवों को पुनः ठीक करना यह कर्म वैद्यों का ही है ।

बंध्या गौको दुधारू बनाया

अश्विदेवोंने बंध्या गौको दुधारू बनाया है, इसका वर्णन अब देखिये—

याभिर्धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा । [ऋ. १।११२।३]

अधेनुं दक्षा स्तर्षे विषक्तां अपिन्वतं शयवे अश्विना गाम् ।

[ऋ. १।११७।२०]

युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि । [ऋ. १।११९।६]

हे अश्विदेवो ! तुमने शायुके लिये बंध्या, कृश गौ को उपजाऊ और बहुत दूध देनेवाली बना दिया । यहाँ गौको पुष्ट करना, दुधारू बनाना और गर्भधारण के योग्य बनाने-का उल्लेख है । औषधिप्रयोग से बंध्या को गर्भधारण योग्य बनाना यह बड़ी भारी सफलताका चिन्ह है । तथा—

अश्विदेवोंने गाय में दूध उत्पन्न किया, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

युवं पय उस्त्रियायां अधत्तं पक्कं आमायां अव पूर्यं गोः ।

[ऋ. १।१८०।३]

‘आपने गौ में दूध धारण किया और अपक गौ में परि-पक दूध उत्पन्न किया ।’ अश्विदेवों के यत्न से गौ में उत्तम दूध बना है ।

स्त्री का दान किया

अश्विदेवोंने कहियोंको स्त्री देकर शादी कराई है देखिये—

यामिः पत्नीः विमदाय न्यूहथुः । [ऋ. १।१०२।१९]

यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहत् रयेन ।

[ऋ. १।११६।१]

युवं शचीभिः विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य
योषाम् ॥ [ऋ. १।११७।२०]

युवं श्यावाय रुक्मतीमदत्तं । [ऋ. १।११७।८]

विमद की शादी करने के लिये अश्विदेवोंने एक स्त्री उसको अर्पण की तथा श्याव के लिये एक गौर वर्ण की सुन्दर स्त्री दी ।

इस तरह अश्विदेव शादी करानेवाके दीखते हैं ।

स्त्री को पति दिया

बोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यत्या अश्विनावदत्तम् ॥

[ऋ. १।११७।७]

घोषा नामक एक स्त्री अपने पिताके घरमें रहकर बढती जाती थी । इसके लिये एक उत्तम पति अश्विदेवोंने दिया और घोषा के लिये सुख दिया ।

इस तरह पति को स्त्री और स्त्रीके लिये पति अश्विदेवोंने दिया है ।

अश्विदेवों का रथ

अश्विदेवों का रथ पक्षियों के समान आकाशमें उड़ता था, वह बात निम्नलिखित मन्त्रमें लिखी है—

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि ।

— अद् वां रथो विभिस्पतात् ॥ [२६; ऋ. १।१६।३]

जब आप का रथ पक्षियों के समान आकाश में उड़ता है, तब आपके घोड़े अन्तरिक्ष में गमन करते हैं । इनके आकाशगामी रथ को पक्षी जोते जाते थे । इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखने योग्य है—

आ वां इयेनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः

पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो

नासत्या वहन्ति ॥ [१३०; ऋ. १।११८।४]

आपके रथ को (आकाशयान को, विमान को) शीघ्र-गामी पक्षी (आशवः पतंगाः युक्तासः) जोते गये हैं, वे इयेन पक्षी आप को इधर ले आवे । वे स्वराशील शीघ्र-गामी हैं ।

इस से अश्वियों का रथ विमान जैसा आकाशगामी है यह बात सिद्ध होती है । इन का भूमिपर चलनेवाला भी रथ है । पर इन मंत्रों में उन के विमान का वर्णन है ।

अश्विदेवों का रथ घोड़े जोतने का नहीं था, इसलिये उसको ‘अनश्व रथ’ कहा है, देखिये—

अनश्वं यामी रथमावतं जिषे । [६३; ऋ. १।११२।१२]

अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः ॥

[१।१५७; ऋ. १२०।१०]

जिस को घोड़े जोते नहीं जाते, ऐसा अश्विदेवों का (अनश्वः रथः) अश्वरहित रथ है । इस से इस को पक्षी जोते जाते थे और वह आकाश में उड़ता था, यह बात स्पष्ट हो सकती है ।

रथ को जोड़े इयेन पक्षी

अश्विदेवों के रथों अर्थात् आकाशयानों को पक्षी जोते रहते थे, इस विषय में ये मन्त्र देखिये—

आ वां इयेनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः

पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो

नासत्या वहन्ति । [१३०; ऋ. १।११८।४]

वेगवान् और उड़नेवाले इयेन पक्षी तुम अश्विदेवों को वेग से यहां ले आवें । दिव्य गीधों के समान आकाश में उड़नेवाले आप को हविष्यान्न के पास शीघ्र ले आवें ।

यहां ‘इयेनासः, पतंगाः, गृध्राः,’ ये पद निःसंदेह पक्षीवाचक हैं । तथा ‘आशवः, अप्तुरः’ ये पद विशेष गति के वाचक हैं । ‘दिव्यासः’ पद आकाशगमन का सूचक है । ‘रथे युक्ताः’ पदोंसे ये पक्षी आकाशयान में जोड़े जाते थे, यह स्पष्ट हो जाता है । अर्थात् अश्विदेवोंके विमानों, हवाई जहाजों को गृध्र, इयेन आदि वेगवान् पक्षी जोते जाते थे, यह बात इससे सिद्ध होती है ।

इनके रथों को घोड़े, गधे जोते जाते थे, इसका भी वर्णन अन्यत्र है ।

उड़नेवाली नौका = हवाई जहाज

युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवं आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्या-

य कम् । येन देवत्रा मनसा निरुहथुः सुपसनी पेतथुः

क्षोदसो महः ॥ [१९८; ऋ. १।१८२।५]

आपने तुमपुत्रके लिये अपने सामर्थ्य से पंखयुक्त नौका महासागर में बनायी, वह पक्षीके समान थी । उस नौका से उत्तम प्रकार उड़नेवाले तुम दोनों सहज हीसे समुद्र से उड़कर ऊपर चले गये ।

यहां उड़नेवाली नौका अश्विदेवोंने बनायी थी, यह स्पष्ट वर्णन है । यह जलमें तो चलती ही थी, पर आकाश में पक्षी के समान भी उड़ती थी । यही आकाशयान अथवा हवाई जहाज है । इन का रथ आकाश में घूमता है, इस विषय में देखिये—

उरु वां रथः परि नक्षति धां । [२४८; ऋ. ४।४३।५]

आप का रथ आकाश में संचार करता है । अर्थात् यह हवाई जहाज है, इस में सन्देह नहीं है ।

भुज्यु की सहायता

तुम एक सम्राट् था, उस का पुत्र भुज्यु बड़ा वल्लि-
वह एक बार मरु देश के किसी क्षत्रु से लड़ा गया
अपनी सेना के साथ समुद्र मार्ग से नौकाओं से युने अश्वि-
था । वहां उस का पराभव हुआ । वहां

देवोंको स देश भजा अश्विदेव अपने विमानों से आकाश मार्ग से जाये, भुज्युको तथा उस की सेना को अपने विमानों में उठाकर भुज्यु को घर पहुँचाया । इस तरह युद्धोंमें- वर्षाई युद्धों में भी अश्विदेवोंने सहायता की है, इनके वर्णन देखिये-

वीक्षुपस्मभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः ज्ञाना दाना । तत्रासभो नासत्या सहस्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय ॥ [७८, अ १।११६।२]

(वीक्षु-पस्मभि) बड़े वेग से उड़नेवाले (आशु-हेमभिः) त्वरासे दौड़नेवाले, (देवानां जूतिभिः) देवी शक्तियों से प्रेरित होनेवाले यानों से युक्त (नासत्या) अश्विदेव बड़े पराक्रम करनेवाले हैं । उनके वाहन से ही (आजा) इस युद्धमें (सहस्र) हजारों शत्रु सैनिक (यमस्य प्रधने) यमराज के युद्ध में, सर्वसनाकाक युद्ध में मारे जाकर (जिगाय) विजय मिठा है ।

इस मन्त्र में अश्विदेवों के वाहन बड़ प्रबल वेग से आकाश में उड़ते थे, ऐसा किचा है ।

तुमो ह भुज्यु अश्विनोदमेव रविं न कश्चिन्ममृवां अवाहा ॥ तमूहधुः नौभिरात्मन्वसीभिः अन्तरिक्ष-मुद्गिरपोदकाभिः । [७९, अ १।११६।३]

तुम नामक सम्राट्ने अपने भुज्युनामक पुत्रको (उदमेव) समुद्र में- अर्थात् समुद्र के परतीरनिवासी शत्रु पर हमला करने के लिये भेजा था । जैसा कोई (ममृवां) मरनेवाला (रविं न) अपने धनकी आशा छोड़ता है, वैसे ही तुमने अपने पुत्र की आशा छोड़ कर उसे शत्रु पर भेजा था । पश्चात् भुज्यु का पराभव हुआ और वह समुद्र में डूब मरने लगा । उस राजकुमारको (आत्मन्वसीभि नौभिः) सामर्थ्य वाली नौकाओंद्वारा (अन्तरिक्षमुद्गि) जो नौकाएँ आकाश में भी उड़ती थीं और (अप-उदकाभिः) जलमें से भी जाती थीं, अश्विदेवोंने उसके घर पहुँचाया ।

जो जहाज आकाश में उड़ते हैं, जल में जाते हैं और पृथ्वी पर भूमि परसे भी जा सकते हैं, ऐसे जहाज अश्वि देवों के थे ।

तिस्रः क्षपः त्रिरहातिप्रजग्नि नासत्या भुज्युकहधु पतगै । समुद्रस्य धन्वन्नात्रस्य पारे त्रिभी रथैः ततपद्भिः पडद्भिः । [८०, अ १।११६।४]

(तिस्र क्षप) तीन रात्री और (त्रिः अहा) तीन दिन तक (अतिप्रजग्निः पतगै) अतिवेगसे दौड़नेवाले पक्षि सरदा यानोंसे भुज्यु को- अर्थात् उसके साथियों के साथ (उहधुः) आकाशमार्गसे वहन किया । (आत्रस्य समुद्रस्य धन्वन् पारे) जलमय समुद्र के परे रसीके प्रदेश में रहनेवाले राजा पर आक्रमण करने के लिये भुज्यु गया था । वहाँ से उसको (त्रिभिः रथैः) तीन रथों से उसको चर पहुँचाया । जिन रथों को सैकड़ों चक्र लगे थे और छः घोड़े अर्थात् वहन-साधन लगे थे ।

तीन महोरात्र उड़नेवाले ये वर्षाई जहाज थे, ऐसा यहाँ कहा है । सैनिकों को लेकर ये वायुयान तीन दिन रात उड़ते हुए तुम के राज्य में पहुँचे ।

अनारम्भण तद्वीरयेथा अनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।

यदश्विना उहधुर्भुज्युमस्त तातारित्रां नावमात-

स्थिवांसम् ॥ [८१, अ १।११६।५]

जिस समुद्र के (अनारम्भणे) आदि अन्त का पता नहीं लगाता, (अनास्थाने) जिस समुद्र के मध्यमें ठहरने के लिये कोई स्थान नहीं है और (अग्रभणे) जिस का ग्रहण भी नहीं हो सकता ऐसे अर्थात् महासागरमें भुज्यु डूब रहा था । वहाँ अश्विदेव पहुँचे और उन्होंने अपने (तातारित्रां नाव) सौ बछिर्योंवाली नौकापर उस को (आतस्थिवांस) बिठकाकर उस को (अस्त उहधुः) अपने घर पहुँचा दिया ।

यहाँ कहा है कि अर्थात् समुद्र में अश्विदेवों के जहाज जाते थे । वे आकाश में भी उड़ते थे और अनेक सैनिकों को बिठका सकते थे ।

युव तुप्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवत् युवाना ।

युव भुज्यु अर्णसो नि समुद्रात् विभिरुहधुः कज्जे-

भिरस्यै ॥ [११५, अ १।११७।१४]

हे अश्विदेवों ! आप (तुप्राय) राजा तुम के लिये (पूर्व्येभिः एवैः) पूर्व समय में की सहायताओं से मिथ हो चुके थे ही, पर आप (पुन) फिर भी (मन्यौ अभवत्) मान्य हो गये हैं, क्योंकि (भुज्यु तुम के युवराज राजपुत्र भुज्युको (अर्णसः समुद्रात्) बड़े महासागर में से (कज्जिभिः अहवैः) बड़ वेगवाले अपने (विभिः) पक्षि सरदा वाहनोंसे (उहधुः) ऊपर उठाया और चरको पहुँचाया ।

यहाँ बताया है कि, अश्विदेवों की पहल से ही मित्रता तुम के साथ थी। पर अब पुत्रको बचाने के कारण वह मित्रता सुदृढ़ हो गई है। पहले की अपेक्षा अब वह मित्रता अधिक बलशुकी है।

युव भुज्य भुरमाण विभिर्गत स्वयुक्तिभिर्निवहन्तः
पितृभ्य आ । यासिष्ठ वसिर्वृषणा विजेभ्यम् ॥

[१४१; ऋ० १।११९।४]

आपने (भुरमाण भुज्य) जलों में डूब मरनेवाले भुज्य अमक राजपुत्रको (विभि गत) डबनेवाले पक्षियों जैसे यानोंसे उठाकर (स्वयुक्तिभि) अपनी खास युक्तियों से (पितृभ्य आ निर्वहन्ता) पिताके पास लाया। आप (वृषणा) बलवान् हैं और (विज य यासिष्ठ) अति दूर देशतक आप पहुँच थे और भुज्यको आपने वहाँसे लाया था।

ता भुज्य विभिरज्यः समुद्रात्तुमस्य स्रुत ऊहथू रजोभि ।
अरेणुभिर्योजनेभिर्मुक्त ता पतत्रिभिः अर्णसो निरुप-
स्थात् ॥ [१११; ऋ० १।१२।६]

(तुमस्य स्रुत भुज्य) राजा तुम के पुत्र भुज्य को (निरुपस्थात् अर्णस समुद्रात् अज्य) अथांग महासागर के बड़े जलोंसे (अरेणुभि रजोभिः) जहाँ धूँकी नहीं है, ऐसे अन्तरिक्षसे— आकाशमार्गसे— (ऊहथूः) उठाकर (योजनेभिः) विविध प्रकारकी योजनाओंसे युक्त (विभि) पक्षियों जैसे (पतत्रिभिः) पक्षिरूप यानों से तुमने उसके घर पहुँचाया।

युव भुज्यं अवाचिह समुद्र ऊहधुरणसो अस्त्रिधानै ।
पतत्रिनिरभ्रमैरभ्ययिभिर्वसनाभिः अश्विना पारयन्ता ॥

[११३, ऋ० ७।१९।७]

आपने [समुद्रे अवचिह भुज्य] समुद्र में जखमी होकर पड़े हुए भुज्य को (अस्त्रिधानै) जिन में कुछ भी न्यूनता नहीं है, सब सुखसाधनों से जो परिपूर्ण हैं, (अभ्रमै) जिनमें बैठनेवालोंको बिल्कुल भ्रम नहीं होते, (अभ्ययिभि) जिनमें किसी को क्या नहीं होती, ऐसे (पतत्रिभि) पक्षि जैसे यानों से (अर्णस उह ऊहथूः) समुद्र से ऊपर उठा कर अनेकानेक युक्तियोंसे (पारयन्ता) समुद्र के पार करके घर पहुँचा दिया।

युव भुज्य समुद्र आ रजसः पार हंसितम् ।

यातमच्छा पतत्रिभि नासत्या सातये कृतम् ।

[१३१ ऋ० १०।१४३।५]

उत त्व भुज्यमश्विना सत्यायो मध्ये जहुर्दुरवासः समुद्रे ।
निरीं पर्वदरावा यो युवाकः । [१४४, ऋ० ७।१८।७]

आपने डूबनेवाले भुज्यको समुद्र से उठा कर (रजसः) अन्तरिक्ष के मार्ग से पार पहुँचा दिया। आप (पतत्रिभिः) पक्षी जैसे आकाश-यानों से वेगसे वहाँ पहुँचे थे।

आपने समुद्र के बीच में कठिन अवस्था में पड़ा था, उस भुज्य को मित्रभावसे उठा कर सुरक्षित घर पहुँचाया।

इन मन्त्रों से पता लगता है कि अश्विदेवों के पास पक्षियों के सदृश आकाश में उड़नेवाले आकाश-यान थे। व तीन अहोरात्र अतिव्रत से चलाये जात थे और उन में सैनिकों को बिठलाना और दृष्ट स्थान पर पहुँचाने का कार्य किया जाता था।

अश्विदेवों की यह विद्या मननपूर्वक आलोचना करने योग्य है।

इस तरह अश्विदेवों के कर्तृत्व का वर्णन वेद-मन्त्रों में है। अश्विदेवता के सब मन्त्रों का मननपूर्वक अध्ययन करने पर तथा इनका जो वर्णन पुराणों में है वह देखने के बाद, तथा दोनों की सगति लगाने के बाद अश्विदेवोंके संबंध में ठीक-ठीक पता लग सकता है।

ये देवता उषाके पूर्व आकाश में तारकारूप से उगते हैं, ऐसा भी वर्णन है। ये दो साथ-साथ रहते हैं। अस्तु । देवत-सहिततात्पर्य अश्विनौ देवताका अध्ययन होनेके क्षिणे यह मन्त्रसमूह सहायक होगा, ऐसी हमें आशा है।

वैदिक राज्यशासनमें आरोग्यमन्त्रिके

कार्य और व्यवहार

वेदमें देवताओंके राज्यका वर्णन है। सर्वोपरि ब्रह्म और प्रकृति है। ब्रह्म निष्क्रिय है और सब कुछ प्रकृति करती है। यह लोकशाही राज्यव्यवस्थाका आदर्श है। इसीको वैदिक भाषामें ‘जानराज्य’ कहते हैं। सब जनोंद्वारा जिसका राज्यशासन होता रहता है, वही जानराज्य है। इसमें ‘ब्रह्म’ सबके ऊपर है पर वह कुछ भी करता नहीं, ‘प्रकृति’ सब करती है। प्रकृतिका अर्थ ‘प्रजाजन’

है । ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ, सबका आधार, सबका आश्रयस्थान है, पर यह कुछ करता नहीं । आजके लोकराज्यके राष्ट्रपति जैसे रहते हैं, व सबके ऊपर हैं, पर उनको कुछ भी करनेका अधिकार नहीं, वैसा ही यहाँ 'ब्रह्म' है । प्रकृति अर्थात् प्रजा सब करती है, उसी तरह लोकराज्यमें प्रजाभियुक्त मंत्री ही सब करते हैं । यह ब्रह्म और प्रकृतिके वर्णनसे बताया है । यह पूर्ण लोकराज्यका ही उत्तम स्वरूप है ।

देवताएँ विश्वराज्यके मंत्री

बृहस्पति ब्रह्मणस्पति, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि आदि देव, जो प्रकृतिसे उत्पन्न हुए हैं वे इस जगत्का सब व्यवहार करते हैं । वेही विश्वराज्यके विविध मंत्री हैं—

वेदमंत्रोंमें प्रायः विश्वरूपी विश्वराज्यका तथा विश्वराज्यके सच्चाधिकारियोंका वर्णन है । विश्वराज्यकी सच्चाधिकार शक्तियाँ ही इन्द्र, वायु, सूर्य, अग्नि आदि हैं । ये शक्तियाँ जैसी विश्वमें हैं वैसी ही मनुष्यमें भी हैं । इसलिये कहा है कि—

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः ।

ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥ [अथर्व १०।७।१७]

' जो मनुष्य शरीरमें ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं ।' वेदका गूढ़ आकाश जाननेकी यह चाबी है । विश्व इतना बड़ा है, उसका आकलन करना कठिन है । इसलिये पिण्ड शरीरमें वही व्यवस्था है, उसको जाननेसे विश्वव्यवस्थाका ज्ञान हो सकता है ।

पिण्ड—ब्रह्माण्डकी व्यवस्था

ब्रह्माण्ड	पिण्ड	पिण्ड समूह (राष्ट्र)
विश्व	शरीर	समूह शरीर, समाज
ब्रह्म (परमात्मा)	आत्मा	सत्तात्मा
शिव	जीव	जीवसंघ
देवगण	इन्द्रियगण	शासकवर्ग

यहाँ विवृत हो सकता है कि जो विश्वमें है वही जीवके शरीरमें है और जो जीवके शरीरमें है वही समष्टि शरीर अर्थात् व्यावहारिक अर्थमें राष्ट्रमें है । यह ठीक तरह समझमें आगया, तो वेदका रहस्य समझमें आगया ऐसा समझना बोध्य है ।

ब्रह्म, परब्रह्म, आत्मा, परमात्मा, ईश, ईश्वर आदि नाम एक विशाल विश्व व्यापक शक्तिके हैं । वैसा ही जीव आत्मा शरीरमें है । परमात्मा 'दावानल' है तो जीवात्मा 'चिनगारी' है । परमात्मा विश्वमें है तो जीवात्मा शरीरमें है । परमात्माको जानना कठिन है, पर जीवात्माको जानना उससे सुगम है, इसलिये कहा है कि—

दावानल और चिनगारी

' जो पुरुषमें— मनुष्य शरीरमें ब्रह्म देखते हैं, अर्थात् जीवात्माको जानते हैं वे परमात्मा, परब्रह्मको जानते हैं । जो चिनगारीको जानते हैं वे दावानलको जानते हैं ।' विश्वको जाननेके लिये शरीरको जानना चाहिये । विश्वकी सब शक्तियाँ शरीरमें हैं । विश्वमें पूर्णरूपसे जो शक्तियाँ हैं वे ही शक्तियाँ अक्षरूपसे शरीरमें हैं । इसलिये कहा है कि 'पिण्डका यथार्थ ज्ञान होनेसे ब्रह्माण्डका ज्ञान होता है ।'

विश्वमें और व्यक्तिमें पचभूत

यह तत्त्व समझनेके लिये सपूर्ण विश्व पचभूतोंका बना है और यह मानव शरीर भी पचभूतोंका ही बना है । इसलिये कहा है कि मानव शरीरमें पचभूतोंको जाननेसे विश्वके पचभूत जाने जा सकते हैं ।

यही दूसरे शब्दोंमें ऐसा कहा जा सकता है कि यह विश्व ३३ देवताओंका बना है, वसा ही यह शरीर भी ३३ देवताओंका बना है । जो विश्वमें है वही शरीर में भी है । विश्वमें जैसी ३३ देवताएँ हैं वैसी शरीरमें भी ३३ देवताएँ अक्षरूपसे हैं । अतः शरीरमें ३३ देवताओंका ज्ञान हुआ तो विश्वके ३३ देवताओंका ज्ञान हो सकता है ।

पुरुषमें ब्रह्म

ये पुरुषे ब्रह्म विदुः ।

ते विदुः परमेष्ठिनम् ॥ [अथर्व १०।७।१७]

' जो पुरुष में ब्रह्म जानते हैं वे परमेष्ठीको जानते हैं ' इसका भाव यह है । इस तरह व्यक्ति और विश्वमें समा नला है वही हमने देखा । एक व्यक्तिके जो तत्त्व हैं वे ही व्यक्ति समूहमें होते हैं, इस कथनका विरोध कोई कर नहीं सकता । देखिये व्यक्तिके भस्मकमें ज्ञान, बाहुओंमें बल और शौर्य, मध्यमें दीर्घ और पावोंमें गति है । ये ही

गुण समाजमें भी होते हैं । समाजमें ज्ञानी, शूर, धनी और कर्मचारी रहते हैं । ये ही समाज शरीरके चार अवयव हैं जिनको ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कर्मचारी कहते हैं । व्यक्तिमें जो गुण हैं वे ही समाजमें गुणी करके प्रसिद्ध होते हैं । इस रीतिसे व्यक्ति, समाज या राष्ट्र और विश्वका संबंध है यही जानना चाहिये । वेदका रहस्य अर्थ जाननेके लिये यह संबंध ठीक तरह जानना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा वेदका रहस्य अर्थ समझमें नहीं आ सकता । इसकी सारिणी यह है—

विश्व-राष्ट्र-व्यक्तिका सम्बन्ध

विश्वमें देवता	राष्ट्रमें शासक	व्यक्तिमें इन्द्रिय
विश्व	राष्ट्र	शरीर
ब्रह्म	राष्ट्रपति	जीव-आत्मा
प्रकृति	प्रजा	शरीर
इन्द्र	सेनापति	मन
मरुत्	सैनिक	इन्द्रियगण
वायु	रक्षक	प्राण
सूर्य	दर्शनकार	नेत्र
चन्द्र	मननशील	मन
अग्नि	वक्ता	वाणी

इस रीतिसे विश्वकी देवताएं व्यक्तिमें किस रूपमें हैं और राष्ट्रमें किस रूपमें रहती हैं यह जाना जा सकता है । इस तरह विश्वशक्ति, राष्ट्रशक्ति और व्यक्तिशक्ति परस्पर सम्बन्धमें किस रीतिसे रहती है, यह जाननेसे सब वेदमंत्रोंका रहस्य स्पष्ट हो जाता है । पर इसका निष्कर्ष तबतक नहीं होता, जबतक वेदमंत्र समझमें आना अशक्य है । इसलिये यह परस्पर सम्बन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है ।

शरीरमें इन्द्र शक्ति

शरीरमें इन्द्रशक्ति उत्पन्न होती है इस विषयमें उप निषवृका यह प्रमाण है—

अन्तरेण तालुके । य एध स्न इव अवलंबते ।

सा इन्द्र योमि । [तै अ १।६।२]

‘तालुपर जो स्नन जैसा कटकता है, यह इन्द्र शक्ति उत्पन्न करनेका स्थान है ।’

शरीरमें इन्द्र शक्ति तालुके ऊपर रही इन्द्र मधीसे उत्पन्न होती है । इसी तरह शरीरमें ३३ देवताओंके स्थान हैं वहांसे ३३ शक्तियां मनुष्यको प्राप्त होती हैं और उनसे यह शरीर कार्यक्षम रहता है । इन केन्द्रोंपर मनका नियम करनेसे वे शक्तियां प्राप्त होती हैं । शरीरमें जो प्रकृति है उसमें वे शक्तियां हैं । इनसे शरीर व्यापार ठीक चलता है ।

राष्ट्रमें जो प्रजासमूह प्रकृति है उसमेंसे इसी तरह शासक वर्ग उत्पन्न होता है । ये शक्तिकेन्द्र प्रजाकी शक्ति लेकर ऊपर जाते हैं और राष्ट्रका शासन करते हैं ।

इस तरह विश्वमें, राष्ट्रमें और व्यक्तिमें समान रूपमें कार्य हो रहा है । प्रायः वेदमंत्रोंमें विश्वशक्तियोंका वर्णन है, इसको देखकर व्यक्तिके शरीरके नियम तथा राष्ट्रसंचालनके बोध प्राप्त करने चाहिये । वैदिक ऋषि इस दृष्टिसे विश्वकी ओर राष्ट्रकी ओर और व्यक्तिकी ओर देखते थे । इसी दृष्टिसे हमने वेदमंत्रोंको देखना चाहिये ।

अश्विनौ देवताका विचार

इन्द्र, मरुत्, सूर्य, वायु, चन्द्र, अग्नि आदि ३३ मुख्य देव हैं । उनमें ‘अश्विनौ’ भी एक देवता है । यह दो हैं और दोनों मिलकर साथ-साथ रहते हैं और दोनों मिलकर कार्य करते हैं । रोग दूर करना, आरोग्य बढाना, दीर्घायु देना आदि कार्य इनके हैं ।

(१) देवानां भिषजौ । [वा य २।५३]

(२) देव्यौ भिषजौ । [ऋ ८।१।८]

(३) भिषजौ । [ऋ १।१।६।१६]

ये इनके नाम हैं, ये नाम इनके वैद्य होनेकी सूचना देते हैं । यदि ये वैद्य हैं तो इनको विश्वराज्यमें वैद्यकीय कार्य मिलना चाहिये । इसीलिये हमने इनको ‘आरोग्यमन्त्री’ कहा है । इनका मन्त्रीमंडल इस प्रकार है—

परब्रह्म	राष्ट्रपति
प्रकृति	प्रजासमिति, राष्ट्रसद
इन्द्र, मरुत्	मुख मन्त्री और उनके सैनिक
ब्रह्मणस्पति	शिक्षा मन्त्री
बृहस्पति	,, , (सहायक)
अश्विनौ	आरोग्यमन्त्री (शासकर्म और चिकित्सा करनेवाके)

अग्नि	प्रचार मंत्री
वायु	वाहन मंत्री,
सम	धर्म मंत्री
पृथा	पोषण मंत्री अन्न मंत्री
अर्थमा	व्याय मंत्री

इस तरह यह मंत्रीमण्डल ३३ देवोंका है। इनमें ३ मुख्य हैं और ३० गौण हैं। इनमें भी १०।१० के तीन गण हैं।

वदमनोंमें देवोंके वर्णन हैं। देवोंने क्या किया था, या देव क्या करते थे यह वर्णन है। यह किस किये है यह प्रश्न महत्त्वका है। ऋतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि “यत् देवा अकुर्वन्, तत् करवाणि” जो देव करते रहे वह मैं करूंगा। देव जगत्का हित करते रहते हैं। ‘देवो, दानाद्वा द्योतनाद्वा’ देव ज्ञान देता है और प्रकाश देता है। जो दान देता है, जो प्रकाश देता है वे ही देव हैं। जो दान देकर आवश्यकता दूर करता है, जो प्रकाश देकर मार्ग दर्शन करता है वह देव है। दूसरोंको ऐसी सहायता देव करते हैं। मनुष्य भी ऐसी सहायता देनेका, प्रकाश देना नैका कार्य करें।

यहां अभिनौ देव नीरोगिता उत्पन्न करते हैं, रोगियोंके

रोग दूर करत हैं, आरोग्यका रक्षण करत हैं, आरोग्यके संरक्षणका माग बताते हैं। हम वैसा करत रहें यह मनुष्यों के लिये मागदर्शन यहां मिलता है।

+ + +

इस दैवत-संहिता के द्वितीय विभाग में जाये सब देव ताओं की उपमासूची, विज्ञापणसूची आदि अनेक उपयुक्त सूचियां श्री प जन त दिनकररास्ते, वाई (जि सातारा) निवासीने बड़ी मेहेनत से तथा विशेष प्रयत्नपूर्वक बनायी हैं, इसलिये व्याध्याय-मण्डल उन के विषय में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।

+ + +

इस दैवत-संहिता के मुद्रण और प्रकाशन के व्यय के लिये मुंबई विश्वविद्यालय (University of Bombay) में जो सहायता दी और जो उक्त विश्व विद्यालय से सम्पादक को मिली है, उस के लिये सम्पादक उक्त विश्वविद्यालयका बड़ा ऋणी है।

निवेदनकर्ता

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

आध्यक्ष- व्याध्याय-मण्डल



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजु सामाथर्वणां संहितानां सर्वान् म त्रान् दैवतानुसारेण सगृह्य निर्मिता ।)

५ अश्विनौ-देवता ।

॥ १ ॥ (ऋ १।३।१-३)

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । गायत्री ।

अश्विना यज्वरीरिषो	द्रवत्पाणी शुमस्पती । पुरुभुजा चनस्यतम्	१
अश्विना पुरुदससा	नरा शवीरया धिया । धिष्ण्या वनंत गिरः	२
दक्षा युवार्कवः सुता	नासत्या वुक्तवर्हिषः । आ यात रुद्रवर्तनी	३

॥ २ ॥ (ऋ १।६५।११)

(४-८) मेघातिथिः काण्वः । (ऋतुसंहिता) । गायत्री ।

अश्विना पिबंत मधु	दीर्घमी शुचिद्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा	११
-------------------	-------------------------------------	----

॥ ३ ॥ (१।२१।१-४)

प्रातर्युजा वि बोधया	अश्विनावेह गच्छताम् । अस्य सोमस्य पीतये	१	५
या सुरथा रथीतमो	भा देवा दिविस्पृशा । अश्विना ता हवामहे	२	
या वा कशा मधुमत्य	अश्विना सूनृतावती । तयो यज्ञ मिमिक्षतम्	३	
नहि वामस्ति दूरके	यत्रा रथेन गच्छथः । अश्विना सोमिनो गृहम्	४	८

॥ ४ ॥ (ऋ १।३०।१७ १९)

(९-११) शुन शेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरात ।

अश्विनावश्वावत्ये	षा यात शवीरया । गोमव दक्षा हिरण्यवत्	१७	
समानयोजनो वि वा	रथो दक्षावर्मत्यः । समुद्रे अश्विनेर्यते	१८	
न्यः धन्यस्य मूर्धनि	चक्र रथस्य येमधुः । परि धामन्यदीयते	१९	११

१ [दै अश्विनौ]

॥ ५ ॥ (अ १/३४।१-१२)

(१२-२३) द्विरण्यस्तूप आक्षिरसः । जगती ९, १२ त्रिष्टुप् ।

त्रिधिन् नो अद्या भवत नवेदसा विधुर्वा याम उत रातिरश्विना ।	
युवोर्हि यन्त्र हिम्येव वासंसो ऽभ्यायंसेन्या भवत मनीषिभिः	१
त्रयः पुरयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद् विदुः ।	
त्रयः स्कम्भासः स्कमितास आरमे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिवाश्विना दिवा	२
समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरथ यज्ञं मधुना भिमिक्षतम् ।	
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युव दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्	३
त्रिर्वर्तियात् त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राच्ये त्रेवेव शिक्षतम् ।	
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युव त्रिः पृथो अस्मे अश्वरेव पिन्वतम्	४ १५
त्रिर्नो रयि वहतमश्विना युव त्रिर्देवताता त्रिरुतावत धियः ।	
त्रिः सौभगात् त्रिरुत श्रवांसि न—स्त्रिष्ठ वां सरे दुहिता रुहद् रथम्	५
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः ।	
ओमानं शयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहत शुभस्पती	६
त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ।	
तिस्रो नासत्या रथया परावर्त आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम्	७
त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिः—स्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् ।	
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रथेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम्	८
कः त्री चक्रा त्रिवृता रथस्य कः त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।	
कदा योगो वाजिनो रासमस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः	९ २०
आ नासत्या गच्छत हूयते हवि—र्मश्वः पिबत मधुपेर्मिरासभिः ।	
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथ—मृताय चित्र घृतवन्तमिष्यति	१०
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेर्मियातं मधुपेयमश्विना ।	
प्रायुत्तारिष्ट नी रपांसि मृक्षत सेधत द्वेषो भवतं सचाश्ववा	११
आ नो अश्विना त्रिवृता रथेना—ऽर्वाश्च रयि वहत सुवीरम् ।	
धूण्वन्तां वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवत वार्जसातौ	१२ २३

॥ ६ ॥ (ऋ १।४६।१-१५)

(१४-४८) प्रस्कण्वः काण्व । गायत्री ।

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति म्रिया दिवः ।	स्तुषे वामश्विना बृहत्	१	
या दुस्त्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् ।	धिया देवा वसुविदा	२	२५
वच्यन्ते वा ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि ।	यद् वा रथो विभिष्पतात्	३	
हविषा जारो अपां पिपतिं पपुर्निरा ।	पिता कुटंस्य चर्षणिः	४	
आदारो वा मतीनां नासत्या मतवचसा ।	पात सोमस्य धृष्णुया	५	
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।	तामस्मे रासाथामिषम्	६	
आ नो नावा मतीनां यात पाराय गन्तवे ।	युञ्जाथामश्विना रथम्	७	३०
अरिर्त्रं वा दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।	धिया युयुज्ज इन्दवः	८	
दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे ।	स्व वत्रिं कुहं चित्सथः	९	
अभूदु भा उ अश्वे द्विरण्य प्रति सूर्यः ।	व्यख्यजिह्वयासितः	१०	
अभूदु पारमेतवे पन्थां ऋतस्य साधुया ।	अदर्शिं वि स्रुतिर्दिवः	११	
तत् तदिदुश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति ।	मदे सोमस्य पिप्रतोः	१२	३५
वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा ।	मनुष्वच्छभू आ गतम्	१३	
युवोरुषा अनु श्रिय परिज्मनोरुपाचरत् ।	ऋता वनथो अक्तुभिः	१४	
उभा पिबतमश्विनो भा नः शर्म यच्छतम् ।	अविद्रियामिरुतिभिः	१५	

॥ ७ ॥ (ऋ १।४७।१-१०)

प्रगाथः = (विषमा) बृहती, (समा) सती बृहती ।

अय वां मधुमत्तमः सुतः सोमं ऋतावृधा ।		
तमश्विना पिबत तिरोऽह्वय धत्त रत्नानि दाशुषे	१	
त्रिवन्धुरेण त्रिधृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना ।		
कण्वासो वां ब्रह्म कण्वन्त्यश्वरे तेषां सु शृणुतं हवम्	२	४०
अश्विना मधुमत्तम पातं सोममृतावृधा ।		
अथाद्य देसा वसु विभ्रता रथे दाश्वासमृप गच्छतम्	३	
त्रिषधस्ये बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।		
कण्वासो वां सुतसोमा अभिर्धवो युषां हवन्ते अश्विना		४१

याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।	
ताभिः स्वस्मौ अघत शुभस्पती पात सोममृतावृषा	५
सुदासे दस्त्रा वसु बिभ्रता रथे पृथो वहतमश्विना ।	
रयि समुद्रादुत वा विवस्पर्य—सो धत्तं पुरुस्पृहम्	६
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।	
अतो रथेन सुवृता न आ गत साक सूर्यस्य रश्मिभिः	७ ४५
अर्वाश्वा वा सप्तथोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ।	
इषं पुञ्जन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा	८
नेन नासत्या गत रथेन सूर्यत्वचा ।	
येन द्यश्चदूहयुर्दुशुषे वसु भध्वः सोमस्य पीतये	९
उक्थेभिरर्वागवसे पुरुवसू अकैश्च नि ह्वयामहे ।	
द्यश्चत् कण्वानां सदैसि प्रिये हि क सोमं पप्रथुरश्विना	१० ४८

॥ ८ ॥ (ऋ १।९२।१६-१८)

(४२-५१) गोतमो राहुगणः । उष्णिक् ।

अश्विना वृत्तिरस्मदा गोमद् दस्त्रा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथ समनसा नि यच्छतम् १६	
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः । आ न उर्जे वहतमश्विना युवम् १७	
एह देवा मयोभुवा दस्त्रा हिरण्यवर्तनी । उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये १८ ५१	

॥ ९ ॥ (ऋ १।११२।१-२५)

(५२-७६) कुत्स आक्षिरस । १ (आद्यपादस्य) द्यावापृथिव्यौ, १ (द्वितीयपादस्य) अग्निः,
१ (उत्तरार्धस्य) अश्विनौ, २-२५ अश्विनौ । जगती, २४-२५ त्रिष्टुप् ।

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं घर्मं सुरुच यामग्निष्टये ।	
याभिर्भरे कारमशाय जिन्वथ—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१
युवोर्दानाय सुभरा असधतो रथमा तस्थुर्वचस न मन्तवे ।	
याभिर्घियोऽवथुः कर्मन्निष्टये ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२
युव तासां विव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमूर्तस्य मज्जना ।	
याभिर्धेनुमस्वो पिन्वथो नरा ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	३
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्जना द्विमाता तूर्धु तरणिर्विभूषति ।	
याभिस्त्रिमन्तुरभवद् विचक्षण—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	४

याभी रेभ निवृत्तं सितमङ्गय उद् वन्दनमैरयतु स्वर्दृशे ।	
याभिः कण्व प्र सिषासन्तुमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	५
याभिरन्तक जसमानमारणे भुज्यु याभिरव्यथिभिर्जिजिन्नथुः ।	
याभिः कर्कन्धु वय्यं च जिन्वथ—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	६
याभिः शुचन्ति धनसां सुषसदं तप्त धर्ममोभ्यावन्तमत्रये ।	
याभिः पृश्निगु पुरुकुत्समावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	७
याभिः शचीर्भिवृषणा परावृज ग्रान्ध श्रोण चक्षस एतवे कुथः ।	
याभिर्वर्तिका असिताममृश्वत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	८
याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चत वसिष्ठ याभिरजरावजिन्वतम् ।	
याभिः कुत्सं श्रुतयं नयेमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	९ ६०
याभिर्विषला धनसामथर्थी सहस्रमीळह आज्ञावजिन्वतम् ।	
याभिर्वक्षमश्च्य प्रेणिमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१०
याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्धश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।	
कक्षीवन्त स्तोतार याभिरावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	११
याभी रसां क्षोदसोद्गः पिपिन्वथु—रन्ध्र याभी रथमावत जिषे ।	
याभिस्त्रिशोक उस्त्रिया उदाजत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१२
याभिः सूर्यं परियाथः परावति मन्धातार क्षैत्रपत्येष्वावतम् ।	
याभिर्विप्र प्र भरद्वाजमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१३
याभिर्महामेतिथिग्व केशोजुव दिवोदास शम्बरहत्य आवतम् ।	
याभिः पूभिद्यै त्रसदस्युमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१४ ६५
याभिर्वज्र विपिपानमृपस्तुतं कलि याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः ।	
याभिर्व्यश्ममुत पृथिमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१५
याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः ।	
याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१६
याभिः पठर्वा जठरस्य मज्जमना—भिर्नीदीदेक्षित इन्द्रो अज्जमना ।	
याभिः शर्षीतमवथो महाघने ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१७
याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथो—ऽग्र गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।	
याभिर्भनु शरमिषा समावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१८ ६९

याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथु—रा व वा याभिरकुणीरक्षितम् ।		
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यः ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	१९	७०
याभिः शताती भवथो ददाशुषे भुज्यु याभिरवथो याभिरधिगुम् ।		
ओम्णावती सुभरामृतस्तुभ ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२०	
याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्युनो अर्वन्तमावतम् ।		
मधु प्रिय भरथो यत् सरङ्भ्य—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२१	
याभिर्नर गोषुयुधे नृपाहो क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।		
याभी रथो अवथो याभिरवत—स्ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२२	
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीति प्र च दुभीतिमावतम् ।		
याभिर्जसन्ति पुरुषन्तिमावत ताभिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम्	२३	
अम्रस्वतीमश्विना वार्चमसो कृत नो दत्ता वृषणा मनीषाम् ।		
अद्यत्येऽवसे नि ह्वये वा वृधे च नो भवत वाजसातौ	२४	
द्युभिरक्तभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।		
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	२५	७६

॥ १० ॥ (ऋ १।११६।१-२५)

(७७-८५९) कक्षीचान् दैवतमस औशिज । त्रिष्टुप् ।

नासत्याभ्यां बर्हिर्वि प्र वृञ्जे स्तोमा इयम्यभियेव वातः ।		
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन	१	
वीळपत्नमिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना ।		
तद् रासभो नासत्या सहस्र—माजा यमस्य प्रधने जिगाय	२	
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेधे रयि न कश्चिन्ममुवाँ अवाहाः ।		
तमूहथुनोभिरात्मन्वतीभि—रन्तरिक्षप्रुद्धिरपोदकाभिः	३	
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्धि—र्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।		
समुद्रस्य धन्वन्तार्दस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः	४	८०
अनारम्भणे तदवीरयेथा—मनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।		
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्त शतारिंश्रं नावमातस्थिवांसम्	५	
यमश्विना दुदथुः श्वेतमश्व—मघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।		
तद् वा दात्र महि कीर्तिन्य भूत पैदो वाजी सद्यमिद्धव्यो अर्यः	६	८२

युव नरा स्तुवते पञ्जियाय कक्षीवते अरदत् पुरंधिम् ।	
कारोतराच्छपादश्वस्य वृष्णः शत कुम्भाँ असिञ्चत सुरायाः	७
हिमेनाग्निं प्रसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।	
ऋषीसे अत्रिमश्विनावनीत—मुनिन्यथुः सर्वगण स्रस्ति	८
परावत नासत्यानुदेथा—मुष्वाबुध चक्रयुर्जिह्वारम् ।	
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य	९ ८१
जुजुरुषो नासत्योत वधिं प्रामुञ्चत द्वापिमिव च्यवानात् ।	
प्रातिरत जह्रितस्यायुर्दुस्त्रा—दित् पतिमकणुत कनीनाम्	१०
तद् वा नरा ह्यस्य राघ्य चा—भिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।	
यद् विद्वांसा निधिमिवापगूळह—मुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय	११
तद् वा नरा सनये दस उग्र—माविष्कणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।	
दुष्यङ् ह यन्मध्वार्थवृणो वा—मश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच	१२
अजोहवीन्नासत्या करा वा महे यामन् पुरुञ्जया पुरंधिः ।	
श्रुत तच्छासुरिव वधिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम्	१३
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युव नरा नासत्यामुमुक्तम् ।	
उतो क्वि पुरुञ्जया युव ह कृपमाणमकणुत विचक्षे	१४ ९०
चरित्र हि वेरिवाच्छेदि पर्ण—माजा खेलस्य परितकम्यायाम् ।	
सद्यो जङ्घामायसी विष्पलायै धने हिते सतीवे प्रत्यधत्तम्	१५
शत मेषान् वृकये चक्षवान—मुञ्जाश्च त पितान्ध चकार ।	
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दत्ता भिषजावनर्वन्	१६
आ वा रथं दुहिता सूर्यस्य कार्भेर्वार्तपुदर्वता जयन्ती ।	
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त दुहिः समु श्रिया नासत्या सचेथे	१७
यदयातं दिवोदासाय धृति—मरद्वाजायाश्विना हयन्ता ।	
रेवदुवाह सचनो रथो वा वृषमश्वं शिधुमारश्च युक्ता	१८
रयि मुञ्चन् स्वपत्यमारुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता ।	
आ जह्वाशी समनसोप वाजै—स्त्रिरहो भाग दधतीमयातम्	१९
परिविष्ट जाहुष विश्वतः सी सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।	
विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजरयू अयातम्	२० ९६

एकस्या वस्तोरावतु रणाय वशमग्निना सनये सहस्रा ।	
निरहृत दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः	२१
शरस्य चिदार्चत्कस्यावतादा नीचादुक्षा चक्रधुः पार्तिवे वाः ।	
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तथे पिप्यथुर्गाम्	२२
अग्रस्यते स्तुवते कृष्णिनाय अज्यूयते नासत्या शचीभिः ।	
पशु न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वै ददथुर्विशकाय	२३
दश रात्रीरक्षिनेना नव धू नवनद्ध शशितमप्स्वपुन्तः ।	
विप्रुत रेभमुदनि प्रवृक्त मुनिन्यथुः सोममिव सुवेण	२४ १००
प्र वा दसास्यग्निनावधोच मस्य पतिः स्या सुगवः सुवीरः ।	
उत पश्यन्नश्रुवन् दीर्घमायु रस्तमिवेअरिमाणं जगम्याम्	२५

॥ ११ ॥ (अ १।११७।१-१५)

मध्वः सोमस्याग्निना मदीय प्रतो होता विवासते वाम् ।	
बहिष्मती रातिर्विश्रिता गीरिषा यात नासत्योप वाजैः	१
यो वामग्निना मर्नसो जवीयान् रथः स्वश्चो विश आजिगाति ।	
येन गच्छथः सुकृतो दुरोण तेन नरा वर्तिरस्य यातम्	२
अर्षि नरावहसः पाञ्चजन्य मृवीसादग्निं मुञ्चथो गणेन ।	
मिनन्ता दस्योरक्षिवस्य भाया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता	३
अश्व न गूळहर्मग्निना दुरेवै अर्षि नरा वृषणा रेभमप्सु ।	
स त रिणीथो विप्रुत दसोभिर्न वा जूर्यन्ति पूर्या कृतानि	४ १०५
सुषुप्वास न निश्रितेरुपस्थे सूर्य न दस्त्रा तमसि क्षियन्तम् ।	
शुभे रुक्म न दर्शत निखात मुदपथुरग्निना वन्दनाय	५
तद् वा नरा शस्यै पज्जियण कक्षीर्वता नासत्या परिजमन् ।	
क्षपादश्चस्य वाजिनो जनाय शत कुम्भा अंसिञ्चत मधूनाम्	६
युव नरा स्तुवते कृष्णिनाय विष्णाप्वै ददथुर्विशकाय ।	
घोषायै चित् पितृवदे दुरोणे पति जूर्यन्त्या अग्निनावदत्तम्	७
युव इयावाय रुशतीमदत्त सहः क्षोणस्याग्निना कण्वाय ।	
प्रवाच्य तद् वृषणा कृत वा यकार्षिदाय श्रवो अघ्यधत्तम्	८ १०९

पुरु वर्षीस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।	
सहस्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहर्नं श्रवस्यैतर्कप्रम्	९ ११०
एतानि वां श्रवसा सुदानू ब्रह्माङ्गूष सदन रोदस्योः ।	
यद् वां पञ्जासो अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम्	१०
सूनोर्मनैनाश्विना गृणाना वाज विप्राय श्रुणा रदन्ता ।	
अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना स विष्पला नासत्यारिणीतम्	११
कुह यान्ता सुष्टुति काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा श्रुग्रा ।	
हिरण्यस्येव कलश निखातमृदूपथुर्दशमे अश्विनाहन्	१२
युव च्यवानमश्विना जरन्त पुनर्युवान चक्रथुः शचीभिः ।	
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत	१३
युव तुग्राय पूर्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवत युवाना ।	
युव भुज्युमर्णसो निः समुद्राद् विभिरुहथुर्गजेभिरश्वैः	१४ ११५
अजोहवीदश्विना तौद्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।	
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति	१५
अजोहवीदश्विना वर्तिका वा मास्नो यत् सीममृश्वत् वृकस्य ।	
वि ज्युषा ययथुः सान्वद्रे जात विष्वाचो अहत विषेण	१६
शत मेषान् वृष्ये मामहान तमः प्रणीतमश्विनेन पित्रा ।	
आश्वी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्त ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे	१७
शुनमन्धाय भरमहयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।	
जारः कनीन इव चक्षुवान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान्	१८
मही वामूतिरश्विना मयोभूत स्याम विष्ण्या स रिणीथः ।	
अथा युवामिदह्यत् पुरधि रागच्छत सी वृषणावबोभिः	१९ १२०
अधेनु दक्षा स्तर्यै विषक्तामपिन्वतं शयवे अश्विना शास् ।	
युव शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्	२०
यव वृकेणाश्विना वपन्ते वै दुहन्ता मनुषाय दक्षा ।	
अभि दस्यु वकुरेणा धमन्तो रु ज्योतिश्चक्रथुरार्यीय	२१
आथर्वणायाश्विना दधीचे ऽश्व्य धिरः प्रत्यैरयतम् ।	
स वां मधु प्र वोचद्वतायन् त्वाष्ट्र यव दक्षावपिकक्ष्य वाम्	२२ १२३

सदा कवी सुमतिमा चके वा विश्वा धियो अश्विना प्रावत मे ।

अस्मे श्रियं नासत्या बृहन्त मपत्यसा च श्रुत्यं रराथाम् २३

हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्र नरा वधिमत्या अदत्तम् ।

त्रिधा ह इयावमश्विना विकस्त सुजीवस ऐरयत सुदानू २४ १७५

एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्याण्यायवोऽवोचन् ।

ब्रह्म कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरासो विदथमा वदम २६

॥ १२ ॥ (ऋ १।११।१-११)

आ वां रथो अश्विना इयेनपत्वा सुमृलीकः स्वर्वा यात्वर्वाह ।

यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा वार्तरहाः १

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।

पिन्वत गा जिन्वतमर्तो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे २

प्रवद्यामना सुवृता रथेन दत्ताविम शृणुत श्लोकमद्रेः ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठा हविर्प्रासो अश्विना पुराजाः ३

आ वां इयेनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः पतङ्गाः ।

ये अत्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ४ १९०

आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्टी नरा दुहिता सूर्यस्य ।

परि वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके ५

उद्व वन्दनमैरतं दुसनाभि रुद्रेभ दत्ता वृषणा शचीभिः ।

निष्टीग्न्य पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवान चक्रयुर्वुवानम् ६

युवमत्रयेऽवनीताय तप्त मूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।

युव कण्वायापिरिताय चक्षुः प्रत्यधत्त सुष्टुति जुजुषाणा ७

युव ध्रेजु शयवे नाधिताया पिन्वतमश्विना पूर्यार्य ।

अमुश्चत वर्तिकामहसो निः प्रति जङ्घा विस्पलाया अधत्तम् ८

युवं श्वेत पेदव इन्द्रजुत महिदनमश्विनादत्तमश्वम् ।

जोह्वत्रमर्षो अभिभूतिमुग्र सहस्रसां वृषण वीर्यङ्गम् ९

ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवाश्वे अश्विना नाधमानाः ।

आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् १० १९६

आ रुयेनस्य जवसा नूतनेना—स्मे यातं नासत्या सजोपाः ।

हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ

११

॥ १३ ॥ (अ १।१२९।१-१०) जगती ।

आ वां रथं पुरुमाय मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हवे ।

सहस्रकेतु वनिनं शतद्वसु श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः

१

ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य प्रयाम—न्यधायि शस्मन्तसमयन्त आ दिशः ।

स्वदाभि धर्मं प्रति यन्त्युतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत्

२

स यन्मिथः पस्पृधानासो अगमत शुभे मखा अभिता जायवो रणे ।

युवोरहं प्रवणे चेकिते रथो यदश्विना वहथः सूरिमा वरम्

३

१४०

युव भुज्य भुरमाण विभिर्गत स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ ।

यासिष्ट वर्तिष्यणा विजेन्यः दिवोदासाय महि चेति वामवः

४

युवोरश्विना वपुषे युवायुज रथ वाणीं येमतुरस्य शर्ष्यम् ।

आ वां पतित्व सख्याय जग्मुषी गोपावृणीत जेन्या युवां पती

५

युव रेभ परिषूतेरुह्यथो हिमेन धर्मं परितप्तमश्रये ।

युव शयोरवस पिप्यथुर्गवि प्रदीर्वेण वन्दनस्तार्यायुषा

६

युव वन्दनं निर्कृत जरण्या रथ न दत्ता करणा समिन्वथः ।

क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यथा प्र वामश्रं विधत्ते दसना भुवत्

७

अगच्छत् कृपमाण परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निवाधितम् ।

स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरहं चित्रा अभीके अभवन्मिष्टयः

८

१४५

उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारप—न्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति ।

युव दधीचो मनु आ विवासथो ऽथा शिरः प्रति वामरुव्यं वदत्

९

युव पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेत तरुतारं दुवस्यथः ।

शर्यैरभिष्टु पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम्

१०

॥ १४ ॥ (अ १।१२०।१-१२)

(१२ दुःस्वप्ननाशनम्) । १ गायत्री, २ ककुप् ३ का-विराट्,

४ नष्टरूपी, ५ तनुशिरा, ६ उष्णिक्, ७ विष्टार-बृहती,

८ कृतिः, ९ विराट्, १०-१२ गायत्री ।

का राधद्वोत्राश्विना वां को वा जोष उमयोः । कथा विधात्यप्रचेताः १

निर्वासाविद् दुरः पृच्छे—दविद्वानिस्थापरो अचेताः । नू चिन्नु मर्ते अक्रौ २ १४९

ता विद्वासा हवामहे वा ता नो विद्वासा मन्म वोचेतमद्य । प्रार्चद् दयमानो युवाकुः ३ १५०
 वि पृच्छामि पावया न देवान् वर्षत्कृतस्याद्भुतस्य दत्ता । पात च सहासो युव च रभ्यसो नः ४
 प्र या धोषे भृगवाणे न शोभे यथा वाचा यजति पज्जियो वांम् । प्रैषयुर्न विद्वान् ५
 श्रुत गायत्र तर्कवानस्या—ह चिद्धि रिरिभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पती दन् ६
 युव ह्यास्त महो रन् युव वा यन्निरततसतम् । ता नो वस्र सुगोपा स्यात पात नो वृकादघायोः ७
 मा कस्मै धातमभ्यमिश्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः । स्तनाभ्युजो अश्विनीः ८ १५१
 दुहीयन् मिश्रधितये युवाकु राये च नो मिमीत वार्जवत्यै । इषे च नो मिमीत धेनुमत्यै ९
 अश्विनोरसनं रथं—मनश्च वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरि चाकन १०
 अय समह मा तनु—ह्याते जनाँ अन्तु । सोमपेयं सुखो रथः ११
 अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽश्रुजतश्च रेवतः । सुभा ता वसि नक्षयतः १२ १५२

॥ १५ ॥ (अ १।१३२।३-५)

(१६०-१६२) परच्छेपो दैवोदासि । अत्यष्टिः, ५ बृहती ।

युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो अश्विना ऽऽश्रावयन्त इव श्लोकमायवो युवां हव्याभ्या यवः ।
 युवोर्विष्वा अधि श्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा ।
 प्रुषायन्ते वा पवयो हिरण्यये रथे दत्ता हिरण्यये ३ १६०
 अचेति दत्ता व्युनाकमृण्वथो युज्जते वां रथयुजो दिविष्टि—ष्वभ्वस्मानो दिविष्टिषु ।
 अर्धि वां स्थाम वन्धुरे रथे दत्ता हिरण्यये ।
 पथेषु यन्तावनुशासता रजो ऽज्जसा शासता रजः ४
 शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दशस्यतम् ।
 मा वां रातिरुप दसत् कदा चना—स्मद् रातिः कदा चन ५ १६१

॥ १६ ॥ (अ १।१५७।१-६)

(१६३-१७३) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ५-६ त्रिष्टुप् ।

अवोभ्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा मद्वावो अर्चिषा ।
 आयुक्षातामश्विना यातवे रथ प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् १
 यद् युज्जाथे वृषणमश्विना रथं धूतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।
 अस्माक ब्रह्म पृतनासु जिन्यत वय धना शूरसाता भजेमहि २
 अर्वाङ् प्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
 त्रिवन्धुरो मधवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ३ १६५

आ न ऊर्जं बह्वतमश्विना युव मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् ।
 प्रायुत्तारिष्ट नी रपासि मृक्षत सेधत द्वेषो भवत सचाभुवा ४
 युव ह गर्भं जग्मतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेऽनुतः ।
 युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीरश्विनावैरयेथाम् ५
 युव ह स्थो मिषजां भेषजेभि रथो ह स्थो रथ्याश्च राध्वेभिः ।
 अथो ह क्षत्रमग्निं धत्थ उग्रा यो वा हविष्मान् मनसा ददाश ६

॥ १७ ॥ (ऋ १।१५।१-६) त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप् ।

वस्त्रं रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यत नो वृषणावभिष्टौ ।
 दत्ता ह यद् रेक्ष्ण औचध्यो वां प्र यत् सस्त्राथे अर्कवाभिरूती १
 को वा दाशत् सुमतये चिदस्यै वसू यद् धेथे नमसा पुदे गोः ।
 जिगृतमस्मे रेवतीः पुरषीः कामप्रेणैव मनसा चरन्ता २ १७०
 युक्तो ह यद् वां तौग्याय पेरुर्वि मध्ये अर्णोसो धारिं पृजः ।
 उप वामवः शरण गमेय शूरो नाज्म पतयज्जिरेवैः ३
 उपस्तुतिरोच्यष्टुरुष्ये न्मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
 मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्धस्मनि खादति क्षाम् ४
 न मा गरन् नद्यो मातृत्तमा दासा यद्वीं सुसंयुधमवाधुः ।
 शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वय दास उरो असावपि गध ५
 दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
 अपामर्थे यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ६ १७१

॥ १८ ॥ (ऋ १।१८०।१-१०)

(१७५-११३) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

युवो रजासि सुयमासो अश्वा रथो यद् वां पर्यर्णसि दीयत् ।
 हिरण्यया वां पवयः प्रुषायन् मध्वः पिबन्ता लुषसः सचेथे १ १७५
 युवमत्यस्याव नक्षथो यद् विपत्मनो नर्थस्य प्रयज्योः ।
 स्वसा यद् वां विश्वगूर्ती भराति वाजायेद्वै मधुपाविषे च २
 युव पयं लस्त्रियायामधत्त पृक्कसामायामव पूर्य गोः ।
 अन्तर्यद् वनिनो वामृतप्ल ह्यारो न शुचिर्यजते हविष्मान् ३ १७७

युव हं धर्मं मधुमन्तमत्रये	ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेवे ।	
तद् वा नरावश्विना पश्वहृष्टी	रथैव चक्रा प्रति यन्ति मध्वः	४
आ वा दानाय ववृतीय दस्रा	गोरोहेण तौग्न्यो न जित्रिः ।	
अपः क्षोणी संचते माहिना वा	जूणो वामक्षुरहसो यजत्रा	५
नि यद् युवेथे नियुतः सुदानु	उप स्वधामिः सुजयः पुरंधिम् ।	
प्रेषद् वेषद् वातो न सुरि—रा	महे ददे सुवतो न वाजम्	३ १८०
वय चिद्धि वा जरितारः सत्या	विपन्यामहे वि पुणिहितावान् ।	
अधा चिद्धि भ्माश्विनावनिन्धा	पाथो हि भ्मा वृषणावन्तिदेवम्	७
युवां चिद्धि भ्माश्विनावनु धून्	विरुद्रस्य प्रसवणस्य सातौ ।	
अगस्त्यो उरां नृषु प्रशस्तः	काराधुनीव चितयत् सहस्रैः	८
प्र यद् वहैथे महिना रथस्य	प्र स्पेन्द्रा याथो मनुषो न होता ।	
धत्त सुरिभ्य उत वा स्वव्य	नासत्या रयिषाचः स्याम	९
त वां रथं वयमद्या हुवेम	स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यम् ।	
अरिष्टनेमिं परि घामियान	विद्यामेष वृजनं जीरदानुम्	१०

॥ १९ ॥ (अ १।१८।१-९)

कद्रु प्रेष्ठाविषां रथीणा—मध्वर्यन्ता	यदुभिनीथो अपाम् ।	
अय वा यज्ञो अकृत प्रशस्ति	वसुधितौ अवितारा जनानाम्	१ १८५
आ वामश्वासः शुचयः पयस्पा	वातरहसो दिव्यासो अत्याः ।	
मनोजुवो वृषणो वीतपृष्ठा	एह स्वराजो अश्विना वहन्तु	२
आ वा रथोऽवनिर्न प्रवत्वा—न्त्सुप्रवन्धुरः	सुविताय गम्याः ।	
वृष्णः स्यातारा मनसो जवीया	नहपूर्वो यजतो धिष्ण्या यः	३
इहेह जाता समवावशीता—मरेपसा	तन्वाष्ट्र नामभिः स्वैः ।	
जिष्णुर्वामन्यः सुमखस्य सुरि—र्विवो	अन्यः सुभगः पुत्र ऊहे	४
प्र वां निचेरुः ककुहो वशां अलुं	पिशङ्गरूपः सदनानि गम्याः ।	
हरीं अन्यस्य पीपयन्त वाजै—र्मथा	रजोस्यश्विना वि घोषैः	५
प्र वां शरद्वान् वृषभो न निष्वाद्	पूर्वीरिषश्चरति मध्वं वृष्णन् ।	
एवैरन्यस्य पीपयन्त वाजै—र्वेपन्तीरूध्वा	नृधो न आगुः	६ १९०

असर्जि वां स्थविरा वेधसा गी—र्वाळहे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती ।
 उपस्तुतावत नाधमान् यामन्त्रयामकृणुतं हवै मे ७
 उत स्या वा रुशतो वप्ससो गी—स्त्रिवर्हिषि सदैसि पिन्वते नृन् ।
 वृषा वां मेघो वृषणा पीपाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन् ८
 युवां पूषेवाश्विना पुरंधि—रग्निमुषां न जरते हविष्मान् ।
 हुवे यद् वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेष वृजनं जीरदानुम् ९

॥ २० ॥ (ऋ १।१-२।१-८) जगती , ८ त्रिष्टुप् ।

अभूद्विद वयुनमो शु धूषता रथो वृषण्वान् मदता मनीषिणः ।
 धियजिन्वा धिष्ण्या विष्पलावस्र दिवो नपाता सुकृते शुचित्रता १
 इन्द्रतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दुस्सा दसिष्ठा रथ्या रथीतमा ।
 पूर्णं रथं वहेथे मध्व आचित तेन दाश्वाससुषं याथो अश्विना २ १९५
 किमत्र दस्सा कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते ।
 अति क्रमिष्ट जुरतं पणेरसु उयोतिर्विप्राय कृणुत वचस्यवे ३
 जम्भयतममितो रायतः शुनो हत मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।
 वाचैवाच जरित् रत्निनी कृत—मुभा शसै नासत्यावत मम ४
 युवमेत चक्रथुः सिन्धुषु प्लव—मात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्न्याय कम् ।
 येन देवत्रा मनसा निरुहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः ५
 अवविद्ध तौग्न्यमप्स्व—न्त—रनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।
 चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदुश्चिभ्यामिषिताः पारयन्ति ६
 कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो य तौग्न्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
 पूर्णा मृगस्य पतरोरिजारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ७ २००
 तद् वां नरा नासत्यावन्तु ग्याद् यद् वा मानास उचथमवोचन् ।
 अस्मादुद्य सदैसः सोम्यादा विद्यामेष वृजनं जीरदानुम् ८

॥ २१ ॥ (ऋ १।२८३।१-६)

त युञ्जाथा मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।
 येनोपयाथः सुकृतो दुरोण त्रिधातुना पतथो विर्न पूर्णैः १
 सुवृद् रथो वर्तते यज्ञमि क्षां यत् तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे ।
 वपुर्वपुष्या संचतामिय गी—दिवो दुहित्रोषसा सचेथे २ २०३

आ तिष्ठतं सुवृत्तं यो रथो वा—मनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।
 येन नरा नासत्येष्वयं वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च
 मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षी—न्मा परि वर्त्तमुत मारि धक्तम् ।
 अयं वां भागो निहित इयं गी—र्दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम्
 युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रि—र्दस्त्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।
 दिशं न दिष्टामृजुयेव यन्ता मे हव न्नासत्योप यातम्
 अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्

३

४ २०५

५

६

॥ २२ ॥ (क्र. १।१८४।१-६)

ता वामद्य तावपरं हुवेमो—च्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः ।
 नासत्या कुहं चित् सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय
 अस्मे ऊ षु वृषणा मादयेथा—मुत् पूर्णहितमूर्ध्या मदन्ता ।
 श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीना—मेष्टा नरा निचेतारा च कर्णेः
 श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
 वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरैः
 अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः ।
 अनु यद् वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति
 एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति ।
 यातं वर्तिस्तनयाय त्मने चा—गस्त्ये नासत्या मदन्ता
 अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्

१

२

३ २१०

४

५

६ २१३

॥ २३ ॥ (क्र. २।३७।५)

(२१४-२२५) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पाश्चाद्) भार्गवः शौनकः । (ऋतुसहितौ) । जगती ।

अर्वाश्चमद्य ययं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
 पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कै गत—मथा सोमं पिबतं वाजिनीवस्र

५

॥ २४ ॥ (क्र. २।३९।१-८) त्रिष्टुप् ।

ग्रावाणेषु तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छ ।
 ब्रह्माणेव विदथ उक्थशासा दूतेव हव्या जन्वा पुरुत्रा

१ २१५

प्रातर्यावाणा रथ्येव वीरा ऽजेव यमा वरमा संचेथे ।	
मेने इव तन्वाङ्गे शुम्भमाने दम्पतीव क्रतुविदा जनैषु	२
शृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक् छुफाविव जम्भिराणा तरौभिः ।	
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुस्रा ऽर्वाञ्चा यातं रथ्येव शक्रा	३
नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।	
श्वानेव नो अरिषण्या तनूनां खूर्गलेव विस्रसः पातमस्मान्	४
वातेवाजुर्या नद्येव रीति रक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक् ।	
हस्ताविव तन्वेङ्गे शंभविष्ठा पादैव नो नयतं वस्यो अच्छ	५
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।	
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे	६ २२०
हस्तेव शक्तिमभि सैददी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।	
इमा गिरौ अश्विना युष्मयन्तीः क्षणोत्रेणेव स्वधितिं सं शिशीतम्	७
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।	
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहदू वदेम विदथे सुवीराः	८
॥ २५ ॥ (ऋ. २।४१।७-९) गायत्री ।	
गोमदू षु नास्त्या ऽश्वावद् यातमश्विना । वर्ती रुद्रा नूपाय्यम्	७
न यत् परो नान्तर आदुधर्षद् वृषण्वस्त्र । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः	८ २२५
ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गसदृशम् । धिष्या वरिवोविदम्	९

॥ २६ ॥ (ऋ. ३।५८।१-९)

(२२६-२३४) गायिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहाना ऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः ।	
आ द्योतानि वहति शुभ्रयामो षसः स्तोमो अश्विनावजीगः	१
सुयुग् वहन्ति प्रति वामतेनो ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः ।	
जरैथामस्मद् वि पुणेर्मनीषां युवोरवश्चक्रमा यातमर्वाक्	२
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।	
किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठा ऽऽहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः	३
आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते ।	
इमा हि वां गोक्रजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे	४ २२९

तिरः पुरु चिदश्विना रजां—स्याङ्गुषो वां मघवाना जनेषु ।	
एह यातं पथिभिर्देवयानै—र्दसाविमै वां निधयो मधूनाम्	५ १३०
पुराणमोक्षः सख्यं शिवं वां युवोर्नैरा द्रविणं जह्वाव्याम् ।	
पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः	६
अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुज्जिश्च सजोषसा युवाना ।	
नासस्या तिरोअह्वयं जुषाणा सोमं पिबतमस्त्रिधा सुदानू	७
अश्विना परि वामिषः पुरुची—रीघुर्गीर्भिर्यतमाना अमृधाः ।	
रथो ह वामृतजा अद्रिजतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः	८
अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे ।	
रथो ह वां भूरि वर्षः करिकृत् सुतावतो निष्कृतमार्गमिष्टः	९ १३४

॥ १७ ॥ (क्र. ४।१५।९-१०)

(१३५-१४३) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः	९ २३५
तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दीर्घायुषं कृणोतन	१०

॥ १८ ॥ (क्र. ४।४५।१-७) जगती, त्रिष्टुप् ।

एष स्य भानुरुदियति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि ।	
पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रंशते	१
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु ।	
अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः	२
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभि—रुत प्रियं मधुने युज्जाथां रथम् ।	
आ वर्तन्ति मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहथे मधुमन्तमश्विना	३
हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्त्रिधो हिरण्यपर्णा उहुवं उषर्बुधः ।	
उदुमृतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सर्वनानि गच्छथः	४ २४०
स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्रयं उस्त्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना ।	
यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः	५
आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्णं शुक्रं तन्वत आ रजः ।	
स्त्रिदश्वान् युयुजान ईयते विश्वां अनु स्वधया चेतथस्पथः	६ २४२

प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति ।
येन सद्यः परि रजोसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ

७ २४३

॥ २९ ॥ (ऋ. ४।४३।१-७)

(२४४-२५७) पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । त्रिष्टुप् ।

क उ श्रवत् कतमो यज्ञियाणां वन्दारु देवः कतमो जुषाते ।
कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम् १
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानांस्तु कतमः शंभविष्ठः ।
रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत २ २४५
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम् ।
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा ३
का वां भूदुर्पमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना ।
को वां महश्चित् त्यजसो अभीक उरुष्यत माध्वी दस्त्रा न ऊती ४
उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत् समुद्रादुभि वर्तते वाम् ।
मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन् यत् सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः ५
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयोऽरुषासः परि गमन् ।
तदूषु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः ६
इहेह यद् वां समना पपूक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यत जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ७ २५०

॥ ३० ॥ (ऋ. ४।४४।१-७)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुजयमश्विना संगतिं गोः ।
यः सूर्या वहति वन्धुरायुर्गिर्वीहसं पुरुतमं वसुयम् १
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो गपाता वनथः शचीभिः ।
युवोर्वपुरुभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम् २
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वाकैः ।
ऋतस्य वा वनुषे पूव्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् ३
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम् ।
पिवाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय ४ २५४

आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।	
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् दुदे नार्भिः पूर्या वाम्	५ २५५
नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्त्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे ।	
नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्तस्सधस्तुतिमाजमीळहासो अगमन्	६
इहेह यद् वां समना पृथ्वे सेयमस्मे सुमतिर्वीजरत्ना ।	
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्	७ २५७

॥ ३१ ॥ (क्र. ५।७३।१-१०)

(२५८-२७७) पौर आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

यदुद्य स्थः परावति यदर्वावत्याश्विना । यद् वा पुरु पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम्	१
इह त्या पुरुभूतमा पुरु दंसांसि बिभ्रता । वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे	२
ईमान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा म्हा रजांसि दीयथः	३ २६०
तदूषु वामेना कृतं विश्वा यद् वामनु ष्वे । नानां जातावरपसा समस्मे बन्धुमेयथुः	४
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदं सदा । परिं वामरुषा वयो धृणा वरन्त आतपः	५
युवोरत्रिंशिकेतति नरा सुमेन चेतसा । घर्मं यद् वामरेपसं नासत्यास्त्रा भुरण्यति	६
उग्रो वां ककुहो ययिः शूण्वे यामेषु संतनिः । यद् वां दंसांभिरश्विना ऽत्रिर्नराववर्तति	७
मध्वं उषु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी । यत् समुद्राति पर्वथः पक्काः पृथ्वो भरन्त वाम्	८ २६५
सत्यमिद् वा उ अश्विना युधामाहुर्मयोभुवा । ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा	९
इमा ब्रह्माणि वर्धना ऽश्विभ्यां सन्तु शंतमा । या तक्षाम रथो इवा ऽवोचाम बृहन्नमः	१०

॥ ३२ ॥ (क्र. ५।७४।१-१०) अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

कृष्टो देवावश्विना ऽद्या दिवो मनावसू । तच्छ्वथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति	१
कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा	२
कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वासुश्मसीष्टये	३ २७०
पौरं चिद्धयुदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः । यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे	४
प्र च्यवानाजुजुरुषो वत्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदीं कृथः पुनरा काममृण्वे वृध्वः	५
अस्ति हि वामिह स्तोता ससिं वां संहशिं श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू	६
को वामद्य पुरुणा मा वन्ते मर्त्यानाम् । को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू	७
आ वां रथो रथानां येष्टो यात्वश्विना । पुरु चिदस्मयुस्तिर आज्जुषो मर्त्येष्वा	८ २७५

शम् पु वां मधूयुवा ऽस्माकमस्तु चर्कृतिः । अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ९
अश्विना यद्वा कर्हि चिच्छ्रुयातमिमं हवम् । वस्वीरू पु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः १० २७७

॥ ३३ ॥ (ऋ. ५।७५।१-९)

(२७८-२८६) अवस्युरात्रेयः । पङ्क्तिः ।

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् १
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् २
आ नो रत्नानि बिभ्रता—वश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ३ २८०
सुष्टुभौ वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।
उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम् ४
बोधिन्मनसा रथ्ये—षिरा हवनश्रुता ।
विभिश्चयवानमश्विना नि याथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ५
आ वां नरा मनोयुजो ऽश्वासः प्रुषितप्सवः ।
वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम् ६
अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् ।
तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ७
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती ।
अवस्युमश्विना युवं गुणन्तमुप मूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ८
अभूदुषा रुशत् पशु—रागिरंधायूत्विषः ।
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्त्रावर्मत्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ९ २८६

॥ ३४ ॥ (ऋ. ५।७६।१-५)

(२८७-२९६) भौमोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

आ भात्यग्निरुषसामनीक—मुद् विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।
अर्वाञ्चो नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ १
न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठा ऽन्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्ति दाशुषे शंभविष्ठा २ २८८

उता यातं संगवे प्रातरहो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
 दिवा नक्तमवसा शतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ३
 इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोके इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् ।
 आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ऽज्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता ४ २९०
 समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयि बहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ५

॥ ३५ ॥ (ऋ. ५।७।१-५)

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।
 प्रातर्हि यज्ञमश्विना दुधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः १
 प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् ।
 उतान्यो अस्मद् यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वर्नीयान् २
 हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो बहुन्ना रथो वर्तते वाम् ।
 मनोजवा अश्विना वार्तरहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा ३
 यो भूर्यिष्टं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्टं पित्वो ररते विभागे ।
 स लोकमस्य पीपरच्छमीभि रनूर्ध्वभासः सदमित् तुतुर्यात् ४
 समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रयि बहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ५ २९६

॥ ३६ ॥ (ऋ. ५।७।१-९)

(२९७-३०५) सप्तवधिरात्रेयः । (५-९ गर्भस्थाविष्युपनिषद्) । अनुष्टुप्,
 १-३ उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् । हंसारिव पततमा सुताँ उप १
 अश्विना हरिणारिव गौरारिवानु यवसम् । हंसारिव पततमा सुताँ उप २
 अश्विना वाजिनीवस्र जुषेथाँ यज्ञमिष्टये । हंसारिव पततमा सुताँ उप ३
 अत्रिर्यद् वामवरोहन्नुवीस मजोहवीन्नाधमानेव योषा ।
 इयेनस्य चिज्रवसा नूतनेना ऽऽगच्छतमश्विना शतमेन ४ ३००
 वि जिहीष्व वनस्पते योनिः स्वयन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवधे च मुञ्चतम् ५
 भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवधये । मायामिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ६ ३०२

यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमास्यः ७
 यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति । एवा त्वं दशमास्य सहावैहि जरायुणा ८
 दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि । निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९३०५

॥ ३७ ॥ (ऋ. ६।६२।१-११)

(३०६-३२७) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ता ऽश्विना हुवे जरमाणो अर्कः ।
 या सद्य उस्ना व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः पर्युरू वरांसि १
 ता यशमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः ।
 पुरू वरांस्यमिता मिमाना ऽपो धन्वान्यति याथो अजान् २
 ता ह त्यद् वर्तिर्यदरध्रमुग्रे—त्था धिय ऊहथुः शश्वदध्वैः ।
 मनोजवेभिरिषिरैः शयध्वै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ३
 ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मो—प भूषतो युयुजानससी ।
 शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत् प्रतो अध्रुग् गुवाना ४
 ता वल्गू दुस्ना पुरुशार्कतमा प्रत्ता नव्यसा वचसा विवासे ।
 या शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभूवतुर्गुणते चित्रराती ५ ३१०
 ता भुज्युं विभिरङ्गयः समुद्रात् तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः ।
 अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात् ६
 वि जयुषां रथ्या यातुमर्द्रि श्रुतं हवै वृषणा वधिमत्याः ।
 दशस्यन्ता शयवै पिप्यथुर्गामिति व्यवाना सुमतिं शुरण्यू ७
 यद् रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा ।
 तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरुधं दधात ८
 य ई राजानावृतुथा विदधद् रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत् ।
 गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद् वचस आनवाय ९
 अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वर्ति—र्द्युमता यातं नवता रथेन ।
 सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम् १०
 आ परमामिरुत मध्यमामि—नियुद्धिर्यातमवमामिर्वाक् ।
 हळहस्यं चिद् गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्त गृणते चित्रराती ११ ३१६

॥ ३८ ॥ (क्र. ६।६३।१-११) त्रिष्टुप्, १ विराट्, ११ एकपदा त्रिष्टुप् ।

क्वा॑ त्या व॒ल्गू पुरु॑हुताद्य दू॒तो न स्तोमो॑ऽविदुन्नमस्वान् ।	
आ यो अ॒र्वाङ् नास॑त्या व॒वर्त॑ प्रे॒ष्टा ह्यस॑थो अस्य॒ मन्म॑न् १	
अरं॑ मे गन्तं॒ हव॑नायास्मै गृ॒णाना॑ यथा पि॒बाथो॑ अन्धः ।	
परि॑ ह॒ त्यद् व॒र्तिया॑थो रि॒षो न॒ यत् परो॑ नान्तरस्तुतु॒र्यात् २	
अ॒कारि॑ वामन्ध॒सो वरी॑म॒न्नस्तारि॑ ब॒र्हिः सु॒प्राय॑णतमम् ।	
उ॒त्तान॑हस्तो यु॒वयु॑र्व॒वन्दा ऽऽ वां नक्ष॑न्तो अ॒द्र्य आ॑ञ्जन् ३	
ऊ॒र्ध्वो वा॑म॒ग्निर॑ध्वरेष्व॒स्थात् प्र रा॑तिरेति॒ जूर्णिनी॑ घृ॒ताची॑ ।	
प्र होता॑ गूर्तम॒ना उ॒राणो॑ ऽयु॒क्तो यो नास॑त्या ह॒वीम॑न् ४ ३२०	
अधि॑ श्रिये दु॒हिता॑ स॒र्वस्य॒ रथं॑ तस्थौ पुरु॒भुजा॑ श॒तोर्ति॑म् ।	
प्र मा॒याभि॑र्मा॒यिना॑ भूतम॒त्र नरा॑ नृ॒तू जनि॑मन् य॒ज्ञिया॑नाम् ५	
यु॒वं श्री॑भिर्द॒र्शता॑भि॒राभिः॑ शु॒भे पु॒ष्टि॒मूह॑थुः सूर्या॑याः ।	
प्र वां वयो॑ वपु॒षेऽनु॑ प॒प्तन् नक्ष॑द् वाणी॒ सुष्टु॑ता धि॒ष्या वाम् ६	
आ वां वयो॑ऽश्वा॒सो वहि॑ष्ठा अ॒भि प्रयो॑ नासत्या वहन्तु ।	
प्र वां रथो॑ मनो॒जवा॑ अस॒र्जीषः॑ पृ॒क्ष इ॒षिधो॑ अनु॒ पूर्वीः ७	
पुरु॑ हि वां पुर॒भुजा॑ दे॒ष्णं धे॒नुं न॒ इषं॑ पि॒न्वत॑मस॒क्राम् ।	
स्तुत॑श्च वां मा॒ध्वी सु॒ष्टुति॑श्च रसा॒श्च ये वा॑मनु॒ राति॑मगमन् ८	
उ॒त म॑ ऋ॒जे पुर॑यस्य र॒ध्वी सु॑मी॒ळहे॒ शतं॑ प॒रुके॑ च॒ प॒क्वा ।	
शा॒ण्डो दा॑द्विर॒णिनः॑ स्मर्हि॒ष्टीन् दशं॑ व॒शासो॑ अ॒भिषा॑च॒ ऋ॒ष्वान् ९ ३२५	
सं वां श॒ता ना॑सत्या स॒हस्रा॑ ऽश्वा॒नां पुरु॑प॒न्था गिरे॑ दा॒त् ।	
भ॒रद्वा॑जाय वी॒र नू गिरे॑ दा॒द्वता॑ र॒क्षींसि॑ पुरु॒दंस॑सा स्युः १०	
आ वां सु॒मे वरि॑मन्त॒सूरिभिः॑ ष्याम् ११ ३२७	

॥ ३९ ॥ (क्र. ७।६७।१-१०) त्रिष्टुप् ।

(३२८-३८३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

प्रति॑ वां रथं नृ॒पती॑ ज॒रध्वै॑ ह॒विष्मे॑ता म॒नसा॑ य॒ज्ञिये॑न ।	
यो वां दू॒तो न धि॒ष्याव॑जी॒ग॒र॒च्छां सू॒नुर्न॑ पि॒तरा॑ वि॒वक्मि॑ १	
अशो॑च्य॒ग्निः संमि॑धानो अ॒स्मे उपो॑ अ॒दृश्नन्॑ तम॒सश्चि॑दन्ताः ।	
अचै॑ति के॒तुरु॑ग॒सः पुर॑स्ता॒च्छ्रिये॑ दि॒वो दु॒हितु॑र्जायमानः २ ३२९	

अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्रान् ।

पूर्वाभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक् स्वर्विदा वसुमता रथेन

३ ३३०

अवोवां नूनमश्विना युवाकुर्हुवे यद् वां सुते माध्वी वसूयुः ।

आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिवाथो अस्मे सुषुता मधूनि

४

प्राचींस्तु देवाश्विना धियं मे ऽमृधां सातये कृतं वसूयुम् ।

विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः

५

अविष्टं धीर्ष्वश्विना न आसु प्रजावद् रेतो अहयं नो अस्तु ।

आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्तासो देववीति गमेम

६

एष स्य वां पूर्वगत्वैव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।

अहेळता मनसा यातमर्वागश्रन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु

७

एकस्मिन् योगे धुरणा समाने परिं वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।

न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति

८ ३३५

असधता मघवेद्भयो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति ।

प्र ये बन्धुं सुनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृश्नन्तो अक्ष्या मघानि

९

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

॥ ४० ॥ (ऋ. ७।६८।१-९) विराट् ; ८-९ त्रिष्टुप् ।

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दत्ता जुजुषाणा युवाकौः ।

हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः

प्र वामन्वांसि मघान्यस्थुररं गन्तं हविषो वीतये मे ।

तिरो अयो हवनानि श्रुतं नः

२

प्र वां रथो मनोजवा इयति तिरो रजांस्तश्विना शतोतिः ।

अस्मभ्यं सूर्यावस्र इयानः

३ ३४०

अयं ह यद् वां देवया उ अद्रि-रुध्वो विवक्ति सोमसुद् युवभ्याम् ।

आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः

४

चित्रं ह यद् वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।

यो वामोमानं दधते प्रियः सन्

५ ३४२

उत त्यद् वां जु॒रते अ॒श्विना भू॒च्छय॒वा॒नाय प्र॒तीत्यै ह॒विर्दे ।

अधि यद् वर्षं इत॒ऊति ध॒रथः

६

उत त्वं भुज्युम॒श्विना सखा॒यो मध्ये जहुर्दु॒रेवा॒सः समु॒द्रे ।

निरीं प॒र्षद॒रा॒वा यो यु॒वाकुः

७

वृ॒काय चि॒ज्जस॒मानाय श॒क्त—मु॒त श्रु॒तं श॒यवे हू॒यमा॒ना ।

याव॒ध्न्याम॒पि॒न्वत॒मपो न स्त॒र्यं चि॒च्छक॒त्य॒श्विना श॒चीभिः

८

३४५

ए॒ष स्य का॒रु॒र्जर॒ते सू॒क्तै—र॒ग्रे बु॒धान उ॒षसां सु॒मन्मा ।

इ॒षा तं व॒र्धदु॒ध्न्या प॒योभि—र्यु॒यं पा॒त स्व॒स्तिभिः सदा॑ नः

९

॥ ४१ ॥ (ऋ. ७।६९।१-८) त्रिष्टुप् ।

आ वां रथो रोद॑सी ब॒द्धधा॒नो हि॒र॒ण्य॒यो वृष॑भिर्या॒त्वश्चैः ।

घृ॒तव॑र्त॒निः प॒विर्भी रु॒चान इ॒षां वो॒ळ्हा नृ॒पति॑र्वा॒जिनी॒वान्

१

स प॒ग्रथा॒नो अ॒भि प॒ञ्च भू॒मा त्रि॒व॒न्धुरो म॒नसा॑ या॒तु यु॒क्तः ।

वि॒शो येन॑ गच्छ॒थो दे॒व॒यन्तीः कु॒त्रा चि॒द् याम॑म॒श्विना द॒धाना

२

स्व॒श्वा य॒शसा॑ या॒तुम॒वाग् द॒क्षा नि॒धि म॒धुम॑न्तं पि॒बाथः ।

वि वां रथो व॒ध्वाइ॒याद॑मानो ऽन्ता॒न् दि॒वो बा॑ध॒ते वर्त॑निभ्याम्

३

यु॒वोः श्रि॒यं प॒रि योषा॑वृणी॒त स्रो॑त॒ दु॒हिता प॒रित॑क॒म्यायाम् ।

यद् दे॒व॒यन्त॑मव॒थः श॒चीभिः प॒रि घ्न॑स॒मोम॑ना वां व॒यो गा॒त्

४

३५०

यो ह॒ स्य वां रथि॒रा व॒स्त उ॒स्रा रथो॑ यु॒जानः प॒रिया॑ति॒ वर्तिः॑ ।

तेन॑ नः शं यो॒रुष॑सो व्यु॒ष्टौ न्य॑श्विना व॒हतं य॒ज्ञे अ॒स्मिन्

५

नरा॑ गौरे॒व वि॒द्युतं॑ तृषा॒णा ऽस्मा॑क॒मद्य स॒वनो॑प॒ यात॑म् ।

पु॒रु॒त्रा हि वां म॒तिभि॑र्हव॒न्ते मा वा॑म॒न्ये नि य॑मन् दे॒व॒यन्तः

६

यु॒वं भुज्यु॑मव॒चिद्धं॑ समु॒द्र उ॒द॒हथु॑र॒णसो॑ अ॒सि॒धानैः ।

प॒त॒त्रिभि॑र॒श्रमै॑र॒व्यथि॑भिर्द॒सन॑भि॒रश्वि॑ना पा॒रय॑न्ता

७

नू मे ह॒व॒मा शृ॑णु॒तं यु॒वाना॑ या॒सिष्टं॑ वर्ति॒रश्वि॑ना॒विरा॑वत् ।

धृ॒त्तं र॒त्नानि॑ ज॒रतं॑ च सू॒रीन् यू॒यं पा॒त स्व॒स्तिभिः सदा॑ नः

८

॥ ४२ ॥ (ऋ. ७।७०।१-७)

आ वि॒श्ववा॑राश्विना ग॒तं नः प्र॑ तत् स्था॒नम॑वाचि वां पृथि॒व्याम् ।

अ॒श्वो न वा॒जी शु॒नपृ॑ष्ठो अ॒स्था—दा यत् से॒दथु॑र्ध्रु॒वसे॑ न यो॒निम्

९

३५५

सिषक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्ठा ऽतापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।
 यो वां समुद्रान्तसरितः पिपत्ये—तग्वा चिन्न सुयुजा युजानः २
 यानि स्थानान्यश्विना दुधार्थे दिवो यद्द्वीष्वोषधीषु विश्व ।
 नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्ते—षं जनाय दाशुषे वहन्ता ३
 चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद् योग्या अश्ववैधे ऋषीणाम् ।
 पुरुणि रत्ना दधतौ न्यस्मे अनु पूर्वाणि चख्यथुर्गुगानि ४
 शुश्रुवांसां चिदश्विना पुरुण्य—भि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम् ।
 प्रति प्र यातं वरमा जनाया—ऽस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ५
 यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान् कृतब्रह्मा समयोऽं भवाति ।
 उप प्र यातं वरमा वसिष्ठ—मिमा ब्रह्माण्यच्यन्ते युवभ्याम् ६ ३६०
 इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।
 इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥ ४३ ॥ (ऋ. ७।७।१-६)

अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।
 अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद् युयोतम् १
 उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता ।
 युयुतमस्मदनिराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः २
 आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्नायवो वृषणो वर्तयन्तु ।
 स्यूमंगमस्तिमृतयुग्मिरश्चै—राश्विना वसुमन्तं वहेथाम् ३
 यो वां रथो नृपती अस्ति वोळ्हा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उन्नयामा ।
 आ न एना नासत्योष यात—मभि यद् वां विश्वप्स्यो जिगाति ४ ३६५
 युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
 निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रि—नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ५
 इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।
 इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ ४४ ॥ (ऋ. ७।७।१-५)

आ गोमता नासत्या रथेना—ऽश्वावता पुरुश्चन्द्रेण यातम् ।
 अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पर्हया श्रिया तन्वा शुमाना १ ३६८

आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या रथेन ।	
युवोहि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम्	२
उदु स्तोमांसो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।	
आविवांसन् रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति	३ ३५०
वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वा ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।	
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहदुग्रयः समिधा जरन्ते	४
आ पश्चातां नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।	
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५

॥ ४५ ॥ (ऋ. ७।७३।१-५)

अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।	
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजा ऽमर्त्या हवते अश्विना गीः	१
न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।	
अश्रीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वा वोचे विदथेषु प्रयस्वान्	२
अहेम यज्ञं पथाम्बराणा इमां सुवृक्ति वृषणा जुषेथाम् ।	
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः	३ ३७५
उप त्या वही गमतो विश्वे नो रक्षोहणा संभृता वील्लपाणी ।	
समन्धास्यगमत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन	४
आ पश्चातां नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।	
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५

॥ ४६ ॥ (ऋ. ७।७४।१-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती)

इमा उ वां दिविष्टय उसा हवन्ते अश्विना ।	
अयं वामहेऽवसे शचीवसू विश्वे विश्वं हि गच्छथः	१
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते ।	
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु	२
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।	
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम्	३
अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीर्यन्ति विभ्रतः ।	
मधूयुभिर्नरा हयैभिरश्विना ऽऽदेवा यातमस्म्य	४ ३८१

अधा ह यन्तो अश्विना पृथः सचन्त सूरयः ।

ता यंसतो मध्वद्भ्यो ध्रुवं यश्च—छुर्दिस्मभ्यं नासत्या

५

प्र ये ययुरवकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् ।

उत स्वेन श्वसा शशुवर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम्

६ ३८३

॥ ४७ ॥ (ऋ. ८।५।१-३७)

(३८४-४१०) ब्रह्मातिथिः काण्वः । (३७ पूर्वार्धः) । गायत्रीः ३७ बृहती ।

दूरादिहेव यत् स—त्यरुणसुरक्षितम्	। वि भानुं विश्वधातनत्	१
नृबद् दक्षा मनोयुजा रथेन पृथुपार्जसा	। सचैथे अश्विनोषसम्	२ ३८५
युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदक्षत	। वाचं दूतो यथोहिषे	३
पुरुमिया ण उतये पुरुमन्द्रा पुरुवद्	। स्तुषे कणासो अश्विना	४
महिष्ठा वाजसातमे—षयन्ता शुभस्पती	। गन्तारा दाशुषो गुहम्	५
ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम्	। घृतैर्गव्यंतिमुक्षतम्	६
आ नः स्तोममुप द्रवत् तूयं श्येनेमिराशुभिः	। यातमश्वैभिरश्विना	७ ३९०
येभिस्तिष्ठः परावतो दिवो विश्वानि रोचना	। त्रैरुक्तून् परिदीयथः	८
उत नो गोमतीरिष उत सातीरहविदा	। वि पथः सातये सितम्	९
आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम्	। वोळहमश्वावतीरिषः	१०
वावृधाना शुभस्पती दक्षा हिरण्यवर्तनी	। पिबतं सोम्यं मधु	११
अस्मभ्यं वाजिनीवसू मध्वद्भ्यश्च सप्रथः	। छुर्दिथेन्तमदाभ्यम्	१२ ३९५
नि षु बह्व जनानां याविष्टं तूयमा गतम्	। मो ष्वान्यां उपारतम्	१३
अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः	। मध्वो रातस्य धिण्या	१४
अस्मे आ बहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम्	। पुरुक्षुं विश्वधायसम्	१५
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः	। वाघङ्गिरश्विना गतम्	१६
जनासो वृक्तवर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः	। युवां हवन्ते अश्विना	१७ ४००
असाकमथ वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः	। युवाभ्यां भूत्वश्विना	१८
यो ह वां मधुनो दति—राहितो रथचर्षणे	। ततः पिबतमश्विना	१९
तेन नो वाजिनीवसू पथे तोकाय शं गवे	। बहतं पीवरीरिषः	२०
उत नो दिव्या इष उत सिन्धूरहविदा	। अप द्वारेव वर्षथः	२१ ४०४

कदा वां ताग्र्यो विधत् समुद्रे जहितो नरा । यद् वां रथो विभिष्यतात् २२	४०५
युवं कण्वाय नासत्या ऽपिरिप्ताय हर्म्ये । शश्वदूतीदिशस्यथः २३	
ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद् वां वृषण्वसू हुवे २४	
यथा चित् कण्वमावतं प्रियमैधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना २५	
यथोत कृत्व्ये धने—ऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् २६	
एतावद् वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुभ्रमीमहे २७	४१०
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थार्थो दिविस्पृशम् २८	
हिरण्ययीं वां रभि—रीषा अक्षौ हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया २९	
तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ३०	
आ वहैथे पराकात् पूर्वोरश्वन्तावश्विना । इषो दासीरमर्त्या ३१	
आ नो द्युमैरा श्रवोभि—रा राया यातमश्विना । पुरुश्वन्द्रा नासत्या ३२	४१५
एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु पर्णिनः । अच्छा स्वध्वरं जनम् ३३	
रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ३४	
हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीज्वना नासत्या ३५	
युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ३६	
ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् । (पूर्वार्धः) ३७	४२०

यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽवसे नरा ।
 आ यातमश्विना गत—मुपेमां सुष्टुतिं मम
 दिवश्चिद् रोचनाद—ध्या नो गन्तं स्वर्विदा ।
 धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमैर्भिर्हवनश्रुता
 किमुन्ये पर्यासते ऽस्मत् स्तोमैर्भिरश्विना ।
 पुत्रः कण्वस्य वामृषि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत्
 आ वां विप्रं इहावसे ऽह्वत् स्तोमैर्भिरश्विना ।
 अरिप्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा
 आ यद् वां योषणा रथ—मतिष्ठद् वाजिनीवसू ।
 विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम्
 अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।
 वत्सो वां मधुमद् वचो ऽशंसीत् काव्यः कविः
 पुरुमन्द्रा पुरुवध्वं मनोतरा रयीणाम् ।
 स्तोमं मे अश्विनाविम—मभि वह्नीं अनूषाताम्
 आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यहया ।
 कृतं न ऋत्विगावतो मा नो रीरधतं निदे
 यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।
 अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना
 यो वां नासत्यावृषि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत् ।
 तस्मै सहस्रनिर्णिज—मिषं धत्तं घृतश्रुतम्
 प्रास्मा ऊर्जं घृतश्रुत—मश्विना यच्छतं युवम् ।
 यो वां सुम्नाय तुष्टवद् वसूयाद् दानुनस्पती
 आ नो गन्तं रिशादसे—मं स्तोमं पुरुभुजा ।
 कृतं नः सुश्रियो नरे—मा दातमभिष्टये
 आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
 राजन्तावध्वराणा—मश्विना यामहूतिषु
 आ नो गन्तं मयोभुवा ऽश्विना शंभुवा युवम् ।
 यो वां विपन्यू धीतिभि—र्गीभिर्वत्सो अवीवृधत्

६

७

८

९

१० ४३०

११

१२

१३

१४

१५ ४३५

१६

१७

१८

१९ ४३९

याभिः कण्वं मेधातिथिं याभिर्विशं दशत्रजम् ।

याभिर्गोशैर्यमावतं ताभिर्नोऽवतं नरा

२० ४४८

याभिर्नरा त्रसदस्यु—मावतं कृत्व्ये धने ।

ताभिः प्वस्माँ अश्विना प्रावतं वाजसातये

२१

प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो गिरो वर्धन्त्वश्विना ।

पुरुत्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं पुरुस्पृहा

२२

त्रीणि पदान्यश्विनो—राविः सान्ति गुहा परः ।

कवी ऋतस्य पत्नमभि—रवाग् जीवेभ्यस्परि

२३ ४४९

॥ ४९ ॥ (ऋ. ८।९।१-२१)

(४४४-४६४) शशकर्णः काण्वः । अनुष्टुप्; १,४,६ १४-१५, बृहती; २-३,२०-२१ गायत्री;

५ ककुप्; १० त्रिष्टुप्; ११ विराट्, १२ जगती ।

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।

प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दि—र्युयुतं या अरातयः

१

यदन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद् धत्तमश्विना

२ ४४५

ये वां दंसाँस्यश्विना विप्रासः परिमामुशुः । एवेत् काण्वस्य बोधतम्

३

अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि पिच्यते ।

अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः

४

यदुप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।

तेन माविष्टमश्विना

५

यन्नासत्या भुरण्यथो यद् वा देव भिषज्यथः ।

अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः

६

आ नूनमश्विनोऽश्विः स्तोमं चिकेत वामया ।

आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि

७ ४५०

आ नूनं रघुवर्तनि रथं तिष्ठथो अश्विना ।

आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत

८

यदुद्य वां नासत्यो—कथैराचुच्युवीमहि ।

यद् वा वाणीमिरश्विने—वेत् काण्वस्य बोधतम्

९ ४५१

यद् वाँ कक्षीवाँ उत यद् व्यश्च ऋषिर्यद् वाँ दीर्घतमा जुहावे ।	
पृथी यद् वाँ वैन्यः सादनेष्वे—वेदतो अश्विना चेतयेथाम्	१०
यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।	
वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम्	११
यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद् वाँ वायुना भवथः समोक्सा ।	
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद् वाँ विष्णोर्विक्रमणेपु तिष्ठथः	१२ ४५५
यदद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।	
यत् पृत्सु तुर्वणे सह—स्तच्छेष्टमश्विनोरवः	१३
आ नूनं यातमश्विने—मा हव्यानि वाँ हिता ।	
इमे सोमांसो अधि तुर्वशे यदा—विमे कर्णेषु वामथ	१४
यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।	
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम्	१५
अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।	
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः	१६
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि स्मृते महि ।	
प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत्	१७ ४६०
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।	
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम्	१८
यदापीतासो अंशवो गावो न दुह ऊर्ध्वभिः ।	
यद् वा वाणीरनूषत् प्र देवयन्तो अश्विना	१९
प्र द्युम्नाय प्र शर्वसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा	२०
यन्नूनं धीभिराश्विना पितु रीना निषीदथः । यद् वाँ सुम्नेभिरुध्या	२१ ४६४

॥ ५० ॥ (ऋ. ८।१०।१-६)

(४६५-४७०) प्रगाथो (चौरः) काण्वः । १ बृहती, २ मध्येज्योतिः, ३ अनुष्टुप्, (पिंगलमतेन—शङ्कुमती)

४ आस्तारपङ्क्तिः, ५-६ प्रगाथः = (५ बृहती+ ६ सतोबृहती)

यत् स्थो दीर्घप्रसन्नानि यद् वादो रौचने दिवः ।

यद् वाँ समुद्रे अध्याकृते गृहे ऽतु आ यातमश्विना

१ ४६५

५ [दे. अश्विनौ]

यद् वा यज्ञं मनवे संमिक्षुत्—रेवेत् काण्वस्य बोधनम् ।	
बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा	२
त्या न्वश्विना हुवे सुदंसंसा गृभे कृता ।	
ययोरस्ति प्र णः सुख्यं देवेष्वध्याप्यम्	३
ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सुरयः ।	
ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिबतः सोम्यं मधु	४
यदुद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजिनीवसू ।	
यद् द्रुह्यव्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम्	५
यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद् वेमे रोदसी अनु ।	
यद् वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथ—मत आ यातमश्विना	६ ४७०

॥ ५१ ॥ (ऋ. ८।१८।८)

(४७१) हरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना । युयुयातामितो रपो अप सिधः ८	४७१
--	-----

॥ ५२ ॥ (ऋ. ८।२१।१-१८)

(४७२-४८९) सोभरिः काण्वः । १-६ प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती),
७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ११ ककुप्, १२ मध्येज्योतिः, प्रगाथः =
(९, १३, १५, १७, ककुप्; १०, १४, १६, १८ सतोबृहती)

ओ त्यमह आ रथ—मद्या दंसिष्ठमृतये ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः	१
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।	
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम्	२
इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना ।	
अर्वाचीना स्ववसे करामहे गन्तारा दाशुषो गृहम्	३
युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद् वामिषण्यति ।	
अस्माँ अच्छा सुमतिवी शुभस्पती आ धेनुरिव धावतु	४
रथो यो वाँ त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।	
परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुत—स्तेन नासत्या गतम्	५ ४७६

दुशस्यन्ता मनवे पूर्य दिवि यवं वृकेण कर्षथः ।	
ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि	६
उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पथिभिः ।	
येभिस्तुक्षि वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः	७
अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू ।	
आ यातं सोमपीतये पिवतं दाशुषो गृहे	८
आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू । युञ्जाथां पीवरीरिषः	९ ४८०
यामिः पक्थमवथो याभिरघ्रिगुं यामिर्बभ्रुं विजोषसम् ।	
ताभिर्नो मक्षू तूर्यमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम्	१०
यदघ्रिगावो अघ्रिगू इदा चिदहो अश्विना हवामहे । वयं गीभिर्विपन्यवः	११
ताभिरा यातं वृषणोप मे हवै विश्वप्सुं विश्ववार्यम् ।	
इषा मंहिष्ठा पुरुभूतमा नरा यामिः क्रिवि वावृधुस्ताभिरा गतम्	१२
ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान उप ब्रुवे । ता ऊ नमोभिरीमहे	१३
ताविद् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् रुद्रवर्तनी ।	
मा नो मतीय रिपवै वाजिनीवसू परो रुद्रावति रयतम्	१४ ४८५
आ सुगम्याय सुगम्यं प्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी । हुवे पितेव सोमरी	१५
मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुंगमामिरूतिभिः ।	
आरात्ताच्चिद् भूतमस्से अवसे पूर्वीभिः पुरुभोजसा	१६
आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा । गोमद् दस्त्रा हिरण्यवत्	१७
सुप्रावर्ग सुवीर्य सुष्ठु वार्य—मनाधृष्टं रक्षस्विना ।	
अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि	१८ ४८९

॥ ५३ ॥ (क्र. ८।२६।१-१९)

(४९०-५०८) विश्वमना वैश्वः, व्यश्वो वाङ्मिरसः । उष्णिक्; १६-१९ गायत्री ।

युवोरु षू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु	। अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू	१ ४९०
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या	। अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू	२
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू	। पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः	३
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा । उप स्तोमान् तुरस्य दर्शथः श्रिये	४	४९३

जुहुराणां चिदश्विना ऽऽमन्येथां वृषण्वसू । युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः ५	
दुस्त्रा हि विश्वमानुषङ् मक्षूभिः परिदीयथः । धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ६	४९५
उप नो यातमश्विना राया विश्वपुषा सह । मघवाना सुवीरावनपच्युता ७	
आ मे अस्य प्रतीव्यः—मिन्द्रनासत्या गतम् । देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ८	
वयं हि वां हवामह उक्षयन्तो व्यश्ववत् । सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ९	
अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित् ते श्रवतो हवम् । नेदीयसः कूळयातः पर्णारुत १०	
वैयश्वस्य श्रुतं नरो—तो मे अस्य वेदथः । सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ११	५००
युवादत्तस्य धिष्या युवानीतस्य सूरिभिः । अहरहर्वृषा मह्यं शिक्षतम् १२	
यो वां यज्ञेभिरावृतो ऽधिवस्त्रा वधूरिव । सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना १३	
यो वामुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् । वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू १४	
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् । विषुद्रुहव यज्ञमूहथुर्गिरा १५	
वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा । युवाभ्यां भूत्वाश्विना १६	५०५
यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे । श्रुतमिन्मे अमर्त्या १७	
उत स्या श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् । सिन्धुर्हिरण्यवर्तनिः १८	
स्मदेतया सुकीर्त्या ऽश्विना श्वेतया धिया । वहैथे शुभ्रयावाना १९	५०८

॥ ५४ ॥ (क्र. ८।३५।१-२४)

(५०९-५३९) इयावाश्व आत्रेयः । उपरिष्ठाज्ज्योतिः (त्रिष्टुप्), २२, २४ पङ्क्तिः, २३ महावृद्धती ।

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना ऽऽदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	१
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	२ ५१०
विश्वेदेवैस्त्रिभिरेकादशैरिहा—ऽङ्गिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना	३
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च—षं नो वोळ्हमश्विना	४
स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च—षं नो वोळ्हमश्विना	५ ५१३

गिरौ जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च—षं नो वोळ्हमश्विना

६

हारिद्रवेवं पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना

७ ५१५

हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः

सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना

८

इयेनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना

९

पिबतं च तृष्णुतं चा च गच्छतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना

१०

जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना

११

हतं च शत्रून् यततं च मित्रिणः प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चो—र्जं नो धत्तमश्विना

१२ ५२०

मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना

१३

अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना

१४

ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽऽदित्यैर्यातमश्विना

१५

ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना

१६

क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन् हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना

१७ ५२५

धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।

सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना

१८

अत्रैरिव शृणुतं पूर्यस्तुतिं इथावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।

सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्

१९ ५२७

सर्गा इव सृजतं सुष्टुतीरुपं	इयावाश्चस्य सुन्वतो मदच्युता ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्		२०
रश्मौरिव यच्छतमध्वरां उप	इयावाश्चस्य सुन्वतो मदच्युता ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्		२१
अर्वाग् रथं नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ।		
आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे		२२ ५२०
नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवर्क्षणस्य पीतये ।		
आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे		२३
स्वाहाकृतस्य तम्पतं सुतस्य देवावन्धसः ।		
आ यातमश्विना गत—मवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे		२४ ५३२
॥ ५५ ॥ (ऋ. ८।४२।४-६)		
(५३३-५३५) नाभाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा । अनुष्टुप् ।		
आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्युवुः ।		
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे		४
यथा वामत्रिरश्विना गीर्भिर्विप्रो अजोहवीत् ।		
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे		५
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।		
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके संमे		६ ५३५
॥ ५६ ॥ (ऋ. ८।५७। [९ बाल०] १-४)		
(५३६-५३९) मेध्यः काण्वः । त्रिष्टुप् ।		
युवं देवा ऋतुना पूर्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा ।		
आगच्छतं नासत्या शचीभि—रिदं तृतीयं सर्वनं पिबाथः		१
युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददृशे पुरस्तात् ।		
अस्माकं यज्ञं सर्वनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीर्घग्री		२
पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।		
सहस्रं शंसा उत ये गविष्ठौ सर्वा इत् तां उप याता पिबध्वै		३
अयं वां भागो निहितो यजत्रे—मा गिरो नासत्योप यातम् ।		
पिबतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र दाश्वासमवतं शचीभिः		४ ५३९

॥ ५७ ॥ (ऋ. ८।७३।१-१८)

(५४०-५५७) गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । गायत्री ।

उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	१	५४०
निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना । अन्ति षड्रूतु वामवः	२	
उप स्तुणीतमत्रये हिमेन धर्ममश्विना । अन्ति षड्रूतु वामवः	३	
कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः । अन्ति षड्रूतु वामवः	४	
यद्य कर्हि कर्हि चिच्छ्रूयातमिमं हवम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	५	
अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठ याम्याप्यम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	६	५४५
अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति षड्रूतु वामवः	७	
वरथे अग्निमातपो वदते वृष्वत्रये । अन्ति षड्रूतु वामवः	८	
प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्रेरशायत । अन्ति षड्रूतु वामवः	९	
इहा गतं वृषण्वसू शृणुतं मे इमं हवम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	१०	
किमिदं वां पुराणवञ्जरोरिव शस्यते । अन्ति षड्रूतु वामवः	११	५५०
समानं वां सजात्यै समानो बन्धुरश्विना । अन्ति षड्रूतु वामवः	१२	
यो वां रजांस्यश्विना रथो वियाति रोदसी । अन्ति षड्रूतु वामवः	१३	
आ नो गव्यैभिरश्वैः सहस्रैरुप गच्छतम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	१४	
मा नो गव्यैभिरश्वैः सहस्रैभिरति ख्यतम् । अन्ति षड्रूतु वामवः	१५	
अरुणप्सुरुषा अभूदकज्योतिर्ऋतावरी । अन्ति षड्रूतु वामवः	१६	५५५
अश्विना सु विचाकशद् वृक्षं परशुमां इव । अन्ति षड्रूतु वामवः	१७	
पुरं न धृण्वा रुज कृष्णया बाधितो विशा । अन्ति षड्रूतु वामवः	१८	५५७

॥ ५८ ॥ (ऋ. ८।८५।१-९)

(५५८-५६६) कृष्ण आङ्गिरसः । गायत्री ।

आ मे हव नासत्या ऽश्विना गच्छतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये	१	
इमं मे स्तोममश्विनेमं मे शृणुतं हवम् । मध्वः सोमस्य पीतये	२	
अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये	३	५६०
शृणुतं जरितुहवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये	४	
छदियन्तमदाभ्यं विप्राय स्तुवते नरा । मध्वः सोमस्य पीतये	५	
गच्छतं द्राशुषो गृहमिथा स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये	६	५६३

युञ्जाथां रासंभं रथे वीङ्गङ्गे वृषण्वसू । मध्वः सोमस्य पीतये	७
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये	८
नू मे गिरी नसत्या ऽश्विना प्रावतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये	९ ५३६

॥ ५३ ॥ (ऋ. ८।८६।१-५)

(५६७-५७१) कृष्ण आङ्गिरसः, विश्वको वा कार्ष्णिः । जगती ।

उभा हि दुस्त्रा भिषजा मयोभ्रुवो—भा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	१
कथा नूनं वां विमना उप स्तव—द्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	२
युवं हि ष्मा पुरुभुजेममैधतुं विष्णाप्ये ददथुर्वस्यइष्टये ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	३
उत त्वं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित् सन्तमवसे हवामहे ।	
यस्य स्वादिष्टा सुमतिः पितुर्थथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	४
ऋतेन देवः सविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पंप्रथे ।	
ऋतं सासाह महिं चित् पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	५ ५७१

॥ ६० ॥ (ऋ. ८।८७।१-६)

(५७१-५७७) कृष्ण आङ्गिरसो वासिष्ठो वा द्युम्नीकः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा ।

प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना क्रिविर्न सेक आ गतम् ।	
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा पातं गौराविवेरिणं	१
पिबतं घर्म मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं नरा ।	
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ नि पातं वेदसा वयः	२
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।	
ता वर्तियीतमुप वृक्तवर्हिषो जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु	३
पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना ऽऽ बर्हिः सीदतं सुमत् ।	
ता वावृधाना उप सुष्टुतिं दिवो गन्तं गौराविवेरिणम्	४
आ नूनं यातमश्विना ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।	
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती पातं सोममृतावृधा	५ ५७३

वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रांसो वाजसातये ।
ता वल्गू दुस्ना पुरुदंसेसा धिया ऽश्विना श्रुष्ट्या गतम्

६ ५७७

॥ ६१ ॥ (ऋ. ८।१०।७-८)

(५७८-५७९) जमदग्निभिर्गवः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वी ।
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हुव्यानि वीतये
रार्ति यद् वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवम् ।
प्राचीं होत्रां प्रतिरन्तावितं नरा गृणाना जमदग्निना

७

८ ५७९

॥ ६२ ॥ (ऋ. १०।२४।४-६)

(५८०-५८२) ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । अनुष्टुप् ।

युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् ।
विमदेन यदीलिता नासत्या निरमन्थतम्
विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निप्रतन्त्योः ।
नासत्यावब्रुवन् देवाः पुनरा वहतादिति
मधुमन्मे परायणं मधुमत पुनरायनम् ।
ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम्

४

५

६ ५८२

॥ ६३ ॥ (ऋ. १०।३९।१-१४)

(५८३-६१०) काक्षीवती घोषा । जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

यो वां परिज्मा सुबुदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हुविष्मता ।
शश्वत्तमासस्तम् वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे
चोदयतं सनुताः पिन्वतं धिय उत पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि ।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम्
अमाजुरश्विद् भवथो युवं भगौ ऽनाशोश्विदवितारापमस्य चित् ।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद् युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित्
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
निष्टौग्र्यमूहथुरङ्गयस्परि विश्वेत् ता वां सर्वनेषु प्रवाच्या
पुराणा वां वीर्यां प्र ब्रवा जने ऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा ।
ता वां नु नव्याववसे करामहे ऽयं नासत्या श्रदुरिथ्या दधत्

१

२

३ ५८५

४

५ ५८७

इयं वांमहे शृणुतं मे अश्विना पुत्रार्येव पितरा मह्यं शिक्षतम् ।	
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरव स्पृतम्	६
युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।	
युवं हव वधिमत्या अगच्छतं युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरंधये	७
युवं विप्रस्य जरणामुपेयुपः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।	
युवं वन्दनमृश्यदादुदपथु—युवं सुद्यो विष्पलामेतवे कथः	८ ५९०
युवं ह रेभं वृषणा गुहा हित—मुदैरयतं ममुवांसमश्विना ।	
युवमृवीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवधये	९
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्च नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।	
चर्कृत्य ददथुर्द्रावयत्सखं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम्	१०
न तं राजानावदिते कुतश्चन नाहौ अश्रोति दुरितं नर्किर्भयम् ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह	११
आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामभवंश्चक्रुरश्विना ।	
यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिनै विवस्वतः	१२
ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वत—मपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना ।	
वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरास्याद् युवं शचीभिर्प्रसिताममुश्चतम्	१३ ५९५
एतं वां स्तोममश्विनावकृर्मा—तक्षाम भृगवो न रथम् ।	
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः	१४

॥ ६४ ॥ (क्र. १०४०१-१४)

रथं यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति ।	
प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शमि	१
कुह स्विद् दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।	
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ	२
प्रातर्जरेथे जरणेव कार्पया वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् ।	
कस्य ध्वस्ना भवथः कस्य वा नरा राजपुत्रैव सवनाव गच्छथः	३
युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।	
युवं होत्रामृतुथा जुह्वते नरे—षं जनाय बहथः शुभस्पती	४ ६००

युवां ह घोषा पर्यश्विना यती	राज्ञ ऊचे दुहिता पृच्छे वां नरा ।	
भूतं मे अहं उत भूतमक्तवे	ऽश्वावते रथिने शक्तमवते	५
युवं कवी पुः पर्यश्विना रथं	विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः ।	
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वा	सा भरत निष्कृतं न योषणा	६
युवं ह भुज्यं युवमश्विना वशं	युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः ।	
युवो ररावा परि सख्यमासते	युवोरहमवसा सुम्रमा चके	७
युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं	युवं विधन्तं विधवागुरुष्यथः ।	
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विना	ऽप ब्रजमूर्ण्यथः सप्तास्यम्	८
जनिष्ट घोषा पतर्यत् कर्नानको	वि चारुहन् वीरुधो दुंसना अनु ।	
आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवो	ऽस्मा अहं भवति तत् पतित्वनम्	९ ६०५
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अश्वरे	दीर्घामनु प्रसिति दीधियुर्नरः ।	
वामं पितृभ्यो य इदं सेमेरिरे	मयः पतिभ्यो जनयः परिभ्वजे	१०
न तस्य विन्न तदु पु प्र वोचत	युवां ह यद् युवत्याः क्षेति योनिषु ।	
प्रियोस्त्रियस्य वृषभस्य रेतिनो	गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि	११
आ वामगन्तुमतिर्वाजिनीवसू	न्यश्विना हस्तु कामा अयंसत ।	
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती	प्रिया अर्यम्णो दुर्यो अशीमहि	१२
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ	धत्तं रयिं सहवीरं वचस्यवे ।	
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती	स्थाणुं पथेष्ठा मप दुर्मतिं हतम्	१३
कं स्विदुद्य कतमास्वाश्विना	विश्व दुस्त्रा मादयेते शुभस्पती ।	
क ई नि येमे कतमस्य जग्मतु	विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम्	१४ ६१०

॥ ६५ ॥ (क्र. १०४१।२-३)

(क्र. ६११-६१३) सुहस्त्यो घौषेयः । जगती ।

समनमु त्वं पुरुहूतमुक्थ्यं	रथं त्रिचक्रं सर्वना गनिगमतम् ।	
परिज्मानं विदुथ्यं सुवृक्तिभिः	व्यं व्युष्टा उषसो हवावहे	१
प्रातर्युजं नास्त्याधि तिष्ठथः	प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम् ।	
विशो येन गच्छथो यज्वरीनरा	कीरिश्चिद् यज्ञं होतुमन्तमश्विना	२
अश्वर्यु वा मधुपाणिं सुहस्त्यं	मग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम् ।	
विप्रस्य वा यत् सर्वनानि गच्छथो	ऽत आ यातं मधुपेयमश्विना	३ ६१३

॥ ६६ ॥ (क्र. १०।१०६।१-११)

(६१४-६२४) भूतांशः काश्यपः । त्रिष्टुप् ।

उ॒मा उ॑ नूनं तदि॒दर्थे॒येथे॒ वि त॑न्वा॒थे धि॒यो व॒त्त्वाप॑सेव ।	
स॒ध्रीची॑ना यात॒वे प्रे॒मजी॑गः सु॒दिने॑व पृ॒क्ष आ तै॑सयेथे	१
उ॒ष्टारे॑व फ॒र्वरे॑षु श्रयेथे प्रा॒योगे॑व श्वा॒य्या शा॑सुरेथः ।	
दू॒तेव॑ हि ष्ठी य॒ज्ञसा॑ जने॒षु मा॑प॒ स्थातं॑ महिषेवा॒वपाना॑त्	२ ६१५
सा॒कंयु॑जा शकुनस्ये॒व प॒क्षा प॒श्चेव॑ चि॒त्रा य॒जुरा ग॑मिष्टम् ।	
अ॒ग्निरि॑व दे॒वयो॑र्दी॒दिवां॑सा परि॒ज्माने॑व यजथः पुरु॒त्रा	३
आ॒पी वो॑ अ॒स्मे पि॒तरे॑व पु॒त्रो—ग्रे॑व रु॒चा नृ॒पती॑व तु॒र्यै ।	
इ॒र्ये॑व पु॒ष्ट्यै कि॒रणे॑व भु॒ज्यै श्रु॒ष्टीवा॑ने॒व ह॒वमा॑ गमिष्टम्	४
वंस॑गे॒व पू॒षर्या॑ शि॒म्बाता॑ मि॒त्रे॒व ऋ॒ता श॒तरा॑ श्वात॑पन्ता ।	
वा॒जेवो॑च्चा व॒यसा॑ घ॒र्म्येष्टा मे॒षे॒वेषा॑ स॒पर्या॑ङ्गु पुरी॒षा	५
सृ॒ण्ये॒व ज॒र्मरी॑ तु॒र्फरी॑त् नैतो॒शे॒व तु॒र्फरी॑ प॒र्फरी॑का ।	
उ॒द॒न्यजे॑व जे॒र्मना॑ मदे॒रू ता मे॑ ज॒राय॑व॒जरे॑ म॒रायु॑	६
प॒जे॒व च॒र्चरं॑ जा॒रे म॒रायु॑ क्ष॒त्रेवा॑र्येषु त॒र्तरी॑थ उ॒ग्रा ।	
ऋ॒भू ना॑प॒त् खर॑म॒ज्जा खर॑ज्जु—र्वा॒युर्न प॑र्फर॒त् क्षय॑द् रयी॒णाम्	७ ६२०
घ॒र्मे॒व मधु॑ ज॒ठरे॑ स॒नेरू भ॑गे॒विता॑ तु॒र्फरी॑ फा॒रि॒वार॑ष् ।	
प॒तरे॑व च॒चरा॑ च॒न्द्रनि॑णिङ् म॒ने॒ऋ॒ङ्गा म॒न॒न्या॑ङ्गु न ज॒ग्मी	८
बृ॒हन्ते॑व ग॒म्भरे॑षु प्र॒तिष्ठां॑ पा॒दै॒व गा॒धं तर॑ते वि॒दाथः॑ ।	
कर्णे॑व शा॒सुर॑नु हि स्म॒राथो॑—ऽश्वे॒व नो॑ भज॒तं चि॒त्रप॑मः	९
आ॒र॒ङ्गे॒व म॒ध्वरे॑येथे सा॒र॒धे॒व ग॒र्वि नी॒चीन॑वा॒रे ।	
की॒नारे॑व स्वे॒दमा॑सि॒ष्विद॑ाना क्षा॒मे॒वोर्जा॑ सू॒यव॑सात् स॒ंचे॒थे	१०
ऋ॒ध्या॒म स्तो॑मे॒ सनु॑याम॒ वाज॑—मा नो॒ मन्त्रं॑ स॒रथे॑हो॒प या॑तम् ।	
य॒शो न प॑क्कं मधु गो॒ष्वन्त॑—रा भू॒तांशो॑ अ॒श्विनोः॑ का॒र्मम॑प्राः	११ ६२४

॥ ६७ ॥ (क्र. १०।१३।१४-५)

(६२५-६२६) सुकीर्तिः काक्षीवतः । ४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

यु॒वं सु॒रार्म॑म॒श्विना॒ नमु॑चावा॒सुरे॑ स॒चा । वि॒पि॒पाना॑ शु॒भस्प॑ती इ॒न्द्रं क॑र्म॒स्वाव॑तम् ४ ६२५

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दुसनाभिः ।

यत् सुरामं व्यपिबः श्वचीभिः सरस्वती त्वा मधवन्मभिष्णक्

५ ६२६

॥ ६८ ॥ (क्र. १०।१४३।१-६)

(६२७-६३२) अग्निः सांख्यः । अनुष्टुप् ।

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।

कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम्

१

त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमलत ।

हृळ्हं ग्रन्थि न विष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः

२

नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।

अथा हि वां द्विवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे

३

चित्ते तद् वां सुराघसा रातिः सुमतिरश्विना ।

आ यन्नः सदर्ने पुथौ समने पर्वथो नरा

४ ६३०

युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईक्षितम् ।

यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम्

५

आ वां सुमैः शंयू इव मंहिष्ठा विश्वेदसा ।

समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः

६ ६३२

॥ ६९ ॥ (क्र. १०।१८४।३)

(६३३) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

हिरण्ययी अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना ।

तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि स्रतवे

३ ६३३

॥ ७० ॥ (६३४-६३८) (वा. य. १४।१-५)

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया ।

उर्यस्य केतुं प्रथमं जुषाणाश्विनाध्वर्युं सादयतामिह त्वा

१

कुलायिनीं घृतवतीं पुरन्धिः स्योने सीदु सदर्ने पृथिव्याः ।

अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौमगायाश्विनाध्वर्युं

सादयतामिह त्वा ३ ६३५

स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद देवानां सुमे बृहते रणाय ।
 पितेवैधि सूनवऽआ सुशेवां स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ३
 पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ।
 स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदुस्मे द्रविणायजस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ४
 अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम् ।
 ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि विश्वकर्मा तऽऽक्रषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ५ ६३८

॥ ७१ ॥ (६३९-६४०) (वा. य. ३८।१०, १३)

विश्वाऽआशा दक्षिणसद् विश्वान् देवानयाहिह ।
 स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिवतमश्विना १०
 अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमसाताम् ।
 इहैव रातयः सन्तु १३ ६४०

॥ ७२ ॥ (साम० ३०५)

(६४१) अश्विनौ वैवस्वतौ । बृहती ।

कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।
 मता वामश्मया क्षयमाणोऽशुनेत्थमु आद्रन्यथा ३ ६४१

॥ ७३ ॥ (अथर्व २।२९।६)

(६४२-६४५) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्य—नमीवो मौदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।
 सवासिनौ पिवतां मन्थमेत—मश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् ६ ६४२

॥ ७४ ॥ (अथर्व० ६।५०।१-३)

अथर्वा (अभयकामः) । १ विराड् जगती, २-३ पथ्यापङ्क्तिः ।

हृतं तर्दं समङ्कमाखुमश्विना छिन्तं शिरो अपि पृष्टीः श्रृणीतम् ।
 यवाभेददानपि नद्यतं मुखमथाभयं कणुतं धान्यायि १
 तर्दं है पतङ्ग है जभ्य हा उपक्वस ।
 ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनेदन्त इमान्यवान्हिसन्तो अपोदित २ ६४४

तर्दीपते वधापते तृष्टजम्भा आ शृणोत मे ।

य आरण्या व्यद्विरा ये के च स्थ व्यद्विरास्तान्त्सर्वान् जम्भयामसि

३ ६४५

॥ ७५ ॥ (अथर्व० १।३०।२)

(६४६) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः ।

सं वां भर्गासो अगमत सं चित्तानि सस्रु व्रता

२ ६४६

॥ ७६ ॥ (अथर्व० ६।१०१।१-३)

(६४७-६४९ जदग्निः । अनुष्टुप्)

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते । एवा मामभिते मनः समैतु सं च वर्तताम् १

आहं खिदाभिते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिवा रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः २

आञ्जनस्य मदुघस्य कुष्ठस्य नलदस्य च । तुरो भर्गस्य हस्ताभ्यामनुरोधेनमुद्धरे ३ ६४९

॥ ७७ ॥ (अथर्व० ६।१४१।१-३)

(६५०-६५२) विश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

वायुरेनाः समाकर्तु त्वष्टा पोषाय प्रियताम् । इन्द्र आभ्यो अग्निं ब्रवद् रुद्रो भूमे चिकित्सतु १

लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि । अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु २

यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत । एवा सहस्रपोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना ३ ६५२

अश्विसहचारी-देवगणः ।

(१) अश्विसरस्वतीन्द्राः ।

+ ॥ ७८ ॥ (६५३-६६९) (वा य. १९।३३-३५)

यस्ते रसः सम्भृतोऽओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य ।

तेन जित्वा यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम्

३३

यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।

इमं तं शुक्रं मधुमन्तमिन्दुं सोमं राजानमिह भक्षयामि

३४

यदत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रोऽपिबच्छवीभिः ।

अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि

३५ ६५५

+ वा० य० २०।५५-६६; २१।२९-४० । दै० [अग्निः] २०२५-२०३६; २०४८-२०५९

वा० य० १९।३२, ८०-५९; २०।७३-७७, ८०, ९० । दै० [इन्द्रः] २९३७-२९५३; २९५७-२९६३ ।

॥ ७९ ॥ (वा. य. २०।६७-६९)

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती ।

आ शुक्रमासुरादसु मधमिन्द्राय जग्निरे

६७

यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् ।

स बिभेद बलं मधं नमुचावासुरे सचा

६८

तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती ।

दधानाऽअभ्यनूषत हविषा यज्ञऽइन्द्रियैः

६९

॥ ८० ॥ (वा. य. २१।४८-५८)

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रेऽअश्विना ।

तेजो न चक्षुरक्षयोर्बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

४८

देवीर्द्वारोऽअश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती ।

प्राणं न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

४९ ६६०

देवीऽउषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।

बलं न वाचमास्यऽउषाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५०

देवी जोष्टी सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन् ।

श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्टीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५१

देवीऽऊर्जाहुती दुधे सुदुधेन्द्रे सरस्वत्याश्विना भिषजावतः ।

शुक्रं न ज्योति स्तनेयोरहुती धत्तऽइन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५२

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिः होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५३

देवीस्तिष्ठस्तिष्ठो देवीरश्विनेडा सरस्वती ।

शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५४ ६६५

देवऽइन्द्रो नराशः सस्त्रिवरूथः सरस्वत्यश्विभ्यामीयते रथः ।

रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५५

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णोऽअश्विभ्यां सरस्वत्या सुपिप्पलऽइन्द्राय पच्यते मधु ।

ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज

५६ ६६७

देवं ब॒र्हिर्वारि॑तीनामध्व॒रे स्ती॑र्णम॒श्विभ्या॑मूर्ण॑म्रदाः सर॑स्वत्या स्यो॒नमिन्द्र॑ ते स॒दः ।
 ईशा॑यै म॒न्युः राजा॑नं ब॒र्हिषा॑ दधुरिन्द्रि॒यं वसु॑वने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५७
 देवोऽ॒ग्निः स्विष्ट॑कृद् देवान् यक्षद् यथायथ॑ हो॒तारा॑विन्द्रम॒श्विना॑ वा॒चा वाच॑ः सर॑स्वती-
 म॒ग्निः सोम॑ः स्विष्ट॑कृत् स्विष्ट॑इन्द्रः सु॒त्रामा॑ स॒विता॑ वरु॒णो भिष॑गिष्टो देवो वन॑स्पतिः स्विष्टा
 देवाऽआ॑ज्यपाः स्विष्टोऽ॒ग्निर॑ग्निना हो॒ता हो॒त्रे स्विष्ट॑कृद् यज्ञो न दध॑दिन्द्रि॒यमूर्ज॑मपा॒चितिः
 स्व॒धां वसु॑वने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ५८ ६६१

(२) अश्विसूर्यादयः ।

॥ ८१ ॥ (वा० य० ३८।१२)

अश्वि॒ना घ॒र्म पा॑तुः हा॒र्द्वान॑म॒र्हर्दि॑वाभि॒रुति॑भिः ।
 तन्त्रा॒यिणे॒ नमो॑ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म्

१२ ६७०

(३) अश्विनौ, बृहस्पतिः ।

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ५।२६।१२)

(६७१) ब्रह्मा । परातिशक्वरी चतुष्पदा गायत्री ।

अश्वि॒ना ब्र॒ह्मणा॑ या॒तम॒र्वाश्चौ॑ वषट्कारेण॑ यज्ञं व॒र्धय॑न्तौ ।
 बृह॑स्पते ब्रह्मणा या॒ह्यर्वा॑द् यज्ञो अ॒यं स्व॑रि॒दं यज॑मानाय॒ स्वाहा॑

१२ ६७१

(४) इयेनः, अश्विनौ ।

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ३।३।४)

(६७२-६८८) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

इ॒येनो॑ ह॒व्यं न॑य॒त्वा पर॑सा—द॒न्यक्षे॒त्रे अप॑रुद्धं चर॑न्तम् ।
 अश्वि॒ना प॒न्थां कृ॑णुतां सु॒गं तं इ॒मं स॑जाता अ॒भिसं॑वि॒श्वम्

४

(५) अश्विनौ, द्यौष्पिता ।

॥ ८४ ॥ (अथर्व० ६।४।३) त्रिपदा विराड् गायत्री ।

धि॒ये स॒मश्वि॒ना प्रा॑व॒तं न उ॒रुष्या॑ णं उ॒रुज्म॒न्नप्र॑युच्छन् ।
 द्यौ॒श्पि॒त॒र्याव॑र्य दुच्छु॒ना या॑

५ ६७३

(६) बृहस्पतिः, अश्विनौ ।

॥ ८५ ॥ (अथर्व० ६।६९।१-३) अनुष्टुप् ।

गिरावरगराटेषु हिरण्ये गोषु यद्यशः । सुरायां सिच्यमानायां क्रीलाले मधु तन्मयि १
 अश्विना सारधेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती । यथा भर्गस्वतीं वाचं—मावदानि जनां अनु २ ६७५
 मयि वर्चो अथो यशो—ऽथो यज्ञस्य यत् पर्यः । तन्मयि प्रजापति—दिवि धामिव दंहतु ३

(७) सांमनस्यं, अश्विनौ ।

॥ ८६ ॥ (अथर्व० ७।५२।१-२) १ ककुम्भत्यनुष्टुप्, २ जगती ।

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः ।
 संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् १
 सं जानामहे मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन ।
 मा घोषा उत्स्थुर्बहुले विनिर्हते मेघुः पद्मदिन्द्रस्याहन्यागते २

(८) घर्मः, अश्विनौ ।

॥ ८७ ॥ (अथर्व० ७।७३।१-५, ८) १, ४ जगती, २ पथ्यावृहती, ३, ५, ८ त्रिष्टुप् ।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुहते वामिषे मधु ।
 वयं हि वां पुरुदमांसो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः १
 समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम् ।
 दुहन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दत्ता मदन्ति वेधसः २ ६८०
 स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो देवपानः ।
 तमु विश्वे अमृतांसो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति ३
 यदुस्त्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम् ।
 माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्मं पिबतं रोचने दिवः ४
 तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पर्यस्वान् ।
 मघोर्दुग्धस्याश्विना तनाया वीतं पातं पर्यस उस्त्रियोयाः ५
 हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन् ।
 दुहामश्विभ्यां पर्यो अद्भ्येयं सा वर्धतां महते सौमगाय ८ ६८४

(९) मधु, अश्विनौ ।

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ९।१।११, १६-१७, १९) अनुष्टुप् , १७ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती ।

यथा सोमः प्रातःसवने अश्विनोर्भवति प्रियः ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि प्रियताम्

११ ६८५

यथा मधु मधुकृतः संभरन्ति मधवर्धि ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि प्रियताम्

१६

यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधवर्धि ।

एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च प्रियताम्

१७

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती ।

यथा वर्चस्वतीं वाचं मावदानि जनां अनु

१९ ६८८

(१०) सिनीवालीसरस्वत्यश्विनः ।

॥ ८९ ॥ (ऋ. १०।१८४।२)

(६८९) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति ।

गर्भं ते अश्विनौ देवा वा भक्तां पुष्करस्रजा

२ ६८९



अश्विनौ-देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [५] १।२१।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 अश्विनावेह गच्छताम् ।
 अस्य सोमस्य पीतये ।
 (२८४) ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
 अश्विनावेह गच्छतम् ।
 (२९७) ५।७८।१ (सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)
 (इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
 —हवामहे ।
 अस्य सोमस्य पीतये ।
 (इन्द्रः ३३२१) ४।४९।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)
 ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 अस्य... ।
 (इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रामी)
 अस्य... ।
 (इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
 अस्य... ।
 (मरुतः ४०४-६) ८।९४।१०-१२ (बिन्दुः पूतदक्षो
 वा आङ्गिरसः । मरुतः)
 [६] १।२१।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 उभा देवा दिविस्पृशा । ...हवामहे ।
 (इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायू)
 उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।
 [७] १।२१।३ तथा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
 (४२) १।४७।३ मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
 [१०] १।३०।१८ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)
 समानयोजनो हि वां रथो दस्त्रावमर्त्यः ।
 (२८६) ५।७५।९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
 अयोजि वां वृषण्वस् रथो दस्त्रावमर्त्यः ।
 [११] १।३०।१९ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)
 चक्रं रथस्य येमथुः । परि द्यामन्यदीयते ।
 (२६०) ५।७३।३ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
 ईर्मान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः ।

- [२१] १।३४।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
 ...रथम् ।
 (२३९) ४।४५।३ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
आ रजः । —रथम् ।
 [२२] १।३४।११ आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः ।
 (५११) ८।३५।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
 विश्वेदेवैस्त्रिभिरेकादशैः ।
 [२२] १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 प्रागुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो
 भवतं सचाभुवा ।
 (१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)
 [२३] १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
 [७५] १।११२।२३ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 अवसे नि ह्ये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
 [२५] १।३६।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 मनोतरा रयीणाम् ।
 (४३२) ८।८१।२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 [२६] १।४६।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 यद् वां रथो विभिष्पतात् ।
 (४०५) ८।५।१२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३०] १।४६।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 युञ्जामाश्विना रथम् ।
 (५४०) ८।७३।१ (गोपवन आत्रेयः सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)
 [३९] १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम क्रतावृधा ।
 २।४१।४ (गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
 अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम क्रतावृधा ।
 [४०] १।४७।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 रथेना यातमश्विना ।
 (४३१) ८।८१।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

(४३४) ८।८।१४ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
अतः— ।

[४१] १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं सोममृतावृधा ।

—दाश्वांसमुप गच्छतम् ।

(४३) १।४७।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
पातं— ।

३।६१।१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
पातं— ।

७।६३।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
पातं— ।

(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो युग्रीको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

पातं— ।

(इन्द्रः ३२२४) ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
दाश्वांसमुप गच्छतम् ।

[४१; ४४] १।४७।३, ६ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अथाथ (६ सुदासे) दक्षा वसु विभ्रता ।

[४२] १।४७।४ मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।

(७) १।२२।३ तथा यज्ञं— ।

[४२] १।४७।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
युवां हवन्ते अश्विना ।

(४००) ८।५।१७ ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[४३] १।४७।५ ताभिः ष्व१सौ अवतं शुभस्पती ।

(इन्द्रः ३२०४) ८।५९ (वाल० ११) । ३
(सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)

ताभिर्दाश्वासमवतं शुभस्पती ।

[४५] १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य
रश्मिभिः ॥

(४३४) ८।८।१४ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

१।१३७।२ (परच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

८।१०१।२ (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

[४६] १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु
सवनेदुप ।

इषं पृथ्वन्ता सुकृते सुदानव आ वहिःसीदतं नरा ॥

(इन्द्रः २४२) ८।४।१४ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो— ।

१।९२।३ (गौतमो राहुगणः । उषाः)

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।

(५७३) ८।८७।२ (कृष्ण आङ्गिरसो युग्रीको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

आ वहिः सीदतं नरा ।

(५७५) ८।८७।४ (कृष्ण आङ्गिरसो... । अश्विनौ)

आ वहिः सीदतं नरा ।

[४७] १।४७।९ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।

(४७६) ८।२२।५ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)

...तेन नासत्या गतम् ।

(४२२) ८।८।२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

रथेन सूर्यत्वचा ।

[४७] १।४७।९ मध्वः सोमस्य पीतये ।

(५५८-५६३) ८।८५।१-९ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)

[४९] १।९२।१३ (गौतमो राहुगणः । अश्विनौ)

अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।

(३७९) ७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

(५३०) ८।३५।२२ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)

अर्वाग् रथं नि यच्छतं ।

[५०] १।९२।१७ (गौतमो राहुगणः । अश्विनौ)

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ।

(१६६) १।१५७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

[५१] १।९२।१८ (गौतमो राहुगणः । अश्विनौ)

दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

(२७९) ५।७५।२ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)

(३९४) ८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

(५७६) ८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो युग्रीको वा वासिष्ठः,
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

[५१] १।९२।१८ उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ।

(इन्द्रः ११०) ८।१।२४ (मेधातिथि-मेध्यातिथी
काण्वौ । इन्द्रः)

[५२-७४] १।११२।१-२३ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ।

[५६] १।११२।५ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

याभी रेभं निवृत्तं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दशे ।

(१३२) १।११८।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

उद्वन्दनमैरयतं दंसनाभिरुद् रेभं ।

[५९] १।११२।८ याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ।

(५९५) १०।३९।१३ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

वर्तिकां...युवं शचीभिर्ग्रसिताममुञ्चतम् ।

[७१] १।११२।२० (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)

भुज्युं याभिरवथो याभिरभिगुम् ।

(४८१) ८।२२।१० (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)

याभिः पक्थमवथो याभिरभिगुम् ।

[७५] १।११२।२४=(२३) १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)

वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।

[७६] १।११२।२५ तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-

दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।

= (अग्निः २७१) १।९४।१६; (१८७८) १।९५।११;

(१८७८) १।९६।९; (१७२६) १।९८।३

= (इन्द्रः ९७५) १।१००।१९; (८२७) १।१०१।११;

(८३८) १।१०२।११; (८४६) १।१०३।८; (३०२०)

१।१०८।१३; (३०२८) १।१०९।८

= १।१०५।१९ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)

= १।१०६।७=१।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

= १।११०।९=१।१११।५ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)

= १।११३।२० (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)

= १।११४।११ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)

= १।११५।६ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

(सोमः ९१४) ९।९७।५८ (कुत्स आङ्गिरसः । सोमः)

[८३] १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं नरा स्तुवते पञ्जियाय कक्षीवने ।

कारोतराच्छपादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असि-

ञ्चतं सुरायाः ।

(१०८) १।११७।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय ।

(१०७) १।११७।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

तद् वां नरा शंस्य पञ्जियेण कक्षीवता... ।

शपादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भाँ

असिञ्चतं मधूनाम् ।

[९२] १।११६।१६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्जाश्वं तं
पितान्धं चकार ।

तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आघत्तं ।

(११८) १।११७।१७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः...पित्रा ।

आक्षी ऋज्जाश्वे अश्विनावघत्तं...विचक्षे ।

(११९) १।११७।१८ चक्षदानं ऋज्जाश्वः शतमेकं
च मेषान्

[१०३] १।११७।२ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

यो वामाश्विना मनसो जवीयान् ।

येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं ।

(२०२) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

मनसो यो जवीयान् ।

येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं ।

[१०७] १।११७।६=(८३) १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो
दैर्घतमसः । अश्विनौ)

शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् (७सुरायाः) ।

[१०८] १।११७।७=(८३) १।११६।७ युवं नरा स्तुवते
कृष्णियाय (७ पञ्जियाय)

[११०] १।११७।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।

(३६६) ७।७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

[११८] १।११७।७=(९२) १।११६।१६ शतं मेषान्
वृक्ये मामहानं (१६ चक्षदानम्) ।

[१२२] १।११७।२० (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरु-
मित्रस्य योषाम् ।

(५८९) १०।३९।७ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरु-
मित्रस्य योषणाम् ।

[१२२] १।११७।२१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तो रु ज्योतिश्चकथु-
रायाय ।

(अग्निः १७९९) ७।५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्व-
नरोऽग्निः)

त्वं दस्युरोक्थो अम आज उरु ज्योतिर्जनय-
त्रार्याय ।

[१२४] १।११७।२३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
अपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् ।

(इन्द्रः ३२७५) ६।७१।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रासोमौ)
—श्रुत्यं रराथे ।

[१२६] १।११७।२५ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
पतानि वामश्विना वीर्याणि... ।

ब्रह्म कृण्वन्तो... सुवीरासो विदधमा वदेम ।
(२२२) २।३९।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)

पतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म... अकन् ।
..... वदेम विदधे सुवीराः ।

(इन्द्रः ११३६) २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
सुवीरासो विदधमा वदेम ।

(सोमः ११४८) ८।४८।१४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः)
सुवीरासो विदधमा वदेम ।

[१२७] १।११८।१=१।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
सुमृळीकः स्वर्वा यात्वर्वाङ् ।

[१२७] १।११८।१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो
वृषणा वातरंहाः ।

(२०२) १।१८३।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा
यत्त्रिचक्रः ।

[१२९] १।११८।३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं
शृङ्गोऽकमद्रेः ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठाहुर्विप्रासो
अश्विना पुराजाः ॥

(२२८) ३।५८।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)
सुगुमिरश्वैः सुवृता रथेन... ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति... अश्विना हवन्ते ॥

[१३०] १।११८।४ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु... ।

... अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ॥

(३२३) ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा अभि प्रयो
नासत्या वहन्तु ।

[१३२] १।११८।३=(५६) १।११२।५ उद् वन्दनमैरतं
दंसनाभिः (५ खर्हसे) ।

[१३५] १।११८।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजुतमहिह्नमश्विना-

दत्तमश्वम् ।

जोहूत्रमर्थो... ।

(५९२) १०।३९।१० (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)

युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं ।

चर्कृत्यं ददधुः ।

[१६०] १।१३९।३ युवोर्विश्वा अधि श्रियः ।

(इन्द्रः २०१६) ८।९२।२० (श्रुतकक्षः सुकक्षो
वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियः ।

[१६३] १।१५७।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

आयुक्षातामश्विना यातवे रथं ।

१०।३५।६ (लुषो धानाकः । विश्वे देवाः)

आयुक्षातामश्विना तूतुजि रथं ।

[१६६] १।१५७।४=(५०) १।९२।१७

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ।

[१६६] १।१५७।५=(२२) १।३४।११

प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं
द्वेषो भवतं सचाभुवा ।

[१८४] १।१८०।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।

(२५१) ४।४४।१ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)

[१९९] १।१८२।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।

(इन्द्रः ३२८०) ७।१०४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः [रक्षोघ्नं] ।
इन्द्रासोमौ)

—प्र विध्यतम् ।

[२०२] १।१८३।१=(१२७) १।११८।१

त्रिवन्धुरो वृषणा यत्त्रिचक्रः (१ वातरंहाः) ।

[२०४] १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यो रथो... ।

येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तन-
याय त्मने च ।

(२१२) १।१८४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यातं वर्तिस्तनयाय त्मने च ।

६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

...यो रथो...

येन नरा— ।

[२०५] १।१८३।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्त्राविमे
वां निधयो मधूनाम् ।

- (५३९) ८।५७ (बाल० ९) । ४ (मेभ्यः काण्वः । अश्विनौ)
 अयं वां भागो निहितो यज्ञत्रा ।
 (२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)
 दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम् ।
 [२०६] १।१८३।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
 मे ह्वं नास्त्योप यातम् ।
 (५५५) ८।८५।१ (कृष्ण आजिरसः । अश्विनौ)
 आ मे ह्वं नास्त्या ।
 [२०७] १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६ = (३७३) ७।७३।१
 अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।
 १।९२।६ (गीतमो राक्ष्मणः । उषाः)
 अतारिष्म तमसस्पारमस्य ।
 [२०७] १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
 अश्विनौ)

- अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां
 स्तोमो अश्विनावधायि ।
 एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेवं वृजनं
 जीरदानुम् ॥
 (२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)
 एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।
 [२०९] १।१८४।२ अस्ते ऊ षु वृषणा मादयेधाम् ।
 (अग्निः ७४८) ४।१४।४ अस्मिन् यज्ञे वृषणा ।
 [२१२] १।१८४।५ = (२०४) १।१८३।३
 यातं वर्तिस्तनयाय तमने च ।
 ६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
 येन नरा...वर्तिर्याथस्तनयाय... ।
 [२१३] १।१८४।६ = (२०७) १।१८३।६

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [२२२] २।३९।८ = (१२६) १।११७।२५
 एतानि वामश्विना वर्धनानि (२५ वीर्याणि) ।
 [२२४] २।४१।८ (गृत्समदः सौनकः । अश्विनौ)
 न यत् परो नान्तर... ।
 दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ।

- (३१८) ६।६३।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अश्विनौ)
 न यत् परो नान्तरस्तुतुयात् ।
 ८।१८।१४ (हरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [२२८] ३।५८।३ = (१२९) १।११८।३
 [२३०] ३।५८।५ = (२०७) १।१८३।६ = (२१३) १।१८४।६
 (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
 [२३०] ३।५८।५ = (२०५) १।१८३।४

- [२३३] ३।५८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः । अश्विनौ)
 परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।
 १।११५।३ (कृत्स्न आजिरसः । सूर्यः)
 परि द्यावापृथिवी यान्ति सद्यः ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

- [२५०] ४।४३।७ = (२५७) ४।४४।७
 (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)
 इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे
 सुमतिर्वाजरत्ना ।
 उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो
 नास्त्या युवद्विक् ॥
 [२५१] ४।४४।१ = (१८४) १।१८०।१०
 तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।
 [२५४] ४।४४।४ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)
 दधथो रत्नं विधते जनाय ।

- ७।७५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषाः)
 दधाति रत्नं विधते जनाय ।
 [२५५] ४।४४।५ हिरण्येन सुवृता रथेन ।
 १।३५।२ (हिरण्यस्तूप आजिरसः । सविता)
 [२५५] ४।४४।५ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)
 —यातं— ।
 मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।
 (३५२) ७।६९।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
 ...यातम् ।
 मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

[२५६] ४।४४।६ नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं
(अग्निः ९९२) ६।६।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । वैश्वानरोऽग्निः)
चन्द्रं रयिं— ।

[२५७] ४।४४।७ = (२५०) ४।४३।७
[२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।
७।६०।४ (वसिष्ठो मित्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
—मधुमन्तो अस्थुः ।

[२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः अश्विनौ)

रथा अश्वस उषसो व्युष्टिषु ।
(अग्निः ७४८) ४।१४।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
—उषसो व्युष्टौ ।

[२३८] ४।४५।२ = (२४२) ४।४५।६
स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः ।
[२३९] ४।४५।३ = (२१) १।३४।१०
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
[२४१] ४।४५।५ सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ।
(सोमः १०००) ९।१०७।१ सुषाव सोममद्रिभिः

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२५८] ५।७३।१ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
यदन्तरिक्ष आ गतम् ।
(इन्द्रः ९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
— आ गहि

[२५९] ५।७३।२ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
इह त्या पुरुभूतमा ।
(४७४) ८।२२।३ सौमरिः काण्वः । अश्विनौ)
[२६०] ५।७३।३ = (११) १।३०।१९ चक्रं रथस्य येमथुः ।
[२६२] ५।७३।५ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठत् ।
(४३०) ८।८।१० (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठत् ।

[२६७] ५।७३।१० इमा ब्रह्माणि वर्धना ।
(इन्द्रः ५६९) ८।६२।४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।

[२७७] ५।७४।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
अश्विना यद् कर्हिं चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् ।
(५४४) ८।७३।५ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ।
अश्विनौ)

यदय कर्हिं कर्हिं चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् ।
[२७८-८६] ५।७५।१-२ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
माध्वी मम श्रुतं हवम् ।
[२७९] ५।७५।२ = (५१) १।९२।१८ = (४२१) ८।८।१
दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

[२८०] ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
आ नो... अश्विना गच्छतं युवम् ।

८ [दै. अश्विनौ]

रथा हिरण्यवर्तनी ।

(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो... अश्विना गच्छतं युवम् ।
दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

(५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)
आ मे... अश्विना गच्छतं युवम् ।

[२८४] ५।७५।७ = (५) १।२२।१ = (२९७) ५।७८।१
अश्विनावेह गच्छतं १।२२।१ गच्छताम् ।

[२८४] ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
नासत्या मा वि वेनतम् ।

(२९७) ५।७८।१ (सप्तवध्रिरात्रेयः । अश्विनौ)
[२८६] ५।७५।९ = (१०) १।३०।१८ रथो दक्षावमर्त्यः ।

[२८९] ५।७६।३ मध्यादिनं उदिता सूर्यस्य ।
५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)

[२९०] ५।७६।४ आ नो देवो बृहतः पर्वतादा ।
५।४३।११ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)

[२९१] ५।७६।५ = ५।४२।१८ = ५।४३।१७
(भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)

[२९६] ५।७७।५ = ५।४२।१८ = (२९१) ५।७६।५
[२९७] ५।७८।१ = (५) १।२२।१ = (२८४) ५।७५।७

[२९९] ५।७८।१-३ हंसविष पततमा सुतो उप ।
[२९९] ५।७८।३ जुषेथां यज्ञमिष्टये ।

५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[३०४] ५।७८।८ यथा वातो यथा वनम् ।
१०।२३।४ धूनोति वातो यथा वनम् ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [३०८] दाद२।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
तां ह त्वद् वर्तियदरभ्र..... ।
.....परि... ।
(३१८) दाद३।२ परि ह त्वद् वर्तियथो...यत्... ।
[३१०] दाद२।५ बभूवतुर्गुणते चित्रराती ।
(३१६) दाद२।११ दुरो वर्त गृणते चित्रराती ।
[३१८] दाद३।२ = (२२४) २।४१।८ न यत् परो नान्तरः ।
[३२०] दाद३।४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)

- प्र रात्रिरेति जूर्णिनी घृताची ।
(अग्निः ६८४) ४।६।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
यता सुजूर्णि रात्रिनी घृताची ।
[३२३] दाद३।७ = (१३०) १।११।८।४
अग्निं प्रयो नासत्या वहन्तु (४ वहन्ति) ।
[३२३] दाद३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)
—प्र वां रथो मनोजवा जघर्जि ।
(३४०) ७।६।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
...मनोजवा इत्यति ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [३३३] ७।६।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
आ वां लोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो
देववीति गमेम ।
(इन्द्रः ३१९६) ७।८४।५ = (इन्द्रः ३२०१) ७।८५।५
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
प्रावत् लोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीति गमेम ।
[३३७] ७।६।१० = (३५४) ७।६।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
अश्विनौ)
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्ट वर्तिरश्विना-
विरावत् ।
अतं रत्नानि जरतं च सूरिन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
[३४०] ७।६।३ = (३२३) दाद३।७
[३४८] ७।६।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
विश्वो येन गच्छथो देवयन्तीः ।
(६१२) १०।४१।२ (सुहस्त्यो घौषेयः । अश्विनौ)
गच्छथो यज्वरीर्नरा ।
[३५२] ७।६।६ = (२५५) ४।४४।५
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।
[३५४] ७।६।८ = (३३७) ७।६।१० = (३४६) ७।६।९
= (३६१) ७।७।७ = (३६७) ७।७।६ = (३७२, ३७७)
७।७२-७३।५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
(अग्निः १११२) ७।१।२०, २५; (११३३)
७।३-४।१०; (११४८) ७।७-८।७; (११६०) ७।९।६;
(११७०) ७।११।५; (११७३) ७।१२-१३।३; (११७६)
७।१४।३; (१६८२) १०।१२२।८ ।
(इन्द्रः २१५०) ७।१९।११; (२१६०) २०।१०;

- (२१७०) २१।१०; (२१७९) २२।९; (२१८५)
२३।६; (२१९१) २४।६ (२१९७) २५।६
(२२०२) २६।५; (२२०७) २७।५; (२२१२) २८।५;
(२२१७) २९।५; (२२२२) ३०।५; (३०७८)
२३।८; (३१९६) ८४।५; (३२०१) ८५।५; (३२३५)
९०।७; (३२४०) ९१।७; (३३२५) ९७-९८।१०, ७।
(सोमः ८०५) ९।९०।६; (८५२, ८६२) ९७।३, ६।
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५; (३७६) ५७।७; (३८२)
५८।६। (विश्वे देवाः) ७, ३४, २५; ३५, १५; ३६, ९,
३७, ८; ३९-४१, ७; ४२, ६; ४३, ५। ४८, ४;
१०, ६५-६६, १५ । (सविता ७।४५।४ (रुद्रः)
७।४६।४। (आपः) ७।४७।४। (आदिह्याः) ७।५१।३।
(यावापृथिवी) ७।५३।३ (वास्तोष्पतिः) ७।५४।३;
(मित्रावरुणौ) ७।६०।१२; ६१, ७; ६२-६३, ६;
६४-६५, ५। (उषाः) ७।७५।८; ७६, ७, ७७, ६;
७८-७९।५, ८०, ३ (वरुणः) ७।८६।८; ८७-८८,
७। (वायुः) ७।९२।५। (सरस्वती) ७।९५।६।
(विष्णुः) ७।९९-१००।७। (पर्जन्यः) ७।१०१।६
[३५९] ७।७।५ प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।
७।६५।४ (मैत्रावरुणिवसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
प्रति वामत्र वरमा जनाय ।
[३५९] ७।७।५ अस्मे वामस्तु सुमतिश्च निष्ठा ।
(मरुतः ३७३) ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रा० । मरुतः)
[३६१] ७।७।७ = (३६७) ७।७।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृत्किं वृषणा जुषेयाम् ।
इमा ब्रह्माणि युवयूयन्मन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[३७५] ७।७३।३ इमां सुवृत्तिं वृषणा जुषेयाम् ।
 [३६६] ७।७१।५ = (११०) १।११७।९
 नि पेदव ऊहथुराश्रुमश्वम् ।
 [३६७] ७।७१।६ = (३६१) ७।७०।७
 [३७१] ७।७२।४ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् ।
 (अग्निः ६८३) ४।६।२ ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेद् ।
 (अग्निः ७४१) ४।१३।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 (अग्निः ७४६) ४।१४।२ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेद् ।
 [३७२] ७।७२।५ = (३७) ७।७।७३।५
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
 आ पश्चाताज्ञासत्या पुरस्तादाश्विना यातमभरादुदक्ताव ।
 आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः
 सदा नः ।

[३७३] ७।७३।१ = १।९२।६ = (२०७) १।१८३।६
 = (२१३) १।१८४।६
 [३७५] ७।७३।३ = (३६१) ७।७०।७
 [३७६] ७।७३।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
 मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ।
 (३८०) ७।७४।३ मा नो मर्धिष्टमा गतम् ।
 [३७७] ७।७३।५ = (३७२) ७।७२।५
 [३७९] ७।७४।२ = (४९) १।९२।१६
 अर्वाग्र रथं समनसा नि यच्छतम् ।
 [३७९] ७।७४।२ = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
 (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
 [३८०] ७।७४।३ = (३७६) ७।७३।४

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३८५] ८।५।२ = (इन्द्रः ३२२४) ४।४६।५
 (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
 [३८७] ८।५।४ ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 पुरुमन्त्रा पुरुवस् ।
 (४३२) ८।८।१२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 [३८८] ८।५।५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 गन्तारा दाक्षुषो गृहम् ।
 (इन्द्रः ३३०) ८।१३।१० (नारदः काण्वः इन्द्रः)
 — गृहं नमस्विनः ।
 (४७४) ८।२२।३ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३८९] ८।५।६ घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
 ३।६१।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
 [३९०] ८।५।७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 आ नः सोममुप द्रवत् ।
 (३९०) ८।४९ (वाल० १)।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
 [३९२] ८।५।९ उत नो गोमतीरिषः ।
 (सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भर्गवः ।
 पवमानः सोमः)
 ५।७२।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 [३९४] ८।५।११ = (५१) १।९२।१८ दद्या हिरण्यवर्तनी ।
 [३९४] ८।५।११ पिबतं सोम्यं मधु ।
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
 (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)

[३९५] ८।५।१२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 छर्विर्यन्तमदाभ्यम् ।
 (५६२) ८।८।५५ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 [३९८] ८।५।१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 अस्मे आ वहतं रयिं
 पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।
 (मरुतः ५८) ८।७।१३ (पुनर्वसुः काण्वः । मरुतः)
 आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।
 [४००] ८।५।१७ = ३।५९।९ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
 [४००] ८।५।१७ हविर्मन्तो अरंकृतः ।
 १।१४।५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
 [४००] ८।५।१७ = (४२) १।४७।४ युवां हवन्ते अश्विना ।
 [४०१] ८।५।१८ = (इन्द्रः २०८९) ६।६५।३०
 सोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
 [४०१] ८।५।१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः अश्विनौ)
 सोमो वाहिष्ठो...।
 युवाभ्यां भूत्वश्विना ।
 (५०५) ८।२६।१६ (विश्वमना नैयवः
 व्यश्नो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)
 वाहिष्ठो...सोमो ।
 युवाभ्यां भूत्वश्विना ।
 [४०३] ८।५।२० = (४१३) ८।५।३० तेन नो वाजिनीवस् ।
 [४०५] ८।५।२२ = (२६) १।४६।३३
 यद् वां रथो विभिष्यतात् ।

- [४११] ८।५।२८ = (इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [४१२] ८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना ।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
(४७६) ८।२२।५ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
रथो... त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।
...द्यावापृथिवी... ।
(इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४ रथं हिरण्यवन्धुरम्... ।
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
- [४१३] ८।५।३० (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(४२६) ८।८।६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
- [४१८] ८।५।३५ हिरण्ययेन रथेन ।
१।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
हिरण्ययेन... रथेना ।
- [४२१] ८।८।१ आ नो विश्वामिच्छतिभिः ।
(इन्द्रः २१८९) ७।२४।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । इन्द्रः)
(४३८) ८।८।१८ = (५७४) ८।८।७३
आ वां विश्वामिच्छतिभिः ।
- [४२१] ८।८।१ = (२८०) ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)
- [४२१] ८।८।१ = (५१) १।९।१८
(गौतमो राहुगणः । अश्विनौ)
- [४२१] ८।८।१ = (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
- [४२२] ८।८।२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नूनं यातमश्विना ।
(४५७) ८।९।१४ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
(५७६) ८।८।५ कृष्ण (आङ्गिरसो युष्मन्को वा वासिष्ठः
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
- [४२२] ८।८।२ = (४७) १।४७।९
- [४२४] ८।८।४ = (४२८) ८।८।८
पुत्रः कण्वस्य वामिह (८ वामृषिः) ।
- [४२५] ८।८।५ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
(इन्द्रः ४३५) ८।३४।११ (नीगातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आ नो यातमुपश्रुति ।
- [४२५] ८।८।५ अश्विना सोमपीतये ।
(५३५) ८।४२।६ नासत्या सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७-३०९९) ८।३८।७-९

- (शावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
- [४२६] ८।८।६ जुहुरेऽवसे नरा ।
१।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
जुहुरेऽवसे महि ।
- [४२६] ८।८।६ = (५३०-५३२) ८।३५।२२-२४
आ यातमश्विना गतम् ।
- [४२६] ८।८।६ = (४१३) ८।५।३० उपेमां सुष्टुतिं मम ।
- [४२७] ८।८।७ दिवश्चिद् रोचनादधि ।
१।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
- [४२७] ८।८।७ स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१०
(बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
- [४२८] ८।८।८ = (४३५) ८।८।१५ = (४३९) ८।८।१९
गीर्भिर्वसो अवीवृषत् ।
- [४३०] ८।८।१० = (२६२) ५।७३।५
आ यद् वां योषणा (५ सूर्या) रथमतिष्ठत् ।
- [४३१] ८।८।११ = (४०) १।४७।२ रथेना यातमश्विना ।
- [४३२] ८।८।१२ = (३८७) ८।५।४ पुरुमन्त्रा पुरुषम् ।
- [४३२] ८।८।१२ = (२५) १।४६।२ मनोतरा रथीणाम् ।
- [४३३] ८।८।१३ = ७।९४।३ मा नो रीरधत् निदे ।
(इन्द्रः ३०८१) ७।९४।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी)
- [४३४] ८।८।१४ = (४५) १।४७।७
(प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
- [४३४] ८।८।१४ = (४०) १।४७।२
- [४३६] ८।८।१६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
वसूयाद् दानुनस्पती ।
१।१३६।३ (परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
आदित्या दानुनस्पती ।
२।४१।६ (गृत्समदः सौनकः । मित्रावरुणौ)
आदित्या..... ।
- [४३७] ८।८।१७ आ नो गन्तं रिशादसा ।
५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [४३८] ८।८।१८ = (५७३) ८।८।७३ =
(४२१) ८।८।१ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४
वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
आ वां (८।८।१, ७।२४।४ नो) विश्वामिच्छतिभिः ।
- [४३८] ८।८।१८ = (५७४) ८।८।७३ =
(अग्निः १०३) १।४५।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
प्रियमेधा अहुषत् ।

- [४३८] ८।८।१८ राजन्तावध्वराणाम् ।
 (अग्निः ८; १०३) १।१।८; १।४१।४ राजन्तमध्वराणाम् ।
 (अग्निः ३८) १।२७।१ सत्राजन्तमध्वराणाम् ।
- [४४४] ८।९।१ प्रास्यै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।
 १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
 प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
- [४४६] ८।९।३ = (४५२) ८।९।९ शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
 एवेत् काण्वस्य बोधतम् ।
 (४६६) ८।१०।२ (प्रगाथो घोरः काण्वः । अश्विनौ)
- [४५६] ८।९।१३ हुवेथ वाजसातये ।
 (इन्द्रः २७९) ८।९।३७; (इन्द्रः ४२८) ८।३४।४;
 (इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ हवन्ते वाजसातये ।
 (इन्द्रः ३३३०) ६।५७।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
 इन्द्रापूर्वणौ)
 हुवेम वाजसातये ।
 (५७७) ८।८७।६ विप्रासो वाजसातये ।
- [४५७] ८।९।१४ = (४२२) ८।८।२ = (५७६) ८।८७।५
 आ नूनं यातमश्विना ।
- [४६१] ८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
 सं सूर्येण रोचसे ।
 (सोमः १६।९।२।६ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 रोचते ।
- [४६६] ८।१०।२ = (४४६) ८।९।३ = (४५२) ८।९।९
- [४६७] ८।१०।३ देवेष्वध्याप्यम् ।
 १।१०।५।३३ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)
 देवेष्वध्याप्यम् ।
- [४७२] ८।२२।१ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।
 (५९३) १०।३९।११ (काक्षीवति घोषा । अश्विनौ)
- [४७३] ८।२२।२ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 भुज्युं वाजेषु पूर्यम् ।
 (इन्द्रः १८३६) ८।४६।२० (वशोऽश्व्यः । इन्द्रः)
- [४७४] ८।२२।३ = (२५९) ५।७३।२ इह त्या पुरुभूतमा ।
- [४७४] ८।२२।३ अर्वाचीना स्ववसे करामहे ।
 (इन्द्रः २५४४) १०।३८।४ (मुष्कवानिन्द्रः । इन्द्रः)
 अर्वाक्षमिन्द्रमवसे करामहे ।
- [४७४] ८।२२।३ = (३८८) ८।५।५ = (इन्द्रः ३३०) ८।१३।१०
 गन्तारा वाशुषो गृहम् ।
- [४७६] ८।२२।५ = (४११) ८।५।२८
 (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)

- [४७६] ८।२२।५ = (४७) १।४७।९ तेन नासत्या गतम् ।
- [४७९] ८।२२।८ आ यातं सोमपीतये ।
 (इन्द्रः ३२२८) ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [४७९] ८।२२।८ पिबतं वाशुषो गृहे ।
 (इन्द्रः ३२२५) ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [४८०] ८।२२।९ रथे कोशे हिरण्यये ।
 (मरुतः ८९) ८।२०।८ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
- [४८१] ८।२२।१० = (७१) १।११२।२०
 (कुत्सः आङ्गिरसः । अश्विनौ)
- [४८५] ८।२२।१४ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवस् ।
 (अग्निः १३९३) ८।६०।८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 ... रिपवे रक्षस्विने ।
- [४८९] ८।२२।१८ विश्वा वामानि धीमहि ।
 ५।८२।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
 (अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
- [४९८] ८।२६।९ (विश्वमना वैयश्वः व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)
 वयं हि वां हवामहे ।
 (५७७) ८।८७।६ (कृष्ण आङ्गिरसो युञ्जीको वा
 वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
- [५००] ८।२६।१२ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १।४०।५ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)
 यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ७।६६।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
 यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (इन्द्रः ३१८१; ३१९१) ७।८२।१०; ८।३।१०
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
 अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (अग्निः १२३९) येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।३६।१ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
 यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।६५।१, २ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 अमिरिन्द्रो (९ इन्द्रवायू) वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।९२।६ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
 तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
- [५०५] ८।२६।१६ = (४०१) ८।५।१८
 युवाभ्यां भूत्वश्विना ।
- [५०९] ८।३५।१ आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचामुवा ।
 २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
- [५०९-२९] ८।३५।१-२१ सजोषसा उषसा सूर्येण च ।

- [५०९-११] ८।३५।१-३ सोमं पिबतमश्विना ।
 [५११] ८।३५।३ = (२२) १।३४।११
 (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 [५१२-१४] ८।३५।४-६ विश्वे देवौ सवनाव गच्छतम् ।
 [५१२-१४] ८।३५।४-६ इषं नो वोळ्हमश्विना ।
 [५१५-१७] ८।३५।७-९ सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः ।
 [५१५-१७] ८।३५।७-९ त्रिवर्तिर्यातमश्विना ।
 [५१८-२०] ८।३५।१०-१२ प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
 [५१८-२०] ८।३५।१०-१२ ऊर्जं नो धत्तमश्विना ।
 [५२१-२३] ८।३५।१३-१५ मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
 [५२१-२३] ८।३५।१३-१५ आदित्यैर्यातमश्विना ।
 [५२४-२६] ८।३५।१६-१८ हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
 [५२४-२६] ८।३५।१६-१८ सोमं सुन्वतो अश्विना ।
 [५२७-२९] ८।३५।१९-२१ श्यावाश्वस्य सुन्वन्तो मदयुता ।
 [५२७-२९] ८।३५।१९-२१ अश्विना तिरोअह्वयम् ।
 [५३०] ८।३५।२२ = (४९) १।९२।१६ = (३७९) ७।७४।२
 अर्वाग्रथं (१।९२।१६; ७।७४।२ समनसा) नि यच्छतम् ।
 [५३०] ८।३५।२२ = (३७९) ७।७४।२ = (३९४) ८।५।११
 = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)
 (इन्द्रः १८०२) ८।२४।१३ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
 पिबति सोम्यं मधु ।
 [५३०-३२] ८।३५।२२-२४ = (४२६) ८।८।६
 = (३९) १।४७।१ आ यातमश्विना
 गतमवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ।
 [५३३] ८।३५।२३ विवक्षणस्य पीतये ।
 (इन्द्रः ११) ८।१।२५ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
 [५३३-३५] ८।४२।४-६ = (४२५) ८।८।५
 नासत्या (८।८।५ अश्विना) सोमपीतये ।
 (इन्द्रः ३०९७-२९) ८।३८।७-९ इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
 [५३५] ८।४२।६ (नामाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा ।
 अश्विनौ)
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
 नासत्या सोमपीतये ॥
 (इन्द्रः ३०९९) (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
 इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥
 [५३७] ८।५७ (बाल० ९) । २ युवां देवास्त्रय एकादशासः ।
 (सोमः ८१५) ९।९२।४ (कश्यपो मारीचः । सोमः)
 विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।

- [५३९] ८।५७ (बाल० ९) । ४ अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।
 (२०५) १।१८३।४ अयं वां भागो निहित इयं गीः ।
 [५४०] ८।७३।१ = (३०) १।४६।७ युञ्जामाश्विना रथम् ।
 [५४०-५७] ८।७३।१-१८ अन्ति षद्भूतु वामवः ।
 [५४४] ८।७३।५ = (२७७) ५।७४।१० (पौरः आत्रेयः । अश्विनौ)
 [५४९] ८।७३।१० शृणुतं म इमं हवम् ।
 २।४१।१३ (गृत्समदः सौनकः । विश्वे देवाः)
 = ६।५२।७ (ऋजिथाः भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
 शृणुता म इमं हवम् ।
 (५५९) ८।८५।२ इमं मे शृणुतं हवम् ।
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ इन्द्राग्नी शृणुतं हवम् ।
 [५५३] ८।७३।१४ = (इन्द्रः ३०६९) ६।६०।१४
 आ नो गव्येभिरश्व्यैः ।
 [५५७] ८।७३।१८ पुरं न धृणवा रुज ।
 (सोमः १०३१) ९।१०८।६ वर्माव धृणवा रुज ।
 [५५८] ८।८५।१ = (२०६) १।१८३।५
 आ मे हवं नासत्योप यातम् ।
 [५५८] ८।८५।१ = (२८०) ५।७५।३ = (४२१) ८।८।१
 अश्विना गच्छतं युवम् ।
 [५५८-६६] ८।८५।१-२ = (४७) १।४७।९
 मध्वः सोमस्य पीतये ।
 [५५९] ८।८५।२ = (५४९) ८।७३।१० =
 (विश्वे देवाः) २।४१।१३ = (विश्वे देवाः) ६।५२।७
 [५६१] ८।८५।४ शृणुतं जरितुर्हवम् ।
 (इन्द्रः ३२७) ८।१३।७ शृणुयी — ।
 (इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
 [५६२] ८।८५।५ = (३९५) ८।५।१२ छर्दियन्तमदाभ्यम् ।
 [५६३] ८।८५।६ = (३८८) ८।५।५ = (४७४) ८।२२।३
 [५६७-६९] ८।८६।१-३ ता वां विश्वको हवते तनूकृथे ।
 [५६७-७१] ८।८६।१-५ मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ।
 [५७३] ८।८७।२ (कृष्ण आङ्गिरसो युन्नीको वा वासिष्ठः प्रियमेध
 आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
 पिबतं धर्मं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं नरा ।
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
 (५७५) ८।८७।४ पिबतं सोमं... सीदतं सुमत् ।
 (६०९) १०।४०।१३ (काक्षीवति घोषा । अश्विनौ)
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
 [५७३] ८।८७।२ = (४६) १।४७।८ आ बर्हिः सीदते नरा ।
 [५७४] ८।८७।३ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४
 = (४२१) ८।८।१ = (४३८) ८।८।१८ .

- [५७४] ८।८७।३ = (अग्निः १०३) १।४५।४ =
 (४३८) ८।८।१८ मियमेधा अहूषत ।
 [५७५] ८।८७।४ = (४६) १।४७।८ = (५७३) ८।८७।२
 = (अग्निः १९२४) १।१४२।७
 [५७६] ८।८७।५ = (४२२) ८।८।२ = (४५७) ८।९।१४
 आ नूनं यातमश्विना ।
 [५७७] ८।८७।५ = (इन्द्रः ३३१) ८।१३।११
 अश्वेभिः प्रुषितसुभिः ।
 [५७८] ८।८७।५ = (५१) १।९२।१८ = (२७९) ५।७५।२
 = (३९४) ८।५।११ = (४२१) ८।८।१
 [५७९] ८।८७।५ = (४१) १।४७।३ =

- (मित्रावरुणौ) ३।६२।१८ = (मित्रावरुणौ) ७।६।१६९
 [५७७] ८।८७।६ = (५९८) ८।२६।९ वयं हि वां हवामहे ।
 [५७८] ८।१०१।७ प्रति हव्यानि वीतये ।
 ८।१०१।१० (जमदग्निर्भर्गवः । वायुः)
 [५७९] ८।१०१।८ गृणाना जमदग्निना ।
 ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
 ७।९६।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सरस्वती)
 गृणाना जमदग्निवत् ।
 (सोमः ४४१) ९।६२।१४ गृणानो जमदग्निना ।
 (सोमः ५३२) ९।६५।२५ मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भर्गवो
 वा । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [५८३] १०।३९।४ = (इन्द्रः ७५७) १।५१।१३
 = (इन्द्रः ९९६) ८।१००।६
 विश्वेत् ता वां (ते) सवनेषु प्रवाच्या ।
 [५८९] १०।३९।७ = (१२१) १।११७।२०
 न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् (२० योषाम्) ।
 [५९२] १०।३९।१० = (१३५) १।११८।९
 (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)
 [५९३] १०।३९।११ = (४७२) ८।२२।१
 यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।

- [५९५] १०।३९।१३ = (५९) १।११२।८
 (कृत्स्न आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 [५९६] १०।३९।१४ अतक्षाम भृगवो न रथम् ।
 (इन्द्रः १४८६) ४।१६।२० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 ब्रह्मकर्मा भृगवो न रथम् ।
 [६०९] १०।४०।१३ = (५७३) ८।८७।२
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।
 [६१२] १०।४१।२ विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा ।
 (३४८) ७।६९।३ विशो येन गच्छतो देवयन्तीः ।

“ अश्विनौ-देवता-”

मन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची ।

अंशा इव १०,१०६,९; ६२२ नः भजतं चित्रमग्नः ।
 अक्षरा इव १,३४,४; १५ त्रिः पृष्ठो अस्मि पितृवतम् ।
 अक्षी इव २,३९,५; २१९ चक्षुषा यातमर्वाक् ।
 अग्निर्न चित इहः १,११२,१७; ६८ जठरस्य मज्जना पठर्वा ।
 अग्निरिव देवयोः १०,१०६,३; ६१६ दीदिवांसा ।
 अग्निम् उषाम् न १,१८१,९; १९३ जरते हविष्मान् ।
 अजा इव २,३९,२; २१६ यमा परमा सचेये ।
 अरकम् न ५,७४,५; २७२ वारिं प्र मुञ्चथः ।
 (यथा) अग्निः ८,४२,५; ५३४ विप्रः अजोहवीत् ।
 अग्नेः इव ८,३५,१९; ५२७ पूर्वस्तुतिं शृणुतम् ।
 अध्वगौ इव ८,३५,८; ५१६ सुतं सोमं पतथः ।
 अपः न १,१८०,४; १७८ क्षोदोऽवृणीतमेवे ।
 अपः न स्तयम् ७,६८,८; ३४५ अग्न्याम् अपिन्वतम् ।
 अपसा इव वस्त्रा १०,१०६,१; ६१४ धियः वि तन्वाथे ।
 अत्रिया इव वातः १,११६,१; ७७ सोमान् ह्यमिं ।
 अवनिः न १,१८१,३; १८७ प्रवत्वान् सुविताय गम्याः ।
 अश्वम् न १,११७,४; १०५ गूळहम् रेमं सं रिणीधः ।
 अश्वम् न १०,१४३,१; ६२७ अग्निं अर्थं यातवे कृणुथः ।
 अश्वम् न वाजिनम् १०,१४३,२; ६२८ अरेणवो यमस्तत ।
 अस्तम् इव १,११६,२५; १०१ जरिमाणं जगम्याम् ।
 आत्मा इव वातः १,३४,७; १८ तिस्रः [वेदीः] गच्छतम् ।
 आरङ्गरा इव १०,१०६,१०; ६२३ मधु परयेथे ।
 ह्यर्वा इव १०,१०६,४; ६१७ पुष्ट्यै ।
 इन्द्रो न शक्तिम् ४,४३,३; २४६ ईवतो ह्युन् ।
 इन्द्रमिव चर्षणीसहम् १,११९,१०; १४७ शयैरमिधुं चर्कृतम् ।
 उग्रा इव रुषा १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।
 उत्सं न १०,१४३,६; ६३२ समस्ते भूषतम् ।
 उदन्त्यजा इव १०,१०६,६; ६१९ जेमना मदेरु ।
 उपधी इव २,३९,४ २१८ नः पारयतम् ।
 उधारा इव १०,१०६,२; ६१५ फर्वरेषु श्रयेथे ।
 ऋभू न १०,१०६,७; ६२० खरमज्रा ।

एतग्वा चित न ७,७०,२; ३५६ समुद्रान् सरितः पिपतिं ।
 ओष्ठौ इव २,३९,६; २२० आस्ते मधु वदन्ता ।
 क्लीन इव जारः १,११७,१८; ११९ चक्षदानः शतमेकं च ।
 कर्णा इव १०,१०६,९; ६२२ शासुः अनु हि स्मराथः ।
 कर्णौ इव २,३९,६; २२० सुश्रुता भूतमस्ते ।
 काराधुनी इव १,१८०,८; १८२ प्रशस्तः चितयत्सहस्रैः ।
 कार्म इव १,११६,१७; ९३ अतिष्ठदर्वता जयन्ती ।
 किरणा इव १०,१०६,४; ६१७ भुज्यै (भवथः ।)
 कीनारा इव १०,१०६,१०; ६२३ स्वेदं आसिष्विदाना ।
 कुत्सः न १०,४०,६; ६०२ जरितुर्नशायथः ।
 क्रिविः न सेके ८,८७,१; ५७२ स्तोमः आ गतम् ।
 क्षुब्ध इव १०,१०६,७; ६२० मरायु अर्थेषु तर्तरीथः ।
 क्षामा इव २,३९,७; २२१ नः रजांसि समजतम् ।
 क्षामा इव सूयवसात् १०,१०६,१०; ६२३ ऊर्जा सचेथे ।
 क्षणेत्रेण इव २,३९,७; २२१ गिरः स्वधितिं सं शिशीतम् ।
 खृगला इव २,३९,४; २१८ विस्त्रसः अस्मान् पातम् ।
 गावः न ऊधमिः ८,९,१९; ४६२ अंशवः (ऊधमिः) दुष्टे ।
 गृध्रा इव वृक्षम् २,३९,१; २१५ निधिमन्तम् अञ्छ ।
 गोः न सेके १,१८१,८; १९२ पीपाय मनुषो दशस्यन् ।
 गौरा इव विद्युतम् ७,६९,६; ३५२ वृषाणा सवनोप यातम् ।
 (यवसम् अनु) गौरौ इव ५,७८,२; २९८ आगच्छतम् ।
 गौरौ इव ईरिणे ८,८७,१; ५७१ मध्वः सुतस्य पातम् ।
 गौरौ इव ईरिणम् ८,८७,४; ५७५ सुष्टुतिम् उप गन्तम् ।
 (इळहं) ग्रन्थिम् न १०,१४३,२; ६२८ अग्निम् वि ष्यतम् ।
 ग्रावाणा इव २,३९,१; २१५ तत् अर्थं जरयेथे ।
 घर्मा इव १०,१०६,८; ६२१ जठरे मधु सनेरु ।
 चक्रवाका इव २,३९,३; २१७ वस्तोः प्रति अर्वाञ्जा यातम् ।
 (कापया) जुरणा इव १०,४०,३; ५९९ वस्तोः वस्तोः प्रातः ।
 जरतोः इव पुराणवत् ८,७३,११; ५५० अन्ति षट्भूतु ।
 (युगा) जूर्णा इव १,१८४,३; २१० वच्यन्ते वा ककुहा ।
 तन्पतुः न वृष्टिम् १,११६,१२; ८८ सनये दंस उग्रम् ।

(रश्मिच्छिन्नं यथा) तृणम् अथ० ६, १०२, २; ६४८ मनः मयि ।
 तृणपती इव २, ३९, २; २१६ ऋतुविदा जनेषु ।
 दिव्यासः न गृध्राः १, ११८, ४; १३० अन्तुरः अभि प्रयः ।
 दिशं न दिष्टाम् ऋजूयेव १, १८३, ५; २०६ मे हवं उपयातम् ।
 दूतः न ६, ६३, १; ३१७ स्तोमोऽविद्वज्जमस्वान् ।
 दूतः न ७, ६७, १; ३२८ रथः अजीगः ।
 (यथा) दूतः ८, ५, ३; ३८६ तथा वाचम् ऊहिषे ।
 दूता इव २, ३९, १; २१५ हव्या जन्या पुरुत्रा ।
 दूता इव १०, १०६, २; ६१५ जनेषु यशसा स्थः ।
 (यथा चक्रुः) देवासुराः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाया ।
 (दिवि) धाम् इव अथ० ६, ६९, ३; ६७६ तत् (वर्चः) मयि ।
 द्रापिम् इव १, ११६, १०; ८६ वस्त्रि प्रासुञ्जतं च्यवानात् ।
 द्वारा इव ८, ५, २१; ४०४ अप वर्षथः ।
 धेनुः इव ८, २२, ४; ४७५ सुमतिः अस्मान् अच्छ ।
 ध्रुवसे न योनिम् ७, ७०, १; ३५५ यत् (अश्वं) आ सेदथुः ।
 नद्या इव २, ३९, ५; २१९ युवां रीतिः ।
 नभः न ८, ९, ८; ४५१ स्तोमाः वां आ लुच्यवीरत ।
 नभ्या इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 नावा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 नासा इव २, ३९, ६; २२० नः तन्वो रक्षितारा भूतम् ।
 निस्थं न सूनुम् १०, ३९, १४; ५२६ वां स्तोमं न्यमृक्षाम् ।
 निधिम् इव अपगूहम् १, ११६, ११; ८७ उद् दर्शतः दूपथुः ।
 निवना इव सिन्धवः १०, ४०, ९; ६०५ आस्मै शीयन्ते ।
 निष्कृतम् न योषणा १०, ४०, ६; ६०२ मधु आसा मरत ।
 नृपती इव १०, १०६, ४; ६१७ तुयै ।
 नैतोक्षा इव १०, १०६, ६; ६१९ तुर्करी पर्फरीका ।
 पञ्जा इव १०, १०६, ७; ६२० चर्चरम् ।
 पतरा इव १०, १०६, ८; ६२१ चचरा ।
 (वृक्षं) परशुमान् इव ८, ७३, १७; ५५६ अश्विना— ।
 परिजमाना इव १०, १०६, ३; ६१६ पुरुत्रा यजथः ।
 पर्णा मृगस्य पतरोः इव १, १८१, ७; २०० श्रोमताय कम् ।
 पशुं न नष्टमिव १, ११६, २३; ९९ दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुः ।
 पश्वा इव १०, १०६, ३; ६१६ चित्रा यजुः आ गमिष्टम् ।
 पादा इव २, ३९, ५; २१९ तन्वे शम्भविष्टा ।
 पादा इव १०, १०६, ९; ६२२ गाधं तरते ।
 पिता इव ८, २२, १५; ४८६ हुवे ।
 पितरा इव ३, ५८, २; २२७ मेधाः ऊर्ध्वा भवन्ति ।
 पितरा इव पुत्रा १०, १०६, ४; ६१७ आपी वो अस्मे ।
 (यथा) पितुः ८, ८६, ४; ५७० सुमतिः स्वादिष्टा ।
 पितुः न नाम १०, ३९, १; ५८३ सुहवं हवामहे ।

९ [दै. अश्विनौ]

पुत्रम् इव पितरौ १०, १३१, ५; ६२६ अवथुः काव्यैः ।
 पुत्राय पितरा इव १०, ३९, ६; ५८८ महे शिखतम् ।
 पुरम् न ८, ७३, १८; ५५७ आ रुज ।
 पूर्वगत्वा इव सख्ये ७, ६७, ७; ३३४ निधिर्हितः माध्वी ।
 पूषा इव १, १८१, ९; १९३ पुरन्धिः हविष्मान् जरते ।
 प्रधी इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 प्रवृक्कम् १, ११६, २४; १०० विप्रतं रेभं उद्गनि उन्नियथुः ।
 प्रायोगा इव १०, १०६, २; ६१५ आश्या शासुः आ ह्यः ।
 वर्हिः इव १, ११६, १; ७७ प्र वृज्जे स्तोमान् ।
 वृहन्ता इव १०, १०६, २; ६२२ गम्भरेषु प्रतिष्ठाम् ।
 ब्रह्मा इव अथ० ६, ५०, २; ६४४ स्थितं हविः ।
 ब्रह्माणा इव २, ३९, १; २१५ (युवां) विदये उक्थशासा ।
 भृगवः न १०, ३९, १४; ५९६ रथम् अतक्षाम् ।
 मक्षः मध्वः न ४, ४५, ४; २४० सवनानि गच्छथः ।
 (यथा) मक्षा इदं अथ० ९, १, १७; ६८७ वर्चः तेजः ।
 (यथा) मधु मधुकृतः अथ० ९, १, १६; ६८६ वर्चः ।
 मनन्या न १०, १०६, ८; ६२१ मनःशृङ्गा जग्मी ।
 मनुषः न होता १, १८०, ९; १८३ प्र स्पन्दा याथः ।
 मनुष्वत् १, ४६, १३; ३६ शम्भू आ गतम् ।
 (यथा चक्रुः) मनुष्याः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाया ।
 मर्यं न योषा १०, ४०, २; ५९८ कृणुते सधस्थ आ ।
 महिषा इव ८, ३५, ७-९; ५१५-५१७ सुतं सोमं अव गच्छथः ।
 महिषा इव अवपानात् १०, १०६, २; ६१५ पानात् मा ।
 मित्रा इव ऋता १०, १०६, ५; ६१८ शतरा शातपन्ता ।
 मित्रासः न ३, ५८, ४; २२९ प्र ददुः उखो अग्रे ।
 मृगा इव वारणा १०, ४०, ४; ६०० दोषा वस्तोर्हविषा ।
 (यथा) मेधिराः आहुवन्त ८, ४२, ६; ५३५ एवा वामहे ।
 मेने इव २, ३९, २; २१६ तन्वा शुम्भमाने ।
 मेषा इव १०, १०६, ५; ६१८ इषा सपर्या पुरीषा ।
 मुगा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।
 युवशा इव कन्यनाम् ८, ३५, ५; ५१३ इह स्तोमं जुषेथाम् ।
 योनिः सूयन्त्याः इव ५, ७८, ५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते ।
 (नाधमाना इव) योषा ५, ७८, ४; ३०० अत्रियंद् वाम० ।
 योषणां न मर्ये १०, ३९, १४; ५९६ न्यमृक्षाम् स्तोमं वाम् ।
 रथाः इव ७, ७४, ६; ३८३ प्र ये ययुः अवृकासः ।
 रथम् न १, ११६, ७; १४४ वन्दनं निर्कतं जरण्यया ।
 रथम् न १०, १४३, १; ६२७ अत्रिं नवं कृणुथः ।
 रथान् इव ५, ७३, १०; २६७ ब्रह्माणि तक्षाम् ।
 रथ्या इव २, ३९, २; २१६ वीरा वरं आ सचेथे ।
 रथ्या इव २, ३९, ३; २१७ शक्रा अर्वाञ्छा यातम् ।

रथ्या इव चक्रा १,१८०,४; १७८ प्रति यन्ति मध्वः ।
 रथि न कश्चित् १,११६,३; ७९ तुम्रो भुज्युं मसृवान् ।
 रश्मीन् इव ८,३५,२१; ५२९ अध्वरान् उप सृजतम् ।
 राजपुत्राः इव १०,४०,३; ५९९ सवना अव गच्छथः ।
 राजाश्वः पृष्ठयामिव अथ० ६,१०२,२; ६४८ खिदामिते ।
 (शुभे) रुक्मं न १,११७,५; १०६ दर्शते निष्ठातम् उदूपथुः ।
 स्रंसगा इव पूषया १०,१०६,५; ६१८ पूषया शिम्बाता ।
 वचसं न मन्तवे १,११२,२; ५३ सुभरा रथमा तस्थुः ।
 (अधिवस्त्रा) वधूः इव ८,२६,१३; ५०२ यः यज्ञेभिः आवृतः ।
 (यथा वर्चस्वती) वाचं अथ० ९,१,१९; ६८८ सारघेण मा ।
 (यथा भर्गस्वती) वाचं अथ० ६,६९,२; ६७५ साधरेण मा ।
 वाजा इव १०,१०६,५; ६१८ उच्चा वयसा घर्म्येष्टा ।
 वातः न १,१८०,६; १८० सूरिः प्रेषत् वेष्ट ।
 (यथा) वातः पुष्करिणीं ५,७८,७; ३०३ एवा ते दशमास्यः ।
 (यथा) वातः वनम् ५,७८,८; ३०४ एवा त्वं दशमास्य ।
 वाता इव २,३९,५; २१९ युवम् अजुया ।
 वायुः न १०,१०६,७; ६२० पर्करत् ।
 (यथार्थं) वाहः समैति अथ० ६,१०२,१; ६४७ एवा मामभि ।
 विः न पर्णैः १,१८३,२; २०२ सुकृतः त्रिधातुना उपयाथः ।
 विधवा इव देवरम् १०,४०,२; ५९८ को वां शयुत्रा ।
 विषुदुहा इव ८,२६,१५; ५०४ गिरा यज्ञम् उह्युः ।
 वृषभः न १,१८१,६; १९० निष्पाट् पूर्वाः हृषः प्र चरति ।
 वेः इव अच्छेदि पर्णम् १,११६,१५; ९१ आज्ञा खेलस्य ।
 श्यायू इव १०,१४३,६; ६३२ मंहिष्टा ।
 शकुनस्य इव पक्षा १०,१०६,३; ६१६ साक्युजा ।
 शफौ इव २,३९,३; २१७ जर्भुराणा तरोभिः ।
 शासुः इव १,११६,१३; ८९ वधिमत्याः तत् श्रुतम् ।
 शूरो न अगम पतयज्ञिः १,१५८,३; १७१ उप वाम्...गमेयम् ।
 शृङ्गा इव २,३९,३; २१७ नः प्रथमा गन्तमर्वाक् ।
 श्येना इव ८,७३,४; ५४३ कुह पेतथुः ।
 श्येना इव ५,७४,९; २७६ विचेतसा विभिः दीयतम् ।

श्येनौ इव ८,३५,९; ५१७ सुतं सोमं पतथः ।
 श्रुष्टीवा इव प्रेषितः ७,७३,३; ३७५ प्रेषितः वां अबोधि ।
 श्रुष्टीवाना इव १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।
 श्वाना इव २,३९,४; २१८ नः अरिषण्या तनूनाम् ।
 (यथा) ससुद्रः एजति ५,७८,८; ३०४ एवा त्वं...अवेहि ।
 सर्गान् इव ८,३५,२०; ५२८ सुष्टुतीः उप सृजतम् ।
 सारवा इव १०,१०६,१०; ६२३ नीचीनबारे गवि मधु ।
 सिंहम् इव द्रुहस्पदे ५,७४,४; २७१ यदीं...जिन्वथः ।
 सुदिना इव पृक्षः १०,१०६,१; ६१४ पृक्ष आ तंसयेथे ।
 सुव्रतः न १,१८०,६; १८० सूरिः वाजं महे आ ददे ।
 सुषुप्तांस् न निरुतेरुपस्थे १,११७,५; १०६ तमसि क्षियन्तम् ।
 सुनुः न पितरा ७,६७,१; ३२८ वां अच्छा विवक्षिम् ।
 (पिता) सूनवे इव । वा०य० १४,३; ६३६ त्वं सुशेवा एधि ।
 सूर्यम् न १,११७,५; १०६ तमसि क्षियन्तं वन्दनाय ।
 सृण्या इव जर्भरी १०,१०६,६; ६१९ जर्भरी तुर्फरीत् ।
 सोमं इव स्रुवेण १,११६,२४; १०० उदनि...उक्षिन्यथुः ।
 सोमम् न १०,३९,२; ५८४ मधवसु---कृतम् ।
 (यथा) सोमः प्रातःसवने अथ० ९,१,११; ६८५ एवा मे वर्चः ।
 स्तनौ इव २,३९,६; २२० नः जीवसे पिप्यतम् ।
 स्वर न १४,४५,२; २३८ शुक्र तन्वन्त आ रजः ।
 स्वर न १४,४५,६; २४२ शुक्र तन्वन्त आ रजः ।
 हंसौ इव ५,७८,१-३; २९७-२९९ सुतान्...आ पततम् ।
 हंसौ इव ८,३५,८; ५१६ सोमम् पतथः ।
 हरिणौ इव अनु यवसम् ५,७८,२; २९८ सुतान्...आ पततम् ।
 हस्ता इव २,३९,७; २२१ शक्तिं अभि संदवी नः ।
 हस्तौ इव २,३९,५; २१९ तन्वे शम्भविष्टा ।
 हारिद्रवा इव वना इत् ८,३५,७; ५१५ सुतं सोमं उप पतथः ।
 हिम्या इव वाससः १,३४,१; १२ युवोः वि यन्त्रम् ।
 हिरण्यं प्रति १,४६,१०; ३३ सूर्यः व्यख्यत् ।
 हिरण्यस्य इव कलशम् १,११७,१२; ११३ कूपे...उदूपथुः ।
 ह्वारः न १,१८०,३; १७७ शुचिर्यजते हविष्मान् ।

अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-पदमूची ।

['अश्विना-नौ' इति द्विवचनान्तं पदम्, अतस्तद्वोधकपदान्यपि द्विवचनान्तानि वर्तन्ते ।]

अङ्गिरस्वन्ता ८,३५,१४; ५२२
 अजरौ १,११२,९; ६०
 अतूर्तदक्षा ८,२६,१; ४२०
 अदाभ्या ५,७५,७-८; २८४-२८५
 अघप्रिया ८,८,४; ४२४
 अघ्न्यू ५,७३,२; २५९ । ८,२२,११; ४८२
 अध्वर्यन्ता १,१८१,१; १८५
 अनपच्युता ८,२६,७; ४९६
 अनिन्या १,१८०,७; १८१
 अनुशासिता १,१३२,४; १६१
 अम्याययंसेन्या १,३४,१; १२
 अमर्त्या ८,२६,१७; ५०६
 अरिप्रा ८,८,२; ४२२
 अरेपसा १,१८१,४; १८८ । ५,७३,४; २६१
 अर्वाचीना ५,७४,२; २७६ । ८,२२,३; ४७४
 अवद्यगोहना १,३४,३; १४
 अवितारा जनानाम् १,१८१,१; १८५
 अश्रन्तौ ८,५,३१; ४१४
 अश्वामवा ७,७१,१; ३६२
 अस्मयू ७,७४,४; ३८१ । ८,२६,१४; ५०३
 अस्त्रिधा ३,५८,७; २३२
 अहर्विदा ८,५,९,२१; ३९२,४०४
 आज्ञाता दिवः ४,४३,३; २४६
 आशुह्वेषसा ८,१०,२; ४६६
 इन्द्रतमा १,१८२,२; १९१
 इषयन्ता ८,५,५; २६,३; ३८८,४९२
 ईळिता विमर्देन १०,२४,४; ५८०
 उग्रा १,१५७,६; १६८ । ६,६२,३; ३०८ ।
 १०,१०६,७; ६२०
 उपस्तुता १,१८१,७; १९१
 उमा १,४६,१५; १२०,१२; ३८,१५९ । ८,८६,१;
 १०१,७; १३१,५; ५६७,५७८,६२६
 उक्षा २,३९,३; २१७
 ऋतप्सू १,१८०,३; १७७
 ऋतावृधा १,४७,१,३,५; ३९,४१,४३ । ८,८७,५; ५७६
 ऋभुमन्ता ८,३५,१५; ५२३

कवी १,११७,२३; १२४ । ८,८,२,५,२३; ४२२,४२५,
 ४४३ । १०,४०,६; ६०२
 क्रतुमन्ता १,१८३,२; २०३
 क्रतुविदा २,३९,२; २१६
 गन्तारा दाशुषो गृहम् ८,५,६; २२,३; ३८८,४७४
 गम्भीरचेतसा ८,८,२; ४२२
 गृणाना जमदग्निना ८,१०१,८; ५७९
 गोपा १०,४०,१२; ६०८
 गोमवा ७,७१,१; ३६२
 चक्रमाणा यज्ञम् आ ६,६२,७; ३०७
 चरन्ता कामप्रेणेव मनसा १,१५८,२; १७०
 चित्रराती ६,६२,५,११; ३१०,३१६
 च्यवाना ६,६२,७; ३१२
 छर्दिष्णौ ८,९,११; ४५४
 जगत्पौ ८,९,११; ४५४
 जर्भुराणा २,३९,३; २१७
 जाता अप्सु १,१८४,३; २१०
 जाता इहेह १,१८१,४; १८८
 जुषाणा गिरः ७,६८,१; ३३८
 जुषाणा ब्रह्म स्तोमम् २,३९,८; २२२
 जुषाणा ५,७५,३; २८०
 जुषाणा सख्यस्य केतुं प्रथमम् वा० य० १४,१; ६३४
 जुषाणा गिरः १,११८,१०; १३६
 जुषाणा तिरोअह्वयम् ३,५८,७; २३२
 जुषाणा सुष्टुतिम् १,११८,७; १३३
 जुहुराणा आ ८,२६,५; ४९४
 जेग्यवस् ७,७४,३; ३८०
 तन्त्रपा ८,९,११; ४४९
 तिरोअह्वयं जुषाणा ३,५८,७; २३२
 तृषाणा विद्युतम् ७,६९,६; ३५२
 दंसिष्ठा १,१८२,२; १९५ । १०,१४३,३; ६२९
 दक्षपिता वा० य० १४,३; ६३६
 दधाना यामम् ७,६९,२; ३४८
 दशस्यन्ता ६,६२,७; ३१२ । ८,२२,६; ४७७
 दक्षा १,३,३; ३ । ३०,१७-१८; ९-१०।४६,२; २५।४७,
 ३,६; ४१,४४। ९२,१८; ५१। ११६,१०,१६; ८६,९२।

१, ११७, ५, २०-२२; १०६, १२१-१२३ । ११८, ३, ६;
१२९, १३२ । १२९, ७; १४४ । १२०, ४; १५१ ।
१३९, ३-४, १६०-१६१ । १५८, १; १६९ ।
१८२, २-३; १९५-१९६ । १८३, ४-५; २०५-२०६ ।
३, ५८, ३, ५; २२८, २३० । ४, ४३, ४; २४७ । ४४, ६;
२५६ । ५, ७५, २, ९; २७९-२८६ । ६, ६२, ५; ३१० ।
७, ६८, १; ३३८ । ६९, ३; ३४९ । ८, ५, २, ११; ३८५,
३९४ । ८, १; ४२१ । २२, १७; ४८८ । २६, ८; ४९७ ।
८६, १; ५६७ । ८७, ५-६; ५७६-५७७ । १०, ६४,
१४; ६१०

दानुनस्पती ८, ८, १६; ४३६

दिवः आज्ञाता ४, ४३, ३; २४६

दिवि स्पृशा १, २२, २; ६

दिवो नपाता १, ११७, १२; ११३ । १८२, १; १९४ । १८४,
१; २०८ । ४, ४४, २; २५२

दिवो नरा १०, १४३, ३; ६२९

दिव्या ४, ४३, ३; २४६

दीयमी १, १५, ११; ४ । ८, ५७, २; ५३७

देव ८, ९, ६; ४४९ । (छान्दसः ह्रस्वः)

देवा-नौ १, २२, १; ६।२४, २; २५ । १८४, ३; २१० । ४,
१५, ९-१०; २३५-२३६ । ५, ७४, १-२; २६८-२६९ ।
७, ६७, ५; ३३२ । ७४, ४; ३८१ । ८, २२, ३; ४७४ ।
५७, १; ५३६ । १०, २४, ६; ५८२ । साम० ३०५;
६४१ । वा० य० २१, ५३; ६६४

देवौ १०, १८४, २; ६८७ । ८, ३५, ४-६; ५१२-५१४

द्रवत्पाणी १, ३, १ १

द्यतारि विदथस्य अथर्व ७, ७३, ४; ६८२

धर्मवन्ता ८, ३५, १३; ५२१

धियंजिन्वा १, १८२ १; १९४ । ८, २६, ६; ४९५

धिण्या १, ३, २; २ । १८२, १-२; १९४-१९५ । २, ४१, ९;
२२५।५, ६३, ६; ३२२ । ७, ६७, १; ३२८ । ७२, ३;
३७० । ८, ५, १४; ३९७ । २६, १२; ५०१

धीजवना ८, ५, ३५; ४१८

नपाता दिवः ४, ४३, २; २५२

नरा १, ३, २; २, ४६, ४; २७ । ४७, ८; ४६ । ११२, ३,
१६; ५४, ६७ । ११६ ७, १११, २२, ८३, ८७-८८।११७,
३ ४६-७, १८, २४; १०४ १०५, १०७-१०८, ११९, १२५।
११८, ५, १०; १३१, १३६ । १८२, ८; २०१ । १८३,
३; २०४ । १८४, २; २०९ । २, ३९, ६; २२२ । ३, ५८
६; २३१ । ५, ७३, ६-७; २६३-२६४ । ५, ७५, ६; २८३ ।

६, ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ । ६, ६३; ३५२ ।
७४, २, ४; ३७९, ३८१ । ८, ५, १६, २२; ३९९, ४०५ ।
८, ८, ५-६, १७, २०-२१ । ४२५-४२६, ४३७, ४४०-
४४१ । ४२, ८, १२, १७; ४७२, ४८३, ४८८ । २६, ४, ११
१६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३; ५३१ । ८५, ४-५;
५६१-५६२ । ८७, १-२; ५७२-५७३ । १०१, ८; ५७२ ।
१०, ४०, १, ३-५; ५९७, ५९९-६०१ । ४१, २; ६१२ ।
१४३, ३-४, ६; ६२९-६३०, ६३२

नवेदसा १, ३४, १; १२

नव्यौ १०, ३९, ५; ५८७

नाना जातौ ५, ७३, ४; २६१

नासत्या १, ३, ३, ३ । ३४, ७, ९-१०; १८, २०-२१ ।
४६, ५; २८। ४७, ७, ९; ४५, ४७। ११६ १-२, ४, ९-१०,
१३, १६-१७, १९-२०, २२ २३; ७७-७८, ८०, ८५, ८६;
८९, ९२-९३, ९५-९६, ९८-९९ । ११७, १, १३, २३;
१०२, ११४, १२४ । ११८, ४, ११; १३०, १३७। १८०,
९; १८३ । १८२, ८; २०१ । १८३, ३, ५। २०४,
२०६ । १८४, १, ३, ५; २०८, २१०, २१२ । २, ४१, ७,
३२३ । ३, ५८, ७; २३२ । ४, ४३, ७; २५० । ४४,
४, ७ २५४, २५७ । ५, ७३, ६-७; २६३-२६४ ।
७५, ६; २८३ । ६, ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ ।
७, ६९, ६; ३५२ । ७४, २, ४; ३७९, ३८१ । ८, ५, १६,
२२; ३९९, ४०५ । ८, ५, ६, १७, २० २१; ४२५-४२६,
४३७, ४४०-४४१ । २२, ८, १२, १७; ४७२, ४८३,
४८८ । २६, ४, ११, १६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३;
५३१ ।

नासत्या- त्वौ ५, ७४, २; २६२ । ७५, ७; २८४ । ७८, १;
२९७ । ६, ६३, १, ४, ७, १०; ३१७, ३२०, ३२३, ३२६ ।
७, ६७, ३; ३३० । ७०, ६; ३६० । ७१, ४; ३६५ । ७२,
२-३, ५; ३६९-३७०, ३७२ । ७३, २, ५; ३७४ ३७७ ।
७४, ५; ३८१।८, ५, २३, ३२, ३५; ४०६, ४१५ ४१८ ।
८, १४-१५; ४३४-४३५ । ९, ६, ९, १५; ४४९, ४५२,
४५८ । २२, ५; ४७६ । २६, २, ८; ४९१, ४९७ । ४२,
४-६; ५३३-५३५ । ५७, १, ४; ५३६, ५३९ । ८५, १,
२, ५५८, ५६३ । १०१, ७; ५७८ । १०, २४; ४-५; ५८०-
५८१ । ३३, ३, ५; ५८५, ५८७ । १४३, ५; ६३१

निचेतारा १, १८४, २; २०९

नृपती ७, ६७, १; ३२८ । ७१, ४; ३६५

परस्पा ८, ९, ११; ४५४

परिजमानौ १, ४६, १४; ३७

पिप्रतोः मदे सोमस्य १,४६,१२; ३५
 पुनर्मन्यौ १,११७,१४; ११५
 पुराजा ७,७३,१; ३७३
 पुरुतमा ७,७३,१; ३७३
 पुरुत्रा २,३९,१; २१५ । ७,६९,६; ३५२ । ८,५,१६;
 ३९९ । ८,२२; ४४२
 पुरुदंससा १,३,२; २ । ६,६३,१०; ३२६ । ८,९,५;
 ४४८ । ८७,६; ५७७
 पुरुदंसा ७,७३,१; ३७३
 पुरुपन्था ६,६३,१०; ३२६
 पुरुप्रिया ८,५,४; ३८७
 पुरुभुजा १,३,१; १ । ५,७३,१; २५८ । ६,६३,५,८; ३२८,
 ३२४ । ८,८,१७; ४३७ । १०,६; ४७० । ८६,३; ५६९
 पुरुभू ४,४४,४; २५४
 पुरुभोजया ८,२२,१६; ४८७
 पुरुमन्तू १,१५८,१; १६९
 पुरुमन्त्रा ८,५,४; ३८७ । ८,१२; ४३२
 पुरुशाकतमा ६,६२,५; ३१०
 पुरुश्वंदा ८,५,३२; ४१५
 पुरुस्पृहा ८,८,२२; ४४२
 पुरुहृता ६,६३,१; ३१७
 पुरु ५,७३,१; २५८ । ६,६२,२; ३०७
 पुरुवसू १,४७,१०; ४८ । ८,५,४; ३८७ । ८,१२, ४३२
 पौर [एकवचनम्] ५,७४,४; २७१
 प्रचेतसा यज्ञस्य आवरस्य ८,१०,४; ४६८
 प्रन्ना ६,६२,५; ३१०
 प्रथमा २,३९,३; २१७ । ५७७,१; २९२
 प्रातर्यावाणा २,३९,२; २१६ । ५,७७,१; २९२
 प्रातर्युजा १,२२,१; ५
 प्रिया अर्यम्णः १०,४०,१२; ६०८
 प्रियमेधा ८,८,१८; ४३८
 प्रेष्ठा ६,६३,१; ३१७
 प्रेष्ठौ १,१८१,१; १८५
 बिभ्रता पुरु दंसांसि ५,७३,२; २५९
 बिभ्रतौ रत्नानि ५,७५,३; २८०
 बिषजा १,११६,१६; ९२ । १५७,६; १६८ । ८,८६,१;
 ५६७ । १०,३९,३,५; ५८५-५८७ । वा० य० २१,५२;
 ६६३
 बिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४
 बिषजा दैव्या ८,१८,८; ४७१

भुजी ८,८,२; ४२२
 भुरणा ७,६७,८; ३३५
 भुरण्यू ६,६२,७; ३१२
 मेहिष्ठा ८,५,५; ३८८ । २२,१०; ४८३ । १०,१४३,६; ६३२
 मचवना १,१८४,५; २१२ । ३,५८,५; २३० । ८,२६,७; ४९६
 मदच्युता ८,२२,१६; ४८७ । ३५, १९-२१; ५२७-५२९
 मदन्ता १,१८४,५ २०२,२१२
 मधुपौ १,१८०,२; १७६,
 मधुपातमा ८,२२,१७; ४८८ । ३५,२०-२१; ५२८ ५२९
 मधुमत् १,११९,२; १४६
 मधुवर्णा ८,२६,६; ४९२
 मधुयुवा ५,७३,८; २६५ । ७४,९; २७६
 मनावसू ५,७४,१; २६८
 मनोजवसा १,११७,१५; ११६ । ८,२२,१६; ४८७
 मनोतरा रयीणाम् १,४६,२; २५ । ८,८,१२; ४३२
 मन्दसाना ८,८७,२; ५७३ । १०,४०,१३; ६०९
 मयोधवा १,९२,१८; ५१ । ५,७३,९; २६६ । ८,८९,१९;
 ४२९-४३९ । ८६,१; ५६७ । १०,३९,५; ५८७
 मरुतमा १,१८२,२; १९५
 मरुत्वन्ता ८,३५,१३-१५; ५२१-५२३
 मर्त्यत्रा ६,६२,८; ३१३
 मायाबिना १०,२४,४; ५८०
 मायिना ६,६३,५; ३२२
 मित्रावरुणवन्ता ८,३५,१३; ५२१
 मिथुना १०,४०,१२; ६०८
 मिमाना पुरु वरांसि अमिता ६,६२,२; ३०७
 यजत्रा १,१८०,५; १७९ । ८,५७,१,४; ५३६,५३९
 यज्ञवाहसा १,१५,११; ४
 यन्तौ पथा इव रजः १,१३९,४; १६१
 यमा २,३९,२; २१६
 यामहूतमा ८,७३,६; ५४५
 यावागा प्रातः २,३९,२; २१६ । ५,७७-१; २९२
 युयुजानसती ६,६२,४; ३०९
 युवाना १,११७ १४; ११५ । ३,५८,७, २२२ । ६,६२,४;
 ३०९ । ७,६७,१०; ३३७ । ६९,८; ३५४
 रक्षितारा २,३९,६; २२०
 रक्षोहणा ७,७३,४; ३७३
 रत्नानि बिभ्रतौ ५,७५,३; २८०
 रथी अथर्वे ७,७१,१; ६७९
 रथीतमा १,२२,२; ६ । १८२,२; १९५

रथ्या १,३४,७; १८ । १५७,६; १६८ । १८२,२; १९५
 ५,७५,५; २८२ । ६,६२,७; ३१२
 रथिरा ७,६९,५; ३५१
 रराणा १,११७,२४ १२५
 राजन्तौ अश्वराणां ८,८ १८; ४३८
 राजानौ ६,६२,९; ३१४। १०,३९,११, ५९३
 रिशादसा ८,८,१७; ४३७
 रुद्रवर्तनी १,३,३; ३ । ८,२२ १,१४; ४७२,४८५ । १०,
 ३९,११, ५९३
 रुद्रा १,१५८,१; १६९ । २,४१,७; २२३ । ५,७३,८;
 २६५ । ७५,३; २८१। ८,२६,५; ४९४
 सप्तप्रचेतसा ८,८,७; ४२७
 वर्धना ८,८,५; ४२५
 वल्गू ६,६२,५; ३१० । ६३,१; ३१७ । ७,६८,४; ३४१
 ८,८७,६; ५७७
 वसुधिती १,१८१,१; १८५
 वसुविदा धिया १,४६,२; २५
 वसू १,१५८,१-२, १६९-१७०
 वल्ली ८,८,१२; ४३२
 वाजयन्ता ८,३५,१५; ५२३
 वाजसातमा ८,५,५; ३८८
 वाजिनीवन्तौ १,१२०,१०; १५७
 वाजिनीवसू २,३७,५; २१४ । ५ ७४,६-७; २७३-२७४ ।
 ७५,३; २८० । ७८,३; २९९ । ८,५,३,१२,२०,३०;
 ३८६,३९५,४०३,४१३ । ८,१०; ४३० । ९,४; ४४७
 १०,५; ४६९ । २२,७,१४,१८; ४७८,४८५,४८९ ।
 २६,३; ४९२ । ८५,३; ५६० । १०७,८; ५७९ । १०
 ४०,१२; ६०८
 वावसाना विवस्वति १,४६ १३; ३६
 वावृधाना ८,५,११; ३९४ । ८७,४; ५७९
 विचेतसा ५,७४,९; २७६
 विद्वासा सौ १,११६,११; ८७ । १२०,२-३; १४९-१५०
 विपन्यू ८,८,१९; ४३९
 विप्रौ ८,२६,९; ४३८
 विप्रवाहसा ५,७४,७; २७४
 विपिपाना १०,१३१,४; ६२५
 विषपलावसू १,१८२,१; १९४
 विश्वगूर्तौ १,१८० २; १७६
 विश्ववारा ७,७०,१; ३५५
 विश्ववेदसा १,४७,४; ४२ । १३९,३; १६० । १०,१४३,
 ६; ६३२

विश्वा ५,७३,४; २६१
 विष्णुवन्ता ८,३५,१४; ५२२
 वीरा २,३९,२; २१६
 वीळुपाणी ७,७३,४; ३७६
 वृत्रहन्तमा ८,८,९, २२; ४२९,४४२
 वृधन्ता १,१५८,१; १६९
 वृषणा-णौ १,११२,८, २३; ५९,७४ । ११६,२१; ९७ ।
 ११७,३-४, ८, १२, १५, १८-१९; १०४-१०५, १०९
 ११३, ११६, ११९-१२० । ११८, ६; १३२ । ११९, ४;
 १४१ । १५७, ५; १६७ । १५८, १; १६९ । १८० ७;
 १८१ । १८१, ८; १९२ । १८३, १; २०२ । १८४, २;
 २०९ । ६, ६२, ७; ३१२ । ७, ७०, ७; ३६१ । ७१, ६;
 ३६७ । ७३, ३; ३७५ । ७४, ३; ३८० । ८, २२, ७, १२,
 १६; ४७८, ४८३, ४८७ । २६, १-२, १२; ४९०-४९१,
 ५०१ । ३५, १५; ५२३ । १०, ३९, २; ५९१ । अथर्व-
 ७, ७३, १; ६७९
 वृषणसू २, ४१, ८; २२४ । ५, ७४, १; २६८ । ७५, ४ ९;
 २८१, २८६ । ८, ५, २४, २७, ३६; ४०७, ४१०, ४१९ ।
 २२, ८-९; ४७३-४८० । २६, १-२, ५, १५; ४९०-
 ४९१, ४९४, ५०४ । ७३, १०; ५४९ । ८५, ७; ५६४
 शक्रा २, ३९, ३; २१७ । १०, २७, ४; ५८० ।
 शचिष्ठा ४, ४३, ३; २४६ ।
 शचीपती ७, ६७, ५, ३३२
 शचीवसुः १, १३९, ५; १६२ । ७, ७४, १; ३७८
 शतक्रतू १, ११२, २३; ७४
 शम्भविष्ठा २, ३९, ५; २१९ । ५, ७६, २; २८८ । ६, ६२, ५;
 ३१०
 शम्भुवा ८८, १९; ४३९
 शम्भू १, ४६, १३; ३६
 शयुत्रा १, ११७, १२; ११३ । १०, ४०, २; ५९८
 शासता अरुजसा रजः १, १३९, ४; १६१
 शुचित्रता १, १५, ११; ४ । १८२, १; १९४ ।
 शुभस्पती १, ३१; १ । ३४, ६; १७ । ४७, ५; ४३ । १२०,
 ६; १५३ । ५, ७५, ८; २८५ । ८, ५, ५, ११; ३८८, ३९४ ।
 २२, ४, ६, १४; ४७५, ४७७, ४८५ । २६, ६; ४९५ ।
 ८७, ५; ५७३ । १०, ४०, ४, १२-१४; ६००, ६०८-६१० ।
 १३१, ४; ६२५
 शुभाना स्पर्हिया श्रिया ७, ७१, १; ३६८
 शुभ्रा ७, ६८, १, ३३८

शुभ्रयावाना ८, २६, १९; ५०८
 शुम्भमाने तन्वा २, ३९, २; २१६
 शुश्रुवांसा पुह्णि ब्रह्माणि ७, ७०, ४; ३५८
 शूरसाता १, १५७, २; १६४
 शृण्वन्तां स्तुतिम् १, ३४, १२; २३
 स्तक्षणी ८, २२, १५; ४८६
 सचनस्तमा ८, २६, ८; ४९७
 सचाभुवा १, ३४, ११; २२ । १५७, ४; १६६
 सजोषसा ३, ५८, ७; २३२ । ७, ७२, २; ३६९ । ८, ९, १२;
 ४५५ । १०७, ७; ५७८
 सस्पती विदधस्य अथर्वं ७, ७३, ४; ६८२
 सत्या १, १८०, ७; १८१
 सधोचीना यातवे १०, १०६, १; ६१४
 सन्तौ १, १८४, १; २०८
 सपर्यन्ता ८, २६, १३; ५०२
 समनसा १, ९२, १६; ४९ । ७, ७४, २; ३७९
 सम्भृता ७, ७३, ४; ३७६
 सवासिनौ अथर्वं २, २९, ६; ६४२
 सिन्धुमातरा १, ४६, २; २५
 सुगोषा १, १२०, ७; १५४
 सुजाता १, ११८, १०; १३६

सुदससा ८, १०, ३; ४६७
 सुदक्षा ३, ५८, ७; २३२
 सुदानू १, ११२, ११; ६२ । ११७, २०, २४; १२१, १२५ ।
 १८०, ६; १८० । १८४, ४; २११ । ३, ५८, ७, २३२
 सुपर्णा ४, ४३, ३; २४६
 सुयुजा ७, ७०, २; ३५६
 सुरथा १, २२, २; ६
 सुवीरा ८, २६, ७; ४९६
 सुधुता २, ३२, ६; २२०
 सुधुता ६, ६३, ६; ३२२
 सुहृता ८, २२, ९; ४७२ । १०, ३९, ११; ५९३
 मूयावसू ७, ६८, ३; ३४०
 स्थविरा १, १८१, ७; १९१
 रथातारा १, १८१, ३; १८७
 स्वर्विदा ८, ८, ७; ४२७
 स्वधा ७, ६८, १; ३३८ । ६०, ३; ३४९
 हवनश्रुता ५, ७५, ५; २८२ । ८, ८, ७; ४२७
 हिरण्यपेक्षा ८, ८, २; ४२२
 हिरण्यवर्तनी १, ९२, १८; ५१ । ५, ७५, २-३; २७९-२८० ।
 ८, ५, ११; ३९४ । ८, १; ४२१ । ८७, ५; ५७६
 होतारा देवानाम् वां यं २१, ५३; ६६४

(१) सुरथा अश्विनौ । [अश्विनोः रथः ।]

अक्षः हिरण्ययः यस्य ८, ५, २९; ४१२
 अजरः ४, ४५, ७; २४३
 अत्यः १, १८०, २; १७६
 अद्रिजुत ३, ३९, ८; २३३
 अनश्वः १, १२०, १०; १५७
 अनुगायस् ८, ५, ३४; ४१७
 अनेहस् ८, २२, २; ४७३
 अमर्त्यः ५, ७५, ९; २८६
 अरिष्टनेमिः १, १८०, १०; १८४
 अश्वः ७, ७०, १; ३५५
 अश्वासः ४, ४५, २; २३८
 अश्वावत् ७, ७२, १; ३६८
 असनः १, १२०, १०; १५७
 अहपूर्वः १, १८१, ३; १८७
 आचितः १, १८२, २; १९५
 आशुः ४, ४३, २; २४५

इयानः अस्मभ्यम् ७, ६८, ३; ३४०
 इयानः याम् १, १८०, १०; १८४
 इषा वर्तते सह ८, ५, ३४; ४१७
 इषां वोळ्हा ७, ६९, १; ३४७
 इषा हिरण्ययी रभिः ८, ५, २९; ४१२
 उक्थ्यः १०, १४१, १; ६११
 उग्रः ५, ७३, ७; २६४
 उल्लयामः ७, ७२, ४; ३६५
 उल्लाः वस्ते ७, ६९, ५; ३५१
 ऋतः २, ५८, २; २२७
 ऋतजाः ३, ३९, ८; २३३
 ककुहः १, १८१, ५; १८९ । ५, ७३, ७; २६४
 ककिक्त् भूरि वर्षः ३, ५८, ९; २३४
 क्षाम् अभियन् १, १८३, २; २०३
 गिर्वाहस् ४, ४४, १; २५१
 गोमान् ७, ७२, १; ३६८

गोः संगतिः ४,४४,१; २५१
 घृतवर्तनिः ७,६९,१; ३४७
 घृतस्तुः ५,७७,३; २७४
 चक्रा उमा हिरण्यया ८,५,२९; ४१२
 चक्रा त्री रथस्य १,३४,९; २०
 चक्रः अन्तरैः युक्तः ६,६२,१०; ३१५
 जयुस् १,११७,१६; ११७। १०,३९,१३; ५९५
 जवीयान् निमिषश्चित् ८,७३,२; ५४१
 जवीयान् मनसः १,११७,२; १०३। १०,३९,१२; ५९४
 जीराश्वः १,११९,१; १३८। १५७,३; १६५
 तमः अपोणुवन् ४,४५,२; २३८
 त्रिषक्तः १,११८,२; १२८। १८३,१; २०२। १०,४१,१;
 ६११
 त्रिधातुः १,१८३,१; २०२
 त्रिवन्धुरः १,४७,२; ४०। ११८,१-२; १२७-१२८। १८३,
 १; २०२। ७,६९,२; ३४८। ७१,४; ३६५। ८,२२,
 ५; ४७६। ८५,८; ५६५
 त्रिवृत् १,३४,९,१२; २०,२३। ४७,२; ४०। ११८,२;
 १२८। ८,८५,८; ५६५
 त्रिष्ठः १,२४,५; १६
 द्वंसिष्ठः ८,२२,१; ४७२
 दिविस्पृक् ८,५,३५; ४१८
 दृतिः तुरीयः मधुनः ४,४५,१; २३७
 द्युमान् ६,६२,१०; ३१५। १०,४०,१; ५९७
 द्रवत्पाणिः ८,५,३५; ४१८
 द्रवदश्वः ४,४३,२; २४५
 नयैः १,१८०,२; १७६
 नव्यः १,१८०,१०; १८४
 निचेरुः १,१८१,५; १८९
 निष्पाद् १,१८१,६; १९०
 नूतनः ५,७८,४; ३०२
 नृपतिः ७,६९,१; ३४७
 नृवान् ६,६२,१०; ३१५
 नृवाहणः २,३७,५; २१४
 पप्रथानः पञ्च भूम ७,६९,२; ३४८
 परिज्मन् १०,३९,१; ५८३। ४१,१; ६११
 पवयः त्रयः तस्य १,३४,२; १३। १५७,३; १६५। १०,
 ४१,२; ६१२
 पवयः प्रुषायन्ते १,१३९,३; १६०
 पविमिः रुचानः ७,६९,१; ३४७

पिशङ्गरूपः १,१८१,५; १८९
 पुरुतमः ४,४४,१; २५१
 पुरुषुष्-ट् ८,२२,२; ४७७
 पुरुमायः १,११९,१; १३८
 पुरुश्चन्द्रः ७,७२,१; ३६८
 पुरुस्पृहः ८,२२,२; ४७३
 पुरुहूतः १०,४१,२; ६११
 पूर्वापुष ८,२२,२; ४७३
 पूर्व्यः बाजेपु ८,२२,२; ४७३
 पृश्नः वहन ५,७७,३; २९४
 पृक्षासः ४,४५,२; २३८
 पृक्षासः अस्मिन् मिथुना अधि त्रयः ४,४५,१; २३७
 पृथुत्रयः ४,४४,१; २५१
 पृथुपाजस् ८,५,२; ३८५
 प्रयज्युः १,१८०,२; १७६
 प्रवत्वान् १,१८१,३; १८७
 प्रवद्यामन् १,११८,३; १२९
 प्रातर्यावान् १०,४०,१; ५९७। ४१,२; ६१२
 प्रातर्युज् १०,४१,२; ६१२
 प्रियतमः ५,७५,१; २७८
 बद्धधानः रोदसी ७,६९,१; ३४७
 बाधते न चक्रमसि ८,५,३४,४१७
 भुज्युः ८,२२,२; ४७३
 मघवान् १,१५७,३; १६५
 मधुमन्तः ४,४५,२; २३८
 मधुवर्णः ५,७७,३; २९४
 मधुवाहनः १,३४,२; १३। १५७,३; १६५। १०,४१,२; ६१२
 मध्वः पूर्णः १,१८२,२; १९५
 मनसः जवीयान् १,११७,२ १०३। १८३,१; २०२।
 १०,३९,१२; ५९४
 मनसः जवीयान् मर्त्यस्य १,११८,१; १२७
 मनसः जवीयान् वृष्णः १,१८१,३; १८७
 मनसा युक्तः ७,६९,२; ३४८
 मनोजवाः १,११७,१५; ११६। ५,७७,३; २९४। ६,६३,
 ७; ३२३। ७,६८,३; ३४०
 मनोजूः १,११०,१; १३८
 मनोयुज्-क् ८,५,२; ३८५
 यज्ञियः १,११९,१; १३८
 ययिः ५,७३,७; २६४
 यय्यः २,३७,५; २१०

यात् १०,४०,१; ५९७
यामः १,३४,१; १२
युक्तः मनसा ७,६९,०; ३४८
युजानः ७,६९,५; ३५१
युवायुजम् (द्वितीया) १,११९,५; १५२
रघुवर्तनिः ८,९,८; ४५१
रघुस्य-व्य द् ५,७५,५; २६२
रजः शुक्रं तन्वन्तः ४,४५,२; २३८
रथानां येष्टः ५,७४,८; २७५
रातिः १,३४,१; १२
चनिन् (नी) १,११९,१; १३८
वन्धुरायुः ४,४४,१; २५१
वर्षः करिकन् भूरि ३,५८,९; २३४
वसुमान् १,११८,१०; १३६ । ७,६७,३; ३२० । ७१,३ ४;
३६४-३६५
वसुवाहनः ५,७५,१; २७८
वसूयुः ४,४४,१; २५१
वस्त उस्त्राः ७,६९,५; ३५१
वहमानः विशोविशे वस्तो वस्तोः १०,४०,१; ५९७
वाजिनीवान् ७,६९,१; ३४७
वाजी ७,७०,१; ३५५
वाजेषु पूर्यः ८,२२,२; ४७३
वातरहा १,११८,१; १२७ । ५,७७,३; २९४
वाहिष्ठः ८,२६,४; ४९३
विदथ्यः १०,४१,१; ६११
विद्वेषसः ८,२२,२; ४७३
विपत्सन् १,१८०,२; १७६
विभिन्दुना (तृतीया) १,११६,२०; ९६
विभुः १,३४,१; १२
विभ्वः १०,४०,१; ५९७
विमोचनः वाम् २,३७,५; २१४
विश्वप्स्यः ७,७१,४; ३६५
विश्वसौभगः १,१५७,३; १६५
वीङ्ग्वङ्गः ८,८५,७; ५६४
वृक्षः निष्ठितः १,१८२,७; २००
वृषणः-णम् १,२५७,२; १६४ । ५,७५,१; २७८
वृषण्वान् १,१८२,१; १९४
वृषाभिः अश्वैः युक्तः ७,६९,१; ३४७
वोळ्हा ७,७१,४; ३६५
वोळ्हा इषाम् ७,६९,१; ३४७
व्रतानि अनु वर्तते यः १,१८३,३; २०४
१० [द्वै. अश्विनौ]

शतद्वसुः १,११९,१; १३८
शानोतिः ६,६३,५; ३२१ । ७,६८,३; ३४०
शान्तमः ५,७८,४; ३००
शारद्वान् १,१८१,६; १९०
शुनपृष्ठः ७,७०,१; ३५५
श्येनपत्वा १,११८,१; १०७
श्येनस्य चित् जवमा (श्येन) ५,७८,४; ३००
श्रुतः ८,२२,५; ४७६ । २६,४; ४९३
शुष्टीवान् १,११९,१; १३८
सचनः १,११६ १८ । ९४
सचनावान् सुमतिभिः ८,२२,२; ४७३
सन्तनिः ५,७३,७; २६४
समानः १०,४१,१; ६११
समानयोजनः १,३०,१८; १०
सहस्रकेतुः १,११९,१; १३८
सहस्रनिर्णिक् ८,८,११,१४; ४३१,४३४
मुखः १,१२०,११; १५८
मुपेशस् (शाः) १,४७,२; ४०
सुमतिभिः सचनावान् ८,२२,२; ४७३
सुमृळीकः १,११८,१; १२७
सुयुज् १,११७,१५; ११६
सुवृत् १,४७,७; ४९ । १,१८,२ ३; १२८-१२९ । १८३;
२-३; २०३ २०४ । ३,५८,३; २२८ । ४,४४,५;
२५५ । १०,३९,१; ५८३
सुष्टुतः १,११७,३; १६५
सुहवः ८,२२,२; ४७३
सूर्यत्वक् १,४७,२; ४७ । ८,८,२; ४२०
सूर्या यः वहति ४,४४,१; २५१
सुप्रवन्धुरः १,१८१,३; १८७
सेनाजूः [जुवा-तृतीया] १,११६,१; ७७
स्कम्भासः (यस्य) त्रयः स्कमितामः १,३३,२; १३
स्यूमगमस्तिः ७,७१,३; ३६४
स्वर्विद् ७,६७,३; ३३०
स्ववान् १,११८,१; १२७
स्वश्वः १,११७,२; १०३ । ४,४५,७; २४३
हविष्मान् १,१८३,३; २०४
हिरण्यत्वक् ५,७७,२; २९४
हिरण्ययः १,१३९,३ ४; १६०-१६१ । ४,४४,४.५; २५४-
२५५ । ७,६९,१; ३४७ । ८,५,३५; ४१८।८,२२,९; ४८०
हिरण्यवन्धुरः ८,५,२८; ४११
हिरण्यामीशुः ८,५,२८; ४११ । २२,५; ४७६

(२) स्वश्वौ अश्विनौ । [अश्विनोः अश्वः ।]

अज्राः ६, ६२, २; ३०७
 अल्याः १, १८१, २; १८६
 अध्वरश्रियः १, ४७, ८; ४६
 अप्तुरः १, ११८, ४; १३०
 अरुषाः षासः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९
 अवमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 अश्वः-श्वः १, ११८, ५; १३१ । ६, ६३, ७; ३२३ । ८, ५, ७
 ३९०
 अस्त्रिधः ४, ४५, ४; २४०
 अहभिः दविध्वतः ४, ४५, ६; २४२
 आक्केनिपासः ४, ४५, ६; २४२
 आशवः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०
 आशुहेमानः १, ११८, २; ७८
 ह्विराः ६, ६२, ३; ३०८
 उदप्रुतः ४, ४५, ४; २४०
 उषर्धुधः १, १२, १८; ५१ । ४, ४५, ४; २४०
 उहुवः ४, ४५, ४; २४०
 अतयुजः ७, ७१, ३; ३६४
 एवाः १, १८१, ६; १२०
 ककुहासः ४, ४४, २; २५२
 तरणयः ७, ६७, ८; ३३५
 दिव्यासः १, १८१, २; १८६
 दिव्यासो न गृध्राः १, ११८, ४; १३०
 देवयुक्ताः ७, ६७, ८; ३३५
 द्रवत्पाणयः ८, ५, ३५; ४१८
 निधुतः ६, ६२, ११; ३१६
 पतङ्गाः १, ११८, ४-५; १३०-१३१
 पयस्पाः १, १८१, २; १८६
 परमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 पर्णिनः ८, ५, ३३; ४१६
 प्रुषितःसवः ८, ५, ३३, ४१६ । ८७, ५; ५७६
 मक्षयवः ७, ७४, ४; ३८१

मधुमनाः ४, ४५, ४; २४०
 मध्यमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६
 मनोजवसः ६, ६२, ३; ३०८
 मनोजुवः १, १८१, २; १८६
 मन्दिनः ४, ४५, ४; २४०
 मन्दिनिरुपृशः ४, ४५, ४; २४०
 युक्ता वृषभश्च शिशुमारश्च १, ११६, १८; ९४
 युक्तासः रथे १, ११८, ४; १३०
 रजः शुक्रं आतन्वन्तः ४, ४५, ६; २४२
 रजांसि सुयमासः १, १८०, १; १७५
 रासभः १, ११६, २; ७८ । ८, ५, ७; ५६३
 वपुषः १, ११८, ५; १३१
 वयः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९ । ६, ६३, ७-७;
 ३२२-३२३ । ८, ५, ३३; ४१६
 वहिष्ठाः ६, ६३, ७; ३२३
 वाजाः १, १८१, ६; १९०
 वातरहसः १, १८१, २; १८६
 वीतपृष्ठाः १, १८१, २; १८६
 वील्लपत्मानः १, ११६, २; ७८
 वृषणः १, १८१, २; १८६ । ७, ६९, १; ३४७ । ७१, ३; ३६४
 शुचयः १, १८१, २; १८६
 श्येनासः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०
 सप्तयः १, ४७, ८; ४६
 सुभ्वः ७, ६७, ८; ३३५
 सुम्रायवः ७, ७१, ३; ३६४
 सुयमासः रजांसि १, १८०, १; १७५
 सुयुजः ३, ५८, २-३; २२७-२२८
 स्थविरासः ७, ६७, ४; ३३१
 स्वराजः १, १८१, २; १८६
 हंसासः ४, ४५, ४; २४०
 हयाः ७, ७४, ४; ३८१
 हरी १, १८१, ५; १८९
 हिरण्यपर्णाः ४, ४५, ४; २४०

(३) अश्विनोः सञ्चारः ।

(१) पृथिव्याम् ।

- ४,४५,७; २४३ येन (रथेन) सद्यः परि रजांसि यायः ।
 ५,७३,३; २६० ईर्मान् यद् वपुषे वपुः चक्रं रथस्य येमधुः ।
 पर्यन्या नाहुषा युगा महा रजांसि दीयथः॥
 ७,६९,२; ३४८ स [रथः] पप्रथानः अधि पञ्च भूमा ।

(२) दिवि ।

- १,११९,३; १४० युवोरह प्रवणे चेकिते रथः ।
 १,१३९,४; १६१ अचेति दत्ता व्युनाकमृण्वथः युजते वां
 रथयुजो दिवि ष्टिषु पथेव यन्ताः रजः ।
 १,१८०,१०; १८४ तं वा रथं वयमद्या हुवेम...द्यामियानम् ।
 ८,९,२१; ४३४ यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निर्षादथः॥
 ८,२२,४; ४७५ युवो रथस्य परि चक्रमीयते ईर्मान् यद्वां
 इषण्यति ।
 ८,८३,७; ४२७ दिवश्चिद्रोचनादाधि आ नो गन्तं स्वर्विदा ।
 १,१८३,६; २०७ एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।
 १,१८३,६; २१३
 ३,५८,५; २३०
 ७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाते दिवो यद्दी-
 ष्वोषधीषु विष्टु । नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्त ॥

(३) द्यावापृथिव्योः ।

- १,३४,८; १९ तिस्रः पृथिवीरुपरि प्र वा दिवो नाकं रक्षेथे
 युभिरक्नुभिर्हितम् ।
 ३,५८,८; २३३ रथो ह वां ऋतजा अद्रिजुतः परि द्यावा-
 पृथिवी याति सद्यः ।
 ४,४१,५; २५५ आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्य-
 येन सुवृता रथेन ।
 ८,१०,६; ६७० यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजो यद्वेमे रोदसी
 अनु । यद्वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथे ...
 अत आयातमश्विना ॥
 ८,२२,५; ४७६ [वां रथः] परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतः ।
 ८,७३,१३; ५५२ यो वां रजांस्यश्विना रथो वि याति रोदसी ।
 ८,८३,३; ४२३ आ यातं नहुषस्परि आन्तरिक्षात् सुवृत्किमिः ।
 ८,८३,४; ४२४ आ नो यातं दिवस्परि आन्तरिक्षादध प्रिया ।

(४) परावति ।

- १,३४,७; १८ परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् । तिस्रो
 नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः
 स्वसराणि गच्छतम् ॥

- १,४७,७; ४५ यज्ञासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ।
 अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य
 रदिमभिः ॥
 ५,७३,१; २५८ यदद्य स्थः परावति यदर्वावति अश्विना ।
 यद्वा पुरु पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥
 ८,५,८; ३९१ येमिस्त्रिः परावतो दिवो विश्वानि रोचना ।
 त्रौरक्नुन् परि दीयथः ॥
 ८,८,१४; ४३४ यज्ञासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे ।

(५) जले ।

- १,३०,१८; १० समानयोजनो हि वां रथः...समुद्रे अश्विने
 यते ।
 ५,७३,८; २६५ यत् समुद्राति पर्वथः ।
 ६,६२,२; ३०७ पुरु वरांसि अमिता मिमाना अपो धन्वा-
 न्यति याथो अजान् ।
 ७,६७,८; ३३५ परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।
 ४,४३,६; २४९ मिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयो-
 ऽरुवासः परि गमन् ।

(६) दिवि जले च ।

- १,४६,८; ३१ अरिजं वा दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।
 १,१८०,१; १७५ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां
 परि अर्णांसि दीयत् ।
 ४,४३,५; २४८ उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यन् समुद्रा-
 दभि वर्तते वाम् ।
 ५,७६,४; २९० आ नो दिवो वृद्धतः पर्वतात् आ अद्भ्यः
 यातम् ।
 ८,२६,१७; ५०६ यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे ।
 ८,१०,१; ४६५ यत् स्थो दीर्घप्रसन्नानि यद्वादो रोचने दिवः ।
 यद्वा समुद्रे अभ्याकृते गृहेऽत आ यात-
 मश्विना ॥

(७) सर्वदिक्षु ।

- ७,७२,५; ३७२ } आ पश्चाताज्ञासत्या पुरस्तात् अश्विना
 ७,७३,५; ३७७ } यातमधरादुदक्तात् ।
 ८,१०,५; ४६९ यदद्याश्विनावपाग् यन् प्राक् स्थो वाजि-
 नीवस् । यद् द्रुह्यवि अनवि तुर्वशे यदौ हुवे
 वामथ मा गतम् ॥

(८) अन्यदेवैः सह ।

८,९,१३; ४५५ यदिन्नेण सरथं याथो अश्विना
यद्वा वायुना भवथः समोक्सा ।
यदादिल्लेभिर्कम्भुभिः सजोषसा
यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥

(९) आशातः ।

१,२२,४; २८ न हि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः ।

५,७५,७; २८३ तिरश्चिदर्धया परि वर्तियीतमदाभ्या ।
५,७४,१; २६८ कूष्ठो देवावश्विनाऽद्या दिवो मनावसू ?
५,७४,२; २३२ कुह त्या कुह तु ध्रुता दिवि देवा नासत्या ?
८,७३,४; ५४३ कुह स्थः ? कुह जग्मथुः ? कुह इयेनेव पेतथुः ?
८,७३,५; ५४४ यदद्य कर्हि कर्हिचित् शुभ्रयातमिमं हवम् ।
१०,४०,२; ५९८ कुह स्विद् दोषा ? कुह वस्तोरश्विना ?
कुहामिपित्वं करतः ? कुहोषतुः ? ।

(४) अश्विनोः आवाहनकालः ।

१,११८,११; १३७ हवे हि वामश्विना रातद्वयः शश्वत्तमाया
उषसो व्युष्टौ ।
७,६८,९; ३४६ अग्रे ब्रध्नानः उषसां सुमन्मा ।
७,६९,५; ३५१ तेन नः शंयोरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं
यज्ञेऽस्मिन् ।
७,७१,३; ३६४ आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ .. वर्तयन्तु ।
७,७१,४; ३६५ यो वां रथः .. उल्लयामा ।
७,७२,४; ३७१ विचेदुच्छन्ति उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो
भरन्ते ।
१०,४१,१; ६११ वयं व्युष्टौ उषसो हवामहे ।
५,७६,१; २८७ आ भाल्यमिरुषसामनीकं अर्वाञ्चा ... नूनं
रथ्येह यातम् ।
५,७६,२; २८८ दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा ।
१,११२,२४; ७५ अथूत्येऽवसे नि ह्वये वाम् ।
२,३९,२; २१६ प्रातर्यावाणा ।
५,७७,१; २९२ प्रातर्यावाणा ।
५,७७,१; २९२ प्रातर्हि यज्ञमश्विना दध्नाते ।
५,७७,२; २९३ प्रातर्थजश्वमश्विना ।
८,२२,१५; ४८६ आ सुग्मयाय .. प्राता रथेनाश्विना हुवे ।
१०,४०,१; ५९७ प्रातर्यावाणं रथम् ।
१०,४०,३; ५९९ प्रातर्जरेथे जरणेव क्वापया ।

१०,४१,२; ६१२ प्रातर्गुजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं ...
रथम् ।
८,२२,११; ४८२ इदा चिदहो हवामहे ।
८,२२,१३; ४८४ ताविदा चिददानाम् .. वन्दमान उप ब्रुवे ।
८,२२,१४; ४८५ तावित् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता
यामन् [हवामहे] ।
१०,३९,१; ५८१ यो वां रथो दोषामुषासो हव्यः . तमु
वामिदं वयं सुहवं हवामहे ।
१०,४०,४; ६०० दोषा वस्तोर्द्विषा नि ह्वयामहे ।
७,७१,२; ३६३ उपायातं दाशुषे ..
दिवा नक्तं माश्वी त्रासीथां नः ॥
१,११२,२५; ७६ धुभिः अक्तुभिः परि पातमस्मान् ।
१,३४,१; १२ त्रिश्विनो अद्या अवतम् ।
१,३४,३; १४ समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरथ यज्ञं
मधुना मिमिक्षतम् ।
१,३४,४; १५ त्रिर्वर्तियीतम् ।
८,३५,७-९; ५१५-५१७ विवर्तियीतम् ।
८,२३,३; ४९२ ता वामय हवामहे .. अति क्षपः ।
८,७३,६; ५४५ अश्विना यामहृतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् ।
१,४६,१४; ३७ ऋता वनथो अक्तुभिः ।
५,७६,३; २८९ उता यातं संगये प्रातरहो मध्यन्दिन उदिता
सूर्यस्य । दिवा नक्तमवसा शंतमेन ॥

(५) अश्विनोः भिषक्कर्म ।

(१) भिषजा ।

भिषजा १,११३,१६; ९२ । १५७,६; १६८ । ८,८६,१;
५६७ । १०,३३,५; ५८७ । वा० य० २०,५२; ६६३
भिषजा सतस्य चित् ११,३२,३; ५८५ अन्धस्य चित् ...
क्रशस्य चित् ... ।

भिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४

भिषजा देव्या ८,१८,८; ४७१

(२) भिषक्कर्म ।

१,३४,६; १७ त्रिनो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थि-
वानि त्रिदत्तमङ्गयः ।

१,१५७,६; १६८ युवं ह स्थः भिषजा भेषजेभिः ।
 ८,९,६; ४४९ यन्नासत्या भुरण्यथः यद् वा देव भिषज्यथः ।
 ८,९,१५; ४५८ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
 तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय
 यच्छतम् ।
 ८,२२,१०; ४८१ ताभिर्नो मक्षू तूष्मश्विना गतं भिषज्यतं
 यदातुम् ॥

८,३५,१६-१८; ५२४-५२६ सेधतममीवाः ।
 ७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यर्ह्याषु
 औषधीषु विश्रु ।
 ७,७०,४; ३५८ चनिष्टं देवा औषधीष्वप्सु
 १,१५७,५; १६७ युवं हि गर्भं जगतीषु धत्थः युवं विश्वेषु
 सुवनेषु अन्तः । युवमग्निं च वृषणावपश्च
 वनस्पतीरश्विना वैरयेथाम् ॥
 ७,७१,२; ३६१ युयुतमस्मदनिराममीवान् ।

(६) अश्विनोः सूर्याग्न्युषसां च सम्बन्धः ।

१,४६,१; २४ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
 स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥
 १,४६,१०; ३३ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः ।
 व्यख्यजिह्वयासित ॥ (तत्तदिदश्विनोरवः)
 १,४६,१४; ३७ युवोरुषा अनु त्रिथं परिज्मनोरुषाचरत् ।
 १,१५७,१; १६३ अबोध्यग्निर्जम् उदेति सूर्यः व्युषाश्चन्द्रा
 महावो अर्चिषा । आयुक्षातामश्विना यातवे
 रथं प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् ॥
 १,१८०,१; १७१ मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ।
 १,१८३,२; २०३ दिवो दुहित्रा उषसा सचेथे ॥
 ३,५८,१; २२६ धेनु प्रतनस्य काम्यं दुहानाऽन्तः पुत्रश्चरति
 दक्षिणायाः । आ द्योतर्नि वहति शुभ्रयामा
 उषसः स्तोमो अश्विनावर्जीगः ॥
 ३,५८,४; २९९ इमा हि वां गोक्तजीका मधूनि प्र मित्रासो
 न ददुहस्रो अग्ने ।
 ४,४५,१-२; २३७-२३८ एष स्य भानुसदियर्ति युज्यते रथः
 परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो
 अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुगीयो
 मधुनो वि रण्यते ॥
 उद्धां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास
 उषसो व्युष्टिषु । अपोर्णुवन्तस्तम आ परी-
 वृतं स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥
 १,९२,१८; ५१ (अश्विनोः अश्वासः) उषर्बुधः ।
 ४,४५,४; २४०
 ५,७५,९; २८६ अभूदुषा रुशत् पशुराग्निरधाव्यूत्विष्यः ।
 अयोजि वां वृषण्वसू रथः ।

५,७३,१; २८७ आ भात्यग्निरुषसामनीकम् उद् विघ्राणां
 देवया वाचो अस्थुः । अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह
 यातम् ।
 ६,६२,१; ३०६ या सद्य उषा व्युषि उमो अन्तान् युयूषतः
 पर्युक्तं वरांसि ॥
 ६,६३,६; २२२ युवं श्रीभिर्दर्शनाभिराभिः शुभे पुष्टिमूह्युः
 सूर्यायाः ।
 ७,६७,२-३; ३२९-३३० अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदश्चन्
 तमसश्चिदन्ताः । अचेति केतुर्षसः पुरं-
 स्तात् त्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥
 अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति
 नासत्या विवक्ता ।
 ७,७२,३; ३७० जामि ब्रह्माणि उषसश्च देवीः ।
 ७,७२,४; ३७१ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि
 कारवो भरन्ते । ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो
 अश्रेत् बृहदग्नयः समिधा जरन्ते ॥
 ८,५,२; ३८५ रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ।
 ८,८,२; ४२२ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ॥
 ८,९,१६-१८ ४५९-४६१ अभुस्त्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।
 व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥
 प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि स्तुते महि ।
 प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥
 यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
 आ हायमश्विनी रथो वर्तिर्यति नृपाय्यम् ॥

८,३५,१-३; ५०९-५११ सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं
पिबतमश्विना ॥
४-६; ५१२-५१५ सजोषसा इषं नो वोळ्हमश्विना ॥
७-९; ५१५-५१७ सजोषसा त्रिर्वर्तियातमश्विना ॥
१०-१२; ५१८-५२० सजोषसा ऊर्जं नो धत्तमश्विना ॥
१३-१५; ५२१-५२३ सजोषसा आदित्यैर्यातमश्विना ॥
१६-१८; ५२४-५२६ सजोषसा सोमं सुन्वतो अश्विना ॥

८,३५,१९-२१; ५२७-५२९ सजोषसा अश्विना तिरोअहयम् ॥
८,७३,१६-१७; ५५५-५५६ अरुणप्सुरुषा अभूदकज्योतेर्ऋतावरी ।
अन्ति षट्भूतु वामवः ॥
अश्विना सुविचाकशात वृक्षं परशुमौ इव ।
अन्ति षट्भूतु वामवः ॥
१०,३९,१२; ५६४ यस्य [रथस्य] योगे दुहिता जायते दिवः
उभे अहनी सुदिने विवस्वतः ॥

(७) अश्विनोः मन्त्रेषु व्यक्तीनामानि ।

अंशुः स्तोता । ८,५,२६; ४०९
अगस्त्यः स्तोता । १,१८०,८; १८२ । १८४,५; २१२ ।
८,५,२६; ४०९
अघश्वः अवितः । (पेदुनामा राजर्षिः) १,११६,६; ८२
अङ्गिराः स्तोता । १,११२,१८; ६९
अत्रिः द्रष्टा । ५,५३,६-७; २६३-२६४ । ७४,१; २६८ ।
१०,१४३,१-३; ६२७-६२९ । (अवितः) १,११२,७,१६;
५८,६७ । ११६,८; ८४ । ११७,३; १०४ । ११८,७;
१३३ । ११९,६; १४३ । १८०,४; १७८ । १८३,
५; २०६ । ७,६८,५; ३४२ । ७१,५; ३६६ । ८,५,
२५; ४०८ । ३५,१२; ५२७ । (स्तोता) ८,४२,५;
५३४ । ७३,३,७-८; ५४२,५४३-५४७ । १०,३९,९;
५९१ । ५,७८,४; ३००
अग्निः राजा । १,११२,२०; ७१ । ८,२२,१०; ४८१
अनुः स्तोता । ८,१०,५; ४६९
अन्तकः राजर्षिः अवितः । १,११२,६; ५७
अवस्युः द्रष्टा । ५,७५,८; २८५
आजमीलहासः द्रष्टारः । ४,४४,६; २५६
आर्चकः शरः अवितः । १,११६,२२; ९८
आर्जुनेयः कुत्सः अवितः । १,११२,२३; ७४
उपस्तुतः अवितः । १,११२,१५; ६६ । ८,५,२५; ४०८
ऋत्नावः १,११६,१६; ९२ । ११७,१७-१८; ११८-११९ ।
१२०,६; १५३
ऋतस्तुम् १,११२,२०; ७१
औत्थयः मन्त्र-द्रष्टा । १,१५८,१,४; १६९,१७२
औशिजः द्रष्टा । १,१०९,९; १४६
औशिजः कक्षीवान् (दीर्घतमसः पत्नी उशिक् तस्याः पुत्रः
दीर्घश्रवाः) अवितः । १,११२,११; ६२
कक्षीवान् १,११२,११; ६२ । ११६,७; ८३ । ११७,६;
१०७ । १२०,५; १५२ । (स्तोता) ८,९,१०; ४५३
कण्वः, कण्वस्य पुत्रः, कण्वासः वा द्रष्टारः । १,४६,९; ३२ ।

४७,२,४५,०; ४०,४२-४३,४८ । ८,५,४-५, २३,
२५; ३८७-३८८,४०६,४०८ । ८,३, ४२३ । ९,२४,
४५७ । १०,२; ४६६
कण्वः अवितः । १,११२,५; ५६ । ११७,८; १०९ । १-८,
७; १३३ । ८,८,२०; ४४०
कर्कशुः अवितः । १,११२,६; ५७
कलिः अवितः । १,११२,१५; ६६ । ११,३९,८; ५९०
कविः अवितः । १,११६,१४; ९१ । ११९,७; १४४
काण्वः द्रष्टा । ८,९,३,९; ४४६,४५२
कान्यः स्तोता । १,११७,१२; ११३
कुत्सः अवितः । १,११२,९; ६० । ११२,२३; ७३ । १०,
४०,६; ६०२
कृशः अवितः । १०,४०,८; ६०४
कृशानुः अवितः । १,११२,२१; ७२
कृष्णः द्रष्टा । ८,८५,३४; ५६०-५६१
कृष्णियः विश्वकः अवितः । १,११६,२३; ९९
गुत्समदासः द्रष्टारः । २,३९,८; २२२
गीतमः अवितः । १,११६,९; ८५ । (स्तोता) १,१८३,५; २०३
घोषः स्तोता । १,१२०,५; १५२
घोषा अविता । १,११७,७; १०८
घोषा द्रष्टी । १०,४०,५; ६०१
कथवानः अवितः । १,११६,१०; ८६ । ११७,१३; ११४ ।
११८,६; १३२ । ५,७४,५; २७२ । ७५,५; २८२ । ७,
६८,६; ३४३ । ७२,५; ३६६ । १०,३९,४; ५८६
जमदग्निः द्रष्टा । ८,१०१,८; ५७९
जहावी अविनः । १,११६,१९; ९५ । ३,५८,६; २३१
जाहुषः अवितः । १,११६,२०; ९६ । ७,७१,५; ३६६
तुमः अवितः । १,११७,१४; ११९
तुमस्य सूनुः तौम्यः भुज्यु अवितः । १,११२,६; ५७ ।
११२,२०; ७१ । ११६,३-५; ७९-८१ । ११६,१४-१५;
११५-११६ । ११८,६; १३२ । ११९,४,८; १४१,१४५ ।

१,१५८,३; १७१ । १८०,५; १७२ । १८२,५७;
१९८-२०० । ६,६२,६; ३११ । ७,६८,७; ३४३ ।
६९,७; ३५२ । १०,३९,४; ५८५ । ४०,७; ६०३ ।
१४३,५; ६३१
तुर्वशः स्तोता । ८,९,१४; ४५७ । १०,५; ४६९
तुर्वीतिः अवितः । १,११२,२३; ७४
तृक्षिः त्रासदस्यवः स्तोता । ८,२२,७; ४७८
त्रसदस्युः अवितः । १,११२,१४; ६५; ८,८,२१; ४४१
त्रिमन्तुः (कक्षीवान्) अवितः । १,११२,४; ५५
त्रिशोकः अवितः । १,११२,१२, ६३
त्रैतनः (दासः) १,१५८,५; १७३
द्वधीचिः अवितः । १,११६,१२; ८८ । ११७,२२; १२१ ।
११९,९; १४६
दभीतिः अवितः । १,११२,२३; ७४
दशत्रजः अवितः । ८,८,२०; ४४०
दिवोदासः अवितः । १,११२,१४; ६५ । ११६,१८; ९४ ।
११९,४; १४१
दीर्घतमाः स्तोता । ८,९,१०; ४५३
दीर्घतमाः मामतेयः द्रष्टा । १,१५८,६; १७४
दीर्घश्रवाः (औशिजः) अवितः । १,११२,११; ६२
द्रुष्णः स्तोता । ८,१०,५; ४६९
ध्वसन्तिः अवितः । १,११२,२३; ७४
नर्यः अवितः । १,११२,९; ६०
नार्षदः अवितः । १,११७,८; १०९
पक्थः अवितः । ८,२२,१०; ४८१
पञ्जासः स्तोता । १,११७,१०; १११
पञ्जियः स्तोता । १,१२०,५; १५२
पठर्वा अवितः । १,११२,१७; ६८
परवृज् अवितः । १,११२,८; ५९ । [(इन्द्रः) २,१३,१२;
११४८ । २,१५,७; ११६८]
पुरयः दाता । ६,६३,९; ३२५
पुरुकुत्सः अवितः । १,११२,७; ५८
पुरुपन्थाः दाता । ६,६३,१०; ३२६
पुरुमित्रः । १०,३२,७; ५८९
पुरुमीलहः स्तोता । १,१८३,५; २०६
पुरुषन्तिः अवितः । १,११२,२३; ७४
पृथिः अवितः । १,११२,१५; ६६
पृथी (वैन्यः) स्तोता । ८,९,१०; ४५३
पृथुश्रवाः अवितः । १,११६,२१; ९७
पृथ्निशुः अवितः । १,११२,७; ५८

पेदुः अवितः । १,११६,६; ८२ । ११७,९; ११० । ११८,
९; १३५ । ११९,१०; १४७ । ७,७१,५; ३६६ । १०,
३९,१०; ५९२
पेरुः दाता । ६,६३,९; १२५
पैरः स्तोता । ५,७४,४; २७१
प्रियमेधः अवितः । ८,५,२५; ४०८ । स्तोता ८,८७,३; ५७४
बभ्रुः अवितः । ८,२२,१०; ४८१
भरद्वाजः अवितः । १,११२,१३; ६४ । द्रष्टा ६,६३,१०; ३२६
भुज्युः द्रष्टव्यं- ' तुप्रस्य सूनुः तौगन्यः ' ।
मृगवाणः स्तोता । १,१२०,५; १५२
मनुः अवितः । १,११२,१६,१८; ६७,६९ । ८,२२,६; ४७७
मनुः स्तोता । ८,१०,२; ४६६
मन्धाता अवितः । १,११२,१३; ६४
मेधातिथिः अवितः । ८,८,१०; ४४०
यदुः स्तोता । ८,९,१४; ४५८ । १०,५; ४६९
रेमः अवितः । १,११२,५; ५३ । ११६,२४; १०० ।
११७,४,१२; १०५,११३ । ११८,६; १३२ । ११९,६;
१४३ । १०,३२,९; ५९१
वत्सः स्तोता । ८,८,१५,१२; ४३५,४३९ । ९,१,६,१५;
४४४,४४९,४५८
वज्रिमती अविता । १,११६,१३; ८२ । ११७,२४; १२५ ।
६,६२,७; ३१२ । १०,३९,७; ५८९
वन्दनः अवितः । १,११२,५; ५६ । ११६,११; ८७ ।
११७,५; १०६ । ११८,६; १३२ । ११९, ६-७; १४३-
१४४ । १०,३९,८; ५९०
वज्रः अवितः । १,११२,१५, ६६
वद्यः अवितः । १,११२,६; ५७ । [(इन्द्रः) १,५४,६;
७९१ । २,१३,१२,११४८ । ४,१९,६; १५२७]
वरः ८,२६,२; ४९१
वशः अवितः । १,११२,१०; ६१
वसिष्ठः अवितः । १,११२,९; ६० । स्तोता ७,७०,६;
३६० । ७३,३; ६७५
विधवा (वज्रिमती) अविता । १०,४०,८; ६०४
विमदः अवितः । १,११२,१९; ७० । ११६,१; ७७ ।
११७,२०; २१ । ८,९,१५; ४५८ । १०,३९,७; ५८९
द्रष्टा । १०,२४,४; ५८०
विमनाः स्तोता । ८,८६,२; ५६८
विमपला अविता । १,११२,१०; ६१ । ११६,१५; ९१ ।
११७,११; ११२ । ११८,८; १३४ । १८२,१; १९४ ।
१०,३९,८; ५९०

विश्वकः द्रष्टा । ८, ८३, १-३; ५६७-५६९
 विष्वाध्वः अविता । ८, ८६, ३; ५६९
 विष्वाचः (षष्ठी)-स्वक् असुरः १, ११७, १३; ११७
 वैन्यः (पृथी) अविता । ८, ९, १०; ४१३
 वैयश्वः द्रष्टा । ८, २६, ११; ५००
 व्यश्वः अविता । १, ११२, १५; ६३ । स्तोता ८, ९, १०;
 ४५३ । २६, ९; ४९८
 हांयुः १, ३४, ६; १७
 शयुः अविता । १, ११२, ३, १६; ५४, ६७ । ११६; २२;
 ९८ । ११७, १२, २०; ११३, १२१ । ११८, ८; १३४ ।
 ११९, ६; १४३ । ६, ६२, ७; ३१२ । ७, ६८, ८; ३४५ ।
 १०, ३९, १३; ५९५ । ४०, ८; ६०४
 शरः (आर्चकः) अविता । १, ११६, २०; ९८
 शर्यातः अविता । १, ११२, १७; ६८
 शाण्डः दाता । ६, ६३, ९; ३२५
 शुचन्तिः अविता । १, ११२, ७; ५८
 शुन्ध्युः अविता । १०, ३९, ७; ५८९

श्यावः अविता । १, ११७, ८, २४; १०९, १२५
 श्यावाध्वः द्रष्टा । ८, ३५, १२-२१; ५२७-५२९
 श्रुतर्यः अविता । १, ११२, ९; ६०
 सप्तवग्निः द्रष्टा । ५, ७८, ५-६; ३०१-३०२
 सप्तवग्निः अविता । ८, ७३, ९; ५४८ । १०, ३९, ९; ५२१
 साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, १०; २३६
 साहदेव्यः सोमकः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५
 सुदाः अविता । १, ४७, ६; ४४ । ११२, १२; ७०
 सुमीळः दाता । ६, ६३, ९; ३२५
 सुषामा अविता । ८, २६, २; ४९१
 सुहस्यः द्रष्टा । १०, ४३, ३; ६२३
 सोभरिः स्तोता । ८, ५, २६; ४०९ । द्रष्टा ८, २२, २, १५;
 ४७३, ४८६
 सोमकः साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५
 स्यूमरश्मिः अविता । १, ११२, १६; ६७
 हिरण्यहस्तः अविता । १, ११७, २४; १२५

अश्विनौ-देवता-मन्त्रेषु अन्याः-देवताः ।

अग्निः १, ११२, १ (द्वितीयः पादः) ५२ । ५, ७५, ९; २८६ ।
 ७६, १; २८७ । ७, ६७, २; ३२९, १ । ७२, ४; ३७१ ।
 ८, ३५, १; ५०९
 अङ्गिराः ८, ३५, १३; ५२१
 अदितिः १, ११२, २५; ७३
 अद्रिः ८, ३५, २; ५१०
 अर्यमा ८, २६, ११; ५००
 अश्वः (अश्विनोः) १, १८१, २; १८६
 अश्विरथः १, ११९, १-३; १३८-१४० । १२०, १० ११;
 १५७-१५८ । १५७, ३; १६५ । १८०, १०; १८४ ।
 १८१, ३; १८७ । ४, ४३, २; २४५ । १०, ४१, १; ६११
 आदित्यः १, ४६, ४; २७
 आदित्याः ६, ६२, ८; ३२३ । ८, ३५, १; ५०९
 आपः ८, ३५, ३; ५११
 इन्द्रः ८, ३५, १; ५०९
 इन्द्राविष्णु ८, १०, २; ४६६
 इष्टका वा० य० १४, १-५; ६३४-६३८
 ऋतु- (सहितौ) १, १५, ११; ४
 उषाः १, ५६, १, १४; २४, २७ । ५, ७५, ९; २८६ । ७६, १;
 २८७ । ७, ७२, ३-४; ३००-३०१ । ८, ५, १; ३८४ ।

९, १६-१८; ४१९-४६१ । ७३, १६; ५५५
 उषः सूर्यग्रहितौ अश्विनौ ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९
 ऋभवः ८, ३५ १५; ५२३
 कः ४, ४३, १; २४४
 चन्द्रादित्यौ १, १८१, ४; १८८
 तपाः २, ३७, ५; २१४
 दीर्घतमाः १, १५८, ६; १७४
 देवाः (त्रयस्त्रिंशत्) १, ३४, ११; १२
 द्यौः १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०
 द्यावापृथिव्यौ १, ११२, १ (प्रथमः पादः); ५२ । ६, ६२, ८;
 ३१३ । ७, ७२, ३; ३७०
 धर्मः ८, ३५, १३; ५२१
 धियः विश्वाः ८, ३५, २; ५१०
 पतयः १०, ४०, १०; ६०९
 पृथिवी १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०
 प्रजापतिः वा० य० २०, ६७-६९; ६५६-६५८ । २१, ४८-५८;
 ६५९-६६९
 बृहस्पतिः ८, १०, २; ४६६
 भुवनम् ८, ३५, २; ५१०
 मगवः ८, ३५ ३; ८११

मरुतः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, ३, १३-१५; ५११, ५२१-
५२३
मित्रः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ३; ३१४ । ८, २६, ११;
५००
मित्रावरुणौ ८, ३५, १३; ५२१
रथः अश्विनोः-द्रष्टव्यः ' अश्विरथः '
रुद्राः ८, ३५, १; ५०२
रुद्रियाः ६, ६२, ८; ३१३
रोदसी ६, ६२, ८; ३१३
वरुणः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ३; ३१४ । ८, २६, ११;
५०० । ३५, १; ५०९
वसवः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, १; ५०९

विष्वा धियः ८, ३५, २; ५२०
विश्वे देवाः ८, १०, २; ४६६ । ३५, ३; ५११
विष्णुः ८, ३५, १, १३; ५०९, ५२१
सप्तवाग्निः ८, ७३, १८; ५५७
सरस्वती वा० य० २०, ३७-६९; ६५६-६५८ । २१, ४८-५८;
६५९-६६९
सिन्धः १, ११०, २५; ७६
सविता १, १५७, १; १६३ । ७, ७२, ५; ३०१
सूर्यः ७, ६७, २; ३२९
सूर्यसहितौ उषसा च ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९
सोमः वा० य० १९, ३४; ६५४
सोमरसः वा० य० १९, ३५; ६५५

(१) निर्विशेषितत्वेन* वर्णितं अश्विनोः अवनकर्म ।

अग्निः ८, ५, २५; ४०८ । [द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधा-
पञ्चयः अवनम् । ']
अग्निगुः १, ११२, २०; ७१ । ८, २२, १०; ४८१
उपस्तुतः १, ११२, १५; ६६ । ८, ५, २५; ४०८
कक्षीवान् (स्तोता) १, ११२, ११; ६२
कण्वः (प्रसिषासन्) ८, ५, २५; ४०८ । ८, २०; ४४० ।
[द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधापञ्चयः अवनम् ']
कर्कन्धुः १, ११२, ६; ५७
कलिः (वित्तजानिः) १, ११२, १५; ६६ । [द्रष्टव्यम्
' (६) भिषक्कर्मणा अवनम् । ']
कुत्सः १, ११२, २; ६०
कुत्सः आर्जुनेयः १, ११२, २३; ७४
कृशः १०, ४०, ८; ६०४
गोशर्यः ८, ८, २०; ४४०
तुर्वीतिः १, ११२, २३; ७४ ×
दुर्भीतिः १, ११२, २३; ७४
ध्वसन्तिः १, ११२, २३; ७४
नर्यः १, ११२, २; ६० ×
पक्कः ८, २२, १०; ४८१
पुरुकुत्सः १, ११२, ७; ५८
पुरुषन्तिः १, ११२, २३; ७४

पृथिः १, ११२, १५; ६६
पृथिगुः १, ११२, ७; ५८
प्रियमेवः ८, ५, २५; ४०८
बभ्रः (विजोषस्) ८, २२, १०; ४८१
भरद्वाजः (विप्रः) १, ११२, १३; ६४
भुज्युः १०, ४०, ७; ६०३ । [द्रष्टव्यम् ' (५) परकृतविविधा-
पञ्चयः अवनम् । ']
मेधातिथिः ८, ८, २०; ४४०
वन्नः (विपिपानः) १, ११२, १५; ६६
वय्यः १, ११२, ६; ५७ ×
वशः अद्वयः (प्रेणिः) १, ११२, १०; ६१
वशः दशमजः ८, ८, २०; ४४०
वशः १०, ४०, ७; ६०३
वसिष्ठः १, ११२, ९; ६०
विधवा १०, ४०, ८; ६०४
व्यश्वः १, ११२, १५; ६६
शयुः १०, ४०, ८; ६०४ । [द्रष्टव्यम् ' (७) अन्येषां प्राणिनां
अवनम् । ']
शिञ्जारः ८, ५, २५; ४०८+ । १०, ४०, ७; ६०३
श्रुतयः १, ११२, २; ६०

* ' यथा चित्कण्वमावतम् ' ' याभिर्व्यश्नुत पृथिमावतम् ' इति एतादृशमन्त्रैः वर्णितम् ।

× द्रष्टव्यम् ' एवमाविध नर्यं तुर्वीशं यदुं त्वं तुर्वीति वय्यं शतक्रतो । ' (इन्द्रः०) १, ५४, ६; ७९१ ' अरमयः सरपसस्ताराय
कं तुर्वीतये च वययाय च स्तुतिम् । ' (इन्द्रः०) २, १३, १२; ११४८ ' त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वययाय अरन्तीम् ।
अरमयो नमसैजदणः सुतरणो अकृणोरिन्द्र सिन्धून् । ' (इन्द्रः०) ४० ४, १२, ६; १५२७ ।

+ अत्र सायनाचार्याः ' शिञ्जारः ' इति शब्दस्य शब्दयन्, स्तुवन् इत्यर्थं दत्त्वा अयं शब्दः अत्रेर्विशेषणं इति मन्यन्ते ।

११ [दै. अश्विनौ]

(२) इष्टवस्तुप्रदानेन अवनम् ।

		धनम् ।
अंशुः	८,५,२६;	४०९ यथोत कृत्वे धने अंशुम् (आवतम्) ।
त्रासदस्युः	८,८,२१;	४४१ याभिर्नरा त्रसदस्युं आवतं कृत्वे धने ।
त्रासदस्यवः	८,२२,७;	४७८ येभिः (ऋतस्य पथिभिः) तृक्षिः तृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिव्यथः ।
दिवोदासः	१,११६,१८;	९४ यदयातं दिवोदासाय बर्तिः भरद्वाजायाश्चिना ह्यन्ता । रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिशुमारश्च युक्ता ॥
विमनाः	८,८६,२;	५६८ कथा नूनं वां विमना उप स्तवद् युवं धियं ददथुः वस्य इष्टये ।
विष्णापूः	८,८६,३;	५६९ युवं हि ष्मा पुरुभुजा इमं एधतुं विष्णाप्वे ददथुः वस्य इष्टये ।
सुदाः	१,११२,१९;	७० याभिः सुदासे ऊहथुः सुदेव्यम् ।
सुषामा	८,२६,२;	४९१ युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
वशः	१,११२,१०;	६१ याभिर्वशमश्न्यं त्रेणि आ- वतम् ।
	१,११६,२१;	९७ एकस्या वस्तोः आवतं रणाय वशमश्चिना सनये सहस्रा ।
	८,८,२०;	४४० याभिः वशं दशत्रजं ... आवतं कृत्वे धने ।
जहावी	१० ४०,७;	६०३ युवमश्चिना वशं...उपारथुः ।
	३,५८,६;	२३१ युवोर्नरा द्रविणं जहाव्याम् ।
	१,११६,१९;	९५ रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यं आयुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता । आ जहावीं समनसोप वाजैः त्रिरहो भागं दधतीमयातम् ।
		अन्नम् ।
मनुः	१,११२,१६;	६७ मनवे पुरा गातुमीषथुः ।
	१,११२,१८;	६९ मनुं शूरं इषा समावतम् ।

	१,११७,२१;	१२२ इषं दुहन्ता मनुषाय दत्ता । यवं वृकेणाश्चिना वपन्ता ।
	८,२२,६;	४७७ दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं दिवि यवं वृकेण कर्षथः ।
	८,१०,२;	४६६ यद् वा यज्ञं मनवे संमिमि- क्षथुः ।
विप्रः	१,११७,११;	११२ सूनोमनिन अश्चिना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
सोभरिः	८,५,२६;	४०९ यथा वाजेषु सोभरिम् (आवतम्) ।
		सदः ।
शुचन्तिः	१,११२,७;	५८ याभिः शुचन्तिं धनसां सुषंसदम् ।
		क्षेत्रपतित्वादि ।
मन्धाता	१,११२,१३;	६४ मन्धातारं क्षेत्रपत्येषु आव- तम् ।
जाहुषः	७,७१,५;	३६६ नि जाहुषं शिथिरं धातमन्तः ।
	१,११६,२०;	९६ परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।
		क्री ।
कलिः	१,११२,१५;	६६ याभिः कलिं वित्तजानिं दुवस्यथः ।
	१०,३९,८;	५२० युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।
श्यावः	१,११७,८;	१०९ युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम् ।
	१,११७,२४;	१२५ त्रिधा ह श्यावमश्चिना वि- कस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदानू ।
विमदः	१,११२,१९;	७० याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुः ।
	१,११६,१;	७७ यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहथू रथेन ।
	१,११७,२०;	१२१ युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम् ।
	१०,३९,७;	५८९ युवं रथेन विमदाय न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।
	८,९,१५;	४५८ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्व- त्साय यच्छतम् ॥

विमदः (मन्त्रद्रष्टा) १०, २४, ४; ५८० युवं शक्रा मायाविना समीची
निरमन्थतम् । विमदेन
यदीकृता नासत्या निरम-
न्थतम् ॥

पतिः ।

घोषा १, ११७, ७; १०८ घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे
पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम् ।
१०, ४०, ९; ६०५ जनिष्ठ योषा पतयत् कनी-
नको वि चारुहन् वीरुधो
दंसना अनु । आसौ रीयन्ते
निवनेव सिन्धवोऽस्मा अहे
भवति तत् पतित्वनम् ॥

पुत्रः ।

कृष्णियः १, ११६, २३; ९९ अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय
ऋज्यते नासत्या शचीभिः ।
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय
विष्णाप्वं ददथु विश्वकाय ॥
१, ११७, ७; १०८ युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय
विष्णाप्वं ददथुः विश्वकाय ।
वधिमती १, ११६, १३; ८९ अजोद्वीक्षासत्या करा वां
महे यामन् पुरुभुजा पुरन्धिः ।
श्रुतं तत् शासुरिव वधिमत्या
हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥
१, ११७, २४; १२५ हिरण्यहस्तमश्विना रराणा
पुत्रं नरा वधिमत्या अदत्तम् ।
६, ६२, ७; ३१२ श्रुतं हवं वृषणा वधिमत्याः ।
१०, ३९, ७; ५८९ युवं हवं वधिमत्या अगच्छतं
युवं सुष्ठुति चक्रथुः पुरन्धये ।

गावः ।

अगस्त्यः ८, ५, २६; ४०९ यथा गोषु अगस्त्यम्
(आवतम् ।)
त्रिशोकः १, ११२, १९; ६३ याभिः त्रिशोकः उस्त्रिया
उदाजत ।

अश्वः ।

पेदुः १, ११६, ६; ८२ यदश्विना ददथुः श्वेतमश्वं
अघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।
तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्
पैद्वी वाजी सदमिद्व्यो अर्यः ॥
१, ११७, ९; ११० पुरु वर्षास्यश्विना दधाना
नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
सहस्रसां वाजिनमप्रतीत-
महिहन् श्रवस्यं तरुत्रम् ॥
१, ११८, ९; १३५ युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजुत-
महिहन्मश्विनादत्तमश्वम् ।
जोहृत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं
सहस्रसां वृषणं वीड्वज्रम् ॥
१, ११९, १०; १४७ युवं पेदवे पुरुवारमश्विना
रूपधां श्वेतं तरुतारं दुव-
स्यथः । शरैरभिधुं पृतनासु
दुष्टरं चक्रेत्यमिन्द्रमिव चर्ष-
णीसहम् ॥
७, ७१, ५; ३६६ नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
१०, ३९, १०; ५९२ युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं
नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।
चर्कृत्यं ददथुर्दावित्सखं भगं
न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥

(३) शुद्ध-पीडानिवारणम् ।

अन्तकः १, ११२, ६; ५७ याभिः अन्तकं जसमानं
आऽरणे... जिजिन्वथुः ।
वध्नः १, ११२, १५; ६६ याभिः वध्नं विपिपानं...
दुवस्यथः ।
शरः १, ११६, २२; ९८ शरस्य चित् आर्चकस्याव-
तादा नीचादुच्चा चक्रथुः
पातवे वाः ।
अंशः १, ११२, १; ५९ याभिः अंशे कारं अंशाय
जिन्वथः ।

ऋतस्तुभ् १, ११२, २०; ७१ ओम्यावती सुतरा ऋत-
स्तुभम् ।
ददाशुः १, ११२, २०; ७१ याभिः शन्ताती भवथः
ददाशुषे ।
धीः-प्रवृत्तिः १, ११२, २; ५३ याभिः धियः अवथः कर्म-
क्षिप्रये ।
त्रिमन्तुः १, ११२, ४; ५५ याभिः त्रिमन्तुः अभवत्
विचक्षणः ।

(४) संग्रामे शत्रुहननेन रक्षणम् ।

आर्यः १,११७,२१; १२२ अभि दस्युं बकुरेणा धमन्ता
उरु ज्योतिश्चक्रुः आर्याय ।
कृशानुः १,११२,२१; ७२ याभिः कृशानुं असने
दुवस्यथः ।
त्रसदस्युः १,११२,१४; ६५ याभिः पूर्भिद्ये त्रसदस्युं
आवतम् । [धनप्रदानं-
द्रष्टव्यं । ८,८,२१; ४४१]
दिवोदासः १,११२,१४; ६५ याभिः दिवोदासं शम्बद्दस्य
आवतम् ।
नरः १,११२,२२; ७३ याभिः नरं गोषुयुधं नृषाह्ये
क्षेत्रस्य साता तनयस्य
जिन्वथः ।
यामी रथान् अवथुः याभिः
अर्वतः ।

पठर्वा १,११२,१७; ६८ याभिः पठर्वा जठरस्य
मज्जनाग्निर्नादीदेचित इद्धो
अजमन्ता ।
पृथुश्रवाः १,११६,२१; ९७ निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता
पृथुश्रवसो वृषणावरातीः ।
शर्यातः १,११२,१७; ६८ याभिः शर्यातं अवथः महाधने ।
स्यूमरारिमः १,११२,१६; ६७ याभिः शारीः आजतं स्यूमर-
इमये ।
१,११६,२; ७८ वीलुपत्माभिः आशुहेमभिर्वा
देवानां वा जूतिभिः शाशदानां
तद् रासभो नासत्या सहस्रं
आजा यमस्य प्रधने जिगाय ॥
१,११७,१६; ११७ जातं विष्वाचो अहतं विषेण ।
१,११२,१२; ६३ अनश्वं यामी रथामावतं जिषे ।

(५) परकृतविविधापद्मयः अवनम् ।

अत्रिः १,११२,७; ५८ याभिः ...तप्तं घर्ममोम्याव-
न्तमत्रये...आवतम् ।
१,११२,१६; ६७ याभिर्नरा ... अत्रये.....
गातुमीषथुः ।
१,११६,८; ८४ हिमेनाग्निं प्रंसमवारयेथां
पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।
ऋवीसे अत्रिमाश्विनावनीत
मुञ्चिन्यथुः सर्वगणं स्वरित ॥
१,११७,३; १०४ ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्य-
मृबीसादात्रिं मुञ्चथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया
अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥
१,११८,७; १३३ युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्ज-
मोमानमाश्विनावधत्तम् ।
१,११९,६; १४३ युवं ... उरुष्यथः हिमेन
घर्मं परितप्तमत्रये ।
१,१२०,४; १७८ युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रये-
ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेषे ।
१,१२३,५; २०६ युवां गोतमः पुरुमीळ्हो
अत्रिर्दक्षा हवतेऽवसे हवि-
ष्मान् ।

५,७३,६; २६३ युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुन्नेन
चेतसा । घर्मं यद् वामरेपसं
नासत्यास्त्रा भुरण्यति ।
५,७३,७; २६४ उग्रो ह वां ककुहो ययिः
शृण्वे यामेषु सन्तनिः ।
यद् वां दंसोभिरश्विनाऽत्रिर्न-
राववर्तति ॥
५,७४,१; २६८ अत्रिर्वामा विवासति ।
७,६८,५; ३४२ चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वरित
न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।
यो वामोमानं दधते प्रियः
सन् ॥
७,७१,५; ३६६ निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिम् ।
८,५,२५; ४०८ यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेध-
सुपस्तुतम् । अत्रिं शिजार-
माश्विना ॥
श्यावाश्व ८,३५,१९; ५२७ अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं
(आत्रेयः)
श्यावाश्वस्य सुन्वतो मद-
च्युता ।
अर्वनाना ८,४२,५; ५३४ यथा वामत्रिरश्विना गोभि-
(आत्रेयः)
र्विप्रा अजोहवीत् ।

गोपवन ८,७३,३; ५४२ उप स्तुणीतमत्रये हिमेन
(आत्रेयः) धर्ममश्विना । अन्ति धर्मभूतु
वासवः ॥
८,७३,७; ५४३ अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं
युवमश्विना । अन्ति धर्मभूतु
वासवः ॥
८,७३,८; ५४७ वरेथे अग्निमातपो वदते
वन्वत्रये । अन्ति० ... ॥
५,७८,४; ३०० अत्रिद्वं वामवरोहन्तृवीस-
मजोहर्वन्नाधमानेव योपा ।
श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेना-
ऽऽगच्छतमश्विना शन्तमेन ॥
१०,३२,९; ५९१ धुवस्तृवीग्मुन तप्तमत्रय
ओमन्वन्तं चक्रधुः सप्त
वत्रये ।
अत्रिः सांख्यः १०,१४३,१; ६२७ ल्यं चिदत्रिमृत्तजुरमर्थमश्वं
न यातवे ।
१०,१४३,२; ६२८ ल्यं चिदश्वं न वाजिनमरे-
णवो यस्तनत । दृढं प्रन्धि
न वि प्यतमत्रि यविष्टमा
रजः ॥
१०,१४३,३; ६२९ नरा दंसिष्टावत्रये शुभ्रा
सिषासतं धियः ।
कण्वः १,४७,५; ४३ याभिः कण्वमभिष्टिभिः
प्रावतं युवमश्विना ।
१,११२,५; ५३ याभिः कण्वं प्र सिषासन्त-
मावतम् ।
१,११७,८; १०९ युवं ... अदत्तं महः क्षोण-
स्याश्विना कण्वाय ।
१,११८,७; १३३ युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः
प्रत्यधत्तं सुष्टुति जुजुषाणा ।
८,५,२३; ६०६ युवं कण्वाय नासत्याऽपिरि-
प्ताय हर्म्ये । शश्वदतीर्द-
शस्यथः ॥
८,५,२५; ४०८ यथा चित् कण्वमावतम् ।
८,८,२०; ४४० याभिः कण्वं मेधातिथि ...
आवतम् ।
जाहुषः १,११६,२०; ९३ परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सी
सुगेभिर्नक्तं ऊधुः रजोभिः ।
७,७१,५; ३६६ नि जाहुषं शिथिरे घातमन्तः ।

दीर्घतमा १,१५८,४; १७२ उपस्तुतिरौच्यसुख्येत् मा
(औच्यः) मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
मा मामेधो दशतयश्चितो
धाक् प्र यद् वां बद्धस्त्वानि
खादति क्षाम् ॥
१,१५८,५; १७३ न मा गरन् नद्यो मातृतमा
दासा यदीं सुसमुब्धमवाधु ।
शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत्
स्वयं दास उरो अंसावपि
रथ ॥
रेभः १,११२,५; ५६ याभी रेभं निवृत्तं सित-
मङ्गयः ... । ताभिः पु
ऊतिभिरश्विना गतम् ।
१,११६,२४; १०० दश रात्रीरश्विना नव धून-
वनक्षं श्रथितमप्स्वन्तः ।
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्त-
मुन्नियथुः सोममिव स्त्रुवेण ॥
१,११७,४; १०५ अश्वं न गूळहमश्विना दुरेवै-
र्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
सं तं रिणीथो विप्रुतं
दंसोभिर्न ... ॥
१,११७,१२; ११३ हिरण्यस्येव कलशं निखात-
मुदपथुर्वदशमे अश्विनाहन् ॥
१,११८,६; १३२ उद् रेभं दत्ता वृषणा
शचीभिः ।
१,११२,६; १४३ युवं रेभं परिपूतेरुहपथः ।
१०,३२,९; ५९१ युवं ह रेभं वृषणा गुहा-
हितमुदैरयतं ममृवांसम-
श्विना ॥
वन्दनः १,११२,५; ५६ याभिः [ऊतिभिः] उद्
वन्दनमैरयतं स्वर्दशे ।
१,११३,११; ८७ तद् वां नरा शंस्यं राध्यं
चाभिष्टिमन्नासत्या वरुथम् ।
यद् विद्वांसा निधिमिवापगु-
ळमुद् दर्शतादपथुर्वन्दनाय ॥
१,११७,५; १०३ सुषुप्तांशं न निर्ऋतेरुपस्थे
सूर्यं न दत्ता तमसि क्षियन्तम् ।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखा-
तमुदपथुरश्विना वन्दनाय ॥
१,११८,६; १३२ उद् वन्दनमैरतं दंसनाभिः ।

१,११९,६; १४३ प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा ॥

१,११९,७; १४४ युवं वन्दनं निरुक्तं जरण्यया
रथं न दत्ता करणा समिन्वथः ॥

१०,३२,८; ५९० युवं वन्दनमृश्यदादुदपथुः ।

भुज्युः तौग्यः १,११९,६; ५७ भुज्युं याभिः [ऊतिभिः]
अव्यथिभिर्जिज्जिवथुः ।

१,११९,२०; ७१ भुज्युं याभिः (ऊतिभिः)
अवथः ।

१,११६,३-५; ७९-८१ तुप्रो ह भुज्युमश्विनोदमेधे
रथिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः ।
तमूह्युनौभिरात्मन्वतीभि
रन्तरिक्षगुहिरपोदकाभिः ॥
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातित्रजाङ्घ्रि-
नासत्या भुज्युमूह्युः पतङ्गैः ।
समुद्रस्य धन्वर्षाद्रस्य पारे
त्रिभी रथैः शतपङ्क्तिः षळ-
श्चैः ॥ अनारम्भणे तदवी-
रयेथामनास्थाने अग्रभणे
समुद्रे । यदश्विना ऊह्युर्भुज्यु-
मस्तं शतारित्रां नावमात-
स्थिर्वासम् ॥

१,११७,१४; ११५ युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद्
विभिरूह्युर्गङ्गाभिरथैः ॥

१,११७,१५; ११६ अजोहवीदश्विना तौग्यो वां
प्रोळहः समुद्रमव्यथिर्जग-
न्वान् ।

निष्ठमूह्युः सुयुजा रथेन
मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥

१,११८,६; १३२ निष्ठौग्यं पारयथः समुद्रात् ।

१,११९,४; १४१ युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं
स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य
आ । यासिष्ठं वर्तिवृषणा
विजेन्यम्... ।

१,११९,८; १४५ अगच्छतं कृपमाणं परावति
पितुः स्वस्य त्यजसा निबा-
धितम् ।

१,१५८,३; १७१ युक्तो ह यद् वां तौग्याय
पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पञ्जः ।

१,१८०,५; १७९ आ वां दानाय वष्टृतीय दत्ता
गोरोहेण तौग्यो न जित्रिः ।

१,१८२,५ ७; १९८-२०० युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु
प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौ-
ग्याय कम् । येन देवत्रा
मनसा निरूह्युः सुपसनी
पेतथुः क्षोदसो महः ॥ अव-
विद्धं तौग्यमप्स्वन्तरमार-
म्भणे तमसि प्रविद्धम् ।
चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा
उदश्विभ्यामिषिताः पारय-
न्ति ॥ कः स्विद् वृक्षो
निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं
तौग्यो नाधितः पर्येषस्व-
जत् । पर्णा मृगस्य पतरो-
रिवारभ उदश्विना ऊह्युः
श्रोमताय कम् ॥

६,६२,६; ३११ ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समु-
द्रात् तुप्रस्य सूनुमूह्यु रजो-
भिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भु-
जन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरु-
पस्थात् ॥

७,६८,७; ३४४ उत त्वं भुज्युमश्विना सखायो
मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।
निर्गो पर्यदरावा यो युवाकः ॥

७,६९,७; ३५३ युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र
उदह्युर्णसो अस्त्रिधानैः ।
पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दस-
नाभिरश्विना पारयन्ता ॥

८,५,२२; ४०५ कदा वां तौग्यो विधत्
समुद्रे जहितो नरा । यद्
वां रथो विभिष्पतात् ॥

१०,३९,४; ५८६ निष्ठौग्यमूह्युर्द्वयस्परि ।

१०,४०,७; ६०३ युवं ह भुज्युं... उपारथुः ।

१०,१४३,५,६३१ युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः
पार ईङ्खितम् । यातम-
च्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये-
कृतम् ॥

सप्तवाधिः ५,७८,५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते योनिः
सृष्यन्त्या इव । श्रुतं मे
अश्विना हवं सप्तवाधि च
मुञ्चतम् ॥

५,७८ ६; ३०२ भीताय नाधमानाय ऋषये
सप्तवधये । मायाभिरश्विना
युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ॥
८,७३,९; ५४८ प्र सप्तवधिराशसा धारामन्त्रे-

रशायत ।

१०,३२ ९; ५९१ ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवधये ।
८,१२,१२; ४८३ 'याभिः क्विं वावृधुः' ।
[वन्दनपीडा निवारणार्थं एतत् कर्म इति केचित्]

(६) भिषक्कर्मणा अवनम् ।

स्वामः १,११७,१९; १२० मही वामूतिरश्विना मयोभूः
उत स्वामं धिण्या सं रिणीथः ।
नार्षदः १,११७,८; १०९ प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां
यन्नाषदाय श्रवो अघ्यधत्तम् ।
परावृज् १,११२,८; ५९ याभिः शचीभिः वृषणा परा-
वृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस
एतवे कथः । +
कविः १,११६,१४; ९० उतो कविं पुरुषुजा युवं ह
कृपमाणं अकृणुतं विचक्षे ।
ऋज्राश्वः १,११६,१६; ९२ शतं मेघान् वृक्ये चक्षदान-
मृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष
आधत्तं दत्ता भिषजावनर्वन् ।
१,११७,१७; ११८ शतं मेघान् वृक्ये मामहानं
तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा ।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विना-
वधत्त ज्योतिरन्धाय चक्र
थुर्विचक्षे ॥
१,११७,१८; ११९ शुनमन्धाय भरमहयत् सा
वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।
जारः कनीन इव चक्षदान
ऋज्राश्वः शतमेकं च मेघान् ॥
१,१२०,६; १५३ श्रुतं गायत्रं तक्रवानस्याहं
चिद्धि रिरैमाश्विना वाम् ।
आक्षी शुभस्पती दन् ॥
विश्वला १,११२,१०; ६१ याभिर्विश्वलां धनसामथर्व्यं
सहस्रमीलह आजवजिन्व-
तम् ।
१,११६,१५; ९१ चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण-
माजा खेलस्य परितक्म्या-
याम् । सद्यो जङ्घामायसी
विश्वलायै धने हिते सतवे

प्रत्यधत्तम् ।

१,११७,११; ११२ सं विश्वलां नासत्यारिणी-
तम् ।

१,११८,८; १३४ प्रति जङ्घा विश्वलाया अध-
त्तम् ।

१,१८२,१; १९४ विश्वलावस् दिवो नपाता ।
१०,३९,८; ५९० युवं सद्यो विश्वलामेतवे कथः ।

१,११६,१२; ८८ तद् वां नरा सनये दंस उग्रं
आविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।
दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो
वामश्वस्य शीर्ष्णां प्र यदी-
मुवाच ॥

१,११७,२२; १२३ आथर्वणायाश्विना दधीचेऽ-
श्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् । स
वां मधु प्र वोचदतायन् त्वाष्ट्रं
यद् दत्तावपिकक्ष्यं वाम् ।

१,११९,९; १४६ युवं दधीचो मन आ विवा-
सद्योऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं
वदत् ।

च्यवनः १,११६,१०; ८६ जुजुषो नासत्योत वत्रिं
प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।
प्रातिरतं जरितस्यायुर्दत्ता-
दित पतिमकृणुतं कनीनाम् ॥

१,११७,१३; ११४ युवं च्यवानमश्विना जरन्तं
पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।

१,११८,६; १३२ पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ॥
५,७४,५; २७२ प्र च्यवानाज्जुजुषो वत्रि-

मत्कं न मुञ्चथः । युवा यदी
कथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ॥

५,७५,५; २८२ विभिश्च्यवानमश्विना नि
याथो अद्वयाविचं माध्वी
मम श्रुतं हवम् ॥

+ द्रष्टव्यम्- 'नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवणन्तसास्युक्थयः (इन्द्रः) । २,१३,१२; ११४८ । स विद्वो अपगोहं
कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत् परावृक् । प्रति श्रोणः स्थाद् व्यनगच्छ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ।' (इन्द्रः) २,१५,७; ११३८ ।

७,६८,६; ३४३ उत त्यद् वां जुरते अश्विना भूच्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे । अधि यद् वर्ष इत ऊति धत्थः ॥ ७,७१,५; ३६६ युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तम् । १०,३९,४; ५८१ युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः । कलिः १०,३९,८; ५९० युवं विप्रस्य जरणां उपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।	१,११२,१५; ६६ याभिः कलिं वित्तजानिं दुवस्यथः । श्यावाश्वः १,११७,२७; १२५ त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्ते नज्जीवस एरयतं सुदानू । १,११७,८; १०९ युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम् । विप्रः १,११९,७; १४४ क्षेत्राद् आ विप्रं जनयो विपन्यया ।
---	---

(७) अन्येषां प्राणिनामवनम् ।

अर्वा १,११२,२१; ७२ जवे याभिः यूनः अर्बन्तं आवतम् ।	यावध्न्यामपिन्वतमपो न स्तथं चिच्छकस्याश्विना शर्चाभिः ।
गावः १,११२,१९; ७० आ घ वा याभिः अरुणाः अशिक्षतम् । १,११२,१८; ६९ अग्रं गच्छथः विवरे गो- अर्णसः । १,११२,३; ५४ याभिः [ऊतिभिः] धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा ।	१०,३९,१३; ५९५ अपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना । १०,४०,८; ६०४ युवमश्विनः शयुं युवं ... उरुष्यथः ।
शयुः १,११२,१६; ६७ याभिः [ऊतिभिः] नरा शयवे...गातुमीषथुः । १,११६,२२; ९८ शयवे चिन्नासत्या शर्चाभि- र्जसुरये स्तयं पिप्यथुर्गाम् । १,११७,२०; १२१ अधेनुं दद्या स्तयं विषक्ताम- पिन्वतं शयवे अश्विना गाम् । १,११७,१२; ११३ दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा । १,११८,८; १३४ युवं धेनुं शयवे नाधिताया- पिन्वतमश्विना पूष्याय । १,११९,६; १४२ युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गामि । ६,६२,७; ३१२ दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गाम् ७,६८,८; ३४५ उत श्रुतं शयवे हूयमाना ।	मक्षिका १,११२,२१; ७२ मधु प्रियं भरथः यत् सरङ्भ्यः । १,११९,९; १४६ उत स्या वां मधुमन्माक्षि- कारपत् । वर्तिका १,११२,८; ५९ याभिर्वर्तिकां प्रसिताम- मुञ्चतम् । १,११६,१४; ९० आस्नो वृकस्य वर्तिकांभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् । १,११७,१६; ११७ अजोहवीदश्विना वर्तिका वा- माहो यत् सीममुञ्चतं वृकस्य । १,११८,८; १३४ अमुञ्चतं वर्तिकांमहसो निः । १०,३९,१३; ५९५ वृकस्य चिद् वर्तिकांमन्तरा- स्याद् युवं शर्चाभिर्प्रसिताम- मुञ्चतम् ।

(८) अतिमानुषाणि कर्माणि ।

१,११६,२०; ९६ विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वतो अजरयू अया- तम् । १,११७,१६; ११७ वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेः । १,११६,९; ८५ परावतं नासत्यानुदेथाम् । उच्चाबुधं चक्रयुर्जिह्वावारम् ।	क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राथ तृष्यते गोत- मस्य । १,११६,७; ८३ कारोतराच्छक्रादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भो असिञ्चतं सुरा- याः ।
---	--

१,११७,६; १०७ शफादधस्य वाजिनो जनाय
शतं कुम्भान् असिद्धतं
मधूनाम् ॥
१,११९,१२; ६३ यामी रसां क्षोदसोद्गः पिपि-
न्वथुः ।
१,११२,९; ६० याभिः सिन्धुं मधुमत्तम-
सश्चतम् ।
१,११२,११; ६२ याभिः सुदान् औशिजाय
वणिजे दीर्घश्रवसे मधु
कोशो अक्षरत् ।
१,११२,४; ५५ याभिः परिज्मा तनयस्य
मउमना द्विमाता तूर्पु तरणि-
विभूषति ।
१,११२,१३; ६४ याभिः सूर्यं परियाथः परा-
वति ।
सूर्यस्य दुहिता १,३४,५; १६ त्रिष्ठं वां सूरं दुहिता रहद्
रथम् ।
१,११६,१७; ९३ आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य
कार्मैवातिष्ठदर्वता जयन्ती ।
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त
हृद्भिः समु श्रिया नासत्या
सचेथे ॥
१,११७,१३; ११४ युवो रथं दुहिता सूर्यस्य
सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥
१,११८,५; १३१ आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र
जुष्ट्वी नरा दुहिता सूर्यस्य ।

१,११९,२; १३२ आ वामूर्जानी रथमश्विना-
रहन् ॥
१,११९,५; १४२ युवोरश्विना वपुषे युवायुजं
रथं वाणी येमतुरस्य शार्धम् ।
आ वां पतित्वं सख्याय
जग्मुषी योषावृणीत जेन्या
युवां पती ॥
१,१८४,३; २१० श्रिये पूषन्निष्ठुतेव देवा
नासत्या बहतुं सूर्यायाः ।
वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु
जाता युगा जुर्गेव वरुणस्य
भूरः ॥
५,७३,५; २६२ आ यद् वां सूर्या रथं
तिष्ठद् रघुष्यद् सदा । परि
वामरुषा वयो वृणा वरन्त
आतपः ॥
६,६३,५; ३२१ अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य
रथं तस्थौ पुरुभुजा शनो-
तिम् ।
७,६९,३; ३४२ वि वां रथो वच्चा याद-
मानोऽन्तान् दिवो वाधते
वर्तनिभ्याम् ।
७,६९,४; ३५० युवोः श्रियं परि योषावृणीत
सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।
८,८,१०; ४३० आ यद् वां योषणा रथ-
मतिष्ठद् वाजिर्नावसू ।
विश्वान्यश्विना युवं प्र धीता-
न्यगच्छतम् ॥

अश्विनो-देवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

दीदि - अमी १,१५,११; ४
रिषा - अदसा ८,८,१७; ४३७
अन् - अपच्युता ८,२७,६; ४९६
न - असत्या १,३,३; ३
सु - अश्वा ७,६८,१; ३३८
शत - क्रतू १,११२,२३; ७४
स - क्षणी ८,२२,१५; ४८६
अग्नि - गू ५,७३,२; २५९
विश्व - गूर्ती १,१८०,२; १७६
सु - गोपा १,१२०,७; १५४
अवय - गोहना १,३४,३; १४
१२ [दै. अश्विनौ]

पुरु (श्व) - चन्द्रा ८,५,३२; ४१५
गम्भीर - चेतसा ८,८,१; ४२२
वत्स-प्र - चेतसा ८,८,७; २२७
वि - चेतसा ५,७४,९; २७६
मद - च्युता ८,२२,१६; ४८७
अ - जरौ १,११२,९; ६०
धी - जवना ८,५,३५; ४१८
मनो - जवसा १,११७,१५; ११६
पुरा - जा ७,७३,१; ३७३
सु - जाता १,११८,१०; १३६
धियं - जिन्वा १,१८९,१; १२४

स - जोषसा ३,५८,७; २३२
 सचनस् - तमां ८,२६,८; ४९७
 मनस् (नो) - तरा १,४६,२; २५
 अ - तूर्तदक्षा ८,२६,१,४९०
 पुरु - त्रा २,३९,१; २१५
 मर्त्य - त्रा ६,६२,८; ३१३
 शयु - त्रा १,११७,१२; ११३
 पुरु - दंसा ७,७३,१; ३७३
 पुरु - दंससा १,३,२; २
 सु - दंससा ८,१०,३; ४६७
 अतूर्त - दक्षा ८,२६,१; ४९०
 सु - दक्षा ३,५८,७; २३२
 सु - दानू १,११२,११; ६२
 अ - दाभ्या ५,७५,७; २८४
 वसु - धिती १,१८१,१; १८५
 दिवो (वः) - नपाता १,११७,१२; ११३
 दिवो (वः) - नरा १०,१४३,३; ६२९
 अ - निन्द्या १,१८०,७; १८१
 दानुनः (स्) - पती ८,८,१६; ४३६
 वृ - पती ७,६७,१; ३२८
 शची - पती ७,६५,५; ३३२
 शुभ्र (स्) - पती १,३,१; १
 सत् - पती अथर्व ७,७३,४; ३७६
 पुरु - पन्था ६,६३,१०; ३२६
 सु - पर्णा ४,४३,३; २४६
 तनू - पा ८,९,११; ४४९
 पर (स्) - पा ८,९,११; ४४९
 सु-गो - पा १,१२०,७; १५४
 छर्दिस् - पौ ८,९,११; ४४९
 अगत - पौ ८,९,११; ४४९
 मधु - पौ १,१८०,२; १७६
 द्रवत् - पाणी १,३,१; १
 वीळु - पाणी ७,७३,४; ३७६
 मधु - पातमा ८,२२,१७; ४८८
 दक्ष - पिता वा० य० १४,३; ६३६
 हिरण्य - पेसासा ८,८,२; ४२२
 वत्स - प्रचेतसा ८,८,७; ४२७
 अरि - प्रा ८,८,९; ४२९
 अथ - प्रिया ८,८,४; ४२४
 पुरु - प्रिया ८,५,४; ३८७

ऋत - प्सू १,१८०,३; १७७
 पुरु - भुजा १,३,१; १
 पुरु - भू ४,४४,४; २५४
 मयस् (यो) - भुवा १,२२,१८; ५१
 शम् - भू १,४६,१३; ३६
 शम् - भुवा ८,८,१९; ४३९
 शम् - भविष्ठा २,३९,५; २१९
 सचा - भुवा १,३४,११; २२
 पुरु - भोजसा ८,२२,१६; ४८७
 अश्व (श्वा) - मघा ७,७१,१; ३६२
 गो - मघा ७,७१,१; ३६२
 पुरु - मन्तू १,१५८,१; १६९
 पुरु - मन्त्रा ८,५,४; ३८७
 पुनर् - मन्थौ १,११७,१४; ११५
 अ - मर्त्या ८,२६,१७; ५०६
 सिन्धु - मातरा १,४६,२; २५
 प्रिय - मेघा ८,८,१८; ४३८
 प्रातर - यावाणा २,३२,२; २१६
 शुभ्र - यावाना ८,२६,१९; ५०८
 प्रातर - युजा १,२२,१; ५
 सु - युजा ७,७०,२; ३५६
 मधु (धू) - युवा ५,७३,८; २६५
 सु - रथा १,२२,२; ६
 चित्र - राती ६,६२,५; ३१०
 अ - रेपसा १,१८१,४; १८८
 मधु - वर्णा ८,२६,६; ४९२
 रुद्र - वर्तनी १,३,३; ३
 हिरण्य - वर्तनी १,२२,१; ५१
 जेन्या - वसू ७,७४,३; ३८०
 पुरु - वसू १,४७,१०; ४८
 मना - वसू ५,७४,१; २६८
 वाजिनी - वसू २,३७,५; २१४
 विशपला - वसू १,१८२,१; १९४
 वृषन् (ण्) - वसू २,४१,८; २२४
 शची - वसू १,६७,५; ३३२
 सूर्या - वसू ७,६८,३; ३४०
 विश्व - वारा ७,७०,१; ३५५
 यज्ञ - बाहसा १,१५,११; ४
 विप्र - बाहसा ५,७४,७; २७४
 अहर् - विदा ८,५,९; ३९२
 ऋतु - विदा २,३९,२; २१६

वसु - विदा १, ४६, २; २५
स्वर - विदा ८, ८, ७; ४२७
सु - वीरा ८, २६, ७; ४९६
ऋत (ता) - वृधा १, ४७, १; ३९
न - वेदसा १, ३४, १; १२
विश्व - वेदसा १, ४७, ४; ४२
शुचि - व्रता १, १५, ११; ४
पुरु - शाकतमा ६, ६२, ५; ३१०
सु - श्रुता २, ३९, ६; २२०
हवन - श्रुता ५, ७५, ५; २८२
न - अ-सत्या १, ३, ३; ३
युयुजान - सती ६, ६२, ४; ३०९

वाज - सातमा ८, ५, ५; ३८८
शूर - साता १, १५७, २; १६४
सु - स्तु [हु] ता ६, ६३, ६; ३२२
दिवि - स्पृशा १, २२, २; ६
पुरु - स्पृहा ८, ८, २२; ४४२
अ - स्निधा ३, ५८, ७; २३२
रक्षः (श्रो) - हना (णा) ७, ७३, ४; ३७६
वृत्र - हन्तमा ८, ८, ९; ४२९
सु - हवा ८, २२, १; ४७२
पुरु - हृता ६, ६३, १; ३१७
याम - हृतमा ८, ७३, ६; ५४५
आशु - हेषसा ८, १०, २; ४६६

अश्विनौ-देवतामन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकारि वामन्धसो ३१९	अभुत्स्यु प्र देव्या साकं ४५९	अश्वं न गृहहमश्विना १०५
अगच्छतं कृपमाणं १४५	अभौदं वयुनमो १९४	अश्वसो ये वासुप ३८१
अग्निनेन्द्रेण वरुणेन ५०९	अभूदु पारमेतवे ३४	अश्विना घर्म पातः ६७०
अङ्गिरस्वन्ता उत ५२२	अभूदु भा उ अंशवे ३३	अश्विना परि वामिषः २३३
अचेति दत्ता व्युनाकम् १६१	अभूदुषा रुशत् पशुः २८६	अश्विना पिबतं मधु ४
अजोहवीदश्विना तौग्यो ११६	अमाजुरश्विद् भवथो ५८५	अश्विना पुरुदैससा २
अजोहवीदश्विना वर्तिका ११७	अयं वां कृष्णो अश्विना ५६०	अश्विना ब्रह्मणा यातम् ६७१
अजोहवीनासत्या ८९	अयं वां घर्मो अश्विना ४४७	अश्विना मधुमत्तमं ४१
अतः सहस्रनिर्णिजा ४३१	अयं वामद्विभिः सुतः ४७९	अश्विना मधुषुत्तमो २३४
अतारिष्म तमसः २०७; २१३; ३७३	अयं वां भागो निहितो ५३९	अश्विना यज्वरीरिषो १
अत्यायातमश्विना २७९	अयं वां मधुमत्तमः ३९	अश्विना यद्ध कर्हि २७७
अत्रिर्यद् वामवरोहन् ३००	अयं समह मा तनूहि १५८	अश्विना यामहृतमा ५४५
अत्रेरिव शृणुतं ५२७	अयं ह यद् वां देवया ३४१	अश्विना वर्तैरस्मदा ४९
अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयामि ६३८	अरं मे गन्तं हवनाय ३१८	अश्विना वाजिनीवसू २९२
अध स्वप्रस्य निर्विदे १५९	अरित्रं वां दिवस्पृथु ३१	अश्विना वायुना युवं २३२
अधा ह यन्तो अश्विना ३८२	अरुणस्पृषा अभूद् ५५५	अश्विनावेह गच्छतं २८४; २९७
अधि श्रिये दुहिता ३२१	अर्वाग् रथं नि यच्छतं ५३०	अश्विना सारघेण मा ६७५; ६८८
अधेतुं दत्ता स्तर्यं विषक्तां १२१	अर्वाक् त्रिचक्रो मधुः १६५	अश्विना सु विचाकशद् ५५६
अध्वर्युं वा मधुपाणिं ६१३	अर्वाच्चमय ययं २१४	अश्विना स्वृषे स्तुहि ४९२
अनारम्भणे तदवीरयेथाय्म् ८१	अर्वाच्चा वां सप्तयो ४६	अश्विना हरिणाविव २९८
अन्तरैश्वकैस्तनयाय ३१५	अवन्तमत्रये गृहं ५४६	अश्विना हविरिन्द्रियं ६५६
अप स्वसुरषसो ३६२	अवविद्धं तौग्यम् १९९	अश्विनोरसनं रथम् १५७
अपातामश्विना घर्मम् ६४०	अवस्यते स्तुवते ९९	असर्जि वां स्थविरा १९१
अप्रस्वतीमश्विना ७५	अविष्टं धीश्वश्विना ३३३	असश्वता मघवद्भयो ३३६
अबोध्यमिर्गम उदेति १६३	अवीर्वा नूनमश्विना ३२१	अस्ति हि वामिह स्तोता २७३
अभि वां नूनमश्विना ३३०	अशोच्यभिः समिधानो ३२९	अस्मभ्यं वाजिनीवसू ३९५

अस्मभ्यं सु वृषण्वसू	५०४	आपी वो अस्मे पितरेव	६१७	इदं हि वां प्रदिवि	२९०
अस्माकमथ वामयं	४०१	आ मात्यमिरुषसाम्	२८७	इन्द्रतमा हि धिष्ण्या	१९५
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या	२८५	आ मन्येथामा गतं	२२९	इमं मे स्तोममश्विना	५५९
अस्मे आ वहतं रथि	३९८	आ मे अस्य प्रतीव्यम्	४९७	इमा उ वां दिविष्टय	३७८
अस्मे ऊ षु वृषणा	२०९	आ मे वचांस्युद्यता	५७८	इमा ब्रह्माणि वर्धना	२६७
अस्मे सा वां माध्वी रातिः	२११	आ मे हवं नासत्या	५५८	इयं मनीषा इयमश्विना	३६१; ३६७
अस्य पिबतमश्विना	३९७	आ यद् वां योषणा	४३०	इयं वामहे शृणुतं	५८८
अहेम यज्ञं पथा०	३७५	आ यद् वां सूर्या रथं	२६२	इह त्या पुरुभूतमा	२५२; ४७४
आकेनिपासो अहभिः	२४२	आ यातं नहुषस्पर्था	४२३	इहा गतं वृषण्वसू	५४९
आ गोमता नासत्या	३६८	आ यात मुप भूषतं	३८०	इहेह जाता समवाव०	१८८
आञ्जनस्य मदुघस्य	६४९	आरङ्गरेव मध्वेरयेथे	६२३	इहेह यद् वां समना	२५०; २५७
आ तिष्ठतं सुवृतं	२०४	आ वहेथे पराकात्	४१४	ईळे यावापृथिवी	५२
आ तेन यातं मनसो	५९४	आ वां रथं युवतिः	१३१	ईर्मन्यद् वपुषे वपुः	२६०
आथर्वणायाश्विना	१२३	आ वां रथं दुहिता	९३	उक्थेभिरर्वागवसे	४८
आदारो वां मतीनां	२८	आ वां रथमवमस्यां	३६४	उप्रो वां ककुहो ययिः	२६४
आ न ऊर्जं वहतम्	१६६	आ वां रथं पुरुमायं	१३८	उत त्यं वीरं धनसाम्	५७०
आ नः स्तोममुप द्रवत्	३९०	आ वां रथो अश्विना	१२७	उत त्यद् वां जुरते	३४३
आ नासत्या गच्छतं	२१	आ वां रथो रथानां	२७५	उत त्यं भुज्युमश्विना	३५४
आ नासत्या त्रिमिरैकादशैः	२२	आ वां रथो रोदसी	३४७	उत त्या दैव्या भिषजा	४७१
आ नूनं यातमश्विना ४२२; ४५७; ५७६		आ वां रथोऽवनिर्न	१८७	उत नो गोमतीरिष	३९२
आ नूनं रघुवर्तनिं	४५१	आ वां वयोऽश्वासो	३२३	उत नो दिव्या इष	४०४
आ नूनमश्विना युवं	४४४	आ वां वाहिष्ठो अश्विना	४९३	उत म ऋज्रे पुरयस्य	३२५
आ नूनमश्विनोऽश्विः	४५०	आ वां विप्र इहावसे	४२९	उत स्या वां मधुमत्	१५६
आ नो अश्ववदश्विना	४८८	आ वां विश्वाभिरुतिभिः ४३८; ५७४		उत स्या वां रुशतो	१९२
आ नो अश्विना त्रिवृता	२३	आ वां श्येनासो अश्विना	१३०	उत स्या श्वेतावारी	५०७
आ नो गन्तं मयोभुवा	४३९	आ वां सुत्रे वरिमन्	३२७	उता यातं संगवे	२८९
आ नो गन्तं रिशादसा	४३७	आ वां सुत्रैः शंयू इव	६३२	उदीराधामृतायते	५४०
आ नो गव्येभिरद्व्यैः	५५३	आ वां प्रावाणो अश्विना	५३३	उदु स्तोमासो अश्विनोः	३७०
आ नो गोमन्तमश्विना	३९३	आ वां दानाय ववृतीय	१७९	उद् वन्दनमैरतं	१३२
आ नो देवेभिरुप	३६९	आ वां नरो मनोयुजो	२८३	उद् वां पृक्षासो मधुमन्तः	२३८
आ नो युञ्जिरा श्रवोभिः	४१५	आ वामगन्तसुमतिः	६०८	उप त्या वह्नीं गमतो	३७६
आ नो नावा मतीनां	३०	आ वामश्वासः शुचयः	१८६	उप नो यातमश्विना	४९६
आ नो यातं दिवस्पर्था	४२४	आ विश्ववाराश्विना गतं	३५५	उप नो वाजिनीनसू	४७८
आ नो यातं दिवो अच्छा	२५५	आ शुभ्रा यातमश्विना	३३८	उपस्तुतिरौचथ्यम्	१७२
आ नो यातमुपश्रुति	४२५	आ श्येनस्य जवसा	१३७	उप स्तृणीतमत्रये	५४२
आ नो रत्नानि बिभ्रतौ	२८०	आश्विनावश्वावती	९	उपायातं दाशुषे मर्याय	३६३
आ नो विश्वान्यश्विना	४३३	आ सुग्म्याय सुग्म्यं	४८६	उभा उ नूनं तदिदर्थ०	६१४
आ नो विश्वाभिरुतिभिः	४२१	आस्नो वृकस्य वर्तिका०	९०	उभा पिबतमश्विना	३८
आ परमाभिस्त	३१६	आहं खिदामि ते मनो	६४८	उभा हि दक्षा भिषजा	५७७
आ पश्वाताज्ञासत्या	३७२; ३७७	आ हि रुहतमश्विना	४८०	उरु वां रथः परि	२४८
				उगारेव फर्वरेषु	६१५

ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य	१३९	कूष्ठो देवावश्विना	२६८	तर्ह ई पतङ्ग ई	६४४
ऊर्ध्वो वामगिरिध्वरेषु	३२०	को मृच्छाति कतम	२६५	तर्दापते वधापते	६४५
ऋतेन देवः सविता	५७१	को वां दाशत् सुमतये	१७०	ता न आ वोळ्हमश्विना	२२५
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम	६२४	को वामद्य पुरुणाम्	२७४	ता नव्यसो जरमाणस्य	३०९
ऋभुमन्ता वृषणा	५२३	को वामद्या करते	२५३	ताभिरा यातमूतिभिः	४०७
ऋषिं नरावंहसः	१०४	क त्या वल्गू पुरुहूताद्य	३१७	ताभिरा यातं वृषणा	४८३
एकस्मिन् योगे भुरणा	३३५	क त्री चक्रा त्रिवृतो	२०	ता भुज्युं विभिरङ्गयः	३११
एकस्या वस्तोरावतं	९७	क शिवदय कतमासु	६१०	ता मन्दसाना मनुषा	६०९
एतं वां स्तोममश्विनौ	५९६	क्षत्रं जिन्वतमुत	५२५	ता मे अश्विना सनीनां	४२०
एतानि वां श्रवस्या	१११	गच्छतं दाशुषो गृहम्	५६३	ता यज्ञमा शुचिभिः	३०७
एतानि वामश्विना	१२६; २२२	गर्भं धेहि सिनीवालि	६८९	ता वर्तियतं जयुषा	५९५
एतावद् वां वृषण्वसू	४१०	गिरावरगराटेषु	६७४	ता वल्गू दक्षा पुरु०	३१०
एवा वामह ऊतये	५३५	गिरो जुषेथामध्वरं	५१४	ता वां नरा स्ववसे	१३६
एष वां देवावश्विना	२३५	गोमदू पु नासत्या	२२३	ता वामद्य तावपरं	२०८
एष वां स्तोमो अश्विनौ	२१२	प्रावाणेन तदिदर्थ	२१५	ता वामद्य हवामहे	४९२
एष स्य कार्जरेते	३४६	घर्मेव मधु जठरे	६२१	ताविदा चिदहानां	४८४
एष स्य भानुरुदियर्ति	२३७	चनिष्ट देवा ओषधीषु	३५८	ताविद् दोषा ता उपसि	४८५
एष स्य वां पूर्वगत्वेव	३३४	चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि	९१	ता विद्वासा हवामहे	१५०
एषो उषा अपूर्व्या	२४	चिते तद् वां सुराधसा	६३०	ता सुदेवाय दाशुषे	३८९
एह देवा मयोभुवा	५१	चित्रं ह यद् वां भोजनं	३४२	ता ह ल्यद् वर्तियद०	३०८
एह वां प्रुषितप्सवो	४१६	चोदयतं सूनुताः	५८४	तिरः पुरु चिदश्विना	२३०
ओ ल्यमह आ रथम्	४७९	छर्दिर्यन्तमदाभ्यं	५६२	निष्ठः क्षपञ्चिरहाति	८०
ओष्ठाविव मध्वाले	२२०	जनासो वृक्तबर्हिषो	४००	तुमो ह भुज्युमश्विनो	७९
क उ श्रवत् कतमो	२४४	जनिष्ट योषा पतयत्	६०५	तेन नासत्या गतं	४७
कं याथः कं ह गच्छथः	२७०	जम्भयतमभितो	१९७	तेन नो वाजिनीवसू	४०३; ४१३
कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो	२००	जयतं च प्र स्तुतं च	५१९	त्यं चिदत्रिमृतजुरम्	६२७
कथा नूनं वां विमना	५६८	जीवं रुदन्ति वि मयन्ते	६०६	त्यं चिदश्वं न वाजिनम्	६२८
कदा वां तौग्न्यो विषत्	४०५	जुजुरषो नासत्योत	८६	त्या न्वश्विना हुवे	४६७
कदु प्रेष्ठाविषां रथीणाम्	१८५	जुषेथां यज्ञं बोधतं	५१२	त्रयः पवयो मधुवाहने	१३
का राधक्षेत्राश्विना	१४८	जुहुराणा चिदश्विना	४९४	त्रिरश्विना सिन्धुभिः	१९
का वां भूदुपमातिः	२४७	तं युज्जथां मनसो	२०२	त्रिनो अश्विना दिव्यानि	१७
किमत्र दक्षा कृणुथः	१९६	तं युर्व देवावश्विना	२३६	त्रिनो अश्विना यजता	१८
किमन्ये पर्यासते	४२८	तं वां रथं वयमद्या	१८४; २५१	त्रिनो रथिं वहतम्	१६
किमिदं वां पुराणवत्	५५०	तत् तदिदश्विनोर्वो	३५	त्रिर्वर्तियतं त्रिरनुव्रते	१५
कुलायिनी घृतवती	६३५	तदूषु वामेना कृतं	२६१	त्रिवन्धुरेण त्रिवृता ४०; १२८; ५६५	
कुष्ठः को वामश्विना	६४१	तद् वां नरा नासत्यावतु	२०१	त्रिश्चिन् नो अद्या भवतं	१२
कुह त्या कुह नु श्रुता	२६९	तद् वां नरा शंस्यं	८७; १०७	त्रिषधस्ते बर्हिषि	४२
कुह यान्ता सुष्टुतिं	११३	तद् वां नरा सनये	८८	त्राणि पदान्यश्विनोः	४४३
कुह स्थः कुह जग्मथुः	५४३	तप्तो वां घर्मो नक्षतु	६८३	दश मासाञ्छशयानः	३०५
कुह स्विद् दोषा कुह	५९८	तमिन्द्रं पशवः सवा	६५८	दश रात्रीरश्विना	१००

दशस्यन्ता मनवे	४७७
दक्षा युवाकवः सुता	३
दक्षा हि विश्वमानुषश्च	४९५
दिवश्चिद् रोचनादध्या	४२७
दिवस्त्वप्वास इन्द्रवो	३२
दीर्घतमा मामतेयो	१७४
दुहीयन् मित्रधितये	१५६
दूरादिहेव यत्	३८४
देव इन्द्रो नराशः	६६६
देवं बर्हिर्नारितीनां	६६८
देवं बर्हिः सरस्वती	६५९
देवा देवानां भिषजा	६६४
देवी षषासावश्विना	६६१
देवी ऊर्जाहुती दुधे	६६३
देवी जोष्टी सरस्वती	६६२
देवीद्वारो अश्विना	६६०
देवीस्तिस्तिस्तो देवीः	६६५
देवो अभिः स्विष्टकृद्	६६९
देवो देवैर्वनस्पतिः	६६७
द्युभिरक्तुभिः परि	७६
द्युन्नी वां स्तोमो अश्विना	५७२
द्यिये समश्विना प्रावतं	६७३
धेनुः प्रत्नस्य कामं	२२६
धेनूजिन्वतमुत	५२६
ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः	६३४
न तं राजानावदिते	५९३
न तस्य विद्य तदु	६०७
न मा गरन् नयो	१७३
नमोवाके प्रस्थिते	५३१
न यत् परो नान्तर	२२४
नरा गौरिव विद्युतं	३५२
नरा दंसिष्ठावत्रये	६२९
न संस्कृतं प्र मिमातो	२८८
नहि वामस्ति दूरके	८
नावेव नः पारयतं	२१८
नासत्याभ्यां बर्हिरिव	७७
निमिषश्चिज्जवीयसा	५४१
नि यद् युवेथे नियुतः	१८०
नि पु ब्रह्मा जनानां	३९६
नू नो रयिं पुरुवीरं	२५६

नू मे गिरो नासत्या	५६६
नू मे हवमा शृणुतं	३३७; ३५४
नृवद् दक्षा मनोयुजा	३८५
न्यध्न्यस्य मूर्धनि चक्रं	११
न्यु भियो मनुषः सादि	३७४
पनायं तदस्विना	५३८
पञ्जैव चर्चैरं जारं	६२०
परावतं नासत्यान्	८५
परिविष्टं जाहुषं	९६
पिबतं सोमं मधुमन्तं	५७५
पिबतं घर्मं मधुमन्तं	५७३
पिबतं च तृणुतं चा	५१८
पुत्रमिव पितरौ	६२६
पुरं न धृणवा रुज	५५७
पुराणमोकः सख्यं	२३१
पुराणा वां वीर्यां प्र	५८७
पुरुत्रा चिदि वां नरा	३९२
पुरुप्रिया ण ऊतये	३८७
पुरुमन्द्रा पुरुवसू	४३२
पुरु हि वां पुरुभुजा	३२४
पुरु वर्षास्यश्विना	११०
पूर्वापुषं सुहवं	४७३
पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो	६३७
पौरं चिद्धयुदपुतं	२७१
प्र च्यवानाञ्जुजुरुषो	२७२
प्रति प्रियतमं रथं	२७८
प्रति वां रथं नृपती	३२८
प्र बुन्नाय प्र शवसे	४६३
प्र बोधयोषो अश्विना	४६०
प्र यद् वह्नेयं महिना	१८३
प्र या घोषे भृगवाणे	१५२
प्र ये ययुरवृकासो	३८३
प्रवयामना सुवृता	१२९
प्र वां रथो मनोजवा	३४०
प्र वां शरद्वान् वृषभो	१९०
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो	४४२
प्र वां दंसांस्यश्विनावषोचम्	१०१
प्र वां निचेरुः ककुहो	१८९
प्र वामन्धांसि मथान्यस्थुः	३३९
प्र वामवोचमश्विना	२४३

प्र सप्तवधिराशसा	५४८
प्राचीसु देवाश्विना	३३२
प्रातर्जरेथे जरणेव	५९९
प्रातर्यजध्वमश्विना	२९३
प्रातर्यावाणा प्रथमा	२९२
प्रातर्यावाणा रथ्येव	२१६
प्रातर्युजं नासत्याधि	६१२
प्रातर्युजा वि बोधय	५
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतम्	४३६
बृहन्तेव गम्भरेषु	६२२
बोधिन्मनसा रथ्येधिरा	२८२
ब्रह्मा जिन्वतमुत	५२४
भिताय नाधमानाय	३०२
मक्षू हि ष्मा गच्छथ	२४६
मधुमन्मे परायणं	५८२
मध्व ऊ पु मधूयुवा	२६५
मध्व पिबतं मधुपेभिः	२३९
मध्वः सोमस्याश्विना	१०२
मनोजवसा वृषणा	४८७
मयि वर्चो अथो यशो	६७६
मंहिष्ठा वाजसातमा	३८८
मही वामूतिरश्विना	१२०
मा कस्यै धातमभ्यमित्रिणे	१५५
मा नो गव्येभिरध्वैः	५५४
मा वां वृको मा वृकीरा	२०५
मित्रावरुणवन्ता उत	५२१
य ई राजानावृत्तथा	३१४
यच्चिदि वां पुर ऋषयो	४२६
यत् स्यो दीर्घप्रसन्नानि	४६५
यथा चक्रुर्देवासुरा	६५२
यथा चित् कण्वमावतं	४०८
यथा मक्षा इदं मधु	६८७
यथा मधु मधुकृतः	६८६
यथायं वाहो अश्विना	६४७
यथा वातः पुष्करिणीं	३०३
यथा वातो यथा वनं	३०४
यथा वामत्रिरश्विना	५३४
यथा सोमः प्रातःसवनं	६८५
यथोत कृत्व्ये धनेशुं	४०९
यदत्र रिप्तं रसिनः	६५५

यददो दिवो अर्णवः	५०६	याभिः परिज्जमा तनयस्य	५५	युवं ह्यास्तं महो रन्	१५३
यदद्य कर्हि कर्हि चित्	५४४	याभिः शर्चाभिर्वृषणा	५९	युवं कण्वाय नासत्या	४०६
यदद्य वा नासत्या	४५२	याभिः शन्ताती मवधो	७१	युवं कर्वा छः पर्यश्विना	६०२
यदद्य स्थः परावति	२५८	याभिः शुचन्ति धनसां	५८	युवं चित्रं ददथुः	३७२
यदद्याश्विनावपाग्	४६२	याभिः सिन्धुं मधुमन्तम्	६०	युवं च्यवानं सनयं	५८६
यदद्याश्विनावहं	४५६	याभिः सुदानू औशिजाय	६२	युवं च्यवानं जरसो	३३६
यदग्निगावो अग्निगू	४८२	याभिः सूर्य परियाधः	६४	युवं च्यवानमश्विना	११४
यदन्तरिक्षे पतथः	४७०	यामिरक्षिरो मनसा	६९	युवं तासां दिव्यस्य	५४
यदन्तरिक्षे यद् दिवि	४४५	यामिरन्तकं जसमानं	५७	युवं तुप्राय पूर्वैभिः	११५
यदप्सु यद् वनस्पतौ	४४८	यामिर्नरं गोषुयुधं	७३	युवं देवा क्रतुना	५३६
यदयातं दिवोदासाय	९४	यामिर्नरा त्रसदस्युं	४४१	युवं धेनुं शयवे	१३४
यदापीतासो अंशवो	४६२	यामिर्नरा शयवे	६७	युवं नरा स्तुवते	८३; १०८
यदिन्द्रेण सरथं	४५५	यामिर्महामतिथिग्वं	६५	युवमत्यस्याव नक्षयो	१७६
यदुषो यासि भानुना	४६१	यामिर्वन्न विपिवानम्	६६	युवमत्रयेऽवनीताय	१३३
यदुस्त्रियास्वाहुतं घृतं	६८२	यामिर्विष्पलां धनसा	६१	युवमेतं चक्रथुः	१९८
यद् युजाथे वृषणम्	१६४	यामी रसां क्षोदसोद्गः	६३	युवं पय उत्थियायाम्	१७७
यद् रोदसी प्रदिवो	३१३	यामी रेभं निवृतं	५३	युवं पेदवे पुरुवार०	१४७
यद् वा कक्षीवौ उत	४५३	या वां कशा मधुमती	७	युवं भुज्युं समुद्र आ	६३१
यद् वा यज्ञं मनवे	४६६	यावित्था श्लोकमा दिवो	५०	युवं भुज्युमवविद्धं	३५३
यज्ञासत्या पराके	४५८	या सुरथा रथीतमा	६	युवं भुज्युं भुरमाणं	१४१
यज्ञासत्या परावति	४५; ४३४	युक्तोह यद् वां तौग्न्याय	१७१	युवं मृगं जागृवांसं	४१९
यज्ञासत्या भुरण्यथो	४४२	युजाथां रासमं रथे	५६४	युवां स्तोमिभिर्देवयन्तो	१६०
यन्नूनं धीभिरश्विना	४६४	युवं रथेन विमदाय	५८९	युवां ह घोषा पर्यश्विना	६०१
यमश्विना ददथुः	८२	युवं रेभं परिषृते	१४३	युवां गोतमः पुरुमीळ्हो	२०६
यमश्विना नमुचेरासुरादधि	६५४	युवं वन्दतं निर्ऋतं	१४४	युवां चिद्धिष्माश्विनौ	१८२
यमश्विना सरस्वती	६५७	युवं वरो सुषाम्णे	४९१	युवादात्तस्य धिष्ण्या	५०१
ययोरधि प्र यज्ञा	४६८	युवं विप्रस्य जरणाम्	५२०	युवा देवाङ्गय एका०	५३७
यवं वृकेणाश्विना	१२२	युवं शका मायाविना	५८०	युवाभ्यां वाजिनीवसू	३८६
यस्ते रसः सम्मृत	६५३	युवं श्यावाय रुशतीम्	१०९	युवां पूषेवाश्विना	१२३
यातं छर्दिष्पा उत नः	४५४	युवं श्रियमश्विना	२५२	युवां मृगेव वारणा	६००
या दक्षा सिन्धुमातरा	२५	युवं श्रीभिर्दर्शिताभिः	३२२	युवोः श्रियं परि योषा०	३५०
या नः पीपरदाश्विना	२९	युवं श्वेतं पेदवे	२३५; ५९२	युवो रजांसि सुयमासो	१७५
यानि स्थानान्यश्विना	३५७	युवं सुराममाश्विना	६२५	युवोरत्रिश्चिकेतति	२६३
याभिः कण्वमभिष्टिभिः	४३	युवं ह कृशं युवमश्विना	६०४	युवो रथस्य परि	४७५
याभिः कण्वं मेधातिथि	४४०	युवं ह गर्भं जगतीषु	१६७	युवोरश्विना वरुषे	१४२
याभिः कुत्समार्जुनेयं	७४	युवं ह घर्मं मधुमन्तं	१७८	युवोरुषा अनु श्रियं	३७
याभिः कृशालुमसने	७२	युवं ह भुज्युं युवमश्विना	६०३	युवोरू पू रथं हुवे	४९०
याभिः पक्थमवधो	४८१	युवं ह रेभं वृषणा	५९१	युवोर्दानाय सुभरा	५३
याभिः पठर्वा जठरस्य	६८	युवं ह स्थो भिषजा	१६८	येभिस्तिस्रः परावतो	३९१
याभिः पत्नीर्विमदाय	७०	युवं हिष्मा पुरुभुजा	५६९	ये वां दंसांस्यश्विना	४४६

यो भूयिष्ठ नासत्याभ्यां	२९५	विश्वा आशा दक्षिणसद्	६३९	सर्गाँ हव सृजतं
यो वां यज्ञेभिरावृतो	५०१	विश्वाभिर्धामिर्भुवनेन	५१०	साकंयुजा शकुनस्य
यो वां यज्ञो नासत्या	३६०	विश्वे देवा अकृपन्त	५८१	सिन्धुर्ह वां रसया
यो वां रजांस्यश्विना	५५२	विश्वेदेवैस्त्रिभिरेका०	५११	सिषक्ति सा वां सुमतिः
यो वां रथो नृपती	३६५	वीलूपरमभिराशुहमभिः	७८	सुदासे दद्या वसु
यो वां नासत्यावृषिः	४३५	वृकाय चिज्जसमानाय	३४५	सुप्रावर्गं सुवीर्यं
यो वामश्विना मनसो	१०३	वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो	५००	सुयुग्मिभरश्चैः सुवृता
यो वामसुख्यचस्तमं	५०३	शचीभिर्नः शचीवसू	१६२	सुयुग्मं वहन्ति प्रति
यो वां परिज्मा सुवृद्ध	५८३	शतं मेषान् वृक्ये	९२; ११८	सुवृद्धं रथो वर्तते
यो ह वां मधुनो हति०	४०२	शमू षु वां मधुयुवा	२७६	सुषुप्त्वांसं न निर्ऋतेः
यो ह स्य वां रथिरा	३५१	शरस्य चिदाचैत्कस्य	९८	सुपुभो वां वृषण्वसू
रथं यान्तं क्रुह को ह	५९७	शिवाभिष्टे हृदयं	६१२	सूनोर्मनिनाश्विना
रथं वामनुगायसं	४१७	शुनमन्धाय भरमह्ययत्	११९	सृष्ट्येव जर्भरी तुर्फरीतू
रथं हिरण्यवन्धुरं	४११	शुश्रुवांसा चिदश्विना	३५९	स्तुषे नरा दिवो अस्य
रथो यो वां त्रिवन्धुरो	४७६	शृङ्गेव नः प्रथमा	२१७	स्तोभं जुषेथां युवशेव
रथि सुक्षत्रे स्वपत्य०	९५	शृणुतं जरितुर्हवं	५६१	स्मदेतया सुकीर्त्या
रश्मीरिव यच्छतम्	५२९	श्येनाविव पतथो	५१७	स्व ध्वरासो मधुमन्तो
राति यद् वामरक्षसं	५७९	श्येनो हव्यं नयत्वा	६७२	स्वदा यशसा यातम्
लोहितेन स्वधितिना	६५१	श्रिये पूषन्निषुकृतेव	२१०	स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु
चंसगेव पूषर्या	६१८	श्रुतं गायत्रं तक्वानस्य	१५३	स्वाहाकृतस्य तृम्पतं
वच्यन्ते वां ककुहासो	२६	सं यन्मिथः पस्पृधानासो	१४०	स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह
वयं हि वां हवामहे	४९८; ५७७	सं वां शता नासत्या	३२६	हंसाविव पतथो
वयं चिद्धि वां जरितारः	१८१	सं चेन्नयाथो अश्विना	६३६	हंसासो ये वां मधुमन्तो
वरेथे अग्निमातपो	५४७	सं जानामहै मनसा	६७८	हतं च शत्रून् यततं
वसू रुद्रा पुरुमन्तू	१६२	संज्ञानं नः स्वेभिः	६७७	हतं तर्दं समङ्कमाखुं
वातेवाजुर्या नद्येव	२१९	सत्यामिद् वा उ अश्विना	२६६	हविषा जारो अपां
वायुरेनाः समाकरत्	६५०	सदा कवी सुमतिमा	१२४	हस्तेव शक्तिमभि
वावसाना विवस्वति	३६	स पप्रथानो अभि	३४८	हारिद्रवेव पतथो
वावृधाना शुभस्पती	३९४	समश्विनोरवसा	२९१; २९६	हिङ्कृण्वती वसुपत्नी
वाहिष्ठो वां हवानां	५०५	समानं वां सजात्यं	५५१	हिमेनाग्निं ग्रंसम०
वि चेदुच्छन्त्यश्विना	३७१	समानमु ल्यं पुरुहूतम्	६११	हिरण्यत्वल्मधुवर्णो
वि जयुषा रथ्या यात०	३१२	समानयोजनो हि वां	१०	हिरण्ययी अरणी यं
वि जिह्मिष्व वनस्पते	३०१	समाने अहन् त्रिरवद्य०	१४	हिरण्ययी वां रभिरिषा
विद्वांसाविद् दुरः	१४९	समिद्धो अग्निरश्विना	६८०	हिरण्ययेन पुरुभू
वि पृच्छामि पाक्या	१५१	समिद्धो अग्निर्वृषणा	६७९	हिरण्ययेन रथेन
				हिरण्यहस्तमश्विना



दैवत-संहिता ।

(६)

आयुर्वेद--प्रकरण

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल.

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१४, शक १८८०, सन् १९५८

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य ५) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- ' स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '

पारडी (जि. सुरत)

आयुर्वेद-प्रकरण

चारों वेदोंमें आयुर्वेद-विषयक मन्त्र इधर उधर बिखरे हैं। इन सब को इस प्रकरण में इकट्ठा किया है। इन में करीब ७५ ऋषियों के देखे मन्त्र हैं और ये मन्त्र करीब ८२ शीर्षकों में विभक्त हुए हैं। इनका व्यौरा देखिये—

आयुर्वेद-प्रकरण के ऋषि क्रमानुसार मन्त्र

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या
१ अथर्वा	५८	५९८	२३ कवष (ऐलूपः)	१	१५
२ ब्रह्मा	४२	२७२	२४ ऋभुः	२	१४
३ यमः	१३	१६७	२५ भरद्वाजो (बार्हस्पत्यः)	१	१४
४ ऋगुः	१०	१४७	२६ सविता	१	१४
५ ऋगंगिराः	१९	११८	२७ अंगिराः (प्रचेताः)	४	१४
६ शुक्रः	७	७५	२८ शंखो (यामायनः)	१	१३
(यजुः)	३१	६२	२९ सर्पः (काद्रवेय आर्बुदिः)	१	१४
७ गरुडमान्	७	५९	३० यमो यमी च	१	१४
८ शन्तातिः	१२	५९	३१ विवृहा (काश्यपः)	२	१३
९ चातनः	७	४४	३२ बादरायणिः	२	१३
१० मृगारः	६	४२	३३ शौनकः	४	११
११ विश्वामित्रः (गाथिनः)	६	४१	३४ शुनःशेपः	३	११
१२ वसिष्ठः (मैत्रावरुणिः)	१०	४१	३५ अग्निः (भौमः)	१	१०
१३ बृहस्पतिः	१	३५	३६ सप्तवह्निः (आग्नेयः)	१	९
१४ मानुषामा	२	३५	३७ भिक्षुः (आंगिरसः)	१	९
१५ प्रस्कण्वः (काण्वः)	८	३३	३८ मेधातिथिः (काण्वः)	१	८
१६ प्रत्यङ्गिराः	१	३२	३९ संकुसुको (यामायनः)	१	८
१७ अथर्वाङ्गिराः	६	२७	४० सर्प (ऐरावतो जारस्कणः)	१	८
१८ अगस्त्यो (मैत्रावरुणिः)	२	२७	४१ भगः	२	८
१९ भिषग् (आथर्वणः)	१	२३	४२ वामदेवः	२	८
२० देवध्रवाः (यामायनः)	३	२२	४३ कुमारो (यामायनः)	१	७
(मथितश्च)			४४ प्रजापतिः	१	७
२१ त्रिशिराः (श्वाष्ट्रः)			४५ रक्षोहा	१	६
सिन्धुद्वीप (आंबरीषः)	५	२०	४६ अंगिराः	१	६
२२ उन्मोचनः	२	२०	४७ वीतहृष्यः	२	६
			४८ हविर्धान (आंगिः)	१	५
			४९ यक्षमनाशनः	१	५
			५० शंभुः	१	५
			५१ ऋषभो (वैराजः)	१	५
			५२ सूर्या (सावित्री)	२	४
			५३ द्रविणोदाः	१	४
			५४ मनुः (वैवस्वतः)	१	४
			५५ ऊर्ध्वग्रावा (आर्बुदिः)	१	४
			५६ गृत्समद (आंगिरसः)	२	४

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	मंत्र-संख्या
५७ कबंधः	१	४	अपामार्ग २७
५८ भागलिः	१	३	अरुंधती ३
५९ जाटिकायनः	१	३	कुष्ठ औषधि ३
६० बभ्रुपिगलः	१	३	कुष्ठनाशनी २०
६१ वरुणः	१	३	पिप्पली ३
६२ कौशिकः	१	३	पृश्निपर्णी ८
६३ गोतमो (राहुगणः)	३	३	रोहिणी ८
६४ मधुच्छंदा (वैश्वामित्रः)	१	३	लक्षा ९
६५ उपरिबभ्रवः	१	३	केशवर्धनी ९
६६ शिरिबिडिः	१	२	अक्षिरोगनाशनी ४
६७ हन्दाणी	१	२	मधुवनस्पति ५
६८ प्रजावान् (प्राजापत्यः)	१	२	रामायणी १
६९ कौरुपथिः	१	२	अजशृंगी १२
७० कक्षीवान् (दैर्घतमसः)	२	२	४ पापनाशनं १२८
७१ कण्वो (घौरः)	१	२	आस्रावभेषजं ६
७२ कूर्मो (गार्ग्यमदः)	१	१	रक्तस्रावनिवृत्तये धमनीबंधनं ४
७३ वसुक्रः (पेंद्रः)	१	१	निर्ऋतिनाशनं ४
७४ दीर्घतमा (औचथ्यः)	१	१	हृद्रोग-कामिका-नाशनं ४
७५ गार्ग्यः	१	१	कासनाशनं (बलासनाशनं) ६

आयुर्वेद-प्रकरण के मंत्रों की

विषयानुसार गणना

आयुर्वेद-प्रकरण में नाना विषयों के शीर्षकों के नीचे जो मंत्र इकट्ठे किये गये हैं उनकी विषयानुसार गणना इस प्रकार है—

	मंत्र-संख्या
१ दीर्घ-आयुष्य की प्राप्ति	१६०
अरिष्टानि भंगानि	२
सुमंगलौ दन्तौ	३
२ यक्ष्मनाशन	१५०
३ ओषधिवनस्पतयः	७७
अन्न	३
सोम	४
वनस्पतिसुर्गभावः	३
वनस्पतयः	२

ह्रीबत्त्वनाशनं	५
सौभाग्यवर्धनं	५
सपत्नीबाधनं	७
उवरनाशनं (तक्मनाशनं)	१८
गण्डमाला-चिकित्सा	१०
श्वेतकुष्ठनाशनं	८
रोगात् उन्मोचनं	३
रोगनिवारणं	२५
स्वापनं	७
मूत्रमोचनं	९
सूर्यः	३
५ इष्टुनिष्कासनं	३
६ अञ्जनं	३३
हृष्याविनाशनं	४
उन्मत्ततामोचनं	४
७ विषनाशनं	८६

	मन्त्रसंख्या
८ क्रिमिनाशनं (यातुधा, रक्ष, पिशाच, असुर आदीनां नाशनं)	८३
९ कृत्यादूषणं	५७
दस्युनाशनं	६
बंधमोचनं	२
मन्यादिनाशनं	३
शापमोचनं	६
भरातिनाशनं	१०
भरिष्टनाशनं	१२
दुःखमोचनं	३४
अलक्ष्मीनाशनं	६
१० दुष्पन्ननाशनं	९८
सुखप्राप्तिः	१
मन्युक्षमनं	३
वृषरोगक्षमनं	११
११ जलचिकित्सा	२४८
१२ मणिधारणं	१५५
१३ अन्नं	२२४
१४ वाजीकरणं	१४
गर्भाधानं	१६
गर्भहृणं	४
गर्भरोगनिवारणं	२६
गर्भसंस्त्रावः	२५
सुखप्रसूतिः	११
मेधाजननं	१२
१५ धर्मः यज्ञः	५
दर्भः	५
नवशालायां घृतहोमः	१०
पितृमेघः	२९४
यज्ञः यजमानः वेदी	१७
यूपः	१७
हविर्धाने	५
ऊल्लूकमुल्लूके	४
प्रावाणः	२६
अन्नदानं	९

मन्त्रसंख्या

गोष्ठः

अग्निः

आयुर्वेद-प्रकरण के २३३५ मन्त्रोंका यह व्यौरा है। यहाँ यज्ञ-प्रकरण के अत्यावश्यक मन्त्र ही लिये हैं। यज्ञके विषय में कहा है—

ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते ।

ऋतुसंधिषु यज्ञाः क्रियन्ते ॥

(गो. ब्रा. उ. १।१९; कौ. ब्रा. ५।१)

अर्थात् ऋतु के संधिकाल में व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं, अतः उनके शमन के लिये यज्ञ किये जाते हैं। यह प्रक्रिया वैदिक ग्रन्थों में दीखती है। इस प्रक्रिया के अनुसार यज्ञ-विषयक जितने मन्त्र लेनेकी आवश्यकता थी, उतने ही मन्त्र यहाँ लिये हैं। यज्ञ-प्रकरण के अन्य मन्त्र और अन्य यज्ञविधिका मन्त्र-संग्रह अन्यत्र किया जायगा।

दीर्घ आयु की प्राप्तिके मन्त्र यहाँ सबसे प्रथम दिये हैं। क्योंकि आयुर्वेद की उत्पत्ति इसी इच्छा से ही हुई है। दीर्घ आयुका उपभोग करने की प्रबल इच्छा प्रत्येक मानव में रहती है और यही इच्छा आयुर्वेद की उत्पत्ति और उन्नति करती रहती है।

दीर्घ आयु की इच्छा का घात करनेवाला यक्ष्म है। यक्ष्म का अर्थ नाना प्रकार के क्षयरोग हैं। मुख्य यक्ष्म का नाम क्षयरोग है, परन्तु सभी रोग क्षय उत्पन्न करते हैं, इसलिये गौण दृष्टि से सभी रोग यक्ष्म ही कहलाते हैं। दीर्घ आयु चाहिये, तो यक्ष्म का दूर करना अत्यावश्यक ही है।

इसी कार्य के लिये नाना प्रकार की औषधियों की खोज हो गयी। वेद में जो औषधियाँ मिलती हैं, वे सोम, अपा-मार्ग, अरुंधती, कुष्ठ, पिप्पली, पृश्निपर्णी, रोहिणी, काक्षा, केशवर्धनी, मधुला, रामायणी, अजशृंगी इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त यज्ञप्रकरण में ऋषभ, तारके, वचः आदि भी औषधियाँ मिलती हैं। इन औषधियों के वर्णन पाठक इन सूक्तों में देख सकते हैं। ये वर्णन पढ़ने से निश्चयपूर्वक हम कह सकते हैं कि इन औषधियों का अनुभव इस समय हो चुका था।

औषधिवनस्पतियोंके विषयमें ब्राह्मण ग्रन्थों में निम्न लिखित प्रकार वर्णन मिलते हैं—

ब्राह्मणग्रंथोंमें औषधिवनस्पतियाँ

१ ओषं घयेति तत ओषधयः समभवंस्तस्मा-
दोषधयो नाम । (श. ब्रा. २।२।४।५)

२ प्रजापतेर्विस्मस्तस्य यानि लोमानि अशी-
यन्त, ता इमा ओषधयोऽभवन् । (श. ७।४।२।११)

३ द्वय्यो वा ओषधयः पुष्पेभ्यो अन्याः फलं
गृह्णन्ति । मूलेभ्योऽन्याः ॥ (तै. ब्रा. ३।८।१।७।४)

४ उभय्यो (ओषधयो) ऽस्मै स्वदिताः पच्य-
न्तेऽकृष्टपच्याश्च कृष्टपच्याश्च । (तां. ब्रा. ६।९।९)

५ ततोऽसुरा उभयीरोषधीर्याश्च मनुष्या उप
जीवन्ति, याश्च पशवः...ते (देवा) होचुर्ह-
न्तेदमासां (ओषधीनां) अपजिघांसामेति केनेति
यज्ञेनैवेति । (श. ब्रा. २।४।३।२-३)

६ एतज्जैतासां (ओषधीनां) समृद्धं रूपं
यत्पुष्पवत्यः सुपिप्पलाः । (श. ब्रा. ६।४।४।१७)

७ पशूनां ओषधयः, ओषधीनां आपः ।

(जै. उ. १।५९।१४)

८ आपो ह वा ओषधीनां रसः । (श. ३।६।१।७)

९ अपां ओषधः, ओषधीनां पुष्पाणि, पुष्पाणां
फलानि (रसः) । (श. १।४।९।४।१)

१० तस्मादोषधयः केवल्यः खादिता न
धिन्वन्ति, ओषधय उ द्वापां रसः ।

(श. ३।६।१।७)

११ एष ह वै सर्वासामोषधीनां रसो यत्पयः ।

(कौ. ब्रा. २।१)

१२ तस्माद्वक्षिणतो अग्न ओषधयः पच्यमाना
आयन्ति, आग्नेय्यो ह्यौषधयः । (ऐ. ब्रा. १।७)

१३ अग्नेर्वा एषा तनूः, यदोषधयः ।

(तै. ब्रा. ३।२।५।७)

१४ यदुग्रो देव ओषधयो वनस्पतयः ।

(कौ. ब्रा. ६।५)

१५ ओषधयो वै पशुपातिः, तस्माद्यदा पशवं
ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीयन्ति । (श. ६।१।३।१२)

१६ ओषधयो वै मुदः । ओषधीभिर्हीदं सर्वं
मोदते । (श. ९।४।१।७)

१७ ओषधयः खलु वाजः । (तै. ब्रा. १।३।७।१)

१८ ओषधयो मधुमतीः । (तै. ३।२।८।२)

१९ रसो वा एष ओषधिवनस्पतिषु यन्मधु ।

(श. १।५।४।१८)

२० सौम्या ओषधयः । (१२।१।१।२)

२१ सोम ओषधीनामधिराजः ।

(गो. ब्रा. उ. १।१७)

२२ सोमो वै राजौषधीनाम् ।

(कौ. ४।१२; तै. ३।९।१७।१)

२३ या ओषधीः सोमराज्ञीः । (मं. ब्रा. २।८।३.४)

२४ औषधो हि सोमो राजा । (ऐ. ब्रा. ३।४०)

२५ विष्णोरध्योषधीरसृज्यत । (तै. २।३।२।४)

२६ ओषधिलोको वै पितरः । (श. १।३।८।१।२०)

२७ जगत्य ओषधयः । (श. १।२।२।३)

२८ सप्त ग्राम्या ओषधयः सप्तरण्याः ।

(तै. १।३।८।१)

२९ वर्षवृद्धा वा ओषधयः ।

(तै. ३।२।२।५; ३।२।५।१०)

३० ओषधयो वै देवानां पत्न्यः ।

(श. ६।५।४।४)

३१ तस्मात् शरदं ओषधयोऽभिषिच्यन्ते ।

(तां. ब्रा. २।१।१।५।३)

३२ शरदि हि खलु वै भूयिष्ठा ओषधयः

पच्यन्ते । (जै. उ. १।३।५।५)

३३ सेनान्यं वा एतदोषधीनां यद्यवाः ।

(ऐ. ८।२६)

३४ साम्राज्यं वा एतदोषधीनां यन्महा-

व्रीहयः । (ऐ. ८।१६)

३५ ओषधिवनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः ।

(तै. ३।१०।८।७)

३६ वनस्पतयो वै द्रु । (तै. ब्रा. १।३।९।१)

३७ भौज्यं वा एतद्वनस्पतीनां (यदुदुम्बरः) ।

(ऐ. ब्रा. ७।३२; ८।१६)

३८ अथो सर्व एते वनस्पतयो यदुदुम्बरः ।

(श. ७।५।१।१५)

१९ तेजो ह वा एतद्वनस्पतीनां यद्वाह्या शकलः,
तस्माद्यदा वाह्याशकलमपतक्ष्णुवन्त्यथ शुष्यन्ति ।

(श. ३।७।१।८)

४० वनस्पतयो हि यज्ञिया, न हि मनुष्या
यजेरन् यद्वनस्पतयो न स्युः । (श. ३।२।२।९)

४१ अग्निर्वै वनस्पतिः । (कौ. ब्रा. १०।६)

४२ प्राणो वनस्पतिः । (कौ. १२।७)

४३ स (वनस्पतिः) उ वै पयोभाजनः ।

(कौ. १०।६)

४४ यद् भेषजं तदमृतम् । (गो. पू. ३।४)

४५ शान्तिर्वै भेषजमापः ।

(कौ. ३।६, ७, ८, ९। गो. उ. १।२५)

ये औषधिवनस्पतियोंके संबंध में ब्राह्मणग्रंथोंके वचन हैं, अब इस आयुर्वेद-प्रकरण में आयुके सम्बन्ध के ब्राह्मण-वचन देखने योग्य हैं, वे ये हैं—

१ वरुण एव आयुः । (श. ४।१।४।१०)

२ अग्निर्वा आयुः । (श. ६।७।३।७; ७।२।१।१५)

३ अग्निर्वा आयुष्मानायुष ईष्टे । (श. १३।८।४।८)

४ संवत्सर आयुः । (श. ४।१।४।१०; ४।२।४।४)

५ यज्ञो वा आयुः । (तां. ६।४।४)

६ असौ लोकः (= द्युलोकः) आयुः । (ऐ. ४।१५)

७ असावुत्तमः (लोकः) आयुः । (तां. ४।१।७)

८ अन्नमु वा आयुः । (श. ९।२।३।१६)

९ आयुर्वा उद्गाता । आयुः क्षत्तसंगृहीतारः ।

(तै. ३।८।५।४)

१० प्राणो वा आयुः । (ऐ. २।३८)

११ यो वै प्राणः स आयुः । (श. ५।२।४।१०)

१२ आयुर्वा उष्णिक् । (ऐ. १।५)

१३ स यो हैवं विद्वान् सायंप्रातराशी भवति,
सर्वं हैवायुरेति । (श. २।४।२।६)

१४ य एवं विद्वान्, स्यात् न मृण्मये भुञ्जीत ।
तथा हास्य आयुर्न रिष्येत तेजश्च । (आर्षेय ब्रा. १।१)

१५ आयुर्वै दीर्घम् । (तां. १३।१।१।१२)

आयु के सम्बन्ध में ये वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें हैं। अब औषधियोंके नामनिर्देश से जो वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें आते हैं, उन्हें देखिये—

अपामार्ग औषधि ।

१ अपामार्गैरपमुज्यते । (श. १३।८।४।४)

२ अपामार्गहोमं जुहोति । अपामार्गैर्वै देवा
दिक्षु नाष्टा रक्षांसि अपामृजत, ते व्यजयन्त ।

(श. ५।२।४।१४)

३ यदपामार्ग होमो भवति, रक्षसामपहृत्यै ।
(तै. १।७।१।८)

४ प्राचीनफलो वा अपामार्गः ।

(श. ५।२।४।२)

रोहिणी

१ तत ऊर्ध्वाऽरोहत् । सा रोहिण्यभवत् ।
तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम् । (तै. १।१।१०।६)

२ ततौ वै ते सर्वान्रोहानरोहन् तद्रोहिण्यै
रोहिणित्वम् । (तै. १।१।२।२)

इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुछ विषयों के विषय में ब्राह्मण वचन ये हैं। ये आयुर्वेद-प्रकरण की बातें विशेषसी खोलते नहीं हैं। इनका आशय प्रायः स्पष्ट है, अतः इन सब का अर्थ यहां देनेकी आवश्यकता नहीं है। अब आयुर्वेद-प्रकरण में आए अनेक विषयों के सम्बन्ध में थोड़ासा वर्णन करके परिचय कराना आवश्यक प्रतीत होता है—

दीर्घ आयुष्य

सब से प्रथम 'दीर्घायुष्य' का प्रकरण है, इसमें करीब १६० मन्त्र हैं। इनमें दीर्घायुष्य की कामना मुख्य विषय है। पहिले ही सूक्त में 'मन्यु' अर्थात् क्रोध आदि मनो-विकार आयु की क्षीणता करते हैं, उन से बचने की सूचना मुख्य है। द्वितीय सूक्त में बोध प्रतिबोध (ज्ञान-विज्ञान), निद्रा और जाग्रति, ये सब मनुष्य को सुरक्षित रखें ऐसा कहा है, वह बड़े महत्त्व का विषय है। क्योंकि मनुष्य का ज्ञान ही उस को ऐसे फंदे में फंसाता है कि जो उसकी आयु क्षीण करता है। अतः मानव का ज्ञान तथा व्यवसाय उस की आयु क्षीण न करें। यह सूचना बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

पञ्चम सूक्त में 'दाक्षायण सुवर्ण' आयुष्य बढ़ाने-वाला है, ऐसा कहा है। इस सुवर्ण की सिद्धता किस तरह करना चाहिये, यह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण खोज का विषय है। आर्य वैद्यक में सुवर्ण विषम है और हृदय का बल बढ़ाता

है ऐसा कहा है। इस से सुवर्ण दीर्घायु देनेवाला है, ऐसा हम अनुमान कर सकते हैं। निःसंदेह दीर्घायु देनेवाले धातुओं में सुवर्ण की प्रमुखता से गणना हो सकती है।

सप्तम सूक्त में जंगिडमणि के धारण से दीर्घायु की प्राप्ति होने का वर्णन है। यह अरण्य से लाया और कृषिके रसों से बना मणि है (मं. ५)। इस का विचार करके इस का प्रयोग सिद्ध करना चाहिये।

अष्टम सूक्त में हवन से दीर्घ जीवन का विषय पाठक देख सकते हैं। हवन से राजयक्ष्मा, ज्वर तथा अन्यान्य रोग दूर हो जाते हैं। घृतके हवन से वायुकी शुद्धता होती और वहां के रोगबीज दूर होते हैं। नाना प्रकार की ओषधियों के हवन करने से उन के सूक्ष्म अणु, नासिका, मुख आदि स्थान से शरीर में जाते, और वहां बड़ा प्रभाव करते तथा मानव की नीरोगता सिद्ध करते हैं। हवन से जैसे रोग दूर होते हैं वैसे बुरे पदार्थों के हवन से रोग उत्पन्न भी होते हैं। चरक ग्रन्थ में अतिसार-चिकित्सा में कहा है कि गौका मेध करने की प्रथा पृषध्र राजाने अपनी इच्छा से शुरू की, पहिले नहीं थी। उस यज्ञ से ' अतिसार ' की उत्पत्ति हुई। वह अतिसार रोग अब तक जनता को सता रहा है। पृषध्रराजा के पूर्व गोमेध नहीं था, अतः अतिसार भी नहीं था। यह उस कथा का तात्पर्य है। बुरे यज्ञों का यह कुप्रभाव है। शत्रु के राज्यों में ऐसे कुयज्ञ करके नाना प्रकार के रोगों का फैलाव शत्रु देशों में करने के भी विधान कई ग्रन्थों में हैं। ये बुरे यज्ञ हैं, इसी तरह अच्छे यज्ञ करने से जनता को आरोग्य प्राप्त होकर उनकी दीर्घायुता भी सिद्ध हो सकती है। यह बड़ा शास्त्र है और खोज करने योग्य यह विषय है।

नवम सूक्त में ' दशवृक्ष ' का वर्णन है। ये दशवृक्ष नाम से दस वनस्पतियां हैं, जो दीर्घकालीन रोग को दूर करती हैं और मानव को दीर्घजीवी बना देती हैं।

तेरहवें सूक्त में अंगस्थ ज्वरों का वर्णन है। इस सूक्त में विशेषतः रोगी मनुष्य के मनको विश्वास दिलाकर आरोग्य-प्राप्ति में सहायता करने का विधान है। ' हे रोगी मानव ! ज्ञान, विज्ञान तथा निद्रा और जाग्रति ये सब तेरे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं। यह अग्नि (यहाँ हवन कुण्ड में) जल रहा है, यह सूर्य उदय को प्राप्त हो रहा है। ये तेरी रक्षा

करें, इनकी सहायता से तू गंभीर मृत्यु से अब ऊपर उठा है, (अब तेरी मृत्यु नहीं होगी;) (मन्त्र १०-११) ' इस तरह रोगी को विश्वास दिलाया जाता है। इस मन्त्रपर इतना विश्वास रखनेवाला रोगी इस से लाभ उठा सकता है।

पंद्रहवें सूक्त में ' सौ वर्षों से भी अधिक जीवन ' की इच्छा धारण करने की सूचना है। इस पृथ्वीपर मनुष्य सौ वर्षों से भी अधिक जीवित रहे, यह वैदिक विचारधारा थी। आगे पच्चीसवें सूक्त तक सूक्तों में दीर्घायुव्यप्राप्ति के प्रार्थना समेत अनेक उपयोगी निर्देश हैं। विशेषकर चौबीसवें सूक्त में उत्तम अवयवों की धारणा और पच्चीसवें सूक्त में उत्तम स्वच्छ दांतों का होना दीर्घायु के लिये अत्यंत आवश्यक है ऐसा जो कहा है, वह विशेष रीतिसे द्रष्टव्य है। दांत बिगड़नेसे शरीर का स्वास्थ्य बिगड़ता है और उसके बिगड़नेसे आयुष्य का नाश होता है। इस तरह इन सूक्तों में जो उप-युक्त निर्देश हैं, उन का विचार पाठकों को करना चाहिये।

यक्ष्म-नाशन

यक्ष्म-नाशन इस आयुर्वेद-प्रकरण का दूसरा विभाग है। इस में करीब करीब डेढ़ सौ मन्त्र हैं। छत्तीसवें सूक्त से इस प्रकरण का प्रारंभ होता है। छत्तीसवें सूक्त में शरीर के नाना अवयवों का उल्लेख करके प्रत्येक अवयव से यक्ष्मरोग दूर करने का विषय है। मानस-चिकित्सा का यह सूक्त दीखता है। चिकित्सक रोगी को विश्वास दिलाता है कि, इस प्रयोग से तेरा यक्ष्मरोग निःसन्देह दूर होगा और तू निर्दोष होगा। इस सूक्त से यह बात सिद्ध हो जाती है कि यक्ष्मरोग शरीरके प्रत्येक अवयवमें हो सकता है और उसको वहां से हटाना चाहिये। इस सूक्त का ' अङ्गादङ्गा-लोम्नो लोम्नो० ' यह मन्त्र अन्तिम है, वह मन्त्र प्राचीन काल से मृत्तिकास्नान के समय बोलने की परिपाटी महा-राष्ट्र में तथा दक्षिण भारत में श्रावणी पर्व के समय है। अच्छी स्वच्छ मिट्टी जिस में खाद आदि कुछ भी मिला नहीं, ऐसी शुद्ध मृत्तिका जल में मिलाकर शरीरपर लगायी जाती है और शरीरपर लेप देकर कुछ देरके बाद स्वच्छ जल से स्नान किया जाता है। इस मिट्टी में खाद, मूत अथवा कंकर आदि कुछ भी नहीं रहना चाहिये। यह मिट्टी स्वच्छ शुद्ध मलरहित मक्खन जैसी मृदु रहनी चाहिये। खादवाली मिट्टी हानिकारक होती है। खेत की मिट्टी केनी

हो तो, एक हाथ के] नीचे की लेनी उचित है । अन्यथा जहाँ खेती नहीं होती, वहाँ से शुद्ध मिट्टी ली जाय तो वह इस प्रयोग के लिये अच्छी है । मिट्टी के प्रयोग से नाना रोगबीज शरीरसे दूर हो जाते हैं । अन्तिम मन्त्रका उपयोग मिट्टी शरीरपर मलने के लिये करते हैं । इस से हम अनुमान कर रहे हैं कि यह सब सूक्त मृत्तिका से यक्ष्म-दोष हटाने के लिये होना संभव है । पाठक इस का अधिक विचार करें ।

आगे का सताईसवां सूक्त भी इसी दृष्टि से विचार करने योग्य है । इस सूक्तका अन्तिम ग्यारहवां मन्त्र पर्जन्य की वृष्टि से प्राप्त जल का उपयोग करके अ-मृत अर्थात् नरोग बनने के कार्य के लिये स्पष्ट है । सब पाप, सब यक्ष्म और सब प्रकार के मरणकारक रोग-बीज वृष्टिजल के प्रयोग से दूर होते हैं । पर्जन्य के पहिले नक्षत्रों की वृष्टि होनेके पश्चात् उस वृष्टि से वायु पवित्र होनेके पश्चात् की वृष्टि का जल लेना उचित है । प्रायः हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों की वृष्टि का जल लेकर घड़े भरकर घरमें अच्छी तरह बंद करके रख देनेसे, यह वृष्टि-जल सालभर इस प्रयोग के लिये मिलता रहता है । खयाल इस बात का रखना चाहिये कि प्रथम वृष्टि होकर शुद्ध वायु में जो वृष्टि होगी, उसी का जल लेना चाहिये । नहीं तो वायु के दोष जल में आवेंगे और वैसे जल का परिणाम ठीक नहीं निकलेगा । यह जल पीनेसे भी अंदर की शुद्धता होती है । उपवास या लंघन में यह वृष्टि-जल पीनेसे बहुत ही लाभ होते हैं । वृष्टि का जल घड़ों में भर कर रख देना और सालभर पीनेके लिये बर्तना, इससे लाभ होगा, परन्तु अच्छी युक्ति से जल लेना चाहिये ।

अठाईसवें सूक्त में तक्मा नामक ज्वर का उल्लेख है । जिस ज्वर में बड़ी रूक्षता होती है, वह तक्मा ज्वर है । इस ज्वर से कामिका (हरिमा) होती है, पण्डुरोग का यह एक प्रकार है । इस रोग के निवारण के लिये कई औषधियाँ हो सकती हैं । रक्त की क्षीणता करनेवाला यह ज्वर है । यह ज्वर (अ-व्रत) नियमरहित व्यवहार करनेवाले को अधिक कष्ट देता है । पाठक इस सूचना का विचार अवश्य करें ।

उनत्तीसवें सूक्त में ' वृत्र ' नाम आता है । पसीना न छोड़नेवाला यह ज्वर है । जिसमें ज्वर आता है, पर पसीना

नहीं आता, इस तरह के ज्वर को दूर करने के लिये अग्नि का ही प्रयोग कहा है । (वृत्रः आपः तस्मै) वृत्र जल-प्रवाह को रोकता है, वैसे यह ज्वर पसीने को रोकता है, इस कारण रोगी ज्वरमुक्त नहीं होता । इस यक्ष्म को दूर करने के लिये (वैश्वानरेण अग्निना वारये) वैश्वानर अग्नि का प्रयोग कहा है । इस प्रयोग का पता हमें अभी तक लगा नहीं, परन्तु भांप से शरीर को सेक देकर पसीना निकालने का यह प्रयोग होगा । द्वितीय मन्त्र में (वाचा यक्ष्मं वारयामहे) मन्त्र-प्रयोग से रोग दूर करने का भी विधान है ।

आगे के तीसवें सूक्तमें रक्तयुक्त कफमिश्रित खांसी अर्थात् कफक्षय-नामक रोगों का उल्लेख है । इसमें (पिशितं) रक्त-दोष, (हृदयामय) हृदय का रोग इसी तरह अन्यान्य रोगों का उल्लेख है । (वेदं तस्य भेषजं) उन रोगों की दवा में जानता हूँ, ऐसा भी यहाँ कहा है । मन्त्रों का विचार करके विशेष खोजपूर्वक इस सूक्त के प्रत्येक पद का विचार करना उचित है । तब रोगनिवृत्ति के उपाय का पता लगना संभव है ।

इक्तीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा दीखती है । बत्तीसवें सूक्त में हरिण के सिर में उगनेवाले सींगसे रोगविशेष की चिकित्सा लिखी है । आजकल सिर की गर्मी हटानेके लिये सिर पर हरिण के सींग को पत्थर पर घिसकर उससे उत्पन्न विक्रेपन का लेप करते हैं । इससे सिर की गर्मी हटती है, मस्तक शान्त होता है । चतुर्थ मन्त्र में ' तारके ' नामकी दो औषधियाँ कहीं हैं ।

' तारके ' नामक दो औषधियाँ इकट्ठी सेवन की जाती हैं । इस के नंतर जल को सब रोग निवारण करनेवाला बताया है । क्षेत्रिय रोग अर्थात् वंशपरंपरासे प्राप्त रोग और इसी शरीर में उत्पन्न ऐसे दोनों प्रकार के रोगों को हटाने के लिये जल उपयोगी है । इस तरह जल-चिकित्सा का वर्णन यहाँ है । अगले (३३ वें) सूक्त में भी जल का वर्णन बड़े प्रभावी शब्दों से किया है ।

तैंतीसवें सूक्त में अष्टायोग और षड्योग से उत्पन्न यव का उपयोग लिखा है । अष्टायोग और षड्योग का आज समझा जानेवाला अर्थ आठ बैल जोतने योग्य और छः बैल जोतने योग्य हल से उत्पन्न जव । परन्तु यदि वैद्यकीय

आयुर्वेद-प्रकरण

पुत्र न होना इन सब दोषोंपर इस औषधि का प्रयोग किया जाता है। कृत्वा नामक मारक प्रयोग के हटाने के लिये, गौंके रोग दूर करने के लिये, इस औषधिका उपयोग होता है।

आगे के सूक्तों में अरुन्धती, पिप्पली, पृश्नीपर्णी, रोहिणी, लक्षा, कुष्ठ, कुष्ठनाशनी, यक्ष्मनाशिनी, केशवर्धनी, नितम्बी, आक्षिरोगनाशनी, शर्मा, सोम, मधु इन वनस्पतियों का क्रमशः वर्णन है। यहाँ यह औषधि-प्रकरण समाप्त होता है। दश वृक्ष, तारके आदि अनेक औषधियोंके प्रयोग छोड़ दिये जायं, तो शेष सब प्रयोग एक एक औषधिके ही हैं। इसके पश्चात् रोग-चिकित्सा-विभाग शुरू होता है—

रोगोंकी चिकित्सा

नाना प्रकार के रोगों का नाम लेकर उनकी चिकित्सा कई सूक्तों में कही है। वे सूक्त इस विभाग में संग्रहित हुए हैं, करीब करीब २१० मन्त्र इस विभागमें संग्रहित हुए हैं।

सत्तरवाँ सूक्त इस प्रकरण का प्रथम सूक्त है। कफ, बलगम, कास, खास का यहाँ प्रथम स्थान है। उनासीवें सूक्त में हृद्रोग, हृदय का रोग और कामिलाका विचार हुआ है। आनुवंशिक क्षेत्रिय रोग को दूर करने का विचार अस्तीवें सूक्त में हुआ है। आगे एकासीवें सूक्तसे क्रमपूर्वक क्षेत्रिय रोग, क्लीबन्ध, गण्डमाला, श्वेतकुष्ठ, ज्वर, रुधिरस्त्राव, स्त्राव, मूत्र-प्रतिबन्ध आदि रोगों की चिकित्सा ९६ सूक्त तक है। बीच में ८४ वे सूक्त में रोहिणी, रामायणी आदि औषधियों का भी वर्णन है।

इसके नंतर १०२ सूक्त तक 'अंजन' का विषय है। नेत्र का सुधार, दृष्टिके दोष को दूर करना आदि अंजन का विषय सुप्रसिद्ध है। साथ साथ अंजन के अन्यान्य गुण भी इन सूक्तों में देखने योग्य हैं।

सूक्त १०३ में निद्रानाश को दूर करके उत्तम निद्रा-प्राप्ति होने के लिये मन्त्रयोग है। १०४ सूक्त में शरीर से बाण को निकालने का विषय है, आगे ७ सूक्तोंमें दुष्ट स्वप्न न होनेके लिये मन्त्रयोग लिखा है। ११३ वें सूक्त में क्रोध का शमन करने का विषय है। क्रोध का शमन भी आरोग्य-दायी है।

११४ वें सूक्त में बेल के रोग का शमन है। आगे के सूक्त में मधुका वनस्पति का वर्णन है। ११९ वें सूक्त में

सौभाग्यवर्धन का विषय है। १२० वें सूक्त में ईर्ष्याविनाशन और १२२ वें सूक्त में उन्मत्तता-निवारण है। इस तरह यह विभाग इस सूक्त के साथ समाप्त होता है।

रोगक्रिमी का नाश

इस विभाग में रोग उत्पन्न करनेवाले क्रिमियों का नाश करने के विषय का विवेचन है। इस विवेचनके लिये करीब ८० मन्त्र हैं। रक्षः, राक्षस, यातुधान, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस्, आदि अनेक नाम रोगक्रिमियोंके यहाँ दिये हैं प्रत्येक नाम का अर्थ रोगक्रिमी का विशेष लक्षण बताता है। अतः यह विषय बड़ा महत्वपूर्ण है।

ये रोग के कृमी (अ-दृष्ट) न दीखनेवाले होते हैं और कई दीखनेवाले (दृष्ट) भी होते हैं, इन सब को दूर करना चाहिये। ये रोग आँतों में, सिरमें, फेंफड़ों में, पीठ की रीढ़में, हड्डीमें होते हैं। ये कीड़े पर्वतों, वनों, ओषधियों, पशुओं, तथा हमारे शरीरों में भी होते हैं। इन सब को दूर करना चाहिये और आरोग्य की सिद्धता करनी चाहिये (सूक्त १२३)।

ये कृमी आँखों, नाकों, दाँतों में रहकर कष्ट देते हैं अतः इनका नाश करना आवश्यक है। ये कृमी नाना प्रकार के रंगरूप और आकारोंके होते हैं। सूर्य के प्रकाश से इन का नाश होता है (सूक्त १२४)।

ये कृमी सूर्य-किरण से नष्ट होते हैं। अन्धकारमें इनकी वृद्धि होती है, इसलिये सूर्य उदय से कृमियों का नाश होता है (सू० १२५)।

अजम्बगी औषधि इन राक्षसों अर्थात् रोगकृमियों का नाश करती है। राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस् इन सब कृमियों का नाश इस वनस्पति से होता है। अक्षय, न्यग्रोध (वट) ये वृक्ष भी इन रोगकृमियों का नाश करते हैं। जिन से क्षीणता होती है, वे रक्षस् हैं, जो खून खाते उन को पिशाच कहा है, जो जल के आश्रय से रहते हैं उनको अप्सरस् कहते हैं, तथा जो मिट्टी में बढते हैं, वे गन्धर्व हैं। ये सब मनुष्य के आरोग्य को दूर करते हैं, इस लिये इन का नाश करना चाहिये (सू० १२६)।

अग्नि भी इन कृमियों का नाश करता है, अग्निमें विशिष्ट द्रव्यों का दहन करने से और अधिक लाभ होता है। घृन के दहन से सब रोगबीज नष्ट हो जाते हैं। अग्नि में नाना

औषधियाँ, घृत आदि के हवन से सूर्य प्रकाश से, केवल अग्नि से भी ये रोग-कृमि नष्ट होते हैं ।

विष को दूर करना

आगे करीब करीब ८० मन्त्र विषनाशन के हैं । १३६ वां सूक्त सर्पविष दूर करने के लिये है । मन्त्र के जाप से विष दूर होता है, ऐसा इस का वर्णन है, परन्तु इस के लिये जाप करके सिद्धि प्राप्त करना चाहिये । इक्कीस मोरनियाँ सर्पका विष दूर करती हैं, ऐसा वहाँ (मं० १४ में) कहा है । इस विषय में महाराष्ट्र में अनुभव यह है कि नाग सर्प का जहाँ दंश होता है, उस स्थान पर जीवित मुर्गी को पकड़कर उस का गुदद्वार लगाया जाता है । मुर्गी विष खींचती है और मर जाती है । इस तरह लगातार एक के पीछे दूसरी ऐसी लगाते जाना चाहिये । विष के प्रमाण के अनुसार मुर्गियाँ मरती हैं । जब मुर्गी की गुदा वहाँ लगानेपर मुर्गी न मरेगी, तो समझना चाहिये कि वहाँ विष रहा नहीं है और रोगी ठीक नीरोग हुआ है । इस मन्त्र में २१ मोरनियाँ विष दूर करती हैं, ऐसा कहा है । सम्भव है मुर्गियाँ न्यून वा अधिक लगती हों । यह प्रयोग करके देखना चाहिये । महाराष्ट्र में सर्वत्र यह कहते हैं कि मुर्गी के योग से विष हटता है । बिच्छू के विष के विषयमें इसी सूक्त में कुछ कहा है (सू० १३६) । सर्प के विषय में निम्नलिखित मन्त्र बड़ा देखने योग्य है—

यथा नकुलो विच्छिद्य संध्यात्यहि पुनः ।

(अथर्व. ६।१३९।५)

‘नेवला सांपको काटता है और फिर से उसको जोड़ता है ।’ यह अथर्ववेदका मन्त्र है । क्या यह सत्य हो सकता है ? महाराष्ट्र के पिण्ड पिण्ड में यह विश्वास है, परन्तु इसपर हमारा विश्वास नहीं बैठता । निःसन्देह यह खोजका विषय है । नेवला सांप को पकड़ता और काटता है, परन्तु फिर जोड़ देता है, यह मानना कठिन है ।

जलचिकित्सा

इसके पश्चात् करीब अठारह सौ मन्त्र जलका वर्णन करने-वाले हैं । इन में कुछ जल-चिकित्सा के भी हैं । जल में अनेक औषधिगुण हैं । जलप्रयोग से बहुत से रोग दूर हो जाते हैं । जलप्रयोगसे रोग-बीज शरीरसे बह जाते हैं ।

जल वृष्टि से मिलता है, कूवा खोदकर जल है, स्वयं निर्झर से जल मिलता है, नदीका भी है, जल सुख देनेवाला और दोष दूर कर आवर्तन, निवर्तन, न्ययन, परायण, अभिषिचन, उपसिचन आदि जल के प्रयोग हैं, जि चिकित्सा होती है ।

हिमालयपर्वत से जो जल आता है, वह बहनेसे बड़ा ही शुद्ध रहता है । गंगानदी व कारण अतिपवित्र है । इसी तरह हिमालय से सब नदियों का जल उत्तम है ।

सूर्य के किरणों से जल की भाँप बनकर बहता है । उसके मेघ बनते हैं । मेघों में वृष्टि होती । जल दिव्य जल कहा जाता है । सचमुच यह दिव्य देनेवाला जल है । इस कारण पञ्चन्य की पिना क्योंकि वही सब प्राणी और वृक्षवनस्पतियों करता है ।

सब नदियाँ वृष्टि से ही भरती और चकती हैं । दुई तो नदी चलेगी नहीं । केवल हिमालय से नदियाँ गर्मी से बर्फ पिघल कर चकती हैं । इस नदियों को महापूर गर्मी के दिनों में आता है ।

अन्न

इसके आगे करीब सवा दो सौ मन्त्र अन्न के लिये हैं । अन्न सब विश्वरूप में हमारे सम्मुख अन्न है और सभी अन्न खानेवाले हैं । जोदन सूक्त २१४ तक) पाठक देख सकते हैं । अन्न का महान इन सूक्तोंमें बताया है, उसना सबका सब मननके

वाजीकरण तथा गर्भाधान

आगे ये विषय हैं—गर्भधारणा होने के पश्चात् निवारण 'सूक्त २२३ में है । 'गर्भस्त्राव' का २२३ में पाठक देख सकते हैं । 'सुख-प्रसूति' । सू० २२६ में है । आगे के ४ सूक्तों में 'मेधाज महश्वपूर्ण विषय है, जो बालक के हित होने के कि आवश्यक है ।

मणिधारण

आगे दस सूक्तों में 'मणिधारण' का विषय है ।

वरण, काल, दर्भ, औदुम्बर, जंगिह, शतवार, अस्तुत ये मणि यहां वर्णन किये हैं। जैसे ताबीज बांधते हैं, वैसे ही ये मणि हैं। इनके वर्णन में अन्यान्य विषय भी बड़े मनोरंजक हैं। किस को किसने यह मणि बांधा था, यह भी यहां इन सूक्तों में बताया है। किसी किसी मणि में सैकड़ों सामर्थ्य हैं, ऐसा भी वर्णन है। ये मणि कैसे बनाये और धारण किये जाते हैं, यह बड़ी खोज का विषय है। इस कार्य के लिये अथर्ववेदके वेदाङ्ग ग्रन्थों का तथा तदंगभूत विविध ग्रन्थों की खोज करनी चाहिये। भाष्य में जो इस समय लिखा मिलता है, उस से हमारे हाथ में कुछ भी विशेष बात नहीं पड़ती।

इसके पश्चात् अरिष्टनिवारण, पापनाशन, कृत्यादूरीकरण, यज्ञादि विषय के मन्त्र हैं। इससे इस प्रकरण की समाप्ति होती है। इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुल मन्त्र २३४५ हैं। करीब करीब सवा दो हजार हैं। आयुर्वेद का यह वैदिक

मूल है। इस मूलका विस्तार आयुर्वेद है, जो चरक सुश्रुत के रूप में आज हमें उपलब्ध है।

इस सवा दो हजार के मन्त्रसंग्रह में आयुर्वेद के अनेक विषय हैं। इस का विचार करते समय पद पद का सूक्ष्म और खोजपूर्ण विचार करना चाहिये और आयुर्वेदके ग्रन्थों के साथ इन वेदमन्त्रों का मिलान करना चाहिये। तब जाकर इस विषय का समझने योग्य विवरण हो सकता है।

इस सूमिका में इस आयुर्वेद-प्रकरण के साथ पाठकों का केवल परिचय ही कराना था। वह इतने केस से किया है। आशा है कि पाठक आयुर्वेद के इस मूल का कहां कैसा विस्तार हो गया है, इसका विचार करेंगे और लाभ उठावेंगे।

निवेदनकर्ता

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मंडल

आयुर्वेद-प्रकरण की विषयसूची

सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		
दीर्घायुष्यं	१-२४	१-१५८	१-१३	यक्ष्मनाशनं	८०	४९३-४९७	३७
सुमंगलौ दन्तौ	२५	१५९-१६१	१३	क्षेत्रिय ,,	८०	४९३-४९७	३७
यक्ष्मनाशनं	२६-३९	१६१-३००	१३-२३	कृषिवत् ,,	८१	४९८-५०१	३७
ओषधि-				गण्डमालाचिकित्सा	८२-८३	५०३-१२	७३-८३
वनस्पतयः	४०-७६	३०१-४०२	२३-३६	रोहिणी	८४	५१३-१६	३८
ओषधयः	४०-४५	३०१-३५८	२३-२७	रामायणी	८४	५१३-१६	३८
अन्नं	४६	३८५-३६१	२७	अतिविनः	८५	५१७-२०	३८-३९
वातसिन्धो-				श्वेतकुष्ठनाशनं	८५-८६	५१७-२४	३८-३९
धन्यः	४७	३६२	२७	आसुरी	८६	५२१-२४	३९
सूर्यमरीचयः	४८	३६३	२७	उन्नरनाशनं	८७-८८	५२५-३१	३९
वनस्पतिः	४९-५५	३६४-३८९	२७-२९	यक्ष्मनाशनोऽग्निः	८७	५२५-२८	३९
अपामार्गः	५६-५९	३८०-४०६	२९-३०	तक्मनाशनं	८९	५३१-४४	३९-४०
अरुंधती	६०	४०७-४०९	३१	रोगघ्नं	९०	५४५-४७	४०
कुष्ठः	६१	४१०-४१९	३१	रोगनिवारणं	९१	५४८-५४	४१
विष्वली	६२	४१३-४१५	३१	धमनीबन्धनं	९२	५५५-५८	४१
पृक्षिपर्णी	६३	४१६-४२०	३१	रोगनाशनं	९३	५५९-६१	४१
रोहिणी	६४	४२१-४२७	३१-३२	सूर्यगौभेषजं	९४	५६२-६४	४२
लाक्षा	६५	४२८-४३६	३२	आस्त्रावभेषजं	९५	५६५-७०	४२
कुष्ठः	६६-६७	४३७-४५६	३३-३४	सूत्रमोचनं	९६	५७१-७३	४२-४३
केशवर्धिनी	६८	४५७-४५९	३४	त्रैकाकुटमाञ्जनं	९७	५८०-८३	४३
नितरुनी	६९	४६०-४६२	३४	अञ्जनं	९८-१०२	५८०-६१२	४४-४५
केशवर्धनं	७०	४६३-४६५	३५	स्नापनं	१०३	६१३-१९	४५
अक्षिरोगभेषज्यं	७१	४६६-४६९	३५	हृष्टुनिष्कासनं	१०४	६२०-२२	४६
शमी	७२	४७०-४७२	३५	दुष्पणनाशनं	१०५-११	६२३-३७	४६-४७
वनस्पतिसूर्यगावः	७३	४७३	३५	सुखं	११२	६३८	४७
सोमः	७४-७५	४७४-७७	३५-३६	मन्युशमनं	११३	६३९-४१	४७
मधुवनस्पतिः	७६	४७८-८२	३६	वृषरोगशमनं	११४	६४२-५२	४८
रोगचिकित्सा	७७-१२२	४८३-६९०	३६-५०	मधुला	११५	६५३-६३	४८
अलासनाशनं	७७	४८३-४८५	३६-५०	शरः	११६	६६४-६७	४८-४९
कासा	७८	४८६-४८८	३६-५०	श्लापमोचनं	११७	६६८-७२	४९
हृद्रोगकामिला-				अलक्ष्मीनाशनं	११८	६७३-७६	४९
नाशनं	७९	४८९-४९२	३७	सौभाग्यवर्धनं	११९	६७७-८१	४९-५०
				हृष्याविनाशनं	१२०	६८२-८४	५०

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
ईर्ष्याऽपनयनं	१२१	६८५-८३	५०	स्वगौदनः	२१४	१२७२-१३३१	९७-१०१
उन्मत्ततामोचनं	१२२	६८७-९०	५०	वाजीकरणं	२१५-१७	१३३१-४५	१०१-२
क्रिमिनाशनं	१२३-३५	६९१-७७३	५०-५६	गर्भाधानं	२१८-३९	१३४६-१४२९	१०२-८
क्रिमिजम्भनं	१२३	६९१-९५	५०-५१	योनिगर्भः	२१८	१३४६-५८	१०२-१०३
क्रिमिघ्नं	१२४ १२५	६९५-७१४	५१-५२	गर्भाधानं	२१९	१३५९-६०	१०३
अजशृङ्गी	१२६	७१५-२६	५२-५३	गर्भदहणं	२२०	१३६१-१३६५	१०३
यातुधाननाशनं	१२७ २८	७२७-३३	५३	आत्मा	२२१	१३६६	१०३
रक्षोघ्नं	१२९-३१	७३४-५३	५३-५५	गर्भदोषनिवारणं	२२२	१३६७-१३९२	१०४-१०५
पिशाचक्षयणं	१३२	७५४-६२	५५	,, संस्त्रावः	२२३	१३९३-१३९८	१०५-१०६
असुर ,,	१३३-३४	७६३-६६	५६	,, स्त्राविणी	२२४	१३९९-१४०२	१०६
यातुधाननाशनं	१३५	७६७-७३	५६	,, धारणं	२२५	१४०३	१०६
विषनाशनं	१३६-४५	७७४-८५९	५७-६२	सुखप्रसूतिः	२२६	१४०५-१४१०	१०६-१०७
विषघ्नं	१३६-३७	७७४-९७	५७-५८	मेघा	२२७	१४११-१४१४	१०७
,, नाशनं	१३८	७९८-८०४	५८-५९	,, जननं	२२८	१४१५-१४१८	१०७
,, दूषणं	१३९	८०५-७	५९	,, वर्धनं	२२९	१४१९-२३	१०७-८
,, दूरीकरणं	१४०	८०८-३३	५९-६०	मणिधारणं	२३०-४१	१४२४-१५७८	१०८-११९
सर्पविषनाशनं	१४१-४३	८३४-४८	६०-६१	शंखः	२३०	१४२४-१४३०	१०८
सर्पेभ्यो रक्षणं	१४४	८४९-५१	६२	प्रतिसरः	२३१	१४३१-१४५२	१०८-११०
विषमैषज्यं	१४५	८५२-५९	६२	वरणः	२३२	१४५३-१४७७	११०-११२
जलाचिकित्सा	१४६-२०२	८६०-११०७	६२-८३	फालः	२३३	१४७८-१५१२	११२-११४
आपः	१४६-६५	८६०-९५५	६२-६९	दर्भः	२३४-२३६	१५१३-१५३६	११५-११६
दिव्या आपः	१६६-१६७	९५६-६२	७०	आँदुम्बरः	२३७	१५३७-१५५०	११६-११७
अपां मेषजं	१६८-७२	९६३-७३	७०-७१	जंगिहः	२३८-२३९	१५५१-१५६५	११७-११८
पर्जन्यः	१७३-७९	९७४-१०२१	७१-७५	शतवारः	२४०	१५६६-१५७१	११८-११९
नद्यः	१८०-८२	१०२२-४४	७५-७७	अस्तुतः	२४१	१५७२-१५७८	११९
सरस्वान्	१८३-८५	१०४५-५०	७७-७८	अरिष्टनाशनं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
सरस्वती	१८६-९७	१०५१-९२	७८-८१	,, क्षयणं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
आपः	१९८-२०२	१०९३-११०७	८१-८३	कृत्यादूषणं	२४६-२४२	१५९१-१६५३	१२१-२५
अन्नादिकं	२०३-१४	११०८-१३३१	८३-१०१	,, परिहरणं	२४६-२४७	१५९१-१६१५	१२१-२२
अन्नं	२०३-६	११०८-२६	८३-८४	,, दूषणं	२४८	१६१६-१६४७	१२२-२४
ओदनः	२०७	११२७-८२	८४-८९	दस्त्युनाशनं	२४९	१६४८-१६५३	१२४-२५
पञ्चोदनः	२०८	११८३-१२२०	८९-९२	पापादिनाशनं	२५०-२९३	१६५४-१९१७	१२५-४३
अष्टौदनं	२०९-१९	१२२१-६५	९३-९६	पापमोचनं	२५०-२५५	१६५४-१६७९	१२५-२७
मधुमद्वं	२११	१२६६-१२६८	९६	बन्ध ,,	२५६	१६८०-१६८२	१२७
वासः	२१२-१३	१२६९-१२७१	९६	मन्याविनाशनं	२५७	१६८२-१६८४	१२७-२८



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् विषयानुसारेण संगृह्य निर्मितम् ।)

६ आयुर्वेद-प्रकरणम् ।

दीर्घायुष्यम् । (१-१५१)

॥ १ ॥ (अथर्व० १।२८।१-५)

शम्भुः । १, ३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, १ जगती, ५ भुरिक ।

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये ।

मातेर्व पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात् पात्वंहसः १

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।

तदग्निर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३

द्यौश्चा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।

यथा जीवा अर्दितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४

इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५ ५

॥ २ ॥ (अथर्व० ८।१।१-२१)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप्; १ पुरोबृहती त्रिष्टुप्; २-३, १७-२१ अनुष्टुप्; ४, ९, १५-१६

प्रस्तरपङ्क्तिः; ७ त्रिपदा विराड्गायत्री; ८ विराट्पथ्याबृहती; १२ इयवसाना पञ्चपदा

जगती; १३ त्रिपादभुरिङ्महाबृहती; १४ एकावसाना द्विपदा साम्नी भुरिग्वृहती ।

अन्तर्काय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम् ।

इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्थ भागे अमृतस्य लोके १

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।

उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये २

इह तेऽसुरिह प्राण इहार्युरिह ते मनः ।

उत त्वा निर्रक्त्याः पार्श्वेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ३ ८

१ दे. [आयुर्वेद०]

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
पापमोचनं	२५८-२६८	१६८५-१७५५	१२८-३३	वितरः	३०४	१९८७-२०००	१४८-४९
,, नाशनं	२६९-२७५	१७५७-१७७६	१३३-३५	पितृमेधः	३०५-७	२००१-२०१५	१४९-६०
अशक्ति ,,	२७६	१७७६-१७८६	१३५	यमः वितरः	३०८	२०१६-२०३९	१६१-६३
एनो ,,	२७७	१७८७-१७८९	१३६	यज्ञः	३०९-१४	२०४०-५६	१६६-६७
निर्ऋतिमोचनं	२७८	१७९०-१७९३	१३६	वेदी	३१५-२०	२०५७-७३	१३८-६९
अमोचनं	२७९	१७९४-१७९६	१३६	हविः	३२१	२०७४	१७७
दुरितनाशनं	२८०	X X	१३६	हविर्धाने	३२२	२०७५-७९	१७७
दुःखनाशनं	२८१	१७९७-१८०२	१३६-३७	तत्पूजासमुपके	३२३	२०८०-८३	१७७
,, मोचनं	२८२-२८५	१८०३-१८३२	१३७-३८	प्रायाणः	३२४-२७	२०८४-२३१०	१७७-७२
दुःखवन्तनाशनं	२८६-२९३	१८३५-१९१७	१३९-४३	धनाशदानं	३२८	२३११-२३१९	१७९
अवनं	२९४	X X	१४३	गावः	३२९	२३२०-२३२५	१७३-७४
यज्ञादिकं	२९५-३३७	१९१८-२३२३	१४३-७६	आग्निः	३३०	२३२६	१७४
वर्मः	२९५	१९१९-१९२०	१४३	दीर्घायुष्यं	३३१-३३	२३२७-२३३५	१७४-७५
आग्निः	२९६	१९२१-२१	१४३	संपादयोर्विम-			
वर्मः	२९७-८	१९२३-३७	१४३-४४	नाशनं	३३४	२३३६	१७५
घृतहोमः	२९९	१९३८-४५	१४५	अकहमीशं	३३५	२३३७-२३३८	१७५
पितृमेधः	३००	१९४६-५३	१४५-४६	सपानशं	३३६-३७	२३३९-२३४५	१७५-७६
यमः	३०१-३	१९५४-८६	१४६-४८				



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् विषयानुसारेण संगृह्य निर्मितम् ।)

६ आयुर्वेद-प्रकरणम् ।

दीर्घायुष्यम् । (१-१५१)

॥ १ ॥ (अथर्व० २।२८।१-५)

शम्भुः । १, ३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, १ जगती, ५ भुरिक ।

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिसिषुः शतं ये ।

मातेर्व पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात् पात्वंहसः १

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।

तदुग्रिहोता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३

द्यौश्चा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।

यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४

इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५ ५

॥ २ ॥ (अथर्व० ८।१।१-२१)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप्, १ पुरोवृहती त्रिष्टुप्; २-३, १७-२१ अनुष्टुप्; ४, ९, १५-१६

प्रस्तरपङ्क्तिः; ७ त्रिपदा विराङ्गायत्री; ८ विराट्पथ्यावृहती; १२ ज्यवसाना पञ्चपदा

जगती; १३ त्रिपाद्भुरिङ्महावृहती; १४ एकावसाना द्विपदा साम्नी भुरिङ्महावृहती ।

अन्तर्काय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम् ।

इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके १

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।

उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये २

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः ।

उत् त्वा निर्ऋत्याः पार्श्वेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ३ ८

१ दै. [आयुर्वेद०]

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पङ्क्तिशमवमुञ्चमानः ।	
मा च्छित्त्वा अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदर्शः	४
तुभ्यं वार्तः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यार्पः ।	
सूर्यस्ते तन्वेद्दे शं तपाति त्वां मृत्युर्देयतां मा प्र मेष्टाः	५ १०
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातु ते दक्षताति कृणोमि ।	
आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वंदामि	६
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भुन्मा जीवेभ्यः प्र भद्रो मानु गाः पितृन् ।	
विश्वं देवा अभि रक्षन्तु त्वेह	७
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।	
आ रोह तमसो ज्योतिरेष्टा ते हस्तो रभामहं	८
इयामर्ष त्वा मा शबलश्च प्रेषितो यमस्य यो पथिरक्षी श्वानी ।	
अर्वाडेहि मा वि दीष्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः ।	९
मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पृथु नेयथ तं प्रवीमि ।	
तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था भुयं परस्तादभयं ते अर्वाक्	१० १५
रक्षन्तु त्वाग्रयो ये अस्वन्ता रक्षतु त्वा मनुष्याश्च यमिन्धते ।	
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता मह	११
मा त्वा क्रव्यादभि मंस्तारात् संकसुकाश्चर ।	
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।	
अन्तरिक्षं रक्षतु देवदेव्याः	१२
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।	
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्	१३
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा	१४
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता देवातु सविता प्रार्थमाणः ।	
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसु तेऽनु हवामसि	१५ २०
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदुन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः ।	
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तुर्दिन्द्राग्नी स्वस्तये	१६
उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत् । उत् त्वा मृत्योरोपधयः सोमराज्ञीरपीपरन्	१७
अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि	१८ २३

उत् त्वां मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वां व्यस्तकेश्योरे मा त्वांघ्रुदो रुदन् १९

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्गं सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् २० २५

व्युवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अकमीत् ।

अप त्वन्मृत्युं निऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि २१

॥ ३ ॥ (अथर्व० ८।२।१-२८)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप् ; १-२, ७ भुरिक् ; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५ पथ्यापङ्क्तिः, ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती ; ९ पञ्चपदा जगती ; ११ विष्टारपङ्क्तिः, १२, २२, २८ पुरस्ताद्बृहती ; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती ; १९ उपरिष्टाद्बृहती ; २१ सतः पङ्क्तिः ; ५, १०, १६-१८, २०, २३ २५, २७ अनुष्टुप् (१७ त्रिपाद्) ।

आ रंभस्वेमाममृतस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते ।

असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोषं गा मा प्र मेष्टाः १

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङा त्वां हरामि शतशारदाय ।

अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि २

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याचक्षुरहं तव ।

यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वद जिह्वयाल्पन् ३

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।

नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय वेऽकरम् ४ ४०

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।

कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये । ६

अधि ब्रूहि मा रंभथाः सृजेमं तवैव सन्तसर्वहाया इहास्तु ।

भवांशवो मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्यं दुरितं धत्तमायुः ७

अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहिमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।

अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्जरसां शतहायन आत्मना भुजंमश्रुताम् ८

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वां मृत्योरपीपरम् ।

आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ९

यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।

पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्मं कृण्वसि १० ३६

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पङ्क्तिशमवमुञ्चमानः ।	
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदशः	४
तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।	
सूर्यस्ते तन्वेष्टुं शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्टाः	५ १०
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।	
आ हि राहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदामि	६
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मंदो मानुं गाः पितृन् ।	
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह	७
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।	
आ राह तमेमो ज्योतिरेक्षा ते हस्तौ रभामहे	८
व्यामथ त्वा मा शबलंश्च प्रेषितां यमस्य यो पथिरक्षी स्थानौ ।	
अर्वाङ्गेहि मा वि दीर्घ्यो मात्रं तिष्ठः पराङ्मनाः ।	९
मैतं पन्थामनुं गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि ।	
तमे एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्	१० १५
रक्षन्तु त्वाभयो ये अप्सवेन्ता रक्षतु त्वा मनष्याष्टु यमिन्धते ।	
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग्विद्युता सह	११
मा त्वां क्रव्यादुभि मंस्तारात् संकसुकाच्चर ।	
रक्षतु त्वा यो रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।	
अन्तरिक्षं रक्षतु देवदेव्याः	१२
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च स्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।	
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्	१३
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा	१४
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः ।	
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसं तेऽनुं हवामसि	१५ २०
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदुन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः ।	
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तुर्दिन्द्राग्नी स्वस्तये	१६
उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत् । उत् त्वा मृत्योरोषधयुः सोमराज्ञीरपीपरन्	१७
अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि	१८ २२

उत् त्वा मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वा व्यस्तकेशयोः मा त्वाघरुदो रुदन् १९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् २० २५

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अकमीत् ।

अप त्वन्मृत्युं निरैतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि २१

॥ ३ ॥ (अथर्व० ८।२।१-२८)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप् ; १-२, ७ भुरिक् ; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५ पथ्यापङ्क्तिः, ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती; ९ पञ्चपदा जगती; ११ विष्टारपङ्क्तिः, १२, २२, २८ पुरस्ताद्बृहती; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती; १९ उपरिष्ठाद्बृहती; २१ सतः पङ्क्तिः; ५, १०, १६-१८, २०, २३ २५, २७ अनुष्टुप् (१७ त्रिपाद्) ।

आ रभस्वेमामृतस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदधिरस्तु ते ।

असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोष गा मा प्र मेष्टाः १

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ्गा त्वा हरामि शतशारदाय ।

अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राधीय आयुः प्रतरं ते दधामि २

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याचक्षुरहं तव ।

यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वद जिह्वया लपन् ३

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।

नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय वेऽकरम् ४ ४०

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।

कृणोम्यसौ भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये । ६

अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्तसर्वहाया इहास्तु ।

भवांशवो मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्य दुरितं धत्तमायुः ७

अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहीमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।

अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्रसां शतहायन आत्मना भुजमश्रुताम् ८

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वा मृत्योरपीपरम् ।

आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ९

यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।

पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्मं कृणमसि १० ३६

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पङ्क्तिशमवमुञ्चमानः ।	
मा च्छित्था अस्माच्छोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः	४
तुभ्यं वार्तः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।	
सूर्यस्ते तन्वेडुं शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्टाः	५ १०
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षताति कृणोमि ।	
आ हि रांहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदामि	६
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मंदो मानुं गाः पितृन् ।	
विश्वं देवा अभि रक्षन्तु त्वेह	७
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।	
आ रांहे तममो ज्योतिरेद्या ते हस्तीं रभामहे	८
इयामश्च त्वा मा शुबलंश्च प्रेषितां यमस्य यो पथिरक्षी स्यानीं ।	
अर्वाडेहि मा वि दीष्यो मात्रं तिष्ठः पराङ्मनाः ।	९
मैतं पन्थामनुं गा भीम एष येन पृथं नेयथ तं ब्रवीमि ।	
तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्	१० १५
रक्षन्तु त्वामयो ये अप्सवन्ता रक्षतु त्वा मनुष्याइ यमिन्धते ।	
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युतां मह	११
मा त्वां क्रव्यादुभि मंस्तारात् संकसुकाक्षर ।	
रक्षतु त्वा द्यौं रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।	
अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः	१२
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।	
गोपायश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्	१३
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा	१४
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः ।	
मा त्वां प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनुं हवामसि	१५ २०
मा त्वां जम्भः संहनुर्मा तमो विदुन्मा जिह्वा बहिः प्रमयुः कथा स्याः ।	
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तुर्दिन्द्राग्नी स्वस्तये	१६
उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत् । उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराक्षीरपीपरन्	१७
देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि	१८ २५

उत् त्वां मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वां व्यस्तकेशयोः मा त्वां घृरुदो रुदन् १९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्गं सर्वं ते चक्षुः सर्वमार्युश्च तेऽविदम् २० २५

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रीत् ।

अप त्वन्मृत्युं निऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि २१

॥ ३ ॥ (अथर्व० ८।२।१-२८)

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप् ; १-२, ७ भुरिक् ; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५ पथ्यापङ्क्तिः, ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती; ९ पञ्चपदा जगती; ११ विष्टारपङ्क्तिः, १२, २२, २८ पुरस्ताद्बृहती; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती; १९ उपरिष्टाद्बृहती; २१ सतः पङ्क्तिः; ५, १०, १६-१८, २०, २३ २५, २७ अनुष्टुप् (१७ त्रिपाद्) ।

आ रमस्वेमाममृतस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदधिरस्तु ते ।

असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोषं गा मा प्र मेष्टाः १

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ्गा त्वां हरामि शतशारदाय ।

अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राधीय आयुः प्रतरं ते दधामि २

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याचक्षुरहं तव ।

यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वदं जिह्वया लपन् ३

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव ज्ञातमभि सं धमामि ।

नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय वेऽकरम् ४ ४०

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।

कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये । ६

अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्तसर्वहाया इहास्तु ।

भवांशवौ मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्य दुरितं धत्तमार्युः ७

अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहिमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।

अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्रसा शतहायन आत्मना भुजमश्रुताम् ८

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजसु उत् त्वां मृत्योरपीपरम् ।

आराद्रमिं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ९

यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।

पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्मं कृण्वसि १० ३६

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति ।

वैवस्वतेन ग्रहितान् यमदूतांश्चरतोऽपि संधामि सर्वान्
आरादरातिं निर्क्रान्तिं परो ग्राहिं कव्यादः पिशाचान् ।

११

रक्षो यः सर्वं दुर्भूतं तत् तम इवार्प हन्मसि

१२

अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः ।

यथा न रिष्या अमृतं सज्जरसस्तत् ते कृणामि तद् ते समृद्धताम्

१३

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ ।

शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वानु ते हृदे ।

शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः

१४

४०

शिवास्ते सन्त्वोषधय उत त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि ।

तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसांबुभा

१५

यत् ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम् ।

शिवं ते तन्वेइ तत् कृणुमः संस्पर्शेऽदृक्षमस्तु ते

१६

यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वसा वपसि केशदमश्रु ।

शुभं सुखं मा न आयुः प्र मोषीः

१७

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमर्धा ।

एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः

१८

यदुश्नासि यत् पिबसि धान्यं कृष्याः पर्यः ।

यदाद्यं यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि

१९

४५

अह्ने च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि दद्यासि ।

अरायेभ्यो जिघत्सुभ्य इमं मे परि रक्षत

२०

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृणुमः ।

इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामर्हणीयमानाः

२१

शरदै त्वा हेमन्तार्थं वसन्तार्थं ग्रीष्माय परि दद्यासि ।

वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्षन्त ओषधीः

मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् । तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपितेरुद्धरामि स मा विभेः २३

सोऽरिष्टं न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा विभेः । न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः २४

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्चः पुरुषः पशुः । यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् २५

५१

परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात् सर्वन्धुभ्यः ।	
अमग्निर्भवामृतोऽतिजीवो मा ते हासिषुरसवः शरीरम्	२६
ये मृत्यव एकशतं या नाष्टा अतितायाः ।	
मुञ्चन्तु तस्मात् त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि	२७
अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णु रक्षोहासि सपत्नुहा ।	
अथो अमीवचातनः पूतुर्दुर्नाम भेषजम्	२८

॥४॥ (अथर्व० १।३०।१-४)

अथर्वा (आयुष्कामः) । विश्वे देवाः (१ वसवः, आदित्याः, १-४ देवाः) ।

त्रिष्टुप्, ३ शाकरगर्भा विराड्जगती ।

विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन् ।	
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः	१ ५५
ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम् ।	
सर्वेभ्यो वः परि ददाम्येतं स्वस्त्येनि जरसे बहाथ	२
ये देवा दिवि षु ये पृथिव्यां ये अन्तरिक्ष ओषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः ।	
ते कृणुत जरसमायुरस्मै शतमन्यान् परि वृणक्तु मृत्यून्	३
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा हुतभागा अहुथादश्च देवाः ।	
येषां वः पञ्च प्रदिशो विभक्तास्तान् वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि	४

॥५॥ (अथर्व० १।३५।१-४)

अथर्वा (आयुष्कामः) हिरण्यम्, इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः । जगती, ४ अनुष्टुप्गर्भा चतुष्पदा त्रिष्टुप् ।

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।	
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशरदाय	१
नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्ये३तत् ।	
यो विभक्तिं दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेपु कृणुते दीर्घमायुः	२ ६०
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि ।	
इन्द्र इवेन्द्रियाण्याधि धारयामो अस्मिन् तद् दक्षमाणो विभरद्विरण्यम्	३
समानां मासामृतमिष्टा वयं सैवत्सरस्य पर्यसा पिपमि ।	
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः	४ ६२

॥६॥ (अथर्व० ६।४।१-३)

ब्रह्मा । चन्द्रमाः, १ सरस्वती, २ दैव्या कणयः । अनुष्टुप्, १ भुरिक, ३ त्रिष्टुप् ।
 मनसे चेतसे धिय आकृतय उत चित्तये । मृत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् १
 अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे । सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम् २
 मा नो हासिषुर्कषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तनुजाः ।
 अमर्त्या मर्त्या अभि नः सचध्वमार्युर्धत्त प्रतरं जीवसे नः ३ ६५

॥७॥ (अथर्व० २।४।१-६)

अथर्वा । (चन्द्रमाः,) जङ्गिडः । अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।
 दीर्घायुत्वार्य बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव ।
 मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं विभ्रमो वयम् १
 जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् विष्कन्धादभिषोचनात् ।
 मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः २
 अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अत्त्रिणः ।
 अयं नो विश्वमेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः ३
 देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा ।
 विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे संहामहे ४
 शनश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम् ।
 अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसैर्मयः ५ ७०
 कृत्यादूर्षिरयं मणिरथो अरातिदूषिः ।
 अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूषि तारिषत् ६

॥८॥ (अथर्व० ३।१।१-८)

ब्रह्मा, भृग्वक्त्रिराश्च । इन्द्राग्नी, आयुष्यं, यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप्, ४ शकरीगर्भा जगती,
 ५-६ अनुष्टुप्, ७ उष्णिग्बृहतीगर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ८ इयचसाना षट्पदा बृहतीगर्भा जगती ।
 मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।
 गार्हिर्जग्राह यद्येतर्देन तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् १
 यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
 तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पाशमेनं शतशारदाय २
 सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहोषमेनम् ।
 इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ३ ७४

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमुं वसन्तान् ।
 शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहर्षमेनम् ४ १९१
 प्र विंशतं प्राणापानावनुद्धाहाविव व्रजम् ।
 व्य॑न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम् ५
 इहैव स्तं प्राणापानौ मापं गातमितो युवम् ।
 शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः ६
 जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा ।
 जरा त्वा भद्रा नैष्ट व्य॑न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम् ७
 अभि त्वा जरिमाहितं गामुक्षणमिव रज्ज्वा ।
 यस्त्वा मृत्युरभ्यधत्त जायमानं सुपाशया ।
 तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः ८

॥२॥ (अथर्व० २।९।१-५)

भृग्वङ्किराः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु ।
 अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय १ ८०
 आगादुदंगादयं जीवानां व्रातमप्यगात् ।
 अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः २
 अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अंगन् ।
 शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः ३
 देवास्ते चीतिर्मविदन् ब्रह्माणं उत वीरुधः ।
 चीतिं ते विश्वे देवा अविदुन भूम्यामधि ४
 यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः ।
 स एव तुभ्यं भेषजानि कृण्वद् भिषजा शुचिः ५

॥१०॥ (अथर्व० ६।११०।१-३)

अथर्वा । अग्निः । त्रिष्टुप्, १ पङ्क्तिः ।

प्रलो हि कमीढ्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
 स्वां चामि तन्वं पिप्रार्यस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व १ ८५

॥६॥ (अथर्व० ६।४।१-३)

ब्रह्मा । चन्द्रमाः, १ सरस्वती, ३ दैव्या कपयः । अनुष्टुप्, १ भुरिक, ३ त्रिष्टुप् ।
 मनसे चेतसे धिय आकृतय उत चित्तये । मृत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् १
 अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे । सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम् २
 मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तिनूजाः ।
 अमर्त्या मर्त्या अभि नः सचध्वमार्युर्धत्त प्रतरं जीवसे नः ३ ६५

॥७॥ (अथर्व० २।४।१-६)

अथर्वा । (चन्द्रमाः,) जङ्गिडः । अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।
 दीर्घायुत्वार्य बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव ।
 मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं बिभृमो वयम् १
 जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् विष्कन्धादभिषोचंनात् ।
 मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः २
 अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अस्त्रिणः ।
 अयं नो विश्वमेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः ३
 देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभूवा ।
 विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे संहामहे ४
 शणश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम् ।
 अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः ५ ७०
 कृत्यादूर्षिरयं मणिरथो अरातिदूर्षिः ।
 अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूँपि तारिषत् ६

॥८॥ (अथर्व० ३।१।१-८)

ब्रह्मा, भृग्वक्त्रिराश्च । इन्द्राग्नी, आयुष्यं, यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप्, ४ शकरीगर्भा जगती,
 ५ अनुष्टुप्, ७ उष्णिग्बृहतीगर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ८ ड्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा जगती ।
 मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।
 गार्हिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् १
 यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
 तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशारदाय २
 सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहोर्षमेनम् ।
 इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ३ ७४

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।
 शतं त इन्द्रो अग्निः संविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहर्षमेनम्
 प्र विंशतं प्राणापानावनद्धाहाविव व्रजम् ।
 व्य॑न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्
 इहैव स्तं प्राणापानौ मापं गातमितो युवम् ।
 शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः
 जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि ध्रुवामि त्वा ।
 जरा त्वा भद्रा नैष्ट व्य॑न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्
 अभि त्वा जरिमाहितं गामुक्षणमिव रज्ज्वा ।
 यस्त्वा मृत्युरभ्यर्धत्त जायमानं सुपाशया ।
 तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः

४ ७५

५

६

७

८

॥३॥ (अथर्व० २।९।१-५)

भृगवङ्किराः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अग्नि यैनं जग्राह पर्वसु ।
 अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय
 आगादुदगादयं जीवानां वातमप्यगात् ।
 अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः
 अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अंगन् ।
 शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः
 देवास्ते चीतिमविदन् ब्रह्माण उत वीरुधः ।
 चीतिं ते विश्वे देवा अविदन् भूम्यामधि
 यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः ।
 स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः

१ ८०

२

३

४

५

॥१०॥ (अथर्व० ६।११०।१-३)

अथर्वा । अग्निः । त्रिष्टुप्, १ पङ्क्तिः ।

प्रतो हि कमीढ्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
 स्वां चाग्निं तन्वन् पिप्रार्यस्वास्मभ्यं च सौमगमा यजस्व

१ ८५

ज्येष्ठ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हणात् परि पाद्येनम् ।

अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय

२

व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ठ वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।

स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीजनित्रीम्

३

॥ ११ ॥ (अथर्व० ६।४७।१-३)

अङ्गिराः प्रचेताः । १ अग्निः, २ विश्वे देवाः, ३ सुधन्वा । त्रिष्टुप् ।

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशैभूः ।

स नः पावको द्रविणे दधात्वायुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम

१

विश्वे देवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन् द्वितीये सवने न जङ्घुः ।

आयुष्मन्तः प्रियमेषां वदन्तो वयं देवानां सुमतां स्याम

२

इदं तृतीयं सर्वनं कवीनामुतेन ये चमसमैरयन्त ।

ते सौधन्वनाः स्वर्गानशानाः स्विष्टिं नो अभि वस्यो नयन्तु

३

१०

॥ १२ ॥ (अथर्व० २।२९।१-७)

अथर्वा । १ अग्निः, सूर्यः, बृहस्पतिः, २ जातवेदाः सविता, ३ इन्द्रः, ४-५ द्यावापृथिवी, विश्वे देवाः, मरुतः, आपः, ६ अश्विनौ, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्, ४ पराबृहती निचृत्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वोऽबले ।

आयुष्यमिस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः

१

आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्यष्टरघिनिधेह्यस्मै ।

रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्

२

आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ ।

जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानघेरान्तसपत्नान्

३

इन्द्रेण दुत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिर्गुह्यः प्रहितो न आगन् ।

एष वा द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत्

४

ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम् ।

ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमापः

५

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चीः ।

सवांसिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनो रूपं परिधाय मायाम्

६

१६

इन्द्र एतां संसृजे विद्वो अग्र ऊर्जा स्वधामजरां सा त एषा ।
तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुस्रोद् भिषजस्ते अक्रन्

७

॥ १३ ॥ (अथर्व० ५।३०।१-१७)

उन्मोचनः (आयुष्कामः) । आयुष्यम् । अनुष्टुप् ; १ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक्, १२ चतुष्पदा
विराड्जगती, १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः, १७ इयवसाना पदपदा जगती ।

आवर्तस्त आवर्तः परावर्तस्त आवर्तः ।

इहैव भव मा नु गा मा पूर्वाननु गाः पितृनसुं बध्नामि ते दृढम् १
यत् त्वामिच्छेः पुरुषः स्वो यदरणो जनः । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते २
यत् दुद्रोहिंथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचिन्त्या । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ३ १००
यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत् । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ४
यत् ते माता यत् ते पिता जामिर्भाता च सजैतः । प्रत्यक् सैवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा ५
इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह । दूतौ यमस्य मानु गा अर्धे जीवपुरा इंहि ६
अनुहृतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः । आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् ७
मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा । निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गैर्म्यो अङ्गज्वरं तव ८ १०५
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः । यक्ष्मः श्येन इव प्रापेत्तद् वाचा साढः परस्तराम् ९
ऋषीं बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः । तौ ते प्राणस्य गोमूरा द्वा नक्तं जागृताम् १०
अयमग्निरुपसद्य इह सूर्य उदैतु ते । उदैहि मृत्योर्गोम्वीरात् । अक्षित् तमेसस्परि ११
नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत नयन्ति ।

उत् पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये १२
ऐतुं प्राण ऐतु मन ऐतु चक्षुरथो बलेम् । शरीरमस्य सं विद्वां तत् पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु १३ ११०
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वाइ सं बलेन ।

वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूर्मिगृहो भुवत् १४
मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते । सूर्यस्त्वाधिपतिर्भृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः १५
इयमन्तर्वेदति जिह्वा बद्धा पनिष्पदा । त्वया यक्ष्मं निरवोचं शतं रोपींश्च तक्मनः १६
अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः । यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे
स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः १७ ११४

॥ १४ ॥ (अथर्व० १९।४।१-४)

ब्रह्मा । अग्निः (दीर्घायुत्वम्) । अनुष्टुप् ।

अग्ने॑ समिध॑माहा॑रिं बृ॒हते जा॒तवे॑दसे । स मे॑ श्रद्धां च मे॒धां च जा॒तवे॑दाः प्र यच्छतु १ ११५
 इ॒ध्मेन॑ त्वा जा॒तवे॑दः समि॒धां वर्ध॑यामसि । तथा॑ त्वम॒स्मान् वर्ध॑य प्र॒जया॑ च धने॑न च २
 यद॑ग्ने या॒नि का॒नि चि॒दा ते दा॑रूणि दु॒ष्मसि॑ । सर्वं॑ तद॒स्तु मे शि॒वं तज्जु॑षस्व यवि॒ष्य ३
 ए॒तास्ते॑ अग्ने समिधु॑स्त्वमि॒द्धः समि॒द्धव॑ । आयु॑र॒स्मासु॑ घेह्यमृ॒तत्वमा॑चा॒र्यायि॑ ४

॥ १५ ॥ (अथर्व० १९।६७।१-८)

ब्रह्मा । सूर्यः (दीर्घायुत्वम्) । प्रजापत्या गायत्री ।

पश्ये॑म श॒रदः॑ श॒तम् १	जीवे॑म श॒रदः॑ श॒तम् २
बुध्ये॑म श॒रदः॑ श॒तम् ३	रोहे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ४
पूर्वे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ५	भवे॑म श॒रदः॑ श॒तम् ६
भूये॑म श॒रदः॑ श॒तम् ७	भूय॑सीः श॒रदः॑ श॒तात् ८ ११६

॥ १६ ॥ (अथर्व० ५।२८।१-१४)

अथर्वा । त्रिवृत्, अन्यादयः (दीर्घायुः) । त्रिष्टुप्, ६ पञ्चपदातिशकरी;
 ७,९,१०,१२ ककुम्भत्यनुष्टुप् ; १३ पुरउष्णिक् ।

नवं प्रा॒णान् न॒वभिः॑ सं मि॒मीते॑ दी॒र्घायु॑त्वाय श॒तशर॑दाय ।
 हरि॑ते त्रीणि रज॒ते त्री॒ण्यश्व॑न्त॒पसा॑विष्टितानि १
 अ॒ग्निः सूर्य॑श्चन्द्र॒मा भूमि॑राप॒र्जा अ॒न्तरि॑क्षं प्र॒दिशो॑ दि॒शश्च॑ ।
 आ॒र्त॒वा ऋ॒तुभिः॑ संवि॒दाना॑ अ॒र्जुन॑ मा त्रि॒वृता॑ पार॒यन्तु॑ २
 त्रयः॑ पोषा॒स्त्रिवृ॑तिं श्रयन्ता॒मन॒क्तुं पूषा॑ पयसा घृ॒तेन॑ ।
 अ॒न्नस्य॑ भू॒मा पुरु॑षस्य भू॒मा भू॒मा पशू॑नां त इ॒ह श्रय॑न्ताम् ३
 इ॒ममा॑दि॒त्या वसु॑ना॒ समु॑क्षते॒मम॑ते वर्धय वावृ॒धानः॑ ।
 इ॒ममि॑न्द्र सं सृ॒ज वी॒र्ये॑णा॒सिन् त्रि॒वृच्छ्र॑यतां पोषयि॒ष्णु ४ १३०
 भूमि॑ष्ठा पा॒तु हरि॑तेन विश्व॒भृद॒ग्निः पि॒प॒र्त्वय॑सा स॒जोषाः॑ ।
 वी॒रु॒द्धिष्टे॑ अ॒र्जुन॑ संवि॒दानं॑ दक्षं दधा॒तु सु॒मन॑स्यमा॒नम् ५
 त्रे॒धा जा॑तं जन्म॒नेदं॑ हिर॒ण्यम॒ग्नेरे॑कं प्रि॒यत॑मं बभू॒व सोम॑स्यै॒कं हि॑सि॒तस्य॑ परा॒पत॑त् ।
 अ॒पामे॑कं वे॒धसां॑ रेत आहु॒स्तत् ते॒ हिर॑ण्यं त्रि॒वृद॑स्त्वायु॒षे ६ १३१

ज्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य ज्यायुषम् ।	
त्रेधामृतस्य चक्षुषं त्रीण्यायूषि तेऽकरम्	७
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदार्यन्नेकाक्षरमभिसंभूय शक्राः ।	
प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकर्मन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा	८
दिवस्त्वां पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वज्जैनम् ।	
भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम्	९ १३५
इमास्तिष्ठो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः ।	
तास्त्वं बिभ्रद् वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव	१०
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबिधे प्रथमो देवो अग्रे ।	
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदाबधे मे	११
आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः ।	
अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि	१२
ऋतुभिर्घातवैरायुषे वर्चसे त्वा ।	
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि	१३
घृतादुल्लुप्तं मधुना समकतं भूमिद्वहमच्युतं पारयिष्णु ।	
भिन्दत् सप्तनानधरांश्च कृण्वदा मा रोह सहते सौमगाय	१४ १४०

॥ १७ ॥ (अथर्व० ७।३२।१)

ब्रह्मा । आयुः । अनुष्टुप् ।

उपे प्रियं पर्निमत्तं युवानमाहुतीवृधम् ।	
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे	१
॥ १८ ॥ (अथर्व० ७।३३।१)	

ब्रह्मा । मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः, (दीर्घायु) । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।	
सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे	१
॥ १९ ॥ (अथर्व० ७।५३।१-७)	

ब्रह्मा । आयुः, बृहस्पतिः अश्विनौ च । त्रिष्टुप्, ३ भुरिक्, ४ उष्णिग्गर्भाषी पङ्क्तिः, ५-७ अनुष्टुप् ।

अमुत्रभूयादधि यद् यमस्य बृहस्पतेरभिर्गस्तेरमुञ्चः ।	
प्रत्यौहतामधिना मृत्युमस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः	१ १४३

सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् ।
 शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः २
 आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम् ।
 अग्निष्टदाहानिर्ऋतेरुपस्थात् तदात्मनि पुनरा वैश्यामि ते ३ १४५
 मेमं प्राणो हासिन्मो अपानो विहाय परा गात् ।
 सप्तविंशत्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु ४
 प्र विंशतं प्राणापानावनद्धाहाविव व्रजम् । अयं जरिष्णः शैवधिररिष्ट इह वर्धताम् ५
 आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते । आयुर्नो विश्वतो दधद्वयमग्निर्वरेण्यः ६
 उद्वयं तमसस्परि रोहन्तो नाकमुत्तमम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ७

॥ २० ॥ (अथर्व० ६।७६।१-४)

कवन्धः । सान्तपनाग्निः (आयुष्यम्) । अनुष्टुप्, ३ ककुम्मती ।

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धौ अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि १ १५०
 अग्नेः सान्तपनस्याहमायुषे पदमा रभे । अद्वातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यत २
 यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिहारे पदं नि दधाति स मृत्यवे ३
 नैनं मन्ति पर्यायिणो न सन्नां अव गच्छति । अग्रेयः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे ४

॥ २१ ॥ (अथर्व० १९।६३।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (आयुर्वचेनम्) । विराड्परिष्ठाद्बृहती ।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् शृजेन बोधय । आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय १

॥ २२ ॥ (अथर्व० १९।६१।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः (सर्वमायुः) । विराद् पथ्याबृहती ।

तनुस्तन्वा मे सहे द्रुतः सर्वमायुरशीय । स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वमे १

॥ २३ ॥ (अथर्व० १९।७०।१)

ब्रह्मा । इन्द्रसूर्यादयः (सर्वमायुः) । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ १५६

अरिष्टानि अङ्गानि । (१९७-१६१)

॥ २४ ॥ (अथर्व० १९।६०।१-२)

ब्रह्मा । वाक्, अङ्गानि च । १ पथ्याबृहती; २ ककुम्मती पुरउष्णिक् ।

वाङ् मे असन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।

अपलिताः केशा अशौणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्

१ १५७

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः । प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः २

सुमङ्गलौ दन्तौ ।

॥ २५ ॥ (अथर्व० ६।१४०।१-३)

अथर्वा । ब्रह्मणस्पतिः, दन्ताः । (अनुष्टुप् ?) १ उरोवृहती, २ उपरिष्ठाज्ज्योतिष्मती
त्रिष्टुप्, ३ आस्तारपङ्क्तिः ।

यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च ।

यौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः १

ब्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् ।

एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च २

उपवृहती सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ ।

अन्यत्र वां घोरं तन्वः परेतु दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च ३ १६१

यक्ष्म-नाशनम्

(१६२-३००) ॥ २६ ॥ (ऋ० १०।१६३।१-६)

विवृहा काश्यपः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

(अथर्व० २०।९६)

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां ह्रुबुक्कादधि ।

यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काञ्जिह्वाया वि वृहामि ते १

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीर्कसाभ्यो अनुक्यात् ।

यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते २

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।

यक्ष्मं मर्तस्त्राभ्यां यवनः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ३

ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाञ्जसंसो वि वृहामि ते ४ १६५

मेहनाद्वनकरणाञ्छोर्मभ्यस्ते नखेभ्यः ।

यक्ष्मं सर्वसादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ५

अङ्गादङ्गाञ्छोम्रीलोमो जातं पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं सर्वसादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ६ १६७

॥ २७ ॥ (अथर्व० ३।३१।१—११)

ब्रह्मा । पाप्महाः १ अग्निः, २ शक्रः, ३ पशवः, ४ द्यावापृथिवी, ५ त्वष्टा, अग्निः, इन्द्रः, ७ देवाः, सूर्यः, ८-१० आयुः, ११ पर्जन्यः (यक्षमनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ भुरिक्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

वि देवा ज॒रसा॑वृ॒तन् वि त्वम॑ग्ने अ॒रा॒त्या ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा १

व्या॒त्या प॑र्व॒मानो॑ वि श॒क्रः पा॑पकृ॒त्यया॑ ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा २

वि ग्रा॒म्याः प॒शव॑ आ॒र्णयै॒र्व्या॑पि॒स्तृष्णा॑यासरन् ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ३ १७०

वी॒क्ष्मे द्यावा॑पृथि॒वी इ॒तो वि प॒न्था॑नो दि॒शंदि॑शम् ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ४

त्वष्टा॑ दु॒हित्रे॑ व॒ह॒तुं यु॑न॒क्तीती॑दं वि॒श्वं भु॑र्व॒नं वि या॑ति ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ५

अ॒ग्निः प्रा॒णान्त्सं द॑धाति च॒न्द्रः प्रा॒णेन॑ सं॒हितः॑ ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ६

प्रा॒णेन॑ वि॒श्वतो॑वीर्यं दे॒वाः सूर्य॑ समै॒रयन्॑ ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ७

आयु॑ष्म॒तामायु॑ष्कृ॒तां प्रा॒णेन॑ जी॒व मा मृ॑थाः ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ८ १७१

प्रा॒णेन॑ प्रा॒णतां॑ प्रा॒णेहै॒व भ॑व मा मृ॑थाः ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ९

उ॒दायु॑षा॒ समा॑युषो॒दोष॑धी॒नां रसे॑न ।

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा १०

आ पर्ज॑न्यस्य वृ॒ष्ट्योद॑स्थामा॒मृता॑ व॒यम्

व्य॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मे॒ण॒ समा॑युषा ११

॥ २८ ॥ (अथर्व० ६।२०।१-३)

भृ॒ग्वज्जि॑राः । यक्षमनाशनम् । १ जगती, २ ककुम्मतीप्रस्तारपङ्क्तिः, ३ सतः पङ्क्तिः ।

अ॒ग्नेरि॑वास्य द॒ह॒त ए॒ति शु॒ष्मिण॑ उ॒तेव॑ म॒त्तो वि॒लप॑न्नपा॒यति॑ ।

अ॒न्यम॑स्मदिच्छ॒तु कं चि॑द॒व्रत॑स्त॒र्पुर्व॑धाय॒ नमो॑ अस्तु त॒क्मने॑ १ १७२

नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते ।

नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः

२ १८०

अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि ।

तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय तक्मने

३

॥ २९ ॥ (अथर्व० ६।८५।१-३)

अथर्वा । वनस्पतिः (यक्ष्मनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

वरुणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् १

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च । देवानां सर्वेषां वाचा यक्ष्मै ते वारयामहे २

यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भं विश्वधा यतीः ।

एवा ते अभिना यक्ष्मं वैश्वानरेण वारये ३

॥ ३० ॥ (अथर्व० ६।१२७।१-३)

भृग्वक्त्रिः । यक्ष्मनाशनम्, वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ३ इयवसाना षट्पदा जगती ।

विद्रुधस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते । विसर्पकस्योषधे मोच्छिषः पिशितं चन १ १८५

यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपश्रितौ । वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्रुरभिचक्षणम् २

यो अङ्गयो य कर्णो यो अक्षयोर्विसर्पकः । वि वृहामो विसर्पकं विद्रुधं हृदयामयम् ।

परा तमज्ञातं यक्ष्ममधराश्रं सुवामसि ३

॥ ३१ ॥ (अथर्व० १।१२।१-४)

भृग्वक्त्रिः । यक्ष्मनाशनम् । जगती (त्रिष्टुप् ?), ४ अनुष्टुप् ।

जरायुजः प्रथम उसियो वृवा वार्तभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या ।

स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रुजन् य एकमोर्जस्त्रेधा विचक्रमे १

अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।

अङ्कान्तसमङ्कान् हविषा विधेम यो अग्रभीत पर्वीस्या ग्रभीता २

मुञ्च शीर्षित्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।

यो अग्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्तसचतां पर्वताश्च ३

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।

शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वेड् मम

४ १११

॥ ३२ ॥ (अथर्व० ३।७।१-७)

भृग्वक्त्रिराः । १-३ हरिणः, ४ तारके, ५ आपः, ६-७ यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप्, ६ भुरिक् ।

हरिणस्य रघुव्यदोऽर्धं शीर्षणि भेषजम् ।

स क्षेत्रियं विषाणया विषूचीनमनीनशत् १

अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरक्रमीत् ।

विषाणे वि व्यं गुप्पितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि २

अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिव च्छदिः ।

तेना ते सर्वे क्षेत्रियमङ्गैभ्यो नाशयामसि ३

अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके ।

वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ४ १९५

आप इद् वा उं भेषजीरापो अमीवचातनीः ।

आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ५

यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे ।

वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत् ६

अपवासे नक्षत्राणामपवास उपसामुत् ।

अपास्मत् सर्वे दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ७

॥ ३३ ॥ (अथर्व० ६।९।१-३)

भृग्वक्त्रिराः । यक्षमनाशनम्, ३ आपः । अनुष्टुप् ।

इमं यवमष्टायोगैः षड्योगैर्भिरचर्कषुः । तेना ते तन्वोद्रे रपोऽपाचीनमप व्यये १

न्यग्रि वातो वाति न्यक् तपति सूर्यः । नीचीनमध्या दुहे न्यग्रि भवतु ते रपः २ २००

आप इद् वा उं भेषजीरापो अमीवचातनीः ।

आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ३

॥ ३४ ॥ (अथर्व० १९।३८।१-३)

अथर्वा । गुल्गुलुः (यक्षमनाशनम्) । अनुष्टुप्, १ चतुष्पदा उष्णिक्, ३ एकावसाना प्राजापत्यानुष्टुप् ।

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते ।

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते १

विष्वश्चस्तस्माद् यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते ।

यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद् वाप्यासि समुद्रियम् २

उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये ३ २०४

॥ ३५ ॥ (अथर्व० २०।९६।६-१०)

यक्षमनाशनः । यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप् ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।

ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्यां इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्

६ २०५

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीति एव ।

तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशारदाय

७

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहर्षिमेनम् ।

इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम्

८

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हैमन्तान् छतम् वसन्तान् ।

शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहर्षिमेनम्

९

आहर्षिमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वोङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् १०

॥ ३६ ॥ (अथर्व० २०।९६।१७-२३)

विवृहाः । यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शीर्ष्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते

१७ २१०

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।

यक्ष्मं दोष्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते

१८

हृदयात् ते परि क्लोमो हलीक्ष्णात् पार्श्वभ्याम् ।

यक्ष्मं मत्स्याभ्यां प्लीहो यक्नस्ते वि वृहामसि

१९

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।

यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते

२०

ऊरुभ्यां ते अष्टिवद्भ्यां पार्श्विभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंसो वि वृहामि ते

२१

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।

यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते

२२ २१५

अङ्गे अङ्गे लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि

२३ २१६

॥ ३७ ॥ (अथर्व० १२।२।१-५५)

भृगुः । अग्निः; मन्त्रोक्ताः; २१-३३ मृत्युः (यक्षमरोगनाशनम्) । त्रिष्टुप्; २,५,१२-२०,३४-३६; ३८-४१, ४३,५१,५४ अनुष्टुप् (१६ ककुम्मती परावृहती, १८ निचृत्, ४० पुरस्तात्ककुम्मती);
 ३ आस्तारपाङ्क्तिः; ६ भुरिगार्ची पङ्क्तिः; ७,४५ जगती; ८,४८-४९ भुरिग;
 ९ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; ३७ पुरस्ताद्वृहती; ४९ त्रिप०
 एकाव० भुरिगार्ची गायत्री, ४४ एकाव० द्विप० आर्ची वृहती;
 ४६ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; ४७ पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा
 जगती; ५० उपरिष्ठाद्विराड् वृहती; ५२ पुरस्ताद्विराड्
 वृहती; ५५ वृहतीगर्भा ।

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं ससिं भागधेयं त एहि ।
 यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकर्मधराड् परेहि १
 अघशंसदुःशंसाम्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरंजामसि २
 निरितो मृत्युं निर्रक्तिं निररातिमजामसि ।
 यो नो द्वेष्टि तमद्वयग्रे अक्रव्याद्यमुं द्विष्मस्तमुं ते प्र सुवामसि ३
 यद्यग्निः क्रव्याद् यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।
 तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुपदोऽप्यग्नीन् ४ २२०
 यत् त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्रे तत् त्वया पुनस्त्वोदीपयामसि ५
 पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्रे ।
 पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ६
 यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।
 तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स घर्ममिन्धां परमे सुधस्थे ७
 क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।
 इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ८
 क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।
 नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितॄणां लोकेऽपि भागो अस्तु ९ २२५
 क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं प्र हिणोमि पथिभिः पितृयज्ञैः ।
 मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितॄषु जागृहि त्वम् १०
 समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
 जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति ११
 देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्टान्यारुहत् । मुच्यमानो निरेणसोऽमोग्रस्मां अशस्त्याः १२ २२८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।	
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूषि तारिषत्	१३
संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनश्च	१४ २३०
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु ।	
ऋव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः	१५
अन्यैभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।	
निः ऋव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितुयोपनः	१६
यस्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत ।	
तस्मिन् घृतस्तावो मृष्टा त्वमग्ने दिवं रुह	१७
समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः ।	
अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे	१८
सीसे मृडद्वं नडे मृडद्वमग्नौ संकसुके च यत् ।	
अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपवर्हणे	१९ २३५
सीसे मलं सादयित्वा शीर्षक्तिमुपवर्हणे । अव्यामसिक्न्यां मृष्टा शुद्धा भवत यज्ञियाः	२०
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्त एष इतरो देवयानात् ।	
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहिमे वीरा बृहवो भवन्तु	२१
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।	
प्राञ्चो अगाम नृतये हसय सुवीरांसो विदथमा वदेम	२२
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।	
शतं जीवन्तः शरदः पुरुचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन	२३
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति स्थ ।	
तान्वस्त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः सर्वमायुर्नयतु जीवनाय	२४ २४०
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तव ऋतुभिर्यन्ति साकम् ।	
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूषि कल्पयैषाम्	२५
अश्मन्वती रीयते सं रमध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः ।	
अत्रा जहीत ये असन्दरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान्	२६
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम् ।	
अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान् ।	२७ २४१

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभष्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।	
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम	२८
उदीचीनैः पृथिभिर्वायुमद्भिरतिक्रामन्तोऽवराण् परेभिः ।	
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता मृत्युं प्रत्यौहन् पदयोपनेन	२९ २४५
मृत्योः पदं योपर्यन्त एत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।	
आसीना मृत्युं नुदता सधस्थेऽथ जीवासौ विदथमा वदेम	३०
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराज्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम् ।	
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे	३१
व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्यहं कल्पयामि ।	
स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्सृजामि	३२
यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वऽन्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।	
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत् मा वयं तम्	३३
अपावृत्य गार्हिपत्यात् क्रव्यादा प्रेतं दक्षिणा ।	
प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम्	३४ २५०
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः	३५
यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्त्रेन विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः	३६
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद्यं क्रव्यादनुवर्तते	३७
मुहुर्गृह्यैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकार्दनुविद्वान् वितावति	३८
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।	
ब्रह्मैव विद्वानेभ्योऽयं यः क्रव्यादं निरादधत्	३९ २५५
यद् रिप्रं शमलं चक्रुम यच्च दुष्कृतम् ।	
आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत्	४०
ता अधरातुदीचीराववृत्रन् प्रजानतीः पृथिभिर्देवयानैः ।	
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः	४१
अग्ने अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देव्यजनं वह	४२
इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादुमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम्	४३
अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्भुष्याणिमग्निर्गार्हिपत्य उभयानन्तरा श्रितः	४४ २६०

जीवानामायुः प्र तिर् त्वमग्रे पितृणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः ।

सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिमुषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै ४५

सर्वीनग्रे सहमानः सपत्नानैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि ४६

इममिन्द्रं वह्निं पशिमन्वारभध्वं स वो निर्वेक्षद् दुरितादवद्यात् ।

तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् ४७

अनद्धाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वेक्षद् दुरितादवद्यात् ।

आ रोहत सवितुर्नावमेतां षडभिरुर्वीभिरमतिं तेरम ४८

अहोरात्रे अन्येषि बिभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरिः ।

अनातुरान्तसुमनसस्तल्प बिभ्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि ४९ २६५

ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा ।

क्रव्याद्यानगिरन्ति कादश्च इवानुवर्षते नडम् ५०

येऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा ५१

प्रेवं पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । क्रव्याद्यानगिरन्ति कादनुविद्वान् वितारति ५२

अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।

माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व ५३

इषीकां जरतीमिष्टा तिलिपञ्जं दण्डनं नडम् । तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ ५४ २७०

प्रत्यश्चमकं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्य विवेश ।

परामीषामस्रन् दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्तसृजामि ५५

॥ ३८ ॥ (अथर्व० ९।८।१-२२)

भृग्वक्त्रिः । सर्वशीर्षामयाद्यपाकरणम् (यक्षमनिवारणम्) । अनुष्टुप् ; १२ अनुष्टुग्भा ककुम्मती

अनुष्टुप्दोष्णिक् ; १५ विराडनुष्टुप् ; २१ विराट् पथ्याबृहती ;

२२ पथ्यापङ्क्तिः ।

शीर्षं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे १

कर्णीभ्यां ते कङ्कूषेभ्यः कर्णशूलं विसर्पकम् ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे २

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ३

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरुषम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ४ २७१

अङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्ग्यं विसर्पकम् ।	
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे	५
यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पूरुषम् । त्वमानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे	६
य ऊरु अनुसर्पत्यथो एति गवीर्निके । यक्षं ते अन्तरङ्गैभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	७
यदि कामादपक्रामाद्दृढयाज्जायते परि । हृदो बलासमङ्गैभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	८
हरिमाणं ते अङ्गैभ्योऽधामन्तरोदरात् । यक्षमोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	९ २८०
आसो बलासो भवतु सूत्रं भवत्वामयत् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१०
बहिर्बिलं निर्द्रवतु काहाबाहं तत्रोदरात् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	११
उदरात् ते क्लोमो नाभ्या हृदयादधि । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१२
याः सीमानं विरुजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्पणीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१३
या हृदयमुपसर्पन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१४ २८५
याः पार्श्वे उपसर्पन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्ठीः ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१५
यास्तिरश्चीरुपसर्पन्त्यर्षणीर्विक्षणासु ते ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१६
या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१७
या मज्जो निर्धयन्ति परूषि विरुजन्ति च ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्	१८
ये अङ्गानि मदयन्ति यक्षमासो रोपणास्तव ।	
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१९ २९०
विसर्पस्य विद्रुघस्य वातीकारस्य बालजेः ।	
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	२०
पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः ।	
अनूकादर्षणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनश्च	२१
सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः ।	
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोऽङ्गभेदमशीशमः	२२ २९३

॥ ३९ ॥ (अथर्व० २।३३।१-७)

ब्रह्मा । यक्षमविबर्हणं, चन्द्रमाः, आयुष्यम् । अनुष्टुप्, ३ ककुम्भती, ४ चतुष्पदा भुरिगुणिकः,
५ उपरिष्ठाद्विराड्वृहती, ६ उष्णिग्गर्भा निचृदनुष्टुप्, ७ पथ्यापङ्क्तिः ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां लुबुकादधि ।	
यक्ष्मं शीर्ष्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते	१
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।	
यक्ष्मं दोष्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते	२ २९५
हृदयात् ते परि क्लोन्नो हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम् ।	
यक्ष्मं मत्सनाभ्यां ग्रीहो यक्नस्ते वि वृहामसि	३
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो बनिष्ठोरुदरादधि ।	
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते	४
ऊरुभ्यां ते अष्टिवद्ध्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।	
यक्ष्मं भसद्यै श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते	५
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।	
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते	६
अङ्गैर्लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।	
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि	७ ३००

ओषधिवनस्पतयः । (३०१-४८०)

॥ ४० ॥ (क्र० १०।९७।१-२३)

आथर्वणो भिषग् । ओषधयः । अनुष्टुप् ।

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।	
मनै च वभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च	१
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः ।	
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत	२
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।	
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः	३
ओषधीरिति मातरस्तद् वो देवीरुपं ब्रुवे ।	
सनेयमश्च गां वास आत्मानं तव पूरुष	४ ३०४

- अश्वत्थे वो निषदने पूर्णे वो वसतिष्कृता ।
 गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ५ ३०५
 यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिताविव ।
 विप्रः स उच्यते भिषग् रक्षोहामीवचातेनः ६
 अश्वावती सोमावती—मूर्जयन्तीमुदोजसम् । अविस्ति सर्वा ओषधी—रस्मा अरिष्टतातये ७
 उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते । धनं सनिष्यन्तीना—मात्मानं तव पूरुष ८
 इष्कृतिर्नाम वो माता ऽथो यूयं स्थ निष्कृतीः ।
 सीराः पतत्रिणीः स्थन् यदामयति निष्कृथ ९
 अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन इव व्रजमक्रमुः । ओषधीः प्राचुच्यन्—यत् किं च तन्वोऽरु रपः १० ३१०
 यदिमा वाजयन्तह—मोषधीर्हस्त आदधे । आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ११
 यस्यौषधीः प्रसर्पथा—ङ्गमङ्गं परुषरुः । ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव १२
 साकं यक्ष्मं प्र पत चापेण किकिदीविना ।
 साकं वारस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया १३
 अन्या वो अन्यामव—त्वन्यान्यस्या उपावत ।
 ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः १४
 याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
 बृहस्पतिप्रसूता—स्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः १५ ३१५
 मुञ्चन्तु मा शपथ्याइ—दथो वरुण्यादुत ।
 अथो यमस्य पड्बीशात् सर्वस्माद् देवकिल्बिपात् १६
 अवपतन्तीरवदन् दिव ओषधयस्परि । यं जीवमश्वामहै न स रिष्याति पूरुषः १७
 या ओषधीः सोमराज्ञी—बृह्णीः शतविचक्षणाः । तासां त्वमस्युत्तमा—रं कामायु शं हृदे १८
 या ओषधीः सोमराज्ञी—विष्टिताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् १९
 मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः । द्विपञ्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनतुरम् २० ३२०
 याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः । सर्वाः संगत्य वीरुधो ऽस्यै सं दत्त वीर्यम् २१
 ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मण—स्तं राजन् पारयामसि २२
 त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।
 उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति २३ ३२३

॥ ४१ ॥ (अथर्व० ८।७।१-२८)

अथर्वा । भैषज्यं, आयुष्यं, ओषधयः । अनुष्टुप्; २ उपरिष्ठाद्भुरिग्वृहती; ३ पुर उष्णिक्; ४ पञ्चपदा परानुष्टुबतिजगती; ५-६, १०, २५ पथ्यापङ्क्तिः (६ विराड्गर्भा भुरिक्); ९ द्विपदार्चो भुरिगनुष्टुप्; १२ पञ्चपदा विराडतिशकरी; १४ उपरिष्ठाभिचृद्बृहती; २६ निचृत्; २८ भुरिक् ।

या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्नयः ।

असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि

१

त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्माद् देवेषितादधि ।

यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव

२ ३२५

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः । तास्ते यक्ष्ममेनस्य मङ्गादङ्गादनीनशन्

३

प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुक्लाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि ।

अंशुमतीः काण्डिनीर्या विशाखा ह्वयामि ते वीरुधौ वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः

४

यद् वः सहः सहमाना वीर्यं यच्च वो बलम् ।

तेनेमस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम्

५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

अरुन्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतांते

६

इहा यन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि

७ ३३०

अग्नेर्घासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः ।

ध्रुवाः सहस्रनाम्नीर्भेषजीः सन्त्वाभृताः

८

अवकोल्वा उदकात्मान ओषधयः । व्यृषिन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्गयः

९

उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः ।

अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः

१०

अपक्रीताः सहीयसीर्वीरुधो या अभिष्टुताः । त्रायन्तामस्मिन् ग्रामे गामश्च पुरुषं पशुम्

११

मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव ।

मधुमत् पर्णं मधुमत् पुष्पमासां मधोः संमेक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुहतां गोपुरोगवम्

३३५

शार्वतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः । ता मां सहस्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहंसः

१३

वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिशस्तिपाः । अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वधि दूरमस्मत्

१४

सिंहस्येव स्तनयोः सं विजन्तेऽग्रेरिव विजन्त आभृताभ्यः ।

गवां यक्ष्मः पुरुषाणां वीरुद्भिरतिवृत्तो नाव्या एतु स्रोत्याः

१५ ३३८

मुमुक्षाना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि । भूमिं संतन्वतीरितं यासां राजा वनस्पतिः १६
 या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च । ता नः पर्यस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे १७ ३४०
 याश्चाहं वेदं वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा । अज्ञाता जानीमश्च या यासु विद्य च संभृतम् १८
 सर्वाः समग्रा ओषधीर्बोधन्तु वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि १९
 अश्वत्थो दुर्भो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः । व्रीहिर्यवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावर्मर्त्या २०
 उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिकन्दत्योषधीः । यदा वः पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति २१
 तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि । अथो कृणोमि भेषजं यथासंछुतहायनः २२ ३४१
 ब्राह्मो वेदं वीरुधं नकुलो वेदं भेषजीम् । सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे २३
 याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः । वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः ।
 मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे २४
 यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यध्या यावतीनामजावयः ।
 तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः २५
 यावतीषु मनुष्या भेषजं भिषजो विदुः । तावतीर्विश्वभेषजीरा भरामि त्वामभि २६
 पुष्पवतीः प्रसूयतीः फलिनीरफला उत । संमातरं इव दुहामस्मा अरिष्टतातये २७ ३४०
 उत त्वाहार्षं पञ्चशलादथो दशशलादुत । अथो यमस्य पञ्चीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २८

॥ ४१ ॥ (अथर्व० ६।९६।१-३)

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः (चिकित्सा), ३ सोमः । अनुष्टुप् , ३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री ।
 या ओषधयः सोमराज्ञीर्वह्नीः शतविचक्षणाः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वहंसः १
 मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्दुदथो वरुण्यादुत ।
 अथो यमस्य पञ्चीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २
 यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
 सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु ३

॥ ४२ ॥ (वा० य० ४।१; ५।४२; ६।१५)

(ओषधयः ।)

ओषधे त्रायस्व स्वर्धिते मेनः हिंसीः १ ३५५

॥ ४४ ॥ (वा० य० १।१४७-४८)

(ओषधयः ।)

ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेतः शिवमायन्तमभ्यत्र युष्माः ४७ ३५६

ओषधयः प्रतिगृष्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।

अयं वो गर्भे ऽ ऋत्विग्यः प्रत्नः सधस्थमासदत्

४८

॥ ४५ ॥ (वा० य० १२।७९; ३५।४)

(ओषधिः ।)

अश्वत्थे वो निषदनं पुणे वो वसतिष्कृता ।

गोभाजः ऽ इत्किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्

७९

॥ ४६ ॥ (वा० य० १८।३२-३४)

(अन्नम् ।)

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।

वाजो नो विश्वेदेवैर्धनसाताविहावतु

३२

वाजो नो ऽ अघ प्रसुवाति दानं वाजो देवाँऽ ऋतुभिः कल्पयति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा ऽ आशा वाजपतिर्जयेयम्

३३

३६०

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा ऽ आशा वाजपतिर्भवेयम्

३४

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।९०।६)

गोतमो राहुगणः । विश्वे देवाः (वातसिन्ध्वोषधयः) । गायत्री ।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः

६

॥ ४८ ॥ (ऋ० ३।५७।३)

गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः (ओषधयः सूर्यमरीचयो वा) । त्रिष्टुप् ।

या जामयो वृष्णा इच्छन्ति शुक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।

अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति विभ्रतं वपूषि

३

॥ ४९ ॥ (अथर्व० ३।१८।१-६)

अथर्वा । वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ अनुष्टुग्गर्भा चतुष्पदा उष्णिक्, ६ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः ।

इमां खेनाम्योषधिं वीरुधां बलवत्तमाम् । यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम् १

उत्तानपणे सुमगे देवजूते सहस्वति । सपत्नीं मे परां शुद्र पतिं मे केवलं कृधि २

३६५

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ । परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ३

उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः । अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ४

अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासुहिः । उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नीं मे सहावहै ५

३६८

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम् ।

मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु

६

॥ ५० ॥ (वा० य० ५।४२-४३)

(वनस्पतिः ।)

अत्यन्याँऽ अगां नान्याँऽ उपागामवाक् त्वा परेभ्योऽविदं परोऽवरेभ्यः ।

तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां विष्णवे त्वा ।

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः

४२

३७०

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः पृथिव्या सम्भव ।

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौमगाय ।

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम

४३

॥ ५१ ॥ (वा० य० २०।४५)

(वनस्पतिः ।)

वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्वान्या समञ्जच्छमिता न देवः ।

इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन

४५

॥ ५२ ॥ (वा० य० २१।२१)

(वनस्पतिः ।)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

कुकुप् छन्दऽ इहेन्द्रियं वशा वेहद् वयो दधुः

२१

॥ ५३ ॥ (वा० य० २७।२१)

(वनस्पतिः ।)

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्वना देवेषु । अग्निर्हव्यं शमिता घृदयाति

२१

॥ ५४ ॥ (वा० य० २८।१०, ३३, ४३)

(वनस्पतिः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।

मध्वा समञ्जन् पृथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतुर्यजं

३७५

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं हिरण्यपर्णमुक्थिनं रश्मना बिभ्रतं

वशि भगमिन्द्रं वयोधसम् ।

कुकुभं छन्दऽ इहेन्द्रियं वशा वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतुर्यजं

३३

३७६

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ४३

॥ ५५ ॥ (वा० २९।१०, ३५)

(वनस्पतिः ।)

अश्वो घृतेन त्मन्या समक्तः ऽ उषं देवाँः ऽऋतुशः पार्थ ऽ एतु ।

वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् १०

उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पार्थ ऽ ऋतुथा हवींषि ।

वनस्पतिः शमिता देवो ऽ अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन ३५

॥ ५६ ॥ (अथर्व० ४।१७।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे । चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा १ ३८०

सत्यजितं शपथयावनीं सहमानां पुनःसराम् ।

सर्वाः समह्वयोषधीरितो नः पारयादिति २

या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमन्तु सा ३

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते ।

आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुस्तयां कृत्याकृतो जहि ४

दौष्वेप्स्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अम्बुमराय्युः ।

दुर्णाग्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि ५

क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम् । अपामार्गं त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ६ ३८५

तृष्णामारं क्षुधामारमथो अक्षपराजयम् । अपामार्गं त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ७

अपामार्गं ओषधीनां सर्वासामेक इद् वशी । तेन ते मृज्म आस्थितमथ त्वमगदश्चर ८

॥ ५७ ॥ (अथर्व० ४।१८।१-८)

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ६ बृहतीगर्भा ।

समं ज्योतिः सूर्येणाह्वा रात्रीं समावती ।

कृणोमि सत्यमूतयेऽरसाः संन्तु कृत्वरीः १

यो देवाः कृत्यां कृत्वा हरादविदुषो गृहम् ।

वत्सो धारुरिव मातरं तं प्रत्यगुप पद्यताम् २ ३८९

अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति ।
 अश्मानस्तस्यौ दुग्धायां बहुलाः फट् करिकति ३ ३९०
 सहस्रधामन् विशिखान् विग्रीवां छायाया त्वम् ।
 प्रति स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर ४
 अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुपम् ।
 यां क्षेत्रे चक्रुर्या गोषु यां वा ते पुरुषेषु ५
 यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्कुरिम् । चकार भद्रमुस्मभ्यमात्मने तर्पनं तु सः ६
 अपामार्गोऽप्ये माष्टुं क्षेत्रियं शपथश्च यः । अपाहं यातुधानीरप सर्वा अराव्यः ७
 अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराव्यः । अपामार्गं त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ८ ३९५

॥ ५८ ॥ (अथर्व० ४।१९।१-८)

शुकः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, १ पद्यापक्रुक्तिः ।

उतो अस्यबन्धुकुदुतो असि नु जामिकृत् ।
 उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा लिन्धि वार्षिकम् १
 ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन ।
 सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योपधे २
 अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपर्यन् । उत त्रातासि पाकस्यार्थो हुन्तासि रक्षसः ३
 यदुदो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत । ततस्त्वमध्योपधेऽपामार्गो अजायथाः ४
 विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता ।
 प्रत्यग् वि भिन्धि त्वं तं यो अस्मां अभिदासति ५ ४००
 असद् भूम्याः समभवत् तद् यामेति मुहद् व्यचः ।
 तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु ६
 प्रत्यङ् हि सैवभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम् । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया वृषम् ७
 शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा । इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओज्मानमा दधत् ८

॥ ५९ ॥ (अथर्व० ७।६५।१-३)

शुकः । अपामार्गवीरुत् (दुरितनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

प्रतीचीनफलो हि त्वमपामार्गं रुरोहिथ । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया इतः १
 यद् दुष्कृतं यच्छमलं यद् वा चेरिम पापया । त्वया तद् विश्वतोमुखापामार्गापं मृज्महे २ ४०५
 श्यावदता कुनखिना वण्डेन यत् सहासिम । अपामार्गं त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ३ ४०६

॥ ६० ॥ (अथर्व० ६।५९।१-३)

अथर्वा । रुद्रः, अरुन्धती औषधिः । अनुष्टुप् ।

अनुडुङ्ग्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति । अर्धेनवे वर्यसे शर्म यच्छ चतुष्पदे १
 शर्म यच्छत्त्रोषधिः सह देवीररुन्धती । करत् पर्यस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्मां उत पूरुषान् २
 विश्वरूपां सुभगामच्छावदामि जीबलाम् । सा नो रुद्रस्यास्तां हेति दूरं नयतु गोभ्यः ३

॥ ६१ ॥ (अथर्व० ६।९५।१-३)

भृग्वङ्किराः । वनस्पतिः (कुष्ठौषधिः) । अनुष्टुप् ।

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुषं देवाः कुष्ठमवन्वत १ ४१०
 हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत २
 गर्भो अस्थोषधीनां गर्भो हिमवतामुत । गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि ३

॥ ६२ ॥ (अथर्व० ६।१०९।१-३)

अथर्वा । पिप्पली-भैषज्यं, आयुः । अनुष्टुप् ।

पिप्पली क्षिप्तभेषज्युः तार्तिविद्रभेषजी । तां देवाः समकल्पयन्नियं जीवित्वा अलम् १
 पिप्पल्युः समवदन्तायतीर्जनादाधि । यं जीवमश्रवामहै न स रिष्याति पूरुषः २
 असुरास्त्वान्यखनन् देवास्त्वोदेवपुन पुनः । वातीकृतस्य भेषजीमथो क्षिप्तस्य भेषजीम् ३ ४१५

॥ ६३ ॥ (अथर्व० २।२५।१-५)

चातनः । पृश्निपर्णी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ भुरिक् ।

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यं निर्रेत्या अकः ।
 उग्रा हि कण्वजर्मनी तामभक्षि सहस्वतीम् १
 सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत । तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव २
 अरायमसूक् पावानं यश्च स्फाति जिहीषति ।
 गर्भादं कण्वं नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च ३
 गिरिमेनां आ वैशय कण्वान् जीवितयोपनान् ।
 तांस्त्वं देवि पृश्निपर्ण्यगिरिवानुदहन्निहि ४
 पराच एनान् प्रष्टुद कण्वान् जीवितयोपनान् ।
 तमांसि यत्र गच्छन्ति तत् क्रव्यादो अजीगमस् ५ ४२०

॥ ६४ ॥ (अथर्व० ४।१२।१-७)

ऋभुः । रोहणी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा यवमध्या

भुरिगायत्री, ७ बृहती ।

रोहण्यसि रोहण्यश्चिच्छन्नस्य रोहणी । रोहयेदमरुन्धति १ ४२१

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेट्टं त आत्मनि ।

घाता तद् भद्रया पुनः सं दधत् परुषा परुः

२

सं ते मज्जा मज्जा भवतु समु ते परुषा परुः ।

सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थपि रोहतु

३

मज्जा मज्जा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु ।

असृक् ते अस्थि रोहतु मांसं मासेन रोहतु

४

लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम् ।

असृक् ते अस्थि रोहतु च्छिन्नं सं धेहोषधे

५

४१५

स उत् तिष्ठ भ्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनार्भिः । प्रति तिष्ठोर्ध्वः

६

पदि कर्त पतित्वा सैश्वरे यदि वाश्मा ग्रहतो जघान ।

ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत् परुषा परुः

७

॥ ६५ ॥ (अथर्व० ५/५११-९)

अथर्वा । लाक्षा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नमः पितार्यमा ते पितामहः ।

सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा ।

१

यस्त्वा पिबति जीवति प्रायसे पुरुषं त्वम् ।

भत्री हि शश्वतामसि जनानां च न्यञ्जनी

२

वृक्षंवृक्षमा रोहसि वृषण्यन्तीव कन्यला । जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती स्पर्णी नाम वा असि

४१०

यद् दुण्डेन यदिष्वा यद् वारुहर्सा कृतम् ।

तस्य त्वमसि निष्कृतिः सेमं निष्कृधि पूरुषम्

४

भद्रात् प्लक्षाभिस्तिष्ठस्यश्चत्थात् खदिरान्द्रवात् ।

मद्रान्यग्रोधात् पर्णात् सा न एह्यरुन्धति

५

हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे वपुष्टमे । रुतं गच्छासि निष्कृते निष्कृतिर्नाम वा असि

६

हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे लोमशवक्षणे । अपामसि स्वसां लाक्षे वार्तो हात्मा बभूव ते

७

सिलाची नाम कानीनोऽज्जबभ्रु पिता तव ।

अश्वो यमस्य यः श्यावस्तस्य हास्त्रास्तुक्षिता

८

४१५

अश्वस्यास्त्रः संपतित्वा सा वृक्षां अभि सिष्यदे ।

सरां पतन्निणी भूत्वा सा न एह्यरुन्धति

९

४१६

॥ ६६ ॥ (अथर्व० ५।४।१-१०)

भृग्वक्त्रिगिराः । कुष्ठो, यक्ष्मनाशनम् (कुष्ठतकमनाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ भुरिक्, ६ गायत्री,
१० उष्णिग्गर्भा निचृत् ।

यो गिरिष्वजायथा वीरुधां बलवत्तमः । कुष्ठेहि तकमनाशन तकमानं नाशयन्नितः १
सुपर्णसुवने गिरौ जातं हिमवतस्परि । धनैरामि श्रुत्वा यन्ति विदुर्हि तकमनाशनम् २
अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुषं देवाः कुष्ठमवन्वत ३
हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत ४ ४४०
हिरण्ययाः पन्थान आसन्नरित्राणि हिरण्यया ।
नावो हिरण्ययीरासन् याभिः कुष्ठं निरावहन् ५
इमं मे कुष्ठं पूरुषं तमा वह तं निष्कुरु । तमु मे अगदं कृधि ६
देवेभ्यो अधि जातोऽसि सोमस्यासि सखा हितः ।
स प्राणाय व्यानाय चक्षुषे मे अस्मै मृड ७
उदङ् जातो हिमवतः स प्राच्या नीयसे जनम् ।
तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि वि भैजिरे ८
उत्तमो नाम कुष्ठास्थुत्तमो नाम ते पिता ।
यक्ष्मं च सर्वं नाशय तकमानं चारुसं कृधि ९ ४४५
शीर्षामयमृषहृत्यामक्षयोस्तन्वोऽरे रपः । कुष्ठस्तत् सर्वं निष्कर्तुं देवं समह वृण्यम् १०

॥ ६७ ॥ (अथर्व० १९।३९।१-१०)

भृग्वक्त्रिगिराः । कुष्ठः (कुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप्; १, ३ ज्यवसाना पथ्यापङ्क्तिः; ४ षट्पदा
जगती; ५ सप्तपदा शकरी, ६-८ अष्टिः (५-८ चतुरवसाना) ।

ऐतु देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि । तकमानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः १
ग्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिषः । नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा २
जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता । नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ३
उत्तमो अस्योषधीनामनुद्धान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव । नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिव्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ४ ४५०

त्रिः शम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि । त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः

५

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुषं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः

६

हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य चक्षुषं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः

७

यत्र नावप्रभंशनं यत्र हिमवतः शिरः । तत्रामृतस्य चक्षुषं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तुक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः

८

यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः

यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः

९

४५५

शीर्षलोकं तृतीयकं सदुन्दिर्यश्च हायनः । तुक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्च परां सुव १०

॥ ६८ ॥ (अथर्व० ६।११।१-३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः (केशवर्धनी औषधिः) । अनुष्टुप् ।

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा ।

तासामधि त्वचो अहं भेषजं समु जग्रभम्

१

श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् । सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा २

रेवतीरनाष्टयः सिषासर्वः सिषासथ । उत स्य केशदंष्ट्रीरथो ह केशवर्धनीः ३

॥ ६९ ॥ (अथर्व० ६।१३।१-३)

वीतहव्यः । नितली वनस्पतिः (केशदंष्ट्रणम्) । अनुष्टुप्, १ पकाषसाना द्विपदा साम्नी बृहती ।

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे ।

तां त्वा नितलि केशेभ्यो दंष्ट्रणाय खनामसि

१

४६०

दंष्ट्रं प्रत्नान् जनयाजातान् जातानु वर्षीयसस्कृधि

२

यस्ते केशोऽवपद्यते समूलो यश्च वृश्चते । इदं तं विश्वभेषज्यामि विश्वामि वीरुधा ३

४६१

॥ ७० ॥ (अथर्व० ६।१३७।१-३)

वीतहव्यः । वनस्पतिः (केशवर्धनम्) । अनुष्टुप् ।

यां जमदग्निखनद् दुहित्रे केशवर्धनीम् । तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः १
 अभीशुना मेयां आसन् व्यामेनानुमेयाः । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि २
 दंढ मूलमाग्रं यच्छ वि मध्यं यामयौषधे । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि ३ ४६५

॥ ७१ ॥ (अथर्व० ६।१६।१-४)

शौनकः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्तदेवताः (अक्षिरोगभैषजम्) । अनुष्टुप्, १ निचृत्त्रिपदा गायत्री;
 ३ बृहतीगर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्, ४ त्रिपदा प्रतिष्ठा ।

आवयो अनावयो रसस्त उग्र आवयो । आ ते कस्मभमन्त्रसि १
 विद्वहो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता । स हि न त्वमसि यस्त्वमात्मानमावयः २
 तौर्विलिकेऽवेलयावायमैलव ऐलयीत् । बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्चापेहि निराल ३
 अलसालासि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा । नीलागलसाला ४

॥ ७२ ॥ (अथर्व० ६।२०।१-३)

उपरिबभ्रवः । शमी (पापशमनम्) । जगती, २ त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पाच्छंक्रमत्यनुष्टुप् ।

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणार्वचकृषुः ।
 इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः १ ४७८
 यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोषि ।
 आरात् त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह २
 बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध ऋतावरि । मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि ३

॥ ७३ ॥ (ऋ० १।१०।८)

गोतमो राहुगणः विश्वे देवाः (वनस्पतिसूर्यगावः) । गायत्री ।

मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८

॥ ७४ ॥ (ऋ० १।०।८।५।२-४)

सावित्री सूर्या ऋषिका । सोमः । अनुष्टुप् ।

सोमेनादित्या बलिनुः सोमेन पृथिवी मही ।
 अयो नक्षत्राणामेषा मुपस्थे सोम आर्हितः २
 सोमं मन्यते पपिवान यत् संपिषन्त्योषधिम् ।
 सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्यांश्नाति कश्चन ३

आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः ।
ग्राण्णामिच्छुण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः ४

॥ ७५ ॥ (ऋ० १।९।६)

गोतमो राहुगणः । सोमवनस्पतिः । गायत्री ।

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६

॥ ७६ ॥ (अथर्व० १।३४।१-५)

अथर्वा । मधुवनस्पतिः (मधुविद्या) । अनुष्टुप् ।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि ।
मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि १
जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपार्यसि २
मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परार्यणम् ।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः ३ ४८०
मधोरास्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः ।
मामित् किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव ४
परि त्वा परितलुनेक्षुणागामविद्विषे । यथा मां कामिन्यसो यथा मन्त्रापंगा असः ५ ४८१

रोगचिकित्सा । (४८३-६८०)

॥ ७७ ॥ (अथर्व० ६।१४।१-३)

बभ्रुपिङ्गलः । बलासः (बलासनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अस्थिसंसं परुसंसमास्थितं हृदयामयम् । बलासं सर्वं नाशयाङ्गैष्ठा यश्च पर्वसु १
निर्बलासं बलासिनः क्षिणोर्मि मुष्करं यथा । छिनद्वयस्य बन्धनं मूलमुर्वावा इव २
निर्बलासेतः प्र पताशुंगः शिशुको यथा । अथो इट इव हायनोप द्राक्षवीरहा ३ ४८५

॥ ७८ ॥ (अथर्व० ६।१०५।१-३)

उन्मोचनः । कासा (कासशमनम्) । अनुष्टुप् ।

यथा मनो मनस्केतैः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम् १
यथा बाणः सुसंशितः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम् २
यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विश्वरम् ३ ४८८

॥ ७९ ॥ (अथर्व० १।२२।१-४)

ब्रह्मा । सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च (हृद्रोग-कामिला-नाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अनु सूर्यमुदयतां हृद्योतो हरिमा च ते ।

गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि १

परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि । यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत् २ ४९०

या रोहिणीर्देवत्याश्च गावो या उत रोहिणीः ।

रूपंरूपं त्रयोवयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि ३

शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ४

॥ ८० ॥ (अथर्व० १।८।१-५)

भृग्वहिराः । घनस्पतिः, यक्ष्मनाशनम् (क्षेत्रियरोगनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः, ४ विराद, ५ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके । वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् १

अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वरीः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु २

बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिङ्गया ।

वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ३ ४९५

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ४

नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो नमः संदेश्येभ्यः ।

नमः क्षेत्रस्य पतये वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ५

॥ ८१ ॥ (अथर्व० ६।१३।१-५)

अथर्वा । घनस्पतिः (क्लीबत्वम्) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमाभिभ्रुतास्योपधे । इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोपशिनं कृधि १

क्लीबं कृष्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि । अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्वाण्ड्यौ २

क्लीबं क्लीबं त्वाकरं वध्रे वध्रि त्वाकरमरसारसं त्वाकरम् ।

कुरीरमस्य शीर्षणि कुम्बं चाघिनिदध्मसि ३ ५००

ये ते नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्ण्यम् । ते ते भिनन्ति शर्म्ययामुष्या अघि मुष्कयोः ४

यथा नडं कशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मना । एवा भिनन्ति ते शेषोऽमुष्या अघि मुष्कयोः ५

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ७।७४।१-४)

अथर्वाङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः, ४ जातवेदाः (गण्डमालाचिकित्सा) । अनुष्टुप् ।

अपचितां लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम । मुनेर्देवस्य मूर्लेन सर्वा विध्यामि ता अहम् १ ५०३

विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम् । इदं जघन्यामिासामा च्छिनाग्नि स्तुकाभिव २
 त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि त ईर्ष्याममीमदम् । अथो यो मन्युष्टे पते तम् ते शमयामसि ३ ५०५
 व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।
 तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे ४

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ७।७६।१-६)

अथर्वा । १, २ अपचिद्भैषज्यं, ३-६ जायान्यः, इन्द्रः, (गण्डमालाचिकित्सा) । अनुष्टुप्, १ विराट्,
 २ परोष्णिक्, ४ विष्टुप्, ५ भुरिगनुष्टुप् ।

आ सुस्रसः सुस्रसो असतीभ्यो असत्तराः । सेहोररसतरा लवणाद् विक्लेदीयसीः १
 या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः । विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः २
 यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यमिवतिष्ठति । निर्हास्तं सर्वं जायान्यं यः कथं ककुर्दि श्रितः ३
 पक्षी जायान्यः पतति स आ विशति पूरुषम् । तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च ४ ५१०
 विश वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे । कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृणो हविर्गृहे ५
 धूषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।
 माध्यन्दिने सर्वेन आ वृष्टस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु घेहि ६

॥ ८४ ॥ (अथर्व० ६।८३।१-४)

भगः । १ सूर्यः चन्द्रमाः, २ रोहिणी, ३ रामायणी (भैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ एकावसाना
 द्विपदा निवृत्तार्च्यनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव । सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छत १
 एन्येका श्येन्येका कृष्णैका रोहिणी द्वे । सर्वसामग्रभं नामावीरघ्नीरपेतन २
 अस्मर्तिका रामायण्यपचित् प्र पतिष्यति ।
 ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ३ ५१५
 वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो मनसा स्वाहा मनसा यदिदं जुहोमि ४

॥ ८५ ॥ (अथर्व० १।२३।१-४)

अथर्वा । वनस्पतिः [असक्तिः] (श्वेतकुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्वि च ।
 इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत् १
 किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत् ।
 आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परां शुक्लानि पातय २
 असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव । असिक्व्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् ३ ५१९

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत् त्वचि ।

दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्मं श्वेतमनीनशम्

४ ५२०

॥ ८६ ॥ (अथर्व० १।२४।१-४)

ब्रह्मा । आसुरी वनस्पतिः (श्वेतकुष्ठनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ ।

तदासुरी युष्मा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन्

१

आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासमेषजमिदं किलासनाशनम् ।

अनीनशत् किलासं सरूपामकरत् त्वचम्

२

सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता ।

सरूपकृत् त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि

३

श्यामा सरूपंकरणी पृथिव्या अघ्युद्धृता । इदम् पु प्र साधय पुना रूपाणि कल्पय ४

॥ ८७ ॥ (अथर्व० १।२५।१-४)

भृग्वक्त्रिः । यक्ष्मनाशनोऽग्निः (तक्म-नाशनम्) । त्रिष्टुप्, २-३ विराड्गर्भा, ४ पुरोऽनुष्टुप् ।

यदुमिरापो अर्दहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि ।

तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्

१ ५२५

यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।

हृदुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्

२

यदि शोको यदि वाभिः शोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।

हृदुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्

३

नमः शीतार्यं तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।

यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने

४

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ७।११६।१-२)

अथर्ववक्त्रिः । चन्द्रमाः (ज्वर-नाशनम्) । १ पुरोष्णिक्, २ एकावसाना द्विपदा आर्च्यनुष्टुप् ।

नमो रूराय च्यवनाय नोदनाय धूष्णवे । नमः शीतार्यं पूर्वकामकृत्स्वने

१

या अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्येति व्रतः

२

५३०

॥ ८९ ॥ (अथर्व० ५।२२।१-४)

भृग्वक्त्रिः । तक्मनाशनः । अनुष्टुप्, १ भुरिक् त्रिष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ५ विराट् पथ्याष्टुप् ।

अग्निस्तक्मानमर्ष बाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः ।

वेदिर्वेहिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु

१

५३१

अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन् ।

अधा हि त्वमन्नरसो हि भूया अधा न्यङ्कुधराङ् वा परेहि २

यः पुरुषः पारुषेयोऽवध्वंस इवारुणः । त्वमानं विश्वधावीर्याधराञ्च परां सुव ३

अधराञ्च प्र हिणोमि नमः कृत्वा त्वमने । शकम्भरस्य मृष्टिहा पुनरेतु महावृषान् ४

ओको अस्य मूर्जवन्त ओको अस्य महावृषाः ।

यावज्जातस्तत्कमंस्तावानसि बल्लिकेषु न्योचरः ५ ५३५

त्वमन् व्यालि वि गदु व्यङ्गि भूरिं यावय ।

दासीं निष्टकरीमिच्छ तां वज्रेण समर्पय ६

त्वमन् मूर्जवतो गच्छ बल्लिकान् वा परस्तराम् ।

शूद्रामिच्छ प्रफर्व्य तां त्वमन् वीवि धनुहि ७

महावृषान् मूर्जवतो बन्ध्वद्वि परेत्य । प्रैतानि त्वमने ब्रूओ अन्यक्षेत्राणि वा इमा ८

अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन्मृडयासि नः ।

अभूदु प्रार्थस्तु त्वमा स गमिष्यति बल्लिकान् ९

यत् त्वं शीतोऽथो रूरः सह कासावेपयः ।

भीमास्ते त्वमन् हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्गि नः १० ५४०

मा स्मेतान्तस्खीन् कुरुथा बलासै कासमुद्युगम् ।

मा स्मातोऽर्वाडैः पुनस्तत् त्वा त्वमन्नपं ब्रुवे ११

त्वमन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्त्रा कासिकया सह ।

पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम् १२

तृतीयकं वितृतीयं सन्दुन्दिमुत शारदम् ।

त्वमानं शीतं रूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम् १३

गन्धारिभ्यो मूर्जवद्भ्योऽङ्गैभ्यो मगधैभ्यः ।

ग्रैष्यन् जनमिव शेवधिं त्वमानं परि दद्यासि १४

॥ ९० ॥ (ऋ० १।५०।११-१३)

प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः (रोगच्य उपनिषदः, १३ अन्त्योऽर्च्यः द्विषद्ग्नश्च) । अनुष्टुप् ।

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११ ५४५

शुकैषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२

उदगादुयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं मम रन्ध्रयन् मो अहं द्विषते रधम् १३ ५४७

॥ ९१ ॥ (अथर्व० ४।१३, १-७)

शन्तातिः । चन्द्रमाः, विश्वे देवाः, १ देवाः, २-३ वातः, ४ मरुतः, ६-७ हस्तः, (रोगनिवारणम्) । अनुष्टुप् ।

उ॒त दे॒वा अ॒व॒हि॒तं दे॒वा उ॒न्न॒य॒था पु॒नः । उ॒ता॒गं॒श्च॒क्रुषं दे॒वा दे॒वा ज॒व॒य॒था पु॒नः १

द्वा॒वि॒मौ वा॒तौ वा॒त आ सि॒न्धो॒रा प॒रा॒व॒तः ।

द॒क्षं ते अ॒न्य आ॒वा॒तु व्य॑न्यो वा॒तु यद् र॒पः २

आ वा॒त वा॒हि भे॒ष॒जं वि वा॒त वा॒हि यद् र॒पः ।

त्वं हि वि॒श्वभे॒ष॒ज दे॒वानां॑ दू॒त ई॒र्य॒से ३ ५५०

त्रा॒र्य॒न्ता॒मिमं॑ दे॒वास्त्रा॒र्य॒न्तां म॒रुतां॑ ग॒णाः । त्रा॒र्य॒न्तां वि॒श्वा भू॒तानि॑ यथा॒यम॑र॒पा अ॑सत् ४

आ त्वा॒गमं॑ श॒ता॒ति॒भिर॒थो अ॒रि॒ष्टता॑तिभिः ।

द॒क्षं त उ॒ग्र॒माभा॑रिषं प॒रा य॒क्ष्मं सु॒वामि॑ ते ५

अ॒यं मे ह॒स्तो भ॒गवान॑यं मे भ॒गव॑त्तरः । अ॒यं मे वि॒श्वभे॒ष॒जोऽयं॑ शि॒वाभि॑मर्शनः ६

ह॒स्ताभ्यां॑ द॒श॒शाखा॑भ्यां जिह्वा वा॒चः पु॒रो॒ग॒वी ।

अ॒ना॒म॒यि॒तुभ्यां॑ ह॒स्ताभ्यां॑ ता॒भ्यां त्वा॒भि मृ॑शामसि ७ ५५४

॥ ९२ ॥ (अथर्व० १।१७।१-४)

ब्रह्मा । योषितः धमन्यश्च (रुधिरस्त्रावनिवृत्तये धमनीवन्धनम्) । अनुष्टुप्, १ भुरिगनुष्टुप्, ४ त्रिपदार्धो गायत्री ।

अ॒मू॒र्या य॒न्ति यो॒षितो॑ हि॒रा लो॒हित॑वाससः ।

अ॒भ्रा॒तर इ॒व जा॒मय॑स्तिष्ठन्तु ह॒तव॑र्चसः १ ५५५

ति॒ष्ठाव॑रे तिष्ठ॑ पर उ॒त त्वं ति॑ष्ठ म॒ध्यमे॑ ।

क॒नि॒ष्ठिका च॑ तिष्ठ॑ति ति॒ष्ठादि॒द्रुम॑निर्मही २

श॒तस्य॑ ध॒मनी॑नां स॒हस्र॑स्य हि॒राणा॑म् । अ॒स्थुरि॑न्म॒ध्य॒मा इ॒माः सा॒कम॑न्ता अ॒रंस॑त ३

परि॑ वृः सि॒कता॑वती ध॒न॒र्वृ॒ह॒त्य॒क्रिमी॑त् । तिष्ठ॑ते॒लय॑ता सु क॒म् ४ ५५८

॥ ९३ ॥ (अथर्व० ६।४४।१-३)

विश्वामित्रः । वनस्पतिः (रोगनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा महावृहती ।

अ॒स्था॒द् द्यौर॑स्थात् पृथि॒व्ये॒स्थाद् वि॒श्वमि॑दं जगत् ।

अ॒स्थुर्वृ॒क्षा ऊ॒र्ध्वस्व॑मा॒स्तिष्ठा॒द् रोगो॑ अ॒यं तव॑ १

श॒तं या भे॒ष॒जानि॑ ते स॒हस्रं॑ सं॒ग॒तानि॑ च । श्रेष्ठ॑मास्त्रावभे॒ष॒जं वसि॑ष्ठं रोग॒ना॒शनम् २ ५६०

रु॒द्रस्य॑ मू॒त्रम॑स्यमृ॒तस्य॑ नाभिः ।

वि॒षाण॑का नाम वा अ॒सि पि॒तॄणां॑ मू॒लादु॒त्थिता॑ वातीकृ॒तना॑शनी ३ ५६१

६ दै. [आयुर्वेद०]

॥ ९४ ॥ (अथर्व० ६।५२।१-३)

भागलिः । १ सूर्यः, २ गावः, ३ भेषजम् । अनुष्टुप् ।

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १
 नि गावो गोष्ठे अंसदन् नि मृगासो अविक्षत । न्यूर्धमयो नदीनां न्यदृष्टो अलिप्तत २
 आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कर्णस्य वीरुधम् । आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत् ३ ५६४

॥ ९५ ॥ (अथर्व० २।३।१-६)

अङ्गिराः । भेषज्यं, आयुः, धन्वन्तरिः, (आस्त्रावस्य भेषजम्) । अनुष्टुप्, ६ त्रिपदा
 स्वराडुपरिष्ठान्महाबृहती ।

अदो यद्वधावत्यवत्कमधि पर्वतात् ।
 तत् ते कृणोमि भेषजं सुभेषजं यथासंसि १ ५६५
 आदुक्का कुविदुक्का शते या भेषजानि ते ।
 तेषामसि त्वमुत्तममनास्त्रावमरोगणम् २
 नीचैः खनन्त्यसुरा अरुस्त्राणमिदं महत् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तद् रोगमनीनशत् ३
 उपजीका उद् भरन्ति समुद्रादधि भेषजम् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तद् रोगमशीशमत् ४
 अरुस्त्राणमिदं महत् पृथिव्या अघ्युद्धृतम् ।
 तदास्त्रावस्य भेषजं तद् रोगमनीनशत् ५
 शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः ।
 इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस आराव् विमृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् ६ ५७०

॥ ९६ ॥ (अथर्व० १।३।१-९)

अथर्वः । १ पर्जन्यः, २ मित्रः, ३ वरुणः, ४ चन्द्रः, ५ सूर्यः, (मूत्रमोचनम्) । अनुष्टुप्,
 १-५ पद्यापङ्क्तिः ।

विद्वा शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम् ।
 तेना ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां तं निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति १
 विद्वा शरस्य पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम् ।
 तेना ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां तं निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति २
 विद्वा शरस्य पितरं वरुणं शतवृष्ण्यम् ।
 तेना ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां तं निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति ३ ५७३

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृण्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ४

विद्या शरस्य पितरं सूर्यं शतवृण्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ५ ५७५

यदान्त्रेषु गवान्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम् । एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ६

प्र ते भिनक्षि मेहनं वत्रि वेशन्त्या इव ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ७

विषितं ते वस्तिबिलं समुद्रस्योदधेरिव ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ८

यथेषुका परापतदवसृष्टाधि धन्वनः ।

एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ९ ५८९

॥ ९७ ॥ (अथर्व० ४।९।१-१०)

भृगुः । त्रैकाकुदाञ्जनम् । अनुष्टुप्, १ ककुम्भती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम् । विश्वेभिर्देवैर्दत्तं परिधिर्जीवनाय कम् १ ५८०

परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि । अश्वानामर्वतां परिपाणाय तस्थिषे २

उतासि परिपाणं यातुजम्भनमाञ्जन ।

उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम् ३

यस्याञ्जनं प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुषपरुः । ततो यक्षं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव ४

नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिश्चोचनम्

नैनं विष्कन्धमश्रुते यस्त्वा विभर्त्याञ्जन ५

असन्मन्त्राद् दुष्वप्याद् दुष्कृताच्छमेलादुत ।

दुर्हार्दश्चक्षुषो घोरात् तस्मान्नः पाह्याञ्जन ६ ५८५

इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् । सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुष ७

त्रयो दासा आञ्जनस्य त्वमा बलास आदर्हिः ।

वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिकुञ्जाम ते पिता ८

यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि । यातृश्च सर्वाञ्जम्भयत् सर्वाश्च यातृधान्यः ९

यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे ।

उमे ते भद्रे नाम्नी ताम्या नः पाह्याञ्जन १० ५८९

॥ ९८ ॥ (अथर्व० ७।३०।१)

भृग्वङ्गिराः । द्यावापृथिवी, मित्रः, ब्रह्मणस्पतिः, सविता च (अञ्जनम्) । बृहती ।
स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम् ।

स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत्

१ ५९०

॥ ९९ ॥ (अथर्व० ७।३६।१)

अथर्वा । अक्षि, मनः (अञ्जनम्) । अनुष्टुप् ।

अक्षयौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।

अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति

१ ५९१

॥ १०० ॥ (अथर्व० १९।४५।१-१०)

भृगुः । आञ्जनम्, मन्त्रोक्तदेवताः । १-२ अनुष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ६-१० एकावसाना
महाबृहती (६ विराट्, ७-१० निचृत्) ।

ऋणादृणमिव संनयन् कृत्या कृत्याकृतो गृहम् ।

चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हर्दिः पृथीरपि शृणाञ्जन

१

यदस्मासु दुष्वप्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ।

अनामगस्तं च दुर्हर्दिः प्रियः प्रति मुञ्चताम्

२

अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवैदसः ।

चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते

३

चतुर्वीरं बध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।

ध्रुवस्तिष्ठासि सत्रितेव चार्यं इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम्

४ ५९५

आक्ष्वैकं मणिमेकं कृणुष्व स्नाह्येकेना पिचैकमेषाम् ।

चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान्

५

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

६

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

७

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

८

भर्गो मा भर्गेनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

९

मरुतो मा गृणैरवन्तु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

१०

॥ १०१ ॥ (अथर्व० १९।४४।१-१०)

भृगुः । आञ्जनम्, ८-९ वरुणः (भैषज्यम्) । अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदा शंकुमती उष्णिक्; ५ निचृद्विषमा
त्रिपदा गायत्री ।

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे

। तदाञ्जनं त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम् १

६०२

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसर्पकः ।	सर्वे ते यक्षमङ्गेभ्यो बहिर्निहन्त्वाङ्गनम् २	
आङ्गनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम् ।	कृणोत्वप्रमायुकं रथजूतिमनागसम् ३	
प्राणं प्राणं त्रायस्वासो असवे मृड ।	निर्ऋते निर्ऋत्या नः पार्श्वेभ्यो मुञ्च ४	६०५
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् ।	वार्तः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः ५	
देवाङ्गनं त्रैलोक्यं परि मा पाहि विश्वतः ।	न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत ६	
वी३दं मध्यमवासुपद् रक्षोहामीवचातनः ।	अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः ७	
ब३ही३दं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः ।	तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः ८	
यदापो अ॒भ्या इति वरुणेति यदा॒चिम ।	तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः ९	६१०
मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराङ्गन ।	तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः १०	६११

॥ १०२ ॥ (वा० य० ४।३)

(अङ्गनम् ।)

वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्मे देहि ३

॥ १०३ ॥ (अथर्व० ४।१।१-७)

ब्रह्मा । स्वापनं, वृषभः । अनुष्टुप्, २ भुरिक्, ७ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ।

सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।		
तेना सहस्रेणा वयं नि जनान्त्स्वापयामसि	१	
न भूमिं वातो अतिं वाति नातिं पश्यति कश्चन ।		
स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन्	२	
प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वल्लशीवरीः ।		
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि	३	६१५
एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम् । अङ्गान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिश्वरे	४	
य आस्ते चश्चरति यश्च तिष्ठन् विपश्यति ।		
तेषां सं दध्मो अक्षीणि यथेदं हर्म्य तथा	५	
स्वमु माता स्वमु पिता स्वमु श्वा स्वमु विश्वपतिः ।		
स्वपन्त्वस्यै ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः	६	
स्वप्नं स्वप्नाभिकरणेन सर्वं नि स्वापया जनम् ।		
ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयान्युषं जागृतादहमिन्द्र इवारिष्ठो अक्षितः	७	६१९

॥ १०४ ॥ (अथर्व० ६।९०।१-३)

अथर्वा । रुद्रः (इषुनिष्कासनम्) । अनुष्टुप्, ३ आर्षो भुरिगुणिकम् ।

यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गैभ्यो हृदयाय च । इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि १ ६१०
 यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्टिताः । तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि २
 नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै । नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ३ ६२९

॥ १०५ ॥ (क्र० १।१२०।१२)

कक्षीवान् दैर्घतमस आंशिजः । अश्विनौ (दुःश्वप्ननाशनम्) । गायत्री ।

अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उमा ता बर्हि नश्यतः १२

॥ १०६ ॥ (क्र० २।१८।१०)

कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । वरुणः (दुःश्वप्ननाशिनी) । त्रिष्टुप् ।

यो मे राजन् युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह ।
 स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद् वरुण पाह्यस्मान् १०

॥ १०७ ॥ (क्र० १०।१६४।१-५)

प्रचेता आङ्गिरसः । दुःश्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

अपेहि मनसस्पते ऽपं काम परश्चर ।
 परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ५१ ६२५
 भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् ।
 भद्रं वैवस्वते चक्षुर्वहुत्रा जीवतो मनः २
 यदाशसा निःशसाभिः शसो पारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।
 अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृता न्यजुष्टान्यारे असद् दधातु ३
 यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते ऽभिद्रोहं चरामसि ।
 प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ४
 अजैष्माद्यासनाम चाऽभूमानागसो वयम् ।
 जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ५ ६२९

॥ १०८ ॥ (अथर्व० ६।४१।१-३)

आङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःश्वप्ननाशनम् । १ पथ्यापङ्क्तिः, २ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ।

परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः १ ६३०

अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।

अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे असद् दधातु २

यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि । प्रचेता न अङ्गिरसो दुरितात् पातवंहसः ३ ६२२

॥ १०३ ॥ (अथर्व० ६।४६।१-३)

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्ननाशनम् । १ विष्टारपङ्क्तिः, २ ज्यवसाना शकरीगर्भा पञ्चपदा जगती, ३ अनुष्टुप् ।

यो न जीवोऽसि न मृतो देवानाममृतगर्भोऽसि स्वप्न ।

वरुणानी ते माता यमः पिताररुर्नामासि १

विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।

अन्तकोऽसि मृत्युरसि । तं त्वां स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि २

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति । एवा दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते सं नयामसि ३ ६२५

॥ ११० ॥ (अथर्व० ७।१००।१)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

पर्यावर्ते दुष्वप्न्यात् पापात् स्वप्न्यादभूत्याः ।

ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचैः १

॥ १११ ॥ (अथर्व० ७।१०१।१)

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

तत् स्वप्ने अन्नमश्रामि न प्रातरधिगम्यते ।

सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा १

॥ ११२ ॥ (अथर्व० ७।६९।१)

शन्तातिः । सुखम् । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छितु १

॥ ११३ ॥ (अथर्व० ६।४३।१-३)

भृग्वङ्गिराः (परस्परचित्तैकीकरणकामः) । मन्युशमनम् । अनुष्टुप् ।

अयं दुर्भो विमन्युकः स्वाय चारणाय च । मन्योर्विमन्युकस्यायं मन्युशमन उच्यते १

अयं यो भूरिमूलः समुद्रमवतिष्ठति । दुर्भः पृथिव्या उत्थितो मन्युशमन उच्यते २ ६४०

वि ते हनव्यां शरणिं वि ते मुख्यां नयामसि ।

यथावशो न वार्दिषो मम चित्तमुपार्यसि ३ ६४१

॥ ११४ ॥ (अथर्व० ५।१५।१-११)

विश्वामित्रः । एकवृषः (वृषरोगशमनम्) । एकावसानं द्वैपदम् ; १,४,५,७-१० सास्त्री उष्णिक् ;
२,३,६ आसुरी अनुष्टुप् ; ११ आसुरी गायत्री ।

यद्येकवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	१	यदि द्विवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	२
यदि त्रिवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	३	यदि चतुर्वृषोऽसि सृजार्सोऽसि	४
यदि पञ्चवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	५	यदि षड्वृषोऽसि सृजार्सोऽसि	६
यदि सप्तवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	७	यद्यष्टवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	८
यदि नववृषोऽसि सृजार्सोऽसि	९	यदि दशवृषोऽसि सृजार्सोऽसि	१०
यद्येकादशोऽसि सोऽपौदकोऽसि	११		

६५२

॥ ११५ ॥ (अथर्व० ५।१५।१-११)

विश्वामित्रः । मधुला वनस्पतिः (रोगोपशमनम्) । अनुष्टुप्, ४ पुरस्ताद्वृद्धती ; ५, ७-९ भुरिक् ।

एका च मे दश च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १	
द्वे च मे विंशतिश्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः २	
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ३	६५५
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ४	
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ५	
षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ६	
सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ७	
अष्ट च मे अशीतिश्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ८	६६०
नव च मे नवतिश्च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ९	
दश च मे शतं च मेऽपवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १०	
शतं च मे सहस्रं चापवृत्तार ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ११	६६३

॥ ११६ ॥ (अथर्व० १।२।१-४)

अथर्वा । पर्जन्यः, (१, ४ पृथिवी, ३ इन्द्रः, [चन्द्रमाश्च]) (रोगोपशमनम्) । अनुष्टुप्,
३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री ।

विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम् । विद्यो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्षसम् १
ज्याकि परि णो नमाश्मानं तुन्वं कृधि । वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषास्या कृधि २
वृक्षं यद् गावः परिष्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्युभम् । शरुमस्रद्यावय दिद्युमिन्द्र ३

६६६

यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजसम् ।

एवा रोगं चास्त्राव चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत्

४ ६६७

॥ ११७ ॥ (अथर्व० २।७।१-५)

अथर्वा । भैषज्यं, आयुः, वनस्पतिः (शापमोचनम्) । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ४ विराडुपरिष्ठाद् बृहती ।

अधद्विष्टा देवजांता वीरुच्छपथोपनी ।

आपो मलमिव प्राणैक्षीत् सर्वान् मच्छपथां अधि

१

यश्च सापन्नः शपथो ज्ञाम्याः शपथश्च यः ।

ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात् सर्वं तन्नो अधस्पदम्

२

दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम् । तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः ३ ६७०

परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद्वनम् ।

अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिषुरभिमातयः

४

शप्तामेतु शपथो यः सुहार्त् तेन नः सह । चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हर्दिः पृष्टीरपि शृणीमसि ५ ६७२

॥ ११८ ॥ (अथर्व० १।१८।१-४)

द्रविणोदाः । १ विनायकः, (२ सविता, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, देवाः, ३ सविता) (अलक्ष्मीनाशनम्)

१ विराडुपरिष्ठाद् बृहती, २ निचृज्जगती, ३ विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं१ निररातिं सुवामसि ।

अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि

१

निररणिं सविता साविषक् पुदोर्निर्हस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा ।

निरसभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय

२

यत् तं आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।

सर्वं तद्वाचापं हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सुदयतु

३

रिश्यपदीं वृषदतीं गोषेधां विधमामुत । विलीढ्यं ललाम्यं१ ता अस्मन्नाशयामसि ४ ६७६

॥ ११९ ॥ (अथर्व० ६।१३९।१-५)

अथर्वा । वनस्पतिः (सौभाग्यवर्धनम्) । अनुष्टुप्, १ ज्यवसाना षट्पदा विराड् जगती ।

न्यस्तिका रुरोहिथ सुभगंकरणी मम । शतं तव प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः ।

तया सहस्रपर्ण्या हृदयं शोषयामि ते

१

शुष्यंतु मयि ते हृदयमथो शुष्यत्वास्यम् । अथो नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर २

संवनेनी समुष्पला बभ्रु कल्याणि सं नुद । अमूं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि ३ ६७९

७ दै. [आयुर्वेद]

यथोदक्रमपेषोऽपशुष्यत्यास्यमि । एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर ४ ६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः । एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति ५ ६८१

॥ १२० ॥ (अथर्व० ६।१८।१-३)

अथर्वा । ईर्ष्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम् । अग्निं हृदय्यं शोकं तं ते निर्वीपयामसि १
यथा भूमिर्भूतमना मृतान्मृतमनस्तथा । यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृतं मनः २
अदो यत् ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम् ।
ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि निरूष्माणं दत्तेरिव ३ ६८४

॥ १२१ ॥ (अथर्व० ७।४५।१-२)

प्रस्कण्वः, २ अथर्वा । ईर्ष्यापनयनं, भेषजम् । अनुष्टुप् ।

जनाद् विश्वजनीनात् सिन्धुतस्पर्याभृतम् । दूरात् त्वा मन्य उद्भूतमीर्ष्याया नाम भेषजम् १ ६८५
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक् । एतामेतस्येर्ष्यामुद्राग्निमिव शमय २ ६८६

॥ १२२ ॥ (अथर्व० ६।१११।१-४)

अथर्वा । अग्निः (उन्मत्ततामोचनम्) । अनुष्टुप्, १ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

इमं मे अग्ने पुरुषं सुमुग्ध्यं यो बद्धः सुयतो लालपीति ।
अतोऽग्निं ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति १
अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २
देवैनसादुन्मदितुन्मत्तं रक्षस्परि । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति ३
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽसति ४ ६९०

क्रिमिनाशनम् । (६९१-७७३)

॥ १२३ ॥ (अथर्व० २।३१।१-५)

काण्वः । मही, चन्द्रमाः (क्रिमिजम्भनम्) । अनुष्टुप्; २, ४ उपरिष्ठाद्विराद् बृहती, ३, ५ आर्षी त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी ।

तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृषदा खल्वी इव १

दृष्टमदृष्टमदृष्टमथो कुरुरुमदृष्टम् ।

अलगण्डून्तसर्वान् छलनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि २

अलगण्डून् हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन् ।

शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिषति ३ ६९३

अन्वान्यं शीर्षण्यमथो पार्थेयं क्रिमीन् ।

अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि

४

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्सवन्तः ।

ये अस्माकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्वन्मि जनिम् क्रिमीणाम्

५ ६९५

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३)

कण्वः । इन्द्रः । क्रिमिघ्नम् । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओतो मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती ।

ओतो म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति

१

अस्येन्द्रं कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम

यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति ।

दुतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि

३

सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ ।

बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः

४

ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः ।

ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि

५ ७००

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।

दृष्टाश्च ब्रह्मदृष्टाश्च सर्वाश्च प्रमृणन् क्रिमीन्

६

येवाषासुः कर्कषास एजत्काः शिपविलुकाः ।

दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम्

७

हतो येवाषुः क्रिमीणां हतो नर्दनिमोत । सर्वान् नि मण्मषाकरं दृषद्वा खल्व्वा इव

त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शुणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः

अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्रमदशिवत् ।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनभ्यहं क्रिमीन्

१० ७०५

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा

हतासो अस्य वेशसो हतासुः परिवेशसः ।

अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः

१२

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् ।

भिनङ्गयश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम्

१३ ७०८

॥ १२५ ॥ (अथर्व० २।३२।१-६)

काण्वः । आदित्यः (क्रिमिनाशनम्) । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा भुरिग्गायत्री, ६ चतुष्पदा निचृदुष्णिक् ।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निप्रोचन् हन्तु रश्मिभिः ।

ये अन्तः क्रिमयो गवि

१

विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः

२

७१०

अत्त्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववर्जमदध्रिवत् ।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन्

३

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा

४

हतासौ अस्य वेशसो हतासुः परिवेशसः ।

अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः

५

प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि । भिनन्ति ते कुपुम्भं यस्तं विपुधानः

६

७१४

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ४।३७।१-१२)

वादरायणिः । अजशृङ्गीः १ अप्सरसः, १-२, ६, १० औषधी अजशृङ्गीः ३-५ अप्सरसः, ७-१२ गन्धर्वाप्सरसः

(क्रिमिनाशनम्) । अनुष्टुप्, ३ व्यवसाना पदपदा त्रिष्टुप्, ५ प्रस्तारपङ्क्तिः,

७ परोष्णिक्, ११ पदपदा जगती, १२ निचृत् ।

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्नू रक्षांसोपधे ।

त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः

१

७१५

त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वाश्चातयामहे । अजशृङ्गयज रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय

२

नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम् ।

गुल्गुलः पीलो नलद्यौऽक्षगन्धिः प्रमन्दुनी ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

३

यत्राश्चत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

४

यत्र वः प्रेङ्क्षा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्यः संवदन्ति ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन

५

एयमग्नोषधीनां वीरुथं वीर्यावती । अजशृङ्गयराटकी तीक्ष्णशृङ्गी व्युषितु

६

७२०

आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः । भिनन्ति मुष्कावपि यामि शेषः

७

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्यीः । तामिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्युषितु

८

७२२

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरण्ययीः ।

ताभिर्हविरदान् गन्धर्वानवक्रादान् व्युषितु

९

अवक्रादान्भिशोचानप्सु ज्योतय मामकान् ।

पिशाचान्तसर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्व च

१०

श्वैकैः कपिरिवैकैः कुमारः सर्वकेशकः ।

प्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः संचते स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्याविता ११

७२५

जाया इद् वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम् ।

अप धावतामर्त्या मर्त्यान् मा संचध्वम्

१२

७२६

॥ १२७ ॥ (अथर्व० १।८।१-४)

चातनः । १-२ बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च, ३-४ अग्निः [जातवेदाः] (यातुधाननाशनम्) । १-३ अनुष्टुप्,
४ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः

१

अयं स्तुवान् आगमदिसं स्म प्रति हयत । बृहस्पते वशे लुब्धवाग्नीषोमा वि विध्यतम् २

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्षुतावरम् ३

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणां जातवेदः ।

तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने

४

७३०

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।३२।१-३)

चातनः, ३ अथर्वा । १ अग्निः, २ रुद्रः, ३ मित्रावरुणौ (यातुधानक्षयणम्) । त्रिष्टुप्,
२ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तर्दावे जुहुता स्वेतद् यातुधानक्षयणं घृतेन ।

आराद् रक्षांसि प्रति दह त्वमग्ने न नो गृहाणामुप तीतपासि

१

रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् पिशाचाः पृष्टीर्वोऽपि शृणातु यातुधानाः ।

वीरुद् वो विश्वतोवीर्या यमेन समजीगमत्

२

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः ।

मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विद्वाना उप यन्तु मृत्युम्

३

७३३

॥ १२९ ॥ (अथर्व० १।२८।१-४)

चातनः । १-२ अग्निः, ३-४ यातुधानीः (रक्षोघ्नम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट्पथ्याबृहती, ४ पथ्यापङ्क्तिः ।

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः ।

दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः

१

७३४

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः ।

प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः ।

२ ७३५

या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमरिभे तोकमन्तु सा ३

पुत्रमन्तु यातुधानीः स्वसारमुत नप्यम् ।

अथा मिथो विकेश्योऽ वि व्रतां यातुधान्योऽ वि तृह्यन्तामराय्यः ।

४ ७३७

॥ १३० ॥ (अथर्व० ५।२९।१-१५)

चातनः । जातवेदाः, मन्त्रोक्ताः (रक्षोघ्नम्) । त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदा विराण्णाम गायत्री, ५ पुरोऽति-
जगती विराड्जगती; १२-१५ अनुष्टुप् (१२ भुरिक्; १४ चतुष्पदा परावृहती ककुम्मती) ।

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्रे विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्च पुरुषं सनेम

१

तथा तदग्रे कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति

२

यथा सो अस्य परिधिष्पताति यथा तदग्रे कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः

३ ७४०

अक्ष्योऽग्रे नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्रे यविष्ठ प्रति तं शृणीहि

४

यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्रे विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे भांसममुमेरयामः

५

आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

६

क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भाकृष्टपच्ये अशने धान्येऽग्रे यः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

७

अपां मा पाने यतमो ददम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

८ ७४५

दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽयमस्तु

९

क्रव्यादमग्रे रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः

१० ७४७

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षोसि पृतनासु जिग्युः ।

सहस्राननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ११

समाहर जातवेदो यद्रुतं यत् पराभृतम् ।

गात्राण्यस्य वर्धन्तामंशुरिवा प्यायतामयम् १२

सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् ।

अग्ने विरप्तिनं मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु १३ ७५०

एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः ।

तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः १४

तार्ष्टाधीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा ।

जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति १५ ७५२

॥ १३१ ॥ (वा० य० ५।२२)

(रक्षोघ्नम् ।)

इदमहं रक्षसां ग्रीवा ऽ अर्पिकृन्तामि

२२ ७५३

॥ १३२ ॥ (अथर्व० ४।२०।१-९)

मातृनामा । मातृनामा (पिशाचक्षयणम्) । अनुष्टुप्; १ स्वराट्, ९ भुरिक् ।

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति ।

दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति १

तिस्रो दिवस्तिष्ठः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक् ।

त्वयाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे २ ७५५

दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य हासि कनीनिका ।

सा भूमिमा रुरोहिथ वृष्टं श्रान्ता वधूरिव ३

तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत् ।

तयाहं सर्वं पश्यामि यश्च शूद्र उत्तार्यः ४

आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमपे गूहथाः ।

अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः ५

दर्शय मा यातुधानान् दर्शय यातुधान्यः ।

पिशाचान्तसर्वान् दर्शयेति त्वा रंभ ओषधे ६

कश्यपस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्षयाः ।

वीधे सूर्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः ७ ७६०

उदग्रभं परिपाणाद् यातुधानं किमीदिनम् ।

तेनाहं सर्वं पश्याम्युत शुद्रमुतार्थम्

८

यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति ।

भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय

९ ७६१

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ६।७।१-३)

अथर्वा । सोमः, अदितिः, ३ देवाः (असुरक्षयणम्) । गायत्री, १ निश्चुत् ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः । तेना नोऽवसा गहि

१

येन सोम साहन्त्यासुरान् रन्धयासि नः । तेना नो अर्धि वोचत

२

येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम् । तेना नः शर्म यच्छत

३ ७६५

॥ १३४ ॥ (अथर्व० १९।६६।१)

ब्रह्मा । जातवेदाः सूर्यो वज्रश्च (असुरक्षयणम्) । अतिजगती ।

अयोजाला असुरा मायिनोऽयस्यैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।

तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रक्रष्टिः सपत्नान् प्रमुणन् पाहि वज्रः

१ ७६६

॥ १३५ ॥ (अथर्व० १।७।१-७)

जातनः । अग्निः (जातवेदा), ३ अग्निन्द्रो (यातुधाननाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

स्तुवानमग्र आ वह यातुधानं किमीदिनम् ।

त्वं हि देव वन्दितो हुन्ता दस्योर्विभूविथ

१

आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् ।

अग्रे तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय

२

वि लपन्तु यातुधाना अत्रिणो ये किमीदिनः ।

अथेदमग्ने नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्यतम्

३

अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् ।

ब्रवीतु सर्वो यातुमानयमस्मीत्येत्यं

४ ७७०

पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः ।

त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम्

५

आ रभस्व जातवेदोऽस्माकार्थीय जज्ञिषे ।

दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय

६

त्वमग्ने यातुधानानुपबद्धो ब्रूहा वह ।

अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु

७ ७७३

विषनाशनम् । (७७४-८५९)

॥ १३६ ॥ (ऋ० १।१९।१-१६)

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अष्टवसूर्याः (विषघ्नोपनिषद्) । अनुष्टुप्; १०-१९ महापङ्क्तिः; १३ महाबृहती ।

कङ्कतो न कङ्कतो ऽथो सतीनकङ्कतः ।

द्वाविति प्लुषी इति न्यष्टा अलिप्सत

१

अदृष्टान् हन्त्याय—त्यथो हन्ति परायती ।

अथो अवघ्नती ह—न्त्यथो पिनष्टि पिंषती

२

७७५

शरासः कुशगसो दुर्भासः सैर्या उत ।

मौञ्जा अदृष्टा बैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत

३

नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत ।

नि केतवो जनानां न्यष्टा अलिप्सत

४

एत उ त्वे प्रत्यदृष्टन् प्रदोषं तस्करा इव ।

अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन

५

द्यौर्विः पिता पृथिवी माता सोमो आतादितिः स्वसा ।

अदृष्टा विश्वदृष्टा—स्तिष्ठतेलयता सु कम्

६

ये अस्य ये अङ्गचाः सूचीका ये प्रकङ्कताः ।

अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत

७

७८०

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।

अदृष्टान्तसर्वाञ्जम्भय—न्तसर्वाश्च यातुधान्यः

८

उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वेन् ।

आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा

९

सूर्ये विषमा संजामि दति सुरावतो गृहे ।

सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १०

इयत्तिका शकुन्तिका सका जघास ते विषम् ।

सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ११

त्रिः सप्त विष्णुलिङ्गका विषस्य पुष्पमक्षन् ।

ताश्चिन्नु न मरन्ति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १२ ७८५

८ वै. [आयुर्वेद०]

नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् ।	
सर्वीसामग्रं नामा—ऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार	१३
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो अगुर्वः ।	
तास्ते विषं वि जभिर उदकं कुम्भिनीरिव	१४
इयत्तकः कुषुम्भक—स्तकं भिनदयश्मना ।	
ततो विषं प्र वावृते पराचीरन्तु संवतः	१५
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः ।	
वृश्चिकस्यारसं विष—मरसं वृश्चिक ते विषम्	१६ ७८९

॥ १३७ ॥ (अथर्व० ४।६।१-८)

गरुत्मान् । तक्षकः, १ ब्राह्मणः; २ द्यावापृथिवी, सप्तसिन्धवः, ३ सुपर्णः; ४-८ विषम् (विषग्रम्) । अनुष्टुप् ।

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः ।	
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम्	१ ७९०
यावती द्यावापृथिवी वरिष्णा यावत् सप्त सिन्धवो वितष्टिरे ।	
वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम्	२
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विषं प्रथममावयत् ।	
नामीमदो नारुरुप उतास्मा अभवः पितुः	३
यस्त आस्यत् पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः ।	
अपस्कम्भस्य शल्यान्निरवोचमहं विषम्	४
शल्याद् विषं निरवोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः ।	
अपाष्ठाच्छृङ्गात् कुल्मलान्निरवोचमहं विषम्	५
अरसस्त इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम् । उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम्	६ ७९१
ये अपीषन् ये अदिहन् य आस्यन् ये अवासृजन् ।	
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः	७
वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे ।	
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम्	८ ७९७

॥ १३८ ॥ (अथर्व० ४।७।१-७)

गरुत्मान् । वनस्पतिः (विषनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ स्वराद् ।

वारिदं वारयातै वरणावत्यामाधि । तत्रामृतस्यासिक्तं तेना ते वारये विषम्	१ ७९८
---	-------

अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम् । अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते	२
करम्भं कृत्वा तिर्यं पीवस्पाकमुदारथिम् ।	
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्त्स न रूरुपः	३ ८००
वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि ।	
प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि	४
परि ग्राममिवाचितं वचसा स्थापयामसि ।	
तिष्ठा वृक्ष इव स्थामन्यभिखाते न रूरुपः	५
पवस्तैस्त्वा पर्यकीणन् दूर्ध्वैर्मिरजिनैरुत । प्रकीरसि त्वमौषधेऽभिखाते न रूरुपः	६
अनाम्ना ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।	
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे	७ ८०४

॥ १३९ ॥ (अथर्व० ६।१००।१-३)

गरुत्मान् । वनस्पतिः (विषदूषणम्) । अनुष्टुप् ।

देवा अदुः स्र्यो अदाद् द्यौरदात् पृथिव्यदात् ।	
तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम्	१ ८०५
यद् वो देवा उपजीका आसिञ्चन् धन्वन्पुदुकम् ।	
तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम्	२
असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा ।	
दिवस्पृथिव्याः संभूता सा चर्कथारसं विषम्	३ ८०७

॥ १४० ॥ (अथर्व० १०।४।१-२६)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषदूरीकरणम्) । अनुष्टुप् ; १ पथ्यापङ्क्तिः ; २ त्रिपदा यवमध्या गायत्री ;

३-४ पथ्याबृहती ; ८ उष्णिग्गर्भा परा त्रिष्टुप् ; १२ भुरिगायत्री ; १६ त्रिपदा प्रतिष्ठा गायत्री ;

२१ ककुम्मती ; २३ त्रिष्टुप् ; २६ ज्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा ककुम्मती

भुरिक् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत् ।	
अहीनामपमा रथं स्थाणुमारदथार्षत्	१
दुर्मः शोचिस्तरुणकमश्वस्य वारः परुषस्य वारः । रथस्य बन्धुरम्	२
अव श्वेत पदा जहि पूर्वण चापरेण च । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्	३ ८१०
अरंघुषो निमज्योन्मज्य पुनरब्रवीत् । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्	४
पैद्वो हन्ति कसर्णालि पैद्वः श्वित्रमुतासितम् । पैद्वो रथ्व्याः शिरः सं विभेद पृदाकाः	५ ८१२

पैद्व प्रेहिं प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि । अहीन् व्यस्यितात् पथो येन स्मा वयमेमसि	६
इदं पैद्वो अजायतेदमस्य परायणम् । इमान्यर्वतः पदाद्विद्यो वाजिनीवतः	७
संयतं न वि ष्वरद् व्यात्तं न सं यमत् । अस्मिन् क्षेत्रे द्वावही स्त्री च पुमांश्च तावुभावर्सा	८ ८१५
अरसासं इहाहयो ये अन्ति ये च दूरके । घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दुण्डेनागतम्	९
अवाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च । इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्वो अरन्धयत्	१०
पैद्वस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः । इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यत आसते	११
नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा । जघानेन्द्रो जग्निमा वयम्	१२
हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासुः पृदाकवः । दर्नि करिकतं त्रिवत्रं दुर्मेष्वाभितं जहि	१३ ८१०
कैरातिका कुमरिका सका खनति भेषजम् । हिरण्ययीभिरश्रिभिर्गिरीणामुप सानुषु	१४
आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः । स वै स्वजस्य जम्भेन उभयोर्वृश्चिकस्य च	१५
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च । वातापर्जन्योऽु भा	१६
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् पृदाकुं च पृदाक्षम् । स्वजं तिरश्चिराजिं कमर्णीलं दशोनसिम्	१७
इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तवं । तेषामु तुह्यमाणानां कः स्विन् तेषामसद् रसः	१८ ८१५
सं हि शीर्षाण्यग्रं पौञ्छिष्ठ इव कर्वरम् । सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्य निजमहेर्विषम्	१९
अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः । हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासुः पृदाकवः	२०
ओषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया । नयाम्यर्वतीरिवाहे निरैतु ते विषम्	२१
यदग्रौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत् । कान्दाविषं कनक्रकं निरैतैतु ते विषम्	२२
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आवभूवुः ।	
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्वेभ्यो नमसा विधेम	२३ ८१०
तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि । अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम्	२४
अङ्गादङ्गात् प्र व्याषय हृदयं परि वर्जय । अधा विषस्य यत् तेजोऽवाचीनं तदेतु ते	२५
आरे अभूद् विषमरौद् विषे विषमप्रागपि । अग्निर्विषमहेनिरैधात् सोमो निरणयीत् ।	
दुष्टारमन्वगाद् विषमहिरमृत	२६ ८१३

॥ १४१ ॥ (अथर्व० ५।१३।१-११)

गरुडमान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्) । जगती, २ आस्तारपङ्क्तिः, ४, ७-८ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप्,
६ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक, १०-११ निचृद्वायव्यौ ।

दुदिहिं मद्यं वरुणो दिवः कविर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम् ।

खातमखातमुत सुक्तमग्रममिरेव धन्वन् नि जजास ते विषम्

१ ८१४

यत् ते अपोदकं विपं तत् त एतास्वग्रभम् ।	
गूळामि ते मध्यमुत्तमं रसमुतावमं भियसा नेशदादु ते	२ ८३५
वृषा मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते ।	
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः	३
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम् ।	
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्	४
कैरात पृश्न उपतप्य बभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः ।	
मा मे सख्युः स्तामानमपि छाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्	५
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च ।	
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथा इव	६
आलिङ्गी च विलिङ्गी च पिता च माता च ।	
विष वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ	७ ८४०
उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या ।	
प्रतङ्गं दुद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम्	८
कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् गिरेरवचरन्तिका ।	
याः काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम्	९
ताबुवं न ताबुवं न घेत् त्वमसि ताबुवंम् । ताबुर्वेनारसं विषम्	१०
तस्तुवं न तस्तुवं न घेत् त्वमसि तस्तुवंम् । तस्तुर्वेनारसं विषम्	११ ८४४

॥ १४२ ॥ (अथर्व० ७।८।१)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनाशनम्) । ज्यवसाना बृहती ।
अपेक्षारिरस्यरिर्वा असि । विषे विषमपृक्था विषमिद् वा अपृक्थाः ।
अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि

१ ८४५

॥ १४३ ॥ (अथर्व० ६।१०।१-३)

गरुत्मान् । तक्षकः (सर्पविषनिवारणम्) । अनुष्टुप् ।

परि धामिव सूर्योऽहीनां जनिमागमम् ।

रात्री जगदिवान्यद्वंसात् तेना ते वारये विषम् १

यद् ब्रह्मभिर्यद्विभिर्यद् देवैर्विदितं पुरा । यद् भूतं भव्यमासन्वत् तेना ते वारये विषम् २

मध्वा पृश्ने नद्यः पर्वता गिरयो मधु । मधु परुष्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे ३ ८४८

॥ १४४ ॥ (अथर्व० ६।५६।१-३)

शन्तातिः । १ विश्वे देवाः, २-३ रुद्रः (सर्पेभ्यो रक्षणम्) । १ उष्णिग्गर्भां पथ्यापङ्क्तिः,
२ अनुष्टुप्, ३ निचृत्

मा नो देवा अर्हिर्वधीत् सतोऽकान्तसहपूरुषान् ।

संयतं न वि स्पर्द्ध व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः ।

१

नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये । स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः

२

८५०

सं ते हन्मि दता दतः समु ते हन्वा हनू ।

सं ते जिह्या जिह्वां सम्वास्वाह आस्यम्

३

८५१

॥ १४५ ॥ (अथर्व० ७।५६।१-८)

अथर्वा । वृश्चिकादयः, २ वनस्पतिः, ४ ब्रह्मणस्पतिः (विषभैषज्यम्) । अनुष्टुप्, ४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः

तिरश्चिराजेरसितात् पृदाकोः परि संभृतम् । तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत्

१

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्मधुला मधूः । सा विहुतस्य भेषज्यथो मशकजम्भानी

२

यतो द्रष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि । अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम्

३

अयं यो वक्रो विपर्य्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि ।

तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इषीकामिव सं नमः

४

८५५

अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः । विषं ह्यस्याद्विष्यथो एनमजीजभम्

५

न ते बाह्वोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मंष्यतः । अथ किं पापयामुया पुच्छे विमर्ष्यर्भकम्

६

अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः । सर्वे भल ब्रवाथ शर्कोटमरसं विषम्

७

य उभाभ्यां ग्रहरसि पुच्छेन चास्येन च । आस्येन न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत्

८

८५९

जलचिकित्सा । (८६०-१११९)

॥ १४६ ॥ (अथर्व० ६।५७।१-३)

शन्तातिः । रुद्रः । १-२ अनुष्टुप्, ३ पथ्यावृहती ।

इदमिदं वा उं भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम् ।

येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत्

१

जालाषेणाभि विश्रवत जालाषेणोपं सिश्रवत ।

जालाषमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे

२

शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत् ।

क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम्

३

८६९

॥ १४७ ॥ (क्र० १।२३।१६-२३)

मेधातिथिः काण्वः । आपः, २३ आपः अग्निश्च । १६-१८ गायत्री, १९ पुर उष्णिक्, २१ प्रतिष्ठा ।
२०, २२-२३ अनुष्टुप् ।

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम् । पृञ्चतीर्मधुना पर्यः १६
अमूर्या उप सूर्ये यार्भिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् १७
अपो देवीरुपं ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः । सिन्धुभ्यः कर्त्वि हविः १८ ८६५
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं मपामुत प्रशस्तये । देवा भवन्त वाजिनः १९
अप्सु मे सोमो अब्रवीदुन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंसुव मापश्च विश्वभेषजीः २०
आपः पृणीत भेषजं वरुथं तन्वेद्मम । ज्योक् च सूर्यं हृशे २१
इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि । यद् वाहमभिद्रोह यद् वा शेष उतानृतम् २२
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पर्यस्वानग्र आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा २३ ८७०

॥ १४८ ॥ (क्र० ७।४७।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

आपो यं वः प्रथमं देवयन्तं इन्द्रपानमूर्मिमकुण्वतेळः ।
तं वो वयं शुचिर्मरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम १
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वो ऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाति तमश्याम देवयन्तो वो अद्य २
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पार्थः ।
ता इन्द्रस्य न भिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्रहोत ३
याः सूर्यो रश्मिभिराततान् याम्य इन्द्रो अरदद् गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ४ ८७४

॥ १४९ ॥ (क्र० ७।४९।१-४)

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु १ ८७५
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु २
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानुते अवपश्यज्जनानाम् ।
मधुश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ३ ८७७

यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासुर्जं मदन्ति ।

वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्ट—स्ता आपो देवीरिह मार्वन्तु

४ ८७८

+ ॥ १५० ॥ (ऋ० १०।९।१-२)

त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा । आपः । गायत्री, ५ वर्धमाना गायत्री,
७ प्रतिष्ठा गायत्री, ८-९ अनुष्टुप् ।

आपो हि ह्य मयोभुव—स्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे	१
यो वः शिवर्तमो रस—स्तस्य भाजयतेह नः । उंशतीरिव मातरः	२ ८८०
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः	३
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि सवन्तु नः	४
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्वर्षणीनाम् । अपो याचामि भेषजम्	५
अप्सु मे सोमो अब्रवी—दन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुवम्	६
आपः पृणीत भेषजं वरुथं तन्वेडु मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे	७ ८८५
इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि ।	
यद् वाहमभिदुद्रोह यद् वा शेष उतानृतम्	८
आपो अध्वान्वचारिषं रसेन समगस्महि ।	
पर्यस्नानम् आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा	९ ८८७

॥ १५१ ॥ (ऋ० १०।१७।१०-१४)

देवश्चवा-यामायनः । १०-१४ आपः; ११-१३ सोमो वा । त्रिष्टुप्, १३-१४ अनुष्टुप्,
(१३ पुरस्ताद्बृहती वा ।)

आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतर्ष्वः पुनन्तु ।	
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवी—रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि	१०
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु धू—निमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।	
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः	११
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशु—र्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।	
अध्वर्योर्वा परिं वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वर्षट्कृतम्	१२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशु—रवश्च यः परः सुचा ।	
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिंश्चतु राधसे	१३ ८९१

+ ऋ. १०, ९, १-४; वा० य० ११, ५०-५२; ३६, १२, १४-१६ ।

पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं वचः ।

अपां पर्यस्वदित् पयस्तेन मा सह शुन्धत

१४ ८९२

॥ १५२ ॥ (ऋ० १०।१९।१-८)

मथितो यामायनः, भृगुर्वारुणिर्वा, च्यवनो भार्गवो वा । आपः, गावो वा, १ उत्तरार्धर्चस्य
अग्नीषोमौ । अनुष्टुप्, ६ गायत्री ।

नि वर्तध्वं मानु गाताऽस्मान्सिषक्त रेवतीः ।

अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम्

१

पुनरेना नि वर्तय पुनरेना न्या कुरु ।

इन्द्र एणा नि यच्छ त्वग्निरेना उपाजतु

२

पुनरेता नि वर्तन्ता मस्मिन् पुष्यन्तु गोपतौ ।

इहैवाग्ने नि धारयेह तिष्ठतु या रयिः

३

यज्ञियानं न्ययनं संज्ञानं यत् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे

४

य उदानङ् व्ययनं य उदानट् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं मपि गोपा नि वर्तताम्

५

आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवामिधुनजामहै

६

परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पर्यसा ।

ये देवाः के च यज्ञियास्ते रय्या सं सृजन्तु नः

७

आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय ।

भूम्याश्चतस्रः प्रदिशस्ताभ्य एना नि वर्तय

८

९००

॥ १५३ ॥ (ऋ० १०।३०।१-१५)

कवष ऐलूषः । आपः, अपां नपात् वा । त्रिष्टुप् ।

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरे त्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।

महीं मित्रस्य वरुणस्य धासि पृथुज्यसे रीरधा सुवृक्तिम्

१

अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूताऽच्छाप इतोशतीरुशन्तः ।

अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः

२

अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् ।

स वो दददूर्मिमद्या स्रपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत

३ ९०३

यो अ॒नि॒ध॒मो दी॒दय॑दु॒स्व॒न्त॒र्यं वि॒प्रा॒स ई॒ळते॑ अ॒ध्व॒रेषु॑ ।	
अ॒पो न॒पा॒न्मधु॑मती॒र॒पो दा॒ याभि॑रिन्द्रो॒ वावु॑धे वी॒र्या॑य	४
याभिः॑ सो॒मो मो॑दते॒ हर्ष॑ते च क॒ल्या॒णीभि॑र्यु॒वति॑भिर्न म॒र्यः ।	
ता अ॒ध्व॒र्यो अ॒पो अ॒च्छा पे॑र॒हि यदा॑सि॒ञ्चा ओष॑धीभिः पु॒नीता॑त्	५ ९०५
ए॒वेद्य॑ने॒ युव॑तयो॒ नम॑न्त॒ यदी॑मु॒श॒नु॒तीरे॑त्य॒च्छ ।	
सं जा॑नते॒ मन॑सा सं चि॒कि॒त्रे ऽध्व॑र्यवो धि॒षणा॑पश्च दे॒वीः	६
यो वो वृ॒ताभ्यो॑ अ॒कृ॒णो॒दु लो॒कं यो वो म॒ह्या अ॒भि॒श॒स्तेर॑मु॒ञ्चत् ।	
तस्मा॑ इन्द्रा॒य मधु॑मन्त॒मूर्मि॑ दे॒वमा॑दन् प्र हि॒णो॒तना॑पः	७
प्रा॒स्मै हि॒नो॒त मधु॑मन्त॒मूर्मि॑ गर्भो॒ यो वः॑ सि॒न्ध॒वो मध्व॑ उत्सः ।	
घृ॒त॒पृ॒ष्ठ॒मी॒ढ्यमध्व॑रे॒ष्वा ऽऽपो॑ रेवतीः शृ॒णु॒ता हव॑ मे	८
तं सि॒न्ध॒वो मत्स॑रमिन्द्र॒पान॑ मूर्मि॑ प्र हे॒तु य उ॒मे इ॒र्यति॑ ।	
म॒द॒च्यु॒तमौ॒शा॒नं न॒भोजा॑ परि॒ त्रि॒तन्तुं वि॒चर॑न्त॒मुत्स॑म्	९
आ॒व॒र्ध॒तती॑रध॒ नु द्वि॑धारा॒ गोषु॑यु॒धो न नि॑यवं चर॒न्तीः ।	
ऋ॒षे जनि॑त्रीर्धु॒वन॑स्य पत्नी॒र॒पो व॑न्दस्व स॒वृ॒धः स॒योनीः	१० ९१०
हि॒नो॒ता नो अ॒ध्व॒रं दे॒वय॑ज्या हि॒नो॒त ब्र॒ह्म स॒नये॑ धना॒नाम् ।	
ऋ॒तस्य॑ योगे वि॒ व्य॑ध्व॒मूर्धः श्रु॒ष्टीव॑रीर्भू॒तना॑स्मभ्य॒मापः॑	११
आ॒पो रेव॑तीः क्ष॒यथा॑ हि व॒स्वः ऋ॒तं च म॒द्रं बि॑भृथामृ॒तं च ।	
रा॒यश्च॑ स्थ स्व॒प॒त्यस्य॑ पत्नीः सर॒स्वती॑ तद् गृ॒णते॑ वयो॒ धात्	१२
प्र॒ति यदा॑पो अ॒दृश॑मायती॒र्धु॒तं प॒र्या॑सि बिभ्र॒तीर्म॑धूनि ।	
अ॒ध्व॒र्युभि॑र्मन॒सा सं॒वि॒दा॒ना इन्द्रा॑य सोमं सु॒ष्टु॒तं भ॑र॒न्तीः	१३
ए॒मा अ॑गमन् रेवती॒र्जीव॑ध॒न्या अ॒ध्व॒र्यवः सा॒दय॑ता स॒खायः॑ ।	
नि ब॒र्हिषि॑ ध॒त्तन॑ सोम्या॒सो ऽपा॑ न॒प्रा सं॒वि॒दा॒नास॑ ए॒नाः	१४
आ॒ग॒म॒न्नाप॑ उ॒श॒तीर्ब॒र्हिरे॑दं न्य॒ध्व॒रे अ॑सदन् दे॒वय॑न्तीः ।	
अ॒ध्व॒र्यवः सु॒नु॒तेन्द्रा॑य सोम॒मभू॑दु वः सु॒श॒का दे॒वय॑ज्या	१५ ९१५
॥ १५३ ॥ (अथर्व० १।३३।१-४)	
शन्तातिः । (चन्द्रमाः) आपः (च) । त्रिष्टुप् ।	
हि॒र॒ण्य॒व॒र्णाः शु॒चयः॑ पा॒व॒का यासु॑ जा॒तः सं॒वि॒ता या॒स्व॒भिः ।	
या अ॒ग्निं गर्भे॑ दधिरे सु॒व॒र्णास्ता॑ न॒ आपः॑ शं स्यो॒ना भ॑वन्तु	१ ९१६

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम् ।

या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु २

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।

या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ३

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे ।

घृतश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ४ ९१९

॥ १५५ ॥ (अथर्व० ३।१३।१-७)

भृगुः । वरुणः, सिन्धुः, आपः; २-३ इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ निचृत्, ५ विराड्जगती, ६ निचृदनुष्टुप् ।

यदुदः संप्रयतीरहाहनदता हते ।

तस्मादा नद्योऽे नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः १ ९२०

यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीमं समवल्गत ।

तदाम्रोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनु घ्न २

अपक्रामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम् ।

इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम् ३

एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम् ।

उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते ४

आपो भद्रा घृतमिदापं आसन्नभीषोमौ विभ्रत्याप इत् ताः ।

तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ५

आदित् पश्याम्युत वा शृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ् मासाम् ।

मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः ६ ९२५

इदं व आपो हृदयमयं वत्स कृतावरीः । इहेत्थमेतं शकरीर्यत्रेदं वेश्यामि वः ७ ९२६

॥ १५६ ॥ (अथर्व० ७।३९।१)

प्रस्कण्वः । आपः, सुपर्णः, वृषभः । त्रिष्टुप् ।

दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तमपां गर्भं वृषभमोषधीनाम् ।

अभीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तमा नो गोष्ठे रयिष्ठां स्थापयाति १ ९२७

॥ १५७ ॥ (अथर्व० १९।२।१-५)

सिन्धुद्वीपः । आपः । अनुष्टुप् ।

शं त आपो हैमवृतीः शमु ते सन्तुत्स्याः । शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वृष्याः १

शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्तुवन्याः । शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः २ ९२९

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।

मिषग्भ्यो मिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि

३ ९३०

अपामहं दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम् ।

अपामहं प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः

४

ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः । यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त मेपजीः ५ ९३२

॥ १५८ ॥ (अथर्व० १२।१२।१-४)

ब्रह्मा । आपः । १ आसुर्यनुष्टुप्; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३ आसुरी गायत्री; ४ साम्न्युष्णिक् ।

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

१

उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

२

संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

३

९३५

जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्

४

९३६

॥ १५९ ॥ (चा० य० १।१२-१३, २१, ३१)

(आपः ।)

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवोऽग्रं इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं

यज्ञपतिं देवयुवम्

१२

युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ

१३

समाप् ओषधीभिः समोषधयो रसेन ।

सः रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताः सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्

२१

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

३१

९४०

॥ १६० ॥ (चा० य० २।२, ३४)

(आपः ।)

अदित्यै व्युन्दनमसि

२

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः क्रीलालं परिस्रुतम् । स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्

३४

९४२

॥ १६१ ॥ (चा० य० ४।१, १२)

(आपः ।)

इमा आपः शम्भु मे सन्तु देवीः

१

श्वात्राः पीता भवत यूयमापो ऽ अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः

ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता क्रतावृधः

१२

९४४

॥ १६२ ॥ (वा० य० ५।११)

(आपः ।)

इदमहं तप्तं वार्षहिर्धा यज्ञान्निः सृजामि

११ ९४५

॥ १६३ ॥ (वा० य० ६।१०, १३, ३०-३१)

(आपः ।)

आपो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद् देवहविः

१०

देवीरापः शुद्धा वोढ्वः सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म

१३

निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तर्पयत मा

३०

मनो मे तर्पयत वार्ष मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे

तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत गुणान् मे तर्पयत गुणा मे मा वितृषन्

३१ ९४९

॥ १६४ ॥ (वा० य० ६।१७, २१, २४, २७-२८)

(आपः ।)

इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ।

यच्चामिदुद्रोहानृतं यच्च शेषे अभीरुणम् ।

आपो मा तस्मादेनसः पर्वमानश्च मुञ्चतु

१७ ९५०

मापो मौषधीर्हिंसीः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः

२२

अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि सादयामीन्द्राग्न्योर्भागधेयीं स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयीं स्थ

विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ ।

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्

२४

देवीरापो अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः ।

तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा

२७

समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः

२८ ९५४

॥ १६५ ॥ (वा० य० ८।२६)

(आपः ।)

देवीराप एष वो गर्भस्तः सुप्रीतः सुभृतं बिभृत ।

देव सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परिं च वक्ष्व

२६ ९५५

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ६।१९४।१-३)

अथर्वा । दिव्या आपः (निर्ऋत्यपस्तरणम्) । त्रिष्टुप् ।

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादपां स्तोको अभ्यपिप्तद् रसेन ।
 समिन्द्रियेण पर्यसाहमये छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन १
 यदि वृक्षादभ्यपिप्तत् फलं तद् यद्यन्तरिक्षात् स उ वायुरेव ।
 यत्रास्पृक्षत् तन्वोऽयं यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः २
 अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पुत्रिममेव ।
 सर्वा पवित्रा वितताभ्यस्मत् तन्मा तारीर्निर्ऋतिर्मो अरातिः ३ ९५८

॥ १६७ ॥ (अथर्व० ७।८९।१-४)

सिन्धुद्वीपः । अग्निः (दिव्या आपः) । अनुष्टुप् । ४ त्रिपदा निचृत् परोष्णिक् ।

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्षमहि ।
 पर्यस्वानग्र आगमं तं मा सं सृज वर्चसा १
 सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
 विद्युर्मै अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः २ ९६०
 इदमापः प्र बृहतावद्यं च मलं च यत् । यचाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम् ३
 एधोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ४ ९६१

॥ १६८ ॥ (अथर्व० १।४।४)

सिन्धुद्वीपः । आपः (अपां भेषजम्) । पुरस्ताद्बृहती ।

अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजम् ।
 अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः ४ ९६२

॥ १६९ ॥ (अथर्व० १।६।४)

सिन्धुद्वीपः (अथर्वा कृतिर्वा) । आपः (अपां भेषजम्) । पथ्यापाङ्क्तिः ।

शं न आपो धन्वन्त्याऽः शमु सन्त्वनूप्याः ।
 शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः ४ ९६४

॥ १७० ॥ (अथर्व० ६।२१।१-३)

शन्तातिः । १ आदित्यरश्मिः, २-३ मरुतः (भेषज्यम्) । त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा भुरिगजगती ।

कृष्णं नितानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति ।
 त आववृन्तसर्दनादृतस्यादिद घृतेन पृथिवीं व्युद्भिः १ ९६५

पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।

ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु २

उदुप्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवर्तस्पृणाति ।

एजाति ग्लहा कन्येवि तुन्नैरुं तुन्दाना पत्यैव जाया ३ ९६७

॥ १७१ ॥ (अथर्व० ६।२३।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्) । १ अनुष्टुप्, २ त्रिपदा गायत्री, ३ परोष्णिक् ।

सस्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्रुषीः । वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुप ह्वये १

ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्तिवतः प्रणीतये । सद्यः कृण्वन्त्वेतैवे २

देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः । शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः ३ ९७०

॥ १७२ ॥ (अथर्व० ६।२४।१-३)

शन्तातिः । आपः (अपां भैषज्यम्) । अनुष्टुप् ।

हिमवतः प्र संवन्ति सिन्धौ समह संगमः ।

आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्योतभेषजम् १

यन्मै अक्षयोरादिद्योत पाण्योः प्रपदोश्च यत् ।

आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्तमाः २

सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्यः स्थनं ।

दुत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै ३ ९७३

॥ १७३ ॥ (ऋ० ५।८३।१-१०)

भौमोऽत्रिः । पर्जन्यः । त्रिष्टुप्, २-४ जगती, ९ अनुष्टुप् ।

अच्छा वद त्वसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।

कर्निकदद् वृषभो जीरदान् रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् १

वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।

उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत् पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः २ ९७५

रथीव कश्याश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान् कृणुते वृष्यँ अहं ।

दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरेते यत् पर्जन्यः कृणुते वृष्यँ नमः ३

प्र वाता वान्ति पतर्यन्ति विद्युत् उदोषधीर्जिह्वेते पिन्वते स्वः ।

इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसार्वति ४ ९७७

यस्य त्रते पृथिवी ननंमति	यस्य त्रते शफवज्रधुरीति ।	
यस्य त्रत ओषधीर्विश्वरूपाः	स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ	५
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं	प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।	
अर्वाङ्गितेन स्तनयितुनेह्य	पो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः	६
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा	उदुन्वता परि दीया रथेन ।	
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्च	समा भवन्तद्वतो निपादाः	७ ९८०
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च	स्यन्दन्तां कुल्या विपिताः पुरस्तात् ।	
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि	सुप्रपाणं भवत्वन्याभ्यः	८
यत् पर्जन्य कनिक्रदत्	स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।	
प्रतीदं विश्वं मोदते	यत् किं च पृथिव्यामधि	९
अवर्षावर्षमुदु	षू गृभायाऽकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।	
अजीजन ओषधीर्भोजनाय	कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषां	१० ९८३

॥ १७४ ॥ (ऋ० १०।१७।१६)

ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप् ।

दशानामेकं कपिलं समानं	तं हिन्वान्ति क्रतवे पार्याय ।	
गर्भं माता सुधितं वक्षणा	स्वर्वेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति	१६ ९८४

॥ १७५ ॥ (ऋ० ७।१०।१।१-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । त्रिष्टुप् ।

तिस्रो वाचः प्र वदु ज्योतिरग्रा	या एतद् दुहे मधुदोषमूर्धः ।	
स वत्सं कृण्वन् गर्भमोषधीनां	सद्यो जातो वृषभो रोरवीति	१ ९८५
यो वर्धेन ओषधीनां यो अपां	यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।	
स त्रिधातुं शरणं शर्म यंसत्	त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्टयस्मे	२
स्तरीरुं त्वद् भवति सूत उ त्वद्	यथावशं तन्वै चक्र एयः ।	
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता	तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः	३
यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थु	स्तिस्रो द्यावस्त्रेधा ससुरारपः ।	
त्रयः कोशास उपसेचनासो	मर्षः श्वेतन्त्याभितो विरष्णम्	४ ९८८

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।
 मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः ५
 स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
 तन्म क्रतुं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ ९९०

॥ १७६ ॥ (क्र० ७।१०२।१-३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः (वृष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । गायत्री, २ पादनिचृत् ।

पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळहुषे । स नो यवसमिच्छतु १
 यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम् २
 तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् । इळां नः संयतं करत् ३ ९९३

॥ १७७ ॥ (क्र० ७।१०३।१-१०)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मण्डूकाः (पर्जन्यः) । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
 वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूकां अवादिषुः १
 दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।
 गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वशुरत्रा समेति २ ९९५
 यदीमेना उशतो अभ्यवर्षति तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।
 अक्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ३
 अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनो र्पां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।
 मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम् ४
 यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्यैव वदति शिक्षमाणः ।
 सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत् सुवाचो वदथनाध्यप्सु ५
 गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
 समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ६
 ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।
 संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ७ १०००
 ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
 अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ८ १००१

देवर्हितं जुगुप्सुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
 संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्रुवते विसर्गम् ९
 गोमायुरदादजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।
 गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रस्रवे प्र तिरन्त आयुः १० १००३

॥ १७८ ॥ (अथर्व० ४।१।१-१६)

अथर्वा । १ दिशः, २-३ वीरुधः, ४ मरुत्पर्जन्यौ, ५-१० मरुतः आपः, ११ प्रजापतिः स्तनयितुः,
 १२ वरुणः, १३-१५ मण्डूकाः पितरश्च, १६ वातः (वृष्टिः) । त्रिष्टुप् ; १-२, ५ विराट्
 जगती, ४ विराट् पुरस्ताद्बृहती, ७, १३ अनुष्टुप्, ९ पथ्यापङ्क्तिः, १० भुरिक्,
 १२ पञ्चपदानुष्टुग्गर्भा भुरिक्, १५ शंकुमत्यनुष्टुप् ।

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजृतानि यन्तु ।
 महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु १
 समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।
 वर्षस्य सर्गां महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः २ १००५
 समीक्षयस्व गायतो नभस्यपां वेगांसः पृथगुद् विजन्ताम् ।
 वर्षस्य सर्गां महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः ३
 गणास्त्वोषं गायन्तु मरुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।
 सर्गां वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु ४
 उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत पातयाथ ।
 महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ५
 अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पर्यसा समङ्गिध ।
 त्वया सृष्टं बह्वलमैतु वर्षमाशरैषी कृशगुरेत्वस्तम् ६
 सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ७ १०१०
 आशामाशां वि द्यौततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु ८
 आपो विद्युदुग्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु ९
 अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।
 स नो वर्षं वन्ततां जातवैदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि १० १०१३

प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नुदधिर्मर्दयाति ।
 प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ्गितेन स्तनयित्तुनेहि ११
 अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गरा अपां वरुणाव नीचीरपः सृज ।
 वदन्तु पृश्निवाहवो मण्डूका इरिणानु १२ १०१५
 संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
 वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूकां अवादिषुः १३
 उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि । मध्ये हृदस्यं प्लवस्व विगृह्यं चतुरः पदः १४
 खण्वखा३इ खैमखा३इ मध्ये तदुरि । वर्षं वनुध्वं पितरो मरुतां मन इच्छत १५
 महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।
 तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु १६ १०१९

॥ १७९ ॥ (अथर्व० ७।१८।१-२)

अथर्वा । पृथिवी, पर्जन्यः (वृष्टिः) । १ चतुष्पदा भुरिगुणिक्, २ त्रिष्टुप् ।
 प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्हीरेदं दिव्यं नभः ।
 उद्गो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि ष्या दृतिम् १ १०२०
 न ग्रस्तताप न हिमो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः ।
 आपश्चिदस्मै धृतमित् क्षरन्ति यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् २

॥ १८० ॥ (ऋ० ३।३३।१-१३)

गाथिनो विश्वामित्रः, ४, ६, ८, १० नद्यः ऋषिकाः । नद्यः, ४, ८, १० विश्वामित्रः;
 ६, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

प्र पर्वतानामुशती उपस्था—दश्चे इव विषिते हासमाने ।
 गावेव शुभ्रे मातरां रिहाणे विपाट्छुतुद्री पर्यसा जवेते १
 इन्द्रैषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः ।
 समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे २
 अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वी सुभगांमगन्म ।
 वत्समिव मातरां संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती ३
 एना वयं पर्यसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः ।
 न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः कियुर्विप्रो नद्यो जोहवीति ४ १०२५
 रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरिरुप मुहूर्तमेवैः ।
 प्र सिन्धुमच्छा वृहती मनीषा ऽवस्युरहे कुशिकस्य सनुः ५ १०२६

इन्द्रो अस्माँ अरदुद् वज्रबाहु—रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् । देवोऽनयत् सविता सुपाणि—स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः	६
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं त—दिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्वत् । वि वज्रेण परिषदो जघाना—ऽऽयन्नापोऽयं नमिच्छमानाः	७
एतद् वचो जरितर्मापि मृष्टा आ यत् ते घोषानुत्तरा युगानि । उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते	८
ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन । नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः	९ १०३०
आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन । नि ते नसै पीप्यानेव योषा मर्याथेव कन्या शश्वचै ते	१०
यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयु—र्गव्यन् ग्रामं इषित इन्द्रजितः । अर्षादहं प्रसवः सर्गैतक्त आ वो वृणे सुमति यज्ञियानाम्	११
अतारिषुभरता गव्यवः स—मभक्त विप्रः सुमति नदीनाम् । प्र पिन्वच्चमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पुणध्वं यात शीर्षम्	१२
उद् व ऊर्मिः शम्या ह—न्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत । मादुष्कृतौ व्येनसा—ऽध्न्यौ शूनमारताम्	१३ १०३४

॥ १८१ ॥ (ऋ० ७।५०।४)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । नद्यः । अतिजगती शकरी वा ।

याः प्रवतो निवते उद्वते उदुन्वतीरनुदकाश्च याः । ता असभ्यं पर्यसा पिन्वमानाः शिवा देवीरंशिपदा भवन्तु सर्वो नद्यो अशिमिदा भवन्तु	४ १०३५
--	--------

॥ १८२ ॥ (ऋ० १०।७५।१-९)

सिन्धुक्षित् प्रैयमेघः । नद्यः । जगती ।

प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदर्ने विवस्वतः । प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सुत्वंरीणामति सिन्धुरोर्जसा प्र तेऽरदुद् वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद् वाजो अभ्यद्रवस्त्वम् । भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदैषामग्रं जगतामिरज्यसि	१ २ १०३७
--	-------------

दिवि स्व॒नो य॑तते भू॒म्योप॑र्य॒नन्तं शु॒भमु॒दिय॑ति भा॒नुना॑ ।	
अ॒भ्रादि॑व प्र स्त॒नय॑न्ति वृ॒ष्टयः॑ सि॒न्धुर्य॑देति वृष॒भो न रो॑रुवत् ३	
अ॒भि त्वा॑ सि॒न्धो शिशु॑मिन्न मा॒तरो वा॒श्रा अ॑र्षन्ति प॒र्यसे॑व धे॒नवः॑ ।	
राजै॑व यु॒ध्वा नय॑सि त्वमि॒त् सि॒चौ यदा॑सा॒मग्रं प्र॑वतामि॒नक्ष॑सि ४	
इ॒मं मे॑ ग॒ङ्गे य॒मुने सर॑स्वति शु॒तुद्रि॑ स्तोमै॒ सच॑ता प॒रुष्ण्या॑ ।	
अ॒सिक्न्या॑ म॒रुद्व॑धे वि॒तस्त॑या—ऽऽजी॒कीये॑ शृ॒णु॒ह्या सु॒षोम॑या ५ १०४०	
तृ॒ष्टाम॑या प्रथ॒मं या॑तवे स॒ज्जः सु॒सर्वा॑ र॒सया॑ श्वेत्या त्या ।	
त्वं सि॒न्धो कु॑म॒या गो॒मती॑ क्रु॒मु मे॒हृत्त्वा सर॑थं या॒भिरी॑यसे ६	
ऋ॒जीत्ये॑नी रु॒शती॑ महि॒त्वा परि॑ ज॒यांसि॑ भर॒ते रजा॑ंसि ।	
अ॒द॒ब्ध्या सि॒न्धुर॑प॒सोम॑प॒स्तमा॑—ऽश्वा॒ न चि॒त्रा व॑र्ष॒णीव॑ दर्श॒ता ७	
स्व॒श्वा सि॒न्धुः सुर॑था सु॒वासा॑ हि॒र॒ण्ययी॑ सु॒कृता॑ वा॒जिनी॑वती ।	
ऊ॒र्णाव॑ती यु॒वतिः॑ सी॒लमा॑व—त्यु॒ताधि॑ वस्ते सु॒भगा॑ म॒धुवृ॑धम् ८	
सु॒खं रथं॑ यु॒युजे॑ सि॒न्धुरा॑श्वि॒नं तेन॑ वा॒जं स॒निष॑दस्मिन्ना॒जौ ।	
म॒हान् ह्य॑स्य म॒हिमा॑ प॒नस्य॑ते ऽद॒ब्धस्य॑ स्व॒यंश॑सो वि॒र॒प्तिनः॑ ९ १०४४	

॥ १८३ ॥ (ऋ० ७।९५।३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । त्रिष्टुप् ।

स वा॒वृधे॑ न॒र्यो यो॑षणासु वृ॒षा शिशु॑र्वृष॒भो य॒ज्ञिया॑सु ।	
स वा॒जिनै॑ म॒धव॑द्भ्यो दधा॒ति वि॒सात॑थै॒ तन्वै॑ मा॒मृजी॑त ३ १०४५	

॥ १८४ ॥ (ऋ० ७।९६।४-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । गायत्री ।

ज॒नीय॑न्तो न्वग्र॒वः पु॒त्रीय॑न्तः सु॒दान॑वः । सर॑स्वन्तं हवामहे ४	
ये ते॑ सर॒स्व ऊ॒र्मयो॑ म॒धुम॑न्तो घृ॒तश्चु॑तः । तेभि॑र्नोऽवि॒ता भ॑व ५	
पी॒पिवा॑ंसं सर॑स्वतः स्त॒नं यो वि॒श्वदर्श॑तः । भ॒क्षीम॑हि॒ प्र॒जामि॑षम् ६ १०४८	

॥ १८५ ॥ (अथर्व० ७।४०।१-२)

प्रस्कण्वः । सरस्वान् । १ भुरिक्, २ त्रिष्टुप् ।

यस्य॑ व्र॒तं प॒शवो॑ यन्ति स॒र्वे यस्य॑ व्र॒त उ॑प॒तिष्ठ॑न्त आपः ।	
यस्य॑ व्र॒ते पु॑ष्ट॒पति॑र्निर्विष्ट॒स्तं सर॑स्वन्त॒मव॑से हवामहे १ १०४९	

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् ।

रायस्पोषं श्रवस्युं वसाना इह हुवेम सदनं रयीणाम्

२ १०५०

॥ १८६ ॥ (ऋ० १।३।१०-१२)

मधुच्छन्दावैश्वामित्रः । सरस्वती । गायत्री ।

पावका नः सरस्वती वाजैर्भिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः

१०

चोदयित्री सनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती

११

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति

१२ १०५३

॥ १८७ ॥ (ऋ० १।१६।४९)

दीर्घतमा औचध्यः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूयेन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।

यो रत्नधा वसुविद् यः सुदधः सरस्वति तमिह धातवे कः

४९ १०५४

× ॥ १८८ ॥ (ऋ० २।३।०।८ [पूर्वार्धः])

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेपि शत्रून्

८ १०५५

॥ १८९ ॥ (ऋ० २।४।१६-१८)

गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । सरस्वती । अनुष्टुप्, १८ बृहती ।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।

अग्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कधि

१६

त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूपि देव्याम् ।

शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः

१७

इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।

या ते मन्म गृत्समदा क्रतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति

१८ १०५८

॥ १९० ॥ (ऋ० ६।६।११-१४)

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सरस्वती । गायत्री, १-३, १३ जगती; १४ त्रिष्टुप् ।

इयमेददाद् रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्यश्वायं दाशुषे ।

या शश्वन्तमाच्छादावसं पणि ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति

१

इयं शुष्मेभिर्विसृखा इवारुजत् सानुं गिरीणां तविषेभिरुमिभिः ।

पारावतभीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः

२ १०६०

सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसंस्य मायिनः ।	
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति	३
प्र णो देवी सरस्वती वाजैर्भिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु	४
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते । इन्द्रं न वृत्रतूर्ये	५
त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि । रदा पुषेर्व नः सनिम्	६
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्	७ १०६५
यस्या अनन्तो अहुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्वरति रोरुवत्	८
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसरन्या क्रतावरी । अतन्नहेव सूर्यः	९
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत्	१०
आपप्रुषी पार्थिवा न्युरु रजो अन्तरिक्षम् । सरस्वती निदस्पातु	११
त्रिषधस्या सप्तधातुः पश्च जाता वर्धयन्ती । वाजैवाजे हव्या भूत्	१२ १०७०
प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा ।	
रथ इव बृहती विभ्वने कृतो पस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती	१३
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पर्यसा मा न आ धक् ।	
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म	१४ १०७९

॥ १९१ ॥ (ऋ० ७।१५।१-२, ४-६)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

प्र क्षोदसा धार्यसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमार्यसी पूः ।	
प्रवावधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः	१
एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।	
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्धृतं पयो दुदुहे नाहुषाय	२
उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत् सुभगा यज्ञे अस्मिन् ।	
मितन्नुभिर्नमस्यैरिद्याना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः	४ १०७५
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व ।	
तव शर्मेन् प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम्	५
अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वावावृतस्य सुभगे व्यावः ।	
वर्ध शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६ १०७७

॥ १९२ ॥ (ऋ० ७।९।१-३)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वती । १-२ प्रगाथः- (१ बृहती, २ सतो बृहती), ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

बृहदु गायिषे वचो ऽसुर्या नदीनाम् ।

सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी १

उभे यत् ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।

सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम् २

भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्व—त्यकवारी चेतति वाजिनीवती ।

गुणाना जमदग्निवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत् ३ १०८०

॥ १९३ ॥ (ऋ० १०।१७।१-२, ७-९)

देवश्रवा यामायनः । १-२ सरण्यूः, ७-९ सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

त्वष्टा दुहित्रे वंहतुं कृणोती—तीदं विश्वं भुवनं समेति ।

यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश १

अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सर्वर्णामददुर्विवस्वते ।

उताश्विनावभरद् यत् तदासी—दजहाद् द्वा मिथुना सरण्यूः २

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुपे वार्यि दात् ७

सरस्वति या सरथं ययार्थं स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।

आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वा—ऽनमीवा इष आ धैह्यस्मे ८

सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।

सहस्रार्धमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ९ १०८१

॥ १९४ ॥ (अथर्व० ७।१०।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुस्रयुः सुहवो यः सुदत्रः ।

येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः १ १०८६

॥ १९५ ॥ (अथर्व० ७।११।१)

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते पृथु स्तनयितुर्य ऋषो दैवः केतुर्विश्वमाभूषतीदम् ।

मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं भोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य १ १०८७

॥ १९६ ॥ (अथर्व० ७।५७।१-२)

वामदेवः । सरस्वती । जगती ।

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुमे यद् याचमानस्य चरतो जनां अनु ।

यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन १

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवृतन्नृतानि ।

उमे इदस्योमे अस्य राजत उमे यतेते उमे अस्य पुष्यतः २ १०८९

॥ १९७ ॥ (अथर्व० ७।६८।१-३)

शन्तातिः । सरस्वती । १ अनुष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ३ गायत्री ।

सरस्वति त्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु । जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः १ १०९०

इदं ते हव्यं घृतवत् सरस्वतीदं पितॄणां हविरास्यं यत् ।

इमानि त उदिता शतमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम २

शिवा नः शतमा भव सुमृडीका सरस्वति । मा ते युयोम सदृशः ३ १०९१

॥ १९८ ॥ (वा० य० १०।१-४, ६, १९)

(आपः ।)

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजम्बुश्रितानाः ।

याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः १

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि

राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि २

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौर्जस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं

मे दत्त स्वाहौर्जस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापः परिवाहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः

परिवाहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा

राष्ट्रममुष्मै देहपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ३ १०९५

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ

राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त

स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त व्रजक्षितं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितं स्थ

राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त

शर्विष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शर्विष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा

राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रमुष्मै दत्तापः स्वराजं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुष्मै दत्त । मधुमतीर्मधुमतीभिः पृथ्यन्तां महिं क्षत्रं
क्षत्रियाय वन्वाना अनादृष्टाः सीदत सहोर्जसो महिं क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ४

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रुदिभिः ।

अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ६

प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्वरन्ति स्वसिचं हयानाः ।

ता आववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिं बुध्न्यमनु रीर्यमाणाः १९ १०९८

॥ १९९ ॥ (वा० य० ११।३८)

(आपः ।)

अपो देवीरुपसृज मधुमतीर्यक्षमायं प्रजाम्यः ।

तासांमास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ३८ १०९९

॥ २०० ॥ (वा० य० १२।३५, ५५)

(आपः ।)

आपो देवीः प्रतिगृष्णीत भस्मैतत् स्योने कृणुष्वः सुरभा उं लोके ।

तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत् ३५ ११००

ता अस्य स्रद्धदोहसः सोमः श्रीणन्ति पृश्नयः ।

जन्मन् देवानां विशस्त्रिष्वारौचने दिवः ५५ ११०१

॥ २०१ ॥ (वा० य० १४।८)

(आपः ।)

अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादेव चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरेय ८ ११०२

॥ २०२ ॥ (वा० य० २०।१८-२०, २२-२३)

(आपः ।)

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्षयव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्याहि १८

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः १९

द्रुपदारिंव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।

पूतं पवित्रेणैवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः २० ११०५

अपो अद्यान्वचारिष॑ रसेन॑ समसृक्षमहि ।

पर्य॑स्नानश्च आगमं॑ तं मा स॑ सृज॑ वर्चसा प्रजया॑ च धनेन॑ च

२२

एधोऽस्येधिषीमहि॑ समिदं॑सि तेजोऽसि॑ तेजो मयि॑ धेहि

२३ १०१७

अन्नादिकम् । (११०८-१३३१)

॥ २०३ ॥ (ऋ० १।१८७।१-११)

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अन्नं । १ अनुष्टुप्गर्भा उष्णिक्; ३, ५-७, ११ अनुष्टुप्; (११ बृहती वा);

२, ४, ८-१० गायत्री ।

पितुं॑ नु स्तोषं॑ महो धर्माणं॑ तर्विषीम् । यस्य॑ त्रितो व्योर्जसा॑ वृत्रं विपर्वम॑र्दयत्+ १

स्वादो॑ पितो मधो॑ पितो वयं॑ त्वा ववृमहे । अ॒स्माक॑मविता भव २

उप॑ नः पित॒वा च॑र शिवः॑ शिवाभि॑रूतिभिः । म॒थोभ्र॑रद्विषेण्यः सखा॑ सुशेवो॒ अर्द्ध॑याः ३ १११०

तव॑ त्ये पितो रसा॑ रजा॑स्यनु विष्टिताः । दिवि॑ वाता॑ इव श्रिताः ४

तव॑ त्ये पितो दद॑त॒स्तव॑ स्वादिष्ट॒ ते पितो॑ । प्र॒स्वा॒ज्ञानो॑ रसा॑नां तुवि॒श्रीवा॑ इवेरते ५

त्वे पितो॑ महानां॑ देवानां॑ मनो॑ हितम् । अका॑रि चारु॑ केतुना॑ तवाहि॑मवसावधीत् ६

यदु॑दो पितो अज॑गन् विवस्व॑ पर्वतानाम् । अत्रा॑ चिन्नो मधो॑ पितो ऽरं॑ भक्षाय॑ गम्याः ७

यदु॑पामोषधीनां॑ परि॑शमा॒रिशाम॑हे । वाता॑पे पीव॒ इद् भव॑ ८ १११५

यत् ते॑ सोम॑ गवा॑शिरो यवा॑शिरो भजामहे । वाता॑पे पीव॒ इद् भव॑ ९

कर॑म्भ ओषधे भव॑ पीवो॑ वृक् उ॒दार॑थिः । वाता॑पे पीव॒ इद् भव॑ १०

तं त्वा॑ वयं॑ पितो॑ वचो॑भिर्गावो॑ न ह॒व्या सु॑ष्ठुदिम ।

देवेभ्य॑स्त्वा सधु॑माद॒म॒स्मभ्यं॑ त्वा सधु॑मादम् ११ १११८

॥ २०४ ॥ (अथर्व० ६।७१।१-३)

ब्रह्मा । अग्निः, ३ वैश्वानरः, देवाः (अन्नम्) । जगती, ३ त्रिष्टुप् ।

यद॒न्नम॑ग्निं बहु॒धा वि॑रूपं॒ हिर॑ण्यम॒श्वमु॑त गाम॒जाम॑र्विम् ।

यदे॒व किं॑ च॒ प्रति॑जग्र॒हाम॑ग्निष्ट॒द्रोता॑ सुहु॑तं कृणोतु १

यन्मा॑ हुतमहु॑तमाज॒गाम॑ दत्तं॒ पित॑रि॒भिरनु॑मतं मनु॒ष्यैः ।

यस्मान्मे॒ मन॑ उदि॒व रा॑रंजीत्य॒ग्निष्ट॒द्रोता॑ सुहु॑तं कृणोतु २

यद॒न्नम॑ङ्गयन्तेन॒ देवा॑ दा॒स्यन्न॑दा॒स्यन्नु॑त सै॒गुणामि॑ ।

वै॒श्वान॑रस्य॒ मह॑तो म॒हिम्ना॑ शिवं॒ मह्यं॑ मधु॑मदस्त्वन्नम् ३ ११२१

+ ऋ० १, १८७, १; वा० य० ३४, ७, काण्व ३३, २ ।

*

॥ २०५ ॥ (अथर्व० ७।५८।१-२)

कौरुपथिः । इन्द्रावरुणौ (अन्नम्) । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मघं धृतव्रतौ ।

युवो रथौ अध्वरो देववीतये प्रति स्वसरमुप यातु पीतये १

इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।

इदं वामन्धः परिषिक्तमासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् २ ११२३

॥ २०६ ॥ (अथर्व० ६।१४२।१-३)

विश्वामित्रः । वायुः (अन्नसमृद्धिः) । अनुष्टुप् ।

उच्छ्रयस्व बहुर्भेव स्वेन महसा यव । मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वा दिव्याशनिर्वधीत् १

आशृण्वन्तं यवं देवं यत्र त्वाच्छावदामसि । तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्र इवैध्यक्षितः २ ११२५

अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः । पृणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ३ ११२६

॥ २०७ ॥ (अथर्व० ११।३।१-५६)

[प्रथमः पर्यायः । १-३१]

अथर्वी । ओदनः (बार्हस्पत्योदनः) ।

१, १४ आसुरी गायत्री; १ त्रिपदा समविषमा गायत्री; ३, ६, १० आसुरी पङ्क्तिः;

४, ८ साम्यनुष्टुप्; ५, १३, १५, २५ साम्ययुग्मिक्; ७, १९-२२ प्राजापत्या-

ऽनुष्टुप्; ९, १७-१८ आसुर्यनुष्टुप्; ११ भुरिगार्च्यनुष्टुप्, १२ याजुषी

जगती; १६, २३ आसुरी बृहती; २४ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती;

२६ आर्च्ययुग्मिक्; २७-२९ साम्नी बृहती (२८-२९ भुरिक्);

३० याजुषी त्रिष्टुप्, ३१ अल्पशः पङ्क्तिरुत याजुषी ।

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् १

द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः २

चक्षुर्मुसलं कामं उलूखलम् । ३ । दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् ४ ११३०

अश्वाः कणा गार्वस्तण्डुला मशकास्तुषाः ५

कब्रु फलीकरणाः शरोऽभ्रम् ६

श्याममयौऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् ७

त्रपु भस्म हरितं वर्णः पुष्करमस्य गन्धः ८

खलः पात्रं स्फयावंसावीषे अनुकये । ९ । आन्त्राणि जत्रवो गुदा वत्राः १०

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ११

सीताः पर्शवः सिकता ऊर्बध्यम् । १२ । क्रतुं हस्तावनेजनं कुल्योपिसेचनम् १३ ११३९

ऋचा कुम्भ्यधिहितात्विज्येन प्रेषिता	१४	११४०
ब्रह्मणा परिगृहीता साम्रा पर्युढा । १५ । बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	१६	
ऋतवः पक्तारं आर्तवाः समिन्धते । १७ । चरुं पञ्चविलमुखं घर्मोद्भीन्धे	१८	
ओदुनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः	१९	११४५
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिस्त्रयोऽवरपरं श्रिताः	२०	
यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः	२१	
तं त्वौदनस्यं पृच्छामि यो अस्य महिमा महान्	२२	
स य ओदनस्यं महिमानं विद्यात्	२३	
नाल्प इति ब्रूयन्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति	२४	११५०
यावद् दाताभिमनस्येत तन्नार्ति वदेत्	२५	
ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराश्वमोदनं प्राशीः प्रत्यश्चाशमिति	२६	
त्वमोदनं प्राशीःस्त्वामोदनाः इति	२७	
पराश्वं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह	२८	
प्रत्यश्च चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह	२९	११५५
नैवाहमोदनं न मामोदनः । ३० । ओदन एवौदनं प्राशीत्	३१	११५७

[द्वितीयः पर्यायः । ३२-४९]

मन्त्रोक्ताः । ३२, ३८, ४१ (प्रथमा), ३२-४९ (सप्तमी) साम्नी त्रिष्टुप्; ३२, ३५, ४२ (द्वितीया), ३२-४९ (तृतीया), ३३-३४, ४४-४८ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुरी गायत्री; ३२, ४१, ४३, ४७ दैवी जगती; ३८, ४४, ४६ (द्वि०), ३२, ३५-४३, ४९ (पञ्चमी) एकपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३२-४९ (षष्ठी) साम्न्यनुष्टुप्; ३३-४९ (प्र०) आर्च्यनुष्टुप्; ३७ (प्र०) साम्नी पङ्क्तिः; ३३, ३६, ४०, ४७-४८ (द्वि०) आसुरी जगती; ३४, ३७, ४१, ४३, ४५ (द्वि०) आसुरी पङ्क्तिः; ३४ (चतुर्थी) आसुरी त्रिष्टुप्; ३५, ४३, ४८ (च०) याजुषी गायत्री; ३६-३७, ४० (च०) दैवी पङ्क्तिः; ३८-३९ (च०) प्राजापत्या गायत्री; ३९ (द्वि०) आसुर्युष्णिक्; ४२, ४५, ४९ (चतुर्थी) दैवी त्रिष्टुप्; ४९ (द्वि०) एकपदा भुरिक्साम्नी बृहती ।

ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्वन् । १।

ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह । २।

तं वा अहं नार्वाश्वं न पराश्वं न प्रत्यश्वम् । ३।

बृहस्पतिना शीर्ष्णा । ४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 बधिरो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३३

ततश्चैनमन्याभ्यामुक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 अन्धो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 सूर्याचन्द्रमसाभ्यामुक्षीभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३४ ११६०

ततश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 ब्रह्मणा मुखेन । ४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३५

ततश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 जिह्वा ते मरिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 अग्नेर्जिह्वया । ४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३६

ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 दन्तास्ते शत्स्यन्तीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।
 ऋतुभिर्दन्तैः । ४। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् । ५।
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७। ३७ ११६३

ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।
 प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

समर्षिभिः प्राणापानैः ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

३८

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

राजयक्ष्मस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

अन्तरिक्षेण व्यचसा ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

३९ ११६५

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

विद्युत् त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

दिवा पृष्ठेन ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४०

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

पृथिव्योरसा ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४१

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

उदरदारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सत्येनोदरेण ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४२ ११६८

ततश्चैनमन्येन वस्तिना प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

अप्सु मरिष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

समुद्रेण वस्तिना ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४३

ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

ऊरू तै मरिष्यत इत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

मित्रावरुणयोरूरुभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४४ ११७०

ततश्चैनमन्याभ्यामष्टीवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

सामो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

त्वष्टुरष्टीवद्भ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४५

ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

अश्विनोः पादाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४६

ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

सवितुः प्रपदाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४७

ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् । १।

ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

ऋतस्य हस्ताभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपुरुः सर्वतनुः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपुरुः सर्वतनुः सं भवति य एवं वेद । ७।

४८ ११७४

ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

अप्रतिष्ठानोऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह ।२।

तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सत्ये प्रतिष्ठाय ।४। तथैनं प्राशिषं तथैनमजीगमम् ।५।

एष वा औदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४९ ११७५

[तृतीयः पर्यायः । ५०-५६]

मन्त्रोक्ताः । ५० आसुर्यनुष्टुप्; ५१ आसुर्युष्णिक्; ५२ त्रिपदा भुरिक् साम्नी
त्रिष्टुप्; ५३ आसुरी बृहती; ५४ द्विपदा भुरिक् साम्नी बृहती; ५५ साम्युष्णिक्;
५६ प्राजापत्या बृहती ।

एतद् वै ब्रध्नस्य विष्टपं यदौदनः

५०

ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद

५१

एतस्माद् वा औदनात् त्रयस्त्रिंशतं लोकान् निरमिमीत प्रजापतिः

५२

तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत

५३

स य एवं विदुष उपद्रष्टा भवति प्राणं रुणद्धि

५४ ११८०

न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानि जीयते

५५

न च सर्वज्यानि जीयते पुरेनं जरसः प्राणो जहाति

५६ ११८२

॥ २०८ ॥ (अथर्व० ९.५११-३८)

भृगुः । पञ्चौदनोऽजः; मन्त्रोक्ताः । त्रिष्टुप्; ३ चतुष्टुपदा पुरोऽतिशकरी जगती; ४, १०

जगती; १४, १७, २७-३० अनुष्टुप् (३० ककुम्मती); १६ त्रिपदाऽनुष्टुप्; १८, ३७ त्रिपदा

विराड् गायत्री; २३ पुर उष्णिक्; २४ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिगगर्भोपरिष्टाद्विराड् जगती;

२०-२२, २६ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिगगर्भोपरिष्टाद्वाहता भुरिक्; ३१ सप्तपदाऽष्टिः;

३२-३५ दशपदा प्रकृतिः; ३६ दशपदाऽऽकृतिः; ३८ एकावसाना

द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

आ नयैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन् ।

तीर्त्वा तमोसि बहुधा महान्त्यजो नाकृमा क्रमतां तृतीयम्

१

इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यस्मिन् यज्ञे यजमानाय सूरिम् ।

ये नो द्विषन्त्यनु तान् रभस्वानागसो यजमानस्य वीराः

२ ११८४

१२ दे. [आयुर्वेद०]

प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचारं शुद्धैः शफैरा क्रमतां प्रजानन् ।	
तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम्	३ ११८५
अनुं च्छद्य श्यामेन त्वचमेतां विशस्तर्यथापर्वशसिना माभि मस्याः ।	
माभि द्रुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम्	४
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ श्रयाम्या सिञ्चोदकमव धेहेनम् ।	
पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः	५
उत् क्रामातः परि चेदत्तस्तप्ताच्चरोरधि नाकं तृतीयम् ।	
अग्नेरग्निरधि सं बभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम्	६
अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः ।	
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्धधानेन दत्तः	७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंसमानस्त्रीणि ज्योतींषि ।	
ईजानानां सुकृतां ग्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व	८ ११९०
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽति दुर्गाण्येषः ।	
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति	९
अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे ददिवीसं दधाति ।	
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येका	१०
एतद् वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।	
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्धधानेन दत्तः	११
ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन् पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।	
स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु	१२
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद् विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित् ।	
इष्टं पूतमभिपूतं वर्षत्कृतं तद् देवा क्रतुशः कल्पयन्तु	१३ ११९५
अमोतं वासो दद्याद्विरण्यमपि दक्षिणाम् ।	
तथा लोकान्तसमामोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः	१४
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्धृतपृष्ठा मधुश्रुतः ।	
स्तभान प्रथिवीमुत द्यां नाकस्य पृष्ठेऽर्धि सप्तरश्मौ	१५
अजोऽस्यजं स्वर्गोऽसि त्वया लोकमाङ्गिरसः प्राजानन् । तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेयम्	१६
येना सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो वह स्व देवेषु गन्तवे	१७ ११९९

अजः पक्रः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः ।

तेन लोकान्तस्त्वर्थवतो जयेम

१८ १२००

यं ब्राह्मणे निदुधे यं च विश्वु या विप्रुष ओदनानामजस्य ।

सर्वं तदग्रे सुकृतस्य लोके जानीतान्नः संगमने पथीनाम्

१९

अजो वा इदमग्रे व्यक्रिमतु तस्योर इयमभवद् द्यौः पृष्ठम् ।

अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वे समुद्रौ कुक्षी

२०

सत्यं चतुर् च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः ।

एष वा अपरिमितो यज्ञो यदजः पञ्चौदनः

२१

अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्धे ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२२

नास्यास्थीनि भिन्धान्न मज्ज्ञो निर्धयेत् । सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वैशयेत्

२३ १२०५

इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति ।

इषं मह ऊर्जमसौ दुहे योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२४

पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२५

पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति ।

स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

२६

या पूर्वं पतिं विच्चाथान्यं विन्दतेऽपरम् । पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि यौषतः २७

समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः । योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति २८ १२१०

अनुपूर्ववत्सां धेनुर्मनद्वाहमुपवर्हणम् । वासो हिरण्यं दुत्वा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् २९

आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् । जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये ३०

यो वै नैदाघं नामर्तु वेद । एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३१

यो वै कुर्वन्तं नामर्तु वेद । कुर्वतीकुर्वतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३२ १२१४

यो वै संयन्तं नामर्तु वेद । संयतीसंयतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै संयन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३३ १२१५

यो वै पिन्वन्तं नामर्तु वेद । पिन्वतीपिन्वतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३४

यो वा उद्यन्तं नामर्तु वेद । उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३५

यो वा अभिभुवं नामर्तु वेद ।

अभिभवन्तीमभिभवन्तीमेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा अभिभूर्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य आर्तव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३६

अजं च पचत पञ्च चौदनान् ।

सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीः सान्तर्देशाः प्रति गृह्णन्तु त एतम्

३७

तास्तै रक्षन्तु तव तुभ्यमेतं ताम्य आज्यं हविरिदं जुहोमि

३८ १२२०

॥ २०९ ॥ (अथर्व० ४।३४।१-८)

अथर्वा । ब्रह्मौदनम् । त्रिष्टुप्, ४ उत्तमा भुरिक्, ५ ज्यवसाना सप्तपदा कृतिः;

६ पञ्चपदातिशकरी, ७ भुरिक् शकरी, ८ जगती ।

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदनस्य

छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः

१

अनस्थाः पृताः पर्वनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम् ।

नैषां शिश्रं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैर्नमेषाम्

२

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन ।

आस्तै यम उप याति देवान्त्सं गन्धर्वैर्मदते सोम्येभिः

३ १२२३

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान् यमः परि मुष्णाति रेतः ।
 रथी ह भूत्वा रथयानं ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समेति ४
 एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश ।
 आण्डीकं कुम्भदं सं तनोति विसं शात्कं शफको मुलाली ।
 एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
 उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ५ १२१५
 घृतहृदा मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दुधा ।
 एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
 उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ६
 चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदकेन दुधा ।
 एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
 उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ७
 इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम् ।
 स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुधा मे अस्तु ८ १२२८

॥ २१० ॥ (अथर्व० ११।१।१-३७)

ब्रह्मा । ओदनः (ब्रह्मौदनम्) । त्रिष्टुप्; १ अनुष्टुप्गर्भा भुरिक्पङ्क्तिः; २ बृहतीगर्भा विराट्; ३ चतुष्पदा
 शाकरगर्भा जगती; ४, १५-१६, २३, ३१ भुरिक्; ५ बृहतीगर्भा विराट्; ६ उष्णिक्; ८ विराट् गायत्री;
 ९ शाकरातिजागतगर्भा जगती; १० विराट् पुरोऽतिजगती विराड्जगती; ११ जगती;
 १७, २१, २४-२६, ३७ विराट् जगती; १८ अतिजागतगर्भा परातिजागता विराड्जगती;
 २० अतिजागतगर्भा परा शाकरा चतुष्पदा भुरिजगती;
 २७ अतिजागतगर्भा जगती; ३१ चतुष्पदा
 ककुम्भत्युष्णिक्; ३६ पुरोविराट्
 (व्याघ्रादिष्ववगन्तव्या)

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा ।

सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह १

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोधाविता वाचमच्छ ।

अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून २ १२३०

अग्नेऽर्जनिष्ठा महते वीर्यायि ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः ।

सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ ३ १२३१

समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान् देवान् यज्ञियाँ एह वंक्षः । तेभ्यो हविः श्रपयं जातवेद उत्तमं नाकमर्षिं रोहयेमम्	४
ब्रेधा भागो निर्हितो यः पुरा वो देवानां पितॄणां मर्त्यानाम् । अंशान् जानीध्वं वि भजामि तान् वो यो देवानां स इमां पारयाति	५
अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युजि द्विषतः सपत्नान् । इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातास्ते बलिहृतः कृणोतु	६
साकं सजातैः पर्यसा सहैव्युदुजैनां महते वीर्यायि । ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति	७ १२३१
इयं मही प्रति गृह्णातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमाना । अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्	८
एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंश्नू यजमानाय साधु । अवघ्नती नि जहि य इमां पृतन्यव ऊर्ध्वं प्रजामुद्धरन्त्युदृह	९
गृहाण ग्रावाणौ सकृत्तौ वीर हस्त आ ते देवा यज्ञिया यज्ञमंगुः । त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि	१०
इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शूरपुत्रा । परा पुनीहि य इमां पृतन्यवोऽस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ	११
उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं वि विच्यध्वं यज्ञियासस्तुषैः । श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि	१२ १२४०
परैहि नारि पुनरेहिं क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यैरुक्षद् भराय । तासां गृह्णीताद् यतमा यज्ञिया असन् विभाज्य धीरीतरा जहीतात्	१३
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व । सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय	१४
ऊर्जो भागो निर्हितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाय आ भरेताः । अयं यज्ञो गातुविन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद् वीरविद् वो अस्तु	१५
अग्ने चर्यज्ञियस्त्वाध्यैरुक्षच्छिस्तपिष्टस्तपसा तपैनम् । आर्षेया देवा अभिसंगत्य भागमिमं तर्पिष्ठा ऋतुभिस्तपन्तु	१६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः । अदुः प्रजा बहूलान् पशून् नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम्	१७ १२४५

ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया इमे ।	
अपः प्र विंशतु प्रति गृह्णातु वश्चरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम्	१८
उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके ।	
पितामहाः पितरः प्रजोपजाहं पक्ता पञ्चदशस्तै अस्मि	१९
सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो ब्रह्मौदनो देवयानः स्वर्गः ।	
अमृस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान् बलिहाराय मृडतान्महमेव	२०
उदेहि वेदिं प्रजया वर्धयैनां नुदस्व रक्षः प्रतरं धेहेनाम् ।	
श्रिया समानानति सर्वांन्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि	२१
अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां प्रत्यङ्केनां देवताभिः सहैधि ।	
मा त्वा प्रापच्छुपथो मामिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज	२२ १२५०
ऋतेन तष्टा मनसा हितैषा ब्रह्मौदनस्य विहितं वेदिरग्रे ।	
अंसद्रीं शुद्धामुप धेहि नारि तत्रौदनं सादय दैवानाम्	२३
अदितेर्हस्तां सुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृण्वन् ।	
सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विवेद्यामध्येनं चिनोतु	२४
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु दैवा निःसृप्याग्नेः पुनरेनान् प्र सीद ।	
सोमेन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः	२५
सोमं राजन्तसंज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।	
ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि	२६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि ।	
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददादिदं मे	२७ १२५५
इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्कं क्षेत्रात् कामदुघा म एषा ।	
इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः	२८
अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि परः कम्बूका अप मृड्ढि दूरम् ।	
एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथो विद्म निर्ऋतेर्भागधेयम्	२९
श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम् ।	
येन रोहात् परमापद्य यद् वयं उत्तमं नाकं परमं व्योमि	३०
बभ्रेरध्वयो मुखमेतद् वि मृड्ढ्याज्याय लोकं कृणुहि प्रविद्वान् ।	
घृतेन गात्रान् सर्वा वि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः	३१ १२५९

बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।	
पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः	३२ १२६०
आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्षेयाणामप्यस्त्यत्र ।	
अग्निर्मे गोप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम्	३३
यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम् ।	
प्रजामुतत्वमुत दीर्घमायुं रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम	३४
वृषभोऽसि स्वर्गं ऋषीनार्षेयान् गच्छ ।	
सुकृतां लोके सीद तत्र नौ संस्कृतम्	३५
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यमे पथः कल्पय देवयानान् ।	
एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमति सप्तरश्मौ	३६
येन देवा ज्योतिषा द्यामुदायन् ब्रह्मौदनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम् ।	
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वऱिरोहन्तो अभि नाकमुत्तमम्	३७ १२६५

॥ २११ ॥ (अथर्व० ६।११६।१-३)

जाटिकायनः । विवस्वान् (मधुमदक्षम्) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अश्वविदो न विद्यया ।	
वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम्	१
वैवस्वतः कृणवद् मागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।	
मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे	२
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् ।	
यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः	३ १२६८

॥ २१२ ॥ (अथर्व० ७।३७।१)

अथर्व । वासः । अनुष्टुप् ।

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा ।	
यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन	१ १२६९

॥ २१३ ॥ (वा० य० ४।२, १०)

(वासः ।)

दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वां शिवाः शुग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्	२ १२७०
विष्णोः शर्मांसि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुस्रयाः कृषीस्कृधि	१० १२७१

॥ २१४ ॥ (अथर्व० १२।३।१-६०)

यमः । स्वर्गः, ओदनः, अग्निः (स्वर्गोदनः) । त्रिष्टुप् ; १, ४२-४३, ४७ भुक्तिः ; ८, १२, २१-२२, २४ जगती ; १३, १७ स्वराडार्धी पङ्क्तिः ; ३४ विराड्गर्भा ; ३९ अनुष्टुप्गर्भा ; ४४ परावृहती, ५५-६० ज्यवसाना सप्तपदा शङ्कुमत्यतिजागतशाकराति-शाकरघात्यगर्भातिधृतिः (५५, ५७-६० कृतिः, ५६ विराट् कृतिः) ।

पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ चर्मेहि तत्र ह्वयस्व यतमा प्रिया ते ।

यार्वन्तावग्रे प्रथमं समेयथुस्तद् वां वयो यमराज्ये समानम् १

तावद् वां चक्षुस्तर्ति वीर्याणि तावत् तेजस्ततिधा वार्जिनानि ।

अग्निः शरीरं सचते यदैधोऽधा पक्कान्मिथुना सं भवाथः २

समस्मिंलोके समु देवयाने सं स्मा समेतं यमराज्येषु ।

पूतौ पवित्रैरुप तद्धव्येथां यद्यद् रेतो अधि वां संबभूव ३

आपस्पुत्रासो अभि सं विशध्वमिमं जीवं जीविधन्याः समेत्य ।

तासां भजध्वममृतं यमाहुर्यमोदनं पचति वां जनित्री ४ १२७५

यं वां पिता पचति यं च माता रिप्राभिर्मुक्त्यै शर्मलाच्च वाचः ।

स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्यापि नभसी महित्वा ५

उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिर्जिताः स्वर्गाः ।

तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम् ६

प्राचीं प्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्धाणाः सचन्ते ।

यद् वां पक्कं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दंपती सं श्रयेथाम् ७

दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत् ।

तस्मिन् वां यमः पितृभिः संविदानः पक्काय शर्म बहुलं नि यच्छात् ८

प्रतीचीं दिशामियमिद् वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च ।

तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामधा पक्कान्मिथुना सं भवाथः ९ १२८०

उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् दिशामुदीचीं कृणवन्नो अग्रम् ।

पाङ्क्तं छन्दः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वङ्गैः सह सं भवेम १०

ध्रुवेयं विराणमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत मह्यमस्तु ।

सा नो देव्यदिते विश्ववार इर्ये इव गोपा अभि रक्ष पक्कम् ११

पितेव पुत्रानभि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इव वान्तु भूमौ ।

यमोदनं पचतो देवते इह तं नस्तप उत सत्यं च वेत्तु १२ १२८३

यद्यत् कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन् विषक्तं विलं आससाद ।
 यद् वा दास्याद्देहस्ता समङ्क्त उल्लखलं मुसलं शुम्भतापः
 अयं ग्रावा पृथुर्बुधो वयोधाः पूतः पवित्रैरप हन्तु रक्षः ।
 आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दंपती पौत्रमघं नि गाताम्
 वनस्पतिः सह देवैर्न आगन् रक्षः पिशाचाँ अपबाधमानः ।
 स उच्छ्रयातै प्र वदाति वाचं तेन लोकाँ अभि सर्वान् जयेम
 सप्त मेघान् पशवः पर्यगृह्णन् य एषाँ ज्योतिष्माँ उत यश्चक्षी ।
 त्रयस्त्रिंशद् देवतास्तान्त्सचन्ते स नः स्वर्गमभि नैष लोकम्
 स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम ।
 गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्त्रिक्रितीर्मो अरातिः
 ग्राहिँ पाप्मानमति ताँ अयाम तमो व्यस्यि प्र वदासि वल्गु ।
 वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिँसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम्
 विश्वव्यं चा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याहेतम् ।
 वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद् विनक्तु
 त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्यन्तरिक्षम् ।
 अंशून् गृभीत्वान्वारमेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम्
 पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्धया ।
 एताँ त्वचं लोहिनीँ ताँ तुदस्व ग्रावाँ शुम्भाति मलग हव वस्त्राँ
 पृथिवीँ त्वाँ पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा ।
 यद्यद् द्युत्तं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोत्रं ह्यपि तद् वपामि
 जनित्रीव प्रति हर्यासि सूनुं सं त्वा दधामि पृथिवीँ पृथिव्या ।
 उखा कुम्भी वेद्याँ मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता
 अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान् ।
 वरुणस्त्वा दंहाद्वरुणै प्रतीच्यो उत्तरात् त्वा सोमः सं ददातै
 पूताः पवित्रैः पवन्ते अत्राद् दिवै च यन्ति पृथिवीँ च लोकान् ।
 ता जीविला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यगिरिन्धाम्
 आ यन्ति दिवः पृथिवीँ सचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम् ।
 शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु

१३

१४ ११८५

१५

१६

१७

१८

१९ ११९०

२०

२१

२२

२३

२४ ११९५

२५

२६ ११९७

उत्तेवं प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुचयश्चामृतासः ।

ता औदुनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः २७

संख्याता स्तोकाः पृथिवीं सचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः ।

असंख्याता ओष्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्यापुः शुचयः शुचित्वम् २८

उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून् ।

योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्त्वियायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः

२९ १३००

उत्थापय सीदतो बुध्न एनानाङ्गिरात्मानमभि सं स्पृशन्ताम् ।

अमासि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः

३०

प्र यच्छ पशुं त्वरया हरौषमहिंसन्त ओषधीर्दान्तु पर्वन् ।

यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधो भवन्तु

३१

नवं बहिर्दुनायं स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु ।

तस्मिन् देवाः सह दैवीर्विशन्तिवमं प्राश्रन्त्वृतुभिर्निषद्य

३२

वनस्पते स्तीर्णमा सीद बहिर्भिष्टोमैः संमितो देवताभिः ।

त्वष्ट्रेव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृश्राम्

३३

षष्ठ्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् स्वः पक्वेनाभ्यश्नवातै ।

उपैनं जीवान् पितरंश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः

३४ १३०५

धर्ता ध्रियस्व धरुणं पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्च्यावयन्तु ।

तं त्वा दंपती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद् वासयातः पर्यग्भिधानात्

३५

सर्वान्तसमागां अभिजित्यं लोकान् यावन्तः कामाः समतीतपुस्तान् ।

वि गाहेथामायवनं च दर्विरेकस्मिन् पात्रे अघ्युद्धरैनम्

३६

उपे स्तृणीहि प्रथयं पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि धारयैतत् ।

वाश्रेवोस्त्रा तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिङ्कृणोत

३७

उपास्तरीरकरो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः ।

तस्मिंस्त्र्यातै महिषः सुपुणो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान्

३८

यद्यज्ञाया पचति त्वत् परःपरः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः ।

सं तत् सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम्

३९ १३१०

यावन्तो अस्याः पृथिवीं सचन्ते अस्मत् पुत्राः परि ये संबभूवुः ।

सर्वास्तां उप पात्रे ह्वयेथां नाभिं जानानाः शिशवः समायान्

४० १३११

वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः । सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः पृथ्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात्	४१
निधिं निधिपा अभ्येनिमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये । अस्मामिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्तस्वर्गानरुक्षत्	४२
अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त । नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम्	४३
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि । शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम्	४४ १३१५
इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप । आ सिञ्च सर्पिर्घृतवत् समङ्ग्ध्येप भागो अङ्गिरसो नो अत्र	४५
सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शैवधिं परि दद्य एतम् । मा नो घृतेऽर्वा गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत् सृजता पुरा मत्	४६
अहं पंचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया । कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वय उत्तरावत्	४७
न किन्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति । अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तरं पक्वः पुनरा विंशाति	४८
प्रियं प्रियाणां कृण्वाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति । धेनुरनुञ्चान् वयौवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नुदन्तु	४९ १३२०
समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून् । यावन्तो देवा दिव्याऽतपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव	५०
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये । क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्य	५१
यदक्षेषु वडा यत् समित्यां यद् वा वडा अनृतं वित्तकाम्या । समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्तसर्वं शमलं सादयाथः	५२
वर्ष वनुष्वार्षि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत् पातयासि । विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्तस्योर्निर्लोकमुप याह्येतम्	५३
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नन्यवर्णाम् । अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां ते अग्नौ जुहोमि	५४ १३२५

प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५५

दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५६

प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५७

उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽश्वन्या इषुमत्यै ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५८

ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५९ १३३०

ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते ।

एतं परि दद्वस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषजरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ६० १३३१

वाजीकरणम् । (१३३२-१३४५)

॥ २१५ ॥ (अथर्व० ४।४।१-८)

अथर्वा । वनस्पतिः; १-२ सूर्यः, प्रजापतिः; ४ इन्द्रः; ५ आपः, सोमः; ६ अग्निः सरस्वती,
ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप्, ४ पुर उष्णिक्, ६-७ भुरिक् ।

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे ।

तां त्वा वयं खेनामस्योषधिं शेषहर्षणीम् १

उदुषा उदु सूर्य उदिदं मांमकं वचः । उदैजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिनां २

यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति । ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः ३

उच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम् । सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धेहि तनूवाशिन् ४ १३३५

अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम् । उत सोमस्य आतास्युतार्शमसि वृष्ण्यम् ५ १३३६

वसोर्था धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः ।	
सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः पृथ्वा शरत्सु निधिपा अभीच्छात्	४१
निधिं निधिपा अभ्येनिमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये ।	
अस्माभिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्स्वर्गानरुक्षत्	४२
अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त ।	
नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम्	४३
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि ।	
शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम्	४४ १३१५
इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप ।	
आ सिञ्च सर्पिर्धृतवत् समङ्ग्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र	४५
सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शैवधिं परि दद्य एतम् ।	
मा नो घृतेऽव गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत् सृजता पुरा मत्	४६
अहं पंचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया ।	
कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वय उत्तरावत्	४७
न किन्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति ।	
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पृक्तारं पक्वः पुनरा विंशति	४८
प्रियं प्रियाणां कृण्वाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति ।	
धेनुरनृद्धान् वयोवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नृदन्तु	४९ १३२०
समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून् ।	
यावन्तो देवा दिव्याऽतपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव	५०
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये ।	
क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्य	५१
यदक्षेषु वदा यत् समित्यां यद् वा वदा अनृतं वित्तक्राम्या ।	
समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्सर्वं शर्मलं सादयाथः	५२
वर्ष वनुष्वापि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत् पातयासि ।	
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्तस्योनिलोकमुप याह्येतम्	५३
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद् आत्मन्नन्यवर्णाम् ।	
अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां ते अग्नौ जुहोमि	५४ १३२५

प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५५

दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५६

प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५७

उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽश्वन्या इषुमत्यै ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५८

ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ५९ १३३०

ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतौः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्केन सह सं भवेम ६० १३३१

वाजीकरणम् । (१३३२-१३४५)

॥ २१५ ॥ (अथर्व० ४।४।१-८)

अथर्वा । वनस्पतिः; १-२ सूर्यः, प्रजापतिः; ४ इन्द्रः; ५ आपः, सोमः; ६ अग्निः सरस्वती,
ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप्, ४ पुर उष्णिक्, ६-७ भुरिक् ।

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे ।

तां त्वा वयं खनामस्योषधिं शेषहर्षणीम् १

उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः । उदैजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिनां २

यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति । ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः ३

उच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम् । सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धेहि तनूवशिन् ४ १३३५

अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम् । उत सोमस्य आतास्युतार्शमसि वृष्ण्यम् ५ १३३६

अद्याग्ने अद्य संवितरद्य देवि सरस्वति । अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः ६
आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।

क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा

७

अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेट्वस्य च ।

अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन् धेहि तनूवश्विन्

८ १३३

॥ २१६ ॥ (अथर्व० ६।७२।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । शेषोऽर्कः (वाजीकरणम्) । १ जघती, २ अनुष्टुप्, ३ भुरिक् ।

यथासितः प्रथयते वशां अनु वर्षेषि कृष्वन्नसुरस्य मायया ।

एवा ते शेषः सहसायमर्कोऽङ्गेनाङ्गं संसमकं कृणोतु

१ १३४

यथा पसस्तायादुरं वातेन स्थूलभं कृतम् ।

यावत् परस्वतः पसस्तावत् ते वर्धतां पसः

२

यावदङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गार्दभं च यत् ।

यावदश्वस्य वाजिनस्तावत् ते वर्धतां पसः

३ १३४

॥ २१७ ॥ (अथर्व० ६।१०।१-३)

अथर्वाङ्गिराः । ब्रह्मणस्पतिः (वाजीकरणम्) । अनुष्टुप् ।

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्षस्व प्रथयस्व च । यथाङ्गं वर्धतां शेषस्तेन योषितमिजं हि १

येन कूशं वाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम् । तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः २

आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।

क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा

३ १३४

गर्भाधानम् । (१३४६-१४९३)

॥ २१८ ॥ (अथर्व० ५।२५।१-१३)

ब्रह्मा । योनिगर्भः, पृथिव्यादयो देवताः । अनुष्टुप्, १३ विराट्पुरस्ताद्वृद्धती ।

पर्वताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम् । शेषो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पर्णमिवा दधत् १

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे ह्रुवे २

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३

गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः । गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते ४

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धोता गर्भं दधातु ते ५ १३५०

यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती । यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद् गर्भकरणं पिव ६ १३५१

गर्भो अस्थोषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् । गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः ७
 अधि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम् । वृषांसि वृण्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि ८
 वि जिहीष्व बार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम् । अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् ९
 धातुः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १० १३५५
 त्वष्टुः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे ११
 सवितुः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १२
 प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि स्रतवे १३ १३५८

॥ २१९ ॥ (अथर्व० ६।८।१-३)

अथर्वा । आदित्यः, ३ त्वष्टा (गर्भाधानम्) । अनुष्टुप् ।

यन्तासि यच्छसे हस्तावपु रक्षांसि सेधसि । प्रजां धनं च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् १
 परिहस्तु वि धारय योनिं गर्भाय धातवे । मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे २ १३६०
 यं परिहस्तमर्विभरदितिः पुत्रकाम्या । त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति ३ १३६१

॥ २२० ॥ (अथर्व० ६।१७।१-४)

अथर्वा । गर्भदंष्ट्रणम्, पृथिवी । अनुष्टुप् ।

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादुधे । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे १
 यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान् वनस्पतीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे २
 यथेयं पृथिवी मही दाधार पर्वतान् गिरीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे ३
 यथेयं पृथिवी मही दाधार विष्टितं जगत् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु स्रतुं सवितवे ४ १३६५

॥ २२१ ॥ (अथर्व० ७।११।१)

ब्रह्मा । वृषभः (आत्मा) । पराबृहती त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधानं आत्मा देवानामुत मातृषाणाम् ।
 इह प्रजा जनय यास्तं आसु या अन्यत्रेह तास्तै रमन्ताम् १ १३६२

॥ २२२ ॥ (अथर्व० ८।६।१-२६)

मातृनामा । मन्त्रोक्ताः, मातृनामा, १५ ब्रह्मणस्पतिः (गर्भदोषनिवारणम्) । अनुष्टुप्; २ पुरस्ताद्बृहती;
 १० ज्यवसाना षट्पदा जगती; ११-१२, १४, १६, पथ्यापङ्क्तिः; १५ ज्यवसाना सप्तपदा शकरी;
 १७ ज्यवसाना सप्तपदा जगती ।

यौ ते मातोन्ममार्जं जातायाः पतिवेदनौ । दुर्णामा तत्र मा गृध्रदलिंश उत वत्सपः १

पलाकानुपलालौ शर्कुं कोकं मलिम्लुचं पलीजकम् ।

आश्रेषं वत्रिवाससमृक्षग्रीवं प्रमीलिनम्

२ १३६८

मा सं वृतो मोषं सृप ऊरू मावं सृपोऽन्तरा ।	
कृणोम्यस्यै भेषजं बजं दुर्णामिचातनम्	३
दुर्णामां च सुनामां चोभा संवृतमिच्छतः । अरायानप हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम् ४	१३७
यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः ।	
अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोप हन्मासि	५
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं क्रव्यादमुत रेरिहम् ।	
अरायां कृकिष्किणो बजः पिङ्गो अनीनशत्	६
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भूत्वा पितेर्व च ।	
बजस्तान्तसंहतामितः क्लीवरूपांस्तिरीटिनः	७
यस्त्वा स्वपन्ती त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम् ।	
छायामिव प्र तान्तस्त्र्यः परिक्रामन्नीनशत्	८
यः कृणोति मृतवत्सामवतो कामिमां स्त्रियम् ।	
तमोषधे त्वं नाशयास्याः कमलमञ्जिवम्	९ १३७
ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः ।	
कुसुला ये च कुक्षिलाः ककुभाः करुमाः सिमाः ।	
तानोषधे त्वं गन्धेन विपूचीनान् वि नाशय	१०
ये कुकुन्धाः कुकूरभाः कृत्तीर्दूशानि विभ्रति ।	
क्लीबा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोपं तानितो नाशयामसि	११
ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतपन्तममुं दिवः ।	
अरायान् वस्तवासिनो दुर्गन्धील्लोहितास्यान् मर्ककान् नाशयामसि	१२
य आत्मानमतिमात्रमंसं आधाय विभ्रति स्त्रीणां श्रोणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षीसि नाशय १३	
ये पूर्वे वध्वोऽं यन्ति हस्ते शृङ्गाणि विभ्रतः ।	
आपाकेष्टाः प्रहासिन स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि	१४ १३८०
येषां पश्चात् प्रपदानि पुरः पाष्णीः पुरो मुखा ।	
खलजाः शकधूमजा उरुण्डा ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः ।	
तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय	१५
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः ।	
अव भेषज पादय य इमां संविष्टसत्यपतिः स्वपति स्त्रियम्	१६ १३८१

- उद्धर्षिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमृशम् । उपेषन्तमुदुम्बलं तुण्डेलमुत शालुडम्
पदा प्र विध्य पाण्यो स्थालीं गौरिव स्पन्दना १७
- यस्ते गर्भं प्रतिमृशाज्जातं वा मारयाति ते ।
पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम् १८
- ये अग्नौ जातान् मारयन्ति सूर्तिका अनुशेरते ।
स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान् वातो अश्रमिवाजतु १९ १३८५
- परिसृष्टं धारयतु यद्धितं मावं पादि तत् ।
गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ २०
- पवीनसात् तङ्गल्वाइच्छायकादुत नग्रकात् ।
प्रजायै पत्यै त्वा पिङ्गः परि पातु किमीदिनः २१
- व्यासिञ्चतुरक्षात् पञ्चपादादनङ्गरेः । वृन्तादुभि प्रसर्पतः परि पाहि वरीवृतात् २२
- य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये ऋविः ।
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि २३
- ये सूर्यात् परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि ।
वजश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम् २४ १३९०
- पिङ्ग रक्ष जायमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन् ।
आण्डादो गर्भान् मा दभन् बाधस्वेतः किमीदिनः २५
- अग्रजास्त्वं मार्तवत्समाद् रोदमघमावयम् । वृक्षादिव स्रजं कृत्वाप्रिये प्रति मुञ्च तत् २६ १३९२

॥ २२३ ॥ (अथर्व० २०।९६।११-१६)

रक्षोहा । गर्भसंस्त्रावः । अनुष्टुप् ।

- ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ११
- यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये । अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् १२
- यस्ते हन्ति पतर्यन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ३ १३९५
- यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये । योनिं यो अन्तरारेल्हि तमितो नाशय ४
- यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१६ १३९८

॥ २२४ ॥ (ऋ० ५।७८।५-९)

सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ (गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव ।

श्रुतं मे अश्विना हवँ सप्तवधिं च मुञ्चतम्

५

भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवधये ।

मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः

६ १४००

यथा वारतः पुष्करिणीं समिद्ध्यति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमासः ७

यथा वातो यथा वनं तथा समुद्र एजति ।

एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा

८

दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।

निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि

९ १४०३

॥ २२५ ॥ (ऋ० ९।७४।५)

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः (अदितेर्गर्भः) । जगती ।

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।

दधाति गर्भमर्दितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे

५ १४०४

॥ २२६ ॥ (अथर्व० १।११।१-६)

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, विशः, देवाः (नारी-सुखप्रसूतिः) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्;

३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४-६ पथ्यापङ्क्तिः ।

वषट् ते पूषन्नास्मिन्स्रतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।

सिस्रतां नार्युतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां स्रत्वा उ

१ १४०५

चतस्रो दिवः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु स्रतवे २

सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । अथया स्रवणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज ३

नेवं मांसं न पीवसि नेवं मज्जस्वाहृतम् ।

अवैतु पृश्नि शेवलं शुनै जराय्वत्तवेऽव जरायु पद्यताम्

४

वि ते भिनद्मि मेहनं वि योनिं वि गवीर्निके ।

वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम्

५ १४०९

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।

एवा त्वं दक्षमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायु पद्यताम्

६ १४१०

॥ २२७ ॥ (अथर्व० १९।४०।१-४)

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा) । १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्भत्युपरिष्ठाद्बृहती;
३ बृहतीगर्भा; ४ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम ।

विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः

१

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।

सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधां वर्चस्वी

२

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।

शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः

३

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिषम्

४ १४१४

॥ २२८ ॥ (अथर्व० १।१।१-४)

अथर्वा । वाचस्पतिः (मेधाजननम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।

वाचस्पतिर्वला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे

१ १४१५

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह ।

वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

२

इहैवाभि वि तनूमे आर्त्ती इव ज्यया ।

वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

३

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि

४ १४१८

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ६।१०८।१-५)

शौनकः । मेधा, ४ अग्निः (मेधावर्धनम्) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वैभिरा गहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया १

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्ठुताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे २ १४२०

यां मेधामृभवौ विदुर्या मेधामसुरा विदुः

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वैश्यामसि

३ १४२१

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निषद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१६ १३९८

॥ २२४ ॥ (क्र० ५।७८।५-९)

सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ (गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूर्यन्त्या इव ।

श्रुतं मे अश्विना हवँ सप्तवधिं च मुञ्चतम्

५

भीताय नार्धमानाय कर्षये सप्तवधये ।

मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः

६ १४००

यथा वातः पुष्करिणीं समिद्ध्यति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमास्यः ७

यथा वातो यथा वनं तथा समुद्र एजति ।

एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा

८

दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।

निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि

९ १४०३

॥ २२५ ॥ (क्र० ९।७४।५)

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः (अदितेर्गर्भः) । जगती ।

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणां देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।

दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे

५ १४०४

॥ २२६ ॥ (अथर्व० १।११।१-६)

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, विशः, देवाः (नारी-सुखप्रसूतिः) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्;

३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्; ४-६ पद्यापङ्क्तिः ।

वषट् ते पूषन्नस्मिन्स्रतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।

सिस्त्रतां नार्यतप्रजाता वि पर्वीणि जिहतां स्रतवा उ

१ १४०५

चतस्रो दिवः अदिश्वतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु स्रतवे २

सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । अथया स्रवणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज ३

नेवं मांसे न पीवसि नेवं मज्जस्वाहृतम् ।

अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जराय्वत्तवेऽव जरायु पद्यताम्

४

वि ते भिनन्नि मेहनं वि योनिं वि गवीर्निके ।

वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम्

५ १४०९

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।

एवा त्वं दक्षमास्य साकं जरायुणा पताव जरायु पद्यताम्

६ १४१०

॥ २२७ ॥ (अथर्व० १९।४०।१-४)

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा) । १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्भत्युपरिष्ठाद्बृहती;
३ बृहतीगर्भा; ४ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तै जगाम ।

विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः

१

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।

सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधां वर्चस्वी

२

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।

शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः

३

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिषम्

४ १४१४

॥ २२८ ॥ (अथर्व० १।१।१-४)

अथर्वा । वाचस्पतिः (मेधाजननम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि विभ्रतः ।

वाचस्पतिर्वला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे

१ १४१५

पुनरोहिं वाचस्पते देवेन मनसा सह ।

वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

२

इहैवाभि वि तनूमे आर्त्तौ इव ज्यया ।

वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

३

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि

४ १४१८

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ६।१०८।१-५)

शौनकः । मेधा, ४ अग्निः (मेधावर्धनम्) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञियां १

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्ठिताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्दिवानामवसे हुवे २ १४२०

यां मेधामृभवौ विदुर्या मेधामसुरा विदुः

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वैश्यामसि

३ १४२१

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१६ १३९८

॥ २२४ ॥ (ऋ० ५।७८।५-९)

सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ (गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूर्यन्त्या इव ।

श्रुतं मे अश्विना हवै सप्तवधिं च मुञ्चतम्

५

भीताय नार्धमानाय ऋषये सप्तवधये ।

मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः

६ १४००

यथा वातः पुष्करिणीं समिद्ध्यति सर्वतः । एवा ते गर्भं एजतु निरैतु दशमास्यः ७

यथा वातो यथा वनं तथा समुद्र एजति ।

एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा

८

दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।

निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि

९ १४०१

॥ २२५ ॥ (ऋ० ९।७४।५)

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः (अदितेर्गर्भः) । जगती ।

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।

दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे

५ १४०४

॥ २२६ ॥ (अथर्व० १।११।१-६)

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, दिशः, देवाः (नारी-सुखप्रसूतिः) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्;

३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्भत्यनुष्टुप्; ४-६ पद्यापङ्क्तिः ।

वषट् ते पूषन्नसिन्धुतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।

सिन्धुतां नार्युतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ

१ १४०५

चतस्रो दिवः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु स्रतवे २

सुषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । अथया सूषणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज ३

नेव मांसे न पीवसि नेव मज्जस्वाहतम् ।

अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जराय्वत्तवेऽव जरायु पद्यताम्

४

वि ते भिनन्नि मेहनं वि योनिं वि गवीर्निके ।

वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम्

५ १४०९

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।

एवा त्वं दक्षमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायु पद्यताम्

६ १४१०

॥ २२७ ॥ (अथर्व० १९।४०।१-४)

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा) । १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्भत्युपरिष्ठाद्बृहती;
३ बृहतीगर्भा; ४ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तै जगाम ।

विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः

१

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।

सुष्यदा युयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधां वर्चस्वी

२

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।

शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः

३

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिषम्

४ १४१४

॥ २२८ ॥ (अथर्व० १।१।१-४)

अथर्वा । वाचस्पतिः (मेधाजननम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।

वाचस्पतिर्वला तेषां तन्वां अद्य दधातु मे

१ १४१५

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह ।

वसौष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

२

इहैवाभि वि तनूमे आर्त्ती इव ज्यया ।

वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

३

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि

४ १४१८

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ६।१०८।१-५)

शौनकः । मेधा, ४ अग्निः (मेधावर्धनम्) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया १

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्ठिताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे २ १४२०

यां मेधामृभवो विदुर्या मेधामसुरा विदुः

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वैश्यामसि

३ १४२१

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तया मामद्य मेधयाग्रे मेधाविनै कृणु ४
मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यंदिनं परिं । मेधां सूर्यस्य राशिभिर्वचसा वेश्यामहे ५ १४२३

मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)

॥ २३० ॥ (अथर्व० ४।१०।१-७)

अथर्वा । शङ्खमणिः, कृशनः । अनुष्टुप्, ६ पद्यापङ्क्तिः, ७ पञ्चपदा पराऽनुष्टुप्शकरी ।
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् विद्युतो ज्योतिषस्पतिः ।

स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पातवंहसः १

यो अग्रतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे । शङ्खेन हत्वा रक्षोस्य त्रिणो वि पदामहे २ १४२५

शङ्खेनामीवाममतिं शङ्खेनोत सदान्वाः ।

शङ्खो नो विश्वमेवजः कृशनः पातवंहसः ३

दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्याभृतः ।

स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुषप्रतरणो मणिः ४

समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकरः । सो अस्मान्तसर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः ५

हिरण्यानामेकोऽसि सोमात् त्वमधि जज्ञिषे ।

रथे त्वमसि दर्शत इषुधौ रोचनस्त्वं प्र ण आयुषि तारिषत् ६

देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वचरत्यप्स्वन्तः ।

तत् ते वध्नःमयारुपे वर्चमे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय कार्शनस्त्वाभि रक्षतु ७ १४३०

॥ २३१ ॥ (अथर्व० ८।५।१-२२)

शुकः । कृत्यादूषणं, मन्त्रोक्ताः (प्रतिसरो मणिः) । अनुष्टुप् ; १, ६ उपरिष्ठाद्बृहती, २ त्रिपदा विराट्

गायत्री; ३ चतुष्पदा भुरिजगती; ५ भुरिक्संस्तारपङ्क्तिः; ७ ८ ककुम्भती; ९

पुरस्कृतिर्जगती; १० त्रिष्टुप्; ११ पद्यापङ्क्तिः; १४ व्यवसाना पदपदा जगती;

१५ पुरस्ताद्बृहती; १९ जगतीगर्भा त्रिष्टुप्; २० विराट्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः;

२१ विराट् त्रिष्टुप्; २२ व्यवसाना सप्तपदा विराट्गर्भा भुरिक्शकरी ।

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।

वीर्यवान्तसपत्नहा शूरवीरः परिपाणः सुमङ्गलः १

अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः सहैस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।

प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः २

अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्नेनासुरान् पराभावयन्मनीषी ।

अनेनाजयद् द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत् प्रदिशश्चतस्रः ३ १४३३

अयं स्राक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः ।

ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः

४

तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ।

ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु

५ १४३५

अन्तर्दधे द्यावापृथिवी उताहंरुत सूर्यम् ।

ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु

६

ये स्राक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते । सूर्यं इव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ७

स्राक्त्येन मणिन ऋषिणेव मनीषिणा । अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ८

याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या उ चान्येभिराभृताः ।

उभयीस्ताः परा यन्तु परावतो नवति नान्याश्च अति

९

अस्मै मणिं वर्मं बध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः ।

प्रजापतिः परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे

१० १४४०

उत्तमो अस्योषधीनामनुज्वान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।

यमैच्छामाविदाम् तं प्रतिस्पाशनमन्तितम्

११

स इद् व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अथो वृषा । अथो सपत्नकर्शनो यो बिभर्तीमं मणिम् १२

नैनं घ्नन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः ।

सर्वा दिशो वि राजति यो बिभर्तीमं मणिम्

१३

कुश्यपस्त्वामसृजत कुश्यपस्त्वा समैरयत् ।

अबिभस्त्वेन्द्रो मानुषे बिभ्रत् संश्रेषिणेऽजयत् ।

मणिं सहस्रवीर्यं वर्मं देवा अकृण्वत

१४

यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति ।

प्रत्यक् त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा

१५ १४४५

अयमिद् वै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः ।

प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः

१६

असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरात् । इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृषि १७

वर्मं मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः । वर्मं म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्मं धाता दधातु मे १८

ऐन्द्राग्रं वर्मं बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति सर्वे ।

तन्मे तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्मां जरदष्टिर्यथासानि

१९ १४४९

आ मारुक्षद् देवमणिर्महा अरिष्टतातये ।	
इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरूथमोजसे	२० १४५०
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम् ।	
दीर्घायुत्वार्य शतशरिदायायुष्मान् जरदक्षिर्यथासत्	२१
स्वस्तिदा विशां पतिवृत्रहा विमृधो वृशी ।	
इन्द्रो बभ्रातु ते मणिं जिगीवां अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषां ।	
स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः	२२ १४५२

॥ २३२ ॥ (अथर्व० १०।३।१-२५)

अथर्वा । (सपत्नक्षयणो), वरणमणिः, वनस्पतिः, चन्द्रमाः । अनुष्टुप्, २-३, ६ भुरिक् त्रिष्टुप्;
८, १३-१४ पथ्यापङ्क्तिः; ११, १६ भुरिक्; १५, १७-२५ पट्पदा जगती ।

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा ।	
तेना रभस्व त्वं शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः	१
प्रैणान्छृणीहि प्र मृणा रभस्व मणिस्ते अस्तु पुरता पुरस्तात् ।	
अवारयन्त वरणेन देवा अभ्याचारमसुराणां श्वःश्वः	२
अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः	
स ते शत्रूनघरान् पादयाति पूर्वस्तान् दंभुहि ये त्वां द्विषन्ति	३ १४५५
अयं ते कृत्यां विततां पौरुषेयादयं भयात् ।	
अयं त्वा सर्वस्मात् पापाद् वरणो वारयिष्यते	४
वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमुं देवा अवीवरन्	५
स्वमै सुप्त्वा यदि पश्यासि पापं मृगः सुतिं यति धावादजुष्टाम् ।	
परिक्षवाच्छकुनेः पापवादादयं मणिर्वरणो वारयिष्यते	६
अरात्यास्त्वा निर्व्रत्या अभिचारादथो भयात् ।	
मृत्योरोर्जीयसो वृधाद् वरणो वारयिष्यते	७
यन्मै माता यन्मै पिता भ्रातरो यच्च मे स्वा यदेनश्चकुमा वयम् ।	
ततो नो वारयिष्यतेऽयं देवो वनस्पतिः	८ १४६०
वरणेन प्रव्यथिता भ्रातृव्या मे सबन्धवः । अक्षर्तं रजो अप्यङ्गुस्ते यन्त्वधमं तमः	९
अरिष्टोऽहमरिष्टगुरायुष्मान्तसर्वपूरुषः ।	
तं मायं वरणो मणिः परि पातु दिशोदिशः	१० १४६२

- अयं मे वरण उरसि राजा देवो वनस्पतिः ।
 स मे शत्रून् वि बाधतामिन्द्रो दस्युनिवासुरान् ११
- इमं विभर्मि वरणमायुष्मान्छतशारदः ।
 स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजेश्व मे दधत् १२
- यथा वातो वनस्पतीन् वृक्षान् भनक्त्योजसा ।
 एवा सपत्नान् मे भङ्गिधू पूर्वां जातौ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु १३ १४६५
- यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान् प्सतो वनस्पतीन् ।
 एवा सपत्नान् मे प्साहि पूर्वां जातौ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु १४
- यथा वातेन प्रक्षीणा वृक्षाः शेरे न्यर्पिताः ।
 एवा सपत्नास्त्वं मम प्र क्षिणीहि न्यर्पय पूर्वां जातौ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु १५
- तांस्त्वं प्र च्छिन्धि वरण पुरा दिष्टात् पुरायुषः ।
 य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः १६
- यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम् ।
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु १७
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नृचक्षसि ।
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु १८ १४७०
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिन् जातवेदसि ।
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु १९
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्संभृते रथे ।
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु २०
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा
 यथा यशः सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः ।
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु २१ १४७३
- तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

यथा यशोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यशः ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२२

यथा यशो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम् ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२३ १४७५

यथा यशः प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२४

यथा देवेभ्यमृतं यथैषु सत्यमाहितम् ।

एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु

तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा

२५ १४७७

॥ २३३ ॥ (अथर्व० १०।१-३५)

बृहस्पतिः । फालमणिः, वनस्पतिः, ३ आपः (मणिवन्धनम्) । अनुष्टुप्; १,४,२१ गायत्री; ५ पदपदा

जगती; ६ सप्तपदा विराट् शकरी; ७-१० त्र्यवसाना अष्टपदाऽष्टिः (१० नवपदा भूतिः); ११,२०,

२३-२७ पञ्चपदाऽष्टिः; १२-१७ त्र्यवसाना पदपदा शकरी; ३१ त्र्यवसाना पदपदा

जगती; ३५ पञ्चपदा त्र्यनुष्टुप् जगती ।

अरातीयोर्भातृव्यस्य दुर्हादौ द्विषतः शिरः । अपि वृश्चाम्योजसा

१

वर्म मष्टमयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति । पूर्णो मन्थेन मार्गमद् रसेन सह वर्चसा

यत् त्वा शिक्कः परावधीत् तस्मा हस्तेन वास्या ।

आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुचयः शुचिम्

३ १४८०

हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत् । गृहे वसतु नोऽतिथिः

४

तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे ।

स नः पितेर्व पुत्रेभ्यः श्रेयःश्रेयश्चिकित्सतु भूयोभूयः श्वःश्वो देवेभ्यो मणिरेत्य

५

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तमग्निः प्रत्यमुञ्चतु सो अस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

६

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तमिन्द्रः प्रत्यमुञ्चतौजसे वीर्यायि कम् ।

सो अस्मै बलमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

७ १४८४

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षुषे ।

सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

८ १४८५

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः ।

सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

९

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।

तं बिभ्रच्छन्द्रमा मणिमसुराणां पुरोऽजयद् दानवानां हिरण्ययीः ।

सो अस्मै श्रियमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१०

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे ।

सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

११

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तेनेमां मणिनां कृषिमश्विनां वाभिरक्षतः ।

स भिषग्भ्यां महौ दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१२

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं बिभ्रत् सविता मणिं तेनेदमजयत् स्वः ।

सो अस्मै सूनृतां दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१३ १४९०

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमापो बिभ्रतीर्मणिं सदा धावन्त्यक्षिताः ।

स आभ्योऽमृतमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१४

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं राजा वरुणो मणिं प्रत्यमुञ्चत शंभुवम् ।

सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१५

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं देवा बिभ्रतो मणिं सर्वाँल्लोकान् युधार्जयन् ।

स एभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१६

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमिमं देवता मणिं प्रत्यमुञ्चन्त शंभुवम् ।

स आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि

१७

ऋतवस्तमबध्नतार्वास्तमबध्नत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति

१८ १४९५

अन्तर्देशा अबध्नत प्रदिशस्तमबध्नत । प्रजार्पतिसृष्टो मणिद्विषतो मेऽधराँ अकः

१९

अथर्वाणो अबध्नताथर्वणा अबध्नत ।

तैर्मेदिनो अङ्गिरसो दस्यूनां विभिदुः पुरस्तेन त्वं द्विषतो जहि

२०

तं घाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत् । तेन त्वं द्विषतो जहि ।

२१ १४९८

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमद् रसेन सह वर्चसा	२२
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरक्षेत्रेण प्रजया सह	२३ १५००
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह वीहियवाभ्यां महसा भूत्या सह	२४
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमन्मधोर्धृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह	२५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमदूर्जया पर्यसा सह द्रविणेन श्रिया सह	२६
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यज्ञसा कीर्त्या सह	२७
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सर्वाभिर्भूतिभिः सह	२८ १५०५
तमिमं देवतां मणिं मह्यं ददतु पुष्टये । अभिष्टं क्षत्रवर्धनं सपत्नदम्भनं मणिम्	२९
ब्रह्मणा तेजसा सह प्रतिं मुञ्चामि मे शिवम् ।	
असपत्नः सपत्नहा सपत्नान् मेऽधरो अकः	३०
उत्तरं द्विषतो मामयं मणिः कृणोतु देवजाः ।	
यस्य लोका इमे त्रयः पयो दुग्धमुपासते ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठाय मूर्धतः	३१
यं देवाः पितरो मनुष्या उपजीवन्ति सर्वदा ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठाय मूर्धतः	३२
यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे फालेन रोहति ।	
एवा मयि प्रजा पशवोऽन्नमन्नं वि रोहतु	३३ १५१०
यस्यै त्वा यज्ञवर्धन मणे प्रत्यष्टुचं शिवम् ।	
तं त्वं शतदक्षिण मणे श्रेष्ठाय जिन्वतात्	३४
एतमिध्मं समाहितं जुषाणो अग्ने प्रतिं हर्य होमैः ।	
तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून्तसामिद्वे जातवेदसि ब्रह्मणा	३५ १५१२

॥ २३४ ॥ (अथर्व० १९।२८।१-१०)

ब्रह्मा (सपत्नक्षयकामः) । दर्भमणिः मन्त्रोक्ताश्च । अनुष्टुप् ।

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे । दुर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः १

द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः ।

दुर्हार्दः सर्वास्त्वं दर्भं घर्मं इवाभिन्तसंतापयन् २

घर्मं इवाभितपन् दर्भं द्विषतो नितपन् मणे ।

हृदः सपत्नानां भिन्द्वाभिन्द्वा इव विरुजं बलम् ३ १५१५

भिन्द्धि दर्भं सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे ।

उद्यन् त्वचमिव भूम्याः शिरं एषां वि पातय ४

भिन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे भिन्द्धि मे पृतनायतः ।

भिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे ५

छिन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे छिन्द्धि मे पृतनायतः ।

छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो छिन्द्धि मे द्विषतो मणे ६

वृश्च दर्भं सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः ।

वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ७

कुन्त दर्भं सपत्नान् मे कुन्त मे पृतनायतः ।

कुन्त मे सर्वान् दुर्हार्दो कुन्त मे द्विषतो मणे ८ १५२०

पिश दर्भं सपत्नान् मे पिश मे पृतनायतः ।

पिश मे सर्वान् दुर्हार्दो पिश मे द्विषतो मणे ९

विध्यं दर्भं सपत्नान् मे विध्यं मे पृतनायतः ।

विध्यं मे सर्वान् दुर्हार्दो विध्यं मे द्विषतो मणे १० १५२१

॥ २३५ ॥ (अथर्व० १९।२९।१-९)

ब्रह्मा । दर्भमणिः । अनुष्टुप् ।

निक्षं दर्भं सपत्नान् मे निक्षं मे पृतनायतः ।

निक्षं मे सर्वान् दुर्हार्दो निक्षं मे द्विषतो मणे १

तृन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे तृन्द्धि मे पृतनायतः ।

तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो तृन्द्धि मे द्विषतो मणे २

रुन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे रुन्द्धि मे पृतनायतः ।

रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे ३ १५२५

*

मृण द॑र्भं स॒पत्नान् मे मृण मे॑ पृतनाय॒तः ।	
मृण मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ मृण मे॑ द्विष॒तो म॑णे	४
मन्थं द॑र्भं स॒पत्नान् मे मन्थं मे॑ पृतनाय॒तः ।	
मन्थं मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ मन्थं मे॑ द्विष॒तो म॑णे	५
पि॒ण्डि॒ढ द॑र्भं स॒पत्नान् मे पि॒ण्डि॒ढ मे॑ पृतनाय॒तः ।	
पि॒ण्डि॒ढ मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ पि॒ण्डि॒ढ मे॑ द्विष॒तो म॑णे	६
ओषं द॑र्भं स॒पत्नान् मे ओषं मे॑ पृतनाय॒तः ।	
ओषं मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ ओषं मे॑ द्विष॒तो म॑णे	७
द॒हं द॑र्भं स॒पत्नान् मे द॒हं मे॑ पृतनाय॒तः ।	
द॒हं मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ द॒हं मे॑ द्विष॒तो म॑णे	८ १५५०
ज॒हि द॑र्भं स॒पत्नान् मे ज॒हि मे॑ पृतनाय॒तः ।	
ज॒हि मे॒ सर्वान् दु॒र्हादो॑ ज॒हि मे॑ द्विष॒तो म॑णे	९ १५३१

॥ २३६ ॥ (अथर्व० १९।३०।१-५)

ब्रह्मा । द॑र्भमणिः । अनुष्टुप् ।

यत् ते॑ द॑र्भं ज॒रामृ॑त्युः श॒तं वर्म॑सु वर्मं ते । तेने॒मं वर्मि॑णं कृ॒त्वा स॒पत्नां॑ ज॒हि वी॒र्यैः॑ १	
श॒तं ते॑ द॑र्भं वर्म॑णि स॒हस्रं॑ वी॒र्या॑णि ते । तम॒स्यै वि॒श्वे त्वां दे॒वा ज॒रसे॑ म॒र्तवा॑ अ॒दुः २	
त्वा॒माहु॑र्दे॒वव॑र्म त्वां द॑र्भं ब्र॒ह्मण॑स्पतिम् । त्वा॒मिन्द्र॑स्याहु॒र्वर्म॑ त्वं रा॒ष्ट्राणि॑ रक्ष॒सि ३	
स॒पत्न॑क्षय॒णं द॑र्भं द्विष॒तस्त॑र्पनं हृ॒दः । म॒णिं क्ष॒त्रस्य॑ वर्ध॒नं त॒नूपा॑नं कृ॒णोमि॑ ते ४ १५३५	
यत् स॑मु॒द्रो अ॒भ्यक्र॑न्दत् प॒र्जन्यो॑ वि॒द्युता॑ स॒ह ।	
ततो॑ हि॒र॒ण्ययो॑ बि॒न्दुस्त॑तो॒ दुर्भो॑ अजायत	५ १५३६

॥ २३७ ॥ (अथर्व० १९।३१।१-१४)

सविता (पुष्टिकामः) । औदुम्बरमणिः । अनुष्टुप् ; ५, १२ त्रिष्टुप्, ६ विराट् प्रस्तार-
पङ्क्तिः; ११, १३ पञ्चपदा शकरी; १४ विराडास्तारपङ्क्तिः ।

औ॒दु॒म्बरे॑ण म॒णिना॒ पुष्टि॑कामाय ज्ञे॒धसा॑ । प॒शूनां॑ सर्वेषां स्फा॒तिं गो॒ष्ठे मे॑ स॒विता॑ क॒रत् १	
यो नो॑ अ॒ग्निर्गा॑र्हिप॒त्यः प॒शूना॑र्मधि॒पा अस॑त् ।	
औ॒दु॒म्बरो॑ वृषा॑ म॒णिः स मा॑ सृज॒तु पु॒ष्ट्या २	
क॒री॒षिणी॑ फल॑वती॒ स्व॒भामि॑रां च नो॒ गृहे॑ ।	
औ॒दु॒म्बर॑स्य तेज॑सा धा॒ता पु॒ष्टिं द॑धातु मे	३ १५३९

यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः ।

गृहेऽहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम् ४ १५४०

पुष्टिं पशूनां परिं जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् ।

पर्यः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात् ५

अहं पशूनामधिपा अंसानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु ।

मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु ६

उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च ।

इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्तसह वर्चसा ७

देवो मणिः संपत्नहा धनसा धनसातये ।

पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु ८

यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जज्ञिषे ।

एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती ९ १५४५

आ मे धनं सरस्वती पर्यस्फातिं च धान्यम् ।

सिनीवाल्युषा बहादयं चौदुम्बरो मणिः १०

त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान ।

त्वयिमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत् सहस्रारादरातिममतिं क्षुधं च ११

ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मां सिञ्च वर्चसा ।

तेजोऽसि तेजो मयि धारयार्थि रयिरसि रयिं मे धेहि १२

पुष्टिरसि पुष्ट्या मां समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु ।

औदुम्बरः स त्वमस्मास्तु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ

रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम् १३

अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।

स नः सनिं मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छात् १४ १५५०

॥ २३८ ॥ (अथर्व० १९।३४।१-१०)

अङ्गिराः । वनस्पतिः, लिङ्गोक्ताः (जङ्गिडमणिः) । अनुष्टुप् ।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः । द्विपाच्चतुष्पादुस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिडः १

या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये ।

सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिडस्करत् २ १५५२

अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः । अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव श्रातय ३
कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः । अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूषि तारिषत् ४
स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः ।

विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा ५ १५५५

त्रिष्टुा देवा अजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि । तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पून्या विदुः ६
न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः ।

विबाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः ७

अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य । पुरा तं उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ८

उग्र इत् ते वनस्पत इन्द्र ओजमानुमा दधौ । अमीवाः सर्वाश्चातयं जहि रक्षोस्योषधे ९

आशरीकं विशरीकं बलासं पृथ्यामयम् । त्वमानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् १० १५६०

॥ २३९ ॥ (अथर्व० १९।३५।१-५)

अङ्गिराः । वनस्पतिः (जङ्गिडः) । अनुष्टुप् । ३ पथ्यापङ्क्तिः ४ निष्पत् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नामं गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः ।

देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् १

स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो भवेव । देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् २

दुर्हर्दिः संघोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम् ।

तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः ३

परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्भयः ।

परि मा भूतात् परि मोत भव्याद् दिशोर्दिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् ४

य ऋणवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः ।

सर्वास्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत् ५ १५६५

॥ २४० ॥ (अथर्व० १९।३६।१-६)

ब्रह्मा । शतवारो मणिः । अनुष्टुप् ।

शतवारो अनीनशद् यक्षमान् रक्षोसि तेजसा ।

आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णाम् चार्तनः १

शृङ्गाभ्यां रक्षो लुदते मूलेन यातुधान्यः । मध्येन यक्षमं बाधते नैनं पाप्मातिं तत्रति २

ये यक्षमासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः ।

सर्वा दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत् ३ १५६८

शतं वीरानजनयच्छतं यक्षमानपावपत् । दुर्गाम्नः सर्वान् हत्वा रक्षांसि धूनुते ४
 हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शतवारो अयं मणिः । दुर्गाम्नः सर्वस्तुड्ढ्वा रक्षांस्यक्रमीत् ५ १५७०
 शतमहं दुर्गाम्नीनां गन्धर्वाप्सरसां शतम् । शतं शश्वन्वतीनां शतवारेण वारये ६ १५७१

॥ २४१ ॥ (अथर्व० १९।४६।१-७)

प्रजापतिः । अस्तृतमणिः । त्रिष्टुप् ; १ पञ्चपदा ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्, २ षट्पदा भुरिक्शकरी;
 ३, ७ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः; ४ चतुष्पदा; ५ पञ्चपदा अतिशकरी; ६ पञ्चपदोष्णिग्गर्भा
 विराट् जगती ।

प्रजापतिश्चा बध्नात् प्रथममस्तृतं वीर्यायि कम् ।

तत् ते बध्नाभ्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु १

ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादमस्तृतेमं मा त्वां दमन् पण्यो यातुधानाः ।

इन्द्र इव दस्युनव धूनुष्व पृतन्यतः सर्वाँञ्चून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु २

शतं च न ग्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे ।

तस्मिन्निन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ३

इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानांमधिराजो बभूव ।

पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ४ १५७५

अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते ।

व्याघ्रः शत्रून्भि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ५

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पर्यखान्तसहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।

शंभूश्च मयोभूश्चोर्जस्वांश्च पर्यस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ६

यथा त्वमुत्तरोऽसौ असपत्नः सपत्नहा ।

सजातानांमसद् वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ७ १५७८

अरिष्टनाशनम् । (१५७९-१५९०)

॥ २४२ ॥ (अथर्व० ६।१७।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजुगाम् ।

तस्मा अर्चाम कृण्वाम निर्ऋतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे १

शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहं नः ।

अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु २ १५८०

हेतिः पक्षिणी न दंभात्यस्मान्नाष्ट्री पदं कृणुते अग्निधाने ।

शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः

३ १५८१

॥ २४३ ॥ (अथर्व० ६।२८।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । १ त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती ।

ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदुमिषं मदन्तः परि गां नयामः ।

संलोभयन्तो दुरिता पदानि हित्वा न ऊर्जं प्र पदात् पथिष्ठः

१

परीमेऽग्निर्मर्षत परीमे गार्मनेषत ।

देवेष्वक्रतु श्रवः क इमाँ आ दधर्षति

२

यः प्रथमः प्रवर्तमाससाद बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानः ।

योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे

३ १५८४

॥ २४४ ॥ (अथर्व० ६।२९।१-३)

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः (अरिष्टक्षयणम्) । (बृहती) १-२ विराण्नाम गायत्री, ३ ज्यघसाना सप्तपदा विराडष्टिः ।

अमून् हेतिः पतत्रिणी न्येतु यदुर्लको वदति मोषमेतत् ।

यद् वा कपोतः पदमग्नौ कृणोति

१ १५८५

यौ ते दूतौ निर्ऋत इदमेतौऽप्रहितौ प्रहितौ वा गृहं नः ।

कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु

२

अवैरहत्यायेदमा पपत्यात् सुवीरताया इदमा संसद्यात् ।

पराङ्मेव परा वद पराचीमनु संवतम् ।

यथा यमस्य त्वा गृहेऽरसं प्रतिचारकशानाभूकं प्रतिचारकशान्

३ १५८७

॥ २४५ ॥ (अथर्व० ६।८०।१-३)

अथर्वा । चन्द्रमाः (अरिष्टक्षयणम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप्, ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचारकशत् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम

१

ये त्रयः कालकाञ्जा दिवि देवा इव श्रिताः ।

तान्त्सर्वानह्नु उतयेऽस्मा अरिष्टनातये

२

अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्य समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम

३ १५९०

कृत्यादूषणम् । (१५९१-१६५३)

॥ २४६ ॥ (अथर्व० ५।१४।१-१३)

शुक्रः । वनस्पतिः, कृत्यापरिहरणम् । अनुष्टुप् ; ३, ५, १२ भुरिक् ; ८ त्रिपदा चिराद् ;

१० निचृद्बृहती, ११ त्रिपदा साम्नी त्रिष्टुप् ; १३ स्वराद् ।

सुपर्णस्त्वान्वाविन्दत् सुकरस्त्वाखनन्नसा । दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि १

अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि ।

अथो यो अस्मान् दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे २

रिश्यस्येव परीशासं परिकृत्य परि त्वचः ।

कृत्यां कृत्याकृतं देवा निष्कर्मिव प्रति सुश्रुत ३

पुनः कृत्यां कृत्याकृतं हस्तगृह्य परा णय ।

समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ४

कृत्याः सन्तु कृत्याकृतं शपथः शपथीयते ।

सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः ५ १५९५

यदि स्त्री यदि वा पुमान् कृत्यां चकार पाप्मने ।

तामु तस्मै नयामस्यश्चमिवाश्वाभिधान्या ६

यदि वासि देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता । तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजां वयम् ७

अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः सहस्व । पुनः कृत्यां कृत्याकृतं प्रतिहरणेन हरामसि ८

कृतव्यधानि विध्य तं यश्चकार तमिज्जहि । न त्वामचक्रुषे व्यं वधाय सं शिंशीमहि ९

पुत्र इव पितरं गच्छ स्वज इवाभिष्टितो दश ।

बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्ये कृत्याकृतं पुनः १० १६००

उदेणीव वारण्यमिस्कन्दं मृगीव । कृत्या कर्तारमृच्छतु ११

इष्वा ऋजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति ।

सा तं मृगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः १२

अगिरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदकम् । सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः १३ १६०३

॥ २४७ ॥ (अथर्व० ५।३१।१-१२)

शुक्रः । कृत्यादूषणम् (कृत्यापरिहरणम्) । अनुष्टुप् ; ११ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप् ; १२ पथ्याबृहती ।

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये ।

आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् १ १६०४

१६ दै० [आयुर्वेद०]

यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणि ।	
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	२ १६०५
यां ते चक्रुरेकशफे पशुनामुभयादति ।	
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	३
यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम् ।	
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	४
यां ते चक्रुर्गाहिपत्ये पूर्वाभावात् दुश्चितः ।	
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	५
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवने ।	
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	६
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे ।	
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	७ १६१०
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचरन्तुः ।	
सञ्चानि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	८
यां ते चक्रुः पुरुषास्ये अग्नौ संकसुके च याम् ।	
म्रोक्तं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति हरामि ताम्	९
अपथेना जभारैणां तां पथेतः प्र हिंमसि ।	
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचित्या	१०
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमसभ्यमभगो भगवद्भयः ११	
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेयम् ।	
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया	१२ १६१५

॥ २४८ ॥ (अथर्व० १०।१।१-३२)

प्रत्यङ्गिरसः । कृत्यादूषणम् । अनुष्टुप् ; १ महाबृहती ; २ विराणनाम गायत्री ; ९ पथ्यापङ्क्तिः ; १२ पङ्क्तिः ; १३ उरोबृहती ; १५ चतुष्पदा विराड्जगती ; १७, २०, २४ प्रस्तारपङ्क्तिः (२० विराट्) ; १६, १८ त्रिष्टुप् ; १९ चतुष्पदा जगती ; २२ एकावसाना द्विपदाऽऽर्ची उणिक् ; २३ त्रिपदा भुरिग्विषमा गायत्री ; २८ त्रिपदा गायत्री ; २९ मध्ये ज्योतिष्मती जगती ; ३२ द्रघनुष्टुभार्भा पञ्चपदाऽतिजगती ।

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः ।

सारादेत्वपं तुदाम एनाम्

१ १६१६

- शीर्षवतीं नस्वतीं कर्णिनीं कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सारादेत्वर्पं जुदाम एनाम् २
 शुद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता । जाया पत्या नृत्तेव कर्तारं बन्ध्वच्छतु ३
 अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् । यां क्षेत्रे चक्रुर्या गोषु यां वा ते पुरुषेषु ४
 अघमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते । प्रत्यक् प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् ५ १६२०
 प्रतीचीनं आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः ।
 प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि ६
 यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूलमुदायम् ।
 तं कृत्येऽभिनिर्वर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः ७
 यस्ते परूषि संदुधौ रथस्येवर्धुर्धिया । तं गच्छ तत्र तेऽयं नमज्ञातस्तेऽयं जनः ८
 ये त्वा कृत्वालेभिरे विद्वला अभिचारिणः ।
 शम्बीइदं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि ९
 यद् दुर्मगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम । अपैतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोषं तिष्ठतु १० १६२५
 यत् ते पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगुहुः ।
 संदेश्याइत् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः ११
 देवैः सात् पित्र्यान्नामग्राहात् संदेश्यादभिनिष्कृतात् ।
 मुञ्चन्तु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पर्यस ऋषीणाम् १२
 यथा वातश्चावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।
 एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति १३
 अपं काम नानंदती विनद्धा गर्दभीव ।
 कर्तृन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्याविता १४
 अयं पन्थाः कृत्येति त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः ।
 तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनीं विश्वरूपा कुरुटिनी १५ १६३०
 पराक् ते ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मदयना कणुष्व ।
 परेणेहि नवति नाव्याइ अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि १६
 वातं इव वृक्षान् नि मृणीहि पादय मा गामश्च पुरुषमुच्छिष एषाम् ।
 कर्तृन् निवृत्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वायं बोधय १७
 यां ते बर्हिषि यां इमंशाने क्षेत्रे कृत्यां बल्लगं वा निचखनुः ।
 अग्नौ वा त्वा गार्हपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम् १८ १६३३

उपाहेतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम् कर्त्रम् ।	
तदैतु यत् आभूतं तत्राश्वं इव वि वर्ततां हन्तुं कृत्याकृतः प्रजाम्	१९
स्वायसा असयः सन्ति नो गृहे विद्या तै कृत्ये यतिधा परूपि ।	
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहच्छसि	२० १६३५
ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चार्पि कर्स्यामि निर्द्रव ।	
इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती	२१
सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु	२२
भवाश्वार्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते । दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम्	२३
यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा ।	
सेतोऽष्टापदी भूत्वा पुनः परेहि दुच्छुने	२४
अभ्युक्ताक्ता स्वरिकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि ।	
जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम्	२५ १६४०
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्वस्येव पदं नय ।	
मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति	२६
उत हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापरं इष्वा । उत पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति	२७
एतद्वि शृणु मे वचोऽर्थेहि यत् एयथ । यस्त्वा चकार तं प्रति	२८
अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्चं पुरुषं वधीः ।	
यत्रयत्रासि निर्हिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाच्छिधीयसी भव	२९
यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव ।	
सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि	३० १६४५
कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम् ।	
मूणीहि कृत्ये मोच्छिपोऽमून् कृत्याकृतो जहि	३१
यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्पति रात्रिं जहात्युपसंश्च केतून् ।	
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रे कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जंहामि	३२ १६४७

॥ २४९ ॥ (अथर्व० २।१४।१-६)

चातनः । शालाग्निदैवत्यं (दस्युनाशनम्) । अनुष्टुप्, २ भुरिक्, ४ उपरिष्टाद्विराहयुहती ।

निःशालां धृष्णं धिषणमेकवाद्यां जिघत्स्वम् ।

सर्वाश्चण्डस्य नप्त्यो नाशयामः सदान्वाः

१ १६४८

निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षाभिरुपानसात् ।

निर्वो मगुन्धा दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे २

असौ यो अधराद् गृहस्तत्र सन्त्वराय्यः ।

तत्र सेदिन्युच्यतु सर्वाश्च यातुधान्यः ३ १६५०

भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेतः सदान्वाः ।

गृहस्य बुध्न आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु ४

यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेषिताः ।

यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेतः सदान्वाः ५

परि धामान्यासामाशुर्गाष्ठाभिवासरन् ।

अजैषं सर्वानाजीन्वो नश्यतेतः सदान्वाः ६ १६५३

पापादिनाशनम् । (१६५४-१९३०)

॥ २५० ॥ (अथर्व० १।१०।१-४)

अथवा । असुरो वरुणः (पाश-विमोचनम्) । त्रिष्टुप् । ३ ककुम्भत्यनुष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः ।

ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि १

नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्यग्र निचिकेषि द्रुग्धम् ।

सहस्रमन्यान् प्र सुवामि साकं शतं जीवाति शरदस्तवायम् २ १६५५

यदुक्कथानृतं जिह्वया वृजिनं बहु । राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादहम् ३

मुञ्चामि त्वा वैश्वानरादणवानमहतस्परि ।

सजातानुग्रेहा वदु ब्रह्म चार्प चिकीहि नः ४ १६५७

॥ २५१ ॥ (अथर्व० १।३१।१-४)

ब्रह्मा । आशापालाः, [वास्तोष्पतिः] (पाशमोचनम्) । अनुष्टुप्, ३ विराट् त्रिष्टुप् ।

४ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

आशानामाशापालेभ्यश्चतुभ्यो अमृतैभ्यः । इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् १

य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थनं देवाः ।

ते नो निर्रेत्याः पार्श्वेभ्यो मुञ्चतांहसोअहसः २

अस्नामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि ।

य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत् ३ १६६०

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।

विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दंशेम् सूर्यम्

४ १६६१

॥ २५२ ॥ (अथर्व० २।१०।१-८)

भृग्वक्त्रिराः । १-८ द्यावापृथिवी, ब्रह्म; २ अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः; ३ वातः, दिशः; ४-८ वातपत्नीः, सूर्यः, यक्ष्मं, निर्ऋतिः (पाशमोचनम्) । १ त्रिष्टुप्; २ सप्तपदाऽष्टिः; ३-५, ७-८ सप्तपदा धृतिः; ६ सप्तपदाऽत्यष्टिः; ८ (१-३) द्वौ पादौ उष्णिहौ ।

क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् १

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् । अना० । २

शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः । एवाहं० । अना० । ३

इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे । एवाहं० । अना० । ४ १६६५

तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः । एवाहं० । अना० । ५

अमुकथा यक्ष्माद् दुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुकथाः । एवाहं० । अना० । ६

अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूर्भद्रे सुकुतस्य लोके । एवाहं० । अना० । ७

सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अर्धे देवा मुञ्चन्तो असृजन्निरेणसः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ८ १६६९

॥ २५३ ॥ (अथर्व० ६।११।१-३)

अथर्वा । अग्निः (पाशमोचनम्) त्रिष्टुप् ।

मा ज्येष्ठं वधीदुयमेघ एषां मूलवर्हणात् परि पाह्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे १ १६७०

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्ने एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरौ मुञ्च सर्वान् २

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धोऽङ्गे अङ्ग आर्षित उत्सितश्च ।

वि ते मुञ्चन्तां विमुञ्चो हि सन्ति ब्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व ३ १६७२

॥ २५४ ॥ (अथर्व० ६।११९।१-३)

कौशिकः । वैश्वानरोऽग्निः [आनुष्यम्] (पाशमोचनम्) । त्रिष्टुप् ।

यददीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नम उत सैगुणामि ।

वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्

१

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्युणं सैगरो देवतासु ।

स एतान् पाशान् विचृतं वेदु सर्वानथ पक्केन सह सं भवेम

२

वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् सैगरमभिभावाभ्याशाम् ।

अनाजानन् मनसा यार्चमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि

३ १६७५

॥ २५५ ॥ (अथर्व० ७।८३।१-४)

शुनःशेषः । वरुणः (पाशमोचनम्) । १ अनुष्टुप् २ पथ्यापङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्, ४ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः ।

ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु

१

धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुण मुञ्च नः ।

यदापो अध्या इति वरुणेति यदूचिम ततो वरुण मुञ्च नः

२

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।

अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम

३

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उतमा अधमा वारुणा ये ।

दुष्पण्यं दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्

४ १६७९

॥ २५६ ॥ (अथर्व० ७।७८।१-२)

अथर्वा । अग्निः (बन्धमोचनम्) । १ परोष्णिक्, २ त्रिष्टुप् ।

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यग्रे

१ १६८०

अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्रे युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।

दीदिह्यस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविदा देवतासु

२ १६८१

॥ २५७ ॥ (अथर्व० ६।२५।१-३)

शुनःशेषः । मन्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव

१

सप्त च याः सप्ततिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव

२ १६८३

नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव

३ १६८४

॥ २५८ ॥ (अथर्व० ४।२३।१-७)

मृगारः । प्रचेता अग्निः (पाप-मोचनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, ४ अनुष्टुप्, ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।

विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः

१ १६८५

यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।

एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभंगम् ।

अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः

३

सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विशुम् । हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः

४

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।

येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः

५

येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।

येन देवाः स्वराभरन्तस नो मुञ्चत्वंहसः

६ १६९०

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्ञातं जनितव्यं च केवलम् ।

स्तौम्यग्निं नाथितो जौहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७ १६९१

॥ २५९ ॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

मृगारः । इन्द्रः (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशाकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।

यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः

१

य उग्रीणामुग्रबाहुयुयो दानवानां बलमारुरोज ।

येन जिताः सिन्धवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वविद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।

यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः

३

यस्य वशासं ऋषभासं उक्ष्णो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वविदे ।

यस्मै शुक्रः पर्वते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः

४ १६९५

यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्ठौ ।

यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः

५ १६९६

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः

६

यः सैग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति ह्रियानि ।

स्तौमीन्द्रं नाथितो जौहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७ १६९८

॥ २६० ॥ (अथर्व० ४।२५।१-७)

मृगारः । सविता, वायुः (पापमोचनम्) । । त्रिष्टुप्, ३ अतिशक्ती, ७ पथ्यावृहती ।

वायोः सवितुर्विदथानि मन्महे यावात्मन्वद् विशथो यौ च रक्षथः ।

यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुस्तौ नो मुञ्चतमंहसः

१

ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे ।

ययोः प्रायं नान्वानशे कश्चन तौ नो मुञ्चतमंहसः

२ १७००

तव व्रते नि विशन्ते जनास्त्वय्युदिते प्रेरते चित्रमानो ।

युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चतमंहसः

३

अपेतो वातो सविता च दुष्कृतमप रक्षांसि शिभिदां च सेधतम् ।

सं ह्यूर्जयां सृजथः सं बलैन तौ नो मुञ्चतमंहसः

४

रयि मे पोषं सवितोत वायुस्तनू दक्षमा सुवतां सुशेवम् ।

अयक्ष्मताति मह इह धत्तं तौ नो मुञ्चतमंहसः

५

प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये महस्वन्तं मत्सरं मादयाथः ।

अर्वाग् वामस्य प्रवतो नि यच्छतं तौ नो मुञ्चतमंहसः

६

उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन् ।

स्तौमि देवं सवितारं च वायुं तौ नो मुञ्चतमंहसः

७ १७०५

॥ २६१ ॥ (अथर्व० ४।२६।१-७)

मृगारः । द्यावापृथिवी (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ अष्टिः, २-३ जगती,

७ शाकरगर्भातिमध्येज्योतिः ।

मुन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथाममिता योजनानि ।

प्रतिष्ठे ह्यमवतं वसूनां ते नो मुञ्चतमंहसः

१

प्रतिष्ठे ह्यमवतं वसूनां प्रवृद्धे देवी सुभगे उरुची ।

द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः

२

असंतापे सुतपसौ हुवेऽहमुर्वी गम्भीरे कविभिर्नमस्ये । द्यावापृथिवी० ।

३ १७०८

१७ दै० [आयुर्वेद०]

ये अमृतं विभृथो ये हवींषि ये स्रोत्या विभृथो ये मनुष्यानि । द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	४
ये उस्त्रिया विभृथो ये वनस्पतीन् ययौर्वा विश्वा भुवनान्यन्तः । द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	५ १७१०
ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति । द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	६
यन्मेदमभिषोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात् । स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जौहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः	७ १७१२

॥ २६२ ॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) [पापमोचनम्] ।x

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ४।२८।१-७)

मृगारोऽथर्वो वा । भवाशर्वो रुद्रो वा । (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, १ अतिजागतगर्भा भुरिक् । भवाशर्वो मन्वे वां तस्य वित्तं ययौर्वामिदं प्रदिशि यद् विरोचते । यावस्येशथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः	१
ययौरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदिताविषुभृतामसिष्ठौ । यावस्येशथे० ।	२
सहस्राक्षो वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेम्युग्रौ । यावस्येशथे० ।	३ १७१५
यावारेभार्थे बहु साकमग्रे प्र चेदसाष्टमभिभां जनेषु । यावस्येशथे० ।	४
ययौर्विधात्रापपद्यते कश्चनान्तर्देवेषु मातृषेष्णु । यावस्येशथे० ।	५
यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ । यावस्येशथे० ।	६
अधि नो ब्रूतं पृतनास्रग्री सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी । स्तौमि भवाशर्वो नाथितो जौहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः	७ १७१९

॥ २६४ ॥ (अथर्व० ४।२९।१-७)

मृगारः । मित्रावरुणौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप्, ७ शकरीगर्भाऽतिजगती ।

मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुह्णो यौ नुदेथे । प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः	१
सचेतसौ द्रुह्णो यौ नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु । यौ गच्छथो नुचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः	२ १७२१

यावङ्गिरसमवथो यावगस्ति मित्रावरुणा जमदग्निमग्निम् ।

यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः

३

यौ इयावाश्वमवथो वध्यश्च मित्रावरुणा पुरुमीढमग्निम् ।

यौ विमदमवथः सप्तवर्धि तौ नो मुञ्चतमंहसः

४

यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम् ।

यौ कक्षीर्वन्तमवथः प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहसः

५

यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ ।

यौ गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहसः

६ १७२५

ययो रथः सत्यवर्त्मजुरश्मिर्मिथुया चरन्तमभियाति दूषयन् ।

स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जौहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः

७ १७२६

॥ २६५ ॥ (अथर्व० ६।११५।१-३)

ब्रह्मा । विश्वे देवाः (पापमोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद् विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम् ।

यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः

१

यदि जाग्रद् यदि स्वपन्नेन एतस्योऽकरम् ।

भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम्

२

द्रुपदादिव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।

पुतं पवित्रेणैवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैतसः

३ १७२९

॥ २६६ ॥ (अथर्व० ७।४२।१-२) +

प्रस्कण्वः । सोमारुद्रौ (पापमोचनम्) । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा वि बृहतं विषूचीममीवा या नो गर्यमाविवेश ।

बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्

१ १७३०

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद् विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।

अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो असत् तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्

२ १७३१

॥ २६७ ॥ (अथर्व० ७।६४।१-२)

यमः । आपः, अग्निः, निर्ऋतिः (पापमोचनम्) । १ भुरिगनुष्टुप्, २ न्यङ्कुसारिणी बृहती ।

इदं यत् कृष्णः शकुनिरभिनिष्पतन्नपीपतत् ।

आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः

१ १७३२

इदं यत् कृष्णः शकुनिरवामृक्षन्निर्गते ते मुखेन ।

अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्र मुञ्चतु

२ १७३३

॥ २६८ ॥ (अथर्व० ११।६।१-२३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताः (पापमोचनम्) । अनुष्टुप् । २३ बृहतीगर्भा ।

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत् वीरुधः ।

इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१

ब्रूमो राजानं वरुणं मिश्रं विष्णुमथो भगम् ।

अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

२ १७३५

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत् पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

४

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।

विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५

वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः । आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

६

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादिहोरात्रे अथो उपाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति

७ १७४०

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मुगाः ।

शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

८

भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः ।

इषूर्या ऐषां संविद्य तः नः सन्तु सदा शिवाः

९

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो विशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१०

सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम् ।

पितॄन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

११

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये । पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१२

आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः ।

अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१३

यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा । यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१४

१७४७

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः ।	
दुर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	१५
अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितृन् ।	
मृत्युनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	१६
ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।	
समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	१७ १७५०
एतं देवा दक्षिणतः पश्चात् प्राञ्च उदेत ।	
पुरस्तादुत्तराच्छुक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	१८
विश्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतवृधः ।	
विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	१९
सर्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतवृधः ।	
सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	२०
भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वृशी ।	
भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः	२१
या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।	
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः	२२ १७५५
यन्मातली रथक्रीतममृतं वेद भेषजम् ।	
तादिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत् तदापो दत्त भेषजम्	२३ १७५६

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ४।३३।१-८; ऋ० १।९७।१-८; अग्निः १८८७-९४)

ब्रह्मा । पाप्मनाशनोऽग्निः (पाप-नाशनम्) । गायत्री ।

अपं नः शोशुचदुधमग्ने शुशुग्भ्या रयिम् । अपं नः शोशुचदुधम्	१
सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे । अपं नः शोशुचदुधम्	२
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकांसश्च सूरयः । अपं नः शोशुचदुधम्	३
प्र यत् ते अग्ने सूरयो जायैमहि प्र ते वयम् । अपं नः शोशुचदुधम्	४ १७६०
प्र यदग्ने सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः । अपं नः शोशुचदुधम्	५
त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अपं नः शोशुचदुधम्	६
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय । अपं नः शोशुचदुधम्	७
स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये । अपं नः शोशुचदुधम्	८ १७६४

॥ २७० ॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

अथर्वा । पूषा (पापनाशनम्) । त्रिष्टुप्, ३ पङ्क्तिः ।

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रित एनन्मनुष्येषु ममृजे ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु

१ १७६५

मरीचीर्धूमान् प्र विशानुं पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान् ।

नदीनां फेनां अनु तान् वि नश्य भ्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष

२

द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्यैरसानि ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु

३ १७६७

॥ २७१ ॥ (अथर्व० ७।११२।१-२)

वरुणः । आपः, वरुणश्च (पापनाशनम्) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप् ।

शुम्भेनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महित्रते ।

आपः सप्त सुसुबुद्धेर्वीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः

१

मुञ्चन्तु मा शपथ्याइदथो वरुण्यादित ।

अथो यमस्य पङ्क्तिंशाद् विश्वसाद् देवकिल्बिषात्

२ १७६९

॥ २७२ ॥ (अथर्व० ७।११५।१-४) [पापलक्षणनाशनम्] ❁

॥ २७३ ॥ (अथर्व० ६।२६।१-३)

ब्रह्मा । पाप्मा (पाप्मनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

अव मा पाप्मन्त्सुज वशी सन् मृडयासि नः ।

आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविहृतम्

१ १७७०

यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम् ।

पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम्

२

अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु सहस्राक्षो अमर्त्यः ।

यं द्वेषाम तमृच्छतु यमु द्विष्मस्तमिजहि

३ १७७२

॥ २७४ ॥ (अथर्व० ६।३७।१-३)

अथर्वा । (स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः (शापनाशनम्) । अनुष्टुप् ।

उप प्रागात् सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम् ।

शप्तारमन्विच्छन् मम वृक इवारिमतो गृहम्

१

परि णो वृङ्ग्धि शपथ हृदमगिरिवा दहन् ।

शप्तारमत्र नो जहि दिवो वृक्षमिवाशनिः

२ १७७४

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

शुने पेष्ट्रमिवावक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे

३ १७७५

॥ २७५ ॥ (अथर्व० ७।५९।१)

वादरायणिः । अरिनाशनम् (शाप-मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

वृक्ष इव विद्युता हत आ मूलादनुं शुष्यतु

१ १७७६

॥ २७६ ॥ (अथर्व० ५।७।१-२०)

अथर्वा । बहुदैवत्यम् ; १-३, ६-१० अरातयः ; ४-५ सरस्वती (अरातिनाशनम्) । अनुष्टुप् ; १ विराङ्गर्मा

प्रस्तारपङ्क्तिः ; ४ पथ्याबृहती ; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

आ नो भर मा परिष्ठा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् ।

नमो वीत्सीया असमृद्धये नमो अस्त्वरातये

१

यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम् ।

नमस्ते तस्मै कृणो मा वनि व्यथयीर्मम

२

प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् ।

अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरातये

३

सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे ।

वाचं जुष्टं मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु

४ १७८०

यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा ।

श्रद्धा तमद्य विन्दतु दत्ता सोमेन बभ्रुणा

५

मा वनि मा वाचं नो वीत्सीरुभार्विन्द्राग्नी आ भरतां नो वसूनि ।

सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रति हर्यत

६

पुरोऽपेक्षसमृद्धे वि ते हेति नयामसि ।

वेदं त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते

७

उत नग्ना बोधुवती स्वप्नया संचसे जनम् ।

अराते चित्तं वीत्सन्त्याकूर्तिं पुरुषस्य च

८

या महती महोन्माना विश्वा आशा व्यानशे ।

तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः

९ १७८१

हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्मही ।

तस्यै हिरण्यद्रापयेऽरात्या अकरं नमः

१० १७८२

॥ २७७ ॥ (अथर्व० ६।५।१-३)

शन्तातिः । आपः, ३ वरुणः (एनोनाशनम्) । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।
 वायोः पुतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा १
 आपो अस्मान् मातरः स्रदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
 विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि २
 यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरन्ति ।
 अचिच्या चेत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ३ १७८३

॥ २७८ ॥ (अथर्व० ६।८४।१-४)

भगः । निर्ऋतिः (निर्ऋतिमोचनम्) । १ भुरिजगती, २ त्रिषदार्षी बृहती, ३ जगती,
 ४ भुरिक् त्रिष्टुप् (जगती) ।
 यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां बद्धानामवसर्जनाय कम् ।
 भूमिरिति त्वाभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद सर्वतः १ १७९०
 भूतं हविष्मती भवैष ते भागो यो अस्मासु । मुञ्चेमानमूनेनसः स्वाहा २
 एवो ष्वस्मिर्ऋतेऽनेहा त्वमयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
 वमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३
 अयस्मर्ये द्रुपदे वैषिष इहाभिहितो मृत्युमिर्ये सहस्रम् ।
 यमेन त्वं षितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ४ १७९३

॥ २७९ ॥ (अथर्व० ६।११३।१-३)

ग्रह्या । विश्वे देवाः (उन्मोचनम्) । अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चक्रमा व्रयम् । आदित्यास्तस्मान्नो युयमुतस्यर्तेन मुञ्चत १
 ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः ।
 यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २ १७९५
 मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः ।
 अक्रामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३ १७९६

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।६३।१) [दुरितनाशनम्] ×

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ३।९।१-६)

वामदेवः । द्यावापृथिवी, देवाः (दुःखनाशनम्) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा निवृद्धवृहती, ६ भुरिक् ।
 कर्शफस्य विशफस्य द्यौः पिता पृथिवी माता ।
 यथाभिचक्र देवास्तथाप कृणुता पुनः १ १७९७

अश्रेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम् ।	
कृणोमि वध्नि विष्कन्धं मुष्कावर्हो गवांमिव	२
पिशङ्गे स्रुत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः ।	
श्रवस्युं शुष्मं काववं वध्नि कृण्वन्तु बन्धुरः	३
येनां श्रवस्यवश्चरथ देवा इवासुरमायया ।	
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुरा काववस्य च	४ १८००
दुष्ट्यै हि त्वा भत्स्यामि दूषयिष्यामि काववम् ।	
उदाशवो रथा इव शपथैभिः सरिष्यथ	५
एकशतं विष्कन्धानि विष्टिता पृथिवीमनु ।	
तेषां त्वामग्र उज्जहर्मुणिं विष्कन्धदूषणम्	६ १८०१

॥ १८२ ॥ (अथर्व० १६।१।१-१३) [प्रथमः पर्यायः ।]

अथर्वा । प्रजापतिः (दुःखमोचनम्) । १,३ द्विपदा साम्नी बृहती; २,१० याजुषी त्रिष्टुप्; ४ आसुरी गायत्री; ५,८ साम्नी पङ्क्तिः (५ द्विपदा); ६ साम्नी अनुष्टुप्; ७ निचृद् विराद् गायत्री; ९ आसुरी पङ्क्तिः; ११ साम्युष्णिक्; १२-१३ आर्च्यनुष्टुप् ।

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्रयो दिव्याः	१
रुजन् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन्	२
भ्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः	३ १८०५
इदं तमर्ति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि	४
तेन तमभ्यर्तिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	५
अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि	६
योऽप्स्वग्निरति तं सृजामि भ्रोकं खनि तनूदूषिम्	७
यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद् वो घोरं तदेतत्	८ १८१०
इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि पिञ्चेत्	९
अरिप्रा आपो अप रिग्रमस्मत्	१०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्यै वहन्तु	११
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे	१२
शिवानग्नीन्पुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः	१३ १८१५

१८ दै० [आयुर्वेद०]

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १६।२।१-६) [द्वितीयः पर्यायः ।]

अथर्वा । वाक् १ आसुर्यनुष्टुप्; २ आसुर्युष्णिक्; ३ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदा साम्नी बृहती;
५ आर्च्यनुष्टुप्; ६ निचृद् विराङ्गायत्री ।

निर्दुर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक्	१
मधुमती स्थ मधुमती वाचमुदेयम्	२
उपहृतो मे गोपा उपहृतो गोपीथः	३
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम्	४
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः	५ १८२०
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि वमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय	६ १८२१

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १६।३।१-६) [तृतीयः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्;
६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्	१
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्	२
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम्	३
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम्	४ १८२५
बृहस्पतिर्म आत्मा नमणा नाम हृद्यः	५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा	६ १८२७

॥ २८५ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७) [चतुर्थः पर्यायः ।]

ब्रह्मा । आदित्यः । १,२ साम्न्यनुष्टुप्; ३ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्;
५ आसुरी गायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराङ्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नामिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्	१
स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येष्वा	२
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परां गात्र	३ १८३०
सूर्यो माहः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः	४
प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मौष	५
स्वस्त्यश्चोषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय	६
शर्करा स्थ पशवो मोषं स्थेषुमित्रावरुणौ मे प्राणापानावाग्निर्मे दक्षं दधातु	७ १८३४

॥ २८६ ॥ (अथर्व० १६।५।१-१०) [पञ्चमः पर्यायः ।]

यमः । ×दुःष्वप्ननाशनम् । १-६ (प्रथमा) विराड् गायत्री [५ (प्रथमा) भुरिक्, ६ (प्रथमा) खराट्];
१-६ (द्वितीया) प्राजापत्या गायत्री; १-६ (तृतीया) द्विपदा साम्नी बृहती ।

विद्म ते स्वम् जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥	१ १८३५
अन्तर्कोऽसि मृत्युरसि ॥२॥	२
तं त्वां स्वम् तथा सं विद्म स नः स्वम् दुष्वप्यात् पाहि ॥३॥	३
विद्म ते स्वम् जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्त०।२ तं०।३ ४	
विद्म ते स्वम् जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्त०।२ तं०।३ ५	
विद्म ते स्वम् जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्त०।२ तं०।३ ६ १८४०	
विद्म ते स्वम् जनित्रं पराभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्त०।२ तं०।३ ७	
विद्म ते स्वम् जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥	८
अन्तर्कोऽसि मृत्युरसि ॥२॥	९
तं त्वां स्वम् तथा सं विद्म स नः स्वम् दुष्वप्यात् पाहि ॥३॥	१० १८४४

॥ २८७ ॥ (अथर्व० १६।६।१-११) [षष्ठः पर्यायः ।]

यमः । दुःष्वप्ननाशनं, उषा । १-४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५ साम्ना पङ्क्तिः; ६ निचृदार्षी बृहती;
७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ आसुरी जगती; ९ आसुरी बृहती; १० आचर्युष्णिक्;
११ त्रिपदा यवमध्या गायत्री वा आचर्यनुष्टुप् ।

अजैष्माद्यासनामाद्याभूमानांसो वयम्	१ १८४५
उषो यसाद् दुष्वप्यादभैष्माप तदुच्छतु	२
द्विषते तत् परां वह शपते तत् परां वह	३
ये द्विष्मो यच्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद् गमयामः	४
उषा देवी वाचा संविदाना वाग् देव्युषसां संविदाना	५
उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः	६ १८५०
तेऽमुष्मै परां वहन्त्वरायान् दुर्णाम्नः सदान्वाः	७
कुम्भीकां दुषीकाः पीयकान्	८
जाग्रदुष्वप्यं स्वप्नेदुष्वप्यम्	९
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः संकल्पानमुच्या द्रुहः पाशान्	१०
तदमुष्मा अग्रे देवाः परां वहन्तु वधिर्यथासद् विथुरो न साधुः	११ १८५५

×४६-४७ पृष्ठयोः १०५-१११ सूक्तानि दृष्टव्यानि ।

॥ २८८ ॥ (अथर्व० १६।७।१-१३) [सप्तमः पर्यायः ।]

यमः । दुःस्वप्ननाशनं, उषा । १ पङ्क्तिः; २ साम्यनुष्टुप्; ३ आसुर्युष्णिक्; ४ प्राजापत्या गायत्री; ५ आर्च्युष्णिक्; ६, ९, ११ सास्त्री बृहती; ७ याजुषी गायत्री; ८ प्राजापत्या बृहती; १० सास्त्री गायत्री; १२ भुरिक् प्राजापत्यानुष्टुप्; १३ आसुरी त्रिष्टुप् ।

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि

पराभूत्यैनं विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि

१

देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि

२

वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥ ३ ॥ एवानेवाव सा गरत्

४

योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु

५ १८६०

निद्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् मजाम ॥ ६ ॥ सुर्यामंश्चाक्षुष

७

इदमहमांशुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्स्यं मृजे

८

यददोऽदो अभ्यगच्छन् पद दोषा यत् पूर्वा रात्रिम्

९

यज्ञाग्रद् यत् सुप्तो यद् दिवा यन्नक्तम्

१० १८६५

यदहरहरभिगच्छामि तस्मादिदमव दये

११

तं जहि तेन मन्दस्व तस्य पृथीरपि शृणीहि

१२

स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

१३

॥ २८९ ॥ (अथर्व० १६।८।१-२७) [अष्टमः पर्यायः ।]

यमः । दुःस्वप्ननाशनम् । १-२७ (प्रथमा) एकपदा यजुर्ब्राह्मणनुष्टुप्; १-२७ (द्वितीया) त्रिपदा निचृद्गायत्री; १ (तृतीया) प्राजापत्या गायत्री; १-२७ (चतुर्थी) त्रिपदा प्राजापत्या त्रिष्टुप्; २-४, ९, १७, १९, २४ (तृतीया) आसुरी जगती; ५, ७-८, १०-११, १३, १८ (तृतीया) आसुरी त्रिष्टुप्; ६, १२, १४-१६, २०-२३, २७ (तृतीया) आसुरी पङ्क्तिः; २५-२६ (तृतीया) आसुरी बृहती ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं

यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥ १ ॥

१

तस्मादुभुं निर्भजामोऽमुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥ २ ॥

२ १८७०

स ग्राह्याः पाशान्मा मौचि ॥ ३ ॥

३

तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्टयामीदमेनमध्वराञ्च पादयामि ॥ ४ ॥

१ । ४

जितम० । स निष्कृत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥ १-४ ॥

२ । ५

जितम० । सोऽभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥ १-४ ॥

३ । ६

जितम० । स निर्भूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥ १-४ ॥

४ । ७ १८७५

जितम्० । स पराभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	५।	८
जितम्० । स देवजामीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	६।	९
जितम्० । स बृहस्पतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	७।	१०
जितम्० । स ग्रजापतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	८।	११
जितम्० । स ऋषीणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	९।	१२ १८८०
जितम्० । स आर्षेयाणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१०।	१३
जितम्० । सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	११।	१४
जितम्० । स आङ्गिरसानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१२।	१५
जितम्० । सोऽथर्वणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१३।	१६
जितम्० । स आथर्वणानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१४।	१७ १८८५
जितम्० । स वनस्पतीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१५।	१८
जितम्० । स वानस्पत्यानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१६।	१९
जितम्० । स ऋतूनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१७।	२०
जितम्० । स आर्तवानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१८।	२१
जितम्० । स मासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१९।	२२ १८९०
जितम्० । सोऽर्धमासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२०।	२३
जितम्० । सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२१।	२४
जितम्० । सोऽह्नोः संयतोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२२।	२५
जितम्० । स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२३।	२६
जितम्० । स इन्द्राग्न्योः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२४।	२७ १८९५
जितम्० । स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२५।	२८
जितम्० । स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२६।	२९
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वर्माकं			
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं ग्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥			
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमांशुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥२॥			
स मृत्योः पद्मीशात् पाशान्मा मौचि ॥३॥			
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्ट्यामीदमेनमधराश्च पादयामि ॥४॥			

॥ २९० ॥ (अथर्व० १६।१।१-४) [नवमः पर्यायः ।]

यमः । १ प्रजापतिः; २ अग्निः, सोमः, पूषा; ३-४ सूर्यः । १ प्राजापत्या आचर्यनुष्टुप्; २ आचर्युष्णिक्;
३ साम्नी पङ्क्तिः; ४ परोष्णिक् ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्टिं विश्वाः पृतना अरातीः १
तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धातु सुकृतस्य लोके २
अगन्म स्वः स्वर्गिगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४ १९०५

॥ २९१ ॥ (अथर्व० ७।२३।१)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । अनुष्टुप् ।

दौष्वप्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अम्भमिराग्यः ।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि १ १९०६

॥ २९२ ॥ (अथर्व० १३।५६।१-६)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । त्रिष्टुप् ।

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः ।
एकाकिनां सुरथं यासि विद्वान्त्स्वमं मिमानो असुरस्य योनौ १
बन्धस्त्वाग्नें विश्वचया अपश्यत् पुरा रात्र्या जनिंतोरेके अहिं ।
ततः स्वमेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः २
बृहद्वाचासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन् ।
तस्मै स्वमाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशसः स्वर्गानशानाः ३
नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम् ।
त्रिते स्वममदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ४ १९१०
यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वमेन सुकृतः पुण्यमायुः ।
स्वर्मदसि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ५
विद्य ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् विद्य स्वप्न यो अधिषा इहा ते ।
यश्चस्विनो नो यश्चसेह पाद्भाराद् द्विषेभिरप याहि दूरम् ६ १९१२

॥ २९३ ॥ (अथर्व० १९।५७।१-५)

यमः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । १ अनुष्टुप्; २-३ त्रिष्टुप्, (ज्यवसाना); ४ षट्पदा उष्णिग्बृहतीगर्भा विराट् शकरी;
५ ज्यवसाना पञ्चपदा परशाकरातिजगती ।

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति ।

एवा दुष्वप्यं सर्वमग्निं सं नयामसि १ १९१३

सं राजानो अगुः समृणान्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कला अगुः ।

समस्मासु यद् दुष्वप्यं निर्दिषते दुष्वप्यं सुवाम

२

देवानां पत्नीनां गर्भं यमस्य कर् यो भद्रः स्वप्न ।

स मम यः पापस्तद् द्विषते प्र हिणमः । मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम्

३ १९१५

तं त्वा स्वप्न तथा सं विन्न स त्वं स्वप्नाश्च इव कायमश्च इव नीनाहम् ।

अनास्माकं देवपीयुं पियारुं वप यदस्मासु दुष्वप्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे

४

अनास्माकस्तद् देवपीयुः पियारुर्निष्कर्मिव प्रति मुञ्चताम् ।

नवारत्नीनर्पमया अस्माकं ततः परिं । दुष्वप्यं सर्वं द्विषते निर्देयामसि

५ १९१७

॥ २९४ ॥ (अथर्व० १९।६५।१) [अवनम्] ❀

यज्ञादिकम् । (१९१८-२३२४)

॥ २९५ ॥ (अथर्व० ७।७३।६-७,११) ×

अथर्वा । घर्मः, अश्विनौ । ६ जगती; ७,११ त्रिष्टुप् ।

उपं द्रव पर्यसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पर्य उस्त्रियायाः ।

वि नार्कमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो वि राजति

६

उपं ह्वये सुदुर्घा धेनुमेतां सुहस्तौ गोधुगुत दोहदेनाम् ।

श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्विो घर्मस्तदु षु प्र वोचत्

७

सुयवसाद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम ।

अद्वि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिबं शुद्धमुदकमाचरन्ती

११ १९२०

॥ २९६ ॥ (अथर्व० ७।६१।१-२)

अथर्वा । अग्निः (तपः) । अनुष्टुप् ।

यदग्ने तपसा तप उपतप्यामहे तपः । प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः १

अग्ने तपस्तप्यामह उप तप्यामहे तपः ।

श्रुतानि शृण्वन्तौ वयमायुष्मन्तः सुमेधसः

२ १९२२

॥ २९७ ॥ (अथर्व० १२।३२।१-१०)

भृगुः (आयुष्कामः) । दर्भः । अनुष्टुप्; ८ पुरस्ताद्बृहती; ९ त्रिष्टुप्; १० जगती ।

शुतर्काण्डो दुश्चयवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः । दुर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे १ १९२३

❀ दै० [अग्निः] २३४९ ।

× अथर्व० ७।७३।१-५, ८ = दै० [अश्विनौ] ६७९-६८४ ।

अथर्व० ७।७३।९-१० = दै० [अग्निः] ७९४, ९३५ ।

नास्य केशान् प्र वर्पन्ति नोरसि ताडमा घ्नते ।	
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दुर्भेण शर्म यच्छति	२
दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः । त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे ३	१९२५
तिस्रो दिवो अत्यतृणत् तिस्र इमाः पृथिवीरुत ।	
त्वयाहं दुर्हादौ जिह्वां नि तृणञ्चि वचांसि	४
त्वमासि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान् । उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्तसहिषीवहि ५	
सहस्व नो अभिमांति सहस्व पृतनायतः ।	
सहस्व सर्वान् दुर्हादौ सुहादौ मे बहून् कृधि	६
दुर्भेण देवजातेन दिवि धृम्भेन शश्वदित् ।	
तेनाहं शश्वतो जना असनं सनवानि च	७
प्रियं मां दर्भं कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।	
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते	८ १९३०
यो जायमानः पृथिवीमद्वेहद् यो अस्तभ्रादुन्तरिक्षं दिवं च ।	
यं बिभ्रत ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दुर्भो वरुणो दिवा कः	९
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोषधीनां प्रथमः सं बभूव ।	
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः	१० १९३१

॥ २९८ ॥ (अथर्व० १९।३।१-५)

भृगुः । दर्भः । १ जगती, २, ५ त्रिष्टुप्; ३ आर्षी पङ्क्तिः, ४ आस्तारपङ्क्तिः ।

सहस्रार्धः शतकाण्डः पर्यस्वान्पामग्निर्वीरुधौ राजस्रयम् ।	
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः	१
घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पर्यस्वान् भूमिद्वहोऽच्युतश्च्यवणिष्णुः ।	
नुदन्तसपत्नानघरांश्च कृण्वन् दर्भा रोह महतामिन्द्रियेण	२
त्वं भूमिमत्येभ्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे ।	
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यसत्	३ १९३५
तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।	
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत् तं ते वभामि जरसे स्वस्तये	४
दुर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि दुर्भं बिभ्रद्वात्मना मा व्यथिष्ठाः ।	
अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्तस्रय इवा माहि प्रदिशश्चतस्रः	५ १९३७

॥ २९९ ॥ (अथर्व० ५।२६।२-४, ६-९, ११)+

ब्रह्मा । वास्तोष्पतिः, २ सविता, ३, ११ इन्द्रः, ४ निविदः, ६ अदितिः, ७ विष्णुः,
८ त्वष्टा, ९ भगः, (नवशालायां घृतहोमः) । २, ४, ६-८, ११ द्विपदा
प्राजापत्या बृहती; ३ त्रिपदा विराड् गायत्री; ९ त्रिपदा
पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक्; (सर्वा एकावसानाः) ।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा	२
इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा	३
प्रेषा यज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्वहतेह युक्ताः	४ १९४०
एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा	६
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपोऽस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	७
त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	८
भगो युनक्त्वाशिषो न्व१स्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा	९
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याण्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	११ १९४५

॥ ३०० ॥ (ऋ० १०।१८।७-१४)×

संकुसुको यामायनः । ७-१४ पितृमेघः; १४ प्रजापतिर्वा । त्रिष्टुप्, ११ प्रस्तरपङ्क्तिः, १३ जगती, १४ अनुष्टुप् ।

इमा नारीरविधवाः सुपत्नी—राज्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु ।	
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे	७
उदीर्घ्वं नार्याभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि ।	
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ	८
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्या—ऽस्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय ।	
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृध्वो अभिमातीर्जयेम	९
उप सर्प मातरं भूमिमेता—मरुव्यचंसं पृथिवीं सुशेवाम् ।	
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्	१०
उच्छ्वस्व पृथिवि मा नि बाधथाः स्रपायनासै भव स्रपवञ्चना ।	
माता पुत्रं यथा सिचा ऽभ्येनं भूम ऊर्णुहि	११ १९५०
उच्छ्वश्माना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम् ।	
ते गृहासौ घृतश्रुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र	१२ १९५१

+ अथर्व० ५।२६।१ = अग्निः २३४५; ५।२६।५ = मरुतः ४३२; ५।२६।१० = सोमः ११८९; ५।२६।१२ = अश्विनौ ६७१ ।

× अथर्व० १८।३।२, ५०-५१, ५७ ।

१९ दे. [आयुर्वेद०]

उत् तै स्तञ्जामि पृथिवीं त्वत् परी—मं लोमं निदधन्मो अहं रिपम् ।

एतां स्थूणां पितरौ धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादना ते भिनोतु

१३

प्रतीचीने मामहनी—ष्वाः पूर्णमिवा दधुः ।

प्रतीचीं जग्रभा वाच—मश्वं रश्नया यथा

१४ १९५३

॥ ३०१ ॥ (क्र० १०१०१-१४)*

नवमीवर्ज्यानामयुजां षष्ठ्याश्च वैवस्वती यमी ऋषिका । यमः । षष्ठीवर्ज्यानां युजां

नवस्याश्च वैवस्वतो यमः ऋषिः । यमी । त्रिष्टुप्, १३ चिराट्स्थाना ।

ओ चित् सखायं सख्या वधृत्यां तिरः पुरु चिदण्वं जगन्वान् ।

पितुर्नपातुमा दधीत वेधा अधि क्षमिं प्रतुरं दीर्घानः

१

न ते सखा सख्यं वष्टयेतत् सलक्ष्मा यद् विपुरुषा भवति ।

महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तारि उर्विया परि ख्यन्

२ १९५५

उशन्ति धा ते अमृतास एत—देकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य ।

नि ते मनो मनसि धायस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः

३

न यत् पुरा चकृमा कद्ध नून—मृता वदन्तो अनृतं रपेम ।

गन्धर्वो अप्सवर्ष्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नो

४

गर्भे नु नौ जनिता दंपती क—देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।

नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत् द्यौः

५

को अस्य वेद प्रथमस्याहः क ह ददर्श क इह प्र वोचत् ।

बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कहु ब्रव आहनो वीच्या नृन्

६

यमस्य मा यम्यं काम आग—न्तसमाने योनौ सहश्रेय्याय ।

जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् बृहेव रथ्येव चक्रा

७ १९६०

न तिष्ठन्ति न नि मिपन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति ।

अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि बृह रथ्येव चक्रा

८

रात्रीभिरम्मा अहमिदशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुर्गन्मिमीयात् ।

दिवा पृथिव्या मिथुना सर्वन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि

९

आ धा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि ।

उप बर्बहि वृषभाथ बाहु—मन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्

१० १९६३

किं आतासद् यदेनाथं भवति किमु स्वसा यन्निकृतिर्निगच्छात् ।

काममूता बहुभूतद् रंपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि ११

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पिपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।

अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते आता सुभगे वष्टयेतत् १२ १९६५

बतो बंतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम ।

अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् १३

अन्यम् षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।

तस्या वा त्वं मन इच्छा स वा तवा ऽर्धा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् १४ १९६७

॥ ३०२ ॥ (ऋ० १०।१४।१-५, ७-९, १३-१६) +

विस्वतो यमः । यमः, ७-९ लिङ्गोक्ताः, पितरो वा । त्रिष्टुप्; १३-१४, १६ अनुष्टुप्; १५ बृहती ।

परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।

वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य १

यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।

यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्याइ अनु स्वाः २

मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ।

याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवा न्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति ३ १९७०

इमं यम प्रस्तरमा हि सीदा ऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।

आ त्वा मन्त्राः कविश्रस्ता वह न्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ४

अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।

विर्वस्वन्तं हुवे यः पिता ते ऽस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्य ५

प्रेहि प्रेहि पृथिभिः पूव्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।

उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ७

सं गच्छस्व पितृभिः सं युमेनेष्टापूतेन परमे व्योमन् ।

हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः ८

अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।

अहोभिरङ्गिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै ९ १९७५

यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ।

यमं ह यज्ञो गच्छत्यभिदूतो अरकृतः १३ १९७६

यमाय धृतवद्भविर्जुहोतु प्र च तिष्ठत ।	
स नो देवेष्वा यमद् दीर्घमायुः प्र जीवसे	१४
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।	
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः	१५
त्रिकटुकेभिः पतति पळुर्वीरेकमिद् बृहत् ।	
त्रिष्टुब् गांयत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आर्हिता	१६ १९७९

॥ ३०३ ॥ (ऋ० १०।१३५।१-७)

कुमारो यामायनः । यमः । अनुष्टुप् ।

यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबन्ते यमः ।	
अत्रा नो विस्पतिः पिता पुराणो अनु वेनति	१ १९८०
पुराणो अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामुया ।	
असूयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः	२
यं कुमारं नवं रथं मचक्रं मनसाकृणोः ।	
एकेषं विश्वतः प्राञ्च मर्षयन्नधि तिष्ठसि	३
यं कुमारं प्रावर्तयो रथं विप्रैभ्यस्परि ।	
तं सामानु प्रावर्ततु समितो नाव्याहितम्	४
कः कुमारमजनयद् रथं को निरवर्तयत् ।	
कः स्वित् तदुद्य नो ब्रूयादनुदेयी यथाभवत्	५
यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।	
पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम्	६ १९८५
इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते ।	
इयमस्य धम्यते नाळी रथं गीर्भिः परिष्कृतः	७ १९८६

॥ ३०४ ॥ (ऋ० १०।१५।१-१४)

शङ्खो यामायनः । पितरः । त्रिष्टुप्, ११ जगती ।

उदीरतामवर उत परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।	
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	१
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।	
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विश्व	२ १९८८

आहं पितृन्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।	
बर्हिषदो ये स्वधयां सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः	३
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वा—गिमा वो हव्या चक्रमा जुषध्वम् ।	
त आ गतावसा शतमेना—ऽथा नः शं योररपो दधात	४ १९९०
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।	
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्व—धि ब्रुवन्तु तैऽवन्त्वस्मान्	५
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्ये—मं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।	
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करांम	६
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयि धत्त दाशुषे मर्त्याय ।	
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोजिं दधात	७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।	
तेभिर्यमः संरराणो हवीष्यु—शन्नशङ्किः प्रतिक्राममत्तु	८
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमं तष्टासो अर्केः ।	
आग्ने याहि सुविदत्रैर्भिर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसङ्किः	९ १९९५
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।	
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्धर्मसङ्किः	१०
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।	
अत्ता हवीषि प्रयतानि बर्हिष्य—था रयि सर्ववीरं दधातन	११
त्वमग्न ईळितो जातवेदो ऽवाङ्मुव्यानि सुरभीणि कृत्वी ।	
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अश्व—न्नद्धि त्वं देव प्रयता हवीषि	१२
ये चेह पितरो ये च नेह योश्च विद्म यो उ च न प्रविद्म ।	
त्वं वैत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व	१३
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।	
तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वै कल्पयस्व	१४ २०००
॥ ३०५ ॥ (अथर्व० १८।१।६, १३-१४, १७, ३९-४९, ५१-५३, ५७-६१)×	
अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः, ४० रुद्रः, ४१-४३ सरस्वती, ४४-४६, ५१-५२ पितरः (पितृमेघः) ।	
त्रिष्टुप्; १४, ४९ अरिकः; ५७, ६१ अनुष्टुप्; ५२ पुरोबृहती ।	
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिर्मावतो भामिनो दुर्हणायून् ।	
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भूत्यामूणधत् स जीवात्	६ २००१

न ते नार्थं यम्यत्राहमस्मि न ते तनूं तन्वाडे सं पृच्छ्याम् ।	
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्टयेत्तत्	१३
न वा उ ते तनूं तन्वाडे सं पृच्छ्यां पापमोहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।	
असंयदेतन्मनसो हृदो मे भ्राता स्वसुः शयने यच्छयीय	१४
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।	
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवनं आपितानि	१७
स्तेगो न क्षामत्येषि पृथिवीं मही नो वाता इह वान्तु भूमौ ।	
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम्	३९ १००५
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहन्तुमुग्रम् ।	
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्सत् ते नि वपन्तु सेन्यम्	४०
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।	
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्	४१
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।	
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ वैहस्मे	४२
सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधार्मिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।	
सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि	४३
उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।	
असुं य ईयुरवृका क्रतुज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	४४ १०१०
आहं पितृन्सुविदत्रां अविस्ति नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।	
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः	४५
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वीसो ये अपरास ईयुः ।	
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु	४६
मार्तली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्वृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ।	
यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	४७
स्वादुष्किलायं मधुमां उतायं तीव्रः किलायं रसवां उतायम् ।	
उतो न्वस्य पपिवासमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु	४८
परेयिवासं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पृशानम् ।	
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत	४९ १०१५

बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वाग्निमा वो हव्या चक्रमा जुषध्वम् ।

त आ गतावसा शतमेनाधा नः शं योररपो दधात

५१

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे ।

मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता कराम

५२

त्वष्टा दुहिते वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति ।

यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश

५३

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्यणैर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।

उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

५४

द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि ।

द्युमान् द्युमत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे

५७ २०२०

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।

तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम

५८

अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गृहीह यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।

विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन् बर्हिष्या निषद्य

५९

इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।

आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषो मादयस्व

६०

इत एत उदारुहन् दिवस्पृष्ठान्यारुहन् ।

प्र भूर्जयो यथा पथा द्यामङ्गिरसो युयुः

६१ २०२४

॥ ३०६ ॥ (अथर्व० १८।२।१-६०)

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः; ४, ३४ अग्निः; ५ जातवेदाः; २९ पितरः (पितृमेधः) । त्रिष्टुप्; १-३, ६,

१४-१८, २०, २२-२३, २५, ३०, ३४, ३६, ४६, ४८, ५०-५२, ५६ अनुष्टुप्; ४, ७, ९, १३ जगती;

५, २६, ४९, ५७ भुरिक्; १२ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २४ त्रिपदा समविषमाऽऽर्षी

गायत्री; ३७ विराड् जगती; ३८-४४ अर्षी गायत्री; (४०, ४२-४४ भुरिक्)

४५ ककुम्भती अनुष्टुप् ।

यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः । यमं हयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः १ २०२५

यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत ।

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः

२

यमाय धृतवत् पयो राज्ञे हविर्जुहोतन ।

स नो जीवेष्वा यमेद् दीर्घमायुः प्र जीवसे

३ २०२६

मैनमग्ने वि देहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।	
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमनें प्र हिणुतात् पितरूपं	४
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमनें परि दत्तात् पितृभ्यः ।	
यदो गच्छात्यसुनीतिमेतामथ देवानां वशनीर्भाति	५
त्रिकद्रुकेभिः पवते षड्वीरेकमिद् बृहत् ।	
त्रिष्टुब् गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आपिता	६ २०३०
सूर्यं चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवं च गच्छ पृथिवीं च धर्मभिः ।	
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः	७
अजो भागस्तपस्वस्तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अचिः ।	
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहेन सुकृतां लोके	८
यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणाभि दिवमन्तरिक्षम् ।	
अजं यन्तमनु ताः समृण्वतामथेतराभिः शिवतमाभिः शृतं कृधि	९
अवं सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वधावान् ।	
आयुर्वसान् उप यातु शेषः सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः	१०
अतिं द्रव श्वानो सारमेयो चतुरक्षौ श्वलो साधुना पथा ।	
अघा पितृन्सुविदत्रा अपीहि यमेन ये सधमादं मदन्ति	११ २०३५
यौ ते श्वानो यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिपदी नूचक्षसा ।	
ताभ्यां राजन् परि धेह्येन स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि	१२
उरूणसार्वसुतपावदुम्बलो यमस्य दूतो चरतो जनां अनु ।	
तावस्मभ्यं दृश्ये सूर्याय पुनर्दातामसुमधेह भद्रम्	१३
सोम एकैभ्यः पवते घृतमेक उपासते ।	
येभ्यो मधु प्रधावति तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१४
ये चित् पूर्वं क्रतसाता क्रतजाता क्रतावृधः ।	
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजा अपि गच्छतात्	१५
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ग्युधुः ।	
तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१६ २०४०
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरांसो ये तनूत्यजः ।	
ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१७ २०४१

सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम् ।	
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्	१८
स्योनासै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी । यच्छास्मै शर्म सप्रथाः	१९
असंबाधे पृथिव्या उरौ लोके नि धीयस्व ।	
स्वधा याश्चकृषे जीवन् तास्ते सन्तु मधुश्रुतः	२०
ह्वयामि ते मनसा मन इहेमान् गृह्णोऽपं जुजुषाण एहि ।	
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन स्योनास्त्वा वाता उप वान्तु शग्माः	२१ २०४५
उत् त्वा बहन्तु मरुत उदवाहा उदुप्रुतः । अजेन कृण्वन्तः शीतं वर्षेणोक्षन्तु बालिति	२२
उदहमायुरायुषे क्रत्वे दक्षाय जीवसे ।	
स्वान् गच्छतु ते मनो अधा पितृरूपं द्रव	२३
मा ते मनो मासोर्माङ्गानां मा रसस्य ते ।	
मा ते हास्त तन्वः किं चनेह	२४
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही ।	
लोकं पितृषु विच्वैधस्व यमराजसु	२५
यत् ते अङ्गमर्तिहितं पराचैरपानः प्राणो य उ वा ते परेतः ।	
तत् ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वेशयन्तु	२६ २०५०
अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परि ग्रामादितः ।	
मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः प्रचेता अस्मन् पितृभ्यो गमयां चकार	२७
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा अहुतादश्वरन्ति ।	
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्ठानस्मात् प्र धमाति युज्ञात्	२८
सं विशन्तिवह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्त आयुः ।	
तेभ्यः शकेम हविषा नक्षमाणा ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरुचीः	२९
यां ते धेनुं निपृणामि यमुं ते क्षीर औदनम् ।	
तेना जनस्यासो भर्ता योऽत्रासदजीवनः	३०
अश्वावर्ती प्र तर या सुशेवार्क्षीकै वा प्रतरं नवीयः ।	
यस्त्वा जघान वध्यः सो अस्तु मा सो अन्यद् विदत भागधेयम्	३१ २०५५
यमः परोऽवरो विवस्वान् ततः परं नार्ति पश्यामि किं चन ।	
यमे अध्वरो अधि मे निविष्टो भुवो विवस्वानन्वाततान	३२ २०५६

अपाङ्गूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सर्वर्णामदधुर्विवस्वते । उताश्विनावभरद् यत् तदासीदजहादु द्वा मिथुना संरण्यूः ये निखाता ये परोमा ये दुग्धा ये चोद्धिताः ।	३३
सर्वास्तान् आ वह पितृन् हविषे अत्तवे ये अग्निदग्धा ये अनेग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते । त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधिति जुपन्ताम् शं तप माति तपो अग्ने मा तन्वैः तपः ।	३४
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्वरः ददाम्यस्मा अवसानमेतद् य एष आगन् मम चेदभूदिह । यमश्चिकित्वान् प्रत्येतदाह ममैष राय उप तिष्ठतामिह	३६ २०६०
हमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा अप्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा वीक्षमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा समिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासाति । शते शरत्सु नो पुरा अमांसि मात्रां स्वरगामायुष्मान् भूयासम् । यथापरं न मासाति शते शरत्सु नो पुरा । प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृश्ये सूर्याय । अपरिपरेण पथा यमराज्ञः पितृन् गच्छ ये अग्रवः शशमानाः परेषुर्हित्वा द्वेषांस्त्रयन्त्यवन्तः । ते द्यामुदित्याविदन्त लोकं नाकस्य पृष्ठे अधि दीभ्यानाः उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा । तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् । य आक्षियन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम	३७ २०६५ ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ २०७० ४७ ४८ ४९ २०७३

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् ।

माता पुत्रं यथा सिचाम्येनिं भूम ऊर्णहि

५०

इदमिद् वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम् ।

जाया पतिमिव वाससाभ्येनिं भूम ऊर्णहि

५१ २०७५

अभि त्वौर्णोमि पृथिव्या मातुर्वक्षेण भद्रया ।

जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि

५२

अग्नीषोमा पथिकृता स्योन देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम् ।

उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहत्यञ्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम्

५३

पूषा त्वेतश्चावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।

स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योऽग्निदेवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः

५४

आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।

यत्रासते सुकृतो यत्र त इयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु

५५

इमौ युनज्मि ते बह्वी असुनीताय वोढवे ।

ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात्

५६ २०८०

एतत् त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूह यदिहाविभः पुरा ।

इष्टापूर्तमनुसंक्राम विद्वान् यत्र ते दत्तं बहुधा विबन्धुषु

५७

अग्नेर्वम परि गोमिर्व्ययस्व सं प्रोर्णेष्व मेदसा पीवसा च ।

नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दुधृग् विधक्षन् परीङ्क्षयाति

५८

दुण्डं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन ।

अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम

५९

धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।

समार्गमाय वसु भूरि पुष्टमर्वाङ् त्वमेह्युप जीवलोकम्

६० २०८४

॥ ३०७ ॥ (अथर्व० १८।३।१, ३-४९, ५२, ५४, ५६, ५८-६६, ६८-७३) ×

अथर्वी । यमः, ४४, ४६ मन्त्रोक्ताः, ५-६ अग्निः, ५४ इन्द्रः, ५६ आपः (पितृमेधः) । त्रिष्टुप् ; ४, ८, ११, २३
सतः पङ्क्तिः, ५ त्रिपदा निचृद्वायत्री; ६, ५६, ६८, ७०, ७२ अनुष्टुप् (५६ आर्षी) ; १८, २५-२९,
४४, ४६ जगती (१८ भुरिक्, २९ विराट्) ; ३० पञ्चपदाऽतिजगती; ३१ विराट् शकरी;
३२-३५, ४७, ४९, ५२ भुरिक्; ३६ एकावसानाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३७ एकाव-
सानाऽऽसुरी गायत्री; ३९ परा त्रिष्टुप् पङ्क्तिः; ५४ पुरोऽनुष्टुप्;
५८ विराट्; ६० व्यवसाना षट्पदा जगती;
६४ भुरिक् पथ्यापङ्क्तिः;
६९, ६१ उपरिष्ठाद् बृहती ।

इयं नारीं पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्यं प्रेतम् ।

धर्मं पुराणमनुपालयेन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह वैहि

१ २०८५

अपश्यं युवति नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् ।

अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम्

३

प्रजानत्यग्निं जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती ।

अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमग्निं रोहयैनम्

४

उष द्यामुष वेतसमवचरो नदीनाम् । अग्ने पित्तमपामसि

५

यं त्वमग्ने समदहस्तम् निर्वीषया पुनः ।

क्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्कशा

६

इदं त एकं पर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विश्वस्व ।

संवेशने तन्वाङ् चारुणेभि प्रियो देवानां परमे सधस्थे

७ २०९०

उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिले सधस्थे ।

तत्र त्वं पितृभिः संविद्वानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधार्भिः

८

प्र च्यवस्व तन्वै १ सं भरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम् ।

मनो निर्विष्टमनुसंविशस्व यत्र भूर्मेर्जुषसे तत्र गच्छ

९

वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन ।

चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदंष्टिं वर्धन्तु

१०

वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्यनक्त्वासन् ।

रयि मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्याना मापः पवनैः पुनन्तु

११ २०९४

मित्रावरुणा परि मामधातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु । वचो म इन्द्रो न्यनिक्तु हस्तयोर्जरदष्टि मा सविता कृणोत यो ममारं प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयार्थं प्रथमो लोकमेतम् । वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत परां यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः । दत्तो अस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं दधात कर्णः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोमर्थ्यर्चनानाः । विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव । शर्दिनो अत्रिरग्रभीक्ष्ममोभिः सुसंशासः पितरो मृडता नः कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः । आप्यार्यमानाः प्रजया धनेनार्धं स्याम सुरभयो गृहेषु अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते । सिन्धौरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृह्णते यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयंशसो हि भूत । ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदुत्रा विदथे हूयमानाः ये अत्रयो अङ्गिरसो नवगवा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः । दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्यासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्तासो अग्न क्रतमांशशानाः । शुचीर्दयन् दीर्घ्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपं व्रन् सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमेन्तः । शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वी गव्यां परिषदं नो अक्रन् आ यूथेवं क्षुमति पश्वो अरुयद् देवानां जनिमान्त्युग्रः । मतीसश्चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः अकर्म ते स्वपसो अभूम क्रतमवसन्नृषसो विभातीः । विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ	१२ २०९५ १३ १४ १५ १६ १७ २१०० १८ १९ २० २१ २२ २१०५ २३ २४ २५ २१०८
---	--

- धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २६
- अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २७ २११०
- सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २८
- धर्ता ह त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्व भानुं संविता धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २९
- प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३०
- दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३१
- प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३२ २११५
- उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३३
- ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३४
- ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिबोपरि ।
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २५
- धर्तासि धरुणोऽसि वंसंगोऽसि ॥ ३६ ॥ उदुपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि ३७ २१२०
 इतश्च मामुतश्चावतां यमे इव यतमाने यदैतम् ।
- प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तो आ सीदतां स्वर्गं लोकं विदानी ३८
 स्वासंस्थे भवतमिन्देवे नो युजे वां ब्रह्म पूज्यं नमोभिः ।
- वि श्लोक एति पथ्येव सूरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतांस एतत् ३९
 त्रीणि पदानि रूपो अन्वरोहचतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन ।
- अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावमि सं पुनाति ४० २१२३

- देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत ।
 बृहस्पतिर्यज्ञमृतनुत ऋषिः प्रियां यमस्तन्वमा रिरैच ४१
 त्वमग्न ईदितो जातवेदोऽवाङ्मह्यानि सुरभीणि कृत्वा ।
 प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ४२ २१२५
 आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयि धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
 पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जि दधात ४३
 अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदाःसदः सदत सुप्रणीतयः ।
 अतो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयि च नः सर्ववीरं दधात ४४
 उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
 त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ४५
 ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सौमपीथं वसिष्ठाः ।
 तेभिर्यमः सैरराणो हवींष्युशन्नशङ्घिः प्रतिक्राममन्तु ४६
 ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमतष्टासो अकैः ।
 आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभिर्धर्मसाङ्घिः ४७ २१३०
 ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेण ।
 आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् परैः पूर्वैर्ऋषिभिर्धर्मसाङ्घिः ४८
 उप सप मातरं भूमिमेतामुर्व्यचंसं पृथिवीं सुशेवाम् ।
 ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वां पातु प्रपथे पुरस्तात् ४९
 उत् ते स्तन्नामि पृथिवीं त्वत् परीमं लोमं निदधन्मो अहं रिषम् ।
 एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोत ५०
 अथर्वा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाविभर्वाजिनीवते ।
 तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम् ५१
 पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं पर्यः ।
 अपां पर्यसो यत् पर्यस्तेन मा सह शुम्भतु ५२ २१३५
 सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूतेन परमे व्योमिन् ।
 हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः ५३
 ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुर्वन्तरिक्षम् ।
 तेभ्यः स्वराडसुनीतिनो अद्य यथावशं तन्वाः कल्पयाति ५४ २१३७

शं ते नीहारो भवतु शं ते प्रुष्वारं शीयताम् ।
 शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।
 मण्डूक्यं१७सु शं भुव इमं स्व१मिं शमय ६०
 विवस्वान् नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामो जीरदानुः सुदानुः ।
 इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्चवन्मयस्तु पुष्टम् ६१
 विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युर्मृतं न ऐतु ।
 इमान् रक्षतु पुरुषाना जरिम्णो मो ष्वेषामसवो यमं गुः ६२ २१४०
 यो दुध्रे अन्तरिक्षे न मृद्धा पितृणां कविः प्रमतिर्मतीनाम् ।
 तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धातु ६३
 आ रोहत दिवमुत्तमामृषयो मा विभीतन ।
 सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हविरगन्म ज्योतिरुत्तमम् ६४
 प्र केतुना बृहता भात्यग्निरा रोदसी वृषभो रौरवीति ।
 दिवश्चिदन्तादुपमासुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध ६५
 नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
 हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं क्षुरण्युम् ६६
 अपूपार्पितान् कुम्भान् यास्ते देवा आधारयन् ।
 ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः ६८ २१४५
 यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावन्तीः ।
 तास्ते सन्तु विश्वीः प्रम्बीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् ६९
 पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि ।
 यथा यमस्य सादन आसति विदथा वदन ७०
 आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्वरो अस्तु ते ।
 शरीरमस्य सं द्वायैनं धेहि सुकृतासु लोके ७१
 ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरश्च ये ।
 तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु शतधारा व्युन्दती ७२
 एतदा रोह वयं उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते ।
 अभि प्रेहि मध्यतो माप हास्याः पितृणां लोकं प्रथमो यो अत्र ७३ २१५०

॥ ३०८ ॥ (अथर्व० १८।४।१-८९)

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः, ८१ पितरः, ८८ अग्निः, ८९ चन्द्रमाः । त्रिष्टुप् ; १, ४, ७, १४, ३६, ६० भुरिक् ; २, ५, ११, २९, ५०-५१, ५८ जगती ; ३ पञ्चपदा भुरिगतिजगती ; ६, ९, १३ पञ्चपदा शकरी (९ भुरिक्, १३ ज्यवसाना) ; ८ पञ्चपदाऽतिशकरी ; १२ महाबृहती ; १६-२४ त्रिपदा भुरिङ्महाबृहती ; २६, ३३, ४३ उपरि-
ष्टादबृहती (२६ विराट्) ; २७ याजुषी गायत्री ; २५, ३१-३२, ३८, ४१-४२, ५५-५७, ५९, ६१ अनुष्टुप् (५६ ककुम्मती) ; ३९, ६२-६३ आस्तारपङ्क्तिः ; (३९ पुरोविराट्, ६२ भुरिक्, ६३ खराट्) ; ४९ अनुष्टुप्गर्भा त्रिष्टुप् ; ५३ पुरोविराट् सतः पङ्क्तिः ; ६६ त्रिपदा खराट् गायत्री ; ६७ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप् ; ६८, ७१ आसुर्यनुष्टुप् ; ७२-७४, ७९ आसुरी पङ्क्तिः ; ७५ आसुरी गायत्री ; ७६ आसुर्युष्णिक् ; ७७ दैवी जगती ; ७८ आसुरी त्रिष्टुप् ; ८० आसुरी जगती ; ८१ प्राजा-पत्याऽनुष्टुप् ; ८२ साम्नी बृहती ; ८३-८४ साम्नी त्रिष्टुप् ; ८५ आसुरी बृहती ; (६७-६८-७१-८६ एकावसाना) ; ८६-८७ चतुष्पदा उष्णिक् ; (८६ ककुम्मती, ८७ शंकुमती) ; ८८ ज्यवसाना पथ्यापङ्क्तिः ; ८९ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः ।

आ रोहत् जनित्रीं जातवेदसः पितृयाणैः सं व आ रोहयामि ।

अवाङ्द्व्येषितो हव्यवाह ईजानं युक्ताः सुकृतां भक्त लोके १

देवा यज्ञमुतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं सुचो यज्ञायुधानि ।

तेभिर्याहि पृथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् २

ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति ।

तेभिर्याहि पृथिभिः स्वर्गं यत्रादित्या मधु भक्षयन्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ३

त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः ।

स्वर्गा लोका अमृतैर्न विष्टा इषमूर्जं यजमानाय दुहाम् ४

जुह्वद्वाधार द्यामुपभृदन्तरिक्षं ध्रुवा दधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम् ।

प्रतीमां लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः कामैकामं यजमानाय दुहाम् ५ २१५५

ध्रुव आ रोह पृथिवीं विश्वभोजसमन्तरिक्षमुपभृदा क्रमस्व ।

जुहु द्यां गच्छ यजमानेन साकं सुवेण वत्सेन दिशः प्रपीनाः सर्वा धुक्ष्वाहणीयमानः ६

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति ।

अत्राद्धुर्यजमानाय लोकं दिशो भूतानि यदकल्पयन्त

७ २१५६

अङ्गिरसामयनं पूर्वी अग्निरादित्यानामयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं दक्षिणाग्निः ।

महिमानमग्नेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्वं उप याहि शम्भः ८

पूर्वी अग्निर्वा तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात् तपतु गार्हपत्यः ।

दक्षिणाग्निष्टे तपतु शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो अन्तरिक्षाद् दिशोदिशो

अग्ने परि पाहि घोरात् ९

यूयमग्ने शतमाभिस्तनूभिरीजानमभि लोकं स्वर्गम् ।

अश्वा भूत्वा ष्टष्टिवाहो बहाथ यत्र देवैः सधमादं मदन्ति १० २१६०

शमग्ने पश्चात् तप शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात् तपैनम् ।

एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतांस्तु लोकं ११

शमग्रयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।

शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन् १२

यज्ञ एति विततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम् ।

तमग्रयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।

शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन् १३

ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नार्कस्य पृष्ठाद् दिवमुत् पतिष्यन् ।

तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिषीमान्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः १४

अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु ।

हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमयनं हुतानाम् १५ २१६५

अपूपवान् क्षीरवांश्चरुहे सीदतु ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ १६

अपूपवान् दधिवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १७

अपूपवान् द्रप्सवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १८

अपूपवान् घृतवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० १९

अपूपवान् मांसवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २० २१७०

अपूपवान् भ्रवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २१

अपूपवान् मधुमांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २२

अपूपवान् रसवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २३

अपूपवान् पर्वांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये० २४ २१७४

अपूपार्पिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् ।

ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः

२५ २१७५

यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।

तास्ते सन्तुदूग्धीः प्रग्धीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्

२६

अक्षितिं भूयसीम्

२७

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु घामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।

समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

२८

शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षस्ते अभि चक्षते रयिम् ।

ये पूणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुहते दक्षिणां सप्तमातरम्

२९

कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्विलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये ।

ऊर्जं मदन्तीमदिति जनेष्वग्रे मा हिंसीः परमे व्योमिन्

३० २१८०

एतत् ते देवः संविता वासो ददाति भर्तवे ।

तत् त्वं यमस्य राज्ये वासानस्ताप्यं चर

३१

धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत् ।

तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुषं जीवति

३२

एतास्ते असौ धेनवः कामदुधा भवन्तु ।

एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्र

३३

एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते ।

तिलवत्सा ऊर्जमस्यै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः

३४

वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम् ।

स विभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् विभर्ति पिन्वमानः

३५ २१८५

सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्य पृष्ठे ।

ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधार्भिः

३६

इदं कसाम्बु चयनेन चितं तत् संजाता अवं पश्यतेत ।

मत्स्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु

३७

इहैवैधि धनसन्निरिहचित्त इहक्रतुः । इहैधि वीर्यवित्तरो वयोधा अपराहतः

३८

पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।

स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु

३९ २१८९

आपो अग्निं प्र हिंणुत पितॄरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुपन्ताम् ।	
आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रथिं सर्ववीरं नि यच्छान्	४० २१९०
समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम् । स वेदं निहितान्निधीन् पितॄन् परावतो गतान् ४१	
यं ते मन्थं यमोदुनं यन्मांसं निपृणामि ते । ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः ४२	
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।	
तास्ते सन्तुद्भवीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्	४३
इदं पूर्वमपरं नित्यान् येना ते पूर्वं पितरः परेताः ।	
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वा वहन्ति सुकृतांस्तु लोकम्	४४
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमानि ।	
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वरिं दातु	४५ २१९५
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दाक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।	
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यसे	४६
सरस्वति या सुरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।	
सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि	४७
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वैश्यामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।	
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषुः सं भवन्तु	४८
आ प्र च्यधेथामप तन्मृजेथां यद् वामभिमा अत्रोचुः ।	
अस्मादेतमघ्न्यौ तद् वशीयो दातुः पितृष्विहभोजनौ मम	४९
एयमगन् दाक्षिणा भद्रतो नो अनेन दुत्ता सुदुधा वयोधाः ।	
यौवने जीवानुपपृश्चती जरा पितृभ्यं उपसंपराणयादिमान	५० २२००
इदं पितृभ्यः प्र भरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि ।	
तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन् प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम्	५१
एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ।	
यथापरु तन्वैः सं भरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि	५२
पर्णो राजापिधानं चरूणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन् ।	
आयुर्जिवेभ्यो विदधद् दीर्घायुत्वार्यं शतशारदाय	५३
ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मान्नामार्धपत्यं जगाम ।	
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धातु	५४ २२०४

यथा यमाय हर्म्यमवपन् पञ्च मानवाः ।

एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूरयोऽसत

५५ २२०५

इदं हिरण्यं बिभृहि यत् ते पिताविभः पुरा ।

स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृङ्क्षु दक्षिणम्

५६

ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः ।

तेभ्यो घृतस्य कुल्यैति मधुधारा व्युन्दुती

५७

वृषा मतीनां पंचते विचक्षणः सरो अहो प्रतरीतोषसां दिवः ।

प्राणः सिन्धूनां कलशो अचिक्रदुदिन्द्रस्य हार्दिमाविशन् मनीषया

५८

त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि षंछुक्र आततः ।

सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे

५९

प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरः ।

मर्ये इव योषाः समर्षसे सोमः कलशे शतर्यामना पथा

६० २२१०

अक्षन्मीमदन्त हव प्रियां अधूषत । अस्तोपत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे

६१

आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पृथिभिः पितृयाणैः ।

आयुरस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम्

६२

परा यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पृथिभिः पूर्याणैः ।

अघा मासि पुनरा यात नो गृहान् हविरत्तु सुप्रजसः सुवीराः

६३

यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः ।

तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम्

६४

अभूद् दूतः ग्रहितो जातवेदाः सायं न्यहं उपवन्द्यो नृभिः ।

प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवीषि

६५ २२१५

असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अभ्येनि भूम ऊर्णुहि

६६

शुभ्रमेन्तां लोकाः पितृषदना पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि

६७

येऽस्माकं पितरस्तेषां बहिरसि ॥ ६८ ॥ उर्दुत्तमं वरुण०+

६९

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् यैः समामे बध्यते यैर्व्यामे ।

अघा जीवेम शरदं शतानि त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः

७०

अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा नमः ॥ ७१ ॥ सोमाय पितृमते स्वधा नमः

७२ २२२२

पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः ॥ ७३ ॥ यमाय पितृमते स्वधा नमः	७४
एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु	७५ २२२५
एतत् ते ततामह स्वधा ये च त्वामनु	७६
एतत् ते तत स्वधा ॥ ७७ ॥ स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः	७८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः ॥ ७९ ॥ स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः	८० २२३०
नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय	८१
नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे	८२
नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै	८३
नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत् स्योनं तस्मै	८४
नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः	८५ २२३५
येऽत्र पितरः पितरो येऽत्र यूयं स्थ युष्माँस्तेऽनु यूयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ	८६
य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः । अस्माँस्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयाम्	८७
आ त्वाग्र इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।	
यद् घ सा ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि । इपं स्तोतृभ्य आ भर	८८
चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।	
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी	८९ २२३९

॥ ३०९ ॥ (क्र० ८।३।११-४)

मनुर्वैवस्वतः । यक्षः, यजमानश्च । गायत्री ।

यो यजाति यजात इत् सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत्	१ २२४०
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् । पादित् तं शक्रो अंहसः	२
तस्य द्युमाँ असद् रथो देवजृत् स शशुवत् । विश्वा वन्वर्त्तमित्रिया	३
अस्य प्रजावती गृहे ऽसंश्रन्ती दिवेदिवे । इळा धेनुमती दुहे	४ २२४३

॥ ३१० ॥ (क्र० १०।१८३।१-२)

प्रजावान् प्राजापत्यः । १ यजमानः; २ यजमानपत्नी । त्रिष्टुप् ।

अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम् ।	
इह प्रजामिह रयि रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम	१
अपश्यं त्वा मनसा दीर्घ्यानां स्वायां तनू ऋत्वे नाधमानाम् ।	
उप मामुच्चा युवतिर्विभूयाः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकामे	२ २२४५

॥ ३११ ॥ (अथर्व० ७।९।१-८) [यज्ञः ।] +

॥ ३१२ ॥ (अथर्व० १९।१।१-३)

ब्रह्मा । यज्ञः; चन्द्रमाश्च । १-२ पथ्यावृहती, ३ पङ्क्तिः ।

सं सं संवन्तु नद्यः१ सं वाताः सं पतत्रिणः ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि १

इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्त्रावणा उत ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि २

रूपंरूपं वयोवयः सुरभ्यैनं परिं ष्वजे ।

यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि ३ २२४८

॥ ३१३ ॥ (अथर्व० १९।५।१-६)

ब्रह्मा । यज्ञः, बहुदेवत्यम् । त्रिष्टुप्, २ पुरोऽनुष्टुप्; ३ चतुष्टुप्दाऽतिशकरी; ५ भुरिक् ।

धृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती ।

श्रोत्रं चक्षुः प्राणोच्छिन्नो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः १

उपास्मान् प्राणो ह्वयतामुप वयं प्राणं हवामहे ।

वर्चो जग्राह पृथिव्यन्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता २ २२५०

वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ।

यशसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ३

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मा सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।

पुरः कृणुध्वमार्यसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दैहता तम् ४

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि ।

इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः ५

ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम् ।

इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् । ६ २२५४

॥ ३१४ ॥ (अथर्व० १९।५।२) ❀

ब्रह्मा । अग्निः (यज्ञः) । त्रिष्टुप् ।

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।

अग्निष्टद् विश्वादा पृणातु विद्वान्तसोमस्य यो ब्राह्मणो आविवेश २ २२५५

+ दै० [इन्द्रः] ३२०-३२७ ।

❀ अथर्व० १९।५।१-३; = दै० [अग्निः] १२१४, १४९४-१४९५ ।

॥ ३१५ ॥ (अथर्व० ७।१९।१)

अथर्वी । वेदी । भुरिक् । त्रिष्टुप् ।

परिं स्तुणीहि परिं धेहि वेदिं मा जग्मि मोषीरमुया शयानाम् ।

होतृषदं हरितं हिरण्यं निष्का एते यजमानस्य लोके

१ २२५६

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।१६।१३-१४)

कण्वो घौरः । (अग्निः) यूपः । प्रगाथः [विषमा वृहती+समा सतोवृद्धति] (१३ उपरिष्ठाद्वृहती ।

ए. प्रा. २।२ चरणच्छेदः) ।

ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न संविता ।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाधद्भिर्विह्वयामहे

१३

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समन्त्रिणं दह ।

कृधी न ऊर्ध्वञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुर्वः

१४ २२५८

॥ ३१७ ॥ (ऋ० ३।८।१-१०)

गाथिनो विश्वामित्रः । यूपः, ६-१० यूपाः, ८ विश्वे देवा वा । त्रिष्टुप्; ३, ७ अनुष्टुप् ।

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना देव्येन ।

यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे

१

समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम् ।

आरे अस्मदमतिं बाधमान उच्छ्रयस्व महते सार्भगाय

२ २२६०

उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन् पृथिव्या अधि ।

सुमिती मीयमानो वर्चो धा यज्ञवाहसे

३

युवा सुवासाः परिर्वीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जार्यमानः ।

तं धीरांसः कवय उन्नयन्ति स्वाध्योऽे मनसा देवयन्तः

४

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्थ आ विदथे वर्धमानः ।

पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देव्या विप्र उदियति वाचम्

५

यान् वो नरो देवयन्तो निमिष्यु—र्वनस्पते स्वधितिर्वा तुतक्ष ।

ते देवासुः स्वरवस्तस्थिवांसः प्रजावदस्मे दिधिषन्तु रत्नम्

६

ये वृक्षणासो अधि क्षमि निर्मितासो यतसृचः ।

ते नो व्यन्तु वार्य देवत्रा क्षेत्रसाधंसः

७ २२६५

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।

सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्

८ २२६६

हंसा इव श्रेणिशो यतानाः शुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः ।

उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद् देवा देवानामपि यन्ति पार्थः

९

शृङ्गाणीवेच्छुङ्गिणां सं ददृश्रे चषालवन्तः स्वरवः पृथिव्याम् ।

वाघाङ्गिर्वा विहवे श्रोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु

१० २२६८

॥ ३१८ ॥ (वा० य० ६।२-३, ६)

(यूषः ।)

अग्नेरीरसि स्वावेश उन्नेतुणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता

मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।

धामग्रेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृहीः

२

या ते धामान्युश्मसि गर्मधै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।

अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।

ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ।

ब्रह्म दृह क्षत्रं दृहायुर्दृह प्रजां दृह

३ २२७०

परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो व्ययन्तां परीमं यजमानं रायो मनुष्याणाम् ।

दिवः सूनुरस्येष ते पृथिव्यौल्लोक आरण्यस्ते पशुः

६ २२७१

॥ ३१९ ॥ (वा० य० २१।४६)

(यूषः ।)

होता यक्षद् वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रभिष्ठया रश्नयाधित ।

यत्राश्विनोश्छागस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया

धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र

सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि यत्र सवितुः प्रिया धामानि

यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः प्रिया पार्थांसि यत्र देवानामाज्यपानां

प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि तत्रैतान् प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपावस्रक्षद्

रभीयस इव कृत्वी करदेवं देवो वनस्पतिर्जुषतां हविर्होतयज

४६ २२७२

॥ ३२० ॥ (वा० य० २८।२०)

(यूषः ।)

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत् ।

दिवमग्नेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृहीद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज

२० २२७३

२२ दै. [आयुर्वेद०]

॥ ३२१ ॥ (अथर्व० ७।९।८।१)

अथर्वा । इन्द्रः, विश्वे देवाः (हविः) । विराट् त्रिष्टुप् ।

सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।

सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१ २२७४

॥ ३२२ ॥ (ऋ० १०।१३।१-५)

आङ्गिर्हविर्धानः विवस्वानादित्यो वा । हविर्धाने × । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

युजे वां ब्रह्म पुन्यं नमोभिर्वि श्लोकं एतु पृथयेव सुरैः ।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः

१ २२७५

यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तः ।

आ सीदतं स्वर्गं लोकं विदानि स्वासस्थे भवतमिन्द्रदे नः

२

पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेमि ब्रतेन ।

अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाम्नावधि सं पुनामि

३

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै कर्ममृतं नावृणीत ।

बृहस्पतिं यज्ञमकुण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत्

४

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतमृतम् ।

उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुण्यतः

५ २२७६

॥ ३२३ ॥ (ऋ० १।२८।५-८)

आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । ५-६ उलूखलं, ७-८ उलूखलमुसले ।

५-६ अनुष्टुप्, ७-८ गायत्री ।

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे ।

इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः

५ २२८०

उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।

अथो इन्द्राय पार्तवे सुनु सोममुलूखल

६

आयजी वाजसातमा ता ह्युवा विजर्भुतः । हरीं इवान्धांसि बप्सता

७

ता नो अद्य वनस्पती ऋष्यावृष्वेभिः सोदृभिः । इन्द्राय मधुमत् सुतम्

८ २२८१

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ७।१०।१७)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । ग्रावाणः । त्रिष्टुप् ।

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहा तन्वं गृहमाना ।

वत्रां अनन्तां अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः

१७ २२८४

॥ ३२५ ॥ (ऋ० १०।७६।१-८)

सर्पं पेरावतो जरत्कर्णः । ग्रावाणः । जगती ।

आ व ऋञ्जस ऊर्जा व्युष्टि—ष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।
 उमे यथा नो अहनी सचाधुवा सद्ःसदो वरिवस्यात उद्धिदा १ २२८५
 तदु श्रेष्ठं सर्वनं सुनोतना—ऽत्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि ।
 विदद्वच्यो यो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित् तरुते यदवैतः २
 तदिद्वच्यस्य सर्वनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रैत् ।
 गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः ३
 अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधुतामतिम् ।
 आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः ४
 दिवश्चिदा वोऽमरमस्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।
 वायोश्चिदा सोमरमस्तरेभ्यो ऽश्वेश्चिदर्च पितुकुत्तरेभ्यः ५
 भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिवितो दिवित्मता ।
 नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वा—घोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः ६ २२९०
 सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते ।
 दुहन्त्यध्वरुपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः ७
 एते नरः स्वर्षसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः ।
 वामंवांमं वो दिव्याय धाष्ट्रे वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते ८ २२९२

॥ ३२६ ॥ (ऋ० १०।९४।१-१४)

अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । ग्रावाणः । जगती; ५, ७, १४ त्रिष्टुप् ।

प्रेते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः ।
 यदद्रयः पर्वताः साकमाश्वः श्लोकं घोषं मरथेन्द्राय सोमिनः १
 एते वदन्ति शतवत् सहस्रवद्भि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।
 विष्टी ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतुश्चित् पूर्वं हविरधमाशत २
 एते वदन्त्यविदन्नाना मधु न्यूङ्खयन्ते अर्धं पक्क आमिषि ।
 वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सत—स्ते सूर्मवा वृषभाः प्रेमराविषुः ३ २२९५
 बृहद् वदन्ति मदिरणं मुन्दिने—न्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्नाना मधु ।
 संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषु—राघोषयन्तः पृथिवीमुपबिदिभिः ४ २२९६

॥ ३२१ ॥ (अथर्व० ७।९८।१)

अथर्वा । इन्द्रः, विश्वे देवाः (हविः) । विराट् त्रिष्टुप् ।

सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।

सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१ २२७४

॥ ३२२ ॥ (ऋ० १०।१३।१-५)

आङ्गिर्हविर्धानः विवस्वानादित्यो वा । हविर्धाने × । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

युजे वां ब्रह्म पुन्यं नमोभिर्वि श्लोकं एतु पृथयेव सुरैः ।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः

१ २२७५

यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तः ।

आ सीदतं स्वर्गं लोकं विदानि स्वासस्थे भवतमिन्दवे नः

२

पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेभि ब्रतेन ।

अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सं पुनामि

३

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै कमृतं नावृणीत ।

बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत्

४

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतमृतम् ।

उभे इदस्योमयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुण्यतः

५ २२७६

॥ ३२३ ॥ (ऋ० १।२८।५-८)

आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । ५-६ उल्लूखलं, ७-८ उल्लूखलमुसले ।

५-६ अनुष्टुप्, ७-८ गायत्री ।

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उल्लूखलक युज्यसे ।

इह धुमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः

५ २२८०

उत सा ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।

अथो इन्द्राय पार्तवे सुनु सोममुल्लूखल

६

आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा विजर्भुतः । हरीं इवान्धांसि वप्सता

७

ता नो अद्य वनस्पती ऋष्यावृष्वेभिः सोतृभिः । इन्द्राय मधुमत् सुतम्

८ २२८१

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ७।१०४।१७)

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । प्रावाणः । त्रिष्टुप् ।

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमपं द्रुहा तन्वं गृहमाना ।

वर्त्रा अनन्ता अव सा पदीष्ट प्रावाणो मन्तु रक्षस उपन्दैः

१७ २२८४

॥ ३२५ ॥ (ऋ० १०।७६।१-८)

सर्प ऐरावतो जरत्कर्णः । ग्रावाणः । जगती ।

आ व ऋञ्जस ऊर्जा व्युष्टि—ष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।
 उमे यथा नो अहनी सचाभुवा सदासदो वरिवस्यात उद्भिदा १ २२८५
 तद् श्रेष्ठं सर्वनं सुनोतना—ऽत्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि ।
 विदद्वय्यो अमिभूति पौंस्यं महो राये चित् तरुते यदर्वतः २
 तदिद्वयस्य सर्वनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्नेत् ।
 गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिणिजि प्रेमध्वरेध्वराँ अशिश्रयुः ३
 अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधतामतिम् ।
 आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः ४
 दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभवना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।
 वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्यो ऽग्नेश्चिदर्च पितुकुत्तरेभ्यः ५
 भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिविता दिवित्मता ।
 नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वा—घोषयन्तो अमितो मिथस्तुरः ६ २२९०
 सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते ।
 दुहन्त्यूर्ध्वरूपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः ७
 एते नरः स्वर्षसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः ।
 वामं वामं वो दिव्याय धाम्ने वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते ८ २२९२

॥ ३२६ ॥ (ऋ० १०।९४।१-१४)

अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । ग्रावाणः । जगती; ५, ७, १४ त्रिष्टुप् ।

प्रेते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः ।
 यदद्रयः पर्वताः साकमाश्वः श्लोकं घोषं मरुथेन्द्राय सोमिनः १
 एते वदन्ति शतवत् सहस्रव—द्रुभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।
 विष्टी ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्या होतुश्चित् पूर्वं हविरद्यमाशत २
 एते वदन्त्यविदन्नना मधु न्यूङ्खयन्ते आधि पक्क आमिषि ।
 वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सत—स्ते क्षमर्वा वृषभाः प्रेमराविषुः ३ २२९५
 बृहद् वदन्ति मदिरेण मन्दिने—न्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्नना मधु ।
 संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषु—राघोषयन्तः पृथिवीमृपब्दिभिः ४ २२९६

सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्या—खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।	
न्यङ्गि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्चितः	५
उग्रा इव प्रवहन्तः समार्यमुः साकं युक्ता वृषणो विभ्रतो धुरः ।	
यच्छ्वसन्तो जग्रसाना अराविषुः शृण्व एषां प्रोथथो अर्वतामिव	६
दशात्रनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।	
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरैभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहद्भयः	७
ते अद्रयो दशयन्त्रास आशव—स्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम् ।	
त ऊ सुतस्य सोम्यस्यान्धसो—ऽशोः पीयूषं प्रथमस्य भजिरे	८ २३००
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निसर्ते—ऽशुं दुहन्तो अध्यासते गर्वि ।	
तेभिर्दुग्धं पिबान्त्सोम्यं मध्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते	९
वृषा वो अंशुर्न किला रिषाथने—कावन्तः सदमित् स्थनाशिताः ।	
रैवत्येव महसा चारवः स्थन् यस्य ग्रावाणो अर्जुषध्वमध्वरम्	१०
तृदिला अर्तदिलासो अद्रयो ऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः ।	
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अर्तषिता अर्तृणजः	११
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदर्सो न युञ्जते ।	
अजुर्यासो हरिषाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमंशुश्रवुः	१२
तदिद् वेदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पा इव घेदुपन्दिभिः ।	
वर्पन्तो बीजमिव धान्याकृतः पृश्नन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सतः	१३ २३०५
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता—ऽऽ क्रीळ्यो न मातरं तुदन्तः ।	
वि पू मुञ्चा सुपुत्रो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः	१४ २३०६

॥ ३२७ ॥ (क्र० १०१७५।१-४)

ऊर्ध्वग्रावा सर्प आर्बुदिः । ग्रावाणः । गायत्री ।

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मेणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत	१
ग्रावाणो अप दुच्छुना—मर्ष सेधत दुर्मतिम् । उस्ताः कर्तन मेषजम्	२
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः । वृष्णे दधतो वृष्ण्यम्	३
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मेणा । यजमानाय सुन्वते	४ २३१०

॥ ३२८ ॥ (ऋ० १०।११७।१-९)

भिक्षुराङ्गिरसः । धनान्नदानम् । त्रिष्टुप्, १-२ जगती ।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददु—रुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः ।

उतो रयिः पृणतो नोप दस्य—त्युतापृणन् मर्दितारं न विन्दते १

य आध्राय चक्रमानाय पित्वो ऽन्नवान्तसन् रफितायोपजग्मुषे ।

स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरो—तो चित् स मर्दितारं न विन्दते २

स इद्धोजो यो गृहवे ददा—त्यन्नकामाय चरते कृशाय ।

अरमस्यै भवति यामहता उतापरीषु कृणुते सखायम् ३

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाधुवे सचमानाय पित्वः ।

अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति पूणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ४

पूणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत् पन्थाम् ।

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा ऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ५ २३१५

मोधुमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ६

कृषन्ति फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः ।

वदन् ब्रह्मावदतो वनीयान् पूणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात् ७

एकपाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात् ।

चतुष्पादेति द्विपदामभिखरे संपश्यन् पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ८

समौ चिद्वस्तौ न समं विविष्टः समातरां चिन्न समं दुहाते ।

यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि जाती चित् सन्तौ न समं पूणीतः ९ २३१९

॥ ३२९ ॥ (अथर्व० ३।१४।१-६)

ब्रह्मा । गोष्ठः, अहः, २ अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः, १-६ गावः, ५ गोष्ठश्च ।

अनुष्टुप्, ६ आर्षी त्रिष्टुप् ।

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभृत्या ।

अहर्जातस्य यन्नाम तेनां वः सं सृजामसि १ २३२०

सं वः सृजत्वयमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद् वसु २

संजग्माना अबिम्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः ।

विभ्रंतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ३ २३२२

इहैव गाव एतनेहो शकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ४
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मया वः संसृजामसि ५
मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पौषयिष्णुः ।

रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम

६ २३२५

॥ ३३० ॥ (अथर्व० ६।४९।३) । ×

गार्ग्यः । अग्निः (अग्निस्तवः) । विराङ् जगती ।

सुपर्णा वाचमक्रतोष द्यव्याखुरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।

नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरु रेतो दधिरे सूर्यश्रितः

३ २३२६

[२३२७-२३४१ इत्येकोनविंशति (१९) मन्त्राः तत्तद्विषये संग्राह्याः ।]

॥ ३३१ ॥ (वा० यः १२।१००)

(दीर्घायुष्यम् ।)

दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।

अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्

१०० २३२७

॥ ३३२ ॥ (वा० य० २४।५०-५२)

(दीर्घायुष्यम् ।)

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्धिदम् ।

इदं हिरण्यं वर्चस्वञ्जैत्रायाविशतादु माम्

५०

न तद् रक्षांसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोर्जः प्रथमजं ह्येतत् ।

यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते
दीर्घमायुः

५१

यदावधन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।

तन्म आ बध्नामि शतशारदायार्युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्

५२ २३३०

॥ ३३३ ॥ (अथर्व० २।१३।१-५)

अथर्वा । अग्निः, २-३ बृहस्पतिः, ४-५ विश्वे देवाः (दीर्घायुःप्राप्तिः) । त्रिष्टुप्,

४ अनुष्टुप्, ६ विराङ्जगती ।

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।

घृतं पीत्वा मधु चारु गन्धं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम्

१ २३३१

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।	
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातुवा उ	२
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।	
शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व	३
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।	
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम्	४
यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरास्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।	
तं त्वा आतरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम्	५ २३३५

॥ ३३४ ॥ (ऋ० १०।८५।३१)

सावित्री सूर्या ऋषिका । दम्पत्योर्यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप् ।	
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्षमा यन्ति जनादनु ।	
पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत् आगताः	३१ २३३६

॥ ३३५ ॥ (ऋ० १०।१५५।१,४)

शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अलक्ष्मीघ्नम् । अनुष्टुप् ।	
अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ।	
शिरिम्बिठस्य सत्त्वभिस्तेभिश्चा चातयामसि	१
यद्वा प्राचीरजगन्तो रौ मण्डूरधाणिकीः ।	
हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्धुदयाशवः	४ २३३८

॥ ३३६ ॥ (ऋ० १०।१४५।४,६) *

इन्द्राणी । सपत्नीबाधनम् (उपनिषत्) । ४ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।	
नह्यस्या नाम गुभ्यामि नो अस्मिन् रमते जनै ।	
परमेव परावर्त सपत्नीं गमयामसि	४
उप तेऽधा सहमाना मभि त्वाधां सहीयसा ।	
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु	६ २३४०

॥ ३३७ ॥ (ऋ० १०।१६६।१-५)

ऋषभो वैराजः, ऋषभः शाकरो वा । सपत्नघ्नम् । अनुष्टुप्, ५ महापङ्क्तिः ।	
ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।	
हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्	१ २३४१

* ऋ० १०।१४५।१-६ = दै० [आयुर्वेद०] ३६४-३६९ ।

इहैव गाव एतनेहो शकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ४
 शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशकैव पुष्यत । इहैवोत प्र जायध्वं मया वः संसृजामसि ५
 मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पौषयिष्णुः ।

रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम

६ २३२५

॥ ३३० ॥ (अथर्व० ६।४२।३) । ×

गार्ग्यः । अग्निः (अग्निस्तवः) । विराट् जगती ।

सुपर्णा वाचमक्रतोष धव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।

नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरु रेतो दधिरे सूर्यश्रितः

३ २३२६

[२३२७-२३४५ इत्येकोनविंशति (१९) मन्त्राः तत्तद्विषये संग्राह्याः ।]

॥ ३३१ ॥ (वा० यः १२।१००)

(दीर्घायुष्यम् ।)

दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।

अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्

१०० २३२७

॥ ३३२ ॥ (वा० य० २४।५०-५२)

(दीर्घायुष्यम् ।)

आयुष्यं वर्चस्य५ रायस्पोषमौर्द्धिदम् ।

इद५ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायार्विशतादु माम्

५०

न तद् रक्षांसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोर्जः प्रथमज५ ह्येतत् ।

यो बिभर्ति दाक्षायुण५ हिरण्य५ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते

दीर्घमायुः

५१

यदावन्नन् दाक्षायुणा हिरण्य५ शतानीकाय सुमनुस्यमानाः ।

तन्म आ वधामि शतशारदाययुष्माञ्जरदक्षिर्यथासम्

५२ २३३०

॥ ३३३ ॥ (अथर्व० २।२३।१-५)

अथर्वा । अग्निः, २-३ बृहस्पतिः, ४-५ विश्वे देवाः (दीर्घायुःप्राप्तिः) । त्रिष्टुप्,

४ अनुष्टुप्, ६ विराट्जगती ।

आयुर्दा अग्ने जुरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।

घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम्

१ २३३१

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमार्युः ।
 बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातुवा उं
 परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिश्चस्तिपा उं ।
 शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व
 एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
 कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम्
 यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।
 तं त्वा आतरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम्

२

३

४

५ २३३५

॥ ३३४ ॥ (ऋ० १०।८।५।३१)

सावित्री सूर्या ऋषिका । दम्पत्योर्यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।
 ये वध्वश्चन्द्रं बहत्तुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु ।
 पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः

३१ २३३६

॥ ३३५ ॥ (ऋ० १०।१५।१।४)

शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अलक्ष्मीघ्नम् । अनुष्टुप् ।
 अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ।
 शिरिम्बिठस्य सत्वभिस्तेभिष्ठा चातयामसि
 यद्ध प्राचीरजगन्तो रौ मण्डूरधाणिकीः ।
 हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्धदयाशवः

४ २३३८

॥ ३३६ ॥ (ऋ० १०।१४।४।६) *

इन्द्राणी । सपत्नीबाधनम् (उपनिषत्) । ४ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।
 नहस्या नाम गृभ्णामि नो अस्मिन् रमते जने ।
 परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि
 उप तेऽधां सहमाना मभि त्वाधां सहीयसा ।
 मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु

६ २३४०

॥ ३३७ ॥ (ऋ० १०।१६।१।५)

ऋषभो वैराजः, ऋषभः शाकरो वा । सपत्नघ्नम् । अनुष्टुप्, ५ महापङ्क्तिः ।
 ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।
 हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्

१ २३४१

अहमस्मि सपत्नहे—न्द्र इवारिष्टो अक्षतः ।	
अधः सपत्नी मे पदो—रिमे सर्वे अभिष्टिताः	२
अत्रैव वोऽपि नष्टा—म्युभे आत्नीं इव ज्यया ।	
वाचस्पते नि षेधेमान् यथा मदधरं वदान्	३
अभिभूरहमार्गमं विश्वकर्मेण धाम्ना ।	
आ वंश्चित्तमा वो व्रत—मा वोऽहं समितिं ददे	४
योगक्षेमं व आदाया—ऽहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमीम् ।	
अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदुका—न्मण्डूका उदुकादिव	५ १३४५

इत्यायुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ।

दैवतसंहितायां आयुर्वेद-प्रकरणस्य उपमा-सूची ।

अंशुः इव अथ. ५, २९, १२; ७४९ आ प्यायतां अयम् ।
 अंशुगः शिशुकः यथा अथ. ६, १४, ३; ४८५ निर्वलासः प्रपत ।
 अग्निः इव अथ. २, २५, ४; ४१९ तान् अनुदहन् इहि ।
 अग्निः इव अथ. ५, १४, १३; १६०३ एतु प्रतिकूलम् ।
 अग्निः इव अथ. ५, २२, २; ५३२ अभिदुन्वन् । उच्छोचयन् ।
 अग्निः वने न अ. १८, १, ३९; २००५ व्यसृष्ट शोकम् ।
 (यथा) अग्निः वृक्षान् अ. १०, ३, १४; १४३६ एवा सपत्नान् ।
 अग्निं इव अ. ८, २, ४; ३० जातं अभि सं धमामि ।
 अग्नेः इव अ. ७, ४५, २; ६८३ अस्य दहतः दावस्य पृथक् ।
 अग्नेः इव अ. ८, ७, १५; ३३८ विजन्त आमृताभ्यः ।
 अग्नेः इव अ. ६, २०, १; १७९ अस्य दहतः एति शुष्मिणः ।
 (यथा यशः) अग्निहोत्रे अ. १०, ३, २२; १४७४ एवा मणिः ।
 (यथा) अघ्न्या नीचीनं दुहे अ. ६, ९१, २; २०० न्यग् भवतु ते रपः ।
 अजः पाः इव ऋ. १०, ९४, १३; २३०५ अद्रयः यामन् तद् इद् ।
 अतिव्रत अ. ५, २३, १०; ७०५ क्रिमयः हन्मि ।
 अधि ज्यामिव धन्वनि अ. ४, ४, ७; १३३८ अहं ते पसः
 अ. ६, १०, १, २; १३४५ आ तनोमि ।
 अत्यः न ऋ. १०, ७६, २; २२८६ अग्निः हस्तयतः सोतरि ।
 अथर्वयः घर्मिणः सिष्णि० ऋ. ७, १०३, ८; १००१ मण्डूकाः गुह्याः ।
 अनड्वान् जगतामिव अ. ८, ५, ११; १४४१ उत्तमा ओष-
 , अ. १९, ३९, ४; ४१० धीनाम् ।
 अनड्वाहौ इव व्रजम् अ. ३, ११, ५; ७६ प्रविशत प्राणापानौ ।
 अ. ७, ५३, ५; १४७ ।
 अनस्वती इव वाहिनी अ. १०, १, १५; १६३० तेनाभि याहि भजती ।
 अनुकूलं इव उदकम् अ. ५, १४, १३; १६०३ वर्ततां कृत्या ।
 (यथा) अभिचक्रं देवाः अ. ३, ९, १; १७७७ तथाप कृणुता पुनः ।
 (यथा स्म ते विरोहतः) अभि तप्तं अ. ४, ४, ३; १३३४ शुष्मवत्तरं ।
 अत्रात् इव वृष्टयः ऋ० १०, ७५, ३; १०३८ सिन्धु एति ।
 अत्रातर इव जामयः अ. १, १७, १; ५५५ हिराः हतवर्चसः तिष्ठन्तु
 (यथा) अमृतं देवेषु अ. १०, ३, २५; १४७७ एवा मणिः ।
 अयः न अ. १८, ३, २२; २१०५ देवाः जनिमा धमन्तः ।

२३ दै. [आयुर्वेद०]

अर्वता इव ऋ. १०, ९४, ६; २२९८ एषां प्रोथयः शृण्वे ।
 अर्वतीः इव अ. १०, ४, २१; ८२८ नयामि ।
 अवध्वंसः इव अ. ५, २२, ३; ५३३ अरुणः ।
 अवसृष्टः न पाशैः वा. य. २०, ४५; ३७२ तमन्या समञ्जन् ।
 अश्रेष्माणः आधारयन् अ. ३, ९, २; १७२८ तथा तत् मनुना ।
 अश्वः इव अ. १०, १, १९; १६३४ वि वर्तताम् ।
 अश्व इव अ. १९, ५७, ४; १९१६ कायम् ।
 अश्व इव अ. १९, ५७, ४; १९१६ नीनाहम् ।
 अश्व इव नडम् अ. १२, २, ५०; २३६ अग्निः अन्तिकात् अनुवपते ।
 अश्वं इव अश्वामिधान्या अ. ५, १४, ३; १५९६ तां तस्मै नयामसि ।
 अश्वाः इव ऋ. १०, ७७, ३; ३०३ वीरुधः सजित्वरीः ।
 (मृगाः) अश्वाः इव अ. १९, ३८, २; २०३ विष्वच्चः यक्ष्माः ईरते ।
 अश्वा न ऋ. १०, ७५, ७; १०४२ चित्रः सिन्धुः ।
 (विषिते हासमाने) अश्व इव ऋ. ३, ३३, १; १०२२ पर्वतानां ।
 (यथा) ऽसितः प्रथयते अ. ६, ७२, १; १३४० एवा ते अङ्गेन ।
 (इषुम्) अस्ता इव अ. १९, १४, ३; १५५३ अपेतो जङ्घिडामतिं
 (यथा) अहानि अनुपूर्वम् अ. १२, २, २५; २४१ एवा आयुषि
 (यथा) अहा रात्री समवती अ. ४, १८, १; ३८८ तथा कृणोमि
 अहा इव सूर्यः ऋ. ६, ६१, ९; १०६७ ऋतावरी अन्याः स्वसृः
 (यथा यशः) आदिष्ये अ. १०, ३, १८ १४७० एवा मणिः कीर्तिं
 आपः मलं इव अ. २, ७, १; ६६८ सर्वान् शपथान् अधि ।
 (पक्वे) आमिषे अधि ऋ. १०, ९४, ३; २२९५ सूभर्वाः वृषभाः
 आर्त्नी इव ज्यया अ. १, १, ३; १४१७ इहैव उभौ अभि वि तनु ।
 आर्त्नी इव ज्यया ऋ. १०, १६६, ३; २३४३ अत्रैव वा अपि ।
 इष्टः इव अ. ६, १४, ३; ४८५ हायन, उप द्राहि ।
 इन्द्र इव विरुजं बलम् अ. १५, २८, ३; १५१५ हृदः सपत्नानां ।
 इन्द्रः इव ऋ. १, १६६, २; २३४२ अहं अक्षत अस्मि ।
 इन्द्रः इव अ. ४, ५, ७; ६१३ अहं अरिष्टः अक्षितः ।
 इन्द्रः इव दस्यून असुरान् अ. १०, ३, ११; १४६३ मे शत्रून् ।
 इन्द्र इन्द्रियाणि इव अ. १, ३५, ३; ६१ दक्षमाण हिरण्यं बिभ्रत् ।

इन्द्रं न वृत्रतूय धने हिते ऋ. ६, ६१, ५; १०६३ यः त्वा उप ब्रूते
(धन्वन्) इरा इव अ. ५, १३, १; ८३४ ते विषं नि जजास ।
इषीका इव अ. ७, ५६, ४; ८५५ तानि त्वं सं नमः ।
(यथा) इपुका परापतदव सृष्टा अ. १, ३, ९; ५७९ एवा ते मूर्त्रं ।
इलावन्तः इव ऋ. १०, ९४, १०; २३०२ सदमित् आशिताः ।
(मध्यमशीः) उग्रः इव अ. ४, ९, ४; ५८३ ततः यक्षं वि वाधसे ।
उग्राः इव प्रवहन्तः ऋ. १०, ९४, ६; २२९७ प्रावाणः समायुयुः ।
(यथा) उदकं अपपुषः अ. ६, १३९, ४; ६८० एवा नि शुष्य ।
उदप्लुतमिव दारु अ. १०, ४, ३-४; ८१०-११ अरसं विषं उग्रम् ।
उद्गा अग्नि इव अ. ७, ४५, २; ६८६ ईर्ष्यां शमय ।
उर्वरीः इव साधुया अ. १०, ४, २१; ८२८ ओषधीनां अहं कृणे ।
(यथा) ऋणं सं नयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ एवा दुष्पन्थ्यं
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।
ऋणात् ऋणं इव अ. १९, ४५, १; ५९२; संनयन् कृत्यां ।
(यथा) ऋतवः ऋतुभिः अ. १२, २, २५; २४१ एवा धातः ।
ऋषिणा इव मनीषिणा अ. ८, ५, ८; १४३८ साकल्येन मणिना ।
(वारणी) णी इव अ. ५, १४, ११; १६०१ कृत्या कर्तारं उत ।
ककुत्सलमिव जामयः अ. १८, ४, ५६; २२१६ अभि एनं भूम ।
कक्ष्या सुक्तं इव ऋ. १०, १०, १३; १९६६ त्वां अन्या परि ।
कण्ववत् अ. ५, २३, १०; ७०६ क्रिमयः हन्मि ।
कन्या इव लुप्ता अ. ६, २२, ३; ९६७ एजाति गल्हा ।
(मर्याय इव) कन्या ऋ. ३, ३३, १०; १०३१ शश्वच्चै ते ।
(यथा यशः) कन्यायाम् अ. १०, ३, २०; १४७२ एवा मणिः ।
कपिः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
(यथा) कलां संनयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ एवा सर्वं
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।
कुमारः सर्वकेशकः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
(उदकं) कुम्भिनीः इव ऋ. १, १९१, १४; ७८७ मयूर्यः ते विषं ।
क्रशः इव रोहितम् अ. ४, ४, ७; १३३८ अनवगलायता सदा ।
अ. ६, १०१, ३; १३४५ ।
क्रीलयः न मातरम् ऋ. १०, ९४, १४; २३०६ सुतं अध्वरे आधि ।
क्रीबा इव अ. ८, ६, ११; १३७८ वने प्रतुल्यन्तः ।
खर्गलाः इव ऋ. ७, १०४, १७; २२८४ या नक्तं प्रजिगाति ।
(दृषदा) खल्वान् इव अ. २, ३१, १; ६९१ सं पिनधिं किमीन् ।
(दृषदा) खल्वान् इव अ. ५, २३, ८; ७०३ मष्मषा नि आकरम् ।
गवां अहं न मायुः ऋ. ७, १०३, २; ९९५ मण्डूकानां वयुः ।

(मुष्कावहो) गवामिव अ. ३, ९, २; १७९८ कृणोमि वग्नि ।
गां उक्ष्णमिव रज्ज्वा अ. ३, ११, ८; ७९ अभि त्वा ।
गावः गोष्ठात् इव ऋ. १०, ९७, ८; ३०८ ओषधीनां शुष्माः ।
(रिहाणा मातरा शुभ्रे) गावा ऋ. ३, ३३, १; १०२२ पर्वतानां ।
गावो न हव्या ऋ. १, १८७, ११; १११८ द्वे पितो वचोभिः ।
गोपु युधः न ऋ. १०, ३०, १०; ९१० नियवं चरन्ताः ।
गोष्ठामिव अ. २, १४, ६; १६५३ आमां धामानि परि असरन्
(वत्सं) गौः इव ऋ. १०, १४५, ६; २३४० ते मनः मां अनु ।
(वत्सं) गौः इव अ. ३, १८, ६; ३६३ मामनु ते मनः प्र धावतु ।
(स्पन्दना) गौः स्थाली अ. ८, ६, १७; १३८३ पाठ्यार्ण्यं पदा ।
(आचितं) ग्रामं इव अ. ४, ७, ५; ८०२ वचसा परि स्थाप० ।
घर्म इव अभितपन् अ. १९, २८, ३; १५१५ द्विषतो नितपन् मणे ।
चतुष्पदमिव च्छदिः अ. ३, ७, ३; १९४ अदो यदवरोचते ।
(यथा यशः) चन्द्रमसि अ. १०, ३, १८; १४७० मणिः कीर्तिं भूति ।
(येषन्तं) चरुमिव अ. ४, ७, ४; ८०२ वचसा परि स्थापयामसि ।
छायां इव अ. ८, ६, ८; १३७४ प्र ताव सूर्यः अनीनशत् ।
(रात्री) जगत् इव अ. ६, १२, १; ८४६ हंसात् अन्यत् विषं ।
जनं इव शेवाधिम् अ. ५, २२, ४; ५४४ तक्रमानं परि दक्षसि ।
जमदमिवत् अ. ५, २३, १०; ७०५ क्रिमयः हन्मि ।
जयतां इव दुन्दुभिः ऋ. १, २८, ५; २२८० गुमन्मं वद ।
(यथा यशः) जातवेदसि अ. १०, ३, १९; १४७२ एवा मणिः कीर्तिं
जाया पतिं इव अ. १८, २, ५१; २०७५ वाससा अभ्येनं ।
(पत्या लुष्ठा) जाया इव अ. १०, १, ३; १६१८ शूद्रकृता कर्तार
जाया इव पत्ये ऋ. १०, १०, ७; १९६० अहं तन्वं वि रिरिच्याम् ।
जालेन अभिहिता इव अ. १०, १, ३०; १६४५ तमसा आश्रुताः ।
(यथा) जीवाः अदितेः उपस्थे अ. २, २८, ४; ४ त्वां पिता गुपिता ।
(यथा) जीवगृभः अ. १०, ९७, ११; ३११ तथा यक्षमस्य आत्मा ।
ज्यामिव धन्वनः अ. ५, १३, ६; ८३९ मन्योः विमुनामि ।
(यथा) समं ज्योतिः सूर्येण अ. ४, १८, १; ३८८ तथा कृणोमि ।
ज्योतिषा इव अ. ४, १९, ३; ३९८ अभि दीपयन् अप्रमेषि ।
तक्रमन्वी इव अ. ५, २२, ७; ५३७ तां ध्रुवहि ।
तम इव अ. ८, २, १२; ३८ सर्वं दुर्भूतं अपहन्मसि ।
तमस इव ज्योति अ. ५, १३, ३; ८३६ उदेत्तु सूर्यः ।
(प्रदोषं) तस्काराः इव ऋ. १, १९१, ५; ७७८ अदृष्टाः विश्वदृष्टाः ।
(यथैव) तृप्यते मयः अ. १९, २, ५; ९३२ तास्त आदत्त मेघजीः ।

(यथा) तेज आहितम् अ. १०, ३, १७ १४६९ एवा मणिः कीर्ति
(यथा अन्तस्तिष्ठति) तेजनम् अ. १, २, ४; ६६७ एवा रोगं च ।
(उद्यन्) त्वचमिव भूम्याः अ. १९, २८, ४; १५१६ शिर एषां ।
दिवि देवाः इव अ. ६, ८०, २; १५८९ त्रयः कालकाजाः श्रिताः ।
दिवो वृक्षमिवाशनि अ. ६, ३७, २; १७७४ शतारं अत्र नो जहि ।
दुहिता इव पितरम् अ. १०, १, २६; १६४१ जानीहि कृत्ये ।
दतिं न शुष्कम् ऋ. ७, १०३, २; ९९५ आपः शयानं एनम् ।
दतिं (इव) सुरावतो ऋ. १, १९१, १०; ७८३ सूर्यं विषम् ।
(निरुष्माणं) दतेरिव अ. ६, १८, ३; ६८४ ते ईर्ष्यां मुञ्चामि ।
दशः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ प्रियः भूत्वा ।
देवः न सविता ऋ. १, ३६, १३; २२५७ (यूप), ऊर्ध्वः तिष्ठ ।
देवा इव असुरमायया अ. ३, ९, ४; १८०० येन श्रवस्यवः चरथ ।
द्यां इव उपरि अ. १८, ३, २९; २१२२ ऊर्ध्वं भानुं सविता ।
द्यां इव उपरि | अ. १८, ३, २५-२८, ३०-३५; २१०८-
११, २११३-१८ बाहुच्युता पृथिवी
(परि) द्यां इव सूर्यः अ. ६, १२, १; ८४६ अहीनां जनिमागमम् ।
(इमे) द्यावापृथिवी वि इतः अ. ३, ३१, ४; १७१ अहं सर्वेण ।
द्यौः इव अ. ६, १४२, २; ११२५ तत् उच्छ्रयस्व ।
दुपदादिव मुमुचानः वा. य. २०, २०; ११०५ आपः मा एनसः ।
दुपदादिव मुमुचानः अ. ६, ११५, ३; १७२९ आपः शुन्धन्तु ।
धनपालः धना इव अ. १९, ३५, २; १५६२ स नो रक्षतु जङ्गिडः ।
धनुः इव अ. ६, १०१, २; १३४३ आ तानय पसः ।
धनुः इव अ. ४, ४, ६; १३३७ आ तानय पसः ।
(यथा) नकुलः विच्छिद्य अ. ६, १३९, ५; ६८१ एवा कामस्य
नडं इव अ. ४, १९, १; ३९६ प्रजां छिन्धि वार्षिकम् ।
(यथा) नडं कशिपुने स्त्रियो अ. ६, १३८, ५; ५०२ एवा भिनन्ति ।
नडाः इव अ. ६, १३७, २-३; ४६४-६५ केशाः वर्धन्ताम् ।
नदी फेनमिवा वहत अ. १, ८, १; ७२७ इदं हविः यातुधानान् ।
नावा इव अ. ४, ३३, ७; १७६२ द्विषो नो अति पारय ।
निष्कमिव अ. ५, १४, ३; १५९३ कृत्यां देवाः प्रति मुञ्चत ।
(यथा) पतन्ति पक्षिणः अ. १, ११, ६; १४१० एवा त्वं जरायुणा
पत्या इव जाया अ. ६, २२, ३; ९६७ एरुं तुन्दाना ।
पथ्या इव सूरिः अ. १८, ३, ३९; २१२२ वि श्लोक एति ।
(सूरः) पथ्या इव ऋ. १०, १३, १; २२७५ श्लोकः एतु ।
पन्थानः दिशं दिशं वि अ. ३, ३१, ४; १७१ अहं सर्वेण ।
पयसा इव धेनवः ऋ. १०, ७५, ४; १०३९ त्वां वाभ्राः अर्षन्ति ।

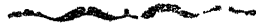
(यथा यशः) परमेष्ठिनि अ. १०, ३, २४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति
(इष्वाः) पर्ण इव ऋ. १०, १८, १४; १९५३ मां प्रतीचीन ।
(सरो) पर्ण इव अ. ४, २५, १; १३४६ शेषो गर्भस्य रेतोधाः ।
(पूतं) पवित्रेण इव | वा. य. २०, २०; ११०५ आपः शुन्धन्तु ।
आज्यं | अ. ६, ११५, ३; १७१९
पिता इव पुत्रान् अ. २, १३, १; २३३१ अभिरक्षतात् इमम् ।
पितरं न पुत्रः ऋ. ७, १०३, ३; ९९६ अन्यः अन्यं (मण्डकं) ।
पियासुः निष्कमिव अ. १९, ५७, ५, १९१७ देवपीयुः प्रति ।
पुत्र इव पितरम् अ. ५, १४, १०; १६०० कृत्ये गच्छ ।
(यथा) पुत्रं जनादिति अ. ६, ८१, ३; १३३१ त्वष्टा तं अस्यै ।
(यथा न) पूर्वं अपरः जहाति अ. १२, २, २५; २४१ एवा धातः ।
पूषा इव ऋ. ६, ६१, ६; १०६४ नः सति रद ।
(यथेयं) पृथिवी गर्भं आ दधे अ. ५, २५, २; १३४७ एवा दधामि ।
(यथेयं) पृथिवी गर्भं आ दधे अ. ६, १७, २-४; १३६२-६५ एवाते ।
(यथा यशः) पृथिव्याम् अ. १०, ३, १९; १४७१ एवा मणिः ।
पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम् अ. १०, ४, १९; ८२६ शीर्षणि अप्रमम् ।
(यथा यशः) प्रजापतौ अ. १०, ३, २४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति ।
बन्धमिव अ. ५, १४, १०; १६०० अवकामी ।
(यथा) बाणः सुसंशितः अ. ६, १०५, २; ४८७ एवा त्वं कासे ।
बिसखा इव ऋ. ६, ६१, २; १०६० ऊर्मिभिः गिरीणां सातु ।
(वपन्तः धान्यकृतः) बीजम् ऋ. १०, ९४, २३; २३०५ द्रावाणः ।
(यथा) बीजं उर्वराया अ. १०, ६, ३३; १५१० एवा मयि प्रजा ।
ब्राह्मणा इव व्रतचारिणः ऋ. ७, १०३, १; ९९३ मण्डूकाः वाचं ।
ब्राह्मणासः अतिरात्रे न सोमे ऋ. ७, १०३, ७; १००० मण्डूकाः ।
भग इव यामेषु अ. ६, २१, २; ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।
(इदं) भुवनं विश्वं वि अ. ३, ३१, ५; १७१ अहं सर्वेण पाप्मना ।
(यथा) भूमिः मृतमनाः अ. ६, १८, २; ६८३ एवा ईर्ष्योः ।
मण्डूकाः उदकात् इव ऋ. १०, १६६, ५; २३४५ मे पदात् अधः
मत्तः इव अ. ६, २०, १; १७९ विलपन् ।
मधुपर्के यथा यशः अ. १०, ३, २१; १४७३ एवा मणिः ।
(उग्रः) मध्यमशीः इव ऋ. १०, २७, १२; ३१२ ओषधीः यक्ष्मं ।
(यथा) मनः (पतति) अ. १, ११, ६; १४१० एवा त्वं जरायुणा ।
यथा मनः मनस्कृतैः परा अ. ६, १०५, १; ४८६ एवा कासे प्रपत ।
(यथा पुरा) मनवे गातुम् ऋ. १०, ७६, ३; २२८७ तद्वत् व्याप्नोतु ।
मनसः न प्रयुक्ति ऋ. १०, ३०, १; ९०१ सोमः देवत्रा अपः ।
(यथा) मन्त्रो मनः अ. ६, १८, २; ६८३ एवा ईर्ष्यो मृतं मनः ।

मर्यः न कल्याणीभिः ऋ १०,३०,५; २०५ याभिः सोमः ।
 मर्य इव योषाः अ. १८,४,१०; २२१० सोमः शतयामना ।
 माता इव अ. २,२८,५; ५ असौ शर्म यच्छ ।
 माता इव पुत्रम् अ. २,२८,१; १ मित्रः एवं पातुर्वहसः ।
 (सं) मातरः इव अ. ८,७,२७; ३५० पुष्पवतीः दुहामस्या ।
 (उशतीः इव) मातरः ऋ. १०,९,२; ८८० तस्य भाजयत इह नः ।
 (स) मातरा चित् न ऋ. १०,११७,२; २३१९ ज्ञाती चित् ।
 माता पुत्रं यथा अ. १८,२,५०; २०७४ अभ्येन भूम ऊर्णुहि ।
 (यथा) माता पुत्रं गित्वा ऋ. १०,१८,११; १९५० एनं द्वे भूमे
 माता इव पुत्रम् वा. य. १२,३५; ११०० सुपत्नीः बिभ्रत ।
 माता इव पुत्रेभ्यः अ. ६,३०,३; ४७२ गमि, केशेभ्यः मृड ।
 सुष्करं यथा अ. ६,१४,२; ४८४ बलासं निः क्षिणीमि ।
 मूलमुर्ध्वा इव अ. ६,१४,२; ४८४ छिनमि अरय बन्धनम् ।
 मृगं इव अ. ५,१४,१२; १६०२ तं कृत्याकृतं पुनः गृह्णातु ।
 मृगी इव अ. ५,१४,११; १६०१ कृत्या कर्तारं उद् ऋच्छतु ।
 यथा यमस्य गृहं त्वा अ. ६,२९,३; १५८७ तथा आभूकम् ।
 यथा यमस्य सादन अ. १८,३,७०; २१६७ पुनर्वेदि वनस्पते ।
 यथा यमाय हर्म्य अ. १८,४,५५; २२०५ एवा वपामि ।
 यमे इव ऋ. १०,१३,२; २२७६ युवां यतम ने यदा एतम् ।
 अ. १८,३,३८; २१२१ ।
 यथा यशः यजमाने अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्ति ।
 यथा यशः यज्ञे अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्ति ।
 युवयोः चित् न समा ऋ. १०,११७,२; २३१९ तथा ज्ञाती चित् ।
 यूथा इव सुमति पथः अ. १८,३,२३; २१०६ उग्रः देवानां ।
 पीथ्याना योषा इव ऋ. ३,३३,१०; १०३१ वयं ते नि नसे ।
 (सुखः) रथः इव अ. ५,१४,५; १५९५ कृत्या कृत्याकृतं ।
 अ. ५,१४,१३; १६०३ ।
 रथः इव ऋ. ६,६१,१३; १०७१ बृहती विभवने कृता ।
 (यथा सुचक्र सुपविः) रथः अ. ४,१२,६; ४२६ तथा प्रति ।
 (आशवः) रथाः इव अ. ३,९,५; १८०१ शपथेभिः उत् ।
 रथान् इव अ. ५,१३,६; ८३९ सात्रामहस्य मन्योः वि सुग्रामि ।
 (ऋभुः) रथस्य अंगानि इव अ. ४,१२,७; ४२७ परषा पशुः ।
 रथस्य इव अ. १०,१,८; १६९३ यस्ते परंषि संदर्षो ।
 (यथा यशः) रथे अ. १०,३,२०; १४७२ एवा मणिः ।
 रथी इव ऋ. ५,८३,३; ९७६ कशया अश्वान् अभिशिपन् ।
 रथ्या इव ऋ. ३,३३,२; १०२३ युवां समुद्रं अच्छा याथः ।

(प्रवावधाना) रथ्या इव ऋ. ७,९५,१; १०७३ अपः प्रवावधाना ।
 रथ्या इव चका ऋ. १०,११७,५; २३१५ रायः आ वर्तन्ते ।
 रथ्या इव चका ऋ. १०,१०,७ १९३० [आवां] वि बृहद्व चित् ।
 रथ्या इव चका ऋ. १०,१०,८ १९६१ तेन अन्येन वि बृह ।
 राजा इव युष्वा ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वमित सिचौ नयसि ।
 राजानः समितौ इव ऋ. १०,९७,६; ३०६ ओषधीः समगमत ।
 रिशस्य इव परीशासम् अ. ५,१४,३; १५९३ त्वच्चः परि ।
 रैवत्या इव ऋ. १०,९४,१०; २३०२ महसा चारतः स्थन ।
 लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१३; १९६६ त्वां अन्या ।
 लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१४; १९६७ अन्यः त्वां ।
 वत्सो धारारव मातरम् अ. ४,१८,२; ३८९ तं प्रत्यगुप पथतम् ।
 वत्समिव मातरा संरिहाणे ऋ. ३,३३,३; १०९४ युवां अया०
 वधू इव वहतौ अ. १०,१,१; १२१६ चिकित्सवः या ।
 वपुषी इव ऋ. १०,७५,६; १०४२ दर्शना ।
 (देवेषु) वरुणो यथा अ. ६,२१,२; ४५८ मेघजानां श्रेष्ठ असि ।
 वचं वेशन्त्या इव अ. १,३,७; ५७७ प्र ने भिनमि मेहनम् ।
 वषट्कारे यथा यशः अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।
 वक्ष्यन्ता वधूः इव अ. ४,२०,३; ७५६ स भूमि आ ।
 वाक्का अपचिता इव अ. ६,२५,१-३; १६८२ ८४ ताः सर्वाः नश्यन्तु
 (यथा) वातः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं पत ।
 वातः अश्रं इव अ. ८,६,१३; १३८५ पिशः श्रीभागान् ।
 (यथा) वातश्चयावयति अ. १०,१,१३; १६२८ एवा सर्व ।
 (यथा) वातश्चयावयति अन्तरिक्षादध्रम ,, ,,
 यथा वातः न्यग् वाति अ. ६,९१,२; २०० न्यग् भवतु ते रपः ।
 वात इव वृक्षान् अ. १०,१,१७; १६३२ नि गृणीहि ।
 (यथा) वातः वनस्पतीन् अ. १०,३,१३; १४६५ एवा मे ।
 (यथा) वातश्च अग्निश्च अ. १०,३,१४; १४६६ एवा मे ।
 (दिवि) वाता इव श्रिताः ऋ. १,१८७,४; १०११ त्ये रसाः ।
 (यथा) वातेन प्रक्षीणाः अ. १०,३,१५; १४६७ एवा सपत्नान् ।
 (पथा) वार इव ऋ. १०,१४५,६; २३४० मनः मामनु ।
 विद्धस्य इव अ. १०,१,२६; १६४१ कृत्ये पदं नय ।
 (नानदती) विनद्धा गर्दभी इव अ. १०,१,१४; १६१९ कृत्ये
 वृक्ष इव आविमतः अ. ६,३७,१; १७७३ सदृशस्य उप प्रागात् ।
 वृक्षः इव अ. ४,७,५; ८०२ तिष्ठ स्थानि ।
 वृक्ष इव विद्युता इतः अ. ७,५९,१; १७७६ आ मूलात् अनु ।
 वृक्षादिष खजम् अ. ८,६,२६; १३९२ कृत्वा प्रिये प्रति ।

(यथा) वृत्रः अपः तस्तम्भ अ. ६, ८५, ३; १८४ एवा ते यक्ष्म ।
वृषण्यन्ती इव कन्यला अ. ५, ५, ३; ४३० वृक्षं वृक्षं आरोहसि ।
वृषभः न ऋ. १०, ७५, ३; १०३८ सिन्धुः रोखत् एति ।
व्याघ्रः श्वपदामिव अ. १९, ३९, ४; ४५० उत्तमोऽसि ओषधीनाम् ।
व्याघ्रः श्वपदामिव अ. ८, ५, ११; १८४१
शका इव अ. ३, १४, ४; १३२३ इहो पुष्यत ।
शकुनेः इव अ. २, १५, २; ४१७ दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि ।
शतवत् ऋ. १०, ९४, २; २२९४ एते वदन्ति ।
(यथा) शर्फं संनयन्ति अ. ६, ४३, ३; ६३५ दुष्पण्यं द्विषते ।
(यथा) शर्फं संनयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ दुष्पण्ये अप्रिये ।
शमिता न तमन्या समजन् वा. य. २०, ४१; ३७२ देवः यशं ।
शरं इव अ. ४, ७, ४; ८०१ ते मदं मदावति वि पातयामसि ।
शरणं न वृक्षम् ऋ. ७, २५, ५; १०७६ शर्मन् दधानाः उप स्थेयाम ।
शाक्तस्य इव शिक्षमाणः ऋ. ७, १०३, ५; ९९८ मण्डूकानां ।
शाखां मधुमतीं इव अ. १, ३४, ४; ४८१ मां इत किलत्वं ।
शारिशाका इव अ. ३, १४, ५; २३२४ शिवो वो गोष्ठो भवतु ।
शिशुं इत् न मातरः ऋ. १०, ७५, ४; १०३९ त्वां वाश्नाः अर्षन्ति ।
शुने पेष्ट्रं इव अवक्षामम् अ. ६, ३७, ३; १७७५ तं प्रत्यस्यामि ।
शुनां कपिः इव दूषणः अ. ३, ९, ४; १८०० बन्धुरा काववस्य च ।
शृगिणां शृगाणि इव ऋ. ३, ८, १०; २१६८ खरवः पृथिव्यां ।
श्येनः इव अ. ५, ३०, ९; १०६ यक्ष्मः प्रापतत् ।
श्व इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।
सखा सख्युः न अ. १८, ४, ६०; २२१० प्र वा एति इन्दुः ।
(यथा) सख्यं आहितम् अ. १०, ३, २५; १४७७ एवा मणिः ।
समुद्रः इव अ. ६, १४२, २; ११२५ अधि अक्षितः ।
समुद्रं न सुभुवः अ. ४, ८, ७; ८०४ अप्स्वन्तः तस्थिवासं ।
समुद्रस्य उदधेः इव अ. १, ३, ८; ५७८ ते वास्तिबिलं विषितम् ।
सविता इव अ. १९, ४५, ४; ५९५ ध्रुवस्तिष्ठसि चार्यः ।

सहस्रवत् ऋ. १०, ९४, २; २२९४ एते प्रावाणः वदन्ति ।
सिंहस्य इव अ. ८, ७, १५; ३३८ स्तनयोः सं विजन्ते ।
सिन्धुं इव नावा अ. ४, ३३, ८; १७६३ अति पर्षां स्वस्तये
सुपर्णो वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ५१३ अपचितः प्र पतत ।
सूरो न युता अ. १८, ४, ५९; २२०९ त्वं कृपा रोचसे ।
सूर्यः इव अ. १९, ३३, ५; १८३७ आमाहि प्रदिशः वतस्रः ।
सूर्य इव दिवमारुह्य अ. ८, ५, ७; १४३७ वशी कृत्या वि बाधते ।
(यथा) सूर्यः अतिभाति अ. १०, ३, १७; १४६९ मणिः कीर्ति ।
(यथा न्यक् तपति) सूर्यः अ. ६, ९, १, २; २०० न्यग् भवतु ते ।
(यथा) सूर्यो मुच्यते तमसः अ. १०, १, ३, २; १३४७ एव अहं ।
(वीधे) सूर्यमिव सर्पन्तम् अ. ४, २०, ७; ७६० मा पिशाचं ।
(यथा) सूर्यस्य रश्मयः अ. ६, १०५, ३; ४८८ एवा त्वं कासे ।
सेना इव अ. ४, १९, २; ३९७ एषि त्विषीमती ।
सोम इव यामेषु अ. ६, २१, २; ४५८ वीरधानां वसिष्ठम् ।
(यथा यशः) सोमपीथे अ. १०, ३, २१; १४७३ मणिः कीर्ति ।
स्तुकां इव अ. ७, ७४, २; ५०४ जघन्यां आसां आ छिनद्मि ।
स्तेनः इव व्रजम् ऋ. १०, ९७, १०; ३१० ओषधीः विश्वाः ।
स्तुषा इव श्वशुरादाधि अ. ८, ६, २४; १३९० सूर्यात् परि सर्पन्ति ।
खजः इव अ. ५, १४, १०; १६०० अभिष्ठितः दश ।
खिन्नः स्नात्वा मलादिव अ. ६, ११५, ३; १७२९ आपः शुन्धन्तु
वा. य. २०, २०; ११०५ मैमसः ।
हंसा इव ऋ. ३, ८, ९; २२६७ खरवः नः आयुः ।
हरी इव अन्यांसि ऋ. १, २८, ७; २२८२ आयजी उल्लखल०
(यथेदं) हर्म्यम् अ. ४, ५, ५; ६१७ तेषां अक्षीणि सं दध्मः ।
(यथा) हव्यं वहसि अ. ४, २३, २; १६८६ एवा देवेभ्यः ।
(यथा) यज्ञं कल्पयसि अ. ४, २३, २; १६८६ एवा देवेभ्यः ।
(समौचित्) हस्तौ न समं ऋ. १०, ११७, ९; २३१९ तथा ज्ञाती ।
हस्ती इव रजः अ. १०, १, ३, २; १६४७ दुरितं जहामि ।
ह्रदं अग्निः इवा दहन् अ. ६, ३७, २; १७७४ परि णः वृङ्गिध शपथ ।



विषय-सूची ।

विषयः ।	संज्ञाकाः	प्रकरणम् ।	विषयः ।	संज्ञाकाः	प्रकरणम् ।
अक्षि ७, ३६, १; ५९१		रोगाचि.	अग्निस्तवः ६, ४९, ३; २३२६		यज्ञादि.
अक्षिरोगभैषज्यम् ६, १६, १-४; ४३६-६९		ओषधि.	अग्नीन्द्रौ १, ७, ३; ७६९		किमिना.
अग्निः ६, ११, १-३; ८१-८७ । ६, ४७, १; ८८ ।			अग्नीषोमौ १, ८, १-२; ७२७-२८		किमिना.
२, २९, १; ९१ । १३, ६४, १-४; ११५. ८ ।			अग्नीषोमी ऋ. १०, १९, १ उत्तरार्धः; ८९३		जलाचि.
७, ३३, १; १४२ । २, १३, १; २३३१		दीर्घायु.	अग्न्यादयः त्रिवृत् ५, २८, १-१४; १२७ ४०		दीर्घायु.
अग्निः ३, ३१, १, ६; १६८, १७३ । १२, २, १-५५;			अंगानि १९, ६०, १-२; १५७-५८		दीर्घायु.
२१७-७१		यक्षमना.		(अरिष्टानि अंगानि)	
अग्निः १, २५, १-४; ५२५-२८ । ६, १११, १-४;			अजः ९, ५, १-३८; ११८३-१२२०		अज्ञादि.
६८७-९०		रोगाचि.	अजशृंगी (औषधिः) ४, ३७, १-१२; ७१५-२६		किमिना.
अग्निः ६, ३२, १; ७३१ । १, २८, १-२; ७३४ ३५		किमिना.	अजानम् ७, ३०, १; ५९० । ७, ३६, १; ५९१ ।		
अग्निः १, २३, २३; ८७० । ७, ८५, १-४; ९५९-६२		जलाचि.	वा० य० ४, ३; ६१२		रोगाचि.
अग्निः ६, ७१, १-३; ११६९-२१ । १२, ३, १-६०;			अदितिः ६, ७, १, ३; ७६३-६५		किमिना.
१२७२-१३३१		अज्ञादि.	अदितिः ५, २६, ६; १९४१		यज्ञादि.
अग्निः ४, ४, ६; १३३७		वाजी.	अदितेर्गर्भः ऋ. ९, ७४, ५, १४०४		गर्भाधानं
अग्निः ६, १०८, ४; १४२२		गर्भाधानं.	अन्नम् वा० य० १८, ३२-३४; ३५९-६१ [वाजः] ओषधि.		
अग्निः २, १०, २; १६६३ । ६, ११२, १-३;			अन्नम् ऋ. १, १८७, १-११; ११०८-१८ । अ. ६,		
१६७०-७२ । ७, ७८, १-२; १६८०-८१ ।			७२, १-३; १११९-२१ । ७, ५८, १-२; ११२२-२३ ।		
४, २३, १-७; १६८५-९१ । ७, ६४, १-२;			६, ११६, १-३; १२६६-६८		अज्ञादि.
१७३२-३३ । ४, ३३, १-८; १७५७-६४ ।			अजसृद्धिः ६, १४२, १-३; ११२४-२६		
१६, ९, २; १९०३		पापादि.	अज्ञादिकम् । (११०८-१३३१)		
अग्निः ७, ६१, १, २; १९२१-२२ । १८, २, ४, ३४;			अपचिद्-भैषज्यम् ७, ७६, १-२; ५०७-८		रोगाचि.
२०२८, २०५८ । १८, ३, ५-६; २०८८-८९ ।			अपमार्गो वनस्पतिः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९, १-८;		
१८, ४, ८८; २२३८ । १९, ५९, १; २२५५ ।			३८०-४०३		ओषधि.
ऋ. १, ३६, १३-१४; २२५७-५८ । ६, ४९, ३;			अपामार्गवीर्य ७, ६५, १-३; ४०४-६		ओषधि.
२३२६		यज्ञादि.	अपां नपात् ऋ. १०, ३०, १-१५; ९०१-१५		जलाचि.
अग्निः ऋ. १०, १५५, १, ४; २३३७-३८ (अलक्ष्मी) रोगाचि.			अपां भेषजम् १, ४, ४; २६३ । १, ६, ४; ९६४		जलाचि.
अग्निः जातवेदाः १, १८, ३-४; ७२९-३० । १, ७			अपां भैषज्यम् ६, २३, १-३; २६८-७० । ६, २४,		
१-७; ७६७-७३		किमिना.	१, ३; ९७१-७३		जलाचि.
अग्निः वैश्वानरः ६, ११२, १-३; १६७३ ७५		पापादिना.	अप्सरसः ४, ३७, १, ३-५; ७१५, ७१७-१२		किमिना.

अरातयः ५, ७, १-३, ६-१०; १७७७ ७९, १७८२-८६ पापादि.
अरातिनाशनम् ५, ७, १-१०; १७७७-८६
अरिनाशनम् ७, ५९, १; १७७६

अरिष्टनाशनम् । (१५७३-१५९०)

अरिष्टक्षयणम् ६, २७, १-३; १५७९-८१ । ६, २८,
१-३ । २९, १-३ । ८०, १-३; १५८२-९० अरिष्ट.

अरिष्टानि अंगानि । (१५७-१५८)

अरुन्धती (औषधिः) ६, ५९, १-३; ४०७ ९ औषधि.
अर्कः ६, ७२, १-३; १३४० ४२ वाजीक.
अर्यमा १, १८, २; ६७४ रोगचि.
अर्यमा १, ११, १-६; १४०५-१० गर्भाधानं
अर्यमा ३, १४, २; २३२१ यज्ञादि.
अलक्ष्मीघ्नम् ऋ. १०, १५५, १, ४; २३३७-३८ रोगचि.
अलक्ष्मीनाशनम् १, १८, १ ४; ६७३ ७६ रोगचि.
अवनम् १९, ६५, १ [अग्निः २३४९] पापादि.
अश्विनौ २, २९, ६; ९६ । ७, ५३, १-७; १४३ ४९ दीर्घायु.
अश्विनौ ऋ. १, १२०, १; ६२३ रोगचि.
अश्विनौ ऋ. ५, ७८, ५-९; १३९९-१४०३

(गर्भलाविष्युपनिषद्) गर्भाधानं.

अश्विनौ ७, ७३, ६-७, ११; १९१८-२० यज्ञादि.
असिक्किः १, २३, १-४; ५१७-२० रोगचि.
असुरक्षयणम् ६, ७, १-३; ७६३-६५ किमिना.
असुरः वरुणः १, १०, १-४; १६५४-५७ पापादिना.
अस्तुतमणिः १९, ४६, १-७; १५७२-७८ मणिधारणं
अहः ३, १४, १; २३२० यज्ञादि.
अहानि ७, ६९, १; ६३८ रोगचि.

आञ्जनम् ४, ९, १-१०; ५८०-८९ । १९, ४५, १-१०;

५९२-६०१ । १९, ४४, १-१२; ६०२-११ रोगचि.

आत्मा ७, १११, १; १३६६ गर्भाधानं.

आदित्यः २, ३२, १-६; ७०९१४ किमिना.

आदित्यः ६, ८१, १-३; १३५९ ६१ गर्भाधानं.

आदित्यः १६, ३, १-६ । ४, -१७; १८२२-१४ पापादि.

आदित्याः १, ३०, १; ५५ दीर्घायु.

आदित्यरश्मयः ६, २२, १; ९६५ जलचि.

आनृण्यम् ६, ११९, १-३; १६७३-७५ पापादिना.

आपः २, २९, ४-५; ९४-९५ दीर्घायु.

आपः ३, ७, ५; १९६ । ६, ९१, ३; २०१ यक्षमना.

आपः ऋ. १, १९१, १-१६; ७७४-८९ विषना.

आपः ऋ. १, २३, १६-२३ । ७, ४७, १-४ ।

४९, १-४ । १०, २, १-९ । १७, १०-१४ । १९,

१-८ । ३०, १-१५ । अ० १, ३३, १-४;

८६३-९१९ । ३, २३, १, ४-७; ९२०, ९२३ २६ ।

७, ३९, १; ९२७ । १९, २, १-५ । ६९, १-४;

९२८-३६ । वा. य. १, १२-१३, २१, ३१ ।

२, २, ३४; ४, १, २ । ५, ११ । ६, १०-१३, ३०-३१ ।

६, १७, २२, २४, २७ २८ । ८, २६; ९३७-५५ ।

१, ४, ४ । ६, ४; ९६३-६४६, २३, १-३, २४, १-३;

९६८-७३ । ४, १५, ५-१०; १००८-१३ । वा० य०

१०, १-४, ६, १९ । ११, ३८ । १२, ३५, ५५ । १४, ८ ।

२०, १८-२०, २२-२३; १०९३-११०७ जलचि.

आपः ४, ४, ५; १३३६ वाजीक.

आपः १०, ६, ३; १४८० मणिधारणं

आपः २, १०, २; १६६३ । ७, ६४, १-२; १७३२-

३३, ११२, १-२; १७६८-६९ । ६, ५१, १-३;

१७८७-८९ पापादिना.

आपः १८, ३, ५६; २१३५ यज्ञादि.

आपः दिव्याः ६, १५४, १-३ । ७, ८९, १-४; ९५६-६९ जलचि.

आयुः २, २८, १, ३; १, ३ । ८, १, १-२१ । २, १-२८;

६-५४ । ७, ३२, १; १४१ ।

७, ५३, १-७; १४३-४९ दीर्घायुष्यम्

आयुः ३, ३१, ८-१०; १७५-७७ यक्षमनाश.

आयुः ६, १०९, १-३; ४१३-१५ औषधिव.

आयुः २, ३, १-६; ५६५ ७० । ७, १-५; ६६८-७२ रोगचिकि.

आयुः सर्वम् १९, ६१, १; १५५ । ७०, १; १५६ दीर्घायु.

आयुष्यम् ३, ११, १-८; ७२-६९ । ५, ३०, १-१७;

९८-११४ । ६, ७६, १-४; १५०-५३ दीर्घायु.

आयुष्यम् २, ३३, १७; २९४-३०० यक्षमनाश.

आयुष्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१ औषधिव.

आयुष्कामः द्रष्टा १, ३०, १-४; ५५-५८ । ३५, १-४

५९-७२ । ५, ३०, १-१७; ९८-११४ दीर्घायु.

आयुष्कामः १९, ३२, १-१० । ३३, १-५; १९२३-३७ यज्ञादि.

आयुर्वर्धनम् १९, ६३, १; १५४ दीर्घायु.

ययोगनाशनम् २,८,१-५; ४९३-९७ रोगचिकित्सा
माला चिकित्सा ७,७४,१-४ । ७६,१-६; ५०३-१२ ,,
वर्षारसः ४,३७,७-१२; ७२१-२६ क्रिमिना.
गर्भाधानम् । (१३४६-१४१०)
इणम् ६,१७,१-४; १३६२-६५ गर्भाधानम्
शेषनिवारणम् ८,६,१-२६; १३६७-९२ गर्भाधानम्
तंलावः २०,८,११-१६; १३९३-९८ गर्भाधानम्
शविष्युपनिषद् ऋ० ५,७८,५-९; १३९९-१४०३ ,,
धानम् ६,८१,१-३; १३९५-६१ गर्भाधानम्
ऋ० १,९०,८; ४७३ ओषधि.
६,५२,२; ५६३ रोगचि.
ऋ. १०,१९,१-८; ८९३-९०० जलचि.
३,१४,१-६; २३२०-२५ यज्ञादि.
३,१४,१-५; २३२० २३२४ यज्ञादि.
गः ऋ० ७,१०४,१७ । १०,७६,१-८ । ९४,
-१४ । १७५,१-४; २२८४-२३१० यज्ञादि.
७,७३,६७,११; १९१८-२० यज्ञादि.
मः ५,६२,२-४, ६-९,११; १९३८-५५ यज्ञादि.
३,३१,६; १७३ यक्ष्मना.
१,३,४; ५७४ रागचि.
गः २,४,१,६; ६६-७१ । ४,१,१-३; ६३-६५ दीर्घायु.
माः २,३३,१-७; २९४-३०० यक्ष्मना.
माः ६,२,१-३; ४५७-५९६, १६, १-४; ४६६-६९ ओषधि.
माः ६,८३,१; ५१३ । ७,११६,१-२; ५२९-३० ।
माः ४,१३,१-७; ५४८-५४ । १,२,३; ६६६ रोगचि.
माः २,३१,१-५; ६९१-२५ क्रिमिना.
माः १,३३,१-४; ९१६-१९ जलचि.
माः १०,३,१-२५; १४५३-७७ मणिधा.
माः ६,८०,१-३; १५८८-९० अरिष्टना.
माः ११,६,१-२३; १७३४-५६ । ६,३७,१-३;
१७७३-७५ पापादि.
माः १८,४,८९; २२-३९ । १९,१,१-३; २२४६-४८ यज्ञादि.
केत्सा ६,९६,१-३; ३५२-५४ ओषधि.
ऋः २,४,१-६; ६६-७१ दीर्घायु.
ऋः १९,३५,१-५; १५६१-६५ मणिधा.
ऋमणिः १९,३४,१-१०; १५५१-६० मणिधा.
२४ दै. [आयुर्वेद०]

जरिमा २,२८,१-३; १,३ दीर्घायु.
जलचिकित्सा । (८६०-११०७)
जातवेदा ६,२९,२,९२ दीर्घायु.
जातवेदा ७,७४,४; ५०४ रोगचि.
जातवेदा १,१८,३,४; ७२९-३० । ५,२९,१-१५;
७३८-५२ । १९,६६,१; ७३६ । १,७
१-७; ७६७-७३ क्रिमिना.
जातवेदा १८,२,५; २०२९ यज्ञादि.
जायान्यः ७,७६,३-६; ५०९-१२ रोगचि.
ज्वरनाशनम् १,२५,१-४; ५२५-२८ । ७,११६,१-२;
५२९-३० रोगचि.
तक्मनाशनः ५,२२,१-१४; ५३१-४४ रोगचि.
तक्षकः ४,६,१-८; ७९०-९७ । १०,४,१-२६;
५,१३,१-११ । ७,८८,१; ६,१२,१-३; ८०८-४८ विषना.
तपः ७,६१,१-२; १९२१-२२ यज्ञादि.
तारके ३,७,१; १७५ यक्ष्मना.
तृणम् ऋ० १,१९१,१-१६; ७७४-८९ (अप्तृणसूर्याः) विषना.
त्रिष्टु ५,२८,१-१४; १२७-४० दीर्घायु.
त्रैकाकुदाञ्जनम् ४,९,१-१०; ५८०-८९ रोगचि.
त्वष्टा ३,३१,२; १७२ यक्ष्मना.
त्वष्टा ६,८१,३; १३६१ गर्भाधानं
त्वष्टा ५,२६,८; १९४३ यज्ञादि.
दन्तौ ६,१४०,१-३; १५९-६१ (सुमंमलौ दन्तौ) दीर्घायु.
दर्भः १२,३२,१-१०; १२२३-३२ । ३३,१-५;
१९३३-३७ यज्ञादि.
दर्भमणिः १९,२८,१-१० । २९,१-९ । ३०,१-५;
१५१३-३६ मणिधा.
दस्युनाशनम् २,१४,१-६; १६४८-५३ कृत्याद्.
दिशः ४,१५,१; १००४ जलचि.
दिशः १,११,१-६; १००५-१० गर्भाधानं
दिशः २,१०,३; १६६४ पापादिना.
दीर्घायुष्यम् । (१-१६१)
दीर्घायुः ५,२८,१-१४; १२७-४० । ७,३३,१; १४२ दीर्घायु.
दीर्घायुत्वम् १९,६४,१-४; ११५-१८ । ६७,१-८;
११९-२३ दीर्घायु.

क्षेत्रियरोगनाशनम् २,८,१-५; ४९३-९७	रोगचिकित्सा
गण्डमाला चिकित्सा ७,७४,१-४ । ७६,१-६; ५०३-१२ ,,	क्रिमिना.
गन्धर्वीप्सरसः ४,३७,७-१२; ७२१-२६	क्रिमिना.
गर्भाधानम् । (१३४६-१४१०)	
गर्भहृदणम् ६,१७,१-४; १३६२-६५	गर्भाधानम्
गर्भदोषनिवारणम् ८,६,१-२६; १३६७-९२	गर्भाधानम्
गर्भसंस्त्रावः २०,९६,११-१६; १३९३-९८	गर्भाधानम्
गर्भलाविष्युपनिषद् ऋ० ५,७८,५-९; १३९९-१४०३ ,,	गर्भाधानम्
गर्भाधानम् ६,८१,१-३; १३९५-६१	गर्भाधानम्
गावः ऋ० १,९०,८; ४७३	ओषधि.
गावः ६,५२,२; ५६३	रोगचि.
गावः ऋ. १०,१९,१-८; ८२३-९००	जलाचि.
गावः ३,१४,१-६; २३२०-२५	यज्ञादि.
गोष्ठः ३,१४,१-५; २३२० २३२४	यज्ञादि.
ग्रावाणः ऋ० ७,१०४,१७ । १०,७६,१-८ । ९४,	यज्ञादि.
१-१४ । १७५,१-४; २२८४-२३१०	यज्ञादि.
घर्मः ७,७३,६७,११; १९१८-२०	यज्ञादि.
घृतहोमः ५,६२,२-४, ६-९,११; १९३८-५५	यज्ञादि.
चन्द्रः ३,३१,६; १७३	यक्ष्मना.
चन्द्रः १,३,४; ५७४	रोगचि.
चन्द्रमाः २,४,१,६; ६६-७१ । ४,१,१-३; ६३-६५	दीर्घायु.
चन्द्रमाः २,३३,१-७; २९४-३००	यक्ष्मना.
चन्द्रमाः ६,२,१-३; ४५७-५९६, १६, १-४; ४६६-६९	ओषधि.
चन्द्रमाः ६,८३,१; ५१३ । ७,११६,१-२; ५२९-३० ।	रोगचि.
चन्द्रमाः ४,१३,१-७; ५४८-५४ । १,२,३; ६६६	क्रिमिना.
चन्द्रमाः २,३१,१-५; ६९१-९५	जलाचि.
चन्द्रमाः १,३३,१-४; ९१६-१९	मणिधा.
चन्द्रमाः १०,३,१-२५; १४५३-७७	अरिष्टना.
चन्द्रमाः ६,८०,१-३; १५८८-२०	पापादि.
चन्द्रमाः ११,६,१-२३; १७३४-५६ । ६,३७,१-३;	पापादि.
१७७३-७५	पापादि.
चन्द्रमाः १८,४,८९; २२-३९ । १९,१,१-३; २२४६-४८	यज्ञादि.
चिकित्सा ६,९६,१-३; ३५२-५४	ओषधि.
जङ्गिडः २,४,१-६; ६६-७१	दीर्घायु.
जङ्गिडः १९,३५,१-५; १५६१-६५	मणिधा.
जङ्गिडमणिः १९,३४,१-१०; १५५१-६०	मणिधा.

२४ दे. [आयुर्वेद०]

जरिमा २,२८,१-३; १,३	दीर्घायु.
जलाचिकित्सा । (८६०-११०७)	
जातवेदा ६,२९,२,९२	दीर्घायु.
जातवेदा ७,७४,४; ५०४	रोगचि.
जातवेदा १,१८,३,४; ७२९-३० । ५,२९,१-१५;	
७३८-५२ । १९,६६,१; ७३६ । १,७	
१-७; ७६७-७३	क्रिमिना.
जातवेदा १८,२,५; २०२९	यज्ञादि.
जायान्यः ७,७६,३-६; ५०९-११	रोगचि.
ज्वरनाशनम् १,२५,१-४; ५२५-२८ । ७,११६,१-२;	
५२९-३०	रोगचि.
तक्मनाशनः ५,२२,१-१४; ५३१-४४	रोगचि.
तक्षकः ४,६,१-८; ७९०-९७ । १०,४,१-२६;	
५,१३,१-११ । ७,८८,१; ६,१२,१-३; ८०८-४८	विषना.
तपः ७,६१,१-२; १९२१-२२	यज्ञादि.
तारके ३,७,१; १७५	यक्ष्मना.
तृणम् ऋ० १,१९१,१-१६; ७७४-८९ (अप्तृणसूर्याः)	विषना.
त्रिष्टुत ५,२८,१-१४; १२७-४०	दीर्घायु.
त्रैकाकुदाञ्जनम् ४,९,१-१०; ५८०-८९	रोगचि.
त्वष्टा ३,३१,२; १७२	यक्ष्मना.
त्वष्टा ६,८१,३; १३६१	गर्भाधानं
त्वष्टा ५,२६,८; १९४३	यज्ञादि.
दन्तौ ६,१४०,१-३; १५९-६१ (सुमंमलौ दन्तौ)	दीर्घायु.
दर्भः १२,३२,१-१०; १२२३-३२ । ३३,१-५;	
१९३३-३७	यज्ञादि.
दर्भमणिः १२,२८,१-१० । २९,१-९ । ३०,१-५;	
१५१३-३६	मणिधा.
दस्युनाशनम् २,१४,१-६; १६४८-५३	कृत्वादू.
दिशः ४,१५,१; १००४	जलाचि.
दिशः १,११,१-६; १००५-१०	गर्भाधानं
दिशः २,१०,३; १६६४	पापादिना.
दीर्घायुष्यम् । (१-१६१)	
दीर्घायुः ५,२८,१-१४; १२७-४० । ७,३३,१; १४२ दीर्घायु.	
दीर्घायुत्वम् १९,६४,१-४; ११५-१८ । ६७,१-८;	
११९-२३	दीर्घायु.

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२,१०० । ३४,५०-५२; २३२७-३०	दीर्घायु.	नितत्नी (वनस्पतिः) ६,१३६,१-३; ४६०-६२	ओषधि.
दीर्घायुः प्राप्तिः २,१३,१-५; २३३१-३५	दीर्घायु.	निर्ऋतिः ६,२७,१-३ । २८,१-३ । २९,१-३; १५७९-८७	अरिष्टना.
दुरितनाशनम् ७,६५,१-३; ४०४-६	ओषधि.	निर्ऋतिः २,१०,४-८; १६६५-६९ । ७,६४,१-२;	पापादि.
दुरितनाशनम् ७,६३,१; [अग्निः २३७४]	पापादि.	१७३२-३३	पापादि.
दुःखनाशनम् ३,९,१-६; १७९७-१८०३	पापादि.	निर्ऋतिमोचनम् ६,८४,१-४; १७९०-२३	पापादि.
दुःखमोचनम् १६,१,१-१३ । २,१-६ । ३,१-६ । ४,१-७;	पापादि.	निविदः ५,२६,४; १९४०	यज्ञादि.
१८०३-३४	पापादि.	पञ्चौदनः अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२०	अन्नादि.
दुःष्वप्ननाशनम् ऋ० १,१२०,१२ । २,२८,१० । १०, १६४,१-५; ६२३-२९	रोगाचि.	परस्परचित्तैकीकरणकामः [ब्रह्मा] ६,४३,१-३; ६,५७-४१ रोगाचि.	यक्षमना.
दुःष्वप्ननाशनम् अ० ६,४५,१-३ । ४६,१-३ । ७,१००,१ । १०१,१; ६३०-३७	रोगाचि.	पर्जन्यः ३,३१,११; १७८	यक्षमना.
दुःष्वप्ननाशनम् १६,५,१-१० । ६,१-११ । ७,१-१३ । ८, १-३३ । ९,१-४; ७,२३,१, १९,५६,१-६ । ५७,१-५; १८३५ १९१७	पापादि.	पर्जन्यः १,३,१; ५७१ । १,,२१४; ६६४-६७	रोगाचि.
देवाः १,३०,१-४; ५५-५८	दीर्घायु.	पर्जन्यः ऋ० ५,८३,१-१०; १०,२७,१६ । ७,१०१, १-६ । १०२,१-३ । १०३,१-१०; ९७४-१००३	जलचि.
देवाः ३,३१,७; १७४	यक्षमना.	४,१५,४; १००७ । ७,१८,१-२; १०२० २१	जलचि.
देवाः ४,१३,१; ५४८ । १,१८,२; ६७४	रोगाचि.	पवमानः सोमः ऋ० ९,७४,५; १४०४	गर्भाधानं.
देवाः ६,७,३; ७६५	किमिना.	पशवः ३,३१,३; १७०	यक्षमना.
देवाः ६,७१,३; ११२१	अन्नादि.	पापादिनाशनम् । (१६५३-१९१७)	
देवाः १,११,१-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	पापनाशनम् ४,३३,१-८; १७५७-६४ । ६,११,१-३;	
देवाः ३,९,१-६; १७९७-१८०२	पापादि.	१७६५-६७ । ७,१२२,१-२; १७६८-६९	पापादि.
दैव्याः ऋषयः ६,४१,१-३; ६३-६५	दीर्घायु.	पापमोचनम् ४,२३,१-७ । २४,१-७ । २५,१-७ ।	
द्यावापृथिवी २,२९,४-५; ९४-९५	दीर्घायु.	२६,१-७; १६८५-१७१२ । २७,१-७; [मरुतः ४००-४६] । २८,१-७ । २९,१-७ । ६,६५,१-३;	
द्यावापृथिवी ३,३१,४; १७१	यक्षमना.	७,४२,१-२ । ६४,२-२ । ११,१-२, १-२, १७१३-५६ पादादि.	
द्यावापृथिवी ७,३०,१; ५९०	रोगाचि.	पापलक्षणनाशनम् ७,११५,१-४ [अग्निः २२०१-४] पापादि.	
द्यावापृथिवी ४,६,२; ७९१	विषना.	पापशमनम् ६,३०,१-३; ४७०-७२	ओषधि.
द्यावापृथिवी २,१०,१-८; १६६२-६९ । ४,२६,१-७; १७०६-१२ । ३,९,१-६; १७२७-१८०२	पापादि.	पाप्मनाशनः (अग्निः) ४,३३,१-८; १७५७ ६४	पापादि.
द्यावापृथिव्यादयः २,२८,४-५; ४-५	दीर्घायु.	पाप्मनाशनम् ६,२६,१-३; १७७०-७२	पापादि.
अनाजदानम् ऋ. १०,११७,१-२; २३११-१२	यज्ञादि.	पाप्महा ३,३१,१-११; १६८-७८	यक्षमना.
धन्वन्तरिः २,३,१-६; ५६५-७०	रोगाचि.	पाप्मा ६,२६,१-३; १७७०-७२	पापादि.
धमन्यः धमनीबन्धनम् १,१७,१-४; ५५५-५८	रोगाचि.	पाशमोचनम् १,३१,१-४ । २,१०,१-८ । ६,११२,१-३ ।	
नयः ऋ. ३,३३,१-३; ५,९,११-१३; १०२२-३४	जलचि.	११९,१-३ । ७,८३; १-४; १६५८-७२	पापादि.
ऋ० ७,५०,४; ऋ० १०,७५,१-९; १०३५-४४	गर्भाधानं	पाशविमोचनम् १,१०,१-४; १६५४-५७	पापादि.
नारीमुखप्रसूतिः १,११,१-६; १४०५-१०		पितरः ४,१५,१३-१५; १०१६-१८	जलचि.
		पितरः १०,१४,७-९; १९७३-७५ । १५,१-१४; १९८७-२००० । १८,१,४४-४६; ५१,५२; २०१०-१२, २०१६-१७ । १८,२,२९; २०५३ । ४,८१; २२३१	यज्ञादि.

पितृमेघः १०, १८, ७-१४; १९४६-५३ । १८, १, ६,
 १३ १४, १७, ३३-४९, ५१-५४, ५७-६१ ।
 २, १-६० । ३, १, ३-४९; ५२, ५४, ५६, ५८-६६;
 ६८-७३; २००१-२१५० यज्ञादि.
 पिप्पली ६, १०२, १-३; ४१३-२५ ओषधि.
 पिशाचक्षयणम् ४, २०, १-९; ७५४-६२ क्रिमिना.
 पुष्टिकामः (द्रष्टा) १९, ३१, १-१४; १५३७-५० मणिधा.
 पूषा ७, ३३, १; १४२ दीर्घायु.
 पूषा १, ११, १-६; १४०५-१० गर्भाधानं
 पूषा ६, ११३, १-३; १७६५-६७ । १६, २, २;
 १९०३ पापादि.
 पूषा ३, १४, २; २३२१ यज्ञादि.
 पृथिवी १, २, १, ४; ६६४, ६६७ रोगाचि.
 पृथिवी ७, १८, १-२; १०२० २१ जलचि.
 पृथिवी ६, १७, १-४; १३६२-६५ गर्भाधानं
 पृथिव्यादयः ५, २५, १-१३; १३४३-५८ गर्भाधानं
 पृश्निपर्णी २, २५, १-५; ४१६-२० ओषधि.
 प्रजापतिः ४, १५, १-१; १०१४ जलचि.
 प्रजापतिः ४, ४, १-२; १३३२-३३ बाजीक.
 प्रजापतिः १६, १, १-१३; १८०३-१५१६, ९, १, १९०२ पापादि.
 प्रजापतिः ॠ० १०, १८, १४; १९५३ यज्ञादि.
 प्रतिसरः मणिः ८, ५, १-२२; १४३१-५२ मणिधा.
 फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२ मणिधा.
 बन्धमोचनम् ७, ७८, १-२; १६८०-८१ पापादि.
 बलासः बलासनाशनम् ६, १४, १-३; ४८३-८५ रोगाचि.
 बहुदैवत्यम् ५, ७, १-१०; १७७७-८६ (अरातिनाशनम्) पापादि.
 बहुदैवत्यम् १९, ५८, १-६; २२४९-५४ (यज्ञः) यज्ञादि.
 बार्हस्पत्य-ओदनः ११, ३, १-५६; ११२७-८२ अन्नादि.
 बृहस्पतिः २, २९, १; ९१ । ७, ५३, १-७; १४३-४९ ।
 २, १३, २-३; २३३२-३३ दीर्घायु.
 बृहस्पतिः १, १८, १-२; ७२८-२९ क्रिमिना.
 बृहस्पतिः १९, ४०, १-४; १४११-१४ गर्भाधानं
 बृहस्पतिः ३, १४, २; २३२१ यज्ञादि.
 ब्रह्मा २, १०, १-८; १६६२-६९ पापादि.
 ब्रह्मणस्पतिः १९, ६३, १६१-११; १५४-५५६, १४०,
 १-३; १५९-६१ (सुमंगलौ दन्तौ) दीर्घायु.

ब्रह्मणस्पतिः ७, ३०, १; ५९० रोगाचि.
 ब्रह्मणस्पतिः ७, ५६, ४; ८५५ विषना.
 ब्रह्मणस्पतिः ४, ४, ६; १३३७ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३;
 १३४०-४५ बाजीक.
 ब्रह्मणस्पतिः ८, ६, १५; १३८१ गर्भाधानं
 ब्रह्मौदनम् ११, १, १-३७; १२२९-६५ अन्नादि.
 भगः ५, २६, २; १९४४ यज्ञादि.
 भवाश्वौ ४, २८, १-७; १७१३-१९ पापादिना.
 भेषजम् ६, ५२, ३; ५६४ । ७, ४५, १-२; ६८५ ८६ रोगाचि.
 भेषजम् आस्त्रावत्य २, ३, १-६; ५६५ ७० रोगाचि.
 भेषज्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१ । ६, १०९, १-३;
 ४१३-१५ ओषधि.
 भेषज्यम् २, ३, १-६; ५६५-७० । १९, ४४, १-१०;
 ६०२-११; २, ७, १-५; ६६८-७२ रोगाचि.
 भेषज्यम् ६, २२, १-३; ९६५-६७ जलचि.
 मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)
 मणिः अस्तृत १९, ४६, १-७; १५७२-७८ मणिधारणं
 मणिः औदुम्बरः १९, ३१-१-१४; १५३७ ५० मणिधारणं
 मणिः जंगिडः १९, ३४, २-१०; १५५१-६० । ३५, १-५;
 १५६१-६५ मणिधारणं
 मणिः जंगिडः २, ४, १-६; ६६-७१ दीर्घायु.
 मणिः दर्मः १९, २८, १-१० । २९, १-९ । ३०, १-५;
 १५१३-३६ मणिधारणं
 मणिः प्रतिसरः ८, ५, १-२२; १५३१-५२ मणिधारणं
 मणिः फाल १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२ मणिधारणं
 मणिः वरणः १०, ३, १-२५; १४५३-७७ मणिधारणं
 मणिः शंख ४, १०, १-७; १४२४-३० मणिधारणं
 मणिः शतवारः १९, ३६, १-६; १५६६-७१ मणिधारणं
 मण्डूकाः ॠ० ७, १०३, १-१०; ९९४-१००३ ।
 अ. ४, १५, १३ १५; १०१६-१८ जलचि.
 मधु (वनस्पतिः) मधु-विद्या १, ३४, १-५; ४७८-८२ ओषधि.
 मधुमत् अजम् ६, ११६, १-३; १२६६-६८ अन्नादि.
 मधुला (वनस्पतिः) ५, १५, १-११; ६५३ ६३ रोगाचि.
 मनः ७, ३६, १; ५९१ रोगाचि.
 मंत्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१ यक्षमना.
 मंत्रोक्ताः ६, १६, १-४; ४६६-६९ ओषधि.

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२,१०० । ३४,५०-५२; २३२७-३०	दीर्घायु.	नितस्नी (वनस्पतिः) ६,१३६,१-३; ४६०-६२	ओषधि.
दीर्घायुः प्राप्तिः २,१३,१-५; २३३१-३५	दीर्घायु.	निर्ऋतिः ६,२७,१-३ । २८,१-३ । २९,१-३; १५७९-८७	अरिष्टना.
दुरितनाशनम् ७,६५,१-३; ४०४-६	ओषधि.	निर्ऋतिः २,१०,४-८; १६६५-६९ । ७,६४,१-२;	
दुरितनाशनम् ७,६३,१; [अग्निः २३७४]	पापादि.	१७३२-३३	पापादि.
दुःखनाशनम् ३,९,१-६; १७९७-१८०३	पापादि.	निर्ऋतिमोचनम् ६,८४,१-४; १७९०-२३	पापादि.
दुःखमोचनम् १६,१,१-१३ । २,१-६ । ३,१-६ । ४,१-७;		निविदः ५,२६,४; १९४०	यज्ञादि.
१८०३-३४	पापादि.	पञ्चौदनः अजः ९,५,१-३८; ११८३-१२२०	अज्ञादि.
दुःष्वप्ननाशनम् ऋ० १,१२०,१२ । २,२८,१० । १०, १६४,१-५; ६२३-२९	रोगाचि.	परस्परचित्तकीकरणकामः [द्रष्टा] ६,४३,१-३; ६१९-४१ रोगाचि.	
दुःष्वप्ननाशनम् अ० ६,४५,१-३ । ४६,१-३ । ७,१००,१ । १०१,१; ६३०-३७	रोगाचि.	पर्जन्यः ३,३१,११; १७८	यक्षमना.
दुःष्वप्ननाशनम् १६,५,१-१० । ६,१-११ । ७,१-१३ । ८, १-३३ । ९,१-४; ७,२३,१, १९,५६,१-६ । ५७,१-५; १८३५ १९१७	पापादि.	पर्जन्यः १,३,१; ५७१ । १,,११४; ६६४-६७	रोगाचि.
देवाः १,३०,१-४; ५५-५८	दीर्घायु.	पर्जन्यः ऋ० ५,८३,१-१०; १०,२७,१६ । ७,१०१, १-६ । १०२,१-३ । १०३,१-१०; ९७४-१००३	जलचि.
देवाः ३,३१,७; १७४	यक्षमना.	४,१५,४; १००७ । ७,१८,१-२; १०२० २१	
देवाः ४,१३,१; ५४८ । १,१८,२; ६७४	रोगाचि.	पञ्चमानः सोमः ऋ० ९,७४,५; १४०४	गर्भाधानं.
देवाः ६,७,३; ७६५	क्रिमिना.	पञ्चवः ३,३१,३; १७०	यक्षमना.
देवाः ६,७१,३; ११२१	अज्ञादि.		
देवाः १,११,१-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	पापादिनाशनम् । (१६५३-१९१७)	
देवाः ३,९,१-६; १७९७-१८०२	पापादि.	पापनाशनम् ४,३३,१-८; १७५७-६४ । ६,११,१-३;	
दैव्याः ऋषयः ६,४१,१-३; ६३-६५	दीर्घायु.	१७६५-६७ । ७,११,१-२; १७६८-६९	पापादि.
द्यावापृथिवी २,२९,४-५; ९४-९५	दीर्घायु.	पापमोचनम् ४,२३,१-७ । २४,१-७ । २५,१-७ ।	
द्यावापृथिवी ३,३१,४; १७१	यक्षमना.	२६,१-७; १६८५-१७१२ । २७,१-७; [महतः ४००-४६] । २८,१-७ । २९,१-७ । ६,१५,१-३;	
द्यावापृथिवी ७,३०,१; ५९०	रोगाचि.	७,४२,१-२ । ६४,१-२ । ११,१-६, १-२३, १७१३-५६ पादादि.	
द्यावापृथिवी ४,६,१; ७९१	विषना.	पापलक्षणनाशनम् ७,११५,१-४ [अग्निः २२०१-४] पापादि.	
द्यावापृथिवी २,१०,१-८; १६६२-६९ । ४,२६,१-७; १७०६-१२ । ३,९,१-६; १७२७-१८०२	पापादि.	पापशमनम् ६,३०,१-३; ४७०-७२	ओषधि.
द्यावापृथिव्यादयः २,२८,४-५; ४-५	दीर्घायु.	पाप्मनाशनः (अग्निः) ४,३३,१-८; १७५७-६४	पापादि.
धनान्नदानम् ऋ० १०,११७,१-२; २३११-१९	यज्ञादि.	पाप्मनाशनम् ६,२६,१-३; १७७०-७२	पापादि.
धन्वन्तरिः २,३,१-६; ५६५-७०	रोगाचि.	पाप्महा ३,३१,१-११; १६८-७८	यक्षमना.
धमन्यः धमनीबन्धनम् १,१७,१-४; ५५५-५८	रोगाचि.	पाप्मा ६,२६,१-३; १७७०-७२	पापादि.
नयः ऋ० ३,३३,१-३; ५,९,११-१३; १०२२-३४		पाशमोचनम् १,३१,१-४ । २,१०,१-८ । ६,११२,१-३ ।	
ऋ० ७,५०,४; ऋ० १०,७५,१-२; १०३५-४४	जलचि.	११९,१-३ । ७,८३; १-४; १६५८-७२	पापादि.
नारीसुखप्रसूतिः १,११,१-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	पाशविमोचनम् १,१०,१-४; १६५४-५७	पापादि.
		पितरः ४,१५,१३-१५; १०१६-१८	जलचि.
		पितरः १०,१४,७-९; १९७३-७५ । १५,१-१४;	
		१९८७-२००० । १८,१,४४-४६; ५१,५२;	
		२०१०-१२, २०१६-१७ । १८,२,२९; २०५३ ।	
		४,८१; २२३१	यज्ञादि.

पितृमेघः १०, १८, ७-१४; १९४६-५३ । १८, १, ६,
१३ १४, १७, ३३-४९, ५१-५४, ५७-६१ ।
२, १-६० । ३, १, ३-४९; ५२, ५४, ५६, ५८-६६;
६८-७३; २००१-२१५०

यज्ञादि.

पिप्पली ६, १०९, १-३; ४१३-१५

ओषधि.

पिशाचक्षयणम् ४, २०, १-९; ७५४-६२

क्रिमिना.

पुष्टिकामः (द्रष्टा) १९, ३१, १-१४; १५३७-५०

मणिधा.

पूषा ७, ३३, १; १४९

दीर्घायु.

पूषा १, ११, १-६; १४०५-१०

गर्भाधानं

पूषा ६, ११३, १-३; १७६५-६७ । १६, ९, २;

१९०३

पापादि.

पूषा ३, १४, २; २३२१

यज्ञादि.

पृथिवी १, २, १, ४; ६६४, ६६७

रोगाचि.

पृथिवी ७, १८, १-२; १०२० २१

जलचि.

पृथिवी ६, १७, १-४; १३६२-६५

गर्भाधानं

पृथिव्यादयः ५, २५, १-१३; १३४३-५८

गर्भाधानं

पृथिव्या २, २५, १-५; ४१६-२०

ओषधि.

प्रजापतिः ४, १५, ११; १०१४

जलचि.

प्रजापतिः ४, ४, १-२; १३३२-३३

वाजीक.

प्रजापतिः १६, १, १-१३; १८०३-१५१६, ९, १, १९०२

पापादि.

प्रजापतिः १०, १८, १४; १९५३

यज्ञादि.

प्रतिसरः मणिः ८, ५, १-२२; १४३१-५२

मणिधा.

फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२

मणिधा.

बन्धमोचनम् ७, ८८, १-२; १६८०-८१

पापादि.

बलासः बलासनाशनम् ६, १४, १-३; ४८३-८५

रोगाचि.

बहुदैवत्यम् ५, ७, १-१०; १७७७-८६ (अरातिनाशनम्)

पापादि.

बहुदैवत्यम् १९, ५८, १-६; २२४९-५४ (यज्ञः)

यज्ञादि.

बार्हस्पत्य-ओदनः ११, ३, १-५६; ११२७-८२

अज्ञादि.

बृहस्पतिः २, २९, १; ९१। ७, ५३, १-७; १४३-४९ ।

२, १३, २-३; २३३२-३३

दीर्घायु.

बृहस्पतिः १, १८, १-२; ७२८-२९

क्रिमिना.

बृहस्पतिः १९, ४०, १-४; १४११-१४

गर्भाधानं

बृहस्पतिः ३, १४, २; २३२१

यज्ञादि.

ब्रह्मा २, १०, १-८; १६६२-६९

पापादि.

ब्रह्मणस्पतिः १९, ६३, १६१-१; १५४-५५६, १४०,

१-३; १५९-६१ (सुमंगलौ दन्तौ)

दीर्घायु.

ब्रह्मणस्पतिः ७, ३०, १; ५९०

रोगाचि.

ब्रह्मणस्पतिः ७, ५६, ४; ८५५

विषना.

ब्रह्मणस्पतिः ४, ४, ६; १३३७। ६, ७२, १-३। १०१, १-३;

१३४०-४५

वाजीक.

ब्रह्मणस्पतिः ८, ६, १५; १३८१

गर्भाधानं

ब्रह्मौदनम् ११, १, १-३७; १२२९-६५

अज्ञादि.

भगः ५, २६, २; १९४४

यज्ञादि.

भवाश्वौ ४, २८, १-७; १७१३-१९

पापादिना.

भेषजम् ६, ५२, ३; ५६४। ७, ४५, १-२; ६८५ ८६

रोगाचि.

भेषजम् आस्त्रावस्य २, ३, १-६; ५६५ ७०

रोगाचि.

भेषज्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१ । ६, १०९, १-३;

४१३-१५

ओषधि.

भेषज्यम् २, ३, १-६; ५६५-७० । १९, ४४, १-१०;

६०२-११; २, ७, १-५; ६६८-७२

रोगाचि.

भेषज्यम् ६, २२, १-३; २६५-६७

जलचि.

मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)

मणिः अस्तृत १९, ४६, १-७; १५७२-७८

मणिधारणं

मणिः औदुम्बरः १९, ३१-१-१४; १५३७ ५०

मणिधारणं

मणिः जंगिडः १९, ३४, १-१०; १५५१-६०। ३५, १-५;

१५६१-६५

मणिधारणं

मणिः जंगिडः २, ४, १-६; ६६-७१

दीर्घायु.

मणिः दर्मः १९, २८, १-१० । २९, १-९ । ३०, १-५;

१५१३-३६

मणिधारणं

मणिः प्रतिसरः ८, ५, १-२२; १३३१-५२

मणिधारणं

मणिः फाल १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२

मणिधारणं

मणिः वरणः १०, ३, १-२५; १४५३-७७

मणिधारणं

मणिः शंख ४, १०, १-७; १४२४-३०

मणिधारणं

मणिः शतवारः १९, ३६, १-६; १५६६-७१

मणिधारणं

मण्डूकाः १०, ७, १०३, १-१०; ९९४-१००३ ।

अ. ४, १५, १३ १५; १०१६-१८

जलचि.

मधु (वनस्पतिः) मधु-विद्या १, ३४, १-५; ४७८-८२

ओषधि.

मधुमत् अन्नम् ६, ११६, १-३; १९६६-६८

अज्ञादि.

मधुला (वनस्पतिः) ५, १५, १-११; ६५३ ६३

रोगाचि.

मनः ७, ३६, १; ५९१

रोगाचि.

मंत्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१

यक्षमना.

मंत्रोक्ताः ६, १६, १-४; ४६६-६९

ओषधि.

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२, १०० । ३४, ५०-५२;
 २३२७-३० दीर्घायु.
 दीर्घायुः प्राप्तिः २, १३, १-५; २३३१-३५ दीर्घायु.
 दुरितनाशनम् ७, ६५, १-३; ४०४-६ ओषधि.
 दुरितनाशनम् ७, ६३, १; [अग्निः २३७४] पापादि.
 दुःखनाशनम् ३, ९, १-६; १७९७-१८०३ पापादि.
 दुःखमोचनम् १६, १, १-१३। २, १-६। ३, १-६। ४, १-७;
 १८०३-३४ पापादि.
 दुःष्वप्ननाशनम् ऋ० १, १२०, १२। २, २८, १०। १०,
 १६४, १-५; ६२३-२९ रोगादि.
 दुःष्वप्ननाशनम् अ० ३, ४५, १-३। ४६, १-३। ७, १००, १।
 १०१, १; ६३०-३७ रोगादि.
 दुःष्वप्ननाशनम् १६, ५, १-१०। ६, १-११। ७, १-१३। ८,
 १-३३। ९, १-४; ७, २३, १, १९, ५६, १-६।
 ५७, १-५; १८३५ १९१७ पापादि.
 देवाः १, ३०, १-४; ५५-५८ दीर्घायु.
 देवाः ३, ३१, ७; १७४ यक्षमना.
 देवाः ४, १३, १; ५४८। १, १८, २; ६७४ रोगादि.
 देवाः ६, ७, ३; ७६५ क्रामिना.
 देवाः ६, ७१, ३; ११२१ अक्षादि.
 देवाः १, ११, १-६; १४०५-१० गर्भाधानं.
 देवाः ३, ९, १-६; १७९७-१८०२ पापादि.
 दैव्याः ऋषयः ६, ४१, १-३; ६३-६५ दीर्घायु.
 द्यावापृथिवी २, २९, ४-५; ९४-९५ दीर्घायु.
 द्यावापृथिवी ३, ३१, ४; १७१ यक्षमना.
 द्यावापृथिवी ७, ३०, १; ५९० रोगादि.
 द्यावापृथिवी ४, ६, १; ७९१ विषना.
 द्यावापृथिवी २, १०, १-८; १६६२-६९। ४, २६, १-७;
 १७०६-१२। ३, ९, १-६; १७१७-१८०२ पापादि.
 द्यावापृथिव्यादयः २, २८, ४-५; ४-५ दीर्घायु.
 द्यनाक्षदानम् ऋ. १०, ११७, १-२; २३११-१९ यक्षादि.
 धन्वन्तरिः २, ३, १-६; ५६५-७० रोगादि.
 धमन्यः धमनीबन्धनम् १, १७, १-४; ५५५-५८ रोगादि.
 नयः ऋ. ३, ३३, १-३; ५, ९, ११-१३; १०२२-३४
 ऋ० ७, ५०, ४; ऋ० १०, ७५, १-२; १०३५-४४ जलादि.

नितरुनी (वनस्पतिः) ६, १३६, १-३; ४६०-६२ ओषधि.
 निर्ऋतिः ६, २७, १-३। २८, १-३। २९, १-३;
 १५७९-८७ अरिष्टना.
 निर्ऋतिः २, १०, ४-८; १६६५-६९। ७, ६४, १-२;
 १७३२-३३ पापादि.
 निर्ऋतिमोचनम् ६, ८४, १-४; १७९०-९३ पापादि.
 निविदः ५, २६, ४; १५४० यक्षादि.
 पञ्चौदनः अजः ९, ५, १-३८; ११८३-१२२० अक्षादि.
 परस्परचिस्तीकरीकरणकामः [द्रष्टा] ६, ४३, १-३; ६५९-४१ रोगादि.
 पर्जन्यः ३, ३१, ११; १७८ यक्षमना.
 पर्जन्यः १, ३, १; ५७१। १, २१४; ६६४-६७ रोगादि.
 पर्जन्यः ऋ० ५, ८३, १-१०; १०, २७, १६। ७, १०१,
 १-६। १०२, १-३। १०३, १-१०; ९७४-१००३
 ४, १५, ४; १००७। ७, १८, १-२; १०२० २१ जलादि.
 पवमानः सोमः ऋ० ९, ७४, ५; १४०४ गर्भाधानं.
 पशवः ३, ३१, ३; १७० यक्षमना.
 पापादिनाशनम् । (१६५४-१९, १७)
 पापनाशनम् ४, ३३, १-८; १७५७-६४। ६, ११, १-३;
 १७६५-६७। ७, ११२, १-२; १७८८-६९ पापादि.
 पापमोचनम् ४, २३, १-७। २४, १-७। २५, १-७।
 २६, १-७; १६८५-१७१२। २७, १-७; [मरुतः
 ४००-४६]। २८, १-७। २९, १-७। ३, १५, १-३;
 ७, ४२, १-२। ६४, १-२। १६, १-२३; १७३३-५६ पापादि.
 पापलक्षणनाशनम् ७, ११५, १-४ [अग्निः २२०१-४] पापादि.
 पापशमनम् ६, ३०, १-३; ४७०-७२ ओषधि.
 पाप्मनाशनः (अग्निः) ४, ३३, १-८; १७५७-६४ पापादि.
 पाप्मनाशनम् ६, २६, १-३; १७७०-७९ पापादि.
 पाप्महा ३, ३१, १-११; १६८-७८ यक्षमना.
 पाप्मा ६, २६, १-३; १७७०-७९ पापादि.
 पाशमोचनम् १, ३१, १-४। २, १०, १-८। ६, ११२, १-३।
 ११९, १-३। ७, ८३; १-४; १६५८-७९ पापादि.
 पाशविमोचनम् १, १०, १-४; १६५४-५७ पापादि.
 पितरः ४, १५, १३-१५; १०१६-१८ जलादि.
 पितरः १०, १४, ७-९; १९७३-७५। १५, १-१४;
 १९८७-२०००। १८, १, ४४-४६; ५१, ५२;

पितृमेघः १०, १८, ७-१४; १९४६-५३ । १८, १, ६, १३ १४, १७, ३३-४९, ५१-५४, ५७-६१ । २, १-६० । ३, १, ३-४९; ५२, ५४, ५६, ५८-६६; ६८-७३; २००१-२१५०	यज्ञादि.	ब्रह्मणस्पतिः ७, ३०, १; ५९०	रोगचि.
पिप्पली ६, १०२, १-३; ४१३-१५	ओषधि.	ब्रह्मणस्पतिः ७, ५६, ४; ८५५	विषना.
पिशाचक्षयणम् ४, २०, १-९; ७५४-६२	क्रिमिना.	ब्रह्मणस्पतिः ४, ४, ६; १३३७ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३;	वाजीक.
पुष्टिकामः (द्रष्टा) १९, ३१, १-१४; १५३७-५०	मणिधा.	१३४०-४५	गर्भाधानं
पूषा ७, ३३, १; १४२	दीर्घायु.	ब्रह्मणस्पतिः ८, ६, १५; १३८१	अज्ञादि.
पूषा १, ११, १-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	ब्रह्मौदनम् ११, १, १-३७; १२२९-६५	यज्ञादि.
पूषा ६, ११३, १-३; १७६५-६७ । १६, ९, २; १९०३	पापादि.	भगः ५, २६, ९; १९४४	पापादिना.
पूषा ३, १४, २; २३२१	यज्ञादि.	भवाश्वौ ४, २८, १-७; १७१३-१९	रोगचि.
पृथिवी १, २, १, ४; ६६४, ६६७	रोगचि.	भेषजम् ६, ५२, ३; ५६४ । ७, ४५, १-२; ६८५-८६	रोगचि.
पृथिवी ७, १८, १-२; १०२० २१	जलचि.	भेषजम् आस्त्रावस्य २, ३, १-६; ५६५ ७०	रोगचि.
पृथिवी ६, १७, १-४; १३६२-६५	गर्भाधानं	भेषज्यम् ८, ७, १-२८; ३२४-५१ । ६, १०९, १-३;	ओषधि.
पृथिव्यादयः ५, २५, १-३३; १३४३-५८	गर्भाधानं	४१३-१५	रोगचि.
पृश्निपर्णी २, २५, १-५; ४१६-२०	ओषधि.	भेषज्यम् २, ३, १-६; ५६५-७० । १९, ४४, १-१०;	जलचि.
प्रजापतिः ४, १५, ११; १०१४	जलचि.	६०२-११; २, ७, १-५; ६६८-७२	रोगचि.
प्रजापतिः ४, ४, १-२; १३३२-३३	वाजीक.	भेषज्यम् ६, २२, १-३; ९६५-६७	जलचि.
प्रजापतिः १६, १, १-३३; १८०३-१५ । १६, ९, १, १९०२	पापादि.	मणिधारणम् । (१४२४-१५७८)	
प्रजापतिः ऋ० १०, १८, १४; १९५३	यज्ञादि.	मणिः अस्तृत १९, ४६, १-७; १५७२-७८	मणिधारणं
प्रतिसरः मणिः ८, ५, १-२२; १४३१-५२	मणिधा.	मणिः औदुम्बरः १९, ३१-१-१४; १५३७ ५०	मणिधारणं
फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२	मणिधा.	मणिः जंगिडः १९, ३४, १-१०; १५५१-६० । ३५, १-५;	मणिधारणं
बन्धमोचनम् ७, ८८, १-२; १६८०-८१	पापादि.	१५६१-६५	दीर्घायु.
बलासः बलासनाशनम् ६, १४, १-३; ४८३-८५	रोगचि.	मणिः जंगिडः २, ४, १-६; ६६-७१	मणिधारणं
बहुदैवत्यम् ५, ७, १-१०; १७७७-८६ (अरातिनाशनम्)	पापादि.	मणिः दर्मः १९, २८, १-१० । २९, १-९ । ३०, १-५;	मणिधारणं
बहुदैवत्यम् १९, ५८, १-६; २२४९-५४ (यज्ञः)	यज्ञादि.	१५१३-३६	मणिधारणं
बार्हस्पत्य-ओदनः ११, ३, १-५६; ११२७-८२	अज्ञादि.	मणिः प्रतिसरः ८, ५, १-२२; १३३१-५२	मणिधारणं
बृहस्पतिः २, २६, १; ९१ । ७, ५३, १-७; १४३-४९ । २, १३, २-३; २३३२-३३	दीर्घायु.	मणिः फाल १०, ६, १-३५; १४७८-१५१२	मणिधारणं
बृहस्पतिः १, १८, १-२; ७२८-२९	क्रिमिना.	मणिः वरणः १०, ३, १-२५; १४५३-७७	मणिधारणं
बृहस्पतिः १९, ४०, १-४; १४११-१४	गर्भाधानं	मणिः शंख ४, १०, १-७; १४२४-३०	मणिधारणं
बृहस्पतिः ३, १४, २; २३२१	यज्ञादि.	मणिः शतवारः १९, ३६, १-६; १५६६-७१	मणिधारणं
ब्रह्मा २, १०, १-८; १६६२-६९	पापादि.	मण्डूकाः ऋ० ७, १०३, १-१०; ९९४-१००३ । अ. ४, १५, १-३ १५; १०१६-१८	जलचि.
ब्रह्मणस्पतिः १९, ६३, १-११; १५४-५५ । ६, १४०, १-३; १५९-६१ (सुमंगलौ दन्तौ)	दीर्घायु.	मधु (वनस्पतिः) मधु-विद्या १, ३४, १-५; ४७८-८२	ओषधि.
		मधुमत अज्ञम् ६, ११६, १-३; १२६६-६८	अज्ञादि.
		मधुला (वनस्पतिः) ५, १५, १-११; ६५३ ६३	रोगचि.
		मनः ७, ३६, १; ५९१	रोगचि.
		मन्त्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१	यक्षमना.
		मन्त्रोक्ताः ६, १६, १-४; ४६६-६९	ओषधि.

मंत्रोक्ताः १९, ४५, ११०; ५२२-६०१ । (आञ्जनम्) रोगचि.
मंत्रोक्ताः ५, २९, १-२५; ७३८-५२ । (रक्षोघ्नम्) किमिना.
मंत्रोक्ताः ११, ३, ३२-५६; ११५८-८२ । ९, ५, १-३८;

११८३-१२२० (ओदनः) अन्नादि.

मंत्रोक्ताः ८, ६, १-२६; १३६७-९२ । (मातृनामा) गर्भाधानं

मंत्रोक्ताः ८, ५, १-२२; १४३१-५२ (कल्याणम्) मणिधा.

मंत्रोक्ताः ११, ६, १-२३; १७३४-५६ पापादि.

मंत्रोक्ताः १८, १, ६, १३-१४; १७, ३९-४९; ५१-५४;

५७-६१ । २, १-६०; २००१-८४ । (पितृमेघः)

३, ४४, ४६; २१२७, २१२९ । १८, ४, १-८९;

२१५१-५२३९ यज्ञादि.

मन्याविनाशनम् ६, २५, १-३; १६८२-८४ पापादि.

मन्युशमनम् ६, ४३, १-३; ६३९ ४१ रोगचि.

मरुतः २, २९, ४५; ९४-९५ । ७, ३३, १; १४२ दीर्घायु.

मरुतः ४, १३, ४; ५५१ रोगचि.

मरुतः ६, २२, २-३; ९६६-६७ । ४, १५, ४-१०;

१००७-१३ जलचि.

मरुतः ४, २७, १-७; [मरुतः ४४०-४६] पापादि.

मही २, ३१, १-५; ६९१-९५ किमिना.

मातृनामा ४, २०, १-९; ७५४-६२ किमिना.

मातृनामा ८, ६, १-२६; १३६७-९२ गर्भाधानं

मित्रः १, ३, २; ५७२ । ७, ३०, १; ५२०; १, १८, २;

६७४ रोगचि.

मित्रावरुणौ २, २८, २; २ दीर्घायु.

मित्रावरुणौ ६, ३२, ३; ७३३ किमिना.

मूत्रमोचनम् १, ३, १, ९; ५७१-७९ रोगचि.

मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९ यक्षमना.

मेघा १२, ४०, १-४; १४११-१४ । ६, १०८, १-५;

१४१९-२३ गर्भाधानं

मेघाजननम् १, १, १-४; १४१५-१८ गर्भाधानं

मेघावर्धनम् ६, १०८, १-५; १४१९-२३ गर्भाधानं

यक्ष २, १०, ४-८; १६६५-६९ पापादि

यक्षमनाशनम् । (१६२, ३००, २३३६)

यक्षमनाशनम् ३, ११, १-८; ७९-७९ । २, ९, १-५;

८०-८४ दीर्घायु.

यक्षमनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; अ. ३, ३१, १-११ ।

६, २०, १-३ । ८५, १-३ । १२७, १-३ । १, २२, १-४;

१६२-९१ । ३, ७, ६-७ । ६, ९१, १-३; १९७-२०१ ।

२०, ९६, ६-१०; २०५-९ । १९, ३८, १-३;

२०२-४ । २०, ९६, १७-२३; २१०-१६ यक्षमना.

यक्षमनाशनम् दम्पत्योः ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६ यक्षमना.

यक्षमनाशनम् ५, ४, १-१०; ४३७-४६ ओषधि.

यक्षमनाशनम् (वनस्पतिः) २, ८, १-५; ४९३-९७ रोगचि.

यक्षमनाशनम् अग्निः १, २५, १-४; ५२५-२८ रोगचि.

यक्षमविवर्धनम् २, ३३, १-७; २९४-३०० यक्षमना.

यक्षमनिवारणम् ९, ८, १-२२; २७२-२३ यक्षमना.

यक्षमरोगनाशनम् १२, २, १-५५; २१७-७१ यक्षमना.

यज्ञमानः ऋ. ८, ३१, १-४; २२४०-४३ । ऋ. १०,

१८३, १; २२४४ यज्ञादि.

यज्ञमानपत्नी ऋ. १०, १८३, २; २२४५ यज्ञादि.

यज्ञादिकम् । (१९१८-२३२४)

यज्ञः ऋ. ८, ३१, २-४; २२४०-४३ । अ. ७, १७, १-८ ।

[इन्द्रः ३१२०-२७] । १९, १, १-३ । ५८, १-६ । ५९, २;

२२४६-५५ । ५९, १, ३ [अग्निः १२१४, १४९४] यज्ञादि.

यमः ६, २७, १-३ २८, १-३ । २२, १-३; १५७९-८७ अरिष्ट.

ऋ. १०, १४, १-५, १३-१६; १९६८-७२,

१९७६-७९ यज्ञादि.

यमः यमी ऋ. १०, १०, १-४; १९५४-६७ यज्ञादि.

यमः ऋ. १०, १३५, १-७; १९८०-८६ । १८, १, ६;

१३ १४; १७, ३९-४९; ५१-५४; ५७-६१ ।

२, १-६० । ३, १, ३-४९, ५२, ५४, ५६, ५८-६६,

६८-७३ । ४, १ ८९; २००१-२२३९ यज्ञादि.

यातुधानीः १, २८, ३-४; ७३६-३७ किमिना.

यातुधानक्षयणम् ६, ३२, १-३; ७३१-३३ किमिना.

यातुधाननाशनम् १, १८, १-४; ७९७-३० । १, ७,

१ ७; ७६७-७३ किमिना.

यूपः १, ३६, १३-१४; २२५७-५८ । ऋ. ३, ८, १-५;

२२५९-६३ यज्ञादि.

यूपः वा. य. ६, २-३, ६, २१, ४६, २८, १०; २२६९-७३ यज्ञादि.

यूपाः ऋ. ३, ८, ६-१०; २२६४-६८ यज्ञादि.

योनिगर्भः ५, २५, १-१३; १३४६-५८ गर्भाधानं

योषितः (धमन्यः) १, १७, १-४; ५५५-५८	रोगाचि.	वनस्पतिः, अपमार्गः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९,	
रक्षोघ्नम् १, १८, १-४; ७३४-३७ । ५, २९, १-१५;		१-८; ३८०-४०३	ओषधि.
७३८-५२ । वा. य. ५, २२, ७५३	किमिना.	वनस्पतिः असिकी १, २३, १-४; ५१७-२०	रोगाचि.
रात्रिः ७, ६९, १; ६३८ (सुखम्)	रोगाचि.	वनस्पतिः आसुरी १, २४, १-४; ५२१-२४	रोगाचि.
रामायणी ६, ८३, ३; ५१५	रोगाचि.	वनस्पतिः कुष्ठौषधिः ६, ९५, १-३ । ४१०-१२	ओषधि.
रुद्रः ५, ५९, १-३; ४०७-९ । ६, ९०, १-३; ६२०-२२	ओषधि.	वनस्पतिः जंगिडः १९, ३४, १-१०। ३५, १-५, १५५१-६५मणिघा.	
रुद्रः ६, ३२, २; ७३२	किमिना.	वनस्पतिः दक्षवृक्षः २, ९, १-५; ८०-८४	दीर्घायु.
रुद्रः ६, ५६, २-३; ८५०-५१	विषना.	वनस्पतिः पृश्निपर्णी २, २५, १-५; ४१३-२०	ओषधि.
रुद्रः ६, ५७, १-३; ८६० ६२	जलाचि.	वनस्पतिः फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५७२	मणिघा.
रुद्रः ४, २८; १-७; १७१३-१९	पापादि.	वनस्पतिः मधुला ५, १५, १-११; ६५३-६३	रोगाचि.
रुद्रः १८, १, ४०; २००६	यज्ञादि.	वनस्पतिः रोहणी ४, १२, १-७; ४२१-२७	ओषधि.
रुधिरस्तावनिवृत्तये धमनीबंधनम् १, १७, १-४; ५५५-५८	रोगाचि.	वनस्पतिः वरणमणिः १०, ३, १, २५; १४५३-७७	मणिघा.
रोगाचिकित्सा । (४८३-६२०)		वरणमणिः १०, ३, १, २५; १४५३-७७	मणिघा.
रोगाधन्यः उपनिषदः ऋ. १, ५०, ११-१३; ५४५-४७	रोगाचि.	वरुणः १, ३, ३; ५७३ । १९, ४४, ८-९; ६०९-१०;	
रोगनाशनम् (वनस्पतिः) ६, ४४, १-३; ५५९-६१	रोगाचि.	ऋ. २, २८, १०; ६२४ । १, १८, २; ६७४	रोगाचि.
रोगनिवारणम् ४, १३, १-७; ५४८-५४	रोगाचि.	वरुणः ४, ५, १२; १०१५	जलाचि.
रोगोपशमनम् ५, १५, १-११ । १, २, १-४; ६५३-६५	रोगाचि.	वरुणः ७, ८३, १-४; १६७६-७२ । ७, ११२, १-२;	
रोहणी ४, १२, १-७; ४२१-२७	ओषधि.	१७६८-६९	पापादि.
रोहिणी २, ८, १-५; ४९३-९७ । ६; ८३, २; ५१४	रोगाचि.	वरुणः आसुरः १, १०, १-४; १६१४-५७	पापादि.
लक्षा ५, ५, १-९; ४२८-३६	ओषधि.	वसवः १, ३०, १; ५५,	दीर्घायु.
लिङ्गोक्ताः १९, ३४, १-१०; १५५१-६० (जंगिडमणिः)	मणिघारणं	वाक् १९, ६०, १-२; १५७-५८ (अरिष्टानि अंगानि)	दीर्घायु.
लिङ्गोक्ताः १०, १४, ७-९; १२७३-७५	यज्ञादि.	वाक् १६, २, १-६; १८१६-२१	पापादि.
वज्र १९, ६६, १; ७६६	किमिना.	वाचस्पतिः १, १, १-४; १४१५-१८ (मेधाजननम्)	गर्भाधानं
वनस्पतिः ६, ८५, १-३ । १२७, १-३; १८२-८७	यक्षमना.	वाजीकरणम् । (१३३२-१३४५)	
वनस्पतिः ६, ९६, १-३; ३५४-५६। ३, १८, १-६; ३६४-६९ ।		वाजीकरणम् ४, ४, १-८ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३;	
वा. य. ५, ४२-४३। २०, ४५ । २१, २१ । २७, २१ ।		१३३२ ४-५	वाजीक.
२८, १०, ३३, ४३ । २९, १०, ३५; ३७०-७९	ओषधि.	वातः ४, १३, २-३; ५४३-५० । ७, ६९, १; ६३८	रोगाचि.
वनस्पतिः २, ८, १-५। ६, १३८, १-५; ४२३-५०२। ६, ४४,		वातः ४, १५, १६; १०१९	जलाचि.
१-३; ५५९-६१ । २, ७, १-५; ६६८-७२ ।		वातः २, १०, ३; १६६४	पापादि.
६, १३९, १-५; ६७७-८१	रोगाचि.	वातपत्नीः २, १०, ४-८; १६६५-६९	पापादि.
वनस्पतिः ४, ७, १-७; ७९८-८०४ । ६, १००, १-३;		वातसिन्धोषधयः ऋ. १, २०-६; ३६२	ओषधि.
८०५-७ । ७, ५६, २; ८५३	विषना.	वायुः ६, १४२, १-३; ११२४-२६	अज्ञादि.
वनस्पतिः ४, ४, १ ८; १३३२-३२	वाजीक.	वायुः ४, २५, १-७; १६९९-१७०५	पापादि.
वनस्पतिः १०, ३, १-२५; १४५३-७७ । ५, १४, १-१३;		वासः (सस्) ७, ३७, १; १२६९ । वा. य. ४, २, १०;	
१५९१-१६०३	मणिघा.	१२७०-७१	अज्ञादि.
वनस्पतिसूर्यगावः ऋ. १, ९०, ८; ४७३	ओषधि.	वास्तोष्पतिः १, ३१, १-४; १६५८-६१	पापादि.
		वास्तोष्पतिः ५, २६, २-४, ६-९, ११; १९३८-४१	यज्ञादि.

विनायकः १,१८,१; ६७३	रोगाचि.	वैश्वानरः (अग्निः) ६,११९,१-३; १६७३ ७५	पापादि.
विवस्वान् ६,११६,१-३; १२६६-६८	अन्नादि.	शक्रः ३,३१,२; १६९	यक्षमना.
विश्वामित्रः ऋ. ३,३३,४,८,१०; १०२५,१०२९, १०३१	जलाचि.	शंखमणिः ४,१०,१-७; १४२४-३०	मणिधा.
विश्वे देवाः १,३०,१-४; ३५,१-४; ५५-६२; ६,४७, २; ८९। २,१९,४-५; ९४-९५। २,१३, ४-५; २३३४-३५	दीर्घायु.	शतवारः मणिः १२,३६,१-६; १५६६-७१	मणिधा.
विश्वे देवाः ऋ. १,२०,६; ३६२। ऋ. ३,५७,३; ३६३। ऋ. १,९०,८; ४७३	ओषधि.	शमी ६,३०,१-३; ४७०-७२	ओषधि.
विश्वे देवाः ४,१३,१-७; ५४८-५४	रोगाचि.	शापनाशनम् ६,३७,१-३; १७७३ ७५	पापादि.
विश्वे देवाः ६,५३,१; ८४९	विषना.	शापमोचनम् २,७,१-५; ६६८-७२	रोगाचि.
विश्वे देवाः १२,४०,१-४; १४११-१४	गर्भाधानं	शापमोचनम् ७,५९,१; १७७६	पापादि.
विश्वे देवाः ६,१५,१,३; १७२७-२९। ११४ १-३; १७३४-९६।	पापादि.	शालामिदैवलयम् २,१४,१-६; १६४८-५३	कृत्याद्.
विश्वे देवाः ऋ. ३,८,८; २२६३। अ. ७,९८,१; २२७४ यज्ञादि.		शेषः ६,७२,१-३; १३४० ४२	वाजीक.
विषनाशनम्। (७७४-८५९)		श्वेतकुष्ठनाशनम् १,२३,१ ४; ५१७-२०	रोगाचि.
विषम् ४,६,४ ८; ७९३-९७	विषना.	सप्ततन्क्षयकामः (द्रष्टा) १९,२८,१-१०; १५१३-२२	मणिधा.
विषम् ४,६,१-८; ७९०-९७	विषना.	सप्ततन्क्षयणः १०,३,१-२५; १४५३-७७	मणिधा.
विषमोपनिषद् ऋ. १,२१,१-१६; ७७४-८९	विषना.	सप्ततन्क्षम् ऋ० १०,१६६,१-५; २३४१-४५	ओषधि.
विषदूषणम् ६,१००,१-३; ८०५-७	विषना.	सप्तत्नीजयः ३,१८,१-६; ३६४-६९	ओषधि.
विषनाशनम् ४,७,१-७; ७९८-८०४	विषना.	सप्तत्नीबाधनम् ऋ० १०,१४५,४-६; २३२९-४०	ओषधि.
विषमैज्यम् ७,५६,१-८; ८५२-५९	विषना.	सप्तसिन्धवः ४,६,२; ७९१	विषना.
विष्णुः ५,२६,७; १९४२	यज्ञादि.	सरण्युः ऋ० १०,१७,१-२; १०८१-८२	जलाचि.
वीरुधः ४,१५,२-३; १००५-६	जलाचि.	सरस्वान् ऋ० ७,२५,३। १२६,४-६। अ. ७,४०,१-२;	
वृश्चिकादयः ७,५६,१-८; ८५२-५९	विषना.	१०४५-५०	जलाचि.
वृषभः ४,५,१-७; ६१३-१९	रोगाचि.	सरस्वती ६,४१,२; ६४	दीर्घायु.
वृषभः ७,३२,१; ९२७	जलाचि.	सरस्वती ऋ० १,३,१०-१२। १६४,४३। २,३०,८ पूर्वार्धः।	
वृषभः ७,११,१; १३३६	गर्भाधानं	४१,१६-१८। ६,६१,१-१४। ७,२५,१-२,	
वृषरोगशमनम् ६,१६,१ ११; ६४२-५२	रोगाचि.	४-६। ९६,१-३। १०५१-८०। १०,१७,७ ९;	
वृष्टिः ४,१५,१-१६; १००४-१९। ७,१८,१-२; १०२०-२१	जलाचि.	१०८३-८५। अ० ७,१०,१। ११,१। ५७,१-२।	
वृष्टिकामः (द्रष्टा) ऋ. ७,१०१,१-६। १०२,१-३; ९८५-२३	जलाचि.	६८,१-३; १०८६-९२	जलाचि.
वेदी ७,९९,१। २२५६	यज्ञादि.	सरस्वती ४,४,६; १३३७	वाजीक.
वेधाः १,११,१-६; १४०५-१०	गर्भाधानं	सरस्वती ५,७,४-५; १७८० ८१	पापादि.
वैश्वानरः (अग्निः) ६,७१,३; १२२१	अन्नादि.	सरस्वती १८,१,४१-४३; २००७ ९	यज्ञादि.
		सर्वविषदूरीकरणम् १०,४,१-२६। ५,१३,१-११;	
		८०८-४४	विषना.
		सर्वविषनाशनम् ७,८८,१; ८४५	विषना.
		सर्वविषानिवारणम् ६,१२,१-३; ८४६-४८	विषना.
		सर्वेभ्यो रक्षणम् ६,५६,१-३; ८४९-५१	विषना.
		सर्वमायुः १५,६१,१; १५५। ७०,१; १५६	दीर्घायु.
		सर्वशीर्षामयावपाकरणम् ९,८,१; २२; २७२ ९३	यक्षमना.

सविता २,२९,२; ९२	दीर्घायु.	सोमः ६,९६,३; ३५४। ऋ० १०,८५,२-४; ४७४-७६	ओषधि.
सविता ७,३०,१; ५९० । १,१८,२-३; ६७४-७५	रोगचि.	सोमः ६,७,१-३; ७६३ ६५	किमिना.
सविता ४,२५,१-७; १६९९-१७०५	पापादि.	सोमः ऋ० १०,१७,११-१३; ८४९-५१	जलचि.
सविता ५,२६,२; १९३८	यज्ञादि.	सोमः ४,४,५; १३३६	वाजीक.
सान्तपन अग्निः ६,७६,१-४; १५०-५३	दीर्घायु.	सोमः २,१०,२, १६६३ । १६,२,२; १९०३	पापादि.
सुखम् ७,६९,१; ६३८	रोगचि.	सोमः पवमानः ऋ० ९,७४,५; १४०४	गर्भाधानं.
सुधन्वा ६,४७,३; ९०	दीर्घायु.	सोमवनस्पतिः ऋ० १,९,१,६; ४७७	ओषधि.
सुपर्णः ४,६,३; ७२२	विषना.	सोमाकूटौ ७,४२,१-२; १७३०-३१	पापादि.
सुपर्णः ७,३२,१; ९२७	जलचि.	सौभाग्यवर्धनम् ६,१३९; १-५; ६७७-८१	रोगचि.
सूर्यः २,२९,१; ९१ । १९,६७,१-८; ११९-२६	दीर्घायु.	स्तनयित्तुः ४,१५,११; १०४	जलचि.
सूर्यः ३,३१,७; १७४	यक्षमना.	खर्गः खर्गौदनः १२,३,१-६०; १९७२-१३३१	अन्नादि.
सूर्यः ऋ० १,९०,८; ४७३	ओषधि.	खस्वयनकामः (द्रष्टा) ६,३७,१-३; १७७३-७५	पापादि.
सूर्यः १,२२,१-४; ४८९-९२ । ६,८३,१; ५१३ ।		खापनम् ४,५,१-७; ६१३-१९	रोगचि.
ऋ० १,५०,११-१३; ५४५-४७ । ६,५२,१;			
५६२ । १,३,७; ५७५ । ७,६९,१; ६३८	रोगचि.	हरिणः ३,७,१-३; १९२-१४	यक्षमना.
सूर्यः १९,६६,१; ७६६	किमिना.	हरिमा १,२२,१-४; ४८९-९२	रोगचि.
सूर्यः ऋ० १,१९१,१-१६; ७७४-८९ (अतृणसूर्याः)	विषना.	हविः ७,९८,१; २२७४	यज्ञादि.
सूर्यः ४,४,१-२; १३३२-३३	वाजीक.	हविर्धानि ऋ० १०,१३,१-५; २२७५-७९	यज्ञादि.
सूर्यः २,१०,४-८; १६६५-६९ । १६,२,३-४;	पापादि.	हस्तः ४,१३,६ ७; ५५३-५४	रोगचि.
१९०४-५ ।	ओषधि.	हिरण्यम् १,३५,१-४; ५९-६१	दीर्घायु.
सूर्यमरीचयः ऋ० ३,५७,३; ३८३		हृद्रोगः (कामिलानाशनम्) १,२२,१-४; ४८९-९२	रोगचि.

अभावकरणार्थं निर्दिष्टाः विषयाः ।

निस् + कस् ।

इषु निष्कासनम् ।

अपा + दूरी + कृ ।

सर्वशीर्षामयादि अपाकरणम् ।

सर्पविषदूरीकरणम् ।

क्षि ।

अरिष्ट— क्षयणम् ।

असुर— क्षयणम् ।

पिशाच— क्षयणम् ।

यातुघान— क्षयणम् ।

सपत्न— क्षयणम् ।

जम्भ् ।

किमिजम्भनम् ।

दुष् ।

कृत्वादूषणम् ।

विषदूषणम् ।

वि + नश् ।

अरातिनाशनम् ।

अरि— नाशनम् ।

अलक्ष्मी— नाशनम् ।

एनः— नाशनम् ।

कामिला— नाशनम् ।

कृमि— नाशनम् ।

क्षेत्रियरोग— नाशनम् ।

ज्वर— नाशनम् ।

तक्म— नाशनम् ।

दस्यु— नाशनम् ।

दुरित— नाशनम् ।

दुःख— नाशनम् ।

दुष्प्र— नाशनम् ।

पाप— नाशनम् ।	मूत्र— मोचनम् ।
पापलक्षण— नाशनम् ।	शाप— मोचनम् ।
पाप्म— नाशनम् ।	उत्— मोचनम् ।
बलास— नाशनम् ।	पाश— विमोचनम् ।
यक्ष्म— नाशनम् ।	नि + वृ ।
यक्ष्मरोग— नाशनम् ।	गर्भदोष— निवारणम् ।
रोग— नाशनम् ।	यक्ष्म— निवारणम् ।
विष— नाशनम् ।	रोग— निवारणम् ।
श्वेतकुष्ठ— नाशनम् ।	सर्पविष— निवारणम् ।
सर्पविष— नाशनम् ।	उप + शम् ।
ईर्ष्याविनाशनम् ।	कास— शमनम् ।
मन्या— नाशनम् ।	पाप— शमनम् ।
अप + नि ।	मन्यु— शमनम् ।
ईर्ष्या— अपनयनम् ।	वृषरोग— शमनम् ।
वि + बर्ह ।	शाप— शमनम् ।
यक्ष्मविबर्हणम् ।	रोग— उपशमनम् ।
बाध ।	हन् ।
सपत्नीबाधनम् ।	अलक्ष्मी— घ्नम् ।
उत् + वि + मुच् ।	क्रिमि— घ्नम् ।
उन्मत्तता— मोचनम् ।	रक्षो— घ्नम् ।
दुःख— मोचनम् ।	रोग— घ्नम् ।
निर्ऋति— मोचनम् ।	विष— घ्नम् ।
पाप— मोचनम् ।	पाप्म— हा ।
पाश— मोचनम् ।	परि + ह ।
बन्ध— मोचनम् ।	कृत्यापरिहरणम् ।

भावकरणार्थ निर्दिष्टाः विषयाः ।

दीर्घायुः प्राप्तिः ।	मेधा— वर्धनम् ।
मेधा— जननम् ।	सौभाग्य— वर्धनम् ।
सपत्नी— जयः ।	द्रष्टुः कामः ।
केश— वृद्धम् ।	आयुष्कामः ।
गर्भ— वृद्धम् ।	परस्परैकचित्तीकरणकामः ।
धमनी— बन्धनम् ।	पुष्टि— कामः ।
सर्पेभ्यः— रक्षणम् ।	वृष्टि— कामः ।
आयुर्— वर्धनम् ।	सपत्नक्षय— कामः ।
केश— वर्धनम् ।	स्वस्थयन— कामः ।

यक्षमनाशनम् ।

(१) गुणबोधक-पदसहिता मन्त्रोक्त-देवताः ।

अग्निः अ. ३, ३१, १, ६; १६८, १७३ । २०, ९६, ९; २०८ ।
 १२, २, ३-५, १७-१८, ५०, ५२; २१९-२१, २३३-३४,
 २६६, २६८ । १२, २, १-५५; २१७-७१
 अग्निः क्रव्यात् १२, २, ७-१०, १५-१६, ३५-३८; २२३-२६,
 २३१-२३२, २५१-५४
 अग्निः गार्हपत्यः १२, २, ३४, ४४-४६; २५०, २६०-६२
 अग्निः वैश्वानरः ६, ८५, ३; १८४
 अग्निः संकुसुक्तः १२, २, ११-१४, १९४०; २२७-३०, २३५,
 २५६
 अक्ष्या ६, ९१, २; २००
 अनङ्गवान् १२, २, ४८; २६४
 अक्षमन्वती १२, २, २६-२७; २४२-४३
 आदित्यः १२, २, ६; २२२ । ९, ८, २१-२२; २९२-९३
 आदित्याः ९, ८, २२; २९३
 आपः ३, ३१, ३; १७० । ३, ७, ५; १९६ । ६, ९१, ३; २०१ ।
 १२, २, ४०-४१; २५६-५७
 आयुः ३, ३१, ८-१०; १७५-७७
 आयुष्यम् २, ३३, १-७; २९४-३००
 इन्द्रः ६, ८५, २; १८३ । २०, ९६, ९; २०८ । १२, २, ४७,
 ५४; २६३, २७०
 इन्द्राग्नी २०, ९६, ६; २०५
 ऋषयः १२, २, २९-३०; २४५-४६
 ओषधयः ६, २०, २; १८०
 गुल्यलुः अ. १९, ३८, १-३, २०२-४
 ग्राम्याः पशवः ३, ३१, ३; १७०
 चन्द्रः ३, ३१, ६; १७३
 चन्द्रमाः २, ३३, १-७; २९४-३००
 तन्मा ६, २०, १-३; १७९-८१
 तारके ३, ७, ४; १९५ । विवृतौ सुभगे ।
 त्वष्टा ३, ३१, ५; १७३ । १२, २, २४; २४०

२५ दे० [आयुर्वेद०]

देवाः ३, ३१, १, ७; १६८, १७४ । ६, ८५, १-२; १८२-८३ ।
 ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६ यज्ञियाः ।
 द्यौः ६, २०, २; १८०
 द्यावापृथिवी ३, ३१, ४; १७१
 घाता १२, २, २५; २४१
 एन्थानः ३, ३१, ४; १७१
 पर्जन्यः पर्जन्यस्य वृष्टिः ३, ३१, ११; १७८
 पवमानः ३, ३१, २; १६९
 पशवः ग्राम्याः ३, ३१, ३; १७०
 पाप्महा ३, ३१, १-११; १६८-७८
 पृथिवी ६, २०, २; १८०
 बृहस्पतिः २०, ९६, ९; २०८
 ब्रह्मा १२, २, ६; २२२ । वसुनीतिः ।
 ब्रह्मणस्पतिः १२, २, ६; २२२
 मन्त्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१
 मित्रः अ. ६, ८५, २; १८३
 मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९
 यक्षमनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; १६२-६७ । अ. ३, ३१,
 १-११; १६८-७८ । ६, २०, १-३; १७९-८१ । ८५, १-३,
 १८२-१८४ । १२७, १-३; १८५-८७ । १, १२, १-४;
 १८८-१९१ । ३, ७, ६-७; १९७-९८ । ६, ९१, १-३;
 १९९-२०१ । १९, ३८, १-३; २०२-४ । २०, ९६, ६-१०;
 २०५-९ । ९६, १७-२३; २१०-१६ । ऋ. १०, ८५, ३१;
 २३३६
 यक्षमनिवारणम् अ. ९, ८, १-२२; २७२-९३
 यक्षमरोग-नाशनम् अ. १२, २, १-५५; २१८-७१
 यक्षम-विबर्हणम् अ. २, ३३, १-७; २९४-३००
 रुद्रः ६, २०, २; १८०
 रुद्राः १२, २, ६; २२२
 र्वनस्पतिः ६, ८५, १; १८२ । १२७, १-३; १८५-८७

वरुणः ६,२०,२; १८० । ६,८५,२; १८३
 वसवः १२,२,६; २२२
 वातः ६,९१,२; २००
 विवृतौ तारके ३,७,४; १९५ । सुभगे ।
 विश्वे देवाः ६,८५,२; १८३ । १२,२,२८; २४४
 शक्रः अ. ३,३१,२; १६९
 सर्वशीर्षमयायपाकरणम् ९,८,१-२२; २७२-२३

सविता २०,९६,९; २०८
 सुपत्नी १२,२,३१; २४७ । अनमीवाः अनश्रवः अविधवाः
 नारीः सुरतनाः ।
 सूर्यः ३,३१,७; १७४ (विश्वतोवीर्यः) । १, १२, १-४;
 १८८-९१ । ६,९१,२; २०० । अग्निवायुसूर्यात्मा ।
 हरिणः ३,७,१; १९२ रघुष्यद् । ३,७,२-३; १९३-९४

(२) यक्षस्य शरीरगतस्थानानि ।

अंसो ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५
 आक्षिणी ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७;
 २१० । २,३३,१; २९४
 अंगम् ऋ. १०,१६३,६; १६७ । अ. २०,९६,२३; २१६ ।
 २,३३,७; ३००
 अंगानि अ. ९,८,९,१९; २८०,२९०
 अङ्गुल्यः अ. २०,९६,२२; २१५ । २,३३,६; २९९
 अङ्गुल्यम् ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८;
 २११ । २,३३,२; २९५
 अन्तरात्मा अ. ९,८,९; २८०
 अष्टीवन्तौ ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१;
 २१४ । २,३३,५; २९८
 अस्थीनि ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२२;
 २१५ । २,३३,६; २९९
 आत्मा ऋ. १०,१६३,५; १६६ । अ. २०,९६,२२;
 २१५ । २,३३,६; २९९
 आन्त्राणि ऋ. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९;
 २१२ । २,३३,३; २९६
 आसु (आसः पञ्च) अ. ९,८,१०; २८१
 आस्यम् अ. ९,८,३; २७४
 उदरम् अ. ९,८,९,११-१२; २८०,२८२-२८३ । २०,
 ९६,२०; २१३ । २,३३,४; २९७
 उष्णिहाः ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५

ऊरु ऋ. १०,१६३,४; १६५ । अ. २०,९६,२१; २१४ ।
 २,३३,५; २९८ । अ. ९,८,७; २७८
 कक्षम् अ. ६,११७,२; १८६
 कङ्कषाः अ. ९,८,२; २७३
 कर्णौ ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० ।
 २,३३,१; २९४ । अ. ९,८,२-३ २७३-७४
 कीकसाः ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८;
 २११ । २,३३,२; २९५
 कुक्षौ ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,२०; २१३ ।
 २,३३,४; २९७
 क्लोमन् अ. ९,८,१२; २८३
 गवीनिके अ. ९,८,७; २७८
 गुदाः ऋ. १०,१६३,३; १६४ । अ. २०,९६,१९; २१२ ।
 २,३३,३; २९६ । अ. ९,८,१७; २८८
 ग्रीवाः ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,१८; २११ ।
 २,३३,२; २९५
 ह्रुत्कम् ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७;
 २१० । २,३३,१; २९४
 जानू अ. ९,८,२१; २९२
 जिह्वा ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,१७; २१० ।
 २,३३,१; २९४
 त्वक् (त्वचस्यम्) अ. २०,९६,२३; २१६ । २,३३,
 ७,३००
 दोसु (दोषण्यम्) ऋ. १०,१६३,२; १६३ । अ. २०,९६,२३;
 २१६ । २,३३,७; ३००

धमन्यः ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, २२; २१५।
२, ३३, ६; २९९
नखानि ऋ. १०, १६३, ५; १६६। अ. २०, ९६, २२; २१५।
२, ३३, ६; २९९
नाभिः अ. ९, ८, १२; २८३। २०, ९६, २०; २१३। २,
३३, ४; २९७
नाभिका ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;
२१०। २, ३३, १; २९४
परस्-हंषि अ. ९, १८, १८; २८९
पर्वन्-र्व ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २३;
२१६। २, ३३, ७; ३००
पाणी ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २२; २१५।
२, ३३, ६; २९९
पादौ अ. ९, १८, २१; २९२
पार्श्वे अ. ९, ८, १५; २८६। अ. २०, ९६, १९; २१२।
२, ३३, ३; २९६
पाष्णी ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
२, ३३, ५; २९८
पृष्ठ्यः अ. ९, ८, १५; २८६
प्रपदे ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
२, ३३, ५; २९८
प्लाशयः ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०; २१३।
२, ३३, ४; २१७
श्रीहा ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
२, ३३, ३; २९६
बाहू ऋ. १०, १६३, २; १६३। अ. २०, ९६, १८, २११।
२, ३३, २; २९५
अंसस् ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
२, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२
भासदः ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१;
२१४। २, ३३, ५; २९८

मज्जा अ. ९, ८, १८, २८९। अ. २०, ९६, २२; २१५।
२, ३३, ६; २९९
मतस्नौ ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
२, ३३, ३; २९६
मस्तिष्कम् ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;
२१०। २, ३३, १; २९४
मुष्कौ अ. ६, १२७, २; १८६
मूर्धा अ. ९, ८, १३; २८७
मेहनम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६
यकृत्-यकन् ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९;
२१२। अ. २, ३३, ३; २९६
कोम-मानि ऋ. १०, १६३, ५-६; १६६-१६७। अ. २०,
९६, २३; २१६। २, ३३, ७; ३००
वक्षणाः अ. ९, ८, १६; २८७
वनंकरणम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६
वनिष्ठः ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०;
२१३। २, ३३, ४; २९७
शीर्षन् अ. ९, ८, १-५, १२; २७१-७६, २९३
शीर्षन् (शीर्षण्यम्) ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०,
९६, १७; २१०। २, ३३, १; २९४
श्रोणी ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।
२, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२
सीमन्-मा अ. ९, ८, १३; २८४
स्नावन्-वा ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २२;
२१५। २, ३३, ६; २९९
हलीक्षणम् ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, १९;
२१२। २, ३३, ३; २९६
हृदयम् ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।
२, ३३, ३; २९६। अ. ९, ८, ८, १२, १४, २२; २७९, २८३;
२८५, २९३

(३) गुणबोधकपदसहिताः यक्षमभेदाः ।

अक्षयो विसल्पकः अ. ६, १२७, ३; १८७
अघशंसः १२, २, २; २१८
अंगज्वरः ९, ८, ५; २७६

अंगभेदः ९, ८, ५; २७६। ९, ८, २२; २९३
अन्यः विसल्पकः ६, १२७, ३; १८७
अज्ञातः यक्षमः ६, १२७, ३; १८७

अज्ञातयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
 अधराब्ज् ६,१२७,३; १८७
 अन्धः पुरुषः (अन्धत्वम्) ९,८,४; २७५
 अप्वा ९,८,९; २८०
 अभिषोचयिष्णुः ६,२०,३; १८१
 अभ्रजाः १,१२,३; १९०
 अरातिः ३,३१,१; १६८। १२,२,३; २१९
 अरुणः ६,२०,३; १८१
 अर्षणीः ९,८,१३,१६,२१; २८४,२८७,२९२
 अलजिः ९,८,२०; २८१
 आर्तिः ३,३१,२; १६९
 आशो बलासः ९,८,१०; २८१
 कर्ण्यः विसल्पकः ६,१२७,३; १८७
 कर्णशूलः ९,८,१-२; २७२-७३
 कासः १,१२,३; १९०
 काहाबाहः ९,८,११; २८२
 कीकसाः ९,८,१४; २८५
 क्षेत्रियः ३,७,१-७; १९२-९८
 शुषितः हृदि ३,७,२; १९३
 गोष्ठु यक्ष्मः १२,२,१; २१७
 ग्राहिः २०,९६,६; २०५
 जातः पर्वणि पर्वणि ऋ. १०,१६३,६; १६७
 तक्मा ६,२०,१-३; १७९-८१। ९,८,६; २७७
 तपुर्वघः ६,२०,१, १७९
 तिलिपजः १२,२,५४; २७०
 त्वचस्यः २०,९६,२३; २१६
 दण्डनम् १२,२,५४; २७०
 दुःशंसः १२,२,२; २१८
 दुर्भूतं सर्वम् ३,७,७; १९८
 दोषण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,२; १६३
 निर्ऋतिः २०,९६,७; २०६। १२,२,३; २१९
 पापकृत्या ३,३१,२; १६९
 पाप्मा सर्वः ३,३१,१-११; १६८-७८
 पुरुषेषु यक्ष्मः १२,२,१; २१७
 प्रमोतः पुरुषः (प्रमोतत्वम्) ९,८,४; २७

बभ्रुः (तक्मा) ६,१०,३; १८१
 बलासः ६,१२७,२; १८६। ९,८,८,१०; २७९,२८१
 मूर्त्तं आमयत् ९,८,१०; २८१
 मृत्युः १२,२,३; २१९
 यक्ष्मः (बहुसाः प्रतिसूक्तम्) ।
 रपः ६,९१,१-२; १९९-२००
 राजयक्ष्मः २०,९६,६; २०५
 रोपणाः ९,८,१९; २९०
 लोहितः ६,१२७,२; १८६
 वन्यः ६,२०,३; १८१
 वातजाः १,१२,३; १९०
 वातीकारः ९,८,२०; २९१
 विद्रवः ६,१२७,१,३; १८५,१८७। ९,८,२०; २९१
 विलोहितः ९,८,१; २७२
 विश्वसारदः ९,८,६; २७७
 विश्वाङ्ग्यः ९,८,५; २७६
 विपुचीनः ३,७,१; १९२
 विष्वक् २०,९६,२३; २१६
 विसल्पः ९,८,२०; २२१
 विसल्पकः ६,१२७,३; १८७। ९,८,२,५; २७३,२७६
 शपथः १९,३८,१; २०२
 शरः १२,२,४७; २६३
 शीर्ष्णः रोगः ९,८,२२; २९३
 शीर्षण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,१; १६२। अ. २०,९६, १७; २१०
 शीर्षण्यः रोगः ९,८,१-५; २७२-७६
 शीर्षिकिः १,१२,३; १९०। १२,२,१९-२०; २३५-३६। ९,८,१, २७२
 शीर्षामयः ९,८,१; २७२
 शुष्मः १,१२,३; १९०
 शुष्मी ६,२०,१; १७९
 सीसम् १२,२,२०; २३६
 हरिमा ९,८,९; २८०
 हृदयामयः ६,१२७,३; १८७

(४) दीर्घायुत्वपर्यायाः ।

आयुः ३, ३१, १-११; १६८-७८ । १२, २, २५; २४१
आयुः वीर्यम् १२, २, ६, ३२, ५५; २२२, २४८, २७१
आयुः द्राघीयः १२, २, ३०; २४६
आयुः सर्वम् २०, ९६, १०; २०९ । १२, २, २४; २४०
आयुः शतम् २०, ९६, ८-९; २०७-८
आयुः जरसम् १२, २, २४; २४०

शतं वसन्ताः २०, ९६, ९; २०८
शतं शरदः २०, ९६, ९; २०८
शतं हेमन्ताः २०, ९६, ९; २०८
शतं हिमाः १२, २, ८; २४४
शतशारदम् २०, ९६, ७; २०६

(५) भैषज्यम् ।

ओषधयः ।

गुल्गुलः १९, ३८, १-३; २०२-४
गुल्गुल, सैन्धवम् १९, ३८, २; २०३
गुल्गुल समुद्रियम् १९, ३८, २; २०३
गुल्गुलोः सुरभिः गन्धः १९, ३८, १; २०२
चीपु. दुः ६, १२७, २; १८६
यवः ६, ९१, १८; १९९

वरणः (वनस्पतिः देवः) ६, ८५, १; १८२

वनस्पतिः ६, १२७, १; १८५

(२) अन्ये पदार्थाः ।

आपः ३, ७, ५; १९६ । ६, ९१, ३; २०१
हरिणस्य शीर्षणि भैषजम् ३, ७, १; १९२
हरिण-विषाणम् ३, ७, १-२; १९-२९३

ओषधिवनस्पतयः ।

ओषधिदेवता-गुणबोधक पदानि ।

पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।	पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।
अंशुमत्यः अ० ८, ७, ४; ३२७		ओषधयः	अपकीताः ८, ७, ११; ३३४		ओषधयः
अग्नेः घासः अ० ८, ७, ८; ३३१		ओषधयः	अपां स्वसा ५, ५, ७; ४३४		लाक्षा
अग्रं आपः अ० ८, ७, ३; ३२६		ओषधयः	अपां गर्भः ८, ७, ८; ३३१		ओषधयः
अग्रं ओषधीनाम् एषि ४, १९, ३; ३९८		अपामार्गः	अपामार्गः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९, १-८ ।		
अग्रं मधुमत् ८, ७, १२; ३३५		ओषधयः	७, ६५, १-३; ३८०-४०६		विशेषनाम
अजबभ्रु पिता ५, ५, ८, ४३५		लाक्षा	अपुष्पाः ऋ० १०, ९७, १५; ३१५		ओषधयः
अतिविद्धभेषजी ६, १०९, १; ४१३		पिप्पली	अफलाः ऋ० १०, ९७, १५; ३१५ । ८, ७, २७; ३५०		ओषधयः
अनङ्गवान् जगताम् १९, ३९, ४; ४५०		कुष्ठः	अबन्धुकृत ४, १९, १; ३१६		अपामार्गः
अनाघृषः ६, २१, ३; ४५९		रेवतीः	अभिषिपयन् ४, १९, ३; ३९८		अपामार्गः
अनावयुः ६, १६, १; ४६६		विशेषनाम	अभिष्टुताः ८, ७, ११; ३३४		ओषधयः
अन्नं घृतं आसाम् ८, ७, १२; ३३५		ओषधयः	अमृतस्य भक्षः ८, ७, १२; ३३५		ओषधयः

अयक्ष्मान् पुत्रवान् करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती	ऊर्जयन्ती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम
अरुन्धती ८,७,६; ३२९। ६,५९,१-३	ओषधिविशेषः	ऋतावरी ६,३०,३; ४७२	शमी
अरुन्धती ६,५९,१-३; ४०७-९	ओषधिविशेषः	एकशुक्ला ८,७,४; ३२७	ओषधयः
अरुन्धती ४,१२,१; ४२१	रोहणी	ओषधिः ओषधयः (बहुलं दृश्यते) ।	सामान्यनाम
अरुन्धती ५,५,५; ४३२	लाक्षा	ओषधीनां गर्भः ६,९५,३; ४१२	कुष्ठः, अश्वत्थो वा
अर्यमा पितामहः ५,५,१; ४२८	लाक्षा	कण्वजम्भनी २,२५,१; ४१६	पृश्निपर्णी
अलसाला (पूर्वा) ६,१६,४; ४६९	विशेषनाम	काण्डिनीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
अवकोल्वाः ८,७,९; ३३२	ओषधयः	कानीनः ५,५,५; ४३५	लाक्षा
अवपतन्तीः दिवः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः	कुष्ठः ६,९५,१-३; ४१०-१२। ५,४,१-१०। १९,	
अश्वत्थः ५,५,५; ४३२। ५,४,३; ४३९। १९,३९,६	ओषधयः	३९,१-१०; ४३७-४५६	वि. नाम
४५२	विशेषनाम	कृत्यादृषणीः ८,७,१०, ३३३	ओषधयः
अश्वत्थः, दर्भः ८,७,२०; ३४३	ओषधयः	कृष्णाः ८,७,१; ३२४	ओषधयः
अश्वत्थे निषूदनम् ऋ. १०,९७,५; ३०५। वा० य०	ओषधयः	केशदंष्ट्रणीः ६,२१,३; ४५९	रेवतीः
१२,७९; ३५,४; ३५८	ओषधयः	केशवर्धनीः ६,२१,३; ४५९	रेवतीः
अश्वत्थती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम	केशवर्धनी ६,१३७,१; ४६३	वनस्पतिः
असिकी ८,७,१; ३२४	ओषधयः	क्षितमेवजी ६,१०९,१; ४१३	पिप्पली
आंगिरसीः ८,७,१७,२४; ३४०,३४७	ओषधयः	क्षितस्य मेवजी ६,१०९,३; ४१५	पिप्पली
आस्मा वातः ५,५,७; ४३४	लाक्षा	स्त्रादिरः ५,५,५; ४३२	ओषधिविशेषः
आपः अग्रम् ८,७,३; ३२६	ओषधयः	गर्भः अपाम् ८,७,८; ३३१	ओषधयः
आव्युः ६,१६,१; ४६६	वि. नाम	गर्भः ओषधीनाम् ६,९५,३; ४१२	अश्वत्थः कुष्ठो वा
आभृताः ८,७,८,२५; ३३१,३४८	ओषधयः	गर्भः विश्वस्य भूतस्य ६,९५,३; ४१२	अश्वत्थः कुष्ठो वा
इक्ष्वाकुः १९,३९,९; ४५५	ओषधयः	गर्भः हिमवताम् ६,९५,३; ४१२	अश्वत्थः कुष्ठो वा
इष्कृतिः माता ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः	गोभाजः ऋ. १०,९७,५; ३०५। वा० य० १२,७९;	
उक्थिन्-कथी वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः	३५,४; ३५८	ओषधयः
उक्षिता अश्वत्थ अस्मा ५,५,८; ४३५	लाक्षा	गोष्ठं पयस्वन्तं करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती
उग्राः ८,७,४,१०; ३२७,३३३	ओषधयः	घाघः अग्नेः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
उग्रा २,२५,१; ४१६	पृश्निपर्णी	जनानां न्ययनी ५,५,२; ४२९	लाक्षा
उत्तमः ५,४,९; ४४५	कुष्ठः	जयन्ती ५,५,३; ४३०	लाक्षा
उत्तमः नाम ते पिता ५,४,९; ४४५	कुष्ठः	जातः त्रिः आदित्येभ्यः परि १९,३९,५; ४५१	कुष्ठः
उत्तमः ओषधीनाम् १९,३९,४; ४५०	कुष्ठः	जातः त्रिः विश्वेभ्यो देवेभ्यः १९,३९,५; ४५१	कुष्ठः
उत्तरा ३,१,४; ३६७	वि. नाम	जातः त्रिः शाम्भुभ्यो अंगिरोभ्यः १९,३९,५; ४५१	कुष्ठः
उत्तानपर्णा ३,१,२; ३६५	वि. नाम	जातः देवेभ्यः अग्नि ५,४,७; ४४३	कुष्ठः
उदकात्मानः ८,७,९; ३३२	ओषधयः	जातः सुपर्णसुवने गिरौ ५,४,२; ४३८	कुष्ठः
उदोजस्-जाः ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम	जातः हिमवतः उद्गत् ५,४,८; ४४४	कुष्ठः
उन्नयन्ती ८,७,६; ३२९	अरुन्धती	जामयः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
उन्मुञ्चन्तीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	जामिकृत ४,१९,१; ३९६	अपामार्गः

जीवन्ती ८,७,६; ३२९	विशेषनाभ	नमस्यन्तीः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
जीवन्तो नाम पिता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः	नितत्नी ६,१३६,१; ४६०	वि. नाम
जीवला ८,७,६; ३२९	वि. नाम	निषदनं अश्वत्थे ऋ. १०,९७,५; ३०५	ओषधयः
जीवला नाम ते माता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः	निष्कृतिः ५,५,६; ४३३	लाक्षा
जीवला ६,५९,३; ४०९	अरुन्धती	निष्कृतिः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
जोष्टा धियः वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)	नीलागलसाला ६,१६,४; ४६९	वि. नाम
तक्मनाशनः ५,४,१-२; ४३७-४३८	कुष्ठः	न्यग्रोधः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
तीक्ष्णशृंग्यः ८,७,९; ३३२	ओषधयः	न्यञ्चनी जनानाम् ५,५,१; ४२८	लाक्षा
त्विषीमती ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः	पतत्रिणी ५,५,९; ४३६	लाक्षा
त्राता पाकस्य ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः	पतत्रिणीः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
त्रायमाणः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः	पयस्वतीः ८,७,१७; ३४०	ओषधयः
दूर्धः अश्वत्थः वीरुधाम् ८,७,२०; ३४३	अश्वत्थः	परागताः दूरम् ऋ. १०,९७,२१; ३२१	ओषधयः
दिव्याः ८,७,३,२४; ३२६,३४७	ओषधयः	परिष्ठाः ऋ. १०,९७,१०; ३१०	ओषधयः
देवः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः	पर्णः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
देवः वा. य. ५,४२-४३; ३७०-३७१ । २०,४५;		पर्णं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
३७२-४८,४३; ३७७ । २९,३५; ३७९ वनस्पतिः (यूपः)		पर्णं वसतिः ऋ. १०,९७,५; ३०५	ओषधयः
देवीः ऋ. १०,९७,४; ३०४	ओषधयः	पर्युक्ता कण्वेन नार्षदेन ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः
देवी ६,१३६,१; ४६०	नितत्नी	पाकस्य त्राता ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
देवजूता ३,१८,२; ३६५	उत्तानपर्णा	पारयिष्णवः ऋ. १०,९७,३; ३०३	ओषधयः
देवलोहं प्रजान् २९,१०; ३७८	वनस्पतिः (यूपः)	पिता अजबभ्रुः ५,५,८; ४३५	(सिलाची) लाक्षा
देवसदनः ५,४,३; ४३९	अश्वत्थः	पिता यौः ८,७,२; ३२५	ओषधयः
देवेभ्यः त्रियुगं पुरा ऋ. १०,९७,१; ३०१	ओषधयः	पिता नभः ५,५,१; ४२८	(सिलाची) लाक्षा
देवानां स्वभा ५,५,१; ४२८	लाक्षा	पिता विस्मिन्दिन् नाम ४,१९,५; ४००	अपामार्गः
यौः पिता ८,७,२; ३२५	ओषधयः	पिता विहङ्गो नाम ६,१६,२; ४६७	आभयुः
धनं सनिष्यन्तीः ऋ. १०,९७,८; ३०८	ओषधयः	पितामहः अर्यमा ५,५,१; ४२८	लाक्षा
धवः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	पिप्पली-ल्यः ६,१०९,१-२; ४१३-४१४	वि. नाम
धामानि शतम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	ओषधयः	पुनर्नवाः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
धामानि शतं सदा च ऋ. १०,९७,१; ३०१	ओषधयः	पुनः सरा ४,१७,२; ३८१	अपामार्गः
धियः जोष्टा वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)	पुरुषजीवनीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
धेनवः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः	पुष्पा ८,७,६; ३२९	वि. नाम
ध्रुवाः ८,७,८; ३३१	ओषधयः	पुष्पं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
नयमारः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः	पुष्पिणीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः
नद्यायम् १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः	पुष्पवतीः ऋ. १०,९७,३; ३०३ । अ. ८,७,२७;	ओषधयः
नद्यारिषः ८,७,६; ३२९	ओषधयः	३५०	ओषधयः
नद्यारिषः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः	पूर्वा जाताः ऋ. १०,९७,१; ३०१	ओषधयः
नभः पिता ५,५,१; ४२८	लाक्षा	पृथिवी माता ८,७,२; ३१५	ओषधयः

पृथ्वी: ८,७,१; ३२४	ओषधयः	मधुमान् ऋ. १,९०,८; ४७३	वनस्पतिः
पृथ्वीपणी २,२५,१-४; ४१६-४१९	वि. नाम	मधुमती ८,७,६; ३२९	ओषधयः
प्रचेतसः ८,७,७; ३३०	ओषधयः	मधुना संयुतः ६,३०,१; ४७०	यवः
प्रजाता मधोः अधि १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः	मधुजाता १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः
प्रजानन् देवलोकम् वा० य० २९,१०; ३७८	वनस्पतिः	मधोः अधि प्रजाता १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः
प्रतन्वती: ८,७,४; ३२७	ओषधयः	मधोः सम्भक्ताः ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
प्रतीचीन फलः ४,१९,७; ४०२	अपामार्गः	मयं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
प्रत्यातिष्ठन्ती ५,५,३; ४३०	लाक्षा	मातरः ऋ. १०,९७,४; ३०४	ओषधयः
प्रथमा (सहमाना) २,२५,२; ४१७	पृथ्वीपणी	माता इष्कृतिः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
प्रसूमती: ८,७,२७; ३५०	ओषधयः	माता पृथिवी ८,७,२; ३२५	ओषधयः
प्रसूवरी: ऋ. १०,९७,३; ३०३	ओषधयः	माता मदावती नाम ६,१६,२; ४६७	आभयुः
प्रस्तृणती: ८,७,४; ३२७	ओषधयः	माता रात्रिः ५,५,१; ४२८	लाक्षा
प्लक्षः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	माध्वी: ऋ. १,२०,६; ३६२	ओषधयः
फलिनी: ऋ. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः	मूलं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
बभ्रवः ऋ. १०,९७,१; ३०१ । ८,७,१; ३२४	ओषधयः	मूलं समुद्रः ८,७,२; ३२५	ओषधयः
बलवत्तमा वीरुवाम् ३,१८,१; ३६४	उत्तानपर्णा	मेदिनी: ८,७,७; ३३०	ओषधयः
बलासनाशनी: ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	यवः ८,७,२०; ३४३ । ६,३०,१; ४७०	वि. नाम
बह्वी: ऋ. १०,९७,१५; ३१५ । ६,९६,१; ३५२	ओषधयः	रक्षसः इन्ता ४,१९,३; ३९८	अपामार्गः
बृहत्पलाशा ६,३०,३; ४७२	शमी	रराणः रमना देवेषु वा. य. २७,२१; ३७४	वनस्पतिः (यूपः)
बृहस्पतिप्रसूता: ऋ. १०,९७,१५,१९; ३१५, ३१९;	ओषधयः	रक्षनां विभक्त वा. य. २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
६,९६,१; ३५२	ओषधयः	राजा वनस्पतिः यासाम् ८,७,१६; ३३९	ओषधयः
भक्षः अमृतस्य ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	राजा वीरुवाम् ८,७,२०; ३४३	सोमः
भगः वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)	रात्रिः माता ५,५,१; ४२८	लाक्षा
भद्रः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	रुद्रः सहस्रं यासाम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	ओषधयः
भद्रा ४,१२,२; ४२२	रोहणी	रेवती: ६,२१,३; ४५९	वि. नाम
भर्त्री शश्वताम् ५,५,२; ४२९	लाक्षा	रोहणी ४,१२,१; ४२१	वि. नाम
भूमिं सन्तन्वती: ८,७,१६; ३३९	ओषधयः	रोहिणी: ८,७,१; ३२४	ओषधयः
भेषजी: ८,७,८; ३३१	ओषधयः	लाक्षा ५,५,७; ४३४	लाक्षा
भेषजौ ८,७,२०; ३४३	व्रीहिः यवश्च	लोमशवक्षणा ५,५,७; ४३४	लाक्षा
भेषजानां श्रेष्ठः ६,२१,२; ४५८	चन्द्रमा:	वनस्पतिः वा० य० ५,४२-४३ । २०,४५ ।	
भणिः वैयाघ्रः यासाम् ८,७,१४; ३३७	वीरुधः	२१,२१ । २७, २१ । २८, १०, ३३, ४३;	
मदावती नाम माता ६,१६,२; ४६७	आभयुः	३७०-३७७	वनस्पतिः (यूपः)
मधुमत् अग्रम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वनस्पतिः (उपर्युक्तान्यस्थले सामान्यनाम रूपेण निर्देशः) ।	
मधुमत् पर्णम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वपुष्टमा ५,५,६; ४३३	लाक्षा
मधुमत् पुष्पम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वर्षवृद्धा ६,३०,३; ४७२	शमी
मधुमत् मध्यम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वशिः वा० य० २८,३३; ३७६	(वनस्पतिः) यूपः
मधुमत् मूलम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः		

वशी ४,१७,८; ३८७	अपामार्गः	शतशाखा ४,१९,५; ४००	अपामार्गो वनस्पतिः
वसतिः पर्णे वः ऋ. १०,९७,५; ३०५ । वा० य०	ओषधयः	शपथयावनी ४,१७,२; ३८१	अपामार्गो वनस्पतिः
१२,७९; ३५,४; ३५८	लाक्षा	शमिता वा. य. २१,२१; २७,२१;	वनस्पतिः (यूपः)
वातः आत्मा ५,५,७; ४३४	पिप्पली	२८,१०,३३; ३७३-३७६	वि. नाम
वातीकृतस्य भेषजी ६,१०९,३; ४१५	ओषधयः	शमी ६,३०,३; ४७२	लाक्षा
वावशानाः पुत्रम् ऋ. ३,५७,३; ३६३	अपामार्गः	शश्वतां भर्त्रा ५,५,२; ४२९	ओषधयः
विभिन्दन् नाम पिता ४,१९,५; ४००	अपामार्गः	शिवाः ८,७,१७; ३४०	ओषधयः
विभिन्दन्तो ४,१९,५; ४००	ओषधयः	शुक्राः ८,७,१; ३२४	लाक्षा
विवरुणाः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	शुष्मा ५,५,७; ४३४	ओषधयः
विशाखाः ८,७,४; ३२७	ओषधयः	सजित्वरीः ऋ. १०,९७,३; ३०३	अपामार्गः
विश्वाः ऋ. १०,९७,१०; ३१०	कुष्ठः	सत्यजित् ४,१७,२; ३८१	ओषधयः
विश्वधावीर्यः १९,३९,१०; ४५६	कुष्ठः	सनिष्यन्तीः धनम् ऋ. १०,९७,८; ३०८	ओषधयः
विश्वभेषजः १९,३९,५-९; ४५१-४५५	नितरनी	सन्तन्वन्ती भूमिम् ८,७,१६; ३३९	ओषधयः
विश्वभेषजी ६,१३६,३; ४६२	ओषधयः	समुद्रः मूलम् ८,७,२; ३२५	लाक्षा
विश्वभेषजीः ८,७,२६; ३४२	अपामार्गः	सम्पतिता अश्वस्य अरुनः ५,५,९; ४३६	ओषधयः
विश्वतोमुखः ७,६५,२; ४०५	अरुन्धती	सम्भक्ता मधोः ८,७,१२; ३३५	लाक्षा
विश्वरूपा ६,५९,३; ४०९	कुष्ठौषधिः	सरा ५,५,९; ४३६	ओषधयः
विश्वस्य भूतस्य गर्भः ६,९५,३; ४१२	ओषधयः	सहमानाः ८,७,५; ३२८	पृश्निपर्णी
विषदूषणीः ८,७,१०; ३३३	वनस्पतिः (यूपः)	सहमानाः २,२५,२; ४१७	अपामार्गः
विष्णुः वा. य. ५,४२; ३७०	(यूपः)	सहमानाः ४,१७,२; ३८१	अपामार्गः
विष्टिताः पृथिवीं अनु ऋ. १०,९७,१९; ३१९	आबयुः	सहस्रधामा ४,१८,४; ३९१	ओषधयः
विहहो नाम ते पिता ६,१६,२; ४६७	सामान्यवाची	सहस्रनाम्नीः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
वीरुधः ऋ. १०,९७,३,२१; ३०३,३२१ । ८,७,२;	अपामार्गः	सहस्रपर्यः ८,७,१३; ३३६	उत्तरा उत्तानपर्णा वा
३२५	उत्तानपर्णा	सहस्रती ३,१८,२,५; ३६५,३६८	पृश्निपर्णी
वीरुधां पतिः ४,१९,४; ४०३	कुष्ठः	सहस्रती २,२५,२; ४१६	उत्तरा
वीरुधां बलवत्तमा ३,१८,१; ३६४	चन्द्रमाः	सासहिः ३,१८,५; ३६८	लाक्षा
वीरुधां बलवत्तमः ५,४,१; ४३७	सोमः	सिलाची ५,५,१,८; ४२८,४३५	आबयुः
वीरुधानां वसिष्ठः ६,२१,२; ४५८	ओषधयः	सिलाज्जाला ६,१६,४; ४६९	रेवतीः केशवर्धनीः
वृक्षाः उपस्तयः तव ऋ. १०,९७,२३; ३२३	वि. नाम	सिषासवः ६,२१,३; ४५९	ओषधयः
वैश्वदेवीः ८,७,४; ३२७	वनस्पतिः (यूपः)	सीराः ऋ. १०,९७,९; ३०९	ओषधयः
व्रीहिः ८,७,२०; ३४३	शमी	सुपर्णाः ८,७,२४; ३४७	ओषधयः
शतक्रतुः वा. य. २८,१०,३३; ३७५-३७६ वनस्पति (यूपः)	ओषधयः	सुपिप्पलाः वा. य. ११,४८; ३५७	उत्तानपर्णा
शतक्रत्वः ऋ. १०,९७,२; ३०२	वनस्पतिः (यूपः)	सुभगा ३,१८,२; ३६५	अरुन्धती
शतवल्शः वा. य. ५,४३; ३७१	ओषधयः	सुभगा ६,५९,३; ४०९	लाक्षा
शतवल्शा ६,३०,२; ४७१	ओषधयः	सुभगा ५,५,६-७; ४३३-४३४	शमी
शतविचक्षणाः ऋ. १०,९७,१८; ३१८ । ६,९६,१;		सुभगा ६,३०,३; ४७२	
३५२			

सूर्यवर्णा ५, ५, ६; ४३३	लाक्षा	स्थितिः वा० य० ४, १, ५, ४२; ६, १५; ३५५ ।	
सोमः ६, २१, २; ४५८	चन्द्रमाः	५, ४२; ३७०	ओषधिः
सोमः (राजा) ऋ. १०, ९७, २२-२३; ३२२३-२३		खसा अपाम् ५, ५, ७; ४३४	लाक्षा
८, ७, २०; ३४३ । ६, १६, ३; ३५४	वि. नाम	खसा देवानाम् ५, ५, १; ४२८	सिलाची (लाक्षा)
सोम-राज्ञीः ऋ. १०, ९७, १८-१९; ३१८-१९;		हन्ता रक्षसः ४, १९, ३; ३९८	अपामार्गः
६, ९६, १; ३५२	ओषधयः	द्वितः सखा सोमस्य ५, ४, ७; ४४३	कुष्ठः
सोमावती ऋ. १०, ९७, ७; ३०७	वि. नाम	द्विमवतां गर्भः ६, ९५, ३; ४१२	कुष्ठः
स्तम्बिनीः ८, ७, ४; ३२७	ओषधयः	हिरण्यपर्णः वा० य० २८, ३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
स्पर्णी ५, ५, ३; ४३०	लाक्षा	हिरण्यवर्णा ५, ५, ६-७; ४३३-३४	लाक्षा

रोगचिकित्सान्तर्गता ओषधयः ।

वनस्पतिः सौभाग्यवर्धनी । ६, १३९, १-५; ६७७-६८१

कल्याणी ३; ६७९

त्रयस्त्रिंशत् नितानाः १; ६७७

न्यस्तिका १; ६७७

बभ्रु ३; ६७९

वीर्यावती ५; ६८१

शातं प्रतानाः १; ६७७

संवन्नी ३; ६७९

समुष्णला ३; ६७९

सहस्रपर्णा १; ६७७

सुभगंकरणी १; ६७७

वनस्पतिः मधुला (रोगोपशमनम्) । ५, १५, १-११; ६५३-६६३

ऋतजाता १-११; ६५३-६६३

ऋतापरी १-११; ६५३-६६३

वनस्पतिः (शापमोचनम्) । २, ७, १-५; ६६८-६७२

अथद्विष्टा १; ६६८

देवजाता १; ६६८

मूलं दिवः अवततम् ३; ६७०

मूलं पृथिव्या अधि उत्तमम् ३; ६७०

शापधयोपनी वीरुत १; ६६८

सहस्रकाण्डः ३; ६७०

अलङ्करी- (दोषः) । १, १८, १-४; ६७३-६७६

अरणिः पदोः २; ६७४

अरणिः हस्तयोः २; ६७४

अरातिः १; ६७३

गोषेधा ४; ६७६

घोरः आत्मनि ३; ६७५

घोरः केशेषु ३; ६७५

घोरः तन्वाम् ३; ६७५

घोरः प्रातिचक्षणे ३; ६७५

निर्लक्ष्म्यम् १; ६७३

रिश्यपदी ४; ६७६

ललाम्यम् १, ४; ६७३, ६७६

विधमा ४; ६७६

विलीढ्यम् ४; ६७६

वृषदती ४; ६७६

रोगचिकित्सा ।

(१) रोगाणां नामानि, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अपचितः गण्डमालाः वा (५०३-५१६)

अपचित्-तः ६,८३,१,३; ५१३,५१५
 अरसतराः सेहोः ७,७६,१; ५०७
 असतराः असतीभ्यः ७,७६,१; ५०७
 अवीरघ्नीः ६,८३,२; ५१४
 असूतिवत् ६,८३,३; ५१५
 उपपक्ष्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८
 एनी ६,८३,२; ५१४
 ककुद्भिन्निः ७,७६,३; ५०९
 कीकसाः प्रशृणाति यः ७,७६,३; ५०९
 कृष्णा ६,८३,२; ५१४
 गलुन्तः ६,८३,३; ५१५
 ग्रैव्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८
 ग्लौः ६,८३,३; ५१५
 जायान्यः ७,७६,३-५; ५०९-५११
 तलीद्यं अवतिष्ठमाना ७,७६,३; ५०९
 माता यासां कृष्णा ७,७६,१; ५०३
 रामायणी ६,८३,३; ५१५
 रोहिणी ६,८३,२; ५१४
 लोहिनी ७,७६,१; ५०३
 विक्लेदीयसीः लवणात् ७,७६,१; ५०७
 विजाम्नि याः अपचिताः ७,७६,२; ५०८
 श्येनी ६,८३,२; ५१४
 सुलसः सुलसः ७,७६,१; ५०७
 खयंससः ७,७६,२; २

अलक्ष्मी दोषः । १,१८,१-४; ६७३-७६

इषु- (वेद्यः) । ६,१०,१-३; ६२०-६२२

इषुः अस्यमाना १,३; ६२०,६२२
 इषुः निपतिता ३; ६२२
 इषुः प्रतिहिता ३; ६२२
 इषुः विसृज्यमाना ३; ६२२
 ईर्ष्या । ६८२-६८६



अग्निः हृदयः ६,१८,१; ६८२

मनस्कं पतयिष्णुकम् ६,१८,३; ६८४

मृतं मनः ईर्ष्याः ६,१८,२; ६८३

शोकः हृदयः ६,१८,१; ६८२

उन्मत्तता । ६,१११,१-४; ६८७-६९०

उन्मत्तं रक्षसस्परि ६,१११,३; ६८९

उन्मदितं देव एनसात् ६,१११,३; ६८९

उद्युतं मनः ६,१११,२; ६८८

सुयतः लालपीति यः ६,१११,१; ६८७

कासा । ६,१०५,१-३; ४८६-४८८

क्षेत्रियरोगः । २,८,१-५; ४९३-९७

अभिकृत्वरीः २; ४९४

ज्वरः । १,२५,१-४ । ७,११६,१-२; ५२५-३०

अभ्येद्युः अभ्येता १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०

अभिभोक्तः १,२५,३; ५२७

अभिः १,२५,२; ५२६

अव्रतः ७,११६,२; ५३०

उभयद्युः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०

च्यवनः ७,११६,१; ५२९

जनित्रं शकल्येषि १,२५,२; ५२६

तकमा १,२५,१-४; ५२५-२८

तृतीयकः १,२५,४; ५२८

धृष्णुः ७,११६,१; ५२९

नोदनः ७,११६,१; ५२९

पुत्रः राज्ञः वरुणस्य १,२५,३; ५२७

पूर्वकामकृत्वन् ७,११६,१; ५२९

रुरः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९

वरुणस्य पुत्रः १,२५,३; ५२७

शकल्येषि जनित्रम् १,२५,२; ५२६

शीतः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९

शोकः १,२५,३; ५२७

शोचिः १,२५,२,४; ५२५,५२८

हरितस्य देवः १, २५, ३; ५२७

हूडः नाम १, २५, ३; ५२७

तकमा । ५, २२, १-१४; ५३१-४४

अघराड् ३; ५३३

अभिदुन्वन् अग्निः इव २; ५३२

अरसः २; ५३२

अवध्वंसः इव अरुणः ३; ५३३

उच्छोचयन् अग्निः इव २; ५३२

उद्युगः यस्य सखा ११; ५४१

कासः यस्य सखा ११; ५४१

कासा सह अवेपयः १०; ५४०

कासिका यस्य स्वसा १२; ५४२

ग्रैष्मः १३; ५४३

तकमा १-१४; ५३१-४४

तृतीयकः १३; ५४३

प६षः पारुषेयः ३; ५३३

पाप्मा भ्रातृव्यः १२; ५४२

प्रार्थः ९; ५३९

बल्लिषु न्योचरः ५; ५३५

बलासः यस्य भ्राता १२; ५४२

बलासः यस्य सखा ११; ५४१

महावृषाः अस्य ओकः ५; ५३५

मूजवन्तः अस्य ओकः ५; ५३५

रुरः १०, १३; ५४०, ५४३

वशी ९; ५३९

वार्षिकः १३; ५४३

वितृतीयः १३; ५४३

व्यंगः ६; ५३६

यलः ६; ५३६

शकम्भरस्य मुष्टिहा ४; ५३४

शारदः १३; ५४३

शतः १०, १३; ५४०, ५४३

सदन्द्रः १३; ५४३

हरितान् विश्वान् यः कृणोति २; ५३२

हेतयः यस्य भीमाः १८; ५४०

दुःश्वमानि ।

बलासः । ६, १४, १-३; ४८३-४८५

अंगेष्ठाः १; ४८३

अवीरहा ३; ४८५

अस्थिखंसः १; ४८३

पर्वसु (तिष्ठमानः) १; १४३

पुराखंसः १; ४८३

हृदयामयः १; ४८३

मूत्र- (कृच्छ्रम्) । १, ३, १-२; ५७१-७९

आन्त्रेषु अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

गवीन्योः अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

वस्तौ अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

यक्ष्मनाशनम् । २, ८, १ ५; ४९३-९६

इदं सूक्तं क्षेत्रियरोगनाशनपरम्, न यक्ष्मनाशनपरम् ।

' यक्ष्मनाशनम् ' नाम स्वतन्त्रं प्रकरणं (१६२-३००

मंत्रांकाः) अस्यां संहितायां वर्तते ।

रुधिरास्त्रावः । १, १७, १-४ । ६, ४४, १-३ । २, ३, १-६;

५५५-६१; ५६५-५७०

श्वेत कुष्ठम् । १, २३, १-४ । २४, १-४; ५१७-२४

अस्थिजः किलासः १, २३, ४; ५२०

किलासः १, २३, १-२; ५१७-१८

तनूजः किलासः १, २३, ४; ५२०

दृष्ट्या कृतः १, २३, ४; ५२०

पलितम् १, २३, १-२; ५१७-१८

पृषत् १, २३, २-३; ५१८-१९

लक्ष्म श्वेतं त्वचि १, २३, ४; ५२०

शुक्लानि १, २३, २; ५१८

हरिमा । १, २२, १-४; ४८९-४९२ ।

ऋ. १, ५०, ११-१३; ५४५-५७

हरिमा १, २२, १, ४; ४८९, ४९२

ऋ. १, ५०, ११-१२; ५४५-४६

हृद्योतः १, २१, १; ४८९

हृद्रोगः १, ५०, ११; ५४५

(२) रोगाणां परिहार-साधनानि ।

अपचितः गण्डमाला वा ।

मुनेः देवस्य मूलम् ७,७४,१; ५०३

त्वार्ष्ट्रं वचः ७,७४,३; ५०५

इषुनिष्कासनम् ।

ईर्ष्यापनयनम् ।

भेषजम् ७,४५,१; ६८५

उन्मत्ततामोचनम् ।

भेषजम् ६,१११,२-३; ६८८-६८९

कासा-शमनम् ।

क्षेत्रियरोगनाशनम् । २,८,१-५; ४९३-९७

क्षेत्रियनाशनी वीरुत् २-५; ४९४-९७

तिलस्य तिलपिञ्जी ३; ४९५

यवस्य पलाली अर्जुनकाण्डस्य ३; ४९५

यवस्य पलाली बभ्रोः ३; ४९५

विचृतौ नाम तारके १; ४९३

ईषायुगेभ्यः क्षेत्रस्य पतये लांगलेभ्यः सनिस्तसाक्षेभ्यः

सन्देशेभ्यः च नमस्कृतिः ४-५; ४९६-९७

ज्वरनाशनम् ।

तकमनाशनम् ।

दुःश्वप्ननाशनम् ।

बलासनाशनम् ।

मूत्रमोचनः ।

प्र ते भिनन्नि मेहनम् १,३,७; ५७७

विषितं ते वस्तिबिलम् १,३,८; ५७८

यक्ष्मनाशनम् । २,८,१-५; ४९३-९६

इदं सूक्तं न यक्ष्मनाशनम् [स्वतन्त्रं प्रकरणं द्रष्टव्यम्

१६२-३००]

रुधिरास्त्रावनिवृत्तिः ।

योषितः हिराः लोहितवाससः धमन्यः अभ्रातरः इव जामयः

तिष्ठन्तु १,१७,१; ५५५

आस्त्रावभेषजम् ६,४४,२; ५६०

रुद्रस्य मूत्रम् ६,४४,३; ५६१

वातीकृतनाशनी ६,४४,३; ५६१

विषणका नाम ६,४४,३; ५६१

अन्वास्त्रावम् २,३,२; ५६६

अरुस्त्राणम् २,३,३,५; ५६७-५६९

अरोगणम् २,३,२; ५६६

आस्त्रावस्य भेषजम् २,३,३-५; ५६७-६९

श्वेतकुष्ठनाशनम् ।

असिक्ली (वनस्पतिः) १,२३,१-४; ५१७-२०

असितं आस्थानम् १,२३,३; ५१९

असितं प्रलयनम् १,२३,३; ५१९

आसुरी (वनस्पतिः) १,२४,१-४; ५२१-२४

किलासनाशनम् १,२४,२; ५२२

किलासभेषजम् १,२४,२; ५२२

कृष्णा १,२३,१; ५१७

पृथिव्या अधि उद्भूता १,२४,४; ५२४

रामा १,२३,१; ५१७

श्यामा १,२४,४; ५२४

सरूपंकरणी १,२४,४; ५२४

सरूपकृत् १,२४,३; ५२३

सरूपो नाम पिता १,२४,३; ५२३

सरूपा नाम माता १,२४,३; ५२३

हरिमा- (हृद्रोग-कामिला नाशनम्) ।

नाशनम् । १,२२,१-४; ४८९-९२

रोगघ्न्यः उपनिषदः ऋ १,५०,११-१३; ५४५-४७

रोपणाकासु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०,

१२; ५४६

रोहितैः वणैः ध्मानम् १,२२,२; ४९०

रोहितस्य वर्णेन ध्मानम् १,२२,१; ४८३

रोहिणीभिः ध्मानम् १,२२,३; ४९१

रोहिणीः देवत्याः गावः ताभिः ध्मानम् १,२२,३; ४९१

शुकेषु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०,१२; ५४६

हारिद्रवेषु ध्मानम् १,२२,४; ४९२ । ऋ. १,५०,१२; ५४६

(३) भैषज्यम् ।

आञ्जनं । गुणबोधक पदानि ।
 अञ्जनं आञ्जनं वा ४,९,१-१० । ७,३०,१ । ३६,१ ।
 १९,४५,१-१०; १९,४४,१-१० । वा. य. ४,३;
 ५८०-६१२
 अपां ऊर्जः १९,४५,३; ५९४
 अभयम् १९,४४,१; ६०२
 आञ्जनम् १९,४४,३; ६०४
 आयुषः प्रतरणम् १९,४४,१; ६०२
 ओजसः वातुधानम् १९,४५,३; ५९४
 कम् ४,९,१; ५८०
 चक्षुर्दाः वा. य. ४,३; ६१२
 चतुर्वीरम् १९,४५,३-५; ५९४-९६
 जम्भयत् यातुत् ४,९,९; ५८८
 जम्भयत् यातुधान्यः ४,९,९; ५८८
 जातं अग्नेः जातवेदसः १९,४५,३; ५९४
 जातं हिमवतः परि ४,९,९; ५८८
 जीवं त्रायमाणम् ४,९,१; ५८०
 जीवमोजनम् ४,९,३; ५८२
 त्रिककुद् नाम ते पिता ४,९,८; ५८७
 त्रैककुदम् ४,९,९-१०; ५८८-५८९
 त्रैककुदम् १९,४४,६; ६७०
 दत्तं विश्वेभिः देवैः ४,९,१; ५८०
 देवः १९,४४,६; ६०७
 परिधिः जीवनाय १९,४५,३; ५९४
 परिपाणं अर्चताम् ४,९,२; ५८१
 परिपाणं अश्वानाम् ४,९,२; ५८१
 परिपाणं गवाम् ४,९,२; ५८१
 परिपाणं पुरुषाणाम् ४,९,२; ५८१

पर्वतस्य अक्षयम् ४,९,१; ५८०
 पर्वतीयम् १९,४५,३; ५९४
 पुरुषजीवनम् १९,४४,३; ६०४
 पुष्टिव्यां जातम् १९,४४,३; ६०४
 भद्रम् १९,४४,३; ६०४
 भेषजम् १९,४४,१; ६०२
 यातुजम्भनम् ४,९,३; ५८२
 यासुनम् ४,९,१०; ५८९
 विद्युतां पुष्पम् १९,४४,५; ६०६
 विप्रम् १९,४४,१; ६०२
 वृत्रस्य कनीनकः वा. य. ४,३; ६१२
 शन्तातिः १९,४४,१; ६०२
 सहस्रवीर्यम् १९,४४,८-९; ६०९-६१०
 सिन्धोः गर्भः १९,४४,५; ६०६
 हरितभेषजम् ४,९,३; ५८२

आञ्जनेन परिहरणीयाः रोगाः

अंगभेदः विसर्पकः १९,४४,२; ६०३
 अप्रमायुकः १९,४४,३; ६०४
 आददिः (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७
 तक्मा (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७
 बलासः (अञ्जनस्य दातः) ४,९,८; ५८७
 यक्ष्म १९,४४,२; ६०३
 रथजृतिः १९,४४,३; ६०४
 विसर्पकः अंगभेदः १९,४४,२; ६०३
 हरिमा जायान्य १९,४४,२; ६०३

क्रिमिनाशनम् ।

(१) क्रिमीणां विविधप्रकाराः, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अक्षयौ परिसर्पन् ५,२३,३; ६९८
 अङ्गिनः अयस्मयैः पाशैः १९,६६,१; ७६६
 अस्त्रिणः ६,३२,३; ७३३ । १,७,३; ७६९
 अदूताः २,३१,३; ६९३

अदृष्टः २,३१,२; ६९२
 अदृष्टाः ५,२३,६-७; ७०१-७०२
 अन्तः ये अस्त्रु २,३१,५; ६९५
 अन्तः ओषधीषु २,३१,५; ६९५

अन्तः ये गवि २,३२,१; ७०९
 अन्तः पर्वतेषु २,३१,५; ६९५
 अन्तः पशुषु २,३१,५; ६९५
 अन्तः वनेषु २,३१,५; ६९५
 अन्वान्त्र्यः २,३१,४; ६९४
 अप्सरसः ४,३७,२-५; ७१६-७१९
 अप्सरसः जाया ४,३७,१२; ७२६
 अप्सरापतिः ४,३७,७; ७२१
 अभिशोचाः ४,३७,१०; ७२४
 अथोजालाः १९,६६,१; ७६६
 अरसाः २,३१,३; ६९३
 अराध्यः १,२८,४; ७३७
 अर्जुनः २,३२,२; ७१० । ५,२३,९; ७०४
 अलगण्डवः २,३१,२; ६९२
 अवकादाः गन्धर्वाः ४,३७,८-१०, ७२२-७२४
 अवस्कवः २,३१,४; ६९४
 अशिष्टाः २,३१,३; ६९३
 असुराः ६,७,२-३; ७६४-६५ । १९,६६,१; ७६६
 आनृत्यत् ४,३७,७; ७२१
 एजत्काः ५,२३,७; ७०२
 कपिः इव ४,३७,११; ७२५
 कक्षपासः ५,२३,७; ७०२
 किमीदिनः ४,२०,८; ७६१ । १,७,१,३; ७६७,७६९ ।
 १,२८,१-२; ७३४-७३५
 कुमारः इव सर्वकेशकः ४,३७,११; ७२५
 कुरुः २,३१,२; ६९२
 कृष्णौष्णाः ५,२३,४-५; ६९९-७००
 कोकः ५,२३,४; ६९९
 क्रव्यात् ५,२९,८-११,१५; ७४५-४८,७५२
 क्रिमयः २,३१,१-५; ५,२३,१-१३; २,३२,१-५;
 ६९२-७१३ सर्वत्र
 क्षुल्लकाः २,३२,५; ७१३
 गन्धर्वाः ४,३७,२-७; ७१६,७२१
 गन्धर्वाः पतयः ४,३७,१२; ७२६

गृध्रः ५,२३,४; ६९९
 चतुरक्षः २,३२,२; ७१०
 छलुनाः २,३१,२; ६९२
 त्रिककुद् ५,२३,९; ७०४
 त्रिशीर्षा ५,२३,९; ७०४
 दत्तां मध्ये गच्छन् ५,२३,३; ६९८
 दूनाः २,३१,३; ६९३
 दृष्टः-ष्टाः २,३१,२; ६९२ । ५,२३,६-७; ७०१-७०२
 द्रयाविनः १,२८,१; ७३४
 नासे परिसर्पन् ५,२३,३; ६९८
 परिवेशसः २,३२,५; ७१३
 पाष्ठेयः २,३१,४; ६९४
 पिशाचाः ६,३२,२; ७३२ । ५,२३,४-१०; ७४१-७४७
 ४,२०,६-७,९; ७५२-६०,७६२ । ४,३७,१०; ७२४
 प्रियः दशः इव ४,३७,११; ७२५
 बभ्रुः ५,२३,४; ६९९
 बभ्रुकर्णः ५,२३,४; ६९९
 मनोहनः ५,२९,१०; ७४७
 मायिनः १९,६६,१; ७६६
 यातुधानाः १,८,१; ७२७ ×
 यातुधानः १,८,३; ७२९ ×
 यातुधानाः ६,३२,२; ७३२ । १,२८,१-२; ७३४-३५
 ५,२९,११; ७४८ । ४,२०,६,८; ७५९,७६१ । १,
 ७,१-३,५-७; ७६७-७६९,७७१-७७३
 यातुधान्यः १,२८,२,४; ७३५,७३७ । ४,२०,६; ७५९
 यातुमान् १,७,४; ७७०
 येवाषः-षासः ५,२३,७-८; ७०२-७०३
 रक्षः ४,३७,२; ७१६
 रक्षांसि ४,३७,१; ७१५ । ६,३२,१; ७३१ । ५,२९,१०;
 ७४७ । वा. य. ५,२२; ७५३
 राजा क्रिमीणाम् २,३२,४; ७१२
 रुधिरः ५,२९,१०; ७४७
 रोहितौ ५,२३,४; ६९९
 विरूपौ ५,२३,४; ६९९

विश्वरूपः ५, २३, ५; ७०० । २, ३१, २; ७१०
 वेशसः २, ३२, ५; ७१३
 व्यध्वरः २, ३१, ४; ६९४
 शिखण्डी ४, ३७, ७; ७२१
 शितिकक्षाः ५, २३, ५; ७००
 शितिबाहवः ५, २३, ५; ७००
 शिपवित्तुकाः ५, २३, ७; ७०२
 शिष्टाः २, ३१, ३; ६९३
 शीर्षण्यः २, ३१, ४; ६९४

श्वा इव ४, ३७, ११; ७३५
 सरूपौ ५, २३, ४; ६९२
 सहमूराः ५, २९, ११; ७४८
 सारङ्गः २, ३२, २; ७१० । ५, २३, ९; ७०३
 स्थपतिः २, ३२, ४; ७१२
 हतभ्राता २, ३२, ४; ७१२
 हतमाता २, ३२, ४; ७१२
 हतस्वसा २, ३२, ४; ७१२
 हविरदाः ४, ३७, ८-९; ७२२-७२३

(२) ओषधिनामानि ।

तासां गुणबोधकपदानि च ।

अजशृङ्गी ४, ३७, २, ६; ७१६, ७२०
 अराटकी ४, ३७, ६; ७२०
 अर्जुनाः ४, ३७, ५; ७१९
 अश्वत्थाः ४, ३७, ४; ७१८ (महावृक्षाः)
 आषाढाः ४, ३७, ५; ७१९
 ओषधिः देवी ४, २०, २; ७५५
 ओषधीनां वीरुषां वीर्यावती ४, ३७, ६; ७२०
 औक्षगन्धिः ४, ३७, ३; ७१७
 कर्कर्यः ४, ३७, ५; ७१९
 गुरुगुलः ४, ३७, ३; ७१७

तीक्ष्णशृङ्गी ४, ३७, ६; ७२०
 नलदी ४, ३७, ३; ७१७
 न्यग्रोधाः ४, ३७, ४; ७१८ (महावृक्षाः)
 पीला ४, ३७, ३; ७१७
 प्रमन्दनी ४, ३७, ३; ७१७
 ब्रह्म ४, ३७, ११; ७२५
 विश्वतोवीर्या वीरुव ६, ३२, २; ७३२
 शिखण्डिनः ४, ३७, ४; ७१८ (महावृक्षाः)
 हरिताः ४, ३७, ५; ७१९

विषनाशनम् ।

(१) विष-उत्पत्ति-हेतवः ।

अस्याः ऋ. १, १९१, ७; ७८०
 अग्निविषम् १०, ४, २२; ८२९
 अग्निजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०
 अघाश्वः १०, ४, १०; ८१७
 अङ्गयाः ऋ. १, १९१, ७; ७८०
 अदृष्टाः ऋ. १, १९१, १-८; ७७४-७८१
 अपोदकाः ५, १३, ६; ८३९
 अप्सुजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०
 अलीकाः ५, १३, ६; ८३९
 असिकन्या दासी ५, १३, ८; ८४१

असितं-ताः १०, ४, ५, १३; ८१२, ८२० । ५, १३, ५-६;
 ८३८-८३९
 अहिः-हयः १०, ४, ६, ८-९, १६-१७, १९-२१, २६;
 ८१३, ८१५-१६, ८२३-२४, ८२६-२८, ८३३ । ७,
 ८८, १; ८४५ । ६, ५६, १; ८४९
 आलिंगी ५, १३, ७; ८४०
 उपतृण्यः ५, १३, ५; ८३८
 उरगूलायाः दुहिता ५, १३, ८; ९४१
 ओषधिः ४, ६, ८; ७९७
 ओषधिजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०

ओषधीषु विषम् १०,४,२२; ८२२
 कंकतः ऋ. १,१९१,१; ७७४
 कंकपर्व ७,५६,१; ८५२
 कनककम् १०,४,२२; ८२९
 कर्णा ५,१३,९; ८४२
 कसर्णालम् १०,४,५,१७; ८१२,८२४
 कान्दाविषम् १०,४,२२; ८२९
 कुशरासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 कंरातः ५,१३,५; ८३८
 खनित्रिमाः ५,१३,९; ८४२
 गिरिः यतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
 तिरश्चिराजिः १०,४,१३,१७,२०; ८२०,८२४,८२७
 तृप्रदंशी अर्भः ७,५६,३; ८५४
 तैमातः ५,१३,६; ८३९
 दद्रुषी ५,१३,८; ८४१
 दर्भासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 दर्वाः १०,४,१३; ८२०
 दशोनसिः १०,४,१७; ८२४
 न कङ्कतः ऋ. १,१९१,१; ७७४
 पर्वतः यतः विषं जातम् ४,६,८; ७९७
 पृथिव्यां यद् विषम् १०,४,२२; ८२९
 पृदाकुः १०,४,११,१३,१७,२०; ८१८,८२०,८२४,
 ८२७ । ७,५६,१; ८५२
 पृदाकम् १०,४,५,१७; ८१२,८२४
 पृश्नः ५,१३,५; ८३८

प्रकंकता ऋ. १,१९१,७; ७८०
 बभ्रुः ५,१३,५-६; ८३८-३९ । ६,५६,२; ८५०
 बैरिणाः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 मदावली ४,७,४; ८०१
 मन्थुः ५,१३,६; ८३९
 मशकः तृप्रदंशी ७,५६,३; ८५४
 मौज्जाः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 यातुधान्यः ऋ. १,१९१,८; ७८१
 रथर्वी १०,४,५; ८१२
 विद्युतः जाताः सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 विलिगी ५,१३,७; ८४०
 वृश्चिकः ऋ. १,१९१,१६; ७८५ । १०,४,९,१५;
 ८१६,८२२
 शरासः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 शर्कोटः ७,५६,५,७; ८५६,८५८
 श्वावित् ५,१३,९; ८४२
 श्वित्रम् १०,४,५,१३; ८१२,८२०
 सतीनकंकतः ऋ. १,१९१,१; ८७४
 सर्पाः १०,४,२३; ८३०
 सात्रासाहः ५,१३,६; ८३९
 सूर्ये यद् विषम् १०,४,२२; ८२९
 धैर्याः ऋ. १,१९१,३; ७७६
 खजः १०,४,१०; ८१७
 सूचीकाः ऋ. १,१९१,७; ७८०

(२) गुणबोधक-पदसहिता विषनाशका देवता ओषधयश्च ।

अग्निः (देवता) १०,४,२६; ८३३
 अप्रुवः ऋ. १,१९१,१४; ७८७ .
 अदृष्टहा (सूर्यवि.) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 अरंघुषः १०,४,४; ८११
 अवघ्नती (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
 अश्वस्य वारः १०,४,२; ८०९
 आदित्यः ऋ. १,१९१,९; ७८२
 आयती (ओषधिवि.) ऋ. १,१९१,२; ७७५
 २७ दै. [आयुर्वेद०]

इन्द्रः १०,४,१०,१२,१६-१८, ८१७, ८१९, ८२३-२५
 उदकं धन्वनि ६,१००,२; ८०६
 ओषधिः अगुराणां द्रुहिता ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः देवानां स्वसा ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः दिवः पृथिव्याः सम्भृता ६,१००,३; ८०७
 ओषधिः अवघ्नती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः आयती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः परायती ऋ. १,१९१,२; ७७५
 ओषधिः पिषती ऋ. १,१९१,२; ७७५

करम्भः ४,७,२-३; ७९९-८००
 गहत्मान् ४,६,३; ७९२
 कुष्ठम्भकः ऋ. १,१९१,१६; ७८९
 गिरयः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
 घृताची नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
 तरुणकम् १०,४,२; ८०९
 तस्तुवम् ५,१३,११; ८४४
 तावुवम् ५,१३,१०; ८४३
 तौदी नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१
 दर्भः १०,४,२; ८०९
 दशशीर्षः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
 दशास्यः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०
 देवजनाः ६,५६,२; ८५०
 देवाः ६,१००,१; ८०५
 द्यौः ६,१००,१; ८०५
 धन्वनि उदकम् ६,१००,२; ८०६
 नद्यः (तासां मधु) ६,१२,३; ८४८
 परुष्णी (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८
 पर्जन्यः १०,४,१६; ८२३
 पर्वताः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८
 पीबस्पाकः तिर्यः उदारधिः ४,७,३; ८००
 पुरुषस्य वारः १०,४,२; ८०९
 पैद्वः १०,४,५-७,१०-११; ८१२-१४, ८१७-१८
 ब्रह्मणस्पतिः ७,५६,४; ८५५
 ब्राह्मणः (दशशीर्षः दशास्यः) ४,६,१; ७९०
 मधु (नद्यः पर्वताः गिरयः एतेषां) ६,१२,३; ८४८
 मधुला (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३

मशकजम्भनी (वीरुत्) ७,५६,२; ८५३
 मयूर्यः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१४; ७८७
 मित्रः १०,४,१६; ८२३
 गेपुण्यः नव नवत्यः ऋ. १,१९१,१३; ७८६
 वचस् (ओषधिः) ४,७,४-५; ८०१-२
 वरणावत्यां अधि (ओषधिः) ४,७,१; ७९८
 वरुणः १०,४,१६; ८२३
 वातः १०,४,१६; ८२३
 विश्वदृष्टः (सूर्यः) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 विष्णुलिङ्गाः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१२; ७८५
 वीरुत् ७,५६,१; ८५२
 वीरुत् मधुजाता ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधुला ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधुश्चुत् ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मधूः ७,५६,२; ८५३
 वीरुत् मशकजम्भनी ७,५६,२; ८५३
 शकुन्तिका इयत्तिका ऋ. १,१९१,११; ७८४
 शोचिः १०,४,२; ८०९
 श्वेतः (ओषधिः) १०,४,३; ८१०
 शीपाला (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८
 सरस्वतीः तिलः ६,१००,१; ८०५
 सिन्धवः १०,४,२०; ८२७
 सुपर्णः (गहत्मान्) ४,६,३; ७९२
 सूर्यः ६,१००,१; ८०५। ऋ. १,१९१,१०; ७८३
 सूर्यः अदृष्टहा विश्वदृष्टः ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२
 सोमः १०,४,२६; ८३३
 स्वसारः सप्त (अमुवः) ऋ. १,१९१,१४; ७८७

मणिधारणम् ।

अस्तुतादि-मणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

(१) अस्तुतमणिः । १२,४६,१-७; १५७२-१५७८
 असपत्नः ७, १५७८
 ऊर्जस्वान् ६; १५७७
 घृतात् उल्लुप्तः ६; १५७७
 पयस्वान् ६; १५७७

मधुमान् ६; १५७७
 मयोभूः ६; १५७७
 वयोधाः ६, १५७७
 वशी सजातानाम् ७; १५७८
 शतयोनिः ६; १५७७

सम्भूः ६; १५७८

सपत्नहा ७; १५७८

सहस्रप्राणः ६; १५७७

(२) औदुम्बरमणिः । १९, ३१, १-१४; १५३७-५०

अधिपाः मणीनाम् ११; १५४७

गृहमेधी १३; १५४९

ग्रामणीः १२; १५४८

तेजः १२; १५४८

देवः ८; १५४४

धनसाः ८; १५४४

पुष्टपतिः ६; १५४२

पुष्टिः १३; १५४९

रविः १२; १५४८

वनस्पतिः ९; १५४५

वीरः १४; १५५०

वृषा ३, ११; १५३८, १५४६

सपत्नहा ८; १५४४

(३) जङ्घिडमणिः । २, ४, १-६; ६६-७१ । १९,

३४, १-१०; ३५, १-५; १५५१-६५

अंगिराः ३४, ६; १५५६

अमितवीर्यः ३४, ८; १५५८

अरातिदूषणः ३४, ४; १५५४

अरातिदूषिः २, ४, ६; ७१

अर तिहा ३५, २; १५६२

आश्रुतः अरण्यात् २, ४, ५; ७०

उग्रः ३४, ७; १५५७

उपदानः ३४, ८; १५५८

ओजः ३४, ५; १५५५

ओषधिः ३४, ९; १५५९

कृत्यादूषणः ३४, ४; १५५४

कृत्यादूषिः २, ४, ६; ७१

कृष्याः रसेभ्यः २, ४, ५; ७०

देवैः दत्तः २, ४, ४; ६९

परिपाणः ३४, ७; १५५७ । ३५, २-३; १५६२-६३

भगवान् ३४, ८; १५५८

भूम्यां अधि निष्ठितः ३४, ६; १५५६

मेघजम् ३५, १; १५६१

मयोभूः २, ४, ४; ६९

वनस्पतिः ३४, ९; १५५९

विश्वमेघजः २, ४, ३; ६८ । १९, ३५, ५; १५६५

विष्कन्धदूषणः २, ४, १; ६६ । १९, ३५, १; १५६१

सहस्रचक्षुः १९, ३५, ३; १५६३

सहस्रवीर्यः २, ४, २; ६७

सहस्वान् २, ४, ६; ७१ । १९, ३४, ४; १५५४

सुमङ्गलः १९, ३४, ७; १५५७

(४) दर्भमणिः । १९, २८, १-१०; २९, १-९;

३०, १-५; १५१३-३६

अभितपन् धर्मः इव २८, ३; १५१५

इन्द्रस्य वर्म ३०, ३; १५३४

क्षत्रस्य वर्धनः ३०, ४; १५३५

दुर्हार्दः सन्तापयन् २८, २; १५१४

देववर्म ३०, ३; १५३४

द्विषतः नितपन् २८, ३; १५१५

द्विषतः हृदः तपनः २८, १-२; १५१३-१४

ब्रह्मणस्पतिः ३०, ३; १५३४

वर्माणि ते शतम् ३०, २; १५३३

वीर्याणि ते सहस्रम् ३०, २; १५३३

शत्रूणां मनः तापयन् २८, २; १५१४

सपत्नक्षयणः ३०, ४; १५३५

सपत्नदम्भनः २८, १; १५१३

यक्षादि-प्रकरणे ' दर्भः ' देवता-गुणबोधकपदानि ।

१९, ३३, १-१०; १९२३-३२ । ३३, १-५; १९३३-३७

अच्युतः ३३, २; १९३४

अपां अभिः ३३, १; १९३३

उग्रः ३२, १; १९२३

उत्तिरः ३२, १; १९२३

उर्ध्वं बलम् ३३, ४; १९३६

ओजः देवानाम् ३३, ४; १९३६

ओषधिः ३२, १, ३; १९२३, १९२५

ओषधीनां प्रथमः ३२, १०; १९३२

घृतात् उरुल्लसः ३३, २; १९३४

च्यावयिष्णुः ३३, २; १९३४

तीक्ष्णः १९,३३,४; १९३६
 दिवि तूलं ते ३२,३; १९२५
 दिविष्टम्भः ३२,७; १९२९
 दुःख्यवनः ३२,१; १९२३
 देवजातः ३२,७; १९२९
 जुदन् सपत्नान् ३३,२; १९३४
 पयस्वान् ३३,१-२; १९३३-३४
 पवित्रः ३३,३; १९३५
 पृथिव्यां निष्ठितः ३२,३; १९२५
 भूमिदंढः ३३,२; १९३४
 मधुमान् ३३,२; १९३४
 रक्षोहा ३३,४; १९३६
 राजा ३३,४; १९३६
 विश्वचर्षणिः ३३,४; १९३६
 विषासहिः ३३,४; १९३६
 वीर्या राजसूयः ३३,१; १९३३
 शतकाण्डः १९,३२,१,१०; १९२३, १९३२ । ३३,१;
 १९३३

सपत्नहा ३२,१०; १९३२
 सहमानः ३२,५; १९२७
 सहस्रकाण्डः ३२,३; १९२५
 सहस्रपर्णः ३२,१; १९२३
 सहस्रार्धः ३३,१; १९३३

(५) प्रतिसरमणिः । ८,५,१-२२; १४३१-५२

अनङ्गान् जगतामिव ११; १४४१
 अग्रः २; १४३२
 उत्तमः ओषधीनाम् ११; १४४१
 ओजस्वान् ४,१६; १४३४, १४४३
 ओषधीनां उत्तमः ११; १४४१
 तनूपानः २०; १४५०
 त्रिवरुथः २०; १४५०
 देवमणिः २०; १४५०
 नृमणः २१; १४५१
 परिपाणः १,१६; १४३१, १४४६
 प्रतिवरः (मणिः) १,४; १४३१, १४३४
 प्रतीवर्तः ४,१६; १४३४, १४४६

मणिः १,४,७,८,२२; १४३१, १४३४, १४३७-३८;
 १४५२

मेधिः २०; १४५०
 वक्षी ४,७; १४३४, १४३७
 वाजी २, १४३२
 विमृधः ४; १४३४
 वीरः १-२; १४३१-३२
 वीर्यवान् १; १४३१
 व्याघ्रः श्वपदा इव ११; १४४१
 शूरवीरः १; १४३१
 सज्जयः १६; १४४६
 सपत्नहा १-२; १४३१-३२
 सहमानः २; १४३२
 सहस्रवीर्यः १४; १४४४
 सहस्वान् २; १४३२
 सुमंगलः १,१६; १४३१, १४४६
 सुवीरः २; १४३२

साकत्यः ४,७-८; १४३४, १४३७-३८

(६) फालमणिः । १०,६,१-३५; १४७८-१५१२

अभिभूः २९; १५०६
 असपत्नः ३०; १५०७
 असुरक्षितिः २२-२८; १४९२-१५०५
 उग्रः ६-१०; १४८३-८७
 क्षत्रवर्धनः २९; १५०६
 खदिरः ६-१०; १४८३-८७
 घृतद्रुतः ६-७; १४८३-८४
 देवजाः ३१; १५०८
 प्रजापतिसृष्टः १९; १४९३
 यज्ञवर्धनः ३४; १५११
 शतदाक्षिणः ३४; १५११
 शंभुवः १५,१७; १४९७, १४९४
 सपत्नहन्मनः १९; १५०६
 सपत्नहा ३०; १५०७
 हिरण्यस्रक् ४; १४८१

(७) वरणमणिः । १०,३,१-२५; १४५३-७७

देवः ५,८,११; १४५७, १४६०, १४६३

पुरेता २; १४५४
मणिः २; १४५४
वनस्पतिः ५, ८, ११; १४५७, १४६०, १४६३
विश्वभेषजः ३; १४५५
वृषा १; १४५३
सपत्नक्षयणः १; १४५३
सहस्राक्षः ३; १४५५
हरितः ३; १४५५
हिरण्यः ३; १४५५

(८) शङ्खमणिः । ४, १०, १-७ १४२४-३०

आयुष्प्रतरणः ४; १४२७
कार्शनः ७; १४३०
कृषानः १, ३; १४२४, १४२६
जातः अन्तरिक्षात् १; १४२४
जातः दिवि ४; १४२७
जातः वातात् १; १४२४
जातः विद्युतः १; १४२४
जानः वृत्रात् ५; १४२८

जातः समुद्रात् ५; १४२८
ज्योतिषःपरि १; १४२४
दर्शतः ६; १४२९
दिवाकरः ५; १४२८
पर्याभूतः सिन्धुतः ४; १४२७
मणिः ४; १४२७
रोचनः ६; १४२९
विश्वभेषजः ३; १४२६
कांखः १-४ १४२४-२७
समुद्रजः ४; १४२७
हिरण्यजाः १, ४; १४२४, १४२७
हिरण्यानां एकः ६; १४२९

(९) शतवारमणिः । १९, ३६, १-६; १५६६-७१
ऋषभः ५; १५७०
दुर्गामचातनः १; १५६६
दुर्गामहा ३; १५६८
शातवारः मणिः ५; १५७०
हिरण्यशृंगः ५; १५७०

यज्ञादिकम् ।

(१) यम-देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनुपस्पृशानः बहुभ्यः पन्थाम् ऋ. १०, १४, १; १९६८।
अ. १८, १, ४९; २०१५। ६, २८, ३; १५८४
ईशे वः द्विपदः चतुष्पदः ६, २८, ३; १५८४
उशान् ऋ. १०, १५, ८; १९९४
कविः १८, ३, ६३; २१४१
चिकित्वान् १८, २, ३७; २०६१
छन्दांसि आहिताः यस्मिन् ऋ. १०, १४, १६; १९७९
जनानां संगमनः ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९;
२०१५। १८, ३, १३; २०९६
नाभिः अप्सु गन्धर्वः आया च योषा यस्य ऋ. १०, १०, ४;
१९५७
परेयिवान् ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९; २०१५
पिता ऋ. १०, १३, १; १९८०

पिता विवस्वान् यस्य ऋ. १०, १४, ५; १९७९
पितृमान् १८, ४, ७४; २२२४
प्रथमः ऋ. १०, १४, २; १९६९। अ. ६, २८, ३; १५८४
प्रेयाय यः प्रथमः लोकमेतम् १८, ३, १३; २०९६
मदन् स्वधया ऋ. १०, १४, ७; १९७३। अ. १८, १, ५४;
२०१९
ममार य प्रथमः मर्त्यानाम् १८, ३, १३; २०९६
मृत्युः ६, २८, ३; १५८४
यमः ६, २७-२९, १-३; १५७९-१५८७। ऋ. १०,
१०, १-१४; १४, १-५, ७, ९, १३-१६; १३५, १-७;
१९५४-८६। २००१, २२३९ मंत्रेषु बहुषु स्थलेषु।
यमी (यमस्य भगिनी) ऋ. १०, १०, ९; १९६९

राजा ऋ. १०, १४, १, ४, ७, ११; १९६८, १९७१, १९७३,
१९७८ । अ. १८, १, ४९; २०१५ । अ. १८, १, ६०;
२०२३ । १८, २, १२; २०३६ । १८, ३, १३;
२०९६

विवस्वान् पिता यस्य ऋ. १०, १४, ५; १९७२

विष्पतिः ऋ. १०, १३५, १; १९८०

वैवस्वतः ऋ. १०, १४, १; १९६८ । अ. १८, १, ४९;
२०१५ । १८, ३, १३; २०९६
संराणः हवीषि ऋ. १०, १५, ८; १९९४ । अ. १८,
३, ४६; २१२९

संगमनः जनानाम् 'जनानां संगमनः' द्रष्टव्यम् ।

स्वधया मदन् 'मदन् स्वधया' द्रष्टव्यम् ।

(२) पितर-देवताया गुणबोधकपदानि ।

अग्निदग्धाः ऋ. १०, १५, १४; २००० । अ. १८, २,
३५; २०५९

अग्निष्वात्ताः ऋ. १०, १५, ११; १९९७ । अ. १८, ३,
४४; २१२७

अंगिरसः ऋ. १०, १४, ३-५; १९७०-७२ । अ. १८,
१, ५८-६१; २०२१-२४

अथर्वानः १८, १, ५८; २०२१

अनग्निदग्धाः ऋ. १०, १५, १४; २००० । अ. १८, २, ३५;
२०५९

अनावृष्ट्याः तपसा १८, २, १६; २०४०

अन्तरिक्षसदः १८, ४, ७९; २२२९

अपरासः १८, १, ४६; २०१२

अर्वाणः १८, ३, १२; २१०२

अवरे ऋ. १०, १५, १; १९८७ । अ. १८, १, ४४; २०१०

अवृकाः ऋ. १०, १५, १; १९८७ । अ. १८, १, ४४; २०१०

असुंये ईयुः ऋ. १०, १५, १; १९८७ । अ. १८, १, ४४; २०१०

आसीनासः अरुणीनां उपस्थे ऋ. १०, १५, ७; १९९३ ।

अ. १८, ३, ४३; २१२६

उक्थशासः १८, ३, २१; २१०४

उद्धिताः १८, २, ३४; २०५८

उपरासः ऋ. १०, १५, २; १९८८

उपहृताः ऋ. १०, १५, ५; १९९१

ऋतं आशशानाः १८, ३, २१; २१०४

ऋतजाताः १८, २, १५; २०३९

ऋतज्ञाः ऋ. १०, १५, १; १९८७ । अ. १८, १, ४४;
२०१०

ऋतसानाः १८, २, १५; २०३९

ऋतावृधः १८, २, १५; २०३९

कवयः १८, ३, १९, ४७; २१०२, २१३०

कव्याः ऋ. १०, १५, ९; १९९५

धर्मसदः ऋ. १०, १५, ९-१०; १९९५-९६ । अ. १८, ३,
४७-४८; २१३०-३१

जैहमानाः ऋ. १०, १५, ९; १९९५ । अ. १८, ३, ४७;
२१३०

तपस्वन्तः १८, २, १५; २०३९

तपोजाः १८, २, १५; २०३९

दग्धाः १८, २, ३४; २०५८

देवत्राः ऋ. १०, १५, ९; १९९५ । अ. १८, ३, ४७; २१३०

देववन्दाः ऋ. १०, १५, १०; १९९६

धुमन्तः १८, १, ५७; २०२०

नवग्वाः १८, १, ५८; २०२१

निष्वाताः १८, २, ३४; २०५८

पराः-रासः ऋ. १०, १५, १, १०; १९८७, १९९६ ।

अ. १८, १, ४४; २०१० । १८, ३, २१; २१०४

परोप्ताः १८, २, ३४; २०५८

पार्थिवे रजसि आ निपत्ताः ऋ. १०, १५, २; १९८८

पूर्वे-वसः ऋ. १०, १५, २, ८, १०; १९८८, १९९४,
१९९६ । अ. १८, १, ४६; २०१२

पितरः पितृदेवतमंत्रेषु सर्वत्र ।

प्रनासः १८, ३, २१; २१०४

वर्हिषदः ऋ. १०, १५, ३-४; १९८९-९० । अ. १८, १,
४५, ५१; २०११, २०१६

भूर्जयः १८, १, ६१; २०२४

भृगवः १८, १, ५८; २०२१

मध्यमाः ऋ. १०, १५, १; १९८७ । अ. १८, १, ४४;
२०१०

मध्ये । दवः स्वधया मादयन्तः ऋ. १०, १५, १४; २०००
अ. १८, २, ३५, २०५९
यज्ञियाः ऋ. १०, १४, ५; १९७२ । अ. १८, १, ५८-५९;
२०२१-२२
यमराजानः १८, २, २५, ४६; २०४९, २०७०
वसिष्ठाः १८, ३, ४६; २१२९
विश्वे ऋ. १०, १५, ६; १९९२
वैरूपाः ऋ. १०, १४, ५; १९७२ । अ. १८, १, ५९; २०२२
सत्याः-त्यासः ऋ. १०, १५, ९-१०; १९९५-९६
अ. १८, ३, ४७-४८; २१३०-३१
सदःसदः ऋ. १०, १५, ११; १९९७ । अ. १८, ३, ४४;
२१२७
सनीडाः १८, २, २६; २०५०
सर्थं दधानाः इन्द्रेण देवैः ऋ. १०, १५, १०; १९९६
सुप्रजसः १८, ४, ६३; २२१३
सुप्रणीतयः ऋ. १०, १५, ११; १९९७ । अ. १८, ३, ४४;
२१२७

सुविदत्राः ऋ. १०, १५, ३, ९; १९८९, १९९५ । अ. १८, १,
४५; २०११ । १८, ३, १९, ४८; २१०२, २१३१
सुवीराः १८, ४, ६३; २२१३
सुवृजनासु विश्व (वर्तमानाः) ऋ. १०, १५, २; १९८८
सुसंशासः १८, ३, १६; २०९९
सोमवन्तः १८, ४, ७३; २२२३
सोम्यासः ऋ. १०, १५, १, ५, ८; १९८७, १९९१, १९९४ ।
३, १८, १, ४४, ५८; २०१०, २०२१ । १८, ३, ४५; २१२८
स्तोमतासः ऋ. १०, १५, २; १९९५ । अ. १८, ३, ४७;
२१३०
हविर्दः ऋ. १०, १५, १०; १९९६ । अ. १८, ३, ४८;
२१३१
हविष्ठाः ऋ. १०, १५, १०; १९९६ । अ. १८, ३, ४८;
२१३१
होत्राविदः ऋ. १०, १५, ९; १९९५ । अ. १८, ३, ४७;
२१३०

(३) पृथिवी ' भूमिः वा ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

ऋ. १०, १८, ७-१४ (१९४६-१९५३)
उच्छ्रवन्माना १२; १९५१
उरुव्यचाः १०; १९४९ । १८, ३, ४९; २१३२
ऊर्णत्रदा १०; १९४९ । १८, ३, ४९; २१३२
पृथिवी १०-१३; १९४९-५२ । १८, ३, ४९; २१३२
भूमिः १०-११; १९४९-५० । १८, ३, ४९; २१३२
माता १०; १९४९ । १८, ३, ४९; २१३२

युवतिः १०; १९४९
विश्वभोजस् अ. १८, ४, ६; ७१५६
लोगः १३; १९५२
सुशेवाः १०; १९४९ । १८, ३, ४९; २१३२
सुपवन्माना ११; १९५०
सूपायना ११; १९५०
स्थणा १३; १९५२ । अ. १८, ३, ५२; २१३३

दीर्घायुष्य-उपप्रकरणे देवतानामानि ।

(१) देवतानामानि ।

अमयः ८, १, ११; १६
अग्निः अथर्व. २, २८, ५; ५ । ३, ११, ४; ७५ । ६, ११०,
१-३; ८५-८७ । ६, ४७, १; ८८ । २, २९, १; ९१ ।
५, ३०, ११-१२, १४; १०८-१०९, १११ । १९, ६४,
१-४; ११५-११८ । ५, २८, २, ४-५; १२८, १३०-
१३१ । ७, ३३, १; १४२ । ७, ५३, २-४, ६; १४४-
१४६, १४८ । २, १३, १; २३३१
अग्निः जातवेदाः ८, १, १३; ३९ । ८, १, ११; १६ । २,
२९, २; ९२
अग्निः वैश्वानरः ८, १, ११; १६

अग्निः सान्तपनः ६, ७६, १-४; १५०-५३
अदितिः २, २८, ५; ५
अन्तरिक्षम् ८, १, १२; १७ । ५, २८, २; १२८
अर्जुनम् ५, २८, ५; १३१
अर्यमा ५, २८, २२; १३८
अश्विनौ २, २९, ६; ९६ । ७, ५३, १; १४३
अश्वप्रः ८, १, १३; १८ । ५, ३०, १०; १०७
आदित्याः ८, १, १६; २१ । १, ३०, १; ५५ । ५, २८,
४; १३०
आदित्यौ ८, २, १५; ४१

आपः ८,१,५; १०। ५,२८,२; १२८
 आपः दिव्याः पयस्वतीः ८,२,१४; ४०
 आपः पयस्वतीः २,२९,५; ९५
 आयुः २,२८,१,३; १,३। ८,१,१-२१; ६-२६। ८,
 २,१-२८; २७-५४। ७,३२,१; १४१। ७,५३,१-७;
 १४३-४९
 आयुर्वर्धनम् १९,६३,१; १५४। वा. य. ३४,५०-५२;
 २३२८-३०
 आयुष्यम् ३,११,१-८; ७२-७९। ५,३०,१-१७; ९८-
 ११४। ६,७६,१-४; १५०-१५३। ५,२८,१-१४;
 १२७-४०। ७,३३,१; १४२। २,१३,४,५; २३३४
 बीर्वायुस्त्वम् अ. १९,६४,१-४; १११-१८। १९,६७,
 १-८; ११९-२६। ५,२८,१-१४; १२७-४०। ७,३३,
 १; १४२। २,१३,४-५; २३३४-३५। वा. य. १२,
 १००; २३२७
 सर्वमायुः १९,६१,१; १५५। १९,७०,१; १५६
 इन्द्रः ८,१,१५; २०। ३,११,३-४; ७४-७५। ६,४७,
 २; ८९। २,२९,३-४,७; ९३-९४,९७। ५,२८,४;
 १३०। १९,७०,१; १५६
 इन्द्राग्नी ८,१,२,१६; ७,२१। ८,२,२१; ४७। १,
 ३५,४; ६२। ३,११,१-८; ७२-७९
 ऋतवः आर्तेवाः ५,२८,२,१३; १२८,१३९
 ऋषयः दैव्याः ६,४१,३; ६५ अमर्याः तन्वः तनूजाः
 तनूपाः।
 ऋषयः सप्त ७,५३,४; १४६
 ओषधी-धयः ८,२,६,१५; ३२,४१
 गोपायन् ८,१,१३; १८
 चन्द्रमाः ८,१,१२; १७। ६,४१,१; ६३। ५,२८,२;
 १२८
 अग्निः मणिः २,४,१-६; ६६-७१
 जरिमा २,२८,१,३; १,३
 जाग्रुविः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
 त्रिवृत् ५,२८,१-१४; १२७-४०
 त्रिवृत् आयुः ५,२८,७; १३३
 त्रिवृत् देवपुराः ५,२८,९-१०; १३५-३६
 त्रिवृत् पोषाः भूमा वा ५,२८,३; १२९
 त्रिवृत् प्राणाः ५,२८,१; १२७

त्रिवृत् सुपर्णाः ५,२८,८; १३४
 त्रिवृत् हिरण्यम् ५,२८,६; १३२
 त्वष्टा २,२९,२; ९२
 दशशृङ्गः २,९,१; ८०
 दाक्षायणाः १,३५,१; ५९
 दाक्षायणं हिरण्यम् १,३५,२; ६०। वा. य. ३४,५०-
 ५२; २३२८-२३३०
 दिशः ५,२८,२; १२८
 देवाः ८,१,१८; २३। ८,२,२७; ५३। १,३०,२,४;
 ५६-५८ (अहुतादः सत्रसदः हुतभागाः)। २,२९,१;
 ९१। १९-७०,१; १५६
 द्यौः १,१२,१७; १७,२२
 द्यावापृथिवी २,२८,४; ४। ८,२,१४; ४० (अभिध्रियौ
 अघ्नन्तापि ध्रिये)। २,२९,४-५; २४-२५ (ऊर्जस्वती
 पयस्वती)।
 धाता ८,१,१५; २०
 पितरः ५,३०,१२; १०९
 पूषा ५,२८,३,१२; १२९,१३८। ७,३२,१; १४२
 पृथिवी ८,१,१२; १७
 प्रजापतिः ८,१,१७; २२
 प्रतीबोधः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
 प्रदिशः ५,२८,२; १२८
 वृहस्पतिः ३,११,४,८; ७५,७९। २,२९,१; ९१। ५,
 २८,१२; १३८। ७,३३,१; १४२। ७,५३,१; १४३।
 २,१३,२-६; २३३२-३३
 बोधः ८,१,१३; १८। ५,३०,१०; १०७
 ब्रह्मणस्पतिः १९,६३,१; १५४। ६१,१; १५५
 भगः ८,१,२; ७
 भवाणवौ ८,२,७; ३३
 भूमिः ५,२८,२,५; १२८,१३१
 मरुतः ८,१,२; ७। ६,१७,२, ८९। २,२३,४-५;
 २४-२५। ७,३३,१; १४२
 मातरिश्वा वातः ८,१,५; १०। ८,२,३,१४; २९,४०
 मित्रः २,२८,१; १
 मित्रावरुणौ २,२८,२,५; २,५ रिशादा संविदानौ।
 मृत्युः ८,१,१,६; ६,१०। ५,३०,१२; १०९
 यक्ष्मनाश्चानम् ३,११,१-८; ७२-७९। २,९,१-५; ८०-८४

यमः ५,३०,१२; १०९। ७,५३,१; १४३
 राणः ८,१,१३; १८
 वनस्पतिः २,९,१-५; ८०-८४
 वरुणः २,२९,४; ९४
 वसवः ८,१,१६; २१। १,३०,१; ५५
 वायुः ८,१,१५; २०
 विश्वे देवाः २,२८,५; ५। ८,१,७; १२। ८,२,२१; ४७।
 १,३५,४; ६२ (अह्णीयमानाः) । १,३०,१-४;
 ५५-५८। २,९,४; ८३। ६,४७,२; ८९। २,२९,५;
 ९५। २,१३,४-५; २३३४-२३३५
 शणः २,४,५; ७०
 शबलः ८,१,९; १४
 श्यामः ८,१,९; १४

सरस्वती ६,४१,२; ६४
 सविता ८,१,१५; २०। ३,११,४; ७५। २,२९,२; ९२
 सूर्यः ८,१,५,१२; १०,१७। ८,२,३,१४; २९,४०।
 २,२९,१; ९१। ५,३०,११; १०८। ५,३०,१५;
 ११२ (अधिपतिः) । १९,६७,१-८; ११९-१२६। ५,
 २८,२; १२८। ७,५३,७; १४९। १९,७,१; १५६
 सूर्याचन्द्रमसौ ८,२,१५; ४१
 सोमः ८,१,२; ७। ७,३२,१; १४१। २,१३,२; २३३३
 सोमराज्ञी ८,१,१७; २२
 सौधन्वनाः ६,४७,३; ९० स्वर आनशानाः ।
 सुधन्वा ६,४७,३; ९०
 हिरण्यम् १,३५,१४; ५९-६२

(२) अग्निदेवता-गुणबोधकपदानि ।

अन्तः अष्टु ८,१,११,१६
 आयुर्दा २,१३,१; २३३१
 इन्द्रः १९,६४,४; ११८
 ईश्वरः ६,११०,१; ८५
 पृतपृष्ठः २,१३,१; २३३१
 घृतप्रतीकः २,१३,१; २३३१
 जरसं वृणानः २,१३,१; २३३१
 जातवेदाः १९,६४,२-२; ११५-११६
 नव्यः ६,११०,१; ८५
 पावकः ६,४७,१; ८८
 प्रतनः ६,११०,१; ८५
 यविष्ठषः १२,६४,३; ११७
 विद्वान् वयुनानि २,२८,२; २
 विश्वकृत् ६,४७,१; ८८
 विश्वशंभूः ६,४७,१; ८८

वैश्वानरः ६,४७,१; ८८
 सनात् ६,११०,१; ८५
 संप्रेक्षः ६,७६,१; १५०
 सान्तपनः ६,७६,१-४; १५० १५३
 होता २,२८,२; २। ६,११०,१; ८५

जंगिडमणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

अरातिदूषिः २,४,६; ७१
 कृत्यादूषिः २,४,६; ७१
 देवैः दत्तः २,४,४; ६९
 मयोभूः २,४,४; ६९
 विश्वभेषजः २,४,३; ६८
 विष्कन्धदूषणः २,४,१; ६६
 सहस्रवीर्यः २,४,२; ६७
 सहस्वान् २,४,६; ७१

(३) ' दीर्घायुष्यम् ' पर्यायशब्दाः ।

अमृतत्वम् १९,६४,४; ११८
 आयुः १९,६४,४; ११८
 आयुः दीर्घम् १,३५,२; ६०। ७,३२,१; १४१ ।
 ३३,१; १४२। वा. य. ३४,५१; २३२९। २,१३;
 २; २३३२
 २८ वै. [आयुर्वेद०]

दीर्घायुत्वम् १,३५,१; ५९। ६,११०,२; ८६। ५,२८,
 १; १२७। वा. य. १२,१००; २३२७
 ब्राह्मीयः आयुः ८,२,२; २८
 जरदष्टिः २,२८,५; ५। ८,२,१; २७। ५,३०,५,८;
 १०२,१०५। वा. य. ३४,५१; २३३०

जरसं आयुः १,३०,३; ५७
 जरसे बह्व ७,५३,४; १४६
 जरामृत्युः २,२८,२,४; २,४
 शतशारदम् ८,२,२; २८। १,३५,१; ५९। ३,११,२;
 ७३। ६,११०,२; ८६। ५,२८,१; १२५। वा. य.
 ३४,५२; २३३०
 शतहायनम् ८,२,८; ३४

शतं शारदः ३,११,४; ७५। २,२२,२; ९२। १९,
 ६७,१-८; ११९-१२६। ७,५३,२; १४४
 शतं वसन्ताः ३,११,४; ७५
 शतं हेमन्ताः ३,११,४; ७५
 शतं हिमाः २,२८,४; ४
 शतं अयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि ८,२,२१; ४७
 सर्वे आयुः १९,६१,१; १५५। १९,७०,१; १५६

(४) दीर्घायुत्वे परिहरणीयम् ।

अंहः २,२८,१; १। २,४,३; ६८
 अंगज्वरः ५,३०,९; १०६
 अंगभेदः ५,३०,९; १०६
 अज्ञातयक्ष्मः ३,११,१; ७२
 अभिशोस्तः ७,५३,१; १४३
 अमिश्रोत्वनम् २,४,२; ६७
 प्राहिः ३,११,१; ७२
 जम्भः २,४,२; ६७

मृत्युः ७,५३,१; १४३
 मृत्यवः शतम् २,२८,१; १
 यक्ष्मः ५,३०,९; १०६
 राजयक्ष्मः ३,११,१; ७२
 विशरः २,४,२; ६७
 विष्कन्धः २,४,२,५; ६७,७०
 हृदयामयः ५,३०,९; १०६

(५) ओषधयः, तासां विकाराः, गुणबोधकपदानि च ।

ओषधिः वा. य. १२,१००; २३२७
 जंगिहः मणिः २,७,१-६; ६६-७१
 जीवन्ती ८,२,६; ३२
 जीवला ८,२,६; ३२
 त्रायमाणा ८,२,६; ३२
 दशवृक्षः २,९,१; ८०
 नवारिषा ८,२,६,३२

पुत्रदुः नाम भेषजम् ८,२,२८; ५४
 वनस्पतिः २,९,१; ८०
 वीरुधः ८,७,२; ३२५
 शतवल्शा वा. य. १२,१००; २३२७
 सर्वहा ८,२,७; ३२
 सहमाना ८,२,६; ३२
 सहस्वती ८,२,६; ३२

जलचिकित्सा ।

(१) आपः [उदकम्] गुणबोधकपदानि ।

अपेगुवः वा. य. १,१२; २३७
 अभेपुवः वा. य. १,१२; ९३७
 अध्व्याः वा. य. १०,१८; ११०३
 अध्वरीयतां अम्बयः ऋ. १,२३,१६; ६३

अध्वरीयतां जामयः ऋ. १,२३,१६; ८६३
 अध्वर्युमिः मनसा संविदानाः ऋ. १०,३०,१३; ९१३
 अनञ्जयः अ. १९,२,३; ९३०
 अनमीबाः वा. य. ४,१२; ९४४

अनागसः वा. य. ४, १२; ९४४
 अनाष्टः वा. य. १०, ४; १०९६
 अनिष्टम् वा. य. १०, ६; १०९७
 अनिविशमानाः अ. ७, ४९, १; ८७५
 अनूपाः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४; ९६४
 अन्तरिक्ष्याः बहुधा भवन्ति अ. १, ३३, ३; ९१८
 अपां गर्भः वा. य. १०, ३; १०९५
 अपां पतिः वा. य. १०, ३; १०९५
 अपां गर्भः [सुपर्णः वृषभः वा] अ. ७, ३९, १; ९२७
 अमृतं अप्सु अन्तः ऋ. १, २३, १९; ८६६ । अ. १, ४,
 ४; ९६३
 अमृताः वा. य. ४, १२; ९४४
 अयक्ष्मंकरणीः अ. १९, २, ५; ९३२
 अयक्ष्माः वा. य. ४, १२; ९४४
 अरिप्रः [सोमरसः] ऋ. ७, ४७, १; ८७१
 अर्थतः वा. य. १०, ३; १०९५
 अहिं बुध्यं अनुरीयमाणाः वा. य. १०, १९; १०९८
 आपः वा. य. ११, ३८; १०९९ । १२, ३, ५; ११०० ।
 ऋ. १०, ९, १, ४-५; ८७९, ८८२-८८३ । अ. ७, ४९,
 १-४; ८७५-७८
 आपः (निर्बचनम्) अ. ३, १३, २; ९२१
 आयतीः ऋ. १०, ३०, १३; ९१३
 आवर्ततीः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०
 इन्द्रपानः [सोमः] अ. ७, ४७, १; ८७१ । ऋ. १०, ३०,
 ९; ९०९
 इयानाः पर्वतस्य पृष्ठात् वा. य. १०, १९; १०९८
 ईक्ष्यः ऋ. १०, ३०, ८; ९०८
 ईशानाः वार्याणाम् ऋ. १०, २, ५; ८८३
 उत्स्याः अ. १९, २, १; ९२८
 उदकम् (निर्बचनम्) अ. ३, १३, ४; ९२३
 उदकाः वा. य. १०, १९; १०९८
 उपजीवाः अ. १९, ६२, २; ९३४
 उशतीः ऋ. १०, ३०, १५; ९१५
 ऊर्जं वहन्तीः वा. य. २, ३४; ९४२
 ऊर्जस्वतीः वा. य. १०, १; १०९३
 ऊर्मिः (सोमः) ऋ. ७, ४७, १; ८७१ । १०, ३०, ७-९;
 ९०७-९०९

ऊर्मिः वृष्णाः वा. य. १०, २; १०९४
 ऋतावरीः अ. ३, १३, ७; ९२६
 ऋतावृधः वा. य. ४, १२; ९४४
 ओजस्वतीः वा. य. १०, ३; १०९५
 ओषधीनां वृषभः [सुपर्णः] अ. ७, ३९, १; ९२७
 औशानः [सोमः] ऋ. १०, ३०, ९; ९०९
 कल्याणीः ऋ. १०, ३०, ५; ९०५
 कुंभेभिः-मे-आमृताः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४;
 ९६४
 क्षत्रियाय महि क्षत्रं वन्वानाः वा. य. १०, ४; १०९६
 क्षयन्तीः चर्वणीनाम् ऋ. १०, ९, ५; ८८२
 खनमानाः अ. १९, २, ३; ९३०
 खनित्रिमाः ऋ. ७, ४७, २; ८७६ । अ. १९, २, २; ९२९ ।
 १, ६, ४; ९६४
 घृतप्वः ऋ. १०, १७, १; ८८८
 घृतप्रुष् ऋ. १०, ३०, ८; ९०८
 घृतमुष (सोमः) ऋ. ७, ४७, १; ८७१
 घृतं बिभ्रतीः ऋ. १०, ३, १३; ९१३ । अ. ३, १३, ५;
 ९२४
 घृतच्युतः अ. १, ३३, ४; ९१९
 चरन्तीः नियवम् ऋ. १०, ३०, १०; ९१०
 चितानाः वा. य. १०, १; १०९३
 जनभृतः वा. य. १०, ४; १०९६
 जनयः वा. य. १२, ३५; ११००
 जनित्रीः भुवनस्य ऋ. १०, ३०, १०; ९१०
 जामयः अश्वरीयताम् ऋ. १, २३, १६; ८६३
 जालाषम् (जलम्) अ. ६, ५७, २; ८६१
 जीवाः अ. १९, ६९, १; ९३३
 जीवधन्याः ऋ. १०, ३०, १४; ९१४
 जीवलाः अ. १९, ६९, ४; ९३६
 तपोजाः वा. य. १०, ६; १०९७
 त्रितन्तुः [सोमः] ऋ. १०, ३०, ९; ९०९
 दिव्यः ऋ. ७, ४७, २; ८७६ । अ. ७, ३९, १; ९२७ ।
 १९, २, ४; ९३१
 दुर्मित्रियाः द्विषे वा. य. २०, १९; ११०४
 देवमादनः [सोमः] ऋ. १०, ३०, ७; ९०७

शुचयः ऋ. ७,४९,२-३; ८७६-७७ । अ. १,३३,१,४;
९१६,९१९
शुचिः (सोमः) ऋ. ७,४७,१; ८७१
शुद्धाः वा. य. ६,१३; ९४७
श्रुष्टीवरीः ऋ. १०,३०,११; ९११
श्वान्नाः वा. य. ४,१२; ९४४
संजीवाः अ. १९,६९,३ ९३५
सनिष्यदाः अ. १९,२,१; ९२८
समुद्रज्येष्ठाः ऋ. ७,४९,१; ८७५
समुद्रार्थाः ऋ. ७,४९,२; ८७६
सयोनीः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
सवृधः ऋ. १०,३०,१०; ९१०
सहोजसः वा. य. १०,४; १०९६
सिन्धवः (निर्वाचनम्) अ. ३,१३,१; ९२०
सिन्धवः ऋ. १,२३,१८; ८६५ । ७,४७,३-४; ८७३-
७४ । १०,३०,८९; ९०८-९
सुपत्नीः वा. य. १२,३५; ११००
सुपरिविष्टाः वा. य. ६,१३; ९४७

सुपर्णाः (देवता) अ. ७,३९,१; ९२७
सुमित्रियाः नः वा. य. ६,२२; ९५१ । २०,१९; ११०४
सुवर्णाः अ. १,३३,१-३; ९१६-१८
सुशेवाः वा. य. ४,१२; ९४४
सूददोहसः वा. य. १२,५५; ११०१
सूर्यस्वचसः वा. य. १०,४; १०९६
सूर्यवर्चसः वा. य. १०,४; १०९६
सोमस्य दात्रम् वा. य. १०,६; १०२७
स्योनाः अ. १,३३,१-४; ९१६-१९
स्रवन्ति याः ऋ. ७,४९,२; ८७६
स्रोतस्याः अ. १९,२,४; ९३१
स्वपथस्य पत्नीः ऋ. १०,३०,१२; ९१२
स्वयंजाः ऋ. ७,४९,२; ८७६
स्वराजः वा. य. १०,४; १०९६
स्वसिचः वा. य. १०,१९; १०९८
हिरण्यवर्णाः अ. १,३३,१; ९१६ । ३,१३,६; ९२१
हैमवतीः अ. १९,२,१; ९२८

(२) सरस्वत्यादि-नदी-नामानि, तासां गुणबोधकपदानि च ।

अकव-अरी (सरस्वती) ऋ. ७,९३,३३; १०८०
अघ्न्यौ (विपाट् शुतुद्रौ) ऋ. ३,३३,१३; १०३४
अदब्धा (सिन्धुः) ऋ. १०,७५,७; १०४२
अदुष्कृतौ (विपाट् शुतुद्रौ) ऋ. ३,३३,१३; १०३४
अघोअक्षाः (नद्यः) ऋ. ३,३३,९; १०३०
अनन्तः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
अनुदकाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
अपसा अपसामा (नद्या) ऋ. १०,७५,७; १०४२
(सरस्वती) ६,६१,१३; १०७१
अप्येति अन्या अन्याम् (विपाट् शुतुद्रौ) ऋ. ३,३३,२;
१०२३
अमृता (सरण्यः) ऋ. १०,१७,२; १०८२
अम्बितमा (सरस्वती) ऋ. २,८१,१६; १०५६
अर्णवः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
अवित्री (सरस्वती) ऋ. ७,९३,२; १०७९ । ऋ. ६,
६१,४; १०६२

अक्षिपदाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
अक्षिमिदाः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
असिक्नी [विशेषनाम] ऋ. १०,७५,५; १०४०
अहुतः (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६,६१,८; १०६६
आर्जोकीया [विशेषनाम] ऋ. १०,७५,५; १०४०
इन्द्रेषिते [विराट् शुतुद्रौ] ऋ. ३,३३,२; १०२३
इयाना मितञ्जुमिः नमत्यैः [सरस्वती] ऋ. ७,९५,४;
१०७५
इषयन्तीः (नद्यः) ऋ. ३,३३,१२; १०३३
उत्तरा सखिभ्यः [सरस्वती] ऋ. ७,९५,४; १०७५
उदन्वतीः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०३५
उदधिः (समुद्रः) अ. ४,१५,२१; १०१४
उद्वतः (नद्यः) अ. ७,५०,४; १०५०
उपस्तुत्या चिकितुषा (सरस्वती) ऋ. ६,६१,१३; १०७१
उर्वी (विपाट्) ऋ. ३,३३,३; १०२४
उशती (विपाट् शुतुद्रौ) ऋ. ३,३३,१; १०२

युयुजे सुखं अध्विनं रथम् (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ९; १०४४
युवतिः (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
रयिष्ठाः (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
रसा (सिन्धुसंगतानदी) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
रायस्पोषः (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
रुशती (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२
रोरुवत् एति (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ३; १०३८
रोरुवत् चरति (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६
वक्षणाः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३
वर्धयन्ती पञ्चजाता (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
वस्ते मधुवृषं अधि (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
वाजिनी (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ६; १०६४
वाजिनीवती (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ३-४; १०६१-
१०६२ । ७, ९६, ३; १०८० । २, ४, १८; १०५८ ।
१, ३, १०; १०५१ । (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३

वि-एनसा (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, १३; १०३४
वितस्ता (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
विपाट् (नदीविशेषः) ऋ. ३, ३३, १; १०२२
विश्वदशैतः (सरस्वान्) ऋ. ७, ९६, ६; १०४८
वृत्रघ्नी (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५
वृषभः (सरस्वान्) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
वृषा (सरस्वान्) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
शशयः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४
शशयुः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, १०, १; १०८६
शिवाः (नद्यः) अ. ७, ५०, ४; १०३५
शिशुः (सरस्वान्) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५
शुचिः (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, २; १०७४
शुतुद्रिः (नदीविशेषः) ऋ. ३, ३३, १; १०२२ । १०, ७५,
५, १०४०
शुभ्रा-अ (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, २; १०२३ ।
(सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ६; १०७७ । ७, ९६, २;
१०७९

श्रवस्युः (सरस्वान्) अ. ७, ४०, २; १०५०
श्वेती (सिन्धुसंगता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१
संरिहाणे वसमिव (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४
संचरन्ती समानं योनिं अनु (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३,
३; १०२४

सप्तधातुः (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०
सप्तस्वसा (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
समुद्रः अ. ४, १५, ५; १००८ । ऋ. ३, ३३, २;
१०२३ । ७, ९५, २; १०७४ । वा. य. २०, १९; ११०४
समारणे (विपाट् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, २; १०२३
सरण्युः (नदीविशेषः) ऋ. १०, १७, १-२; १०८१-८२
सरस्वती (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४० । १, ३,
१०-१२; १०५१-५३ । १, १६४, ४९; १०५४ । २,
३०, ८; १०५५ । २, ४१, १६-१८; १०५६-५८ । ६,
६१, १-७, १०-११, १३-१४; १०५९-६५, १०६८-६९,
१०७१-७२ । ७, ९५, १-२, ४-६; १०७३-७७ । ९६,
१, ३; १०७८, १०८० । १०, १७, ७-९; १०८३-८५ ।
अ. ७, १०, १; १०८६ । ५७, १; १०८८; ६८, १-३;
१०३०-९२

सरस्वान् ऋ. ७, ९६, ४-६; १०४६-४८ । अ. ७, ४०,
१-२; १०४९-५०

सिन्धुः ऋ. ३, ३३, ३, ५ (शुतुद्री), ९ (नद्यः); १०२४,
१०२६, १०३०

सिंधुः (समुद्रः) अ. ६, २४, १; ९७१ । ऋ. १०, ७५,
१-४, ६-९; १०३६-३९, १०४१-४४ । (विशेषनाम)

सिन्धुपत्नीः (नद्यः) अ. ६, २४, ३; ९७३

सिन्धुराज्ञीः (नद्यः) अ. ६, २४, ३; ९७३

सीलमावती (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३

सुकृता (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३

सुसुष्टा (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८

सुदत्रः (सरस्वती स्तनः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ ।
अ. ७, १०, १; १०८६

सुपाराः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, ९; १०३०

सुभगा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३ । (विपाट्)
ऋ. ३, ३३, ३; १०२४

सुभगा (सरस्वती) ऋ. ७, ९५, ४, ६; १०७५, १०७७

सुमतीनां चेतन्ती (सरस्वती) ऋ. १, ३, २१; १०५२

सुरथा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३

सुराधाः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३

सुवासाः (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३

सुसर्तुः (सिन्धुसङ्गता) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१

सुसोमा (नदीविशेषः) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०
 सुहवः (सरस्वती स्तनः) अ. ७, १०, १; १०८६
 सुनृतानां चोदयित्री (सरस्वती) ऋ. १, ३, ११; १०५२
 स्तनः (सरस्वत्याः) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ । अ.
 ७, १०, १; १०८६
 स्तनयितुः (सरस्वत्याः) अ. ७, ११, १; १०८७

स्ताम्या (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८
 स्वधा (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 सरसारः (नद्यः) ऋ. ३, ३३, ९; १०३०
 ह्यसमाने (विपाट् शुद्धी) ऋ. ३, ३३, १; १०२२
 हिरण्ययी (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३
 हिरण्यवर्तनिः (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५

(३) ' पर्जन्य ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजगराः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 असुरः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२; १०१५
 ईशः विश्वस्य जगतः ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 उरसाः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 ऊधः ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 कनिकदत् ऋ. ५, ८३, १, ९; ९७४, ९८२
 कृणोति गर्भं ओषधीनाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृणोति गर्भं गवाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृणोति गर्भं परुषाणाम् ऋ. ७, १०२, २; ९९२
 कृण्वन् ओषधीनां गर्भम् ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 कृण्वन् वरसम् ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 जीरदानुः ऋ. ५, ८३, १; ९७४
 दिवस्पुत्रः ऋ. ७, १०२, १; ९९१
 देवः ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 निषिञ्चन् अपः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२;
 १०१५
 पर्जन्यः ऋ. ५, ८३, १-५, ९; ९७४-७८, ९८२ । अ.
 १०१, ५; ९८९ । १०२, १; ९९१
 पिता नः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ४, १५, १२; १०१५

प्रच्युताः मरुद्भिः (मेघाः) अ. ४, १५, ७, ९; १०१०-१२
 मधुदोषाः (मेघः) ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 मीढ्वान् ऋ. ७, १०२, १; ९९१
 मेघाः अ. ४, १५, ७-९; १०१०-१२
 यंसत् त्रिधातु शरणं शर्म ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 रेतोधाः ऋ. ७, १०१, ६; ९९०
 वर्धनः अपाम् ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 वर्धनः ओषधीनाम् ऋ. ७, १०१, २; ९८६
 वर्षम् (वृष्टिः) ऋ. ५, ८३, १०; ९८३ । अ. ७, १५, २-४,
 ६, १०, १४-१५; १००५-७, १००२, १०१३, १०१७-१८
 वर्ष्यम् (वृष्टयोपेतम्) ऋ. ५, ८३, ३; ९७६
 वर्ष्याः (मेघः) ऋ. ५, ८३, ३; ९७६
 वृषभः ऋ. ५, ८३, १; ९७४ । अ. ७, १०१, १, ६; ९८५, ९९०
 वृष्टिः-वृष्टयः ऋ. ५, ८३, ६; ९७९ । अ. ७, १०१, ५; ९८९
 सद्योजातः ऋ. ७, १०१, १; ९८५
 सुदानवः (मेघाः) अ. ४, १५, ९; १०१२
 स्तनयन् ऋ. ५, ८३, २, ९; ९७५, ९८२
 स्वराट् ऋ. ७, १०१, ५; ९८९

(४) ' मण्डूक ' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजमायुः ऋ. ७, १०३, ६, १०; ९९९, १००३
 अभिवृष्टः ४; ९९७
 उशन् ३; ९९६
 कनिष्कन् ४; ९९७
 गुह्याः न ८; १००१
 गोमायुः ६, १०; ९९९, १००३
 घर्माः ९; १००२

घर्मिणः ऋ. ७, १०३, ८; १००१
 तप्ताः ९; १००२
 तृष्यावन्तः ३; ९९६
 नरः न ९; १००२
 पुरुषा वाचं वदन्तः ६; ९९९
 पृश्निः ४, ६, १०; ९९७, ९९९, १००३
 पृश्निबाहवः अ. ४, १५, १२; १०१५

ब्राह्मणाः-णासः न ऋ. ७, १०३; १७; ९९४, १०-० ।
 अ. ४, १५, १३; १०१६
 मण्डकाः ऋ. ७, १०३, १-२, ७, १०; ९९४-९५, १०००,
 १००३ । अ. ४, १५, १२-१३
 १०१५-१६
 मण्डूकी अ. ४, १५, १४; १०१७
 वदन, वदन्तः ऋ. ७, १०३, २, ७; ९९६, १०००

विहंसः ७, १०३, ६; ९९९
 व्रतचारिणः १; ९९४ । अ. ४, १५, १३; १०१६
 शयानः २; ९९५
 शशयानः संवत्सरम् १; ९९४ । अ. ४, १५, १३; १०१६
 समानं नाम बिभ्रतः ६; ९९९
 सिध्विदानाः ८; १००१
 हरितः ४, ६, १०; ९९७ ९९९, १००३

(५) ' आपः ' देवतान्तरसम्बन्धः ।

पयस्वान् अग्न आ गाह । तं मा सं सृज वर्चसा । ऋ. १,
 २३, २; ८७० । १०, २, ९; ८८७ । अ. ७, ८९, १;
 ९५९

आग्निः अप्सु अन्तः ऋ. १, २३, २०; ८६७
 अग्निं याः गर्भं दधिरे अ. १, ३३, १-३; ९१६-१८
 अग्निः यासु ज तः अ. १, ३३, १; ९१६
 तैश्चानरो यासु अग्निः प्रविष्टः ऋ. ७, ४९, ४; ८७८
 इन्द्रो याभ्यः अरदद् गातुर्मूर्तिम् ऋ. ७, ४९, ४; ८७४
 इन्द्रो या वज्री वृषमो रराद् ऋ. ७, ४९, १; ८७५
 इन्द्रो याभिः वावृधे वीर्याय ऋ. १०, ३०, ४; ९०४
 यः (इन्द्रः) वो वृताभ्यो अकृणोडु लोहम् ऋ. १०, ३०,
 ७; ९०७
 यः (इन्द्रः) वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत् ऋ. १०, ३०,
 ७; ९०७

युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये वा. य. १, १३; ९३८
 यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये वा. य. १, १३; ९३८
 याभिः इन्द्रमनयज्ञस्यरातीः वा. य. १०, १; १०९३
 इन्द्राय सोमं सुषुप्तं भरन्तीः ऋ. १०, ३०, १३; ९१३
 अध्वर्यवः सोमं सुषुप्तं सुनुत ऋ. १०, ३०, १५; ९१५
 तां इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ऋ. ७, ४९, ३; ८७३
 यं वः प्रथमं इन्द्रपानमूर्तिमकृण्वतेळः ऋ. ७, ४९, १; ८७१
 तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानं ऊर्वि प्र हेत ऋ. १०, ३०, ९;
 ९०९

इन्द्राय मधुमन्तं ऊर्मिं प्र हिणोतनापः ऋ. १०, ३०, ७; ९०७
 प्राश्मै (इन्द्राय) मधुमन्तमूर्तिम् ऋ. १०, ३०, ८; ९०८
 इन्द्राग्नयोः भागधेयीः स्थ । वा. य. ६, २४; ९५२
 यासां देवा विवि कृण्वन्ति भक्षम् ऋ. १, ३३, ३; ९१८
 देवानां अपि यन्नि पाथः ऋ. ७, ४९, ३; ८७३

२९ दै. [आयुर्वेद०]

याभिर्मित्रावरुणावभ्यविष्टान् वा. य. १०, १; १०९३
 मित्रावरुणयोः भागधेयी स्थ वा. य. ६, २४; ९५२
 यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अ. १, ३३, २; ९१७ ।
 अवपश्यजनानम् ऋ. ७, ४९, ३; ८७७
 यासु राजा वरुणः (वर्तते) ऋ. ७, ४९, ५; ८७८
 विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति ऋ. ७, ४९, ४; ८७८
 विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ वा. य. ६, २४; ९५२
 अपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः ॥ ऋ. १, २३,
 १९; ८६६

यासु जातः सविता अ. १, ३३, १; ९१६
 सूर्यः रश्मिभिर्याः (आपः) आततान ऋ. ७, ४९, ४; ८७४
 अमूः (आपः) याः उप सूर्ये ऋ. १, २३, १७; ८६४ ।
 याभिर्वा सूर्यः सह वा. य. ६, २४; ९५२
 आपः पृणीत भेषजं ज्योक् च सूर्यं हवो ऋ. १, २३, २१;
 ८६८ । १०, ९, ७; ८८५

यासु सोमः (वर्तते) ऋ. ७, ४९, ४; ८७८
 याभिः सोमः मोदते हर्षते च ऋ. १०, ३०, ५; ९०५
 ७ षु मे सोमोऽब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा ऋ. १, २३, २०;
 ८६७

आग्निं च विश्वशंभुवं आपश्च विश्वभेषजीः ऋ. १०, ९, ६;
 ८८४

तमूर्तिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा । ऋ. ७,
 ४९, १; ८७२

अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं अपां नपातं हविषा यजध्वम् । ऋ.
 १०, ३०, ३; ९०३

नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नपत्रा संविदानास एनाः ।
 ऋ. १०, ३०, १४; ९१४

अपां नपाथो व ऊर्मिर्हविष्यः वा. य. ६, २७; ९५३

आयुर्वेद-मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकर्म ते स्वपसो अभूम	२१०७	अग्ने सहस्वानभिर्भूमादग्नि	१२३४
अक्षजमीमदन्त ह्यव	२२११	अग्नेः शरीरमसि	५४
अक्षितास्त उपसदो	११२६	अग्नेः सान्तपनस्य	१५१
अक्षितिं भूयसीम्	२१७७	अग्नेरिवास्य दहत एति	१७९
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१६२, २१०, २९४	अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य	६८६
अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं	७४१	अग्नेर्धसो अपां गभो	३३१
अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे	५९१	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः	१६८५
अगन्म स्वः स्वरगन्म	१९०४	अग्नेर्वर्म परि गोभिर्धयस्व	२०८२
अग्नये कव्यवाहनाय	२२२१	अग्नेर्वोऽपक्षगृहस्य सदसि	९५२
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा	१२९५	अग्नेष्टे प्राणममृताद्	३९
अग्निः पूर्वं आ रभतां	७७०	अग्नौ तुषाना वप ज्ञानवेदमि	१२५७
अग्निः प्राणान्तं दधाति	१७३	अग्नेमध्योषधीनां ज्योतिषा	३९८
अग्निः प्रातःसवने पावस्मान्	८८	अग्नेणीरास स्वावश	२२६९
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो	१२८	अवद्विष्टा देवजाता	६६८
अग्निं ब्रूमो वनस्पतीन्	१७३४	अवमगस्वघकृते शपथः	१६२०
अग्निरिवेतु प्रतिक्लृप्तम्	१६०३	अवशंसदुःशंसाभ्यां	२१८
अग्निर्मांशिनोऽवतु प्राणाय	५९७	अवाश्वस्येदं भेषजम्	८१७
अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिः	२१६५	अङ्गभेदमङ्गउवरं	२७३
अग्निष्टे नि शमयतु	६८८	अङ्गभेदो अङ्गउवरो	१०६
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत	१९९७, २१२७	अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय	८३२
अग्निस्तक्मानमप बध्नामि तः	५३१	अङ्गादङ्गांशोलोङ्गो	१६७
अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं	१३८४	अङ्गिरसामयने पूर्वो	२१५८
अग्नीषोमा पथि कृता स्योनं	२०७७	अङ्गिरसो नः पितरो नारवा	२०२१
अग्ने अकव्याग्निः क्रव्यादं	२५८	अङ्गिरोमिरा गद्दि यज्ञियेभिः	१९७२
अग्ने चर्यज्ञियस्तप्यरुक्षत्	१२४४	अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गद्दीह	५०२२
अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय	१२३१	अङ्गभक्ते लोत्रिलोत्रि	५१६, ३००
अग्ने जायस्वादिति नायितेयं	१२२९	अङ्गभक्ते गोचित्रा विधियाणं	१८९
अग्ने तपस्तप्यामह उप	१९२२	अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः	२७४
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः	१५९८	अच्छा सिन्धु मातृतमा	१०२४
अग्ने समिधमाहार्ष	११५	अजं च पचत पञ्च	१२१९
		अजः पक्कः स्वर्गे लोके	१२००

अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठ	११९२
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः	११९१
अजैष्माद्यामनाम च	६२९
अजैष्माद्यासनामाद्याभूम	१८४५
अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुः	११८९
अजो भागस्तपसस्तं तपस्व	२०३२
अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत	१२०२
अजोऽस्यज स्वर्गोऽसि त्वया	११९८
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद्	११९५
अज्जते व्यज्जते समज्जते	२१०१
अज्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो	२२५९
अतारिषुर्भरता गव्यवः	१०३२
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ	२०३५
अति विश्वाः परिष्ठाः	३१०
अतिसृष्टो अपां वृषभो	१८०३
अत्यन्यौ अगो नान्यौ	३७०
अत्रिवद् वः क्रिमया हन्मि	७०५, ७११
अत्रैव वोऽपि नह्यामि	२३४३
अथर्वाणो अबध्नत	१४९७
अथर्वा पूर्णं चमसं	२१३४
अथोपदान भगवो	१५५८
अदन्ति त्वा पिपीलिका	८५८
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः	२११०
अदितेर्हस्तां सुचमेता द्वितीयां	१२५२
अदित्यै व्युन्दनमसि	९४१
अदृष्टान् हन्त्यायत	७७५
अदो यत् ते हृदि श्रितं	६८४
अदो यदवधावत	५६५
अदो यदवरोचते	१९४
अद्याग्ने अद्य सवितः	१३३७
अधरास्त्रं प्र हिणोमि	५३४
अध स्वप्नस्य निविंद	६२३
अधा यथा नः पितरः	२१०४
अधि नो ब्रूतं पृतनासूत्रां	१७१९
अधि ब्रूहि मा रभथाः	३३
अधि स्कन्द वीरयस्व	१३५३
अधीतीरध्यगादयम्	८२

अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं	९०३
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि	९०२
अनदुद्धयस्त्वं प्रथमं	४०७
अनद्धाहं प्लवमन्वारभध्वं	२६४
अनभयः खनमाना	९३०
अनयाहमोषध्या सर्वाः	३९२, १६१९
अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः	१२२२
अनागमिष्यतो वरानवितेः	१८५४
अनागोहृत्या वै भीमा कृत्ये	१६०४
अनाप्ता ये वः प्रथमा	८०४
अनास्माकस्तद् देवपीयुः	१९१७
अनु च्छय इयामेन त्वचमेतां	११८६
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं	१३७२
अनु त्वा हरिणो वृषा	१९३
अनुपूर्ववत्सां धेनुम्	१२११
अनुसूयमुदयतां	४८९
अनुहृतः पुनरेहि	१०४
अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्	१४३३
अन्तकाय मृत्यवे नमः	६
अन्त कोऽसि मृत्युरसि	१८३६, १८४३
अन्तरिक्षेण पतति	१५८८
अन्तर्द्वे घावापृथिवी	१४३६
अन्तर्दावे जुहुता स्वेतद्	७३१
अन्तर्देशा अबध्नत	१४२६
अन्तर्धिर्देवानां परिधिः	२६०
अन्यक्षेत्रे न गमसे	५३९
अन्यत्रास्मन्नुच्यतु	१७७२
अन्यम् पु त्वं यम्यन्य	१९६७
अन्या वो अन्यामवतु	३१४
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२३२
अन्यो अन्यमनुगृह्णात्येनोः	९९७
अन्वान्त्यं शीर्षण्यमथो	६९४
अपकामं स्यन्दमाना	९२२
अप काम तानन्ती	१६२९
अपक्रीताः सहीयसीः	४३४
अपचितः प्र पतत	५१३
अपचितां लोहिनीनां	५०३

अपथेना जभारैणां	१६१३
अप नः शोश्चदधमग्ने	१७५७
अपः पिन्वौषधीर्जिन्व	११०२
अपमृज्य यातुधानान्	३९५
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोति	१२०४
अपवासे नक्षत्राणाम्	१९८
अपश्यं युवतिं नीयमानां	२०८६
अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं	२२४१
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां	२२४५
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः	२२८८
अपां रसः प्रथमजोऽथो	१३३६
अपागूहन्नमृतां मर्येभ्यः	१०८२, २०५७
अपानाय व्यानाय	६४
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं	६१
अपाममिस्तनूभिः संविदानो	१०१३
अपामग्रमसि समुद्रं वो	१८०८
अपमह दिव्यानाम्	९३१
अपामार्गं ओषधीनां	३८७
अपामार्गोऽप मार्गु	३९४
अपामूर्जं ओजसो वातृधानं	५९४
अपां मा पाने यतमो ददम्भ	७५५
अपावृत्य गार्हपत्यात्	२५०
अपूपवानन्नवान्	२१७१
अपूपवानपवान्	२१७४
अपूपवान् क्षीरवान्	२१६६
अपूपवान् घृतवान्	२१६९
अपूपवान् दधिवान्	२१६७
अपूपवान् द्रव्यवान्	२१६८
अपूपवान् मधुमान्	२१७२
अपूपवान् मांसवान्	२१७०
अपूपवान् रसवान्	२१७३
अपूपापिहितान् कुम्भान्	२१४५, २१७५
अपेन वीत वि च सर्पतातो	१९७५
अपेतो वातो सविता च	१७०२
अप्रेमं जीवा अरुधन्	२०५१
अप्रेमां मात्रां मिमीमहे	२०६४
अपेयं रात्र्युच्छ्वपो०	४९४

अपेहि मनसस्पते	६२५
अपेक्षरिरस्यरिर्वा अक्षि	८४५
अपो अद्यान्वचारिणम्	११०६
अपो दिव्या अत्रायिणं	९५३
अपो देवा मधुमतीः	१०९३
अपो देवीरुपगुज	१०९९
अपो देवीरुप हयं	८६५
अपो निषिञ्चन्नसुरः	१०१५
अप्रज स्त्वं मार्तवस्समान्	१३९२
अप्सु ते जन्म दिवि ते	१५९०
अप्सु ते राजन् वरुण	१६७६
आसु मे गोमां अश्वीन्	८६७, ८८४
अप्स्वन्तरगुतमप्सु भेषजम्	८६६, २६३
अभयं मित्रावरुणाविहास्तु	७३३
अभि क्रन्द स्तनयं गर्भमा	९८०
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोर्दधि	१००२
अभि तेऽथां सहमानाम्	३६९
अभि त्वा जरिमाहि न	७९
अभि त्वा मनुजांतन	१२६०
अभि त्वा सिन्धो सिन्धुर्मात्र	१०३९
अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या	२०७६
अभिभूरहमागमं	२३४१
अभीशुना मेधा आसन्	४६४
अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः	२२१५
अभ्यक्ताक्ता स्वरंकृता	१६४०
अभ्यधनं सुराभि सा समृद्धिः	९५८
अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां	१२५०
असा कृत्वा पाप्मानं	३९०
अभाषि मात्रां स्वरगाम्	२०६९
अमुकथा यक्षमाद् दुरितादवद्यात्	१६६७
अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य	१४३
अमून् हेतिः पतत्रिणी	१५८५
अमू ये दिवि सुभगे	१२५
अमूर्या उप सूर्ये याभिः	८६४
अमूर्या यन्ति यांषितो	५५५
अमोते वासो दद्यात्	११९६
अम्रथो यन्त्यध्वभिः	८६३

अम्बितमे नदीतमे	१०५६	अरायमसूक् पावानं	४१८
अयं यो अमिशोचयिष्णुः	१८१	अगायान् ब्रूमो रक्षांसि	१७४९
अयं यो भूरिमूलः	६४०	अरायि काणे विकटे	२३३७
अयं यो वक्रो विरु०	८५५	अरावीदंशुः सचमानः	१४०४
अयं यो विद्वान् हरितान्	५३२	अरिप्रा आपो अप	१८१२
अयं लोकः प्रियतमो	११४	अरिष्टोऽहमरिष्टगुः	१४६२
अयं विष्कन्धं सहते	६८	अरुक्माणमिदं महत्	५६९
अयं स्तुवान् आगमद्	७२८	अर्थेत् स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं	१०९५
अयं स्त्राक्-यो मणिः	१४३४	अलसालासि पूर्वा	४६२
अयं प्रावा पृथुबुधो वयोधाः	१२८५	अलग्ण्डून् हन्मि महता	६९३
अयं जीवतु मा मृत	३१	अवकादानमिशोचानप्सु	७२४
अयज्ञियो दत्तवर्चा भवति	२५३	अवकोल्वा उदकात्मान	३३२
अयं ते कृत्वा वितता	१४५६	अव जहि यातुधानान्	१५९२
अयं दर्भो विमन्युकः	६३९	अवपतन्तीरवदन्	३१७
अयं देवा इहैवारतु	२३	अव मा पाप्मन्स्तृज	१७७०
अयं देवानामसुरो वि राजति	१६५४	अवर्षीर्वर्षमुकु षू गृभाय	९८३
अयमग्निरुपसद्य इह	१०८	अवशसा निःशसा यत्	६३१
अयमिद् वै प्रतीवर्त	१४४६	अव श्वेत पदा जहि	८१०
अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो	१०७७	अव सृज पुनरग्रे पितृभ्यो	२०३४
अयमौदुम्बरो मणिः	१५५०	अविः कृष्णा मागधेयं	२६९
अयं पन्थाः कृयेति त्वा	१६३०	अवैरहस्यायेदमा पपस्यात्	१५८७
अयं प्रतिसरो मणिः	१४३१	अश्मन्वती रीयते सं रभर्ध्वं	२४२
अयं मणिर्वरेणा विश्वभेषजः	१४५५	अश्रम्माणो आधारयन्	१७३८
अयं मणिः सपत्नहा सुधीरः	१४३२	अश्वत्थे वो निषदनं	३०५; ३५८
अयं मे वरण उरसि	१४६३	अश्वत्थो दर्भो वीरुधां	३४३
अयं मे वरणो मणिः	१४५३	अश्वत्थो देवसदनः	४१०, ४३२, ४५१
अयं मे हस्तो भगवान्	५५३	अश्वस्याश्वतरस्याजस्य	१३३९
अयस्मये द्रुपदे बधिष इह	१७२३	अश्वस्याज्ञः संपतिता सा	४३६
अयोजाला असुरा मायिनो	७६६	अश्वाः कणा गावः	११३१
अरंघुषो निमज्ज	८११	अश्वावती प्र तर या	२०५१
अरसं कृत्रिम नादम्	१५५३	अश्वावती सोमावती	३०७
अरसं प्राच्यं विषम्	७९९	अश्वो घृतेन तमन्या समन्त	३७८
अरसस्त इषा शल्यो	७९५	अष्ट च मंऽशीतिश्च मे	६६०
अरसस्य शर्कोटस्य	८५६	असद् भूम्याः समभवद्	४०१
अरसास इहाहया	८१६	असंतापं मे हृदयमुर्वी	१८२७
अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य	१४७८	असंतापे सुतपसौ हुवे	१७०८
अरात्यास्त्वा निक्कत्या	१४५९	अघ्नमन्त्राद् दुःष्वप्न्याद्	५८५

असपत्नं नो अधराद्
 अक्षबाधे पृथिव्या उरौ
 असितं ते प्रलयनम्
 असितस्य तैमातस्य
 असुराणां दुहितासि
 असुगस्त्वा न्यखनन् देवाः
 असूतिका रामायणी
 असौ यो अधराद् गृहः
 असौ हा इह ते मनः
 अस्थाद् द्यौरस्थाद् पृथिवी
 अस्थिरस्य किलासस्य
 अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः
 अस्थिहंसं परुल्लसम्
 अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु
 अस्मिन् मणावेकशतं
 अस्मिन् वयं संकसुके
 अस्मै क्षत्राणि धारयन्तम्
 अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु
 अस्मै मृत्यो अग्निं ब्रूहि
 अस्य प्रजावती गृहे
 अस्येन्द्र कुमारस्य
 अस्त्रामस्त्वा हविषा यजामि
 अहमस्मि सपत्नहेन्वो
 अहमस्मि सहमानाथो
 अहं पचाम्यहं ददामि
 अहं पशूनामधिषा असानि
 अहा अरातिमविद स्योर्नम्
 अहीनां सर्वेषां विषं
 अहोरात्रं अन्वेषि बिभ्रत्
 अहोरात्रं इदं ब्रूमः
 अहं च त्वा रात्रये च
 आक्ष्वैकं मणिमेकं कृष्णध्व
 आगादुदगादयं
 आगमन्नाप उशतीर्बहिरेदं
 आ धा ता गच्छानुत्तरा
 आच्छाद्विधानैर्गुपितो
 आच्या जानु दक्षिणौ

१४४७
 २०४४
 ५१५
 ८३९
 ८०७
 ४१५
 ५१५
 १६५०
 २२१६
 ५५९
 ५२०
 २१५, २२९
 ४८३
 १४५१
 १५७६
 २२९
 १६८१
 १४४०
 ३४
 २२४३
 ६९७
 १६६०
 २३४२
 ३६८
 १३१८
 १५४२
 १६६८
 ८२७
 २६५
 १७३८
 ४६
 ५९६
 ८१
 ९१५
 १९६३
 ४७३
 १९९२, २०१७

आज्यस्य परमेश्चिन्
 आधनं पृथिव्या जातं
 आ ते कारो शृण्वामा
 आ ते प्राणं गुवामसि
 आत्मानं पितरं पुत्र
 आ त्वागमं शंतातिभिः
 आ त्वाग्न इधीमहि
 आ त्वा नृतत्वर्यमा
 आदङ्गा कुविदङ्गा
 आदिन् पश्यामुत वा
 आदित्या रुद्रा वसवः
 आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो
 आ नयैतमा रभस्व
 आ निवर्तनं वर्तय
 आ निवर्तं नि वर्तय
 आनुत्यतः क्षित्वाण्डजो
 आ नो भर मा परि छा
 आन्त्राणि जत्रवो गुदा
 आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो
 आप इद् वा उ भेषजीः
 आपः पृणीत भेषजं
 आपपृषी पार्थिवानि
 आ पर्जन्यस्य गृध्रयो
 आ पश्यति प्रति पश्यति
 आपस्यत्रासो अग्निं सं
 आपो अग्निं प्र हिणुत
 आपो अभं दिव्या
 आपो अयान्वचारिषं
 आपो अस्मान् मातरः
 आपो देवीः प्रतिगृष्णीत
 आपो देवीः स्वदन्तु
 आपो भद्रा घृतमिदाप
 आपो यं वः प्रथमं देवयन्ते
 आपो रेवतीः क्षयथा हि
 आपो विद्युदभ्रं वर्षे सं वो
 आपो हि छा मयोभुवः
 आ प्र व्यवेधामप तन्मृजेथा

७६८
 ६०४
 १०३१
 १४८
 १२१२
 ५५२
 २२३८
 १३८
 ५६६
 ९२५
 १७५६, २२६६
 १३१५
 ११८३
 ९००
 ८९८
 ७२१
 १७७७
 ११३६
 १६४, २१३, २९७
 १९६, २०१
 ८६८, ८८५
 १०६९
 १७८
 ७५४
 १२७५
 २१९०
 ३२६
 ८७०, ८८७
 ८८८, १७८८
 ११००
 ९४६
 ९२४
 ८७१
 ९१२
 १०१२
 ८७९
 २१२९

आ प्रत्यञ्च दाशुषे दाश्वंसं	१०५०
आबयो अनाबयो रसः	४६६
आ मारुशब्द देवमणिः	१४५०
आ मे धनं सरस्वती	१५४६
आमे सुपक्वे शबले विपक्वे	७४३
आयजी वाजसातमा	२२८२
आ यन्ति दिवः पृथिवीं	१२९७
आयमगन् युवा भिषक्	८२२
आ यात पितरः सोम्यासो	२२१२
आयुरस्मै धेहि जातवेदः	२२
आयुर्ददं विपश्चितं	५६४
आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो	२३३१
आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैः	१४५
आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा	२०७९
आयुषोऽसि प्रतरणं	६०२
आयुष्मतामायुष्कृतां	१७५
आयुष्यं वर्चस्य० राय०	२३२८
आ यूथेव क्षुमति पथो	२१०६
आ रभस्व जातवेदः	७७२, २१४८
आ रभस्वेमाममृतस्य	५७
आराद्रातिं निर्ऋतिं परो	३८
आरे अभूद् विषमरीद्	८३३
आ रोहत जनित्रौ जातवेदसः	२१५१
आ रोहत दिवमुत्तमाम्	२१४२
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना	२४०
आर्षेयेषु नि दध ओदन	१२६१
आलिङ्गि च विलिङ्गी च	८४०
आ व ऋजस ऊर्जा व्युष्टिषु	२२८५
आवतस्त आवतः	९८
आवर्तततीरध नु द्विधारा	१९०
आ वात वाहि भेषजं	५५०
आविष्कृणुष्व रूपाणि	७५८
आ वृषायस्व श्वघिहि	१ : ४३-
आशरीकं विशरीकं	१५६०
आशानामाशापालेभ्यः	१६५८
आशामाशां वि द्योततां	१०११
आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं	९३

आशृण्वन्तं यवं देवं	११२५
आसीनासो अरुणीनाम्	१९९३, २१२६
आसुरी चक्रे प्रथमेदं	५२२
आ सुन्नसः सुन्नसो	५०७
आसो बलासो भवतु	२८१
आहं तनोमि ते पसो	१३३८, १३४५
आहं पितृन्सुविदत्रौ	१९८९, २०११
आहार्षमविदं त्वा	२५, २०९
इत एत उदारुहन्	२०२४
इतश्च मामुतश्चावतां	२१२१
इदं यत् कृष्णः शकुनि०	१७३२, १७३३
इदं यमस्य सादनं	१९८६
इदं व आगे हृदयमयं	९२६
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे	९८९
इदं विद्वानाज्जन सत्यं	५८६
इदं हविर्यातुधानान्	७२७
इदं हिरण्यं बिभृहि	२२०६
इदं कसाम्बु चयनेन चितं	२१८७
इदं त एकं पर ऊ त एकं	२०९०
इदं तमति सृजामि	१८०६
इदं तृतीयं सवनं कवीनाम्	९०
इदं ते व्यं घृतवत्	१०९१
इदमहं रक्षसां ग्रीवा	७५३
इदमहं तप्तं वार्षादिर्धा	९४५
इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः	१८६३
इदमापः प्र बहत	८६२, ८८६
इदमापः प्रवहतावयं	९५०, ९६१
इदमिदमेवास्य रूपं	१२०६
इदमिद् वा उ नापरं	२०७४, २०७५
इदमिद् वा उ भेषजम्	८३०
इदं पितृभ्यः प्र भरामि	२२०१
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वय	१९८८, २०११
इदं पूर्वमपरं नियानं	२१९४
इदं पैद्वो अजायत	८१४
इदं प्रापमुत्तमं काण्डम्	१३१६
इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं	१२५६

इध्मन त्वा जातवेदः
 इन्द्र जकथामदान्यस्मिन्
 इन्द्र एतां ससृजे विद्वो
 इन्द्र जीव सूर्य जीव
 इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधान
 इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि
 इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त
 इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानाम्
 इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य
 इन्द्रस्य या मही दृषत्
 इन्द्रस्य व इन्द्रयेण
 इन्द्रस्य वचसा वयं
 इन्द्राय भागं परि त्वा
 इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य
 इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं
 इन्द्रेण दत्तो वरुणं शिष्टा
 इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे
 इन्द्रो अरुमौ अरदद्
 इन्द्रो जघान प्रथमं
 इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या
 इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु
 इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत
 इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याणि
 इमं यम प्रस्तरमा
 इमं यवमष्टाश्वेभ्यः
 इमं होमा यज्ञमवतेमं
 इमं कथ्यादा विवैशायं
 इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि
 इममग्न आयुषे वर्चसे जय
 इममावित्या वसुना समुक्षत
 इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमनु
 इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु
 इमं बध्नामि ते मणिं
 इमं विभर्मि वरणम्
 इमं मे अग्ने पुरुषं सुमुख्ययं
 इमं मे कुष्ठं पुरुषं
 इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति

११६
 १९३९
 ९७
 १५६
 १३६६
 १५७५
 १५६१
 ८०८
 १६९२
 ६९१
 १८११
 १८३
 ११८४
 ११२३
 ११२२
 ९४
 १०२३
 १०५७
 ८२५
 २१०८
 ५९८
 ८२३ ८२४
 १९४५
 १९७१, २०२३
 १९९
 २२४७
 २५९
 २३९
 ५
 १३०
 २६३
 १२२८
 १५१३
 १४६४
 ६८७
 ४४२
 १०४०

इमः आपः अमु मे मन्तु
 इमां खनाम्योपधि
 इमा जुगाना युध्मदा नमोमिः
 इमा नारीगन्धिवाः सुपर्वाः
 इमा ब्रह्म सरस्वति
 इमा मात्रा मिमीमहे
 इमा या देवीः प्रदिशश्चनम्
 इमा यास्तिष्ठः पृथिवी
 इमास्तिष्ठा देवपुराः
 इमे जीवा वि मृतैराववृत्त
 इमो युनक्ति ते वही
 इयं वीरुन्मधुजाता
 इयं शुष्मेभिर्भिम्बसा इव
 इयत्तकः कुपुम्भकः
 इयत्तिका शकुन्तिका
 इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं
 इयं नारी पतिलोकं गृणाना
 इयमददाद् रभसभृणन्युतं
 इयमन्तर्वेदति जिह्वा
 इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति
 इयं मही पति गृह्णतु
 इषीकां जरतीमष्टा
 इष्कतिर्नाम वो माता
 इष्वः ऋजीयः पततु
 इह तेऽमुरिह प्राण
 इहा यन्तु प्रचेतसे
 इदैधि पुरुष सर्वेण
 इहैव गाव एतनेहो
 इहैव स्तं प्राणापानौ
 इहैवाभि वि तन्ममे
 इहैवैधि धनसनिः
 ईजानश्चितमारक्षद्
 ईजानां सुकृतां लोकम्
 ईर्ष्याया धाजि प्रथमां
 ईशानां त्वा मेघजानाम्
 ईशाना वायाणां क्षयन्तीः

९४३
 ३६४
 १०७३
 २१७, १९४६
 १०५८
 २०६२
 १६६५
 ४५७
 १३६
 २३८
 २०८०
 ४७८, ८५३
 १०६०
 ७८८
 ७८४
 १२३९
 २०८५
 १०५९
 ११३
 ११३७
 १२३६
 २७०
 ३०९
 १६०२
 ८
 ३३०
 १०३
 २३२३
 ७७
 १४१७
 २ ८८
 २१६४
 १९९४
 ६८२
 ३८०
 ८८३

उप इत् ते वनस्पते	१५५९	उदगातां भगवती	४९३
उप्रा इव प्रवहन्तः	२२९८	उदगादयमादित्यो	५४७
उच्छुष्मा ओषधीनां	३०८	उदग्रभं परिपाणाद्	७६१
उच्छुष्मौषधीनां सार	१३३५	उदङ् जातो हिमवतः	४४४
उच्छ्रयस्व बहुभैव स्वेन	११२४	उदन्वती द्यौरवमा	२०७२
उच्छ्रयस्व वनस्पते	२२६१	उदपप्तदसौ सूर्यः	७८२
उच्छ्रवच्चमाना पृथिवी सु	१९५१	उदपूरसि मधुपूरसि	२१२०
उच्छ्रवच्चस्व पृथिवि मा	१९५०	उदप्रुतो मरुतस्तौ इयते	९६७
उज्जिहीध्वे स्तनयति	३४४	उदरात् ते क्लोत्रो नाभ्या	३८३
उत देवा अवहितं	५४८	उदह्ममायुरायुषे ऋत्वे	२०४७
उत नमा बोधुवती	१७८४	उदायुषा समायुषा	१७७
उत नः प्रिया प्रियासु	१०६८	उदिमां मात्रां मिमीमहे	२०६७
उत स्म ते वनस्पते	२२८१	उदीचीनैः पथिभिर्वायुमङ्गिः	२४५
उत स्या नः सरस्वती	१०६५, १०७५	उदीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११६
उत हन्ति पूर्वासिनं	१६४२	उदीच्यै त्वा दिशे सोमाय	१३२९
उतासि परिपाणं	५८२	उदीरतामवर उत् परासः	१९८७, २०१०
उतेव प्रभवीरुत संमितासः	१२९८	उदीरयत मरुतः समुद्रतः	१००८
उतो अस्यबन्धुकुदुतो	३२६	उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं	१९४७
उत् क्रामातः परि चेद्	११८८	उदुत्तमं वरुण पाशम्	१६७८, २२१९
उत् क्रामातः पुरुष माव	९	उदुषा उदु सूर्ये उदिदे	१३३३
उत्तमो अर्योषधीनाम्	४५०, १४४१	उदेणीव वारण्यसिस्कन्दं	१६०१
उत्तमो नाम कुष्ठाधि	४४५	उदेनं भगो अप्रभीद्	७
उत्तरं द्विषतो मामयं	१५०८	उदेहि वेदिं प्रजया वर्धय	१२४९
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद्	१२८१	उद्यन्नद्य मित्रमह	५४५
उत्तराहमुत्तर उत्तरेद्	३६७	उद्यन्नादित्यः किमीन् हन्तु	७०९
उत्तानपर्णे सुभगे	३६५	उद्यानं ते पुरुष नावयानं	११
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायो	२४३	उद्योधन्त्यमि बलान्ति तप्ताः	१३००
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः	२०९१	उद् व ऊर्मिः शम्भ्या हन्तु	१०३४
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते	१५४	उद्वयं तमसरूपि रोहन्तो	१४९
उत् ते स्तभ्रामि पृथिवी	१९५२, २१३३	उद्धर्षिणं मुनिकेशं	१३८३
उत त्वा द्यौरुत् पृथिवी	२२	उन्मुक्चन्तीर्विवरुणा	३३३
उत् त्वा मृत्योरपीपरं	२४	उन्मुक्च पाशांस्त्वमम एषां	१६७१
उत् त्वा वहन्तु मरुतः	२०४६	उपजीका उद् भरन्ति	५६८
उत् त्वाहार्षं पञ्चशलाद्	३५१	उपजीवा स्थोप जीव्यासं	२३४
उत्थापय सीदतो बुध एनान्	१३०१	उप तेऽधां सहमानाम्	२३४०
उत् पुरस्तात् सूर्य एति	७०१, ७८१	उप द्यामुप वेतसमवत्तरो	२०८८
उत् सूर्यो दिव एति	५६२	उप द्रव पयसा गोधु गोषमा	१९१८

उप नः पितवा चर	१११०	ऊर्ध्व ऊ पु ण ऊतये	२१५७
उपप्रवद मण्डकि वर्षमा	१०१७	ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षणप्रमादम्	१५७३
उप प्रागात् सहस्राक्षो	१७७३	ऊर्ध्वार्या त्वा दिशि पुरा	२११८
उप प्रागाद् देवो अग्नी	७३४	ऊर्ध्वार्यै त्वा दिशो बृहस्पतये	१३३१
उप प्रियं पानिप्रतं	१४१	ऊर्ध्वो नः पाद्यं हसो नि	२१५८
उप मौदुम्बरो मणिः	१५४३	ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः	१५८
उप श्रेष्ठा न आग्निषो	१७०५	ऊर्चा कपोतं नुदत	१५८२
उपश्वसे ह्रुवये सीदता यूयं	१२४०	ऊर्चा कुम्भीमध्यग्नौ	११८७
उप सर्प मातरं भूमिम्	१९४९, २१३२	ऊर्चा कुम्भ्यधिहिता	११४०
उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्ताद्	१३०८	ऊर्जीत्येनी रुशती महिस्वा	१०४२
उपहृता नः पितरः सोम्यासो	२१२८	ऊर्णाटणमिव संनयन्	५२२
उपहृताः पितरः सोम्यासो	१९९१	ऊर्तं हस्तावनेजनं	११३९
उपहृतो मे गोपा	१८१८	ऊर्तवः पक्कार आर्तवाः	११४३
उपहृतो वाचस्पतिः	१४१८	ऊर्तवस्तमबप्रत	१४९५
उपहृतौ सयुजौ स्योनौ	१६१	ऊर्तस्य पन्थामनु पश्य	२१५३
उप ह्रये सुदुषा धेनुमेतां	१९१९	ऊर्तस्यतेनादित्या	१७९५
उपावसृज तमन्या समञ्जन्	३७९	ऊर्तुमिष्ट्वार्तिवैरायुषे	१३९
उपास्तरीरकरो लोकम्	१३०९	ऊर्तुन् ब्रूम ऊर्तुपतीन्	१७५०
उपास्मान् प्राणो ह्ययताम्	२२५०	ऊर्तेन तद्या मनसा	१२५१
उपाहृतमनुबुद्धं निष्ठातं	१६३४	ऊर्ध्वं मा समानानां	२३४१
उभयोरग्रभं नामास्मा	२०४	ऊर्ध्वीणां प्रस्तरोऽस्ति	१८२१
उभे नभसी उभयाश्च	१२७७	ऊर्ध्वी बोधप्रतीक्षाधा	१०७
उभे यत् ते महिना	१०७९	एकपाद् भूयो द्विपदो	२३१८
उरुगूलाया दुहिता	८४१	एकशतं विष्कन्धानि	१८०२
उरुः प्रथस्व महता	१२४७	एका च मे दश च मे	६५३
उरुणसावसुतपातुदुम्बकौ	२०३७	एकाचेतत् सरस्वती नदीनां	१०७४
उर्वश्च मा चमसश्च मा	१८२४	एको वो देवोऽप्यतिष्ठत्	९२३
उच्यन्ति धा ते अमृतासः	१९५६	एजदेजदजग्रभं चक्षुः	६१६
उषस्पतिर्वाचस्पतिना	१८५०	एत उ तये प्रत्यदृशन्	७७८
उषा देवी वाचा संविदाना	१८४२	एतत् ते तत स्वधा	२२२७
उषो यस्माद् दुष्मन्याद्	१८४६	एतत् ते ततामह स्वधा	२२२६
ऊरभ्यां ते अग्निवद्भ्यां	१६५, २१४, २९८	एतत् ते देवः सविता	२१८१
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं	९४२	एतत् ते प्रततामह स्वधा	२२२५
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती	९५	एतत् त्वा वासः प्रथमं	२०८१
ऊर्जो भागो निहितो यः	१२४३	एतदा रोह वय उन्मृजानः	२१५०
ऊर्जो भागो य इमं जजाना	२२०४	एत देवा दक्षिणतः	१७५१

एतद्धि शृणु मे वचो	१६४३
एतद् वचो जरितर्मापि	१०२९
एतद् वै ब्रध्नस्य विष्टपं	११७६
एतद् वो ज्योतिः पितरः	११९३
एतमिधं समाहितं जुषाणो	१५१२
एतस्माद् वा ओदनाद्	११७८
एतास्ते अग्ने समिधः	११८, ७५१
एतास्ते अग्नौ धेनवः	२१८३
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः	११९७
एते नरः स्वपसो अभूतन	२२९२
एते वदन्ति शतवत्	२२९४
एते वदन्त्यविदन्नना मधु	२२९५
एतौ ग्रावाणौ सयुजा	१२३७
एदं बर्हिंसदो मेध्योऽभूः	२२०२
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि	११०७
एधोऽस्येधिषीय समिदसि	९६२
एना वयं पयसा पिन्वमाना	१०२५
एनीर्धाना हरिणिः श्येनीः	२१८४
एन्येका श्येन्येका कृष्णैका	५१४
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना	१२४२
एमा अगमन् रेवतीः	९१४
एयमगशोषघ्नीनां	७२०
एयमगन् दक्षिणा मद्रतो	२२००
एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिः	१९४१
एवानेवाव सा गरत्	१८५९
एवेद्युने युवतयो नमन्त	९०६
एषो ध्वस्मन्निर्ऋतेऽनेहा	१७९२
एष यज्ञानो विततो	१२२५
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूव	१३२२
एहि जीवं त्रायमाणं	५८०
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा	२३३४
ऐतु देवन्नायमाणः	४४७
ऐतु प्राण ऐतु मनः	११०
ऐन्द्राभं वर्म बहुलं	१४४९
ओको अस्य मूजवन्त	५३५
ओ चित् सखायं सख्या	१९५४

*

ओता आपः कर्मण्या	९६२
ओते मे द्यावापृथिवी	६९६
ओदन एवौदनं	११५७
ओदनेन यज्ञवचः	११४५
ओष दर्मं सपत्नान् मे	१५२९
ओषधयः प्रतिगृह्णीत	३५७
ओषधयः प्रतिमोदध्वं	३५६
ओषधयः सं वदन्ते	३२२
ओषधीः प्रति मोदध्वं	३०३
ओषधीनामहं वृण	८२८
ओषधीरिति मातरः	३०४
ओषधे त्रायस्व स्वाधिते	३५५
ओ धु स्वसारः कारवे	१०३०
औदुम्बरेण मणिना	१५३७
कः कुमारमजनयद्	१९८४
कङ्कतो न कङ्कतो	७७४
कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो	२०९८
कन्तु फलीकरणाः	११३२
करम्भ ओषधे भव	१११७
करम्भं कृत्वा तिर्यं	८००
करीषिणीं फलवतीं	१५३९
कर्णाभ्यां ते कङ्कषेभ्यः	२७३
कर्णां श्वावित् तदब्रवीद्	८४२
कर्शफस्य विशफस्य	१७९७
कश्यपस्त्वामसृजत	१४४४
कश्यपस्य चक्षुरसि	७६०
कस्ये मृजाना अति	२१००
किं भ्राताषद् यदनार्थं	१९६४
क्रिलासं च पलितं च	५१८
कुम्भीका दूषीकाः	१८५२
कुषुम्भकस्तदब्रवीद्	७८९
कृणुत धूर्मं वृषणः	१२३०
कृणोमि ते प्राणापानौ	३७
कृतव्यघनि विध्य तं	१५९९
कृत्याकृतं वलगिनं	१६१५
कृत्याकृतो वलगिनो	१६४६

कृत्यादूषण एवायमथो	१५५४
कृत्यादूषिरण्यं मणिः	७१
कृत्याः धन्तु कृत्याकृते	१५९५
कृन्तं दर्भं सपत्नान् मे	१५२०
कृषभित् फाल आभितं	२३१७
कृष्णं नियानं हरयः	२६५
कैरात पृश्न उपतृण्य	८३८
कैरातिका कुमारिका	८२१
को अथ युङ्क्ते धुरि	२००१
को अस्य वेद प्रथमस्य	१९५९
कोऽं दुहन्ति कलशं	२१८०
क्रव्यादमग्निं शशमान	२२६
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि	२२५
क्रव्यादमग्निं प्र दूरं ह्निगामि	२२४
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं	७४७
क्लीब क्लीबं स्वाकरं वध्रे	५००
क्लीबं कृष्योपशिनम्	४९९
क्षीरे मा मन्ये यतमो	७४४
क्षुधामारं तृणामारम्	३८५
क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या	१६६१
खण्वखाइ क्षेमखाइ	१०१८
खलः पात्रं स्फ्यावसावीषे	११३५
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः	१००७
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	१७३७
गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्यो	५४४
गर्भं ते मित्रावरुणौ	१३४९
गर्भं धेहि सिनीवालि	१३४८
गर्भं नु नौ जनिता दंपती	१९५८
गर्भो अस्थोपधीनां	४१२, १३५२
गिरिमेनौ आ वेश्य	४१९
गृहाण प्रावाणौ सकृत्तौ	१२३८
गोमायुरदादजमायुरदात्	१००३
गोमायुरेको अजमायुरेकः	९९९
ग्रामणीरसि ग्रामणीः	१५४८
प्रावाण उपरेष्वा	२३०९
प्रावाणः सविता नु वो	२३१०

प्रावाणो अप दुच्छुनाम्	२३०८
प्राहिं पाप्मानमति तौ	१२८९
प्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते	२५५
प्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः	१६३, २११, २९५
प्रीवास्ते कृत्ये पादौ	१६३६
घर्म इवाभितपन् दर्भ	१५१५
घृतस्य जूतिः समना	२२४२
घृतहृदा मधुकूलाः सुरोदकाः	१२२६
घृतादुल्लसं मधुना समकृतं	१४०
घृतादुल्लसो मधुमान् पयस्वान्	१५७७, १९३४
चक्षुर्मुसलं काम उल्लसलम्	११२९
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि	८३७
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मे	६५६
चतस्रो दिवः प्रदिशः	१४०६
चतुरः क्रुन्मोश्चतुर्धा ददामि	१२२७
चतुर्वारं बध्यत आञ्जनं ते	५९५
चन्द्रमा अप्सन्तरा	२२३९
चरं पश्वबिलमुखं	११४४
चोदयित्री सूतानां	१०५२
छिन्धि दर्भं सपत्नान् मे	१५१८
जज्ञिहो जम्माद् विशराद्	६७
जज्ञिहोऽसि जज्ञिहो	१५५१
जनाद् विश्वजनीनात्	६८५
जनित्रीव प्रति ह्यसि	१२९४
जनीयन्तो न्यग्रवः	१०४६
जरायुजः प्रथम उल्लियो	१८८
जरायै स्वा परि ददामि	७८
जहि दर्भं सपत्नान् मे	१५३२
जाग्रदुष्वप्यं स्वप्ने	१८५३
जातो जायते सुदिनस्वे	२२६३
जामा इद् वो अप्सरसो	७२६
जालाषेणाभि विश्वत	८६१
जितम० । स आङ्गिरसानां	१८८३
जितम० । स आथर्वणानां	१८८५
जितम० । स आर्तवानां	१८८९
जितम० । स आर्षेयानां	१८८१

जितम० । स इन्द्राग्न्योः	१८९५	तक्मन् मृजवतो गच्छ	५३७
जितम० । स ऋतूनां	१८८८	तक्मन् व्याल वि गद्	५३६
जितम० । स ऋषीणां	१८८०	तं जहि तेन मन्दस्व	१८६७
जितम० । स देवजामीनां	१८७७	ततश्चैनमन्यया जिह्वया	११६२
जितम० । स द्यावापृथिव्योः	१८९४	ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया	११७५
जितम० । स निर्ऋत्याः	१८७३	ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां	११५२
जितम० । स निर्भूत्याः	१८७५	ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां	११७४
जितम० । स पराभूत्याः	१८७६	ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां	११६०
जितम० । स प्रजापतेः	१८७९	ततश्चैनमन्याभ्यामष्टोवद्भ्यां	११७१
जितम० । स बृहस्पतेः	१८७८	ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां	११७०
जितम० । स मासानां	१८९०	ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां	११७२
जितम० । स मित्रावरुणयोः	१८९६	ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां	११७३
जितम० । स राज्ञो वरुणस्य	१८९७	ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन	११६६
जितम० । स वनस्पतीनां	१८८६	ततश्चैनमन्येन मुखेन	११६१
जितम० । स वानस्पत्यानां	१८८७	ततश्चैनमन्येन वस्तिना	११६९
जितम० । सोऽङ्गिरसां	१८८२	ततश्चैनमन्येन व्यचसा	११६५
जितम० । सोऽथर्वणां	१८८४	ततश्चैनमन्येन शीष्णां	११५८
जितम० । सोऽभूत्याः	१८७४	ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः	११६४
जितम० । सोऽर्धमासानां	१८९१	ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीः	११६३
जितम० । सोऽहोरात्रयोः	१८९२	ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीः	११६८
जितम० । सोऽहोः संयतोः	१८९३	ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीः	११६७
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम् १८६९, १८९८, १९०२		तथा तदग्ने कृणु जातवेदो	७३९
जिह्वाया अग्ने मधु मे	४७९	तदग्निराह तदु सोम आह	१४३५, १९०३
जीवतां ज्योतिरभि	२८	तदमुष्मा अग्ने देवाः परा	१८५५
जीवन्तां नधारिषां	३२, ३२९	तदिद्धयस्य सवनं विवेरपो	२२८७
जीवला नाम ते माता	४४९	तदिद् वदन्त्यद्रयो	२३०५
जीवला स्थ जीव्यासं	९३६	तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतना	२२८६
जीवानामायुः प्र तिर	२६१	तनूस्तन्वा मे सहे	१५५
जीवा स्थ जीव्यासं	९३३	तं त्वा वयं पितो वचोभिः	१११८
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुः	२०	तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म	१८३७, १८४४, १९१६
जीविम शरदः शतम्	१२०	तं त्वौदनस्य पृच्छामि	११४८
जुहूदाधार द्यामुपमृदन्तरिक्षं	२१५५	तं धाता प्रत्यमुञ्चत	१४९८
ज्याके परि णो नमाश्मानं	६६५	तन्वं स्वर्गो बहुधा	१३२५
ज्येष्ठभ्यां जातो विवृतोः	८६	तपसा ये अनापृष्याः	२०४०
तं सिन्धवो मत्सरम्	९०९	तमिमं देवता मणिं	१५०६
तक्मन् आत्रा बलासेन	५४५	तमूर्मिमापो मधुमत्तमं	८७२
		तव खे पितो ददतः	१११२

तव त्वे पितो रसा	११११	तृष्टामया प्रथमं यातवे	१०४१
तव व्रते नि विशन्ते	१७०१	ते अदयो दशयन्त्रासः	२३००
तस्तुवं न तस्तुवं	८४४	ते त्वा रक्षन्तु ते	१९
तस्मा अरे गमाम वो	८८१	ते देवेभ्य आ वृश्न्ते	२६६
तस्मा इदास्ये हविः	९९३	तेन तमभ्यतिगृजामो	१८०७
तस्मादमुं निर्भजामो	१८७०, १८९९	तेनैनं विध्याम्यभूयैर्न	१८५६
तस्मै घृतं सुरां मधु	१४८२	तेऽमुष्मै परा वदन्तु	१८५१
तस्य शुभ्रां असद्	२२४२	तेषां प्रज्ञानाय यज्ञम्	११७९
तस्यामृतस्येमं बलं	३४५	ते सोमादो हरी इन्द्रस्य	२३०१
तस्येदं वर्चस्तेजः	१८७२, १९०१	तौवी नामासि कन्या	८३१
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः	११२७	तौ विलिकेऽवेलयाम्	४६८
ता अघरादुदीचीः	२५७	अपु भस्म हरितं वर्णः	११३४
ता अपः शिवा अपो	९३२	अयः पोषास्त्रिभृति	१२९
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा	९४४	अयः सुपर्णा उपरस्य	२१५४
ता अस्य सूददोदसः	११०१	अयः सुपर्णास्त्रिभृता	१३४
ता नो अथ वनस्पती	२२८३	अयो दासा आधनस्य	५८७
तायुवं न तायुवं	८४३	अयो लोकाः संमिता	१२९१
तां मे सहस्राक्षो देवो	७५७	त्रायन्तामिमं देवाः	५५१
तांष्टीधीरमे समिधः	७५२	त्रायन्तामिमं पुरुषं	३२५
तावद् वा चक्षुस्तति	१२७३	अत्रिः शास्त्रुभ्यो अत्रिरेभ्यः	४५१
तासु त्वान्तर्जरस्या	१६६६	अत्रिः सप्त मयूर्यः	७८७
तास्ते रक्षन्तु तव	१२२०	अत्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका	७८५
तास्त्वं प्र च्छिन्द	१४६८	अत्रिकद्रुकेभिः पतति	१९७२
तिरश्चिराजेरसितात्	८५२	अत्रिकद्रुकेभिः पवते	२०३०
तिष्ठावरे तिष्ठ पर	५५६	अत्रिते देवा अमृजत	१७६५
तिंशश्च मे त्रिशच्च मे	६५५	अत्रिशीर्षाणं अत्रिकुदं	७०४
तिष्ठो दिवस्तिष्ठः पृथिवीः	७५५	अत्रिपथस्था सप्तधातुः	१०७०
तिष्ठो दिवो अत्यतृणत्	१९२६	अत्रिष्वा देवा अजनयन्	१५५६
तिष्ठो वाचः प्र वद	९८५	अत्रिणि च्छन्दासि कवयो	२००४
तीक्ष्णो राजा विषासही	१९३६	अत्रिणि ते कुष्ठ नामानि	४४८
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो	२१५७	अत्रिणि पदानि रुपो	२१२३
तुभ्यं वातः पवतां	१०	अत्रेधा जातं जन्मनेदं	१३१
तुभ्यमेव जरिमन्	१	अत्रेधा भागो निहितो	१९३३
तृतीयकं वितृतीयं	५४३	अत्रायुषं अमदमेः	१३३
तृदिळा अतृदिळासो अद्रयो	२३०३	त्वं वीरुषां श्रेष्ठतमा	४९८
तृन्दि दर्भं सपत्नान् मे	१५२४	त्वं हि विश्वतोमुख	१७६२
तृष्णामारं क्षुषामारम्	३८६	त्वं च सोम नो वशो	४७७

त्वं देवि सरस्वत्यवा	१०६४	दह दर्भं सपत्नान् मे	१५३०
त्वं नो मेघे प्रथमा	१४१९	दितिः शूर्पमदितिः	११३०
त्वमम ईळि (०डि०) तो जातवेदो	१९९८, २१२५	दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	१७४३
त्वममे यातुधानान्	७७३	दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो	२२८९
त्वमसि सहमानो	१९२७	दिवस्त्वा पातु हरितं	१३५
त्वमीक्षिषे पशूनां	३	दिवा मा नक्तं यतमो	७४६
त्वमुत्तमास्योषधे	३२३	दिवि जातः समुद्रजः	१४२७
त्वमोदनं प्राप्तीस्त्वाम्	११५३	दिवि ते तूलमोषधे	१९२५
त्वं भूमिमत्येष्योजसा	१९३५	दिवि स्वनो यतते	१०३८
त्वं मणीनामधिपा वृषासि	१५४७	दिवो नु मां बृहतो	९५६
त्वया पूर्वमथर्वाणो	७१५	दिवो नो वृष्टिं मरुतो	२७९
त्वया वयमप्सरसो	७१६	दिवो मूलमवततं	६७०
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५६	दिव्यं सुपर्णं पयसं	९२७
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति	१०८१, २०१८	दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य	७५६
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्ति	१७२	दिव्या आपो भूमि	९९५
त्वष्टा युनक्तु बहुधा	१९४३	वीक्षातपसोस्तनूरसि	१२७०
त्वामाहुर्देववर्म त्वां	१५३४	वीर्षायुत्वाय बृहते रणाय	६६
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि	५०५	वीर्षायुस्त ओषधे खनिता	२३२७
त्वे पितो महानां देवानां	१११३	दुर्गामा च सुनामा च	१३७०
त्वे विश्वा सरस्वति	१०५७	दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः	१५६३
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु	२२०९	दुष्टयै हि त्वा भस्स्यामि	१८०१
दक्षिणां दिशमभि	१२७९	दंह मूलमात्रं यच्छ	४६५
दक्षिणायाम् त्वा दिक्षि	२११४	दंह प्रत्नान् जनयाजातान्	४६१
दक्षिणायै त्वा दिश	१३२७	दृष्टमदृष्टमनुदम्	६९२
दण्डं हस्तादाददानो	२०८३	देवस्य सवितुः सवे	९७०
ददाम्यस्मा अवसानम्	२०६१	देवहिंति जुगुप्सुर्द्वादशस्य	१००२
ददिहिं मह्यं वरुणो दिवः	८३४	देवा अदुः सूर्यो अदाद्	८०५
दर्भः शोचिस्तर्हणकम्	८०९	देवा इमं मधुना संयुतं	४७०
दर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि	१९३७	देवाः कपोत इषितो	१५७९
दर्भेण देवजातेन	१९२९	देवाज्जन त्रैककुदं	६०७
दर्शय मा यातुधानान्	७५९	देवानां हेतिः परि त्वा	३५
दश च मे शतं च मे	६६२	देवानामस्थि कुशनं बभूव	१४३०
दश मासाञ्छशयानः	१४०३	देवानामेनं घोरैः	१८५७
दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो	८०	देवानां पत्नीनां गर्भं	१९१५
दशानामेकं कपिलं समानं	९८४	देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति	२१५२
दशावनिभ्यो दशकक्षेभ्यो	२२९९	देवास्ते चीतिमविदन्	८३

देवी देव्यामधि जाता	४६०	धाना धेनुरभवद् वत्सो	२१८२
देवीराप एष वो गर्भः	२५५	धानोधात्रो राजधिनो	१६७७
देवीरापः शुद्धा वोढ्वः	२४७	धृषत् पिब कलशे सोमम्	५१२
देवीरापो अपां नपाद्यो	२५३	ध्रुव आ रोह पृथिवी	२१५६
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं	२१२४, २२७८	ध्रुवा एव वः पितरो	२३०४
देवेभ्यो अधि जातोऽसि	४४३	ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा	२११७
देवैनसात् पित्र्यानाम	१६२७	ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे	१३३०
देवैनसादुन्मदितम्	६८२	ध्रुवेयं विराणनमो अस्तु	१२८२
देवैर्दत्तं न मणिना	६९	न किल्बिषमत्र नाधारो	१३१२
देवो अग्निः संकसुको	२२८	नक्तंजातास्योषधे रामे	५१७
देवो देवैर्वनस्पतिः	२२७३	न ग्रंस्तताप न हिमो	१०२१
देवो मणिः सपत्नहा	१५४४	न च प्राणं रुणद्धि	११८१
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	३७७	न च सर्वज्यामि जीयते	११८२
दौष्पन्त्यं दौर्जोवित्थं	३८४, १९०६	नहमा रोह न ते	२१७
द्या मा लेखीरन्तरिक्षं	३७१	न तं यक्षमा अरुन्धते	२०२
द्यावापृथिवी श्रोत्रे	११२८	न तद् रक्षांसि न	२३२९
द्युमन्तस्त्वेधीमहि	२०२०	न तिष्ठन्ति न नि मियन्ति	१९६१
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता	७७९	न ते नार्थं यन्मयत्राहमस्मि	२००२
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	४	न ते बाह्वोर्बलमस्ति	८५७
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	२१७८	न ते सखा सख्यं वष्टयेतत्	१९५५
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमौ अनु	८८२	न त्वा पूर्वो ओषधयो	१५५७
द्रुपदादिव मुमुक्षानः	११०५, १७२९	नदीं यन्त्वप्सरसो	७१७
द्वादशधा निहितं त्रितस्या०	१७६७	न भूमिं वातो अति	६१४
द्राविमौ वातौ वात आ	५४२	नमः शीताय तक्मने	५२८
द्विभागघनमादाय प्र	२५१	नमः सनिष्ठाक्षेभ्यो	४९७
द्विषतस्तापयन् हृदः	१५१४	नमस्ते राजन् वरुणास्तु	१६५५
द्विषते तत् परा वद	१८४७	नमस्ते रुद्रास्तु	६२२
द्विषो नो विश्वतोमुखाति	१७६३	नमस्ते काङ्क्षेभ्यो	४९६
द्वे च मे बिंशतिश्च मे	६५४	नमो यमाय नमो अस्तु	१०९
द्यास्यान्वतुरक्षात्	१३८८	नमो रुद्राय नमो अस्तु	१८०
द्युर्हस्तादाददानो मृतस्य	१९४८, २०८४	नमो रुद्राय च्यवनाय	५२९
धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या	१३०६	नमो वः पितर ऊर्जे	२२३१
धर्तासि धरुणोऽसि	२११९	नमो वः पितरः स्वधा	२२३५
धर्ता ह त्वा धरुणो	२११२	नमो वः पितरो भामाय	२२३२
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५५	नमो वः पितरो यच्छिर्वं	२२३४
धाता मा निर्ऋत्या	२१०९	नमो वः पितरो यद् धोरं	२२३३

नमोऽस्त्वसिताय नमः	८५०
न यत् पुरा चक्रमा कद्ध	१९५७
नव च मे नवतिश्च मे	६६१
नव च या नवतिश्च	१६८४
नव प्राणान् नवभिः सं	१२७
नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत	१३०३
न वा उ ते तन्तुं तन्वा सं	२००३
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं	१९६५
न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं	२३११
नवानां नवतीनां	७८६
नष्टासवो नष्टविषा	८१९
न स सखा यो न ददाति	२३१४
नहि ते नाम जग्राह	३६६
नह्यस्या नाम गृभ्णामि	२३३९
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं	२१४४
नाभिरहं रयीणां	१८२८
नाल्प इति ब्रूयान्नानुसेचन	११५०
नास्य केशान् प्र वपन्ति	१९२४
नास्यास्थानि भिन्द्यान्न	१२०५
निःसालां धृष्णुं धिषणम्	१६४८
निक्ष दर्भ सपत्नान् मे	१५२३
नि गावो गोष्ठे असदन्	५६३, ७७७
निग्राभ्या स्थ देवश्रुतः	९४८
निधिं निधिषा अभ्येनम्	१३१३
निररणिं सविता धाविषक्	६७४
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं	२१९
निरिमां मात्रां मिमीमहे	२०६६
निर्दुरर्मण्य ऊर्जा	१८१६
निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या	१८६१
निर्बलासं बलासिनः	४८४
निर्बलासेतः प्र पताशुंगः	४८५
निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं	६७३
निर्वो गोष्ठादजामसि	१६४९
नि वर्तध्वं मानु गात	८९३
नीचैः खनन्यसुरा	५६७
नेतां विदुः पितरो नोत	१९१०
नेव मसि न पीवसि	१४०८

३१ दै. [आयुर्वेद०]

नैनं रक्षांसि न पिशाचाः	६०
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो	१५३
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो	१४४३
नैनं प्राप्नोति शपथो	५८४
नैवाहमोदनं न मामोदनः	११५६
न्यग् वातो वाति न्यक्	२००
न्यस्तिका रुरोहिथ	६७७
पक्षी जायान्यः पतति	५१०
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मे	६५७
पञ्च च याः पञ्चाशच्च	१६८२
पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं	२२७७
पञ्च राज्यानि वीरुधां	१७४८
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै	१२०८
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि	१२०७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमताम्	११९०
पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः	९६६
पयस्वतीरोषधयः	८९२, २१३५
परं मृत्यो अनु परेहि पन्था	२३७
पराक् ते ज्योतिरपथं ते	१६३१
पराच एनान् प्र णुद	४२०
पराञ्च चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा	११५४
परा यात पितर आ च यात	२०९७
परा यात पितरः सोम्यासो	२२१३
परि प्राममिवाचितं	८०२
परि णो वृद्धिर्ध शपथ	१७७४
परि त्वा परितत्नुना	४८२
परि त्वा पातु समानेभ्यो	५२
परि त्वा रोहितैर्वर्णैः	४३०
परि धामिव सूर्योऽहीनां	८४६
परि धत्त धत्त नो वर्चसा	२३३२
परि धामान्यासामाशुः	१६५३
परिपाणं पुरुषाणां	५८१
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः	१५६४
परि मां परि मे प्रजां	६७१
परि वः सिकतावती	५५८
परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो	२२७१

परि वो विश्वतो दध	८९९	पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीः	२१८९
परिसृष्टं धारयतु यद्धितं	१३८६	पुनः कृत्या कृत्याकृते	१५९४
परि स्तुणीहि परि धेहि	२२५६	पुनरेता नि वर्तन्ताम्	८९५
परिहस्त वि धारय	१३६०	पुनरेना नि वर्तय	८९४
परीदं वासो अधिथाः	२२३३	पुनरहि वाचस्पते	१४१६
परमिऽभिषेते परि	१५८३	पुनर्देहि वनस्पते य	२१४७
परयिवांसं प्रवतो महीः	१९६८, २०१५	पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः	२२२
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो	१६४१	पुनस्त्वा दुरप्सरसः	६९०
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रम्	१२४१	पुमान् पुंसोऽभि तिष्ठ	१२७२
परोऽपेहि मनस्पाप किम्	६३०	पुरं देवानाममृतं हिरण्यं	१३७
परोऽपेह्यसमृद्धे वि	१७८३	पुरस्ताद् युक्तो बह जातवेदो	७३८
पर्जन्याय प्र गायत	९९१	पुराणो अनुवैनन्तं	१९८१
पर्णो राजापिधानं चरुणाम्	२२०३	पुरोळाशं यो भस्मै	२२४१
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा	१३८२	पुष्टिं पशूनां परि जग्रभ	१५४१
पर्यावर्ते दुष्वप्यात्	६३६	पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समर्गिभ्य	१५४९
पर्वताद् दिवो योनेः	१३४६	पुष्पवतीः प्रसूमतीः	३५०
पलालानुपलालौ शर्कुं	१३६८	पूताः पवित्रैः पवन्ते अत्राद्	१२९६
पवस्तैस्त्वा पयक्रीणन्	८०३	पूर्वो अभिष्ट्वा तपतु शं	२१५३
पवीनसात् तज्जल्वात्	१३८७	पूषा त्वेतिश्यावयतु प्र	२०७८
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः	७७१	पूषेम शरदः शतम्	१२३
पश्येम शरदः शतम्	११९	पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्	२३१५
पादाभ्यां ते जानुभ्यां	२९२	पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनाम्	१२९२
पार्थिवस्य रसे देवा	९१	पृथिवी त्वा पृथिव्यामा वेशयामि	१२९३, २८९८
पार्थिवा दिव्याः पशवः	१७४१	पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु	८१३
पावका नः सरस्वती	१०५१	पैद्वस्व मन्महे वयं	८१८
पिंश दर्भ सपत्नान् मे	१५२१	पैद्वो हन्ति कषणालं	८१२
पिङ्ग रक्षे जायमानं	१३९१	प्र केतुना बृहता भाल्यमिः	२१४३
पिण्डु दर्भ सपत्नान् मे	१५२८	प्र क्षोदसा धायसा सख	१०७३
पितुं न स्तोषं महो	११०८	प्र व्यवस्त्र तन्वं सं भरस्व	२०९२
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः	२२२३	प्रजापतिष्ट्वा बध्नात् प्रथमम्	१५७२
पितेव पुत्रानभि सं	१२८३	प्रजापतिः सलिलादा समुद्राद्	१०१४
पिप्पली क्षिप्तभेषजी	४१३	प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण	१३५८
पिप्पत्यः समवदन्त	४१४	प्रजानत्यध्वे जीवलोकं	२०८७
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं	१७९९	प्र णो देवी सरस्वती	१०६२
पीपिवांसं सरस्वतः	१०४८	प्र णो वनिर्देवकृता	१७७९
पुत्र इव पितरं गच्छ	१६००	प्रति दह यातुधानान्	७३५
पुत्रमत्तु यातुधानीः	७३७	प्रति यदापो अदृशमायतीः	९१३

प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां	१७०७
प्रतीची दिशामियमिद्	१२८०
प्रतीचीन आङ्गिरसो	१६२१
प्रतीचीनफलो हि	४०४
प्रतीचीने मामहनीष्वाः	१९५३
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११५
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणाय	१३२८
प्र ते भिनन्नि मेहनं	५७७
प्र तेऽरदद् वरुणो यातवे	१०३७
प्र ते शृणामि शृङ्गे	७१४
प्रतो हि कमीज्यो अश्वरेषु	८५
प्रत्यङ् हि संबभूविथ	४०२
प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीरपानाः	११५५
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२७१
प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुः	९०१
प्र नभस्व पृथिवि	१०२०
प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं	११८५
प्र पर्वतस्य वृषभस्य	१०९८
प्र पर्वतानामुशती उपस्थाद्	१०२२
प्र यच्छ पशुं त्वरया	१३०२
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१७६०
प्र यदग्नेः सहस्रतो	१७६१
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	१७५९
प्र या जिगाति खर्गलेव	२२८४
प्र या महिम्ना महिनासु	१०७१
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य	२२१०
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद्	१०२८
प्र वाता वान्ति पतयन्ति	९७७
प्र विशतं प्राणापानौ	७६, १४७
प्र वो ऋवाणः सविता	२३०७
प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये	१७०४
प्र सु व आपो महिमानम्	१०३६
प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः	३२७
प्राचीं प्राचीं प्रदिशमा	१२७८
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा	२२१३
प्राच्यै त्वा दिशेऽभये	१३२६
प्राण प्राणं त्रायस्वासो	६०५

प्राणापानौ मा मा हासिष्टं	१८३२
प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदां	३०
प्राणेन प्राणतां प्राण	१७६
प्राणेन विश्वतोवीर्यं	१७४
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं	१११
प्राणो अपानो व्यान आयुः	२०७०
प्रास्वत् पाशान् वरुण मुञ्च	१६७९, २२२०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र	१८१३
प्रास्मै हिनात मधुमन्तमूर्मिं	२०८
प्रियं प्रियाणां कृण्वाम तमः	१३२०
प्रियं मा दर्भं कृणु ब्रह्म०	१९३०
प्रेमां मात्रां मिमीमहे	२०६३
प्रेव पिपतिषति मनसा	२६८
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणिः	२०१९
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्यैभिः	१९७३
प्रेणान्छृणीहि प्र शृणा रभस्व	१४५४
प्रेते वदन्तु प्र वयं वदाम	२२९३
प्रेषा यज्ञे निविदः स्वाहा	१९४०
प्रेष्टेश्यास्तल्पेशया	६१५
बतो बतासि यम नैव ते	१९६६
बन्धस्त्वाग्ने विश्वचया	१९०८
बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्यो	१२६०
बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद्	१२५९
बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य	४९५
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वाग्	१९९०, २०१६
बर्हिर्बिलं निर्द्रवतु	२८२
बह्वीदं राजन् वरुणान्	६०९
बुध्येम शरदः शतम्	१२१
बृहत्पलाशे सुभगे	४७२
बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	११४२
बृहदु गायिषे वचो	१०७८
बृहद्वावायुरेभ्योऽधि देवान्	१९०९
बृहद् वदन्ति मदिरण	२२९६
बृहस्पतिर्म आत्मा	१८२५
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च	१८
ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य	११७७

ब्रह्मणाग्निः संविदानो	१३९३	मधुमात्रो वनस्पतिः	४७३
ब्रह्मणा तेजसा सह	१५०७	मधु वाता ऋतायते	३६२
ब्रह्मणा परिगृहीता	११४१	मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता	८४८
ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता	१२४६	मधोरस्मि मधुतरो	४८१
ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराश्वम्	११५२	मनसे चेतसे धियः	६३
ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य	१२२१	मनो मे तर्पयत वाचं मे	९४९
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचम्	१००१	मन्य दर्भं सपत्नान् मे	१५२७
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे	१०००	मन्वे वां यावापृथिवी सुभोजसां	१७०६
ब्राह्मणेन पथुक्तासि	३९७	मन्वे वां मित्रावरुणाश्रुताश्रुधौ	१७२०
ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो	७९०	मया गावां गोपतिना सचध्वम्	२३२५
ब्रूमो देवं सवितारं	१७३६	मरीचिर्धूमान् प्र विशानु	१७६६
ब्रूमो राजानं वरुणं	१७३५	मरुतो मा गणैरवन्तु	६०१
भगो मा भगेनावतु प्राणाय	६००	महान्तं कौशमुदचा नि पिञ्च	९८१
भगो युनक्त्वाशिषो न्वस्मा	१९४४	महान्तं कौशमुदचाभि पिञ्च	१०१९
भद्रं वै वरं वृणते	६२६	महाशृषान् मृजवतो	५३८
भद्रमिद् भद्रा कृणवत्	१०८०	महो अर्णः सरस्वती	१०५३
भद्रात् प्रक्षान्तिस्तिस्रसि	४३२	मा गतानामा दीधीया	१३
भवाशर्वावस्यतां पापकृते	१६३८	मा ज्येष्ठं वधीदयमम एषां	१६७०
भवाशर्वाविद् ब्रूमो	१७४२	मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिः	१९७०, २०१३
भवाशर्वो मन्वे वां तस्य	१७१३	मा ते प्राण उप दसन्मो	११२
भवेम शरदः शतम्	१२४	मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो	१२
भिन्दि दर्भं सपत्नानां	१५१६	मा ते मनो मासोर्माज्ञानां	२०४८
भिन्दि दर्भं सपत्नान् मे	१५१७	मा त्वा क्रव्यादाभि मंस्त	१७
भीताय नाधमानाय	१४००	मा त्वा जन्मः संहनुर्मा	५१
भीमा इन्द्रस्य द्वेतयः	७२२, ७२३	मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट	२०४९
भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो	२२२०	मा न आपो मेधां मा	१४१२
भूतपतिर्निरजतु	१६५१	मा नो देवा अहिर्वधीत्	८४९
भूतं ब्रूमो भूतपतिं	१७५४	मा नो मेधां मा नो दीक्षां	१४१३
भूते हविष्मती भवैष ते	१७९१	मा नो हासिषुर्कषयो दैव्या	६५
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन	१३१	मापो मौषधीर्द्विंसीः	९५१
भूयसीः शरदः शतात्	१२६	मा विभेन मरिष्यसि	१०५
भूयेम शरदः शतम्	१२५	मा मां प्राणो हासीन्मो	१८३०
मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां	४२४	मा वनि मा वाचं नो	१७८२
मधुमती स्थ मधुमती	१८१७	मा वो रिषत् खनिता	३२०
मधुमन्मे निष्क्रमणं	४८०	मा सं वृत्तो मोप सप	१३६९
मधुमन्मूलं मधुमदप्रमासां	३३५	मा र्मेतान्सखीन् कुरुथा	५४१

मित्र एनं वरुणो वा	२
मित्रश्च त्वा वरुणश्च	६११
मित्रावरुणा परि माम्	२०९५
मुञ्चन्तु मा शपथ्याद् ३१६, ३५३, १७४०, १७६२	
मुञ्च शीर्षक्या उत कासः	१९०
मुञ्चामि त्वा वैश्वानराद्	१६५७
मुञ्चामि त्वा हविषा	७२, २०५
मुमुचाना ओषधयो	३३९
मुहुर्गृध्रैः प्र वदति	२५४
मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१८२२
मृण दर्भं सपत्नान् मे	१५२६
मृत्युरीशे द्विपदां	४२
मृत्योः पदं योपयन्त	२४६
मेदस्वता यजमानाः	१७२६
मेघां सायं मेघां प्रातः	१४२३
मेघामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं	१४२०
मेमं प्राणो हासीन्मो	१४६
मेहनाद्वनंकरणात्	१६६
मैतं पन्थामनु गा भीम	१५
मैनमग्ने वि दहो मामि	२०२८
मोघमघं विन्दते अपचेताः	२३१६
म्रोको मनोहा खनो निः	१८०५
य आत्मानमतिमात्रमंस	१३६९
य आध्राय चकमानाय	२३१२
य आमं मांसमदन्ति	१३८९
य आशानामाशापालाः	१६५९
य आस्ते यश्चरति यश्च	६१७
य इह पितरो जीवा	२२३७
य उग्रीणामुग्रबाहुर्गुः	१६२३
य उदानङ् व्ययनं	८९७
य उभाभ्यां प्रहरसि	८५२
य ऊरू अनुसर्पति	२७८
य ऋणवो देवकृता	१५६५
य एनं परिषीदन्ति	१५०
यं याचाम्यहं वाचा	१७८१
यं वां पिता पचति यं	१२७६

यः कीकसाः प्रशृणाति	५०९
यः कृणोति प्रमोतम्	२७५
यः कृणोति मृतवत्साम्	१३७१
यः कृत्याकृन्मूलकृद्	१७१८
यः कृष्णः केयसुर	१३७१
यः परुषः पारुषेयो	५३३
यः प्रथमः कर्मकृत्याय	१६२७
यः प्रथमः प्रवतमाससाद	१५८४
यः संग्रामाजयति सं युधे	१६९८
यं कुमार नवं रथम्	१९८२
यं कुमार प्रावर्तयो	१९८३
यच्चक्षुषा मनसा यच्च	३५४
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे	२२८०
यज्जाग्रद् यत् सुप्तो	१८६५
यज्ञ एति विततः कल्पमानः	२१६३
यज्ञं दुद्धानं सदमित् प्रपीनं	१२६२
यज्ञं ब्रूमो यजमानम्	१७४७
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिमुखं	२२५३
यतो दष्टं यतो धीतं	८५४
यत् किं चेदं वरुण दैव्ये	१७८२
यत् कृषते यद् वयुते	२५२
यत् क्षुरेण मर्चयता	४३
यत् ते आत्मनि तन्वां	६७५
यत् ते अङ्गमतिहितं	२०५०
यत् ते अपोदकं विषं	८३५
यत् ते दर्भं जराश्रुतुः	१५३२
यत् ते निधानं रजसं	३६
यत् ते पितृभ्यो ददतो	१६२६
यत् ते माता यत् ते पिता	१०२
यत् ते रिष्टं यत् ते युत्तम्	४२२
यत् ते वासः परिधानं	४२
यत् ते सोम गवाशिरो	१११६
यत् त्वं शीतोऽथो रुरः	५४०
यत् त्वा कुद्धाः प्रचकुः	२२१
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः	९९
यत् त्वा शिक्वः पराव०	१४८०
यत् पर्जन्य कनिकदत्	९८२

यत् प्रेषिता वरुणेन	९२१	यथा वृत्र इमा आपः	१८४
यत्र नावप्रभ्रंशनं	४५४	यथासितः प्रथयते वशौ	१३४०
यत्र वः प्रेक्षा हरिता	७१९	यथा सूर्यस्य रश्मयः	४८८
यत्राश्वत्था न्यग्रोधा	७१८	यथा सूर्यो अतिभाति	१४६९
यत्रैषामग्ने जनिमानि	७३०	यथा सूर्यो मुच्यते तमसः	१६४७
यत्रौषधीः समगमत	३०६	यथा सो अस्य परिधिः	७४०
यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत्	१५३६	यथा स्म ते विरोहतो	१३३४
यत् स्वप्ने अन्नमश्राभि	६३७	यथा हव्यं वहसि जातवेदो	१६८६
यथा कलां यथा शफं	६३५, १९१३	यथाहान्यनुपूर्वं भवति	२४१
यथाग्ने त्वं वनस्पते	१५४५	यथेयं पृथिवी मही दाधार	१३६३-६५
यथा त्वमुत्तरोऽसो	१५७८	यथेहं पृथिवी मही भूतानां	१३४७, १३६२
यथा देवेष्वमृतं यथा	१४७७	यथेषुका परापतद्	५७९
यथा वा च पृथिवी च	६६७	यथोदकमपपुषो	६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य	६८१	यदक्षेष्टु वद। यत् समित्यां	१३२३
यथा नहं कशिपुने	५०२	यदमिरापो अदहत् प्रविश्य	५१५
यथा पसस्तायादरं	१३४१	यदग्ने तपसा तपः	१९२१
यथा बाणः सुसंशितं	४८७	यदग्ने यानि कानि	११७
यथा बीजमुर्वरायां	१५१०	यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्याम्	८२९
यथाभवदनुदेयी ततो	१९८५	यदङ्ग त्वा भरताः संतेरयुः	१०३२
यथा भूमिर्मृतमना	६८३	यददः संप्रयतीरहा०	९२०
यथा मनो मनस्केतैः	४८६	यददीव्यन्मृणमहं कृणोमि	१६७३
यथा यमाय हर्म्यम्	२२०५	यददोअदो अभ्यगच्छन्	१८६४
यथा यशः कन्यायां	१४७२	यददो देवा असुरान्	३९९
यथा यशः पृथिव्यां	१४७१	यददो पितो अजगन्	१११४
यथा यशः प्रजापतौ	१४७६	यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं	१११९
यथा यशः सोमपीथे	१४७३	यदन्नमदम्यनृतेन देवा	११२१
यथा यशश्चन्द्रमसि	१४७०	यदपामोषधीनां परि०	१११५
यथा यशोऽभिहोत्रे	१४७४	यदभ्रासि यत् पिबसि	४५
यथा यशो यजमाने	१४७५	यदस्मासु दुष्पण्यं यद्	५२३
यथा वातः पुष्करिणीं	१४०१	यदस्य हतं विहृतं यत्	७४२
यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान्	१४६६	यदहरहरमिगच्छामि	१८६६
यथा वातश्चावयति	१६२८	यदाक्षन् त्रैककुलं	५८८
यथा वातेन प्रसीणा	१४६७	यदान्त्रेषु गवीन्योः	५७६
यथा वातो यथा मनो	१४१०	यदापो अघ्न्या इति	६१०, ११०३
यथा वातो यथा वनं	१४०२	यदाभ्रम् दास्यायणा	५९, २३३०
यथा वातो वनस्पतीन्	१४६५	यदाशसा निःशसाभिशासो	६२७
		यदाशसा वदतो मे विचुक्षुमे	१०८८

यदा शतं कृण्वो जातवेदो	२०२९	यद्यत् कृष्णः शकुनः	१२८४
यदासुतेः क्रियमाणायाः	१९७	यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः	५२६
यदि कर्तं पतित्वा संशश्रे	४२७	यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसो	६४९
यदि कामादपकामाद्	२७९	यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो	१२६६
यदि क्षितायुर्यदि वा	७३, २०६	यद्येकवृषोऽसि सृजारसो	६४९
यदि चतुर्वृषोऽसि सृजा०	६४५	यद्येकादशोऽसि सोऽसो	६५२
यदि जाग्रद् यदि स्वपणेन	१७२८	यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी	१६३९
यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसो	६४४	यद् रिप्रं शमलं चक्रम	२५६
यदि दशवृषोऽसि सृजा०	५५१	यद् वः सहः सहमाना	३२८
यदि द्विवृषोऽसि सृजा०	६४३	यद् विद्वांसो यदविद्वांसः	१७२७
यदि नववृषोऽसि सृजा०	६५०	यद् द्विपाच चतुष्पाच	१५४०
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते	६२८, ६३२	यद् वेद राजा वरुणो	१३५१
यदि पञ्चवृषोऽसि सृजा०	६४६	यद् वो अग्निरजहादेकं	२२१४
यदिमा वाजयज्ञहम्	३११	यद् वो देवा उपजीका	८०६
यदि वासि त्रैककुदं	५८९	यद् वो मुदं पितरः सोम्यं	२१०२
यदि वासि देवकृता	१५९७	यद् वो वयं प्रमिनाम	२२५५
यदि वृक्षादभ्यपपत्	९५७	यन्तासि यच्छसे हस्तौ	१३५२
यदि शोको यदि वाभि	५२७	यं ते मन्थं यमोदनं	२१९२
यदि षड्वृषोऽसि सृजा०	६४७	यं त्वमग्ने समदहस्तमु	२०८९
यदि सप्तवृषोऽसि सृजा०	६४८	यं त्वा वेद पूर्वं इक्ष्वाको	४५५
यदि स्त्री यदि वा पुमान्	१५९६	यं देवा पितरो मनुष्या	१५०९
यदि स्थ क्षेत्रियाणां	१६५२	यं द्विष्मो यच्च नो द्वेष्टि	१८४८
यदि स्थ तमसावृता	१६४५	यज्ञियानं न्ययनं	८९६
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः	१२६८	यन्मातली रथकीतम्	१७५६
यदीमेनो उद्यतो अभि	५९६	यन्मा हुतमहुतमाजगाम	११२०
यदुवक्थानृतं जिह्वया	१६५६	यन्मे अक्षयोरदिद्योत	२७२
यदेनसो मातृकृता०	१०१	यन्मे छिद्रं मनसो यच्च	१४११
यदेषामन्यो अन्यस्य	९९८	यन्मेदमभिषोचति येनयेन	१७१२
यद् दण्डेन यदिष्वा	४३१	यन्मे माता यन्मे पिता	१४६०
यद् दुद्रोहिथ क्षेपिषे	१००	यमः परोऽवरो विवस्त्रान्	२०५६
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां	१६२५	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो	१४९९-१५०१
यद् दुष्कृतं यच्छमलं	४०५	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं	१४८३-८७
यद् देवा देवहेडनं	१७९४	यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वीताय	१४८८-९४
यद् प्राचीरजगन्तोरो	२३३८	यमराते पुरोधस्ते पुरुषं	१७७८
यद् ब्रह्मभिर्यदृषिभिः	८४७	यमस्य मा यम्यं कामः	१९६०
यद्यग्निः ऋष्याद् यदि	२२०	यमस्य लोकादध्या बभूविथ	१९०७
यद्यज्याया पचति त्वत्	१३१०		

यमाय घृतवत् पयो	२०२७	यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते	१३७३
यमाय घृतवद्धविः	१९७७	यस्त्वोवाच परेहीति	१६२२
यमाय पितृमते स्वधा	२२२४	यस्मिन्समुद्रो द्यौर्भूमिः	११४६
यमाय मधुमत्तमं	१९७८, २०२६	यस्मिन् देवा अमृजत	२३३
यमाय सोमं सुनुत	१९७६	यस्मिन् विश्वानि भुवनानि	९८८
यमाय सोमः पवते	२०२५	यस्मिन् वृक्ष सुपलाशे	१९८०
यमे इव यतमाने यदैतं	२२७६	यस्यै त्वा यज्ञवर्धन मणे	१५११
यमो नो गातुं प्रथमो	१९६९	यस्य क्रूरमभजन्त दुःकृतो	१९११
यं परिहृस्तमभिभः	१३६१	यस्य जुष्टि सोमिनः	१६९६
यं ब्राह्मणे निदधे यं च	१२०१	यस्य ते वासः प्रथमवास्यं	२३३५
ययो रथः सत्यवर्त्मजुरदिमः	१७२६	यस्य देवा अकल्पन्त	११४७
ययो रभ्यन्व उत यद् दूरे	१७१४	यस्य भीमः प्रतीकाशः	२७७
ययोर्विधाक्षापपद्यते कश्चन	१७१७	यस्य वशास ऋषभासः	१६९५
ययोः संख्याता वरिमा	१७००	यस्य व्रतं पशधो यन्ति	१०४९
यश्चकार न शशाक कर्तुं	३९३, १६१४	यस्य व्रते पृथिवी ननमीति	९७८
यश्चकार स निष्करत्	८४	यस्य हेतोः प्रच्यवते	२७४
यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वविद्	१६९४	यस्या अनन्तो अहृतः	१०६६
यश्च सापत्नः शपथो	६६९	यस्याजन प्रसर्पसि	५८३
यस्त आस्यत् पन्नाङ्गुरिः	७९३	यस्यास्त आसनि घोरे	१७९०
यस्त ऊरू विहरति	१३९६	यस्येदं प्रदिशि यद्	१६९१
यस्ते केशोऽवपद्यते	४६२	यस्यौषधीः प्रसर्पथ	३१२
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा	१३९४	या अन्वेद्युहभययुः	५३०
यस्ते गर्भं प्रतिशृणात्	१३८४	या आपो दिव्या उत	८७६
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति	८९०	या ओषधयः सोमराज्ञीः	३५२
यस्ते द्रप्सः स्कन्धो यस्ते	८९१	या ओषधीः पूर्वा जाता	३०१
यस्ते पल्लवि संदधौ	१६२३	या ओषधीः सोमराज्ञीर्वर्द्धाः	३१८
यस्ते पृथु स्तनयित्नुयः	१०८७	या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्टिताः	३१९
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो	४७१	याः कृत्वा आङ्गिरसीयाः	१४३९
यस्ते स्तनः शशयुर्यो	१०८६	याः पार्श्वे उपर्षन्ति	२८६
यस्ते स्तनः शशयो यो	१०५४	याः प्रवतो निवत उद्धतः	१०३५
यस्ते हन्ति पतयन्तं	१३९५	याः फलिनीर्या अफला	३१५
यस्त्वा कृत्याभिर्गस्त्वा	१४४५	याः सीमानं विरुजन्ति	२८४
यस्त्वा देवि सरस्वति	१०६३	याः सुपर्णा आङ्गिरसीः	३४७
यस्त्वा पिबति जीवति	४२२	याः सूर्यो रश्मिभिराततान	८७४
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा	१३९७	या युदा अनुसर्पन्ति	२८८
यस्त्वा स्वपन्ती त्वरति	१३७४	या गृत्स्यन्निपन्नाशीः	१५५२
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	१३९८	या ग्रैव्या अपन्ति	५०८

यां कल्पयन्ति वह्नौ	१६१६
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति	३६३
यां जमदग्निरखनद्	४६३
यातुधानस्य सोमप	७२९
या ते धामान्युदमसि	२२७०
या देवीः पञ्च प्रदिशो	१७५५
या नः दीपरदक्षिना	१४१४
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः	१६११
यां ते चक्रुः कृकवाकावजे	१६०५
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे	१६१२
यां ते चक्रुः सभायां	१६०९
यां ते चक्रुर्मूलायां	१६०७
यां ते चक्रुरामे पात्रे	३८३, १६०४
यां ते चक्रुरेकशफे	१६०६
यां ते चक्रुर्गर्हिपस्ये	१६०८
यां ते चक्रुः सेनायां	१६१०
यां ते धेनुं निपृणामि	२०५४
यां ते बर्हिषि यां इमशाने	१६३३
यां ते रुद्र इषुमास्यद्	६२०
यां त्वा गन्धर्वो अखनद्	१३३२
यान् वो नरो देवयन्तो	२२६४
या पूर्वं पतिं विस्वाथ	१२०९
या बभ्रवो याश्च शुक्रा	३२४
याभिः सोमो मोदते	९०५
या मज्ज्ञो निर्धयन्ति	२८९
याम्न्यामन्तुपयुक्तं वहिष्ठं	१६८७
या महती महोन्माना	१७८५
यामृषयो भूतकृतो	१४२२
यां मेघामृभवो विदुर्या	१४२१
या रोहन्त्याङ्गिरसीः	३४०
या रोहिणीर्देवत्याः	४९१
यावङ्गिरसमवथो यावगस्ति	१७२२
यावतीः कियतीश्वेमाः	३३६
यावती यावापृथिवी वरिष्णा	७९१
यावतीनामोषधीनां गावः	३४८
यावतीषु मनुष्या भेषजं	३४९
यावदङ्गीनं पारस्वतं	१३४२

३२ दै. [आयुर्वेद०]

यावद् दाताभिमनस्येत	११५१
यावन्तो अस्याः पृथिवीं	१३११
यावारेभाथे बहु साकम्	१७१६
या शशाप शपनेन	३८२, ७३६
याश्चाहं वेद वीरुथो	३४१
याश्चेदमुपशृण्वन्ति	३२१
यासां राजा वरुणो याति	८७७, ९१७
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति	९१८
यासु राजा वरुणो यासु	८७८
यास्तिरश्वीरुपर्षन्ति	२८७
यास्ते धाना अनुकिरामि	२१४६, २१७६, २१९३
यास्ते शतं धमनयो	६२१
यास्ते शोचयो रंहयो	२०३३
या हृदयमुपर्षन्ति	२८५
युजे वां ब्रह्म पूर्य	२२७५
युनक्तु देवः सविता प्रजानन्	१९३८
युवा सुवासाः परिवीत आगात्	२२६२
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये	९३८
यूयमग्ने शंतमामिस्तनूभिः	२१६०
ये अस्या ये अङ्गथा	७८०
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां	८३०
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा	२०००, २०५२
ये अग्रवः शशमानाः परेयुः	२०७१
ये अङ्गानि मदयन्ति	२९०
ये अत्रयो अङ्गिरसो नवगवा	२१०३
ये अपीषन् ये अदिहन्	७२६
ये अमृतं बिभृथो ये हवींषि	१७०९
ये अम्रो जातान् मारयन्ति	१३८५
ये उस्त्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन्	१७१०
ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन	१७११
ये कुकुन्धाः कुकुरभाः	१३७७
ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु	६९५
ये क्रिमयः शितिकक्षा	७००
ये च जीवा ये च मृता	२२०७
ये चित् पूर्वं ऋतसाता	२०३९
ये चेह पितरो ये च नेह	१९९९
ये तातृषुर्देवता जहमाना	१९९५, २१३०

ये ते नाब्यौ देवकृते	५०१	ये सत्यासो हविरदो	१९९६, २१३१
ये ते पूर्वे परागता	२१४९	ये सूर्यं न तितिक्षन्त	१३७८
ये ते सरस्व ऊर्मयो	१०४७	ये सूर्यात् परिसर्पन्ति	१३९०
येऽत्र पितरः पितरो	२२३६	येऽस्माकं पितरस्तेषां	२२१८
ये त्रयः कालकाजा	१५८९	ये स्नाकर्यं मणिं जना	१४३७
ये त्रिषप्ताः परियन्ति	१४१५	यो अक्ष्यो परिसर्पति	६९८
ये त्वा कृत्वालोभिरे	१६२४	यो अग्निः कव्यात् प्रविवेका	२२३
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा	२०५२	यो अङ्गयो यः कर्ण्यो	१८७
ये देवा दिविषदो	१७४५	यो अप्रतो रोचनानां	१४२५
ये देवा दिवि छ ये पृथिव्यां	५७	यो अनिध्मा दीदयदप्स्वन्तर्यं	९०४
ये देवानामृत्विजो ये च	२२५४	यो अन्तरिक्षेण पतति	७६२
येन ऋषयो बलमद्योतयन्	१६८९	यो अस्य समिधं वेद	१५२
येन कृशं वाजयन्ति	१३४४	योगक्षेमं व आदाय	२३४५
येन देवा अमृतमन्वविन्दन्	१६९०	यो गर्भमोपधीनां	९९२
येन देवा असुराणाम्	७६५	यो गिरिष्वजायया	४३७
येन देवा ज्योतिषा याम्	१२६५	यो जायमानः पृथिवीम्	१९३१
ये नः पितुः पितरो ये	२०७३, २१२९, २१३७	यो दध्रे अन्तरिक्षे न मद्वा	२१४१
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो	१९९४	यो देवाः कृत्यां कृत्वा	३८९
येन सोम साहन्त्यासुरान्	७६४	यो न जीगेऽसि न मृतो	६३३
येन सोमादितिः पथा	७६३	यो न पाप्मन् न जहासि	१७७१
येना श्रवस्यवक्षरथ	१८००	यो न शपादवापतः	१७७५, १७७६
येना सहस्रं बहसि	११९९	यो नो अग्निः पितरो हस्तु	२४९
ये निष्ठाता ये परोता	२०५८	यो नो अग्निर्गाह्यपथः	१५३८
ये पूर्वे बभूवो यन्ति	१३८०	यो नो अश्वेषु वीरेषु	२३१
येभिः पाशैः परिवित्तो	१६७२	योऽप्समिरति तं सृजामि	१८०९
ये मृत्यव एकशतं	५३	यो ममार प्रथमो मर्त्यानां	२०९६
ये यक्ष्मासो अर्भका	१५६८	यो मे राजन् युज्यो वा	६२४
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	२०४१	यो यजाति यजात इत्	२२४०
ये वध्यन्तं बहत्	२३३६	यो व आपोऽमिराविवेश	१८१०
येवाषासः कृष्णपासः	७०२	यो वर्धन ओषधीनां	९८६
ये वृक्णासो अधि क्षमि	२२६५	यो वः शिषतमो रसः	८८०
ये वो देवाः पितरो ये च	५६	यो वा अमिधुवं नामर्तु	१२१८
ये शालाः परितृष्यन्ति	१३७६	यो वा उद्यन्तं नामर्तु	१२१७
येऽभ्रदा धनकाम्या	२६७	यो वै कुर्वन्तं नामर्तु	१२१४
येषां पश्चात् प्रपदानि	१३८१	यो वै नैदाघं नामर्तु	१२१३
येषां प्रयाजा उत वायुयाजा	५८	यो वै पिन्बन्तं नामर्तु	१२१६
		यो वै संयन्तं नामर्तु	१२१५

यो वो वृताभ्यो अकृणोदु	९०७
योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा	१८६०
यो हरिमा जायान्यो	६०३
यौ ते दूतौ निर्ऋत इदम्	१५८६
यौ ते बलास तिष्ठतः	१८६
यौ ते मातोन्ममार्ज	१३६७
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ	२०३६
यौ भरद्वाजमवथो यौ	१७२४
यौ मेधातिथिमवथो यौ	१७२५
यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः	१५९
यौ श्यावाश्वमवथो वच्यश्वा	१७२३
रक्षन्तु त्वामयो ये अप्सवन्ता	१६
रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्	९७६
रमध्वं मे वचसे सोम्याय	१०२६
रथि मे पोषं सवितोत वायुः	१७०३
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्	१९६२
रात्री माता नभः पिता	४२८
रिदयपदीं वृषदतीं	६७६
रिदयस्येव परोशासं	१५२३
रुजन् परिरुजन् मृणन्	१८०४
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्ठा	१८२३
रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य नाभिः	५६१
रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत्	७३२
रुन्धि दर्भं सपत्नान् मे	१५२५
रुपरूपं वयोवयः	२२४८
रेवतीरनाश्रुषः सिषाधवः	४५९
रोहण्यसि रोहणी	४२१
रोहिम शरदः शतम्	१२२
लोम लोम्रा सं कल्पया	४२५
वध्नयस्ते खनितारो	७९७
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैः	३७२
वनस्पतिः सह देवैर्न आगन्	१२८६
वनस्पतेऽव सृजा रराणः	३७४
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिः	१३०४
वरणेन प्रव्यथिता	१४६१
वरणो वारयाता अयं	१८२, १४५७

वराहो वेद वीरुधं	३४६
वर्चसा मां समनक्त्वभिर्मेधां	२०९४
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो	२०९३
वर्चसो यावापृथिवी संप्रहणी	१२५१
वर्म मद्यमयं मणिः	१४७९
वर्म मे यावापृथिवी	१४४८
वर्ष वनुष्वापि गच्छ देवान्	१३२४
वषट् ते पूषन्नस्मिन्सूतौ	१४०५
वसोर्या घारा मधुना प्रपीना	१३१२
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो	१९०५
वाङ् म आसन्नसोः प्राणः	१५७
वाजः पुरस्तादुत मध्यतो	३६१
वाजो नः सप्त प्रदिशः	३५९
वाजो नो अय प्रसुवाति	३६०
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि	१६३२
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्	१४२४
वातात् ते प्राणमविदं	२९
वातं ब्रूमः पर्जन्यम्	१७३९
वायोः पूतः पवित्रेण	१७८७
वायोः सवितुर्विदधानि	१६२९
वारिदं वारयातै	७९८
वि ग्राम्याः पशव आरण्यैः	१७०
वि जिह्वाष्व बार्हत्सामे	१३५४
वि जिह्वाष्व वनस्पते	१३२९
वि ते भिनन्नि मेहनं	१४०९
वि ते मदं मदावति	८०१
वि ते मुञ्चामि रशनां	१६८०
वि ते हनव्या शरणि	६४१
वि देवा जरसावृतन्	१६८
विद्य ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद्	१९१२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं प्राद्याः	१८३५
विद्य ते स्वप्न जनित्रं देवजाभीनां	६३४, १८४२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः	१८३८
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः	१८४०
विद्य ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः	१८३९
विद्य ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः	१८४१
विद्य वै ते जायान्य जानं	५११

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं	५७४
विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं	५७१, ६६४
विद्या शरस्य पितरं मित्रं	५७२
विद्या शरस्य पितरं वरुणं	५७३
विद्या शरस्य पितरं सूर्यं	५७५
विद्रघस्य बलासस्य	१८५
विध्य दर्भ सपत्नान् मे	१५२२
विध्याम्यासां प्रथमाः	५०४
विभिन्दती शतशाखा	४००
विमोक्तश्च मार्द्रपविश्व मा	१८२५
वि लपन्तु यातुधाना	७६९
विवस्वान् नो अभयं कृणोतु	२१३९
विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु	२१४०
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति	९७५
विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमि	७१०
विश्वरूपां सुभगाम्	४०९
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्	१२९०
विश्वान् देवानिदं ब्रूमः	१७५२
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ	२०९९
विश्वे देवा मरुत इन्द्रो	८९
विश्वे देवा वसवो रक्षते०	५५
विधितं ते वास्तबिलं	५७८
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति	१२२३, १२२४
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपोसि	१९४२
विष्णुर्योनिं कल्पयतु	१३५०
विष्णोः शर्मासि शर्म	१२७१
विष्वक्स्तस्माद् यक्ष्मा	२०३
विस्रल्पस्य विद्रघस्य	२९१
विहङ्को नाम ते पिता	४६७
वीदं मध्यमवासुपद्	६०८
वीमां मात्रां मिमीमहे	२०६५
वीमे यावापृथिवी इतो	१७१
वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो	५१६
वृक्षं यद् गावः परिष्वजाना	६६६
वृक्षेवृक्षमा रोहसि वृष०	४३०
वृत्रस्यासि कनीनकः	६१२
वृक्ष दर्भ सपत्नान् मे	१५१९

वृषभोऽसि स्वर्गं ऋषीन्	१२६३
वृषा मर्तानां पवने विचक्षणः	२२०८
वृषा मे रवो नभसा न	८३६
वृषा वो अंशुर्न किला	२३०२
वृष्ण ऊर्मिरासि राष्ट्रदा	१०९४
वैयाम्रो मणिर्वीर्या	३३७
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं	१२६७
वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं	२४४
वैश्वानरः पविता मा पुनातु	१६७५
वैश्वानरस्यैनं षण्मयोः	१८५८
वैश्वानराय प्रति वेद्यामि	१६७४
वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि	२१८५
व्यवात् ते ज्योतिरभूद्	२६
व्याकरोमि हविषाहमेतौ	२४८
व्याघ्रेऽहयजनिष्ठ वीरो	८७
व्यात्यां पवमानो वि	१६९
व्रजं कृणुध्वं स हि वो	२२५२
व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो	५०६
व्रीहिमतं यवमतम्	१६०
शक्रवरी स्थ पशवो	१८३४
शङ्खेनामीवाममतिं	१४२६
शं च नो मयश्च नो	८६२
शणश्च मा जज्ञिउश्च	७०
शतं या भेषजानि ते	५६०
शतं वीरानजनयच्छतं	१५६९
शतं वो अम्भ धामानि	३०२
शतकाण्डो दुश्च्यवनः	१९२३
शतं च न प्रहरन्तो	१५७४
शतं च मे सहस्रं च	६६३
शतं जीव शरदो वर्धमानः	७५, २०८
शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं	२१७९
शतं ते दर्भं वर्माणि	१५३३
शतं तेऽयुतं दायनान्	४७
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीः	८७३
शतमहं दुर्णीज्जीनां	१५७१
शतवारो अनीनशद् यक्ष्मान्	१५६६

शतस्य यमनीनां	५५७	शुम्भनी द्यावापृथिवी	१७६८
शतेन मा परि पाहि	४०३	शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना	२२१७
शं त आपो धन्वन्याः	९२९	शुष्यतु मयि ते हृदयम्	६७८
शं त आपो हैमवतीः	९२८	शूद्रकृता राजकृता	१६१८
शं तप माति तपो अमे	२०६०	शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां सं दहश्रे	२२६८
शं ते अग्निः सहाङ्गिरस्तु	१६६३	शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते	१५६७
शं ते नीहारो भवतु	२१३८	शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु	१२५३
शं ते वातो अन्तरिक्षे	१६६४	श्याममयोऽस्य मांसानि	११३३
शं न आपो धन्वन्याः	९६४	श्यामश्च त्वा मा शबलः	१४
शं नो देवी पृश्निपण्यशं	४१६	श्यामा सरूपं करणी	५२४
शं नो देवीभिरष्टय	८८२	श्यावदता कुनखिना	४०६
शं नो भवन्त्वप	५७०	श्राम्यतः पचतो विद्धि	१२५८
शं नो वातो वातु	६३८	श्रेष्ठमसि भेषजानां	४५८
शप्तारमेतु शपथो यः	६७२	श्वेवैकः कपिरिवैकः	७२५
शममयः समिद्धा आ	२१६२	षट् च मे षष्टिश्च मे	६५८
शममे पश्चात् तप शं	२१६१	षष्ठ्यां शरस्तु निषिपा	१३०५
शमिता नो वनस्पतिः	३७३	स इन्द्रो जो यो गृहवे	२३१३
शं मे परस्मै गात्राय	१९१	स इद् व्याघ्रो भवत्यथो	१४४२
शरदे त्वा हेमन्ताय	४८	स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव	४२६
शरासः कुशरासो	७७६	संयतं न वि षपरद्	८१५
शर्म यच्छत्वोषधिः	४०८	सं राजानो अगुः समृणानि	१९१४
शल्यद् विषं निरवोचं	७२४	सं वः सृजत्वर्थमा	२३२१
शिवः कपोत इषितो	१५८०	संवत्सरं शशयाना	९९४, १०१६
शिवा नः शंतमा भव	१०९२	संवन्तीं समुष्पला	६७९
शिवानमोनप्सुषदो हवामहे	१८१५	सं विशन्तिवह पितरः	२०५३
शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयामि	९६	सं वो गोष्ठेन सुषदा	२३२०
शिवास्ते सन्त्वोषधय उत	४१	सं वोऽवन्तु सुदानव	१०१०
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी	४०	सं सं स्रवन्तु नद्यः	२२४६
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः	९१९, १८१४	सं हि शीर्षाण्यग्रभं	८२६
शिवो वो गोष्ठो भवतु	२३२४	स ग्राह्याः पाशान्मा मोचि	१८७१
शिवो ते स्तां ब्रीहियवौ	४४	संकुको विकुको	२१०
शीर्षां किं शीर्षामयं	२७२	सं कामतं मा जहीतं शरीरं	१४४
शीर्षवती नस्वती कर्णिनी	१६१७	संख्याता स्तोकाः पृथिवीं	१२९९
शीर्षलोकं तृतीयकं	४५६	सं गच्छस्व पितृभिः सं	१९७४, ११३६
शीर्षामयमुपहत्याम्	४४६	सचेतसौ ब्रह्मणो यौ	१७२१
शुकेषु ते हरिमाणं	४९२, ५४६	स जज्ञिदस्य महिमा	१५५५
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया	१२४५, १२५५		

संजग्माना अविभ्युषीः
 संजीवा स्थ सं जीव्यासं
 सत्यजितं शपथयावनीं
 सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं
 सत्याय च तपसे देवताभ्यो
 स नः सिन्धुमिव नावाति
 सनादग्ने मृणसि यातुधानान्
 स नो रक्षतु जङ्घिडो
 सं ते मज्जा मज्जा भवतु
 सं ते शीर्ष्णः कपालानि
 सं ते हन्मि दत्ता दतः
 सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वान्
 सपत्नक्षयणं दर्भं द्विषतः
 सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते
 सप्त च मे सप्ततिश्च मे
 सप्त च याः सप्ततिश्च
 सप्त मेघान् पशवः पर्यगृह्णन्
 सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूयो
 समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य
 समं ज्योतिः सूर्येण
 समस्मिंल्लोके समु देवयाने
 समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यमे
 स मा जीवीत् तं प्राणो
 समानलोको भवति
 समानां मासामृतमिष्ट्वा वयं
 समाप ओषधीभिः सम्
 समाहर जातवेदो
 समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद्
 समिद्धो अग्न आहुत
 समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व
 समिन्धते अमर्त्यं
 समिन्धते संकसुकं स्वस्तये
 समिमां मात्रां मिमीमहे
 समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवो
 समीक्षयस्व गायतो नभसि
 समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः
 समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्

२३२२
 ९३५
 ३८१
 १२०३
 १३१७
 १७६४
 ७४८
 १५६२
 ४२३
 २९३
 ८५१
 १९३२
 १५३५
 १०८९, २२७९
 ६५२
 १६८३
 १२८७
 १७४४
 १३२१
 ३८८
 १२७४
 १२६४
 १८६८
 १२१०
 ६२
 ९३९
 ७४९
 २२६०
 २३४
 १२३२
 २१९१
 २२७
 २०६८
 १००५
 १००६
 १००४
 ८७५

समुद्रस्य त्वा क्षित्या
 समुद्राज्जातो मणिः
 समुद्रे ते हृदयमास्वन्तः
 स गृह्योः पृथ्वाशान् पाशान्मा
 समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः
 सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन
 सं माग्ने वचसा सृज
 सं मा सिञ्चन्तु मरुतः
 स य एवं विदुष उपद्रष्टा
 स य ओदनस्य महिमानं
 सरस्वति त्वमस्मिं अविर्भू
 सरस्वति देवानिदो नि बह्व्य
 सरस्वति या सरथं ययाध १०८४, २००९, २१९७
 सरस्वति व्रतेषु ते
 सरस्वती यां पितरो हवन्ते
 सरस्वती देवयन्तो हवन्ते १०८३, २००७, २१९५
 सरस्वतीमनुमतिं भगं
 सरस्वतीं पितरो हवन्ते २००८, २१९६
 सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो
 सरूपा नाम ते माता
 सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ
 स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां
 सर्वाः समग्रा ओषधीः
 सर्वानग्ने सहमानः सपत्नान्
 सर्वान्समागा अग्निजिरय
 सर्वान् देवानिदं ब्रूमः
 सर्वेषां च किमीणां
 सर्वो वै तत्र जीवति
 स वावृधे नर्यो योषणासु
 सवितः श्रेष्ठेन रूपेण
 सवितुर्बः प्रसव उत्पुनामि ९३७, ९४०, १०९७
 सलुषीस्तदपसो दिवा
 सहमानेयं प्रथमा
 सहस्रणीथाः कवयो
 सहस्रधामन् विशिखान्
 सहस्रधारे शतधारमुत्समक्षितं
 सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो

९५४
 १४२८
 ११०४
 १९००
 २३१९
 २२७४
 ९६०
 १४२
 ११८०
 ११४९
 १०५५
 १०६१
 १०८४, २००९, २१९७
 १०९०
 १०८५
 १०८३, २००७, २१९५
 १७८०
 २००८, २१९६
 १०७२
 ५२३
 ६९९
 ९९०
 ३४२
 २६२
 १३०७
 १७५३
 ७०८
 ५१
 १०४५
 १३५७
 ९३७, ९४०, १०९७
 ९६८
 ४१७
 २०४२
 ३९१
 २१८६
 १२४८

सहस्रशृङ्गो वृषभो	६१३
सहस्राक्षेण शतवीर्येण	७४, २०७
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवे	१७१५
सहस्रार्घः शतकाण्डः	१९३३
सहस्र नो अभिमाति	१९२८
साकं यक्ष्म प्र पत	३१३
साकं सजातैः पयसा सह	१२३५
सा नो विश्वा अति द्विषः	१०६७
सिंहस्येव स्तनयोः सं	३३८
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः	९७३
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युता	६०६
सिलाची नाम कानीनो	४३५
सीताः पशवः सिकता	११३८
सीसे मलं सादयित्वा	२३६
सीसे मृड्ढं नडे मृड्ढ्वं	२३५
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो	२१०५
सुक्षेत्रिया सुगातुया	१७५८
सुखं रथं युयुजे सिन्धुः	१०४४
सुजातं जातवेदसम्	१६८८
सुते अच्वरे अधि वाचमकत	२३०६
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो	२२९१
सुपर्णसुवने गिरौ	४३८
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान्	७९२
सुपर्णस्त्वान्वविन्दत्	१५९१
सुपर्णा वाचमकतोप दधि	२२९७, २३२६
सुपर्णो जातः प्रथमः	५२१
सुयामंश्चाक्षुष	१८६२
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा	१८२०
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ	१८१९
सूयवसाद् भगवती हि	१९२०
सूर्यं चक्षुषा गच्छ	२०३१
सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा	१०९६
सूर्यमृतं तमसो ग्राह्याः	१६६९
सूर्ये विषमा सजामि	७८३
सूर्यो माहः पात्वग्निः	१८३१
सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं	१४०७
सोम एकेभ्यः पवते	२०३८

सोमं मन्यते पपिवान्	४७५
सोम राजन्तसंज्ञानमा	१२५४
सोमस्येव जातवेदो	७५०
सोमाय पितृमते स्वधा	२२२२
सोमारुद्रा युवमेतानि	१७३१
सोमारुद्रा वि बृहतं	१७३०
सोमेनादित्या बलिनः	४७४
सोमो मा विश्वैर्देवैस्वीच्या	२१११
सोमो मा सौम्येनावतु	५९९
सोमो राजाधिपा मृडिता	१६३७
सोऽरिष्ट न मरिष्यसि	५०
स्तरिह त्वद् भर्वात सूते	९८७
स्तुवानमम आ बह	७६७
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२००६
स्तेगो न क्षामत्येषि	२००५
स्योनास्मै भव पृथिवि	२०४३
स्वाकत्येन मणिन ऋषिणा	१४३८
स्वधा पितृभ्यः पृथिवि	२२२८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्ष	२२२९
स्वधा पितृभ्यो दिवि	२२३०
स्वप्नु माता स्वप्नु पिता	६१८
स्वप्नं सुप्त्वा यदि	१४५८
स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन	६१९
स्वर्गं लोकमभि नो	१२८८
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा	१०४३
स्वस्तिदा विशां पतिः	१४५२
स्वस्ति मात्र उत पित्रे	१६६१
स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१८३३
स्वाकं मे द्यावापृथिवी	५९०
स्वादुष्किलार्थं मधुमौ	२०१४
स्वादो पितो मधो पितो	११०९
स्वायसा अस्यः सन्ति	१६३५
स्वासदसि सूषा अमृतो	१८२९
स्वासस्थे भवतमिन्दवे	२१२२
हंसा इव श्रेणिशो	२२६७
हतासो अस्य वैशसो	७०७, ७१३

हतास्तिरश्चिराजयो	८२०	हिरण्यवर्णा सुभगा	१७८६
हतो येवाषः किमीणां	७०३	हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे	४३४
हतो राजा किमीणाम्	७०६, ७१२	हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्य	४३३
हस्ताभ्यां दशशास्त्राभ्यां	५५४	हिरण्यशृङ्ग ऋषभः	१५७०
हरिणस्य रघुष्यदो	१९२	हिरण्यस्रगयं मणिः	१४८१
हरिमाणं ते अङ्गभ्यो	२८०	हिरण्यानामेकोऽसि	१४२९
हिनीता नो अध्वरं	९११	हृदयात् ते परि क्लोत्रो	२१२, २२६
हिमवतः प्र स्रवन्ति	९७१	हेतिः पक्षिणी न	१५८१
हिरण्ययाः पन्थानः	४४१	होता यक्षद् वनस्पतिमभि	२२७२
हिरण्ययी नौरचरद्	४११, ४४०, ४५३	होता यक्षद् वनस्पतिः	३७५, ३७६
हिरण्यवर्णाः शुचयः	९१६	ह्वयामि ते मनसा	२०४५

॥ आयुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ॥





दैवत-संहिता ।

(७)

रुद्रदेवता ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोनि
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१५, शक १८८०, सन् १९५८

(૨૫૬)

અધ્યાપક :

વસન્ત શ્રીપાદ સાતવલેકર, બી. એ.,

સ્વાધ્યાય-મંચલ, ભારત મુદ્રણાલય,

પોસ્ટ- ' સ્વાધ્યાય મંચલ (પારડી) '

પારડી (જિ. સુરત)

દ્વિતીય વાર

મૂલ્ય ૧.૭૫ ન. પૈસે

મુદ્રક :

વસન્ત શ્રીપાદ સાતવલેકર, બી. એ.,

સ્વાધ્યાય-મંચલ, ભારત મુદ્રણાલય,

પોસ્ટ- ' સ્વાધ્યાય-મંચલ (પારડી) '

પારડી (જિ. સુરત)



रुद्रदेवताका परिचय ।

‘रुद्र’ के विषयमें निरुक्तका मत ।

‘निघण्टु’ नामक वैदिक कोश में अ० ३।१६ में ‘स्तोतृनामौ’ में ‘रुद्र’ शब्दका निर्देश किया गया है। इससे ‘रुद्र’ शब्दका ‘स्तोता’ स्तुति करनेवाला, ऐसा अर्थ निघण्टुकार के मतसे है। इसलिये निघण्टुकारके मतानुसार ‘रुद्र’ शब्द मनुष्यवाचक ही प्रतीत होता है। परंतु निरुक्तकार यास्काचार्यने इस ‘रुद्र’ देवताका परिगणन मध्यस्थानीय देवगण (निरु० अ० १०।१) में किया है।

अथातो मध्यस्थाना देवताः ॥ १ ॥ रुद्रो रौतीति सतः रोरुयमाणो द्रवतीति वा, रोदयतेर्वा, ‘यदरुदत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति काठकम् ‘यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति हारिद्रविकम् ॥

(निरुक्त, दैवतकाण्ड १०।१।१-६)

“ अब मध्यम स्थान अर्थात् अन्तरिक्ष स्थानके देवोंका विचार करना है। ‘रु’ अर्थात् शब्द करना, इस अर्थका यह शब्द है, किंवा शब्द करता हुआ पिचलता है, ऐसा इसका अर्थ है। रौनेके कारण इसको रुद्र कहा है, ऐसा काठक और हारिद्रविक शाखा संप्रदायवालोंका मत है।” अर्थात् ‘रुद्र’ देवता अन्तरिक्षमें है। मेघोंमें रहकर यह गर्जनारूप शब्द करता है, और गर्जना करता हुआ, मेघोंको द्रवरूप बनाकर वृष्टि कराता है। काठक और हारिद्रविक शाखा-संप्रदाय-वालोंका मत ऐतिहासिक है; देखिए—

(१) स किल पितरं प्रजापतिमिषुणा विध्यन्त-
मनुशोचन्नरुदत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

(२) यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

(नि० भाष्य १०।१।६)

“ वह रुद्र अपने प्रजापति पिताको बाणसे बिद्ध करता हुआ देखकर रोया, इसलिये उसका नाम रुद्र हुआ। ” यह मत ऐतिहासिकोंका है। तथा—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयः ।

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।

.....इति ॥ (नि० १।१३)

“ एक मंत्र कहता है कि ‘एक ही रुद्र है, वह अ-द्वितीय है।’ परन्तु दूसरे मंत्रमें कहा है कि ‘पृथ्वीमें असंख्य और हजारों रुद्र हैं।’

इस विषय में निरुक्तकार कहते हैं—

तासां महाभाग्यादेकैकस्या अपि बहूनि नाम-
धेयानि भवन्ति ॥ १ ॥.....तत्र संस्थानैकत्वं
संभोगैकत्वं चोपेक्षितव्यम् । ॥

तत्रैतन्नरराष्ट्रमिव ॥ ५ ॥ (नि० दै. ७।२।५)

“ उन देवताओंमें एक-एक देवताका महत्त्व विशेष होनेके कारण एक-एक देवताके अनेक नाम होते हैं।.....परंतु उन का स्थानसे और भोगसे एकत्व देखना चाहिए। जैसा मनुष्योंका राष्ट्र ।”

अर्थात् एकएक देवताके विशेष गुणोंके कारण अनेक नाम हुआ करते हैं। नाम अनेक होनेपर भी भिन्न देवता नहीं होते हैं। अनेक शब्दोंसे एक ही देवताका बोध होता है। क्योंकि उनके स्थान और भोगकी एकता देखकर उनकी विविधतामें एकता देखनी चाहिए। जैसा राष्ट्रमें रंग-रूप-जातिके कारण अनेक प्रकारके लोभ होनेपर भी उन सबमें एक राष्ट्रीयत्व होता है, उसी प्रकार अनेक देवताओंके ‘स्थानके और भोगके एकत्व’ के कारण उन अनेकोंमें एकत्व मानना उचित है।

इसलिये यद्यपि किसी मंत्रमें ‘एक ही रुद्र है’ ऐसा वचन आया अथवा दूसरे किसी मंत्रमें ‘हजारों रुद्र हैं’ ऐसा विधान

आगया, तथापि इतनेसे ही उनमें भेद है, ऐसा नहीं सिद्ध होता । यह उक्त निरुक्तवचनोंका तात्पर्य है ।

निरुक्तकार और क्या क्या कहते हैं, यह पहिले यहाँ देखेंगे और पश्चात् अन्य मतोंका विचार करेंगे—

अग्निरपि रुद्र उच्यते ॥ (नि. १०।७।१)

“ अग्निको भी रुद्र कहते हैं । ” इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ अग्नि ’ ऐसा अर्थ यहाँ निरुक्तकारने दिया है ।

‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा, परमेश्वर ’ ऐसा अर्थ स्पष्टतापूर्वक यद्यपि निरुक्तकारने नहीं दिया, तथापि “ एक ही देवताके अनेक नाम देवताके महत्त्वके कारण हुआ करते हैं । ” ऐसा कहकर सूचित किया है कि परमात्माके अनेक नामोंमें ‘ रुद्र ’ भी एक नाम है; अर्थात् ‘ रुद्र ’ शब्दका परमेश्वरपर अर्थ भी हो सकता है ।

स्थानके एकत्वके कारण, भिन्न वर्णन होने पर भी, एकत्वकी कल्पना करनेकी सूचना निरुक्तकार यास्काचार्य पूर्वोक्त वचनमें देते हैं । सर्वव्यापक परमात्मा जैसा पृथ्वीपर है, वैसा ही अन्तरिक्षमें और ऊपर ब्रुलोकमें भी व्यापक होनेसे उसका स्थान सर्वत्र है; इसलिये सब स्थानके देवताओंके सब शब्द उस एक अद्वितीय महा देवताके वाचक हो सकते हैं । इस तर्कशालसे हम निरुक्तकारका भाव जान सकते हैं । यही भाव श्वेताश्वतर उपनिषद्में बिलकुल स्पष्ट है । देखिए—

रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी संमति ।

श्वेताश्वतर उपनिषद्में ‘ एक रुद्र है, ’ इस विषयमें निम्न मंत्र आया है—

एको ह रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्यद्भ्यांल्लोकानी-
शत ईशानीभिः । प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सं-
चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोपाः ॥ १ ॥ (श्वे. उ. ३।२)

यही मंत्र निरुक्तभाष्यकारने निम्न प्रकार दिया है—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयो रणे निघ्नन्
पृतनासु शत्रून् ॥ संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोप्ता प्रत्यङ् जनान्संचुकोचान्तकाले ॥

(नि. १।१४ दुर्गाचार्यटीका)

एक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे ॥ (तै. सं. १।८।६।१)

“ एक ही रुद्र है, दूसरा रुद्र नहीं है । वह शत्रुओंको युद्धमें पराजित करता है । सब भुवनोंको उत्पन्न करके, उस सब

विश्वका संरक्षण करता है और अन्तकालमें सबका संकोच (प्रलय) करता है । ”

ऊपर दिये हुए श्वेताश्वतर मंत्रका अर्थ—“ एक ही रुद्र है, वह किसी दूसरेकी सहायताकी अपेक्षा नहीं करता । वह अपनी शक्तियोंसे इन सब लोकोंको स्वाधीन रखता है । और प्रत्येक मनुष्यके अन्दर रहता है । यह संरक्षक प्रभु सब विश्वको उत्पन्न करने और पालन करनेके पश्चात् अन्तकालमें सबको संकुचित करता है । ” तथा—

**एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमांल्लोका-
नीशत ईशानीभिः ॥** (अथर्व-शिर. ५)

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणम् ॥ अथर्व-शिर. ५
**यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध
आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि चकल्ये
तस्मै रुद्राय नमोऽस्तुवन्नये ॥** (अथर्व-शिर. ६)

“ एक ही रुद्र है । वह किसी दूसरेकी सहायता नहीं चाहता । जो इन सब लोक-लोकान्तरोको अपनी शक्तियों द्वारा स्वाधीन रखता है । ‘ रुद्र ’ एक ही है ऐसा कहते हैं । वह शाश्वत और प्राचीन है । ” “ जो रुद्र अग्नि, जल, ओषधी, वनस्पति, आदिमें व्यापक है और जो इन सब भुवनोंको बनाता है, उस एक अद्वितीय तेजस्वी रुद्रके लिये नमस्कार है । ” तथा—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ४ ॥ (श्वेता. उ. ३।४)
यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स
नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ १२ ॥ (श्वेता. उ. ४।१२)

“ जो सब देवताओंको जन्म देता है, जो सर्व द्रष्टा और सब विश्वका अधिपति है, जिसने पहिले हिरण्यगर्भ को उत्पन्न किया था, वह एक प्रभु रुद्र हम सबको शुभ बुद्धि देवे । ”

इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दसे ‘ एक परमात्मा ’ का बोध उपनिषदोंमें लिया है । इससे सिद्ध है कि ‘ रुद्र ’ शब्द परमात्म-वाचक है । यद्यपि इस समयका कोई कोशकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा ’ ऐसा अर्थ नहीं देता, तथापि कृष्णयजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद्के उक्त वचन द्वारा उस शब्दका परमात्म-वाचक अर्थ निःसंदेह सिद्ध है ।

आगया, तथापि इतनेसे ही उनमें भेद है, ऐसा नहीं सिद्ध होता । यह उक्त निरुक्तवचनोंका तात्पर्य है ।

निरुक्तकार और क्या क्या कहते हैं, यह पहिले यहां देखेंगे और पश्चात् अन्य मतोंका विचार करेंगे—

अग्निरपि रुद्र उच्यते ॥ (नि. १०।७।२)

“ अग्निको भी रुद्र कहते हैं । ” इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ अग्नि ’ ऐसा अर्थ यहां निरुक्तकारने दिया है ।

‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा, परमेश्वर ’ ऐसा अर्थ स्पष्टतापूर्वक यद्यपि निरुक्तकारने नहीं दिया, तथापि ‘ एक ही देवताके अनेक नाम देवताके महत्त्वके कारण हुआ करते हैं । ’ ऐसा कहकर सूचित किया है कि परमात्माके अनेक नामोंमें ‘ रुद्र ’ भी एक नाम है; अर्थात् ‘ रुद्र ’ शब्दका परमेश्वरपर अर्थ भी हो सकता है ।

स्थानके एकत्वके कारण, भिन्न वर्णन होने पर भी, एकत्वकी कल्पना करनेकी सूचना निरुक्तकार यास्काचार्य पूर्वोक्त वचनमें देते हैं । सर्वव्यापक परमात्मा जैसा पृथ्वीपर है, वैसा ही अन्तरिक्षमें और ऊपर ब्रुलोकमें भी व्यापक होनेसे उसका स्थान सर्वत्र है; इसलिये सब स्थानके देवताओंके सब शब्द उस एक अद्वितीय महा देवताके वाचक हो सकते हैं । इस तर्कशास्त्रसे हम निरुक्तकारका भाव जान सकते हैं । यही भाव श्वेताश्वतर उपनिषद्में बिलकुल स्पष्ट है । देखिए—

रुद्रके विषयमें उपनिषद्कारोंकी संमति ।

श्वेताश्वतर उपनिषद्में ‘ एक रुद्र है, ’ इस विषयमें निम्न मंत्र आया है—

एको ह रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमांल्लोकानी-
शत ईशनीभिः । प्रत्यङ् जनान्तिष्ठति सं-
चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोपाः ॥ २ ॥ (खे. उ. ३।२)

यही मंत्र निरुक्तभाष्यकारने निम्न प्रकार दिया है—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयो रणे निघ्नन्
पृतनासु शत्रून् ॥ संसृज्य विश्वा भुवनानि
गोप्ता प्रत्यङ् जनान्संचुकोचान्तकाले ॥

(नि. १।१४ दुर्गाचार्यटीका)

एक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे ॥ (तै. सं. १।८।६।१)

“ एक ही रुद्र है, दूसरा रुद्र नहीं है । वह शत्रुओंको युद्धमें पराजित करता है । सब भुवनोंको उत्पन्न करके, उस सब

विश्वका संरक्षण करता है और अन्तकालमें सबका संकोच (प्रलय) करता है । ”

ऊपर दिये हुए श्वेताश्वतर मंत्रका अर्थ—“ एक ही रुद्र है, वह किसी दूसरेकी सहायताकी अपेक्षा नहीं करता । वह अपनी शक्तियोंसे इन सब लोकोंको स्वाधीन रखता है । और प्रत्येक मनुष्यके अन्दर रहता है । यह संरक्षक प्रभु सब विश्वको उत्पन्न करने और पालन करनेके पश्चात् अन्तकालमें सबको संकुचित करता है । ” तथा—

**एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमांल्लोका-
नीशत ईशनीभिः ॥** (अथर्व-शिर. ५)

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणम् ॥ अथर्व-शिर. ५
यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुव
आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि चकल्पे
तस्मै रुद्राय नमोऽस्तवग्नये ॥ (अथर्व-शिर. ६)

“ एक ही रुद्र है । वह किसी दूसरेकी सहायता नहीं चाहता । जो इन सब लोक-लोकान्तरोंको अपनी शक्तियों द्वारा स्वाधीन रखता है । ‘ रुद्र ’ एक ही है ऐसा कहते हैं । वह शाश्वत और प्राचीन है । ” “ जो रुद्र अग्नि, जल, ओषधी, वनस्पति, आदिमें व्यापक है और जो इन सब भुवनोंको बनाता है, उस एक अद्वितीय तेजस्वी रुद्रके लिये नमस्कार है । ” तथा—

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ४ ॥ (श्वेता. उ. ३।४)
यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स
नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ १२ ॥ (श्वेता. उ. ४।१२)

“ जो सब देवताओंको जन्म देता है, जो सर्व द्रष्टा और सब विश्वका अधिपति है, जिसने पहिले हिरण्यगर्भ को उत्पन्न किया था, वह एक प्रभु रुद्र हम सबको शुभ बुद्धि देवे । ”

इस प्रकार ‘ रुद्र ’ शब्दसे ‘ एक परमात्मा ’ का बोध उपनिषदोंमें लिया है । इससे सिद्ध है कि ‘ रुद्र ’ शब्द परमात्म-वाचक है । यद्यपि इस समयका कोई कोशकार ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ परमात्मा ’ ऐसा अर्थ नहीं देता, तथापि कृष्णयजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद्के उक्त वचन द्वारा उस शब्दका परमात्म-वाचक अर्थ निःसंदेह सिद्ध है ।

रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी संमति ।

‘ रुद्र ’ के एकत्वके विषयमें निरुक्तकारने दिया हुआ मंत्र पूर्व स्थलमें दिया ही है । वह आजकल किसी संहितामें नहीं मिलता । इसलिये अनुमान है कि वह किसी अन्य शाखाग्रंथमें पठित होगा और निरुक्तकारके समय वह शाखाग्रंथ उपलब्ध होगा । रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदमें ये वचन हैं—

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् । ... ॥३॥
सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः । ... ॥४॥
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव ॥११॥
पते अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति ॥१३॥ (अथर्व. १३।४।२)

“ वह ही धाता, विधाता, वायु, अर्यमा, वरुण, रुद्र और महादेव है । उसीसे यह आकाश ऊपर हुआ है, यह सब महान् शक्ति उसी में है । वह एक ही है । वह एक सर्वत्र व्यापता है । वह निश्चयसे एक है । सब देव उसमें एक जैसे होते हैं । ” इसमें बताया है कि एक सर्वव्यापक सर्वाधार आत्मतत्त्वका नाम भी रुद्र है ।

सर्वव्यापक रुद्रदेव ।

एक ही रुद्र सर्वत्र व्यापक है, इस आशयको निम्न मंत्र प्रकट कर रहा है—

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्सस्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध
आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि चाकल्पे
तस्यै रुद्राय नमोस्त्वग्नये ॥ (अथर्व० ७।९२।१)

“ जो एक रुद्र देव अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि पदार्थोंमें व्याप्त है और जो सब भुवनोंको (चकल्पे) बना सकता है, उस (अग्नये रुद्राय) एक तेजस्वी रुद्रदेवके लिये नमन है । ”

यह मंत्र बिल्कुल स्पष्ट है और इससे रुद्रदेवकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है । जगत् की रचना करनेवाला, सब पदार्थोंमें व्यापक और सबका उपास्य जो देव है, उसीका उल्लेख यहां ‘ रुद्र ’ नामसे किया है । रुद्र शब्दके एकवचन होनेके कारण वह एक ही है, ऐसा सिद्ध होता है । तथा सर्वव्यापक जो होता है, वह एक ही हो सकता है । इससे भी उसका एकत्व सिद्ध हो सकता है । रुद्रदेवका ही सब कुछ है, ऐसा अथर्ववेदीय रुद्र-सूक्तके निम्न मंत्रमें कहा है—

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेद-
मुप्रोर्वन्तारिक्षम् । तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत्प्राणत्
पृथिवीमनु ॥ १० ॥ (अथर्व. १।१।२।१०)

“ हे रुद्र ! इन चार दिशाओंमें तथा बुलोक, पृथ्वी और इस

बड़े अन्तरिक्षमें जो कुछ है, वह सब तेरा ही है । जो कुछ (आत्मन्-वत्) आत्मायुक्त अर्थात् प्राण धारण करनेवाला है, जो इस पृथ्वीपर जीवनरूपसे रहता है, वह सब तेरा ही है । ”

इस तरह ‘ रुद्र ’ का सामर्थ्य और प्रभुत्व चारों ओर सब दिशा विदिशाओंमें है, ऐसा वर्णन इस मंत्रमें है । इससे सिद्ध होता है कि उस जगन्नि्यन्ता परमात्माका ही यह ‘ रुद्र ’ नाम है ।

केवल इतने ही प्रमाणोंसे ‘ परमात्मा ’ वाचक ‘ रुद्र ’ शब्द है, ऐसा सिद्ध होगा । तथापि परमात्माके अनेक गुण वेदमंत्रों द्वारा ‘ रुद्र ’ के साथ मिलते हैं वा नहीं, यह हम अब देखते हैं—

जगत् का पिता रुद्र ।

‘ पिता ’ का अर्थ ‘ रक्षक और अपने वीर्य द्वारा जन्म देने-वाला ’ ऐसा होता है । ‘ रुद्र ’ सब भुवनोंका पिता है, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया
रुद्रमक्तौ । बृहन्तमृष्वमजरं सुषुप्तमृधग्युवेम
कविनेषितासः ॥ (ऋ० ६।४९।१०)

“ (दिवा अक्तौ) दिनमें और रात्रीमें (आभिः गीर्भिः) इन वचनोंके साथ (भुवनस्य पितरं) सब सृष्टिके पिता (रुद्रं) बलवान् रुद्र देवकी (वर्धया) बधाई करो । उनके महत्वकी प्रशंसा करो । उस (बृहन्तं) महान् (ऋष्वं) श्रेष्ठ ज्ञानी तथा (अ-जरं) जीर्ण अथवा क्षीण न होनेवाले और (सु-सु-म्नं) अत्यंत उत्तम विचारशील, रुद्रदेवताकी, (कविना इषितासः) बुद्धिवानोंके साथ उच्चतिका इच्छा करनेवाले हम सब (ऋधक् हुवेम) विशेष प्रकारसे उपासना करेंगे । ”

इस मंत्रमें वह ‘ रुद्र ’ देव ‘ महान्, ज्ञानी, अजर, अमर और सुविचारी ’ है, ऐसा कहा है । ये उनके गुण परमात्माके गुणोंके साथ मिलनेवाले ही हैं, तथा ‘ भुवनस्य पितरं रुद्रं ’ ये शब्द रुद्रदेवका वास्तविक स्वरूप बताते हैं । ‘ सृष्टिका पिता रुद्र है । ’ जगत्का पिता जो अजर, अमर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है, वह परमात्माके सिवा दूसरा कौन हो सकता है ? इस प्रकार इस मंत्रका ‘ रुद्र ’ देव उस अद्वितीय परमात्माका ही नाम है, ऐसा दीखता है । इस जगदीशका वर्णन निम्न मंत्रमें देखने योग्य है—

सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।

स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः
पिपिशे हिरण्येः । ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न
वा उ योषद्रुद्रादसुर्यम् ॥ (ऋ० २।३३।९)

(स्थिरेभिः अंगैः) दृढ अवयवोंसे (पुरु-रूपः) अनेक पदार्थोंको आकार देनेवाला (उग्रः) महान् प्रबल और (बभ्रुः) तेजस्वी रुद्र (शुक्रेभिः हिरण्यैः) शुद्ध तेजोंके साथ (पिपिसे) शोभता है । (अस्य भुवनस्य) इस सब सृष्टिके (भूरेः ईशानात् रुद्रात्) महान् स्वामी रुद्रदेवसे (असुर-र्य) उसकी महान् जीवनशक्ति (न वा उ योषत्) कभी पृथक् नहीं होती । ”

यह ‘ रुद्र ’ देव जगत्को निर्माण करके सब पदार्थोंको रंग, रूप और आकार देता है । वह अत्यंत तेजस्वी और सर्वशक्तिमान् है । अपने ही विविध तेजोंसे और पवित्रताओंके कारण वह शोभायमान हो रहा है । वह सब जगत्का ईश्वर है और उससे उसकी शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । यह मंत्र ‘ रुद्र ’ देवताके सब शंकाओंको दूर कर सकता है । ‘ भुवनस्य ईशानात् रुद्रात् असुर्यं न योषत् । ’ जगत् के स्वामी रुद्रदेवसे उसकी दिव्य शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । इस वाक्यसे रुद्र देवताके वास्तविक मूल स्वरूपका पता लग सकता है ।

भुवनस्य पिता रुद्रः ॥ (ऋ० ६।४९।१०)

भुवनस्य ईशानः रुद्रः ॥ (ऋ० २।३३।९)

उक्त दो मंत्रोंके ये दो वाक्य एक ही आशयको बतानेवाले हैं, इसका यदि पाठक विचार करेंगे, तो वेदमंत्रोंके शब्दोंकी विशेष योजनाका पता लग सकता है । यह वाक्य यहच्छासे नहीं बने हैं, विशेष हेतुपूर्वक ही यह शब्दप्रयोग हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है । इससे अगला मंत्र यहाँ अब देखिए—

सर्वशक्तिमान् रुद्र ।

अर्हन् विभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम् । अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति ॥ (ऋ० २।३३।१०)

“ (अर्हन्) योग्य होनेके कारण रुद्र सब शस्त्रास्त्रोंको धारण करता है । रुद्र योग्य होनेके कारण सब विश्वको रूप और तेज देता है । योग्य होनेके कारण ही इस (अभ्वं विश्वं) महान् विश्व पर (दयसे) दया करके उस सबका संरक्षण करता है । हे रुद्र ! (त्वत्) तेरेसे कोई भी अधिक (ओजीयः) बलवान् (न वा अस्ति) नहीं है । ”

इस मंत्रमें ‘ त्वत् ओजीयो न वा अस्ति । ’ तेरेसे अधिक शक्तिशाली कोई भी नहीं है, अर्थात् तू ही सबसे अधिक बलवान् है । इससे सर्वशक्तिमान् रुद्रदेव परमात्मा ही है, ऐसा दिखाई दे रहा है । अब निम्न लिखित मंत्र देखिए । इसमें रुद्रदेव सब जनताका राजा है, ऐसा कहा है—

गुहा-निवासी रुद्र ।

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम् । मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्मत्ते नि वपन्तु सेन्यम् ॥ (अथर्व० १८।१।४०)

“ (उग्रं भीमं) उग्र और शक्तिमान्, (उप-हत्नुं) प्रलय-कर्ता, (श्रुतं) ज्ञानी, (गर्त-सदं) सबके अन्दर रहनेवाला, (जनानां राजानं) सब लोकोंका राजा रुद्र है, उसकी (स्तुहि) स्तुति करो । हे रुद्र ! तेरी (स्तवानः) प्रशंसा होनेपर (जरित्रे) उपासकको तू (मृडा) सुख दे । (ते सेन्यं) तेरी शक्ति (अस्मत् अन्यं) हम सबको बचाकर दूसरे दुष्टका (निवपन्तु) नाश करे । ”

इस मंत्रमें ‘ जनानां राजानं रुद्रं ’ ये शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं । सब लोगोंका एक राजा रुद्र है ।

गर्त-सद्	} = निहितं गुहा सत् । (यजु० ३२।८)
गुहाऽऽहितः	
गुहा-चरः	
गुहा-शयः	
	} = परमं गुहा यत् । (अथर्व० २।१।१२)
	} = गुह्यं ब्रह्म ।

उक्त शब्दोंके साथ ‘ गर्त-सद् ’ शब्द देखने और विचार करनेसे इस शब्दके गूढ़ आशयका पता लग सकता है । ‘ गुहाऽऽहित ’ और ‘ गर्त-सद् ’ ये दोनों शब्द एक ही अर्थ बता रहे हैं । ‘ गर्त ’ शब्दका ‘ गुहा ’ ऐसा अर्थ ऊपर दिया ही है । अस्तु । इस मंत्रसे भी ‘ रुद्र ’ का पूर्वोक्त भाव ही दृढ़ हो रहा है । तात्पर्य ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ सर्वव्यापक परमात्मा ’ ऐसा एक अर्थ निःसंदेह है । इस मंत्रका ऋग्वेदका पाठ यहाँ देखिए—

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं सृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम् । मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः ॥ (ऋ० २।३३।११)

इसका अर्थ स्पष्ट है ।

अपने अंतःकरणमें रुद्रकी खोज ।

अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया ।
गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् ॥ (ऋ० ८।७२।३)

“ सुसुखजन (तं रुद्रं) उसी रुद्रको (जने परः अन्तः) मनुष्यके अत्यंत बीचके अन्तःकरणमें (मनीषया) बुद्धि द्वारा जानना (इच्छन्ति) चाहते हैं । (जिह्वया) जिह्वसे (ससं) फलको (गृह्णन्ति) लेते हैं । ”

मुमुक्षुजन जिह्वासे सात्त्विक पदार्थोंको लेते हैं । 'सस' शब्दका अर्थ 'फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, ओषधि, वनस्पति' इतना ही है । जिह्वासे जिस अन्नका ग्रहण करना उचित है, उसका इस मंत्रने यहां उपदेश किया है । फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी आदि पदार्थ ही खाने चाहिए । इस प्रकारका सात्त्विक आहार करनेवाले मुमुक्षु लोग उस रुद्र देवको अर्थात् परमात्माको मनुष्यके अतःकरणके अत्यन्त गहरे स्थानमें अपनी सात्त्विक विचारशक्तिके द्वारा ढूँढ ढूँढ कर देखनेकी इच्छा करते हैं ।

अनेक रुद्रोंमें व्यापक 'एक रुद्र' ।

पूर्वोक्त प्रमाणोंसे 'रुद्र' एक है और वह 'सर्वत्र व्यापक' है, यह बात सिद्ध हो चुकी । अब अनेक रुद्रोंका वर्णन, जो वेदमें आता है, उसका विचार करना चाहिए ।

रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे । (ऋ. १०।६४।८)

“(रुद्रेषु) अनेक रुद्रोंमें रहनेवाले (रुद्रियं रुद्रं) प्रशंसा करने योग्य एक रुद्रकी (हवामहे) हम सब पूजा करते हैं । ”

एक रुद्रदेव अनेक रुद्रोंमें रहता है, अर्थात् यह एक रुद्र सबमें व्यापक है और अनेक रुद्र व्याप्य हैं । अनेक रुद्र अणु हैं और यह एक रुद्र महान् है । इस एक रुद्रके द्वारा अनेक रुद्र प्रेरित होते हैं, अर्थात् अनेक रुद्र प्रेर्य हैं और यह एक रुद्र सबका प्रेरक है । तथा—

(१) शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलावः । (ऋ. ७।३५।६)

(२) रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नः । (ऋ. १०।६६।३)

(३) रुद्रं रुद्रेभिरावह्य बृहन्तम् । (ऋ. ७।१०।४)

“(१) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्र हम सबका कल्याण करे । (२) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्रदेव हम सबको सुख देवे । (३) अनेक रुद्रोंके साथ रहनेवाले एक महान् रुद्रकी पूजा करो । ” ये सब मंत्र उक्त भाव बता रहे हैं । अनेक छोटे रुद्रोंमें एक महान् रुद्र की प्रेरणा होती है, इस आशयका ध्वनि निम्न मंत्रमें देखने योग्य है—

तदिद्रुद्रस्य चेतति यङ्गं पत्नेषु धामसु ।

मनो यत्रा वि तद्दधुर्विचेतसः ॥ (ऋ. ८।१३।२०)

“(रुद्रस्य तत् यङ्गं) रुद्र देवकी वह एक महान् प्रेरक शक्ति पत्नेषु धामसु) अनेक सनातन स्थानोंमें (इत् चेतति) निश्चयसे तना देती है । (यत्र) जिस शक्तिमें (वि-चेतसः) विशेष प्राणी लोक (तत् मनः) अपना वह मन (वि-दधुः) विशेष

प्रकार धारण करते हैं । ”

इस मंत्रमें 'रुद्र' की 'यङ्ग' शक्तिका वर्णन है । यह शक्ति सब को सतत चेतना दे रही है ।

एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।

रुद्रस्य ये मीळहुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधु-
विर्भरच्यै । विदे हि माता महो मही सा
सेत्पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ॥ ३ ॥ (ऋ. ६।६६।३)

“(मीळहुषः रुद्रस्य) एक दानशूर रुद्रदेवके (ये पुत्राः) जो अनेक रुद्र संज्ञकपुत्र हैं, (यान च च नु) और जिनका निश्चयसे (भरच्यै) भरण-पोषण, पालन करनेकी सब शक्ति वह एक अद्वितीय रुद्र (दाधुविः) धारण करता है । (महः) इस महान् रुद्रकी शक्तिको (सा मही माता विदे) वह मूल प्रकृतिरूपी बड़ी माता जानती है, अथवा प्राप्त करती है और (सु-भ्वे) जीवोंकी उत्तम अवस्था होनेके लिये (सा पृश्निः) वह विविध रंगरूपवाली माता (इत्) निश्चयसे (गर्भ आधात्) जीवोंको गर्भमें धारण करती है । ”

इस मंत्रमें अनेक रुद्र इस एक रुद्रके पुत्र हैं, ऐसा स्पष्ट कहा है । इस लिये परमात्मा परमात्मा ही रुद्र है और सब जीव उसके पुत्र हैं, ऐसा ही इसका अर्थ मानना उचित है ।

अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।

ये अनंत रुद्र जीव हैं, ये प्राणी अर्थात् जीवन धारण करनेवाले हैं । ये मर्य, मर्त्य हैं । इनका शरीर धारण होनेके कारण जन्म होता है और मृत्यु भी होती है । यद्यपि जन्ममरण शरीरका धर्म है, तथापि इन रुद्रोंकी शरीरके साथ स्थिति होनेके कारण, शरीरके साथ इनका जन्म और मरण हुआ, ऐसा कहा जाता है । अर्थात् शरीरके धर्मोंका इनके ऊपर आरोपण होता है । ये 'मर्त्य' हैं, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

ते जङ्गिरे दिव ऋष्वास उक्ष्णो रुद्रस्य मर्या
असुरा अरेपसः । पावकासः शुचयः सूर्या
इव सत्वानो न द्रप्सिनो धोरवर्पसः ॥

(ऋ. १।६४।२)

“(ते) वे अनंत रुद्र (ऋष्वासः) उच्च (दिवः उक्ष्णः) दिव्य बलसे युक्त (असुराः) जीवनशक्तिके प्रकाशनेवाले, (अ-रेपसः) निष्कलंक और (मर्याः) मर्त्य हैं । वे उस (रुद्रस्य जङ्गिरे) एक रुद्रसे प्रकट होते हैं । वे (पावकासः)

अग्निके समान पवित्र (शुचयः) तेजस्वी और शुद्ध (सूर्य इव सत्त्वनः) सूर्यके समान सत्त्वशाली और (द्रप्सिनः न) वर्षा करनेवाले मेघोंके समान (घोर-वर्षसः) सुंदर और विशाल रूप धारण करनेवाले हैं । ”

इस मंत्रमें रुद्रसंज्ञक जीवके गुणधर्म बताये हैं । इनमें ‘मर्त्य’ शब्द आया है । प्राणी, शरीरधारी, मरणधर्मवाला, ऐसा उस शब्दका अर्थ है । जिन अनंत रुद्रोंमें एक महान् रुद्र व्यापक हो रहा है वे अनंत रुद्र ‘अनंत मर्त्य’ प्राणी हैं; यह भाव इस मंत्रसे प्रकट हो रहा है । ‘जनानां राजा रुद्रः’ ऐसा एक वचन पूर्व स्थलमें आया है । उसके साथ इस मंत्रका आशय ‘मर्त्यानां पिता रुद्रः’ देखने योग्य है । एक ही भाव किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकारसे बताया गया है, यह यहाँ देखने योग्य है । इसी विषयका स्पष्टीकरण करनेवाले निम्न लिखित मंत्र यहाँ देखिए—

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अथा
स्वश्वाः ॥ १ ॥ न किह्येषां जनुषि वेद ते अंग
विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ (ऋ० ७।५६)

“(अध) अजी ! (स्वश्वाः = सु-अश्वाः) उत्तम भोग भोगनेवाले, (स-नीळाः) एक आश्रयसे रहनेवाले और (व्यक्ताः नरः) अलग अलग दीखनेवाले पुरुष (के) कौन हैं ? वे (रुद्रस्य मर्याः) रुद्रके मर्त्य पुत्र हैं । (एषां जनुषि) इनके जन्मका वृत्तांत (न किः वेद) कोई भी नहीं जानता ? हे (अंग) प्रिय ! (ते मिथः) वेही परस्पर एक दूसरेका (जनित्रं) जन्म (विद्रे) जानते हैं । ”

इस मंत्रमें ‘रुद्रस्य मर्याः’ रुद्रके मर्त्य पुत्रोंका वर्णन फिर आया है । इनमें अलग अलग व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तित्व, पृथक्त्व, इकाई है, इस लिये इनको ‘व्यक्त’ अर्थात् ‘व्यक्ति-भाव’ से युक्त कहा है । प्रकृति और पुरुष ऐसे जो दो भेद हैं, उनमें ये ‘पुरुष’ हैं, इसलिये मंत्रमें इनको ‘नर’ कहा है । एक ईश्वरके आश्रयसे ये रहते हैं, इसलिये इन सबको ‘स-नीळाः’ (स-नीळाः) कहा है । यहाँ—

यत्र विश्वं भवत्येक-नीडम् । (यजु० ३२।८)
यत्र विश्वं भवत्येक-रूपम् । (अथर्व० २।१।१)

इन मंत्रोंमें ‘एक-नीडं’ और ‘एक-रूपं’ ये शब्द देखने योग्य हैं । ‘स-नीळ, स-नीड, एक-नीड, एक-रूप’ ये सब शब्द ‘सबका एक ही आश्रयस्थान’ है, ऐसा बता रहे हैं ।

इस विचारसे पता लग जायगा कि (१) अनंत रुद्रोंका जन्म, (२) उनको पुत्र कहना, (३) उनकी माताका वर्णन, (४) उनके गर्भधारणका वर्णन यहाँ है ।

रुद्रके पुत्र मरुत हैं । मरुतोंके विषयमें श्री सायणाचार्य लिखते हैं कि ‘मनुष्यरूपा वा मरुतः । पूर्वं मनुष्याः संतः पश्चात् सुकृतविशेषेण ह्यमरा आसन् ।’ मरुत पहिले मनुष्य ही होते हैं, परंतु उत्तम प्रशस्त कर्म करनेके कारण जो अमर बनते हैं (ऋ० सायणभाष्य, मं. १०, सू. ७७, मं. २) इस प्रकार मरुतोंके मनुष्यरूप होनेमें शंका ही नहीं है । मनुष्योंके अतिरिक्त भी मरुतोंका अर्थ है, उसका विचार मरुतदेवताके ग्रंथमें किया गया है । अब मरुतोंके मनुष्य होनेके विषयमें वेदका प्रमाण देखिए—

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आत्वेपमुग्रमव
ईमहे वयम् । ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षेनिर्णिजः
सिंहा न हेषकतवः सुदानवः ॥ (ऋ. ३।२६।५)

“(ते रुद्रियाः मरुतः) वे रुद्रके पुत्र मरुत (अग्नि-श्रियः) अग्निके समान तेजस्वी, (स्वानिनः) उत्तम शब्द बोलनेवाले, (सिंहा न हेषकतवः) सिंहके समान गंभीर शब्द करनेवाले, (वर्षे-निर्णिजः) वृष्टिके द्वारा शुद्ध होनेवाले, (सु-दानवः) उत्तम दान करनेवाले, (विश्वकृष्टयः) सर्व-मनुष्य हैं । (वयं) हम सब (त्वेषं उप्रं अवः) तेजस्वी शौर्यमय संरक्षण उनसे (आ ईमहे) प्राप्त करते हैं । ”

इस मंत्रमें ‘विश्व-कृष्टि’ शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है । ‘कृष्टि’-शब्दका अर्थ—(१) मनुष्यमात्र, मानवजाति है । (२) देशनिवासी राष्ट्रीय जनता । ‘विश्व-कृष्टिः’ = (विश्व+जन=सर्व+जन) सब मनुष्य, मनुष्यमात्र, मनुष्यजाति ।

यहाँ कई शंका करेंगे कि मानवजातिके विषयका उल्लेख वेदमें कहाँ है ? वैदिक धर्म ‘वैयक्तिक’ होनेके कारण उसमें ‘सार्व-जनिक भाव’ नहीं होगा । इस शंकाका उत्तर देनेके लिये यहाँ सार्वजनिक भाव बतानेवाले कुछ वैदिक शब्दोंका उल्लेख करना चाहिए । देखिए निम्न शब्द—

(१) विश्व-कृष्टिः = (सर्व-मनुष्य) = मानवजाति ।

(२) विश्व-वर्षणिः = (सर्व-जन) = सब लोक, मनुष्य, मनुष्यमात्र, मानवजाति ।

(३) विश्व-जनः = (सर्व-जन) = मानवजाति ।

(४) विश्व-मनुष्यः } = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र ।
(५) विश्व-मानुषः }

(६) विश्वा-नरः= (सर्व-नर)= सब मनुष्य ।

(७) पंच-जनाः= ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कारीगर और साधारण लोक । ये पांच प्रकारके लोक मिलकर सब जनता होती है ।

इस तरह सार्वजनिक भावोंकी विस्तारपूर्वक कल्पना वेदमें ही स्पष्ट है । वैदिक धर्म ' सार्वजनिक भावका धर्म ' ही है ।

प्रस्तुत मंत्रमें ' विश्व-कृष्टि ' शब्द ' मानव-जाति ' का भाव बता रहा है । मरुतोंका अथवा रुद्र-पुत्रोंका अर्थात् छोटे छोटे असंख्य रुद्रोंका स्वरूप ' विश्व-कृष्टि ' शब्दने बताया है । इस प्रकार अनेक रुद्र ये अनंत मानवप्राणी हैं, यह बात सिद्ध हो गई । ' मर्य ' शब्दसे साधारण मर्य अर्थात् मरणधर्मवाले प्राणिमात्र, ऐसा भी भाव निकल सकता है । इसका निश्चय अब करेंगे ।

अनेक रुद्रोंकी संख्या ।

इस अनंत रुद्रोंकी संख्याके विषयमें वाजसनेय यजुर्वेदमें निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है—

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।

(यजु. १६।५४)

“ असंख्यात हजार (ये रुद्राः) जो रुद्र (भूम्यां अधि) पृथ्वी पर हैं । ” अर्थात् ये अनेक रुद्र अनंत हजार इस पृथ्वीपर हैं । प्राणियोंकी संख्या किसी समयमें भी पृथ्वीपर निश्चित नहीं कही जा सकती । क्योंकि प्राणियोंकी संख्या अनेक कारणोंसे बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है । इस हेतुसे यहां निश्चित संख्या नहीं कही, परंतु ' अनंत हजार ' ऐसा ही कहा है । इससे वेदके शब्दोंका अद्भुत महत्त्व ज्ञात हो सकता है ।

यजुर्वेद वाजसनेय संहिता अ० १६ में रुद्रोंके कई नाम लिखे हैं । यह अध्याय काण्व संहितामें १७ वां है । और तैत्तिरीय संहितामें यही रुद्राध्याय ४।५।१।१ में है । अब इन रुद्रोंका वर्गीकरण करना है । परंतु इससे पूर्व ' रुद्र ' शब्दका भाष्यकार आचार्योंका किया हुआ अर्थ अवश्य देखना चाहिए । क्योंकि उन अर्थोंको देख कर ही हम रुद्रोंके वर्ग बना सकते हैं ।

रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।

श्री सायणाचार्यजीने चारों वेद और सब मुख्य ब्राह्मणोंपर भाष्य किया है । इनका भाष्य विशेषतया याज्ञिक पद्धतिके अनुसार है । इस लिये इनका भाष्य देखनेसे याज्ञिक-संप्रदायवालोंका मत

२ है. [रुद्र]

ज्ञात हो सकता है । अब देखिए श्री सायणाचार्यजी ' रुद्र ' के विषयमें क्या कहते हैं—

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रस्य कालात्मकस्य परमेश्वरस्य । (ऋ. ६।२८।७)

२. रुद्राय कुराय अग्नये । (ऋ. १।२७।१०)

३. रुद्र दुःखं तद्धेतुभूतं पापं वा । तस्य द्रावयितारौ रुद्रौ । संग्रामे भयंकरं शब्दयन्तौ वा ॥

(ऋ. १।१५८।१)

४. रुद्राणां.....प्राणरूपेण वर्तमानानां मरुतां । यद्वा । रोदयितृणां प्राणानां । प्राणा हि शरीराभिर्गता-सन्तो बंधुजनान् रोदयन्ति ॥ (ऋ. १।१०।१।७)

५. रुद्राणां रोदनकारिणां शूरभटानां वर्तनिर्माणो धाटीः रूपो ययोस्तौ रुद्रवर्तनी । (ऋ. १।३।३)

६. रोदयन्ति शत्रूनि रुद्राः । (ऋ. ३।३२।३)

७. रुद्रौ संग्रामे रुदन्तौ । (ऋ. ८।२६।५)

८. हे रुद्र ! ज्वरादिरोगस्य प्रेक्षणेन संहर्तर्देव । (ऋ. १।१६९।१)

९. रुद्रियं सुखं । (ऋ. २।११।३)

१०. रुद्रियं रुद्रसंबन्धि भेषजं । (ऋ. १।४३।२)

अथर्ववेद-भाष्य ।

१. रोदयति सर्वं अंतकाले इति रुद्रः संहर्ता देवः । (अथर्व. १।१९।३)

२. रौति शब्दायते तारकं ब्रह्म उपदिशतीति रुद्रः । तथा च जाबालश्रुतिः । ' अत्र हि जन्तोः प्राणे-पूष्कामसु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे ॥ (जाबा. उ. १) (अथर्व. २।६७।६)

३. तस्मै जगत्सृष्ट्रे सर्वं जगदनुप्रविष्टाय रुद्राय । (अथर्व. ७।९२।१)

४. रुद्र दुःखं दुःखहेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रुद्रः परमेश्वरः । (अथर्व. १।१२।३)

५. सर्वप्राणिनो मामनिष्ट्वा विनश्यन्ति इति स्वयं रौति रुद्रः । (अथर्व. १।८।१।४०)

६. स्वसेवकानां दुःखस्य द्रावकत्वं (रुद्रस्य) । (अथर्व. १।८।१।४०)

७. महानुभावं रुद्रं । (अथर्व. १।८।१।४०)

८. रुद्रस्य हिंसकस्य देवस्य । (अथर्व. ६।५९।३)

अग्नि के समान पवित्र (शुच्यः) तेजस्वी और शुद्ध (सूर्य इव सत्वानः) सूर्य के समान सत्त्वशाली और (द्रप्तिनः न) वर्षा करनेवाले मेघों के समान (घोर-वर्षसः) सुंदर और विशाल रूप धारण करनेवाले हैं । ”

इस मंत्र में रुद्रसंज्ञक जीव के गुणधर्म बताये हैं । इनमें ‘मर्त्य’ शब्द आया है । प्राणी, शरीरधारी, मरणधर्मवाला, ऐसा उस शब्द का अर्थ है । जिन अनंत रुद्रों में एक महान् रुद्र व्यापक हो रहा है वे अनंत रुद्र ‘अनंत मर्त्य’ प्राणी हैं; यह भाव इस मंत्र से प्रकट हो रहा है । ‘जनानां राजा रुद्रः’ ऐसा एक वचन पूर्व स्थल में आया है । उसके साथ इस मंत्र का आशय ‘मर्त्यानां पिता रुद्रः’ देखने योग्य है । एक ही भाव किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार से बताया गया है, यह यहां देखने योग्य है । इसी विषय का स्पष्टीकरण करनेवाले निम्न लिखित मंत्र यहां देखिए—

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा
स्वधाः ॥ १ ॥ न किह्येषां जनुषि वेद ते अंग
विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ (ऋ० ७।५६)

“(अध) अजी ! (स्वधाः = सु-अधाः) उत्तम भोग भोगनेवाले, (सनीळाः) एक आश्रय से रहनेवाले और (व्यक्ताः नरः) अलग अलग दीखनेवाले पुरुष (के) कौन हैं ? वे (रुद्रस्य मर्याः) रुद्र के मर्त्य पुत्र हैं । (एषां जनुषि) इनके जन्मका वृत्तांत (न किः वेद) कोई भी नहीं जानता ? हे (अंग) प्रिय ! (ते मिथः) वेही परस्पर एक दूसरे का (जनित्रं) जन्म (विद्रे) जानते हैं । ”

इस मंत्र में ‘रुद्रस्य मर्याः’ रुद्र के मर्त्य पुत्रों का वर्णन फिर आया है । इनमें अलग अलग व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तित्व, पृथक्त्व, इकाई है, इस लिये इनको ‘व्यक्त’ अर्थात् ‘व्यक्ति-भाव’ से युक्त कहा है । प्रकृति और पुरुष ऐसे जो दो भेद हैं, उनमें ये ‘पुरुष’ हैं, इसलिये मंत्र में इनको ‘नर’ कहा है । एक ईश्वर के आश्रय से ये रहते हैं, इसलिये इन सबको ‘सनीळाः’ (सनीळाः) कहा है । यहां—

यत्र विश्वं भवत्येक-नीडम् । (यजु० ३२।८)
यत्र विश्वं भवत्येक-रूपम् । (अथर्व० २।१।१)

इन मंत्रों में ‘एक-नीडं’ और ‘एक-रूपं’ ये शब्द देखने योग्य हैं । ‘सनीळ, सनीड, एक-नीड, एक-रूप’ ये सब शब्द ‘सबका एक ही आश्रयस्थान है,’ ऐसा बता रहे हैं ।

इस विचार से पता लग जायगा कि (१) अनंत रुद्रों का जन्म, (२) उनको पुत्र कहना, (३) उनकी माता का वर्णन, (४) उनके गर्भधारण का वर्णन यहां है ।

रुद्र के पुत्र मरुत हैं । मरुतों के विषय में श्री सायणाचार्य लिखते हैं कि ‘मनुष्यरूपा वा मरुतः । पूर्वं मनुष्याः संतः पश्चात् सुकृतविशेषेण ह्यमरा आसन् ।’ मरुत पदिले मनुष्य ही होते हैं, परंतु उत्तम प्रशस्त कर्म करने के कारण जो अमर बनते हैं (ऋ० सायणभाष्य, मं. १०, सू. ७७, मं. २) इस प्रकार मरुतों के मनुष्यरूप होने में शंका ही नहीं है । मनुष्यों के अतिरिक्त भी मरुतों का अर्थ है, उसका विचार मरुतदेवता के ग्रंथ में किया गया है । अब मरुतों के मनुष्य होने के विषय में वेद का प्रमाण देखिए—

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्ट्य आत्वेष्टमुग्रमव
ईमहे वयम् । ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षे निर्णिजः
सिंहा न हेषकतवः सुदानवः ॥ (ऋ. ३।२६।५)

“(ते रुद्रियाः मरुतः) वे रुद्र के पुत्र मरुत (अग्नि-श्रियः) अग्नि के समान तेजस्वी, (स्वानिनः) उत्तम शब्द बोलनेवाले, (सिंहा न हेषकतवः) सिंह के समान गंभीर शब्द करनेवाले, (वर्षे-निर्णिजः) वृष्टि के द्वारा शुद्ध होनेवाले, (सु-दानवः) उत्तम दान करनेवाले, (विश्वकृष्ट्यः) सर्व-मनुष्य हैं । (वयं) हम सब (त्वेष्टं उग्रं अवः) तेजस्वी शौर्यमय संरक्षण उनसे (आ ईमहे) प्राप्त करते हैं । ”

इस मंत्र में ‘विश्व-कृष्टि’ शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है । ‘कृष्टि’-शब्द का अर्थ—(१) मनुष्यमात्र, मानवजाति है । (२) देशनिवासी राष्ट्रीय जनता । ‘विश्व-कृष्टिः’ = (विश्व+जन=सर्व+जन) सब मनुष्य, मनुष्यमात्र, मनुष्यजाति ।

यहां कई शंका करेंगे कि मानवजाति के विषय का उल्लेख वेद में कहाँ है ? वैदिक धर्म ‘वैयक्तिक’ होने के कारण उसमें ‘सार्व-जनिक भाव’ नहीं होगा । इस शंका का उत्तर देने के लिये यहां सार्वजनिक भाव बतानेवाले कुछ वैदिक शब्दों का उल्लेख करना चाहिए । देखिए निम्न शब्द—

(१) विश्व-कृष्टिः = (सर्व-मनुष्य) = मानवजाति ।

(२) विश्व-वर्षणिः = (सर्व-जन) = सब लोक, मनुष्य, मनुष्यमात्र, मानवजाति ।

(३) विश्व-जनः = (सर्व-जन) = मानवजाति ।

(४) विश्व-मनुष्यः } = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र
(५) विश्व-मानुषः }

(६) विश्वा-नरः= (सर्व-नर)= सब मनुष्य ।

(७) पंच-जनाः= ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कारीगर और साधारण लोक । ये पांच प्रकारके लोक मिलकर सब जनता होती है ।

इस तरह सार्वजनिक भावोंकी विस्तारपूर्वक कल्पना वेदमें ही स्पष्ट है । वैदिक धर्म ' सार्वजनिक भावका धर्म ' ही है ।

प्रस्तुत मंत्रमें ' विश्व-कृष्टि ' शब्द ' मानव-जाति ' का भाव बता रहा है । मर्त्याका अथवा रुद्र-पुत्रोंका अर्थात् छोटे छोटे असंख्य रुद्रोंका स्वरूप ' विश्व-कृष्टि ' शब्दने बताया है । इस प्रकार अनेक रुद्र ये अनंत मानवप्राणी हैं, यह बात सिद्ध हो गई । ' मर्य ' शब्दसे साधारण मर्य अर्थात् मरणधर्मवाले प्राणिमात्र, ऐसा भी भाव निकल सकता है । इसका निश्चय अब करेंगे ।

अनेक रुद्रोंकी संख्या ।

इस अनंत रुद्रोंकी संख्याके विषयमें वाजसनेय यजुर्वेदमें निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है—

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अभि भूम्याम् ।

(यजु. १६।५४)

“ असंख्यात हजार (ये रुद्राः) जो रुद्र (भूम्यां अभि) पृथ्वी पर हैं । ” अर्थात् ये अनेक रुद्र अनंत हजार इस पृथ्वीपर हैं । प्राणियोंकी संख्या किसी समयमें भी पृथ्वीपर निश्चित नहीं कही जा सकती । क्योंकि प्राणियोंकी संख्या अनेक कारणोंसे बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है । इस हेतुसे यहां निश्चित संख्या नहीं कही, परंतु ' अनंत हजार ' ऐसा ही कहा है । इससे वेदके शब्दोंका अद्भुत महत्त्व ज्ञात हो सकता है ।

यजुर्वेद वाजसनेय संहिता अ० १६ में रुद्रोंके कई नाम लिखे हैं । यह अध्याय काण्व संहितामें १७ वां है । और तैत्तिरीय संहितामें यही रुद्राध्याय ४।५।१।१ में है । अब इन रुद्रोंका वर्गीकरण करना है । परंतु इससे पूर्व ' रुद्र ' शब्दका भाष्यकार आचार्योंका किया हुआ अर्थ अवश्य देखना चाहिए । क्योंकि उन अर्थोंको देख कर ही हम रुद्रोंके वर्ग बना सकते हैं ।

रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।

श्री सायणाचार्यजीने चारों वेद और सब मुख्य ब्राह्मणोंपर भाष्य किया है । इनका भाष्य विशेषतया याज्ञिक पद्धतिके अनुसार है । इस लिये इनका भाष्य देखनेसे याज्ञिक-संप्रदायवालोंका मत

२ वै. [रुद्र]

ज्ञात हो सकता है । अब देखिए श्री सायणाचार्यजी ' रुद्र ' के विषयमें क्या कहते हैं—

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रस्य कालात्मकस्य परमेश्वरस्य । (ऋ. ६।२८।७)
२. रुद्राय क्रूराय अग्नये । (ऋ. १।२७।१०)
३. रुद्र दुःखं तद्धेतुभूतं पापं वा । तस्य द्रावयितारौ रुद्रौ । संप्राप्ते भयंकरं शब्दयन्तौ वा ॥

(ऋ. १।१५८।१)

४. रुद्राणां.....प्राणरूपेण वर्तमानानां मरुतां । यद्वा । रोदयितृणां प्राणानां । प्राणा हि शरीराच्चिगता-सन्तो बंधुजनान् रोदयन्ति ॥ (ऋ. १।१०१।७)

५. रुद्राणां रोदनकारिणां शूरभटानां वर्तनिर्माणं धाटीः रूपो ययोस्तौ रुद्रवर्तनी । (ऋ. १।३।३)

६. रोदयन्ति शत्रूनि रुद्राः । (ऋ. ३।३२।३)

७. रुद्रौ संप्राप्ते रुदन्तौ । (ऋ. ८।२६।५)

८. हे रुद्र ! ज्वरादिरोगस्य प्रेक्षणेन संहर्तुर्देव ।

(ऋ. १।१६९।१)

९. रुद्रियं सुखं ।

(ऋ. २।११।३)

१०. रुद्रियं रुद्रसंबन्धि भेषजं ।

(ऋ. १।४३।२)

अथर्ववेद-भाष्य ।

१. रोदयति सर्वं अंतकाले इति रुद्रः संहर्ता देवः ।

(अथर्व. १।१९।३)

२. रौति शब्दायते तारकं ब्रह्म उपदिशतीति रुद्रः । तथा च जाबालश्रुतिः । ' अत्र हि जन्तोः प्राणे-पूत्कामसु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे ॥ (जाबाल. उ. १)

(अथर्व. २।२७।६)

३. तस्मै जगत्स्रष्ट्रे सर्वं जगदनुप्रविष्टाय रुद्राय ।

(अथर्व. ७।९२।१)

४. रुद्र दुःखं दुःखहेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रुद्रः परमेश्वरः ।

(अथर्व. १।१२।३)

५. सर्वप्राणिनो मामनिष्ट्वा विनश्यन्ति इति स्वयं रौति रुद्रः ।

(अथर्व. १८।१।४०)

६. स्वसेवकानां दुःस्वस्य द्रावकत्वं (रुद्रस्य) ।

(अथर्व. १८।१।४०)

७. महानुभावं रुद्रं ।

(अथर्व. १८।१।४०)

८. रुद्रस्य हिंसकस्य देवस्य ।

(अथर्व. ६।५९।३)

९. रुद्रस्य ज्वराभिमानिदेवस्य हेतिः आयुधं ।
(अथर्व. ४।२१।७)

१०. रुद्रः रोदयिता शूलाभिमानि देवः ।
(अथर्व. ६।९०।१)

११. रोदयति उपतापेन अश्रूणि मोचयति इति रुद्रो
ज्वराभिमानि देवः । (अथर्व. ६।२०।२)

१२. रोदयति शत्रूनि रुद्रः । (अथर्व. ७।९२।१)

१३. रुद्रा रोदकाः । (अथर्व. १९।९।१०)

१४. रुद्राः रोदयितारः अन्तरिक्षस्थानीया देवाः ।
(अथर्व. १९।११।४)

१५. रुद्रः पशूनां अभिमन्ता पीडाकरो देवः ।
(अथर्व. ६।१४।११)

ये ' रुद्र ' शब्दके श्री सायणाचार्यजीके किये हुए अर्थ हैं । अब यजुर्वेदके भाष्यमें श्री उवटाचार्य और श्री महीधरा-
चार्य क्या कहते हैं, देखिए—

श्री उवटाचार्यजीका ' रुद्र ' विषयक मत ।

१. रुद्रैः स्तोतृभिः । (यजु. भाष्य, ३८।१६)
२. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी । (य. १।१।८२)
३. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । (य. २०।८१)
४. रुद्रैः धीरैः । (य. १।१।५५)

श्री महीधराचार्यजीका ' रुद्र ' संबंधी मत ।

१. रुद्रस्य शिवस्य । (वा. यजु. भाष्य १६।५०)
२. रुद्राय शंकराय । (य. १६।४८)
३. रुद्रं दुःखं द्रावयति रुद्रः ।
रवणं रुद्रं ज्ञानं राति ददाति ।
पापिनो नरान् दुःखभोगेन रोदयति । (य. १६।११)
४. रुद्रस्य क्रूरदेवस्य । (य. १।१।१५)
५. रुद्रं दुःखं द्रावयति नाशयति रुद्रः । (य. १६।२८)
६. रुद्रो दुःखनाशकः । (य. १६।३९)
७. रोदयति विरोधिनां शतं इति रुद्रः । (य. ३।५७)
८. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । (य. २०।८१)
९. रुद्रैः धीरैः बुद्धिमद्भिः । (य. १।१।५५)
१०. रुद्रैः स्तोतृभिः । (य. ३८।१६)
११. रुद्रवर्तनी रुग्णवर्तनी भिषजौ अश्विनौ ।
(य. १।१।८२)

१२. कदम्बभक्षणे चौर्ये वा प्रवर्त्य, रोगमुत्पाद्य, जनान्
घ्नन्ति तेभ्यः पृथ्वीस्थेभ्यो अस्त्रायुधेभ्यो रुद्रेभ्यः ॥

(य. १६।६६)

१३. कुवातेनास्त्रं विनाश्य वातरोगं वा उत्पाद्य जनान्
घ्नन्ति । (य. १६।६५)

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत ।

ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्राय परमेश्वराय जीवाय वा ॥ ... ॥ रुद्रशब्देन
त्रयोऽर्था गुह्यन्ते । परमेश्वरो जीवो वायुश्चेति । तत्र परमे-
श्वरः सर्वज्ञतया येन यादृशं पापकर्म कृतं तत्फलदानेन रोद-
यिताऽस्ति । जीवः खलु यदा मरणसमये शरीरं जहाति
पापफलं च भुंक्ते तदा स्वयं रोदिति । वायुश्च शूलादि-
पीडा कर्मणा कर्मनिमित्तः सन् रोदयितास्ति । अत एते
रुद्रा विज्ञेयाः । (ऋग्वेद. १।४३।१)

२. रुद्रः दुःखनिवारकः । (ऋ. २।३३।७)
३. रुद्रः दुष्टानां भयंकरः । (ऋ. ५।४६।२)
४. रुद्रः दुष्टदण्डकः । (ऋ. ५।५१।१३)
५. रुद्रः सर्वरोगदोषनिवारकः । (ऋ. २।३३।२)
६. रुद्रस्य रोगाणां द्रावकस्य निःसारकस्य ।
(ऋ. ७।५६।१)

७. रुद्रः रोगाणां प्रलयकृत् । (ऋ. २।३३।३)
८. रुद्रः कुपथ्यकारिणां रोदयिता । (ऋ. २।३३।४)
९. रुद्रस्य प्राणस्य वर्तनिः मार्गः ययोस्तौ रुद्रवर्तनी ।
(ऋ. १।३।३)

१०. रुद्रं शत्रुरोद्धारं । (ऋ. १।११।४।४)
११. रुद्रस्य शत्रूणां रोदयितुर्महावीरस्य । (ऋ. १।८५)
१२. रुद्राणां प्राणानां दुष्टान् श्रेष्ठांश्च रोदयतां ।
(ऋ. १०।१०।१।७)

१३. रुद्र ! रुतः सत्योपदेशान् राति ददाति तत्संबुद्धौ ।
(ऋ. १।११।४।३)

१४. रुद्रः अधीतविद्यः । (ऋ. १।११।४।११)

१५. रुद्राय सभाध्यक्षाय । (ऋ. १।११।४।६)

१६. रुद्रः न्यायाधीशः । (ऋ. १।११।४।२)

१७. रुद्रियं रुद्रस्येदं कर्म । (ऋ. १।४३।२)

यजुर्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रः परमेश्वरः । चतुश्चत्वारिंशद्वर्षकृतब्रह्मचर्यो विद्वान् वा । (यजु. ४।२०)
२. रोदयत्यन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः । (य. ३।५७)
३. दुष्टानां रोदयिता विद्वान् रुद्रः । (य. ४।२१)
४. रुद्रः शत्रूणां रोदयिता शूरवीरः । (य. ९।३९)
५. रुद्रस्य शत्रुरोदकस्य स्वसेनापतेः । (य. ११।१५)
६. रुद्रः जीव । (य. ८।५८)
७. रुद्राः एकादशप्राणाः । (य. २।५)
८. रुद्राः प्राणरूपा वायवः । (य. ११।५४)
९. रुद्रा बलवन्तो वायवः । (य. १५।११)
१०. रुद्राः सजीवा अजीवाः प्राणादयो वायवः । (य. १६।५४)
११. रुद्रा मध्यस्थाः । (य. १२।४४)
१२. रुद्रा रुद्रसंज्ञका विद्वांसः । (य. ११।५८)
१३. रुद्रः राजवैद्यः । (य. १६।४९)
१४. रुद्रस्य समेशस्य । (१६।५०)

इस तरह भाष्य में अर्थ हैं ।

यजु० अ० १६ में रुद्रवाचक अनेक पद आये हैं । इनकी संख्या लगभग २४० है ।

(१) विश्व-रूप, (२) विद्युत्, (३) वायु, (४) वृक्ष, (५) गृत्स, (६) मंत्रिन्, (७) भिषक्, (८) सभा, (९) सभापति, (१०) स्थ-पति, (११) सेनानी, (१२) सेना, (१३) इषु-कृत्, (१४) रथी, (१५) वणिज्, (१६) किरिक, (१७) तक्षन्, (१८) परि-चर, (१९) स्तेन, (२०) प्रतरण, (२१) श्वन्, (२२) तल्प्य ।

ये सब रुद्र ही हैं- (१) सर्वव्यापक ईश्वर, (२) बिजुली, (३) वायु, (४) वृक्ष, (५) विद्वान्, (६) दिवाण, (७) वैद्य, (८) सभा, (९) सभापति, (१०) राजा, (११) सेना-पति, (१२) सेना, (१३) शस्त्र बनानेवाला, (१४) वीर, (१५) बनिया, (१६) किसान, (१७) बढई, (१८) नौकर, (१९) चोर, (२०) धोखेबाज, (२१) कुत्ता, (२२) खटमल; इन सबको यहाँ रुद्र ही कहा है, इस सबमें ' रुद्रत्व ' है यह निश्चित है ।

' रोदयति इति रुद्रः ' (जो दूसरोंको रुलाता है, वह रुद्र है) यह रुद्र शब्दका एक अर्थ है । दूसरोंको रुलानेका धर्म रुद्रमें है, यह बात इस अर्थसे सिद्ध होती है । रुलानेका तात्पर्य

कष्ट अथवा दुःख देना है । देखिए—

- (१) रोदयति शत्रून् इति रुद्रः महा-वीरः ।
- (२) रोदयति दुष्टान् इति रुद्रः न्यायाधीशः ।
- (३) रोदयति धनिकान् इति रुद्रः चोरः ।
- (४) रोदयति निद्राक्रान्तान् इति रुद्रः तल्प्य-कीटः ।
- (१) शत्रुओंको रुलानेके कारण शूरको रुद्र कहते हैं ।
- (२) दुष्टोंको रुलानेके कारण न्यायाधीशको रुद्र कहते हैं । (३) धनिकोंको रुलानेके कारण चोरको रुद्र कहते हैं । (४) सोने-वालोंको रुलानेके कारण खटमलको रुद्र कहते हैं ।

उक्त चार विग्रहोंमें क्रमशः ' (१) शत्रून्, (२) दुष्टान्, (३) धनिकान्, (४) निद्राक्रान्तान् । ' इन चार पदोंका अध्याहार अर्थात् कल्पना की है । और उस कल्पनाके अनुसार ' रुद्र ' शब्दके चार भिन्न भिन्न अर्थ किये हैं । जहाँ जैसा पूर्वापर संबंध होगा, वहाँ वैसा अर्थ लेना उचित है ।

उक्त चार आर्थोंमें ' रुलानेका धर्म ' सबमें समान है । यही यहाँ ' रुद्रत्व ' है । ' रोदयितृत्वं रुद्रत्वं ' रुलानेका धर्म ही रुद्रपन है, ऐसा हम यहाँ कह सकते हैं । जहाँ जहाँ ' रुलानेका गुण ' होगा, वहाँ वहाँ रुद्रत्व होगा, यह इस विवरण का तात्पर्य है ।

इस प्रकार अन्य स्थानोंमें भी समझना चाहिए । यह बात स्पष्ट है कि इस अर्थमें ' स्वयं दुःखका अनुभव करना रुद्रपनका लक्षण ' है । दूसरोंको रुलाना अथवा स्वयं रोना ये दोनों रुद्रके लक्षण हैं । इन दोनों अर्थोंको लेनेसे पूर्वोक्त रुद्रवाचक अनेक शब्दोंमेंसे कई शब्दोंका मूल आशय खुल जाता है और इस बातका निश्चय होता है, कि इनको रुद्र क्यों कहा गया है ।

' रुद्र ' के इतने ही लक्षण नहीं हैं । ' रुद्रं ज्ञानं तत् ददाति इति रुद्रः । ' जो ज्ञानको उपदेश द्वारा देता है, वह रुद्र होता है । इस अर्थको लेनेसे ' ज्ञानी, उपदेशक, गुरु, व्याख्यानदाता ' ये रुद्र हैं, ऐसा प्रतीत होगा । पूर्वोक्त शब्दोंमें ' अधिवक्ता ' शब्द इसी अर्थका प्रकाश करनेवाला है । ' श्रुत, गृत्स, मंत्रिन् ' ये भी शब्द इसी भावको बतानेवाले हैं । ' ज्ञानदातृत्वं रुद्रत्वं ' दूसरोंको उपदेश करनेका रुद्रका धर्म है, ऐसा इस अर्थसे सिद्ध होता है ।

' रुद्रं दुःखं द्रावयति विनाशयति इति रुद्रः । ' रुद्र अर्थात् दुःख, उसका जो नाश करता है, वह रुद्र कहलाता है । ' क्षत्र ' शब्दका अर्थ ' क्षतात् त्रायते ' जो दुःखसे बचाता है,

ऐसा होता है । यह रुद्रका एक अर्थ है ।

रुद्र+द्र= दुःखको दूर करनेवाला ।

क्षत्+त्र= दुःखसे वचानेवाला ।

ये दोनों शब्द बिलकुल समान अर्थवाले हैं । इसलिये क्षत्रिय-वाचक शब्द रुद्रके लिये आये हैं । इस बातको पूर्वोक्त वीरवर्गमें पाठक देख सकते हैं ।

‘रुद्र रोगं राति ददाति इति रुद्रः रोगोत्पादकः ।’ ओ रोगोंको उत्पन्न करता है, उसको रुद्र कहते हैं । बुरी हवा, सड़ा हुआ जल, दुर्गन्धयुक्त भूमि, कुपथ्य आदि सब इस अर्थके कारण रुद्र होते हैं । ‘रुत्’ शब्दके दुःख और रोग ऐसे अर्थ कोशोंमें हैं । रोग उत्पन्न करना यह रुद्रका कार्य कई मंत्रोंमें वर्णन किया है, उनमेंसे एक मंत्र यहां देखिए—

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

(यजु. अ. १६।६२)

‘(ये) जो रुद्र (अन्नेषु) अन्नोंमें और (पात्रेषु) बर्तनोंमें प्रविष्ट होकर (पिबतः जनान्) जल पीनेवाले मनुष्योंको (विविध्यन्ति) अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं ।’ यह रुद्रका वर्णन विशेष प्रकारसे देखने योग्य है । इसी मंत्रके भाष्य देखिए—

श्री सायणाचार्य— ये रुद्रा अन्नेषु भुज्यमानेषु स्थिताः सन्तो जनान् विविध्यन्ति, विशेषेण ताडयन्ति । भ्रातृवैभ्यं कृत्वा रोगान् उत्पादयन्ति इत्यर्थः । तथा पात्रेषु पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः सन्तः क्षीरादिपानं कुर्वतो जनान् विविध्यन्ति । अन्नोदकभोक्तारो व्याधिभिः पीडनीया इति भावः ॥ (काण्वयजु. १।७।१६)

श्री महीधराचार्य— (पूर्ववत्)

श्री उवटाचार्य— ये अन्नेषु अवस्थिताः विविध्यन्ति अतिशयेन विध्यन्ति ताडयन्ति । येषामयमधिकारः अन्नस्य भक्षयितारो व्याधिभिर्गृहीतव्या इति ६० ॥

उक्त आचार्य-मतका तात्पर्य— ये रुद्र अन्न और पानीमें प्रविष्ट होकर उस अन्नको खानेवाले और उस पानीको पीनेवाले लोगोंमें रोग उत्पन्न करते हैं ।

रोग उत्पन्न करना रुद्रोंका कर्म है । रोगजन्तुओंका यह वर्णन है । ‘रोग-जन्तु’ अन्नके द्वारा और जलके द्वारा शरीरमें प्रविष्ट होकर शरीरमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं, यही भाव उक्त मंत्रका है । इसलिये रोगबीजोंका नाम रुद्र हुआ है । रोगजंतु किस प्रकारके होते हैं और कहाँ रहते हैं,

इस बातका ज्ञान पूर्वोक्त अध्यायमें ‘जन्तुवर्ग’ के रुद्रवाचक शब्दोंके अर्थोंका विचार करनेसे स्पष्टतया हो सकता है ।

तात्पर्य इस प्रकार रुद्रोंके लक्षण हैं । यहां नमूनेके लिये थोड़ेसे दिये हैं । विशेष विचार करनेके लिये पूर्वोक्त आचार्योंके अर्थोंका मनन करना उचित है । इन अर्थोंका देखनेसे ‘रुद्रत्व’ की कल्पना हो सकती है । अर्थात् ‘रुद्र’ यह कोई एक ही पदार्थ नहीं है, परंतु यह अनेक कल्पनाओंका समूहवाचक शब्द है ।

जिस प्रकार ‘प्राणी’ कहनेसे ‘मनुष्य, घोड़ा, गाय, चूड़ा’ आदि का बोध होता है अथवा ‘मनुष्य’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, व्यापारी’ आदि जनोंका बोध होता है, इसी प्रकार ‘रुद्र’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, दुष्ट, सज्जन’ आदिका बोध होता है । परंतु ये सब प्रत्यक्षमें एक नहीं हैं, इनमें भिन्नत्व है । इस भिन्नत्वका स्वरूप यहां बताया है और इस समयतक के संपूर्ण विवरणमें भी इसी भिन्नत्वका रूप स्पष्ट किया है ।

श्री भ० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।

श्रीमद्भगवद्गीताके १० अध्यायमें ‘विभूतियोग’ कहा है । उसका थोड़ासा भाग देखिए—

रुद्राणां शंकरश्चासि चित्ते शो यक्षरक्षसाम् ।

वसूनां पावकश्चासि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥

यज्ञानां जपयज्ञोऽसि स्थावराणां हिमालयः ॥२५॥

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥३२॥

द्युतं छलयतामसि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥३६॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽसि पांडवानां धनंजयः ॥३७॥

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽसंभवम् ॥४१॥

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ॥

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४२॥

(श्री भ० गी० अ० १०)

“रुद्रोंमें मैं शंकर, यक्ष और राक्षसोंमें मैं कुबेर, वसुओंमें मैं पावक, चोटियोंवाले पहाड़ोंमें मैं मेरुपर्वत हूं । यज्ञोंमें जपयज्ञ, स्थिर पदार्थोंमें हिमालय, मृगोंमें सिंह, पक्षियोंमें गरुड, विद्याओंमें आत्मविद्या और वक्ताओंका भाषण मैं ही हूं । कपटियोंका द्यूत अर्थात् जूआ, तेजस्वियोंका तेज, वृष्णियोंमें वासुदेव, पांडवोंमें अर्जुन मैं हूं । जो जो विशेष ऐश्वर्ययुक्त,

शोभायुक्त और उच्च तत्त्व होगा, वह सब मेरे ही अंशसे हुआ है, ऐसा तुम जानो । अथवा इतने विस्तारसे कहनेकी क्या आवश्यकता है ? सारांशरूपसे इतना ही कहना पर्याप्त है कि एक अंशसे सब जगत् व्यापकर मैं रहा हूँ ।'

जगत्में जो जो ऐश्वर्ययुक्त सत्त्व होता है, वह परमेश्वरके अंशसे होता है, ऐसा यहां कहा है ।

इसी 'विभूतियोग' के समान 'रुद्रको चोरके रूपमें मानना' है । कई टीकाकारोंने इस रुद्राध्यायपर टीका करते हुए लिखा है कि चोर और डाकू भी रुद्रके रूप हैं । देखिए—

रुद्रो लीलया चोरादिरूपं घत्ते, यद्वा रुद्रस्य जगदात्मकत्वाच्चोरादयो रुद्रा एव ज्ञेयाः । यद्वा स्तेनादिशरीरे जीवेश्वररूपेण रुद्रो द्विधा तिष्ठति तत्र जीवरूपं स्तेनादिपदवाच्यं तदीश्वररुद्ररूपं लक्षयति यथा शाखाग्रं चन्द्रस्य लक्षकम् । किंवहुना लक्ष्यार्थविवक्षया मंत्रेषु लौकिकाः शब्दाः प्रयुक्ताः ॥

(महीधरभाष्य य. अ. १६।२०)

“रुद्ररूपी जगदात्मा लीलासे चोरका रूप धारण करता है । अथवा रुद्र जगदात्मा होनेसे चोरादि सब रुद्र ही जान लीजिए । अथवा चोरादिकोंके शरीरमें जीव और ईश्वररूपसे रुद्र दो प्रकारका होकर रहता है, वहां चोर आदि शब्द जीवरूपके दर्शक होते हुए भी ईश्वररूपके बोधक होते हैं, जिस प्रकार शाखाके अग्रसे चंद्रमाका ज्ञान बताया जाता है । बहुत क्या कहना है ? ईश्वरका ज्ञान देनेकी इच्छासे मंत्रोंमें बहुतसे लौकिक शब्द प्रयुक्त किये हैं ।”

श्री सायणाचार्य भी अपने काण्व-यजु० अ० १७ के भाष्य में उक्त प्रकार ही कहते हैं । उक्त विषयमें सायण और महीधर की संमति एक जैसी ही है ।

१. छलयतां घूतं अस्मि (गीता)—कपटीयोंका घूत मैं हूँ ।
२. स्तेनानां पतिः अस्मि (वेद)—चोरोंका स्वामी मैं हूँ ।
३. स्तायूनां पतिः अस्मि । (वेद)—ठगोंका मुखिया मैं हूँ ।
४. तस्कराणां पतिः अस्मि । (वेद)—डाकूओंका सरदार मैं हूँ ।
५. मुष्णतां पतिः अस्मि । (वेद)—खुटेरोंका श्रेष्ठ मैं हूँ ।

उक्त गीताके वचनमें 'रुद्राणां शंकरश्चास्मि ।' यह वाक्य है । 'अनंत रुद्रोंमें मैं एक शंकरनामक रुद्र हूँ ।' इन वाक्यमें रुद्रोंका अनंतत्व और शंकरका एकत्व सिद्ध है । यहां

शंकर शब्दसे परमात्मा और रुद्र शब्दसे परमात्मासे उत्पन्न पूर्वोक्त इतर रुद्र लेना उचित है । इस प्रकार करनेसे इस वाक्यकी वेदके आशयके साथ संगति लग सकती है ।

पं० जान डॉसनसाहबका मत ।

'हिंदु-क्लासिकल डिक्शनरी' में पं० डॉसनसाहब लिखते हैं कि—

'He is the howling terrible god, the god of storms, the father of the Rudras or Maruts, and is sometimes identified with the god of fire. On the one hand he is a destructive deity who brings diseases upon men and cattle, and upon the other he is a beneficent deity supposed to have a healing influence. These are the germs which afterwards developed into the god Siva.'

(पृ. २६९)

'यह (रुद्र) गर्जना करनेवाला भयानक देव है, जो तूफानका देव है और जो रुद्रों अथवा मरुतोंका पिता है । कभी कभी इसका संबंध अग्निदेव के साथ जोड़ा जाता है । एक ओर यह देव सबका नाश करता है और प्राणियोंमें बीमारियाँ फैलाता है, तथा दूसरी ओर इसको सुखदायक और आरोग्य देनेवाला देव समझा जाता है । ये ही मूल अंकुर हैं कि जिनका विकास होकर आगे जाकर शिवजीका स्वरूप बना है ।'

रुद्रको केवल बादलोंका देव पं० डॉसनसाहब मानते हैं । परंतु यदि वे 'रुद्र और मरुत्' के मूल अर्थोंकी थोड़ीसी भी खोज करते, तो उनको पता लगता कि 'रुद्र' को 'जगतां पतिः' अर्थात् 'अनंत ब्रह्मांडोंका स्वामी' कहा है । यह मंत्रों का विधान ये यूरोपियन पंडित देखते ही नहीं ।

सर मोनिअर वुडलियमसाहबकी संमति ।

यह साहब कहते हैं कि—

'Rudra, roarer, the god of tempests and father and ruler of Rudras and Maruts. (In Veda he is closely connected with Indra and still more with Agni, the god of fire and also with Kala or time, the all-consumer with whom he is afterwards identified; though

generally represented as a destroying deity... he has also the epithet Siva, 'benevolent or auspicious' and is even supposed to possess healing powers..... from his purifying the atmosphere;)'

(सर मो. वुडलियम का संस्कृत-इंग्लिश कोश)

‘ गरजनेवाला रुद्र तूफानोंका देव है और रुद्रों और मरुतोंका पिता और राजा है । (वेदमें रुद्र देवका इन्द्र और विशेष कर अग्नि के साथ संबंध बताया है ।..... बादमें सर्वभक्षक कालके साथ भी जोड़ दिया है । यद्यपि इसको संहारक देव समझा जाता है..... तथापि यह कल्याणकारक और आरोग्यदायक भी वर्णन किया है । यह हवा को शुद्ध करता है ।)’

एक ही परमेश्वर जगत्का उत्पादक, पालक, संहारक, कल्याणकारक, सुखदायक आदि अनंत गुणोंसे युक्त है । ये लोग इन सब गुणोंको रुद्र-वर्णनमें देखते हैं, परंतु रुद्रको ईश्वर माननेके समय शिक्षित होते हैं ।

श्री० म० आर्थर आंटोनी मैक्डोनेल- साहबकी संमति ।

‘ This god occupies a subordinate position in the Rig Veda being celebrated in only three entire hymns, in part of another, and in one conjointly with Soma. His hand, his arms, and his limbs are mentioned. He has beautiful lips and wears braided hair. His colour is brown; his form is dazzling, for he shines like the radiant sun, like gold..... he holds the thunderbolt in his arm, and discharges his lightning shaft from the sky; but he is usually said to be armed with a bow & arrows, which are strong and swift. ’

‘ Rudra is very often associated with the Maruts (i. 85). He is their father, and is said to have generated them from the shining under of the cow prishni. ’

‘ He is fierce and destructive like a terrible beast, and is called a bull, as well as the ruddy (arusa) boar of heaven. He is exalted, strongest of the strong, swift, unassailable,

unsurpassed in might. He is young and unaging, a lord (Ishana) and father of the world. By his rule and universal dominion he is aware of the doings of man and gods. He is bountiful (midhvams), easily invoked and auspicious (Shiva). But he is usually regarded as malevolent; for the hymns addressed to him chiefly express fear of his terrible shafts and deprecation of his wrath..... He is, however, not purely maleficent like a demon. He not only preserves from calamity, but bestows blessing. His healing powers are especially often mentioned; he has a thousand remedies, and is the greatest physician of physicians..... ’

‘ The physical basis represented by Rudra is not clearly apparent. But it seems probable that the phenomenon underlying his nature was the storm. ’ [A Vedic Reader, pages 56-57]

‘ यह रुद्रदेव ऋग्वेदमें निम्न कोटिका देव है । क्योंकि संपूर्ण ऋग्वेदमें इसके लिये केवल तीन सूक्त ही हैं ।..... उसके हात, बाहु और अवयवोंका वर्णन किया है । उसके होंठ सुंदर हैं, और वह जटाजूट धारण करनेवाला है । उसका बदामी रंग है और इसका आकार चमकीला है, क्योंकि तेजस्वी सूर्यके समान वह चमकता है..... मेघविद्युत् का वज्र वह हाथमें धरता है, और आकाशसे तेजस्वी वायु मारता है; परंतु बहुत करके धनुष्यबाण धारण करता है, ऐसा ही कहा गया है... ’

‘ रुद्रका मरुतोंके साथ बहुत संबंध बताया है । वह उनका पिता है और पुश्तिनामक गायके चमकीले गर्भस्थानसे मरुतोंकी उत्पत्ति की गई है, ऐसा कहा गया है । ’

‘ कूर पशुके समान भयानक और विनाशक वह रुद्र है । और उसको बैल कहते हैं, तथा उसको खर्गका लाल सुवर कहा है । वह बड़ा उच्च, बलवानोंमें बलवान्, चपल, न दबनेवाला और सबसे प्रबल है । वह तरुण और वृद्धावस्थासे रहित है । वह सबका राजा और जगत्का पिता है । सब मनुष्य और सब देवताओंके सब कर्मोंको वह जानता है, क्योंकि उसका राज्य

और उसका शासन सर्व जगत्में है । वह दानशूर, कल्याणमय और सुलभतासे संतुष्ट होनेवाला है । परंतु बहुधा ऐसा समझा जाता है कि वह बड़ा द्रोही है, क्योंकि जिन सूक्तोंसे उनकी प्रार्थना की गई है, उन सूक्तोंमें उसके क्रोधकी भीति और उसके शत्रुओंका डर व्यक्त हुआ है । परंतु वह राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है । वह कष्टोंसे न केवल बचाता है, परंतु आर्शावाद् भी देता है । उसकी आरोग्यवर्धनकी शक्तियोंका वर्णन आया है और उसके पास हजारों दवाइयाँ हैं और वह वैद्योंमें बड़ा वैद्य है ।

‘ रुद्रके द्वारा जिस पांचभौतिक घटनाका वर्णन हुआ है, वह घटना स्पष्ट रीतिसे ज्ञात नहीं होती । परंतु यह संभव है कि उसके स्वभावके नीचे जो पांचभौतिक घटना है, वह बहुधा तूफानी अवस्था होगी ’

(वैदिक रीडर, पृ. ५६-५७)

युरोपियन पंडितोंकी ये ही संमतियाँ हैं । अन्य अनेक पंडितोंने रुद्र देवताके विषयपर बहुतसा लिखा है, परंतु उसका मुख्य अंश उक्त संमतियोंमें हैं । इसलिये और अधिक संमतियाँ न देता हुआ मैं इनकी ही समालोचना करता हूँ । उक्त संमतियाँ देखनेसे निम्न मत प्रतीत होते हैं—

(१) रुद्रका दर्जा बहुत नीचे है, क्योंकि उसके लिये थोड़े सूक्त हैं ।

(२) उसके अवयवोंका और रंगरूपका वर्णन होनेसे वह साकार है ।

(३) धनुष्यबाणका वर्णन होनेसे वह शस्त्रधारी साकार है ।

(४) रुद्र मरुतोंका पिता है और पृश्निनामक गायसे मरुतोंकी उत्पत्ति हुई है ।

(५) रुद्र देव क्रूर, द्रोही, भयानक है, परंतु राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है ।

(६) वह उच्च, श्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान्, चपल, न दबनेवाला, सबसे प्रबल, तेजस्वी, सर्वज्ञ, दाता, मंगलमय और संतुष्ट है । वह सब जगत्का पिता और राजा है ।

(७) यह आरोग्यदाता और रोग दूर करनेवाला है ।

(८) रुद्रके वर्णनके बीचमें जो नैसर्गिक घटना है, वह गुप्त है, उसका पता नहीं लगता । परंतु वह घटना बहुधा तूफानकी हवा होगी ।

(९) वह बैल और दिव्य सुवर कहा गया है ।

(१०) रुद्र मेघस्थानकी बिजुली है ।

अब हम रुद्रसूक्तका थोड़ासा विचार करते हैं—

पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।

पुराणोंमें आया हुआ रुद्रका वर्णन और वेदका रुद्रका वर्णन कई अंशोंमें भिन्न है । देखिए—

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया
तं जुषस्य स्वाहा । एष ते रुद्र भाग
आखुस्ते पशुः ॥ (यजु० ३।५७)

‘ हे रुद्र ! यह तेरा भाग है । अपनी बहन अंबिकाके साथ उसका सेवन करो । यह तेरा भाग है और चूहा तेरा पशु है । ’

यहां इतना ही बताना है कि वेदमें अंबिका रुद्रदेवकी बहन कही है, परंतु पुराणोंमें उसकी धर्मपत्नी कही है । तथा रुद्रका पशु चूहा इस मंत्रमें बताया है । परंतु पुराणोंमें चूहा गणपति का पशु कहा है । यह भेद देखने योग्य है । तथा—

भवारुद्रौ सयुजा संविदानाबुभावुप्रौ

चरतो वीर्याय । ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीतः ॥

(अथर्व. ११।२।१४)

‘ भव और शर्व ये दोनों (सयुजा) साथ रहनेवाले मित्र, (संविदानौ) उत्तम ज्ञानवाले हैं । (उभौ उग्रौ) दोनों प्रतापी हैं, वे (वीर्याय चरतः) वे पराक्रम करनेके लिये चलते हैं । (यतमस्यां दिशि) जिस किसी दिशामें वे होंगे, उनको हमारा नमस्कार है । ’

इससे ‘ भव और शर्व ’ ये परस्पर मित्र हैं, परंतु साथ रहनेवाले और बड़ा पराक्रम करनेवाले हैं, ऐसा पता लगता है । पुराणमें ये दोनों शब्द एक ही रुद्रके लिये आये हैं ।

‘ भव ’ का अर्थ ‘ उत्पन्नकर्ता ’ है और ‘ शर्व ’ का अर्थ ‘ प्रलय करनेवाला ’ है । परमात्मामें ये दोनों गुण होनेसे वहां इनकी भिन्नता लुप्त होती है, ऐसा भी माना जा सकता है । इसलिये-यह भिन्नत्व और एकत्व विशेष विचारसे सोचना चाहिए ।

रुद्रका शरीर ।

शिवपुराणमें निम्न श्लोक ‘ रौद्री तनुः ’ अर्थात् रुद्रके शरीर-के विषयमें आते हैं, रुद्रका विचार करनेके समय इसका भी विचार करना उचित है—

अग्निरित्युच्यते रौद्री घोरा या तैजसी तनुः ।
 सोमः शाक्तोऽमृतमयः शक्तेः शांतिकरी तनुः ॥३॥
 विविधा तेजसे वृत्तिः सूर्यात्मा च जलात्मिका ।
 तथैव रसवृत्तिश्च सोमात्मा च जलात्मिका ॥४॥
 वैद्युतादिमयं तेजः मधुरादिमयो रसः ।
 अग्नेरमृतनिष्पत्तिरमृतादग्निरेधते ॥ ५ ॥

अमितत्त्वको रुद्रका भयानक तैजस् शरीर कहते हैं । तथा जलमय सोमतत्त्वको शक्तिका—(रुद्रपत्नी)—शांतिकारक शरीर कहते हैं । तेजके तत्त्व अनेक प्रकारके हैं तथा जलके तत्त्व भी विविध हैं । विद्युत् आदि तेज हैं और मधुर आदि रस हैं । अग्नि से जलकी उत्पत्ति और जलसे अग्निका प्रकाश होता है । ' इस प्रकार सब जगत् ' तैजस् उग्र शक्तिके साथ जलात्मक शांत शक्तिके वास्तव्य ' से होता है ।

उक्त वर्णनका तात्पर्य इतना ही है कि, इस अगत्में दो शक्तियाँ हैं, (१) एक तेजस शक्ति गति उत्पन्न करनेवाली है; (२) दूसरी शांति करनेवाली एक शक्ति है । इन दो शक्तियोंसे यह जगत् चल रहा है । दोनों शक्तियाँ कार्य कर रहीं हैं । पहिली रुद्र शक्ति है और दूसरी रुद्रकी धर्मपत्नी है । इसलिये इन को जगत् के माता पिता कहते हैं ।

रुद्र	अंबिका
महादेव	पार्वती
अग्नि	जल
सूर्य	चंद्र
अग्नि	सोम

इत्यादि शब्दोंसे उक्त आशयका पता लग सकता है । आशा है कि इस विधानका भी पाठक विचार करेंगे ।

खोजका विषय ।

' रुद्र ' देवताका परिचय देनेके लिये बहुतसा रुद्रविषयक ज्ञान इस निबंधमें एकत्रित किया है । अभी बहुतसे बातोंका संशोधन करना है । आशा है कि पाठक इन बातोंका विचार करेंगे और रुद्रत्वका निश्चय करनेके लिये अन्य ग्रंथोंका संशोधन करके अधिक ज्ञान प्रकाशित करेंगे ।

रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।

यह रुद्रसूक्त यजुर्वेद-संहिता में है । वाजसनेयी संहिता का १६ वां अध्याय; काण्वसंहिताका १७ वां अध्याय; मैत्रायणी संहिताका काण्ड २, प्रपाठक ९; काठकसंहिताका १७, १३-१४;

कपिष्ठल कठ संहिता का २७, ३-४; तैत्तिरीय संहिताका कां. ७।५।४-५ रुद्रदेवता के वर्णन के लिये ही प्रसिद्ध हैं । जो सूक्त हम यहां आज विचार करनेके लिये लेना चाहते हैं, वह इतनी संहिताओं में प्रमाणत्वेन विद्यमान है । इस अध्याय में रुद्रदेवताका बड़ा विस्तृत वर्णन है ।

यहां विचार करनेके लिये हम वा० यजु० अ० १६ के १७-४६ और ५४ ये ३१ मंत्र लेते हैं ।

यहां कई रुद्रों के नाम गिनाये हैं । इन मन्त्रों में नाम ही नाम गिनाये हैं । इन नामों के हम नीचे वर्ग करके बता देते हैं, जिन से पाठकों को पता लगेगा कि, वे सब रुद्र किन किन वर्गों में संमिलित होने योग्य हैं । इन में से जो मानवों में संमिलित होनेयोग्य हैं, उन के वर्ग वे हैं—

मानवरूपोंमें रुद्र ।

(ज्ञानी पुरुष)

पूर्वोक्त मन्त्रों में जो ज्ञानी-वर्ग के रुद्र हैं, उनकी नामावलि यह है । ज्ञानी-वर्गके रुद्रोंको ब्राह्मणवर्ग के रुद्र कहा जा सकता है ।

१. गृत्स = ज्ञानी, कवि, एक ऋषि [२५]
२. गृत्सपति = ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ, गृत्सों का अधिष्ठाता [२५]
३. श्रुत = विख्यात, प्रसिद्ध, विद्वान्, श्रुति का वेत्ता [३५]
४. पुलस्ति = विद्वान्, ऋषि [४३]
५. रुद्र = [रु] शब्द शास्त्र का [द्र] पारंगत, ज्ञानी [१८]
६. उद्गुरमाण = उत्तम ज्ञानका उपदेश देनेवाला, वक्ता [४६]
७. अभिवक्ता = [वा० य० १६।५] = उपदेशक, अध्यापक, वक्ता ।
८. मंत्री = राजा का मन्त्री, दिवान, सलाहगार, सुविचारी, बुद्धिमान्, चतुर, हित की मंत्रणा देनेवाला [१९]
९. देवानां हृदयः = देवताओंके लिये जिसने अपना हृदय दिया है, भक्त, प्रेमी, साधु, सज्जनों की सेवा करनेवाला [४६]
१०. भिषक्, दैव्यो भिषक् = दिव्य वैद्य [वा० य० १६।५], आयुर्वृद्ध [६०] आयुष्य की वृद्धि करनेवाला ।

११. औषधीनां पतिः = औषधियां अपने पास रखनेवाला [१९]
१२. सभा = सभा, परिषद्, विविध सभाओं के सभासद [२४]
१३. सभापतिः = सभा का अध्यक्ष, परिषद् का प्रमुख [२४]
१४. श्रवः = कान, सुननेवाला, श्रवण करनेवाला, शिष्य [३४] प्रभृषः = परामर्श लेनेवाले पंडित [३६]
१५. प्रतिश्रवः = सुनानेवाला, उपदेश करनेवाला, गुरु [३४]। वादी-प्रतिवादी, प्रश्न-प्रतिप्रश्न के समान श्रव-प्रतिश्रव ये पद हैं। इनका परस्परसंबंध है।
सोभ्यः [३३] = पुण्यकर्म करनेवाले तथा प्रतिसर्ग [३३] = गुप्त बात प्रकट करनेवाले।
१६. श्लोक्यः = प्रशंसनीय, श्लोकों के योग्य, प्रशंसनीय विद्वान् [३३]
- प्राचीन परंपराके अनुसार वैद्य, राजा का मंत्री, अध्यापक आदि ब्राह्मण अथवा ज्ञानी-वर्गके लोग ही हुआ करते हैं। अर्थात् ये ब्राह्मण हैं अथवा ज्ञानी तो निःसन्देह हैं।
- पुरुषसूक्त में 'ब्राह्मणों को नारायण का मुख' कहा है। यहाँ उन्हीं नारायण के अथवा रुद्रदेवता के मुख में किन का समावेश होता है, यह अधिक नाम देकर बताया है। यहाँ के कई नाम जैसे 'उद्गुरमाण' आदि अन्य वर्गमें भी गिने जाना स्वाभाविक है। जो शेष बचेंगे, वे इस वर्ग में रहेंगे। इस तरह ब्राह्मणवर्ग के स्त्रियोंका विचार करने के पश्चात् अब क्षत्रियवर्ग के स्त्रियों का, अथवा वीरोंका विचार करते हैं। रुद्र का नाम 'वीरभद्र' सुप्रसिद्ध है। कल्याण करनेवाला वीर 'वीरभद्र' कहा जाता है। देखिये, वीरभद्रके वर्गमें कौनसे रुद्र गिने जाने योग्य हैं—

क्षत्रिय-वर्गके रुद्र ।

(वीर रुद्र ।)

(रोदधति इति रुद्रः) जो रुलाता है, वह रुद्र है। शत्रुओं को रुलाने के कारण वीर को रुद्र कहते हैं। इस तरह क्षत्रिय वीर रुद्र कहे जाते हैं।

१. रुद्रः = शत्रुओं को रुलानेवाला वीर [१, १८]
तवस् = बलवान् [४८] आगे राजाके अनेक अधिकारी, ओहदेदार, रुद्र करके गिनाये हैं।
२. क्षेत्राणां पतिः = क्षेत्रोंकी रक्षा करनेवाला [१८]

३. दै. [रुद्र]

- भूतानां अधिपतिः = प्राणियों के रक्षक [५९]
३. वनानां पतिः = वनोंकी पालना करनेवाला [१८]
वन्धः = वनमें उत्पन्न [३४]
४. अरण्यानां पतिः = अरण्यों का संरक्षण करनेवाला [२०]
५. स्थपतिः = स्थानोंका पालक [१९], पथिरक्षी [६०], प्रपथ्य [४३] = मार्गों की रक्षा करनेवाले।
६. कक्षाणां पतिः [१९] दिशां पतिः [१७]
(कक्षा) = गुप्त स्थान, अन्तर्का भाग, बड़ा अरण्य, बहुत ही बड़ा वन। [कक्षाणां पतिः, कक्षापः] = गुप्त स्थान की रक्षा करनेवाला, अन्तिम विभाग का रक्षक, बड़े अरण्योंका रक्षक [१९], कक्ष्यः = अरण्य की कक्षा में रहनेवाला [३४]
७. पत्नीनां पतिः = सेनाओं का पालक, सेनापति, पादचारी सेनाविभाग का अधिपति [१९], सत्त्वनां पतिः = प्राणियोंका रक्षक [२०]
८. आश्याधिनीनां पतिः = उत्तम निशाना मारनेवाले सैनिकोंका अधिपति, सेनापति [२०],
[श्याधिन्] = शत्रु का वेध करनेवाला [२०, २४]
९. विक्रान्तानां पतिः = शत्रु सैनिकोंका अधिपति [२१]
१०. कुलुञ्जानां पतिः = शत्रुसेनाको पीसनेवाले, शत्रुपर चढ़ाई करके उनके सेनाविभागोंको पृथक् करके उनका नाश करनेवाले वीरोंके प्रमुख अधिपति [२२]
११. गणपतिः = वीरोंके गणों के अधिपति [२५]
ककुभः = प्रमुख, मुख्य [२०]
१२. व्रातपतिः = वीरों के समूह के प्रमुख [२५]
१३. सेना, १४ व्रातः, १५ गणः = ये सेनाविभागोंके नाम हैं; सैनिकों की संख्या के अनुसार ये नाम प्रयुक्त होते हैं [२५, २६]।
१६. शूरः = वीर, शूर [३४], श्रयद्वीरः = शत्रु का नाश करनेवाला वीर [४८]; उग्रः, भीमः = उग्र, शूर वीर, भयानक कर्म करनेवाले [४०]
१७. विचिन्वत्कः = शूर वीर, बहादुर, चुन चुन कर शत्रुवीरों का वेध करनेवाला वीर [४६], विकि-रिद्रः = विशेष नाश करनेवाला [५२]
१८. रथी = रथमें बैठनेवाला वीर [२६]

१९. अरथी = रथके विना युद्ध करनेमें प्रवीण वीर [२६]
२०. आशुरथ = जो त्वराके साथ रथयुद्ध करता है, त्वरासे रथ चलानेवाला वीर [३४]
२१. उगणा = शस्त्रास्त्रों को ऊपर उठाकर शत्रुपर हमला करनेवाली सेना का समूह [२४]
२२. आशुसेनः = अपनी सेनाको अतिशीघ्र तैयार करनेवाला वीर, अपनी सेनाको सदा सिद्ध रखनेवाला वीर [३४]
२३. श्रुतसेनः = जिस सेनाका यश चारों ओर फैला हो, विख्यात, यशस्वी, सदा विजयी सेनापति [३५]
२४. सेनानी = सेनाको कुशलता के साथ चलानेवाला सेनापति [२६]
२५. हुंजुभ्यः = नौबत, ढोल अथवा बाजेके साथ रहकर लड़नेवाला सैन्य [३५]
२६. असिमान् = तलवारसे लड़नेवाले सैनिक वीर [२१]
२७. इधुमान् = बाणोंका उपयोग करनेवाले, बाणोंको बर्तनेवाले वीर [२२, २९]
२८. सुकायी = तीक्ष्ण बाण अथवा भाला बर्तनेवाला वीर [२१]
- सुकाहस्ताः = शस्त्र धारण करनेवाले [६१]
२९. निषङ्गी = खड्गधारी वीर [२०, २१, ३६]
३०. धन्वायी = धनुष्य धारण करके शत्रुपर चढ़ाई करनेवाला वीर [२२]
- आयुधी = शस्त्रोंको साथ रखनेवाला वीर [३६]
३१. आतधन्वा = सौ धनुष्योंका धारण करनेवाला वीर [२९]
३२. इधुधिमन् = बाणोंके तर्कसको पास रखनेवाला [२१, ३६]
३३. तीक्ष्णेषुः = तीखे बाणोंका उपयोग करनेवाला [३६]
३४. स्वायुधः = उत्तम आयुधोंको पास रखनेवाला [३६]
३५. सुधन्वन् = उत्तम धनुष्यका उपयोग करनेवाला [३६]
- ३६-३९. वर्मा, कवची, बिहमी, वरूथी = विविध प्रकारके कवच धारण करनेवाला वीर [३५]
४०. कृत्स्नायतया धावन् = आकर्षण धनुष्य पूर्णतया खींचकर युद्धभूमिमें दौड़नेवाला वीर [२०]
४१. निष्पावी [१८, २०] = शत्रुका निःशेष वेध करनेवाला वीर [२०]
४२. जिघांसत् = शत्रुकी कल करनेवाला वीर [२१]
४३. विध्यत् = शत्रुका वेध करनेवाला [२३]
४४. अवभेदी = शत्रुको नीचे गिराकर उसको छिन्नभिन्न करनेवाला वीर [३४]
४५. हन्ता = शत्रुका हनन करनेवाला [४०]
४६. हनीयान् = शत्रुका संहार करनेवाला [४०]
४७. अभिघ्नत् = शत्रुपर प्रहार करनेवाला [४६]
४८. अग्रेवधः = अग्रभागमें रहकर शत्रुका वध करनेवाला [४०]
४९. दूरेवधः = दूरसे शत्रुका वध करनेवाला [४०]
५०. आहनन्यः = शत्रुपर आघात करनेवाला [३५]
- ढोलका शब्द करता हुआ शत्रुपर आक्रमण करनेवाला ।
५१. धृष्टः = शत्रुका वध करनेवाला साहसी वीर [१४, ३६]
५२. विक्षिणत्क = शत्रुका नाश करनेवाला [४६]
५३. आनिर्हत्त = आसमन्तात् भागसे जिसने शत्रुका वध किया है [४६]
५४. सहमानः = शत्रुका पराभव करनेवाला [२०]
५५. आतन्वानः = धनुष्यकी प्रत्यंचा चढ़ानेवाला वीर [२९]
५६. प्रतिदधानः = प्रत्यंचा चढ़ाये धनुष्यपर बाण लगानेवाला [२२]
५७. आयच्छत् = धनुष्यकी डोरी खींचनेवाला वीर [२२]
५८. अस्यत् = शत्रुपर बाण फेंकनेवाला [२२]
५९. विसृजत् = शत्रुपर विशेष रूपसे बाण फेंकनेवाला [२३]
- ६०-६१. आस्त्रिदत् प्रस्त्रिदत् = शत्रुको खेद उत्पन्न करने योग्य आचरण करनेवाला वीर [४६]
- ६२-६३. आग्याधिनी [२४], आग्याधिनीनां पतिः [२०] = शत्रुसेनापर चारों ओरसे हमला करनेवाला वीर तथा ऐसी वीरसेनाका सेनापति ।
६४. विविध्यन्ती = विशेष रीतिसे शत्रुसेना का वेध करनेवाली प्रबल वीरसेना [२४]
६५. गृह्णी = शत्रुका नाश करनेवाली वीरसेना [२४]
६६. अवसान्यः = अन्तिम भागपर खड़ा रहकर संरक्षण करनेवाला वीर [३३]
६७. पथीनां पतिः = मार्गस्थोंके रक्षक वीर [१७]
६८. मृगयुः = मृगया, अथवा शिकार करनेवाला वीर [२७]
- ये वीरवर्ग अथवा क्षत्रियवर्गके नाम हैं। रुद्रोंके ही ये नाम हैं, जैसे ब्राह्मणवर्गके रुद्र पीछे दिये हैं, वैसे ही ये क्षत्रियवर्गके

रुद्र हैं । जिस तरह ब्राह्मण रुद्र हैं, वैसे ही क्षत्रिय भी रुद्र हैं । अब वैश्यवर्गके रुद्र देखिये । वैश्यवर्गमें खेती और पशुपालन करनेवालोंका समावेश होता है, अतः उक्त मन्त्रोंमें वैश्यरुद्रोंका वर्णन देखिये—

वैश्यवर्गके रुद्र ।

वैश्यवर्गमें निम्नलिखित रुद्रोंका अन्तर्भाव हो सकता है—

१. वाणिजः = बनिया, व्योपारी, दूकानदारी करनेवाला [१९]
२. संप्रहृता = पदार्थों का संप्रह करनेवाला [२६]
वारिवस्कृत् [१९] धनकी उत्पत्ति करनेवाला ।
- ३-४. अन्धस्रपतिः [४७], अन्नानां पतिः [१८] = अन्नका पालनकर्ता, अन्नके लिये उपयोगी होनेवाले विविध धान्यादि पदार्थोंका पालन करनेवाला [४७, १८]
ऐकवृदाः [६०] = अन्नकी वृद्धि करनेवाला ।
५. वृक्षाणां पतिः = वृक्षवनस्पति आदिओं की पालना करनेवाला [१९]
- ६-७. पशुपतिः [२८], पशूनां पतिः [१७] = पशुओंका पालनेवाला ।
८. अश्वपतिः = घोड़ोंकी पालना करनेवाला [२४]
- ९-१०. श्वपतिः [२८], श्वनी [२७], कुत्तोंकी पालना करनेवाला ।
११. पुष्टानां पतिः = पुष्टोंके स्वामी [१७]
१२. जगतां पतिः = चलनेवालोंका पालक [१८]

वैश्योंका कर्तव्य खेती, वृक्षसंवर्धन और पशुपालन है । यह कर्म करनेवाले ये रुद्र इस रुद्रसूक्तमें दीखते हैं । इस तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्गोंके रुद्रोंका वर्णन हमने यहां तक देखा । शूद्रवर्गके रुद्रोंका वर्णन अब देखना है । शूद्रोंमें सब कारीगरोंका समावेश होता है । देखिये—

शिल्पिवर्गके रुद्र ।

पूर्वोक्त मंत्रोंमें निम्नलिखित रुद्र शिल्पिवर्गके आ गये हैं—

१. सूतः = सारथी, रथ चलानेवाला, घोड़ोंकी शिक्षा देनेवाला, भाट और बीरोंकी कथाओंको सुनानेवाला ।
- २-४. क्षत्ता [२६], तक्षा [२७], रथकारः [२७] = बढई, तक्षणा, रथ बनानेवाला, लकड़ीका काम करनेवाला [२६]
- ५-६. धनुस्कृत्, इधुस्कृत् = धनुष्य और बाण बनानेवाला कारीगर [४६]

७. कर्मरिः = लुहार, लोहेका अथवा धातुका कार्य करनेवाला [२७]
८. कुकालः = कुम्हार [२७]
९. निषादः = जंगलमें रहनेवाला, जंगली आदमी, सभामें [नि-साद] सबसे नीचे बैठने योग्य [२७]
१०. पुंजि-ष्ठ = टोलियां बनाकर रहनेवाले लोग [२७]
११. गिरि-चरः [२२] गिरिश्चयः [२९] गिरिशन्त [२] पहाडियोंपर घूमनेवाला, पहाड़ी लोग ।
१२. उत्तरण, प्रतरण, तार = नदीके पार करानेवाला, नदीपार करानेमें कुशल [४२]
१३. अहन्तिः सूतः = हननसे बचानेवाला सूत [१८]
ये नाम प्रायः कारीगरोंके तथा अन्यान्य व्यवहार करनेवालोंके वाचक हैं । अर्थात् शूद्रोंके वाचक हैं । शूद्रोंमें जो कारीगरी कर नहीं सकते, वे परिचर्या, सेवा शुश्रूषा करके अपनी आजीविका करते हैं, उनके नाम उपर्युक्त रुद्रमंत्रों में ये हैं—

१४. परि-चरः - परिचारक, नौकर, सेवक, परिचर्या करनेवाले [२२]
१५. नि-चेरुः = नौकरी करनेवाला, नीचे के स्थानमें रहनेयोग्य [२०]
१६. जघन्यः - हीन, अन्त्यज, नीच वृत्तिका मनुष्य, अधःपतित मनुष्य [३२]

ये नाम शूद्रवर्गके हैं । इनमें 'परिचर' नाम परिचर्या करनेवाले का स्पष्ट है । लुहार, बढई आदि के नाम भी सब को मालूम हैं । शूद्रोंमें दो भेद हैं, एक सच्छूद्र कहलाते हैं । जो कारीगरीके द्वारा अपनी आजीविका प्राप्त करके निर्वाह करते हैं और दूसरे असच्छूद्र हैं; जो सेवा करके आजीविका प्राप्त करते हैं । इन दोनों प्रकारके शूद्रोंका वर्णन पूर्वोक्त शब्दोंद्वारा हुआ है ।

यहां तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्गोंके अर्थात् ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कारीगर इन चार प्रकारके व्यवसायियोंके नाम रुद्रके नामोंमें दीखते हैं । वे सब रुद्रके रूप हैं । रुद्रदेवता इन रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है । रुद्रदेवता की भेट करनी हो, तो इन रूपोंमें रुद्रका दर्शन हो सकता है । रुद्र इन नाना रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है । रुद्रदेवता के भक्त अपनी उपास्यदेवताका दर्शन करें । वेद ने रुद्रदेवताका इस तरह प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है । पाठक इसका स्वीकार करें ।

पाठक यह जानते हैं कि, 'रुद्र' उसी अद्वितीय देव का नाम है, जिस को 'पुष्प, नारायण, अग्नि, इन्द्र, ' आदि अनेक नाम दिये गये हैं ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्

बाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरू तदस्य यद् वैश्यः

पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ [ऋ० १०।१०।१२]

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों के लोग ये सब परमात्मा के कमलः सिर, बाहू, पेट या जंघा तथा पांव हैं । अर्थात् चारों वर्ण मिलकर परमात्मा का शरीर है । परमात्मा के शरीर के ये चार अवयव हैं । इस परमात्मा को आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, नारायण या रुद्र आदि नामों से पुकारते हैं । रुद्र और नारायण एक ही देव है । एक ही देवता के ये दो नाम हैं । इसलिये जो वर्णन नारायणपुरुष का पुरुषसूक्त में हुआ है, वही वर्णन रुद्र का विस्तार से रुद्रसूक्त में दिखाई दिया, तो वह उचित ही है ।

यहां पाठक देखें कि, पुरुषसूक्त में जो वर्णन अतिसंक्षेप से है, वही वर्णन रुद्रसूक्त में विस्तार से है । पुरुषसूक्त में पुरुष-नारायण-देवता के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये लोग अवयव हैं, ऐसा कहा है और रुद्रसूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों के कई नाम गिनाये हैं । अर्थात् पुरुषसूक्त का यह विस्तार से स्पष्टीकरण है । इस रुद्रसूक्त में ये रुद्र के रूप हैं, ऐसा कहा है; और इन रुद्र को नमस्कार किया है । ये उपास्य और संसेव्य हैं, ऐसा यहां बताया है ।

मानवों को जो परमात्मा संसेव्य है, वह ज्ञानी, शूर, व्यापारी और सेवक रूप से इस भूमि पर विचरनेवाला ही परमात्मा है । यह बात इस रुद्रसूक्त के मनन से सिद्ध हो रही है । परमात्मा सब रूपों में इस भूमि पर विचर रहा है, इन में मानवों के रूप भी हैं । हमें परमात्मा की सेवा करके कृतकृत्य बनना है, तो हमें इन मानवों की-जनतारूपी जनार्दन की सेवा करना उचित है । वेदका यही धर्म है, पर आज मानवों की सेवा अपनी कृतकृत्यता के लिये करने का भाव समाज से दूर हुआ है और अन्यान्य उपासनाएं प्रचलित हुई हैं । वैदिक धर्म से जनता कितनी दूर जा रही है, इसका विचार यहां इस विवेक से हो सकता है ।

चार वर्णों के रुद्र ।

चार वर्णों के चार वर्णों में जो रुद्र होते हैं, उनकी गणना उपर के लेख में की है, परन्तु वहां ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये नाम नहीं आये हैं । इसलिये पाठकों के मन में सन्देह हो सकता है कि, ये नाम चार वर्णों के कैसे माने जायेंगे ? इस शंका का निवारण यजुर्वेदकी मैत्रायणी-संहिता में किया है, वह मन्त्र भाग अब देखिये—

नमो ब्राह्मणेभ्यो राजन्येभ्यश्च वो नमः ।

नमः सूतेभ्यो विश्वेभ्यश्च वो नमः ॥

(मैत्रायणी सं० २।१।५)

' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सूत संज्ञक रुद्रों को मैं प्रणाम करता हूं । ' वहां शूद्र नाम नहीं है, पर 'सूत' नाम है, जो शूद्र का वाचक है । अन्य तीन नाम हैं । इस से सिद्ध होता है कि, चारों वर्णों के लोग रुद्र देवता के रूप हैं । इसलिये इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है ।

पूर्वोक्त चार वर्णों के रुद्रों में ही संपूर्ण जनता समाप्त नहीं होती है । जिनको दुष्ट डाकू आदि कहा जाता है, उन रूपों में भी रुद्रदेवता हमारे सम्मुख उपस्थित होती है, देखिये—

आततायी वर्ग के रुद्र ।

१. आततायी = घातपात करनेवाला [१८]

धनुष्य सज्य करके हमला करनेवाला घातक ।

२-५. स्तेनानां पतिः [२०], तस्कराणां पतिः [२१],

मुष्णतां पतिः [२१], स्तायूनां पतिः [२१] =

चोर, डाकू, छुटेरे, ठगानेवाले ।

६-८. वञ्छत् [२१], परिवञ्छत् [२१] = धोखेबाज,

फरेबी, मक्कार, कपटी, छल करनेवाला ।

९. लोप्यः = नियमों का लोप करनेवाला, नियमों का

उलंघन करनेवाला [४५] ।

१०. नक्तं चरत् = रात्री के समय दुष्ट इच्छा से भ्रमण करनेवाला [२१]

ये नाम चोर, डाकू, छुटेरे, आततायी दुष्टों के हैं । निःसंदेह ये दुष्ट भाववाले मानवों के वाचक हैं । परन्तु ये भी रुद्र के ही रूप हैं । जिस तरह ज्ञानदाता ब्राह्मण, सब के पालन करनेवाले क्षत्रिय, सब के पोषणकर्ता वैश्य और सबकी सहायतार्थ कर्म

करनेवाले शूद्र रुद्रके रूप हैं, उसी तरह चोरी करके लोगों को लूटनेवाले भी रुद्र के ही रूप हैं ।

पाठकों को यह मानने के लिये बड़ा कठिन कार्य है । चोर भी परमात्मा का अंश है । क्या यह सत्य नहीं है ? भगवद्गीता में कहा है कि—

मम एव अंशः जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

[भ. गी. १५।७]

‘ मेरा ही सनातन एक अंश जीवलोकमें जीव होता है ।’ यदि मानवों का जीव परमात्मा का अंश है, तब तो वह जैसा ज्ञानी योगियों का जीव परमात्मा का अंश है, वैसा ही दुष्ट डाकूओं का भी जीव परमात्मा का ही अंश है । जीवमात्र परमात्मा का अंश है, यह जैसा भगवद्गीता में कहा है, वैसा ही वेद में— पुरुषसूक्त में भी कहा है । पुरुष का एक अंश इस विश्वमें वारंवार जन्मता है, यह बात पुरुषसूक्त में कही है । अस्तु, इस तरह चार वर्णोंके मानवों का जीव जैसा परमात्मा का अंश है, वैसा ही चोर, डाकू, छुटेरे दुष्टों का भी जीव परमात्माका ही अंश है । तत्त्वतः सब की एकता है ।

इसी तरह आँख में सूर्य का अंश, जिह्वा में जल का अंश, नासिकामें पृथ्वीका अंश और अन्यान्य इंद्रियों में और अवयवों में अन्यान्य देवताओं के अंश आकर बसे हैं । ये जैसे सत्पुरुष के देह में बसे हैं, वैसे ही दुष्ट दुर्जनोंके देहों में भी बसे हैं । देवताओं के अंशों के निवास की दृष्टि से भी सब मानवों की, सब प्राणियों की समता है । इस रीति से ३३ देवताओं के अंश और परमात्मा का अंश शरीर में आकर रहे हैं, इस दृष्टि से सब के देह समान हैं । प्रत्येक देह में ३३ देवताओं के अंशों के साथ परमात्मा का अंश रहता है । देह सज्जन का हो या दुर्जन का, उसमें परमात्माके अंशके साथ देवताओं के अंश रहते ही हैं ।

अतः वेद का कथन यह है कि, जिस तरह चार वर्णों में विद्यमान जनता संसेव्य है, उसी तरह चोर, डाकू आदि भी वैसे ही संसेव्य हैं । पर सज्जनों की अपेक्षा दुर्जनों की सेवा अधिक प्रेमसे करनी चाहिये, क्योंकि इन दुष्ट मानवों की दुष्टता उन के शारीरिक और मानसिक विकृति के कारण होती है ।

सेवा उसकी करनी चाहिये, जिस के लिये सेवाकी आवश्यकता है । जैसे किसीको सर्दी लगती हो, तो उसको

कंबल देना चाहिये, प्यासेको जल, भूखेको अन्न, रोगीको दवा आदि देना सेवा है । जो तृप्त है, उसको अन्न देना सेवा नहीं है । सर्वत्र न्यूनता, हीनता, विकृतता की पूर्तिके लिये ही सेवा हुआ करती है । रोगी-की सेवा शुश्रूषा उसमें उत्पन्न विकार अथवा न्यूनता को दूर करनेके लिये की जानी चाहिये । इसी तरह चोर, डाकू, आततायी, छुटेरे, ठग, कपटी आदि जो गुनहगार हैं, वे यकृत, स्त्रीहा या मस्तिष्क की विकृतिके कारण अथवा सामाजिक, आर्थिक या राजकीय दोषोंके कारण गुनाह करनेके लिये प्रवृत्त होते हैं । देखिये, यकृत बिगड़नेसे मस्तिष्क बिगड़ता है और क्रोधी प्रकृति बनती है, जिसका परिणाम खून करनेतक होता है । दरिद्रताके कारण त्रस्त हुआ मनुष्य चोरी की ओर झुकता है । इसी तरह अन्यान्य कुप्रवृत्तियोंके कारण शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं । इसलिये जैसे ज्वरके रोगी चिकित्सा-द्वारा संसेव्य हैं, उसी तरह चोर, डाकू, खूनी, आततायी भी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय चिकित्सासे सेवा करनेयोग्य हैं ।

आजकल इन चोर, डाकू आदिकोंको जेलखानेमें बंद करते हैं, कोठोंसे मारते हैं अथवा खूनियोंको फाँसी देते हैं । पर वेद कहता है कि, ये भी वैसे ही रुद्रके अवतार हैं, जैसे उत्तम ब्राह्मण और श्रेष्ठ क्षत्रिय । अतः ये भी सेवाके योग्य हैं । उनकी सेवा करके जिन दोषोंके कारण उनमें कुप्रवृत्तियाँ उठीं, उनको दूर करके उनकी तनदुरुस्ती अथवा मनदुरुस्ती करनी चाहिये । सदैक्यवादकी भूमिकाके अनुकूल और वेदके द्वारा कथित उपदेशके अनुसार चोर भी ईश्वरका रूप है और वह भी सज्जनके समान ही सेवाके योग्य है । यदि ठीक तरह इस ईश्वरके रूपकी सेवा होगी, तो जो उस ईश्वरके रूपमें अप्रसज्जता थी, वहाँ सुप्रसज्जता होगी और वेही लोग समाजमें प्रसज्जता बढ़ायेंगे । सदैक्यवादसे अर्थात् वैदिक दृष्टिकोण धारण करनेसे इस तरह चोर और डाकू भी दिव्य भावप्रकाशनका अवसर मिलनेसे देवत्वकी प्रकट कर सकते हैं । सेवा तो अप्रसज्जकी प्रसज्जता करनेके लिये ही की जाती है । इस विषयमें अधिक आगे लिखा जायगा । यहाँ किंचित् दिग्दर्शनमात्र लिखना पर्याप्त है ।

यहाँतक मानवी प्राणियोंके रुद्रके रूपों का वर्णन हुआ, अब अन्य प्राणियों के रूपों में जो रुद्र का अवतरण हुआ है. उस विषय में देखिये—

प्राणियों में रुद्र के रूप ।

१. अश्वः = घोड़ा [२४]
२. श्वा = कुत्ता [२८]
३. व्रज्यः = वज्र अर्थात् बवालों के बाड़ोंमें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [४४]
४. गोष्ठ्यः = गोशालामें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [४४]
५. शीभ्यः = बैल आदि गतिमान् पशु [३१]
६. गेह्यः = घरोंमें पालनेयोग्य पशु, अर्थात् गाय, भैंस, बैल, कुत्ता, बिल्ली आदि पशु [४४]
७. किरिकः = किरिः = सूवर, सूकर [४६]
८. तल्प्यः = बिछोना, चारपाई, खटिया, तकिया आदि में जो कृमिकीट होते हैं, जिनको खटमल आदि नाम हैं, वे कृमि [४४]
९. रेष्म्यः = हिंसक कृमिकीट अथवा जीव [३९]
१०. गङ्गरेष्ठः = घन जंगलों में, पहाड़ों की गुफा में रहनेवाले सिंह, व्याघ्र आदि पशु [४४], गुहा में रहनेवाले मनुष्य ।
११. इरिष्यः = उज्जड़ मैदान में, रेतीले स्थानमें, जो भूमि उपजाऊ नहीं है, वैसी भूमि में रहनेवाले, प्राणी अथवा कृमि [४३]
१२. सिकत्यः = रेतीले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा कृमिकीट [४३]
१३. किंशिलः = पथराँवाले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा जीव [४३]
- १४-१५. पांसव्यः, रजस्यः = धूली में रहनेवाले जीवजन्तु [४५]
- १६-१७. ऊर्व्यः [४५], उर्वर्यः [३३], = उपजाऊ भूमिमें रहनेवाले जीव ।
१८. खल्यः = खलिथान में जो जीव रहते हैं [३३]
१९. सूर्व्यः = [सु-ऊर्व्यः], उत्तम उपजाऊ भूमि में होनेवाला जीव [४५]
- २०-२१. शुष्क्यः [४५], अवर्ष्यः [३८], = शुष्क स्थानमें, वर्षा न होनेवाली भूमिमें होनेवाले जीवजन्तु ।
- २२-२३. हरित्यः [४५], वर्ष्यः [३८] = हरेभरे स्थानमें रहनेवाले, वर्षाके स्थानमें होनेवाले जीवजन्तु ।
२४. अवक्ष्यः = छोटे तालाव में रहनेवाले जीव [३८]
२५. उलप्यः = घास जहाँ उगता है, ऐसे स्थान में होनेवाले कृमि [४५]
२६. शण्यः = कोमल घासके ऊपर रहनेवाले कृमि [४२]
- २७-२८. पर्णः, पर्णशदः = पत्तोंपर रहनेवाले जीव-जन्तु [४६]
- २९-३०. पथ्यः [३७], प्रपथ्यः [४३], = मार्गों पर रहनेवाले जीव, मार्गोंके रक्षक ।
३१. नीप्यः = पहाड़के निम्न स्थानमें रहनेवाले प्राणी [३७] अथवा पहाड़ियों की तराईपर निवास करनेवाले मनुष्य ।
३२. आतप्यः = धूपमें रहनेवाले प्राणी [३८]
३३. वात्यः = वायुरूप में रहनेवाले प्राणी [३९]
३४. वीक्ष्यः = शुष्क अभ्ररूप में रहनेवाले [३८]
३५. मेक्ष्यः = मेघ में रहनेवाले प्राणी [३८]
- ३६-३७. काट्यः [३७, ४४], कूप्यः [३८] = कुँवों में रहनेवाले प्राणी, कूप के पास रहनेवाले मनुष्य ।
- ३८-४६. कुल्यः [३७], कूल्यः [४२] = जल-प्रवाहमें अथवा प्रवाहके समीप रहनेवाले प्राणी, जलप्रवाह के पास रहनेवाले मनुष्य ।
३९. सरस्यः = तालाव के समीप अथवा तालाव में रहनेवाले जीव या मानव [३७]
४०. नादयः = नदी में अथवा नदीके समीप रहनेवाले जीव या मानव [३१, ३७]
४१. वैशन्तः = छोटे तालावमें रहनेवाले जीव [३७] अथवा मनुष्य ।
४२. तीर्थ्यः = तीर्थस्थान में रहनेवाले [४२], ये तीर्थानि प्रचरन्ति (६१) = जो तीर्थों में विचरते हैं, यात्री ।
४३. ऊर्म्यः = लहरों में रहनेवाले [३१]
४४. प्रवाह्यः = प्रवाह में रहनेवाले [३१]
४५. पार्यः = परतीर में रहनेवाले [४२]
४६. अवार्यः = नदीके इधरके तीरपर रहनेवाले [४२]
४७. फेन्यः = जलके फेनमें रहनेवाले [४२]
४८. द्वीप्यः = द्वीपमें रहनेवाले, टापूमें रहनेवाले [३१]
४९. निवेष्ण्यः = पानीके भंवरमें रहनेवाले [४४]
५०. क्षयणः = जहाँ पानी स्थिर रहता है, ऐसे स्थानमें रहनेवाले [४३]

ये सब रुद्र जलस्थानोंमें रहनेवाले प्राणियोंके रूप हैं । और देखिये—

५१. हृदयः = हृदयमें रहनेवाले (४४), हृदयको प्रिय लगनेवाले स्थानमें रहनेवाले ।

५२. वास्तुपः = घरोंका संरक्षण करनेवाले [३९] पहरेदार ।

५३. वास्तव्यः = घरोंमें रहनेवाले [३९]

‘ वास्तव्य तथा वास्तुप ’ ये दो पद सर्वसाधारण मानव-जातिके वाचक हो सकते हैं । क्योंकि प्रायः मानव घरोंमें रहते और घरोंकी रक्षा करते हैं ।

सर्वसाधारण रुद्र ।

१. उपवीति = यज्ञोपवीत अथवा उत्तरीय धारण करनेवाले [१७]

२. उष्णीषी = पगड़ी अथवा साफा धारण करनेवाले [२२]

३. हिरण्यबाहुः = बाहुओंपर सुवर्णभूषण धारण करनेवाले [१७]

४. कपर्दी = जटा अथवा शिखा धारण करनेवाले [२९, ४८]

५. व्युत्प्लवः = जिनके बाल कटे हैं, हजामत बनाये हुए [२९], विशिखासः [५९] = शिखा न रखनेवाले, सिर मुंडन करनेवाले ।

६. सोम्यः = शान्त [३९]

७. याम्यः = नियममें रहनेवाले [३३]

८. क्षेम्यः = आराम देनेवाले [३३], घरमें रहनेवाले,

९-११. आशु, शीघ्र्य, अजिर = शीघ्रता करनेवाले [३१]

१२-१९. महान् [२६], सवृद्ध [३०], पूर्वज [३२], ज्येष्ठ [३२], अग्न्य [३०], प्रथम [३०], बृहत् [३०], वर्षीयस् [३०], वृद्ध [३९], = बड़ा, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, पूर्वज ।

२०-२६. अर्भक [२६], ह्रस्व [३०], वामन [३०], मध्यम [३२], अपर-ज [३२], कनिष्ठ, [३२] अवसान्य [३३] = छोटा, कनिष्ठ, बालक, निकृष्ट,

२७. बुध्य = तह में रहनेवाला [३२]

२८. अप्रगल्भ = अज्ञानी [३२]

२९-३०. ताम्र, अरुण [३९] = विलोहित [७, ५२, ५८] बभ्रु [६], सर्पिणजर [१७] लाल रंगवाले,

३१. आक्रन्दयन्, उच्चैर्घोषः = गर्जना करनेवाला [१९]

३२. स्वपत् = सोनेवाला [२३]

३३. जाग्रत् = जागनेवाला [१६]

३४. शयानः = लेटनेवाला [२३]

३५. आसीनः = बैठनेवाला [२३]

३६. तिष्ठत् = खड़ा रहनेवाला [२३]

३७. धावत् = दौड़नेवाला [२३]

यहाँ नानाविध प्राणियों के नाम हैं, तथापि इनमें कई पद मानवप्राणियोंके भी वाचक हो सकते हैं, जैसा देखिये— गवहरेष्ठ [४४] यह पद सिंहव्याघ्रादि जंगली जानवरों का वाचक करके ऊपर दिया है, पर इस पदका अर्थ ‘ गुहा ’ में रहनेवाला मानव भी हो सकता है । जो गुहामें रहता है, वह गवहरेष्ठ है । इसी तरह ‘ नीप्य ’ = [३७] पहाड़ की तराई पर रहनेवाला यह मानव भी हो सकता है, क्योंकि पहाड़ों की तराई पर मनुष्य भी रहते हैं । ‘ कूल्य ’ [४२] = नदीतीरपर रहनेवाला यह जैसा मानव, वैसाही अन्य प्राणी भी होना संभव है । इसी तरह अन्ततक समझना उचित है । ये पद प्राणियोंके वाचक हैं, फिर ये प्राणी मनुष्य हों अथवा अन्य हों । ये सब रुद्रदेवता के रूप हैं ।

वास्तुपः— [३९] यह पद घरोंकी सुरक्षा के लिये जो पहरेदार होते हैं, उन का वाचक है । आगे ‘ उपवीति ’ [१७] आदि शब्द मानवों के ही वाचक हैं । व्युत्प्लवः [हजामत किये हुए], विशिखासः [शिखारहित, संन्यासी] ये सब निःसंदेह मानवही हैं ।

इस के आगे [३२-३७] जागनेवाले, सोनेवाले, लेटनेवाले, बैठनेवाले, दौड़नेवाले ये सब जाति के प्राणी हो सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी इन क्रियाओं को करते हैं ।

१२ ते २६ तकके शब्द भी बालक-वृद्ध, जवान-तरुण, मध्यम-कनिष्ठ आदि अवस्थाओं के वाचक हैं, अतः ये पद सब प्राणियों के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं । अतः इन अवस्थाओंमें रहनेवाले सभी प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं । बालक, तरुण, वृद्ध ये सब रुद्र हैं, अर्थात् सभी प्राणी रुद्र हैं ।

यहाँ प्राणियों की कोई भी अवस्था छूटी नहीं है, अर्थात् सब अवस्थाओं में विद्यमान सब प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं, यह यहाँ सिद्ध हुआ । पञ्चपक्षी. मानव. क्रमिकीट. पतंग सभी रुद्र

के रूप हैं । इसी तरह सूक्ष्म कृमि भी रुद्र हैं, जो जलों और अर्शोंद्वारा मनुष्यादि प्राणियों में प्रविष्ट होकर नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं । इनकी भयानकता प्रसिद्ध है—

सूक्ष्म रुद्र ।

ये अस्त्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

(बा. १६-६२)

जो अर्शों में तथा जलमें रहते हैं, और अन्न खानेवालों तथा जल पीनेवालों में नाना प्रकार की पीड़ा उत्पन्न करते हैं, ये भी सूक्ष्म रोगकृमि रुद्र के रूप हैं ।

वृक्षरूपी रुद्र ।

१. वृक्ष (४०) = वृक्ष, पेड़, वनस्पति ।

२. हरिकेश (३०) = हरे रंगवाले पत्तेरूपी केश जिनको होते हैं, ऐसे ।

इस तरह वृक्षवनस्पति भी रुद्र के रूप हैं ।

ईश्वरवाचक रुद्र ।

अब ईश्वरको इस रुद्रसूक्तमें ' विश्वरूप ' कहा है । क्योंकि जब सभी रूप परमात्मा के हैं, तब विश्व के सब रूपों को कहाँ तक गिना जाय ? एक बार ' विश्वरूप ' कहा, तो उसमें सब रूप आ गये, इसलिये ये नाम देखिये—

१. विश्वरूपः (२५) = विश्वका रूप धारण करनेवाला,

२. विरूप (२५) = विविध रूप धारण करनेवाला,

३. भव (२८) = सबका उत्पादक,

४. शर्व (२८) = प्रलयकर्ता,

५. भगवः, ईशानः (४३) = भगवान्, ईश्वर,

६. भवस्य हेतिः (१८) = संसार के दुःखों को दूर करने का साधन ।

ईश्वर सब का कल्याण करता है, इसलिये निम्न लिखित पद उस में सार्थ होते हैं—

कल्याणकारी रुद्र ।

३८-४०. शिव, शिवतर (४१), शिवतम (५१), = कल्याण करनेवाला ।

४१-४२. शंभु, शंकर (४१) = शांति करनेवाला ।

४३-४४. मयोभव, मयस्कर (४१) = सुख देनेवाला ।

४५. अघोर (२) = जो भयानक नहीं है, जो शांत है ।

४६. सुमंगल (६) = जो मंगल है ।

४७. शंगु (४०) = शांतिसुख का दाता ।

४८. मीढुष्टम (५१) = सुखदाता ।

४९. त्विषीमत् (१७) = तेजस्वी ।

५०. विद्युत् (३८) = बिजली के समान तेजस्वी ।

५१-५२. शिपिविष्ट, सहस्राक्षः (२९) = सहस्रों किरणों से युक्त, तेजस्वी ।

यहां तक जो रुद्रदेवता का वर्णन हुआ, उससे पाठकों को पता लग सकता है कि, तमाम विश्वरूप ही परमेश्वर का रूप है, इस रूप में सब रूप आ गये । सूर्य चंद्रके रूप, जल, पृथ्वी, अग्नि, विद्युत् के रूप, सब प्राणियोंके रूप, सब जन्तुओं के रूप इसमें आ गये हैं ।

स्थावर-जंगम में राज्ययन्त्रके कर्मचारी, राजा, मन्त्री, नाना प्रकारके ओहदेदार, प्रजाजन, सैनिक, योद्धा, क्षत्रिय, ब्रिज्यां, बालक, वृद्ध, तरुण, पशुपक्षी आदि सब आते हैं, जो परमात्मा के ही रूप हैं । यही तो सदैव्यवादद्वारा बताया जा रहा है । इसलिये परमेश्वर के रूप में राज्ययन्त्र का अन्तर्भाव होना स्वाभाविक है । सब राज्य-यन्त्र ईश्वर का स्वरूप है । इस विषय में इस यजुर्वेद के रुद्राध्यायद्वारा जो गूढ़ उपदेश दिया है, वह इस लेख में प्रकट करना है ।

रुद्रदेवता संहार की देवता है, पर वह संहार जनता की भलाई करने के उद्देश्य में होता है । इसलिये यह रुद्रदेवता संघटना का कार्य भी करती है । इस देवताद्वारा जो संहार होता है, वह संघटना के लिये ही होता है । इस लिये रुद्रदेवता संघटना के लिये सहायक देवता है, यह बात यहां भूलनी नहीं चाहिये ।

रुद्रदेवता ईश्वर का ही रूप है । ईश्वर संहारकारी है, वैसा रचनाकारी भी है । इसलिये जन्म और मृत्यु ये दोनों उसी के रूप हैं । इसलिये संहार से घबराना योग्य नहीं है । जंगल तोड़ने के बाद उस लकड़ी से घर बनते हैं, अर्थात् वृक्षों का तोड़ना घरों के बनानेका सहायक है । इसी तरह संहार आगामी रचना के लिये आवश्यक ही है ।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तथा नो मृड जीवसे ॥

(बा० य० १६।४९)

जिघांसद्भ्यः ॥ २१ ॥ क्षयणाय च ॥ ४३ ॥

(वा० य० १६)

रुद्रकी दो तनुएँ हैं । एक 'घोरा' तनु और दूसरी 'शिवा' तनु । रुद्र का घोर कर्म करनेवाला एक शरीर है और कल्याणकारक कर्म करनेवाला दूसरा शरीर है । इसीलिये इस रुद्र को जैसे 'शिव' कहते हैं, वैसे ही 'क्रूर' भी कहते हैं । अस्तु । इस से ज्ञात हो सकता है कि, इस देवताके मिष से जैसे विघटना के, तोड़ने के कार्यों का विधान है, वैसे ही संघटना के, संगठन के कार्यों का भी उल्लेख है । शत्रु के साथ लड़ना और उस का नाश करना, इसका एक विघटनाका कार्य है और राष्ट्रकी घटना करना इस का दूसरा संघटनाका कार्य है । यह दूसरा कार्य अब बताना है ।

वा० यजु० के अ० १६, मं० २५ में " नमो गणेश्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः, नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः " कहा है । यह गणपति-संस्था की महत्त्व की बात है । गणपतिके सहस्रनामों से 'गण, गणेश, गणपति, गणमण्डल, गणमण्डलाध्यक्ष, महागणपति' आदि पद हैं । ये भी यहा देखने आवश्यक हैं । यही गणपति-संस्था रुद्र की शासनसंस्था में प्रधान कार्य करनेवाली संस्था है । गण और व्रात ये दो इन के संघटना के मूल भाग हैं ।

गण और व्रात ।

'व्रात' पालन करनेवालों के संघ का नाम 'व्रात' है और जो केवल एकत्र गिनाये गये हैं, उन का नाम 'गण' है । 'गण' संख्याने 'धातु' से 'गण' शब्द बनता है, अतः इस का अर्थ जिनकी संख्या निश्चित की गयी है, जो गिने हैं, जिनकी गणना की गयी है, ऐसा होता है और एक व्रातसे, एक नियम से, एक उद्देश्य तथा एक ध्येय के कारण जो इकट्ठे कार्य कर रहे हैं, वे 'व्रात' हैं । तीसरा एक संघटना बतानेवाला पद इस रुद्राध्याय में है, वह है 'पुञ्जिष्ठ' अर्थात् पुञ्ज करके रहनेवाले, अनेक लोग मिलकर अपना जमाव बनाकर रहनेवाले । 'पुञ्ज' का अर्थ एकत्र मिलकर रहना है । रुद्रसंघटना के ये तीन भेद हैं ।

वेदमें 'संभूति' शब्द (वा. य. अ. ४०।९-११ में) आया है । कारीगरों की संघटना (व्यवसाय करनेवाली मंडली = 'कंपनी') के अर्थ में यह पद है । 'संभूति, संभवन, संभूयसमुत्थान' आदि अनेक पद मिलकर व्यवसाय करने के अर्थ में भारतीय अर्थशास्त्र में प्रचलित हुए

४ दै. [रुद्र]

हैं । अनेक लोगोंने मिलकर बहुत धन इकट्ठा करके बड़ा व्यापारव्यवहार करने के अर्थ में ये पद प्राचीन काल से प्रयुक्त होते हैं । स्मृतियों और अर्थशास्त्र में इस तरह की संघटना के विषय में विस्तारपूर्वक उल्लेख हैं । यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में उक्त 'संभूति, संभव' ये पद मानवों के सांघिक जीवनविषयक व्यवहारके लिये आये हैं । पर रुद्राध्याय में इस पदका प्रयोग नहीं है, इसलिये हम यहाँ इस पदका विचार नहीं करेंगे ।

गण, व्रात और पुञ्ज ये तीन पद रुद्र की संघटना के लिये इस रुद्राध्याय में प्रयुक्त हुए हैं, इसलिये इनका विचार हम यहाँ करेंगे ।

१. 'गण' पदसे 'गणना किये गये, गिने हुए लोग,'

२. 'व्रात' पद से 'एक व्रात का पालन करनेवाले लोग,' और—

३. 'पुञ्ज' पदसे 'एक जातिके लोग' बोधित होते हैं ।

जनगणना करनेकी बात 'गण' पदसे बोधित होती है । रुद्रकी शासनसंस्थामें जनोंकी गणना की जाती थी, यह इससे सूचित होता है । बिना गणना किये 'गण' बन ही नहीं सकते । इसलिये जहाँ गणोंका राज्य होता है, वहाँ जनगणना अवश्य होती है । महादेवके भूतगण प्रसिद्ध हैं । इन भूतगणोंमें जनगणना की जाती थी । ये ही गण रुद्रशासनमें प्रमुख घटक माने गये हैं ।

एक नियमका पालन करनेवाले, एक कार्य करनेवाले, एक उद्देश्यसे संघटित हुए, एक ध्येयकी माननेवाले जो लोग होंगे, उनके समूहका नाम 'व्रात' है । कर्मव्यवसायसे, व्यापारव्यवहारसे ये व्रात नामक संघ निर्माण होते हैं । सैनिकोंके समूहों के भी ये नाम मस्तसूक्तोंमें प्रसिद्ध हैं । एक ही उद्देश्यसे एक ही कर्ममें लगनेके कारण इनमें सांघिक बल बड़ा चढ़ा रहता है ।

पूर्वोक्त रुद्रसूक्तमें 'गण, गणपति, व्रात, व्रातपति' ऐसे पद आये हैं । अर्थात् इन संघोंका एक अध्यक्ष भी रहता है । इस अध्यक्ष का कार्य अपने संघका हित करना होता है । (आजकल Union, Guild आदि श्रमजीवी लोगोंके संघ और उनके अध्यक्ष रहते हैं, वैसे ही यहाँ ये दीखते हैं ।)

इससे पूर्व कहा है, 'गण, गणमण्डल, गणमहामण्डल' ऐसे संघोंसे छोटे और मोटे संघ हुआ करते हैं । इसी तरह 'गणेश, गणपति, गणमण्डलेश, गणमहामण्डलाधि-

पति, महागणपति ' आदि नाम गणपतिसहस्रनामोंमें संघाधिपतियोंके दिये हैं। इससे इनके कर्तव्योंका ज्ञान हो सकता है और ये संघ अपने संघमें रहनेवाले लोगोंके लिये क्या कार्य करते हैं, इसका भी ज्ञान इन नामोंके मननसे हो सकता है।

' पुंज ' के लिये ' पुंजपति ' नहीं है। ' पुंजिष्ठ ' पद ही है। अर्थात् इस नामके संघमें कोई अध्यक्ष नहीं होता था। ये संघके सभी सदस्य मिलकर अपना प्रबंध किया करते थे।

पुंज के सदस्य इकट्ठे होते हैं और वे सबके सब अपना संघ का हित या प्रबंध करने के लिये जो कुछ करना होगा वह करते हैं। इनके नाम से यह सिद्ध होता है कि, ये संघशासक हैं। इन संघशासकों में कोई एक मुखिया नहीं होता। अतः ये पूरे पूरे ' समाजशासक ' होते हैं। इस पुंजन्यवस्था से गण और व्रात की व्यवस्थामें कुछ भिन्नता है। पाठक इस भेद को ध्यान में अवश्य धारण करें। पुंज का जाति के साथ संबंध है और ऐसा जातीय समाजशासन इस भरतखण्ड में कई जातियों में प्राचीन काल से इस समय तक प्रचलित है।

ये गण और व्रात संघ कार्य, व्यवहार, धंधा, उद्योग, सिद्धान्त या ध्येय के साथ संबंधित हैं। पुंज के समान जाति के या कुल के साथ संबंधित नहीं हैं। इसीलिये गण और व्रातके पूर्व दूसरे व्यवसायों का वाचक कोई पद अवश्य रखना चाहिये, तब इस व्यवस्था की कल्पना ठीक तरह ध्यानमें आ सकती है। वा० यजुर्वेदके १६ वें अध्यायमें ऐसे अनेक धंधोंके पद हैं, उनको इस के साथ जोड़ दें। देखिये, इससे ये संघ सिद्ध होते हैं—

धंधा	संघ
मिषक् (वैद्य)	मिषगण (वैद्यों का संघ)
वणिक् (वैश्य)	वणिगण (व्यापारियों का संघ)
क्षत्ता (बढई)	क्षत्तृगण (बढइयों का संघ)
तक्ष्ता (तख्ता)	तक्ष्गण (तख्ताओं का संघ)
रथकार (रथ बनानेवाला)	रथकारगण (गाड़ी बनानेवालों का संघ)
कुलाल (कुम्हार)	कुलालगण (कुम्हारों का संघ)

इस तरह कार्यव्यवहार करनेवाले धन्धेवालों के गण होते थे और शर्तें लगाकर, नियम बांधकर एक ध्येय से प्रेरित होकर जो संघ बनते थे, वे ' व्रात ' कहलाते थे। उतने नियमों का, उतनी शर्तोंका ही बन्धन उन व्रातनामक संघवालोंपर रहता था। व्रात संघके सदस्य अन्य व्यवहारके लिये स्वतंत्र समझे

जाते थे। ' गण ' व्यवस्थामें हरएक सदस्यपर अन्य सदस्योंके हिताहितकी जिम्मेवारी पूर्णतया रहती थी, पर ' व्रात ' व्यवस्थामें उतने निश्चित व्रातकी मर्यादा तक की ही यह जिम्मेवारी रहती थी। गणमें उत्तरदायित्व अधिक और व्रातमें नियमानुकूल मर्यादित रहता था। इस कारण गणमें प्रविष्ट होनेवालोंको लाभ भी अधिक होते थे और व्रातमें उसकी अपेक्षासे लाभ भी कम होते थे।

विचार करनेसे पता चलता है कि, गणसंस्थामें संमिलित होनेवाले सदस्योंका हित करनेका पूर्णतासे उत्तरदायित्व गणके अधिष्ठातापर रहता था। इसलिये गणेश अर्थात् गणके अधिष्ठाताको तथा गणपति अर्थात् गणके पालनकर्ताको गणके प्रत्येक सदस्यके हितकी सब जिम्मेवारी उठानी पड़ती थी। अर्थात् गणमें प्रविष्ट सदस्य बीमार हुआ, युद्धमें जखमी हुआ, किसी अन्य आपत्तिमें फँसा, तो ऐसी सब आपत्तियोंका निवारण करनेके लिये सुप्रबन्ध करनेका कार्य गणपतिको करना पड़ता था। यह भाव निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात होता है— ' गणभीतिहर, गणदुःखप्रणाशन, गणभीत्यपहारक, गणसौख्यप्रद, गणाभीष्टकर, गणरक्षणकर्ता, ' ऐसे अनेक नाम हैं, जो बताते हैं कि गणोंका सब प्रकारसे हित करनेके लिये गणोंके अध्यक्षको अनेक प्रकारका योग्य प्रबंध करना पड़ता था।

' व्रात ' के विषयमें जिम्मेवारी थोड़ी होती है। जिस नियम या शर्तसे वह व्रात संघटित होता था, उतना ही उत्तरदायित्व संघाधिपतिपर रहता था। अन्य बातोंके विषयमें उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती थी।

गण व्यवस्थामें छोटीमोटी कई संस्थाएँ थीं, जो निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात हो सकती हैं— ' गणप, गणवर, गणेश, गणपति, गणाधीश, गणाग्रणी, गणाध्यक्ष, गणेश्वर, गणैकराट, गणाधिराज, गणनायक, गणमण्डलाध्यक्ष ' ये पद एक अर्थके वाचक नहीं हैं। प्रत्येक पदमें अधिकारका भेद है और तदनुसार छोटे या बड़े संघका भी वह सूचक है।

गणमण्डलाध्यक्ष वह है, जो अनेक गणोंके संघोंका अध्यक्ष होता है। गणनायक वह है, जो गणोंको चलानेवाला है। गणप वह है कि जो गणोंका पालन करता है। ये सब पद गणशासन की प्रणाली बताते हैं। इन सबका विचार करनेसे इस शासन-सम्बन्धी सब बातोंका पता लग सकता है, पर हमें इस लेखमें गणपतिसंस्थाका पूर्ण विचार करना नहीं है, प्रत्युत रुद्रशासन-

संस्थाका विचार करना है । इसके अन्तर्गत गणपति पद होनेसे गणपतिसंस्थाका थोडासा विचार करना आवश्यक हुआ, अतः अतिसंक्षेपसे यह विचार यहाँ किया है ।

अपना प्रकृत विषय ठीक तरह समझमें आनेके लिये यजुर्वेद अ. १६ में आये गण और गणपति का थोडासा अधिक विचार करना आवश्यक है । विचार करनेके लिये मान लीजिये कि, 'रथकार-गण' है, अर्थात् गाड़ियाँ बनानेवालोंका एक संघ रुद्रके अधिराज्यमें स्थापन हुआ है । इसका एक अध्यक्ष होगा, जिसका नाम 'रथकार-गणेश' होगा । इस अध्यक्षका प्रथम कर्तव्य है अपने संघमें स्थित सदस्योंकी गणना करना, एक पुस्तकमें अपने सदस्योंके नाम, स्थान तथा उनकी आवश्यकताओंका लेख तैयार करके सुरक्षित रखना । अपने गणको अर्थात् संघसदस्यको कार्य न होगा, तो उसको कार्य देना, भोजनका प्रबंध न होगा तो करना, बीमार होनेपर दवाका प्रबंध करना, अर्थात् काम लेना और उसके बदले दाम देना अथवा सुखसाधन देना । इतने वर्णनसे पाठकोंके मनमें यह बात आयी होगी कि, यह गणव्यवस्था कैसी होनी चाहिये ।

'गण-आर्ति-हर' यह नाम इस प्रबंधकी सुव्यवस्था का सूचक है । गणव्यवस्थामें आये सदस्योंकी हरप्रकारकी आपत्तियोंको दूर करना गणनायकका कर्तव्य होता है और वह उसको करना ही पड़ता है । सदस्य कर्म करनेके जिम्मेवार हैं, शेष जिम्मेवारी नायकपर रहती है ।

पाठक ऐसी कल्पना करें कि, इस रथकार-गण में १०० सदस्य होंगे, तो उन को उन के करनेयोग्य काम देना, उन से काम करवा लेना और उन को सुखसाधन समय पर देना, यह इस गणसंस्था में अध्यक्ष का मुख्य कर्तव्य है । ऐसा प्रबंध करने के लिये देशभर कैसी सुव्यवस्था रखना आवश्यक है, इस का विचार पाठक कर सकते हैं । यह रथकार-संघ के विषय में हुआ ।

इस के पश्चात् ऐसे अनेक गणों का 'गण-मण्डल' होता है । जिस में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक उपकारण गणों का परस्पर सम्मेलन होता है और अनेक 'गण-मण्डलों' का मिलकर एक 'महागणमण्डल' हुआ करता है । हम पूर्वोक्त रूढाध्यायमें देखेंगे कि, गणमण्डल में रथकार-गण के साथ कौन से अन्य गण सम्मिलित हो सकते हैं । हमारे विचार से निम्नलिखित कारीगरोंका गणमण्डल रथकार-गणके

साथ बन सकता है—(क्षतृगण) बढइयोंका संघ, (तक्षगण) तर्खाणों का संघ, (कर्मारगण) लुहारों का संघ, ये और ऐसे एक दूसरेके साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कारीगरों के गणोंका मिलकर यह गणमण्डल होगा ।

इस गणमण्डल का एक अध्यक्ष होगा । उसका कर्तव्य सब गणों का हित करना होगा । इस तरह सदस्यों का गण, गणों का गणमण्डल और गणमण्डलों का महागणमण्डल होता है । ऐसा संघों का यह जाला देशभर फैला रहता है । यह है गणशासन की आयोजना ।

रूद्रसूक्त में जो नाम गिनाये हैं, उन में जो कार्यव्यवहार के वाचक नाम हैं, उन सब के ऐसे गण हैं, ऐसा समझकर इस रुद्रशासनप्रणाली का विचार करना चाहिये । तब वैदिक गणशासन का महेश्व ध्यान में आ सकता है । यहाँ प्रत्येक के संघ का स्वतन्त्र विचार करके लेख को व्यर्थ बढाने की आवश्यकता नहीं है । रुद्र की शासनव्यवस्था की कल्पना ही पाठकों को देना है । ऊपर दिये वर्णन से वह व्यवस्था पाठकों के मन में आ गयी होगी । इस तरह ब्राह्मणवर्ग में कई गण अथवा संघ, क्षत्रियों में अनेक गण अथवा संघ, इसी तरह वैश्य और शूद्रों में भी कार्यव्यवहार तथा व्यवसाय के गण बनाने से यह रुद्रशासनप्रणाली परिपूर्ण होती है ।

राष्ट्र में कोई मनुष्य गणव्यवस्था से बाहर नहीं रहने पाय, जिसके कर्म और व्यवहार की गणना नहीं हुई, ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं रहना चाहिये । प्रत्येक मनुष्य को उसके करनेके लिये सुयोग्य कार्य मिलना चाहिये और उस कर्म के बदले उसको कर्मफलस्वरूप आवश्यक सुखसाधन प्राप्त होने चाहिये । यह इस गणव्यवस्था का मूल सूत्र है ।

प्रत्येक मनुष्य को अपना कर्म उत्तम कुशलता के साथ समाप्त करना चाहिये, कर्म के फलस्वरूप सुखसाधन देना इस शासनसंस्था की जिम्मेवारी है । कर्म करनेपर हरएक को आवश्यक सुखसमाधान मिलने ही चाहिये । आवश्यक सुखसाधनों में रहने के लिये सुयोग्य स्थान, भोजन के लिये योग्य और आवश्यक अन्न, पीने के लिये उत्तम जल, ओढ़ने के लिये आवश्यक वस्त्र, बीमारी की निवृत्ति के लिये चिकित्सा के साधन, धर्मसंस्कार के समय पर होनेकी व्यवस्था, विद्या की पढाईकी व्यवस्था और आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक गुरुपदेश आदिको समावेश होना स्वाभाविक है । जो सदस्य उत्तम धर्मा-

तुकूल रहेंगे, उनका इस व्यवस्था से कल्याण होगा । पर जो नियमभंग करेंगे, उनको कठोर दण्ड देना भी इस रुद्रशासन के प्रबंधद्वारा ही होता रहता है । उसमें क्षमा नहीं होगी ।

रुद्रसूक्त में जो नाम कार्यव्यवहार करनेवालोंके गिनाये हैं, उतने ही कार्यव्यवहार करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं है । किसी देशविशेषमें इससे न्यून वा अधिक भी कार्यव्यवहार करनेवाले लोग ही सकते हैं । वहा की स्थिति के अनुसार न्यून वा अधिक गणों की व्यवस्था होगी । उस रुद्राध्याय के वर्णन में इस रुद्रीय शासनव्यवस्था का पता लगने के लिये केवल सूचनामात्र उल्लेख है । उस अध्याय में 'गण, गणपति' तथा 'व्रात, व्रातपति' ऐसे नाम लिखकर इस गणशासन के व्यवहार की सूचना दी है । परन्तु प्रत्येक धंधेवाले के साथ 'गण' शब्द उस अध्याय में लगाया नहीं है । वह उन धंधेवाले नामों के साथ लगाकर इस शासन की कल्पना पाठकों को करनी चाहिये, इसीलिये यह लेख लिखा है ।

उक्त अध्याय में कई पद सर्वसामान्य भाव बतानेवाले हैं, उन्हें देखिये— (उपवीती) यज्ञोपवीतधारी, (उष्णीषी) पगडीधारी, (कपर्दी) शिखाधारी, (व्युसकेश) जिस के बाल कटे हैं । ये पद सामान्य हैं । प्रत्येक वर्णके लोगों को ये पद लगाये जा सकते हैं । 'उपवीती' पद तीन वर्णों के लिये प्रयुक्त हो सकता है, शेष तीनों पद सब मानवोंके लिये प्रयुक्त हो सकते हैं ।

इसी तरह (स्वपत्) सोनेवाला, (जाग्रत्) जागनेवाला, (शयानः) लेटनेवाला, (आसीनः) बैठनेवाला आदि पद सर्वसामान्य मानवों के लिये अथवा प्राणियों के लिये लगाये जा सकते हैं । तथा (महान्) बड़ा, (ज्येष्ठ) श्रेष्ठ, (प्रथम) पहिला, (कनिष्ठ) छोटा आदि पद भी सामान्य पद हैं, जो हरएक प्राणी के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं । ऐसे सामान्य पद इस अध्याय में कौनसे हैं, उनका पता पाठकों को उक्त पदों का अर्थ देखने से लग सकता है । ऐसे सर्वसामान्य पद छोड़ने चाहिये, और शेष पदों में जो पद कामधंधेके सूचक हैं, व्यापार व्यवहार के सूचक तथा विशेष उद्यम के सूचक हैं, उनके साथ ही यह 'गण' पद अथवा 'व्रात' पद लग सकता है । ये 'गण, व्रात और पुंज' पद सब व्यवसायों के साथ लगनेवाले पद हैं । उदाहरणके लिये हम कुछ ऐसे गण बता देते हैं—

ब्राह्मणवर्ण में— गृत्सगण (कवियोंका संघ), श्रुतगण (श्रुतिशास्त्रज्ञों का संघ), अधिवक्तृगण (उपदेशक संघ), मिषगण (वैद्यों का संघ), इ. इ.

क्षत्रियवर्ण में— क्षेत्रपति-गण (खेतोंके मालिकों का संघ), रथीगण (रथियोंका संघ), स्वायुधगण (उत्तम हथियार चलानेवालों का संघ), दूरेवधगण (दूर से वध करनेवालों का संघ), इ. इ.

वैश्यवर्णमें— वाणिगण (व्यापारियोंका संघ), संग्रहीत-गण (बड़े बड़े संग्रह [Store] करनेवालोंका संघ), पशु-पतिगण (पशुपालकों का संघ), इ. इ.

शूद्रवर्ण में— रथकारगण (गाडी बनानेवालों का संघ), इषुकुद्रण (बाण बनानेवालों का संघ), कुलालगण (कुम्हारों का संघ), निषादगण (निषादोंका संघ), इ. इ.

इस तरह इस रुद्राध्याय का विचार करके जितने धंधेवाले यहां हैं और जितने कल्पना में आ सकते हैं, उतनों के संघों की अर्थात् उतने गणोंकी अथवा व्रातोंकी कल्पना पाठक कर सकते हैं । इस तरह गणोंकी स्थापना के पश्चात् अनेक परस्पर सहायक गणोंका मिलकर एक गणमण्डल बनने की भी कल्पना पाठक करें । प्रत्येक गण का एक अध्यक्ष तथा गणमण्डल का प्रमुख बनाने का भी विचार इसी तरह हो सकता है । इस संस्था के अध्यक्ष वा प्रमुख का कर्तव्य पूर्व स्थानमें बताया ही है । गणके सब सदस्यों का ठीक तरह योगक्षेम चलाना संघप्रमुखोंका कर्तव्य है । कर्म कुशलता से करना संघस्थों का कर्तव्य है । इस तरह विचार करनेसे निःसन्देह पता लग सकता है कि, यह गणशासन की आयोजना अत्यंत उत्तम है और बड़ी सुखदायी भी है ।

इसमें कर्मकर्ताओं को चिंता नहीं है, प्रमुखों को ही चिंता रहती है । कर्मकर्ताको इतनी ही चिंता रहती है कि, अपनी कारीगरी की अत्यधिक उन्नति करना । सबका योगक्षेम गणव्यवस्थाके प्रबंधद्वारा यथायोग्य होता रहता है ।

शिक्षाका प्रबंध ब्राह्मणों के द्वारा विनामूल्य होता रहता है । रक्षाका प्रबंध क्षत्रिय करते रहते हैं । इसी तरह वैश्यशूद्रों के व्यवसायों का प्रबंध होता रहता है । और सब मानवों का योगक्षेम चलता है ।

'गणनायक' का कार्य गणके सदस्यों को चलाना है । यहां नायक का अर्थ अधिपति नहीं है, परन्तु नेता अर्थात्

चालक है। आज क्या कर्तव्य करना चाहिये, इस विषय की योग्य संमति अपने सदस्यों को देकर जो अपने संघ से उत्तमोत्तम कार्य कराता रहता है, वही गणनायक होता है। गण का ईश, गण का पालक, गण का अधिपति, गण का नायक ये सब विभिन्न कर्तव्य बतानेवाले पद हैं। इनके विभिन्न कर्तव्य अच्छी तरह समझनेसे ही गणशासन का उपयोगित्व ठीक तरह ध्यान में आ सकता है।

गण का अधिष्ठाता जानता है कि, अपने संघ में कितने कर्मकर्ता हैं, किसको किस वस्तु की जरूरत है, उस की आवश्यकता की पूर्तता किस तरह करनी चाहिये, अपने संघ में कौन बीमार है, किस वैद्य से उसकी चिकित्सा करनी योग्य है, आदि का विचार गण का अधिष्ठाता करता रहता है। गणमण्डल के अन्दर अनेक संघ संमिलित रहते हैं, उनके धंधोंका परस्पर संबंध रहता है और वे धंधे एक दूसरे के साहाय्यकारी रहते हैं। इसलिये गणमण्डल की सुव्यवस्थासे सब गणों का सुख बढ़ता जाता है।

गणमण्डलों के मुख्य महागणमण्डलाध्यक्ष के पास सभी प्रकार की व्यवस्था रहती है। सारे कारीगरोंके सब पदार्थ उसके कार्यालयमें जमा होते हैं और आवश्यकताके अनुसार वह पदार्थों का लेनदेन करता है। अनावश्यक वस्तुओं के निर्माण पर वह प्रतिबंध रखता है, और आवश्यक वस्तुओं के निर्माण की प्रेरणा करता है। एक बार इस तरह की सुव्यवस्था की कल्पना पाठकोंके मनमें उतर गयी, तो वे ही इस सब व्यवस्था के विषय में उत्तम कल्पना अपने मन में कर सकते हैं। इस दृष्टि से यह वा० यजुर्वेद का १६ वाँ अध्याय विशेष अध्ययनीय है। साथ ही साथ वा० यजुर्वेद ३० वाँ अध्याय भी मननपूर्वक अध्ययन करनेयोग्य है। १६ वाँ अध्याय रुद्रदेवताके रूप बताने के लिये है और ३० वाँ अध्याय नारायण पुरुष के रूप बताने के लिये है। पर तत्त्वदृष्टि से दोनों का आशय एक ही है।

यह गणशासनव्यवस्था वेद की आदर्श शासनव्यवस्था है। इस से प्रजा का हित अधिक से अधिक हो सकता है। प्रजा का सुख अधिक से अधिक करने के लिये इसी मार्ग से जाना चाहिये। इस में शासकों की व्यवस्था इस तरह रहती है—

१. रुद्र = (महारुद्र, महादेव) = सर्वाधिपति।

२. मंत्री = मन्त्री, सलाहकार।

३. सभा, सभापति = राष्ट्रसभा, राष्ट्रसभापति, ग्रामसभा, प्रांतसमिति, आमंत्रण (मन्त्रीमंडल)।

४. गण, गणपति = गणोंकी नाना प्रकार के संघों की व्यवस्था।

५. व्रात, व्रातपति = नाना प्रकार व्रतनिष्ठ संघों की व्यवस्था।

६. पुञ्जिष्ठ = मानवपुञ्जों की व्यवस्था।

यह व्यवस्था पूर्व स्थान में बतायी है। गण, महागण, गणमण्डल आदि बड़े बड़े संघों में से राष्ट्रसभा के सदस्य चुने जाते हैं और इस तरह राज्य का नियंत्रण होता रहता है और वहां प्रत्यक्ष जनताके साथ रातदिन रहनेवाले और जनता की स्थिति देखनेवाले ही लोग आते हैं, इसलिये उन का शासन जनहित का साधक होता है।

इस के साथ साथ निम्न लिखित कार्यकर्ता भी होते हैं—

७. क्षेत्रपति: = खेतों की रक्षा करनेवाले,

८. वनपति: = वनों की पालना करनेवाले,

९. स्थपति: = स्थानों के पालनकर्ता,

१०. कक्षाणां पति: = राष्ट्र की कक्षा चारों ओर की परिधि होती है, वहाँ की सुरक्षा करने के लिये जो नियुक्त होते हैं, वे कक्षापति कहलाते हैं, गुप्त स्थानों के रक्षक।

११. पत्नीनां पति: = पैदल विभाग के नेता,

१२. सेना, सेनापति: = सब प्रकार की सेना और उस के अधिपति,

१३. सेनानी = सेना का संचालन करनेवाले,

१४. आव्याधिनीनां पति: = हमला करनेवाली सेना के नेता।

इस तरह सेना की व्यवस्था इस रुद्रशासन में रहती है। इस रुद्राध्याय में सैनिकों के नाम बड़े विस्तारपूर्वक दिये हैं। पाठक उन सब को यहां रखकर उन का कार्य राष्ट्ररक्षा में कितना है, इस का यथायोग्य विचार करें, उन सबको यहां पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

१५. वास्तुप: = घरोंकी रक्षाके लिये नियुक्त पहरेदार,

१६. वास्तव्य: = लोग जहां रहते हैं, वहां रहनेवाला,

१७ गह्वरेष्टः = गिरिकंदरों की रक्षाके लिये नियुक्त,

१८ नादेयः, तीर्थ्यः = नदी तैरकर पार होनेके स्थान-
पर रक्षा के लिये तथा सहाय-
तार्थ नियुक्त,

१९ नक्तंचरः = रात्रीके समय घूमकर रक्षा करनेमें नियुक्त ।

इस तरह अनेकानेक पदोंसे पाठक योग्य बोध प्राप्त कर सकते हैं और रुद्र की शासनव्यवस्थाका पता भी इस से लगा सकते हैं ।

यहां पाठक देखें कि, रुद्राध्याय (वा. यजु. अ. १६) के विशेष सूक्ष्म रीति के इस अध्ययन से एक विशेष प्रकार की गणशासन की प्रणाली का बोध यहाँ हमें मिला है । यह वैदिक व्यवस्था है और प्रत्येक प्रजाजनका इससे लाभ हो सकता है । इस विषय में विस्तारपूर्वक बहुत कुछ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है, परन्तु वैसा करने के लिये हमारे पास यहाँ स्थान नहीं है ।

एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।

एक ही रुद्र के ये सब मानवी रूप हैं । गण, गणपति ये दोनों रुद्र के रूप हैं । मन्त्री और राजा, सेना और सेनापति, क्षेत्र और क्षेत्रपति, वणिक् और ग्राहक, शिष्य और गुरु ये सब रुद्र के रूप हैं । कोई मनुष्य, कोई प्राणी अथवा कोई वस्तु रुद्रका रूप नहीं, ऐसी वस्तु यहाँ नहीं है ।

यहाँ राजा भी ईश्वर का रूप है और प्रजा भी । दोनों मिलकर एक ईश्वरके दो रूप हैं । राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, मालक-मजदूर, धनी-सेवक, ज्ञानी-अज्ञानी ये सब ईश्वरके ही रूप हैं, अतः ये परस्पर की सेवा करनेयोग्य हैं । एक सत्ता के ये अंश हैं । अतः सब की मिलकर एक ही सत्ता माननी चाहिये । यहाँ किसी की भी विभिन्न सत्ता नहीं है । हम सब एक ही जीवन के अंश हैं, यह जानकर परस्पर के सहायक व्यवहार हम सबको करने चाहिये ।

जिस तरह एक शरीर में सिर, आँख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दाँत, होठ, गाल, बाहु, अंगुलियाँ, हात, पेट, पाँव आदि अनेक अवयव एक ही जीवनके अवयव हैं और पूर्णतया परस्पर सहायता करना इनका कर्तव्य है, सब का मिलकर एक जीवन है, यह जानना, मानना और उस एक जीवन के

हितके लिये अपना समर्पण करना प्रत्येक अवयव का कर्तव्य है, उसी तरह सब मानव एक ही जीवनके अंश हैं, यह जानना, मानना और उस अखंड, अटूट, अनन्य एक जीवनका अत्यधिक हित करनेके लिये अपने जीवनको लगाना, अर्थात् पूर्ण की सेवाके लिये अंशने अपना अर्पण करना आवश्यक है ।

जो लोग शंका करते हैं कि सदैक्यवादसे राष्ट्रीय शासन किस तरह होगा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रकी उन्नति तथा राष्ट्रीय संघटना किस तरह होगी, इस शंकाका उत्तर इस लेखमें दिया गया है । वेदने जनताकी उन्नतिके लिये 'सदैक्यवाद' दिया और इस वादसे सिद्ध होनेवाला राष्ट्रीय संघटनाका आदर्श भी मानवोंके सम्मुख गणव्यवस्थाद्वारा रख दिया । सदैक्यवादसे अनन्य-भावकी सिद्धता होती है और सब प्राणियोंका मिलकर एक अखण्ड और अटूट जीवन है, इसके विषयमें निश्चय होता है । इस निश्चयके पश्चात् व्यक्ति व्यक्तिकी, संघ संघकी तथा जाति जाति की सेवामें लगकर, परस्पर सेवाशुश्रूषासे जो सबकी उन्नति होती है, उस उन्नतिकी आयोजनाकी कल्पना इस गणसंस्थासे पाठकों के मनमें स्थिर हो सकती है । इस तरह सदैक्यवादसे राष्ट्रोन्नति सिद्ध होती है और इससे मानवताका भी पूर्ण विकास हो सकता है ।

इस रुद्राध्याय में सब प्राणी रुद्रके रूप हैं ऐसा कहकर संघ-टना का वैदिक संदेश दिया है । अन्य स्थानों में पुरुष, नारायण, आत्मा, ब्रह्म आदिके सब रूप हैं, ऐसा बता कर वही संदेश दिया है । सदैक्यवाद का तत्त्व यह है कि, सबके रूप भिन्न होने पर भी सब की सत्ता तत्त्वतः एक मानना । यहाँ तत्त्वतः भिन्न अनेक सत्ताएँ नहीं हैं । इस सदैक्यवाद के सिद्धान्त को व्यवहार में लानेके लिये छोटे छोटे गणों में यह तत्त्व प्रथम आचरणद्वारा तथा परस्पर सेवाद्वारा सिद्ध करना चाहिये । पश्चात् गणों के, संघों के और राष्ट्रीके व्यवहार में लाना चाहिये और अन्त में मानवों के व्यवहार में लाना योग्य है । इसका मार्ग जो वेद ने बताया है, वह यह है । इसका विचार पाठक करें ।

अस्तु । रुद्रदेवताका स्वरूप और उसका कार्य इसका विचार यहाँतक हुआ । पाठक रुद्रके मंत्रोंका अधिक विचार करें और वेदका आशय जाननेका यत्न करें । यहाँ रुद्रके संपूर्ण मंत्रोंका संग्रह इसी प्रकारके मनन के लिये इकट्ठा किया है ।

रुद्रदेवताकी विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१. रुद्रदेवताका परिचय ।	३	२१. सर मोनिअर तुडलियमसाहबकी सम्मति ।	१३
२. रुद्रके विषयमें निरुक्तका मत	३	२२. श्री० म० आर्थर आंटोनी मैकडोनेलसाहबकी सम्मति ।	१४
३. रुद्रके विषयमें उपनिषद्कारोंकी सम्मति ।	४	२३. पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।	१५
४. रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी सम्मति ।	५	२४. रुद्रका शरीर ।	१५
५. सर्वव्यापक रुद्रदेव ।	५	२५. खोजका विषय ।	१६
६. जगत् का पिता रुद्र ।	५	२६. रुद्रदेवताका यजुर्वेदीय विश्वरूप ।	१६
७. सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।	५	२७. मानवरूपोंमें रुद्र (ज्ञानी पुरुष)	१६
८. सर्वशक्तिमान् रुद्र ।	६	२८. क्षत्रियवर्गके रुद्र (वीर रुद्र ।)	१७
९. गुहानिवासी रुद्र ।	६	२९. वैश्यवर्गके रुद्र ।	१९
१०. अपने अंतःकरणमें रुद्र की खोज ।	६	३०. शिल्पिवर्गके रुद्र ।	१९
११. अनेक रुद्रोंमें व्यापक ' एक रुद्र ' ।	७	३१. चार वर्णोंके रुद्र ।	२०
१२. एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।	७	३२. आततायी वर्ग के रुद्र ।	२०
१३. अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।	७	३३. प्राणियों में रुद्र के रूप ।	२२
१४. अनेक रुद्रोंकी संख्या ।	९	३४. सर्वसाधारण रुद्र ।	२३
१५. रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।	९	३५. सूक्ष्म रुद्र ।	२४
१६. श्रीउवटाचार्यजी का ' रुद्र ' विषयक मत ।	१०	३६. वृक्षरूपी रुद्र ।	२४
१७. श्रीमहीधराचार्यजीका ' रुद्र ' संबंधी मत ।	१०	३७. ईश्वरवाचक रुद्र ।	२४
१८. श्रीस्वामी दयानंदसरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत ।	१०	३८. कल्याणकारी रुद्र ।	२४
१९. श्री भग० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।	१२	३९. गण और व्रात ।	२५
२०. पं. जॉन डॉसनसाहबका मत ।	१३	४०. एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।	३०

रुद्र-देवता-मंत्रोंकी ऋषिसूची ।

रुद्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्	ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्
कण्वो घौरः	१-५	१	(वाज० यजुर्वेदमन्त्राः।) ३७-१११		४
कुत्स आङ्गिरसः ।	६-१६	१	ब्रह्मा ।	११२-११७	९
गृत्समदः शौनकः ।	१७-३१	२	कपिञ्जलः ।	११८	१०
मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।	३२-३६	३	अथर्व ।	११९-१४१	१०

रुद्रसहचारी देवगणः ।	भग-शर्व-रुद्राः । शन्तातिः । २०१-२०२ १६
(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च । कण्वो चौरः । १४२ ११	(६) रुद्रः, व्याघ्रः । अथर्वा । २०३-२०९ १६
(२) रुद्रः, दिशः । अथर्वा । १४३-२०० ११	(७) रुद्रः, (अग्निः) । वामदेवो गौतमः । २१० १७
(३) आदित्याः, रुद्राः । अथर्वा । १४३-२०० १३	" " " (मृत्युः) । संकसुको यामायनः । २११-१४ १७
(४) सोमारुद्रौ । अथर्वा । १४३-२०० १३	" " " " । अथर्वा । २१५-२१७ १८
(५) भव-शर्व-रुद्राः । अथर्वा । १४३-२०० १४	" " " " । प्रजापतिः । २१८-२२५ १८
	" " " " । दुहणः । २२६-२२७ १९

रुद्र-देवताकी सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृ० २०	३ गुणबोधक-पदसूची ।	२४-३०
ऋ० प्रथमं मण्डलम् ।	२०	४ मृत्यु-देवता-गुणबोधक-पदानि ।	३१
द्वितीयं मण्डलम् ।	२०	५ मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-	
चतुर्थं मण्डलम् ।	२०	गुणबोधक-पदानि ।	३१
सप्तमं मण्डलम् ।	२०	६ दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।	३२
२ मन्त्राणां सूची ।	२१-२३	७ उपमा-सूची ।	३२



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

७ रुद्रदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।४३।१-२,४-६)

(१-५) कण्वो घौरः । गायत्री ।

कद् रुद्राय प्रचेतसे	मीळहुष्टमाय तव्यसे	। वोचेम शंतमं हृदे	१
यथा नो अदितिः कर्तृ	पश्चे नृभ्यो यथा गर्वे	। यथा तोकाय रुद्रियम्	२
गाथपतिं मेधपतिं	रुद्रं जलाषमेषजम्	। तच्छंयोः सुम्नमीमहे	४
यः शुक्र इव सूर्यो	हिरण्यमिव रोचते	। श्रेष्ठो देवानां वसुः	५
शं नः कर्त्यर्वते	सुगं मेषार्यं मेष्ये	। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे	६

॥ २ ॥ (ऋ० १।११४।१-११)

(६-१६) कुत्स आङ्गिरसः । जगतीः १०-११ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने	क्षयद्वीराय प्र भेरामहे मतीः ।	
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे	विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्	१
मूळा नो रुद्रोत नो मर्यस्कृधि	क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।	
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता	तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु	२
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया	क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीद्वः ।	
सुम्नायन्निद् विशो असाकमा चरा	रिष्टवीरा जुहवाम ते हविः	३
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।	
आरे असद् दैव्यं हेळो अस्तु	सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे	४

५ दै० [रुद्र०]

दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।	
हस्ते बिभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्मं च्छर्दिस्मभ्यं यंसत्	५ १०
इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।	
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ	६
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उर्क्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।	
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः	७
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।	
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदुमित् त्वां हवामहे	८
उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकर्ं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नस्मे ।	
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत् ते वृणीमहे	९
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नस्मे ते अस्तु ।	
मृळा च नो अर्धि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विवर्हीः	१० ११
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हव रुद्रो मरुत्वान् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	११ १६

॥ ३ ॥ (ऋ० २।३३।१-१५)

(१७-३१) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चात्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।	
आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः स्र्यस्य संहशो युयोथाः ।	
अभि नो वीरो अर्धति क्षमेत् प्र जायेमहि रुद्र प्रजार्भिः	१
त्वादत्तेभी रुद्र शतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः ।	
व्यस्मद् द्वेषो वितरं व्यहो व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः	२
श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो ।	
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपंसो युयोधि	३
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती ।	
उन्नो वीरो अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तं त्वा मिषजां शृणोमि	४ २०
हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय ।	
ऋदुदरः सुहवो मा नो अस्य बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै	५
उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम् ।	
वृणीव च्छायामरपा अशीयाः विवासेयं रुद्रस्य सुम्नम्	६ २३

क्र०	स्य ते रुद्र मृळयाकु—हस्तो यो अस्ति भेषजो जलाषः ।	
	अपभर्ता रपसो दैव्यस्या—भी नु मां वृषभ चक्षमीथाः	७
	प्र बभ्रवे वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि ।	
	नमस्या कल्मलीकिनं नमोभि—गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नामं	८
	स्थिरेभिरङ्गैः पुरुषं उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः ।	
	ईशानादस्य भुवनस्य भूरे—न वा उ योषद् रुद्रादसुर्यम्	९ २५
	अहं विमर्षि सार्यकानि धन्वा—हं न निष्कं यजतं विश्वरूपम् ।	
	अहंनिदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति	१०
	स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम् ।	
	मूला जरित्रे रुद्र स्तवानो ऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः	११
	कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम् ।	
	भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे	१२
	या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमा वृषणो या मयोश्च ।	
	यानि मनुरवृणीता पिता न—स्ता शं च योश्च रुद्रस्य वक्षि	१३
	परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात्रं ।	
	अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ	१४ ३०
	एवा बभ्रो वृषभ चेकितान् यथा देव न हृणीषे न हंसि ।	
	हवनश्रुनो रुद्रेह बोधि बृहद् वदेम विदुथे सुवीराः	१५ ३१

॥ ४ ॥ (क्र० ७।४६।१-४)

(३२-३६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती, ४ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाम्ने ।	
अषाढ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतुं नः	१
स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति ।	
अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरा—ऽनमीवो रुद्र जासुं नो भव	२
या ते दिद्यदवसृष्टा दिवस्पतिं क्षमया चरति परि सा वृणक्तु नः ।	
सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः	३
मा नो वधी रुद्र मा परां दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य ।	
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	४ ३५

॥ ५ ॥ (ऋ० ७।५९।१२)

रुद्रः (त्र्यम्बकः) (मृत्युविमोचनी ऋक्) । अनुष्टुप् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

१२ ३६

॥ ६ ॥ (३७-१११) (वा० य० ३।५७-६३) ×

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्वाम्बिकया तं जुषस्व स्वाद्वैष ते रुद्र भाग आसुस्ते पशुः ५७

अव रुद्रमदीमह्यं देवं त्र्यम्बकम् ।

यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात् ५८

मेषजमसि मेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय मेषजम् । सुखं मेषाय मेष्यै ५९

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतात्ः ६० ४०

एतत् ते रुद्रावसं तेन परो मूर्जवतोऽतीहि ।

अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंशसन्नः शिवोऽतीहि ६१

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ६२

शिवो नामासि स्वर्धितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ।

निर्वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यौ प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ६३ ४३

॥ ७ ॥ (वा० य० १०।२०)

रुद्र यत् ते क्रिवि परं नाम तस्मिन् हुतमस्यमेषमसि स्वाहा २० ४४

॥ ८ ॥ (वा० य० ११।५४)

रुद्राः सधिसृज्यं पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।

तेषां भानुरजस्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते ५४ ४५

॥ ९ ॥ (वा० य० १६।१-६६) +

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः १

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।

तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि २

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।

शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ३ ४८

× वा० य० ३।६० (पूर्वार्धः) = ऋ० ७।५९।१२

+ वा० य० १६।१५-१६ = ऋ० १।११।७-८

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।		
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत्	४	
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।		
अहोश्च सर्वोऽज्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव	५	५०
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।		
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे	६	
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।		
उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्युः स दृष्टो मृडयाति नः	७	
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।		
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः	८	
प्रभुश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम् ।		
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप	९	
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत ।		
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गाधिः	१०	५५
या ते हेतिर्मिदुष्टम हस्तै बभूव ते धनुः ।		
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज	११	
परि ते धन्वंनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।		
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निर्धेहि तम्	१२	
अवतत्य धनुष्वथ सहस्राक्ष शतेषुषे ।		
निशीर्य शल्यानां सुखा शिवो नः सुमना भव	१३	
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने	१४	
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।		
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः	१५	६०
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।		
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सद्रामित् त्वा हवामहे	१६	
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः		
पशूनां पतये नमो नमः शृष्पिज्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायो-		
पवीतिने पुष्टानां पतये नमः	१७	६२

नमो बभ्रुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये
नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये
नमः १८

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भ्रुवन्तये वारिवस्कृतायौष-
धीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते
पत्तीनां पतये नमः १९

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिने आव्या-
धिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे
परिचरायारण्यानां पतये नमः २०

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे इषुधिमते तस्कराणां
पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांशुसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो
नक्तश्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः २१

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च
वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च
वो नमः २२

नमो विसृजद्भ्यो विष्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः
शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः २३

नमः सभाभ्यः सभार्पतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम
आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृहतीभ्यश्च वो नमः २४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः २५

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः
क्षत्रभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः २६

नमस्तक्ष्मभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः २७

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः श्रुवाय च
पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च २८

नमः कपदिने च व्युत्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिश-
याय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ३९

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे
च नमोऽग्न्याय च प्रथमाय च ३० ७५

नम आश्वे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्ग्याय चाव-
स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ३१

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय
चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्याय च ३२

नमः सोभ्याय च प्रतिसूर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय
चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ३३

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय
चाशुरैथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ३४

नमो बिलिमने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च
श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ३५ ८०

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-
धिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६

नमः क्षुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च
सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ३७

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीष्ण्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च
विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ३८

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय
च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ३९

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरे-
वधाय च नमो हन्त्रे च हर्नीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ४० ८५

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
च शिवतराय च ४१

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च
कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ४२ ८७

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कप- दिने च पुलस्तये च नमः इरिण्याय च प्रपथ्याय च	४३	
नमो ब्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्पाय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेण्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च	४४	
नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पार्थसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च	४५	९०
नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उदुरमाणाय चाभिध्नते च नम आखिदुते च प्रखिदुते च नम इषुकुङ्ग्यो धनुष्कुङ्ग्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विशिण्त्केभ्यो नम अनिर्हतेभ्यः	४६	
द्रापे अन्धसस्पते द्ररिद्र नीललोहित । आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्	४७	
इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथा क्षमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्	४८	
या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिवा रुतस्य भेषजी तथा नो मृड जीवसे	४९	
परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः । अव स्थिरा मध्वद्वयस्तनुष्व मीद्वस्तोकाय तनयाय मृड	५०	९५
मीदुष्टम् शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्ति वसान आचर पिनाकं विभ्रदागहि	५१	
विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः । यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः	५२	
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि	५३	
असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् । तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि	५४	
अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५५	१००
नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव्य रुद्रा उपश्रिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५६	
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः श्रमाचराः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५७	
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५८	१०३

ये भूतानामभिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५९	
ये पथां पथिरक्षय एलवृदा आयुर्युधः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६०	१०५
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सूकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६१	
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान् । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६२	
य एतावन्तश्च भूयांश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६३	
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश		
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं		
द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६४	
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा		
दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते		
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६५	११०
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा		
दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते		
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६६	१११

॥ १० ॥ (अथर्व० १।१९।३)

(११२-११७) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्टयो यो अस्माँ अभिदासति ।

रुद्रः शरव्ययैतान् ममामित्रान् वि विध्यतु ३ ११२

॥ ११ ॥ (अथर्व० ६।५।२-३)

१ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात ।

आ नो गोषु भजता प्रजायाँ निवात इद् वः शरणे स्याम २

इदावत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।

तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ३ ११४

॥ १२ ॥ (अथर्व० १३।४।४, १३।५।२५-२६) ।

४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्, २५ एकपदाऽऽसुरी गायत्री, २६ आर्च्यनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।

रश्मिभिर्नम आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४ ११५

६ दे० [छ०]

स एव मृत्युः सोऽमृतं सोऽर्ध्वं१ स रक्षः २५
 स रुद्रो वसुवर्निर्वसुदेये नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः २६ ११७

॥ १३ ॥ (अथर्व० १।२७।६)

(११८) कपिञ्जलः । अनुष्टुप् ।

रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत् ।
 प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे ६ ११८

॥ १४ ॥ (अथर्व० ७।८७।१)

(११९-१४१) अथर्वा । जगती ।

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्सं१न्तर्य ओषधीर्विरुध आविवेश ।
 य इमा विश्वा भुवनानि चाकलपे तसै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये १ ११९

॥ १५ ॥ (अथर्व० १।५।१-२१)

१ त्रिपदा समविषमा गायत्री; २ त्रिपदा भुरिगार्ची त्रिष्टुप्; ३,६,९,१२,१५,१८,२१ द्विपदा प्राजाप-
 त्याऽनुष्टुप्; ४ त्रिपदा स्वराट् प्राजापत्या पङ्क्तिः; ५,८,११,१७ त्रिपदा ब्राह्मी गायत्री; ७,१०,१६
 त्रिपदा ककुप्; १३,१९ भुरिग् विषमा गायत्री, १४ निचृद्ब्राह्मी गायत्री; २० विराट्,

तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥ १ १२०

भव एनमिष्वासः प्राच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ २

नास्यं पशून् समानान् हिनस्ति य एवं वेद ॥ ३ ॥ ३

तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥ ४

शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ५ नास्यं पशून् ॥ ३ ॥ ६ १२५

तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥ ७

पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ८ नास्यं पशून् ॥ ३ ॥ ९

तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥ १०

उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानुं तिष्ठति

नैनं श्रवो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ ११ नास्यं पशून् ॥ ३ ॥ १२

तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥ १३ १३२

रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं श्रुर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ १४ नास्य पशून्० ॥ ३ ॥ १५

तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठितारमकुर्वन् ॥ १ ॥ १६ १३५

महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं श्रुर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ १७ नास्य पशून्० ॥ ३ ॥ १८

तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्ठितारमकुर्वन् ॥ १ ॥ १९

ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं श्रुर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥ २०

नास्य पशून् न समानान् हिंनस्ति य एवं वेद ॥ ३ ॥ २१ १४०

॥ १६ ॥ (अथर्व० १९।१८।३) आचर्यनुष्टुप् ।

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३ १४१

रुद्र-सहचारी देवगणः ।

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च ।

॥ १७ ॥ (ऋ० १।४३।३)

(१४२) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सृजोषसः ३ १४२

(२) रुद्रः, दिशः ।

॥ १८ ॥ (अथर्व० ३।२६।१-६)

(१४३-२००) अथर्वा । दिशः, रुद्रः, १ साग्रयो हेतयः, २ सकामा अविष्यवः, ३ वैराजः, ४ सवाताः प्रविष्यन्तः,

५ सौषधिका निलिम्पाः, ६ बृहस्पतियुता अवस्वन्तः । त्रिष्टुप्, २, ५-६ जगती;

३-४ भुरिक्; १-६ पञ्चपदा विपरीतपादलक्ष्मा ।

येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा १

येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्य विष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा २

येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ३ १४५

येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।

४

येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।

५

येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।

६ १४८

॥ १९ ॥ (अथर्व० ३।२७।१-६)

दिशः, रुद्रः; १ अग्निः असितः, आदित्याः; २ इन्द्रः, तिरश्चिराजी, पितरः; ३ वरुणः, पृदाकुः, अन्नः; ४ सोमः, स्वजः, अशानिः; ५ विष्णुः, कल्माषग्रीवो वीरुधः; ६ बृहस्पतिः, श्वित्रं, वर्षम् ।

१-६ पञ्चपदा ककुम्भतीर्गर्भाऽष्टिः, (२ अत्यष्टिः, ५ भुरिक्)

प्राची दिग्गिरिधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

१

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

२ १५०

प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाक् रक्षितान्नमिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

३

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

४

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

५

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

६ १५४

(३) आदित्याः, रुद्राः ।

॥ २० ॥ (अथर्व० ५।३।११)

बृहद्विवोऽथर्वा । विराड् जगती ।

ये नः सपत्ना अप ते भवन्तिवन्द्राग्निभ्यामर्वा वाधामह एनान् ।

आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशो न उग्रं चेतारमधिरोजमकत

१० १५५

(४) सोमारुद्रौ ।

॥ २१ ॥ (अथर्व० ५।६।१-१४)

१ ब्रह्म, २ कर्माणि, ३-४ रुद्रगणाः, ५-८ सोमारुद्रौ, ९ हेतिः, १०-१४ सर्वात्मा रुद्रः ।

त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती, ४ अनुष्टुबुष्णिक्त्रिष्टुब्गर्भा पञ्चपदा जगती,

५ ७ त्रिपदा विराणनाम गायत्री, ८ एकावसाना द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्,

१० प्रस्तारपङ्क्तिः, ११-१३ पङ्क्तिः, १४ खरादपङ्क्तिः ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः

१

अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।

वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे

२

सहस्रधार एव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।

तस्य स्पृशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे

३

पर्युषु प्र धन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सृक्षणिः ।

द्विषस्तदध्यर्णवेनैयसे सनिस्रसो नामासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः

४

न्वेष्टेतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः

५ १६०

अवेतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

६

अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

७

मुमुक्तमस्मान् दुरितादवघ्राज्जुपेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम्

८

चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।

मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु येष्टेऽस्माँ अभ्यघायन्ति

९

योष्टेऽस्माँश्चक्षुषा मनसा चित्याकृत्या च यो अघायुरभिदासात् ।

त्वं तानग्ने मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा

१० १६५

इन्द्रस्य गृहोऽसि । तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वेभ्यः सर्वपूरुषः	
सर्वीत्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन	११
इन्द्रस्य शर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१२
इन्द्रस्य वर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१३
इन्द्रस्य वरूथमसि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१४ १६९

(५) भव-शर्व-रुद्राः । ×

॥ २२ ॥ (अथर्व० ११।२।१-३१)

त्रिष्टुप् ; १ पराऽतिजागता विराड्जागती; २ अनुष्टुप्गर्भा पञ्चपदा पथ्याजगती; ३ चतुष्पदा
स्वराडुष्णिक् ; ४-५, ७, १३, १५-१६, २१ अनुष्टुप् ; ६ आर्षी गायत्री; ८ महावृहती;
९ आर्षी; १० पुरोक्कृति त्रिपदा विराट् ; ११ पञ्चपदा विराड्जागतीगर्भा
शकरी; १२ भुरिक् ; १४, १७-१९, २३, २६-२७ विराड्गायत्री;
२० भुरिगायत्री; २२ विषमपादलक्ष्मा त्रिपदा
महावृहती; २४, २९ जगती; २५ पञ्चपदा
ऽतिशकरी; ३० चतुष्पदा उष्णिक् ;
३१ व्यवसाना विपरीतपादलक्ष्मा
षट्पदा (जगती ?) ।

भवाशर्वौ मृडतं माभि यातं भूतपती पशुपती नमो वास ।	
प्रतिहितामार्यतां मा वि स्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः	१ १७०
शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमलिक्कवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः ।	
मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघ्नसे मा विदन्त	२
क्रन्दाय ते प्राणाय याश्च ते भव रोपयः । नमस्ते रुद्र कृष्णः सहस्राक्षायामर्त्य	३
पुरस्तात् ते नमः कृष्ण उत्तरादधरादुत । अभीवर्गाद् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः	४
मुखाय ते पशुपते यानि चक्षूषि ते भव । त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः	५
अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याय ते । दुद्भयो गन्धाय ते नमः	६ १७५
अस्त्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेण वाजिना । रुद्रेणार्धकघातिना तेन मा समरामहि	७
स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत् आप इवाग्निः परि वृणक्तु नो भवः ।	
मा नोऽभि मास्त नमो अस्त्वस्मै	८
चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते ।	
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः	९ १७८

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्वेऽन्तरिक्षम् ।

तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु

उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः ।

स नो मृड पशुपते नमस्ते परः क्रोष्टारो अभिभाः श्वानः परो यन्त्वघरुदो विक्रेष्यः ११ १८०

धनुर्विभर्षि हरितं हिरण्यं सहस्राग्नि शतवधं शिखण्डिनम् ।

रुद्रस्येषुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशीऽतः १२

योऽभिधातो निलयते त्वां रुद्र निचिकीर्षति ।

पश्चादनुग्रयुङ्क्षे तं विद्वस्य पदनीरिव १३

भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय ।

ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीऽतः १४

नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते । नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः १५

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।

भवार्यं च शर्वायं चोभाभ्यामकरं नमः १६ १८५

सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम् ।

मोषाराम जिह्वयेयमानम् १७

श्यावाश्वं कृष्णमसितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम् ।

पूर्वे प्रतीभो नमो अस्त्वस्मै १८

मा नोऽभि स्ना मर्त्यं देवहेति मा नः क्रुधः पशुपते नमस्ते ।

अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूनु १९

मा नो हिंसिरधि नो ब्रूहि परि णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः । मा त्वया समरामहि २०

मा नो गोषु पुरुषेषु मा गृधो अजाविषु ।

अन्यत्रोग्र वि वर्तय पियारूणां प्रजां जहि २१ १९०

यस्य त्वमा कार्सेका हेतिरेकमश्वस्येव वृषणः क्रन्दु एति ।

अभिपूर्वं निर्णयते नमो अस्त्वस्मै २२

योऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयज्वनः प्रमृणन् देवपीयून् ।

तस्मै नमो दुशभिः शक्ररीभिः २३

तुभ्यमारण्याः पशवो मृगा वनै हिता हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।

तव यक्षं पशुपते अप्सर्वन्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे २४ १९३

शिंशुमारा अजगराः पुंरीकया जषा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि ।
न ते दुरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान् परि

पश्यसि भूमिं पूर्वस्माद्वस्युत्तरस्मिन्त्समुद्रे २५

मा नो रुद्र त्वमना मा विषेण मा नः स स्त्रा दिव्येनाग्निना ।

अन्यत्रास्मद् विद्युतं पातयैताम् २६ १९५

भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्व्वन्तरिक्षम् ।

तस्मै नमो यतमस्या दिशीः २७

भव राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्भवथ ।

यः श्रद्धाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड २८

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः ।

मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः २९

रुद्रस्यैलवकारेभ्योऽसंस्कृतागिलेभ्यः ।

इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः ३०

नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः ।

नमो नमस्कृताभ्यो नमः संभ्रज्जतीभ्यः ।

नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः ३१ २००

॥ २३ ॥ (अथर्व० ६।९।१-२)

(२०१-२०२) शन्तातिः । रुद्रः, १ यमो मृत्युः, शर्वः, २ भवः, शर्वः । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋतो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृज्जन्तु वीरान् १

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्रं उत राज्ञे भवाय ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्वदुधविषा नयन्तु २ २०२

(६) रुद्रः, व्याघ्रः ।

॥ २४ ॥ (अथर्व० ४।३।१-७)

(२०३-२०९) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः, ३ गायत्री ७ ककुम्मतीगर्भोपरिष्ठाद्बृहती ।

उदितस्त्रयो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः ।

हिरुग्धि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुङ्गमन्तु शत्रवः १ २०३

परैणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ।	
परैण दुत्वती रज्जुः परैणाघायुरर्षतु	२
अक्षयौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि ।	
आत् सर्वाङ्गं विंशतिं नखान्	३ २०५
व्याघ्रं दुत्वतां वयं ग्रथमं जम्भयामसि ।	
आहुं ह्येनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम्	४
यो अद्य स्तेन आरयति स संपिष्टो अपायति ।	
पथामपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम्	५
मूर्णा मुगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः ।	
निम्रुक्ते गोधा भवतु नीचार्यच्छशयुर्मृगः	६
यत् संयमो न वि यमो वि यमो यन्न संयमः ।	
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भेनम्	७ २०९

(७) रुद्रः (अग्निः) ।

॥ २५ ॥ (ऋ० ४।३।१)

(२१०) वामदेवो गौतमः । रुद्रः । त्रिष्टुप् ।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययज्ञं रोदस्योः ।

• अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता—द्विरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् १ २१०

॥ २६ ॥ (ऋ० १०।१८।१-४)

(२११-२१४) संकुसुको यामायनः । मृत्युः । त्रिष्टुप् ।

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् १

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।

आप्यार्यमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः २

इमे जीवा वि मृतैराववृत्र—बभूव भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।

प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ३

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।

शतं जीवन्तु शरदः पुरुची—रन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ४ २१४

॥ २७ ॥ (अथर्व० ६।१३।१-३)

(२१५-२१७) अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः) । मृत्युः । अनुष्टुप् ।

नमो देववधेभ्यो नमो राजवधेभ्यः ।

अथो ये विश्वानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते

१ २१५

नमस्ते अधिवाकाय परावाकाय ते नमः ।

सुमत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मत्यै त इदं नमः

२

नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्यः ।

नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नमः

३ २१७

॥ २८ ॥ (अथर्व० ४।३५।१-७)

(२१८-२२४) प्रजापतिः । अतिमृत्युः । त्रिष्टुप्, ३ भुरिजगती ।

यमोदुनं प्रथमजा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणेऽपचत् ।

यो लोकानां विष्टृतिर्नाभिरेषात् तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

१

येनार्तरन् भूतकृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दन् तपसा श्रमेण ।

यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

२

यो द्वाधारं पृथिवीं विश्वभोजसं यो अन्तरिक्षमापृणाद् रसेन ।

यो अस्तभ्राद् दिवमूर्ध्वो महिम्ना तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

३ २२०

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः ।

अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

४

यः प्राणदः प्राणदवान् बभूव यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति ।

ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

५

यस्मात् पक्वादमृतं संबभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव ।

यस्मिन् वेदा निर्हिता विश्वरूपास्तेनौदुनेनाति तराणि मृत्युम्

६

अव बाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु ।

ब्रह्मौदुनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्धानस्य देवाः

७ २२४

॥ २९ ॥ (अथर्व० ७।१०२।१)

(२२५) द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्, मृत्युः । विराट् पुरस्ताद्बृहती ।

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे ।

मेक्षाम्यूर्ध्वस्तिष्ठन्मा मा हिंसिषुरीश्वराः

१ २२५

॥ ३० ॥ (अथर्व० ६।६३।२-३)

(२२६-२२७) दुहणः । २ यमः, ३ मृत्युः । २ अतिजगतीगर्भा, ३ जगती ।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।
 यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे
 अयस्सये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।
 यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम्

२

३ २२७



इति रुद्रदेवता समाप्ता ।

रुद्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[११] १।११४।६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)

— रुद्राय — —

तमने तोकाय तनयाय मृळ ।

(३०) २।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

— रुद्रस्य — — ।

मीद्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।

[१४] १।११४।९ उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं ।

१०।१२७।८ (विद्वय आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

उप ते गा इवाकरं ।— स्तोमं ।

[१५] १।११४।१० मृळा च नो अधि च ब्रूहि देव ।

(अदितिः ० ४१९) १।३५।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)

रक्षा च नो अधि ... ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१८] २।३३।२ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

व्य१स्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो ।

(इन्द्रः २०५१) ६।४४।१६ (शंयुर्बाह्विस्पत्यः । इन्द्रः)

व्य१स्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः ।

[३०] २।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्रः)

परि णो हेतो रुद्रस्य वृज्याः ।

६।२८।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गावः)

परि वो हेतो — ।

(इन्द्रः ३१९३) ७।८४।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रावरुणौ)

परि नो हेतो वरुणस्य वृज्याः ।

[३०] २।३३।१४=(११) १।१४।६ तोकाय तनयाय मृळ ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२२७] ४।३।१ (वामदेवो गौतमः । रुद्रः)

होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

(अग्निः १०८७) ६।१६।४६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)

होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३२] ७।४६।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)

अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।

(इन्द्रः १२१८) २।२१।२ (गृत्समदो भार्गवः शौनकः । इन्द्रः)

अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।

[३५] ७।४६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः)

मा नो वधी रुद्र मा परा दा ।

(इन्द्रः ८५४) १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)

मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा ।

दैवत-संहितान्तर्गत रुद्रदेवता-मन्त्राणां सूची ।

अक्षयौ च ते मुखं च ते	२०५	उग्र एनं देव इष्वासः	१३०
अङ्गेभ्यस्त उदराय	१७५	उदितस्त्रयो अक्रमन्	२०३
अध्यवोचदधिवक्ता	५०	उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः	१५२
अनाप्ता ये वः प्रथमा	१५७	उन्मा ममन्द वृषभो	२२
अपैतेनारात्सीरसौ	१६२	उप ते स्तोमान् पशुपा	१४
अयस्मये द्रुपदे	२२७	उरुः कोशो वसुधानः	१८०
अर्हन् बिर्भाषि सायकानि	२६	ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः	१५४
अवतत्य धनुष्ट्वर	५८	एतत् ते रुद्रावसं	४१
अव बाधे द्विषन्तं	२२३	एवा बभ्रो वृषभ	३१
अव रुद्रमदीमह्यव	३८	एष ते रुद्र भागः	३७
अवैतेनारात्सीरसौ	१६१	कद् रुद्राय प्रचेतसे	१
अवोचाम नमो अस्मा	१६	कुमारश्चित् पितरं	२८
अश्याम ते सुमतिं	८	कन्दाय ते प्राणाय	१७२
असंख्याता सहस्राणि	९९	कव स्य ते रुद्र मृळयाकुः	२३
असौ यस्ताम्रो अरुण	५१	गाथपतिं मेधपतिं	३
असौ योऽवसर्पति	५२	ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो	११३
अस्त्रा नीलशिखण्डेन	१७६	चक्षुषो हृते मनसो	१६४
अस्मिन् महत्यर्णवे	१००	चतुर्नमो अष्टकृत्वो	१७८
आ ते पितर्मरुतां	१७	तव चतस्रः प्रदिशः	१७९
आरे ते गोघ्नमुत	१५	तस्मा उदीच्या दिशो	१२२
आ वो राजानमध्वरस्य	२१०	तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो	१३५
इदं पित्रे मरुताम्	११	तस्मै दक्षिणाया दिशो	१२३
इदावत्सराय परि०	११४	तस्मै ध्रुवाया दिशो	१३२
इन्द्रस्य गृहोऽसि	१६६	तस्मै प्रतीच्या दिशो	१२६
इन्द्रस्य वरुथमसि	१६९	तस्मै प्राच्या दिशो	१२०
इन्द्रस्य वर्मासि	१६८	तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्यः	१३८
इन्द्रस्य शर्मासि	१६७	तुभ्यमारण्याः पशवो	१२३
इमं जीवेभ्यः परिधिं	२१४	त्र्यम्बकं यजामहे	३६; ४०
इमा रुद्राय तवसे	६; ९३	त्र्यायुषं जमदग्नेः	४२
इमा रुद्राय स्थिर०	३२	त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः	१८
इमे जीवा वि श्रुतैः	२१३	त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	९
ईशान एनामिष्वासः	१३९	दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिः	१५०

दिवो वराहमरुधं	१०	नमो वात्याय च	८४
द्रापे अन्धसस्पते	९२	नमो विसृजद्भ्यो	६८
धनुर्भिर्भार्षि हरितं	१८१	नमो व्रज्याय च	८९
ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः	१५३	नमोऽस्तु ते निर्ऋते	२२६
नम आशवे चाजिराय	७६	नमोऽस्तु नीलग्रीवाय	५३
नम उष्णीषिणे	६७	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि	१०९
नमः कपर्दिने च	७४	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे	११०
नमः कूप्याय च	८३	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां	१११
नमः कृत्स्नायतया	६५	नमो हिरण्यबाहवे	६२
नमः पर्णाय च	९१	नमो ह्रस्वाय च	७५
नमः पार्याय च	८७	नास्य पशून् न समानान् १२२, १२५, १२८, १३१,	
नमः शङ्खे च	८५	१३४, १३७, १४०	
नमः शम्भवाय च	८६	नीलग्रीवाः शितिकण्ठा	१०१
नमः शुष्क्याय च	९०	नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः	१०२
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः	७३	न्वेतेनारात्सीरक्षौ	१६०
नमः समाभ्यः सभापतिभ्यः	६९	परं मृत्यो अनु परेहि	२११
नमः सार्यं नमः प्रातः	१८५	परि णो हेती रुद्रस्य	३०
नमः सिकत्याय च	८८	परि ते घन्वनो हेतिः	५७
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः	७१	परि नो रुद्रस्य हेतिः	९५
नमः सोभ्याय च	७८	परेणेतु पथा वृकः	२०४
नमः स्रुत्याय च	८२	पर्युं शु प्र घन्वा वाजसातये	१५९
नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यां	२२५	पशुपतिरेनमिष्वासः	१२७
नमस्त आयुधायानां	५९	पुरस्तात् ते नमः कृष्णः	१७३
नमस्तक्ष्मभ्यो रथकारेभ्यः	७२	प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः	१५१
नमस्ते अधिवाकाय	२१६	प्र बभ्रवे वृषभाय	२४
नमस्ते घोषिणीभ्यो	२००	प्रभुञ्च घन्वनस्त्वम्	५४
नमस्ते यातुघानेभ्यो	२१७	प्राची दिग्भिरधिपतिः	१४९
नमस्ते रुद्र मन्यव	४६	ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं	१५६
नमस्तेऽस्त्वायते नमो	१८४	भव एनमिष्वासः	१२१
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः	७०	भव राजन् यजमानाय	१९७
नमो ज्येष्ठाय च	७७	भवारुद्रौ सयुजा	१८३
नमो देववघेभ्यो	२१५	भवाशर्वौ मृदन्त	१७०
नमो धृष्णवे च	८१	भवो दिवो भव ईशे	१९६
नमो बभ्रुशाय	६३	भेषजमसि भेषजं	३९
नमो बिस्मिने च	८०	मनसा होमैर्हरसा	२०२
नमो रोहिताय	६४	महादेव एनमिष्वासः	१३६
नमो वञ्चते परि०	६६	मा त्वा रुद्र जुक्नुषामा	२०
नमो वन्याय च	७९	मा नस्तोके तनये	१३, ६१

मा नो गोषु पुरुषेषु	१९०	येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि	१४३
मा नोऽभि सा मयं	१८८	येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि	१४६
मा नो महान्तसुत	१२; ६०; १९८	येऽस्यां स्थोर्वायां दिशि	१४८
मा नो रुद्र तक्मना	१९५	यो अग्नौ रुद्रो यो	११९
मा नो वधी रुद्र मा	३५	यो अद्य स्तेन आयति	२०७
मा नो हिंसीरधि	१८९	यो दाधार पृथिवीं	२२०
मीढुष्टम शिवतम	९६	यो नः स्त्रो यो अरणः	११२
मुखाय ते पशुपते	१७४	योऽन्तरिक्षे तिष्ठति	१९२
मुमुक्तमस्मान् दुरिताद्	१६३	योऽभियातो निलयते	१८२
मूर्णा मृगस्य दन्ता	२०८	योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा	१६५
मृळा नो रुद्रो नो	७	रुद्र एनमिष्वासो	१३३
मृत्योः पदं योपयन्तो	२१२	रुद्र जलाशमेषज	११८
य एतावन्तश्च भूयांसः	१०८	रुद्र यत् ते क्रिवि	४४
यः प्राणदः प्राणदवान्	२२२	रुद्रस्यैलबकारेभ्यो	१९९
यः शुक्र इव सूर्यो	४	रुद्राः सःसृज्य पृथिवीं	४५
यत् संयमो न वि	२०९	चिकिरिद्र विलोहित	९७
यथा नो अदितिः	२	विजयं धनुः कपर्दिनो	५५
यथा नो मित्रो वरुणो	१४२	व्याघ्रं दत्वातां वयं	२०६
यमोदनं प्रथमजा	२१८	ज्ञा नः करत्यर्वते	५
यमो मृत्युरचमारो	२०१	शर्व एनमिष्वासो	१२४
यस्मात् पक्वादमृतं	२२३	शिवेन वचसा त्वा	४९
यस्मान्मासा निर्मिताः	२२१	शिवो नामासि स्वधितिः	४३
यस्य तक्मा कासिका	१९१	शिंशुमारा अजगराः	१९४
या ते दिद्युदवसृष्टा	३४	शुने क्रोष्टे मा शरीराणि	१७१
या ते रुद्र शिवा तनुः	४७; ९४	श्यावाश्वं कृष्णमसितं	१८७
या ते हेतिर्मीढुष्टम	५६	श्रेष्ठो जातस्य रुद्र	१९
यामिषुं गिरिशन्त	४८	स एव मृत्युः सोऽमृतं	११६
या वो भेषजा मरुतः	२९	स नो भवः परि वृणक्तु	१७७
ये तीर्थानि प्रचरन्ति	१०६	स रुद्रो वसुवनिः	११७
ये नः सपत्ना अप ते	१५५	सहस्रधार एव ते	१५८
येनातरन् भूतकृतो	२१९	सहस्राक्षमतिपश्यं	१८६
येऽज्ञेषु विविध्यन्ति	१०७	सहस्राणि सहस्रशो	९८
ये पथां पथिरक्षय	१०५	स हि क्षयेण क्षम्यस्य	३३
ये भूतानामधिपतयो	१०४	सोमं ते रुद्रवन्तं	१४१
ये वृक्षेषु शष्पिष्करा	१०३	सोऽर्यमा स वरुणः	११५
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिशि	१४४	स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२७
येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि	१४७	स्थिरोभिरङ्गैः पुरुरूप	२५
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि	१४५	हवीमभिर्हवते	२१

दैवत-संहितान्तर्गत रुद्रदेवताया गुणबोधक-पदसूची ।

[१ ऋग्वेदसंहिता 'ऋ०'; अथर्ववेदसंहिता 'अ०'; संहितानामविरहिताः यजुर्वेदमन्त्राः । २ जातसंज्ञाः रुद्राः बहुवचनेन निर्दिष्टाः ।]

अग्ने-वधः १६, ४०. ८५
अग्न्यः १६, ३०. ७५
अजिरः १६, ३१. ७६
अधः क्षमाचराः १६, ५७. १०२
अधिपतयः भूतानाम् १६, ५९. १०४
अधिवक्ता १६, ५. ५०
अध्वरस्य राजा [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
अनुष्ठाता अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
अन्तरिक्षे (ये) येषां वातः इषवः १६, ६५. ११०
अन्धसस्पतिः १६, ४७. ९२
अज्ञानां पतिः १६, १८. ६३
अपगन्तव्यः १६, ३२. ७७
अपभर्ता रपसः दैव्यस्य ऋ० २, ३३, ७. २३
अपरजः १६, ३२. ७७
अभिज्ञन् १६, ४६. ९१
अभ्वं सः अ० १३, ६, २५. ११६
अमर्त्यः अ० ११, २, ३. १७२
अमृतं सः अ० १३, ६, २५. ११६
अरण्यानां पतिः १६, २०. ६५
अरथाः १६, २६. ७१
अरुणः १६, ६, ३९. ५१, ८४
अरुषः ऋ० १, ११४, ५. १०
अर्मकाः १६, २६. ७१
अर्यमा (सः) अ० १३, ४, ४. ११५
अर्हन् ऋ० २, ३३, १०. २६
अवध्यः १६, ३८. ८३
अवततधन्वा ३, ६१. ४१
अवभेदी १६, ३४. ७९
अवर्ष्यः १६, ३८. ८३
अवसान्यः १६, ३३. ७८

अवस्वन्यः १६, ३१. ७६
अवार्यः १६, ४२. ८७
अश्वाः १६, २४. ६९
अश्वपतयः १६, २४. ६९
अषाढः ऋ० ७, ४६, १. ३२
असंख्याताः १६, ५४. ९९
असितः अ० ११, २, १८. १८७
असिमन्तः १६, २१. ६६
अस्यन्तः १६, २२. ६७
अस्यन् बहुधा अ० ११, २, १७. १८६
अहन्तिः १६, १८. ६३
आक्रन्दयत् १६, १९. ६४
आखिदत् १६, ४६. ९१
आततायी १६, १८. ६३
आतन्वानाः १६, २२. ६७
आतप्यः १६, ३८. ८३
आनिर्हताः १६, ४६. ९१
आयत् अ० ११, २, १५. १८४
आयच्छन्तः १६, २२. ६७
आयुधी (धिन्) १६, ३६. ८१
आयुर्बुधः १६, ६०. १०५
आव्याधिन्यः १६, २४. ६९
आव्याधिनीनां पतिः १६, २०. ६५
आशुः १६, ३१. ७६
आशुरथः १६, ३४. ७९
आशुषेणः १६, ३४. ७९
आसीनः अ० ११, २, १५. १८४
आसीनाः १६, २३. ६८
आहनन्यः १६, ३५. ८०
इरिण्यः १६, ४३. ८८
इष्टुकृतः (त्) १६, ४६. ९१

इषुधिमान् १६, २१, ३६ ६६, ८१
 इषुमान् १६, २९, ७४
 इषुमन्तः १६, २२, ६७
 इष्वासः अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-
 १४, १६-१७, १९-२०, १२०-२१, १२३-२४, १२६-
 २७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९
 इयमानः अ० ११, २, १७, १८६
 ईशानः ऋ० २, ३३, ९, २५ । अ० १५, ५, २, ५, ८
 ११, १४, १७, १९-२०, १२१, १२४, १२७, १३०, १३३,
 १३६, १३८-३९
 ईशानः हेतीनाम् १६, ५३, ९८
 ईशे दिवः पृथिव्याः अ० ११, २, २७, १९६
 उगणाः १६, २४, ६९
 उग्रः १६, ४०, ८५ । ऋ० २, ३३, ९, ११, २५, २७ ।
 अ० १५, ५, १०-११, १२९-१३०, ११, २, २१, १९०
 उच्चैर्घोषः १६, १९, ६४
 उत्तरणः १६, ४२, ८७
 उत्तुरमाणः १६, ४६, ९१
 उपवीती १६, १७, ६२
 उपहत्युः ऋ० २, ३३, ११, २७
 उर्वर्यः १६, ३३, ७८
 उलप्यः १६, ४५, ९०
 उष्णीषी १६, २२, ६७
 ऊर्म्यः १६, ३१, ७६
 ऊर्व्यः १६, ४५, ९०
 ऋदूदरः ऋ० २, ३३, ५, २१
 एतावन्तः १६, ६३, १०८
 ऐलवृदाः १६, ६०, १०५
 ओषधीनां पतिः १६, १९, ६४
 ककुभः १६, २०, ६५
 कक्षाणां पतिः १६, १९, ६४
 कक्ष्यः १६, ३४, ७९
 कनिष्ठः १६, ३२, ७७
 कपर्दी १६, १०, २९, ४३, ५५, ७४, ८८ । ऋ० १, ११४,
 १, ५, ६, १०
 कपर्दिनः १६, ५९, १०४

८ कै. [छ]

कर्मकृत् अ० २, २७, ६, ११८
 कर्माः १६, २७, ७२
 कल्मलीकी ऋ० २, ३३, ८, २४
 कवची १६, ३१, ८०
 कविः १६, ४८, ९३ । ऋ० १, ११४, ४, ९
 काव्यः १६, ३७, ४४, ८२, ८९
 किंशिलः १६, ४३, ८८
 किरिकाः १६, ४६, ९१
 कुलालाः १६, २७, ७२
 कुलुञ्चानां पतिः १६, २२, ६७
 कुल्यः १६, ३७, ८२
 कूल्यः १६, ४२, ८७
 कृत्ति वसानः १६, ५१, ९६
 कृत्तिवासाः ३, ६१, ४१
 कृत्स्नायतया धावन् १६, २०, ६५
 कृष्णः ११, २, १८, १८७
 क्षत्तारः १६, २६, ७१
 क्षमाचराः अधः १६, ५७, १०२
 क्षयणः १६, ४२, ८८
 क्षयद्वीरः ऋ० १, ११४, १-३, १०, ६-८, १५
 क्षिप्रैषुः ऋ० ७, ४६, १, ३२
 क्षेत्राणां पतिः १६, १८, ६३
 क्षेम्यः १६, ३३, ७८
 खल्यः १६, ३३, ७८
 गणाः १६, २५, ७०
 गणपतयः १६, २५, ७०
 गर्तसदः (दू) ऋ० २, ३३, ११, २७
 गह्वरेष्ठः १६, ४४, ४२
 गाथपतिः ऋ० १, ४३, ४, ३
 गिरिचरः १६, २२, ६७
 गिरिशः १६, ४, ४९
 गिरिशयः १६, २१, ७४
 गिरिशन्तः १६, २-३, ४७-४८
 गुत्साः १६, २५, ७०
 गुत्सपतयः १६, २५, ७०
 गेह्यः १६, ४४, ८९
 गोष्ठयः १६, ४४, ८९

चैकितानः ऋ० २,३३,१५. ३१
 जगतां पतिः १६,१८. ६३
 जघन्यः १६,३२. ७७
 जलाशयेजः ऋ० १,४३,४. ३। अ० २,२७,६. ११८
 जाग्रतः १६,२३. ६८
 जातस्य श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९
 जिघांसन्तः १६,२१. ६६
 ज्येष्ठः १६,३२. ७७
 तक्षानः १६,२७. ७२
 तरुण्यः १६,४४. ८९
 तवस् १६,४८. २३। ऋ० १,११४,१. ६
 तव्यस् ऋ० १,४३,१. १
 तस्कराणां पतिः १६,२१. ६६
 ताम्रः १६,६,३९. ५१,८४
 तारः १६,४०. ८५
 तिग्महेती [सोमारुद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
 तिग्मायुधः ऋ० ७,४६,१. ३२
 तिग्मायुधौ [सोमारुद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
 तिष्ठन् अ० ११,२,१५. १८४
 तिष्ठन्तः १६,२३. ६८
 तवस्तमः तवसाम् ऋ० २,३३,३. १९
 तीक्ष्णेषुः १६,३६. ८१
 तीर्थ्यः १६,४२. ८७
 तुंहन्त्यः १६,२४. ६९
 त्र्यम्बकः ३,५८,६०. ३८,४०। ऋ० ७,५९,१२. ३६
 त्विषीमान् १६,१७. ६२
 त्वेषः ऋ० १,११४,४-५. २,१०। २,३३, १४. ३०
 द्रिदः १६,४७. ९२
 दाता भूरेः ऋ० २,३३,१२. २८
 दिवं उपश्रिताः १६,५६. १०१
 दिवि ये येषां वर्ष इषवः १६,६०. १०९
 दिशां पतिः १६,१७. ६२
 दुन्दुभ्यः १६,३५. ८०
 दूरेवधः १६,४०. ८५

देवः ३,५८. ३८। ऋ० १,११४,१०. १५।
 २,३३,१५, ३१। ७,४६,१. ३२। अ० १५,५,
 १०-११. १२९-१३०
 देवानां श्रेष्ठः ऋ० १,४३,५. ४
 देवानां हृदयानि १६,४६. ९१
 द्रापिः १६,४७. ९२
 द्विषर्हाः ऋ० १,११४,१०. १५
 द्वीप्यः १६,३१. ७६
 धनुष्कृतः १६,४६. ९१
 धन्वायिनः* १६,२२. ६७
 धावत कृत्स्नायतया १६,२०. ६५
 धावन्तः १६,२३. ६८
 धृष्णुः १६,३६. ८१
 नक्षत्रन्तः १६,२१. ६६
 नादेयः १६,३१,३७. ७६,८२
 निचेरुः १६,२०. ६५
 निर्णयन् अभिपूर्वम् अ० ११,२,२२. १९१
 निवेष्ट्यः १६,४४. ८९
 निव्याधी १६,२०. ६५
 निषङ्गिणः १६,६१. १०६
 निषङ्गी १६,२०-२१, ३६. ६५-६६, ८१
 निषादाः १६,२७. ७२
 नीप्यः १६,३७. ८२
 नीलग्रीवः १६,७-८, २८. ५२-५३, ७३
 नीलग्रीवाः १६,५६-५८. १०१-१०३
 नीललोहितः १६,४७. ९२
 नीलशिखण्डः अ० २,२७,६. ११८। ६,९३,१. २०१।
 ११, २, ७. १७६
 पतिः अन्धसः १६,४७. ९२
 पतिः अज्ञानाम् १६,१८. ६३
 पतिः अरण्यानाम् १६,२०. ६५
 पतिः आभ्याधिनीनाम् १६,२०. ६५
 पतिः ओषधीनाम् १६,१९. ६४
 पतिः कक्षाणाम् १६,१९. ६४

* रुद्रस्य धनुः- शतवधं, शिखाण्डि, सङ्कल्लि, हरितं, हिरण्यं च। (अथर्व० ११,२,१२. १८१)

पतिः कुलुञ्चानाम् १६, २२. ६७
 पतिः क्षेत्राणाम् १६, १८. ६३
 पतिः जगताम् १६, १८. ६३
 पतिः तस्कराणाम् १६, २१. ६६
 पतिः दिशाम् १६, १७. ६२
 पतिः पत्नीनाम् १६, १९. ६४
 पतिः पथीनाम् १६, १७. ६२
 पतिः पशूनाम् १६, १७. ६२
 पतिः पुष्टानाम् १६, १७. ६२
 पतिः मुष्णताम् १६, २१. ६६
 पतिः वनानाम् १६, १८. ६३
 पतिः विवृन्तानाम् १६, २१. ६६
 पतिः वृक्षाणाम् १६, १९. ६४
 पतिः सत्त्वनाम् १६, २०. ६५
 पतिः स्तायूनाम् १६, २१. ६६
 पतिः स्तेनानाम् १६, २०. ६५
 पतिवेदनः ३, ६०. ४०
 पत्नीनां पतिः १६, १९. ६४
 पथां पथि रक्षयः १६, ६०. १०५
 पथीनां पतिः १६, १७. ६२
 पथ्यः १६, ३७. ८२
 परिवारः १६, २०. ६५
 परिवञ्चत् १६, २१. ६६
 परावत् अ० ११, २, १५. १८४
 पर्णः १६, ५६. ९१
 पर्णशदः १६, ४६. ९१
 पशुपतिः १६, २८, ४०. ७३, ८५। अ० १५, ५, ७-८.
 १२६-१२७। अ० ११, २, २, ५, ९, ११. १७१,
 १७४, १७८, १८०
 पशुपती [भवाश्वौ] अ० ११, २, १. १७०
 पशूनां पतिः १६, १७. ६२
 पांसव्यः १६, ४५. ९०
 पादयन् केशिनः रथम् अ० ११, २, १८. १८७
 पार्थः १६, ४२. ८७
 पिता मरुताम् ऋ० १, ११४, ६, ९. ११, १४; २, ३३,
 १. १७

पिनाकं विभ्रत् १६, ५१. ९६
 पिनाकावसः ३, ६१. ४१
 पुञ्जिष्ठाः १६, २७. ७२
 पुरुषः ऋ० २, ३३, ९. २५
 पुकस्तिः १६, ४३. ८८
 पुष्टानां पतिः १६, १७. ६२
 पुष्टिवर्धनः ३, ६०. ४०। ऋ० ७, ५९, १२. ३६
 पूर्वजः १६, ३२. ७७
 पृथिव्यां ये, येषां अन्नं इषवः १६, ६६. १११
 प्रखिदत् १६, ४६. ९१
 प्रचरन्तः तीर्थानि १६, ६१. १०६
 प्रचेताः ऋ० १, ४३, १. १
 प्रतरणः १६, ४२. ८७
 प्रतिदधानाः १६, २२. ६७
 प्रतिश्रवः १६, ३४. ७९
 प्रतिसर्यः १६, ३३. ७८
 प्रतीचीनः अ० ११, २, ५. १७४
 प्रथमः १६, ३०. ७५
 प्रथमः मिषक् दैव्यः १६, ५. ५०
 प्रपथ्यः १६, ४३. ८८
 प्रमृणन् अयज्वनः देवपीयून् अ० ११, २, २३. १९२
 प्रमृशः १६, ३६. ८१
 प्रवाह्यः १६, ४३. ८८
 फेन्यः १६, ४२. ८७
 बभ्रुः १६, ६. ५१। ऋ० २, ३३, ५, ८-९, १५. २१,
 २४, २५, ३१
 बभ्रुशः १६, १८. ६३
 विभ्रत् पिनाकम् १६, ५१. ९६
 विभ्रत् मेघजा वार्याणि ऋ० १, ११४, ६. ११
 बिल्मी १६, ३५. ८०
 बुध्न्यः १६, ३२. ७७
 बृहत् १६, ३०. ७५
 भगवान् १६, ९, ५२-५३. ५४, ९, ७-९८
 भवः १६, २८. ७३। अ० १५, ५, १-२, ५, ८, ११,
 १४, १७, २०. १२०-२१, १२४, १२७, १३०, १३३,
 १३६, १३९। अ० ११, २, ३, ५, ८-९, १६, २५, २७
 १७२, १७४, १७७-१७८, १८५, १९४, १९६

भवाशर्वौ [देवते] अ० ११, २, १. १७०
 भवस्य हेति: १६, १८. ६३
 भामितः ऋ० १, ११४, ८. १३
 भिषक् दैव्यः प्रथमः १६, ५. ५०
 भिषक्तमः भिषजाम् ऋ० २, ३३, ४. २०
 भीमः १६, ४०. ८५ । ऋ० २, ३३, ११. २७
 भुवनस्य भूरिः ऋ० २, ३३, ९. २५
 भुवन्ति: १६, १९. ६४
 भूतपती [भवाशर्वौ] अ० ११, २, १. १७०
 भूतानां अधिपतयः १६, ५९. १०४
 भूर्यासः १६, ६३. १०८
 भूरिः भुवनस्य ऋ० २, ३३, ९. २५
 भूरेः दाता ऋ० २, ३३, १२. २८
 भेषजम् ३, ५९. ३९
 भेषजा वार्याणि विभ्रत् ऋ० १, ११४, ६. ११
 मध्यमः १६, ३२. ७७
 मन्त्री १६, १९. ६४
 मयस्कः १६, ४१. ८६
 मयोभुवः १६, ४१. ८६
 मरुत्वान् ऋ० १, ११४, ११. १६ । ऋ० २, ३३, ६. २२
 मरुतां पिता ऋ० १, ११४, ६. ११ । ऋ० २, ३३, १. १७
 महादेवः सः अ० १३, ४, ४. ११५ । अ० १५, ५,
 १६-१७. १३५-१३६
 महान्तः १६, २६. ७१
 महेन्द्रः सः अ० १३, ४, ४. ११५
 मीढ्वान् १६, ८, ५०. ५३, ९५ । ऋ० १, ११४, ३. ८ ।
 २, ३३, १४. ३०
 मीढ्वमः १६, ११, २९, ५१. ५६, ७४, ९६ । ऋ. १,
 ४३, १. १
 मुष्णतां पतिः १६, २१. ६६
 मृगयवः (युः) १६, २७. ७२
 मृणन् अ० ११, २, १८. १८७
 मृत्युः सः अ० १३, ६, २५. ११६
 मेध्यः १६, ३८. ८३
 मेघपतिः ऋ० १, ४३, ४. ३
 यज्ञसाधः ऋ० १, ११४, ४. ९
 ग्राम्यः १६, ३३. ७८

युवा ऋ० २, ३३, ११. २७
 रक्षः सः अ० १३, ६, २५. ११६
 रजस्यः १६, ४५. ९०
 रथकाराः १६, २७. ७२
 रथिनः १६, २६. ७१
 राजा अ० ११, २, २८. १९७
 राजा, अध्वरस्थ- [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
 रुद्रः (प्रायः सर्वत्र) ।
 रुद्रः [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०
 रुद्रः अग्नौ अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९
 रुद्रः अप्सु अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९ । अ० ११, २, २४.
 १९३
 रुद्रः ओषधीः विवेशः अ० ७, ८७, १. ११९ । अ० ११, २, २४.
 १९३
 रुद्रः वीरुधः विवेशः अ० ७, ८७, १. ११९ ।
 अ० ११, २, २४. १९३
 रूपम् ऋ० १, ११४, ५. १०
 रेष्म्यः १६, ३९. ८३
 रोहितः ऋ० १६, १२. ६४
 लोप्यः १६, ४५. ९०
 खड्कुः ऋ० १, ११४, ४. ९
 वज्रबाहुः ऋ० २, ३३, ३. १९
 वञ्चत् १६, २१. ६६
 वनानां पतिः १६, १८. ६३
 वन्यः १६, ३४. ७९
 वराहः ऋ० १, ११४, ५. १०
 वरुणः सः अ० १३, ४, ४. ११५
 वरुणी १६, ३५. ८०
 वर्मा १६, ३५. ८०
 वर्षीयान् १६, ३०. ७५
 वर्ष्यः १६, ३८. ८३
 वसानः कृत्तिम् १६, ५१. ९६
 वसुः ऋ० १, ४३, ५. ४
 वाणिजः १६, १९. ६४
 वसुदेवे वसुवनिः अ० १३, ६, २६. ११७
 वषट्कारः नमोवाके अनु अ० १३, ६, २६. ११७
 वात्यः १६, ३९. ८४

वामनः १६, ३०. ७५
 वारिवस्कृतः १६, १९. ६४
 वास्तव्यः १६, ३९. ८४
 वास्तुपः १६, ३९. ८४
 विकिरिद्रः १६, ५२. ९७
 विकृन्तानां पतिः १६, २१. ६६
 विक्षिणत्काः १६, ४६. ९१
 विचिन्वत्काः १६, ४६. ९१
 विद्युत्त्यः १६, ३८. ८३
 विध्यन्तः १६, २३. ६८
 विपश्चित् अ० ११, २, १७. १८६
 विरूपाः १६, २५. ७०
 विलोहितः १६, ७, ५२, ५८. ५२, ९७, १०३
 विविध्यन्त्यः १६, २४. ६९
 विशिखासः १६, ५२. १०४
 विश्वरूपाः १६, ५५. ७०
 विसृजन्तः १६, २३. ६८
 वीक्ष्यः १६, ३८. ८३
 वृक्षाः (हरिकेशाः) १६, ४०. ८५
 वृक्षाः १६, १७. ६२
 वृक्षाणां पतिः १६, १९. ६४
 वृक्षेषु स्थिताः १६, ५८. १०३
 वृद्धः १६, ३०. ७५
 वृषभः ऋ० २, ३३, ४, ६-८, १५. २०, २२-२४, ३१
 वेधाः ऋ० ७, ४६, १. ३२
 वैशन्तः १६, ३७. ८२
 व्रज्यः १६, ४४. ८९
 व्रातपतयः १६, २५. ७०
 व्राताः १६, २५. ७०
 व्याधी (धिन्) १६, १८. ६३
 व्युत्पत्तिः १६, २९. ७४
 शङ्करः १६, ४१. ८६
 शङ्खुः १६, ४०. ८५
 शतधन्वा १६, २९. ७४
 शतेष्टुभिः १६, १३. ५८

शम्भवः १६, ४१. ८६
 शयानाः १६, २३. ६८
 शर्वः १६, २८. ७३। अ० १५, ५, १, ५, ८, ११, १४, १७,
 २०. १२१, १२४, १२७, १३०, १३३, १३६, १३९
 शष्पिञ्जरः १६, १७. ६२
 शष्पिञ्जराः वृक्षेषु १६, ५८. १०३
 शष्प्यः १६, ४२. ८७
 शितिकण्ठः १६, २८. ७३
 शितिकण्ठाः १६, ५६, ५८. १०१-१०३
 शिपिविष्टः १६, २९. ७४
 शिवः ३, ६१. ४१। १६, ४१. ८६
 शिवः नामः ३, ६३. ४३
 शिवतमः १६, ५१. ९६
 शिवतरः १६, ४१. ८६
 शीघ्र्यः १६, ३१. ७६
 शीघ्र्यः १६, ३१. ७६
 शुष्क्यः १६, ४५. ९०
 शूरः १६, ३४. ७९
 श्यावाश्वः अ० ११, २, १८. १८७
 श्रवः १६, ३४. ७९
 श्रिया श्रेष्ठः ऋ० २, ३३, ३. १९
 श्रुतः १६, ३५. ८०। ऋ० २, ३३, ११. २७
 श्रुतसेनः १६, ३५. ८०
 श्रेष्ठः जातस्य ऋ० २, ३३, ४. १२
 श्रेष्ठः देवानाम् ऋ० १, ४३, ५. ६
 श्रेष्ठः श्रिया ऋ० २, ३३, ३. १९
 श्लोक्यः १६, ३३. ७८
 श्वनयः (निः) १६, २७. ७२
 श्वपतयः १६, २८. ७३
 श्वानः १६, २८. ७३
 श्वित्यम् (इ) ऋ० २, ३३, ८. २४
 संविदानो [भवाकद्रौ] अ० ११, २, १४. १८३
 संगृहीतारः १६, २६. ७१
 सत्पतिः ऋ० २, ३३, १२. २८
 सत्ययजः [अभिः] ऋ० ४, ३, १. २१०

● अस्य श्वानः- असंसूक्तगिलाः, ऐलबकाराः, महास्याः । (अ० ११, २, ३०. १९९)

सत्त्वनां पतिः १६,२०. ६५
 सभाः १६,२४. ६९
 सभापतयः १६,२४. ६९
 सयुजौ [भवार्द्रौ] अ० ११,२,१४. १८४
 सरस्यः १६,३७. ८२
 सवृष् १६,३०. ७५
 सहमानः १६,२०. ६५ । ऋ० ७,४६,१. ३२
 सहस्राणि १६,५४. ९९
 सहस्राक्षः १६,८,१३,२९. ५३,५८,७४ ।
 अ० ११,२,३,७ १७२,१७६
 सिकल्यः १६,४३. ८८
 सुगन्धिः ३,६०. ४० । ऋ० ७,५३,१२. ३६
 सुधन्वा १६,३६. ८१
 सुमङ्गलः १६,६. ५१
 सुशिप्रः ऋ० २,३३,५. २१
 सुशेवौ [सोमारद्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२
 सुहवः ऋ० २,३३,५. २१
 सूतः १६,१८. ६३
 सूर्यः १६,४५. ९०
 सृकायी (यिन्) १६,२१. ६६
 सृकाहस्ताः १६,६१. १०६
 सेनाः १६,२६. ७१
 सेनानीः x १६,१७. ६२
 सेनान्यः १६,२६. ७१
 सोभ्यः १६,३३. ७८
 सोमः १६,३९. ८४ । अ० १९,१८,३. १४१
 स्तायूनां पतिः १६,२१. ६६

स्तुतः ऋ० २,३३,१२. २८
 स्तुत्यः १६,३७. ८२
 स्तेनानां पतिः १६,२०. ६५
 स्थपतिः १६,१९. ६४
 स्थिरधन्वा ऋ० ७,४६,१. ३२
 स्वधावन् (वा) ऋ० ७,४६,१. ३२
 स्वपन्तः १६,१३. ६८
 खापिवातः ऋ० ७,४६,३. ३४
 खायुधः १६,३६. ८१
 हनीयान् १६,४०. ८५
 हन्ता १६,४०. ८५
 हरिकेशः १६,१७. ६२
 हरिकेशाः (वृक्षाः) १६,४०. ८५
 हरित्यः १६,४५. ९०
 हवनश्रुत् ऋ० २,३३,१५. ३१
 हिरण्यबाहुः १६,१७. ६२
 हिरण्यरूपः [अभिः] ऋ० ४,३,१. २१०
 हीलितः ऋ० ७,४६,४. ३५
 हस्तः यस्य जलाषः } ऋ० २,३३,७. २३
 भेषजः सृळयाकुः }
 हस्ते विभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १,११४,५. १०
 हृदयानि देवानाम् १६,४६. ९१
 हृदयः १६,४८. ८९
 हेतिः भवस्य १६,१८. ६६
 हेतिः यस्य तक्मा कासिका अ० ११,२,२२. १९१
 हेतीनाम् ईशानः १६,५३. ९८
 होता [अभिः] ऋ० ४,३,१. २१०
 ह्रस्वः १६,३०. ७५

x अस्य सेनाः— केशिन्यः, घोषिण्यः, नमस्कृताः, संभुजनयः । (अ० १०,२,३१. २००)

मृत्युदेवता-गुणबोधक-पदानि

अधिवाकः अ० ६, १३, २. २१६
 चक्षुष्मान् ऋ० १०, १८, १. २११
 तिग्मतेजाः अ० ६, ६३, २. २२६
 दुर्मतिः अ० ६, १३, २. २१६
 देववधाः अ० ६, १३, १. २१५
 निर्ऋतिः अ० ६, ६३, २. २२६
 परावाक अ० ६, १३, २. २१६
 ब्राह्मणाः अ० ६, १३, ३. २१७
 भेषजानि अ० ६, १३, ३. २१७

मृत्युः ऋ० १०, १८, १-२, ४. २११-२१२,
 २१४ । अ० ६, १३, १-३, २१५-२१७; छ,
 ३५, १-७. २१८-२२५; ६, ६३, २-३.
 २२६, २२७
 यमः अ० ६, ६३, २-३. २२६, २२७
 यातुधानाः अ० ६, १३, ३. २१७
 राजवधाः अ० ६, १३, १. २१५
 विद्यानां वधाः अ० ६, १३, १. २१५
 शृण्वन् ऋ० १०, १८, १. २११
 सुमतिः अ० ६, १३, २. २१६

मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-गुणबोधक-पदानि ।

ओदनः ब्रह्मणे अ० ४, ३५, १-७. २१८-२२४
 अधिपतिः गायत्र्याः अ० ४, ३५, ६. २२३
 पक्कः अ० ४, ३५, ६. २२३
 प्राणदः अ० ४, ३५, ५. २२२

प्राणदवान् ४, ३५; ५. २२२
 ब्रह्मौदनः ४, ३५, ७. २२४
 विधृतिः लोकानाम् ४, ३५, १. २१८
 विश्वजित् ४, ३५, ७. २२४

दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।

अथर्व० ३. २६. १-६ (१४३-१४८)			अथर्व० ३. २७. १-६ (१४९-१५४)			अथर्व० १५. ५. १-२१ (१२०-१४०)	
दिङ्नाम ।	देवाः ।	इषवः ।	अधिपतिः ।	रक्षिता ।	इषवः ।	अन्तर्देशात् अनुष्ठाता इष्वासः ।	
प्राची	हेतयः	अग्निः	अग्निः	असितः	आदित्याः	भवः	
वृक्षिणा	अविष्यवः	कामः	इन्द्रः	तिरश्चिराजिः	पितरः	शर्वः	
प्रतीची	वैराजाः	आपः	वरुणः	पृदाकुः	अन्नम्	पशुपतिः	
उदीची	प्रविध्यन्तः	वातः	सोमः	खजः	अशनिः	उग्रः	
ध्रुवा	निलिम्पाः	ओषधीः	विष्णुः	कल्माषघ्नीवः	वीरधः	रुद्रः	
ऊर्ध्वा	अवखन्तः	बृहस्पतिः	बृहस्पतिः	श्वित्रः	वर्षम्	महादेवः	
सर्वे अन्तर्देशाः ।	ईशानः	

दैवत-संहितान्तर्गत-

रुद्रदेवताया उपमा-सूची ।

आप इव अग्निः	अ० ११, २, ८. १७७	परि वृणक्तु नो भवः ।
वृषणः अश्वस्य क्रन्दः इव	अ० ११, २, २२. १९१	यस्य तक्मा कासिका हेतिः ।
घृणी इव च्छायाम्	ऋ० २, ३३, ६. २२	अरपाः रुद्रस्य सुप्तं अशीय ।
पशुपाः इव	ऋ० १, ११४, ९. १४	ते स्तोमान् उपाकरम् ।
मृगं न	ऋ० २, ३३, ११. २७	भीमम् ।
सूर्यः इव	ऋ० १, ४३, ५. ४	यः शुक्रः ।
हिरण्यं इव	ऋ० १, ४३, ५. ४	यः रोचते ।



दैवत-संहिता ।

(८)

उषा-देवता ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१५, शक १८८०, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,
पोस्ट- ' स्वाध्याय मण्डल (पारडी) '
पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य रु. १.७५ न. पैसे

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,
पोस्ट- ' स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '
पारडी (जि. सुरत)

उषा का परिचय

(१)

उषादेवता के सूक्तोंमें साधारणतया प्राभातिक दृश्यका अत्यन्त मनोरम एवं काव्यमय वर्णन किया हुआ है ऐसा प्रथमतः मनमें विचार उठ खड़ा होता है, और यह धारणा है भी ठीक, क्योंकि उषादेवता के लगभग २०० मंत्रोंमें करीब ८० मंत्र भाग स्पष्ट-तथा प्रातःकालीन स्फूर्तिप्रद तथा प्रकाशमय दृश्य का बयान करते हुए पाये जाते हैं। इस उषावेलाके सजीव एवं आन्दोलन-मय वर्णन के अतिरिक्त पचास से अधिक बार इन मंत्रोंमें आर्थिक और सांपत्तिक समृद्धि एवं वैभव के देने और पानेका उल्लेख पाया जाता है। इसलिये ऐसा निःसन्देह कहा जा सकता है कि, इन मंत्रोंमें भौतिक संपन्नता और उषःकालीन प्राकृतिक सुरम्यता का ही अत्यधिक चित्रण एवं निर्देश किया है।

अँधेरे का हट जाना और उजलेका आविर्भाव मंत्रोंमें इस भाँति चित्रित किया है।

१. ज्योतिः कृणोति सूनरी । (ऋ. १।४८।८)

२. ज्योतिः विश्वस्यै भुवनाय कृण्वती...उषा तमः वि आवः । (ऋ. १।९२।४)

३. अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति । (ऋ. १।११३।१६)

४. ...वि आवः ज्योतिषा तमः । उषः अनु स्वधां अव । (ऋ. ४।५२।६)

५. अप...बाधमाना तमांसि उषा दिवो दुहित्वा ज्योतिषागात् । (ऋ. ५।८०।५)

६. पुनः ज्योतिः युवतिः पूर्वथा अकः । (ऋ. ५।८०।६)

७. ...चित्रं भान्ति उषसः ... वि ता बाधन्ते तम ऊर्ग्यायाः । (ऋ. ६।६५।२)

८. ...अकः ज्योतिः बाधमाना तमांसि । (ऋ. ७।७७।१)

९. उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिता अप देत्री । (ऋ. ७।७८।२)

१०. एषा स्या नश्यमायुर्दधाना गूढत्री तमो ज्योतिषोषा अबोधि । (ऋ. ७।८०।२)

११. अपो महि व्ययति चक्षुसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी । (ऋ. ७।८१।१)

१२. अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी । (साम. ३०३ पूर्व आ.)

१३. सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिः यच्छन्ति... । (ऋ. ७।७९।२)

१४. ...स्याः प्रत्यदधन् पुरस्तात् ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः । ...अपाचीनं तमो अगादजुष्टम् । (ऋ. ७।७८।३)

१५. ...उषा ज्योतिः यच्छत्यग्ने अह्नाम् । (ऋ. ५।८०।२)

१६. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् । (ऋ. १।११३।११)

१७. इदं ...त्यत् पुरस्तमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो ... अस्थात् । (ऋ. ४।५१।१)

१८. अस्थुः ...चित्रा उषसः पुरस्तात् ...वि ...तमसो द्वारोच्छन्तीः । (ऋ. ४।५१।२)

१. " यह भली भाँति ले चलनेवाली उषा प्रकाशका सृजन करती है; २. समूचे संसार के लिए उजाला निर्माण करती हुई उषा अँधेरा हटा चुकी है; ३. अँधेरा बिलकुल दूर हट गया और अब उजाला चला आ रहा है; ४. हे उषे ! तू उजालेसे अँधेरा हटा चुकी है और अब स्वकीय धारक शक्तिके अनुकूल रक्षा कर; ५. युलोक की मानों कन्यास्त्री यह उषा अन्धःकार के पुंज को दूर भगाती हुई उजालेके साथ आ चुकी है; ६. इस युवती उषाने फिर पहले जैसेही उजाला बनाया है; ७. उषाएँ अनूठे ढंगसे जगमगाती हैं और वे रात्रीके अँधेरेको विशेषरूपसे हटाती हैं; ८. अन्धःकार हटाती हुई उषा उजाला कर चुकी है; ९. द्योतमान उषा सारे अँधेरे एवं बुराईयोंको उजालेसे दूर भगाती हुई चली आती है; १०. यही वह उषा जागृत हुई है जो उजालेसे अँधेरा छिपाकर नवीन जीवनका धारण कर लेती है; ११. सुन्दर ढंगसे ले चलनेवाली उषा देखना संभव हो इसलिये बड़ा भारी अँधेरा दूर करती है; १२. हे उषे ! तेरी किरणें अँधेरेको ठोक तरह हटाती हैं और उजला दे डालती हैं; १३. वे जगमगानेवाली उषाएँ प्रकाश देती हुई सामने दीख पड़ें और अ-सेवनीय अँधेरा नीचा मुँह कर चला गया; १४. दिन के आरम्भ में ही

उषा उजाला देती है; १५. यह सभी प्रकाशोंमें उच्च कोटिका प्रकाश आपहुँचा है; १६. अँधेरेमेंसे यह विशालतम प्रकाश सामने उठखड़ा हुआ है; १७. सामने ये जगमगाती हुई उषाएँ विशेषरूपसे अँधःकारको हटाती हुई खड़ी हो चुकी हैं । ”

इसभाँति अँधियारीके दूर हो जानेपर और सभी जगह प्रकाश का पूर्ण संचार हो चुकनेपर प्राणिमात्रमें जागृति तथा हलचल शुरु होती है जिसका वर्णन निम्न मंत्रोंमें किया देख पड़ता है—

१. सूनरो उषा आयाति, पद्म ह्यते, पक्षिणः उरपातयति ।

(ऋ. १।४८।५)

२. उक्ते वयश्चित् वसतेरपस्तन् नरश्च...व्युष्टौ ।

(ऋ. १।१२४।१२; ६।६४।६)

३. वयो नकिष्टे पत्तिवांस आसते व्युष्टौ (ऋ. १।४८।६)

४. वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपञ्चतुष्पदक्षुनि ।

उषः प्रारन्तूर्नु दिवः अन्तेभ्यस्परि (ऋ. १।४९।३)

“ १. सुन्दर रूपवाली या अच्छे ढंगसे ले चलनेवाली उषा चली जाती है तब जो कोई पैरोंसे युक्त होता है, वह चलने-लगता है और पंछी उड़ने लगते हैं; २. हे उषे ! तेरे उठ-आनेपर मानव तथा पंछी भी अपने निवासस्थानसे उठ बाहर निकल आये; ३. हे उषे ! तेरे उदय होनेपर उड़नेवाले पंछी कभी नहीं बैठ जाते हैं याने तुरन्त उड़ना शुरु करते हैं; ४, हे (अक्षुनि उषः) खेतवर्णवाली उषे ! (ते ऋतु अतु) तेरी हलचल होनेके उपरान्तही (द्विपञ्चतुष्पद) मानव, चौपाये (पतत्रिणः वयः चित्) और डैनोंवाले पंछी भी (दिवः अन्तेभ्यः परि) आकाशके एक छोरसे ले दूसरे छोरतक चारों ओरसे (प्रआरन्) जाने आने लगे । ” तथा और भी देखिए—

१. अचेति दिवो दुहिता...विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।

(७।७८।४)

२. उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।

(७।७७।१)

३. आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा । (ऋ. ७।८०।१)

४. अविरकभुवनं विश्वमुषाः । (ऋ. ७।७६।१)

५. विश्वानि देवी भुवनानिचक्ष्य...उर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती... ॥ (ऋ. १।९२।९)

६. विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगत्... । (१।४८।८)

७. विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं रवे वि यदुच्छसि सूनरी ।

(ऋ. १।४८।१०)

८. दध्नं पश्यद्भयः उर्विया वि चक्षे उषा भजीगभुवनानि विश्वा । (ऋ. १।११३।५)

९. ससतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात्... । (ऋ. १।१२४।४)

१०. यूयं हि देवीः...परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः ।

प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्नं द्विपञ्चतुष्पाच्चरथाय जीवम् ॥

(ऋ. ४।५१।५)

“ १. ब्रुलोककी कन्या इस उषाका पता लगा, अब सभी विशेषरूपसे जगमगाती हुई उषाको देख लेते हैं; २. यह उषा समूचे प्राणीमात्रको संचारके लिए प्रेरित करती हुई युवती महिलाके तुल्य समीप आकर जगमगाती है; ३. सारे विश्वको प्रकट करती है; ४. समूचे संसारको स्पष्ट कर चुकी है; ५. समूचे जीव-लोकको संचारार्थ जगाती हुई द्योतमान उषा अखिल जगत् को देखकर अत्यन्त अधिक रूपसे सुहाती है; ६. सारा संसार इसे देखनेके लिए नम्र हुआ है; ७. हे सुन्दरी उषे ! जो तू ऊपर उठ आती है तो सचमुच सबकी प्राणशक्ति तथा जीवनशक्ति तुझपर निर्भर है; ८. जो तनिकसा देख रहे हों वे विस्तृत रूपमें देख सकें इसलिए उषाने सारे संसारको जगाया है; ९. सोने-वालोंको जगाती हुई उषा हमेशा आती है; १०. तुम द्योतमान उषाओ ! तुरन्तही तुम अखिल विश्वमें संचार करती हो और मानव एवं चौपाये जीवोंको जो कि सोये पड़े हैं, संचार करनेके लिए जगाती हो । ”

उपर्युक्त अवतरणोंसे स्पष्ट हुआ कि उषाके आगमनमात्रसे सारे संसारमें जागृति एवं संचरणशीलताका सूत्रपात होता है । निद्राधीन प्राणीमात्रको जागृत करना उषाकाही कार्य है । तेजस्विता, सूर्यकिरणों एवं विविध वर्णोंका चेतोहारी दर्शन उषाकालमें हमें होता है । इस संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

१. उष आभाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।

(ऋ. १।४८।९)

२. उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।

(ऋ. १।४८।१५)

३. अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाहि । (ऋ. ७।७७।५)

४. एते रवे भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आयुः ।

(ऋ. ७।७५।३)

“ १. हे ब्रुलोककन्ये उषे ! तू आल्हाददायक किरणसे जगमगाती रह; २. हे उषे ! आज तू किरणकी सहायतासे मानों ब्रुलोकके दरवाजोंको खोल चुकी है; ३. हमारे लिए उच्च कोटिके किरणोंसे युक्त हो जगमगाने लगी; ४. देखने योग्य

उषाके येही वे अनूठे एवं अमृतत्वके गुणोंसे पूर्ण किरण आ पहुँचे हैं।”

१. व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्रमा भासि रोचनम् ।

(ऋ. १।४९।४)

२. सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दशाना । (ऋ. १।९२।१२)

३. आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षं उरु प्रियं ।

उषाः शुक्रेण शोचिषा (ऋ. ४।५२।७)

“ १. हे. उषे ! तू ऊपर उठती हुई अपने किरणोंसे सारे जगत् को कान्तिमान् बनादेती है; २. सूर्यकिरणोंसे दर्शनीय उषाका पता लगा; ३. हे उषे ! तू दीप्त तेजसे तथ^१, किरणोंसे विशाल अन्तरिक्ष एवं युलोकको व्याप्त करलेती है । ”

उषाके आगमनके फलस्वरूप जनताको पथज्ञान भली भाँति हो जाता है, जिसके बारेमें निम्न निर्देश पाये जाते हैं—

१. एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती

याति अग्ने । (ऋ. ५।८०।२)

२. कृणोति विश्वा सुपथा सुगानि... । (ऋ. ६।६४।२)

३. वि उषा आवः पथ्या जनानाम्... । (ऋ. ७।७९।१)

४. एषा...पथो रदन्ती सुविताय देवी...वि भाति ।

(ऋ. ५।८०।३)

५. ...दिवो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय ।

(ऋ. ४।५१।१)

६. भास्वती...अचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।

(ऋ. १।११३।४)

“ १. यह दर्शनीय उषा जनताको जगाती हुई और मार्गोंको आसानीसे यात्रा करने योग्य बनाती हुई आगे बढ़ती है; २. सारे अच्छे मार्गोंको सुगमतापूर्वक जाने योग्य बनाती है; ३. जनताकी सड़कोंको उषाने विशेष ढंगसे व्यक्त किया है; ४. यह द्योतमान उषा भलाईके लिए मार्गोंको खोदती हुई विशेषरीतिसे कान्ति युक्त दिखाई देती है; ५. जगमगानेवाली युलोक कन्या उषाओंने जनताके लिए गमनके लिए सड़क बनाई है; ६. जगमगाती हुई अनोखी उषा ज्ञात हुई और उसने हमारे लिए द्वार खोल दिये हैं । ”

शुभ्र वस्त्र पहनी हुई नारीके समान उषा दीख पड़ती है ऐसा उल्लेख वेदमंत्रोंमें पाया जाता है—

१. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः

(ऋ. १।११३।७)

२. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्बसाना... ।

(ऋ. १।१२४।३)

३. ...रुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् । (ऋ. ७।७७।२)

४. ...हयं अश्वैत् युवतिः पुरस्तात्... । (ऋ. १।१२४।११)

५. रुशद्वासा रुशती श्वेत्यागात् । (ऋ. १।११३।२)

“ १. यह युलोककी कन्या श्वेतवस्त्र पहनी हुई युवतीकी तरह ऊपर उठती हुई सबको दीखपड़ी; २. ज्योतिसे मानों ढकी हुई इस आकाशकन्याका दर्शन हुआ; ३. श्वेत एवं चमकीला वस्त्र धारण करती हुई उषा विकसित तथा शुभ्र हुई; ४. यह युवती नारीके समान आभावाली उषा सामने श्वेतवर्णवाली हुई; ५. जगमगानेवाली एवं चमकीले सूर्यबिम्बको साथ ले शुभ्र उषा आपहुँची है । ”

प्रातःकालके समय पूर्वदिशाका दृश्य कितना मनोरम एवं हृदयंगम होता है सो नीचे दिये हुए मंत्रोंमें बताया है—

१. यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदक्षत...सा..उषा ।

(ऋ. १।४८।१३)

२. ...त्या उषसः केतुं अकृत पूर्वे अर्धे...भातुं अक्षते ।

(ऋ. १।९२।१)

३. चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना । (ऋ. १।११३।१५)

४. पूर्वे अर्धे रजसः ... अकृत प्र केतुम् (ऋ. १।१२४।५)

“ १. जिसकी जगमगानेवाली कल्याणकारक उषाएँ सामने दीख पड़ीं वह उषा है; २. वे उषाएँ पूर्व गोलार्धमें मानों झंडा खड़ा करचुकीं और रश्मिजालको सुशोभित करती हैं; ३. जागृत होती हुई उषा मानों अनोखा झंडा-झापक चिन्ह कर लेती है; ४. विश्वके पूर्व विभागमें झंडा ऊँचा किया गया है । ”

पूर्व दिशामें रक्तिमाका दृश्य कैसे होता है सो बताया है ।

१. एषा गोभिः अरुणेभिः युजाना... । (ऋ. ५।८०।३)

२. ...हयं...युवतिः...युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।

(ऋ. १।१२४।११)

३. उदपत्पन् अरुणा भानवो...स्वायुजो अरुषीः गा अयुक्षत ।

...उषासो...रुशन्तं भातुं अरुषीः अग्निश्रयुः ।

(ऋ. १।९२।२)

४. युक्ष्वा हि... अश्वान् अद्य अरुणान् उषः ।

(ऋ. १।९२।१५)

५. निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः, प्रति गावो अरुषीः

यन्ति... (ऋ. १।९२।१)

६. प्रति अर्चिः रुशत् अस्या अदर्शि, वितिष्ठते बाधते कृष्णं
अश्वम् । चित्रं दिवो दुहिता भानुं अश्वेत् । (ऋ. १।९२।५)
७. गूहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः
...दिवो दुहितरो विभातीः... । (ऋ. ४।११।९)
८. द्युतत्-यामानं...अरुणसुं विभाती, देवीं उषसं...
(ऋ. ५।८०।१)
९. उक्ते शोचिर्मानवो ग्रामपसन्.. उषो देवि रोचमाना
महोभिः (ऋ. ६।६४।२)
१०. एषा स्या...दुहिता दिवोजाः...या भानुना रुजता
राम्यासु अज्ञायि तिरस्तमसश्चिद्वत् । (ऋ. ६।६५।१)
११. प्रति द्युतानां अरुषासो अश्वाः चित्रा अदृशन्नुषसं
वहन्तः । (ऋ. ७।७५।६)
१२. ऊर्ध्वा अस्या अङ्गयो वि श्रयन्ते । (ऋ. ७।७८।१)
१३. प्र रोचना रुच्ये रणवसंदक् । (ऋ. ३।६१।५)
१४. उषा अदर्शि रश्मिभिः व्यक्ता । (ऋ. ७।७७।३)
१५. दिवो अर्कैः अबोधि । (ऋ. ३।६१।६)

“ १. यह उषा लालरंगवाले किरणोंसे युक्त होती हुई देखि-
पडती है; २. यह नवयौवन संपन्न नारीके तुल्य मोहकरूपवाली
उषा रक्तिमामय किरणोंके समूहको जोड़देती है; ३. रक्तवर्ण-
वाले किरण ऊपर उठ आये और लालिमामय एवं स्वयं ही
उत्पन्न होनेवाले रश्मिसमूह को जोड़ दिया तथा रक्तिम आभावाली
उषाएँ दासिमान सूर्य किरणके सहारे खड़ी हैं; ४. हे उषे !
आज तू रक्तिम कान्तिवाले तथा व्याप्त होनेवाले किरणोंको जोड़
दे; ५. ये लाल किरण चारों ओर चले जाते हैं तो ऐसा जान
पडता है कि, मानों साहसी वीर अपने हथियार खींच निकालते
हों; ६. इस उषाकी दैदीप्यमान ज्वालासी कान्ति दिखाई दी
और यह विशेष रूपसे खड़े रहकर काले कल्लटे तथा प्रचंड
अंधकारको विनष्ट करडालती है पश्चात् यह बुलोककन्या उषा
विचित्ररूपवाले या अद्भुत सूर्यके सहारे रहती है; ७. ये बुलोक
की कन्यारूप उषाएँ सुशोभित होती हुई तथा पवित्र एवं विशुद्ध
हो चमकती हुई और दीप्त बनकर तेजस्वी रूपोंसे बड़े भारी कृष्ण
वर्णको मानों छिपाती हैं; ८. द्योतमान उषाको जो कि रक्तिम आभा-
वाली होकर भासमान होती है, तथा जिसका मार्ग जगमगरहा
है; ९. हे द्योतमान उषे ! तेरी आभा तथा रश्मियाँ आकाशमें
उपर उठ चुकी हैं और तू तेजस्वितासे बड़ी सुहावनी प्रतीत
होती है; १०. यही वह बुलोकमें उत्पन्न कन्या है जो तेजस्वी

किरण की बदौलतही रात्रियोंमें अँधेरा एवं तारागण की टिम-
टिमाहट की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतीत होती है; ११. अनूठे,
लाल रंगवाले, व्यापकशक्तिसे युक्त किरण द्योतमान उषाको
उठाकर लेचलते हुएसे दीख पडे; १२. इस उषाके विभूषण
ऊपरवाली दिशामें टिके हुए दिखाई देते हैं; १३. देखनेमें
रमणीय प्रतीत होनेवाली उषा आभामय हो यथेष्ट सुहावे
लगी; १४. किरणोंके कारण स्पष्ट होकर उषा दृष्टिगोचर हुई;
१५. बुलोकमें अर्चनीय किरणोंसे वह जागृत हुई । ”

उषाके बारेमें मंत्र क्या कहते हैं सो देख लीजिए—

१. उषो देवि अमर्त्या वि माहि । (ऋ. ३।६१।२)
२. उषः...ऊर्ध्वा तिष्ठसि अमृतस्य केतुः । (ऋ. ३।६१।३)
- “ १. हे द्योतमान उषे ! तू अमरपनवाली होकर विशेषतया
जगमगाती रह; २. तू अमरपनकी पताकासी है और ऊँची
जगह ठहरती है । ” इसीलिए यह उषा जो कि—
१. भास्वती...दिवः...दुहिता । (ऋ. १।९२।७)
२. शुक्रा कृष्णात् अजनिष्ट स्थितीची । (ऋ. १।९२।९)
३. उषा याति स्वसरस्य पत्नी...आ अन्तात् दिवः
प्रपथे आ पृथिव्याः । (ऋ. ३।६१।४)

अर्थात् ‘ १. जगमगाती हुई बुलोककन्या तथा २. कृष्णवर्ण
अंधकारमेंसे तेजस्विनी और शुभ्रवर्णवालीके रूपमें उत्पन्न हुई एवं
३. दिनकी मानों पत्नीसी बनकर यात्रा करती है, अतः बुलोक
एवं भूलोकके एक कोनेसे लेकर दूसरे कोनेतक फैलचुकी है ’ और
‘ बुलुकन्ती जीवमुदीरयन्ती उषा मृतं कंचन बोधयन्ती ।
(ऋ. १।११३।८)

“ उषा ऊपर उठते समय जीवनमात्रको ऊपर उठनेके लिए
प्रेरित करती हुई किसी भी निश्चेष्ट पडे हुए को जगाती हुई ”
दीख पडती है जब उदित होती है तो लोग कहने लगते कि—

अतारिष्म तमसः पारं अस्य । (ऋ. १।९२।६)

‘ हम इस अंधकारको पार कर गये हैं ’ क्योंकि अब तो
उषा उच्छन्ती...स्मयते विभाती सुप्रतीका (ऋ. १।९२।६)

‘ ऊपर उठनेवाली उषा सुन्दर स्वरूपवाली होकर और
प्रकाशमान बनकर हँस रही है । ’ यह उषा

भूपूर्वती दिवो अन्ता अबोधि, अप स्वसारं सनुतयुयोति ।
(ऋ. १।९२।११)

आकाशकी चरम सीमाको खोलती हुई उठगयी है और
अपनी मानों बहनसी रात्रिको हमेशाई दूर हटाती है । ’

वि अञ्जिभिः दिव आतासु अद्यौत् अप कृष्णां निर्णिजं
देवी आवः । (ऋ. १।११३।१४)

‘ योतमान उषा ऊपरकी दिशाओंमें किरणजालसे चमकने
लगी और रात्रिके कालेकल्लटे स्वरूपको दूर कर चुकी है । ’

पूर्वा विश्वस्मान्मुवनादबोधि..उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूः... ।
(ऋ. १।१२३।२)

‘ सारे संसारके पहलेही यह जाग्रत हुई और नवयौवनसंपन्न
तथा बारबार उत्पन्न होनेवाली यह उषा उच्च पदपर चढकर
खूब सुहाने लगी । ’

पुनःपुनः जायमाना पुराणी समानं वर्णं अभिशुम्भमाना ।
(ऋ. १।१२।१०)

‘ यह उषा पुरानी है पर बारबार उत्पन्न होती हुई
वर्णको समान रूपसे साफसुथरा एवं परिमार्जित करती हुई
दिखाई देती है । ’

पुराणी देवी युवतिः पुरन्धिः अनु व्रतं चरसि विश्ववारे ।
(ऋ. ३।६।११)

‘ हे दीप्तियुक्त तथा सबके स्वीकरणीय उषे ! तू पुरानी है
लेकिन नवयौवनयुक्त और बहुतोंका धारण करनेवाली महिला
जैसी है तथा व्रत-नियमके अनुकूल संचार करती है । ’

१. संस्मयमाना युवतिः पुरस्तात्... । (ऋ. १।१२३।१०)

२. सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषाः... (ऋ. १।१२३।११)

‘ १. यह उषा जनताके सम्मुख सुहास्य वदनी युवतीकी नाई
दिखाई देती है; २. यह उषा मानों माताने विभूषित की हुई
सुस्वरूप युवती नारीके तुल्य है । ’

१. एषा...आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् । (ऋ. ५।८०।४)

२. एषा...ऊर्ध्वेव स्नाती दृश्ये नो अस्थात् । (ऋ. ५।८०।५)

३. आविर्वर्ध्नांसि कृणुषे विभाती । (ऋ. १।१२३।१०)

४. आविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् । (ऋ. १।१२३।११)

‘ १. यह उषा सामने अपने शरीरको व्यक्त करती हुई और
२. ऊँची जगह मानों जलमग्न हुईसी हमारे दर्शनार्थ खड़ी है;
“हे उषे ! तू सुहाती हुई जनताके दर्शनार्थ अपना सुन्दर
शरीर भलीभाँति स्पष्ट अनावृत करती है । ”

ऊपरके वचनोंसे स्पष्ट हुआ होगा कि विश्वके पुरातनतम
साहित्य-अर्थात् वेदमें प्राभातिक वेलका कितना काव्यमय,
रसिकतापूर्ण एवं सौन्दर्यप्राही वर्णन किया हुआ उपलब्ध होता
है । ऐसा निस्सन्देह कहा जा सकता है कि, उषादेवताके सूक्त

वास्तवमें वेदकालीन प्रतिभाशाली कवियोंकी रसिकता तथा
सौन्दर्य लोलुपताका भलीभाँति परिचय करानेकी क्षमता रखने-
वाले काव्य हैं ।

उषा सूक्तोंको ध्यानपूर्वक पढलेनेसे जहाँ एक ओर वैदिक
कवियोंकी सौन्दर्यासक्ति तथा सहृदयताका ज्वलन्त उदाहरण
दीख पड़ता है, वहाँ इस बातका भी स्मरण हुए बिना नहीं रहा
जाता कि, वैदिक सूक्तोंके सृजन करनेकी क्षमतासे युक्त वे
प्राचीन कवि आर्थिक सुसमृद्धि एवं भौतिक वैभवको प्राप्त करनेकी
आवश्यकताके बारेमें पर्याप्त रूपसे सतर्क और सचेष्ट रहा करते
थे । बात भी बिल्कुल ठीक जँचती है, क्योंकि साधारणतया
ऐसा दिखाई देता है कि, जिस समाजमें पर्याप्त मात्रामें वैभव-
संपन्नता विद्यमान है, वहाँपर रसिकता सहृदयता एवं प्रतिभा-
संपन्न सुसचिताका प्रादुर्भाव हुआ करता है । वैदिक सूक्त पढ
लेनेसे साफ जाहिर होता कि वैदिक समाज व्यवस्थामें सौंपतिक
सुविधा एवं भौतिक ऐश्वर्यको अक्षुण्ण बनाये रखनेकी ओर
तत्कालीन जनताका ध्यान किस तीव्रतासे आकृष्ट हो चुका था ।
अस्तु, अब हमें उन मंत्र भागोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिए
जहाँ आर्थिक प्रगति करनेके स्पष्ट निर्देश पाये जाते हैं ।

१. दिवः दुहितर् ! त्योभः वाजेभिः जागहि, रयिं अस्मे
नि धारय । (ऋ. १।३०।२२)

२. सा न आवह...रयिं दिवो दुहितर्... । (ऋ. ६।६४।४)

३. उच्छा दिवो दुहितः प्रनवत्...सुवीरं रयिं गृणते
रिरीहि... । (ऋ. ६।६५।६)

४. महे नो अद्य सुविताय बोधि उषो...चित्रं रयिं यशसं
धेहि अस्मे... । (ऋ. ७।७५।२)

५. एषा नेत्री राधसः...उषा...दीर्घश्रुतं रयिं अस्मे
दधानां... । (ऋ. ७।७६।७)

६. वामेन सह, बृहता धुम्नेन राया सह नः वि उच्छ ।
(ऋ. १।४८।११)

७. सा अस्मासु धा गोमदश्चावदुक्थ्यं उषो वाजं सुवीर्यम् ।
(ऋ. १।४८।१२)

८. बृहता विश्वपेशसा राया, इळाभिः वाजैः धुम्नेन नः
सं मिमिक्ष्व (ऋ. १।४८।१६)

९. उषो अद्यह...रेवदस्मे व्युच्छ । (ऋ. १।९२।१४)

१०. उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्यं...येन तोकं तनयं च
धामहे । (ऋ. १।९२।१३)

११. ... अस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् (ऋ. १।११३।१७)

१२. ताः प्रत्यवज्जग्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ।
(ऋ. १।१२४।९)

१३. तेभ्यो युग्मं बृहद्यज्ञ उषो मघोन्यावह ।
(ऋ. ५।८९।७)

१४. रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु
देवीः । (ऋ. ४।५१।१०)

१५. स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
(ऋ. ४।५१।१०)

१६. महे नो अद्य बोधय उषो राये दिविर्मती ।
(ऋ. ५।७९।११)

१७. ...नो गोमतीरिषः आ वह्ना दुहितर्दिवः... ।
(ऋ. ५।७९।८)

१८. तच्चित्रं राध आभरोषो ... यत्ते दिवो दुहितर्मत्संभोजनं
तत् रास्व भुनजामहे । (ऋ. ७।८१।५)

“ १. हे बुलोककन्ये ! उन अर्धों या बलोंके साथ इधर आजा और हममें धन रख दे; २. तू हमतक धन पहुँचा दे; ३. पहले जैसेही तू उदित होती रह और स्तोताको अच्छी वीरतासे युक्त धन देडाल; ४. हे उषे ! हमारी बड़ी भारी भलाई हो इसलिए तू आज जाग तथा हमारे बीच अनूठे वैभव और यशकी स्थापना कर; ५. यह उषा बहुत दूरतक विख्यात धन हमारे मध्य रखती हुई धनको पहुँचानेवाली है; ६. हमारेलिए तू सुन्दरताके साथ बड़े भारी धन एवं वैभवको साथ ले उदित होजा; ७. गायों और घोड़ोंसे युक्त, अच्छी वीरता से परिपूर्ण एवं सराहनीय अन्नसामग्री या बल हममें धरदे; ८. बड़े प्रचंड, विश्वभरमें सुन्दर धन, अन्न सामग्रियों, बलों तथा वैभवसे तू हमें मली माँति संयुक्त कर; ९. उषे ! आज तू हमारे लिए धनसंपन्न हो उदित हो; १०. वह अनूठा धन हमें दे डाल ताकि हम पुत्र पौत्रोंका धारण करसकें; ११. हमें संतानयुक्त दीर्घजीवन दे डाल; १२. वे उषाएँ हमारेलिए पहले जैसे अबभी अच्छे दिनवालीं एवं धनसंपन्न हो उदित हों; १३. हे ऐश्वर्य संपन्न उषे ! जन्हें बड़ा भारी यश और धन पहुँचादे; १४. वे द्योतमान बुलोक कन्याएँ हमारे मध्य संतानयुक्त धन का प्रदान करें; १५. हे उषाओ ! आपके दिये हुए सुखसे हम जागृत होकर अच्छी वीरताके अधिपति बनें; १६. हे द्योतमान उषे ! आज हमें बड़ा भारी धन मिले इसीलिए

जागृत कर; १७. हे बुलोककन्ये ! हमारे समीप गोधन युक्त अन्नसामग्रियाँ पहुँचादे; १८. वह अनूठा धन देदे और जो तेरे निकट मानवोंके उपभोग योग्य वस्तु हो उसे प्रदान कर ताकि हम उपभोग लें। ”

उषाके संबंधमें वैदिक कवि कहते हैं—

१. चित्रामवा राय ईंशे वसूनाम् । (ऋ. ७।७५।५)

२. अग्रं अग्रमित् भजते वसूनाम् । (ऋ. १।१२३।४)

३. विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ।
(ऋ. ९।११३।७)

४. ... उतोषो वस्व ईंशिषे । (ऋ. ४।९२।३)

५. धनानां सनये उषा एति । (ऋ. १।१२४।७)

६. एषा .. अन्नेधन्ती रयिं अप्रायु चक्रे (ऋ. ५।८०।३)

७. ...ता भद्रा उषसः पुरा आसुः...यास्वीजानः...स्तुवन्
शंसन् द्रविणं सद्य आप । (ऋ. ४।५१।७)

८. अभूदुषा...मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।
(ऋ. ७।७९।३)

“ १. यह उषा अनोखे धनसे संपन्न है और संपत्तियोंपर प्रभुत्व रखती है; २. धनोंमें जो परले दर्जेका हो उसही ले लेती है; ३. हे सुंदर ऐश्वर्यवाली उषे ! तू समूचे भूमंडलस्थ धनपर प्रभुत्व रखती हुई आज उदित हो; ४. तेरे आधीन धन है; ५. धनोंका दान करनेके लिए उषा आती है; ६. यह उषा क्षीण न होती हुई धनको स्थिर कर चुकी है; ७. पहले वे सुन्दर हितकारक उषाएँ थीं जिनमें यज्ञ करनेवाला सराहना एवं भाषण करता हुआ तुरन्त धन पा सका; ८. उषा ऐश्वर्यसंपन्न हुई और भलाईके लिए अर्धोंका उत्पादन करचुकी । ”

अच्छे कार्य करनेवाले तथा दानशूर पुरुषकोही धन देनेके बारेमें निम्न मंत्रोंमें निर्देश मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक कवि संपत्तिके विकेन्द्रीकरणके अनुकूल थे और ऐसी समाज व्यवस्था चाहते थे जहाँ आर्थिक विषमता न हो तथा अधिकांश जनता निर्धन और कुछ इनेगिने व्यक्ति अत्यधिक संपन्न एवं धनशाली हैं ऐसी दशा न होने पाय ।

१. ...वहसि भूरि वामं उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।

(ऋ. १।१२४।१२)

२. या वहसि पुरु स्पार्ह...रत्नं न दाशुषे मयः ।

(ऋ. ७।८१।३)

३. वि दिवो देवी दुहिता दधाति...स्रुक्ते वसनि ।

४. याति शुभ्रा...दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ।

(ऋ. ७।७।५६)

५. श्रवो वाजं हृषं ऊर्जं वहन्तीः नि दाशुषे उषसो

मर्त्याय...अवो घात विधत्ते रत्नं अद्य । (ऋ. ६।६।५।३)

६. एषा...दुहिता दिवो...व्यूष्वती दाशुषे वार्याणि ।

(ऋ. ५।८०।६)

७. या गोमतीरुषसः...व्यूच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय...

ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा । (ऋ. १।११३।१८)

“ १. हे उषे ! देवि ! तू दानशूर मानवके लिए प्रचंड सुन्दर धन पहुँचाती है; २. तू दान देवुकनेपर उसे यथेष्ट, स्पृहणीय रत्नतुल्य सुख पहुँचाती है; ३. दानशूर धुलोककन्या सुन्दर कार्य करनेवालेके लिए धनसमूह रखती है; ४. श्वेत-वर्णवाली उषा कार्यकर्ता लोगों के लिए रत्न धरदेती हुई चली आती है; ५. दानी मानवके लिए उषाएँ अन्न, यश तथा बल पहुँचाती हैं, आज कार्यकर्ताके लिए रक्षा एवं रत्न रख दो; ६. यह धुलोककन्या दानीके लिए स्वीकरणीय वस्तुओंको खोल देती है; ७. दानी पुरुषके लिए जो उषाएँ गोधनयुक्त हो उदित होती हैं उन अश्व देनेवाली उषाओंको सोम निचोड़नेवाला पाता है । ”

वैदिक कवि उषासे क्या अपेक्षा रखते हैं सो देखलीजिए—

१. उष आ भाहि भालुना...आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभागम् ।

(ऋ. १।४८।९)

२. अथा नो विश्वा सौभाग्यावह (ऋ. १।९२।१५)

३. सा नो रथि विश्ववारं सुपेसासं उषा ददातु सुग्मम् ।

(ऋ. १।४८।१३)

४. ...प्र नो वच्छतादवृकं पृथु छर्दिः प्र देवी गोमतीरिषः ।

(ऋ. १।४८।१५)

५. उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं...रथि... (ऋ. १।९२।८)

६. ... मद्रं मद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।

उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छ अस्मासु रायो मववत्सु

च स्युः । (ऋ. १।१२३।१३)

७. युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च क्षतिनं च वाजम् ।

(ऋ. १।१२४।१३)

८. एतावद् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।

(ऋ. ५।७९।१०)

९. नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नं उषो अश्ववत् पुरुभोजो अस्मे ।

(ऋ. ७।७५।८)

१०. ... उरुगायमाभि धेहि श्रवो नः । (ऋ. ६।६।५।६)

११. ... उषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।

हृषं च नो दधती... गोमदश्ववद्धवच्च राधः

(ऋ. ७।७७।५)

१२. तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोत्रभ्यो
अरदो गृणाना । (ऋ. ७।७९।४)

१३. उषो अर्वाच! बृहता रथेन ज्योतिष्मता वामं अस्मभ्यं
वक्षि । (ऋ. ७।७८।१)

“ १. हे उषे ! रश्मिमे तू जगमगाती रह और हमारे लिए बहुतसा अच्छा भाग्य पहुँचाती रह; २. अच्छा, अब तो हमें सभी सौभाग्य प्राप्त करा; ३. वह उषा हमें सुखरूप, सबके स्वीकरणीय एवं सुखदायक धनवैभव देवे; ४. हे द्योतमान ! हमें विस्तीर्ण, वृकरहित (जिसमें भेडिया नहीं घुस सकता हो) घर तथा गोधनयुक्त अन्नसामग्रियाँ यथेष्ट दे दे; ५. हे उषे ! मैं अच्छी वीरतासे युक्त एवं यशसे पूर्ण धनसंपदाको प्राप्त कर लूँ; ६. हममें अच्छे अच्छे कार्योंको धरदेती चल और हे उषे ! तू आज हमारे लिए सुखपूर्वक बुलाने योग्य है अतः उदित हो तथा हममें और धनिकोंमें संपत्तियाँ रहें ऐसा प्रबंध कर; ७. हे द्योतमान उषाओ ! तुम्हारी रक्षाके फलस्वरूप हम सैकड़ों और हजारोंकी संख्यामें अन्न प्राप्त करें; ८. हे उषे ! इतना तो जरूरही लेकिन और भी फिर, तू हमें दे दे, ९. अब हमें गोधन, वाजिधन एवं वीरोंसे युक्त और बहुतोंको भोगसाधन मिल सके ऐसा रत्न दे डाल, १०. बहुतसे लोक जिसके बारेमें गायन करते हैं ऐसा यश हममें धर दे; ११. हे देवतारूपी उषे ! हमारा जीवन बढ़ाती हुई और गौओं, घोड़ों तथा रथादि वाहनोंसे युक्त धन एवं अन्न हमें देती हुई...; १२. हे उषे ! स्तोताओंको जितना धन तूने दिया उतना तू हमें देदे; १३. हे उषे ! प्रकाशयुक्त और बड़े रथको, जो कि हमारी ओर ही आ रहा है साथ लेकर तू सुन्दर धन हमें देती रह । ”

उषासे ऐसी प्रार्थना इसलिये की जाती है कि—

स्वार्हा वसूनि तमसा अपगूळ्हा नाविष्कृण्वन्ती उषसो
विभातीः । (ऋ. १।१२३।६)

‘ चमकती हुई उषाएँ अंधेरेने गुप्तरूपसे ढकी हुई स्पृहणीय धनोंको खोलदेती हैं । ’ और भी एक बात है कि,

प्रार्थ्या जगद्व्युनो राधो अख्यत् । (ऋ. १।११३।४)

‘ जगत्को अच्छी तरह दृष्टिगोचर कराके उषाने हमारे

धनोंको विशेष रीतिसे खोल दिया, चमका दिया । ' यह उषा हमारे लिए ' (आवहन्ती पोष्या वार्याणि) ऋ. १।११३।१५ ' पोषणीय तथा स्वीकरणीय वस्तुओंको पहुंचाती रहती है । और ' अस्मभ्यं गोमतः वाजान् सूरिभ्यः अमृतं वसुत्वन् अश्वः चोदयित्री । (ऋ. ७।८१।६) ' अर्थात्, हमें गौओंसे युक्त अश्व और विद्वानोंको अमरपन, धनाढ्यता एवं यश देनेकी प्रेरणा करनेवाली है ।

केवल पर्याप्त मात्रामें प्रकाश, अन्न, बल, धन देनेसेही देवता का कार्य पूर्ण नहीं होता, किन्तु द्वेषा, विरोधियों तथा शत्रु-ओंको हटानाभी अत्यन्त आवश्यक है । देखिए, वैदिक कवि-योंने इस संबंधमें क्या कहा है—

... उषा स्त्रियः अप उच्छत् । (ऋ. ७।८१।६)

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रियः ।
(ऋ. १।४८।८)

अर्थात् ' द्युलोककन्या एवं ऐश्वर्यसंपन्न उषा द्वेषकरनेवालों को और शत्रुओंको हटानेके लिए उदित हो जाए । '

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वी गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ।
(ऋ. ७।७७।४)

' हे (मघोनि) ऐश्वर्यसंपन्न उषे ! तू (अन्ति-वामा) अपने समीप हमें देनेके लिए धन रखनेवाली है, अब (अमित्र दूरे उच्छ) शत्रुको दूर हटादे और (नः) हमारे लिए (उर्वी गव्यूति) विशाल मार्ग तथा (अभयं कृधी) निर्भयतामय वातावरणका सृजन कर; पश्चात् (द्वेषः यावय) द्वेषको हटादे और (वसूनि आ भरा) हमें धन ला दे एवं (गृणते राधः चोदय) स्तोताके लिए धन प्रेरित कर । '

वि उषा आवो...आविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।

अप दुहस्तम आवरजुष्टं... ॥ (ऋ. ७।७५।१)

' उषा प्रकट हुई है, वह महिमाको साफ तौरसे व्यक्त करती हुई आ चुकी है और द्वेष करनेवालेको एवं असेवनीय अँधेरेको दूर भगाया है । '

उषःवेलामें अनुष्ठेपनके रहनेपरभी अनोखी समानरूपता पाई जाती है जिसका उल्लेख यं है—

सदशीरघ सदशीरिदु श्वो... । (ऋ. १।१२३।८)

शुभं यच्छुभा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदशीरजुर्थाः ।
(ऋ. ४।५१।६)

आज ये उषाएँ समानरूपवाली हैं तो कलभी उसी तरह

रूपवाली दिखाई देती हैं; ये शुभ्रवर्णवाली एवं जर्णन होनेवाली उषाएँ भलीभाँति हितके लिए संचार करती हैं और समान स्वरूपवाली होनेसे प्रथक् पृथक् नहीं जानी जाती हैं । '

विख्यात ऋषि उषाकी सराहना करते थे ऐसा निम्न मंत्रोंसे सूचित होता है—

१. प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उपबुधः सुभगे
तुष्टुवांसः । (ऋ. ७।७६।६)

२. एषा...उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः (ऋ. ७।७६।७)

३. प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा
अबुध्न । (ऋ. ७।८०।१)

४. ऋषिष्टुता...मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गुणाना ।
(ऋ. ७।७५।५)

५. देवीमुषसं स्वरावहन्ती प्रति विप्रासो मतिभिर्जर्नते ।
(ऋ. ५।८०।१)

६. यावयद् द्वेषसं त्वा...प्रति स्तोमैरभुस्सहि ।
(ऋ. ४।५२।४)

७. अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गुणान्ति वह्नयः ।
(ऋ. ५।७९।४)

८. उषो...स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि । (ऋ. ३।६१।१)

९. व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमामासि रोचनम् ।

तां त्वा मुषर्वसूयवो गीर्भिः कण्वा अहूषत ॥ (ऋ. १।४९।४)

“ १. हे सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषे ! सुबह जाग उठनेवाले एवं स्तुति करनेवाले वसिष्ठ परिवारके लोग स्तुतिमय काव्योंसे तेरी प्रशंसा करते हैं; २. उदित होनेवाली उषाकी स्तुति वसिष्ठ वंशके ऋषियोंसे की जाती है; ३. प्रथम श्रेणीके तथा ज्ञानी वसिष्ठ कुलके ऋषि उषाके आगमनके मौकेपर स्तोत्रपाठ कर चुके; ४. यह ऐश्वर्यसंपन्न एवं ऋषियोंद्वारा प्रशंसित उषा उदित होती है जबकि हव्योंको ढोनेवाले यजमान उसकी स्तुति करने लगते हैं; ५. स्वर्गतुल्य तेज पहुँचानेवाली तथा दैदीप्यमान उषाकी स्तुति विद्वान लोग मननीय काव्योंसे करते हैं; ६. तू उदित होनेपर द्वेषभाव हटाती है इसलिए हम स्तोत्रोंसे तुझको मानों जगाते हैं; ७. हे विशेष तेजवाली उषे ! हवनीय वस्तु-ओंको इष्टस्थानतक पहुँचानेवाले जो यजमान हैं वे स्तोत्रोंसे तेरी स्तुति करते हैं; ८. ऐश्वर्यसंपन्न उषे ! स्तोताके स्तुतिमय काव्यका स्वीकार कर; ९. हे उषे ! उदित होती हुई तू समूचे जगत्को सुन्दर करती है, ऐसे तुझको धन चाहनेवाले कण्व वंशके ऋषि भाषणोंसे बुलाते हैं । '

उषा सुन्दर रथपर चढकर आती है और बलिष्ठ घोड़े उसे खींचते हैं ऐसा वर्णन पाया जाता है जैसे—

१. उषो देवि...चन्द्ररथा...ह्रयन्ती । (ऋ. ३।६।१२)

२. आत्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये ॥ (ऋ. ३।६।१२)

‘ १. हे द्योतमान उषे ! तू सुन्दर, आलहाद दायक रथवाली है और दूसरोंको प्रेरणा देनेवाली है इसलिए; २. जो विशाल बलयुक्त तथा भलीभाँति नियमित घोड़े हैं वे सुवर्ण कान्तिवाली तुझको इधर ले आयें । ’

सुपेक्षं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्वम् । (ऋ. १।४९।२)

‘ हे उषे ! जिस सुन्दररूपवाले एवं सुखदायक रथपर तू चढचुकी थी । ’

सा नो रथेन बृहता...श्रुधि चित्रामधे हवम् ।

(ऋ. १।४८।१०)

‘ हे अनोखे ऐश्वर्यसे युक्त उषे ! बड़े भारी रथपर चढकर आती हुई तू हमारी पुकार सुनले । ’

एषा अयुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।

शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ॥

(ऋ. १।४८।७)

‘ यह उषा सूर्योदयके पहले ही सुदूर स्थानमें रथोंको घोड़े जोत चुकी है, ताकि शीघ्र यात्राका प्रारंभ हो; यह सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषा मानवोंके समीप मानों सैकड़ों रथोंसे चली जाती है । ’

... अद्योदुषाः शोशुचता रथेन । (ऋ. १।१२३।७)

‘ उषा जगमगाते हुए रथके कारण चमकने लगी । ’

बृहद्रथा बृहती...उषा ज्योतिर्यच्छति... ।

(ऋ. ५।८०।२)

‘ महान उषा बड़े भारी रथसे आती हुई उजेला देडालती है । ’

... अरुषासो अश्वाश्चित्रा अदधन्ननुषसं वहन्तः ।

याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन... (ऋ. ७।७५।६)

‘ रक्तिम-आमावाले अनूठे घोड़े उषाको ले आते हुए दीखपड़े और यह तेजस्वी उषा समीरूप धारण करनेवाले रथपरसे चली जाती है । ’

... दिवो दुहिता... आस्थात् रथं स्वधया युज्यमानं

आ यं अश्वासः सुयुजो वहन्ति । (ऋ. ७।७८।४)

‘ बुलोककन्या उषा, स्वकीय धारणशक्तिसे तैयार होनेवाले

रथपर, जिसे भली भाँति जोते हुए घोड़े लेचलते हैं, चढगई ।

अश्विनौ जैसे अथकरूपसे लोक सेवा करनेवालोंसे मित्रता पूर्ण बताव रखना और और गौओंकी माता बनना उषाकी विशेषता है, देखिए—

हिरण्यवर्णा सुदशीकसंदग् नवां माता नेत्र्यह्नामरोचि ।

(ऋ. ७।७७।२)

‘ सुवर्णकी कान्तिवाली अतः जिसका दर्शन बडाही रमणीय है ऐसी यह गौओंकी माता उषा जो कि दिनोंकी नेत्री है जगमगाने लगी । ’

...अरुषी माता गवां...सखा अभूदश्विनोरुषाः ।

उत सखा असि अश्विनोरुत माता गवामसि... ।

(ऋ. ४।५२।२-३)

‘ लालिमामय आभावाली उषा गौओंकी माता एवं अश्विनौ की मित्रा है । ’

लोगोंके दिलमें उषाके प्रति कैसी आदरमय भावना रहा करती थी सो निम्न मंत्रोंसे स्पष्ट होगा—

उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दशे ।

तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥

(ऋ. ७।८१।४)

‘ हे (महि देवि) महनीय देवतारूपी उषे ! (या उच्छन्ती) जो तू उदित होती हुई (मंहना) अपने तेजसे (स्वः) स्वर्गको (दशे) दर्शनके योग्य तथा (प्रख्यै कृणोषि) विशेष स्पष्टताके अनुकूल बनाती है उस (तस्याः ते) तुझको जो कि (रत्नभाजः) रत्न साथ रखनेवाली है हम (ईमहे) चाहते हैं, या प्रार्थना करते हैं कि (वयं) हम तेरी निगाहमें (मातुः सूनवः न) माताके लिए उसके पुत्र जैसे प्यारे होते हैं, वैसेही (स्याम) प्रिय हों । ’

उषो भद्रेभिरागहि दिवश्चिद्रोचनादधि । (ऋ. १।४९।१)

‘ हे उषे ! तू (रोचनात् दिवः चित्) चमकीले बुलोक से भी (भद्रेभिः अधि आगहि) कन्याणप्रद किरणों से युक्त हो हमें प्राप्त होजा । ’

तद्वो दिवो दुहितरो विभातीरुप ब्रुव उषसः ...

वयं स्याम यशसो जनेषु ... (ऋ. ४।५१।११)

‘ हे चमकती हुई, बुलोककी कन्यासी उषाओ ! मैं तुमसे वही कहना चाहता हूँ कि हम जनता में यशस्वी हों । ’

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्नुषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।

सा अस्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

(ऋ. ७।७७।६)

‘ हे (सुजाते) सुन्दर ढंगसे उत्पन्न ! धुलोककन्ये उषे ! (यां त्वा) जिस तुझको वसिष्ठवंशोत्पन्न लोग (मतिभिः वर्धयन्ति) बुद्धि से निष्पादित काव्योंद्वारा वृद्धिगत करते हैं ऐसी (सा) वह तू (अस्मासु) हममें (बृहन्तं ऋषे रयिं धा) बड़े दैदीप्यमान धन रख दे और तुम हमें सदैव कल्याणकारक बातोंसे सुरक्षित रखो । ’

उषा में इन्द्रशक्ति एवं अंगिरसोंकी शक्ति बढ़नेका उल्लेख मिलता है जैसे—

अभूदुषा इन्द्रतमा मघोनी ... दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि । (७।७९।३)

...समानेन योजनेना परावतः । ... इषं ब्रह्मन्तीः सुकृते सुदानवे ... ॥ (ऋ. १।९२।३)

‘ यह ऐश्वर्यसंपन्न उषा इन्द्रशक्तिकी खूब वृद्धि कर चुकी है और अंगिरसोंकी सामर्थ्य यथेष्ट बढ़ाकर सुकर्मकर्ताको धन दे

डालती है; ये उषाएं सुदूर देशसे भी सदृश आयोजनाके अनुकूल अच्छे दानी एवं सुन्दर कार्यकर्ता को अन्न पहुँचाती हैं । ’

इस तरह उषा के सूक्तोंमें हमें एक सुरम्य प्राकृतिक दृश्य का और शाश्वतिक मानवी आकांक्षाका संमिश्र वर्णन देखने मिलता है । इन सूक्तोंमें इस बातका परिचय मिलता है कि मानवी मन प्राचीन कालमें मनोहर प्राकृतिक घटना से किस भाँति प्रभावित हुआ करता था और साथही यह भी ज्ञात होता है कि उत्साहवर्धक एवं नयनमनोरम प्राकृतिक दृश्य से प्रभावित होने और उस में रस लेनेकी दशामें भी अनिवार्य सामाजिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका भी ख्याल रखना पड़ता है । वैदिक सुकवियोंके विशाल एवं व्यापक दृष्टिकोणका इससे बढकर और क्या अधिक परिचायक हो सकता है कि प्रतिदिन दृश्यमान एक नैसर्गिक दृश्य का सौन्दर्यप्राप्ती वर्णन करते हुए भी शाश्वतिक मानवी आवश्यकताओं का बारंबार उल्लेख करना वे नहीं भूलते ।

(२)

उषा सूक्तोंमें अतीन्द्रिय ज्ञान

योगी श्री अरविदजी महाराज अपने वेद रहस्य में उषा के स्वरूपका वर्णन अलंकारित हृदयंगम करते हैं, उसे अब यहां देखिये—

“ गोमद् वीरवद् धेहि रत्नम् उषो जश्वावत् ” उस समय कर्मकाण्डपरक व्याख्याकार को इस प्रार्थना में केवल उस सुखमय धन-दौलत की ही याचना दीखती है, जो गौओं, वीर मनुष्यों (या पुत्रों) और घोडों से युक्त हो । दूसरी तरफ यदि ये शब्द प्रतीकरूप हों, तो इसका अभिप्राय होगा— “ हमारे अन्दर आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करो, जो ज्योति से, विजय शील शक्ति से और प्राण-बलसे भरपूर हो । ” इसलिये यह आवश्यक है कि एक बार सभी स्थलों के लिये वेद मंत्रों में आनेवाले, ‘ गौ ’ शब्द का अर्थ क्या है, इस का निर्णय कर लिया जाय । यदि यह सिद्ध हो जाय, कि यह प्रतीकरूप है, तो निरन्तर इस के साथ आनेवाले अश्व (घोडा), वीर (मनुष्य या शूरवीर), अपत्य या प्रजा (औलाद), हिरण्य (सोना), वाज (समृद्धि, या सायण के अनुसार अन्न) । इन दूसरे शब्दों का अर्थ भी अवश्य प्रतीकरूप और इसका सजातीय ही होगा ।

‘ गौ ’ का अलंकार वेद में निरन्तर उषा और सूर्यके साथ सम्बद्ध मिलता है । इसे हम उस कथानक में भी पाते हैं, जिस

में इन्द्र और बृहस्पति ने सरमा कुतिया (देवशुनी) और अङ्गिरस ऋषियों की मदद से पणियों की गुफा में से खोई हुई गौओं को फिर से प्राप्त किया है । उषा का विचार और अङ्गिरसों का कथानक ये मानो वैदिक सम्प्रदायके हृदयस्थानीय हैं और इन्हें करीब करीब वेद के अर्थों के रहस्य की कुञ्जी समझा जा सकता है । इसलिये ये ही दोनों हे, जिन की हमें अवश्य परीक्षा कर लेनी चाहिये, जिन से आगे अपने अनुसंधान के लिये हमें एक दृढ आधार मिल सके ।

अब उषासंबंधी वेद के सूक्तों को बिल्कुल ऊपर ऊपर से जांचने पर भी इतना बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि, उषा की गौएं या सूर्यकी गौएँ ‘ ज्योति ’ का प्रतीक है, इसके सिवाय और कुछ नहीं हो सकतीं । सायण खुद इन मन्त्रों का भाष्य करते हुए विवश होकर कहीं इस शब्द का अर्थ ‘ गाय ’ करता है और कहीं ‘ किरणें, ’ हमेशा की अपनी आदत के अनुसार परस्पर संगति बैठाने की भी कुछ पर्वाह नहीं रखता; कहीं वह यह भी कह जाता है कि, ‘ गौ ’ का अर्थ सत्यवाची ‘ ऋत ’ शब्द की तरह पानी होता है । असल में देखा जाय तो यह स्पष्ट है कि इस शब्दसे दो अर्थ लिये जाने अभिप्रेत हैं,

(१) ' प्रकाश ' इस का असली अर्थ है और (२) ' गाय ' उस का स्थूल रूपक-रूप और शाब्दिक अलंकारमय अर्थ है ।

ऐसे स्थलों में गौओं का अर्थ ' किरणें ' इस में कोई मतभेद नहीं हो सकता, जैसे कि इंद्र के विषय में मधुच्छन्दस् ऋषिके सूक्त (१.७) का तीसरा मन्त्र है- ' इंद्रने दीर्घ दर्शन के लिये सूर्य को बुलोकमें चढाया उसने उसे उसकी किरणों (गौओं) के द्वारा सारे पहाड़ पर पहुँचा दिया- वि गोभिः अद्रिस् पुरयत्* । ' परन्तु इस के साथ ही सूर्य की किरणें ' सूर्य ' देवता की गौएँ हैं, हीलियस (Helios) की वे गौएँ हैं, जिन्हें ओडिसी (Odyssey) में ओडिसस (Odysseus) के साथियों ने वध किया है, जिन्हें हर्मिज (Hermes) के लिये कहे गये होमर के गीतों में हर्मिजने अपने भाई अपोलो (Apollo) के पास से चुराया है । ये वे गौएँ हैं, जिन्हें ' वल ' नामक शत्रूने या पणियोंने छिपा लिया था । जब मधुच्छन्दस् इंद्रको कहता है- ' तूने वलकी उस गुफाको खोल दिया, जिस में गौएँ बंद पड़ी थीं -' तब उस का यही अभिप्राय होता कि, वल गौओं को कैद करनेवाला है, प्रकाश को रोकनेवाला है और वह रोका हुआ प्रकाश ही है, जिसे इंद्र यज्ञ करनेवालों के लिये फिर से ला देता है । खोई हुई या चुराई हुई गौओं को फिर से पालने का वर्णन वेद के मन्त्रों में लगातार आया है और इस का अभिप्राय पर्याप्त स्पष्ट हो जायगा, जब कि हम पणियों और अङ्गिरसोंके कथानककी परीक्षा करना शुरू करेंगे ।

एक बार यदि यह अभिप्राय, यह अर्थ सिद्ध हो जाता है, स्थापित हो जाता है, तो ' गौओं ' के लिये की गई वैदिक प्रार्थनाओं की जो भौतिक व्याख्या की जाती है, वह एकदम हिल जाती है । क्योंकि खोई हुई गौएँ, जिन्हें फिर से पा लेने के लिये ऋषि इंद्र का आह्वान करते हैं, वे यदि द्रविड लोगों-द्वारा चुराई गई भौतिक गौएँ नहीं हैं, किंतु सूर्य की ज्योति की चमकती हुई गौएँ हैं, तो हमारा यह विचार बनाना न्याय-संगत ठहरता है कि, जहां केवल गौओं के लिये ही प्रार्थना है

और साथ में कोई विरोधी निर्देश नहीं है, वहां भी यह अलंकार लगता है, वहां भी गौ भौतिक गाय नहीं है । उदाहरण के लिये ऋ० १,४,१,२ x में इंद्र के विषय में कहा गया है कि, वह पूर्ण रूपों को बनानेवाला है और वह गौओं के दोहने में ऐसा चतुर है कि, उस का सोम-रस से चढनेवाला मद सचमुच गौओंको देनेवाला है, ' गोदा इद् रेवतो मदः ' ।

निरर्थकता और असंगतताकी हद हो जायगी, यदि इस कथनका यह अर्थ समझा जाय कि, इंद्र कोई बड़ा समृद्धि-शाली देवता है और जब वह पिये हुए होता है, उस समय गौओं के दान करने में बड़ा उदार हो जाता है । यह स्पष्ट है कि जैसे पहली ऋचा में गौओं का दोहना एक अलंकार है, वैसे ही दूसरी में गौओं का देना भी अलंकार ही है । और यदि हम वेद के दूसरे सन्दर्भों से यह जान लें कि ' गौ ' प्रकाश का प्रतीक है तो यहां भी हमें अवश्य यही समझना चाहिये कि, इंद्र जब सोम-जनित आनन्द में भरा होता है, तब वह निश्चित ही हमें ज्योतिरूप गौएँ देता है ।

उषा के सूक्तों में भी, गौएँ ज्योति का प्रतीक हैं, यह भाव वैयासा ही स्पष्ट है । उषा को सब जगह ' गोमती ' कहा गया है, जिस का स्पष्ट ही अवश्य यही अभिप्राय होना चाहिये कि, वह ज्योतिर्मय या किरणोंवाली है, क्योंकि यह तो बिल्कुल मूर्खतापूर्ण होगा कि, उषा के साथ एक नियत विशेषण के तौरपर ' गौओं से पूर्ण ' यह विशेषण उस के शाब्दिक अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाय । पर गौओं का प्रतीक वहां पर विशेषण में है, क्योंकि उषा केवल ' गोमती ' ही नहीं है, वह ' गोमती अश्ववाती ' है, वह हमेशा अपने साथ अपनी गौएँ और अपने घोड़े रखती है ।

' वह सारे संसारके लिये ज्योति को रचकर देती है और अन्धकार को, जो गौओं का बाड़ा है, खोल देती है, १.९२. ४ + ' यहां हम देखते हैं कि, बिना किसी भूलचूक की सम्भावना के गौएँ ज्योति का प्रतीक ही हैं । हम इस पर भी ध्यान दे सकते हैं कि, इस सूक्त (१.९२) में अश्विनों को कहा

* इस का अनुवाद हम यह भी कर सकते हैं कि, " उसने अपने वज्र (अद्रि) को उस से निकलती हुई चमकों के साथ चारों ओर भेजा " पर यह अर्थ उतना अच्छा और संगत नहीं लगता । पर यदि हम इसे ही मानें, तो भी ' गोभिः ' का अर्थ ' किरणें ' ही होता है, गाय पशु नहीं ।

x सुरुपकृतमुत्तये सुदुषामिव गोदुहे । जुहूमसि बविधवि ।

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद्रेवतो मदः ॥ (ऋ० १।४।१-२)

+ ज्योतिर्विश्वस्यै भुवनाय कृष्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः ॥ (ऋ० १।९२।४)

गया है कि, वे अपने रथ को उस पथपर हाँक कर नीचे ले जायें, जो ज्योतिर्मय और सुनहरा है—X ‘गोमद् हिरण्यवद्’ इस के अतिरिक्त उषा के संबंध में कहा गया है कि, उस के रथ को अरुण गौएँ खींचती हैं और कहीं यह भी कहा है कि, अरुण घोड़े खींचते हैं ।

‘ वह अरुण गौओं के समूह को अपने रथ में जातती है । युद्ध के गवामरुणानामनीकम् । ऋ. १.१२४.११ ’ यहाँ ‘अरुण किरणों के समूह को ’ यह दूसरा अर्थ भी स्थूल अलंकार के पीछे स्पष्ट ही रखा हुआ है । उषा का वर्णन इस रूप में हुआ है कि, वह गौओं या किरणों की माता है, ‘गवांजनित्री अकृत प्रकेतुम् ऋ. १.१२४.५. गौओं (किरणों) की माता ने दर्शन (Vision) को रचा है ।’ और दूसरे स्थान पर उस के कार्य के विषय में कहा है, ‘अव दर्शन या बोध उदित हो गया है । जहाँ पहले कुछ नहीं (असत्) था ’ । + इस से पुनः यह स्पष्ट है कि, ‘गौएँ’ प्रकाश की ही चमकती हुई किरणें हैं । उस की इस रूप में भी स्तुति की गई है कि, वह चमकती हुई गौओं का नेतृत्व करनेवाली है (नेत्री गवाम् ७.७६.६) और एक दूसरी ऋचा इस पर पूरा ही प्रकाश डाल देती है, जिस में ये दोनों ही विचार इकट्ठे आ गये हैं, ‘गौओं की माता दिनों की नेत्री’ (गवां माता नेत्री अह्वाम् । ऋ. ७.७७.२) अन्तमें मानो इस अलंकार पर से आवरण को कतरई हटा देने के लिये ही, वेद स्वयं हमें कहता है कि, गौएँ प्रकाश की किरणों के लिये एक अलंकार है, “उसकी सुखमय किरणें दिखाई दीं, जैसे छोड़ी हुई गौएँ” प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ऋ. ४.५२.५ हमारे सामने इससे भी अधिक निर्णयात्मक एक दूसरी ऋचा (ऋ. ७.७९.२) है—‘तेरी गौएँ (किरणें) अन्धकार को हटा देती हैं और

ज्योति को फैलाती हैं— सं ते गावस्तम आवर्तयन्ति ज्योति-र्यच्छन्ति ७ ।

लेकिन उषा इन प्रकाशमय गौओं द्वारा केवल खींची ही नहीं जाती, वह इन गौओं को यज्ञ करनेवालों के लिये उपहाररूप में देती है । वह इन्द्र की ही भांति, जब सोम के आनन्द में होती है, तो ज्योति को देती है वसिष्ठ के एक सूक्त (७.७५) में उसका वर्णन इस रूपमें है कि, वह देवों के कार्य में हिस्सा लेती है और उससे वे दृढ स्थान जहाँ गौएँ बन्द पड़ी हैं, टूट कर खुल जाते हैं और गौएँ मनुष्यों को प्राप्त हो जाती हैं । “वह ÷ सब देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है, वह दृढ स्थानों को तोड़ कर खोलती है और प्रकाश मय गौओं को छोड़ देती हैं, गौएँ उषा के प्रति रँभाती हैं” रुजद् दृढहानि ददद् उस्त्रियाणाम्, प्रति गाव उषसं वावशन्त । (ऋ. ७.७५.७) और ठीक अगली ही ऋचामें उसमें प्रार्थना की गई है कि, वह यज्ञकर्ता के लिये आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करे या धारण करावे, जो प्रकाश से (गौओं से), अश्वों से (प्राण-शक्ति से) और बहुत से सुख-भोगों से परिपूर्ण हो— “गोमद् रत्नम् अश्वावत् पुरुभोजः ।” इसलिये जिन गौओं को उषा देती है, वे गौएँ ज्योतिकी ही चमकती हुई सेनायें हैं; जिन्हें देवता और अङ्गिरस ऋषि बल और पणियों के दृढ स्थानों से उद्धार करके लाये हैं । साथ ही गौओं (और अश्वों) की सम्पत्ति जिस के लिये ऋषि लगातार प्रार्थना करते हैं उसी ज्योति की सम्पत्तिके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती; क्योंकि यह कल्पना असंभवसी है कि, जिन गौओं को देने के लिये इस सूक्त की सातवीं ऋचा में उषा को कहा गया है, वे उन गौओं से भिन्न हों जो ८ वीं में मांगी गई हैं, कि पहले हैं—‘तेरी गौएँ (किरणें) अन्धकार को हटा देती हैं और मन्त्र में ‘गौ’ शब्द का अर्थ है ‘प्रकाश’ और अगले में

× अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दक्षा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् । (ऋ. १.१२१.१६)

+ वि नूनमुच्छाद् असति प्रकेतुः । (ऋ. १.१२४.१६)

७ निरसंदेह इसमें मतभेद हो सकता कि वेद में गौ का अर्थ प्रकाश है; उदाहरण के लिये जब यह कहा जाता है कि, ‘गवा,’ ‘गौ’ से, प्रकाश से, वृत्र को मारा गया, तो यहाँ गाय पशुका तो कोई प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न यह है कि, यहाँ द्व्यर्थक प्रयोग है और गौ यहाँ प्रतीकरूप है ।

÷ सत्या सखेभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यज्ञैः ।

रुजद् दृढहानि ददद् उस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ॥ (ऋ. ७.७५.७)

नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ॥ (ऋ. ७.७५.८)

‘ गाय, ’ और यह कि ऋषि मुखसे निकालते ही उसी क्षण यह भूल गया कि किस अर्थ में वह शब्द का प्रयोग कर रहा था ।

कहीं कहीं ऐसा है कि प्रार्थना ज्योतिर्मय आनन्द या ज्योतिर्मय समृद्धि के लिये नहीं है, बल्कि प्रकाशमय प्रेरणा या बल के लिये है, ‘ हे यु की पुत्री उषः ! तू हमारे अन्दर सूर्य की रश्मियों के साथ प्रकाशमय प्रेरणाको ला ’- ‘ गोमती-रिष आवह्वा दुहितर्दिवः, साकं सूर्यस्य रश्मिभिः । ’ ५।७९।८ सायणने ‘ गोमतीः इषः ’ का अर्थ किया है ‘ चमकता हुआ अन्न ’ + । परन्तु यह स्पष्ट ही एक निरर्थक सी बात लगती है कि उषा से कहा जाय कि, वह सूर्य किरणों के साथ किरणों से युक्त अन्न को लाये । यदि ‘ इष् ’ का अर्थ अन्न है, तो हमें इस प्रयोग का अभिप्राय लेना होगा ।

इन नमूने के उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि, प्रकाश की गौओं का यह अलंकार कैसा व्यापक है और कैसे अनिवार्य रूप से यह वेदके लिये एक अध्यात्मपरक अर्थ की ओर निर्देश कर रहा है । एक सन्देह भी बीच में आ उपस्थित होता है । हमने माना कि, यह एक अनिवार्य परिणाम है कि ‘ गौ ’ प्रकाश के लिये प्रयुक्त हुआ है, पर इससे हम क्यों न समझें कि, इसका सीधासाधा मतलब दिन के प्रकाश से है, जैसा कि, वेद की भाषा से निकलता प्रतीत होता है ? वहां किसी प्रतीक की कल्पना क्यों करें, जहां केवल एक अलंकार ही है ? हम उस दूसरे अलंकार की कठिनाई को निमंत्रण क्यों दें, जिस में ‘ गौ ’ का अर्थ तो हो ‘ उषा का प्रकाश ’ और उषाके प्रकाश को ‘ आन्तरिक ज्योति ’ का प्रतीक समझा जाय ? यह क्यों न मान लें कि ऋषि आदिमक ज्योति के लिये नहीं, बल्कि दिन के प्रकाश के लिये प्रार्थना कर रहे थे ?

ऐसा माननेपर अनेक प्रकार के आक्षेप आते हैं और उन में कुछ तो बहुत प्रबल हैं । यदि हम यह मानें कि, वैदिक सूक्तों की रचना भारत में हुई थी और यह उषा भारत की उषा है और यह रात्रि वही यहां की दस या बारह घण्टे की छोटासी रात है, तो हमें यह स्वीकार कर के चलना होगा कि, वैदिक ऋषि जंगली थे, अन्धकार के भय से बड़े भयभीत रहते थे और समझते थे कि, इस में भूत-प्रेत रहते हैं, वे दिन-रात की परम्परा के प्राकृतिक नियम से जिसका अब तक बहुत से सूक्तों में बड़ा सुन्दर चित्र खिंचा मिलता है- भी अनभिज्ञ थे और उनका ऐसा विश्वास था

कि, आकाश में जो सूर्य निकलता था और उषा अपनी बहिन रात्रि के आलिङ्गन से छूटकर प्रकट होती थी, वह सब केवल उन की प्रार्थनाओं के कारण से ही होता था । पर फिर भी वे देवोंके कार्यमें अटल नियमों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि, उषा हमेशा शाश्वत सत्य व दिव्य नियम के मार्ग का अनुसरण करती है ! हमें यह कल्पना करनी होगी कि, ऋषि जब उल्लास में भरकर पुकार उठता है ‘ हम अन्धकार को पार करके दूसरे किनारे पहुंच गये हैं ! ’ तो यह केवल दैनिक सूर्योदय पर होनेवाला सामान्य जागना ही है ।

जिस की ऋषि ऐसी उत्कण्ठा से स्तुति कर रहा है । हमें यह कल्पना करनी होगी कि, वैदिक लोग उषा निकलने पर यज्ञ के लिये बैठ जाते थे और प्रकाश के लिये प्रार्थना करते थे, जब कि वह पहले से ही निकल चुका होता था । और यदि हम इन सब असंभव कल्पनाओं को मान भी लें, तो आगे हमें यह एक स्पष्ट कथन मिलता है कि, नौ या दस महीने बैठ चुकने के उपरान्त ही यह हो सका कि अङ्गिरस ऋषियों को खोया हुआ प्रकाश और खोया हुआ सूर्य फिर से मिल पाया । और जो पितरों के द्वारा ‘ ज्योति ’ के खोजे जाने का कथन लगातार मिलता है, उस का हम क्या अर्थ लगायेंगे ।

“ हमारे पितरों ने छिपी हुई ज्योति को ढूंढकर पा लिया, उनके विचारों में जो सत्य था, उस के द्वारा उन्होंने उषा को जन्म दिया— गूलहं ज्योतिः पितरो अन्वाविन्दन्, सत्य-मन्त्रा अजनयन् उषासम् । (ऋ. ७।७६।४) यदि हम किसी भी साहित्य के किसी कविता संग्रह में इस प्रकार का कोई पद्य पावें, तो तुरन्त हम उसे एक मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक रूप दे देंगे, तो फिर वेद के साथ हम दूसरा ही बर्ताव करें, इस में कोई युक्तियुक्त कारण नहीं दीखता ।

फिर भी यदि हमें वेद के सूक्तों की प्रकृतिवादी व्याख्या ही करनी है और कोई नहीं, तो भी यह बिल्कुल साफ है कि, वैदिक उषा और रात्रि कमसे कम भारत की रात्रि और उषा तो नहीं हो सकतीं । यह केवल उत्तरीय ध्रुव के प्रदेशों में ही हो सकता है कि इन प्रकृति की घटनाओं के संबंध में ऋषियों की जो मनोवृत्ति है और अंगिरसों के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे कुछ समझ में आनेलायक बन सकें । प्राचीन वैदिक आर्य उत्तरीय ध्रुव से

आये, इस कल्पना (वाद) को क्षणभर के लिये मान लेनेपर भी यद्यपि यह बहुत अधिक सम्भव हो सकता है कि, उत्तरीय ध्रुव की स्मृतियाँ वेद के बाह्य अर्थ में आ गई हों, फिर भी इस कल्पना से प्रकृति से खींचे हुए इन प्राचीन अलंकारों के पीछे जो एक आन्तरिक अर्थ है, उस का निराकरण नहीं हो सकता, नहीं इस के मान लेने से यह सिद्ध हो जाता है कि, उषासंबंधी ऋचाओं की इस की अपेक्षा और अधिक सुसंबद्ध और सीधी किसी दूसरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है ।

उदाहरण के लिये हमारे सामने अश्विनो को कहा गया प्रस्कण्य काण्वका सूक्त [१४६] है, जिस में उस ज्योतिर्मय अन्तःप्रेरणा का संकेत है, जो हमें अन्धकार में से पार कर के परले किनारे पर पहुंचा देती है । उस सूक्त का उषा और रात्रिके वैदिक विचार के साथ घनिष्ठ संबंध है । इस में वेद में नियतरूप से आनेवाले बहुत से अलंकारों का संकेत मिलता है; जैसे ऋत के मार्ग का, नदियों को पार करने का, सूर्य के उदय होने का, उषा और अश्विनो में परस्पर संबंध का, सोम-रस के रद्वस्यमय प्रभाव का और उसके सामुद्रिक रस का ।

‘ देखो, आकाशमें उषा खिल रही है, जिस से अधिक उच्च और कोई वस्तु नहीं है, जो आनन्द से भरी हुई है । हे अश्विनो ! तुम्हारी मैं महान् स्तुति करता हूँ । ❀ (१) तुम जिन की सिंधु माता है, जो कार्य को पूर्ण करनेवाले हो, जो मन में से होते हुए उस पार पहुंचकर ऐश्वर्य (रयि) को पा लेते हो, जो दिव्य हो और उस ऐश्वर्य (वसु) को विचार के द्वारा पाते हो । (२) हे समुद्र-यात्रा के देवो जो शब्द को मनोमय करनेवाले हो ! यह तुम्हारे विचारों को भंग करनेवाला है— तुम प्रचण्ड रूप से सोम का पान करो (५) हे अश्विनो ! हमें वह ज्योतिष्मती अन्तःप्रेरणा दो, जो हमें तमस् से निकाल कर पार

पहुंचा दे । (६) हमारे लिये तुम अपनी नावपर बैठकर चलो, जिस से हम मन के विचारों से परे परले पार पहुंच सकें । हे अश्विनो ! तुम अपने रथ को जोतो (७) अपने उस रथ को जो युलोक में इसकी नदियों को पार करने के लिये एक बड़े पतवारवाले जहाज का काम देता है । विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियाँ जोती गई हैं । (८) जलों के स्थान पर युलोक में आनन्दरूपी सोम-शक्तियाँ ही वह ऐश्वर्य [वसु] है । पर अपने उस आवरण को तुम कहाँ रख दोगे, जो तुमने अपने आपको छिपने के लिये बनाया है ? (९) नहीं, सोम का आनन्द लेनेके लिये प्रकाश उत्पन्न हो गया है,— सूर्य ने जो कि, अन्धकारमय था, अपनी जिह्वा को हिरण्य की ओर लपलपाया है (१०) ऋत का मार्ग प्रकट हो गया है, जिससे हम उस पार पहुंचेंगे; यु के बीच का सारा खुला मार्ग दिखलाई पड़ गया है । (११) खोजनेवाला अपने जीवन में अश्विनो के ज्यों ज्यों सोम के आनन्दमें तृप्ति-लाभ करते हैं, त्यों त्यों उनके निरन्तर एक के बाद दूसरे आविर्भाव की ओर प्रगति किये जा रहा है । (१२) उस सूर्य में जिस में ज्योति ही ज्योति है, तुम निवास करते हुए [या चमकते हुए] सोम-पानके द्वारा, वाणीके द्वारा हमारी मानवीयता में सुख का सर्जन करनेवाले के तौरपर आओ । (१३) तुम्हारी कीर्ति और विजयके अनुरूप उषा हमारे पास आती है, जब तुम हमारे सब लोकों में व्याप्त हो जाते हो और रात्रि में से सखों को विजय कर लाते हो । (१४) दोनों मिलकर हे अश्विनो ! सोम-पान करो, दोनों मिलकर हमारे अन्दर शक्ति को प्राप्त कराओ उन विस्तारों के द्वारा जिन की पूर्णता सदा अविच्छिन्न रहती है । (१५)

यह इस सूक्त का सीधा और स्वाभाविक अर्थ है और हमें इस का भाव समझने में कठिनाई नहीं होगी, यदि हम वेद के मूलभूत विचारों और अलंकारों को स्मरण रखेंगे । ‘ रात्रि ’ स्पष्ट ही आन्तरिक अन्धकार के लिये आलंकारिक रूप से कहा

❀ एषो उषा अपूर्व्या ष्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥ या दक्षा सिन्धुमातरा मनोतरा रथीणाम् । धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥ आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णया ॥ ५ ॥ या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥ ६ ॥ आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युजाथामश्विना रथम् ॥ ७ ॥ अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुज इन्दवः ॥ ८ ॥ दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे । खं वरिं क्रुह धित्सथः ॥ ९ ॥ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यख्यजिह्वयासितः ॥ १० ॥ अभूदु पारमेतेव पन्था ऋतस्य साधुया । अदार्शं वि क्षुतिर्दिवः ॥ ११ ॥ तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥ १२ ॥ वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा । मनुष्वच्छेभू आ गतम् ॥ १३ ॥ युवोरुषा अनु श्रियं परिजमनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः ॥ १४ ॥ उषा पिवतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरुतिभिः ॥ १५ ॥ (ऋ. १।४६)

गया है; उषा के आगमन के द्वारा रात्रि में से 'सखों' को जीतकर हस्तगत किया जाता है। यही उस सूर्यका, सत्यके सूर्य का, उदय होना है, जो अन्धकार के बीच में खो गया था—वही खोये हुए सूर्य का हमारा परिचित अलंकार जिस में उसे देवों और ऋषिर्षोने फिर से पाया है। और अब यह अपनी अग्नि की जिह्वा को खार्णिल ज्योति के प्रति—'हिरण्य' के प्रति लपलपाता है।

सुवर्ण उच्चतर ज्योति का स्थूल प्रतीक है, यह सत्य का सोना है और यही वह निधि है, न कि कोई सोनेका सिक्का, जिस के लिये वैदिक ऋषि देवों से प्रार्थना करते हैं। आन्तरिक अन्धकार में से निकाल कर ज्योति में लाने के इस महान् परिवर्तन को अश्वी करते हैं, जो मन की और प्राण-शक्तियों की प्रसन्नतायुक्त ऊर्ध्वगति के देवता हैं, और इसे वे इस प्रकार करते हैं कि, आनन्द का अमृतस्रस मन और शरीर में उण्डेला जाता है और वहां वे इस का पान करते हैं। वे व्यंजक शब्द को मनोमय रूप देते हैं, वे हमें विशुद्ध मन के उस स्वर्ग में ले जाते हैं, जो इस अन्धकार से परे है और वहां वे विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियों को काम में लाते हैं।

पर वे यु के जलों को भी पार कर के उससे भी ऊपर चल जाते हैं, क्योंकि सोम की शक्ति उन्हें सब मानसिक रचनाओं को तोड़ डालने में सहायता देती है और वे इस आवरण को भी उतार फेंकते हैं। वे मन से परे चले जाते हैं और सबसे अन्तिम चीज जो वे प्राप्त करते हैं वह 'नदियों का पार करना' कही गई है, जो कि विशुद्ध मन के बुलोकमें से गुजरने की यात्रा है, वह यात्रा है, जिस से सत्य के मार्ग पर चलकर किनारे पर पहुँचा जाता है और जब तक अन्त में हम उच्चतम पद, परमा परावत्पर नहीं पहुँच जाते, तब तक हम इस महान् मानवीय यात्रा से विश्राम नहीं लेते।

हम देखेंगे कि, न केवल इस सूक्त में बल्कि सब जगह उषा सत्य को लानेवाली के रूप में आती है, खयं वह सत्य की ज्योति से जगमगानेवाली है। वह दिव्य उषा है और यह भौतिक उषा (प्रभात होना) उस की केवल छायामात्र है और प्राकृतिक जगत् में उस का प्रतीक है।

उषा सत्य के पथ की दृढ अनुगामिनी है और चूँकि इस बात का उसे ज्ञान या बोध रहता है, इसलिये वह असीमता

को, बृहत् को, जिसकी कि वह ज्योति है, सीमित नहीं करती। यही इस मन्त्र का असली अभिप्राय है, यह बात ५ मण्डल की एक ऋचा (ऋ. ५।८०।१) से निर्विवाद स्पष्ट रूपसे सिद्ध हो जाती है और इस में भूलचूक की कोई संभावना नहीं रह जाती। इस में उषा के लिये कहा है—**द्युतदयामानं बृहतीम् ऋतेन ऋतावरीं, स्वरावहन्तीम्**। 'वह प्रकाशमय गतिवाली है, ऋतसे महान् है, ऋत में सर्वोच्च (या ऋत से युक्त) है, अपने साथ स्वःको लाती है।' यहाँ हम बृहत् का विचार, सत्य का विचार, खलोक के सौर प्रकाश का विचार पाते हैं; और निश्चय ही वे सब विचार इस प्रकार घनिष्ठता और दृढता से एकमात्र भौतिक उषा के साथ सम्बद्ध नहीं रह सकते। इसके साथ हम ७।७५।१ के वर्णन की भी तुलना कर सकते हैं—**द्युषा भावो दिविजा ऋतेन, आविष्कृण्वाना महिमानमागात्**। "यौमें प्रकट हुई उषा सत्यके द्वारा वस्तुओं को खोल देती है, वह महिमा को व्यक्त करती हुई आती है।" यहाँ पुनः हम देखते हैं कि, उषा सत्य की शक्ति के द्वारा सब वस्तुओं को प्रकट करती है और इसका परिणाम यह बताया गया है कि, एक प्रकार की महत्ता का आविर्भाव हो जाता है।

अन्तमें इसी विचार को हम आगे भी वर्णित किया गया पाते हैं, बल्कि यहाँ सत्यके लिए 'ऋत' के बजाय सीधा 'सत्य' शब्द ही है, जोकि 'ऋतम्' की तरह दूसरा अर्थ किये जा सकने की सम्भावनामें डालनेवाला भी नहीं है—**सत्या सत्योर्मिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिः**। (ऋ. ७।७५।७) 'उषा अपनी सत्ता में सब देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है।' वामदेव ने अपने एक सूक्त ४।५१ में उषा के इस 'सत्य' पर बहुत बल दिया है; क्योंकि वहाँ वह उषाओं के बारे में केवल इतना ही नहीं कहता कि, 'तुम सत्य के द्वारा जोते हुए अश्वों के साथ जल्दी से लोकों को चारों ओर से घेर लेती हो,' **× ऋतयुग्मिः अश्वः** (तुलना करो ऋ. २।६५।२ +) परन्तु वह उनके लिए कहता है—**भद्रा ऋतजातसत्याः** (ऋ. ४।५१।७) 'वे सुखमय हैं और सत्यसे उत्पन्न हुई सच्ची हैं।' और एक दूसरी ऋचा में वह उनका वर्णन इस रूप में करता है कि, 'वे देवी हैं जो कि ऋतके स्थानमें प्रबुद्ध होती हैं। ०'

× यूयं हि देवीर्ऋतयुग्मिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सयः। (ऋ. ४।५१।५)

+ वि तद् ययुरण्युग्मिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः। (ऋ. ६।६५।२)

० ऋतस्य देवीः सदसो बुधानाः। (ऋ. ४।५१-८)

३ दै. [उषा]

‘ भद्रा ’ और ‘ ऋत ’ का यह निकट सम्बन्ध अभिको कहे गये मधुच्छन्दस् के सूक्त में इसी प्रकार का जो विचारों का परस्पर सम्बन्ध है, उस का हमें स्मरण करा देता है । वेद की अपनी आध्यात्मिक व्याख्या में हम प्रत्येक मोड़ पर इस प्राचीन विचार को पाते हैं कि ‘ सत्य ’ आनन्द को प्राप्त करने का मार्ग है । तो उषाको, सत्य की ज्योति से जगमगाती उषा को, भी अवश्य सुख और कल्याण को लानेवाला होना चाहिए । उषा आनन्द को लानेवाली है, यह विचार वेद में हम लगातार पाते हैं और वशिष्ठने (ऋ. ७।८।१३) में इसे बिल्कुल स्पष्ट रूप में कह दिया है— या वहसि पुरुषार्हं रत्नं न दाशुषे मयः । “ तू जो देनेवाले को कल्याण-सुख प्राप्त कराती है, जो कि अनेक रूप है और स्पृहणीय आनन्द रूप है । ”

वेद का एक सामान्य शब्द ‘ सूनृता ’ है जिसका अर्थ सायण ने ‘ मधुर और सत्य वाणी ’ किया है, परन्तु प्रतीत होता है कि, इसका प्रायः और भी अधिक व्यापक अभिप्राय ‘ सुखमय सत्य ’ है । उषा का कहीं कहीं यह कहा गया है कि, वह ‘ ऋतावरी ’ है, सत्य से परिपूर्ण है और कहीं उसे ‘ सूनृतावती ’ कहा गया है । वह आती है सच्चे और सुखमय शब्दों को उच्चरित करती हुई “ सूनृता ईरयन्ती । ” जैसे उस का वह वर्णन किया गया है कि, वह जगमगाती हुई गौओं की नेत्री है और दिनों की नेत्री है, वैसे ही उसे सुखमय सत्यों की प्रकाशवती नेत्री कहा गया है । भास्वती नेत्री सूनृतानाम् । (ऋ० १।९२।७) और वैदिक ऋषियों के मनमें ज्योति, किरणों या गौओं के विचार और सत्य के विचार में जो परस्पर गहरा सम्बन्ध है, वह एक दूसरी ऋचा (ऋ. १।९२।१४) में और भी अधिक स्पष्ट तथा असन्दिग्ध रूप से पाया जाता है— गोमति अश्वावती विभावरी... .. सूनृतावती । “ हे उषा, जो तू अपनी जगमगाती हुई गौओं के साथ है, अपने अश्वों के साथ है, अत्यधिक प्रकाशमान है और सुखमय सत्यों से परिपूर्ण है । ” इसी जैसा पर तो भी इससे अधिक स्पष्ट वाक्यांश (ऋ. १।४८।२) में है, जो इन विशेषणों के इस प्रकार रखे जानेके अभिप्राय को सूचित कर देता है— गोमतीरश्वावतीर्विश्वसुविदः । “ उषाएं जो अपनी ज्योतियों (गौओं) के साथ हैं, अपनी त्वरितगतियों (अश्वों) के साथ हैं और जो सब वस्तुओं को ठीक प्रकार से जानती हैं । ”

वैदिक उषा के आध्यात्मिक स्वरूपका निर्देश करनेवाले जो उदाहरण ऋग्वेद में पाये जाते हैं, वे किसी भी प्रकार वहाँ

तक परिमित नहीं हैं । उषा को निरन्तर इस रूप में प्रदर्शित किया गया है कि, वह दर्शन, बोध, ठीक दिशामें गति को जागृत करती है । गोतम राहूगण कहता है, “ वह देवी सब भुवनोंको सामने होकर देखती है, वह दर्शनरूपी आँख अपनी पूर्ण विस्तीर्णता में चमकती हैं, ठीक दिशा में चलने के लिए सम्पूर्ण जीवन को जगाती हुई वह सब विचारशील लोगों के लिए वाणी को प्रकट करती है । ” + विश्वस्य वाचमविदन् मनायोः । (ऋ० १।९२।९)

वहाँ हम उषा को इस रूप में पाते हैं कि, वह जीवन और मनको बन्धन मुक्त करके अधिकसे अधिक पूर्ण विस्तार में पहुंचा देती है और यदि हम इस उपर्युक्त निर्देश को वहीं तक सीमित रखें कि, यह केवल भौतिक उषा के उदय होने पर पार्थिव जीवन के पुनः जाग उठने का ही वर्णन है, तो हम ऋषि के चुने हुए शब्दों और वाक्यांशों में जो बल है, उस सारे की उपेक्षा ही कर रहे होंगे और यदि यह हो कि, उषा से लाये जानेवाले दर्शन के लिए यहाँ जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, ‘ चक्षुः ’ उसे केवल भौतिक दर्शनशक्ति को ही सूचित कर सकने योग्य माना जाय, तो दूसरे सन्दर्भोंमें हम इसके स्थान पर ‘ केतु ’ शब्द पाते हैं, जिसका अर्थ है बोध, मानसिक चेतना में होनेवाला बोधयुक्त दर्शन, ज्ञान की एक शक्ति । उषा है ‘ प्रचेताः ’ इस बोधयुक्त ज्ञान से पूर्ण । उषाने जो कि ज्योतियों की माता है, मन के इस बोधयुक्त ज्ञान को रचा है, गवां जनित्री अकृत प्र केतुम् (ऋ. १।१२४।५) । वह स्वयं ही दर्शनरूप है— “ अब बोधमय दर्शनकी उषा खिल उठी है, जहाँ कि पहले कुछ नहीं (असत्) था, ” वि नूनमुच्छादसति प्र केतुः (ऋ. १।१२४-११) । वह अपनी बोधयुक्त शक्ति के द्वारा सुखमय सत्योंवाली है, चिकित्स्वत् सूनृतावरी । (ऋ. ४।५२।४)

यह बोध, यह दर्शन, हमें बताया गया है, अमरत्व का है— अमृतस्य केतुः (ऋ. ३।६१।३) । दूसरे शब्दोंमें यह उस सत्य और सुख की ज्योति है, जिनसे उच्चतर या अमर चेतना का निर्माण होता है । रात्रि वेद में हमारी उस अन्धकारमय चेतना का प्रतीक है जिस के ज्ञान में अज्ञान भरा पडा है और जिसके संकल्प तथा क्रिया में स्खलन पर स्खलन होते रहते हैं और इसलिए जिसमें सब प्रकार की बुराई, पाप तथा कष्ट रहते हैं । प्रकाश है ज्योतिर्मयी उच्चतर चेतनाका आगमन जो कि सत्य और सुख को प्राप्त कराता है । हम निरन्तर ‘ दुरितम् ’ और ‘ सुवितम् ’ इन दो शब्दों का विरोध पाते हैं । ‘ दुरितम् ’ का

+ विश्व नि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः ॥ (ऋ० १।९२।९)

शाब्दिक अर्थ है स्खलन, गलत रास्ते पर जाना और औपचारिक रूप से यह सब प्रकार की गलती और बुराई, सब पाप, भूल और विपत्तियों का सूचक है। 'सुवितम्' का शाब्दिक अर्थ है, ठीक और भले रास्ते पर जाना और यह सब प्रकारकी अच्छाई तथा सुख को प्रकट करता है और विशेषकर इसका अर्थ वह सुख-समृद्धि है, जो कि सही मार्ग पर चलनेसे मिलती है। सो वसिष्ठ इस देवी उषाके विषयमें (ऋ. ७।७८।२) में इस प्रकार कहता है— " दिव्य उषा अपनी ज्योति से सब अन्धकारों और बुराइयों को हटाती हुई आ रही है " (विश्वा तमांसि दुरिता) और बहुतसे मन्त्रों में इस देवीका वर्णन इस रूपमें किया गया है कि, यह मनुष्योंको जगा रही है, प्रेरित कर रही है, ठीक मार्ग की ओर, सुख की ओर (सुविताय) ।

इसलिये वह केवल सुखमय सत्त्वों की ही नहीं, किंतु हमारी आध्यात्मिक समृद्धि और उल्लास की भी नेत्री है, उस आनन्दको लानेवाली है, जिस तक मनुष्य सत्य के द्वारा पहुँचता है या जो सत्यके द्वारा मनुष्य के पास लाया जाता है, (उषा नेत्री राधसः सन्तानाम् । (ऋ. ७।७६।७) यह समृद्धि जिस के लिए ऋषि प्रार्थना करते हैं, भौतिक दौलतों के अलङ्कार से वर्णन की गई है; यह ' गोमद् अश्ववद् वीरवद् ' है, या वह ' गोमद् अश्ववद् रथवच्च राधः ' है। गौ (गाय), अश्व (घोड़ा), प्रजा या असत्य (सन्तान), नृ या वीर (मनुष्य या शूरवीर), हिरण्य (सोना), रथ (सवारियाँ रथ) श्रवः (भोजन या कीर्ति)— याज्ञिक सम्प्रदायवालों की व्याख्या के अनुसार ये ही उस सम्पत्ति के अंग हैं, जिस की वैदिक ऋषि कामना करते थे। यह लगेगा कि, इससे अधिक ठोस दुनियावादी पार्थिव और भौतिक दौलत कोई और नहीं हो सकती थी, निःसन्देह ये ही वे ऐश्वर्य हैं, जिन के लिए कोई बेहद भूखी, पार्थिव वस्तुओं की लोभी, कामुक, जंगली लोगोंकी जाति अपने आदि देवोंसे याचना करती। परन्तु हम देख चुके हैं कि ' हिरण्य ' वेदमें भौतिक सोने की अपेक्षा दूसरे ही अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। हम देख आए हैं कि ' गौं ' निरन्तर उषा के साथ सम्बद्ध होकर बार बार आती हैं, कि यह प्रकाश के उदय होने

का आलङ्कारिक वर्णन होता है और हम यह भी देख चुके हैं कि, इस प्रकाश का सम्बन्ध मानसिक दर्शन के साथ है और उस सत्य के साथ है जो कि सुख लाता है। और अश्व, घोड़ा, आध्यात्मिक भावों के निर्देशक इन मूर्त अलंकारों में सर्वत्र गौ के प्रतीकात्मक अलंकार के साथ जुड़ा हुआ आता है; उषा ' गोमती अश्ववती ' है। वसिष्ठ ऋषिकी एक ऋचा (ऋ० ७।७७।३) है, जिसमें वैदिक मंत्र का प्रतीकात्मक अभिप्राय बड़ी स्पष्टता और बड़े बल के साथ प्रकट होता है—

देवानां चक्षुः सुमगा वहन्ती, श्वेतं नयन्ती
सुदशीकमश्वम् । उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता,
चित्रमघा विश्वमनु प्रभूता ॥

' देवों की दर्शनरूपी आँख को लाती हुई, पूर्ण दृष्टिवाले सफेद घोड़ेका नेतृत्व करती हुई सुखमय उषा रश्मियों द्वारा व्यक्त होकर दिखाई दे रही है, यह अपने चित्रविचित्र ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण है, अपने जन्मको सब वस्तुओंमें अभिव्यक्त कर रही है। ' यह पर्याप्त स्पष्ट है कि ' सफेद घोड़ा ' पूर्ण-तया प्रतीकरूप ही है × (सफेद घोड़ा यह मुहावरा अभिदेवता के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो कि अग्नि + ' द्रष्टा का संकल्प ' है कविकृतु है, दिव्य संकल्पकी अपने कार्यों को करने की पूर्ण दृष्टि-शक्ति है। (ऋ. ५।१।४) और ये ' चित्र-विचित्र ऐश्वर्य ' भी आलंकारिक ही हैं, जिन्हें कि वह अपने साथ लाती है, निश्चय ही सबका अभिप्राय भौतिक धन-दौलत से नहीं है।

उषाका वर्णन किया गया है कि यह ' गोमती अश्ववती वीरवती ' है और क्योंकि उसके साथ लगाये गये ' गोमती ' और ' अश्ववती ' ये दो विशेषण प्रतीकरूप हैं और इन का अर्थ यह नहीं है कि, यह ' भौतिक गौओं और भौतिक घोड़ोंवाली ' है, बल्कि यह अर्थ है कि यह ज्ञान की ज्योति से जगमगानेवाली और शक्ति की तीव्रतासे युक्त है, तो ' वीरवती ' का अर्थ भी यह नहीं हो सकता कि यह ' मनुष्योंवाली ' है या शूर वीरों, नौकरचाकरों या पुत्रों से युक्त ' है, बल्कि इस की अपेक्षा इस का अर्थ यह होगा कि, यह विनयशील शक्तियों से संयुक्त है अथवा यह शब्द बिल्कुल इसी अर्थ में नहीं, तो

* उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी । (ऋ० ७।७८।२)

× घोड़ा प्रतीकरूप ही है, यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। दीर्घतमस् के सूक्तों में जो कि यज्ञ के घोड़े के सम्बन्ध में हैं, अश्वद-धिकावन् विषयक भिन्न भिन्न ऋषियों के सूक्तों में और फिर बृहदारण्यक उपनिषद् के आरम्भ में जहाँ यह जटिल आलङ्कारिक वर्णन है, जिसका आरम्भ ' उषा घोड़े का सिर है, ' (उषा वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरः) इस वाक्य से होता है।

+ अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षुषीव सूर्ये सं चरन्ति ।

यदीं भुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्ने अहाम् ॥ (ऋ० ५।१।४)

*

कमसे कम किसी ऐसे ही और प्रतीकरूप अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह बात (ऋ० १।११३।१८) में बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। ' या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ... ता अश्वदा अश्ववत् सोम सुत्वा । ' इस का यह अर्थ है कि, ' ये उषाएं जिन में कि भौतिक गायें हैं और सब मनुष्य या सब नौकर-चाकर हैं, सोम अर्पित कर के मनुष्य उन का भौतिक घोड़ों को देनेवाली के रूप में उपभोग करता है । ' उषा देवी यहाँ आन्तरिक उषा है, जो कि मनुष्य के लिए उस की बृहत्तम सत्ता की विविध पूर्णताओं को, शक्ति को, चेतना को और प्रसन्नता को लाती है; यह अपनी ज्योतियों से जगमग है, सब संभव शक्तियों और बलों से युक्त है, यह मनुष्य को जीवन-शक्तिका पूर्ण बल प्रदान करती है, जिस से कि यह उस बृहत्तर सत्ता के असीम आनन्द का स्वाद ले सके।

अब हम अधिक देर तक ' गोमद् अश्ववद् वीरवद् राधः ' को भौतिक अर्थों में नहीं ले सकते; वेदकी भाषा ही हमें इस से बिलकुल भिन्न तथ्य का निर्देश कर रही है। इस कारण देवोंद्वारा की गई इस सम्पत्ति के अन्य अंगों को भी हमें इसी की तरह अवश्यमेव आध्यात्मिक अर्थों में ही लेना चाहिए; सन्तान, सुवर्ण, रथ ये प्रतीकरूप ही हैं; ' श्रवः ' कीर्ति या भोजन नहीं है, बल्कि इस में आध्यात्मिक अर्थ अन्तर्हित है

और इस का अभिप्राय है, वह उच्चतर दिव्य ज्ञान जो कि इंद्रियों या बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि जो सत्य की दिव्य श्रुति है और सत्य के दिव्य दर्शन से प्राप्त होता है; ' रथि दीर्घश्रुत्तमम् ' रथि ' श्रवस्युम् ' सत्ता की यह सम्पन्न अवस्था है, यह आध्यात्मिक समृद्धि से युक्त वैभव है, जो कि दिव्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है (श्रवस्यु) और जिस में उस दिव्य शब्द के कम्पनों को सुननेके लिये सुधीर्घ, दूर तक फैली श्रवणशक्ति है, दिव्य शब्द हमारे पास असीम के प्रदेशों (दिशः) से आता है। इस प्रकार उषाका यह उज्ज्वल अलंकार हमें वेदसम्बन्धी उन सब भौतिक, कर्म-काण्डिक, अज्ञानमूलक भ्रांतियों से मुक्त कर देता है, जिनमें कि यदि हम फंसे रहते तो वे हमें असंगति और अस्पष्टता की रात्रि में ठोकड़ों पर ठोकड़ें खिलाती हुई एक से दूसरे अन्धकूपमें ही गिराती रहतीं, वह हमारे लिए बन्द द्वारों को खोल देती है और वैदिक ज्ञान हृदय के अन्दर हमारा प्रवेश करा देती है।

उषा सूक्तों का यह आध्यात्मिक रहस्य श्री योगी अरविन्द जी की खोजसे प्राप्त हुआ है जिसे पाठकोंको मननपूर्वक अपनाना योग्य है।

(३)

उषादेवताका वर्णन

उषा देवताका वर्णन कई विभिन्न रीतियोंसे भी देखने योग्य है। उषा के सूक्तों में काव्य का आलंकारिक वर्णन तो बड़ा ही मनोरंजक और हृदयंगम है हि परंतु इसकी अन्यभी कुछ विशेषताएँ हैं जो देखने योग्य हैं।

सूर्योदयके पूर्व उषाएँ

(वसिष्ठो मैत्रावरुणः)

तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।

यतः परि जार इव आचरन्ती उषः दृक्षे न पुनर्यतीव ॥

(१४९) ऋ. ७।७६।३

' (सूर्यस्य प्राचीनं या उदिता) सूर्यके पूर्व जो उदय हुए थे, (तानि अहानि बहुलानि इत् आसन्) ऐसे वे उषःकाल निःसन्देह बहुत ही थे । '

इस मंत्र में ' सूर्योदयके पूर्व अनेक उषःकाल अथवा (अहानि) अनेक दिन व्यतीत हुए ' ऐसा वर्णन किया है। क्या

कभी हमें इसका अनुभव है ? नहीं, हमें अपने देशमें तो एक उषःकाल जानेके बादही उसी दिन प्रत्यक्ष सूर्य उगता हुआ दिखाई देता है। सूर्य उदयके पूर्व बहुत दिन व्यतीत हुए और बहुत दिन व्यतीत होनेतक सूर्य का उदय नहीं हुआ, ऐसा इस देशमें कभी नहीं होता है। ये बहुत दिन उषःकालके ही हैं, जैसी उषा लाल वर्णके प्रकाशसे युक्त होती है, वैसेही ये दिन हैं। सूर्यप्रकाशवाले ये दिन नहीं हैं। क्यों कि इस सूक्तकी देवता उषा है और इस मंत्रमें भी ' उषः ' संबोधन करके ही वर्णन है, देखिये इसी मंत्रका उत्तरभाग—

' हे उषा देवी ! तूं जारके समान आचरण करनेवाली दीखती है, संन्यासिनी यती स्त्रीके समान तूं दीखती नहीं । ' ऐसा उषाको संबोधन करके कहा है। यार की प्रतीक्षा करती हुई जैसी कोई स्त्री रहती है, वह अपने प्रियकी प्रतीक्षा करती रहती है, वह पति न आया तो भी आतुरताके साथ

वह स्त्री प्रतीक्षा करतीही रहती है, परंतु अपने प्रियपर क्रोध करके संन्यासिनी बन कर उसको नहीं छोड़ती, तद्वत् यह उषा है।

यहां सूर्य उदय होनेतक अनेक दिन उषःकाल ही उषः-काल रहनेका स्पष्ट वर्णन है। हमारे देशमें घण्टाभर तक उषः-काल रहता है, पश्चात् सूर्यका उदय होता है। अतः यह वर्णन यहां के उषःकालपर घटता ही नहीं। यहां तो सूर्योदयके पूर्व बहुत उषःकाल आते नहीं, प्रतिदिन उषा सूर्य की प्रतीक्षा करती रहती है, पर सूर्य देव उसके पास नहीं आते, ऐसा यहां नहीं होता, अतः उषा अपने प्रियकी प्रतीक्षा बहुत दिन करती रही, पर सूर्य देव नहीं आये तथापि वह उषा यती (संन्यासिनी) बनी नहीं, अपने प्रिय पर पूर्ववत् प्रेमही करती रही, यह वर्णन यहांके उषःकालका नहीं हो सकता।

जिस देशमें सूर्योदयके पूर्व अनेक दिन उषःकाल रहता होगा, वहीं पर ऐसी कल्पना कवि कर सकता है। और वहीं यह कल्पना प्रत्यक्ष सृष्टीमें दीख सकती है। जहां घण्टाभर ही उषःकाल रहता होगा, वहां सूर्योदय के पूर्व बहुत दिन उषः-काल रहा, ऐसा वर्णन नहीं हो सकता।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है, अनेक दिन व्यतीत होनेके पश्चात् वहां सूर्यदेवका दर्शन होता है। यहां दिनका अर्थ पृथ्वीका अपने इर्दगिर्द भ्रमणका काल है। आकाशमें जो तारका मण्डल दीखता है वह भ्रमण करतासा दीखता है। उसके २४ घण्टोंके परिभ्रमणसे दिनकी कल्पना होती है। ऐसे बहुत दिन व्यतीत होनेतक यह उषा सूर्यकी प्रतीक्षा करती रहती है, और पश्चात् सूर्य देव आते हैं और उषा सूर्यदेवके साथ संलग्न होती है।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है। इस वर्णनसे कितने दिन लेने योग्य हैं, इसका भी यहां विचार करना चाहिये। यदि ३० दिन व्यतीत हो जायें तो एक महीना व्यतीत हुआ ऐसा कहेंगे, इसलिये जिस कारण यहां ' अहानि ' अर्थात् ' दिन ' ही व्यतीत हुए ऐसा कहा है, उस कारण हम कह सकते हैं कि, तीस दिनोंसे कम ही ये उषःकाल होंगे। यदि आठ दस दिनतक ही यह उषःकाल रहता होगा, तो उसके लिये ' बहुत दिन ' ऐसा प्रयोग कोई नहीं करेगा, क्योंकि सात संख्यातक संख्या ' बहुत दिन ' कहने योग्य नहीं होती। इसलिये ३० दिन भी नहीं और दस दिन तक भी नहीं अर्थात् बीससे कुछ अधिक दिन ऐसा यह उषाका अवधि ' बहुलानि अहानि ' पदोंसे लेना योग्य है।

संस्कृत व्याकरणके अनुसार ' बहुलानि अहानि ' (बहुत दिन) का अर्थ कमसे कम तीन दिन और अधिकसे अधिक जितने भी होंगे उतने दिन बोधित होंगे। अतः व्याकरण

हमारी इतनीही यहां सहायता करता है और कहता है कि इन पदोंसे कमसे कम तीन दिनोंका अवधि निर्धारित हो सकता है, ज्यादा कितने दिन ले सकते हैं यह व्याकरण नहीं कह सकता। पर केवल तीन ही दिनोंके लिये ' बहुतही दिन ' ऐसा कोई भी नहीं कहता। इसलिये यह अवधि निश्चयसे तीन दिनोंसे अधिक है इसमें संदेह नहीं, अनेक उषाओंका वर्णन वेदमंत्रोंमें भी है, अतः उषाका बहुवचनमें प्रयोग अनेक वेदमंत्रोंमें दिखाई देता है—

स्पर्हा वसूनि तमसाऽपगूळह

आविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः॥ (६४; ऋ १।२३।६)

' स्पृहणीय पदार्थ जो गूढ अन्धकारसे ढंके थे, उन सबको ये अनेक (विभातीः उषसः आविष्कृण्वन्ति) प्रकाशनेवाली उषायें प्रकट कर रही हैं। ' अर्थात् ये अनेक उषायें आकर सूर्य आनेके पूर्वही विश्वान्तर्गत नाना पदार्थोंको हमारे सामने प्रकट करती हैं। इसी सूक्तका अगला मंत्र इस मंत्रका आशय अधिक स्पष्ट कर रहा है—

परा च यन्ति पुनरा च यन्ति

भद्रा नाम वहमाना उषासः। (७०; ऋ १।१२२।१२)

' ये (उषासः) उषायें (भद्रा नाम वहमानाः) कल्याणकारक यशका धारण करती हुई (परा यन्ति) जाती हैं और (पुनः च आयन्ति) फिर वापस आती हैं। ' उषःकाल चला गयासा दीखता है और उसी समय फिर नया शुरू होने लगता है। वह वर्णन बड़ा महत्त्व रखनेवाला वर्णन है। हमारे देशमें एक बार उषःकाल गया तो दिन आता है, दिनके बाद सायंकाल और उसके बाद रात्री व्यतीत होती है, इसतरह २४ घण्टे व्यतीत होते हैं, तत्पश्चात् दूसरी उषा आती है। अतः यह वर्णन यहांका नहीं है जिस भूभाग पर एकवार उषा गयी तो उसी समय पुनः दूसरी उषःकाल आनेकी संभावना हो, वहीं यह वर्णन प्रत्यक्ष दीख सकता है, और वहीं सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना भी संभव हो सकता है। ऐसी कई उषायें लगातार आती हैं और पश्चात् सूर्य देव उगते हैं, वहीं कवि कह सकता है कि, ' एक उषा गयी और फिरसे दूसरी उषा पुनः आगयी। ' इसी तरह और भी वर्णन देखिये—

क स्विदासां कतमा पुराणी ? (९६; ऋ. ४।५।१६)

' इस सब उषाओंमें कौनसी भला उषा पुरानी है ? ' यह प्रश्न तब हो सकता है कि, जब अनेक उषःकाल साथसाथ आते हों। हमारे भारतवर्षमें तो एकही उषःकाल रहता है इस लिये इसमें पुराना और नया ऐसा भेद नहीं हो सकता, परंतु

कमसे कम किसी ऐसे ही और प्रतीकरूप अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह बात (ऋ० १।११३।१८) में बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। ' या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ... ता अश्वदा अश्ववत् सोम सुखा । ' इस का यह अर्थ है कि, ' ये उषाएं जिन में कि भौतिक गायें हैं और सब मनुष्य या सब नौकर-चाकर हैं, सोम अर्पित कर के मनुष्य उन का भौतिक घोड़ों को देनेवाली के रूप में उपभोग करता है । ' उषा देवी यहाँ आन्तरिक उषा है, जो कि मनुष्य के लिए उस की बृहत्तम सत्ता की विविध पूर्णताओं को, शक्ति को, चेतना को और प्रसन्नता को लाती है; यह अपनी ज्योतियों से जगमग है, सब संभव शक्तियों और बलों से युक्त है, यह मनुष्य को जीवन-शक्ति का पूर्ण बल प्रदान करती है, जिस से कि यह उस बृहत्तर सत्ता के असीम आनन्द का स्वाद ले सके।

अब हम अधिक देर तक ' गोमद् अश्ववद् वीरवद् राघः ' को भौतिक अर्थों में नहीं ले सकते; वेदकी भाषा ही हमें इस से बिल्कुल भिन्न तथ्य का निर्देश कर रही है। इस कारण देवोंद्वारा दी गई इस सम्पत्ति के अन्य अंगों को भी हमें इसी की तरह अवश्यमेव आध्यात्मिक अर्थों में ही लेना चाहिए; सन्तान, सुवर्ण, रथ ये प्रतीकरूप ही हैं; ' श्रवः ' कीर्ति या भोजन नहीं है, बल्कि इस में आध्यात्मिक अर्थ अन्तर्हित है

और इस का अभिप्राय है, वह उच्चतर दिव्य ज्ञान जो कि इंद्रियों या बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि जो सत्य की दिव्य श्रुति है और सत्य के दिव्य दर्शन से प्राप्त होता है; ' रथि दीर्घश्रुत्तमम् ' रथि ' श्रवस्युम् ' सत्ता की यह सम्पन्न अवस्था है, यह आध्यात्मिक समृद्धि से युक्त वैभव है, जो कि दिव्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है (श्रवस्यु) और जिस में उस दिव्य शब्द के कम्पनों को सुननेके लिये सुदीर्घ, दूर तक फैली श्रवणशक्ति है, दिव्य शब्द हमारे पास असीम के प्रदेशों (दिशः) से आता है। इस प्रकार उषाका यह उज्ज्वल अलंकार हमें वेदसम्बन्धी उन सब भौतिक, कर्म-काण्डिक, अज्ञानमूलक भ्रांतियों से मुक्त कर देता है, जिनमें कि यदि हम फंसे रहते तो वे हमें असंगति और अस्पष्टता की रात्रि में ठोकड़ों पर ठोकड़ें खिलाती हुई एक से दूसरे अन्धकूपमें ही गिराती रहतीं, वह हमारे लिए बन्द द्वारों को खोल देती है और वैदिक ज्ञान हृदय के अन्दर हमारा प्रवेश करा देती है।

उषा सूक्तों का यह आध्यात्मिक रहस्य श्री योगी अरविन्द जी की खोजसे प्राप्त हुआ है जिसे पाठकोंको मननपूर्वक अपनाना योग्य है।

(३)

उषादेवताका वर्णन

उषा देवताका वर्णन कई विभिन्न रीतियोंसे भी देखने योग्य है। उषा के सूक्तों में काव्य का आलंकारिक वर्णन तो बड़ा ही मनोरंजक और हृदयंगम है हि परंतु इसकी अन्यभी कुछ विशेषताएं हैं जो देखने योग्य हैं।

सूर्योदयके पूर्व उषाएँ

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः)

तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।

यतः परि जार इव आचरन्ती उषः दृक्षे न पुनर्यतीव ॥

(१४९) ऋ. ७।७६।३

' (सूर्यस्य प्राचीनं या उदिता) सूर्यके पूर्व जो उदय हुए थे, (तानि अहानि बहुलानि इत् आसन्) ऐसे वे उषःकाल निःसन्देह बहुत ही थे । '

इस मंत्र में ' सूर्योदयके पूर्व अनेक उषःकाल अथवा (अहानि) अनेक दिन व्यतीत हुए ' ऐसा वर्णन किया है। क्या

कभी हमें इसका अनुभव है ? नहीं, हमें अपने देशमें तो एक उषःकाल जानेके बादही उसी दिन प्रत्यक्ष सूर्य उगता हुआ दिखाई देता है। सूर्य उदयके पूर्व बहुत दिन व्यतीत हुए और बहुत दिन व्यतीत होनेतक सूर्य का उदय नहीं हुआ, ऐसा इस देशमें कभी नहीं होता है। ये बहुत दिन उषःकालके ही हैं, जैसी उषा लाल वर्णके प्रकाशसे युक्त होती है, वैसीही ये दिन हैं। सूर्यप्रकाशवाले ये दिन नहीं हैं। क्यों कि इस सूक्तकी देवता उषा है और इस मंत्रमें भी ' उषः ' संबोधन करके ही वर्णन है, देखिये इसी मंत्रका उत्तरभाग—

' हे उषा देवी ! तूं जारके समान आचरण करनेवाली दीखती है, संन्यासिनी यती स्त्रीके समान तूं दीखती नहीं । ' ऐसा उषाको संबोधन करके कहा है। यार की प्रतीक्षा करती हुई जैसी कोई स्त्री रहती है, वह अपने प्रियकी प्रतीक्षा करती रहती है, वह पति न आया तो भी आतुरताके साथ

वह ज्ञी प्रतीक्षा करतीही रहती है, परंतु अपने प्रियपर क्रोध करके संन्यासिनी बन कर उसको नहीं छोड़ती, तद्वत् यह उषा है।

यहां सूर्य उदय होनेतक अनेक दिन उषःकाल ही उषः-काल रहनेका स्पष्ट वर्णन है। हमारे देशमें घण्टाभर तक उषः-काल रहता है, पश्चात् सूर्यका उदय होता है। अतः यह वर्णन यहां के उषःकालपर घटता ही नहीं। यहां तो सूर्योदयके पूर्व बहुत उषःकाल आते नहीं, प्रतिदिन उषा सूर्य की प्रतीक्षा करती रहती है, पर सूर्य देव उसके पास नहीं आते, ऐसा यहां नहीं होता, अतः उषा अपने प्रियकी प्रतीक्षा बहुत दिन करती रही, पर सूर्य देव नहीं आये तथापि वह उषा यती (संन्यासिनी) बनी नहीं, अपने प्रिय पर पूर्ववत् प्रेमही करती रही, यह वर्णन यहांके उषःकालका नहीं हो सकता।

जिस देशमें सूर्योदयके पूर्व अनेक दिन उषःकाल रहता होगा, वहीं पर ऐसी कल्पना कवि कर सकता है। और वहीं यह कल्पना प्रत्यक्ष सृष्टीमें दीख सकती है। जहां घण्टाभर ही उषःकाल रहता होगा, वहां सूर्योदय के पूर्व बहुत दिन उषः-काल रहा, ऐसा वर्णन नहीं हो सकता।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है, अनेक दिन व्यतीत होनेके पश्चात् वहां सूर्यदेवका दर्शन होता है। यहां दिनका अर्थ पृथ्वीका अपने इर्दगिर्द भ्रमणका काल है। आकाशमें जो तारका मण्डल दीखता है वह भ्रमण करतासा दीखता है। उसके २४ घण्टोंके परिभ्रमणसे दिनकी कल्पना होती है। ऐसे बहुत दिन व्यतीत होनेतक यह उषा सूर्यकी प्रतीक्षा करती रहती है, और पश्चात् सूर्य देव आते हैं और उषा सूर्यदेवके साथ संलग्न होती है।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है। इस वर्णनसे कितने दिन लेने योग्य हैं, इसका भी यहां विचार करना चाहिये। यदि ३० दिन व्यतीत हो जायें तो एक महिना व्यतीत हुआ ऐसा कहेंगे, इसलिये जिस कारण यहां ' अहानि ' अर्थात् ' दिन ' ही व्यतीत हुए ऐसा कहा है, उस कारण हम कह सकते हैं कि, तीस दिनोंसे कम ही ये उषःकाल होंगे। यदि आठ दस दिनतक ही यह उषःकाल रहता होगा, तो उसके लिये ' बहुत दिन ' ऐसा प्रयोग कोई नहीं करेगा, क्योंकि सात संख्यातक संख्या ' बहुत दिन ' कहने योग्य नहीं होती। इसलिये ३० दिन भी नहीं और दस दिन तक भी नहीं अर्थात् बीससे कुछ अधिक दिन ऐसा यह उषाका अवधि ' बहुलानि अहानि ' पदोंसे लेना योग्य है।

संस्कृत व्याकरणके अनुसार ' बहुलानि अहानि ' (बहुत दिन) का अर्थ कमसे कम तीन दिन और अधिकसे अधिक जितने भी होंगे उतने दिन बोधित होंगे। अतः व्याकरण

हमारी इतनीहि यहां सहायता करता है और कहता है कि इन पदोंसे कमसे कम तीन दिनोंका अवधि निर्धारित हो सकता है, ज्यादा कितने दिन ले सकते हैं यह व्याकरण नहीं कह सकता। पर केवल तीन ही दिनोंके लिये ' बहुतही दिन ' ऐसा कोई भी नहीं कहता। इसलिये यह अवधि निश्चयसे तीन दिनोंसे अधिक है इसमें संदेह नहीं, अनेक उषाओंका वर्णन वेदमंत्रोंमें भी है, अतः उषाका बहुवचनमें प्रयोग अनेक वेदमंत्रोंमें दिखाई देता है—

स्पर्धा वसूनि तमसाऽपगूळ्हा

आविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः॥ (६४; ऋ १। २३। ६)

' स्पृहणीय पदार्थ जो गूढ़ अन्धकारसे ढंके थे, उन सबको ये अनेक (विभातीः उषसः आविष्कृण्वन्ति) प्रकाशनेवाली उषायें प्रकट कर रही हैं। ' अर्थात् ये अनेक उषायें आकर सूर्य आनेके पूर्वही विश्वान्तर्गत नाना पदार्थोंको हमारे सामने प्रकट करती हैं। इसी सूक्तका अगला मंत्र इस मंत्रका आशय अधिक स्पष्ट कर रहा है—

परा च यन्ति पुनरा च यन्ति

भद्रा नाम वहमाना उषासः। (७०; ऋ १। १२३। १२)

' ये (उषासः) उषायें (भद्रा नाम वहमानाः) कल्याणकारक यशका धारण करती हुई (परा यन्ति) जाती हैं और (पुनः च आयन्ति) फिर वापस आती हैं। ' उषःकाल चला गयासा दीखता है और उसी समय फिर भया शुरू होने लगता है। वह वर्णन बड़ा महत्त्व रखनेवाला वर्णन है। हमारे देशमें एक बार उषःकाल गया तो दिन आता है, दिनके बाद सायंकाल और उसके बाद रात्री व्यतीत होती है, इसतरह २४ घण्टे व्यतीत होते हैं, तत्पश्चात् दूसरी उषा आती है। अतः यह वर्णन यहांका नहीं है जिस भूभाग पर एकवार उषा गयी तो उसी समय पुनः दूसरी उषःकाल आनेकी संभावना हो, वहीं यह वर्णन प्रत्यक्ष दीख सकता है, और वहीं सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना भी संभव हो सकता है। ऐसी कई उषायें लगातार आती हैं और पश्चात् सूर्य देव उगते हैं, वहीं कवि कह सकता है कि, ' एक उषा गयी और फिरसे दूसरी उषा पुनः आगयी। ' इसी तरह और भी वर्णन देखिये—

क सिंदासां कतमा पुराणी ? (९६; ऋ. ४। ११। ६)

' इस सब उषाओंमें कौनसी भला उषा पुरानी है ? ' यह प्रश्न तब हो सकता है कि, जब अनेक उषःकाल साथसाथ आते हों। हमारे भारतवर्षमें तो एकही उषःकाल रहता है इस लिये इसमें पुराना और नया ऐसा भेद नहीं हो सकता, परंतु

न्यून प्रकाशवाला और अधिक प्रकाशवाला ऐसे अनेक क्रमपूर्वक उषःकाल जहाँ होंगे, वहीं एक उषःकाल पुराना और दूसरा नया यह भाषा संभवनीय हो सकती है। इसीतरह और भी—

ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुः । (८०; ऋ. ४।५।७)

‘ वे निःसंदेह वे कल्याणकारक उषःकाल (पुरा आसुः) पहिले हो चुके थे । ’ यहाँ अनेक संख्यामें कुछ उषःकाल पहिले हो चुके ऐसा कहा है। अनेक संख्यामें उषःकालोंका होना यह जहाँ संभवनीय होगा, वहीं यह वर्णन हो सकता है। ये सब मंत्र किसी देशमें प्रत्यक्ष रीखनेवाले दृश्यका वर्णन कर रहे हैं। उषा दृश्यमान है, हमारे देशमें प्रतिदिन आती है, परंतु यहाँ अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व नहीं आतीं और नहीं इनमें एक प्राचीन और दूसरी अर्वाचीन कही जा सकती है। और जो वर्णन इन उषा सूक्तोंमें है, वहाँ अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व होती हैं, और ये उषाएं एकके पीछे दूसरी ऐसी क्रमपूर्वक आती हैं, देखिये—

क्रमसे उषाओंका आना

आसां पूर्वासां अहसु स्वसृणां

अपरा पूर्वा अभ्येति पश्चात् ।

ताः प्रत्नवन्नव्यसीः नूनं अस्मे

रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ॥ (८०; ऋ. १।१२४।९)

‘ (आसां पूर्वासां स्वसृणां अहसु) इन पहिले बहिनरूपी अनेक उषाओंके दिनोंमें (पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति) पहिली उषाके पश्चात् ही दूसरी उषा उसके पीछेसेही लगातार आती रहती है। (ताः) वे (नव्यसीः उषासः) नहीं उषाएं (प्रत्नवत्) पुरानी उषाओंके समानही निश्चय पूर्वक (अस्मे) हमें (रेवत् सुदिना उच्छन्तु) ऐश्वर्य युक्त उत्तम दिन दें । ’

इस मन्त्रमें ‘ पूर्वा पश्चात् अपरा अभि एति ’ यह वाक्य बड़े महत्त्वका है इसका आशय ऐसा है कि— ‘ पूर्व उषाके पश्चात् ही, उस उषाके पीछेसेही दूसरी उषा सब प्रकारसे आती है । ’ एक उषा समाप्त हुई तो दूसरी उषा शुरू होती है। यह दृश्य इस देशका नहीं है।

यहाँ ‘ उषा ’ पद अनेक वचनमें है, इससे अनेक उषाओं का होना सिद्ध है, अनेक उषाएं होनेके कारण उनको इस मंत्रने (स्वसृः) बहिनें कहा है। एक पिताकी अनेक पुत्रियाँ आपसमें बहिनें होती हैं। सूर्य आनेवाला है, उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक उषाएं आपसमें बहिनें कहीं जा सकती हैं। बहिन कहनेसे भी एक सूर्य देवके कारण उत्पन्न होनेवाली सूर्यकी अनेक पुत्रियाँ, ये उषाएँ हैं, अतः वे आपसमें बहिनें

हैं यह सिद्ध है। इससे सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना सिद्ध हुआ है।

उषाओंका क्रमसे और एकके पीछे दूसरीका आना सिद्ध कर रहा है कि ऐसा दृश्य किती दूसरे देशमें होगा, इस भारत वर्षमें तो ऐसा दृश्य कदापि नहीं होता।

पहिले दिनको जाननेवाली उषा

जानत्यहः प्रथमस्य नाम

शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची (६७; ऋ. १।१२३।९)

‘ यह उषा (प्रथमस्य अहः जानती) पहिले दिनका नाम जानती है, और (शुक्रा श्वितीची) यह प्रकाश देनेवाली तेजस्विनी उषा (कृष्णात् अजनिष्ट) कृष्ण वर्ण अन्धकारसे उत्पन्न हुई । ’ हमारे देशमें पहिले दिनकी उषा ऐसा कोई भेद नहीं है, क्योंकि सभी उषाएं एकसी होती हैं, पर जहाँ जिस प्रदेशमें बड़े अन्धकारके पश्चात् पहिलेही उषःकाल शुरू होता है और वह उषःकाल अनेक दिनोंतक लगातार रहता है वहीं यह संभव हो सकता है कि यह उषा प्रथम दिनकी है और यह दूसरे दिनकी है, पर वे आपसमें बहिनें हैं और एकके पीछे एक आती रहती हैं। इस मंत्र में प्रथम दिनकी उषा (प्रथमस्य अहः उषा) कहीं है, यह वर्णन विशेष महत्त्व का है। इसी तरह के वर्णन के ये मन्त्र हैं—

१. शश्वतीनां विभातीनां प्रथमा उषा व्यश्नैत् ।

(५३; ऋ. १।११३।५)

२. शश्वतीनां आयतीनां प्रथमा उषा व्यश्नैत् ।

(७३; ऋ. १।१२४।२)

३. परायतीनां अन्वेति पाथः

आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् । (४६; ऋ. १।११३।८)

४. उषा अगन् प्रथमा पूर्व हूतौ । (६०; ऋ. १।११३।८)

५. उषः सूनृते प्रथमा जरस्व । (६३; ऋ. १।१२३।२)

६. उषः सूजाते प्रथमा जरस्व । (१५२; ऋ. ७।७६।६)

‘ (१) शश्वत चमकनेवाली उषाओंमें यह पहली उषा प्रकाशित हुई है। (२) शश्वत आनेवाली उषाओंमें पहिली उषा उदित हुई है (३) जानेवाली उषाओंके मार्गका अनुसरण करनेवाली और आनेवाली उषाओंमें पहिली यह उषा है। (४) यह पहिली उषा आगई है। (५-६) हे उत्तम निर्माण हुई उषा ! तू पहिली उषा है । ’

(१,३) कुत्स आगिरसः, (२,४-५) कक्षीवान् दैर्घतमसः,

(६) वसिष्ठ के देखे ये मंत्र हैं । इन में यह पहिली उषा है ऐसा कहा है ।

यहां पहिली उषा करके उसमें कोई विशेषता नहीं होती । पर जहां बड़े प्रदीर्घ अन्धेरेके पश्चात् वर्षमें प्रथमही उषाके प्रकाशका दर्शन होता होगा, वहांका आनन्द इन मंत्रोंमें वर्णित हुआ दीखता है ।

तीस बहिनें

त्रिंशत्स्वसार उपयन्ति निष्कृतं । (तै. सं ४।३।२।६)

‘ तीस बहिनें नियत स्थानपर चलती हैं । ’ बहिनें उषायें हैं यह जो ऋग्वेदमें कहा था, वे तीस बहिनें हैं ऐसा इस मंत्रने कहा है । तीस ही उषाएं क्यों हैं ? क्योंकि छः मास की रात्री के पश्चात् तीस उषाएं आकर ही सूर्यका उदय होता है ।

भयानक रात्री

न यस्याः पारं दृष्टे न योयुवद्विश्वमस्यां नि विशते यदेजति । । अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पार-मशीमहि भद्रे पारमशीमहि ॥ (अथर्व. १९।४।२)

‘ (न यस्याः पारं दृष्टे) जिस रात्रीका पार अर्थात् समप्ति का समय हम देखते नहीं, इतनी यह विशाल रात्री है ।

(न योयुवत्) इस रात्री में भिन्नता भी नहीं दीखती, एक जैसी अखण्ड यह रात्री रहती है (विश्वं अस्यां निविशते) सब कुछ इस रात्री में प्रविष्ट होता है (यत् एजति) जो कुछ हिलता है वह सब भी इस रात्री में ही रहता है । (अ-रिष्टासः) हम विनष्ट न होते हुए, हे (उर्वि तमस्वति रात्रि) बड़ी अन्धेरी रात्री ! तेरे पार (अशीमहि) हम होंगे । हे कल्याणि रात्री ! तेरे पार हम होंगे । ’

यह विशेष दीर्घकालीन रात्रीका ही वर्णन दीखता है । यह हमारी १२ घण्टोंकी रात्री नहीं है, यह छः मासकी रात्री है जो संवत्सर जैसी है इसका वर्णन देखिये—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥ ३ ॥

(अ. ३।१०।३)

‘ (यां संवत्सरस्य प्रतिमां रात्रिं त्वां) संवत्सरकी प्रतिमा-रूपी रात्रीकी (उपास्महे) हम उपासना करते हैं । (सा नः) वह रात्री हमारी (आयुष्मतीं प्रजां) दीर्घायुवाली प्रजाको (रायः पोषेण संसृज) धन और पुष्टीके साथ पूर्ण करो । ’

संवत्सरस्य प्रतिमा रात्री= ये पद निःसंदेह वर्षकी दीर्घरात्रीको अर्थात् अर्धसंवत्सर तक चलनेवाली रात्रीको बता रहे हैं । नहीं तो ‘ संवत्सरकी प्रतिमा रात्री ’ का कोई विशेष तात्पर्य ही नहीं है ।

ऐसे बड़े अन्धकारके पार होनेको ही अन्धेरेसे पार होना कहते हैं—

अन्धकारका पार होना

बड़े अन्धकारका पार होना भी इन उषा सूक्तोंमें दीखता है—
अतारिष्म तमसस्पारं अस्य

उषा उच्छन्ती व्युना कृणोति । (२९; ऋ. १।९।२।६)

‘ (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारको हमने पार किया, अब यह (उषा उच्छन्ती) उषा अपना प्रकाश करती हुई अपने उद्देश प्रकट करती है । ’

इस मंत्रमें (अस्य तमसः पारं अतारिष्म) इस अन्धकारके पार हम हो चुके, यह वाक्य प्रगाढ और दीर्घकालके अन्धेरे की सूचना दे रहा है । प्रतिरात्रीके अन्धकारके विषयमें ऐसा कोई नहीं कहेगा, क्योंकि हमें पता है कि छः सात बजे यह अन्धेरा दूर होनेका निश्चय है । यदि अन्धेरा ऐसा हो कि जो कई महिने रहनेवाला हो, तो उस अन्धकारकी समाप्तिपर ऐसा वाक्य बोला जाना सर्वथा संभव है कि ‘ इस दुस्तर अन्धकारसे अब हम पार हो चुके हैं । ’ इतने मंत्रोंका आशय मनन पूर्वक देखनेसे हमें ऐसा प्रतीत होता है कि बड़े अन्धकारके व्यतीत होनेपर कई उषायें लगातार आतीं, उनमें पहिली और अन्तिम ऐसी भी उषाएं रहती हैं, ऐसे अनेक उषाकाल व्यतीत होनेपर दिनका प्रारंभ होता है, जहां ऐसा होता हो वहाँका यह वर्णन है ।

हमें विदित है कि अपनीही पृथ्वीपर ऐसे प्रदेश हैं कि जहां करीब पांच महिनोकी प्रचण्ड रात्री रहती है, इस निबिड गाढ अंधेरी प्रचण्ड रात्रीके पश्चात् करीब तीस दिनका उषाकाल और प्रभात होता है, पश्चात् करीब पांच महिनेका दिन होता है और पश्चात् वैसा ही मासका सायंकाल होता है । दिन और रात्रीका प्रमाण न्यूनाधिक भी कई प्रदेशोंमें रहता है । नार्वे स्वीडन के प्रदेशोंमें इस तरहके प्रचण्ड दिन रात आज भी होते हैं । महाभारतकारने ऋष पर्वतका वर्णन दिया है वहाँ छः महिनोका दिन और वैसी ही प्रचण्ड रात्री होनेका वर्णन है । अगस्ति ऋषि वहां गये थे ऐसा भी महाभारतमें लिखा है । देखो—

एनं त्वहरहर्मेरुं सूर्याचन्द्रमसौ ध्रुवम् ।

प्रदक्षिणमुपावृत्य कुरुतः कुरुनन्दन ॥

ज्योतीषि चाप्यशेषेण सर्वाण्यनघ सर्वतः ।

परियन्ति महाराज गिरिराजं प्रदक्षिणम् ॥

(म. भा. वन. १६३।३७-३८)

स्वतेजसा तस्य नगोत्तमस्य महौषधीनां च तथा प्रभावात् ।
विविक्तभावो न बभूव कश्चिदहोनिशानां पुरुषप्रवीर ॥
बभूव रात्रिर्दिवसश्च तेषां संवत्सरेणैव समानरूपः ।

म. भा. वन. १६४।११, १३

दैवे राज्यद्वनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः ।

अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्यादक्षिणायनम् (मनु. १।६७)
एकं वा एतद्देवानां अहः यत्संवत्सरः । (तै. ब्रा. ३।९।२।१)
‘ मेरुपर्वत है, उसकी प्रदक्षिणा सूर्य, चन्द्र, तथा सब नक्षत्र करते हैं । उस मेरुपर्वत पर दिन और रात्रीका ऐसा भेद नहीं (जैसा यहां हमारे देशमें प्रतिदिन दिखाई देता है ।) वहां दिन और रात्री वर्ष जैसी होती है (अर्थात् वहां छः मासोंकी रात्र और छः मासोंका दिन होता है, इसमें उषःकाल और सायंकालके संधिसमय अन्तर्भूत हुए हैं ।) यह महाभारतका वर्णन है ।

मनुस्मृतिमें कहा है कि उत्तरायण दिवस है और दक्षिणायन रात्री है । (अर्थात् छः मासोंका उत्तरायण दिन है और छः मासोंका दक्षिणायण रात्री है ।)

इस तरह मेरुपर्वतका वर्णन हमारे ग्रंथोंमें है । मेरुपर्वतही उत्तरीय ध्रुव है । आज भी वहां छः मासोंकी प्रचण्ड घन अन्ध-कारमयी रात्री है और छः मासोंका प्रचण्ड दिन है । उत्तरीय ध्रुवके नीचे दक्षिण दिशामें नाबें और स्वीदन देश हैं, इसलिये वहां यह प्रमाण थोडा न्यूनधिक रहता है । उत्तरीय ध्रुवमें सूर्य चन्द्र तथा नक्षत्र चक्कीके समान घूमते हुए नजर आते हैं, हमारे देशमें जैसे खिरपर आकर अस्त होनेका दृश्य है वैसा वहां नहीं है, वहां किसी देवताको प्रदक्षिणा करनेके समान ये सब सूर्य चन्द्र और नक्षत्र घूमते हैं और मेरुको प्रदक्षिणा करते देखते हैं ।

संक्षेपसे यहां ५ महिनोंकी निबिड गाढ अन्धकारवाली प्रचण्ड रात्री होती है, इसके बाद पहिली उषा चमकती है, इस कारण वह (प्रथम उषा) पहिली उषा कही जाती है, इसके नंतर करीब सत्ताईस उषाएं क्रमपूर्वक एकके पीछे दूसरी ऐसी आती है, अतः ये परस्पर बहिने होती हैं, पश्चात् सूर्य देव प्रकाशते हैं । ये करीब ५ महिनें प्रकाशते ही रहते हैं, तथापि कभी ये मध्याह्नके समय जैसे आकाशमध्यमें नहीं चढ़ते । नौ बजने जितने ऊपर चढ़ते हैं यह अधिक से अधिक ऊंचाई हांती है । जिस किसी ऊंचाई पर हो दिनभर उसी ऊंचाईपर रहते हुए ये ध्रुवपर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं, पश्चात् सायं समय भी करीब उषःकाल जितनाही होता है और पश्चात् रात्री होती है । इस तरह छः मास सूर्य दर्शन नहीं और छः मास

गाढ अन्धकार नहीं ऐसी वर्षकी अवधी काटी जाती है । नक्षत्रोंके एक परिभ्रमणसे एक दिन समझा जाता है, तथा वहां विद्युत्प्रकाश इस छः मासकी रात्रीमें कुछ रोशनी करता रहता है । यह वहां की परिस्थिति ध्यानमें धारण करके पूर्वोक्त मंत्रोंके निम्नलिखित वाक्य पुनः देखिये—

१. अस्य तमसः पारं अतारिष्म । (२९; ऋ. १।९२।६) = अब हम इस गाढ निबिड और प्रचंड अन्धकारके पार हो चुके ।

२. कृष्णात् शुक्रा प्रथमस्य अह्नः (उषा) अजनिष्ट । (६७; ऋ. १।१२३।३) = गाढ अन्धेरी रात्रीके पश्चात् प्रथम दिनकी यह पहिली उषा अब प्रकाशित हुई है ।

३. विभातीनां प्रथमा उषा व्यद्यौत् । (७३; ऋ. १।१२४।२) = प्रकाशित होनेवालीयोंमें यह पहिली उषा प्रकाशित हुई ।

४. आसां स्वसृणां पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति । (८०; ऋ. १।१२४।९) = ये बहिनें जैसी अनेक उषाएं एकके पीछे दूसरी क्रमसे आती हैं ।

५. भद्रा उषसः पुरा आसुः । (८०; ऋ. ४।५१।७) = कल्याण कारक अनेक उषाएं (सूर्य उदयके) पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं ।

६. उषसः परा यन्ति, पुनः आयन्ति । (७०; ऋ. १।१२३।१२) = इन उषाओंमें कई जाती हैं और नयी आती हैं ।

७. उषसः विभातीः (६४; ऋ. १।१२३।६) = अनेक उषायें (क्रमशः आकर) प्रकाशती हैं ।

८. सूर्यस्य प्राचीनं उदिता अहानि बहुलानि आसन् । (१४९; ऋ. ७।७६।३) = सूर्य उदयके पूर्व उदय को प्राप्त होनेवाली उषाएं अनेक हैं ।

इस तरह किसी ऐसे प्रदेशमें मंत्रों के ये पद अत्यंत सार्थक देखते हैं । पाठक इसका विचार करें ।

इतना होनेपर भी उषःकाल जाग्रतिका सूचक है । यह जाग्रति आध्यात्मिक मानना उचित है । क्यों कि आत्मिक जाग्रति में सब अन्य जाग्रतियां समाविष्ट होती हैं । यह भाव इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं और उससे आध्यात्मिक उन्नति के मार्गका बोध भी प्राप्त कर सकते हैं । यह आध्यात्मिक उन्नति वेदकी मुख्य उन्नति है इस की सिद्धि करनेकी आवश्यकता बिल्कुल नहीं है । क्योंकि यह बात सबको स्वीकृत ही है ।

इस तरह उषाके हृदयंगम सूक्तोंका विचार पाठक कर सकते हैं ।



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाश्वर्यणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

८ उषादेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३०।२०-२२)

(१-३) शुनःशेष आजीगर्तिः । गायत्री ।

कस्तं उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये । कं नक्षसे विभावरी	२०
वयं हि ते अमन्मह्याः—ऽऽन्तादा पराकात् । अश्वे न चित्रे अरुषि	२१
त्वं त्येभिरा गहि वाजैर्भिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयि नि धारय	२२

॥ २ ॥ (ऋ० १।४८।१-१६)

(४-२३) प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती ।)

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः ।	
सह द्युम्नेन बृहता विभावरी राया देवि दास्वती	१
अश्वीवतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे ।	
उदीरय प्रति मा सुनृता उष—श्रोद राघो मघोनाम्	२
उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।	
ये अस्या आचरणेषु दधिरे समुद्रे न श्रवस्वः	३
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः ।	
अत्राह तत् कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम्	४
आ घा योषेव सुनर्युषा याति प्रभुञ्जती ।	
जरयन्ती वृजनं पद्मदीयत उत्पातयति पक्षिणः	५

४ दै० [उषा]

वि या सृजति समनं व्युर्थिनः पदं न वेत्योदती ।	
वयो नर्किष्टे पमिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति	६
एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।	
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान्	७ १०
विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।	
अप द्वेषो मघोनीं दुहिता दिव उषा उच्छदप सिधः	८
उष आ भोहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।	
आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौमगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु	९
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वेवि यदुच्छसि सूनरि ।	
सा नो रथेन बृहता विभावरी श्रुधि चित्रामघे हवम्	१०
उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जनै ।	
तेना वह सुकृतो अध्वरा उप ये त्वा गृणन्ति वह्नयः	११
विश्वान् देवा आ वह सोमपीतये ऽन्तरिक्षादुपस्त्वम् ।	
सास्मासु धा गोमदश्चावदुक्थय मुषो वाजं सुवीर्यम्	१२ १५
यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत ।	
सा नो रयि विश्ववारं सुपेशस मुषा ददातु सुगम्यम्	१३
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि ।	
सा नः स्तोमा अभि गृणीहि राधसो षः शुक्रेण शोचिषा	१४
उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।	
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः	१५
सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्षा समिलाभिरा ।	
सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति	१६ १९

॥ ३ ॥ (क्र० १।४९।१-४) अनुष्टुप् ।

उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिद् रोचनादधि ।	
वहन्त्वरुणप्सव उप त्वा सोमिनो गृहम्	१ २०
सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उपस्त्वम् ।	
तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः	२ २१

वयश्चित् ते पतत्रिणो द्विपच्चतुष्पदर्जुनि ।

उषः प्रारंभतूरनु दिवो अन्तैभ्यस्परि

३

व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।

तां त्वाष्ट्रुषर्वसूयवो गीर्भिः कणा अहूषत

४

२३

॥ ४ ॥ (ऋ० १।९२।१-१५)

(२४-३८) गोतमो राहूगणः । १-४ जगती; ५-१२ त्रिष्टुप्; १३-१५ उष्णिक् ।

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।

निष्कृण्वाना आर्युधानीव धूष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः

१

उदपसन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत ।

अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः

२

२५

अर्चन्ति नारीरूपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते

३

अधि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्युते वक्ष उस्सेव बर्जहम् ।

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न ब्रजं व्युषा आवर्तमः

४

प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम् ।

स्वरुं न पेशो विदथेष्वाञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्वेत्

५

अतारिष्म तमसस्परमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति ।

श्रिये छन्दो न संयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः

६

भास्वती नेत्री सनूतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः ।

प्रजावतो नूवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्रौ उप मासि वाजान्

७

३०

उषस्तमस्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।

सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम्

८

विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः

९

पुनःपुनर्जार्जमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।

श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः

१०

व्यूष्वती दिवो अन्ता अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युथोति ।

प्रमिनती मनुष्या युगानि योषां जारस्य चक्षसा वि भाति

११

३४

पञ्च चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न क्षोद उर्विया व्यश्नैत् ।
 अर्भिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना १२
 उषस्तच्चित्रमा भरा—स्मर्यं वाजिनीवति । येन तोकं च तनयं च धामहे १३
 उषो अद्येह गोम्—त्यश्वावति विभावरी । रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति १४
 युक्ष्वा हि वाजिनीव—त्यश्वा अद्यारुणा उषः । अथा नो विश्वा सौभगान्या वह १५ ३८
 ॥ ५ ॥ (क्र० १।११३।१-२०)

(३९-५८) कुत्स आङ्गिरसः । १ (उत्तरार्धस्य) रात्रिश्च । त्रिष्टुप् ।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागा—चित्रः प्रकृतो अजनिष्ट विश्वा ।
 यथा प्रसूता सवितुः सुवार्य एवा रात्र्युषसे योनिमारैक् १
 रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागा—दारैर्गु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
 समानबन्धू अमृतं अनुची द्यावा वर्णा चरत आमिनाने २ ४०
 समानो अध्वा स्वस्रोरनन्त—स्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
 न मैथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ३
 भास्वती नेत्री सूनृताना—मचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।
 प्राप्या जगद्भ्यु नो रायो अरुय—दुषा अजीगर्भुर्वनानि विश्वा ४
 जिह्वश्येइ चरितवे मघो—न्याभोगय इष्ट्ये राय उ त्वम् ।
 द्रुमं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुर्वनानि विश्वा ५
 क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्ट्ये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
 विसदृशा जीविताभिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुर्वनानि विश्वा ६
 एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
 विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ७ ४५
 परायतीनामन्वेति पार्थ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
 व्युच्छन्ती जीवमुदीरय—न्त्युषा मृतं कं च न बोधयन्ती ८
 उषो यदग्निं समिधे चकर्थ वि यदावृक्षसा सूर्यस्य ।
 यन्मानुषान् यक्ष्यमाणं अजीग—स्तद् देवेषु चकृषे भद्रमग्नः ९
 क्रियात्या यत् समया भवति या व्युषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
 अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीप्याना जोषमन्याभिरेति १०
 ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः ।
 अस्माभिरु नु प्रतिचक्षामू—दो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ११ ४२

यावयद् द्वेषा ऋतुपा ऋतेजाः सुम्नावरीं सुनृतां ईरयन्ती । सुमङ्गलीर्विभ्रती देववीति—मिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ	१२	५०
शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्य—थो अद्येदं व्यावो मधोनीं । अथो व्युच्छादुत्तरां अनु धू—नजरामृतां चरति स्वधार्भिः	१३	
व्युञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौ—दप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः । प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वै—रोषा याति सुयुजा रथेन	१४	
आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना । ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वत्	१५	
उदीर्ध्व जीवो असुर्न आगा—दप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति । आरैक् पन्थां यातवे सूर्याया—गन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः	१६	
स्यूमना वाच उदियति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः । अद्या तदुच्छ गृणते मधो—न्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत्	१७	५५
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय । वायोरिव सुनृतानामुदके ता अश्वदा अश्वत् सोमसुत्वा	१८	
माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्वृहती वि भाहि । प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे	१९	
यच्चित्रमम उषसो वहन्ती—जानाय शशमानाय भद्रम् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	२०	५८

॥ ६ ॥ (ऋ० १।१२३।१-१३)

(५९-८४) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । त्रिष्टुप् ।

पृथू रथो दक्षिणाया अयोज्यै—नं देवासो अमृतासो अस्थुः । कृष्णादुदस्थादर्याइ विहाया—श्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय	१	
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री । उच्चा व्यरुयद् युवतिः पुनर्भू—रोषा अगन् प्रथमा पूर्वहूतौ	२	६०
यदद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते । देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय	३	
गृहंगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना । सिषासन्ती द्योतना शश्वदागा—दग्रमग्रमिद् भजते वसूनाम्	४	६२

भगस्य स्वसा वरुणस्य जामि—रुषः सूनृते प्रथमा जरस्व ।	
पश्चा स दद्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन	५
उदीरतां सूनृता उत् पुरन्धी—रुद्रग्रयः शुशुचानासो अस्थुः ।	
स्पर्हा वसूनि तमसापगूह्णा—विष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः	६
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विषुरुपे अहनी सं चरेते ।	
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाक—रघौदुषाः शोशुचता रथेन	७ ६५
सदृशीरघ सदृशीरिदु श्वो दीर्घं संचन्ते वरुणस्य धाम ।	
अनवद्यास्त्रिशतं योजना—न्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः	८
जानत्यहः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।	
क्रतस्य योषा न मिनाति भामा—हरहर्निष्कृतमाचरन्ती	९
कन्यैव तन्वाइ शशदानां एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।	
संस्मर्यमाना युवतिः पुरस्ता—दाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती	१०
सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा—विस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।	
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत् ते अन्या उषसो नशन्त	११
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।	
परां च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः	१२ ७०
क्रतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।	
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छा—स्मासु रायो मघवत्सु च स्युः	१३ ७१

॥ ७ ॥ (क्र० १।१२४।१-१३)

उषा उच्छन्तीं समिधाने अग्रा उद्यन्तसूर्यं उर्विया ज्योतिरश्नेत् ।	
देवो नो अत्र सविता न्वर्थ प्रासावीद् द्विपत् प्र चतुष्पदित्यै	१
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।	
ईयुषीणामुपमा शश्वतीना—मायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत्	२
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।	
क्रतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति	३
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरंकुत प्रियाणि ।	
अब्रसन्न संसतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात् पुनरेयुषीणाम्	४ ७५

पूर्वे अर्धे रजसो अपत्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।	
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओ—भा पृणन्ती पित्रोरुपस्था	५
एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं नाजामि न परि वृणक्ति जामिम् ।	
अरेपसा तन्वाइ शाशदाना नार्भादीषते न महो विभाती	६
अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम् ।	
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्त्रेव नि रिणीते अप्सः	७
स्वसा स्वस्त्रे ज्यायस्यै योनिमारै—गपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्यैव ।	
व्युच्छन्ती रश्मिभिः सूर्यस्या—ज्यङ्क्ते समन्ता इव त्राः	८
आसां पूर्वोसामहसु स्वसृणा—मपरा पूर्वोमभ्येति पश्चात् ।	
ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः	९ ८०
प्र बोधयोषः पृणतो मघो—न्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।	
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत् स्तोत्रे स्रजते जारयन्ती	१०
अवेयमश्वेद् युवतिः पुरस्ताद् युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।	
वि नूनमुच्छादसति प्र केतु—गृहं गृहमुप तिष्ठाते अग्निः	११
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपमन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।	
अमा सते बहसि भूरि वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय	१२
अस्तौद्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वमुशतीरुषासः ।	
युष्माकं देवीरवसा सनेम सहास्त्रिणं च शतिनं च वाजम्	१३ ८४

॥ ८ ॥ (ऋ० ३।६।१-७)

(८५-९१) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि ।	
पुराणी देवि युवतिः पुरंधि—रन्तु व्रतं चरसि विश्ववारे	१ ८५
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती ।	
आ त्वा बहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये	२
उषः प्रतीची भुवनानि विश्वो—र्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।	
समानमर्थं चरणीयमाना च्छिर्कर्मिव नव्यस्या बवृत्स्व	३
अव स्यूमेव चिन्वती मघो—न्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।	
स्वर्जन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद् दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः	४ ८८

अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।
 ऊर्ध्वं मधुघ्ना दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचिना रुरुचे रण्वसदृक्
 ऋतावरी दिवो अर्कैरबो—ध्या रेवती रोदसी चित्रमस्यात् ।
 आयतीमग्न उषसं विभातीं वामभेषि द्रविणं भिक्षमाणः
 ऋतस्य बुध्न उषसाभिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
 मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेवं भानुं वि दधे पुरुत्रा

५

६ ९०

७ ९१

॥ ९ ॥ (ऋ० ४।५।१-११)

(९२-१०९) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्

इदमु त्यत् पुरुतमं पुरस्ता—ज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् ।
 नूनं दिवो दुहितरो विभाती—र्गातुं कृणवन्नृषसो जनाय
 अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्ता—न्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु ।
 व्यू ब्रजस्य तमसो द्वारो—च्छन्तीरत्रच्छुचयः पावकाः
 उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः ।
 अचित्रे अन्तः पणयः सस—न्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये
 कुवित स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य ।
 येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष
 यूयं हि देवीर्ऋतयुग्मिरश्वैः परिप्रयाथ भुव्नानि सद्यः
 प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाचतुष्पाचरथाय जीवम्
 कं स्विदासां कतमा पुराणी यया विधानां विदधुर्ऋभूणाम् ।
 शुभं यच्छुभ्रा उपसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः
 ता घा ता भद्रा उषसः पुरासु—रभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः ।
 यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवच्छंसन् द्रविणं सद्य आप
 ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः ।
 ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते
 ता इन्वेक्षुव समना समानी—रमीतवर्णा उषसश्चरन्ति ।
 गूहन्तीरभ्वमसितं रुशङ्घिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः
 रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः ।
 स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम

१

२

३

४ ९५

५

६

७

८

९ १००

१० १०१

तद् वो दिवो दुहितरो विभाती—रूपं ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः ।

वयं स्याम यशसो जनेषु तद् द्यौश्च धृत्तां पृथिवी च देवी

११

॥ १० ॥ (ऋ० ४।५२।१-७) गायत्री ।

प्रति ष्या सुनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदशि दुहिता

१

अश्वैव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखाभूदुश्विनोरुषाः

२

उत सखास्यश्विनो—रुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे

३

१०५

यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्समहि

४

प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ओषा अप्रा उरु जयः

५

आपमुषी विभावरी व्यावज्योतिषा तमः । उषो अनु स्वधामव

६

आ द्यां तनोषि रश्मिभि—रान्तरिक्षमुरु प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा

७

१०९

॥ ११ ॥ (ऋ० ५।७९।१-१०)

(११०-१२५) सत्यश्रवा आत्रेयः । पङ्क्तिः ।

महे नो अद्य बौधयो—षो राये दिवितमती ।

यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वस्रनृते

१

११०

या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।

सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वस्रनृते

२

सा नो अद्याभरद्रसु—व्युच्छा दुहितर्दिवः ।

यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वस्रनृते

३

अभि ये त्वा विभावरी स्तोमैर्गुणन्ति वह्नयः ।

मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वस्रनृते

४

यच्चिद्धि ते गणा इमे हृदयन्ति मघत्तये ।

परि चिद् वष्टयो दधु—र्ददतो राधो अह्यं सुजाते अश्वस्रनृते

५

एषु धा वीरवद् यश उषो मघोनि सूरिषु ।

ये नो राधांस्यह्या मघवानो अरासत् सुजाते अश्वस्रनृते

६

११५

तेभ्यो द्युम्नं बृहद् यश उषो मघोन्या वह ।

ये नो राधांस्यश्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वस्रनृते

७

उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः ।

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वस्रनृते

८

११७

व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुया अपः ।

नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सरो अर्चिषा सुजाते अश्वस्रुते ९

एतावद् वेदेषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।

या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वस्रुते १० ११९

॥ १२ ॥ (ऋ० ५।८०।१-६) त्रिष्टुप् ।

द्युतर्द्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणसुं विभातीम् ।

देवीमृषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रांसो मतिभिर्जरन्ते १ १२०

एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे ।

बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्वाम् २

एषा गोभिररुणेभिर्युजाना ऽस्नेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।

पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ३

एषा ह्येनी भवति द्विर्हो आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।

ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ४

एषा शुभ्रा न तन्वो विद्वानो ध्वेवं स्नाती दृश्ये नो अस्थात् ।

अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ५

एषा प्रतीची दुहिता दिवो नृन् योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।

व्यूर्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ६ १२५

॥ १३ ॥ (ऋ ६।६४।१-६)

(१२६-१३७) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः ।

कृणोति विश्वा सुपथा सुगा न्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी १

भद्रा ददक्ष उर्विया वि भास्युत् ते शोचिर्भानवो घामपसन् ।

आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः २

वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगांमुर्विया प्रथानाम् ।

अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा ३

सुगोत ते सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो ।

सा न आ वह पृथुयामभृष्वे रयि दिवो दुहितारिष्यध्यै ४ १२९

सा वह् योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु ।

त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः

५ १३०

उत् ते वयश्चिद् वसतेरपमन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।

अमा सते वहसि भूरि वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय

६ १३१

॥ १४ ॥ (ऋ० ६।६५।१-६)

एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितिरुच्छन्ती मानुषीरजीगः ।

या भानुना रुशता राम्या—स्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदुक्त्तू

१

वि तद् ययुररुणयुग्मिरश्च—श्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।

अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्ती—विं ता बाधन्ते तम् ऊर्म्यायाः

२

श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्ती—निं दाशुषं उषसो मर्त्याय ।

मघोनीर्वीरवत् पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य

३

इदा हि वो विधते रत्नमस्ती—दा वीरायं दाशुषं उषासः ।

इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावते वहथा पुरा चित्

४ १३५

इदा हि तं उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणन्ति ।

व्युक्तेण विभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद् देवहूतिः

५

उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद् विधते मघोनि ।

सुवीरं रयिं गृणते रीरिद्यु—रुगायमधि धेहि श्रवो नः

६ १३७

॥ १५ ॥ (ऋ० ७।४१।७)

(१३८-१७८) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु मद्राः ।

घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः

७ १३८

॥ १६ ॥ (ऋ० ७।७५।१-८)

व्युषा आवो दिविजा ऋतेना—ऽऽविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।

अप द्रुहस्तम आवरजुष्ट—मङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः

१

महे नो अद्य सुविताय बो—ध्युषो महे सौमगाय प्र यन्धि ।

चित्रं रयिं यज्ञसं भेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम्

२ १४०

एते त्ये भानवो दर्शताया—श्चित्रा उषसो अमृतांस आगुः ।

जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्या—पृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः

३ १४१

एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति ।
 अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ४
 वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।
 ऋषिष्टुता जरयन्ती मघो न्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ५
 प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः ।
 याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ६
 सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
 रुजद् दृळ्हानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ७ १४५
 नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्वावत् पुरुभोजो अस्मे ।
 मा नो वह्निः पुरुषता निदे कयूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८

॥ १७ ॥ (ऋ० ७।७६।१-७)

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।
 ऋत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुःराविरकर्ध्वनं विश्वमुषाः १
 प्र मे पन्था देवयानां अदृश्रन्मर्मधन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
 अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः २
 तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
 यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृशे न पुनर्यतीव ३
 त इद् देवानां सधमार्द आसन्नुतावानः कवयः पूव्यासः ।
 गूळहं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्तस्त्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ४ १५०
 समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
 ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्मधन्तो वसुभिर्यादमानाः ५
 प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः ।
 गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ६
 एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
 दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ १५३

॥ १८ ॥ (ऋ० ७।७७।१-६)

उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
 अभूदग्निः समिधे मातृषाणां मकृज्योतिर्बाधमाना तमांसि १ १५४

विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद् रुशद् वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् ।

हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंहग् गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि

२ १५५

देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् ।

उषा अदार्शि रश्मिभिर्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता

३

अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छो—वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः ।

यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि

४

अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाहु—षो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।

इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्चावद् रथवच्च राधः

५

यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।

सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

६

॥ १९ ॥ (ऋ० ७।७८।१-५)

प्रति केतवः प्रथमा अदृशन्नुर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।

उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि

१ १६०

प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः ।

उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरितापं देवी

२

एता उ त्याः प्रत्यदृशन् पुरस्ता—ज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः ।

अर्जीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्नि—मपाचीनं तमो अगादजुष्टम्

३

अर्चेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।

आस्थाद् रथं स्वधया युज्यमान—मा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति

४

प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्ता—ऽस्माकांसो मघवानो वयं च ।

तिल्विलायध्वमुषसो विभाती—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५ १६४

॥ २० ॥ (ऋ० ७।७९।१-५)

व्युषा आवः पथ्याइ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती ।

सुसंहग्मिरुक्षभिर्भानुमश्रेद् वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः

१ १६५

व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून् विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।

सं ने गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्येच्छन्ति सवितेव बाहू

२

अभूदुषा इन्द्रतमा मघो—न्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।

वि दिवो देवी दुहिता दधा—त्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि

३ १६७

तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोत्रभ्यो अरदो गृणाना ।

यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः

४

देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्यक् सूनृता ईरयन्ती ।

व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५ १६९

॥ २१ ॥ (क्र० ७।८०।१-३)

प्रति स्तोमैभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुधन् ।

विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा

१ १७०

एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढी तमो ज्योतिषोषा अबोधि ।

अग्र एति युवतिरह्याणा प्राचिकित्त सूर्यं यज्ञमग्निम्

२

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।

घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

३

॥ २२ ॥ (क्र० ७।८१।१-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती + समा सतोबृहती) ।

प्रत्यु अदर्यायत्यु—च्छन्तीं दुहिता दिवः ।

अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी

१

उदस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमचिवत् ।

तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि

२

प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्समहि ।

या वहसि पुरु स्पार्ह वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः

३ १७५

उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्ररूप्य देवि स्वर्दशे ।

तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः

४

तच्चित्रं राध आ भरोषो यद् दीर्घश्रुत्तमम् ।

यत् ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद् रास्व भुनजामहै

५

श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजा अस्मभ्यं गोमतः ।

चोदयित्री मधोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप सिधः

६ १७८

॥ २३ ॥ (क्र० ८।१०।१।३)

(१७९) जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा । बृहती ।

इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।

चित्रेव प्रत्यदर्यायत्यु—न्तर्दशसु बाहुषु

१३ १७९

॥ २४ ॥ (ऋ० १०।१७२।१-४)

(१८०-१८३) संवर्त आङ्गिरसः । द्विपदा विराट् ।

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनि यदूधभिः	१	१८०
आ याहि वस्या धिया मंहिष्ठो जार्यन्मखः सुदानुभिः	१	२
पितुभृतो न तन्तुमिह सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि		३
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनि सुजातता	२	४ १८३

॥ २५ ॥ (१८४) (वा० य० १२।४६)

संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात् ।

अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितं स्थ परिचितं ऊर्ध्वचितं श्रयध्वम्	४६	१८४
---	----	-----

॥ २६ ॥ (साम० ३०३,७५१) +

(१८५-१८६) वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । बृहती ।

प्रत्यु अदर्यायत्यूरच्छन्ती दुहिता दिवः ।

अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कणोति सूनरी	२०३	१८५
--	-----	-----

॥ २७ ॥ (अथर्व० १९।१२।१)

वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनि सुजातता ।

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः	१	१८६
--	---	-----

उषा-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः । (दुःष्वमन्नम्)

॥ २८ ॥ (ऋ० ८।४७।१४-१८)

(१८७-१९१) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

यच्च गोषु दुःष्वप्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः ।

त्रिताय तद् विभावया पत्याय परा वहा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १४

निष्कं वा धा कृणवते सजं वा दुहितर्दिवः ।

त्रिते दुःष्वप्यं सर्वं माप्त्ये परि दन्नस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १५

तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे ।

त्रिताय च द्विताय चोषो दुःष्वप्यं वहा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १६ १८

यथा कलां यथा शफं यथं क्रुणं संनयामसि ।

एवा दुःष्वप्यं सर्वं माप्ये सं नयामस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १७ १९०

अजैष्माद्यासनाम् चाभूमानांगसो वयम् ।

उषो यस्माद् दुःष्वप्या दमैष्माप तदुच्छत्व नेहसो व ऊतयः

सुऊतयो व ऊतयः

१८ १९१

(२) उषासानक्ता ।×

॥ २९ ॥ (१९२-१९४) (वा० य० २०।४१)

उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पर्यस्वती सुदुधे शूरमिन्द्रम् ।

तन्तुं तत् पेशसा संवर्यन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे

४१

॥ ३० ॥ (वा० य० २८।१४, ३७)

देवी उषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यहेताम् ।

दैवीर्विशः प्रायासिष्टा^x सुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज

१४

देवी उषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज

३७ १०४

× दै० (अमिः) [आप्रीसूक्तानि] १९१२; १९२४; १९३६; १९४७; १९५८; १९६९; १९७९; १९८६; १९९७; २००८; २०१९; २०३१; २०४९; २०८९; २१११; २१२३.

उषादेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [२] १।३०।२१ (शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः)
अश्वे न चित्रे अरुषि ।
(१०४) ४।५२।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अश्वेव चित्रारुषी ।
- [३] १।३०।२२ (शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः)
अस्ये रयि नि धारय ।
(इन्द्रः २४८८) १०।२४।१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,
वसुकृद्धा वासुकः । इन्द्रः)
.....धारय वि वो मदे ।
- [४] १।४८।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
युच्छा दुहितर्दिवः ।
(११२) ५।७९।३ = (११८) ५।७९।९ (सत्यश्रवा
आत्रेयः । उषाः)
- [५] १।४८।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चोद राधो मघोनाम् ।
(आयुर्वेद० १०७९) ७।९६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
सरस्वती)
- [११] १।४८।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप...दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ।
(१७३) ७।८१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
.....दुहिता दिवः ।
अपो...चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
(१७८) ७।८१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषा उच्छदप स्निधः ।
- [१६] १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्रति भद्रा अदक्षत ।
(१०७) ४।२५।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
- [१७] १।४८।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमौ अभि गृणीहि राघसोषः शुक्रेण
शोचिषा ॥
(अश्विनौ ४२६) ८।८।६ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽवसे नरा ।
आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम ।

६ दै. [उषा]

- (१०९) ४।५२।७ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
उषः शुक्रेण शोचिषा ।
(अश्विनौ ४१२) ८।५।३० (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
उपेमां सुष्टुतिं मम ।
(अश्विनौ ५३०-५३२) ८।३५।२२-२४ (श्यावाश्व
आत्रेयः । अश्विनौ)
आ यातमश्विना गतम् ।
- [१८] १।४८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
(अश्विनौ ४४४) ८।२।१ (राशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
प्रास्यै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।
- [२०] १।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
दिवश्चिद् रोचनादधि ।
(मरुतः २७५) ५।५६।१ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
(अश्विनौ ४२७) ८।८।७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
- [२३] १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
विश्वमाभासि रोचनम् ।
१।५०।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः)
विश्वमा भासि — ।
(इन्द्रः १४०३) ३।४४।४ (गाथिनो विश्वामित्रः । इन्द्रः)
विश्वमा भाति रोचनम् ।
- [२६] १।९२।३ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।
(अश्विनौ ४६) १।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
इषं पृथ्वन्ता सुकृते सुदानवे ।
- [२७] १।९।२४ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
ज्योतिर्विश्वस्यै भुवनाय कृण्वती ।
(अग्निः ७४६) ४।१४।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
— — कृण्वन् ।
- [२९] १।९२।६ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
अतारिष्म तमसस्पा रमस्य ।
(अश्विनौ २०७) १।१८३।६ = (अश्विनौ २१३) १।१८४।६
(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्पा रमस्य प्रति वां स्तोमो ।

- (अश्विनौ ३७३) ७।७३।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
अतारिष्म तमसस्परमस्य प्रति सोमं ।
- [३०] १।९२।७ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
भास्वती नेत्री सूनृतानाम् ।
(४२) १।११३।४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
[३४] १।९२।११ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
[३५] १।९२।२२ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि ।
(७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या
युगानि ।
- [३६] १।९२।१३ (गौतमो राह्वगणः । उषाः)
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन लोकं च तनयं च धामहे ।
४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
उषो मघोन्या वह ।
अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
(सोमः ६६१) ९।७४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः ।
पवमानः सोमः)
येन लोकं च तनयं च धामहे ।
- [४२] १।११३।४ = (३०) १।९२।७
- [४२-४४] १।११३।४-६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ।
- [४५] १।११३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि... .. शुक्रवासाः ।
उषो अघेह सुभगे न्युच्छ ।
(७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
— प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना ।
(७१) १।१२३।१३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
उषो नो अथ सुहवा न्युच्छ ।
- [५२] १।११३।१४ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
प्रबोधयन्त्यरुणभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ।
(अग्निः ७४७) ४।१४।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ।
- [५३] १।११३।१५ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्नैत् ।
(७३) १।१२४।२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यश्नैत् ।

- [५४] १।११३।१६ (कुत्स आङ्गिरसः । उषाः)
आगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ।
(सोमः ११४५) ८।४८।११ (प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः)
अगन्म — — ।
- [६३] १।१२३।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
उषः सूनृते प्रथमा जरस्व ।
(१५२) ७।७६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
उषः सुजाते प्रथमा जरस्व ।
- [७०] १।१२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
(अग्निः ७९३) ५।४।४ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
- [७१] १।१२३।१३ = (४५) १।११३।७
- [७३] १।१२४।२ = (३५) १।९२।१२
- [७३] १।१२४।२ = (३४) १।९२।११
- [७३] १।१२४।२ = (५३) १।११३।१५
- [७४] १।१२४।३ = (४५) १।११३।७
- [७४] १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
..... पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
(१२३) ५।८०।४ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
१०।६६।१३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुया ।
- [७६] १।१२४।५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
न्यु प्रथते वितरं वरीय ।
(अग्निः २००६) १०।११०।४ (जमदग्निर्भागवतः, रामो
वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं [बर्हिः])
- [७८] १।१२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
जायेव पत्य उशती सुवासाः ।
(अग्निः ६६७) ४।३।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
= १०।७१।४ (बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम्)
(अग्निः १६६३) १०।९१।१३ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)
- [७८] १।१२४।७ उषा ह्येव नि रिणीते अप्सः ।
(१२५) ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
योषेव मद्रा नि — ।
- [८१] १।१२४।१० (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः)
पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवज्यो मघोनि ।
(९४) ४।५१।३ (वामदेवो गौतमः । उषाः)

उच्छन्तीरथ चितयन्त — — मघोनीः ।
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वुध्यमानाः ।
[८३] १।१२४।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

= (१३१) ६।६४।६ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । उषाः)
उत् ते नयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाक्षुषे मर्त्याय ॥

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[९१] ३।६१।७ (गाथिनो विश्वामित्रः । उषाः)
वृषा मही रोदसी आ विवेश ।

(अग्निः १६४।५) १०।८०।२ (अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा, सप्तिर्वाजंभरो वा । अग्निः)
अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[९४] ४।५१।३ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्तु ।
(८१) १।१२४।१० (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
[१०१] ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
(इन्द्रः २११०) ६।४७।१२ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)
(इन्द्रः २७७६) १०।१३१।६ (सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः)
(सोमः ७९९) ९।८९।७ (उक्षाना काव्यः । पवमानः सोमः)

(सोमः ८३२) ९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः)
[१०४] ४।५२।२ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
अथेव चित्रारुषी ।
(२) १।३०।२१ (शुनःशेषः आजीगर्तिः । उषाः)
अथे न चित्रे अरुषि ।
[१०७] ४।५२।५ (वामदेवो गौतमः । उषाः)
प्रति मद्रा अदक्षत ।
(१६) १।४८।१३ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
[१०९] ४।५२।७ = (१७) १।४८।१४
उषः शुक्रेण शोचिषा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[११०-१२] ५।७९।१-३ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
सत्यश्रवसि वाच्ये सुजाते अश्वसूनुते ।
(११०-११२) ५।७९।१-१० सुजाते अश्वसूनुते
[१११] ५।७९।२ = (११२) ५।७९।३
सा (यो) व्युच्छ (व्यौच्छः) सहीयसि ।
[११२] ५।७९।३ = (११८) ५।७९।९ व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
(४) १।४८।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
(१२) १।४८।९ चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
(२१) १।४९।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः)
प्रावाद्य दुहितर्दिवः ।
(१११) ५।७९।२ व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।
(११७) ५।७९।८ आ वहा दुहितर्दिवः ।
[११५] ५।७९।६ येषु धा वीरवद् यशः ।
(इन्द्रः १६५६) ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

[११५-१६] ५।७९।६-७ ये नो राधांस्यद्वया (७ अश्व्या)
[११६] ५।७९।७ उषो मघोन्या वह ।
४।५५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
[११७] ५।७९।८ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
उत् नो गोमतीरिषः ।
(अश्विनौ ३९२) ८।५।९ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
(सोमः ४४१) ९।६२।२४ (जमदग्निर्भर्गिवः । पवमानः सोमः)
[११८] ५।७९।८ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
(अश्विनौ ४५) १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
(अदितिः ० २११) १।१३।७२ (परच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
(७०) १।१२३।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।

- (अदितिः ० ३७०) ८।१०१।२
 (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)
 [१२३] ५।८०।४ ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु ।
 (७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 १०।६३।१३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
 [१२३] ५।८०।४ प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।
 (७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)

- [१२५] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
 (७८) १।१२४।७ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 उषा हस्तेव नि रिणीते अप्सः ।
 [१२५] ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि ।
 ६।५०।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः [सविता])
 व्यूर्ण्वते दाशुषे वार्याणि ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [१३१] ६।६४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
 =(८३) १।१२४।१२ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः)
 उत ते वयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
 अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

- [१३४] ६।६५।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः)
 नि दाशुषे उषसो मर्त्याय ।
 =(८३) १।१२४।१२=(१३१) ६।६४।३
 उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [१३८] ७।४१।७=(१७२) ७।८०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 उषाः)
 अश्वावतीगौमतीनं उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
 घृतं हुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः ।
 [१३८] × ७।४१।७ यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः ।
 =(१४६) ७।७५।८=(१५३) ७।७६।७
 =(१५९) ७।७७।६=(१६४) ७।७८।५
 =(१६९) ७।७९।५=(१७२) ७।८०।३
 [१४४] ७।७५।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ।
 (अश्विनौ २५४) ४।४४।४ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ ।
 अश्विनौ)
 दधथो रत्नं विधत्ते जनाय ।
 [१४५] ७।७५।७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
 ४।५६।२ (वामदेवो गौतमः । द्यावापृथिवी)
 देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।
 [१५१] ७।७६।५ ते देवानां न मिनन्ति व्रतानि ।
 (आयुर्वेद ० ८७३) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः)
 ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ।
 [१५२] ७।७६।६ =(६३) १।१२३।५
 उषः सुजाते (५ सूत्रते) प्रथमा जरस्व ।

- [१५७] ७।७७।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 अन्ति — दूरे अमित्रं — उर्वी गव्यूतिमभयं कृषी नः ।
 (सोमः ६८५) २।७८।५ (कविर्भागवः । पवमानः सोमः)
 शत्रुमन्तिके दूरे ... उर्वी गव्यूतिमभयं च नस्कृषी ।
 [१६२] ७।७८।३ एता उ त्याः प्रत्यदश्नन् ।
 (आयुर्वेद ० ७७८) १।१९।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
 अप्तुणसूर्याः [विषज्ञोपनिषद्])
 एत उ त्ये प्रत्यदश्नन् ।
 [१६२] ७।७८।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 अजीजनन्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
 [१७१] ७।८०।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
 एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ।
 प्राचिकित्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।
 ३।५३।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः । वाक् [ससर्परी])
 सा पक्ष्या नव्यमायुर्दधाना ।
 [१७२] ७।८०।३ =(१३८) ७।४१।७
 [१७३] ७।८१।१ प्रत्यु अदृश्ययति ।
 (१७९) ८।१०१।१३ (जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा)
 चित्रेव प्रत्यदृश्ययति ।
 [१७३] ७।८१।१ =(११) १।४८।८
 उषोतिष्कृणोति सूनरी ।

× [दै०- अग्निः, २०६ पृष्ठे ऋग्वेदस्य सप्तमे मण्डले एष मन्त्रभागो द्रष्टव्यः ।]

[१७३] ७।८१।१ = (११) १।४८।८ उच्छन्ती (८ मघोनी) दुहिता दिवः ।	[१७८] ७।८१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः) अवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ।
[१७८] ७।८१।६ = (११) १।४८।८ उषा उच्छदप स्त्रियः ।	(इन्द्रः ३३२) ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [१७९] ८।१०१।१३ (जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा)
चित्रेव प्रत्यदृश्यायति ।
(१७३) ७।८१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः)
प्रत्यु अदृश्यायति ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां सूची ।

अचेति दिवो दुहिता	१६३	उच्छन्ती या कृणोषि	१७६
अच्छा वो देवीमुषसं	८९	उच्छन्तीरद्य चितयन्त	२४
अजैष्माद्यासनाम	१९१	उच्छा दिवो दुहितः	१३७
अतारिष्म तमसः	२९	उत नो गोमतीरिष	११७
अधि पेशांसि वपते	२७	उत सखास्यश्विनोः	१०५
अन्तिवामा दूरे अमित्र०	१५७	उत् ते वयश्चिद् वसतेः	८३; १३१
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति	६५	उदपसन्नरुणा भानवो वृथा	२५
अभि ये स्वा विभावरि	११३	उदीरतां सृजता उत्	६४
अभूदुषा इन्द्रतमा	१६७	उदीर्ध्व जीवो असुर्न	५४
अभ्रातेव पुंस एति	७८	उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं	१४७
अमिनती दैव्यानि व्रतानि	७३	उदु श्रिय उषसो रोचमाना	१२६
अर्चन्ति नारीरपसो	२६	उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः	१७४
अव स्यूमेव चिन्वती	८८	उपो अदर्शि शुन्ध्युवो	७५
अवेयमश्चैद् युवतिः	८२	उपो रुक्च युवतिर्न योषा	१५४
अश्वावतीर्गोमतीः	५, ७०; १३८; १७२	उवासोषा उच्छाच्च नु	६
अश्वेव चित्रारुषी	१०४	उष आ भाहि भानुना	१२
अस्तोद्वं स्तोम्या ब्रह्मणा	८४	उषः प्रतीची भुवनानि	८७
अस्थुर चित्रा उषसः	९३	उषस्तच्चित्रमा भर	३६
अस्मे श्रेष्ठेभिर्मानुभिः	१५८	उषस्तमश्यां यशसं	३१
आ वा योषेव सूनर्युषा	८	उषा अप स्वस्तुस्तमः	१८३; १८६
आ यां तनोषि रश्मिभिः	१०९	उषा उच्छन्ती समिधाने	७२
आपपुषी विभावरि	१०८	उषासानक्ता बृहती	१२२
आ याहि वनसा सह	१८०	उषा अघेह गोमती	३७
आ याहि वस्या धिया	१८१	उषा देव्यमर्त्या वि	८६
आवहन्ती पोष्या वार्याणि	५३	उषा भद्रेभिरा गहि	२०
आसां पूर्वामहसु	८०	उषो यदग्निं समिधे चकर्थ	४७
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः	३९	उषो यदद्य भानुना	१८
इदसु त्यत् पुरुतमं	९२	उषो ये ते प्र यामेषु युजते	७
इदा हि त उषो अद्रिसानो	१३६	उषो वाजं हि वंस	१४
इदा हि वो विधत्ते	१३५	उषो वाजेन वाजिनि	८५
इयं या नीच्यर्किणी	१७३	ऋतस्य बुध उषसामिषण्यन्	९१
इयुष्टे ये पूर्वतराम्	४९	ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना	७१
		ऋतावरी दिवो अर्कैः	९०

एता उ त्या उषसः केतुं	२४
एता उ त्याः प्रत्यहश्रन्	१६२
एतावद् वेदुषस्त्वं	११२
एते स्ते भानवो दर्शताया०	१४१
एवेदेषा पुरुतमा दशे कं	७७
एषा गोभिररुणेभिर्यजाना	१२२
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती	१२१
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि	४५, ७४
एषा नेत्री राधसः सन्तुतानां	१५३
एषा प्रतीची दुहिता दिवो	१२५
एषायुक्त परावतः	१०
एषा व्येनी भवति द्विबर्हाः	१२३
एषा शुभ्रा न तन्वो विदाना	१२४
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना	१७१
एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः	१३२
एषा स्या युजाना पराकात्	१४२
ऐषु धा वीरवद् यशः	११५
कन्येव तन्वा शाशदानां	६८
कस्त उषः कधप्रिये	१
क्रियात्या यत् समया भवाति	४८
कुवित् स देवीः सनयो नवो वा	९५
क स्विदासां कतमा पुराणी	९७
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया	४४
गृह्णगृहमहना थाल्यच्छा	६२
जानत्यहः प्रथमस्य नाम	६७
जिह्मस्ये चरितवे मघोनी	४३
त इद् देवानां सधमाद	१५०
तच्चित्रं राध आ भर	१७७
तदज्ञाय तदपसे	१८९
तद् वो दिवो दुहितरो विभातीः	१०२
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्	९९
ता इन्वेव समना समानीः	१००
ता धा ता भद्रा उषसः पुरासुः	९८
तानीदहानि बहुलान्यासन्	१४९
तावदुषो राधो अस्मभ्यं राख	१६८
तेभ्यो वुम्रं बृहद् यशः	११६
त्वं स्तेभिरा गहि	३

देवंदेवं राधसे चोदयन्ती	१६९
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती	१५६
देवी उषासानक्ता	१२३; १९४
द्युतयामानं बृहतीं	१२०
निष्कं वा धा कृणवते	१८८
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि	१४६
परायतीनामन्वेति पाथ	४६
प्रशुन्न चित्रा सुभगा प्रथाना	३५
पितुभृतो न तन्तुमित्	१८२
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी	३३
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि	६०
पूर्वे अर्धे रजसो अपत्यस्य	७६
पृथू रथो दक्षिणाया अयो०	५९
प्रति केतवः प्रथमा अदृशन्	१६०
प्रति त्वा दुहितर्दिवः	१७५
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्त	१६४
प्रति त्वा स्तौमैरीळते बसिष्ठा	१५२
प्रति द्युतानामरुषासो	१४४
प्रति भद्रा अदृक्षत	१०७
प्रति धीमभिर्जरते समिद्धः	१६१
प्रति ध्या सूनरी जनी	१०३
प्रति स्तोमेभिरुषसं	१७०
प्रत्यर्चां रुशदस्या अदर्शि	२८
प्रत्यु अदर्श्यायत्यु (त्यू) च्छन्ती	१७३; १८५
प्र बोधयोषः पृणतो मघोनि	८१
प्र मे पन्था देवयाना अदृशन्	१४८
भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिः	६३
भद्रा ददृक्ष उर्विया वि भासि	१२७
भास्वती नेत्री सन्तुतानां	३०; ४२
महे नो अद्य बोधय	११०
महे नो अद्य सुविताय	१४०
माता देवानामदितेरनीकं	५७
यच्च गोषु दुःष्वप्स्यं	१८७
यच्चित्रमप्य उषसो वहन्ति	५८
यच्चिद्धि ते गणा इमे	११४
यथा कलां यथा शफं	१९०
यदद्य भागं विभजसि	६१

यस्या रुशन्तो अर्चयः	१६
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा	५६
यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्ति	१५९
यावयद् द्वेषसं त्वा	१०६
यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः	५०
या सुनीये शौचद्रये	१११
युक्ष्वा हि वाजिनीवती	३८
यूयं हि देवीऋतयुग्मिरश्वैः	९६
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये	१७
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः	१०१
रुशद्रत्सा रुशती श्वेत्यागा०	४०
चयं हि ते अमन्महि	२
वयश्चित् ते पतत्रिणो	२२
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो	१२८
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा	१४३
वि तद् ययुररुणयुग्मिरश्वैः	१३३
वि या सृजति समनं व्यर्थिनः	९
विश्वमस्या नानाम चक्षसे	११
विश्वं प्रतीची सप्रथाः	१५५
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे	१३
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या	३२
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये	१५
व्यजते दिवो अन्तेष्ववतून्	१६६

व्यजिभिर्दिव आतास्वयौ०	५२
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिः	२३
व्युच्छा दुहितर्दिवो	११८
व्युषा आवः पथ्या जनानां	१६५
व्युषा आवो दिविजा ऋतेन	१३९
व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोधि	२४
शश्वत् पुरोषा व्युवास देवी	५१
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं	१७८
श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीः	१३४
संज्ञानमसि कामधरणं	१८४
सत्या सत्येभिर्महती महद्भिः	१४५
सदृशीरथ सदृशीरिदु श्वो	६६
सं नो राया बृहता विश्वपेशसा	१९
समान ऊर्वे अधि संगतासः	१५१
समानो अध्वा स्वत्पोरनन्त०	४१
सह वामेन न उषो	४
सा नो अयाभरद् वसुः	११२
सा वह योक्षभिरवातो०	१३०
सुगोत ते सुपथा पर्वतेषु	१२९
सुपेशसं सुखं रथं	२१
सुसंकाशा मातृमृष्टेव	६२
स्यूमना वाच उदिर्यति वह्निः	५५
स्वसा स्वस्ते ज्यायस्यै	७९

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवता-मन्त्राणां उपमा-सूची ।

अजिरः न वोल्हा ६,६४,६; १२८ तमः बाधते ।
 अद्वासत् न १,१२४,४; ७५ ससतः बोधयन्ती ।
 अपसः न १,९२,३; २६ नारीः विष्टिभिः आ परावतः अर्चन्ति ।
 अपां न ऊर्मयः ६,६४,१; १२६ उषसः श्रियः उत् अस्थुः ।
 अभाता इव प्रतीची १,१२४,७; ७८ उषा एति ।
 अश्वा इव ४,५२,२; १०४ चित्रा अरुषी उषा ।
 अस्ता इव ६,६४,३; १२८ शूरा शत्रून् अपेजते ।
 उक्षा इव बर्जहम् १,९२,४; २७ उषा वक्षः अपोर्णते ।
 (यथा) ऋणम् ८,४७,१७; १९० दुःस्वप्न्यं आप्ले संनयामसि ।
 कन्या इव १,१२३,१०; ६८ तन्वा शाशदाना ।
 (यथा) कलाम् ८,४७,१७; १९० दुःस्वप्न्यं आप्ले संनयामसि ।
 गर्तास्क् इव १,१२४,७; ७८ धनानां सनये गर्त एति ।
 गवां सर्गाः न ४,५१,८; ९९ ऋतस्य सदसः बुधानाः जरन्ते ।
 गवां सर्गाः न ४,५२,५; १०७ उरु ज्ञयः आ अप्राः ।
 गावः न व्रजम् १,९२,४; २७ विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः ।
 चक्रं इव ३,६१,३; ८७ समानं अर्थं चरणीयमाना ।
 चन्द्रा इव ३,६१,७; ९१ माया पुरुत्रा मानुं वि दधे ।
 (यथा) चित् ५,७९,१; ११० नः अबोधयः ।
 चित्रा इव ८,१०१,१३; १७८ आयती प्रत्यदर्शि ।
 जाया इव पले उशती सुवासाः १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः ।
 जारः इव ७,७६,३; १४९ परि आ चरन्ती ।
 तन्तुं ततं इव वा० य० २०,४१; १९२ पेशसा संवयन्ती ।
 (आयुधानि इव) घृण्वः १,९२,१; २४ निष्कृण्वानः गावः प्रति ।
 नृत्तः इव १,९२,४; २७ पेशांसि अधि वपते ।
 नोधाः इव १,१२४,४; ७५ प्रियाणि आविः अकृत ।
 पशून् न १,९२,१२; ३५ प्रथाना उर्विया व्यश्नैत् ।
 पितृभूतः न १०,१७२,३; १८२ तन्तुं इत् प्रति दध्मः ।
 पूर्व्या १,९२,२; २५ वयुनानि अक्रन् ।
 पूर्व्या ५,८०,६; १२५ युवतिः पुनः ज्योतिः अकः ।
 प्रजानती इव १,१२४,३; ७४ ऋतस्य पन्थां साधु एति ।
 प्रजाननी इव ५,८०,४; १२३ दिशः न मिनाति ।

प्रतनवत् ६,६५,६; १३७ नः उच्छ ।
 भद्रा योषा इव ५,८०,६; १२५ नृन् अप्सः नि रिणीते ।
 भरद्वाजवत् ६,६५,६; १३७ नः धनं रिरीहि ।
 मातुः न सूनवः ७,८१,४; १७६ वयं ते स्याम ।
 यती इव ७,७६,३; १४९ पुनः न ददक्षे ।
 युवतिः [इव] १,१२३,१०; ६८ संस्मयमाना वक्षांसि आविः ।
 युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१ सूर्यं आचिकितत् ।
 युवतिः न योषा ७,७७,१; १५४ उप रुच्ये ।
 योषा इव सूनरी १,४८,५; ८ प्रभुजती घा आ याति ।
 योषा इव १,१२३,११; ६९ सुसंकाशा तन्वं दशे आविः कृणुषे ।
 रत्नं न ७,८१,३; १७५ दाशुषे पुरु स्पाहं वहसि ।
 (वृषभस्य) रवेण ७,७९,४; १६८ त्वा प्रकाशेन जज्ञुः ।
 (यथा) रात्री सवितुः प्रसूता १,१२३,१; ३९ उषसे सवायं ।
 चायोः इव १,१२३,१८; ५६ सूनूतानां उदकं ।
 विशः न युक्ताः ७,७९,२; १६६ उषासः अक्तून् यतन्ते ।
 (समनगा इव) त्राः १,१२४,८; ७९ एषा अजि अह्क्ते ।
 (यथा) शफम् ८,४७,१७; १९० दुःस्वप्न्यं आप्ले संनयामसि ।
 शुन्ध्युवः न वक्षः १,१२४,४; ७५ एषा उपो अदर्शि ।
 शुभ्रा न ५,८०,५; १२४ तन्वः विदाना नः दशये अस्थात् ।
 (समुद्रे न) श्रवस्यवः १,४८,३; ६ अस्याः आचरणेषु रथाः ।
 श्रिये छन्दः न १,२२,६; २९ विभाती उषाः स्मयते ।
 श्वघ्नी इव कृतुः १,९२,१०; ३३ मर्तस्य आयुः जरयन्ती ।
 सविता इव बाहू ७,७९,२; १६६ उषसः ज्योतिः यच्छन्ति ।
 सिन्धुः न क्षोदः १,९२,१२; ३५ उषाः उर्विया व्यश्नैत् ।
 (उद्यन्) सूर्यः [इव] १,१२४,१; ७२ उर्विया ज्योतिः अश्रेत् ।
 (रिपुं) स्तेनं यथा ५,७९,२; ११८ त्वां अर्चिषा नेत् तपाति ।
 स्यूमा इव ३,६१,४; ८८ (तमः) अव चिन्वती उषा याति ।
 (अच्वरेषु मिताः) खरवः इव ४,५१,२; २३ चित्राः उषसः ।
 (विदथेषु) खरं न १,९२,५; २८ पेशः उषा अनक्ति ।
 स्नाती ऊर्ध्वा इव ५,८०,५; १२४ उषाः नः दशये अस्थात् ।
 हस्ता इव १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः नि रिणीते ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवताया गुणबोधक-पदानि ।

अङ्गिरस्तमा ७,७९,३; १६७
 अजरा १,११३,१३; ५१
 अजुयाः ४,५१,६; ९७
 अदितेः अनीकम् १,११३,१९; ५७
 अद्रिसानुः ६,६५,५; १३६
 अष्वा समानः स्वस्रोः १,११३,३; ४१
 अनवद्याः १,१२३,८; ६६
 अनीकम् अदितेः १,११३,१९; ५७
 अनुयच्छमाना ऋतस्य रश्मिम् १,१२३,१३; ७१
 अनूची [राज्युषसौ] १,११३,२; ४०
 अन्तिवामा ७,७७,४; १५७
 अभिपश्यन्ती जनानां वयुना ७,७५,४; १४२
 अमिष्टियुग्राः ४,५१,७; ९८
 अमर्त्या ३,६९,२; ८६
 अमिनती दैव्यानि व्रतानि १,२२,१२; ३५ । १२४,२;
 ७१
 अमीतवर्णा ४,५१,९; १००
 अमृतस्य केतुः ३,३९,३; ८७
 अमृता १,११३,१३; ५१
 अमृते [राज्युषसौ] १,११३,२; ४०
 अरुणप्सुः ५,८०,१; १२०
 अरुषी १,३०,२१; २ । २२,१-२; २४-२५ । ४,५२,
 २; १०४
 अर्किणी ८,१०१,१३; १७९
 अर्या १,१२३,१; ५९
 अवाता ६,६४,५; १३०
 अश्वदाः १,११३,१८; ५६
 अश्वं नयन्ती सुदृशीकं श्वेतम् ७,७७,३; १५६
 अश्वसूनुता ५,७९,१-१०; ११०-११२
 अश्वा १,३०,११; २
 अश्वावती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । १२३,
 १२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 असितं अभवं गृह्णन्तीः ४,५१,९; १००
 अश्विनोः सखा ४,५२,२-३; १०४-१०५
 अस्त्रेणन्ती ५,८०,३; १२२
 अहना १,१२३,४; ६२

अहः प्रथमस्य नाम जानती १,१२३,९; ६७
 अह्नां नेत्री ७,७७,२; १५५
 आपप्रुषी ४,५२,६; १०८
 आभरद्वसुः ५,७९,३; ११२
 आमिनाना विजः १,९२,१०; ३३
 आमिनाने वर्णम् [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
 आयती ३,६१,६; ९० । ७,८१,१; १७३ ।
 साम० ३०३; १८५
 आयती अन्तः दशसु बाहुषु ८,१०१,१३; १७९
 आयतीनां प्रथमा १,१२४,२; ७३
 आयुः जरयन्ती १,९२,१०; ३३
 आयुः प्रतिरन्ती ७,७७,५; १५८
 आवहन्ती परेष्या वार्याणि १,११३,१५; ५३
 आवहन्ती स्वर ५,८०,१; १२०
 आविष्कृष्वती विश्वा भुवनानि ७,८०,१; १७०
 आविष्कृष्वाना तन्वम् ५,८०,४; १२३
 आविष्कृष्वाना महिमानम् ७,७५,१; १३९
 इन्द्रतमा ७,७९,३; १६७
 इषं दधती ७,७७,५; १५८
 इषं वहन्ती १,९२,३; २६
 ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा १,११३,१५; ५३
 ईरयन्ती सूनृता १,११३,१२; ५० । ३,६०,२; ८६ ।
 ७,७९,५; १६९
 ईशाना वस्वः विश्वस्य पार्थिवस्य १,११३,७; ४५
 ईशिषे वस्वः ४,५२,३; १०५
 ईशे वसूनां रायः ७,७५,५; १४३
 उच्छन्ती १,९२,६; २९ । १२४,१; ७२ । ४,५१,३;
 ९४ । ६,६५,१; १३२ । ७,७६,७; १५३ । ८१,१,
 ४; १७३,१७६ । साम० ३०३; १८२
 उच्छन्ती व्रजस्य तमराः द्वारा ४,५१,२; ९३
 उदीरयन्ती जीवम् १,११३,८; ४६
 उपमा ईयुषीणां शश्वतीनाम् १,११३,१५; ५३ । १२४,
 २; ७३
 उर्विष्वा १,९२,१२; ३५ । ६,६४,२,३; १२७; १२८

उषाः } प्रायः सर्वत्र ।
उषसः }

ऋतजातसत्या ४,५१,७; ९८

ऋतपाः १,११३,१२; ५०

ऋतस्य सदसः ४,५१,८; ९९

ऋतावरी ३,६९,६; ९० । ४,५२,२; १०४ । ५,८०, १; १२०

ऋतेजाः १,११३,१२; ५०

ऋषिष्टुता ७,७५,५; १४३

ऋष्या ६,६४,४; १२९

ऋषीणां शश्वत्तमा १,१२४,४; ७५

ओदती १,४८,६; ९

कधप्रिया १,३०,२०; १

कृष्णती ज्योतिः भुवनाय १,९२,४; २७

कृष्णती पथः सुगान् ५,८०,२; १२१

कृतुः १,९२,१०; ३३

केतुः १,१२४,११; ८२

केतुः अमृतस्य ३,६१,३; ८७

केतुः यज्ञस्य १,११३,१९; ५७

गवां जनित्री १,१२४,५; ७६

गवां नेत्री ७,७६,६; १५२

गवां माता ४,५६,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,१; १५५

गावः १,९२,१; २४

गूहन्ती अम्भं असितम् ४,५१,९; १००

गृणाना ७,७९,४; १६८

गृणाना वह्निभिः ७,७५,५; १४३

गोभिः अरुणेभिः युजाना ५,८०,३; १२२

गोमती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । ११३ १८; ५६ । १२३,१२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२

घृतं दुहाना ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२

चन्द्ररथा ३,६१,२; ८६ । ६,६५,२; १३३

चरणीयमानां समानं अर्थम् ३,६१,३; ८७

चरायै विश्वं जीवं प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४

चिकित्वित् ४,५२,४; १०६

चिकित्सन्ती मानुषाणां क्षयाय १,१२३,१; ५९

चित्रा १,३०,११; २ । ९२,१२; ३५ । ११३,४; ४२ । ४,५१,२; ९३

चित्रामघा १,४८,१०; १३ । ७,७५,५; १४३ ।

७७,३; १५६

चेकिताना १,११३,१५; ५३

चोदयन्ती देवदेवं राघसे ७,७९,५; १६९

चोदयित्री मघोनः ७,८१,६; १७८

जननी स्वर् ३,६१,४; ८८

जनानां पथ्या ७,७९,१; १६५

जनानां वयुना अभिपदयन्ती ७,७५,४; १४२

जनियो गवाम् १,१२४,५; ७६

जनी ४,५१,१; १०३

जयन्ती वाजम् १,१२३,२; ६०

जरयन्ती मर्तस्य आयुः १,९२,१०; ३३

जरयन्ती वृजनम् १,४८,५; ८

जानती प्रथमस्य अहः १,१२३,९; ६७

जामिः वरुणस्य १,१२३,५; ६३

जायमाना पुनःपुनः १,९२,१०; ३३

जारयन्ती १,१२४,१०; ८१

जारस्य योषा १,९२,११; ३४

जीरा रथानाम् १,४८,३; ६

जीवं उदीरयन्ती १,११३,८; ४६

ज्योतिः कृष्णती भुवनस्य १,९२,४; २७

ज्योतिः यच्छन्ती ७,७८,३; १६२

ज्योतिः वसाना १,१२४,३; ७४

ज्योतिषा [निवारयन्ती] गूढवी तमः ७,८०,२; १७१

ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः १,११३,१; ३९

तन्वं आविष्कृण्वाना ५,८०,४; १२३

तन्वः विद्वाना ५,८०,५; १२४

तमः गूढवी ज्योतिषा (निवारयन्ती) ७,८०,१; १७१

तमांसि अप बाधमाना ५,८०,५; १२४ । ७,७८,२; १६१

तमांसि बाधमाना ७,७७,१; १५४

दक्षिणा १,१२३,१,५; ५९,६३; ६,६४,१; १२६

दधती इषं राघः (च) ७,७८,५; १५८

दधाना नव्यं आयुः ७,८०,२; १७१

दधाना नाम अधि १,१२३,४; ६२

दधाना रयि दीर्घश्रुतम् ७,७६,७; १५३

दर्शिता ५,८०,२; १२१। ६,६४,५; १३०। ७,७५,
३; १४१
दाशुषे वार्याणि व्यूर्ण्वती ५,८०,६; १२५
दास्वती १,४८,१; ४
दिवः अन्तान् व्यूर्ण्वती १,९५,११; ३४
दिविजाः ७,७५,१; १३९
दिवोजाः ६,६५,१; १३२
दिविस्मती ५,७९,१; ११०
दिवो दुहिता-तरः १,३०,२२; ३। ४८,१,८-९; ४,
११-१२। ४९,२; २१। ९२,५,७; २८,३०। ११३,
७; ४५। १२४,३; ७४। ४,५१,१,१०; ९२,
१०१। ४,५२,१; १०३। ५,७९,२-३, ८-९;
११०-१११, ११७-११८। ८०,५-६; १२४-१२५।
६,६४,४-५; १२९-१३०। ६५,६; १३७। ७,७५,
४; १४२। ७७,६; १५९। ७८,४; १६३।
७९,३; १६७। ८१,१,३,५; १७३, १७५, १७७। ८,
४७, १४-१५; १८७-१८८। साम० ३०३; १८५
दुरिता विश्वा अप बाधमाना ७,७८,२; १६१
दुहानाः घृतम् ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२
दुहिता ६,६५,१; १३२
दुहिता दिवः 'दिवो दुहिता' द्रष्टव्यम्।
दृशाना सूर्यस्य रश्मिभिः १,११३,१२; ३५
देवदेवं राघसे चोदयन्ती ७,७९,५; १६९
देववीर्ति बिभ्रती १,११३,१२; ५०
देवशिष्टे [रात्र्युषसौ] १,११३,३; ४१
देवाना चक्षुः वहन्ती ७,७७,३; १५६
देवानां माता १,११३,१९; ५७
देवी-वीः १,४८,१,३, १५; ४,६,१८। ९२,२-१०
३२-३३। ११३, १३-१४; ५१-५२। १२३, ३, १०;
६१, ६८। १२४, १२-१३; ८३-८४। ३, ६१, १-२, ५;
८५-८६, ८९, ५१, ४-५, ८, १०; ९५-९६, ९९, १०१।
५, ८०, १, ३; १२०, १२२। ६, ६४, २, ५-६; १२७,
१३०-१३१। ७, ७५, १, ७; १४०, १४५। ७७, ५;
१५८। ७८, २; १६१। ७९, ३; १६७। ८१, ४;
१७६। वा० य० २८, १४, ३७; १९३-१९४।
द्युतदामा (मन्) ५, ८०, १; १२०
द्युताना ७, ७५, ६; १४४
द्योतना १, १२३, ४; ६२
द्विबर्हीः ५, ८०, ४; १२३

नक्तोषासा [देवते] १, ११३, ३; ४१
नयन्ती यज्ञस्य अग्रम् ६, ६५, २; १३३
नयन्ती सुदृशीकं श्वेतं अश्वम् ७, ७७, ३; १५६
नव्यं आयुः दधाना ७, ८०, २; १७१
नव्यसी-सीः ३, ६१, ३; ८७। १, १२४, ९; ८०
नाम अधि दधाना १, १२३, ४; ६२
नारीः १, २२, ३; २६
निष्कृतं अहरहः आचरन्ती १, १२३, ९; ६७
नीची ८, १०१, १३; १७९
नेत्री अह्नाम् ७, ७७, २; १५५
नेत्री गवाम् ७, ७६, ६; १५२
नेत्री सूतृतानाम् १, ९२, ७; ३०। ११३, ४; ४२।
७, ७६, ७; १५३
पत्यमानाः ६, ६५, ३; १३४
पत्नी भुवनस्य ७, ७५, ४; १४२
पत्नी खसरस्य ३, ६१, ४; ८८
पथः रदन्ती सुविताय ५, ८०, ३; १२२
पथः सुगान् कृण्वती ५, ८०, २; १२१
पथ्या जनानाम् ७, ७९, १; १६५
पप्रथानाः समानतः समना ४, ५१, ८; ९९
पयस्वती वा० य० २०, ४१; १९२
पराकात् युजाना ७, ७५, ४; १४२
पावकाः ४, ५१, २; ९३
पुनःपुनः जायमाना १, ९२, १०; ३३
पुनर्भूः १, १२३, २; ६०
पुरन्धिः ३, ६१, १; ८५
पुराणी १, ९२, १०; ३३। ३, ६१, १; ८५। ४, ५१, ६
९७
पुरुतमा १, १२४, ६; ७७
पुरुष्टुता ५, ८०, २; १२२
पूर्वद्वतौ प्रथमा १, १२३, २; ६०
पृणन्ती उभा १, १२४, ५; ७६
पृथुयामा (मन्) ६, ६४, ४; १२९
प्रचेताः ३, ६१, १; ८५
प्रजानती इव १, १२४, ३; ७४। ५, ८०, ४; १२३
प्रतिबुध्यमानाः स्थोनात् वः ४, ५१, १०; १०१
प्रतिरन्ती आयुः ७, ७७, ५; १५८
प्रतीची १, ९२, ९; ३२। ५, ८०, ६; १२५। ७, ७६, २;
१४८

प्रतीची पुंसः १,१२४,७; ७८
 प्रतीची विश्वम् ७,७७,२; १५५
 प्रतीची विश्वा भुवनानि ३,६१,३; ८७
 प्रथमा १,१२३,५; ६३ । ७,७६,६; १५२
 प्रथमा आयतीनाम् १,१२४,२; ७३
 प्रथमा आयतीनां शश्वतीनाम् १,११३,८; ४६
 प्रथमा पूर्वहृतौ १,१२३,२; ६०
 प्रथमा विभातीनाम् १,११३,१५, ५३
 प्रथमा विश्वस्मात् भुवनात् १,१२३,२; ६०
 प्रथाना १,९२,१२; ३५ । ६,६४,३; १२८
 प्रदीप्याना अन्याभिः १,११३,१०; ४८
 प्रपीताः विश्वतः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 प्रबोधयन्ती अरुणैः अश्वैः १,११३,१४; ५२
 प्रबोधयन्ती ससन्तम् ४,५१,५; ९६
 प्रमुञ्जती १,४८,५, ८
 प्रभूता विश्वं अनु ७,७७,३; १५६
 प्रमिनती मनुष्या युगानि १,९२,११; ३४ । १२४,२; ७२
 प्रकास्तिष्ठत् १,११३,१९; ५७
 प्रसुवन्ती विश्वं जीवं चरायै ७,७७,१; १५४
 बाधमाना तमांसि द्वेषः अप ५,८०,५; १२४
 बाधमाना तमांसि विश्वा दुरिता अप ७,७८,२; १६१
 बाधमाना तमांसि ७,७७,१; १५४
 बिभ्रती देववीतिम् १,११३,१२; ५०
 बिभ्रती रुशत् शुक्रं वासः ७,७७,२; १५५
 बृहती १,११३,१९; ५७ । ५,८०,२; १२१ । वा० य०
 २०,४१; १९३
 बृहती ऋतेन ५,८०,१; १२०
 बृहदथा ५,८०,२; १२१
 बोधयन्ती जनम् ५,८०,२; १२१
 बोधयन्ती पञ्चमानुषीः क्षितीः ७,७९,१; १६५
 बोधयन्ती विश्वं जीवम् १,९२,२; ३२
 बोधयन्ती ससतः १,१२४,४; ७५
 भगस्य स्वसा १,१२३,५; ६३
 भद्रा १,१२३,११; ६९ । ६,६४,२; १२७
 भद्राः ४,५१,७; ९८ । ७,४१,७; १३८ । ८०,३;
 १७२
 भद्रा नाम बहमानाः १,१२३,१२; ७०
 भास्वती १,९२,७; ३०
 भुवनस्य पत्नी ७,७५,४; १४२

भुवनानि विश्वा आविष्कृष्वती ७,८०,१; १७०
 भुवनानि विश्वा प्रतीची ३,६१,३; ८७
 मंहना ७,८१,४; १७६
 मंहना पूर्वहृतौ ६,६४,५; १३०
 मघोनः चोदयित्री ७,८१,६; १७८
 मघोनी १,४८,८; ११ । ११३,५,१३,१७; ४३,५१,
 ५५ । १२४,१०; ८१ । ३,६१,४; ८८ । ४,५१,३
 ९४ । ५,७९,४,६-७; ११३,११५-११६ । ६,६४,१;
 १२६ । ६५, ३, ६; १३४,१३७ । ७, ७५, ५;
 १४५ । ७७,४; १५७ । ७८,४; १६३ । ७९,३;
 १६९
 मधुघा ३,६९,५; ८९
 मर्त्यत्रा १,१२३,३; ६१
 महती ७,७५,७; १४५
 महिमानं आविष्कृष्वाना ऋतेन ७,७५,१; १३९
 मही ३,६९,७; ९१ । ७,८१,४; १७६
 मातरः १,९२,१; २४
 माता गवाम् ४,५२,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,२;
 १५५
 माता देवानाम् १,११३,१९; ५७
 मातृमृष्टा १,१२३,११; ६९
 माया मित्रस्य वरुणस्य ३,६१,७; ९१
 मृतं बोधयन्ती १,११३,८; ४६
 यच्छन्तीः ज्योतिः ७,७८,३; १६२
 यजता ७,७५,७; १४५
 यज्ञस्य केतुः १,११३,१९; ५७
 यतमानाः सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२३,१२; ७०
 यावयद् द्वेषाः १,११३,१२; ५० । ४,५२,४; १०६
 युगानि मनुष्या प्रमिनती १,९२,११; ३४ । १२४, २;
 ७२
 युजाना अरुणेभिः गौभिः ५,८०,३; १२२
 युजाना पराकात् ७,७५,४; १४२
 युवतिः १,११३,७; ४५ । १२३,२,२०; ६०,६८ ।
 १२४,११; ८२ । ३,६१,१; ८५ । ५,८०,६; १२५
 युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१
 योषा १,१२३,२; ६७
 योषा जारस्य १,९२,११; ३४
 योषा सूर्यस्य ७,७५,५; १४३

रजसी समना विवर्तयन्ती ७,८०,१; १७०
 रण्वसंद्क् ३,६१,५; ८९
 रत्नभाक् ७,८१,४; १७६
 रथानां जीरा १,४८,३; ६
 रदन्ती पथः सुविताय ५,८०,३; १२२
 रयि दीर्घश्रुतं दधाना ७,७६,७; १५३
 रश्मि ऋतस्य अनुयच्छमाना १,१२३,१३; ७१
 रश्मिभिः व्यक्ता ७,७७,३; १५६
 रश्मिभिः सूर्यस्य दशाना १,९२,१२; ३५
 रश्मिभिः सूर्यस्य यतमानाः १,१२३,१२; ७०
 रुचानाः ४,५१,९; १००
 रुचाती १,११३,२; ४०
 रुद्राद्वत्सा १,११३,२; ४०
 रुशन्तः ६,६४,१,३; १२६,१२८
 रूपा ८,१०१,१३; १७९
 रेवती ४,५१,४; ९५
 रोचना ३,६१,५; ८९
 रोचमानाः ६,६४,१; १२६
 रोहिण्या ८,१०१,१३; १७९
 वनन्वती ७,८१,३; १७५
 वरुणस्य जामिः १,१२३,५; ६३
 वर्ण आमिनानि [नक्तोषासा] १,११३,२; ४०
 वसाना ज्योतिः १,१२४,३; ७४
 वसूनां रायः ईशे ७,७५,५; १४३
 वस्वः ईशिषे ४,५२,३; १०५
 वस्वी ६,६४,१; १२६
 वहन्तीः इषम् १,२२,३; २६
 वहन्तीः दाशुषे श्रवः वाजं इषं ऊर्जम् ६,६५,३; १३४
 वहन्ती देवानां चक्षुः ७,७७,३; १५६
 वह्निभिः गृणाना ७,७५,५; ११३
 वाजं जयन्ती १,१२३,२; ६०
 वाजपत्नी ७,७६,६; १५२
 वाजप्रसूता १,२२,८; ३१
 वाजिनी वाजेन ३,६१,१; ८५
 वाजिनीवती १,४८,६,१६; ९,१९ । १२३,१३,१५;
 ३६,३८ । ७,७५,५; १४३
 वार्याणि पोण्या आवहन्ती १,११३,१५; ५३
 वार्याणि व्यूर्ध्वती ५,८०,६; १२५

वावशाना पूर्वाः १,११३,१०; ४८
 विजः आमिनाना १,९२,१०; ३३
 विदाना तन्वः ५,८०,५; १२४
 विभाती १,९२,६; २९ । १२३,१०; ६८ । १२४,६;
 ७७ । ३,६१,५-६; ८९-९० । ४,५१,१,१०-११; ९२,
 १०१-१०२ । ५,८०,१; १२० । ७,७८,४; १६३
 विभातीः १,११३,१७; ५५ । १२३, ६; ६४ ।
 ७,७८,३,५; १६२,१६४
 विभातीनां प्रथमा १,११३,१५; ५३
 विभावरी १,३०,२०; १ । ४८,१,१०; ४,१३ । ९२,
 १४; ३७ । ४,५२,६; १०८ । ५,७९,४,१०; ११३,
 ११९ । ८,४७,१४; १८७
 विरूपे [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
 विवर्तयन्ती रजसी समन्ते ७,८०,१; १७०
 विवासयन्ती १,११३,११; ४९
 विश्वं अनु प्रभूता ७,७७,३; १५६
 विश्वं जीवं चरायै प्रसुवन्ती ७,७७,२; १५४
 विश्वं प्रतीची ७,७७,२; १५५
 विश्वतः प्रपीताः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 विश्वमिन्वा ५,८०,२; १२१
 विश्ववारा १,११३,१९; ५७ । ३,६१,१; ८५ । ५,
 ८०,३; १२२ । ७,७७,५; १५८
 विश्ववाराः १,१२३,१२; ७०
 विश्वसुविदः १,४८,२; ५
 विश्वस्य वस्वः पार्थिवस्य ईशाना १,११३,७; ४५
 विहायाः १,१२३,१; ५९
 वीरवतीः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२
 वृजनं जरयन्ती १,४८,५; ८
 व्रतानि दैव्यानि अमिनती १,९२,१२; ३५ । १२३,२;
 ७३
 व्यक्ता रश्मिभिः ७,७७,३; १५६
 व्युच्छन्ती [तमांसि] १,४८,२; १२ । ४९,४; २३ ।
 ११३,७-८; ४५-४६ । ५,७९,१०; ११९ । ७,७९,
 ५; १६९
 व्युच्छन्ती सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२४,८; ७९
 व्युच्छन्ती स्वसुः परि ४,५२,१; १०३
 व्यूर्ध्वती दाशुषे वार्याणि ५,८०,६; १२५
 व्यूर्ध्वती दिवो अन्तान् १,९२,११; ३४
 व्येनी ५,८०,४; १२३

शाश्वत्तमा एयुषीणाम् १,१२४,४; ७५
 शाश्वदाना १,१२३,१०; ६८
 शाश्वदाना अरेपसा तन्वा १,१२४,६; ७७
 शुक्रा १,१२३,९; ६७
 शुक्राः रुशङ्गिः तनूभिः ४,५१,९; १००
 शुक्रं वासः विभ्रती ७,७७,२; १५५
 शुक्रवासाः १,११३,७; ४५
 शुचयः ४,५१,२,९; ९३,१००
 शुभ्राः ४,५१,६; ९७ । ७,७५,६; १४४
 शुम्भमाना १,९२,१०; ३३
 शुम्भमाना महोभिः ६,६४,२; १२७
 श्रेष्ठतमा १,११३,१२; ५०
 श्वितीची १,१२३,९; ६७
 श्वेत्या १,११३,२; ४०
 संस्रयमाना १,१२३,१०; ६८
 सखा अश्विनोः ४,५२,२-३; १०४-१०६
 सत्या ७,७५,७; १४५
 सदसः ऋतस्य ४,५१,८; ९९
 सदशीः ४,५१,६; ९७
 सदशीः अथ १,१२३,८; ६६
 सदशीः श्वः १,१२३,८; ६६
 सनुत्री १,१२३,२; ६०
 सप्रथाः ७,७७,२; १५५
 समनसा [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
 समना ४,५१,८-९; ९९-१००
 समना पप्रथानाः ४,५१,८; ९९
 समानबन्धू [नक्तोषासा] १,११३,२; ४४
 समानीः ४,५१,९; १००
 सर्ववीराः १,११३,१८; ५६
 ससतः बोधयन्ती १,१२४,४; ७५
 ससन्तं प्रबोधयन्तीः ४,५१,५; ९६
 सिषासन्ती १,१२३,४; ६२
 सुजाता १,१२३,३; ६१ । ५,७९,१-१०; ११०-
 ११९ । ७,७६,६; १५२ । ७,७६; १५९
 सुदंसा ३,६१,४; ८८
 सुदिनाः १,१२४,९; ८०

सुदुघे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १९२
 सुदृशीकंसंहक् ७,७२,२; १५५
 सुधिते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १२३
 सुप्रतीका १,९२,६; २९
 सुप्रीते [उषासानक्ता] वा० य० २८,१४; १९३
 सुभगा १,४८,७; १० । ११३,७; ४५ । ९२,८,१२;
 ३१,३५ । ३,६१,४; ८८ । ६,६४,३; १२८ ।
 ७,७६,६; १५२ । ७,७३,३; १५६
 सुमङ्गली १,११३,१२; ५०
 सुमेके १,११३,३; ४१
 सुम्रावरी १,११३,१२; ५०
 सुरुक्मे [उषासानक्ता] वा० य० २०,४१; १२२
 सुविताय पथः रदन्ती ५,८०,३; १२२
 सुसंकाशा १,१२३,११; ६९
 सूनरी १,४८,५,८,१०; ८,११,२३ । ४,५२,१; १०३ ।
 ७,८१,१; १७३ । साम० ३०३; १८५
 सूनुता १,१२३,५; ६३ । १२४,१०; ८१
 सूनुतावती १,९२,१४; ३७ । ७,८१,६; १७८
 सूनुतावरी ४,५२,४; १०६
 सूनुताः ईरयन्ती १,११३,१२; ५० । ३,६१,२; ८६ ।
 ७,७९,५; १६९
 सूनुतां नेत्री १,९२,७; ३० । ११३,४; ४२ । ७,७६,७;
 १५३
 सूर्यस्य योषा ७,७५,५; १४३
 सौभाग्यं आवहन्ती १,४८,९; १२
 स्तोम्याः १,१२४,१३; ८४
 स्योनात् वः प्रतियुध्यमानाः ४,५१,१०; १०१
 स्वभातुः ६,६४,४; १२९
 स्वर आवहन्ती ५,८०,१; १२०
 स्वर जनन्ती ३,६१,४; ८८
 स्वसरस्य पत्नी ३,६१,४; ८८
 स्वसा भगस्य १,१२३,५; ६३
 स्वसारौ [नक्तोषासा] १,११३,३; ४१
 स्वसुः परि व्युच्छन्ती ४,५२,१; १०३
 हिरण्यवर्णा ३,६१,२; ८६ । ७,७७,२; १५५

अग्निदेवतामन्त्रान्तर्गत-

आग्नीसूक्तेषु ' उषासानक्ता ' -देवताया गुणबोधक-पद-संग्रहः ।

इन्द्रस्य धेनू	२०८९	मातरा	२०८९
उक्षिते	१९४७	मातरा ऋतस्य	१९२४
उपाके	१९५८; १९२४	यजते	२००८
उपाके	२०७९	यजते	२०७९
उभे	२१००	यह्नी	१९२४
उशती	१९९७	यह्नी	२०३१
उषे	२०४२	योषणे	२००८
ऋतस्य मातरा	१९२४; १९६९	योषणे	१९७२
चरन्ती मित्रावरुणा अन्तरा	२१११	योषणे दिव्ये	२०६६
ततं तन्तुं संवयन्ती	१९४७	रण्विते	१९४७
दधाने शुक्रपिशम्	२००८	वयोवृधा	१९६९
दर्शते	१९८६	वय्या इव	१९४७
दर्शते	२१००	शुक्रपिशं दधाने	२००८
दिवः दुहितरा	१९९७	विरूपे	१९५८
दिव्ये	१९७९	संवयन्ती ततं तन्तुम्	१९४७
दिव्ये (योषणे)	२००८	संविदाने	२१११
दिव्ये योषिते	२०६६	संस्मयमाने	२१३५
दुहितरः दिवः	१९९७	संजानाने	२०३१
देवी	१९९७	समीची	१९४७
धेनू इन्द्रस्य	२०८९	सवातरौ	२०८९
नृः पतिभ्यः योनिं कृण्वाने	२१३५	सनता	१९४७
पयस्वती	१९४७	सुदुधे	१९४७
पुरुहूते	१९७९	सुपेशसा	१९१२; २०४२
बर्हिषदा	१९७९	सुपेशसा	१९२४; २१३५
बृहती	१९८६	सुपेशसा	१९३६; २१००
बृहती	२००८	सुपेशसा	२०१९; २०५४
बृहती	२१००	सुपेशसा	२०३१; २०४२
बृहती	२१३५	सुप्रतीके	१९६९
भन्दमाने	१९२४	सुखमे	१९३६; २००८
मघोनी	१९७९	सुशिल्पे	१९८६ } २००८ १९९७ } २१००
मही	१९७९	सुष्वयन्ती	२८०८; २०७९
मही	१९८६	सहिरण्ये	२१११
मही	२०८९		



दैवत-संहिता ।

(९)

अदितिः, आदित्याश्च ।

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके बंबई निवासी विश्वस्तोने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वा ध्या य-म ण्ड ल, पा र डी

संवत् २०१६, शक १८८१, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य ३) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,

स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,

पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)'

पारडी (जि. सुरत)



आदित्योंके कार्य और उनकी लोकसेवा

जिस प्रकार अश्विनौ सदैव जनताके हितके लिए कार्य करनेमें लगे रहते हैं वैसे ही आदित्य अर्थात् आदिति के पुत्र भी जन-सेवाको बड़े ही स्पृहणीय ढंग से प्रचलित रखते हैं। आदिति याने अदीनता, अखंडता एवं पूर्णता के इन पुत्रोंने वीरतापूर्वक और साहस से कार्य करके एवं जनताकी रक्षा करके लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है अतः भक्त तथा उपासक इन आदित्यों से क्या कहते हैं सो वेदके शब्दोंमें देखना ठीक होगा।

जनताके सम्मुख अपनी रक्षाकी समस्या सदैव उठखड़ी होती है। अतः अपना संरक्षण भलीभाँति हो ऐसी तीव्र लालसा हमेशा जनमनमें जागृत रहती है और देवतारूपी सभी सुयोग्य एवं कार्यक्षम व्यक्तियों से इसी संबंधमें वारंवार निवेदन किया जाता है। जैसे—

अपना संरक्षण

त्यान् नु क्षत्रियान् अव आदित्यान् याचिषामहे ।
(ऋ. ८।६।७।१)

‘उन विख्यात आदित्यों के सम्मुख, जो कि क्षत्रिय हैं, हम संरक्षणकी माँग पेश करते हैं।’

महि वो महतामवो ... अवांस्याचृणीमहे ।
(ऋ. ८।६।७।४)

‘आप जैसे महान् लोगोंके संरक्षण बहुत बड़े होते हैं इसलिए हम आपकी संरक्षण आयोजनाओं को स्वीकृत करते हैं।’

महि वो महतामवो ... दाशुषे । यं आदित्या
अभि द्रुहो रक्षथा न ई अघं नशत् ... ॥ -
(ऋ. ८।४।७।१)

‘आप जैसे बड़े वीरोंका दानी पुरुषके लिए दिया हुआ संरक्षण बड़ा है क्योंकि जिसे आदित्य द्वेष्टाओं से बचाते हैं उसे पाप या बुराई घेर नहीं सकती है।’

१ दै. [आदित्य]

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि आदित्यानामुतावसि ।

(ऋ. ८।४।७।५)

‘हम लोग प्रभु इन्द्रके सुखकी या आदित्योंके संरक्षण की लज्जाया में रहें।’

... अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।

(ऋ. ८।४।७।९)

‘आप आदित्योंकी रक्षाएं निर्दोष, निष्पाप एवं सुन्दर हैं।’
आदित्या विश्वे... तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः ।
(ऋ. ७।५।१।३)

‘आप सारे आदित्य प्रशंसित होनेपर हमेशा कल्याणकारक बातों से हमारी रक्षा कीजिए।’

आदित्यानामवसा नृतनेन सक्षीमहि शर्मणा
शान्तमेन ।
(ऋ. ७।५।१।२)

‘हम लोग आदित्योंकी नई रक्षासे एवं अत्यन्त शक्तिदायक सुखसे जुड़ जायें।’

आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां ... अस्माकं सन्तु
भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोमं अवसे नो अद्य ।
(ऋ. ७।५।१।२)

‘अदिति और आदित्य हर्षित हों और हमारे भुवन के संरक्षक बनें तथा आज हमारी रक्षा करनेमें उत्साह मिल जाय इसलिए सोमरसका पान करें।’

युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्त इव वर्मसु ।

यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यथ ॥ (ऋ. ८।४।७।८)

‘हे दानी या घातमान आदित्यों! तुम्हारे सहारे हम ऐसे रहते हैं मानों कवचधारी लोग लड़ते हों, याने वे जैसे निर्भय हुआ करते वैसे ही हम हैं और आप हमें बड़े एवं छोटे पापसे बचाते हैं।’

शश्वत् हि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयं
पुरा नूनं बुभुज्महे ॥
(ऋ. ८।६।७।१६)

‘हे अच्छे दानी ! अदितिके पुत्रो ! हमेशा ही हम लोग आपकी रक्षाओं से पहले तथा अब भी सुखोंका उपभोग लेते रहते हैं ।’

ते न आस्नो वृकाणामादित्यासो मुमोचत ।

स्तेनं बद्धं इवादिता ॥ (ऋ. ८।६।१४)

‘हे अदिति ! एवं वे ऐसे विख्यात आदित्यो । हमें भेड़िये जैसे कूर तथा लालची लोगोंके मुँहसे ऐसे छुड़ाओ जैसे बाँधकर रखे हुए चोरको छुड़ाया जाता है ।’

ये मूर्धानः क्षितीनां अदब्धासः स्वयशसा ।

व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ (ऋ. ८।६।१३)

‘जो आदित्य द्वेष न करते हुए अपनी अर्जित यशस्विता के कारण न दबाये हुए होकर मानवों के अप्रभाग में रहते हैं और व्रतोंकी रक्षा करते हैं ।’

धारयन्त आदित्यासो जगत् स्था देवा विश्वस्य
भुवनस्य गोपाः.....रक्षमाणा असुर्यम् ।

(ऋ. २।२।७।४)

‘ये देवतारूपी आदित्य ! अखिल भुवनके संरक्षक होते हुए जंगम तथा स्थावर का धारण करते हैं और प्राणशक्ति को बचाते हैं ।’

विद्यां आदित्या अवसो वो अस्य...यत्...भय
आ चित् मयोभु । (ऋ. २।२।७।५)

‘हे अदितिके पुत्रो ! मैं चाहता हूँ कि आपकी इस रक्षासे परिचित हो जाऊँ जो रक्षा भय के अवसरपर भी सुखदायक बनी रहती है ।’

इन ऊपर दिये हुए मंत्रों और मन्त्रभागोंसे स्पष्ट दिखाई देता है कि जनताकी रक्षा करनेमें अदिति के पुत्र बड़े सिद्ध-हस्त थे, अतः लोग भी आदित्यों की संरक्षण आयोजना से लाभ उठानेमें अत्यन्त उत्सुक रहा करते थे । वेद में ऐसे निर्देश मिलते हैं कि लोगों का नेतृत्व भी आदित्य सफलतापूर्वक कर लिया करते थे और जो लोग मार्ग भूले भटकते होते हैं तथा जो अन्धकार में रहते हैं उनके पथप्रदर्शन तथा प्रकाशमान का कार्य आदित्य सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं जैसे—

प्रकाशके वीर

आदित्या ... युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ।

(ऋ. २।२।७।११)

‘हे आदित्यो ! तुम्हारे नेतृत्वमें मैं निर्भयता से पूर्ण प्रकाश को प्राप्त कर लूँ ।’

...पुत्रासो अदितेः...मर्त्याय ज्योतिर्यच्छन्त्य-
जज्ञम् । (ऋ. १०।१८।५।३)

‘आदित्य मानव को लगातार उजेलीया प्रकाशपुञ्ज देते हैं ।’

मृळ यद्वो वयं चक्रमा कच्चिदागः । उरु अश्यां
अभयं ज्योतिः...मा नो दीर्घा अभि नशन्
तमिच्छाः ॥ (ऋ. २।२।७।१४)

‘यद्यपि हम से आप का कुछ अपराध हुआ हो तो भी हमें सुख दो; मैं विशाल एवं निर्भयतामय प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ और सुदीर्घ अन्धियारी हमें न घेर ले ।’

नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूरात् य आदित्यानां
भवति प्रणीतौ ॥ (ऋ. २।२।७।१३)

‘जो कोई आदित्योंके श्रेष्ठ नेतृत्वके तत्त्वावधानमें रहता है उसे न कोई दूरसे या समीपसे होकर मार सकते हैं ।’

...आदित्या... युष्माकं...प्रणीतौ परि श्वश्रेव
दुरितानि वृज्याम् । (ऋ. २।७।७।५)

‘हे आदित्यो ! तुम्हारे श्रेष्ठ नेतृत्व में मैं बुराइयों को इस तरह टाल दूँ जैसे कोई गढोंको टाल देता हो अर्थात् जहाँ नेता की घुरा आदित्य उठा लेते हैं वहाँ बुराइयों का भय रहता ही नहीं ।’

बुराई दूर हो

सभी बुराइयों को हटाने की क्षमता आदित्यों में विद्यमान है ऐसा निम्न मन्त्रभागों से ज्ञात होता है ।

यत् आविः यत् अपीच्यं... अस्ति दुष्कृतं...
तत् विश्वं... आरे अस्मत् दधातन ... ।

(ऋ. ८।४।७।१३)

‘जो कोई बुरा कृत्य चाहे प्रकटरूपसे या गुप्तरूपसे विद्यमान हो उस सारी बुराई को हम से दूर रखो ।’

अपामीवामपस्त्रिधं अप सेधत दुर्मतिः । आदि-
त्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ (ऋ. ८।१।८।१०)

‘हे आदित्यो ! रोग, शत्रु तथा दुष्ट बुद्धि को दूर हटा दो और हमें पाप से पृथक् रखो ।’

अपो शु ण इयं शरुरादित्या अप दुर्मतिः ।

अस्मदेत्वज्जनुषी ॥ (ऋ. ८।६।७।१५)

‘हे आदित्यो ! यह हिंसक हथियार तथा यह दुष्ट विचारधारा हमें पीडा न देती हुई, भलीभाँति हम से दूर हो जाए ।’

मा नो हेतिः...आदित्यः कृत्रिमा शरुः पुरा
नु जरसो वधीत् । (ऋ. ८।६।७।२०)

‘ हे आदित्यो ! वृद्धावस्था के पहले यह शस्त्र तथा बनाया हुआ हथियार हमें न मार डाले ऐसा प्रबंध करो । ’

ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा ... अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन । (ऋ. ८।१८।१७)

‘ वे ऐसे विख्यात तुम कल्याणकारक सुखसे और आप की नौका से हमें सभी बुराइयों के पार ले चलो- । ’

युयोत शरुमस्सत्... आदित्यास उतामर्ति ।

ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः । (ऋ. ८।१८।१९)

‘ हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हमसे द्विसक शस्त्र, कुमति एवं शत्रुओंको पृथक् कर दो । ’

वैदिक सूक्तोंके दर्शन कर्ता सुकवि आदित्यों से कैसी प्रार्थना करते हैं सो निम्न मंत्रोंमें देखने योग्य है—

तत् सु नः शर्म यच्छत आदित्या यन्मुमोचति ।

एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ (ऋ. ८।१८।१२)

हे अच्छे दानशूर आदित्यो ! हमें भलीभाँति वह सुख दे डालो जो पापीको भी पाप से छुड़ा सकता है । ’

यद् वः ध्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः ।

तेना नो अधि वोचत ॥ (ऋ. ८।६७।६)

‘ कार्य करके थके हुए और उपयुक्त वस्तुका उत्पादन करने-वाले के लिए आप के पास जो वरणीय धन तथा घर है उसे साथ लेकर हमसे वार्तालाप करो । ’ इस प्रार्थनासे स्पष्ट हुआ कि परिश्रमी तथा आवश्यक मानी हुई वस्तुओं के उत्पादक को ये आदित्य स्वीकार करने योग्य धन देते एवं निवास करनेके लिए योग्य गृहका प्रबंध भी कर डालते ।

जीवान् नो अभि धेतन आदित्यासः पुरा हथात् ।

कद्ध स्थ हवनश्रुतः । (ऋ. ८।६७।५)

‘ हमारी पुकार सुननेवाले हे आदित्यो ! भला तुम किधर हो ? जबतक हम जीवित हैं, और मृत्युके पहले ही हमारे निकट चले आओ । ’ इस मंत्र में वैदिक ऋषि आदित्यों के संपर्क में आनेके लिए कितने उत्सुक है सो स्पष्ट दिखाई देता है ।

ये चिद्धि मृत्युबंधव आदित्या मनवः स्ससि ।

प्र सून आयुर्जीवसे तिरेतन । (ऋ. ८।१८।२२)

‘ हे आदित्यो ! हममें जो कोई मृत्यु के अत्यन्त निकट चले गये हों तो भी जीवनके लिए हमारी आयु बढ़ाइये । ’ दीर्घ जीवन की कुंजी आदित्यों के समीप थी ऐसा जान पड़ता है और वे मूसर्ष लोगोंको मृत्युपाशसे छुड़ानेकी चेष्टा करते थे ।

जनसेवाके गुरुतर कार्यमें आयुवृद्धिका बहुत ऊँचा स्थान है अतः आदित्य इस विषय में पूर्ण सतर्क रहा करते ।

दीर्घ आयुष्य

तुचे तुनाय तत् सु नो द्राघोय आयुर्जीवसे ।

आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ (ऋ. ८।१८।१८)

‘ हे आदित्यो ! तुम भलीभाँति महनीय तेजसे युक्त हो इसलिए हमारी सन्तानके लिए जीवनार्थ उस दीर्घ आयुष्यका प्रबंध करो । ’

शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽश्यामायूंषि सुधि-
तानि पूर्वा । (ऋ. २।२७।१०)

‘ हमें विशेष दर्शनके लिए सौ वर्ष प्रदान करो (उतना दीर्घ जीवन मिले) और हम भलीभाँति रखी हुई पूर्वकालीन आयुर्मर्यादाको प्राप्त कर लें । ’

वेदकालीन कवि आदित्यो से कष्टनिवारणके लिए प्रार्थना करते थे और अदितिके पुत्र जनताके सुखको बढ़ाने का प्रयत्न करते थे ऐसा निम्न मंत्रों से व्यक्त होता है—

सुख इच्छा

इदं ह नूनमेवां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः ।

आदित्यानां... (ऋ. ८।१८।१)

‘ अब इन आदित्यों के सामने मानव इस सुखकी माँग पेश करे ।

तत् सु नः ... शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।

(ऋ. ८।१८।३)

‘ हमें वही विस्तृत सुख जिसकी चाह हम करते हैं आदित्य हमें दे दें । ’

विदा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम् ।

पक्षा वयो यथोपरि व्यस्से शर्म यच्छतं... (ऋ. ८।४७।२)

‘ हे दानी आदित्यो ! तुम पापों को हटाना जानते हो और जैसे पंछी ऊपर से डैनों को फैलाते हैं ताकि पक्षिशायकोंको सुख मिले, उसी तरह तुम हमें विशेष ढंग से सुखका प्रदान करो । ’

व्यशस्से अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन

विश्वानि विश्ववेदसो वरूथया मनामहे... ।

(ऋ. ८।४७।३)

‘ हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हम सारे स्वीकरणीय वस्तुओं को पाना चाहते हैं अतः विशेष रूपसे हमें वह सुख देदो जिस तरह पंछी अपने शिशुओं पर सुखके लिए पर फैलाते हैं । ’

धनाढ्य बनकर (वसुधावा रथेन याति) धन का दानी होता हुआ रथ पर से संचार करता है । '

...हिरण्यथाः शुचयो धारपूताः अस्वप्नजो...

अदब्धाः उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय । (ऋ. २।२७।९)

' सुवर्णमय आभावाले, विशुद्ध तथा जलधाराओं से पवित्र होते हुए आदित्य (अस्वप्नजः) स्वप्नशीलता से दूर रहकर और कठिनाइयों से न दबकर (ऋजवे मर्त्याय) सरल बर्ताव रखनेवाले मानव के लिए (उरुशंसाः) अत्यधिक मात्रा में उपदेश देनेवाले या भाषण करनेवाले हैं । ' अर्थात् जिस मानवमें सरलता तथा निष्कपटता पाई जाती है उसके समीप आकर आदित्य सहायता करने के लिए या पथप्रदर्शनार्थ बहुत सारी बातें कहनेवाले होते हैं ।

शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उपक्षेति वृद्धवयाः

सुवीरः । ... य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥

(ऋ. २।२७।१३)

' जो अपने आपको आदित्यों के नेतृत्व के नीचे रखता है वह अच्छा वीर होकर (वृद्ध वयाः) अज्ञभाण्डारों की वृद्धि करता हुआ (अदब्धाः) विपत्तियोंसे न दबकर (सूयवसाः) अच्छे तृणों से युक्त, (शुचिः अपः उप क्षेति) निर्मल जलों-जलाशयोंके निकट निवास करता है । ' इससे स्पष्ट हुआ कि आदित्य जनताके नेता बनकर उन्हें वीर बनाने का प्रयत्न करते तथा अज्ञों की वृद्धि कैसे करनी चाहिए सो बतलाकर अच्छे तृण, शुद्ध जल आदि बातों से युक्त स्थानोंके निकट घर बनाकर रहने का प्रबंध करते ।

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः

सन्ति पायवः सुगेवृधः ॥ (ऋ. ८।१८।२)

इन आदित्यों का मार्ग (अन-अर्वाणः) हिंसारहित है और इनके संरक्षण सुगमतापूर्वक बढ़नेवाले तथा शत्रुओं से न दबाये हुए हैं । ' आदित्यों की योग्यता का अच्छा परिचय इसमें मिलता है । आदित्यों के कार्य करने के मार्ग इस ढंगके हुआ करते कि यथा संभव हिंसा न हो और स्वयं ही अपनी आन्तरिक शक्ति से संरक्षण की आयोजनाएँ फलती फूलती रहें ।

अब आदितिके संबन्धमें क्या कहा है सो देखना चाहिए, क्योंकि इन आदित्यों को- आदिति के पुत्रों को उसी से प्रेरणा मिलती है ।

२ द. [आदिति]

अदितिके गुण

आदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु ।

माता मित्रस्य रेवतोऽर्यम्णो वरुणस्य च ॥ ...

(ऋ. ८।४७।९)

' धनाढ्य मित्र, अर्यमा एवं वरुणकी माता जो आदिति है वह हमारी रक्षा करे और सुख दे दे । '

पिपर्तु नो अदितिः राजपुत्रा अति द्वेषांस्य-

र्यमा सुगेभिः । बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप

स्याम पुरुवीराः अरिष्टाः । (ऋ. २।२७।७)

' जिसके पुत्र विराजमान हैं ऐसी वह आदिति हमारा पालन करे, अर्यमा हमें सुगमतापूर्वक या सुखकर मार्गों से शत्रुओंके पर पहुँचा दे; मित्र एवं वरुण का दिया हुआ सुख सचमुच बड़ा प्रचंड है अतः हम अनेक वीरोंसे युक्त होकर बिना क्षति उठाये उसके समीप रहें । '

महीं... मातरं सुव्रतानां ऋतस्य पत्नीमवसे

हुवेम । तुविक्षत्रामजरन्तीमुरुर्ची सुशर्माण-

मदितिं सुप्रणीतिम् । (वा. यजु. २।१।५; अथर्व. ७।६।२)

' हम आदिति को अपनी रक्षा का प्रबंध करनेके लिए बुलायें, जो महनीय, अच्छे व्रतधारी आदित्यों की माता, ऋत की पत्नी, अत्यधिक क्षत्रियोचित वीरता से युक्त, जीर्ण न होनेवाली, विशालता से पूर्ण, सुन्दर सुख देनेवाली एवं मलीभाँति आगे ले चलनेवाली है । '

अदितिर्नो दिवा... अदितिर्नक्तं... अदितिः

पातु अंहसः सदावृधा । (ऋ. ८।१८।६)

' हमेशा बढ़नेवाली आदिति हमें दिन और रात पाप से बचाए । '

उत स्या नो दिवा... अदितिरुत्था गमत ।

सा... मयस्करदप स्त्रिधः ॥ (ऋ. ८।१८।७)

' और वह आदिति दिन के समय संरक्षण की आयोजनाके साथ हमारे निकट चली आए और वह शत्रुओंको दूर हटाकर सुखमय वायुमण्डल का सृजन करे । '

आदित्यों की असाधारण योग्यता का परिचय होने के कारण वैदिक कवि इस प्रकार उनकी सराहना करते हैं—

इमा गिरः आदित्येभ्यो... सनात् राजभ्यो

जुह्वा जुहोमि । शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नः

तुविजातो वरुणो... (ऋ. २।२७।१)

‘मै सनातनकाल से विराजमान आदित्यों के लिए इन भाषणों का मानों हविर्भागसा अपनी ओरसे अर्पण करता हूँ, हमारी इन वक्तृताओंको ये आदित्यमंडलके सदस्य जैसे मित्र, वरुण, अर्यमा एवं भग सुन लें ।’

इमं स्तोमं सकतवो मे अद्य ...जुषन्त ।

आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना

अनवद्या अरिष्टाः । (ऋ. २।२७।२)

‘आज मेरे इस स्तुतिमय भाषणका स्वीकार, कार्यशील आदित्य, जोकि विशुद्ध, पवित्र, पापराहित, निर्दोष और स्वस्थ है, कर लें ।’

ऐसा प्रतीत होता है कि आदिति के पुत्र, आदित्य ऐसा नाम अबतक बतलाये हुए गुणों से युक्त कुछ चुने हुए देवोंको दिया जाता था जिनका सर्वोपरि कार्य केवलमात्र लोकरक्षा तथा लोक सेवा करना ही था । इस आदित्यमण्डल के सदस्य वेदी हो सकते जो संपूर्णतया निर्दोष एवं पूर्णतया विकसित हों, जिन में किसी भी प्रकार की त्रुटि न पाई जाती हो, क्योंकि त्रुटि होनेसे वे आदिति अखण्डता, अदीनता के पुत्र कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते । यद्यपि एक स्थान में कहा है कि—

अशीतिभिस्तिष्ठभिः सामगोभिरादित्येभिः... ।

(अथर्व. २।१२।४)

जिससे ज्ञात होता है कि आदित्यों की संख्या ८०×३= २४० थी और इन्हें सामगान विदित था, तथापि इस आदित्यमण्डल में प्रमुखतया मित्र, वरुण, अर्यमा, भग एवं सविता का स्थान था । क्योंकि अपने वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों से शायद इनकी ही अभिष्ट छाप वैदिक कवियों के अन्तस्तरपर पड़ी हुई हो । आदित्यों के निश्चित कार्य को संभवतः मित्र, वरुण एवं अर्यमा ही अविकलभाव से संपूर्ण करने की क्षमता से युक्त हों अतः इन तीनों का उल्लेख आदित्यों के सूक्तों में बार बार पाया जाता है । जैसे कि निम्न मंत्रों से स्पष्ट होगा—

मित्रो नो अत्यंहर्ति वरुणः पर्षदर्यमा ।

आदित्यासो यथा विदुः ॥ (ऋ. ८।६७।२)

‘आदित्य जैसे जानते हैं वैसे ही कार्य करके हमें मित्र, वरुण तथा अर्यमा दुर्गति या पापके पार ले चलें ।’

संरक्षणका कार्य

महि वो महतामह वरुण मित्रार्यमन्... ।

(ऋ. ८।६७।४)

‘हे वरुण ! मित्र ! अर्यमन् ! आप जैसे बड़े आदित्यों का संरक्षण बड़ा है ।’

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यमणः ।

दुराधर्षं वरुणस्य ॥ (१०।१८५।२)

‘तीनों अर्थात् मित्र, वरुण तथा अर्यमा का संरक्षण महान, दिव्य तथा शत्रुओंके अपराभवनाथ हो जाए ।’

अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यं ।

विवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः ॥ (ऋ. ८।१८।२१)

‘हे वीर मरुतो ! हे मित्र, वरुण तथा अर्यमन् ! हमें निष्पाप, नेताओंसे युक्त, प्रशंसनीय और तीन प्रकार के स्वीकरीय धन से पूर्ण घर दे डाले ।’

... मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये । (ऋ. ८।१८।२०)

‘हम कल्याण के लिए मित्र तथा वरुणको चाहते हैं ।’

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे ।

(ऋ. ८।४७।१)

‘हे वरुण और मित्र ! दानीके लिए जो तुम बड़े आदित्य रक्षा का प्रबंध कर डालते हो वह बड़ा है ।’

वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्स्यामेहतस्य रथ्यः ।

(ऋ. ८।१९।३५)

‘हे वरुण, मित्र तथा अर्यमन् ! हम अवश्य ही आप के ऋतको ले चलनेवाले हों ।’

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे । (ऋ. ८।१८।३)

‘वह विस्तारशील सुख जिसे हम चाहते हैं मित्र, वरुण, अर्यमा, सविता और भग हमें भली प्रकार से दे डालें ।’

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा ।

सुवाति सविता भगः ॥ (ऋ. ७।६६।४)

‘आज जब कि सूर्य का उदय होनेपर (अनागाः) निष्पाप मित्र, अर्यमा, भग एवं सविता (सुवाति) कार्य निष्पन्न कर दिखाता है ।’

...सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।

अर्यमणं रिशादसम् ॥ (ऋ. ७।६६।७)

‘सूर्योदय के पश्चात् मित्र, वरुण एवं हिंसकोंके वधकर्ता अर्यमा की सहायता करता हूँ ।’

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरभिः सह ।

इषं स्वश्च धीमहि ॥ (ऋ. ७।६६।९)

‘हे शीतमान वरुण तथा हे मित्र ! हम विद्वानोंके साथ तेरे ही बनकर रहें तथा अब एवं तेजको पानेके उपाय सोचें ।’

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत । (ऋ. ७।६६।११)

‘तीनों विराजमान वरुण, मित्र एवं अर्यमा को ऐसा क्षत्रियोचित बल मिला कि जो दूसरोंको पाना असंभव प्रतीत हुआ ।’

ऊपर दिये हुए मन्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आदित्यों के संगठित दल में मित्र, वरुण और अर्यमा का स्थान बड़ा ही ऊँचा था । हो सकता है कि आदित्यदल के कार्यकारी मंडल के सत्ताधारी सदस्य उक्त नाम धारण करते हों । वेद में इन तीनों आदित्य दल के प्रमुख सदस्यों के बारेमें कहा है कि—

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति । इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ (ऋ. ७।६०।५)

‘ये मित्र, अर्यमा एवं वरुण अदिति के (अदब्धाः शग्मासः) न दबे हुए शक्तिशाली पुत्र हैं और ये ऋत के (दुरोणे ववृधुः) घरमें पले हुए हैं तथा (भूरेः अनृतस्य चेतारः) बड़े भारी असत्यको पहचाननेवाले हैं ।’ अर्थात् ये कभी मिथ्या बातों में फँस नहीं सकते और इनकी शिक्षादीक्षा ऋतके घरमें हुई है । इस प्रकार शिक्षित होकर ये आदित्यदलके संगठन कार्य में ऊँचे पदपर विराजमान होते हैं । इन के कार्य का स्वरूप बताया है कि ये—

...तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति । (ऋ. ७।६०।६)

‘अच्छे मार्ग से लोगोंको पाप के परे ले चलते हैं ।’

...अचेतसं चिश्चितयन्ति दक्षैः ।

...चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ॥ (ऋ. ७।६०।६७)

‘अच्छे उपायों से अज्ञानी को भी ज्ञानसम्पन्न बनाते हैं और चिकित्सक बुद्धिवाले होकर अनजान को ठीक मार्ग पर ले चलते हैं ।’

आदित्योंके गुण

अब विचार करना चाहिए आदित्यों के लिये कौन से विशेषण प्रयुक्त हुए हैं जिन से ज्ञात होगा कि आदित्य दल में प्रवेश पाने के लिए योग्यता का मानदंड कितना ऊँचा रखा था ।

१. सऋतवः = कार्योंसे युक्त, कभी खाली हाथ या निठले न बैठे हुए ।

२. शुचयः, धारपूताः = विशुद्ध एवं जलधाराओंमें नहा धोकर साफसुथरे रहनेवाले ।

३. अ-वृजिनाः, अनवद्याः = पापरहित, अनिन्य ।

४. अरिष्टाः, अदब्धासः = अहिंसित, न दबे हुए ।

५. उरवः, गभीराः = बृहदाकार, गंभीर सुखाकृतिवाले ।

६. अस्वप्नजाः, अनिमिषाः = निद्रासुख का उपभोग न लेनेवाले और पलक न मारनेवाले । यह दूसरा विशेषण अथक परिश्रम करने की सूचना देता है ।

७. दीर्घाघियः = विशाल बुद्धिवाले या महान् कार्यक्रम रखनेवाले ।

८. ऋणानि चयमानाः = ऋणोंको बटोरनेवाले ताकि उऋण हो सकें ।

९. ऋजवे मर्त्याय उरुशंसाः = सरल, निष्कपट आचरणवाले मानव को खूब उपदेश की बातें कहनेवाले ।

१०. राजभ्यः (आदित्येभ्यः) राजानः = विराजमान आदित्यों के लिए, लोक सेवकों को जनता के मध्य विराजमान होने की चेष्टा करनी चाहिए ।

११. सु-दानवः = अच्छे दानशूर । कृपणतासे कोसों दूर रहनेवाले ।

१२. यजत्राः = पूजनीय ।

१३. रजिष्ठाः = लोकोंके मध्य खूब संचार करनेवाले ।

१४. ये अंहः अतिपिप्रति = जो पाप के परे ले जाते हैं, जनता को निष्पाप करनेका प्रयत्न करते हैं ।

१५. ये अदब्धस्य व्रतस्य ईशते = जो न दबे हुए व्रतके अधिपति हैं ।

१६. ऋतावृधः, घोरासो अनृतद्विषः = ऋत की वृद्धि करनेवाले और असत्य के भीषण विरोधी ।

१७. ऋतजाताः ऋतस्थ दुरोणे ववृधुः = ऋत से या ऋतके लिए उत्पन्न, ऋत के घर में पले हुए ।

१८. विश्व-वेदसः = सब कुछ जाननेवाले ।

१९. सु-महसः = बड़े अच्छे तेजस्वी ।

२०. प्र-चेतसः = प्रकृष्ट ज्ञानवाले ।

२१. सुमृलीकाः = बहुत अच्छे ढंगसे सुख देनेवाले ।

२२. हवनश्रुतः = जनता की पुकार सुननेवाले ।

२३. अ-द्रुहः = द्वेष न करनेवाले ।

२४. क्षितानां मूर्धानः = मानवोंके प्रमुख ।

२५. अद्भुत-पनसः = जिन्होंने पहले पापकृत्य किया ही न हो ।

इन ऊपर दिये हुए विशेषणों से आदित्यदलके सदस्यों की योग्यतापर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है। जो निरलस कार्यकर्ता, सत्यप्रेमी, उत्कृष्ट ज्ञानी, सेवातत्पर, निष्पाप, साफ सुथरे, दान-शूर, विशालचेता और लोकरक्षक बननेके इच्छुक होते वही आदित्यदल में प्रवेश पा सकते थे और अदिति अर्थात् अदीनता, स्वतंत्रता, पूर्णता के पुत्र कहलानेके अधिकारी बन सकते थे ।

मित्रका ऊँचा स्थान

इस आदित्यदल में मित्र का स्थान बहुत ही ऊँचा है, इसलिए वेदमें मित्र के बारे में क्या कहा है सो देखना चाहिए—

...मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत । (ऋ. ३।५९।१)

‘मित्रके लिए घृतयुक्त हवनीय वस्तुका अर्पण करो ।’

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हवि राजुहोत । (ऋ. ३।५९।५)

‘उस अत्यन्त प्रशंसनीय मित्रके लिए यह सेवनीय हविर्भाग अग्नि में डाल दो ।’ इस भाँति मित्र का सुखागत करनेके पश्चात् कवि कहते हैं—

अनमीवास इलया मदन्तो ... वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम । (ऋ. ३।५९।३)

‘हम नीरोगी और अन्न मिलनेके कारण हर्षित होते हुए मित्र की प्रसन्न बुद्धि की छत्रछायामें रहें ।’

अयं मित्रो नमस्यः ... राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट... तस्य वयं सुमतौ... भद्रे सौमनसे स्याम । (ऋ. ३।५९।४)

‘यह मित्र विराजमान्, अच्छे क्षत्रियोचित बल से युक्त एवं नमन करनेयोग्य हो प्रकट हुआ है अतः हम उस की कल्याणकारक प्रसन्नताके तत्त्वावधान में रहें । अर्थात् कभी ऐसा न होने पाय कि मित्र को क्रोधित होना पड़े ।’

महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो
गृणते सुशेवः । (ऋ. ३।५९।५)

‘यह मित्र बड़ा भारी आदित्य है जो जनता को प्रेरित करता हुआ प्रशंसा करनेवाले को सुन्दर ढंगसे सुख देता है और जिस के समीप नमनपूर्वक बैठना चाहिए ।’

मित्रो जनान् यातयति ब्रवाणो... । (ऋ. ३।५९।१)

‘मित्र लोगों को उपदेश की बातें कहता हुआ कार्यप्रवृत्त करता है ।’

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे... । (ऋ. ३।५९।१)

‘मित्र टकटकी लगाकर कृषिकर्म में लगे लोगों को देखता है ताकि कहीं काम में भूल न होने पाय ।’

मित्रो दाधार पृथिवीमुत धाम् । (ऋ. ३।५९।१)

...स देवान् विश्वान् बिभर्ति । (ऋ. ३।५९।८)

‘मित्र बुलोक एवं भूलोक की धारणा करता है और सभी देवों का भरणपोषण करता है ।’ अर्थात् समूचे विश्व में सुव्यवस्था हो ऐसी कोशिश करता है ।

न हन्यते न जीयते त्वोतो, नैनं

अहो अदनोत्यन्तितो न दूरात् । (ऋ. ३।५९।२)

‘हे मित्र ! तू जिसकी रक्षा कर चुका है वह न मारा जाता है और नाहि जीता जाता है, इसे न समीप से न दूर से ही पाप व्याप्त कर पाता है ।’

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः ।

अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥ (ऋ. ३।५९।७)

‘जो मित्र विशाल होकर अपने महनीय तेज से बुलोक को तथा अन्नोसे भूमण्डलको व्याप्त कर चुका है ।’

मित्रो... जनाय... इषः... अकः । (ऋ. ३।५९।९)

‘मित्रने जनताके लिए अन्न बनाया है ।’

इस प्रकार मित्र की योग्यता बड़ी है, परन्तु वह स्वयं अकेला ही प्रकट न होकर बहुधा वरुण के साथ मिलकर कार्य करता है। अतः वेद में दोनोंका संयुक्त उल्लेख पाया जाता है । जैसे—

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्...

...मित्रावरुणौ ऋतावृधौ ऋतस्पृशा...

कवी... मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया...

(ऋ. १।२।७-९)

‘शुद्ध बलवाले मित्र और शत्रुविध्वंसक वरुण को बुलाता हूँ; मित्र एवं वरुण ऋत के संपर्क में रह उस की वृद्धि करने-
गले हैं; मित्र और वरुण विद्वान्, विशालता में उत्पन्न और
वेस्तृत स्थल में निवास करनेवाले हैं।’

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये...

...यौ... ऋतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रा-
वरुणा हुवे । वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो
विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराघसः ।

(ऋ. १।२३।४-६)

‘हम मित्र और वरुण को सोम पीनेके लिए बुलाते हैं; जो
ऋत एवं प्रकाशके अधिपति हैं, उन मित्र एवं वरुण को मैं
बुलाता हूँ; वरुण उत्कृष्ट संरक्षक बने तथा सभी संरक्षणसाधनों
से युक्त होकर मित्र भी रक्षणकर्ता हो और दोनों मिलकर हमें
अच्छे धनिक बना दें।’

मित्र और वरुण के स्वागत का वर्णन वैदिक कवियोंने इस
तरह किया है—

**आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र... उपेमं
चारुमध्वरम् ।**

(ऋ. ५।७।११)

‘हे शत्रुविध्वंसक मित्र एवं वरुण ! इस सुन्दर, हिंसारहित
कार्य के समीप आने के लिए हमारे पास आओ ।’

**उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः...
सोमस्य पीतये ।**

(ऋ. ५।७।१२)

‘हे मित्र और वरुण ! हमारे निचोड़े हुए सोमके निकट
आओ, ताकि दानोंके सोमका पी जाना संभव हो ।’

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा ।

पातं सोममृतावृधा ।

(ऋ. ७।६६।१९)

‘हे नेता एवं ऋत की वृद्धि करनेवाले मित्र और वरुण !
हमारे दान का स्वीकार करते हुए तुम दोनों आओ तथा सोम
पी जाओ ।’

...आयातं...गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो...

आ राजाना दिविस्पृशाऽसत्रा गन्तमुप नः

इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्राः...

(ऋ. १।१३।७१)

‘हे विराजमान एवं धुलोक के छूनेवाले मित्र एवं वरुण !
आओ, हमारी ओर आओ; क्योंकि आपके लिए ये तेजस्वी
सोम दुग्धमिश्रित बनाकर रखे हैं ।’

असत्रा गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।

अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ

पीतये सुतः ॥

(ऋ. १।१३।७३)

‘हे मित्र तथा वरुण ! सोम पीनेके लिए हमारी ओर
आओ; क्योंकि यह सोम तुम्हारे पीने के लिए मनुष्यों से
निचोड़ा गया है ।’

इससे स्पष्ट है कि आदित्यों का स्वागत तथा सत्कार करने
के लिए दुग्धमिश्रित सोम का रस दिया जाता था । अब
देखना चाहिए कि वैदिक कवि मित्र एवं वरुण से किस तरह
की प्रार्थना करते हैं, या उनके सम्मुख कौनसी माँग पेश
करते हैं—

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्रिणो

नुदतं प्रतीचः । मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त

मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् ॥

(अथर्व. ३।३२।३)

‘हे मित्र और वरुण ! हमारे लिए इधर निर्भयता रहे और
अपने तेज से स्वार्थी लोगों को पराङ्मुख बनाकर दूर कर दो ।
ध्यानमें रहे कि वे किसी भी बतानेवाले ज्ञानी को और मान-
सम्मान को न पा सकें, अपितु आपसमें ही एक दूसरे की राह
में रोड़े अटकाते हुए मौत के मुँह में समाविष्ट हो जायँ ।’

...मित्रावरुणा ... प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह

पिन्वतम् । बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं

चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् ॥ (अथर्व. ६।९।७।२)

‘हे मित्र एवं वरुण ! सन्तानयुक्त क्षत्रियोचित वीरताको तुम
मधु से पुष्ट करो, बुराई को दूर से ही हटा दो और जो कुछ
पाप किया हो, उसे हम से अलग कर दो ।’

यो अद्य सेन्यो... उदीरते । युवं तं मित्रा-

वरुणौ अस्मद्यावयतं परि ॥ (अथर्व. १।२०।२)

‘आज जो कोई हत्यारा सेना साथ ले ऊपर उठ जाता
हो, हे मित्र और वरुण ! उसे तुम हम से दूर भगा दो ।’

मित्रावरुणौ वृष्ट्याचिपती तौ मावताम् ।

(अथर्व. ५।२४।५)

‘वे दोनों मित्र और वरुण जो खामी हैं, वर्षा से मेरी
रक्षा करें ।’

... मित्रावरुणा धारयत्क्षिती ... युवो ...

सख्यैरभिष्याम रक्षसः । (ऋ. १०।१३।२।२)

‘हे मानवोंके धारणकर्ता मित्र एवं वरुण ! तुम्हारी मित्रता मिलनेपर हम राक्षसों को पराभूत करेंगे।’

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं ... अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीः । ...

(ऋ. ७।६५।५; ७।६४।५)

‘हे मित्र एवं वरुण ! तुम्हारे लिए यह स्तोत्र तैयार किया है; तुम हमारे कर्मों को सुरक्षित रखो और बहुतों के धारणक्षम बातों को जागृत करो।’

**इयं... पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणा-
वकारि । विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो... ।**

(ऋ. ७।६०।१२; ७।६१।७)

‘यज्ञों में, हे मित्र और वरुण ! तुम्हारे लिए यह पुर-
स्किया कर डाली है; अतः सभी बहिर्द स्थानों को पार करके
हमारी पुष्टि करो।’

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं ... (ऋ. ७।५०।१)

... हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः ।

(ऋ. ७।६१।६)

‘हे मित्र तथा वरुण ! यहाँ मेरी रक्षा करो; बाधा से घिर
जानेपर तुम्हें मैं पुकारता हूँ।’

**प्र बाहवासिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूति-
मुक्षतं घृतेन । आ नो जने श्रवयतं युवाना
श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥ (ऋ. ७।६२।५)**

‘हे मित्र एवं वरुण ! अपने बाहुओं को खूब फैलाओ ताकि
हम जीवित रहें और घृतसे हमारे मार्ग को सींच दो, युवकतुल्य
तुम जनता में हमें विख्यात करो, मेरी इन पुकारोंको तुम सुन
लेना।’

**राजाना... ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया
यातमर्वाक् । इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिं
अव दिव इन्वतं जीरदानू ॥ (ऋ. ७।६४।२)**

‘हे विराजमान मित्र एवं वरुण ! तुम ऋत के संरक्षक,
क्षत्रिय, शीघ्रदानी और समुद्रपर प्रभुत्व रखनेवाले हो, इसलिए
हमारे अभिमुख आओ और बुलोक से हमें वृष्टि एवं अन्न
प्रेरित करो।’

**सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा
विदथे स्वर्दशा । वृष्टिं वां राधो अमृतत्व-
मीमहे ... (ऋ. ५।६३।२)**

‘हे भलीभाँति विराजमान तुम इस भुवनपर प्रभुत्व रखने
वाले मित्र और वरुण ! यज्ञमें स्वकीय शक्ति से सब कुछ
देखनेवाले हो; तुम से हम अमरपन और धन तथा वृष्टि
चाहते हैं।’

**यत् बंहिष्टं... सुदानू... अच्छिद्रं शर्म भुव-
नस्य गोपा । तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषा-
सन्तो जिगीवांसः स्याम ॥ (ऋ. ५।६२।९)**

‘हे अच्छे दानशूर एवं विश्वके पालनकर्ता मित्र और
वरुण ! जो कुछ भी छिद्ररहित (चुटिरहित, अखंड) और
अत्यधिक सुख है, उससे हमारी रक्षा करो; ताँके हम धन का
वितरण करते हुए ज़िगोषु बनें।’

**... मित्रावरुणा... दिवः सम्राजा पयसा न
उक्षतम् । (ऋ. ५।६३।५)**

‘हे बुलोक के सम्राट्‌तुल्य मित्र और वरुण ! हमें दूध एवं
जलसे सींच दो अर्थात् हमारे यहाँ दुग्ध एवं जल की न्यूनता
न हो।’

**सम्राजा या... मित्रश्चोभा वरुणश्च देवा देवेषु
प्रशस्ता । ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो
दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥**

(ऋ. ५।६८।२-३)

‘जो ये सम्राट्‌तुल्य, दानी, देवतागणमें प्रशंसित मित्र एवं
वरुण हैं, वे हमें भूमंडल एवं बुलोकस्थ महनीय धन दे डालें,
क्योंकि देवताओं में तुम्हारा क्षत्रियोचित बल महान् है।’

**नू मित्रो वरुणो अर्यमानस्मने तोकाय वरिवो
दधन्तु । सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु ... ॥**

(ऋ. ७।६२।६)

‘अब अर्यमाके साथ मित्र और वरुण हमें तथा बालवच्चोंको
धन दे डालें और हमारे लिए सभी मार्ग सुन्दर एवं सुगम
हों।’

मा हेळे भूम वरुणस्य ... मा मित्रस्य ... नृणाम् ।
(ऋ. ७।६२।४)

‘हम लोग वरुण के तथा मानवोंके अत्यन्त प्यारे मित्र के
भी द्वेष में न रहें’ अर्थात् ऐसा कभी न होने पाय कि वे
हमारा द्वेष करने लगें। इस से स्पष्ट है कि मित्रावरुणों का
कितना भारी प्रभाव जनतापर पड़ा था।

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो...प्र साधिष्ठेभिः पथि-
भिर्नयन्तु । (ऋ. ७।६४।३)

‘ तो हमें मित्र एवं देवतारूपी वरुण अत्यन्त सुगम मार्गों से अधिकाधिक ले चलें । ’

मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तन-
याय गोपाः । मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा
तत् कर्म ... यच्चयध्वे ॥ (ऋ. ७।५२।२)

‘ संरक्षक मित्र एवं वरुण उस सुख को हमारी सन्तान के लिए दे दें, हम आप के ही हैं, इसलिए दूसरों से उत्पन्न पाप का भार हमें न उठाना पड़े और नाहि हम वह कार्य करें कि जिसे तुम नष्ट करना चाहो । ’

यत् गोपा अवदत् अदितिः शर्म भद्रं मित्रो
यच्छन्ति वरुणः । तस्मिन्ना तोकं तनयं
दधाना मा कर्म देवहेलनं... ॥ (ऋ. ७।६०।८)

‘ संरक्षक अदितिने जो कहा था कि मित्र एवं वरुण कल्याणकारक सुख देते हैं, उसीमें हम अपनी सन्तान रखते हुए ऐसा कर्म न करें कि जिससे देवोंका क्रोध प्रतीति हो । ’

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् ।
मित्र साधयतं धियः ॥ (ऋ. ७।६६।३)

‘ हे विख्यात गृहरक्षक तथा शरीरसंरक्षक मित्र और वरुण ! हम स्तोताओं के कर्मों को या बुद्धियोंको सफलता दो । ’

ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता
तरेम । (ऋ. ७।६५।३)

‘ हे मित्रावरुणो ! तुम्हारे ऋतके मार्गसे हम बुराइयों को इस भाँति लाँघकर आगे बढ़ें, जैसे नौकाके सहारे लोग जलोंको तैर जाते हैं । ’

वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे ... ॥
(ऋ. ५।६५।५)

‘ हम अत्यन्त विस्तृत एवं चौड़े मित्रके संरक्षणमें रहें । ’

इन ऊपर दिये हुए मंत्रभागों से मित्र और वरुणके कार्योंका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । जनताकी सेवा वे कितनी लगनसे करते थे, सो सूर्यप्रकाशवत् सुस्पष्ट होता है । वेदमें अन्यत्र इनके बारेमें जो उल्लेख पाये जाते हैं उनसे भी इसी बात की पुष्टि होती है । जैसे—

यां मे धियं ... देवा अददात् वरुण मित्र यूयं ।
तां पीपयत् पयसेव धेनुं कुवित् गिरो अधि रथे
वहाथ ॥ (ऋ. १०।६४।१२)

‘ हे द्योतमान मित्र एवं वरुण ! तुमने जो बुद्धि मुझे प्रदान की है, उसे तुम ऐसी पुष्ट करो जैसे कोई गायको अत्यन्त दुग्धवती बनाए अर्थात् बुद्धि यथेष्ट सफल हो । क्योंकि तुम अपने रथोंमें बहुतसी वस्तुताओं को ले चलते हो । ’ इससे स्पष्ट होता है कि रथारोही होकर जहाँ जहाँ ये पहुँचते, उधर लोग इनके लिए भाषण किया करते थे । निःसन्देह इन भाषणोंमें मित्रावरुणकी योग्यताका यथोचित वर्णन रहता अतः वैदिक कवि उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे दोनों तथा अन्य देव भी उन्हें भली भाँति लाभ पहुँचायें । मित्र और वरुण तथा अन्य आदित्य लोकसेवामें अनवरत रूपसे लगे हैं, इसलिए वैदिक कवि कहते हैं—

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

सीदन्तु मनुषो यथा ॥ (ऋ. १।२६।४)

आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रा अर्यमा प्रातर्यावाणो
अध्वरम् । (ऋ. १।४४।१३)

‘ शत्रुहंसक तीन प्रमुख आदित्य मित्र, वरुण और अर्यमा हमारे बिछाए हुए दर्भासनपर अन्य मानवोंके तुल्य बैठें । प्रातः काल ही अहिंसक कार्यमें उपस्थित रहनेके लिए जानेवाले मित्र एवं अर्यमा कुशासनपर बैठ जाएँ । ’

वैदिक कवि अग्निधे कहते हैं कि—

त्वमादित्या आवह तान् बृहमसि । अग्ने...
(ऋ. १।१४।३)

‘ हे अग्ने । तू अदितिके पुत्रोंको इधर ले आ, क्योंकि हम उन्हें बहुत चाहते हैं । ’ आदित्योंकी योग्यताके बारेमें कहा है कि—

ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेषांसि योतवे ।

अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ (ऋ. ८।१८।५)

‘ वे तो अदितिके पुत्र निष्पाप और विशाल मात्रा में कार्य करनेवाले हैं और जानते हैं कि किस ढंगसे हमें पापसे दूर रखा जाय तथा द्वेषाओं को हमसे पृथक् किया जाय । ’

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः ... दधिरे दिवि
क्षयम् । (ऋ. १०।६३।५)

‘ जो सम्राटतुल्य भली भाँति बढनेवाले आदित्य हैं वे यज्ञमें आचुके हैं तथा धुलोकमें निवासस्थान बना चुके हैं । ’

आदित्यों से जनताको कैसे लाभ पहुँचता था इस विषय में कहा है कि—

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्रप्रजाभिर्जायते...
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि
दुरिता स्वस्तये ॥ (ऋ. १०।६३।१३)

‘ जिस मानव को आदित्य अच्छी नीतियों से सारी बुराइयों के पार सुख के लिए ले चलते हैं, वह अखंडरूप से अर्हिसित होता हुआ वृद्धिगत होता है और संतानों द्वारा विशेष रूप से जन्म लेता है । ’

इस कारण वैदिक कवि इन से प्रार्थना करते हैं कि—

त आदित्या अभयं शर्म यच्छत । सुगा नः कर्तं
सुपथा स्वस्तये ॥ (ऋ. १०।६३।७)

‘ ऐसे वे विख्यात आदित्यो ! तुम भयरहित सुख प्रदान करो और भलाई के लिए हमारे लिए सुन्दर मार्ग सुखपूर्वक गमन करने योग्य कर दो । ’

त आदित्या आगता सर्वतातये... ।

(ऋ. १०।३५।११)

‘ ऐसे वे तुम आदित्यो ! सबके विस्तार या वृद्धि के लिए आओ । ’

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः
सुभरं नृपाय्यम् । (ऋ. १०।३५।१२)

‘ हे देवतारूपी आदित्यो ! तो हमें ऐसा घर दो कि जिसे नेताओं का संरक्षण प्राप्त हो, जो भलीभाँति भरण करता हो तथा अत्यन्त प्रशंसनीय हो । ’

...स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः । (ऋ. ५।५१।१२)

‘ हमारे कल्याण के लिए आदित्य प्रयत्नशील रहें । ’

ऐसे विख्यात आदित्यों के दलमें प्रमुखतया विराजमान मित्र, वरुण एवं अर्यमा के संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

प्रोतये वरुणं मित्रं... कृष्वावसे नो अद्य ।

(ऋ. ६।२१।९)

‘ आज विशेष ढंग से संरक्षण हो इसलिए मित्र एवं वरुण को तैयार कर ले । ’

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

वृधासश्च प्रचेतसः ॥ (ऋ. ८।८३।२)

‘ वे वर्धनशील तथा उत्कृष्ट ज्ञानवाले मित्रावरुण एवं अर्यमा हमेशा हमारे साथ रहनेवाले हों । ’

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् ।

अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ (ऋ. १।९०।११)

शं नो मित्रः, शं वरुणः. शं नो भवत्वर्थमा... ।

(ऋ. १।९०।९)

‘ सरल एवं निष्कपट नीतिसे प्रेरित होकर जाननेवाला मित्र, वरुण तथा देवताओं से युक्त अर्यमा हमें ले चलें । ’

‘ तीनों आदित्य हमारे लिए हितकारक बनें । ’

आ नो...गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः

सजोषाः । (ऋ. १।१८६।२)

‘ हमारे निकट तीनों देवतारूपी मित्रावरुण तथा अर्यमा मिल कर आ जायें । ’

वामं नो अस्त्वर्थमन् वामं वरुण शंस्यम् ।

वामं हि आवृणीमहे ॥ (ऋ. ८।८३।४)

‘ वे वरुण एवं अर्यमन् ! हमें प्रशंसनीय एवं सुन्दर धन मिल जाय; क्योंकि हम तो सुन्दर चीजको ही सर्वथा स्वीकार कर लेते हैं । ’

ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त नस्तिरो विश्वानि दुरिता

नयन्ति । सुक्षत्रासो वरुणो... ॥ (ऋ. ६।५१।१०)

‘ वे उत्तम क्षत्रियोचित बलसे पूर्ण मित्र एवं वरुण उच्च कोटि के तेजवाले हैं और निश्चय से हमें सारी बुराइयों के पार ले चलते हैं । ’

त आगमन्तु त इह श्रवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो

मित्रो... । (ऋ. ६।४९।१)

‘ वे अच्छे क्षत्रिय मित्रावरुण इधर आ जायें और हमारे कथन को सुन लें । ’

इस भाँति, मित्र और वरुण जिन्हें आदित्य दल में सर्वोपरि स्थान मिल गया है अपनी तीव्र लगन एवं अदम्य उत्साहसे जनसेवा को इतने अच्छे ढंग से निभाते हैं कि वैदिक कवि प्रसन्नचेता होकर उनकी खूब सराहना करते हैं, देखिए—

इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे

असुरा नवीयः ॥ (ऋ. ७।३६।२)

‘ हे बल तथा प्राण शक्ति देनेवाले मित्र और वरुण ! तुम दोनों के लिए मैं इस नयी सुन्दर वक्तृता को बना देता हूँ, मानों जैसे कि कोई अन्न बनाता हो अर्थात् सोच विचार के उपरान्त परिश्रमपूर्वक तैयार कर देता हूँ । ’

सविता देवताका परिचय

सविता के संबन्ध में ब्राह्मणग्रन्थों में निम्न निर्देश मिलते हैं जैसे—

सविता वै देवानां प्रसविता । (शत. १।१।२।१७)
(जै. उ. ३।१८।३)

सविता वै प्रसविता । (कौ. ६।१४)

‘सविता सचमुच देवोंको उत्पन्न करनेवाला है, उत्पादक है ।’

सविता वै प्रसवानामीशे । (कौ. १।३०; ७।१६)

सविता प्रसवानामीशे । (कौ. ५।२)

‘सविता विशेष उत्पादनोका प्रभु है ।’ इस से स्पष्ट हुआ कि उत्पादन या सृजनक्रिया से सविताका घनिष्ठ संबंध है । यही बात निम्न निर्देश में दिखाई देती है—

एताभिर्वै (रात्रिभिः) सविता सर्वस्य प्रसवमगच्छत् । (ताण्ड्य. २४।१५।२)

‘इन्हीं से युक्त हो सविता सबके उत्पादन के निकट चला गया ।’

सविता प्राजनयत् । (तै. ब्रा. १।६।२।२)

प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा असृजत ।

(तै. ब्रा. १।६।४।१)

‘सविताने प्रकृष्टतया उत्पन्न किया, प्रजापतिने सविता बनकर प्रजाओं का सृजन किया ।’

अब देखना चाहिए कि वेदग्रन्थोंमें उत्पादक सविता के संबंधमें कौनसे निर्देश पाये जाते हैं—

दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः ... विचक्षणः

प्रथयन्नापृणन्नुर्वजीजनत् सविता सुम्नमुक्थ्यम् ।

(ऋ. ४।५३।२)

‘विश्वकी प्रजाओंका पालनकर्ता, बुलोकका धारण करनेवाला और विशेष ढंगसे द्रष्टा सविता फैलानेका तथा भरनेका कार्य करता हुआ प्रशंसनीय एवं विशाल सुखका सृजन कर चुका ।’

...प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे । (ऋ. ५।८१।२)

‘मानवों तथा चौपायोंके लिए सविताने हितका निर्माण प्रकृष्ट रूपसे किया ।’

उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इत्... (ऋ. ५।८१।५)

‘हे सवितर् ! तू अकेला ही उत्पादन कार्यपर प्रभुत्व रखता है ।’

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चित्रमीमहे ॥ (ऋ. ५।८२।३)

‘वह सेवनीय या ऐश्वर्यवान् सविता तो दानी पुरुषके लिए रत्नोंका सृजन करता है और हम उस अनूठे भागको पाना चाहते हैं ।’

... देवः सविता दमूना ... आ दाशुषे सुवति

भूरि वामम् । (ऋ. ६।७१।४)

‘दान देनेकी इच्छा मनमें रखता हुआ द्योतमान सविता दानी पुरुषको देनेके लिए सुन्दर धन को प्रचुरमात्रा में बना देता है ।’

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु... ।

(अथर्व. ५।२४।१)

‘प्रकृष्ट उत्पादनोका स्वामी जो सविता है वह मेरी रक्षा करे ।’

वाममद्य सवितर्वामसु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।

(ऋ. ६।७१।६)

‘हे सवितर् ! आज हमारे लिए सुन्दर धनका सृजन कर, कल के दिन भी और प्रतिदिन धनका निर्माण कर ।’

अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् ।

(५।८२।४)

‘हे देवतारूपी सवितर् ! आज तू हमारे लिये सन्तानयुक्त अच्छे ऐश्वर्यका सृजन कर ।’

देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि

भागमुत्तमम् । (४।५४।२)

‘हे सवितर् ! पहले तो तू पूजनीय देवोंके लिए उत्कृष्ट तथा भजनीय धनका और अमरपनका निर्माण करता है ।’

य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन ।

प्र च सुवाति सविता ॥ (ऋ. ५।८२।९)

‘जो सविता इन सभी वस्तुओं को प्रकर्ष से उत्पन्न करता है और उत्पादित होनेपर श्लोक द्वारा चारों ओर सुनाता है ।’

उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यास्थ... व्यु१वीं पृथ्वी...
सृजानः आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः ॥

(ऋ. ७।३।२)

‘ हे सवितर् ! तू उठ खड़ा रह, इस प्रार्थना को सुन ले और तू विशाल पृथ्वी को बनाता है तथा मानवों के लिए मनु-ज्योपभोग्य धन-संपदा को प्रेरित करता है । ’

इन उपर्युक्त मन्त्रों से भी स्पष्ट होता है कि उत्पादन एवं प्रेरण सविता के प्रमुख कार्यों में गिने जाते थे । दोनों कार्य निःसन्देह महत्त्वपूर्ण हैं और वैदिक कवि सविता से निम्न प्रकार प्रार्थना करते हैं—

ये ते पन्थाः सवितः पूर्यासोऽरेणवः सुकृता
अन्तरिक्षे । तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी
रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥ (ऋ. १।३।११)

‘ हे (देव सवितर्) द्योतमान ! उत्पादक तथा प्रेरक सवितर् ! अन्तरिक्ष में (ते ये पूर्यासः) तेरे जो पूर्वकाल से विद्यमान (अरेणवः सु कृताः) बिना धूलि के अर्थात् निर्मल एवं भली भाँति बनाये हुए (पन्थाः) मार्ग हैं (तेभिः) उनपर से, (सुगेभिः पथिभिः) जो कि सुगमतापूर्वक यात्रा करने योग्य हैं, आकर (अद्य नः रक्ष) आज हमारी रक्षा कर (अधि ब्रूहि च) और हमसे वार्तालाप कर, कुछ उपदेश की बातें हम से कह दे । ’

अस्मभ्यं तद्विचो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया
दत्तं काम्यं राधः आ गात् । शं यत् स्तोतृभ्य
आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ॥

(ऋ. २।३।११)

‘ हे (सवितर्) उत्पादक तथा प्रेरक देव ! (त्वया दत्तं) तूने दिया हुआ (तत् काम्यं राधः) वह कमनीय धन (दिवः अद्भ्यः पृथिव्याः) धुलोक से, जलों से तथा भूमंडलपर से (अस्मभ्यं आ गात्) हमारे लिए आ जाय, (यत्) जो धन, (स्तोतृभ्यः) स्तोताओं के लिए तथा (उरुशंसाय जरित्रे) विस्तारपूर्वक कहनेवाले प्रशंसक के लिए (शं आपये भवति) शान्तिदायक तथा आम्रवत् बन जाता है । ’

बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातु-
रुभयस्य यो वशी । स नो देवः सविता शर्म
यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरुथमंहसः ॥

(ऋ. ४।५।६)

‘ (देवः सविता) दानी सविता (यः वशी) जो सब को वश में रखनेवाला, (जगतः स्थातुः) जंगम एवं स्थावर (उभ-यस्य जगतः निवेशनः) द्विविध संसार को ठीक बिठानेवाला, (प्रसवीता) प्रकर्ष से प्रेरित या उत्पन्न करनेवाला और (बृह-त्सुम्नः) प्रचंड सुख या धन साथ रखनेवाला है (सः नः) वह हमें (शर्म यच्छतु) सुख दे डाले और (अस्मे) हमारे लिए (अंहसः क्षयाय) पाप का विनाश हो इसलिए (त्रिव-रुथं) तीन विभागवाले घर का दान करे । ’ इससे विदित होता है कि सविता का कार्यक्षेत्र समूचे विश्व में फैला हुआ है ।

आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं, दधातु नः
सविता सुप्रजामिषम् । स नः क्षपाभिरह-
भिश्च जिन्वतु, प्रजावन्तं रयिमस्मे सभिन्वतु ॥

(ऋ. ४।५।३।७)

‘ देवतारूपी सविता (ऋतुभिः आगन्) विभिन्न मौसम में आ जाए और (क्षयं वर्धतु) हमारे निवासस्थल को बढ़ाए तथा (सुप्रजां मिषं) अच्छी सन्तान तथा अन्न (नः दधातु) हमें देदे; वह सविता (क्षपाभिः अहभिः च) रात-दिन (नः जिन्वतु) हमें संतुष्ट रखे और (अस्मे) हमारी ओर (प्रजावन्तं रयिं सं इन्वतु) सन्तानयुक्त धन भलीभाँति प्रेरित करे । ’

अभूद्देवः सविता वन्द्यो नु नः... वि यो रत्ना
भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अन्न द्रविणं यथा
दधत् ॥

(ऋ. ४।५।४।१)

‘ हमारे लिए द्योतमान सविता वन्दनीय हुआ है, इसमें सन्देह नहीं; जो मानवों को रमणीय धन बाँटकर देता है वह जैसे इधर हमारे लिए उच्च कोटि का द्रव्य रखे ऐसा प्रबंध करो । ’

गाव इन ग्रामं युयुधिरिवाश्वान् वाश्रेव वत्सं
सुमना दुहाना । पतिरिव जायामभि नो न्येतु,
घर्ता दिवः सविता विश्ववारः ॥ (ऋ. १०।१४।४)

‘ जैसे गौएँ सायंकाल अपने ग्राम की ओर सहर्ष लौट आती हैं, योद्धा जिस तरह उत्प्लुक्तापूर्वक घोड़ों के पास जा पहुँचता है, अच्छी मनवाली गौ दुहते समय रँभाती हुई अपने बछड़े के निकट जिस प्रकार शीघ्र जाती है और पतिदेव अपनी पत्नी के निकट जैसे तत्रितया जाता है वैसे ही यह सविता, जो

कि युलोक का धारणकर्ता और सब लोगों के लिए वर्णीय है, हमारे समीप अत्यन्त अधिक मात्रा में आ जाए ।'

**देवस्य वयं सवितुः सवीमनि, श्रेष्ठे स्याम वसु-
नश्च दावने । यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो
निवेशने प्रसवे चासि भूमनः ॥** (ऋ. ६।७।१२)

(वयं) हम लोग देवतारूपी सविता के उच्चकोटि के (सवीमनि) उत्पादन-कार्य की तथा (वसुनः दावने) धन-वितरण-कार्य की छत्रछाया में रहें, हे सवितर ! जो तू अखिल मानव तथा चौपायों के यथेष्ट सृजन एवं प्रस्थापन-कार्य में लगा हुआ है ।' इस मन्त्र में सविता के विशाल कार्यक्षेत्र की झलक मिलती है । वह केवल श्रेष्ठ ढंग के उत्पादन कार्य में ही लगा हो सो बात नहीं अपितु धनके विभाजन में भी उसका ध्यान बराबर लगा रहता है, क्योंकि यदि उत्कृष्ट उत्पादन की ओर ही ध्यान दिया जाय और उचित वितरण का कुछ भी ख्याल न रखा जाय तो बड़ी बिकट समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं जैसे कि वर्तमान आर्थिक संगठन से स्पष्ट होता है । समूचे विश्व के उत्पादन तथा ठीक जगह बिठाने के कार्य को सविता सुचारूप से निभाता है ।

**अदब्धेभिः सवितः पायुभिर्धुं शिवेभिरद्य परि
पाहि नो गयम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥** (ऋ. ६।७।१३)

' हे सवितर ! तू आज (नः गयं) हमारे धन तथा गृहको (शिवेभिः अदब्धेभिः पायुभिः) हितकारक तथा न दबाये गये संरक्षणसाधनों से (परि पाहि) चतुर्दिक् सुरक्षित रख और तू (हिरण्यजिह्वः) हितरमणीय वाणी से कहनेवाला है इसलिए हम तेरे सामने यह माँग पेश करते हैं कि हमें (नव्यसे सुविताय) नई भलाई के लिए बचा दे एवं हमपर (अघ-शंसः) बुरी बातें कहनेवाला कोई भी (माकिः ईशत) कभी न शासन प्रस्थापित करे ।'

**अपि घृतः सविता देवो अस्तु, यमा चित् विश्वे
वसवो गृणन्ति । स नः स्तोमान् नमस्यश्चनो
पादिश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरिन् ॥**

(ऋ. ७।३।८।३)

' सभी वसुतक जिसकी प्रशंसा करते हैं वह दानशाली सविता भी प्रशंसित होवे, वह नमन करने योग्य है और हमारे स्तोत्रोंको सुनकर हमें अब दे डाले तथा सारी संरक्षण आयोजनाओं को साथ लेकर विद्वन्मण्डली की रक्षा कर ले ।'

इससे स्पष्ट है कि उत्पादन, प्रेरण के अतिरिक्त संरक्षण कार्य करनेकी क्षमता भी पर्याप्त रूपसे सवितामें विद्यमान थी ।

सूर्य और सविता

साधारणतया सूर्यको सविता कह जाता है, अतः प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या सूर्य और सविता अभिन्न हैं ? ब्राह्मण-ग्रंथों के कुछ वचन इस अभिन्नता को मानते हैं ऐसा प्रतीत होता जैसे—

आदित्य एव सविता । गोपथ. १।३३; जै. उ.

४।२७।११

असावादित्यो देवः सविता । शतपथ. ६।३।१।१८

असौ वै सविता योऽसौ (सूर्यः) तपति ।

कौ. ७।६; गोपथ. १।२०

एष वै सविता य एष (सूर्यः) तपति ।

शतपथ. ३।२।३।१८; ४।४।१।३; ५।३।१।७

इन वचनों से स्पष्ट होता है कि सविता वास्तवमें सूर्य ही है, क्योंकि विश्वभरमें प्रेरणा और उत्पादन-क्रिया का सजीव प्रतीक सूर्य है, यह निःसन्देह है । वेदमें भी कुछ ऐसे मंत्र पाये जाते हैं जिनसे सूर्य एवं सविताकी अभिन्नताकी सूचना मिलती है, जैसे—

**अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः... हिरण्याक्षः
सविता देव आगात्, दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ।**

(ऋ. १।३।५।८)

' हितरमणीय दृष्टिसे युक्त सविता द्योतमान होता हुआ, दानी पुरुष के लिए स्वीकरणीय रत्नों को धारण करता हुआ, पृथ्वीके आठों दिग्दिग्भागों को प्रकाशित कर गया और आ पहुँचा है ।'

**हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः, उभे द्यावा-
पृथिवी अन्तरीयते, अपामीवां बाधते ..अभि
कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥** (ऋ. १।३।५।९)

' विशेष रीतिसे द्रष्टा और हाथ में सुवर्ण धारण करता हुआ भूलोक एवं युलोक दोनों के बीच चला आता है, रोगों को दूर भगाता है और आकर्षक तेजसे युलोक को व्याप्त करता है ।'

**आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो...हिरण्ययेन सवि-
ता रथेना आ देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥**

(ऋ. १।३।५।१२)

‘ आकर्षक तेज से युक्त हो आनेवाला द्योतमान सविता सुवर्ण के बने अर्थात् तेजस्वी जगमगाते हुए रथपर से विश्व को निहारता हुआ चला आता है । ’

**वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाण-
मुषसो वि राजति ।** (ऋ. ५।८।१।२)

‘ श्रेष्ठ सविताने आकाश को विशेष ढंग से प्रकाशित कर दिया है और वह उषाके प्रयाण के पश्चात् विराजमान हो उठता है । ’

**नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्ते, आपभिवान्
रोदसी अन्तरिक्षम् ।** (ऋ. १०।१३९।२)

‘ बुलोक, भूलोक तथा अन्तरिक्ष पूर्ण करता हुआ यह मानवोंका निरीक्षण करनेवाला आकाश के मध्य बैठे रहता है । ’

**सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योति-
रुदयाँ अजस्रम् ।** (ऋ. १०।१३९।१)

‘ सूर्य की रश्मिवाला तथा हरण करने की क्षमता से युक्त सविता सदैव प्रकाशपुंज को ऊपर उठाता है । ’

**सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्करभने सविता
द्यामदंहत् ।** (ऋ. १०।१४९।१)

‘ सविताने भूमि को यंत्रोंद्वारा स्थिर किया है और निरालंब से दिखाई देनेवाले स्थान में बुलोक को स्थायी बनाया है । ’

**आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा... प्र बाह्व
अस्माक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसव-
न्नक्तुभिर्जगत् ॥** (ऋ. ४।५३।३)

‘ बुलोकस्थ तथा भूमंडलस्थ लोकोंको अपने तेज से व्याप्त

कर चुका और जगत् को दिन और रात के समय प्रेरित तथा अपने स्थान पर बिठाकर उत्पादन कार्यके लिए सविताने अपने बाहुओं को खूब आगे बढ़ाया है । ’ सूर्य का सवितृत्व अख्यन्त स्पष्ट है ।

संरक्षण-कार्य करने के लिए सविता को निमंत्रण भेजने के निर्देश देखने योग्य हैं ।

**... ह्वयामि देवं सवितारमूतये । (ऋ. १।३५।१)
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये ।**

(ऋ. १।३२।५)

विभक्तारं ह्वयामहे वसोश्चित्रस्य राधसः ।

सवितारं नृचक्षसम् ॥ (ऋ. १।३२।७)

‘ संरक्षण हो इसलिए मैं देवतारूपी सविता को, जो हाथमें सुवर्ण धारण करता है, बुलाता हूँ; मानवों के द्रष्टा और अनूठे धन का विभजन करनेवाले सविता को हम बुलाते हैं । ’ इस प्रकार भक्तोंके दिये हुए निमंत्रण को पाकर सविता रथपर चढ़कर यात्रा करने लगता है, जैसे—

**हिरण्येन सवितां रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि
पश्यन् । ... बृहन्तं आस्थाद्ग्रथं सविता चित्र-
भानुः ।** (ऋ. १।३५।२-४)

‘ देव सविता भुवनों को देखता हुआ सुनाहले रथपरसे चला आता है; विचित्र किरणोंवाला याने तेजस्वी सविता बड़े भारी रथपर चढ़ गया । ’

इस भाँति, आदित्यों के महनीय कार्यका वर्णन वेदमें किया है । पाठक भी आदित्यों के मंत्र एवं सूक्त पढ़लें और मनन करें, ऐसी विनन्ति है ।



दैवत--संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

९ अदितिः, आदित्याश्च ।

(१) अदितिः ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।८९।१०)

(१) × गोतमो राह्वगणः । त्रिष्टुप् ।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षं—मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् १०

॥ २ ॥ (ऋ० ८।१८।४-७)

(२-५) इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

देवेभिर्देव्यदिते ऽरिष्टमर्मन्ना गहि । सत् सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ४

ते हि पुत्रासो अदिते—विदुर्द्वेषांसि योतवे ।

अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ५

अदितिर्नो दिवा पशु—मदितिर्नक्तमद्रथाः । अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ६

उत स्या नो दिवा मति—रदितिरूत्या गमत् । सा शंताति मयस्करदप सिधः ७ ५

॥ ३ ॥ (ऋ० ८।६७।१०-१२)

(६-८) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मन्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । गायत्री ।

उत त्वामदिते म—ह्यहं देव्युप ब्रुवे । सुमृळीकामभिष्टये १०

पषिं दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । मार्किस्तोकस्य नो रिषत् ११

अनेहो न उरुव्रज उरुचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकाय जीवसे १२ ८

॥ ४ ॥ (९-१५) (वा० य० ११।५६-५७, ५९)

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा खौपशा । सा तुभ्यमदिते मृह्योखां दधातु हस्तयोः ६६ ९

× वा० य० २५, २३ । अथर्व० ७।६।१ ।

१ दै. [अदितिः]

उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिर्धिया ।

माता पुत्रं यथोपस्थे साग्निं विभर्तु गर्भं आ । मुखस्य शिरोऽसि

५७ १०

अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे बिलं गृभ्णातु ।

कृत्वाय सा महीमुखां मृन्मयीं योनिमग्रये ।

पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति

५९ ११

॥ ५ ॥ (वा० य० २१।५-७) ×

महीमू षु मातरं सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।

तुविश्वत्रामजरन्तीमरूची सुशर्माणमदिति सुप्रणीतिम्

५

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदिति सुप्रणीतिम् ।

दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये

६

सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम् । शतारित्रा स्वस्तये

७ १४

॥ ६ ॥ (वा० य० २९।४) *

स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।

देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृष्णाना सुविते दधातु

४ १५

॥ ७ ॥ (अथर्व० ७।६।४) +

(१६-१७) अथर्वा । विराट् जगती ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदिति नाम वचसा करामहे ।

यस्या उपस्थं उर्वेऽन्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरूथं नि यच्छातु

४ १६

॥ ८ ॥ (अथर्व० ७।७।१) आर्षी जगती ।

दितैः पुत्राणामदितेरकारिषमव देवानां बृहतामनर्मणाम् ।

तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन

१ १७

अदिति-सहचारी देवगणः ।

(१) सोमः, अदितिः ।

॥ ९ ॥ (अथर्व० ६।७।१-२) [दै० सोमः १२५१-५२ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ]

× अथर्व० ७।६।२-३; * दै० [अग्निः] २१०९ ।

+ वा० य० ९, ५; १८, ३० ।

(२) आदित्याः ।

॥ १० ॥ (ऋ० १।४१।४-६)

(१८-२०) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सुगः पन्थां अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ४
यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नद्यत् ५
स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ६ २०

॥ ११ ॥ (ऋ० २।२७।१-१७)

(२१-३७) कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

इमा गिरं आदित्येभ्यो घृतस्नूः सुनाद् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः १
इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः २
त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः ।
अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति ३
धारयन्त आदित्यासो जगत् स्या देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।
दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यै मृतावानश्चर्यमाना ऋणानि ४
विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन् भय आ चिन्मयोभु ।
गुष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वश्रैव दुरितानि वृज्याम् ५ २५
सुगो हि वो अर्यमन् मित्र पन्थां अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति ।
तेनादित्या अर्धे वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ६
पिपर्तु नो अदिती राजपुत्रा ऽति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः ।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मो प स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ७
तिस्रो भूमीर्धारयन् त्रीरुत द्यून् त्रीणि व्रता विदथे अन्तरैषाम् ।
ऋतेनादित्या मर्हि वो महित्वं तदर्यमन् वरुण मित्र चारु ८
त्री रौचुना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः ।
अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय ९
त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः ।
शतं नो रास्व श्रदौ विचक्षे ऽश्यामार्युषि सुधितानि पूर्वा १०

न दक्षिणा वि चिकिते न सुव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा । पाक्या चिद् वसवो धीर्या चिद् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् यो राजभ्य ऋतुभिर्भ्यो दुदाश यं वर्धयन्ति पुष्ट्यश्च नित्याः ।	११
स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः शुचिरपः सुयवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः ।	१२
नकिष्टं मन्त्यन्तितो न दूराद् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद् वो वयं चकृमा कश्चिदागः ।	१३
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिस्राः उभे असौ पीपयतः समीची दिवो वृष्टि सुभगो नाम पुण्यन् ।	१४
उभा क्षयावाजयन् याति पृत्स्न भावधौ भवतः साधू असौ या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः ।	१५ ३५
अश्वीव तां अति येषु रथेना रिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान आ विदं शूनमापेः ।	१६
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	१७ ३७

॥ १२ ॥ (ऋ० ७।५।१-३)

(३८-५३) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शतमेन । अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः ।	१
अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वे ऋभवश्च विश्वे ।	२
इन्द्रो अगिरश्चिनां तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	३ ४०

॥ १३ ॥ (ऋ० ७।५।१-३)

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा । सनैम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः ।	१
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे	२ ४२

तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरिष्यानाः ।

पिता च तन्नो महान् यज्ञत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त

३ ४३

॥ १४ ॥ (ऋ० ७।६।४-१३)

गायत्री, १०-१३ प्रगाथः = (समा बृहती+विषमा सतोबृहती)

यदद्य सूर उदिते ऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवार्ति सविता भगः ४

सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः । ये नो अंहोऽतिपिप्रति ५ ४५

उत खराजो अदिति रदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते ६

प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं रिशादसम् ७

राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेघसातये ८

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इषं स्वश्च धीमहि ९

बहवः सूरचक्षसो ऽभिजिह्वा ऋतावृधः ।

त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः १० ५०

वि ये दुधुः शरदं मासमादहं यज्ञमक्तुं चादृचम् ।

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ११

तद् वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।

यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः १२

ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।

तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः १३ ५३

॥ १५ ॥ (ऋ० ८।१८।१-३, १०-२२)

(५४-६९) इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेतु मर्त्यैः । आदित्यानामपूर्व्यं सवीमनि १

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः २ ५५

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्मं यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ३

अपामीवामप स्निधमप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः १०

युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम् । ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ११

तत् सु नः शर्मं यच्छताऽऽदित्या यन्मुमौचति । एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः १२

यो नः कश्चिद् रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यैः । स्वैः ष एवै रिरिषीष्ट युर्जनः १३

समित् तमघमश्ववद् दुःशंसं मर्त्यै रिपुम् । यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उप इयुः १४ ६१

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम् । उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः १५
 आ शर्म पर्वताना मोतापां वृणीमहे । द्यावाक्षामारे अस्मद् रपस्कृतम् १६
 ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः । अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन १७
 तुचे तनाय तत् सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । आदित्यासः सुमहसः कृणोतन १८ ६५
 यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मूळत ।
 युष्मे इद् वो अपि ष्मसि सजात्यै १९
 बृहद् वरुथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये २०
 अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् । त्रिवरुथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः २१
 ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि ।
 प्र स्र न आयुर्जीवसे तिरेतन २२ ६९

॥ १६ ॥ (क्र० ८।१९।३४-३५)

(८०-७१) सोमरिः काण्वः । ३४ उष्णिक्, ३५ सतोबृहती ।

यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम् । मघोनां विश्वेषां सुदानवः ३४ ७०
 यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसदः क्षयन्तं मानुषां अनु ।
 वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्त्स्यामेदृतस्य रथ्यः ३५ ७१

॥ १७ ॥ (क्र० ८।४७।१-१३)

(७२-८४) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

महि वो महतामवो वरुण मित्रं दाशुषे ।
 यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं नश दनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १
 विदा देवा अघाना मादित्यासो अपाकृतिम् ।
 पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छता नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः २
 व्यस्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन ।
 विश्वानि विश्ववेदसो वरुथ्या मनामहे ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ३
 यस्मा अरासत क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः ।
 मनोर्विश्वस्य घेदिम आदित्या राय ईशते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ४ ७५
 परि णो वृणजन्मघा दुर्गाणि रथ्यो यथा ।
 स्यामेदिन्द्रस्य शर्म ण्यादित्यानामुतावस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ५ ७६

परिहृतेदुना जनो युष्मादत्तस्य वायति ।
 देवा अर्दभ्रमाश वो यमादित्या अहेतना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ६
 न तं तिग्मं चन त्यजो न द्रांसदुभि तं गुरु ।
 यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्व मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ७
 युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्त इव वर्मसु ।
 यूयं महो न एनसो यूयमभीदुरुष्यता नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ८
 अदितिर्न उरुष्यत्व दितिः शर्म यच्छतु ।
 माता मित्रस्य रेवतो ऽर्यम्णो वरुणस्य चा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ९ ८०
 यद् देवाः शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।
 त्रिधातु यद् वरुध्यं तदस्मासु वि यन्तना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १०
 आदित्या अव हि रूयता धि कूलादिब स्पशः ।
 सुतीर्थमर्वतो यथा नु नो नेषथा सुग मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ११
 नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।
 गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १२
 यदाविर्यदपीच्यं देवासो अस्ति दुष्कृतम् ।
 त्रिते तद् विश्वमाप्य आरे असद् दधातना नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १३ ८४

॥ १८ ॥ (ऋ० ८।६७।१-९, १३-२१)

(८५-१०९) मत्स्यः साम्भदः, मैत्रावरुणिर्मन्यः, बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । गायत्री ।

त्यान् नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान् याचिषामहे	। सुमूलीकाँ अभिष्टये	१	८५
मित्रो नो अत्यैहति वरुणः पर्षदर्यमा	। आदित्यासो यथा विदुः	२	
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरुथमस्ति दाशुषे	। आदित्यानामरुक्ते	३	
महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन्	। अवांसा वृणीमहे	४	
जीवान् नो अभि धेतना ऽऽदित्यासः पुरा हथात्	। कद्ध स्थ हवनश्रुतः	५	
यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरुथमस्ति यच्छदिः	। तेना नो अधि वोचत	६	९०
अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनांगसः	। आदित्या अर्द्धुतैनसः	७	
मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि	। इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी	८	
मा नो मुचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः	। देवा अभि प्र मृक्षत	९	
ये मूर्धानः क्षितीना मदब्धासः स्वयंशसः	। व्रता रक्षन्ते अद्रुहः	१३	९४

ते न आस्रो वृक्षाणा—मादित्यासो मुमोचत	। स्तेनं बद्धमिवादिते	१४	९५
अपो षु णं इयं शरु—रादित्या अपं दुर्मतिः	। अस्मदेत्वर्जघ्नुषी	१५	
शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या उतिभिर्वयम्	। पुरा नूनं बुभुज्महे	१६	
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः	। देवाः कृणुथ जीवसे	१७	
तत् सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति	। बन्धाद् बद्धमिवादिते	१८	
नास्माकमस्ति तत् तर आदित्यासो अतिष्कदे	। यूयमस्मभ्यं मृळत	१९	१००
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः	। पुरा नु जरसो वधीत्	२०	
वि षु द्वेषो व्यहति—मादित्यासो वि संहितम्	। विष्वग् वि वृहता रपः	२१	१०१

॥ १९ ॥ (ऋ० ८।१०।१६)

(१०३) जमदग्निर्भागवः । सतोबृहती ।

ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वे—कं पुत्रं तिसृणाम् ।		
ते धामान्यमृता मर्त्याना—मदब्धा अमि चक्षते	६	१०३

॥ २० ॥ (ऋ० १०।१८।५।१-३)

(१०४-१०६) सत्यधृतिर्वारुणिः । आदित्यः (स्वस्त्ययनम्) । गायत्री ।

महिं त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः	। दुराधर्षं वरुणस्य	१	
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारुणेषु	। ईशे रिपुरघशंसः	२	१०५
यस्मै पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय	। ज्योतिर्यच्छन्त्यर्जसम्	३	१०६

॥ २१ ॥ (१०७-१२०) (वा० य० ८।१-५)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णो उरुगायैष ते सोमस्तः रक्षस्व मा त्वा दमन्	१	
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं सशसि दाशुषे ।		
उपोपेक्षु मधवन् भूय इक्षु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा	२	
कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी ।		
तुरीयादित्यं सर्वनं त इन्द्रियमातस्थावमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा	३	
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुममादित्यासो भवता मृडयन्तः ।		
आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्ववृत्यादुहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा	४	११०
विवस्वन्नादित्येष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व	५	१११

॥ २२ ॥ (वा० य० १३।३,५)

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।		
स बुक्ष्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः	३	११२

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वेः ।
समानं योनिमनु सञ्चरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

५ ११३

॥ २३ ॥ (वा० य० १७।५९-६०)

विमानं एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।

स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्

५९

उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश ।

मध्यं दिवो निर्हितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ

६० ११५

॥ २४ ॥ (वा० य० २३।५; ३१।१७)×

युञ्जन्ति ब्रह्ममरुषं चरन्तं परिं तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि

५

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।

तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे

१७ ११७

॥ २५ ॥ (वा० य० ३३।८१-८३)

इमा उं त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत

८१

यस्यायं विश्व आयो दासः शेवधिपा अरिः ।

तिरश्चिदये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः

८२

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो युज्ञेषु विप्रराज्ये

८३ १२०

॥ २६ ॥ (अथर्व० २।३२।१-६) [दै० (आयुर्वेद०) १२५ सूक्तं द्रष्टव्यम् ।]

॥ २७ ॥ (अथर्व० १६।३।१-६)

(१२१-१६३) ब्रह्मा । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्;

५ साम्न्युष्णिक्; ६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्

१

रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्

२

उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम्

३

विमोकश्च मद्रपविश्च मा हासिष्टामाद्रदांनुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम्

४

१२४

× वा० य० २३।५ = दै० [इन्द्रः] २४; अथर्व० २०, २६, ४; ४७, १०; ६२, ९; साम० १४६८

२ दै. [अदितिः]

बृहस्पतिर्म आत्मा नमणा नाम ह्यः

५ १२५

असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा

६ १२६

॥ २८ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७)

१,३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराड्गमर्माऽनुष्टुप् ।

नाभिर्हं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्

१

स्वासदेसि सूषा अमृतो मर्त्येष्व

२

मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽबुहाय परां गात्र

३

सूर्यो माह्वः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः

४ १३०

प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मेषि

५

स्वस्त्यधोषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय

६

शकरी स्थ पशवो मोष स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु

७ १३१

॥ २९ ॥ (अथर्व० १७।१।१-३०)

१ जगती, १-८ ज्यवसाना, १-३ अतिजगती; ६-७, १९ अत्यष्टिः, ८, ११, १६ अतिधृतिः;

९ पञ्चपदा शकरी; १०-१३, १६, १८-१९, २४ ज्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः;

१२ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शकरी; १७ पञ्चपदा विराडतिशकरी;

१८ भूरिगष्टिः; २४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३, १६, १८-१९, २४

सप्तपदा; २० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्ठाद्बृहती; २२ याजुषी

अनुष्टुप्; २३ निचृद्बृहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्;

२७, ३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।

ईड्यं नाम ह इन्द्रमारुभमान् भूयासम्

१

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम्

२ १३५

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम्

३

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम्

४

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम्

५

उदिह्यदिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युदिहि ।

द्विषश्च महं रभ्यतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुमिर्विश्वरूपैः सुधायां मा वेहि परमे व्योमिन्

६ १३९

उदिह्युर्दिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युर्दिहि ।

यांश्च पयामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

७ १४०

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्सवृन्तये पाशिने उपतिष्ठन्त्यत्र ।

हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

८

त्वं न इन्द्र महते सौमगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

९

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।

आरोहस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षंछमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२

१४५

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरधौ या त इन्द्र पर्वमाने स्रविर्दि ।

ययेन्द्र तन्वाइन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वाइ शर्म यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३

त्वमिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि वेदुर्कर्मयो नार्धमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४

त्वं तृतं त्वं पर्येष्यत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयार्वाङ् शस्तिमेषि सुदिने बार्धमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७

१५०

त्वमिन्द्रस्त्वं मेहेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।

तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुहति जुह्वतस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

१८

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।

भूतं ह भव्य आर्हितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

१९

शुक्रोऽसि आजोऽसि । स यथा त्वं आर्जता आजोऽस्येवाहं आर्जता आज्यासम्

२०

रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन

च रुचिषीय

२१

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः २२

बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः

५ १२५

असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा

६ १२६

॥ २८ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७)

१,३ सामन्यनुष्टुप्; २ सामन्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आचर्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराट्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरेहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्

१

स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येष्व

२

मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परां गात्र

३

सूर्यो माह्वः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः

४ १३०

प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मैषि

५

स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्वे आपः सर्वगणो अशीय

६

शक्करी स्थ पशवो मोषं स्थेषुभिन्नावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु

७ १३१

॥ २९ ॥ (अथर्व० १७।१।१-३०)

१ जगती, १-८ ज्यवसाना, १-३ अतिजगती; ६-७, १९ अत्यष्टिः, ८, ११, १६ अतिधृतिः;

९ पञ्चपदा शक्करी; १०-१३, १६, १८-१९, २४ ज्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः;

१२ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शक्करी; १७ पञ्चपदा विराडतिशक्करी;

१८ भूरिगष्टिः; २४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३, १६, १८-१९, २४

सप्तपदा; २० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्ठाद्बृहती; २२ याजुषी

अनुष्टुप्; २३ निचृद्बृहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्;

२७, ३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं सधनजितम् ।

ईड्यं नाम ह इन्द्रमारुभ्मान् भूयासम्

१

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम्

२ १३५

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम्

३

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम्

४

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम्

५

उदिह्यदिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युदिहि ।

द्विषंश्च मद्यं रभ्यंतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायी मा वेहि परमे व्योमिन्

६ १३९

उद्विह्वदिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युदिहि ।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

७ १४०

मा त्वा दभन्तसलिले अप्सवन्तये पाशिने उपतिष्ठन्त्यत्र ।

द्वित्वाशस्ति दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

८

त्वं न इन्द्र महते सौमगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

९

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।

आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षष्ठमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२

१४५

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्रौ या त इन्द्र पवमाने स्वर्विदि ।

ययेन्द्र तन्वाष्टन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वाष्टमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३

त्वमिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्ऋषयो नार्धमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४

त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नमसी वि भासि ।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्रांस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयावर्षाडशस्तिमेषि सुदिने नार्धमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७

१५०

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।

तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुहति जुहंतस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

१८

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।

भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः०

१९

शुक्रोऽसि आजोऽसि । स यथा त्वं आजता आजोऽस्येवाहं आजता आज्यासम्

२०

रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन

च रुचिषीय

२१

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः

२२

१५५

बृहस्पतिर्म आत्मा नमणा नाम ह्यः	५	१२५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा	६	१२६

॥ २८ ॥ (अथर्व० १६।४।१-७)

१,३ साम्यनुष्टुप्; २ साम्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आच्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराड्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्	१	
स्वासदसि सुषा अमृतो मर्त्येष्व	२	
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽब्रुहाय परां गात्र	३	
सूर्यो माहः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः	४	१३०
प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मैषि	५	
स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय	६	
शक्ररी स्थ पशवो मोष स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु	७	१३२

॥ २९ ॥ (अथर्व० १७।१।१-३०)

१ जगती, १-८ ज्यवसाना, १-३ अतिजगती; ६-७, १९ अत्यष्टिः, ८, ११, १६ अतिधृतिः;
९ पञ्चपदा शक्ररी; १०-१३, १६, १८-१९, २४ ज्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः;
१२ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शक्ररी; १७ पञ्चपदा विराडतिशक्ररी;
१८ भूरिगष्टिः; १४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३, १६, १८-१९, २४
सप्तपदा; २० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्ठाद्बृहती; २२ याजुषी
अनुष्टुप्; २३ निचृद्बृहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्;
२७, ३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।

ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमारुभ्मान् भूयासम्	१	
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम्	२	१३५
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम्	३	
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम्	४	
विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम्	५	
उदिह्युदिहि सूर्यं वर्चसा माम्युदिहि ।		
द्विषश्च मह्यं रघ्यंतु मा चाहं द्विषते रघं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।		
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन्	६	१३९

उदिह्युदिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युदिहि ।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ७ १४०

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्सवन्तये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।

हित्वाशस्ति दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ८

त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ९

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शतमो भव ।

आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहुतस्त्वमिन्द्र ।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि पञ्चमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२ १४५

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरशौ या त इन्द्र पर्वमाने स्वर्विदि ।

ययेन्द्र तन्वाइन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वाइश्चमं यच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३

त्वमिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्कषयो नार्धमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४

त्वं तृतं त्वं पर्येष्यत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस क्रतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयार्वाङ्शस्तिमेषि सुदिने बार्धमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७ १५०

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।

तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुहति जुह्वतस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १८

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।

भूतं ह भव्य आर्हितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १९

शुक्रोऽसि आजोऽसि । स यथा त्वं आजता आजोऽस्येवाहं आजता आज्यासम् २०

रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन

च रुचिषीय

२१

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः २२ १५५

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः०	२३
उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह ।	
सपत्नान् मह्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रन्धं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।	
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन्	२४
आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सुत्रातिं पारय	२५
सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सुत्रातिं पारय	२६
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मेणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।	
जरदंष्ट्रिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्	२७ १६०
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मेणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।	
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय	२८
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।	
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः	२९
अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्तस्त्रयो नुदतां मृत्युपाशान् ।	
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम्	३० १६३

॥ ३० ॥ (अथर्व० १९।१८।४)

(१६४) अथर्वा । आर्च्यनुष्टुप् ।

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवं एतस्यां दिशोऽभिदासात्	४ १६४
--	-------

(१६५) ॥ ३१ ॥ (अथर्व० २०।१३।६)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन् ।

तां ह जरितः प्रत्यायंस्तासु ह जरितः प्रत्यायन्

६ १६५

आदित्य-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः ।

॥ ३२ ॥ [दै० (उषा) १८७-१९१ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(२) अग्निमित्रवरुणादित्यविश्वेदेवाः ।

(१६६) ॥ ३३ ॥ (वा० य० ४।११)

व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञिर्यः ।

दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वचोधां यज्ञवोहसः सुतीर्था नो असद्वशे ।

ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा

११ १६६

(३) आदित्या वसवोऽङ्गिरसः पितरः ।

॥ ३४ ॥ (अथर्व० २।११।४) (१६७) भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अशीतिभिस्त्रिसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामासुं ददे हरसा दैव्येन

४ १६७

(४) भगादित्याः ।

॥ ३५ ॥ (अथर्व० ३।१६।२-३, ५) (१६८-१७०) ; अथर्वी । त्रिष्टुप् ।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।

आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं मक्षीत्याहं

२

भग प्रणेतुर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्चैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम

३

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम ।

ते त्वा भग सर्व इजोहवीमि स नो भग पुरता भवेह

५ १७०

(५) बृहस्पतिः, आदित्यः ।

॥ ३६ ॥ (अथर्व० ४।१।१-७) +

(१७१-१७७) वेनः । त्रिष्टुप्, २, ५ पुरोऽनुष्टुप् ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः

१

इयं पित्र्या राष्ट्रयेत्वग्ने प्रथमाय जुनुषे भुवनेष्ठाः ।

तस्मा एतं सुरुचं ह्यारमह्यं धर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे

२ १७२

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति ।
 ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मर्घ्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ ३
 स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत् ।
 महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सन्न पार्थिवं च रजः ४
 स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट् ।
 अह्यर्च्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्ठार्थं द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः ५ १७५
 नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्यस्य धाम ।
 एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन्न ६
 योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात् ।
 त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान् ७ १७७

(६) दिवादित्यौ ।

॥ ३७ ॥ (अथर्व० ४।३९।५-६)

(१७८-१७९) अङ्गिराः । ५ त्रिपदा महाबृहती, ६ संस्तरपङ्क्तिः ।

दिव्यादित्याय समनमन्त्स आर्धोत् ।
 यथा दिव्यादित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ५
 द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः । सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
 आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ६ १७९

(७) आदित्यादयः ।

॥ ३८ ॥ (अथर्व० ५।२१।१०-१२)

(१८०-१८२) ब्रह्मा । अनुष्टुप्, ११ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आदित्यं चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनु धावत । पत्सङ्गिनीरा संजन्तु विगते बाहुवीर्ये १० १८०
 युयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।
 सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः ११
 एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः । अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा १२ १८२

(८) आदित्या रुद्रा वसवश्च ।

॥ ३९ ॥ (१८३) (अथर्व० २०।१३।९)

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राधः प्रति गृष्णीहङ्गिरः ।
 इदं राधो विश्व प्रभु इदं राधो बृहत्पृथु ९ १८३

(३) मित्रः, मित्रावरुणौ च ।

॥ ४० ॥ (ऋ० १।१५।११)

(१८४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

मित्रं न यं शिष्या गोषु गव्यवः स्वाध्यायं विदथे अप्सु जीर्जनम् ।
अरेजेतां रोदसी पार्जसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः

१ १८४

॥ ४१ ॥ (ऋ० ३।५९।१-९)×

(१८५-१९३) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप्, ६-९ गायत्री ।

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्रहोत

१ १८५

प्र स मित्रं मर्तो अस्तु प्रयस्वान् यस्त आदित्यं शिक्षति व्रतेन ।

न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्रोत्यन्तितो न दूरात्

२

अनमीवास इळ्या मदन्तो मितव्रवो वरिमन्ना पृथिव्याः ।

आदित्यस्य व्रतमुपक्षिपन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम

३

अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः ।

तस्य वयं सुमतौ युजियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम

४

महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः ।

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविरा जुहोत

५

मित्रस्य चर्षणीधृतो ऽवो देवस्य सानसि । द्युमं चित्रश्रवस्तमम्

६ १९०

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम्

७

मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान् विश्वान् बिभर्ति

८

मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तवर्हिषे । इषं इष्टव्रता अकः

९ १९३

॥ ४२ ॥ (१९४) (वा० य० १।५३)

मित्रः सः सृज्यं पृथिवीं भूमिं च ज्योतिषा सह ।

सुजातं जातवेदसमयक्ष्मार्यं त्वा सः सृजामि प्रजाभ्यः

५३ १९४

॥ ४३ ॥ (अथर्व० १९।१९।१)

(१९५) अथर्वा भुरिगृहती ।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विशतु तां प्र विशतु सा वः शर्मं च वर्मं च यच्छतु

१ १९५

॥ ४४ ॥ (ऋ० १।२।७-९)

(१९६-१९८) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं धृताचीं सार्धन्ता ७
ऋतेन मित्रावरुणा वृतावृधावृतस्पृशा । ऋतुं बृहन्तमाशथे ८
ऋवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अयसम् ९ १९८

॥ ४५ ॥ (ऋ० १।२३।४-६)

(१९९-२०१) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ४
ऋतेन यावृतावृधा वृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ५ २००
वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वाभिरुतिभिः । करतां नः सुरार्धसः ६ २०१

॥ ४६ ॥ (ऋ० १।४३।३)

(२०२) कण्वो घोरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३ २०२

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।१३६।१-७)

(२०३-२१३) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

न्येष्टं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां स्वादिष्टं मृळयद्भ्याम् ।
राजा धृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता ।
ः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे १
गातुरुवे वरीयसी पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिश्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः ।
मेत्रस्य सार्दनमर्यम्णो वरुणस्य च ।
दधाते बृहदुक्थ्यं वयं उपस्तुत्यं बृहद् वयः २
तष्मतीमर्दिति धारयर्त्क्षितिं स्वर्वतीमा संचेते दिवेर्दिवे जागृवांसां दिवेर्दिवे ।
तष्मत् क्षत्रमांशाते आदित्या दानुनस्पती ।
स्तयोर्वरुणो यातयज्ञनो ऽर्यमा यातयज्ञनः ३ २०५
मित्राय वरुणाय शतमः सोमो भूत्ववपानेष्वाभंगो देवो देवेष्वाभंगः ।
इवासो जुषेरत् विश्वे अद्य सजोषसः ।
राजानां करथो यदीमह ऋतावानां यदीमह ४ २०६

यो मित्राय वरुणाय विधुज्जनो ऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो दाश्वांसं मर्तमंहसः ।

तमर्यमाभि रक्ष—त्यृज्यन्तमनु व्रतम् ।

उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ५

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकाय मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मसीमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ७ २०९

॥ ४८ ॥ (१।१३७।१-३) अतिशक्करी ।

सुषुमा यातमर्द्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इमे ।

आ राजाना दिविस्पृशा ऽस्मत्रा गन्तमुप नः ।

इमे वा मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा गवाशिरः १ २१०

इम आ यातमिन्द्रवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः ।

उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये २

तां वा धेनुं न वासरी मंशु दुहन्त्यर्द्रिभिः सोमं दुहन्त्यर्द्रिभिः ।

अस्मत्रा गन्तमुप नो ऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।

अयं वा मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ३ २११

॥ ४९ ॥ (ऋ० १।१३९।२) अत्यष्टिः ।

यद्ध त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादुदाथे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य स्वेन मन्युना ।

युवोरित्थाधि सन्न—स्वपश्याम हिरण्ययम् ।

धीभिश्च न मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः २ २१३

॥ ५० ॥ (ऋ० १।१५१।२-९)

(२१४-२३९) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

यद्ध त्यद् वां पुरुमीळहस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाधुवः ।

अध कर्तुं विदतं गातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पुस्त्यावतः २

आ वां भूषन् क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे ।

यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या वीथो अध्वरम् ३ २१५

३ [दै० अदितिः०]

प्र सा क्षितिर्सुर या महिं प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।

युवं दिवो बृहतो दक्षमाश्रुवं गां न धुर्युषं युञ्जाथे अपः

४

मही अत्र महिना वारमृण्वथो ऽरेणवस्तुज आ सवन् धेनवः ।

स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निमृच उषसस्तक्ववीरिव

५

आ वामृताय केशिनीरनूषत् मित्र यत्र वरुण गातुमर्चथः ।

अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः

६

यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः ।

उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू

७

युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु ।

भरन्ति वां मन्मना संयता गिरो ऽहृष्यता मनसा रेवदाशथे

८ २२०

रेवद् वयो दधाथे रेवदाशथे नरा मायाभिरितुति माहिनम् ।

न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नानंशुर्मघम्

९ २२१

॥ ५१ ॥ (ऋ० १।१५२।१-७) त्रिष्टुप् ।

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः ।

अवातिरतमनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे

१

एतच्चुन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋधावान् ।

त्रिरश्रिं हन्ति चतुरश्रिग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन्

२

अपादैति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद् वां मित्रावरुणा चिकेत ।

गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपत्यनृतं नि तारीत्

३

प्रयन्तमित् परिं जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिषद्यमानम् ।

अनेवपृग्णा वितता वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम

४ २२५

अनश्चो जातो अनभीशुरवा कनिक्रदत् पतयदूर्ध्वसानुः ।

अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गुणन्तः

५

आ धेनवो मामतेयमवन्ती ब्रह्मप्रियं पीपयन्तस्मिन्नूधन् ।

पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्रा नासाविवासानादितिमुरुष्येत्

६

आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवाववसा ववृत्याम् ।

असाकं ब्रह्म पृतेनासु सद्या असाकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा

७ २२८

॥ ५२ ॥ (ऋ० १।१५३।१-४)

यजामहे वां महः सजोषा हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।	
घृतैर्घृतस्नु अध यद् वामस्ये अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति	
प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिर्यामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः ।	
अनक्ति यद् वां विदथेषु होता सुम्रं वां सूरिर्वृषणाविर्यक्षन्	२ २३०
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे ।	
हिनोति यद् वां विदथे सपर्यन्तस रातहव्यो मानुषो न होता	३
उत वां विश्व मद्यास्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः ।	
उतो नो अस्य पूर्यः पतिर्दन् वीतं पातं पर्यस उस्त्रियायाः	४ २३२

॥ ५३ ॥ (ऋ० २।४१।४-६) ×

(२३३-२३५) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । गायत्री ।	
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोमं क्रतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम्	४
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते	५
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचैते अनवह्वरम्	६ २३५

॥ ५४ ॥ (ऋ० ३।६२।१६-१८) +

(२३६-२३८) गायिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । गायत्री ।

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुक्रतू	१६
उरुशंसो नमोवृधा मद्वा दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचित्रता	१७
गुणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा	१८ २३८

॥ ५५ ॥ (ऋ० ५।६२।१-९)

(२३९-२४७) श्रुतविदात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वाङ् ।	
दशं शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम्	१
तत् सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुहे ।	
विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अन्तु वामेकः पविरा ववर्त ।	२
अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः ।	
वर्धयन्तमोषधीः पिन्वन्तं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू	३ २४१

× ऋ० २,४१,४=वा० य० ७,९;

+ ऋ० ३,६२,१६=वा० य० २१।८; सा० २२०,६६३

*

आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरंमय उप यन्त्वर्वाक् । घृतस्य निर्णिगन्तु वर्तते वा—मुप सिन्धवः प्रदिर्वि क्षरन्ति अनु श्रुताममतिं वर्धदुर्वा बर्हिर्वि यजुषा रक्षमाणा । नमस्वन्ता धृतदुश्वाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः । राजाना क्षत्रमहणीयमाना सहस्रस्थूणं बिभृथः सह द्रौ हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्यश्वार्जनीव । भद्रे क्षेत्रे निर्मिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टा—वयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य । आ रोहथो वरुण मित्र गर्त—मत्तश्चक्ष्वाथे अर्दितिं दितिं च यद् बर्हिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा । तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम	४ ५ ६ ७ ८ ९	२४५
--	----------------------------	-----

॥ ५६ ॥ (ऋ० ५।६३।१-७)

(२४८-२६१) अर्चनाना आत्रेयः । जगती ।

ऋतस्य गोपावधिं तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि । यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत् पिन्वते दिवः सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दशा । वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी । चित्रेभिर्भ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया माया वा मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् । तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गर्विष्ठिषु । रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम् वाचं सु मित्रावरुणाविरावती पर्जन्याश्चित्रा वदति त्विषीमतीम् । अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम् । धर्मेणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया । ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्	१ २ ३ ४ ५ ६ ७	५५० २५४
---	---------------------------------	------------

॥ ५७ ॥ (ऋ० ५।६४।१-७) अनुष्टुप्, ७ पङ्क्तिः ।

वरुणं वो रिशादस—मृचा मित्रं हवामहे । परिं व्रजेव वाहो—जगन्वासा स्वर्णरम् १ २५५
 ता वाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते । शेवं हि जार्यं वा विश्वासु क्षासु जोगुवे २
 यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा । अस्य प्रियस्य शर्मण्य—हिंसानस्य सश्वरे ३
 युवाभ्यां मित्रावरुणो—पमं धेयामृचा । यद्वा क्षये मघोनां स्तोतृणां च स्पर्धसे ४
 आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ । स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे ५
 युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च विभृथः । उरुणो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये ६ २६०
 उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशद्वि ।
 सुतं सोमं न हस्तिभि—रा पङ्क्तिर्धिवतं नरा विभ्रतावर्चनानसम् ७ २६१

॥ ५८ ॥ (ऋ० ५।६५।१-६)

(२६२-२७३) रातहव्य आत्रेयः । अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

यश्चिकेत स सुक्रतु—देवत्रा स ब्रवीतु नः । वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः १
 ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता सत्पती ऋतावृधं ऋतावाना जनैजने २
 ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा । स्वश्वासः सु चेतुना वाजा अभि प्र दावने ३
 मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते । मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ४ २६५
 वयं मित्रस्यावासि स्याम सप्रथस्तमे । अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ५
 युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः ।
 मा मघोनः परिं ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ६ २६७

॥ ५९ ॥ (ऋ० ५।६६।१-६) अनुष्टुप् ।

आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा । वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे १
 ता हि क्षत्रमविहुतं सम्यगसुर्यमाशाते । अथ व्रतेव मानुषं स्वर्गं धायि दर्शतम् २
 ता वामेषे रथाना—मुर्वी गव्यूतिमेषाम् । रातहव्यस्य सुष्टुतिं दुधृक् स्तोमैर्मनामहे ३ २७०
 अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पुभिर्द्भुता । नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ४
 तद्वतं पृथिवि बृह—च्छ्रवण ऋषीणाम् । जयसानावरं पृथ्व—ति क्षरन्ति यामभिः ५
 आ यद् वामीयचक्षसा मित्रं वयं च सूरयः । व्यचिष्टे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ६ २७३

॥ ६० ॥ (ऋ० ५।६७।१-५)

(२७४-२८३) यजत आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

बलित्था देव निष्कृत—मार्दित्या यजतं बृहत् । वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे १
 आ यद् योनिं हिरण्यं वरुण मित्र सदथः । धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्रं रिशादसा २ २७५

विश्वे हि विश्वेवैदसो वरुणो मित्रो अर्थमा । व्रता पदेवं सश्विरे पान्ति मर्त्ये रिषः ३
 ते हि सत्या ऋतस्पृशं ऋतावानो जनैजने । सुनीथासः सुदानवो—ऽहोश्चिदुरुचक्रयः ४
 को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् । तत् सु वामेषते मति—रत्रिभ्य एषंत मतिः ५ २७८

॥ ६१ ॥ (ऋ० ५।६८।१-५) गायत्री ।

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत् १
 सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता २ २८०
 ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महिं वां क्षत्रं देवेषु ३
 ऋतमृतेन सर्पन्ते—षिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ४
 वृष्टिर्धावा रीत्यापे—षस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ५ २८३

॥ ६२ ॥ (ऋ० ५।६९।१-४)

(२८४-२९१) उरुचक्रिरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

त्री रौचिना वरुण त्रीरुत घृन् त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि ।
 वावृधानावमतिं क्षत्रियस्या—ऽनु व्रतं रक्षमाणावजुर्धम् १
 इरावतीर्वरुण धेनवो वां मधुमद् वां सिन्धवो मित्र दुहे ।
 त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिषूणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः २ २८५
 प्रातर्देवीमर्दितिं जोहवीमि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।
 राये मित्रावरुणा सर्वताते—ळे तोकाय तनयाय शं योः ३
 या धर्तारा रजसो रोचनस्यो—तादित्या दिव्या पार्थिवस्य ।
 न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि ४ २८७

॥ ६३ ॥ (ऋ० ५।७०।१-४) गायत्री ।

पुरुषा चिद्वचस्त्य—वो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम् १
 ता वां सम्यगद्रुह्वाणे—षमश्याम धार्यसे । वयं ते रुद्रा स्याम २
 पातं नो रुद्रा पायुभि—रुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम् दस्युन् तनूभिः ३ २९०
 मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ४ २९१

॥ ६४ ॥ (ऋ० ५।७१।१-३)

(२९२-२९७) बाहुवृक्त आत्रेयः गायत्री ।

आ नो गन्तं रिशादसा वरुणे मित्रं बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् १
 विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्रं राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः २ २९३

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्रं दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ३ २९४

॥ ६५ ॥ (ऋ० ५।७२।१-३) उष्णिक् ।

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये १ २९५

व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मेणा यातयज्जना । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये २

मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये । नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये ३

॥ ६६ ॥ (ऋ० ६।६७।१-११)

(२९८-३०८) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

विश्वेषां वः सुतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृध्वयै ।

सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्टा द्वा जना असमा बाहुभिः स्वैः १

इयं मद् वां प्र स्तृणीते मनीषो प प्रिया नमसा बर्हिरच्छ ।

यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छुर्दियद् वां वरुध्वं सुदानू २

आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्यु प प्रिया नमसा ह्ययमाना ।

सं यार्वमः स्थो अपसेव जनाञ्छुधीयतश्चिद् यतथो महित्वा ३ ३००

अश्वा न या वाजिना पृतबन्धू क्रता यद् गर्भमदितिर्भरन्ध्वै ।

प्र या महि महान्ता जार्यमाना घोरा मर्ताय रिपवे नि दीधः ४

विश्वे यद् वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः ।

परि यद् भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः ५

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून् दृहेथे सानुष्टुपमादिव द्योः ।

दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान् द्यां धासिनाथोः ६

ता विग्रं धैथे जठरं पृणध्या आ यत् सन्न सभृतयः पृणन्ति ।

न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत् पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ७

ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद् वां सत्यो अरतिर्कृते भूत् ।

तद् वां महित्वं घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ८ ३०५

प्र यद् वां मित्रावरुणा स्पर्धन् प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति ।

न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः ९

वि यद् वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः ।

आद् वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नर्किदेवेभिर्यतथो महित्वा १०

अवोरिस्था वां छुर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु ।

अनु यद् गावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णं यद् रणे वृषणं युनर्जन ११ ३०८

॥ ६७ ॥ (ऋ० ७।५०।१)

(३०२-३४७) मित्रावरुणिवेसिष्ठः । जगती ।

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद् विश्वयन्मा न आ गन् ।
अजकावं दुर्दृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदुत् त्सरुः

१ ३०९

॥ ६८ ॥ (ऋ० ७।६०।२-१२) त्रिष्टुप् ।

एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन् ।
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्
अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद् या ई वहन्ति सूर्यं घृताचीः ।
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे
उद् वा पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमणीः ।
यस्मा आदित्या अश्विनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः
इमे चेतारो अनृतस्य भूरे—मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति ।
इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अर्दितेरदब्धाः
इमे मित्रो वरुणो दूळभासो ऽचेतसं चिचितयन्ति दक्षैः ।
अपि ऋतुं सुचेतसं वतन्त—स्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति
इमे दिवो अर्निमिषा पृथिव्या—श्चिकित्वांमो अचेतसं नयन्ति ।
प्रत्राजे चिन्नद्यौ गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्वन्
यद् गोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे ।
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपुः काश्चिद् वरुणधृतः सः
परि द्वेषोभिर्यमा वृणक्तु—रुं सुदासे वृषणा उ लोकम्
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेषा—मपीच्येन सहसा सहन्ते ।
युष्मद् भिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मूळता नः
यो ब्रह्मणे समृतिमायजाते वार्जस्य सातौ परमस्य रायः ।
सीक्षन्त मनुं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

२ ३१०

३

४

५

६

७ ३१५

८

९

१०

११

१२ ३२०

॥ ६९ ॥ (ऋ० ७।६।१-७)

उद् वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्तत्त्वान् ।	
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्ववा चिकेत	१
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुर्दियति ।	
यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत् क्रत्वा न शरदः पूणैथे	२
प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वद् बृहतः सुदानू ।	
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा	३
शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्धधे महित्वा ।	
अयन् मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनै तिराते	४
अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् ।	
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निष्यान्यचित्ते अभूवन्	५ ३२५
समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सुबाधः ।	
प्र वां मन्मान्यचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि	६
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।	
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	७ ३२७

॥ ७० ॥ (ऋ० ७।६।४-६)×

द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे ।	
मा हेळै भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम्	४
प्र बाहवांसि सृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन ।	
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवैमा	५
नू मित्रो वरुणो अर्यमा न स्तमने तोकाय वरिवो दधन्तु ।	
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	*६ ३३०

॥ ७१ ॥ (ऋ० ७।६।१-५)

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् ।	
हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त	१ ३३१

× ऋ० ७, ६२, ५ = वा० य० २१, ९ । * ऋ० ७।६।६

४ है. [अदितिः]

आ राजाना मह ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् ।

इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टि—मर्व दिव ईन्वतं जीरदानू २

मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र सार्धिष्ठेभिः पृथिभिर्नयन्तु ।

ब्रवद् यथा न आदरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः ३

यो वां गर्तं मनसा तक्षदेत—मूर्ध्वा धीतिं कृणवद् धारयच्च ।

उक्षेथो मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्षयेथाम् ४

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३३५

॥ ७२ ॥ (ऋ० ७।६५।१-५)

प्रति वां स्र उदिते सूक्तै—मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।

ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगृत् १

ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः ।

अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च २

ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय ।

ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वा—मपो न नावा दुरिता तरेम ३

आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।

प्रति वामत्र वरुमा जनाय पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारोः ४

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३४०

॥ ७३ ॥ (ऋ० ७।६६।१-३, १७-१९) गायत्री ।

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः । नमस्वान् तुविजातयोः १

या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । असुर्याय प्रमहसा २

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् । मित्रं साधयतं धियः ३

काव्येभिरदाभ्या ऽऽयातं वरुण द्युमत । मित्रश्च सोमपीतये १७

दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी १८ ३४५

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा १९ ३४६

॥ ७४ ॥ (ऋ० ८।१५।१-९, १३-२४)

(३४७-३६७) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक्, २३ उष्णिग्गर्भा ।

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया । ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा १ ३४७

मित्रा तना न रथ्याइ वरुणो यश्च सुक्रतुः । सनात् सुजाता तनया धृतव्रता २
 ता माता विश्ववेदसा ऽसुर्याय प्रमहसा । मही जज्ञानादितिर्क्रतावरी ३
 महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा । क्रतावानावृतमा घौषतो बृहत् ४ ३५०
 नपाता शवसो महः सूनू दक्षस्य सुक्रतू । सुप्रदान् इषो वास्त्वधि क्षितः ५
 सं या दानूनि येमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः । नमस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ६
 अधि या बृहतो दिवोइ ऽभि यूथेव पश्यतः । क्रतावाना सम्राजा नमसे हिता ७
 क्रतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू । धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमांशतुः ८
 अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा ऽनुल्बणेन चक्षसा । नि चिन्मिषन्तां निचिरा नि चिक्व्यतुः ९ ३५५
 तद् वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् । मित्रो यत् पान्ति वरुणो यदर्यमा १३
 उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तदश्विना । इन्द्रो विष्णुर्मिद्धांसः सजोषसः १४
 ते हि ष्मा वनुषो नरो ऽभिमाति कयस्य चित् । तिग्मं न क्षोदः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः १५
 अयमेक इत्था पुरूरु चष्टे वि विरपतिः । तस्य व्रतान्यनु वश्वरामसि १६
 अनु पूर्वाण्योक्ता साम्राज्यस्य सश्विम । मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् १७ ३६०
 परि यो रश्मिना दिवो ऽन्तान् ममे पृथिव्याः । उभे आ पग्नौ रोदसी महित्वा १८
 उदु ष्य शरणे दिवो ज्योतिरयस्त सूर्यः । अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः १९
 वचो दीर्घप्रसवनी शे वाजस्य गोमतः । ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने २०
 तत् सूर्य रोदसी उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे । भोजेष्वसाँ अभ्युचरा सदा २१
 क्रज्जमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे । रथं युक्तमसनाम सुषामणि २२ ३६५
 ता मे अश्व्यानां हरीणां नितोशना । उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा २३
 स्रदभीशू कशावन्ता विप्रा नविष्ठया मती । महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम् २४ ३६७

॥ ७५ ॥ (क्र० ८।१०१।१-४) +

(३६८-३७१) जमदग्निर्भागवः १-२ प्रगाथः=(बृहती+स्तोबृहती), ३ गायत्री, ४ सतोबृहती ।

ऋधगित्था स मर्त्यः शशुमे देवतातये ।

यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये १

वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।

ता बाहुता न दुंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः २

प्र यो वा मित्रावरुणा ऽजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदैरघुः ३ ३७०

+ क्र० ८, १०१, १ = वा० य० ३३, ८७ ।

न यः संपृच्छे न पुनर्हर्षितवे न सैवादाय रमते ।
तस्मान्नो अद्य समृतेरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम्

४ ३७१

॥ ७६ ॥ (ऋ० १०।१३।२-७)

(३७२-३७७) शकपूतो नामैधः । विराड् रूपाः २, ६ प्रस्तारपङ्क्तिः, ७ महासतोबृहती ।

ता वा मित्रावरुणा धारयतिक्षती सुषुम्नेषितृत्वता यजामसि ।

युवोः क्राणाय सख्यै रभि ग्याम रक्षसः

२

अर्धा चिन्नु यद्विधिषामहे वा मभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः ।

दुद्रां वा यत् पुष्यति रेक्णः सम्भारन् नकिरस्य मघानि

३

असावन्यो असुर सूयत द्यौ स्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ।

मूर्धा रथस्य चाक्रन् नैतावतैनसान्तकध्रुक

४

अस्मिन्स्वेष्टच्छकपूत एनो हिते मित्रे निगतान् हन्ति वीरान् ।

अवोर्वा यद्वात् तनूष्ववः प्रियासु यज्ञियास्वर्वा

५ ३७५

युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पर्यसा पुपूतनि ।

अव प्रिया दिदिष्टन् सूरौ निनिक्त रश्मिभिः

६

युवं ह्यमराजावसीदतं तिष्ठद् रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।

ता नः कणूक्यन्ती नृमेघस्तत्रे अंहसः सुमेघस्तत्रे अंहसः

७

॥ ७७ ॥ (३७८-३८२) (वा० य० ७।१०) +

राया व्य५ संसवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।

तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्

१० ३७८

॥ ७८ ॥ (वा० य० १०।१६, २१)

हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।

आरोहतं वरुण मित्र गच्छ ततश्चक्षायामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि

१६

मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि

२१ ३८०

॥ ७९ ॥ (वा० य० २९।६)

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि सैविदाने ।

उषासा वा५ सुहिरण्ये सुशिल्ये ऋतस्य योनाविह सादयामि

६ ३८१

॥ ८० ॥ (वा० य० ३३।७२)

काव्ययोराजानेषु कृत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थ आ

७२ ३८२

॥ ८१ ॥ (अथर्व० २।२८।२) +

(३८३) शम्भुः । त्रिष्टुप् ।

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।

तदुग्रिर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति

२ ३८३

॥ ८२ ॥ (अथर्व० ३।२५।१-६)

(३८४-३८९) भृगुः । अनुष्टुप् ।

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा धृथाः शयने स्वे ।

इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि

१

आधीपर्णा कामशल्यामिषुं संकल्पकुलमलाम् ।

तां सुसैनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि

२ ३८५

या प्लीहानं शोषयति कामस्येषुः सुसैनता ।

प्राचीनपक्षा व्योषि तया विध्यामि त्वा हृदि

३

शुचा विद्धा व्योषिया शुष्कास्याभि सर्प मा ।

मृदुनिर्मन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता

४

आजामि त्वाजन्त्या परि मातुरथो पितुः । यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ५

व्यस्यै मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम् । अथैनामकृतं कृत्वा ममेव कृणुतं वशे ६ ३८९

॥ ८३ ॥ (अथर्व० ४।२९।१-७) [आयुर्वेदप्रकरणे सूक्तं (२६४) द्रष्टव्यम् ।]

॥ ८४ ॥ (अथर्व० १।२०।२)

(३९०-३९४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

यो अद्य सेन्यो वधोऽघ्नायूनामुदीरिते । युवं तं मित्रावरुणावस्रद्यावयतं परि

२ ३९०

॥ ८५ ॥ (अथर्व० ५।२४।५) चतुष्पदातिऽशकरी ।

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायां मस्यां प्रतिष्ठायां मस्यां चित्या मस्यामाकू-

त्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

५ ३९१

॥ ८६ ॥ (अथर्व० ६।३२।३) त्रिष्टुप् । +

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः ।

मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विद्वाना उप यन्तु मृत्युम्

३ ३९२

॥ ८७ ॥ (अथर्व० ६।८९।३) अनुष्टुप् ।

मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती ।

मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम्

३ ३९३

॥ ८८ ॥ (अथर्व० ६।९७।२) जगती ।

स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम् ।

बाधेथां दूरं निर्र्कतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्

२ ३९४

॥ ८९ ॥ (अथर्व० ९।१०।२३)

(३९५) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्धां मित्रावरुणा चिकेत ।

गर्भो भारं भरत्या चिदस्या ऋतं पिपत्यनृतं नि पाति

२३ ३९५

॥ ९० ॥ (अथर्व० १०।५।११)

(३९६) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्बर्चो अस्मासु धत्त ।

प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकार्य सादये

११ ३९६

॥ ९१ ॥ (३९७-३९९) (सा० ९८६-९८७) ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम

२

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । साह्याम दस्यु तनुभिः

३ ३९८

॥ ९२ ॥ (सा० १६४७) ×

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्वो मदत्यनु मारुतम्

३ ३९९

मित्र-मित्रावरुण-सहचारी-देवगणः ।

(१) मित्रावरुणौ नभस्यश्च ।

॥ ९३ ॥ (ऋ० २।३६।६)

गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूव्या अनु ।
अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशस्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु

६ ४००

(२) मित्रावरुणादित्याः ।

॥ ९४ ॥ (ऋ० ८।१०।१।५)

जमदग्निर्भार्गवः । बृहती ।

प्र मित्राय प्रार्यम्णे संचध्यमृतावसो ।
वरूथ्यं वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत

५ ४०१

(३) उखामित्रौ ।

॥ ९५ ॥ (वा० य० १।१।६४)

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।
मित्रैतां त उखां परिददाम्यभित्या एषा मा मैदि

६४ ४०२

(४) सविता ।

॥ ९६ ॥ (ऋ० १।२।५-८) +

(४०३-४०६) मेघातिथिः काण्वः । गायत्री ।

हिरण्यपाणिमूतये	सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम्	५
अपां नपातमवसे	सवितारमुप स्तुहि । तस्य व्रतान्युदमसि	६
विभक्तारं हवामहे	वसोश्चित्रस्य राघंसः । सवितारं नूचक्षसम्	७ ४०५
सखाय आ नि षीदत	सविता स्तोम्यो नु नः । दाता राधांसि शुम्भति	८ ४०६

॥ ९७ ॥ (ऋ० १।२।३-५)

(४०७-४०९) आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । (५ भगो वा) । गायत्री ।

अभि त्वा देव सवित	रीशानं वार्याणाम् । सदावन् भागमीमहे	३
यश्चिद्वि त इत्था भगः	शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे	४
भगभक्तस्य ते वय	मुदशेम तवार्वासा । मूर्धानं राय आरभे	५ ४०९

॥ ९८ ॥ (ऋ० १।३।१२-११) ×

(४१०-४१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

आ कृष्णेन रजसा	वर्तमानो निवेश्यन्नमृतं मर्त्यं च ।	
हिरण्ययेन सविता	रथेनाऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन्	२ ४१०
याति देवः प्रवता	यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।	
आ देवो याति सविता	परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः	३
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं	हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।	
आस्थाद् रथं सविता	चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः	४
वि जनाञ्छयावाः	शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।	
शश्वद् विशः सवितुदैव्यस्यो	पस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः	५
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा	उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विरापाट् ।	
आणि न रथ्यममृताधि	तस्थुः रिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्	६
वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद्	गभीरवेपा असुरः सुनीथः ।	
क्वेऽदानीं सूर्यः कश्चिकेत	कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान	७
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः	पृथिव्या स्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।	
हिरण्याक्षः सविता देव	आगाद् दधद्रता दाशुषे वार्याणि	८ ४१६

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि—रुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।	
अपामीवां बाधते वेति सूर्य—मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति	९
हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृच्छीकः स्वर्वा यात्वर्वाङ् ।	
अपसेधन् रक्षसो यातुधाना—नस्थाद् देवः प्रतिदोषं गृणानः	१०
ये ते पन्थाः सवितः पूर्यासो ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।	
तेभिर्नो अद्य पृथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अर्थि च ब्रूहि देव	११ ४१९

॥ ९९ ॥ (ऋ० २।३८।१-११)

(४२०-४३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता सुवायं शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।	
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्न—मथामजद् वीतिहोत्रं स्वस्तौ	१ ४२०
विश्वस्य हि श्रुष्ट्ये देव ऊर्ध्वः प्र बाहवा पृथुपाणिः सिसर्ति ।	
आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अयं चिद् वातो रमते परिज्मन्	२
आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति नून—मरीरमदतमानं चिदेतोः ।	
अद्यषूणां चिन्नर्यायां अविष्या—मनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात्	३
पुनः समव्यद् विततं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः ।	
उत् संहार्यास्थाद् व्यृत्तूरदधर—रमतिः सविता देव आगात्	४
नानौकांसि दुर्यो विश्वमायु—र्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः ।	
ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधा—दन्वस्य केतमिषितं सवित्रा	५
समाववर्ति विष्टितो जिगीषु—विश्वेषां कामश्चरताममाभूत् ।	
शश्वौ अपो विकृतं हित्व्यागा—दनु व्रतं सवितुर्देव्यस्य	६ ४२५
त्वया हितमप्यमप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।	
वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति	७
याद्राध्यं वरुणो योनिमप्य—मनिशितं निमिषि जर्धुराणः ।	
विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गीत् स्थशो जन्मानि सविता व्याकः	८
न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।	
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः	९
भगं धियं वाजयन्तः पुरंधि नराशंसो आस्पतिर्नो अव्याः ।	
आये वामस्य संगथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम	१० ४२९

असभ्यं तद् दिवो अद्भ्यः पृथिव्या—स्त्वया दत्तं काम्यं राघ आ गात् ।
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवा—त्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे

११ ४३०

॥ १०० ॥ (ऋ० ३।६२।१०-१२)×

(४३१-४३३) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्
देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरंध्या । भर्गस्य रातिर्मीमहे
देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेष्टिताः

१०

११

१२ ४३३

॥ १०१ ॥ (ऋ० ४।५३।१-७)

(४३४-४४६) वामदेवो गौतमः । जगती ।

तद् देवस्य सवितुर्वर्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।
छर्दिरेनं दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान् देवो अक्तुभिः
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः ।
विचक्षणः प्रथयन्नापुणन्नुर्व जीजनत् सविता सुम्रमुक्थ्यम्
आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मेणे ।
प्र बाहू अस्त्राक् सविता सर्वाभानि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते ।
प्रास्ताग् बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महो अज्मस्य राजति
त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना ।
तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना
बृहत्सुम्रः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी ।
स नो देवः सविता शर्म यच्छ त्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः
आगन् देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम् ।
स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु

१

२ ४३५

३

४

५

६

७ ४४०

॥ १०२ ॥ (ऋ० ४।५४।१-६) जगती, ६ त्रिष्टुप् ।

अभूद् देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीमहं उपवाच्यो नृभिः ।
वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्यो ऽमृतत्वं सुवासिं भागमुत्तमम् ।
आदिद् द्रामानं सवितुर्व्यूष्णे ऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः

१

२ ४४२

अचि॒त्ती यच्च॑कू॒मा दै॒व्ये जने॑ दी॒नैर्दक्षैः॑ प्र॒भृती पू॒रुष॑त्वता ।	
दे॒वेषु॑ च स॒वित॑र्मानु॒षेषु॑ च त्वं नो अ॒त्र सु॒वता॑दना॒गसः॑	३
न ग्र॒मि॒ये स॒वितु॑दै॒व्यस्य॑ तद् यथा॒ विश्वं॑ भु॒व॒नं धा॒रयि॑ष्यति ।	
यत् पृ॒थि॒व्या वरि॑म॒न्ना खं॒जुरि॑र्व॒र्ष्मन् दि॒वः सु॒वति॑ स॒त्यम॑स्य तत्	४
इन्द्र॑ज्येष्ठान् बृ॒हद्भ्यः॑ प॒र्वते॑भ्यः क्ष॒र्या ए॒भ्यः सु॒वसि॑ प॒स्त्या॑वतः ।	
यथा॑यथा प॒तय॑न्तो वि॒येमि॒र ए॒वैव त॑स्थुः स॒वितः सु॒वाय॑ ते	५ ४४५
ये ते त्रि॒रह॑न्त॒सवितः॑ सु॒वासो॑ दि॒वेदि॑वे सौ॒म॒गमा॑सुवन्ति ।	
इन्द्रो॑ धा॒वापृ॒थि॒वी सि॒न्धुर॑द्भि॒रादि॒त्यैर्नो॑ अ॒दितिः॑ श॒र्मे य॑सत्	६ ४४६

॥ १०३ ॥ (ऋ० ५।८।१।१-५) ×

(४४७-४६०) इयावाश्च आत्रेयः । जगती ।

यु॒ञ्जते॑ मन॑ उ॒त यु॒ञ्जते॑ धि॒यो वि॒प्रा वि॒प्रस्य॑ बृ॒हतो वि॑प॒श्चितः॑ ।	
वि हो॒त्रा द॒धे व॒युना॑विदे॒क इ॒न्मही॑ दे॒वस्य॑ स॒वितुः॑ परि॒ण्डुतिः॑	१
विश्वा॑ रू॒पाणि॑ प्र॒ति मु॒ञ्चते॑ क॒विः प्रा॒सा॒वीद् भ॒द्रं द्वि॒पदे॑ च॒तुष्प॑दे ।	
वि ना॒कम॑रु॒यत् स॒विता॑ वरे॒ण्यो ऽनु॑ प्र॒याण॑मुष॒सो वि रा॑जति	२
यस्य॑ प्र॒याण॑मन्व॒न्य इ॒द् य॒युर्दे॒वा दे॒वस्य॑ म॒हिमा॑नमो॒जसा॑ ।	
यः पा॒र्थि॒वानि॑ वि॒ममे॑ स ए॒तश्चो॑ र॒जांसि॑ दे॒वः स॒विता॑ म॒हित्व॑ना	३
उ॒त या॑सि स॒वित॑स्त्रीणि॒ रोच॑नो॒त स॒र्वस्य॑ र॒श्मिभिः॑ स॒मुच्य॑सि ।	
उ॒त रा॒त्रीमु॒भय॑तः परी॒यस॑ उ॒त मि॒त्रो भ॑वसि दे॒व ध॑र्मभिः	४ ४५०
उ॒तेशि॑षे प्र॒स॒वस्य॑ त्वमे॒क इ॒दुत॑ पू॒षा भ॑वसि दे॒व या॑मभिः ।	
उ॒तेदं॑ वि॒श्वं भु॒व॒नं वि रा॑जसि इ॒यावा॑श्च॒स्ते स॒वितुः॑ स्तो॒म॒मान॑शे	५ ४५१

॥ १०४ ॥ (ऋ० ५।८।१।१-९) + । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

तत् स॒वितु॑र्वृ॒णीम॑हे व॒यं दे॒वस्य॑ भो॒जन॑म् । श्रेष्ठं॑ स॒र्वधा॑त॒मं तु॒रं भ॑ग॒स्य धी॑महि॒१	
अस्य॑ हि स्व॒यंश्च॑स्तरं स॒वितुः॑ क॒च्चन॑ ग्रि॒यम् । न मि॑नन्ति स्व॒राज्य॑म्	२
स हि र॒त्नानि॑ दा॒शुषे॑ सु॒वति॑ स॒विता॑ भ॒गः । तं भा॑गं चि॒त्रमी॑महे	३
अ॒द्या नो॑ दे॒व स॒वितः॑ प्र॒जाव॑त् सा॒वीः सौ॒म॒गम् । परा॑ दुः॒ष्ण॒न्त्यै सु॒व	४ ४५५
विश्वा॑नि दे॒व स॒वित॑र्दु॒रि॒तानि॑ परा॑ सु॒व । यद् भ॒द्रं तन्न॑ आ सु॒व	५
अना॑ग॒सो अ॒दित॑ये दे॒वस्य॑ स॒वितुः॑ स॒वे । विश्वा॑ वामा॒नि धी॑महि	६ ४५७

× ऋ. ५।८।१।१-३ = वा. य. ५, १४; ११।४, ६; ३७, २; १२, ३ । अथर्व, ७, ७२, ६ (उत्तरार्धः) ।

+ ऋ. ५।८।१।४-५ = वा. य. ३०, ३; सा. १४१ ।

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम्	७
य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन् । स्वाधीर्देवः सविता	८
य इमा विश्वा जाता न्याश्रावयति श्लोकेन । प्र च सुवाति सविता	९ ४६०

॥ १०५ ॥ (ऋ० ६।७।१-६)

(४६१-४६६) बाह्वस्पत्यो भरद्वाजः । जगती, ४-६ त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता हिरण्ययो बाहू अयंस्तु सर्वनाय सुक्रतुः । घृतेन पाणी अभि प्रुष्णते मुखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि	१
देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने । यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः	२
अदब्धेभिः सवितः पायुभिर्ध्रुवं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गर्यम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा मार्किनो अघशंस ईशत	३
उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमंस्थात् । अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम्	४
उदु अयौ उपवक्तेव बाहू हिरण्ययो सविता सुप्रतीका । दिवो रोहोस्यरुहत् पृथिव्या अरीरमत् पतयत् कञ्चिदभ्वम्	५ ४६५
वाममद्य सवितर्वामसु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः । वामस्य हि क्षयस्य देव भूरैरया धिया वामभार्जः स्याम	६ ४६६

॥ १०६ ॥ (ऋ० ७।३।१-६)

(४६७-४७६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । ६ उत्तरार्धस्य भगो वा । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्नेत् । नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रत्ना पुरुवसुर्दधाति	१
उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य । व्युर्वी पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः	२
अपि द्युतः सविता देवो अस्तु यमा चिद् विश्वे वसवो गृणन्ति । स नः स्तोमान् नमस्यश्चनो धाद् विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन्	३
अभि यं देव्यदितिर्गुणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा । अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः	४ ४७०
अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः । अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरुण्येकधेनुभिर्नि पातु	५ ४७१

अनु तन्नो जास्पतिर्मसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।

भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमुग्रो अर्धं याति रत्नम्

६ ४७२

॥ १०७ ॥ (ऋ० ७४५।१-४)

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः ।

हस्ते दधानो नर्या पुरुषाणि निवेशयश्च प्रसुवश्च भूमं

१

उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ता अनष्टाम् ।

नूनं सो अस्य महिमा पतिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम्

२

स धा नो देवः सविता सहावा ऽऽ साविषद् वसुपतिर्वसुनि ।

विश्रयमाणो अमर्तिमुरुचीं मर्तभोजनमर्धं रासते नः

३ ४७५

इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।

चित्रं वयो बृहदुसे दधातु यूतं पात स्वास्तिभिः सदा नः

४ ४७६

॥ १०८ ॥ (ऋ० १०।१३९।१-३)

(४७७-४७९) देवगन्धर्वो विश्वावसुः । त्रिष्टुप् ।

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयो अजस्रम् ।

तस्य पूषा प्रसवे याति विद्रा—न्तसंपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः

१

नृचक्षा एष दिवो मर्ध्य आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।

स विश्वाचीरभि चष्टे घृताची—रन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्

२

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः ।

देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम्

३ ४७९

॥ १०९ ॥ (ऋ० १०।१४९।१-५)

(४८०-४८४) अर्चन् हिरण्यस्तूपः । त्रिष्टुप् ।

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा—दस्कम्भने सविता द्यामहं हत् ।

अश्वमिवाधुक्षदुनिमन्तरिक्ष—मृतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम्

१ ४८०

यत्रा समुद्रः स्क्रभितो व्यौन—दपां नपात् सविता तस्य वेद ।

अतो भूरत आ उत्थितं रजो ऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम्

२

पश्चेदमन्यदभवद् यजत्र—ममर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।

सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गरुत्मान् पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्मे

३ ४८२

गाव इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान् वाश्रेव वृत्सं सुमना दुहाना ।

पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः ।

४

हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वा ऽऽङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन् ।

एवा त्वार्चन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम्

५ ४८४

॥ ११० ॥ (४८५-५१६) (वा० य० १।१०, ३१) +

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्

१० ४८५

सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

३१ ४८६

॥ १११ ॥ (वा० य० ४।४, २५) *

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मां सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण

सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेयम्

४

अभि त्वं देवः सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसंवत् रत्नधामभि ग्रियं मतिं कविम् ।

ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सर्वीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृषा स्वः २५ ४८८

॥ ११२ ॥ (वा० य० ५।३९)

देवं सवितरेष ते सोमस्तत् रक्षस्व मा त्वा दमन् ।

एतत् त्वं देव सोम देवो देवाँर उपागा इदमहं मनुष्यान्तस्सह रायस्पोषेण स्वाहा ३९ ४८९

॥ ११३ ॥ (वा० य० ८।७)

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि ।

जिन्वं यज्ञं जिन्वं यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे

७ ४३०

॥ ११४ ॥ (वा० य० ९।१; ११।७; ३०, १) x

देवं सवितुः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतै नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजै नः स्वदतु स्वाहा

१ ४३१

+ वा० य० १।११, २४; २।११; ५।२२, २६; ६।१, ९, ३०; ९।३०, ३८; १०।६; ११।९, २८; १८।३७; २०।३; २२।१; ३७।१; ३८।१। अथर्व. १९।५१।२ ।

* अथर्व. ७।१४।१-२ । सा० ४६४ ।

x वा० य० ९, ५; १८, ३० = दै० [अदितिः०] १६ ।

॥ ११५ ॥ (वा० य० १०,५; २८)×

सवित्रे स्वाहा ॥ ५ ॥

सवितासि सत्यप्रसवः

२८ ४९३

॥ ११६ ॥ (वा० य० ११।१-३,८,११,६३)

युञ्जानः प्रथमं मनस्तुच्चार्य सविता धियः ।

अग्नेज्योतिर्निचार्य पृथिव्या अध्याभरत्

१

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । स्वर्ग्याय शक्या

२ ४९५

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम् ।

बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान्

३

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यः सखिविदः सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम् ।

ऋचा स्तोमः समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्त्तनि स्वाहा

८

हस्त आधाय सविता बिभ्रदग्निः हिरण्ययीम् ।

अग्नेज्योतिर्निचार्य पृथिव्या अध्याभरत्

११

देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्या ।

अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण

६३ ४९९

॥ ११७ ॥ (वा० य० १७।७४)

ताः सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् ।

यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनाः सहस्रधारां पर्यसा महीं गाम्

७४ ५००

॥ ११८ ॥ (वा० य० १९।४३)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः

४३ ५०१

॥ ११९ ॥ (वा० य० २०।७०)

य इन्द्र इन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः । स सुत्रामां हविर्षतिर्यजमानाय सश्वत ७०

५०२

॥ १२० ॥ (वा० य० २१।२१)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

ककुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः

२१ ५०३

॥ १२१ ॥ (वा० य० २२।११-१४)

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे । सुमतिः सत्यराधसम्

११

सुष्टुतिः सुमतीवृधो रतिः सवितुरीमहे । प्र देवार्य मतीविदे

१२ ५०५

रातिः सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये । आसवं देववीतये	१३	
देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदैव्यम् । धिया भगं मनामहे	१४	५०७
॥ १२२ ॥ (वा० य० ३०४)		
विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम्	४	५०८
॥ १२३ ॥ (वा० य० ३५२-३,५)		
सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याँल्लोकमिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः	२	
सविता पुनातु	३	५१०
सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव	५	५११
॥ १२४ ॥ (वा० य० ३७।११-१२, १४-१५)		
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु ।	११	
सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः	१२	
गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् ।		
सं देवो देवेन सवित्रा गत सः सूर्येण रोचते	१४	
समग्निरग्निना गत सं दैवेन सवित्रा सः सूर्येणारोचिष्ट ।		
स्वाहा समग्निस्तपसा गत सं दैव्येन सविता सः सूर्येणारुरुचत	१५	५१५
॥ १२५ ॥ (३८।८)		
सवित्रे त्वं ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा	८	५१६
॥ १२६ ॥ (अथर्व० १।१८।३ +		
(५१७) द्रविणोदाः । विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप् ।		
यत् तं आत्मानि तन्वाँ घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।		
सर्वं तद् वाचापं हन्मो वयं देवस्त्वा सविता हृदयतु	३	५१७
॥ १२७ ॥ (अथर्व० ५।२४।१)		
(५१८-५२४) अथर्वा । चतुष्पदाऽतिशक्री ।		
सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ।		
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामाकू-		
त्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा	१	५१८

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।१।१-३)

उष्णिक्, १ त्रिपदा पिपीलिकमध्या साम्नी जगती, २-३ पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक् ।

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद् धेहि । आथर्वण स्तुहि देवं सवितारम् ८
 तमुं ष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः । सत्यस्य युवानमद्रोधवाचं सुशेवम् २ ५२०
 स घा नो देवः सविता साविषदुमृतानि भूरि । उभे सुष्टुती सुगार्तवे ३ ५२१

॥ १२९ ॥ (अथर्व० ७।१४।३-४) +

३ त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

सावीहि देव प्रथमाय पित्रे वर्ष्माणमसौ वरिमाणमसौ ।
 अथास्मभ्यं सवितर्वायीणि दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः ३
 दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद् रत्नं दक्षं पितृभ्य आयूषि ।
 पिबात् सोमं ममर्ददेनमिष्टे परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्मणि ४ ५२३

॥ १३० ॥ (अथर्व० १२।१६।१) अनुष्टुप् ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् ।
 सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १ ५२४

॥ १३१ ॥ (अथर्व० ५।२५।१२)

(५२५-५२६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
 पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १२ ५२५

॥ १३२ ॥ (अथर्व० ५।२६।२) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २ ५२६

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ७।१६।१)

(५२७) भृगुः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौमगाय ।
 संशितं चित् संतरं सं शिक्षाधि विश्व एनमनु मदन्तु देवाः १ ५२७

॥ १३४ ॥ (अथर्व० १०।५।१४)

(५२८) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

देवस्य सवितुर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
 प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये १४ ५२८

सवितृ-सहचारी देवगणः ।

(१) सवित्राद्याः ।

॥ १३५ ॥ (५२९-५३०) (वा० य० १०।३०)

सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्टा रूपैः पूषणा
 पशुभिरिन्द्रैणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना
 तेजसा सोमैर्न राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि

३० ५२९

(२) सवित्रादयः ।

॥ १३६ ॥ (वा० य० ३९।६)

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे
 चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।
 मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे

६ ५३०

(३) इन्द्रः, भगः, सविता ।

॥ १३७ ॥ (अथर्व० १।२६।२)

(५३१) ब्रह्मा । त्रिपदा एकावसाना साम्नी त्रिष्टुप् ।

सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्राधाः

२ ५३१

(४) सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः ।

॥ १३८ ॥ (अथर्व० ६।६८।१)

(५३२) अथर्वा । पुरो विराडतिशाकरगर्भा चतुष्पदा जगती ।

आयमगन्तसविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।

आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपतु प्रचेतसः

१ ५३२

(५) बृहस्पतिः सविता मित्रोऽर्यमा भगोऽश्विनौ ।

॥ १३९ ॥ (अथर्व० ६।१०३।१)

(५३३) उच्छोचनः । अनुष्टुप् ।

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता कर्तु ।

संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विनौ

१ ५३३

(५) सूर्यः ।

॥ १४० ॥ (ऋ० १।५०।१-१३) *

(५३४-४६) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री, १०-१३ अनुष्टुप् ।

उद् त्वं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम्	१	
अप त्वे तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तभिः । सूराय विश्वचक्षसे	२	५३५
अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनां अनु । भ्राजन्तो अग्रयो यथा	३	
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम्	४	
प्रत्यङ् देवानां विश्वः प्रत्यङ्मुदेषि मानुषान् । प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे	५	
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनां अनु । त्वं वरुण पश्यसि	६	
वि द्यामैषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य	७	५४०
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण	८	
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरौ रथस्य नृपत्यः । तामिर्याति स्वयुक्तिभिः	९	
उद् वयं तमसस्पति ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् १०		
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११		
शुकैषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रिवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि १२		५४५
उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं महीं रन्ध्रयन् मो अहं द्विषते रधम् १३		५४६

॥ १४१ ॥ (ऋ० १।११।१-६) +

(५४७-५९) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।		
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च	१	
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।		
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्	२	
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।		
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः	३	५४९

* ऋ० १।५०।१-१०, १२-१३ = वा० य० ७, ४१; ८, ४०-४१; २०, २१; २७, १०; ३३, ३१-३२, ३६; ३५, १४; ३८, २४. सा० ३१, ६३३-६४० । अथर्व० १।२२, ४; १३, २, १६-२४; १७, १, २४; २०, ४७, १३-२१ । ऋ० १।५०।११-१३ = वै० [आयुर्वेद०] ५४५-४७ ।

+ ऋ० १।११।१-२, ४-६ = वा० य० ७, ४२; १३, ४६; ३३, ३७-३८, ४२ । अथर्व० १३, २, ३५; २०, १०७, १४-१५; १२३, १-२ । सा० ६२९ ।

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्मद्वित्वं मध्या कर्तोर्वित्तं सं जभार ।
 यदेदयुक्त हरितः सधस्था—दाद् रात्री वासस्तनुते सिमस्मै
 तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणते द्यौरुपस्थे ।
 अनन्तमन्यद् रुद्रस्य पाजः कृष्णमन्यद्भरितः सं भरन्ति
 अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

४ ५५०

५

६ ५५१

॥ १४२ ॥ (ऋ० १।१६४।४४-४७) ×

(५५३-५४) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु—रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
 एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातुरिश्वा नमाहुः
 कृष्णं नितानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति
 त आववृत्रन्तसर्दनाहृतस्या—दिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते

४६

४७ ५५४

॥ १४३ ॥ (ऋ० ४।४०।५) +

(५५५) वामदेवो गौतमः । जगती ।

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षस—द्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
 नृषद् वरसद्वत्सद् व्योमस—दब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्

५ ५५५

॥ १४४ ॥ (ऋ० ५।४०।५)

(५५६) अत्रिभौमः । अनुष्टुप् ।

यत् त्वा सूर्यं स्वर्भानु—स्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः

५५६

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७।६०।१)

(५५७-५६७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यद्य सूर्यं ब्रवोऽनागा उद्यन् मित्राय वरुणाय सत्यम् ।
 वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन् गुणन्तः

१ ५५७

॥ १४६ ॥ (ऋ० ७।६२।१-३)

उत् सूर्यो बृहदुर्चीष्यश्रेत् पुरु विश्वा जनिम् मानुषाणाम् ।
 समो दिवा ददृशे रोचमानः कृत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्
 स सूर्यं प्रति पुरो न उद् गा एभिः स्तोमैर्भिरेतशेभिरैवैः ।
 प्र नो मित्राय वरुणाय वोचो—ऽनागसो अर्यम्णे अग्रये च

२ ५५९

वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः

३ ५६०

॥ १४७ ॥ (ऋ० ७।६३।१-४)

उदेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ।

चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चर्मैव यः समविच्यक् तमांसि

१

उदेति प्रसवीता जनानां महान् केतुरर्णवः सूर्यस्य ।

समानं चक्रं पर्याविवृत्सन् यदेतश्चो वहति धूर्षु युक्तः

२

विभ्राजमान उपसामुपस्थाद् रैमैरुदेत्यनुमद्यमानः ।

एष मै देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम

३

दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरे अर्थस्तरणिभ्राजमानः ।

नूनं जनाः सूर्येण प्रसृता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि

४ ५६४

॥ १४८ ॥ (ऋ० ७।६६।१४-१६) +

प्रगाथः = (समा बृहती + विषमा सतोबृहती) १६ पुर उष्णिक् ।

उदु त्यद् दर्शतं वपुर्दिव एति प्रतिहरे ।

यदीमाशुर्वहति देव एतेशो विश्वस्मै चक्षसे अरम्

१४ ५६५

शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।

सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे

१५

तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुचरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्

१६ ५६७

॥ १४९ ॥ (ऋ० ८।१०।११-१२) ×

(५६८-६९) जमदग्निर्भागवः । प्रगाथः = (विषमा बृहती + समा सतोबृहती)

बण्महाँ असि सूर्यं बळादित्य महाँ असि ।

महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्वा देव महाँ असि

११

बद् सूर्यं श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।

महा देवानामसूर्यः पुरोहितो विश्व ज्योतिरदाभ्यम्

१२ ५६९

+ ऋ० ७।६६।१६ = वा० य० ३६, २४ ।

× वा० य० ३३, ३९-४० । अथर्व० १३, २, २९; २०, ५८, ३-४ । सा० २७६, १७८८-८९ ।

॥ १५० ॥ (क्र० १०।३७।१-१२)×

(५७०-८१) सौर्योऽभितपाः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं संपर्यत ।	
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत	१ ५७०
सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनृन्नहानि च ।	
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहाऽऽपो विश्वाहोदेति सूर्यः	२
न ते अदेवः प्रदिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि ।	
प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य	३
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना ।	
तेनासद् विश्वामनिरामनाहुति मपामीवामप दुष्वप्यं सुव	४
विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रत महैलयन्नुच्चरसि स्वधा अनु ।	
यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहे तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम्	५
तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः ।	
मा शने भूम सूर्यस्य संदृशि मद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि	६ ५७५
विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः ।	
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग् जीवाः प्रति पश्येम सूर्य	७
महि ज्योतिर्विभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः ।	
आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य	८
यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चरते नि च विशन्ते अकतुभिः ।	
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याऽह्वाहा नो वस्यसावस्यसोदिहि	९
शं नो भव चक्षसा शं नो अह्वा शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।	
यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्यं द्रविणं धेहि चित्रम्	१०
असाकै देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे ।	
अदत् पिबदूर्जयमानमाशितं तदुस्मे शं योररपो दधातन	११ ५८०
यद् वो देवाश्चक्रुम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम् ।	
अरावा यो नो अभि दुच्छनायते तस्मिन् तदेनो वसवो नि धेतन	१२ ५८१

॥ १५१ ॥ (ऋ० १०।१५८।१-५)

(५८२-८६) चक्षुः सौर्यः । गायत्री, २ स्वराद् ।

सूर्यो नो दिवस्पातु	वातो अन्तरिक्षात् । अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः	१
जोषां सवितर्यस्य ते हरः	शतं सवाँ अर्हति । पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः	२
चक्षुर्नो देवः सविता	चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः	३
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे	चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम	४ ५८५
सुसंदृशै त्वा वयं	प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षुसः	५ ५८६

॥ १५२ ॥ (ऋ० १०।१७०।१-४) ॐ

(५८७-९०) विभ्राद् सौर्यः । जगती, ४ आस्तरपङ्क्तिः ।

विभ्राद् बृहत् पिबतु सोम्यं	मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ।	
वातज्जुतो यो अभिरक्षति	त्मना प्रजाः पुषोष पुरुषा वि राजति	१
विभ्राद् बृहत् सुभृतं वाजसातमं	धमैन् दिवो धरुणै सत्यमर्पितम् ।	
अभिग्रहा वृत्रहा दस्युहंतमं	ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा	२
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं	विश्वजिद् धनजिदुच्यते बृहत् ।	
विश्वभ्राद् आजो महि सूर्यो दृश	उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्	३
विभ्राज्ज्योतिषा स्वः	रगच्छो रोचनं दिवः ।	
येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता	विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता	४ ५९०

॥ १५३ ॥ (५९१-६०९) (वा० य० १।११)

भूताय त्वा नारातये	स्वरभिविख्येषु दहन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि ।	
पृथिव्यास्त्वा नामौ	सादयाम्यदित्या उपस्थेऽग्ने हव्यं रक्ष	११ २९१

॥ १५४ ॥ (वा० य० २।२६) x

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वचोदा असि	वचो मे देहि । सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते	२६ २९२
--------------------------------------	--------------------------------------	--------

॥ १५५ ॥ (वा० य० ३।५, ९-१०)

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना	पृथिवीव वरिम्णा ।	
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि	पृष्टेऽग्निर्मन्नादमन्नाद्यायादधे	५ ५९३

ॐ ऋ० १०, १७०, १-३ = वा० य० ३३, ३०; सा० ६२८, १४५३-१४५५

x वा० य० २।२६ (उत्तरार्धः) = अथर्व० १०, ५, ३७ (२); वा० य० २।२७

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।

९

सज्जुर्देवेन सवित्रा सज्जुरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।

१० ५९५

॥ १६५ ॥ (वा० य० १।३३)

अध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात्

३३ ५९६

॥ १५७ ॥ (वा० य० ८।४०)*

अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँर अनु । आजन्तो अग्रयो यथा ।

उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा आजायैषते योनिः सूर्याय त्वा आजाय ।

सूर्यं आजिष्ठ आजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि आजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्

४० ५९७

॥ १५८ ॥ (वा० य० १।५८) x

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्टे ज्योतिष्मतीम् ।

विश्वस्मै प्राणायानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद

५८ ५९८

॥ १५९ ॥ (वा० य० २०।१६, २१) +

यदि जाग्रद्यादि स्वप्न एनाँसि चक्रमा वयम् ।

सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वँ हंसः

१६

उद्वयं तमसस्पति स्तुः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्

२१ ६००

॥ १६० ॥ (वा० य० ३३।३३-३५, ४१) •

दैव्यावध्वर्यु आ गतँ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञँ समञ्जाथे

३३

आ न इडाभिविदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।

अपि यथा युवानो मत्संथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा

३४

यदुद्य कच्चं वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे

३५

आयन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।

वह्नि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम

४१ ६०४

* वा० य० ८।४१ । x वा० य० १९।४३=दै० [अदितिः०] ५०१ मन्त्रः दृष्टव्यः ।

+ वा० य० २०।१६=अथर्ववेदे (६।११।१-२) पाठभेद रूपेण, तथा च वा० य० २०।२१, २७।१०, ३५, २४; ३८, २६

= ऋ० १।५०।१० अथर्व० ७।५३।७ पाठभेदेन च दृश्यते ।

• वा० य० ३३।३५, ४१ = दै० [इन्द्रः] १४३३, २३७८ ।

॥ १६१ ॥ (वा० य० ३६।९, २४)×

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्मः

९ ६०५

तच्चभुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं गृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूर्यश्च शरदः शतात्

२४ ६०६

॥ १६२ ॥ (वा० य० ३७।१३-१८)

धृता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धृता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः ।

वाचमसो नि यच्छ देवायुवम्

१६

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परां च पृथिभिश्चरन्तम् ।

स सध्रीचीः स विधूचीर्वसान् आ वरीवति भुवनेष्वन्तः

१७

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते ।

देवश्रुत्वां देव धर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्राचीरनु वां देववीतये ।

मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम्

१८ ६०९

॥ १६३ ॥ (अथर्व० १।३।५)

(६१०-६२२) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्या शरस्य पितरं सूर्यं शतधृष्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति

५ ६१०

॥ १६४ ॥ (अथर्व० २।२।१२-५)

[एकावसानम्] १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

सूर्यं यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

१

सूर्यं यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

२

सूर्यं यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च्य योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

३

सूर्यं यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

४

सूर्यं यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

५ ६१५

× दे० [आयुर्वेद०] ११९-१२६ ।

७ दे० [अदितिः]

॥ १६५ ॥ (अथर्व० ५।२४।९) चतुष्पदाऽतिशकरी ।

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामा-
कृत्यामस्यामाश्विन्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा ९ ६१६

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ७।१३।१-२) अनुष्टुप् ।

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजास्याददे एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे १
यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ ।

उद्यन्तसूर्ये इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे २ ६१८

॥ १६७ ॥ (अथर्व० १९।१७।५) अतिजगती ।

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्यां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिच्छूये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ५ ६१९

॥ १६८ ॥ (अथर्व० १९।१८।५) सम्राडान्वयानुष्टुप् ।

सूर्य ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव प्रतीच्यां दिशोऽभिदासात् ५ ६२०

॥ १६९ ॥ (अथर्व० १९।१९।३) भुरिगृहती ।

सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विंशतु तां प्र विंशतु सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ३ ६२१

॥ १७० ॥ (अथर्व० १९।२३।२४) दैवी पङ्क्तिः ।

सूर्याभ्यां स्वाहा २४ ६२२

॥ १७१ ॥ (अथर्व० २।३६।५)

(६२३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् । तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिक्राम्यः ५ ६२३

॥ १७२ ॥ (अथर्व० ४।४०।७)

(६२४) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।

य उपरिष्टाज्जुह्वति जातवेद ऊर्ध्वायां दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।

सूर्यमृत्वा ते पराश्वो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि ७ ६२४

॥ १७३ ॥ (अथर्व० ६।५२।१)

(६२५) भागलिः । अनुष्टुप् ।

उत्सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वेन् ।

आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १ ६२५

॥ १७४ ॥ (अथर्व० १६।९।३-४)

(६२६-२७) यमः । ३ सास्त्री पङ्क्तिः, ४ परोष्णिक् ।

अगन्म स्व१ः स्व२रिगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३

वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४ ६२७

॥ १७५ ॥ (साम० ४५८)

(६२८) गौराङ्गिरसः । अतिजगती (अष्टिर्वा) ।

अयं सहस्रमानवो दशः कवीनां मतिज्योतिर्विधर्म ।

ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः । सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः २ ६२८

॥ १७६ ॥ (साम० १७९०-९२) × सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

सूर्य-सहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यः पर्जन्यामयो वा, सरस्वान् सूर्यो वा ।

॥ १७७ ॥ (ऋ० १।१६४।५१-५२)

(६२९-३०) दीर्घतमा औचथ्यः । ५१ अनुष्टुप्, ५२ त्रिष्टुप् ।

समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः ।

भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यमर्यः ५१

दिव्यं सुपर्ण वायुसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् ।

अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि ५२ ६३०

(२) सूर्यमित्रावरुणाः ।

॥ १७८ ॥ (ऋ० ७।६३।५)

(६३१) मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यत्रा चक्रुर्मृतां गातुमस्मै श्येनो न दीयन्न्वेति पार्थः ।

प्रति वां स्र उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ५ ६३१

(३) सूर्याविवाहः ।

॥ १७९ ॥ (ऋ० १०।८५।६-१६)

(६३२-५८) सावित्री सूर्या ऋषिका । अनुष्टुप्, १४ त्रिष्टुप् ।

रैभ्यासीदनुदेयीं नाराञ्चसी न्योचनी ।

सूर्याया मद्रमिद् वासो गार्थयैति परिष्कृतम् ६ ६३२

चित्तिरा उपवर्हेण चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।	
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम्	७
स्तोमा आसन् प्रतिघयः कुरीरं छन्द ओपशः ।	
सूर्यायां अश्विना वरा ऽग्निरासीत् पुरोगवः	८
सोमो बधूयुरभवद्दश्विनास्तामुभा वरा ।	
सूर्या यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सविताददात्	९ ६३५
मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।	
शुक्रावन्द्वाहावास्तां यदयात् सूर्या गृहम्	१०
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।	
श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः	११
शुचीं ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।	
अनो मनस्सयं सूर्या ऽऽरोहत् प्रयती पतिम्	१२
सूर्यायां बहुतुः प्रागात् सविता यमवासृजत् ।	
अघासु हन्यन्ते गावो ऽर्जुन्योः पर्युह्यते	१३
यदश्विना पुच्छमानावयाते त्रिचक्रेण बहुतुं सूर्यायाः ।	
विश्वे देवा अनु तद् वामजानन् पुत्रः पितराववृणीत पुषा	१४ ६४०
यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप । कैकं चक्रं वामासीत् कं देष्ट्राभं तस्थथुः	१५
द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माणं ऋतुथा विदुः ।	
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्वातय इद् विदुः	१६ ६४२

(४) सूर्या-सावित्री ।

॥ १८० ॥ (ऋ० १०।८।५।३२-४७)

अनुष्टुप्, ३४ उरोबृहती, ३६-३७, ४४ त्रिष्टुप्, ४३ जगती ।

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दंपती ।	
सुगेभिर्दुर्गमतीता मप द्रान्त्वरान्तयः	३२
सुमङ्गलिरियं बधू रिमां समेत पश्यत ।	
सौभाग्यमस्यै दुत्वाया ऽथास्तं वि परेतन	३३
तृष्टमेतत् कटुकमेतद्दपाष्ठवद् विषवन्नैतदत्तवे ।	
सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात् स इद् वार्धूयमर्हति	३४ ६४५

आशसनं विशसनं—मथो अधिविकर्तनम् ।	
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति	३५
गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।	
भगो अर्यमा संविता पुरंधि—मह्यं त्वादुर्गाहपत्याय देवाः	३६
तां पृषञ्छिवतमा मेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्याश्च वपन्ति ।	
या न ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम्	३७
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्तसूयां वहतुना सह ।	
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्रे प्रजयां सह	३८
पुनः पत्नीमग्निरदा दायुषा सह वर्चसा ।	
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम्	३९ ६५०
सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविदु उत्तरः ।	
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः	४०
सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो ददद्ग्नये ।	
रयिं च पुत्रांश्चादा दुग्निर्मह्यमथो इमाम्	४१
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यंशुतम् ।	
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नमृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे	४२
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वयमा ।	
अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश्वां शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे	४३
अघोरक्षुरपतिभ्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।	
वीरसुर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे	४४ ६५५
इमां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।	
दक्षास्यां पुत्रानां वैहि पतिमेकादशं कृधि ।	४५
सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव ।	
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु	४६
समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।	
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्रीं दधातु नौ	४७ ६५८

[५] सूर्य-वैश्वानरोऽग्निः ।

॥ १८१ ॥ (ऋ० १०।८८।१-१९)

(६५९-७७) आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा । त्रिष्टुप् ।

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।	
तस्य भर्मेणे भुवनाय देवा धर्मेणे कं स्वधया पप्रथन्त	१
गीर्णिं भुवनं तमसापगूळहमाविः स्वरभवजाते अग्नौ ।	
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽरण्यन्नोषधीः सख्ये अस्य	२ ६६०
देवेभिर्निषितो यज्ञियेभिरग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम् ।	
यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमा मातृतान रोदसी अन्तरिक्षम्	३
यो होताऽऽसीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः ।	
स पतन्नीत्वरं स्या जगद्यच्छ्वात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः	४
यजातवेदो भुवनस्य मूर्धन्नतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।	
तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः	५
मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।	
मायामू तु यज्ञियानामेतामपो यत् तूर्णिश्चरति प्रजानन्	६
ह्येन्यो यो मेहिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।	
तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः	७ ६६५
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्निमादिद्धविरजनयन्त देवाः ।	
स एषां यज्ञो अभवत् तनूपास्तं द्यौर्वेदु तं पृथिवी तमार्यः	८
यं देवासोऽर्जनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा ।	
सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमा मृज्यूमानो अतपन्महित्वा	९
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निमजीजनच्छक्तिमी रोदसिप्राम् ।	
तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः	१०
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।	
यदा चरिष्णू मिथुनावभूतामादित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा	११
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्वामकृण्वन् ।	
आ यस्ततानोषसो विभातीरपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्	१२ ६७०

वैश्वानरं कवयो यज्ञियांसो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् ।	
नक्षत्रं प्रलममिनश्चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	१३
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः ।	
यो म॒ष्टि॒म्ना प॑रि॒ब॒भूवो॒र्वी उ॒ताव॑स्ता॒दुत॑ देवः प॒रस्ता॑त्	१४
द्वे सु॒ती अ॑शृण॒वं पि॒तृणा॑—म॒हं दे॒वाना॑मु॒त म॒र्त्याना॑म् ।	
ताभ्या॑मिदं वि॒श्वमे॑ज॒त् सभे॑ति यद॒न्तरा॑ पि॒तरं॑ मा॒तरं॑ च	१५
द्वे स॒मीची॑ बि॒भृत॑श्चर॒न्तं शी॑र्ष॒तो जा॒तं म॒नसा॑ विमृष्टम् ।	
स प्र॒त्यङ् विश्वा॑ भुव॒नानि॑ तस्था—वप्र॑युच्छन् त॒रणि॑र्भ्राज॒मानः	१६
यत्रा॑ वदे॒ते अ॒वरः॑ प॒रश्च य॒ज्ञन्योः॑ क॒तरो नौ॑ वि वे॒द ।	
आ शै॒कुरि॑त् स॒ध॒मादं॑ सखा॒यो नक्ष॑न्त य॒ज्ञं क इ॒दं वि वो॑चत्	१७ ६७५
क॒त्यग्र॑यः क॒ति सूर्या॑सुः क॒त्युषा॑सुः क॒त्यु स्त्रि॑दापः ।	
नोप॑स्पिजं वः पि॒तरो॑ वदामि पृ॒च्छामि॑ वः क॒वयो॑ वि॒ब्राने॑ कम्	१८
याव॑न्मा॒त्रमु॑षसो न प्रती॒कं सु॒प॒र्ण्यो॑ वस॒ते मा॒तरि॑श्वः ।	
ताव॑द् द॒धात्यु॑प॒ य॒ज्ञमा॑यन् ब्रा॒ह्मणो॑ होत॒रव॑रो निषीदन्	१९ ६७७

(६) सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च ।

॥ १८९ ॥ [दै० (आयुर्वेद०) ४८९-९९ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

(७) सूर्यः प्रजापतिः ।

॥ १८३ ॥ [दै० (आयुर्वेद०) १३३१-३३ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ ।]

(८) सूर्याचन्द्रमसौ ।

॥ १८४ ॥ (अथर्व० ६।८३।१) ×

(६७८) भगः । अनुष्टुप् ।

अप॑चितुः प्र प॒तत॑ सु॒पर्णो॑ वस॒तेरि॑व ।

सूर्यैः॑ कृ॒णोतु॑ भेष॒जं च॒न्द्रमा॑ वोऽप॑ोच्छतु १ ६७८ |

॥ १८५ ॥ (अथर्व० ७।८१।१-६) +

(६७९-८४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप्, ४ आस्तरपङ्क्तिः, ५ खराडास्तरपङ्क्तिः ।

पूर्वा॑प॒रं च॑रतो मा॒ययै॑तौ शिशू॒ क्रीड॑न्तौ परि॑ यातोऽर्ण॒वम् । |

विश्वान्यो॑ भुव॒ना वि॒चष्ट॑ ऋतू॒रन्यो॑ वि॒दध॑जायसे नवः १ ६७९ |

+ दै० [आयुर्वेद०] ५१३ । × ऋ० १०।८५।१८-१९; अथर्व० १३।१।११; १४।१।१३-१४ ।

नवोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम् ।	
भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः	२ ६८०
सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि ।	
अनूनं दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च	३
दशोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः ।	
समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन	४
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेना प्यायस्व ।	
आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन	५
यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता मक्षयन्ति ।	
तेनास्मानिन्द्रो वरुणो बृहस्पतिरा प्याययन्तु भुवनस्य गोपाः	६ ६८४

(९) सूर्यः आपश्च ।

॥ १८६ ॥ (अथर्व० ७।१०७।१)

(६८५) भृगुः । अनुष्टुप् ।

अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः ।

आपः समद्रिया धारास्तास्ते शल्यमसिस्तसन्

१ ६८५

(१०) सूर्यः गौः ।

॥ १८७ ॥ (अथर्व० २०।४८।१-६)

(६८६-९१) खिलम्, ४-६ सर्पराक्षी । गायत्री ।

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवः

१

ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा ग्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा

२

वज्रापवसाव्यः कीर्तिर्ग्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्धृतं पर्यः

३

आयं गौः पृश्निरक्रीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्तस्वः

४

अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः स्वः

५

त्रिंशद्धामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिभ्रियत् । प्रति वस्तोरहर्घुभिः

६

६९१

(६) त्वष्टा, धाता, पूषा, भगः, अर्यमा ।

[१] त्वष्टा । *

॥ १८८ ॥ (ऋ० १०।१८।६)

(६९२) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

आ रोहतायुर्जसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ ।

इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः

६ ६९२

॥ १८९ ॥ [६९३-९७] (वा० य० २।२४) ×

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सः शिवेन ।

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्

२४ ६९३

॥ १९० ॥ (वा० य० ६।७)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।

देवं त्वष्टर्वसुं रम हव्या ते स्वदन्ताम्

७ ६९४

॥ १९१ ॥ (वा० य० ८।१७) +

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिषा देवोऽग्निः ।

त्वष्टा विष्णुः प्रजयां सः पराणा यजमानाय द्रविणं दधातु स्वाहा

१७ ६९५

॥ १९२ ॥ (वा० य० २०।४४)

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेऽपाकोऽचिष्टुर्यसं पुरुणि ।

वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्

४४ ६९६

॥ १०३ ॥ (वा० य० २९।९)

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरवा जायत आशुरश्वः ।

त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान ब्रह्मोः कर्तारमिह यक्षि होतः

९ ६९७

॥ १९४ ॥ (अथर्व० ३।३।१५)

(६९८-९९) ब्रह्मा । विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

त्वष्टा दुहित्रे बहंतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।

व्य॑हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा

५ ६९८

* दे० [अग्निः (आप्री सूक्तानि)] १९१५, १९२७, १९३९, १९५०, १९६१, १९७१, १९८९, २०००, २०११, २०२२, २०३४, २०४५, २०५७, २०६९, २०८१, २०९२, २१०३, २११४, २१२६, २१३८ ।

× वा० य० ८।१४, १६; अथर्व० ६।५।३ (पाठभेदेन) । + अथर्व० ७।१७।४ ।

८ [दे० अदितिः०]

(अथर्व० ५।१६।८) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा

८ ६९९

॥ १९५ ॥ (अथर्व० ६।५३।३)

(७००) बृहच्छुक्रः । त्रिष्टुप् ।

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन ।

त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वन्तु नो माष्टु तन्वोऽे यद् विरिष्टम्

३ ७००

॥ १९६ ॥ (अथर्व० ६।७८।३)

(७०१-२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।

त्वष्टा सहस्रमार्युषि दीर्घमार्युः कृणोतु वाम्

३ ७०१

॥ १९७ ॥ (अथर्व० ६।८१।३)

यं परिहस्तमविभरदितिः पुत्रकाम्या ।

त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति

३ ७०२

त्वष्ट-सहचारी देवगणः ।

(१) त्वष्टा शुक्रश्च ।

॥ १९८ ॥ (ऋ० २।३६।३)

(७०३) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

अमेव नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।

अथा मन्दस्त्र जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सुमद्रणः

३ ७०३

(२) त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः ।

॥ १९९ ॥ (अथर्व० ६।४।१)

(७०४) अथर्वा । पथ्याबृहती ।

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।

पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः

१ ७०४

[२] धाता ।

॥ २०० ॥ (ऋ० १०।१८।५)

(७०५) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ कृतव कृतुभिर्यन्ति साधु ।

यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरार्युषि कल्पयैषाम्

५ ७०५

॥ २०१ ॥ (अथर्व० १३।४।३)

(७०६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः

३ ७०६

॥ २०२ ॥ (अथर्व० १८।३।२६)

(७०७-१०) । अथर्वा । जगती ।

धाता मा निर्रेत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धार्मिबोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२६ ७०७

धातु-सहचारी-देवगणः ।

(१) धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः ।

॥ ३०३ ॥ (अथर्व० ३।८।२)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।

हुवे देवीमर्दिति शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि

२ ७०८

(२) धाताविधातारौ, ऋतवः ।

॥ २०४ ॥ (अथर्व० ३।१०।१०)

ऋतुभ्यश्चातवेभ्यो माद्भ्यः सैवत्सरेभ्यः ।

धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे

१० ७०९

(३) धाता, विधाता, सविता, आदित्याः, रुद्राः, अश्विनौ ।

॥ २०५ ॥ (अथर्व० ५।३।९)

धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सविताभिमातिषाहः ।

आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्रुथात्

९ ७१०

(४) धाता, सविता ।

॥ २०६ ॥ (अथर्व० ७।१७।१-३)

(७११-१३) भृगुः । १-२ गायत्री, २ त्रिष्टुप् ।

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः । स नः पूर्णेन यच्छतु

१

धाता दधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम् ।

वयं देवस्य धीमहि सुमतिं विश्वराधसः

२ ७१२

धाता विश्वा वार्यो दधातु प्रजाक्रामाय द्राशुषे दुरोणे ।

तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः

३ ७१३

(५) सविता, धाता, पूषा, त्वष्टा ।

॥ २०७ ॥ (अथर्व० ११।६।३)

(७१४) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३ ७१४

[३] पूषा ।

॥ २०८ ॥ (ऋ० १।२३।१३-१५)

(७१५-१७) मेधातिथिः कण्वः । गायत्री ।

आ पूषञ्चित्रबर्हिषं माघृणे घृणं दिवः । आजो नष्टं यथा पशुम्

१३ ७१५

पूषा राजानमाघृणि रपगूळं गुहां हितम् । अविन्दच्चित्रबर्हिषम्

१४

उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्तां अनुसेषिषत् । गोभिर्यवं न चर्कषत्

१५ ७१७

॥ २०९ ॥ (ऋ० १।४२।१-१०)

(७१८-२७) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः

१

यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेवति । अप स्म तं पथो जहि

२

अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं दुरश्चितम् । दूरमधि सुतेरज

३

७२०

त्वं तस्य द्याविनो ऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तपुषिम्

४

आ तत् ते दस्य मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितृनचोदयः

५

अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणां कृधि

६

अति नः सश्वतो नय सुगा नः सुपथां कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः

७

अभि सुयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः

८

७२५

अग्निं पूषिं प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः

९

न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दुस्ममीमहे

१०

७२७

॥ २१० ॥ (ऋ० १।१३।१-४)

(७२८-३१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

अप्रं पूषणस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते स्तोत्रमस्य न तन्दते ।

अर्चामि सुमयन्नह मन्त्यूति मयोभुवम् ।

विश्वस्य यो मन आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः

१

७२८

प्र हि त्वां पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमैभिः कृण्व कृणवो यथा मृध
उष्ट्रो न पीपरो मृधः ।

हुवे यत् त्वां मयोभुवं देवं सख्याय मर्त्यैः ।

अस्माकमाङ्गुषान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि २

यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित् सन्तोऽवसा बुभुजिर

इति क्रत्वा बुभुजिरे ।

तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।

अहैळमान उरुशंस सरीं भव वाजैवाजे सरीं भव ३ ७३०

अस्या ऊ षु ण उप सातयै भुवो ऽहैळमानो ररिवाँ अजाश्च श्रवस्यतामजाश्च ।

ओ षु त्वां ववृतीमहि स्तोमैभिर्दस्म साधुभिः ।

नहि त्वां पूषन्नतिमन्य आधृणे न ते सख्यर्मपह्वे ४ ७३१

॥ २११ ॥ (क्र० ३।६२।७-२)

(७३२-३४) गायिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इयं ते पूषन्नाधृणे सुष्टुतिर्देवं नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ७

तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धिर्यम् । वधूधुरिं च योषणाम् ८

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत् ९ ७३४

॥ २१२ ॥ (क्र० ६।४८।१६-१९)

(७३५-३८) शंयुर्बाह्रस्पत्यः (तृणपाणिः) १६ ककुप्, १७ सतोबृहती, १८ पुर उष्णिक्, १९ बृहती ।

आ मां पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आधृणे । अघा अर्यो अरांतयः १६ ७३५

मा काकम्बीरमुद् बृहो वनस्पति मशस्तीर्वि हि नीनशः ।

मोत सरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः १७

द्वतैरिव तेऽवुकर्मस्तु सख्यम् । अन्लिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः १८

परो हि मर्त्यैरसिं समो देवैरुत श्रिया ।

अभि ख्यः पूषन् पृतनासु नस्त्वमवां नूनं यथा पुरा १९ ७३८

॥ २१३ ॥ (क्र० ६।५३।१-१०)

(७३९-७७४) बाह्रस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री, ८ अनुष्टुप् ।

वयमुं त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुज्महि १

अभि नो नर्य वसु वीरं प्रयतदक्षिणम् । वामं गृहपतिं नय २ ७४०

अदित्सन्तं चिदाघृणे	पूषन् दानाय चोदय ।	पूणेश्चिद् वि प्रदा मनः	३
वि पथो वाजसातये	चिनुहि वि मृधो जहि ।	साधन्तामुग्र नो धियः	४
परि तन्धि पणीना	मारया हृदया कवे	अथेमस्मभ्यं रन्धय	५
वि पूषन्नारया तुद	पूणेरिच्छ हृदि प्रियम् ।	अथेमस्मभ्यं रन्धय	६
आ रिख किकिरा कृणु	पणीनां हृदया कवे	अथेमस्मभ्यं रन्धय	७ ७४५
यां पूषन् ब्रह्मचोदनी	मारां विमर्ष्याघृणे		
तया समस्य हृदय	मा रिख किकिरा कृणु		८
या ते अष्टा गोओपशा	ऽऽघृणे पशुसाधनी ।	तस्यास्ते सुम्रमीमहे	९
उत नो गोषणि धिय	मश्वसां वाजसामुत ।	नृवत् कृणुहि वीतर्ये	१० ७४८

॥ २१४ ॥ (ऋ० ६।५४।१-१०) + गायत्री ।

सं पूषन् विदुषा नय	यो अञ्जसानुशासति ।	य एवेदमिति ब्रवत्	१
सम् पूषणा गमेमहि	यो गृहो अंभिशासति ।	इम एवेति च ब्रवत्	२ ७५०
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति	न कोशोऽव पद्यते ।	नो अस्य व्यथते पविः	३
यो अस्मै हविषाविध	न्न तं पूषाऽपि मृष्यते ।	प्रथमो विन्दते वसु	४
पूषा गा अन्वेतु नः	पूषा रक्षत्वर्वतः ।	पूषा वाजं सनोतु नः	५
पूषन्ननु प्र गा इहि	यजमानस्य सुन्वतः ।	अस्माकं स्तुवतामुत	६
मार्किर्नेशन्मार्की रिष	न्मार्की सं शारि केवटे ।	अथारिष्टाभिरा गहि	७ ७५५
शृण्वन्तं पूषणं वय	मिर्यमनष्टवेदसम् ।	ईशानं राय ईमहे	८
पूषन् तव व्रते वयं	न रिष्येम कदा चन ।	स्तोतारस्त इह स्मसि	९
परि पूषा परस्ता	द्धस्तं दधातु दक्षिणम् ।	पुनर्नो नष्टमाजतु	१० ७५८

॥ २१५ ॥ (ऋ० ६।५५।१-६)

एहि वां विमुचो नपा	दाघृणे सं संचावहै ।	रथीर्ऋतस्य नो भव	१
रथीर्तमं कपर्दिन	मीशानं राधसो महः ।	रायः सखायमीमहे	२ ७६०
रायो धारासाघृणे	वसो राशिरजाश्च ।	धीवतोधीवतः सखा	३
पूषणं न्वजाश्च	मुप स्तोषाम वाजिनम् ।	स्वसुर्यो जार उच्यते	४
मातुर्दिधिषुमब्रवं	स्वसुर्जारः शृणोतु नः ।	आतेन्द्रस्य सखा मम	५
आजासः पूषणं रथे	निशुम्भास्ते जनश्रियम् ।	देवं वहन्तु विभ्रतः	६ ७६४

॥ २१६ ॥ (ऋ० ६।५६।१-६) गायत्री, ६ अनुष्टुप् ।

य ए॒नमादि॑देशति क॒रम्भादि॑तिं प॒षण॑म् । न तेन॑ दे॒व आ॒दिशे॑	१	७६५
उ॒त धा॑ स र॒थीत॑मः स॒ख्या स॒त्पति॑र्युजा । इन्द्रो॑ वृ॒त्राणि॑ जिघ्रते	२	
उ॒तादः प॑रुषे ग॒वि सूर॑श्चक्रं हि॒रण्य॑र्यम् । न्यैर॑यद् र॒थीत॑मः	३	
यदु॒द्य त्वा॑ पुरु॒ष्टुत॑ ब्र॒वाम॑ द॒स्य म॑न्तुमः । तत् सु॒ नो म॑न्म साधय	४	
इ॒मं च॑ नो ग॒वेष॑णं सा॒तये॑ सीषधो ग॒णम् । आ॒रात् पृष॑न्नसि श्रुतः	५	
आ ते॑ स्व॒स्तिमी॑मह आ॒रेअ॑वा॒मुपा॑वसुम् । अ॒द्या च॑ स॒र्वता॑तये॒ श्वश्च॑ स॒र्वता॑तये॒ ७७०		

॥ २१७ ॥ (ऋ० ६।५८।१-४) × त्रिष्टुप्, २ जगती ।

शुक्रं॑ ते॒ अ॒न्यद् य॑ज॒तं ते॒ अ॒न्यद् वि॑षु॒रूपे॑ अ॒ह॒नी द्यौरि॑वा॒सि ।		
वि॒श्वा हि॑ मा॒या अ॑वा॒सि स्व॑धा॒वो भ॒द्रा ते॑ पृष॒न्निह॑ रा॒तिरि॑स्तु	१	
अ॒जाश्वः॑ पशु॒पा वा॒जप॑स्त्यो धि॒यंजि॑न्वो भु॒वने॑ वि॒श्वे अ॑र्पितः ।		
अ॒ष्टौ प॑षा शि॒थिरा॑मु॒द्रीवृ॑जत् स॒ंचक्षा॑णो भु॒वना॑ दे॒व ई॑यते	२	
यास्ते॑ पृष॒न्नावो॑ अ॒न्तः सं॑मु॒द्रे हि॒रण्य॑यी॒न्तरि॑क्षे च॒रन्ति॑ ।		
ताभि॑र्या॒सि दु॒त्यां सूर्य॑स्य॒ कामे॑न कृ॒त श्र॑व इ॒च्छमा॑नः	३	
पू॒षा सु॑बन्धु॒र्दिव॑ आ पृ॒थि॒व्या इ॒लस्प॑ति॒र्मघ॑वा॒ दु॒स्सर्व॑र्चाः ।		
यं दे॒वासो॑ अ॒द॒दुः सूर्या॑यै॒ कामे॑न कृ॒तं त॒वसं॑ स्व॒श्रम्	४	७७४

॥ २१८ ॥ (ऋ० १०।१७।३-६) +

(७७५-७८) दे॒वश्र॑वा॒ यामा॑यनः । त्रि॒ष्टुप् ।

पू॒षा त्वे॒तश्च॑र्या॒वय॑तु प्र वि॒द्रा न॑नष्टपशु॒र्भुवन॑स्य गो॒पाः ।		
स त्वै॒तेभ्यः॑ परि॑ द॒दत् पित॑भ्यो ऽग्नि॒र्दे॒वेभ्यः॑ सु॒विदु॑त्रि॒येभ्यः॑	३	७७५
आ॒युर्वि॑श्वा॒युः परि॑ पा॒सति॑ त्वा पू॒षा त्वा॑ पा॒तु प्र॑प॒थे पुर॑स्तात् ।		
यत्रा॑स॒ते सु॒कृ॒तो यत्र॑ ते य॒युस्तत्र॑ त्वा दे॒वः स॒वि॒ता द॑धातु	४	
पू॒षेमा॑ आ॒श्ना अनु॑ वेद॒ सर्वाः॑ सो अ॒स्मौ अ॑भ॒यत॑मेन नेषत् ।		
स्व॒स्ति॒दा आ॑र्घृ॒णिः स॒र्ववी॑रो ऽग्र॑यु॒च्छन् पुर॑ ए॒तु प्र॑जानन्	५	
प्र॑प॒थे प॒थाम॑जनिष्ट पू॒षा प्र॑प॒थे दि॒वः प्र॑प॒थे पृ॒थि॒व्याः ।		
उ॒मे अ॒भि प्रि॒यत॑मे स॒धस्थे॑ आ च॒ परा॑ च च॒रति॑ प्र॒जान॑न्	६	७७८

× ऋ० ६, ५८, १ = सा० ७५ ।

+ ऋ० १०, १७, ५-६; ३-४ = अथर्व० ७, ९, १-२; १८, २, ५४-५५ ।

॥ २१९ ॥ (ऋ० १०।२६।१-९)

(७७९-८७) विमद पेन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुरुद्रा । अनुष्टुप्; १,४ उष्णिक् ।
 प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पर्हा यन्ति नियुतः । प्र दुस्त्रा नियुद्रथः पूषा अविष्टु माहिनः १
 यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः । विप्र आ वंसद्वीतिभिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् २ ७८०
 स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा । अभि प्सुरः प्रुषायति व्रजं न आ प्रुषायति ३
 मंसीमहि त्वा वय मस्माकं देव पूषन् । मतीनां च सार्धनं विप्राणां चाध्वम् ४
 प्रत्यर्धिर्यज्ञानां मश्वहयो रथानाम् । ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ५
 आधीषमाणायाः पतिः शुचायाश्च शुचस्य च ।
 वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मजत् ६
 इनो वाजानां पतिरिनः पुष्टीनां सखा । प्र इमश्रु हर्यतो दूधोद् वि वृथा यो अदाभ्यः ७ ७८५
 आ ते रथस्य पूषा ब्रजा धुरं ववृत्युः । विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः ८
 अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिनः । शुवद् वाजानां वृध इमं नः शृणवद्ववम् ९ ७८७

॥ २२० ॥ [७८८] (वा० य० ३४।४२) ×

पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानङ्कम् ।
 स नो रासच्छुरुषश्चन्द्राग्रा धिर्यधियः सीषधाति प्र पूषा । ४२ ७८८

॥ २२१ ॥ [दै० (आयुर्वेद० १७६५-६७) मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

पूषा-सहचारी देवगणः ।

(१) मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः ।

॥ २२२ ॥ (अथर्व० ७।३३।१)

(७८९) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
 सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोत मे १ ७८९

(२) अग्निः, सोमः, पूषा ।

॥ २२३ ॥ (अथर्व० १६।९।२)

(७९०) यमः । आचर्युष्णिक् ।

तदगिराह तदु सोम आह पूषा मा धातु सुकृतस्य लोके २ ७९०

[४] भगः ।

॥ २२४ ॥ (ऋ० १।२४।५)

(७९१) आजीगर्तिः शुनःशेषः, स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । गायत्री ।

भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धनं राय आरभे ५ ७९१

॥ २२५ ॥ (ऋ० ७।३८।६ उत्तरार्धः)

(७९२-९७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ६ ७९२

॥ २२६ ॥ (ऋ० ७।४१।२-६) ×

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेयो विधर्ता । २

आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याह २

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्चैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ३

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।

उतोदिता मघवन्त्स्वर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ४ ७९५

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।

तं त्वा भग सर्वं इजोहवीति स नो भग पुरेता भवेह ५

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावैव शुचये पदार्य ।

अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ६ ७९७

॥ २२७ ॥ (अथर्व० २।३०।५)

(७९८) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

एयमेगन् पतिकामा जनिकामोऽहमार्गमम् ।

अश्वः कर्निकदद् यथा भगेनाहं सहागमम् ५ ७९८

॥ २२८ ॥ (अथर्व० २।३६।७)

(७९९) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः । एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिक्रामाय वेत्तवे ७ ७९९

॥ २२९ ॥ (अथर्व० ५।२६।९)

(८००) ब्रह्मा । [एकावसाना] त्रिपदा पिपीलिकमध्या पुरउष्णिक् ।

भगो युनक्त्वाशिषो न्व१सा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा ९ ८००

॥ २३० ॥ (अथर्व० ६।१२९।१-३)

(८०१-३) अथर्वाङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भगेन मा शांशपेन साकमिन्द्रेण मेदिना । कृणोमि भगिनं माप द्रान्त्वरातयः १
 येन वृक्षां अभ्यर्षत्रो भगेन वर्चसा सह । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः २
 यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वाहितः । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः ३ ८०३

॥ २३१ ॥ (अथर्व० १४।१।५०-५१, ५३, ६०)

(८०४-७) सूर्या सावित्री । ५०, ५३ त्रिष्टुप्, ५१ अनुष्टुप्, ६० पराऽनुष्टुप् ।

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदृष्टिर्यथासः ।
 भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गाहंपत्याय देवाः ५०
 भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत् ।
 पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ५१ ८०५
 त्वष्टा वासो व्यदिधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषां कवीनाम् ।
 तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजयां ५३
 भगस्ततश्च चतुरः पादान् भगस्ततश्च चत्वार्युष्णलानि ।
 त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्ध्रान्त्सा नो अस्तु सुमङ्गली ६० ८०७

भग-सहचारी-देवगणः ।

(१) अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः ।

॥ २३२ ॥ (अथर्व० ६।४।२)

(८०८) अथर्वा । प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।
 अप तस्य द्वेषो गमेदभिद्भुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् २ ८०८

(२) धाता, अर्यमा, भगः, अश्विनौ ।

॥ २३३ ॥ (अथर्व० १४।२।१३)

(८०९) सूर्या सावित्री । त्रिष्टुप् ।

शिवा नारीयमस्तुमार्गन्निमं धाता लोकमस्यै दिदेश ।
 तामर्यमा भगो अश्विनोभा प्रजापतिः प्रजयां वर्धयन्तु १३ ८०९

[५] अर्यमा ।

॥ २३४ ॥ (अथर्व० ६।६०।१-३)

(८१०-१२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

अर्यमा यात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुपः । अस्या इच्छन्नगुवै पतिमुत जायामजानये १ ८१०
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती । अङ्गो न्वर्यमन्नस्या अन्याः समनमारयति २
धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ।

धाताऽस्या अगुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् ३ ८१२

॥ २३५ ॥ (अथर्व० ११।६।४)

(८१३) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ४ ८१३

॥ २३६ ॥ (अथर्व० १३।४।४)

(८१४-१६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४ ८१४

अर्यमन्-सहचारी-देवगणः ।

(१) अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः ।

॥ २३७ ॥ (अथर्व० ३।१४।२) अनुष्टुप् ।

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद्वसु २ ८१५

(२) मित्रः, वरुणः, त्वष्टा, अर्यमा, महादेवः ।

॥ २३८ ॥ (अथर्व० ९।७।७) त्रिपदा पिपीलिकमध्या निचृद्गायत्री ।

मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणीं महादेवो बाहू ७ ८१६

(३) अर्यमा, भगः, बृहस्पतिः, देवीः ।

॥ २३९ ॥ (अथर्व० ३।२०।३)

(८१७) वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।

प्र देवीः प्रोत सूनृता रयि देवी दधातु मे ३ ८१७

(७) विष्णुः ।

॥ २४० ॥ (ऋ० १।२२।१६-२१) +

(८१८-२३) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सम धामाभिः	१६
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूळहमस्य पांसुरे	१७
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन्	१८ ८२८
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा	१९
तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम्	२०
तद् विप्रांसो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम्	२१ ८२९

॥ २४१ ॥ (ऋ० १।१५४।१-६) *

(८२४-३७) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।	
यो अस्कंभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः	१
प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः ।	
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे—ष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा	२ ८२५
प्र विष्णवे शुषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे ।	
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थ—मेको विममे त्रिभिरित् पदेभिः	३
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।	
य उ त्रिधातुं पृथिवीमुत द्या—मेको दाधार भुवनानि विश्वा	४
तदस्य प्रियमभि पार्थो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।	
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः	५
ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।	
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि	६ ८२६

॥ २४२ ॥ (ऋ० १।१५५।४-६) जगती ।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसी—नस्य त्रातुरवृकस्य मीळुषः ।	
यः पार्थिवानि त्रिभिरिद् विगामभि—रुरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे	४ ८३८

+ ऋ० १।२२।१७-२१ = बा० य० ५, १५; ३४, ४३-४४; ६, ४-५; १३, ३३; अथर्व. ७, २६, ४-७; सा० २२२, १६६९-७४ ।

* ऋ. १।१५४।१-२, ६ = बा० य० ५, १८, २०; ६, ३; अथर्व. ७।२६।१-२, ३ (प्रथमचरणः) ।

द्वे इदस्य क्रमणे खर्दञ्चो ऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति ।
 तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वर्यश्चन पतयन्तः पतत्रिणः
 चतुर्भिः साकं नवति च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् ।
 बृहच्छरीरो विमिमान् ऋकभिर्धुवाकुमारः प्रत्येत्याहवम्

५

६ ८३१

॥ २४३ ॥ (ऋ० १।१५६।१-५)

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उं सप्रथाः ।
 अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्घ्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविर्मता
 यः पूर्याय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति ।
 यो जातमस्य महतो महि ब्रवत् सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदुर्म्यसत्
 तमुं स्तोतारः पूर्य यथा विद क्रतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।
 आस्यं जानन्तो नाम चिद् विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे
 तमस्य राजा वरुणस्तमश्चिना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः ।
 दाधार दधमुत्तममहर्विदं वृजं च विष्णुः सखिवा अपोर्णुते
 आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृतरः ।
 वेधा अजिन्वत् त्रिषधस्य आर्यं मृतस्य भागे यजमानमभजत्

१

२

३ ८३५

४

५ ८३७

॥ २४४ ॥ (ऋ० ७।९९।१-३,७) +

(८३८-४७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति ।
 उमे ते विब्र रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से
 न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप ।
 उदस्तन्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थं प्रार्ची ककुभं पृथिव्याः
 इरावती धेनुमती हि भूतं स्यवसिनी मनुषे दशस्या ।
 व्यस्तन्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थं पृथिवीमभितो मयूखैः
 वर्षट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।
 वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

७ ८४१

॥ २४५ ॥ (ऋ० ७।१००।१-६)

नू मर्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायाय दाशत ।	
प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नयमाविवासात्	१
त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजैन्या मप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।	
पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरे रश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः	२
त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।	
प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम	३
वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।	
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनांस उरुक्षितिं सुजनिमा चकार	४ ८४५
प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट नामाऽर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् ।	
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके	५
किमित् ते विष्णो परिचक्ष्ये भूत् प्र यद् बवक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।	
मा वर्षो अस्मदप गूह एतद् यदन्यरूपः समिथे बभूथ	६ ८४७

॥ २४६ ॥ (८४८-६०) (वा० य० १।२७,३०)

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन	
त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।	
सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पर्यस्वती च	२७
अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोऽस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि ।	
अग्नेर्जिह्वासि सुहृदेवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे	३० ८४१

॥ २४७ ॥ (वा० य० २।६,८,२५)

ध्रुवा असदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां	
यज्ञन्यम्	६ ८५०
अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो	
स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात्	८
दिवि विष्णुर्व्यक्रंस्त जागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च	
वयं द्विष्मोऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रंस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तो	
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रंस्त गायत्रेण	
छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः	२५ ८५२

॥ २४८ ॥ (वा० य० ५।१, १९, २१, २३-२५, ३८)×

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे
त्वा इयेनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा १
दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

उभा हि हस्ता वसुना पूणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा १९
विष्णो रराटमसि विष्णोः शत्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।

वैष्णवमसि विष्णवे त्वा २१ ८५५

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो

निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखा-

नेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सर्वन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं

वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि २३

खराडसि सपत्नहा संत्राडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा २४

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽर्वनयामि

वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां

वलगहना उप दधामि वैष्णवी रक्षोहणो वां वलगहनो पर्यूहामि वैष्णवी

वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ २५

उरु विष्णो विक्रमस्त्रो क्षयाय नस्कृधि ।

धृतं धृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ३८ ८५९

॥ २४९ ॥ (वा० य० ८।१)

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्ण उरुगायैष ते सोमस्त रक्षस्व मा त्वा दमन् १ ८६०

॥ २५० ॥ (अथर्व० ७।२६।१-३, ८)

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विममे रज्जोसि ।

यो अस्कृभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १

प्र तद् विष्णु स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।

परावत आ जगम्यात् परस्याः ३ ८६२

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।

उरु विष्णो वि क्रमस्वरु क्षयाय नस्कृधि ।

घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर

३

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसवैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्

८ ८६४

॥ २५१ ॥ (अथर्व० १०।५।२५-३५)

(८६५-७५) कौशिकः । व्यवसाना षट्पदा यथाक्षरं शक्यतिशकरी ।

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्निदेजाः ।

पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भेजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।

स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

२५ ८६५

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽन्तरिक्षसंशितो वायुदेजाः ।

अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो० २६

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यदेजाः ।

दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

२७

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः ।

दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

२८

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽऽशांसंशितो वातदेजाः ।

आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

२९

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा ऋक्संशितः सामदेजाः ।

ऋचोऽनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

३० ८७०

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मदेजाः ।

यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात् तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

३१

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमदेजाः ।

ओषधीरनु वि क्रमेऽहमोषधीभ्यस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

३२

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाप्सुसंशितो वरुणदेजाः ।

अपोऽनु वि क्रमेऽहमद्भ्यस्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

३३

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नदेजाः ।

कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भेजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु

३४ ८७४

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः ।

प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात् ३५ ८७५
विष्णु-सहचारी-देवगणः ।

(१) विष्णु-त्वष्टृ-प्रजापति-धातारः ।

॥ २५२ ॥ (ऋ० १०।१८४।१) +

(८७६) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु ।

आ सिञ्चतु प्रजापति-धाता गर्भं दधातु ते १ ८७६

(२) विष्णुर्वरुणश्च ।

॥ २५३ ॥ (८७७) (वा० य० ८।५९) ×

ययोरोजसा स्कमिता रजःसि वीर्येभिर्वीरतमा श्विष्ठा ।

या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णुं अगन्वरुणा पूर्वहूतौ ५२ ८७७

॥ २५४ ॥ (अथर्व० ७।२५।२)

(८७८) मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः ।

पुरा देवस्य धर्मेणा सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः २ ८७८

(८) विवस्वान् ।

॥ २५५ ॥ (८७९) (वा० य० २२।३०)

विवस्वते स्वाहा ३० ८७९

॥ २५६ ॥ (अथर्व० ६।११६।१-३) *

(८८०-८२) जाटिकायनः । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यथा ।

वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् १ ८८०

वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।

मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे २

यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस् एन आगन् ।

यार्वन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः ३ ८८२

+ अथर्व० ५।२५।५, × अथर्व० ७।२५।१, * दै० [आयुर्वेद०] २०५६

१० [दै० अदितिः०]

(९) संवत्सरः कालः ।

॥ २५७ ॥ (क्र० १।१६४।४८)

(८८३) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।

तस्मिन्त्साकं त्रिंशता न शङ्कवो ऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः

४८ ८८३

॥ २५८ ॥ [८८४-८६] (वा० य० २१।२८)

संवत्सराय स्वाहा

२८ ८८४

॥ २५९ ॥ (वा० य० २७।४५)

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि ।

उषस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते

कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताः संवत्सरस्ते कल्पताम् ।

प्रेत्या एत्यै स चाञ्च प्र च सारय ।

सुपर्णचिदांसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद

४५ ८८५

॥ २६० ॥ (वा० य० ३०।१५)

संवत्सराय पर्यायिणी परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वंरीमिद्वत्सराया-

तिष्कद्वरी वत्सराय विजर्जराः संवत्सराय पलिकनीम्

१५ ८८६

॥ २६१ ॥ (अथर्व० ३।२०।८)

(८८६-८९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

आयमगन्तसंवत्सरः पतिरेकाष्टके तव ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज

८ ८८७

॥ २६२ ॥ (अथर्व० ४।१५।१३) ×

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।

वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूकां अवादिषुः

१३ ८८८

॥ २६३ ॥ (अथर्व० ११।७।१८)

समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्व्यः ।

संवत्सरोऽध्युच्छिष्ट इडां प्रैषा ग्रहां हविः

१८ ८८९

॥ २६४ ॥ (अथर्व० १५।३।१) पिपीलिकमध्या गायत्री ।

स संवत्सरमूर्ध्वोऽतिष्ठत् तं देवा अब्रुवन् व्रात्य किं नु तिष्ठसीति

१ ८९०

॥ २६५ ॥ (अथर्व० ११।५।२०)

(८९१) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः ।

संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः

२० ८९१

॥ २६६ ॥ (अथर्व० १९।५३।१-१०)

(८९२-९०६) भृगुः । अनुष्टुप् ; १-४ त्रिष्टुप् ; ५ निचृत् पुरस्ताद्वृहती ।

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।

तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा

१

सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः ।

स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः

२

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आर्हितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः ।

स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमिन्

३

स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्यैत् ।

पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमस्ति तेजः

४

८९५

कालोऽमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत ।

काले ह भूतं भव्यं चेष्टितं ह वि तिष्ठते

५

कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः ।

काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति

६

काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम् ।

कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः

७

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम् ।

कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पिताऽऽसीत् प्रजापतिः

८

तेनेष्टितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ।

कालो ह ब्रह्म भूत्वा विभर्ति परमेष्ठिनम्

९

९००

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम् ।

स्वयंभूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत

१०

९०१

॥ २६७ ॥ (अथर्व० १९।५४।१-१५)

अनुष्टुप्, २ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; ५ ज्यवसाना षट्पदा विराडष्टिः ।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः ।

कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः

१

कालेन वार्तः पवते कालेन पृथिवी मही । द्यौर्मही काल आहिता

२

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा ।

३

कालाद्वचः समभवन् यज्ञः कालादजायत

कालो यज्ञं समैरयद् देवेभ्यो भागमर्क्षितम् ।

काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः

४ ९०५

कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः ।

इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विष्टृतीश्च पुण्याः ।

सर्वील्लोकान्भित्तिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः

५ ९०६

(१०) ऋतवः ।

॥ २६८ ॥ (ऋ० १।१५।१-१२) +

(९०७-१८) मेघातिथिः काण्वः । [ऋतुदेवताः = १ इन्द्रः, २ मरुतः, ३ त्वष्टा, ४ अग्निः, ५ इन्द्रः, ६ मित्रावरुणौ, ७-१० द्रविणोदाः, ११ अश्विनौ, १२ अग्निः] । गायत्री ।

इन्द्र सोमं पिबं ऋतुना ऽऽ त्वा विशन्तिवन्दवः । मत्सरासस्तदौकसः

१

मरुतः पिबन्त ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः

२

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिबं ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि

३

अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परि भूष पिबं ऋतुना

४ ९१०

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममर्तुरनु । तवेद्वि सख्यमस्तुतम्

५

युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळर्मम् । ऋतुना यज्ञमाशाथे

६

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अघ्वरे । यज्ञेषु देवमीळते

७

द्रविणोदा ददातु नो वसन्ति यानि शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे

८

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत

९ ९१५

यत् त्वा तुरीयमुतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अघं स्मा नो दुदिर्भव

१० ९१६

+ ऋ० १।१५।२,४,१९ = दै० [अग्निः] २२-२३; [मरुतः] ५;

अश्विना पिबतं मधु दीर्घाशुचित्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा ११
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज १२ ९१८

॥ २६९ ॥ (ऋ० २।३६।१-६) ॐ

(९११-३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । [ऋतुदेवताः-१ इन्द्रो मधुश्च, २ मरुतो माधवश्च, ३ त्वष्टा शुक्रश्च, ४ अग्निः शुचिश्च, ५ इन्द्रो नभश्च, ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च । जगती ।

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ गा अपो ऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः ।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वर्षदकृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे १
यज्ञैः संमिश्राः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्—र्यामच्छुभ्रासो अज्जिषु प्रिया उत ।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य स्रनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः २ ९२०
अमेव नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसु—स्त्वष्टेर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्रणः ३
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चो—शन् होतर्निषदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिवाशीध्रात् तव भागस्य तृणुहि ४
एष स्य तै तन्वो नृमण्वर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मधवन् तुभ्यमाभृत—स्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत् पिब ५
जुषेथाँ यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्या अनु ।
अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ६ ९२४

॥ २७० ॥ (अथर्व० २।३७।१-६) ×

[ऋतुदेवताः-१-४ द्रविणोदा ऋतवश्च, ५ अश्विनौ, ६ अग्निः ऋतुश्च]

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसो ऽध्वर्यवः स पूर्णा वष्ट्यासिचम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशो दुदि—होत्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः १ ९२५
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो दुदिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः २
मेघन्तु ते बह्व्यो येमिरीयसे ऽरिषण्यन् वीळयस्वा वनस्पते ।
आयूया धृष्णो अभिगूया त्वं नेष्ट्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ३
अपादोत्रादुत पोत्रादमत्तो—त नेष्ट्रादजुषत प्रयो हितम् ।
तुरीयं षात्रममृक्तममर्त्य द्रविणोदाः पिबतु द्रविणोदसः ४ ९२८

अ॒र्वा॒श्च॒म॒द्य य॒य्यं नृ॒वाह॑णं रथं यु॒ञ्जा॒था॒मि॒ह वां वि॒मो॒च॒नम् ।

पू॒ङ्क्त॒ ह॒वी॒षि म॒धु॒ना हि कं ग॒त—म॒था सोमं॑ पि॒ब॒तं वा॒जि॒नी॒व॒सू

५

जोष्य॑ग्ने स॒मि॒धं जोष्या॑हु॒तिं जोषि॑ ब्र॒ह्म ज॒न्यं जोषि॑ सु॒ष्टु॒तिम् ।

वि॒श्वेभि॒र्वि॒श्वौ ऋ॒तुना॑ व॒सो म॒ह उ॒श॒न् दे॒वां उ॒श॒तः पा॑य॒या ह॒विः

६ १३०

॥ २७१ ॥ [१३१-४८] (वा० य० ७।३०)

उ॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ म॒ध॒वे त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ मा॒ध॒वाय॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑

शु॒क्राय॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ शु॒च॒ये त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ न॒भ॒से त्वो॒प॒या॒म॒-

गृ॒ही॒तोऽसि॑ न॒भ॒स्याय॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑षि॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽस्य॑र्जे त्वो॒प॒-

या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ स॒ह॒से त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ स॒ह॒स्याय॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑

त॒प॒से त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽसि॑ त॒प॒स्याय॑ त्वो॒प॒या॒म॒गृ॒ही॒तोऽस्य॑ ह॒स॒स्प॒तये॑ त्वा ३० १३१

॥ २७२ ॥ (वा० य० १३।२५)

म॒धु॒श्च मा॒ध॒वश्च॑ वा॒स॒न्ति॒कावृ॑तू अ॒ग्नेर॑न्तः॒श्लेषो॑ऽसि॒ कल्पे॑तां द्या॒वापृ॑थि॒वी

क॒ल्प॑न्ता॒माप॑ ओष॒धयः॑ क॒ल्प॑न्ता॒म॒ग्नयः॑ पृथ॒ङ् म॒म ज्यैष्ठ्या॑य॒ स॒व॒ताः ।

ये अ॒ग्नयः॑ स॒म॒न॒सोऽन्त॑रा द्या॒वापृ॑थि॒वी इ॒मे ।

वा॒स॒न्ति॒कावृ॑तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑ इ॒न्द्रमि॑व दे॒वा अ॒भिसं॑वि॒श॒न्तु त॒या

दे॒वत॑या॒ङ्गिर॑स्वद् ध्रु॒वे सी॑द॒तम्

२५ १३२

॥ २७३ ॥ (वा० य० १४।६, १५-१६, २७, २९)

शु॒क्रश्च॑ शु॒चिश्च॑ ग्रैष्मा॒वृ॒तू अ॒ग्नेर॑न्तः० ।०। ग्रैष्मा॒वृ॒तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑०

६

न॒भश्च॑ न॒भ॒स्यश्च॑ वा॒र्षिका॑वृ॒तू अ॒ग्नेर॑न्तः० ।०। वा॒र्षिका॑वृ॒तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑०

१५

इ॒षश्चो॑र्जश्च॑ श्वा॒र॒दावृ॑तू अ॒ग्नेर॑न्तः० ।०। श्वा॒र॒दावृ॑तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑०

१६ १३५

स॒हश्च॑ स॒ह॒स्यश्च॑ है॒म॒न्ति॒कावृ॑तू अ॒ग्नेर॑न्तः० ।०। है॒म॒न्ति॒कावृ॑तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑०

२७

ए॒का॒द॒शभि॑र॒स्तु॒वत॑ ऋ॒त॒वोऽसृ॑ज्यन्ता॒र्त॒वा अ॒धि॒प॒तय॑ आ॒सन्

२९ १३७

॥ २७४ ॥ (वा० य० १५।२७)

त॒पश्च॑ त॒प॒स्यश्च॑ शै॒शिरा॑वृ॒तू अ॒ग्नेर॑न्तः० ।०। शै॒शिरा॑वृ॒तू अ॒भिक॑ल्प॒माना॑०

५७ १३८

॥ २७५ ॥ (वा० य० १७।३)

ऋ॒त॒व॑ स्थ ऋ॒ता॒वृ॒धं ऋ॒तु॒ष्ठा स्थ॑ ऋ॒ता॒वृ॒धः ।

घृ॒त॒श्रु॒तो म॒धु॒श्रु॒तो वि॒रा॒जो ना॒म का॒म॒दु॒घा अ॒क्षी॑य॒माणाः

३ १३९

॥ २७६ ॥ (वा० य० २१।२३-२८)

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ।

रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः

२३ ९४०

ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः ।

बृहता यज्ञसा बलं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२४

वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः ।

वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः

२५

शरदेन ऋतुना देवा एकविंश क्रमव स्तुताः ।

वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२६

हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुत स्तुताः ।

बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः

२७

शैशिरेण ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशोऽमृता स्तुताः ।

सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः

२८ ९४५

॥ २७७ ॥ (वा० य० २१।२८)

ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा

२८ ९४६

॥ २७८ ॥ (वा० य० २३।४०)

ऋतवस्त ऋतुथा पर्वं शमितारो वि शीसतु ।

संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा

४० ९४७

॥ २७९ ॥ (वा० य० २६।१४)

ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः ।

संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः

१४ ९४८

॥ २८० ॥ (अथर्व० ३।१०।९)

(९४९-६४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

ऋतून् यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।

समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे

९ ९४९

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ५।२८।१३) पुरउष्णिक् ।

ऋतुभिर्ध्वार्तवैरायुषे वर्चसे त्वा ।

संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि

१३ ९५०

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ११।३।१७) आसुर्यनुष्टुप् ।

ऋतवः पक्तरं आर्तवाः समिन्धते

१७ ९५१

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १५।३।४) द्विपदाऽऽच्युष्णिक् ।

तस्यां ग्रीष्मश्च वसन्तश्च द्वौ पादावास्तां शरच्च वर्षाश्च द्वौ

४ ९५२

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १५।४।२-३, ५-६, ८-९, ११-१२, १४-१५, १७-१८)

वासन्तौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् बृहच्च रथंतरं चानुष्ठातारौ

२

वासन्तावेनं मासौ प्राच्यां दिशो गोपायतो बृहच्च रथंतरं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

३

ग्रीष्मौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानुष्ठातारौ

५ ९५५

ग्रीष्मावेनं मासौ दक्षिणायां दिशो गोपायतो यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं

चानु तिष्ठतो य एवं वेद

६

वार्षिकौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् वैरूपं च वैराजं चानुष्ठातारौ

८

वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्यां दिशो गोपायतो वैरूपं च वैराजं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

९

शरदौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् छैतं च नौधसं चानुष्ठातारौ

११

शरदावेनं मासावुदीच्यां दिशो गोपायतो श्यैतं च नौधसं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद

१२ ९६०

हैमनौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् भूमिं चाग्निं चानुष्ठातारौ

१४

हैमनावेनं मासौ ध्रुवायां दिशो गोपायतो भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद

१५

शैशिरौ मासौ गोप्सारावकुर्वन् दिवं चादित्यं चानुष्ठातारौ

१७

शैशिरावेनं मासावूर्ध्वायां दिशो गोपायतो द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद

१८ ९६४

॥ २८५ ॥ (अथर्व० १०।६।१८)

(९६५) बृहस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ऋतवस्तमबध्नतार्तवास्तमबध्नत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति

१८ ९६५

॥ २८६ ॥ (अथर्व० ११।४।४)

(९६६) भार्गवो वैदर्भिः । अनुष्टुप् ।

यत् प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः ।

सर्वं तदा प्र मोदते यत् किं च भूम्यामधि

४ ९६६

॥ २८७ ॥ (अथर्व० ११।६।१७, २२)

(९६७-६८) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।

समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मृञ्चन्त्वंहसः

१७

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।

संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः ।

२२ ९६८

॥ २८८ ॥ (अथर्व० १२।१।३६)

(९६९) अथर्वा । विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः ।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः ।

ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम्

३६ ९६९

॥ २८९ ॥ (अथर्व० १६।८।२१)

(९७०) यमः । आसुरी पङ्क्तिः ।

स आर्तवानां पाशान्मा मौचि

२१ ९७०

॥ २९० ॥ (अथर्व० ७१।१।२९)

(९७१) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन गुप्त ऋतुमिश्र सर्वभूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।

मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं संछिलेन वाचः

२९ ९७१

(११) चन्द्रमाः ।×

॥ २९१ ॥ (ऋ० १०।८।५।१९) *

(९७२) सावित्री सूर्या ऋषिका । त्रिष्टुप् ।

नवौनवो भवति जार्यमानो ऽह्नां केतुरुषसमित्यग्रम् ।

भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन् प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः

१९ ९७२

॥ २९२ ॥ (ऋ० १०।९।०।१३) +

(९७३) नारायणः । अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत

१३ ९७३

॥ २९३ ॥ [२७४-७९] (वा० य० १।२८)

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरश्निबुदादाय पृथिवीं जीवदानुम् ।

यामैरयश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरांसो अनुदिश्य यजन्ते

२८ ९७४

× दै० [आयुर्वेद०] ६-७, ३९, ६८, ७१, ८८, ९१, ११६, १२३, १५४, २३२, २४५, २६८, २७४, ३१२ सूक्तानि द्रष्टव्यानि ।

* अथर्व० ७, ८१, २; १४, १, २४; + अथर्व १९, ६, ७ ।

११ [दै० अदितिः०]

॥ २९४ ॥

चन्द्राय स्वाहा (वा० य० २१।२८) + चन्द्रमसे किलासम् । (वा० य० ३०।२१) २८ ९७५

॥ २९५ ॥ (वा० य० २३।४, १०)

एष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ।

यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा सैवभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ४

सूर्ये एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्

१० ९७७

॥ २९६ ॥ (वा० य० ३१।१२)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद् वायुश्च ग्राणश्च मुखादग्निरजायत

१२ ९७८

॥ २९७ ॥ (वा० य० ३३।९०)

चन्द्रमा अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रयि पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कर्निकदत्

९० ९७९

॥ २९८ ॥ (अथर्व० १।३।४)

(९८०-९०) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृण्यम् ।

तेना ते तन्वेष्टुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति

४ ९८०

॥ २९९ ॥ (अथर्व० २।२१।१-५)

(एकावसानम्) १-४ निचृद्विषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

चन्द्र यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

१

चन्द्र यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

२

चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च्य योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

३

चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

४

चन्द्र यत् ते तेजस्तेन तमेतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

५ ९८५

॥ ३०० ॥ (अथर्व० ५।२४।१०) चतुष्पदातिशकरी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां

चिन्त्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्या स्वाहा

१० ९८६

॥ ३०१ ॥ (अथर्व० ६।७८।१-२) अनुष्टुप् ।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः ।

ज्यायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम् १

अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् । रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ २ १८८

॥ ३०२ ॥ (अथर्व० १८।४।८९) पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः । ×

चन्द्रमा अप्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८९ १८९

॥ ३०३ ॥ (अथर्व० १९।१९।४) अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विशतु तां प्र विशतु सा वः शर्मं च वर्मं च यच्छतु ९९०

॥ ३०४ ॥ (अथर्व० ११।६।७)

(९९१) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

मुञ्चन्तु मा अपथ्यादिहोरात्रे अथो उषाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति ९९१

॥ ३०५ ॥ (अथर्व० १९।२७।२, ५)

(९९२-९३) भृग्वङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः ।

माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वारतः प्राणेन रक्षतु २

घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्र आज्येन वर्धयन् ।

अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दमन् ५ ९९३

॥ ३०६ ॥ (अथर्व० १९।४३।४)

(९९४) ब्रह्मा । ज्यवसाना शङ्कुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे ४ ९९४

चन्द्रमा-सहचारी-देवगणः ।

(१) सूर्यः चन्द्रश्च ।

॥ ३०७ ॥ (अथर्व० २।१५।३)

(९९५-९६) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न विभीतो न रिण्यतः । एवा मे प्राण मा विभेः ३ ९९५

(२) द्यौः, पृथिवी, सूर्यः, चन्द्रमाः, अन्तरिक्षं च ।

॥ ३०८ ॥ (अथर्व० ८।१।१२) व्यवसाना पञ्चपदा जगती ।

मा त्वा कृव्यादुभि मैस्तारात् संकसुकाच्चर ।

रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च । अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः १२ ९९६

॥ ३०९ ॥ (अथर्व० ११।६।५)

(९९७) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।

विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५ ९९७

(३) दिक्चन्द्रमसः ।

॥ ३१० ॥ (अथर्व० ४।३९।७-८)

(९९८-९९) अङ्गिराः । ७ त्रिपदा महावृहती, ८ संस्तारपङ्क्तिः ।

दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्धोत् ।

यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मर्ह्यं संनमः सं नमन्तु

दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः । ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

७

८ ९९९

(४) अग्निः, चन्द्रमाश्च ।

॥ ३११ ॥ (अथर्व० ६।८६।२)

(१०००) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

समुद्र ईशे स्रवतामग्निः पृथिव्या वशी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामीशे त्वमेकवृषो भव

२ १०००

(१२) रात्रिः ।

॥ ३१२ ॥ (ऋ० १।११३।१ [उत्तरार्धः])

(१००१) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

यथा प्रसृता सवितुः सवायै एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्

१ १००१

॥ ३१३ ॥ (क्र० १०१०१९)

(१००२) वैवस्वतो यमः ऋषिः । त्रिष्टुप् ।

रात्रीभिस्मा अहभिर्जशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।

दिवा पृथिव्या मिथुना सर्वन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि

९ १००२

॥ ३१४ ॥ (क्र० १०१२७१-८)

(१००३-१०१०) कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । गायत्री ।

रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्युक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित १

ओर्वेप्रा अमर्त्या निवर्तो देव्युद्धतः । ज्योतिषा बाधते तमः २

निरु स्वसारमस्कृतोऽपसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ३ १००५

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्षमहि । वृक्षे न वसति वयः ४

नि ग्रामासो अविश्वत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासंश्चिदर्थिनः ५

यावया वृक्ष्यं वृक्षं यवयं स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरां भव ६

उप मा पेपिशत् तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उप ऋणेव यातय ७

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ८ १०१०

॥ ३१५ ॥ [१०११-१६] (वा० य० ३।१८)

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय

१८ १०११

॥ ३१६ ॥ (वा० य० २३।१२) ×

द्यौरासीत् पूर्वचित्तिरश्च आसीद् बृहद्वयः ।

अर्विरासीत् पिलिप्पिला रात्रिरासीत् पिशङ्गिला

१२ १०१२

॥ ३१७ ॥ (वा० य० २४।२५)

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो

जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्तसैवत्सराय महतः सुपर्णान्

२५ १०१३

॥ ३१८ ॥ (वा० य० ३०।२१)

रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्

२१ १०१४

॥ ३१९ ॥ (वा० य० ३१।२२) ❁

आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरग्रायि धामभिः ।

दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः

३२ १०१५

॥ ३२० ॥ (वा० य० ३७।२१ [उत्तरार्धः]) +

रात्रिः केतुना जुषताऽ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा

२१ १०१६

॥ ३२१ ॥ (अथर्व० १।१६।१)

(१०१७) चातनः । अनुष्टुप् ।

येमावास्यां रात्रिमुदस्थुर्वाजमत्त्रिणः ।

अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवतु

१ १०१७

॥ ३२२ ॥ (अथर्व० २।१५।२)

(१०१८-१९) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः

२ १०१८

॥ ३२३ ॥ (अथर्व० २३।४।३०) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स वै रात्र्या अजायत तस्माद् रात्रिरजायत

३० १०१९

॥ ३२४ ॥ (अथर्व० ५।५।१)

(१०२०-२९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नभः पितर्यमा ते पितामहः ।

सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा

१ १०२०

॥ ३२५ ॥ (अथर्व० १५।२।५, १३, २१, २९) द्विपदाऽऽर्ची गायत्री ।

श्रद्धा पुंश्चली मित्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवतौ
कल्मलिर्मणिः

५

उषाः पुंश्चली मन्त्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

१३

इरा पुंश्चली हसो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

२१

विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुर्माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ०

२९ १०२४

॥ ३२६ ॥ (अथर्व० १५।१३।१, ३, ५, ७, ९)

१ साम्युष्णिक्, ३, ५, ७ आसुरी गायत्री; ९ द्विपदानिचृद्गायत्री ।

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

१ १०२५

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो द्वितीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

३

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यस्तृतीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

५

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमतिथिर्गृहे वसति

७

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरिमिता रात्रिरतिथिर्गृहे वसति

९ १०२९

॥ ३२७ ॥ (अथर्व० ६।१२८।२)

(१३०) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भद्राहं नो मध्यंदिने भद्राहं सायमस्तु नः ।

भद्राहं नो अह्नां पाता रात्री भद्राहमस्तु नः

२ १०३०

॥ ३२८ ॥ (अथर्व० १९।४७।२-९)*

(१०३१-५१) गोपथः । अनुष्टुप्; २ पञ्चपदाऽनुष्टुप्गर्भा पराऽतिजगती;

६ पुरस्ताद्वृहती; ७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

न यस्याः पारं ददंशे न योयुवद् विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।

अरिंष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि २

ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव । अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः ३

षष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत् पञ्च सुमयि । चत्वारंश्चत्वारिंश्चच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ४

द्वौ च ते विशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः । तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ५

रक्षा मार्किर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।

मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत ६ १०३५

माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।

परमेभिः पथिभि स्तेनो धावतु तस्करः । परेण दुत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु ७

अध रात्रि तुष्टधूममशीर्षाणमहि कृणु । हनु वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि ८

त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।

गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः ९ १०३८

॥ ३२९ ॥ (अथर्व० १९।४८।१-६)

अनुष्टुप्; १ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २ त्रिपदा विराडनुष्टुप्; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्;

५ पथ्यापङ्क्तिः ।

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि । तानि ते परि ददासि १

रात्रि मातरुषसे नः परि देहि । उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरी २ १०४०

यत् किं चेदं पतर्यति यत् किं चेदं सरीसृपम् ।

यत् किं च पर्वतायासत्वं तस्मात् त्वं रात्रि पाहि नः ३

सा पश्चात् पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।

गोपायं नो विभावरी स्तोतारस्त इह स्मसि ४ १०४२

* अथर्व० १९।४७।१ = वा० य० ३४, ३२ ।

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति
वेद वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि ।
तां त्वां भरद्वाजो वेद सा नो विचेऽधि जाग्रति

५

६ १०४४

॥ ३३० ॥ (अथर्व० १९।५०।१-७) अनुष्टुप् ।

अथ रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु । अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि १ १०४५
ये ते रात्र्यनद्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाश्वः । तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा २
रात्रिरात्रिमरिष्यन्तस्तरैम तन्वा वयम् । गम्भीरमप्लवा इव न तरेयुररातयः ३
यथा श्याम्याकः प्रपतन्नपवान् नानुविद्यते । एवा रात्रि प्र पातय यो अस्मां अभ्यघायति ४
अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम् । अथो यो अर्वतः शिरोऽभिघाय निनीषति ५
यदद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्यो वसु । यदेतदस्मान् भोजय यथेदुन्यानुपायसि ६ १०५०
उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः । उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरी ७ १०५१

॥ ३३१ ॥ (अथर्व० १९।४९।१-१०)

(१०५०-६०) गोपथः, भरद्वाजश्च । अनुष्टुप् ; १-५, ८ त्रिष्टुप् ; ६ आस्तारपङ्क्तिः ; ७ पथ्यापङ्क्तिः ;
१० ज्यवसाना षट्पदा जगती ।

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।
अश्वक्षमा सुहवा संभृतश्रीरा पग्रौ द्यावापृथिवी महित्वा १
अति विश्वान्यरुहद् गम्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः ।
उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधार्मिः २
वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रि सुमना इह स्याम् ।
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या ३
सिंहस्य रात्र्युशती पीषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे ।
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती ४ १०५५
शिवां रात्रिमनुस्र्य च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु ५
स्तोमस्य नो विभावरी रात्रि राजेव जोषसे ।
आसाम् सर्ववीरा भवाम् सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूषसः ६ १०५७

शम्या ह नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।

रात्रीहि तान्सुतपा य स्तेनो न विद्यते यत् पुनर्न विद्यते
भद्रार्तिं रात्रि चमसो न विष्टो विष्वं गोरूप युवतिर्विभर्षि ।

७

चक्षुष्मती मे उग्रती वपूषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः
यो अद्य स्तेन आर्यत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।

८

रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत्
प्र पादौ न यथार्यति प्र हस्तौ न यथाशेषत् ।

९ १०६०

यो मल्लिम्बुरुपायति स संपिष्टो अपायति ।

अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति

१० १०६१

॥ ३३२ ॥ [१०६२-६७] (वा० य० ६।२१)

अहोरात्रे गच्छ स्वाहा

२१ १०६२

॥ ३३३ ॥ (वा० य० १४।३०)

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम्

३० १०६३

॥ ३३४ ॥ (वा० य० १८।२३)

अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

२३ १०६४

॥ ३३५ ॥ (वा० य० २२।२८)

अहोरात्रेभ्यः स्वाहा

२८ १०६५

॥ ३३६ ॥ (वा० य० २३।४१)

अर्धमासाः परूषि ते मासा आ च्छयन्तु शम्यन्तः ।

अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु ते

४१ १०६६

॥ ३३७ ॥ (वा० य० ३१।२२)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।

इष्णाग्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण

२ १०६७

॥ ३३८ ॥ (अथर्व० ६।१२८।३)

(१०६८) अक्षिराः । अनुष्टुप् ।

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् ।

भद्राहमसभ्यं राजन्छकधूम त्वं कृधि

३ १०६८

१२ दै. [अदितिः]

॥ ३३९ ॥ (अथर्व० १५।२।२२)

(१०६९-७३) अथर्वा । आसुरी गायत्री ।

अहश्च रात्रीं च परिष्कन्दौ मनो विपथम्

२२ १०६९

॥ ३४० ॥ (अथर्व० १५।६।१७-१८) १७ आर्ची पङ्क्तिः, १८ विराड् जगती ।

तमुतवर्थावाश्च लोकाश्च लौक्याश्च मासाश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्यचि लन्
 ऋतूनां च वै स आर्तवानां च लोकानां च लौक्यानां च मासानां चार्धमासानां
 चाहोरात्रयोश्च ग्रियं धाम भवति य एवं वेद

१७ १०७०

१८ १०७१

॥ ३४१ ॥ (अथर्व० १५।१८।४-५) आर्च्यनुष्टुप् ।

अहोरात्रे नासिके दितिश्चादितिश्च शीर्षकपाले सैवत्सरः शिरः

४

अह्ना प्रत्यङ् वात्यो रात्र्या प्राङ् नमो वात्याय

५ १०७३

॥ ३४२ ॥ (अथर्व० १६।८।२४) +

(१०७४) यमः । आसुरी जगती ।

सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मौचि

२४ १०७४

रात्रि-सहचारी-देवगणः ।

रात्रिः, धेनुः ।

॥ ३४३ ॥ (अथर्व० ३।१०।२-४)

(१०७५-७७) २-३ अनुष्टुप्, ४ त्रिष्टुप् ।

यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम् ।

संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली

२ १०७५

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज

३

इयमेव सा या प्रथमां व्यौच्छद्वास्वितरासु चरति प्रविष्टा ।

महान्तो असां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगञ्जनित्री

४ १०७७

॥ ३४४ ॥ (अथर्व० १०।१।६)

(१०७८) नारायणः । यामः । जगती ।

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णीविमौ नासिके चक्षणी मुखम्
येषां पुत्रा विजयस्य मल्लानि चतुष्पादो द्विपादो यन्ति यामम्

६ १०७८

(१३) पूर्णिमा ।

॥ ३४५ ॥ (अथर्व० ७।८०।१-२,४)

(१०७९-८२) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप् ।

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ।
तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम
वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे ।

१

स नो ददात्वक्षितां रयिमनुपदस्वतीम्

२ १०८०

पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु ।

ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाकं सुकृतः प्रविष्टाः

४

॥ ३४६ ॥ (अथर्व० १५।१६।१) साम्युष्णिक् ।

तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य प्रथमोऽपानः सा पौर्णमासी

१ १०८२

(१४) राका ।

॥ ३४७ ॥ (ऋ० २।३२।४-५)

(१०८३-८४) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ।

सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्

४

यास्तै राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसनि ।

ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा

५ १०८४

(१५) अमावास्या ।

॥ ३४८ ॥ (अथर्व० ७।७९।१-४)

(१०८५-९१) अथर्वा । त्रिष्टुप्, १ जगती ।

यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा ।

तेनां नो यज्ञं पिष्टुहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्

१ १०८५

अहमेवास्म्यमावास्याहं मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे ।

मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्तु सर्वे

२ १०८६

आगन् रात्रीं संगमेनी वसन्तामूर्जे पुष्टं वस्वावेश्यन्ती ।

अमावास्या चै हविषा विधेमोर्जे दुहाना पर्यसा न आगन् ३

अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जेजान ।

यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ४ १०८८

॥ ३४९ ॥ (अथर्व० १५।१।१४) साम्नी पङ्क्तिः ।

अमावास्या च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम् १४ १०८९

॥ ३५० ॥ (अथर्व० १५।१६।३) साम्न्युष्णिक् ।

तस्य त्रात्यस्य । योऽस्य तृतीयोऽपानः सामावास्या ३ १०९०

॥ ३५१ ॥ (अथर्व० १५।१७।९) द्विपदा साम्नी श्रिष्टुप् ।

तस्य त्रात्यस्य । यदादित्यमभिसंविशन्त्यमावास्या चैव तत् पौर्णमासी च ९ १०९१

(१६) सिनीवाली ।

॥ ३५२ ॥ (ऋ० १।३।६-७) ×

(१०९२-९२) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।

जुषस्व हव्यमाहुतं गृजां देवि दिदिडिठ नः ६

या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुष्ण्मा बहुस्रवरी ।

तस्यै विप्रत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन ७ १०९३

॥ ३५३ ॥ (अथर्व० ७।४६।३)

(१०९४) अथर्व । त्रिष्टुप् ।

या विप्रत्नीन्द्रमसि प्रतीचीं सहस्रस्तुकाभियन्ती देवी ।

विष्णोः पत्नि तुभ्यं राता हवीषि पतिं देवि राधसे चोदयस्व ३ १०९४

॥ ३५४ ॥ [१०९५] (वा० य० ११।५५) *

सःसृष्टां वसुमी रुद्रैर्धिरैः कर्मण्यां मृदम् ।

हस्ताभ्यां मूर्ध्नी कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम् ५५ १०९५

॥ ३५५ ॥ (अथर्व० ९।४।१४)

(१०९६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गुदा आसन्तिसिनीवाल्याः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन् ।

उत्थातुरब्रुवन् पद ऋषभं यदकल्पयन् १४ १०९६

सिनीवाली-सहचारी-देवगणः ।

(१) गुंगू-सिनीवाली-राका-सरस्वतीन्द्राणीवरुणानीः ।

॥ ३५६ ॥ (ऋ० २।३२।३)

(१०९७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूया सिनीवाली या राका या सरस्वती । इन्द्राणीमह ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ३ १०९७

(२) बृहस्पतिः, सिनीवाली, अनुमतिः ।

॥ ३५७ ॥ (अथर्व० २।२६।२)

(१०९८) सविता । त्रिष्टुप् ।

इमं गोष्ठं पशवः सं संवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन् ।

सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ

२ १०९८

(३) सिनीवाली-सरस्वत्याश्विनः ।

॥ ३५८ ॥ (अथर्व० ५।२५।३) x

(१०९९) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३ १०९९

(४) प्रजापतिः, अनुमतिः, सिनीवाली ।

॥ ३५९ ॥ (अथर्व० ६।११।३)

(११००) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवालय्चीकल्पत् । स्रैष्यमन्यत्र दधत् पुमांससु दधद्विह ३ ११००

(५) विष्णुः, सरस्वती, सिनीवाली, भगः ।

॥ ३६० ॥ (अथर्व० १४।१।१५, २१)

(११०१-११०२) सूर्या सावित्री । १५ भुरिक्, २१ अनुष्टुप् ।

प्रति तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति ।

सिनीवाल्लि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत्

१५

शर्म वमैतदा हरास्यै नार्यो उपस्तरैः । सिनीवाल्लि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् २१ ११०२

(६) सरस्वती, सिनीवाली ।

॥ ३६१ ॥ (अथर्व० १९।३।१०)

(११०३) सविता । अनुष्टुप् ।

आ मे धनं सरस्वती पर्यस्फातिं च धान्यम् । सिनीवालयुपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः १० ११०३

(१७) कुहूः ।

॥ ३६२ ॥ (अथर्व० ७।४७।१-२)

(११०४-११०५) अथर्वा । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

कुहूं देवीं सुकृतं विन्नानापसमसिन् यज्ञे सुहवां जोहवीमि ।
 सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद् ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् १
 कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषो जुषेत ।
 शृणोतु यज्ञमृशती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु २ ११०५

(१८) नक्षत्राणि ।

॥ ३६३ ॥ [११०६-१३] (वा० य० १४।१९)

नक्षत्राणि छन्दः

१९ ११०६

॥ ३६४ ॥ (वा० य० १८।१८, ४०)

नक्षत्राणि च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

१८

तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुर्यो नाम । ताम्यः स्वाहा

४० ११०८

॥ ३६५ ॥ (वा० य० २१।२८) X

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा

२८ ११०९

॥ ३६६ ॥ (वा० य० २३।४३)

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।

सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया

४३ १११०

॥ ३६७ ॥ (वा० य० २५।९)

नक्षत्राणि रूपेण

९ ११११

॥ ३६८ ॥ (वा० य० ३०।१०, २१)

प्रज्ञानाय नक्षत्रदुर्गम् ॥ १० ॥ नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्

२१ १११३

॥ ३६९ ॥ (अथर्व० २।२।४)

(१११४) मातृनामा । त्रिपाद्विराणनाम गायत्री ।

अत्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये या विश्वावसुं गन्धर्वं सचध्वे ।

ताम्यो वो देवीर्नम इत् कृणोमि

४ १११६

॥ ३७० ॥ (अथर्व० ३।७।७)

(१११५) भृग्वक्त्रिराः । अनुष्टुप् ।

अपवासे नक्षत्राणामपवास उपसामुत । अपासत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु ७ १११५

X वा० य० २२, २९, ३९, २ ।

॥ ३७१ ॥ (अथर्व० ६।१२८।१,४)

(१११६-१७) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

शक्रधूमं नक्षत्राणि यद् राजानमकुर्वत । भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति १
यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा । तस्मै ते नक्षत्रराज शक्रधूम सदा नमः ४ १११७

॥ ३७२ ॥ (अथर्व० ९।७।१५)

(१११८-१९) ब्रह्मा । साम्नी बृहती ।

विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम्

१५ १११८

॥ ३७३ ॥ (अथर्व० १३।६।२८) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह

२८ १११९

॥ ३७४ ॥ (अथर्व० १०।२।२२-२३)

(११२०-२१) नारायणः । अनुष्टुप् ।

केन देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः । केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत् क्षत्रमुच्यते २२ ११२०
ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः ।

ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत् क्षत्रमुच्यते

२३ ११२१

॥ ३७५ ॥ (अथर्व० ११।६।१०)

(११२२) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वहंसः

१० ११२२

॥ ३७६ ॥ (अथर्व० १५।१७।४)

(११२३) अथर्वा । साम्युष्णिक् ।

तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य चतुर्थो व्यानस्तानि नक्षत्राणि

४ ११२३

॥ ३७७ ॥ (अथर्व० १९।७।१-५)

(११२४-२४) गार्ग्यः । त्रिष्टुप्, ४ मुरिक् ।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि ध्रुवने ज्वानि ।

तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः संपर्यामि नाकम्

१

सुहवमग्रे कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मुगाशिरः शमार्द्रा ।

पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे

२ ११२५

पुष्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु ।

राघे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्

३ ११२६

अन्नं पूर्वीं रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु ।
 अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ४
 आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्रुया प्रोष्ठपदा सुशर्म ।
 आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयि भरण्य आ वहन्तु ५ १११८

॥ ३७८ ॥ (अथर्व० १९।८।१-५,७) त्रिष्टुप्, १ विराड् जगती ।

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु ।
 प्रकल्पयन् चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु १
 अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे ।
 योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु २ १११०
 स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।
 सुहवमग्रे स्वस्त्यमर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ३
 अनुहवं परिहवं परिवादं परिश्वम् । सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान् संवितः सुव ४
 अपपापं परिश्वं पुण्यं भक्षीमहि श्वम् । शिवा ते पाप नासिकां पुण्यं गच्छाभि मेहताम् ५
 स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु ७ १११४

नक्षत्राणि-सहचारी-देवगणः ।

(१) द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः ।

॥ ३७९ ॥ (अथर्व० ६।१०।३)

(११३५) शन्तातिः । साम्नी बृहती ।

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायार्धिपतये स्वाहा ३ ११३५

(२) सूर्यः, चन्द्रः, नक्षत्राणि ।

- ॥ ३८० ॥ (अथर्व० १५।६।५ - ६)

(११३६-३७) अथर्वा । ५ साम्नी त्रिष्टुप्, ६ निचृद्बृहती ।

तमुतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचिन् ५
 ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणां च
 प्रियं धाम भवति य एवं वेद ६ ११३७

अदितेः, आदित्यानां च गुणबोधक-पदानि ।

(१) अदितिः ।

अजरन्ती वा. य. २१,५; १२
अदितिः (सर्वत्र)
अनागाः वा. य. २१,७; १४
अनेहाः वा. य. २१,६; १३
अन्तरिक्षम् १,८९,१०; १
अरिष्टभर्त्ता ८,१८,४; २
अस्रजन्ता वा. य. २१,६-७; १३-१४
उपस्थे यस्याः उरु अन्तरिक्षम् अ. ७,६,४; १६
उरुव्रजः ८,६७,१२; ८
उरुची वा. य. २१,५; १२
ऋतस्य पत्नी वा. य. २१,५; १२
ऋतावरी ८,२५,३; ३४२
कृण्वाना स्योनम् वा. य. २९,४; १५
जनाः पञ्च १,८९,१०; १
जनित्वम् १,८९,१०; १
जातम् १,८९,१०; १
जुषाणा आ वा. य. २९,४; १५
तुविक्षत्रा वा. य. २१,५; १२
देवी ८,१८,४; २ । ६७,१०; ६
दैवी नौः वा. य. २१,६; १३
द्यौः १,८९,१०; १ । वा. य. २१,६; १३
नौः दैवी वा. य. २१,६; १३
पञ्चजनाः १,८९,१०; १
पत्नी ऋतस्य वा. य. २१,५; १२

पिता १,८९,१०; १
पुत्रः १,८९,१०; १
पुरुषिषा ८,१८,४; २
पृथिवी वा. य. २१,६; १३
मतिः ८,१८,७; ५
मही वा. य. ११,५६; ९ । २१,५; १२ । अ. ७,६,४; १६ । ऋ. ८,२५,३; ३४९
माता १,८९,१०; १ । अ. ७,६,४; १६ । ऋ. ८,२५,३; ३४९
माता मित्रस्य अर्यम्णः वरुणस्य च ८,४७,९; ८०
माता सुव्रतानाम् वा. य. २१,५; १२
राजपुत्रा २,२७,७; २७
विश्वे देवाः १,८९,१०; १
(विश्वात्मत्वं आदित्याः) १,८९,१०; १
शतारित्रा वा. य. २१,७; १४
सजोषाः वा. य. २९,४; १५
सुत्रामा वा. य. २१,६; १३
सु-नौः वा. य. २१,७; १४
सु-प्रणीतिः वा. य. २१,५-६; १२-१३
सुमृलीका ८,६७,१०; ६
सुव्रतानां माता वा. य. २१,५; १२
सुशर्मा वा. य. २१,५-६; १२-१३
स्योनं कृण्वाना वा. य. २९,४; १५
स्तरित्रा वा. य. २१,६; १३

(२) आदित्याः ।

अभिजिह्वाः ७,६६,१०; ५०
अदब्ध्यासः-ब्ध्याः २,२७,९; २९ । ८,६७,१३; ९४ ।
८,१०१,६; १०३
अदितेः पुत्रासः ८,१८,५; ३ । १०,१८५,३; १०६
अद्भुतैनसः ८,६७,७; ९१
अद्भुतः ८,१९,३४; ७० । ६७,१३; ९४

अनवद्याः २,२७,२; २२
अनिमिषाः २,२७,९; २९
अनृतद्विषः ७,६६,१३; ५३
अनेहसः ८,१८,५; ३
अमृताः ८,१०१,६; १०३
अरिष्टाः २,२७,२; २२

१३ दै० [अदिति]

अवृजिनाः २, २७, २; २२
 अस्त्रप्रजः २, २७, ९; २९
 आदित्याः-त्यासः वा बहुशः सर्वत्र ।
 आशवः x ८, ४७, ६; ७७
 उरवः २, २७, ३; २३
 उरुचक्रयः ८, १८, ५; ३
 उरुशंसः २, २७, २, २९
 ऊतयः अनेहसः (येषाम्) ८, ४७, १-१३; ७२, ८४
 ऊतयः सुऊतयः (येषाम्) ८, ४७, १-१३; ७२-८४
 ऋणानि चयमानाः २, २७, ४; २४
 ऋतजाताः ७, ६६, १३; ५३
 ऋतनिभ्यः २, २७, १२; ३२
 ऋत (ता) वानः २, २७, ४; २४ । ७, ६६, १३; ५३
 ऋत (ता) वृषः ७, ६६, १०, १३; ५०, ५३
 ऋतस्य रथ्यः ७, ६६, १२; ५२
 क्षत्रियाः ८, ६७, १; ८५
 क्षितीनां मूर्धानः ८, ६७, १३; ९४
 गम्भीराः २, २७, ३; २३
 गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ७, ५१, २; ३९ । २, २७, ४; २४
 चयमानाः ऋणानि २, २७, ४; २४
 चर्षणीसहः ८, १९, ३५; ७१
 जगत् स्थाः धारयन्तः २, २७, ४; २४
 जुष्टवानाः ७, ५१, ३; ४०
 तिस्रः भूमीः धारयन् २, २७, ८; २८
 त्रीणि व्रतानि एषाम् २, २७, ८; २८
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त २, २७, ९; २९
 त्रीन् धून् धारयन् २, २७, ८; २८
 त्रीणि विदथानि ये येसुः ७, ६६, १०; ५०
 दक्षकतवः (देवाः विशेष्ण्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 दिप्सन्तः २, २७, ३; २३
 दीर्घ (र्घा) धियः २, २७, ४; २४
 देवाः (बहुषु स्थलेषु वर्तते ।)
 देवत्राः वसवः ७, ५२, १; ४१
 धारपूताः २, २७, २, ९; २२, २९
 धारयन् तिस्रः भूमीः त्रीन् धून् २, २७, ८; २८
 धारयन्त त्री रोचना दिव्या २, २७, ९; २९
 धारयन्तः जगत् स्थाः (च) २, २७, ४; २४
 नित्याः २, २७, ११; ३१

पन्थाः एषां अदब्धाः, अनवर्णिः, पायवः, सुगेवृषः ८, १८, २; ५५
 पाकत्राः ८, १८, १५; ६२
 पुत्रासः अदितेः ८, १८, ५; २
 पुष्टयः २, २७, ११; ३१
 प्रचेतसः ८, ४७, ४; ७५ । ६७, १७; २८
 बहवः ७, ६६, १०, ५०
 भुवनस्य गोपाः २, २७, ४; २४ । ७, ५१, २; ३९
 भूमीः तिस्रः धारयन् २, २७, ८; २८
 भूर्यक्षाः २, २७, ३; २३
 मनोजाताः (देवाः विशेष्ण्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 मनोयुजः (देवाः विशेष्ण्यम्) वा. य. ४, ११; १६६
 महान्तः ८, ४७, १; ७२
 मूर्धानः क्षितीनाम् ८, ६७, १३; ९४
 यजत्राः २, २७, १६; ३६
 रक्षमाणाः २, २७, ४; २४
 रथ्यः ऋतस्य ७, ६६, १२; ५२
 राजानः २, २७, १, ३, ११; २१, २३, ३१ । ७, ६६, ११; ५१ ।
 ८, १९, ३५; ७१
 राजानः व्रतस्य ७, ६६, ६; ४६
 रिशादसः (अर्यमा) ७, ६६, ७; ४७
 रोचना त्रीणि धारयन्त २, २७, ९; २९
 वरुथ, तेषां चित्रं, उक्थ्यम् ८, ६७, ३; ८७
 वसवः ७, ५२, १; ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४
 विदथानि त्रीणि ये येसुः ७, ६६, १०; ५०
 विश्ववेदसः ८, १८, ११; ५८ । ४७, ३; ७४
 व्रतानि त्रीणि विदथे एषाम् २, २७, ८; २८
 शुचयः २, २७, २, ९; २२, २९
 सुदानवः ७, ६६, ५; ४५ । ८, ५८, १२; ५९ । १९, ३४;
 ७० । ६७, १६; ९७
 सुमहसः ८, १८, १८; ६५
 सुमृतीकाः ८, ६७, १; ६५
 सुशर्माणः ८, १८, ४; २
 सूरचक्षसः ७, ६६, १०; ५०
 सुरयः ८, १८, ४; २
 स्थाः जगत् धारयन्तः २, २७, ४; २४
 खयशसः ८, ६७, १३; ९४
 खराजः ७, ६६, ६; ४६

x अत्र 'आशवः' इति पदद्वयमस्ति, किन्तु सायनभाष्ये 'आशवः' इति एकमेव पदम् । 'श्रीव्रतमनाः' इत्यर्थेन गृहीतं वर्तते ।

हवनश्रुतः ८, ६७, ५; ८२

हिरण्ययाः २, २७, ९; २३

आदित्यः ।

अग्ने समवर्तत विश्वकर्मणः रसात् वा. य. ३१, १७; ११७

अदब्धः अ. १७, १, १२; १४५

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७, १, १२; १४५

अङ्गयः सम्भृतः वा. य. ३१, १७; ११७

अनभीष्टः १, १५२, ५; २२६

अनश्वः १, १५२, ५; २२६

अरुणः वा. य. १७, ६०; ११५

अरुषः वा. य. २३, ५; ११६

अर्वा १, १५२, ५; २२६

अश्मा वा. य. १७, ६०; ११५

अस्तं इतः अ. १७, १, २३; १५६

अस्तं एष्यन् अ. १७, १, २३; १५६

अस्तं यन् अ. १७, १, २३; १५६

आदित्यः अ. १७, १, २४-२५; १५७-१५८। अ. ४, ३९-

५-६; १७८-१७९। अ. ५। २१, १०; १८०

आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७, १, १०; १४३

इन्द्रः + अ. १७, १, १-५, २-१४, १८; १३४-३८, १४२-

४७, १५१

ईज्यः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

उक्षा समुद्रः वा. य. १७, ६०; ११५

उद् आयन् अ. १७, १, २२; १५५

उद् इतः अ. १७, १, २२; १५५

उद् यन् अ. १७, १, २२; १५५

उपनिष्यमानः न १, १५२, ४; २२५

ऊर्ध्वसानुः १, १५२, ५; २२६

ऋषिभिः सहस्रकृतः वा. य. ३३, ८३; १२०

कनिकदत् १, १५२, ५; २२५

कनीनां जारः १, १५२, ४; २२५

गर्मः (मित्रावरुणयोः) १, १५२, ३; २२४

गृणानः दिवः अ. १७, १, १०; १४३

गोजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

चरन् वा. य. २३, ५; ११६

जातः १, १५२, ५; २२६

जारः कनीनाम् १, १५२, ४; २२५

तनूः ते, अप्सु, पृथिव्यां, अन्तः अमौ,

पवमाने स्वर्दिदि अ. १७, १, १३; १४६

तन्वा अन्तरिक्षं व्यापिष अ. १७, १, १३; १४६

त्रिदिवं आरोहन् अ. १७, १, १०; १४३

दिवः गृणानः अ. १७, १, १०; १४३

दिवः मध्ये निहितः वा. य. १७, ६०; ११५

द्रप्सः वा. य. २३, ५; ११६

द्यौः धेनुः तस्याः वत्सः अ. ४, ३९, ६; १७९

नभसीं विभासि शोचिषा अ. १७, १, १६; १४९

निहितः दिवः मध्ये वा. य. १७, ६०; ११५

पुरु (रु) वसुः वा. य. ३३, ८१; ११८

पुरुहूतः अ. १७, १, ११; १४४

पृथिव्यैः संभृतः वा. य. ३१, १७; ११७

पृश्निः वा. य. १७, ६०; ११५

प्रजापतिः अ. १७, १, १८; १५१

प्रयन् १, १५२, ४; २२५

प्रियं घाम मित्रस्य वरुणस्य १, १५२, ४; २२५

प्रियघामा अ. १७, १, १०; १४३

बाधमानः सुदिने अ. १७, १, १७; १५०

ब्रध्नः वा. य. २३, ५; ११६

ब्रह्म वा. य. २३, ३; १२२

ब्रह्मणा वावृधानः अदब्धेन अ. १७, १, १२; १४५

भ्राजः अ. १७, १, २०; १५३

महेन्द्रः अ. १७, १, १८; १५१

रसात् सम्भृतः वा. य. ३१, १७; ११७

शचिः अ. १७, १, २१; १५४

रोचः अ. १७, १, २१; १५४

रोचन्ते रोचना दिवि वा. य. २३, ५; ११६

वसानः अनवपृग्णा वितता १, १५२, ४; २२५

वावृधानः ब्रह्मणा अदब्धेन १७, १, १२; १४५

विद्वान् अ. २७, १, १६; १४९

विभासि नभसीं शोचिषा अ. १७, १, १६; १४९

विमानः वा. य. १७, ५९; ११४

विराट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६

विवस्वान् वा. य. ८, ५; १११

विश्वजित् अ. १७, १, ११; १४४

विषासहिः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

+ अत्र अर्धव० १७, १, १-५, ९ १४, १८; १३४-३८, १४२-४७, १५१ मन्त्रान्तर्गतानि विद्यमानानि पदानि इन्द्ररूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य ।

विष्णुः + अ. १७, १, ६-१९; १३९-१५२
 शुक्रः अ. १७, १, २०; १५३
 शोचिषा नभसी विभासि अ. १७, १, १६; १४९
 सन्धनाजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 समुद्रः वा. य. १७, ६०; ११५
 समुद्र इव पप्रथे वा. य. ३३, ८३; १२०
 सम्राट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६
 सर्ववित् अ. १७, १, ११; १४४

सहमानः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३, ८३; १२०
 सदीयान् अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सहोजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सासहानः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८
 सुपर्णः वा. य. १७, ६०; ११५
 खराट् अ. १७, १, २२-२३; १५५-१५६
 खर्जित् अ. १७, १, १-५; १३४-१३८

आदितेः, आदित्यानां च उपमासूची ।

सुतीर्थ अर्धतः यथा ८, ४७, ११; ८९ तथा नः सुगमं अनु नेषथ ।
 अश्वी इव २, २७, १६; ३६ तान् रथेन अति येषम् ।
 यथा दिवि आदित्याय अ. ४, ३९, ५; १७८ एवा मद्यं सं नमः ।
 कूलात् इव स्पशः अधि ८, ४७ ११; ८२ अव हि ख्यत ।
 माता पुत्रं यथा उपस्थे वा. य. ११, ५७; १० उखा अग्नि ।
 बन्धात् बद्धं इव ८, ६७, १८; ९९ यत् बन्धात् नः मुमोचति ।
 स्तेनं बद्धं इव ८, ६७, १४; ९५ वृकाणां आस्नात् नः मुमोचत ।
 यथा त्वं भ्राजता भ्राजः अ. १७, १, २०; १५३ एवाहं... भ्राज्यासं ।

युध्यन्त इव वर्मसु ८, ४७, ८; ७९ युष्मे देवाः अपि स्मसि ।
 यथा रथ्यः ८, ४७, ५, ७६ तथा नः दुर्गाणि अघा परि वृणजन् ।
 यथा त्वं रुच्या रोचः अ. १७, १, २१; १५४ एवाहं पशुभिः रुचिषी ।
 वयो यथा पक्षा उपरि ८, ४७, २; ७३ अस्मे शर्म विमोचत ।
 वयः न पक्षाः ८, ४७, ३; ७४ तन् शर्म अस्मे अधि वि यन्तन ।
 श्वभ्रा इव २, २७, ५; २५ युष्माकं प्रणीतौ दुरितानि परि वृज्याम् ।
 समुद्र इव वा. य. ३३, ८३; १२० पप्रथे ।

आदित्य-मन्त्रान्तर्गता अन्यदेवताः ।

अंशः २, २७, १; २१
 अग्निः ७, ५१, ३; ४० । अ. १६, ४, ४, ७; १३०, १३३ ।
 १७, १, ३०; १६३ । वा. य. ४, ११, १६६
 आदितिः २, २७, ७, १४; १७, ३४ । ७, ५१, २, ३९ ।
 ६६, ६; ४६ । ८, ६७, १४; ९५
 अर्यमा २, २७, १-२, ५-८; २१-२२, २५-२८ । ७, ५१, २;
 ३९ । ६६, ४, ७, ११-१२; ४४, ४७, ५१-५२ । ८, १८,
 ३, २१; ५६, ६८ । १९, ३५; ७१ । ४७, ९; ८० । ६७,
 २, ४; ८६, ८८ । १०, १८५, १; १०४
 अश्विना ७, ५१, ३; ४० । ८, १८, १०; ६०
 आपः अथ. १६, ४, ६; १३२
 आदित्यः वा. य. ८, ३, ५; १०९, १११ । १३, ३, ५; ११२-११३ ।
 १७, ५९-६०; ११४-११५ । २३, ५; ११६ । ३१, १७;
 ११७ । ३३, ८१, ८३; ११८, १२० । अथ. १७, १, १७; १५०
 इन्द्रः २, २७, १४; ३४ । ७, ५१, ३; ४० । ८, १२, २०;
 ६७ । ४७, ५; ७६ । ६७, ८; ९२ । वा. य. ८, २; १०८ ।
 ३३, ८२; ११९ । अथ. १७, १, १-३०; १३४-१३८ ।
 उषसः अथ. १६, ४, ६; १३२ । १७, १, ३०; १६३
 ऋभवः ७, ५१, ३; ४०

दक्षः २, २७, १; २१ । (वरुणविशेषणं वा ।)
 यावापृथिवी २, २७, १५; ३५ । ७, ५२, १; ४१ । ८, १८,
 १६; ६३
 धीः दैवी वा. य. ४, ११; १६६
 पर्वताः अथ. १७, १, ३०; १६३
 पिता ७, ५३, ३; ४३ । [वरुणः प्रजापतिर्वा]
 पितरः अथ. २, १२, ४; १६७
 बृहस्पतिः अथ. १६, ३, ५; १२५
 भगः २, २७, १; २१ । ७, ६६, ४; ४४
 मरुतः ७, ५१, ३; ४० । ८, १८, २१; ६८
 मातरिश्वा अथ. १६, ३, ४; १२४
 मित्रः २, २७, १-२, ६-८, १४; २१-२२, २६-२८, ३४ ।
 ७, ५१, १; ३९ । ५२, २; ४२ । ६६, ४, ७, ९, ११-१२;
 ४४, ४७, ४९, ५१-५२ । ८, १८, ३, २०, २९; ५६, ६७-६८ ।
 १९, ३५; ७१ । ४७, १, ९; ७२, ८० । ६७, २, ४; ८६,
 ८८ । १०, १८१, १; १०४
 मित्रावरुणौ २, २७, ५; २५ । ७, ५२, १; ४१ । अथ. १६,
 ४, ७; १३२
 यमः अथ. १६, ४, ४; १३०

+ अस्यां सूच्यां अथर्वं १७, १, ६-१९; १३९-५२ मन्त्रान्तर्गतानि पदानि विष्वात्मकस्य आदित्यस्य सन्ति ।

रक्षाः अथ. २०, १३५, ९; १८३
वरुणः २, २७, १-२, ६-८, १०, १४, १७; २१ २२, २६-
२८, ३०, ३४, ३७ । ७, ५१, २; ३९ । ५२, २; ४२ ।
७, ६६, ४, ९, ११-१२; ४७, ४९, ५१-५२ । ८, १८, ३,
२०-२१; ५६, ६७-६८ । १९, ३५, ७१ । ४७, १, २;
७२, ८० । ६७, २, ४; ८६, ८८ । १०, १८५, १; १४४ ।
अथ. १९, १८, ४; १६४
वसवः ७, ५२, १; ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४ ।
[देवतान्तरं विशेषणं वा]

वायुः अथ. १६, ४, ४; १३०
विश्वे देवाः ७, ५१, २; ४० । ५२, ३; ४३
विष्णुः वा. य. ८, १; १०७ । अथ. १७, १, ७-१९, २४;
१४०-१५२, १५७
सरस्वती अथ. १६, ४, ४; १३०
सविता ७, ६६, ४; ४४ । ८, १८, ३, ५६
सूर्यः अथ. १६, ४, ४; १३० । १७, १, ६-८, ३०;
१३२-१४१, १६३

(३) मित्रः ।

अनागाः ७, ६६, ४; ४४
अभिष्टिशवाः ३, ५९, ८; १९२
आदित्यः ३, ५२, २, ५; १८६, १८९
उपसथः नमसा ३, ५९, ५; १८९
ऋतावान् ७, ६२, ३; ५६०
गृणते सुशेवः ३, ५९, ५; १८९
वर्षणीष्ठत् ३, ५९, ६; १९०
चन्द्रः ७, ६२, ३; ५६०
देवः ३, ५९, ६; १९०
नमसा उपसथः ३, ५२, ५; १८९
नमस्यः ३, ५९, ४; १८८
पन्यतमः ३, ५९, ५; १८९
मित्रः १, १५१, १; १८४
ब्रुवाणः ३, ५९, १; १८५
महान् ३, ५९, ५; १८९
यज्ञियः १, १५१, १; १८४ । ३, ५९, ४, १८८
यातयज्जनः ३, ५९, ५; १८९
राजा ३, ५९, ४; १८८
विश्वपतिः ८, २५, १६; ३५२
वेधा ३, ५२, ४; १८८
सप्रथाः ३, ५९, ७, १९१
सुक्षत्रः ३, ५९, ४; १८८
सुशेवः ३, ५९, ४-५; १८८-८९

मित्रावरुणौ ।

अक्रविहस्ता ५, ६२, ६; २४४
अक्ष्णश्चित् गात्रवित्तरा ८, २५, ९; ३५५
अदग्धा ७, ६०, ५; ३१३

अदाम्या ७, ६६, १७; ३४४
अदितिः युवोः माता १०, १३२, ६; ३७६
अदितेः पुत्रा ७, ६०, ५; ३१३
अङ्गुतक्रत् ५, ७०, २; २८९
अद्भुता ५, ६६, ४; २७१
अद्भुता ५, ६८, ४; २८२ । ७, ६६, १८, ३४५
अद्भुताणा ५, ७०, २; २८९ । सा. २८६; ३९७
अनभिद्भुता २, ४१, ५; २३४
अनृतस्य सेतू ७, ६५, ३; ३३८
अपसं दधाते १, २, २, १९८
अप्नराजौ १०, १३२, ७, ३७७
अमूरा ७, ६१, ५; ३२५
अर्चनानसं बिभ्रतौ ५, ६४, ७; २६१
अर्या ७, ६५, २; ३३७
अर्वाञ्चा १, १३७, ३; २१२
अवोः (अवतोः) ६, ६७, ११; ३०८
असमा ६, ६७, १; २९८
असुरा १, १५१, ४; २१६ । ८, २५, ४; ३५०
असुरा देवानाम् ७, ६५, २; ३३७
अस्तुतः वां कः ? ५, ६७, ५; २७८
अस्मन्ना १, १३७, १, ३; २१०, २१२
अस्मयू १, १५१, ७; २१९
अहणीयमाना ५, ६२, ६; २४४
आतुजौ ७, ६६, १८, ३४५
आदित्या १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६७, १;
२७४ । ६९, ४; २८७ । ७, ६०, ४; ३१२
आवाधे कर्तुं बृहन्तम् १, २, ८; १२७

इन्द्रा वा. य. १०, १६; ३७३
 इषस्पती ५, ६८, ५; २८३
 ईयचक्षसा ५, ६६, ६; २७३
 ईशाना ५, ७१, २; २९३
 उमा-मः ५, ६३, ३; २५० । १, १५२, २; २२३
 उपस्तुता यज्ञेयज्ञे १, १३३, १; २०३
 उरक्षया १, २, ९; १९८
 उरुचक्रयः ५, ६७, ४; २७७
 उरुचक्षसा ८, १०१, २; ३६९
 उरुशंसा ३, ६२, १७; २३७
 ऋता ६, ६७, ४; ३०१
 ऋतस्य गोपा ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२
 ऋतस्य ज्योतिषस्पती १, २३, ५; २००
 ऋतपेशस् (वरुणः) ५, ६६, १; २६८
 ऋत (ता) वाना १, १३६, ४; २०६ । १५१, ४-८; २१६,
 २२० । ५, ६५, २; २६३ । ६७, ४; २७७ । ८, २५, १, ४,
 ७-८; ३४७, ३५०, ३५३-५४
 ऋत (ता) वृषा १, २, ८; १९७ । २३, ५; २०० । २, ४१, ४;
 २३३ । ३, ६२, १८; २३८ । ५, ६५, २; २६३ । ७, ६६, १९;
 ३४६
 ऋतस्पृशाः ५, ६७, ४; २७७
 ऋतस्पृशा १, २, ८; १९७
 कवी १, २, ९; १९८
 काव्या ५, ६६, ४; २७१
 क्रतुं बृहन्तं आशाथे १, २, ८; १९७
 क्षत्रिया ७, ६४, २; ३३२ । ८, २५, ८; ३५४
 क्षयन्ता दिवि पृथिव्यां रजसः ७, ६४, १; ३३१
 गानुवित्तरा अक्षगश्चित् ८, २५, ९; ३५५
 गृणाना जमदग्निना ३, ६२, १८; २३८
 गोपा ऋतस्य ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२
 गोपा विश्वस्य ८, २५, १; ३४७
 घृतयोनी ५, ६८, २; २८०
 घृतस्नु १, १५३, १; २२९
 घृताचीं धियं साधन्ता १, २, ७; १९६
 घृताज्ञौ ६, ६७, ८; ३०५
 घृतासुती १, १३६, १; २०३ । २, ४१, ५; २३५
 घोरा ६, ६७, ४; ३०१
 चर्षणीनां धर्तारा ५, ६७, २; २७५
 चिकित्वांसः ७, ६०, ७; ३१५

चिकेतति नः १, ४३, ३; २०२
 चितारः अनृतस्य भूरः ७, ६०, ५; ३१३
 जगन्वांसा परि बाह्वोः ५, ६६, १; २५५
 जज्ञाना १, २३, ४; २९९
 जनेजने ऋतवाना ५, ६५, २; २६३
 जागृवांसः दिवेदिवे १, १३६, ३; २०५
 जायमाना ६, ६७, ४; ३०१
 जीरदान् ५, ६२, ३; २४१ । ७, ६४, २; ३३२
 जुषाणा ७, ६६, १९; ३४६
 ज्येष्ठतमा विश्वेषां सताम् ६, ६७, १; २९८
 ज्योतिषस्पती ऋतस्य १, २३, ५; २००
 जयसानौ ५, ६६, ५; २७२
 तनया ८, २५, २; ३४८
 तना ८, २५, २; ३४८
 तनूपा ७, ६६, ३; ३४३
 तुरागः ७, ६०, ८; ३१६
 तुविजाता १, २, ९; १९८ । ७, ६६, १; ३४१
 दक्षं दधाते १, २, ९; १९८
 दक्षपितरा ७, ६६, २; ३४२
 दक्षस्य सूनू ८, २५, ५; ३५१
 दधाते दक्षं अपसम् १, २, ९; १९८
 दर्शतः ५, ६५, १; २६२
 दाजुनस्पती १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३
 दिवस्पती ५, ६३, ३; २५०
 दिविस्पृशा १, १३७, १; २१०
 दिव्या ५, ६९, ४; २८७
 दीर्घश्रुत् (वरुणः) ८, २५, १७; २६०
 दीर्घश्रुत्तमा ५, ६५, २; २६३ । ८, १०१, २; ३६९
 दुरत्येत् ७, ६५, ३; ३३८
 दृढभासः ७, ६०, ६; ३१४
 देवः ७, ६४, ३; ३३३
 देवा-वी १, १५२, ७; २२८ । ५, ६६, १; २६८ । ६७, १;
 २७४ । ६८, २, ४; २८०, २८२ । ७, ६०, १२; ३२० ।
 ६१, १, ७; ३२१, ३२७ । ६६, २; ३४२ । ८, २५, १, ४;
 ३४७, ३५०
 द्युमत् ७, ६६, १७; ३४४
 द्वा ६, ६७, १; २९८
 धर्तारा चर्षणीनाम् ५, ६७, २; २७५
 धारयक्षिती १०, १३२, २; ३७२

धारयथः श्री रोचना श्रीन् वृन् श्रीणि रजसि ५, ६२, १; २८४
 धर्तारो रजसः रोचनस्य पार्थिवस्य ५, ६९, ४; २८७
 धृतदक्षा ५, ६२, ५; २४३
 धृतव्रता ८, २५, १, ८; ३४८, ३५४ । १, १५, ६; ९१२
 ध्रुवक्षेमा ५, ७२, २; २९६
 नपाता महः शवसः ८, २५, ५; ३५१
 नमसा ह्रयमाना ६, ६७, ३; ३००
 नमसे हिता ८, २५, ७; ३५३
 नमस्वन्ता ५, ६२, ५; २४३
 नमोवृधा ३, ६२, १७; २३७
 नरा १, १५१, ९; २२१ । ५, ६४, ७; २६१ । ८, १०१, २;
 ३६९
 निचिरा १, १३६, १; २०३; ८ । २५, ९; २५५
 निमिषन्ता ८, २५, २; ३५५
 पती दिवः पृथिव्याः ५, ६३, ३; २५०
 परस्पा सुकृते ५, ६२, ६; २४४
 पीवसा १, १५२, १; २२२
 पूतदक्ष १, २, ७; १९६ । ७, ६५, १; ३३६
 पूतदक्षसा १, २३, ४; १९९ । ५, ६६, ४; २७२ । ८, २५, १;
 ३४७
 पूतबन्धू ६, ६७, ४; ३०१
 पूर्वा ५, ६५, ३; २६४
 पृथिव्याः पती ५, ६३, ३; २५०
 प्रचेतसा ५, ७१, २; २९३
 प्रथमा १, १५१, ८; २२०
 प्रमहसा ७, ६६, २; ३४२ । ८, २५, ३; ३४२
 प्रयाः (वरुणः) ५, ६६, १; २६८
 प्रशस्ता देवेषु ५, ६८, २; २८०
 प्रशास्तारौ वा. य. १६, २१; ३८०
 प्राविता १, २३, ६; २०१
 प्रियतमः [मित्रः] ७, ६२, ४; ३२८
 प्रिया ६, ६७, २-३; २९२-३००
 बर्हणा ५, ७१, १; २२२
 विभ्रतौ अर्चनानसम् ५, ६४, ७; २६१
 भूरिपाशौ ७, ६५, ३; ३३८
 महान्ता ६, ६७, ४; ३०१ । ८, २५, ४; ३५०
 मघवानः ८, ६०, ११; ३१२
 महिक्षत्रौ ५, ६८, १; २७९

महित्वा ६, ६७, ३; ३००
 महे [वरुणाय] ५, ६६, १; २६८
 माता युवोः अदितिः १०, १३२, ६; ३७६
 मित्रराजाना ५, ६२, ३; २४१
 मित्रावरुणा मित्रः वरुणः च वा (प्रायशः सर्वत्र)
 मोढवान्-ढवांसः १, १३६, ६; २०८ । ८, २५, १४; ३५७
 मृळयन्तो स्वादिष्टम् १, १३६, १; २०३
 यज्ञिया ८, २५, १; ३४७
 यमिष्ठा ६, ६७, १; २९८
 यातयज्जनः-ना १, १३६, ३; २०५ । ५, ७२, २; २९६
 युवाना ७, ६२, ५; ३२९
 रक्षमाणा ७, ६१, ३; ३२३
 रक्षमाणा उर्वाम् ५, ६२, ५; २४३
 रक्षमाणा व्रतं अजुर्यम् ५, ६२, १; २८४
 रथ्या ८, २५, २; ३४८
 राजा (अर्यमा) ७, ६४, १; ३३१
 राजानः ८, १०१, ५; ४०१
 राजाना १, १३६, ३; २०६ । १, १३७, १; २१० । २, ४;
 ६; २३५ । ५, ६२, ६; २४४ । ६५, ३; २६३ । ७, ६४, २, ६
 ३३२, ३३४ । ८, १०१, २; ३६९ । ९, ३६, ६; ४००, २२
 रिशादसा १, २, ७; १९६ । ५, ६४, १; ५५ । ६६, १; २६८
 ५, ६७, २; २७५ । ७१, १; २१२ । वा. य. ३३, ७२; ३८
 रिशादा अथ. २, २८, २; ३८३
 रीति आपा (रीत्यापा) ५, ६८, ५; २८३
 रुद्रा X ५, ७०, २-३; २८९-२९०
 वरुणा ५, ६२, ३; २४१ । ७, ६१, १; ३२१ प्रतियोग्यपेक्ष
 द्विवचनम् ।
 वार्षिष्ठक्षत्रा ८, १०१, २; ३६९
 वाजिना ६, ६७, ४; ३०१
 वा (व) वृधाना अमर्ति क्षत्रियस्य ५, ६९, १; २८४
 विचर्षणी ५, ६३, ३; २५०
 विचेतसा १०, १३२, ६; ३७६
 विपश्चिता ५, ६३, ७; २५४ । अथ. ६, ९७, २; ३९४
 विश्वा ७, ६१, ५; ३२५
 विश्वस्य गोपा ८, २५, १; ३४७
 विश्वजिन्वा ६, ६७, ७; ३०४
 विश्ववेदसः-सा ५, ६७, ३; २७६ । ७, २५, ३; ३४९
 वृषणा १, १५१, २-३; २१४-२१५ । ७, ६०, २-१०; ३१
 ३१८ । ७, ६१, ५; ३२५

वृषभा ५, ६३, ३; २५०
 वृष्टिवावा ५, ६८, ५; २८३
 वृष्ट्याधिपती ५, ६४, ५; ३९१
 शरमासः ७, ६०, ५; ३१३
 शुचित्रता ३, ६२, १७; २३७
 श्रेष्ठवर्चसा ५, ६५, २; २६३
 संविदानौ अथ. २, २८, २; ३८३
 सजोषाः-षसः ७, ६०, ४; ३१२ । ८, २५, १४; ३५७
 सत्पती ५, ६५, २; २६३
 सत्याः ५, ६७, ४; २७७
 सत्यधर्माणा ५, ६३, १; २४८
 सम्राजा १, १३६, १; २०३ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६२, २-३, ५; २४९-५०, २५२ । ६८, २; २८० । ८, २५, ४, ७; ३५०, ३५३
 सर्वताता + ५, ६९, ३; २८६
 सहस्रः महः नपाता ८, २५, ५; ३५१
 साधन्ता घृताचीं धियम् १, २, ७; १९६
 साम्राज्यः (वरुणः) ८, २५, ७; ३५३
 सिन्धुपती ७, ६४, २; ३३२
 सुक्रतुः (वरुणः) ८, २५, २; ३४८

सुक्रतु ३, ६२, १६; २३६ । ६६, १; २६८ । ७, ६१, २, ३२२ । ८, २५, ५, ८; ३५१, ३५४
 सुक्षत्रः (वरुणः) ७, ६४, १; ३३१
 सुचेतुना ५, ६४, २; २५६ । ६५, ३; २६४
 सुजातः-ता ७, ६४, १; ३३१ । ८, २५, ३; ३४८
 सुदक्षा ७, ६६, २; ३४२
 सुदानू-नवः ५, ६२, ९; २४७ । ६, ६७, २; २९२ । ७, ६१, ३; ३२३ । ५, ६७, ४; २७७
 सुनीषासः ५, ६७, ४; २७७
 सुमृत्कीकः १, १३६, ६; २०८
 सुषुत्रा १०, १३२, २; ३७२
 सूतू दक्षस्य ८, २५, ५; ३५१
 सप्रदानू ८, २५, ५; ३५१
 सेतू अनृतस्य ७, ६५, ३; ३३८
 स्तिपा ७, ६६, ३; ३४३
 स्वर्णरः ५, ६४, २; २५५
 स्वर्दंशा ५, ६३, २; २४९
 हिता नमसे ८, २५, ७; ३५३
 हिरण्यरूपा वा. य. १०, १६; ३७५
 ह्यमाना नमसा ६, ६७, ३; ३००

अर्थमादेवताया गुणबोधकपदानि । [मित्रावरुण-सहकारित्वेन]

अदितेः पुत्रः ७, ६०, ५; ३१३
 अनृतस्य चेता (वृ) ७, ६०, ५; ३१३
 अरिः ७, ६४, ३; ३३३
 अर्थः x ७, ६४, ३; ३३३
 ऋतस्पर्श-क् ५, ६७, ४; २७७
 ऋतावान् ५, ६७, ४; २७७
 चेता अनृतस्य ७, ६०, ५; ३१३
 जनेजने सुनीषः ५, ६७, ४; २७७
 वृढभाः ७, ६०, ६; ३१४
 युक्षः १, १३६, ६; २०८

यातयज्जनः १, १३६, ३; २०५
 रिषादाः ७, ६६, ७; ४७
 विश्ववेदाः ५, ६७, ३; २७६
 शरमः ७, ६०, ५; ३१३
 सजोषाः ७, ६०, ४; ३१२
 सत्यः ५, ६७, ४; २७७
 सुजातः ७, ६४, १; ३३१
 सुदानुः ५, ६७, ४; २७७
 सुनीषः जनेजने ५, ६७, ४; २७७

+ सर्वताता ' सर्वतातो यज्ञे ' इति सायनभाष्यम् ।

x ' अरिः अर्थः च ' इति द्वे पदे वर्जयित्वा एतानि सर्वाणि पदानि मित्रावरुणाभ्यां सहिताया अर्थमादेवताया गुणबोधकानि सन्ति ।

निपातभागवरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७, ८१, ६; ६८४
अक्षितः ७, ८१, ६; ६८४
अक्षितं भक्षयन् ७, ८१, ६; ६८४
आदित्यवान् अ. १९, ८, ४; १६४
आप्याययन् अंशुम् अ. ७, ८१, ६; ६८४
ऋतावान् ७, ६२, ३; ५६०
गोपाः भुवनस्य अ. ७, ८१, ६; ६८४
चन्द्रः ७, ६२, ३; ५६०

तुविजातः २, २७, १; २१
दक्षः २, २७, १; २१
पिता ७, ५२, ३; ४३
भक्षयन् अक्षितम् अ. ७, ८१, ६; ६८४
भुवनस्य गोपाः अ. ७, ८१, ६; ६८४
महान् ७, ५२, ३; ४३ । ८, ६७, ४; ८८
यजत्रः ७, ५२, ३; ४३
राजा अ. ५, २१, ११; १८१
रेवान् ८, ४७, ९; ८०

मित्रस्य, मित्रावरुणयोश्च उपमासूची ।

अग्निः न शुक्रः ८, २५, १९; ३६२ सूर्यः समिधानः आहुतः ।
अत्रिवत् ५, ७२, १; २९५ वयं गोभिः आ जुहुमः ।
अपः न नावा ७, ६५, ३; ३३८ ऋतस्य पथा दुरिता तरेम ।
अपसा इव जनान् ६, ६७, ३; ३०० श्रुधीयतः जनान् सं यतथः ।
अश्वा न ६, ६७, ४; ३०१ वाजिना पूतत्बन्धू ऋता ।
अश्वाजनी इव ५, ६२, ७; २४५ स्थूणा अयः वि भ्राजते ।
उपमात् इव ६, ६७, ६; ३०३ दंहेथे योः सानुम् ।
गां न धुरि १, १५१, ४; २१६ आभुवं अपः उप युजाथे ।
तक्त्वाः इव १, १५१, ५; २१७ सूर्यं निम्बुचः उषसः स्वरन्ति ।
तिग्मं न क्षोदः ८, २५, १५; ३५८ प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ।
द्यौः न १०, १३२, ६; ३७६ भूमिः पयसा पुपूतनि ।
घेतुं न वासरीम् १, १३७, ३; २१२ (अन्वयैवः) अंशुं दुहन्ति ।
पदा इव ५, ६७, ३; २७६ व्रता सखिरे ।
बहिः इव यजुषा ५, ६२, ५; २४३ उर्वी रक्षमाणा वर्धते ।

बाहुता न ८, १०१, २; ३६९ दंसना ता रथ्यतः ।
मनसः न प्रयुक्तिम् १, १५१, ८; २२० युवां प्रथमा यज्ञैः अज्जते ।
मित्रं न १, १५१, १; १८४ (मित्रः) अग्निं शिम्या अप्पु जीजनन् ।
मित्रासः न १, १५१, २; २१४ ऋत्विजः प्र दधिरे ।
यूथा इव ७, ६०, ३; ३११ जनिमानि सं चष्टे ।
यूथा इव ८, २५, ७; ३२३ बृहतः अग्निं पश्यतः ।
रश्मा इव ६, ६७, १; २९८ यमिष्ठा जनान् सं यमनुः ।
बाह्वोः व्रजा इव परिजगन्वासा ५, ६४, १; २५५ वः ऋचा हवामहे ।
मानुषं व्रता इव ५, ६६, २; २६९ दर्शते धायि ।
शूरः न ५, ६३, ५; २५२ मरुतः रथं युज्जते ।
शुक्रः सोमः न ७, ६४, ५; ३३५ एष स्तोमः अयामि ।
शुक्रः सोमः न ७, ६५, ५; ३४० एष स्तोमः अयामि ।
खर् न ५, ६६, २; २६९ दर्शते धायि ।
मानुषः होता न १, १५३, ३; २३१ सः रातह्वयः विदथे वां ।

मित्रावरुणदेवतामन्त्रेषु निपातदेवताः ।

अग्निः १, १३६, ६-७; २०८-२०९
आदितिः ५, ६९, ३; २८६ । ७, ६०, ८; ३१६ । ८, २५, ३;
३४२ । ७, ६२, ४; ३२८ ×
अपां सिन्धुः ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८
अर्यमा १, १३६, २-३, ५-६; २०४-५, २०७-८ । ५, ६७, १
३-४; २७४, २७६-२७७ । ७, ६०, ४-६; ३१२-३१४ ।
६२, ६; ३३० । ६४, १, ३; ३३१, ३३३
अश्विना ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८
आदित्यः १, १५२, ३-५; २२४-२२६
इन्द्रः १, १३६, ६; २०८ । ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८
द्यौः १, १३६, ६; २०८
द्यावाभूमौ ७, ६२, ४; ३२८

पर्जन्यः ५, ६३, ४, ६; २५१, २५३
पृथिवी ५, ६६, ५; २७२
भगः १, १३६, २, ६; २०४, २०८
मरुतः १, १३६, ७; २०९ । ५, ६३, ५-६; २५१-२५२ ।
८, २५, १४-१५; ३५७-३५८
रोदसी १, १३६, ६; २०८
वायुः ७, ६२, ४; २२९ । ६४, ५; ३३५ । ६५, ५; ३४०
विश्वे देवाः १, १३६, ४, ७; २०६, २०९ । ६, ६७, ५; ३०१
विष्णुः ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८
सूर्यः ७, ६०, २; ३१०
सोमः १, १३६, ६; २०८

× अत्र ' आदिते ' इति पदम् । तत्सायनैः ' द्यावाभूम्यो, ' प्रत्येकं संबोधनं गृह्यते ।

१४ दै० [आदिति]

(४) सविता ।

अदाभ्यः ४,५३,४; ४३७
 अद्रोघवाक् अ. ६,१,२; ५२०
 अधिपतिः प्रसवानाम् अ. ५,२४,१; ५१८
 अन्तरिक्षप्राः ७,४५,१; ४७३
 अपसेधन् रक्षसः यातुधानान् १,३५,१०; ४१८
 अपां नपात् १,२२,६; ४०४
 अप्रयुच्छन् अहनी एति ५,८२,८; ४५९
 अमर्तिं उर्वीं पृथ्वीं सृजानः ७,३८,२; ४६८
 अमर्तिं उरुर्चीं विश्रयमाणः ७,४५,३; ४७५
 अयोहनुः ६,७१,४; ४६४
 अरमतिः २,३८,४; ४२३
 अर्वाङ् १,३५,१०; ४१८
 अवन् सदा १,२४,३; ४०७
 अश्वैः वहमानः ७,४५,१; ४७३
 असुरः १,३५,१०; ४१८ । ४,५३,१; ४३४
 आवर्तमानः कृष्णेन रजसा १,३५,२; ४१०
 आसवः वा. य. २२,२३; ५०६
 इयानः ७,३८,६; ४७२
 ईशानः वार्याणाम् १,२४,३; ४०७
 उपवाच्यः ४,५४,१; ४४१
 ऊर्ध्वः विश्वस्य श्रुष्टये २,३८,२; ४२१
 ऋभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
 ओण्योः (वर्तमानः) वा. य. ४,२५; ४८८
 कल्पः वा. य. ४,२५; ४८८
 कविः ४,५३,२; ४३५ । ५,८१,२; ४४८ । वा. य. ४,
 २५; ४८८
 कविः वा. य. ४,२५; ४८८
 केतपूः वा. य. ९,१; ४९१
 गन्धर्वः वा. य. ९,१; ४९१
 गर्भः देवानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
 गृणानः प्रतिदोषम् १,३५,१०; ४१८
 मास्पतिः २,३८,१०; ४२९
 चित्रभानुः १,३५,४; ४१२
 चित्रराधाः अ. १,२६,२; ५३१
 चेतन् वा. य. २२,११; ५०४
 चेत्ता पदम् १,२२,५; ४०३
 जगत् निवेशयन् प्रसुवन अकतुभिः ४,५३,३; ४३६

जगतः वशी ४,५३,६; ४३९
 जनः दैव्यः ४,५४,३; ४४३
 जास्पतिः ७,३८,६; ४७२
 तदपाः २,३८,१; ४२०
 (तेजः) आपृणन् ४,५३,२; ४३५
 (तेजः) प्रययन् ४,५३,२; ४३५
 दधत् रत्नं दक्षं आर्युषि पितृभ्यः अ. ७,१४,४; ५२३
 दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि १,३५,८; ४१६
 दधानः कृष्णा रजांसि तविषाम् १,३५,४; ४१२
 दधानः हस्ते नर्या पुरुणि ७,४५,१; ४७३
 दमूनाः अ. ७,१४,४; ५२३
 दाता राधांसि १,२२,८; ४०६
 दिवः घर्ता ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३
 दिवः रातिः ७,३८,५; ४७१
 दिव्यः वा. य. ९,१; ४९१
 देवः [बहुषु स्थलेषु]
 देवानां गर्भः वा. य. ३७,१४; ५१४
 देवता १,२२,५; ४०३
 दैव्यः १,३५,५; ४१३ । २,३८,६; ४२५ । ४,५४,४;
 ४४४
 दैव्यः जनः ४,५४,३; ४४३
 द्रापि पिशङ्गं प्रति सुखते ४,५३,२; ४३५
 घर्ता दिवः ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३
 घर्ता भुवनस्य ४,५३,२; ४३५
 धियः २,३८,१०; ४२९
 धृतव्रतः ४,५३,४; ४३७
 नमस्यः ७,३८,३; ४६८
 नराशंसः २,३८,१०; ४२९
 निवेशनः ४,५३,६; ४३९
 निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च १,३५,२; ४१०
 निवेशयन् जगत् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६
 निवेशयन् भूम ७,४५,१; ४७३
 नृचक्षा १,२२,७; ४०५ । १०,१४९,२; ४७८ ।
 वा. य. ३०,४; ५०८
 पतिः प्रजानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
 पदं चेत्ता १,२२,५; ४०३
 परिष्मा अ. ७,१४,४; ५२३

परिभूः त्रिः अन्तरिक्षं महित्वना ४,५३,५; ४३८
 पिता मतीनाम् वा. य. ३७,१४; ५१४
 पुरान्धिः २,३८,१०; ४२९
 पुरु (रु) वसुः ७,३८,१; ४६७
 पूर्णगभस्तिः ७,४५,४; ४७६
 पूषा ५,८१,५; ४५१
 पृणन् आ (तेजः) ४,५३,२; ४३५
 पृथिव्याः रातिः ७,३८,५; ४७१
 पृथुपाणिः २,३८,२; ४२१
 प्रचेताः ४,५३,१; ४३४
 प्रजानां पतिः वा. य. ३७,१४; ५१४
 प्रजापतिः ४,५३,२; ४३५
 प्रतिदोषं गृणानः १,३५,१०; ४१८
 प्रथयन् (तेजः) ४,५३,२; ४३५
 प्रसवानां अधिपतिः अ. ५,२४,१; ५१८
 प्रसवि (वी) ता ४,५३,६; ४३९ । वा. य. १०,३०; ५२९
 प्रसुवन् जगत् अक्लुभिः ४,५३,३; ४३६
 प्रसुवन् भूम ७,४५,१; ४७३
 प्रियः वा. य. ४,२५; ४८८
 बाधमानः अप विश्वा दुरिता १,३५,३; ४११
 बाहू विशिरा ७,४५,२; ४७४
 बुध्नः रायः १०,१३९,३; ४७९
 बृहन् ५,८१,१; ४४७
 बृहस्पतिः अ. ७,१६,१; ५२०
 बृहत्सुत्रः ४,५३,६; ४३९
 भगः २,३८,१०; ४२९ । ३,६२,११; ४३२ । ५,८२,१,३;
 ४५२,४५४ । ७,३८,१,६; ४६७,४७२ । वा. य. ८,७;
 ४९०
 भगभक्तः १,२४,५; ४०९
 भुवनस्य धर्ता ४,५३,२; ४३५
 भूम निवेशयन् प्रसुवन् च ७,४५,१; ४७३
 मखः ६,७१,१; ४६१
 मतिः वा. य. ४,२५; ४८८
 मति (ती) विद् वा. य. २२,१२; ५०५
 मतीनां पिता वा. य. ३७,१४; ५१४
 मन्द्रजिह्वः ६,७१,४; ४६४
 मित्रः ५,८१,४; ४५०
 यजतः १,३५,३-४; ४११-४१२ । ६,७१,४; ४६४
 यातुधानान् अपसेधन् १,३५,१०; ४१८

युवा ६,७१,१; ४६१ । अ. ६,१,२; ५२०
 रक्षसः अपसेधन् १,३५,१०; ४१८
 रजसः विधर्मणि (स्थितः) ६,७१,१; ४६१
 रत्नधाः वा. य. ४,२५; ४८८
 रातिः वा. य. २२,१३; ५०६
 रातिः दिवः पृथिव्याः ७,३८,५; ४७१
 राधांसि दाता १,२२,८; ४०६
 राधसः विभक्ता १,२२,७; ४०५ । वा. य. ३०,४; ५०८
 रायः बुध्नः १०,१३९,३; ४७९
 वन्यः ४,५३,१; ४३४
 वरेण्यः ५,८१,२; ४४८ । अ. ७,१४,४; ५२३
 वशी जगतः स्थातुः उभयस्य ४,५३,६; ४३९
 वसूनां संगमनः १०,१३९,३; ४७९
 वसुपतिः ७,४५,३; ४७५
 वहमानः अश्वैः ७,४५,१; ४७३
 वाजवान् वा. य. ३८,८; ५१६
 वार्याणां ईशानः १,२४,३; ४०७
 विचक्षणः ४,५३,२; ४३५
 विचर्षणिः १,३५,९; ११०
 विपश्चित् ५,८१,१; ४४७
 विप्रः ५,८१,१; ४४७
 विभक्ता वसोः चित्रस्य राधसः १,२२,७; ४०५ । वा. य.
 ३०,४; ५०८
 विभुमान् वा. य. ३८,८; ५१६
 विश्रयमाणः उरुचीं अमतिम् ७,४५,३; ४७५
 विश्वदेवः ५,८२,७; ४५८
 विश्ववारः १०,१४९,४; ४८३
 शचीपतिः अ. १९,१६,१; ५२४
 संगमनः वसूनाम् १०,१३९,३; ४७९
 सत्पतिः ५,८२,७; ४५८ । वा. य. २२,१३; ५०६
 सत्यधर्मा १०,१३९,३; ४७९
 सत्यप्रसवः वा. य. १०,२८; ४२३
 सत्यसवः ५,८२,७; ४५८ । वा. य. ४,२५; ४८८
 सत्यस्य सूनुः अ. ६,१,२; ५२०
 सदा (अ) वन् १,२४,३; ४०७
 सविता [प्रायशः सर्वत्र ।]
 सह (हा) वा ७,४५,३; ४७५
 सिन्धौ अन्तः अ. ६,१,२; ५२०

सुकृतः ६,७१,१; ४६१। वा. य. ४,२५; ४८८
 सुजिह्वः ७,४५,४; ४७६
 सुत्रामा वा. य. २०,७०; ५०२
 सुदक्षः ६,७१,१; ४६१
 सुनीथः १,३५,१०; ४१८
 सुपाणिः ७,४५,४; ४७६। वा. य. ११,६३; ४९९
 सुबाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
 सुमति (ती) वृध् वा. य. २२,१२; ४०५
 सुमृळीकः १,३५,१०; ४१८
 सुरत्नः ७,४५,१; ४७३
 सुवानः आ मर्तभोजनं नृभ्यः ७,३८,२; ४६८
 सुशेवः अ. ६,१,२; ५२०
 सूर्यरश्मिः १०,१३९,१; ४७७
 सुजानः उर्वी पृथ्वीं अमतिम् ७,३८,२; ४६८
 स्तोम्यः १,२२,८; ४०६
 स्थातुः वशी ४,५३,६; ४३९
 खल्लुरिः वा. य. ११,६३; ४९९
 खः वा. य. ४,२५; ४८८
 खवान् १,३५,१०; ४१८
 खाधीः ५,८२,८; ४५९
 हरिकेशः १०,१३९,१; ४७७
 हविष्पतिः वा. य. २०,७०; ५०२
 हव्यः ७,३८,१; ४६७
 हिरण्य-अक्षः १,३५,८; ४१६
 हिरण्य-जिह्वः ६,७१,३; ४६३
 हिरण्य-पाणिः १,२२,५; ४०३। ३५,२; ४१७। ६,७१,४; ४६४। ७,३८,२; ४६८। वा. य. ४,२५; ४८८
 हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः अश्वः ।

शितिपादः १,३५,५; ४१३
 शुभ्रौ (हरी) १,३५,३; ४११
 श्यावाः १,३५,५; ४१३
 हरी १,३५,३; ४११

सवितुः बाहू ।

दिवः अन्तान् अनष्टाम् ७,४५,२; ४७४
 बृहन्ता ७,४५,२; ४७४
 शिथिरा ७,४५,२; ४७४
 सुप्रतीका ६,७१,५; ४६५
 हिरण्यया ६,७१,१,५; ४६१,४६५। ७,४५,२; ४७४।
 पृथु-पाणिः २,३८,२; ४२१
 सु-पाणिः ७,४५,४; ४७६
 हिरण्यः-पाणिः १,२२,५; ४०३
 सु-बाहुः वा. य. ११,६३; ४९९
 हिरण्य-हस्तः १,३५,१०; ४१८

सवितुः रथः ।

अभीवृत् १,३५,४; ४१२
 कशनैः विश्वरूपः १,३५,४; ४१२
 बृहन् १,३५,४; ४१२
 हिरण्ययः १०,३५,२; ४१०
 हिरण्यशम्यः १,३५,४; ४१२
 हिरण्यप्रलगः १,३५,५; ४१३

सवितुः रश्मिः ।

असुरः १,३५,७; ४१५
 गभीरवेपाः १,३५,७; ४१५
 सुनीथः १,३५,७; ४१५
 सुपर्णः १,३५,७; ४१५
 सूर्य-रश्मिः १०,१३९,१; ४७७
 पूर्ण-गमस्तिः ७,४५,४; ४७६

सवितादेवताया उपमासूची ।

अश्वं इव १०,१४९,१; ४८० शुनिं अशुक्षत् अन्तरिक्षम् ।
 यथा आङ्गिरसः हिरण्यस्तूपः १०,१४९,५; ४८४ एवा त्वा अवसे ।
 आपि न रथ्यम् १,३५,६; ४१४ अमृतं अधि तस्थुः तिस्रः द्यावः ।
 इन्द्रः न १०,१३९,३; ४७९ सत्यधर्मां समरे तस्थौ ।
 उपवक्ता इव बाहू ६,७१,५; ४६५ उद् अयान् सविता ।

गावः इव ग्रामम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
 देवः इव १०,१३९,३; ४७९ सविता सत्यधर्मा ।
 पतिः इव जायाम् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
 यूयुधिः इव अश्वान् १०,१४९,४; ४८३ सविता नः एतु ।
 बाभ्रा इव वत्सं सुमना १०,१४९,४; ४८३ घर्ता दिवः नः न्येतु ।
 सोमस्य इव अंशुम् १०,१४९,५; ४८४ प्रति जागराहम् ।

(५) सूर्यः ।

अंशः सोमस्य अ. ७, ८१, ३; ६८१
 अंशुः अ. ७, ८१, ६; ६८४
 अक्षितः अ. ७, ८१, ६; ६८४
 अग्नेः चक्षुः १, ११५, १; ५४७
 अतिथिः ४, ४०, ५; ५५५
 अदितिः ७, ६०, १; ५५७
 अदृष्टहा अ. ६, ५२, १; ६२५
 अद्रिजाः ४, ४०, ५; ५५५
 अधिपतिः इष्टकायाः ते वा. य. १५, ५८; ५९८
 अधिपतिः चक्षुषाम् अ. ५, २४, २; ६१६
 अध्वपतिः वा. य. ५, ३३; ५९६
 अनिपद्यमानः वा. य. ३७, १७; ६०८
 अनीकं चित्रं देवानाम् १, १५५, १; ५४७
 अनुमद्यमानः रैमैः ७, ६३, ३; ५६३
 अनूनः अ. ७, ८१, ३; ६८१
 अन्तरिक्षसत् ४, ४०, ५; ५५५
 अपां गर्भः १, १६४, ५२; ६३०
 अप्रयुच्छन् १०, ८८, १६; ६७४
 अञ्जाः ४, ४०, ५; ५५५
 अमर्त्यः [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 अमित्रहा [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८
 अर्णवः ७, ६३, २; ५६२
 अर्णवं परि यातः [चन्द्रमाश्च] अ. ७, ८१, १; ६७९
 अर्यमा ७, ६०, १; ५५७
 असुरहा [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८
 असुर्यः ८, १०१, १२; ५६९
 अहः अक्षुभिः सिमानः १, ५०, ७; ५४०
 अह्नां केतुः अ. ७, ८१, २; ६८०
 अहेल्यन् रक्षसि व्रतम् १०, ३७, ५; ५७४
 आ च परा च पथिभिः चरन् वा. य. ३७, १७; ६०८
 आत्मा जगतः तस्थुषः च १, ११५, १; ५४७
 आदित्यः १, ५०, १३; ५४६ । ८, १०१, ११; ५६८ ।
 अ. ६, ५२, १; ६२५
 आदितेयः १०, ८८, ११; ६६९
 आयुः दधत् यक्षपतौ अविहृतम् १०, १७०, १; ५८७
 आयुः दीर्घं अतिरन् अ. ७, ८१, २; ६८०
 आरोहन् उत्तरां दिवम् १, ५०, ११; ५४४

आरोहन् बृहतः पाजसः परि १०, ३७, ८; ५७७
 इन्द्रः वा. य. ३३, ३५; ६०३
 उत्तमम् [ज्योतिः] १, ५०, १०; ५४३ । १०, १७०, ३; ५८९
 उत्तरम् [ज्योतिः] १, ५०, १०; ५४३
 उत्तरां दिवं आरोहन् १, ५०, ११; ५४४
 उद्यन् १, ५०, ११; ५४४ । अ. ७, १३, १-२; ६१७-६१८ ।
 अ. १७, १, ३०; १३३
 उद्यन् दिवेदिवे १०, ३७, ७; ५७६
 उरुचक्षाः ७, ६३, ४; ५६४
 ऋतम् ४, ४०, ५; ५५५
 ऋतजाः ४, ४०, ५; ५५५
 ऋतसत् ४, ४०, ५; ५५५
 ऋतून् विदधत् नवः जायसे [चन्द्रः] अ. ७, ८१, १; ६७९
 ओजः उरु सह अच्युतं यस्य १०, १७०, ३; ५८९
 ओषधीनां गर्भः दर्शतः १, १६४, ५२; ६३०
 ओषधीनां दर्शतः १, १६४, ५२; ६३०
 कर्तुभिः सुकृतः ७, ६२, १; ५५८
 कवीनां मतिः साम. ४५८; ६२८
 कृतः ७, ६२, १; ५५८
 केतुः ७, ६३, २; ५६२ । १०, ३७, १; ५७०
 केतुः अह्नाम् अ. ७, ८१, २; ६८०
 केतवः [रश्मयः] वा. य. ८, ४०; ५९७
 कृत्वा ७, ६२, १; ५५८
 क्रीडन्तौ शिक्ष [सूर्यः चन्द्रमाः च] ७, ८१, १; ६७९
 गर्भः अपाम् १, १६४, ५२; ६३०
 गोजाः ४, ४०, ५; ५५५
 गोपाः वा. य. ३७, १७; ६०८
 गोपाः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च ७, ६०, २; ६१०
 गौः अ. २०, ४८, ४; ६८२
 घर्मः वा. य. ३७, १८; ६०९
 चक्षाः मित्रस्य वरुणस्य १०, ३७, १; ५७०
 चक्षुः तत् ७, ६६, १६; ५६७ । वा. य. ३३, २४; ६०६
 चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः १, ११५, १; ५४७
 चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य ७, ६३, १; ५६१
 चक्षुषां अधिपतिः अ. ५, २४, २; ६१६
 चक्षुषेचक्षुषे मयः १०, ३७, ८; ५७७
 चरन् पथिभिः आ च परा च वा. य. ३७, १७; ६०८

चरतः पूर्वापरं मायया (सूर्यः चन्द्रमाः च) अ. ७, ८१, १; ६७२
 चरिष्णू [अग्निसूर्यौ] १०, ८८, ११; ६६९
 जगतः गोपाः ७, ६०, २; ३१०
 जगतः तस्थुषश्च आत्मा १, ११५, १; ५४७
 जगतः तस्थुषः पतिः ७, ६६, १५; ५६६
 जनानां प्रसवि (वी) ता ७, ६३, २; ५६२
 जन्मानि पश्यन् १, ५०, ७; ५४०
 जातवेदाः १, ५०, १; ५३४
 जायमानः नवःनवः अ. ७, ८१, २; ६८०
 जुषाणः वा. य. ३, १०; ५९५
 ज्योतिः १०, १७०, २; ५८८ । वा. य. ३, ९; ५९४ ।
 अ. १६, ९, ३; ६२६ । साम. ४५८; ६२८
 ज्योतिः उत्तमम् १, ५०, १०; ५४३
 ज्योतिः उत्तरम् १, ५०, १०; ५४३
 ज्योतिषां ज्योतिः १०, १७०, ३; ५८९
 ज्योतिः महि बिभ्रत् १०, ३७, ८; ५७७
 ज्योतिः ते विभु अदाभ्यम् ८, १०१, १२; ५६९
 ज्योतिष्कृत् १, ५०, ४; ५३७
 तपोजाः [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 तमसः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 तमसः परि १, ५०, १०; ५४३
 तरणिः ७, ६३, ४; ५६४ । १०, ८८, १६; ६७४
 तर्पयन् वृष्टिभिः १, १६४, ५२; ६३०
 तस्थुषः जगतः आत्मा १, ११५, १; ५४७
 तस्थुषः जगतः पतिः ७, ६६, १५; ५६६
 दधत् आयुः यज्ञपतौ १०, १७०, १; ५८७
 दर्शः अ. ७, ८१, ४; ६८२
 दर्शतः अ. ७, ८१, ४; ६८२
 दर्शतं वपुः स्यत् ७, ६६, १४; ५६५
 दर्शतः ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०
 दर्शतः गर्भं ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०
 दस्थुहन्तमम् [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८
 दिवः धरुणः १०, १७०, २; ५८८
 दिवः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 दिवस्पुत्रः १०, ३७, १, ५७०
 दिवा रोचमानः ७, ६०, १; ५५८
 दिव्यः १, १६४, ५२; ६३०
 दुरोणसत् ४, ४०, ५; ५५५
 दूरे अर्थः ७, ६३, ४; ५६४

दूरे दृश् १०, ३७, १; ५७०
 दृशः साम. ४५८; ६२८
 देवः १, ५०, १, ८; ५३४, ६४१ । ७, ६३, १, ३; ५६१, ५६३ ।
 ८, १०१, ११-१२; ५६८-६९ । १०, ३७, १; ५७०
 देवः [घर्मः] वा. य. ३०, १६, १८; ६०७, ६०९
 देवजातः १०, ३७, १; ५७०
 देवः देवत्रा १, ५०, १०; ५४३
 देवयजनी [पृथिवी] वा. य. ३, ५; ५२३
 देवश्रुत् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 देवहितम् ७, ६६, १६; ५६७ । वा. य. ३६, २४; ६०६
 देवानां चित्रं अनीकम् १, ११५, १; ५४७
 देवानां धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७
 देवानां पुरोहितः ८, १०१, १२; ५६९
 देवेभ्यः भागं विदधत् अ. ७, ८१, २; ६८०
 द्यौः (दिवे-चतुर्थी) १, १३६, ६; २०८
 द्यावापृथिवीवान् अ. १२, १८, ५; ६२०
 द्विषन्तं मर्त्यं रन्धयन् १, ५०, १३; ५४६
 धनजित् [ज्योतिः] १०, १७०, ३; ५८९
 धरुणः दिवः १०, १७०, २; ५८८
 धर्ता तपसः [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्ता दिवः [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्ता देवानाम् [घर्मः] ३७, १६; ६०७
 धर्मन् १०, १७०, २; ५८८
 नवःनवः जायमानः अ. ७, ८१, २; ६८०
 निजूर्वन् रक्षांसि अ. ६, ५२, १; ६२५
 नृचक्षाः ७, ६०, २; ३१०
 नृषत् (सद्) ४, ४०, ५; ५५५
 पतंगः अ. २०, ४८, ६; ६९१
 पतिः जगतः तस्थुषः च ७, ६६, १५; ५६६
 पतिः युधाम् अ. ७, ८१, ३; ६८१
 पतिः भुवा विश्वासाम् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः मनसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः वचसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 पतिः वचसः सर्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 परि यातः अर्णवम् [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७, ८१, १; ६७९
 पश्यन् जन्मानि १, ५०, ७; ५४०
 पाजसः बृहतः पारे आरोहन् १०, ३७, ८; ५७७
 पावकः १, ५०, ६; ५३९
 पिता शरस्य अ. १, ३, ५; ६१०

पुरोहितः देवानाम् ८, १०१, १२; ५६९
 पूर्वापरं चरतः मायया [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७, ८१, १; ६७९
 पृथ्विः अ. २०, ४८, ४; ६८९
 प्रजानन् १०, ८८, ६; ६६४
 प्रसवि (वी) ता जनानाम् ७, ६३, २; ५६२
 प्रेषितः १०, ३७, ५; ५७४
 बिभ्रत् महि ज्योतिः १०, ३७, ८; ५७७
 बृहत् [ज्योतिः] १०, १७०, २-३; ५८८-५८९
 बृहन् १, १६४, ५२; ६३० । १, १३६, ६; २०८
 ब्रध्नः साम. ४५८; ६२८
 भगः अ. २, ३६, ५; ६२३
 भास्वन् १०, २७, ८; ५७७
 भुवना विश्वा विचष्टे अ. ७, ८१, १; ६७९
 भुवां विश्वासां पतिः [धर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९
 आजः १०, १७०, ३; ५८९ । वा. य. ८, ४०; ५९७
 आजमानः ७, ६३, ४; ५६४ । १०, ८८, १६; ६७४
 आजिष्ठः वा. य. ८, ४०; ५९७
 आजिष्ठः देवेषु वा. य. ८, ४०; ५९७
 मतिः कवीनाम् साम. ४५८; ६२८
 मनसस्पतिः विश्वस्य वा. य. ३७, १८; ६०९
 मयः चक्षुषेचक्षुषे १०, ३७, ८; ५७७
 महः १०, ३७, १; ५७०
 महान् ७, ६३, २; ५६२ । ८, १०१, ११-१२; ५६८-६९
 महान् महा ८, १०१, १२; ५६९
 महान् श्रवसा ८, १०१, १२; ५६९
 महि १०, १७०, ३; ५८९
 महिषः अ. २०, ४८, ५; ६९०
 महा महान् ८, १०१, १२; ५६९
 मानुषाणां साधारणः ७, ६३, १; ५६१
 मित्रस्य वरुणस्य चक्षुः १०, ३७, १; ५७०
 मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चक्षुः १, ११५, १; ५४७
 मित्रस्य वरुणस्य चक्षुः ७, ६३, १; ५६१
 मित्रमहः १, ५०, ११; ५४४ । १०, ३७, ७; ५७६
 मिथुनौ [अमिसूर्यौ] १०, ८८, ११; ६६९
 मिमानः अहः अकनुमिः १, ५०, ७; ५४०
 युधां पतिः अ. ७, ८१, ३; ६८१
 रक्षांसि निजूर्वन् अ. ६, ५२, १; ६२५
 रन्धयन् द्विषन्तं मह्यम् १, ५०, १३; ५४६
 रुक्मः ७, ६३, ४; ५६४

रेभैः अनुमद्यमानः ७, ६३, ३; ५६३
 रोचनः १०, ८८, ५; ६६३
 रोचमानः दिवा ७, ६२, १; ५५८
 वचस्य विश्वस्य पतिः वा. य. ३७, १८; ६०९
 वचस्य सर्वस्य पतिः वा. य. ३७, १८; ६०९
 वपुः दर्शतं त्यत् ७, ६६, १४; ५६५
 वरसत् ४, ४०, ५; ५५५
 वरुणः १, ५०, ६; ५३९
 वरुणस्य चक्षुः १०, ३७, १; ५७०
 वरुणस्य चक्षुः १, ११५, १; ५४७ । ७, ६३, १; ५६१
 वर्चः वा. य. ३, ९; ५९४
 वर्चोदाः [रश्मिः] वा. य. २, २६; ५२२
 वसानः सध्रीचीः विषूचीः वा. य. ३७, १७; ६०८
 वसुः ४, ४०, ५; ५५५
 वाजसातमम् [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८
 वातजूतः १०, १७०, १; ५८७
 वायसः [सरस्वान्] १, १६४, ५२; ६३०
 विचक्षणः १, ५०, ८; ५४१ । १०, ३७, ८; ५७७
 विचष्टे विश्वा भुवना अ. ७, ८१, १; ६७९
 विभ्राद् १०, १७०, १-२; ५८७-५८८
 विभ्राजन् ज्योतिषा १०, १७०, ४; ५९०
 विभ्राजमानः ७, ६३, ३; ५६३
 विश्वकर्मन् [ज्योतिः] १०, १७०, ४; ५९०
 विश्वचक्षुः १, ५०, २; ५३५ । ७, ६३, १; ५६१
 विश्वजित् (ज्योतिः) १०, १७०, ३; ५८९
 विश्वदर्शतः १, ५०, ४; ५३७
 विश्वहृष्टः अ. ६, ५२, १; ६२५
 विश्वदेव्यावत् ज्योतिः १०, १७०, ४; ५९०
 विश्वभ्राद् १०, १७०, ३; ५८९
 विश्वस्य गोपाः ७, ६०, २; ३१०
 विश्वानरः वा. य. ३३, ३४; ६०२
 विश्वा भुवनानि आ बिभ्रत् १०, १७०, ४; ५९०
 विषूचीः सध्रीचीः वसानः वा. य. ३७, १७; ६०८
 वृत्रहा १०, १७०, २; ५८८ । वा. य. २३, ३५; ६०३
 वृष्टिभिः तर्पयन् १, १६४, ५२; ६३०
 वेदिषत् ४, ४०, ५; ५५५
 व्योमसत् ४, ४०, ५; ५५५
 शतवृष्ण्यः अ. १, ३, ५; ६१०
 शं अह्ना घृणेन चक्षसा भानुना हिमा १०, ३७, १०; ५७९

शरस्य पिता अ. १,३,५; ६१०
 शिश्रुः क्रीडन्तौ (सूर्याचन्द्रमसौ) अ. ७,८१,१; ६७९
 शुक्रम् ७,६६,१६; ५६७। वा. य. ३३,२४; ६०६
 शुचिषद् ४,४०,५; ५५५
 शोचिष्केशः १,५०,८; ५४१
 श्रवसा महान् ८,१०१,१२; ५६९
 श्रेष्ठः (रश्मिः) वा. य. २,२६; ५९२
 श्रेष्ठम् (ज्योतिः) १०,१७०,३; ५८९
 सज्जुः देवेन सवित्रा वा. य. ३,१०; ५९५
 सज्जुः उषसा इन्द्रवत्या वा. य. ३,१०; ५९५
 सत्यम् (ज्योतिः) १०,१७०,२; ५८८
 सध्रीचीः वसानः (धर्मः) वा. य. ३७,१७; ६०८
 सपत्नहा (ज्योतिः) १०,१७०,२; ५८८
 समः ७,६२,१; ५५८
 समन्तः समग्रः अ. ७,८१,४; ६८२
 सरस्वान् १,१६४,५२; ६३०
 सविता ७,६३,३; ५६३। १०,१५८,२-३; ५८३-८४।
 वा. य. ३,१०; ५९५। ऋ. १०,८५,९,१३; ६३५,६३९
 सहस्रमानवः साम. ४५८; ६२८
 साधारणः मानुषाणाम् ७,६३,१; ५६१
 सुकृतः कर्तृभिः ७,६२,१; ५५८
 सुपर्णः १,१६४,५२; ६३०
 सुभगः ७,६३,१; ५६१
 सुभृतम् [ज्योतिः] १०,१७०,२; ५८८
 सुषंढशः १०,१५८,५; ५८६
 सूरः १,५०,२,९; ५३५,५४२। ७,६३,५; ६३१
 सूर्यः (प्रायः सर्वत्र) ७,६०,२; ३१०
 सोमस्य अंशः अ. ७,८१,३; ६८१
 स्वः वा. य. १,११; ५९१। अ. १६,९,३; ६२६।
 अ. २०,४८,४; ६८९
 स्वयम्भूः वा. य. २,२६; ५९२
 हंसः ४,४०,५; ५५५
 हरिकेशः १०,३७,९; ५७८
 होता ४,४०,५; ५५५

सूर्यस्यः रश्मयः।

अपः वसानाः १,१६४,४७; ५५४
 ऋतस्य सद्नात् आववृत्रन् (ये) १,१६४,४७; ५५४
 केतवः १,५०,३; ५३६
 केतवः ये देवं वहन्ति १,५०,१; ५३४
 कृष्णं नियानं हरयः १,१६४,४७; ५५४
 देवाः उदिताः १,११५,६; ५५२

द्यावः (द्युभिः-तृतीया) अ. २०,४८,६; ६९१
 भ्राजन्तः यथा अग्रयः १,५०,३; ५३६
 रश्मयः सप्त १,५०,३; ५३६। वा. य. ८,३; ५९७।
 अ. ७,१०७,१; ६८५
 सुपर्णाः १,१६४,४७; ५५४
 हरितः १,११५,५; ५५१

सूर्यस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः।

अर्चिः अ. २,२१,३; ६१३
 तपः अ. २,२१,१; ६११
 तेजः अ. २,२१,५; ६१५
 शोचिः अ. २,२१,४; ६१४
 हरः अ. २,२१,२; ६१२

सूर्यस्य अश्वानां गुणबोधकपदानि।

अनुमाद्यासः १,११५,३; ५४९
 अश्वः १,११५,३; ५४९
 आशुः ७,६६,१४; ५६५
 एतग्वाः १,११५,३; ५४९
 एतशः ७,६३,२; ५६२। ७,६६,१४; ५६५
 एतशाः १०,३७,३; ५७२
 केतवः १,५०,१; ५३४
 चित्राः १,११५,३; ५४९
 देवः ७,६६,१४; ५६५
 धूर्ध्रु युक्तः ७,६६,१४; ५६५
 नप्यः रथस्य १,५०,२; ५४२

चन्द्रमसः सहचारित्वे सूर्यस्य गुणबोधकपदानि।

अधिपतिः अ. ६,१०,३; ११३५
 अह्नां केतुः १०,८५,१९; २७२
 उषसां अग्रं एति १०,८५,१९; २७२
 चक्षोः (अस्य पुरुषस्य) अजायत ऋ. १०,९०,१३; २७३।
 वा. य. २१,१२; ९७८
 चरते एकाकी वा. य. २३,१०; ९७७
 नमस्यन्तः १,११५,३; ५४९
 पतराः १०,३७,३; ५७२
 भद्राः १,११५,३; ५४९
 युक्तः धूर्ध्रु ७,६६,१४; ५६५
 रथस्य नप्यः १,५०,२; ५४२
 शुन्ध्युवः १,५०,९; ५४२
 सप्त १,५०,८-९; ५४१-५४२
 स्वयुक्तयः १,५०,२; ५४२। ७,६६,१५; ५६६
 स्वसारः ७,६६,१५; ५६६
 हरितः १,११५,३-४; ५४९-५०। ७,६६,१५; ५६६

सूर्यसहचारी-वैश्वानराग्नेः गुणबोधकपदानि ।

(ऋ० १०, ८८, १-१९; ६५२-७७)

अजरः ३; ६६१
अजुर्यः १३; ६७१
अध्यक्षः यक्षस्य १३; ६७१
अर्चिषा यन् १२; ६७०
आजुह्वतुः यस्मिन् विश्वा भुवनानि ९; ६६७
ऋजूयमानः अर्चिषा पृथिवीं द्यां च ९; ६६७
कः १; ६५९
कविः १४; ६७२
जातवेदाः ४-५; ६६२-६३
तनूपाः ८; ६६६
तविष् (षम्-द्वितीया) १३; ६७१
दिवियोनिः ७; ६६५
दिविरुष्टक् १; ६५९
दीदिवान् १४; ६७२
दशेन्यः महिना ७; ६६५

देवजुष्टः ४; ६६२
पचति यः विश्वरूपा ओषधीः १०; ६६८
प्रथमः होता ४; ६६२
वृहन् ३, १३; ६६१, ६७१
भुवनस्य मूर्धनि अतिष्ठः ५; ६६३
मूर्धा भुवा भवति नक्तम् ६; ६६४
यज्ञः ८; ६६६
यज्ञियः ५; ६६३
रोदसिप्राः ५, १०; ६६३, ६६८
विभावा ७; ६६५
वेदयं पृथिवी द्यौः आपः ८; ६६६
समिद्धः ७; ६६५
सुक्तवाक् ८; ६६६
स्वर्चित् १; ६५९
होता प्रथमः ४; ६६२

सूर्यदेवताया उपमासूची ।

यथा अक्षेत्रविद् मुग्धः ५, ४०, ५; ५५६ भुवनानि अदीधयुः ।
यथा अग्नयः भ्राजन्तः १, ५०, ३; ५३६ वा. य. ८, ४०; ५९७
केतवः रश्मयः वि अहश्चम् ।
वर्म इव ७, ६३, १; ५६१ देवः तमांसि समविव्यक् ।
जातं जात्राः यथा हृदा अ. २०, ४८, २; ६८७ ता अर्षन्ति शुभ्रयः ।
त्ये तायवः यथा १, ५०, २; ५३५ नक्षत्राः अक्षतुभिः अप यन्ति ।
द्यौः इव भूम्ना वा. य. ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।
पृथिवी इव वरिष्णा वा. य. ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।
भागं न वा. य. ३३, ४१; ६०४ जाते जनिमाने वसुनि प्रति ।

मर्यः न योषाम् १, ११५, २; ५४८ सूर्यः उषसं पश्चात् अभ्येति ।
यथा युवानः मत्सयः वा. य. ३३, ३४; ६०२ तथा नः विश्वं मनीषा ।
अभि वत्सं न घेनवः अ. २०, ४८, १; ६८६ त्वा अभि गिरः ।
श्येनः न दीयन् ७, ६३, ५; ६३१ पाथः अनु एति ।
श्रायन्तः इव सूर्यम् वा. य. ३३, ४१; ६०४ वर्यं विश्वा इन्द्रस्य ।
यथा सूर्यः...नक्षत्राणां अ. ७, १३, १; ६१७ एवा स्त्रीणां वर्चः ।
उद्यन् सूर्यः इव अ. ७, १३, २; ६१८ द्विषतां वर्चः आ ददे ।
सुपर्णः वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ६७८ अपचितः प्र पतत ।

सूर्यदेवतामन्त्रेषु निपातदेवतानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निः १, १६४, ४६; ५५३ । ७, ६२, २-३; ५५२-५६०
[चन्द्रः ऋतावान् । (५६०)]
अग्निः (पार्थिवः) १०, १५८, १; ५८२
अदितिः १, ११५, ६; ५५२
अर्यमा ७, ६२, २; ५५९
आपः १०, ३७, ६; ५७५

इन्द्रः १, १६४, ४६; ५५३ । १०, ३७, ८; ५७५ । अ. ७, ८१, ६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं भक्षयन्,
अंशु आप्याययन् ।
चन्द्राः ७, ६२, ३; ५६० (अयं शब्दः मित्रावरुणाम्नीनां विशेष-
वर्ण वा ।)
देवाः १, ११५, ६; ५५२ । १०, ३७, ५, ११-१२; ५७४, ५८०-८१

१५ दै० [अदिति]

वोः १,११५,६; ५५२
 धावापृथिवी १०,३७,६; ५७५
 धाता १०,१५८,३; ५८४
 पर्वतः १०,१५८,६; ५८४
 पृथिवी १,११५,६; ५५२
 बृहस्पतिः अ. ७,८१,६; ६८४। भुवनस्य गोपाः अक्षितः
 अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन्।
 मरुतः १०,३७,६; ५७५
 मातरिश्वा १,११५,६; ५५२

मित्रः १,११५,६; ५५२। १६४,४६; ५५३। ७,६०,१;
 ६२,२-३; ५५७, ५५२-५६० ऋतावान् चन्द्रः ५६०
 यमः १,१६४,१६; ५५३
 वरुणः १,११५,६; ५५२। १६४,४६; ५५३। ७,६०,१;
 ५५७। ६२,२,३; ५५२-६०। ऋतावान् चन्द्रः ५६०।
 अ. ७,८१,६; ६८४। भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं
 भक्षयन्, अंशुं आप्याययन्।
 वातः (अन्तरिक्षदेवता) १०,१५८,१; ५८२
 सिन्धुः १,११५,६; ५५२

(६) [१] त्वष्टा ।

अग्निः अ. ११,६,३; ७१४
 अचिष्टः वा. य. २०,४४; ६९६
 अन्धसः जुजुषाणः २,३६,३; ७०३, ९२१
 अपाकः वा. य. २०,४४; ६९६
 इन्द्राय शुभं दधत् वा. य. २०,४४; ६९६
 कर्ता बहोः वा. य. २९,९; ६९७
 मावः १,१५,३; ९०९
 जजान वीरं यः वा. य. २९,९; ६९७
 जनान विश्वे भुवनं यः वा. य. २९,९; ६९७
 जायत आशुरश्वः अर्वा यस्मात् वा. य. २९,९; ६९७
 जुजुषाणः अन्धसः २,३६,३; ७०३, ९२१
 त्वष्टा [बहुशः सर्वत्र ।]
 दुहित्रे बहुतुं युनक्ति अ. ३,३१,५; ६९८
 देवः वा. य. ६,७; ६९४

नेष्टा १,१५,३,९; ९०९,९१५
 प्रजया संरराणः वा. य. ८,१७; ६९५
 बहोः कर्ता वा. य. २२,९; ६९७
 भूरिरेताः वा. य. २०,४४; ६९६
 यजन् वा. य. २०,४४; ६९६
 रत्नधाः १,१५,३; ९०९
 वृषा वा. य. २०,४४; ६९६
 संरराणः प्रजया वा. य. ८,१७; ६९५
 सुजनिमा १०,१८,६; ६९२
 सुदत्रः वा. य. २,२४; ६९३
 सुमद्रणः २,३६,३; ७०३, ९२१
 सुयुजः अ. ५,२६,८; ६९९
 सुहवः २,३६,३; ७०३, ९२१

[२] धाता ।

अग्निः अ. ११,६,३; ७१४
 देवः अ. ११,६,३; ७१४
 धातादेवताया उपमासूची ।
 यथा अपरः पूर्व न १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आयूषि ।

यथा अहानि पूर्व अन्तु १०,१८,५; ७०५ एवा एषां आयूषि ।
 यथा ऋतवः ऋतुभिः साधु यन्ति १०,१८,५; ७०५
 एवा एषां आयूषि ।
 यां इव १८,३,२६; ७०७ बाहुच्युता पृथिवी उपरि ।

[३] पूषा ।

अजाश्वः १,१३८,४; ७३१। ६,५८,२; ७७२
 अदाम्यः १०,२६,७; ७८५
 अनपच्युतः १०,२६,८; ७८६
 अनष्टपशुः १०,१७,३; ७७५

अनष्टवेदाः ६,५८,८; ७५६
 अन्त्युतिः १,१३८,१; ७२८
 अंग्रयुच्छन् १०,१७,५; ७७७
 अवीनां वासोवायः १०,२६,६; ७८४

× पूषो अश्वः— अजासः, निशुम्भाः ६,५५,६; ७६४ ।

अश्वहयः रथानाम् १०, २६, ५; ७८३
 अहेलमानः १, १३८, ३, ४; ७३०-३१
 आशुणिः १, २३, १३-१४; ७१५-१६ । १३८, ४; ७३१ ।
 ३, ६२, ७; ७३२ । ६, ४८, १६; ७३५ । ५३, ३, ८-९;
 ७४१, ७४६-४७ । ५५, १, ३; ७५९, ७६१ । १०, १७, ५;
 ७७७
 आश्वः विप्राणाम् १०, २६, ४; ७८२
 आशीषमाणायाः पतिः १०, २६, ६; ७८४
 इच्छमानः श्रवः ६, ५८, ३; ७७३
 इनः १०, २६, ७; ७८५
 इनः पुष्टीनाम् १०, २६, ७; ७८५
 इन्दुर्न वृषा १०, २६, ३; ७८०
 इन्द्रस्य भ्राता ६, ५५, ५; ७६३
 इर्यः ६, ५४, ८; ७५६
 इलस्पतिः ६, ५८, ४; ७७४
 ईशानः ६, ५४, ८; ७५६
 ईशानः राघसः महः ६, ५५, २; ७६०
 उग्रः ६, ५३, ४; ७४२
 उरुशंसः १, १३८, ३; ७३०
 ऋतस्य रथी ६, ५५, १; ७५९
 ऋषिः १०, २६, ५; ७८३
 कपर्दी ६, ५५, २; ७६०
 कविः ६, ५३, ७; ७४५
 कामेन कृतः ६, ५८, ४; ७७४ । वा. य. ३४, ४२; ७८८
 कृतः कामेन ६, ५८, ४; ७७४ । वा. य. ३४, ४२; ७८८
 गोपाः भुवनस्य १०, १७, ३; ७७५
 जनश्रीः ६, ५५, ६; ७६४
 जारः खलुः ६, ५५, ४-५; ७६२-६३
 तवस् ६, ५८, ४; ७७४
 लुविजातः १, १३८, १; ७२८
 दरमः १, ४२, १०; ७२७
 दस्ववर्चाः ६, ५८, ४; ७७४
 दलः १, ४२, ५; ७२२ । ६, ५६, ४; ७६८
 दिवः सुबन्धुः ६, ५८, ४; ७७४
 दिधिष्ठुः मातुः ६, ५५, ५; ७६३
 देवः १, ४२, १; ७१८ । १३८, २; ७२९ । ६, ५५, ६; ७६४ ।
 ५८, २; ७७२ । १०, २६, ४; ७८२
 देवासः यं सूर्यायै अदुः ६, ५८, ४; ७७४
 देवैः समः श्रिया ६, ४८, १९; ७३८

धारा रायः ६, ५५, ३; ७६१
 धियं जिन्वः ६, ५८, २; ७७२
 धीवतोधीवतः सखा ६, ५५, ३; ७६१
 नपात् विमुचः १, ४२, १; ७१८ । ६, ५५, १; ७५९
 नियुद्रथः १०, २६, १; ७७९
 नावः यस्य हिरण्ययीः अन्तः समुद्रे चरन्ति अन्तरिक्षे चरं
 ६, ५८, ३; ७७३
 नौभिः यः सूर्यस्य दूत्यां याति ६, ५८, ३; ७७३
 पतिः शुचस्य १०, २६, ३; ७८४
 पतिः शुचायाः १०, २६, ६; ७८४
 पतिः आशीषमाणायाः १०, २६, ६; ७८४
 पथस्पतिः ६, ५३, १; ७३९
 परः मल्लैः ६, ४८, १९; ७३८
 पशुपाः ६, ५८, २; ७७२
 पुरुष्टुतः ६, ५६, ४; ७६८
 पुष्टीनां इनः १०, २६, ७; ७८५
 पूषा [प्रायः सर्वत्र ।]
 पृथिव्याः सुबन्धुः ६, ५८, ४; ७७४
 प्रजानन् १०, १७, ५-६; ७७७-७८
 प्रत्यर्षिः यज्ञियानाम् १०, २६, ५; ७८३
 भुवना संवक्षाणः ६, ५८, २; ७७२
 भुवना संपश्यति ३, ६२, ९; ७३४
 भुवनस्य गोपाः १०, १७, ३; ७७५
 भुवने विश्वे अर्पितः ६, ५८, २; ७७२
 भ्राता इन्द्रस्य ६, ५५, ५; ७६३
 मखः १, १३८, १; ७२८
 मघवा ६, ५८, ४; ७७४
 मतीनां साधनः १०, २६, ४; ७८२
 मनुर्हितः १०, २६, ५; ७८३
 मनुमत् (मः-संबो) १, ४२, ५; ७२२ । ६, ५६, ४; ७६८
 मयोभूः १, १३८, १-२; ७२८-२९
 मल्लैः परः ६, ४८, १९; ७३८
 महः राघसः ईशानः ६, ५५, २; ७६०
 मातुः दिधिष्ठुः ६, ५५, ५; ७६३
 यज्ञानां प्रत्यर्षिः १०, २६, ५; ७८३
 यावयत्सखः विप्रस्य १०, २६, ५; ७८३
 रथानां अश्वहयः १०, २६, ५; ७८३
 रथी ऋतस्य ६, ५५, १; ७५९
 रथीतमः ६, ५५, २; ७६० । ५६, २-३; ७६३-६७

ररिवान् १,१३८,४; ७३१
 राधसः महः ईशानः ६,५५,२; ७६०
 रायः धारा ६,५५,३; ७६१
 राशिः वसोः ६,५५,३; ७६१
 वचस्या कृतः वा. य. ३४,४२; ७८८
 वसोः राशिः ६,५५,३; ७६१
 वाजस्पत्यः ६,५८,२; ७७२
 वाजानां पतिः १०,२६,७; ७८५
 वाजी ६,५५,४; ७६२
 वासोवायः अवीनाम् १०,२६,६; ७८४
 विद्वान् १०,१७,३; ७७५
 विप्रः १०,२६,२; ७८०
 विप्राणां आधवः १०,२६,४; ७८२
 विमुचः नपात् १,४२,१; ७१० । ६,५५,१; ७५९
 विश्वा अभि विपश्यति ३,६२,९; ७३४
 विश्वस्य अर्थिनः सखा १०,२६,८; ७८६
 विश्वे भुवने अर्पितः ६,५८,२; ७७२
 विश्वसौभगः १,४२,६; ७२३

वृषा १०,२६,३; ७८०
 शृण्वन् ६,५४,८; ७५६
 शुचस्य पतिः १०,२६,६; ७८४
 शुचायाः पतिः १०,२६,६; ७८४
 श्रवः इच्छमानः ६,५८,३; ७७३
 श्रुतः आरात् ६,५६,५; ७६९
 सखा ६,५५,२,५; ७६०,७६३ । १०,२६,७; ७८५
 सखा विश्वस्य अर्थिनः १०,२६,८; ७८६
 समः देवैः श्रिया ६,४८,१; ७३०
 सर्ववीरः १०,१७,५; ७७७
 साधनः मतीनाम् १०,२६,४; ७८२
 सुबन्धुः दिवः पृथिव्याः च ६,५८,४; ७७४
 सूरः ७,५६,३; ७६७
 स्वयः ६,५८,४; ७७४
 स्वधावान् ६,५८,१; ७७१
 स्वसुः जारः ६,५५,४-५; ७६२-६३
 स्वस्तिदाः १०,१७,५; ७७७
 हिरण्यवाशीमत्तमः १,४२,६; ७२३

पूषादेवताया उपमासूची ।

अजिरं न १,१३८,२; ७२९ त्वा यामनि स्तोमैः प्र कृण्वे ।
 इन्दुः न १०,२६,५; ७८१ सः सुष्टुतीनां वेद ।
 उष्ट्रः न १,१३८,२; ७२९ त्वं मृधः पीपरः ।
 (यथा) वेः प्रीवाः ६,४८,१७; ७३६ एवा सूरः मा अहः ।
 हतोः इव अच्छिद्रस्य ६,४८,१८; ७३७ दधन्वतः ते सख्यं-- ।
 योः इव ६,५८,१; ७७१ त्वं असि ।

यथा नष्टं पशुम् १,२३,१३; ७१५ हे पूषन्...धरुणं दिवः ।
 यथा पुरा ६,४८,१९; ७३८ तथा नः त्वं नूनं अव ।
 यथा मृधः ऋणवः १,१३८,२; ७२९ त्वा स्तोमैः प्र कृण्वे ।
 गोभिः यवं न चर्कषत् १,२३,१५; ७१७ स मह्यं इन्दुभिः ।
 वधूयुः योषणां इव ३,६२,८; ७३३ वाजयन्तीं धियं अव ।
 रथं न वाजसातये ६,५३,१; ७३९ वयं त्वा धिये अयुज्महि ।

[४] भगः ।

अदितेः पुत्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
 अन्धः अ. ६,१२९,३; ८०३
 आहितः वृक्षेषु ६,१२९,३; ८०३
 उग्रः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
 जितः ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८
 देवः X अ. ३,१६,५; १७०

पुत्रः अदितेः ३,१६,५; १७०
 पुनःसरः अ. ६,१२९,३; ८०३
 पुर एता ७,४१,५; ७९३ । अ. ३,१६,५; १७०
 प्रणेता ७,४१,३; ७९४ । अ. ३,१६,३; १६९
 प्रविद्वान् अ. ५,२६,९, ८००
 भगः [प्रायः सर्वत्र ।]

× अत्र ' देवाः ' इति ऋग्वेदपाठः । अथर्व. ३,१६,२-३,५, १६८-७० = ऋग्वेद ७,४१,२-३,५; ७९३-९४,७९६
 समाना एव ।

भगवान् ७,४१,५; ७९६ । अ. ३,१६,५; १७०
मघवा ७,४१,४; ७९५
वसुविद् ७,४१,६; ७९७
विधर्ता ७,४१,२; ७९३ । अ. ३,१६,२; १६८

वृक्षेषु आहितः अ. ६,१२९,३; ८०३
शांशपः अ. ६,१२९,१; ८०१
सत्यराधः ७,४१,३; ७९४ । अ. ३,१६,३; १६९
सुयुजः अ. ५,२६,९; ८००

भगदेवताया उपमासूची ।

अश्वः कनिकदद् अ. २,३०,५; ७९८ भगेन अहं सहागमम् ।
दधिक्रावा इव शुचये पदाय ७,४१,६; ७९७ उषसः अध्वराय ।

रथं इव अश्वः वाजिनः ७,४१,६; ७९७ उषसः अवीचीनं भगं ।
सविता भगः सूर्या इव अ. १४,१,५३; ८०६ प्रजया परि धत्ताम् ।

(७) विष्णुः ।

अकुमारः १,१५५,६; ८३२
अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
अदाभ्यः १,२२,१८; ८२०
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
अन्यरूपः समिधे ७,१००,६; ८४७
अपोर्णते व्रजम् (यः) १,१५६,४; ८३६
अप्रतीता [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
अवृकः १,१५५,४; ८३०
आरोहन् त्रिविधम् अ. १७,१,१०; १४३
इनः १,१५५,४; ८३०
इन्द्रस्य युज्यः सखा १,२२,१९; ८२१
उत्तरं सधस्थं अस्वभायत् १,१५४,१; ८२४ । अ. ७,२६,
१; ८६१
उरुक्रमः १,१५४,५; ८२८
उरुगायः १,१५४,१,३,६; ८२४, ८२६, ८२९ । ७,१००,१;
८४२ । वा. य. ८,१; १०७, ८६०
ऋक्भिः विमिमानः १,१५५,६; ८३२
ऋतस्य गर्भः १,१६५,३; ८३५
एवयाः १,१५६,१; ८३३
एवयावन् (घा) ७,१००,२; ८४३
कुचरः १,१५४,२; ८२५ । अ. ७,२६,२; ८६२
गर्भः ऋतस्य १,१५६,३; ८३५
गिरिक्षित् १,१५४,३; ८२६
गिरिष्ठाः १,१५४,२; ८२५ । अ. ७,२६,२; ८६२
गोपाः १,२२,१८; ८२०
घृतासुतिः १,१५६,१; ८३३
तन्वा मात्रया परः वृधानः ७,९९,१; ८३८

नवसः ७,१००,५; ८४६
तवीयान् तवसः ७,१००,३; ८४४
त्राता १,१५५,४; ८३०
त्रिविधं आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
त्रिधातु दाधार १,१५४,४; ८२७
त्रिस (घ) धस्थः १,१५६,५; ८३७
दक्षं उत्तमं अहर्विदं दाधार १,१५६,४; ८३६
देवः ७,९९,१-२; ८३८-३९
दैव्यः १,१५६,५; ८३७
धर्माणि धारयन् १,२२,१८; ८२०
नवीयाः १,१५६,२; ८३४
ना ८,२५,१५; ३५८
नाकं ऋष्यं उदस्तभ्राः ७,९९,२; ८३९
पार्थिवानि रजांसि विममे १,१५४,१; ८२४
पूर्ववृत्तौ [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
पूर्यः १,१५६,२-३; ८३४-८३५
पृथिव्याः प्राचीं ककुभं दाधर्थ ७,९९,२; ८३९
बृहच्छरीरः १,१५५,६; ८३२
ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
मीमः मृगः न १,१५४,२; ८२५
भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
मीढ्वान् १,१५५,४; ८३० । ८,२५,१४; ३५७
युवा १,१५५,६; ८३२
वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
विचक्रमाणः त्रेधा १,१५४,१; ८२४ । अ. ७,२६,१; ८६१
विभूतद्युम्नः १,१५६,१; ८३३

विमिमानः ऋकभिः १,१५५,६; ८३२
 विष्णुः× [प्रायः सर्वत्र ।] अ. १७,१,६-१९; १३२-५२
 वीरतमा वीर्येभिः [वरुणश्च] वा. य. ८,५९; ८७७
 वृधानः तन्वा मात्रया परः ७,९९,१; ८३८
 वृषा १,१५४,३,६; ८२६,८२९
 वेधाः १,१५६,२,५; ८३४,८३७
 व्रजं अपोर्णुते १,१५६,४; ८३६
 शविष्ठा [वरुणश्च] वा. य. ८,५२; ८७०
 शिपिविष्टः ७,९९,७, ८४१ । १००,५-६; ८४६-८४७
 शेष्यः १,१५६,१; ८३३
 सखा युज्यः इन्द्रस्य १,२२,१९; ८२१

सखिवान् १,१५६,४; ८३६
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 सप्रथाः १,१५६,१; ८३३
 समिधे अन्यरूपः ७,१००,६; ८४७
 सहोभिः पत्येते [वरुणश्च] ८,५९; ८७७
 सुकृत्तरः १,१५६,५; ८३७
 सुजनिमा ७,१००,४; ८४५
 सुमज्जानिः १,१५६,२; ८३४
 स्थविरः ७,१००,३; ८४४
 खर्दश् १,१५५,५; ८३१

विष्णुदेवताया उपमासूची ।

चक्रं न १,१५५,६; ८३२ विष्णु वृत्तं व्यतीन्...अर्वाविपत् । मित्रः न १,१५६,१; ८३३ शेष्यः सुप्रथाः भव ।
 दिविः इव चक्षुः १,२२,२०; ८२२ सूरयः विष्णोः तत्पदं । मृगः न १,१५४,२; ८२५ भीमः कुचरः गिरिष्ठा प्र सवते ।

विष्णोः विक्रमणम् ।

१,२२,१६; ८१८ विष्णुः विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ।
 १,२२,१७, ८१९ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
 १,२२,१८; ८२० त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।
 १,१५४,१; ८२४ विचक्रमाणल्लेधोरुगायः ।
 अ. ७,२६,१; ८६१ विचक्रमाणल्लेधोरुगायः ।
 १,१५४,२; ८२५ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेऽपि क्षियन्ति ।
 अ. ७,२६,३; ८६३ भुवनानि विश्वा ।
 १,१५४,३; ८२६ य इदं दीर्घं प्रथतं सधस्थमेको विममे

त्रिभिरित्पदेभिः ।
 १,१५५,४; ८३० यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुक्कमिष्ट ।
 ७,१००,३; ८४४ त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चं
 महित्वा ।
 ७,१००,४; ८४५ वि चक्रमे पृथिवीमेष एताम् ।
 १,१५५,५; ८३१ द्वे इदस्य क्रमणे खर्दशोऽभिख्याय मलौ
 भुरण्यति । तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति
 वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥

विष्णोः पदम् ।

१,२२,१७; ८१९ ...विष्णुः...त्रेधा नि दधे पदम् ।
 समूहस्य पांसुरे ॥
 १,२२,२०; ८२२ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
 १,२२,२१; ८२३ तद्विप्रासो ... समिन्धते । विष्णोर्यत्
 परमं पदम् ॥

१,१५४,४; ८२७ यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा
 स्वधया मदन्ति ।
 १,१५४,५; ८२८ विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।
 १,१५४,६; ८२९ अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदम्
 भाति भूरि ।

(८) विवस्वान् ।

राजा अ. ६,११६,१; ८८०

वैवस्वतः अ. ६,११६,१-२; ८८०-८८१

× अत्र अथर्व १७,१,६-१९; १३९-१५२ मंत्रेषु वर्तमानानि पदानि विष्णुस्वरूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य सन्ति ।

(९) संवत्सरः कालः ।

संवत्सरपञ्चकम् ।

संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
परिवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५
इदावत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६
इद्वत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६
वत्सरः वा. य. ३०,१५; ८८६

संवत्सरावयवाः ।

उषसः वा. य. २७,४५; ८८५
अहोरात्राः वा. य. २७,४५; ८८५
अर्धमासाः वा. य. २७,४५; ८८५
मासाः वा. य. २७,४५; ८८५
ऋतवः वा. य. २७,४५; ८८५
संवत्सरः वा. य. २७,४५; ८८५

संवत्सरकालयो गुणबोधकपदानि ।

संवत्सरः ।

पतिः एकाष्टकायाः अ. ३,१०,८; ८८७
सुपर्णचित् वा. य. २७,४५; ८८५

कालः ।

ईश्वरः सर्वस्य अ. १९,५३,८; ८९९
देवः परमो नु अ. १९,५३,५; ९०६
देवः प्रथमो नु अ. १९,५३,२; ८८३
पिता प्रजापतेः अ. १९,५३,९; ९००
ब्रह्म अ. १०,५३,९; ९००

(१०) ऋतवः ।

द्वादशदेवाः, संवत्सरस्य दंष्ट्राः । अ. ११,६,२२; ९६८

ऋतूनां नामानि ।

वसन्तः वा. य. २१,२३; ९४० । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६
ग्रीष्मः वा. य. २१,२४; ९४१ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
वर्षाः, वर्षाणि वा. य. २१,२५; ९४२ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
शारदः, शारदः वा. य. २१,२६; ९४३ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९
हेमन्तः वा. य. २१,२७; ९४४ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।
शैशिरः वा. य. २१,२८; ९४५ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।

ऋतवयवानां मासानां नामानि ।

मधुः, माधवः वा. य. ७,३०; ९३१ । १३,२५; ९३२
शुक्रः, शुचिः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,६; ९३३
नभः, नभस्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,१५; ९३४
इषः, ऊर्जः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,१६; ९३५
सहः, सहस्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,२७; ९३६
तपः, तपस्यः वा. य. ७,३०; ९३१ । १५,५७; ९३८
अंहसरूपतिः वा. य. ७,३०; ९३१

‘ हविरिन्द्रे वयो दधुः ’ इति । वा. य. २१,२३-२८; ९४०-४५
मन्त्रेषु इन्द्रे हविराद्याधाने वसन्तादीनामितरैः सह सहकारित्वम् ।

ऋतुनाम । देवाः । स्तोमनाम । पृष्ठ (साम) नाम । मंत्रांकः

वसन्तः	वसवः	त्रिवृत्	रथन्तरम्	२१,२३; ९४०
ग्रीष्मः	रुद्राः	पञ्चदशः	वृद्धत्	२१,२४; ९४१
वर्षाः	आदित्याः	सप्तदशः	वैरूपम्	२१,२५; ९४२
शारदः	ऋभवः	एकविंशः	वैराजम्	२१,२६; ९४३
हेमन्तः	मरुतः	त्रिणवः	शाकरम्	२१,२७; ९४४
शैशिरः	अमृताः	त्रयस्त्रिंशः	रैवतम्	२१,२८; ९४५

व्रात्यस्य (ब्रह्मचारिणः) मासानां गोप्त्रादयः ।

[अथर्व० १५-४ सूक्तं । ९५३-६४]

दिङ्नाम । गोप्त्रारौ । अनुष्ठातारौ । मंत्रांकः ।

प्राची वासन्तौ मासौ वृद्धत् रथन्तरं च । २-३; ९५३-५४
दक्षिणा ग्रैष्मौ मासौ यज्ञायज्ञिर्यं वामदेव्यं च । ५-६; ९५५-५६
प्रतीची वार्षिकौ मासौ वैरूपं वैराजं च । ८-९; ९५७-५८
उदीची शारदौ मासौ शैत्यं नौधसं च । ११-१२; ९५९-६०
ध्रुवा हैमनौ मासौ भूमिः अग्निः च । १४-१५; ९६१-६२
ऊर्वा शैशिरौ मासौ यौः आदित्यः च । १७-१८; ९६३-६४

(१०) ऋतवः । (ऋग्वेद-संहिता)

सूक्तमंत्र- क्रमांकः	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	सोमपान- पात्रम्	मन्त्रोक्त- देवतापदम् (१,१५।२,३६-३७)	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	कात्यायन- सर्वानुक्रमण्युक्ता देवताः	सोमपान- पात्रम्	सूक्तमंत्र- क्रमांकः ।
१,१५,			उभयत्र				२,३६,
१,१०७ ऋतुना	...		इन्द्रः	...	मधुः	होत्रम्	१,११९
२,१०८ ऋतुना	पोत्रम्		मरुतः	...	माधवः	पोत्रम्	२,१२०
३,१०९ ऋतुना	...		त्वष्टा	...	शुक्रः	...	३,१२१
४,११० ऋतुना	...		अग्निः	...	शुचिः	आग्नीध्रम्	४,१२२
५,१११ ऋतून् अनु	ब्राह्मणम्		इन्द्रः	...	नभः	ब्राह्मणम्	५,१२३
६,११२ ऋतुना	...		मित्रावरुणौ	...	नभस्यः	प्रशाजम्	६,१२४
[सायनभाष्यानुसारेण]							
७,११३		द्रविणोदाः	ऋतुभिः	इषः	होत्रम्	१,१२५
८,११४		द्रविणोदाः	ऋतुभिः	ऊर्जः	पोत्रम्	२,१२६
९,११५ ऋतुभिः	नेष्ट्रम्		द्रविणोदाः	ऋतुभिः	सहः	नेष्ट्रम्	३,१२७
१०,११६ ऋतुभिः	तुरीयम्		द्रविणोदाः	होत्रपोत्रनेष्ट्रतुरीयाणि	४,१२८
११,११७ ऋतुना	...		अश्विनौ	५,१२९
१२,११८ ऋतुना	..		अग्निः	ऋतुना	तपस्यः	...	६,१३०

२।३६ सूक्ते मंत्रेषु ऋतुवाचकपदस्य अभावः । कात्यायन सर्वानुक्रमण्यां देवतानामानि, मासानां नामानि, न तु ऋतूणाम् ।

(११) चन्द्रमाः ।

अधिपतिः नक्षत्राणाम् अ. ५,२४,१०; ९८६
 अप्पु अन्तः वा. य. ३३,९०; ९७९ । अ. १८,४,८९;
 ९८३
 अहो केतुः ऋ. १०,८५,१९; ९७२
 आयन् देवेभ्यः भागं वि दधाति १०, ८५,१९; ९७२
 एति कनिकदत् वा. य. ३३,९०; ९७९
 केतुः अहाम् वा. य. ३३,९०; ९७९
 चन्द्रः वा. य. २२,२८; ९७५
 चन्द्रमाः (सर्वत्र)
 जातः मनसा ऋ. १०,९०,१३; ९७३ । वा. य. ३१,२२;
 ९७८
 जायते पुनः वा. य. २३,१०; ९७७
 जायमानः नवः नवः ऋ. १०,८५,१९; ९७२
 देवः अ. ११,६,७; ९९१

नक्षत्रैः उदक्कामत् अ. १९,१९,४; ९९०
 नक्षत्राणां अधिपतिः अ. ५,२४,१०; ९८६
 नक्षत्राणां ईशे अ. ६,८६,२; १०००
 पिशङ्गं रयि बहुलं पुरुस्पृहं एति वा. य. ३३,९०; ९७९
 वत्सः दिशो धेनूनाम् अ. ४,३९,८; ९९९
 वृत्रहा अ. १९,२७,२; ९९२
 शतवृष्यः अ. १,३,४; ९८०
 शरस्य पिता अ. १,३,४; ९८०
 सुपर्णः दिवि आ धावते वा. य. ३३,९०; ९७९ । अ. १८,
 ४,८३; ९८९
 सोमः यं आहुः चन्द्रमाः अ. ११,६,७; ९९१
 हरिः वा. य. ३३,९०; ९७९
 आयुर्वेदप्रकरणे ।
 अन्तरिक्षेण पतति अ. ६,८०,१; १५८८

अवचाकशत् विश्वा भूता अ. ६,८०,१; १५८८
जन्म अप्सु अ. ६,८०,३; १५९०
दिव्यः श्वा अ. ६,८०,१,३; १५८८, १५९०
महिमा अनाः पृथिव्याम् ६,८०,३; १५९०
महिमा अन्तः समुद्रे ६,८०,३; १५९०
श्वा दिव्यः अ. ६,८०,१,३; १५८८, १५९०
सधस्थं दिवि अ. ६,८०,३; १५९०

चन्द्ररश्मयः ।
विद्युतः ऋ. १,१०५,१; ९८९
हिरण्यनेमयः ऋ. १,१०५,१; ९८९
चन्द्रस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः ।
अर्चिः अ. २,२२,३; ९८३
तपः अ. २,२२,१; ९८१
तेजः अ. २,२२,५; ९८५
शोचिः अ. २,२२,४; ९८४
हरः अ. २,२२,२; ९८२

(१२) रात्रिः ।

अन्तः महान्तः महिमानः अस्याम् अ. ३,१०,४; १०७७
अमर्त्या १०,१२७,२; १००४
अमावास्या रात्रिः अ. १,१६,१; १०१७
अश्वत्थमा अ. १९,४९,१; १०५२
आयती १०,१२७,२,३; १००३, १००५
इषिरा अ. १९,४९,१; १०५२
उपार्यती [धेनुः वा] अ. ३,१०,२; १०७५
उर्वी अ. १९,४७,२; १०३१
उशती अ. १९,४९,२,८; १०५३, १०५९
केशाः [रात्री भवति] अ. १५, २, ५, १३, २१, २९;
१०२१-१०२४
घृताची नाम वै असि अ. १९,४८,६; १०४४
चक्षुष्मती अ. १९,४९,८; १०५९
चित्रावसुः वा. य. ३,१८; १०३१
जनित्री अ. ३,१०,४; १०७७
ज्योतिषा तमः बाधते १०,१२७,२; १००४
ज्योतिषा मुज्योतिः वा. य. ३७,२१; १०१६
तमः अप हासते १०,१२७,३; १००५
तमः ज्योतिषा बाधते १०,१२७,२; १००४
तमस्वती अ. १९,४७,२; १०३१
त्वेषं ते तमः आ वर्तते वा. य. ३४,३२; १०१५
दमूनाः अ. १९,४९,१; १०५२
दिवः दुहिता १०,१२७,८; १०१०। अ. १९,४७,५; १०३४
दुहिता दिवः १०,१२७,८; १०१० ।
देवी १०,१२७,१-३; १००३-५
धेनुः [धेनुः वा] अ. ३,१०,२; १०७५

नवगत वधूः [धेनुः वा] अ. ३,१०,४; १०७७
पत्नी संवत्सरस्य [धेनुः वा] अ. ३,१०,२; १०७५
पिशङ्गिला वा. य. २३,१२; १०१२
पुरुत्रा १०,१२७,१; १००३
प्रतिमा संवत्सरस्य ३,१०,३; १०७६
प्रथमा या व्यौच्छत् [धेनुर्वी] अ. ३,१०,४; १०७७
प्रविष्टा आसु इतरासु [धेनुर्वी] अ. ३,१०,४; १०७७
बृहती वा. य. ३४,३२; १०१५
भद्रा अ. १९,४७,२,७; १०३१, १०३३ । ४९,२; १०५३
भद्राहं अस्तु रात्री अ. ६,१२८,२; १०३०
माता अ. १९,४८,२; १०४०
माता वनस्पतेः सिलाचीनाम्याः अ. ५,५,१; १०२०
माता हिमस्य अ. १९,४९,५; १०५६
युवतिः अ. १९,४९,१,८; १०५२, १०५९
योषा अ. १९,४९,१; १०५२
रात्रिः [प्रायशः सर्वत्र]
रात्रिः तस्मात् [ब्रह्मणः] अजायत अ. १३,४,३०; १०१९
रात्र्याः सः [ब्रह्मा] अजायत अ. १३,४,३०; १०१९
रेवती अ. १९,४७,४; १०३३
वर्या अ. १९,४९,३; १०५४
वाजिनी अ. १९,४७,४; १०३३
विभाती अ. १९,४९,४; १०५५
विभावरी अ. १९,४८,२,४; १०४०, १०४२ । ५०,७;
१०५१ । ४९,६; १०५७
विश्वा भ्रियः अधि अधित १०,१२७,१; १००३
संवत्सरस्य पत्नी अ. ३,१०,२; १०७५

संवत्सरस्य प्रतिमा अ. ३,१०,३; १०७६
 सम्मृतश्रीः अ. १९,४९,१; १०५२
 सुभगा अ. १९,४९,३,५; १०५४,१०५६। अ. १९,५०,६;
 १०५०

सुमङ्गली अ. ३,१०,२; १०७५
 सुन्नयि [संबो०] अ. १९,४७,४; १०३३
 सुहवा अ. १९,४९,१,५; १०५२,१०५६
 हिमस्य माता अ. १९,४९,५; १०५६

रात्रिदेवताया उपमासूची ।

यथा इत् अन्यान् उपायसि अ. १९,५०,६; १०५० अस्मान्
 भोजय ।
 ऋणा इव १०,१२७,७; १००९ कृष्णं तमः यातय ।
 अल्लावाः गम्भीरं इव अ. १९,५०,३; १०४७ अरातयः रात्रि न ।
 गाः इव १०,१२७,८; १०१० हे उषः ते उष आकरम् ।
 चमसः न अ. १९,४९,८; १०५९ विष्टः ।
 दिव्याः न अ. १९,४९,८; १०५९ क्षामं उक्थाः ।

मित्रः इव अ. १९,४९,२; १०५३ स्वधाभिः अभि तिष्ठते ।
 राजा इव अ. १९,४९,६; १०५७ जोषसे अस्य सोमस्य ।
 वृक्षे न वसति वयः १०,१२७,४; १००६ वयं ते अविष्महि ।
 (यथा) शाम्याकः प्रपतन्नपवान् १२,५०,४; १०४८ एवा रात्रि
 प्र पातय ।
 स्तोमं न ऋ. १०,१२७,८; १०१० हे रात्रि...जिग्युषे ।

(१३) पूर्णिमा ।

पूर्णा पश्चात् अ. ७,८०,१; १०७९
 पूर्णा पुरस्तात् अ. ७,८०,१; १०७९
 पूर्णा मध्यतः अ. ७,८०,१; १०७९
 पौर्णमासी अ. ७,८०,१; १०७९। अ. १५,२,१४; १०८९

प्रथमः अपानः व्रातस्य अ. १५,१६,१; १०८२
 प्रथमा यज्ञिया अह्नां रात्रीणां अतिशर्वरेषु अ. ७,८०,४;
 १०८१
 यज्ञिया अ. ७,८०,४; १०८१

(१४) राका ।

रराणा सहस्रपोषम् २,३२,५; १०८४
 राका २,३२,४-५; १०८३-८४
 सुभगा २,३२,४-५; १०८३-८४

सुमनाः २,३२,५; १०८४
 सुस्तु (ङु) ती २,३२,४; १०८३
 सुहवा २,३२,४; १०८३

(१५) अमावास्या ।

अमावास्या अ. ७,७९,१-४; १०८५-८८। अ. १५,२,१४;
 १०८९। १६,३; १०९०। १७,९; १०९१
 ऊर्जं दुहाना अ. ७,७९,३; १०८७
 ऊर्जं पुष्टं वसु आवेशयन्ती अ. ७,७९,३; १०८७

विश्ववारा अ. ७,७९,१; १०८५
 ब्राह्मस्य तृतीयः अपानः अ. १५,१६,३; १०९०
 संगमनी वसूनाम् अ. ७,७९,३; १०८७
 सुभगा अ. ७,७९,१; १०८५

(१६) सिनीवाली ।

अभियन्ती अ. ७,४६,३; १०९४
 इन्द्रं प्रतीची अ. ७,४६,३; १०९४
 देवानां खसा अ. २,३२,६; १०९२

देवी अ. ७,४६,३; १०९४
 पृथुष्टका अ. २,३२,६; १०९२
 बहुसूवरी अ. २,३२,७; १०९३

विश्वपत्नी अ. २,३२,७; १०२३ । ७,४६,३; १०९४
विष्णोः पत्नी अ. ७,४६,३; १०९४
सहस्रस्तुका अ. ७,४६,३; १०९४
सिनीवाली [प्रायशः सर्वत्र]
सु+अं (=खं) गुरिः अ. २,३२,७; १०९३
सुकपर्दा वा. य. ११,५६; ९

सुकुरीरा वा. य. ११,५६; ९
सुबाहुः अ. २,३२,७; १०९३
स्रस्र (पू) मा अ. २,३२,७; १०९३
स्त्रसा देवानाम् अ. २,३२,६; १०९२
स्त्रौपशा वा. य. ११,५६; ९

(१७) कुट्टः ।

उशती अ. ७,४७,२; ११०५
कुट्टः अ. ७,४७,१-२; ११०४-५
चिकितुषी अ. ७,४७,२; ११०५
देवानां अमृतस्य पत्नी अ. ७,४७,२; ११०५

देवी अ. ७,४७,१; ११०४
विद्यनापस अ. ७,४७,२; ११०४
सुकृत अ. ७,४७,१; ११०४
सुहवा अ. ७,४७,१; ११०४
हव्या अ. ७,४७,२; ११०५

(१८) नक्षत्राणि ।

अष्टाविंशानि अ. १९,८,२; ११३०
चित्राणि अ. १९,७,१; ११२४
जवानि भुवने अ. १९,७,१; ११२४
रोचनानि अ. १९,७,१; ११२४
त्राल्यस्य चतुर्थो व्यानः अ. १५,७,४; ११२३
शग्मानि अ. १९,८,२; ११३०
शिवानि अ. १९,८,२; ११३०
नक्षत्राणि अस्य ब्रह्मणः रूपम् अ. ९,७,१५; १११८
इदं ब्रह्म अन्यत् नक्षत्रम् अ. १०,२,२३; ११२१
सरीसृपाणि अ. १९,७,१; ११२४

नक्षत्राणां राजा ।

नक्षत्रराजा अ. ६,१२८,४; १११७
शक्रधूमः अ. ६,१२८,४; १११७

क्रमशः नक्षत्राणां नामानि ।

१ कृत्तिका अ. १९,७,२; ११२५
२ रोहिणी अ. १९,७,२; ११२५
३ मृगशिरः अ. १९,७,२; ११२५
४ आर्द्रा अ. १९,७,२; ११२५
५ पुनर्वसू अ. १९,७,२; ११२५
६ पुष्यः अ. १९,७,२; ११२५

७ आश्लेषा अ. १९,७,२; ११२५
८ मघा अ. १९,७,२; ११२५
९ पूर्वा अ. १९,७,३; ११२६
१० फल्गुन्यौ अ. १९,७,३; ११२६
११ हस्तः अ. १९,७,३; ११२६
१२ चित्रा अ. १९,७,३; ११२६
१३ स्वाति अ. १२,७,३; ११२६
१४ विशाखे अ. १९,७,३; ११२६
१५ अनुराधा अ. ११,७,३; ११२६
१६ ज्येष्ठा अ. १२,७,३; ११२६
१७ मूलम् अ. १९,७,३; ११२६
१८ पूर्वा अषाढा अ. १९,७,४; ११२७
१९ उत्तरा अषाढा अ. २९,७,४; ११२७
२० अभिजित् अ. १९,७,४; ११२७
२१ ध्रुवणः अ. १९,७,४; ११२७
२२ शतभिषग् अ. १९,७,५; ११२८
२३ द्वया अ. १९,७,५; ११२८
२४ प्रोष्ठपदा अ. १२,७,५; ११२८
२५ रेवती अ. १९,७,५; ११२८
२६ अश्वयुजौ अ. १९,७,५; ११२८
२७ भरण्याः अ. १९,७,५; ११२८

निपातभाक्-अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

उशान् विश्वान् देवान् २,३७,६; ९३०
 ऋतावान् ७,६२,३; ५६०
 गोप्ता अ. १७,१,३०; १६३
 चन्द्रः ७,६२,३; ५६०
 तुरीयः अ. १,१६,१; १०१७
 युक्षः १,१३६,६; २०८
 ना ८,२५,१५; ३५८
 पृथिव्याः वशी अ. ६,८६,२; १०००
 ब्रह्मा वा. य. ४,११; १६६
 भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
 भेषकं हिमस्य वा. य. २३,१०; ९९७
 मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
 यज्ञः वा. य. ४,११; १६६

यज्ञानीः १,१५,१२; ९१८
 यातुहा अ. १,१६,१; १०१७
 वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
 वशी पृथिव्याः अ. ६,८६,२; १०००
 वसुः २,३७,३; ९३०
 विप्रः २,२६,४; ९२२
 विश्वान् देवान् उशान् २,३७,६; ९३०
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 होता २,३६,४; ९२२
 द्रविणांदा अग्निः ।
 अरिषण्यन् २,३७,३; ९२७
 धृष्णुः २,३७,३; ९२७
 वनस्पतिः २,३७,३; ९२७

निपातभाक्-इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
 अक्षितः अ. ७,८१,६; ६८४
 अक्षितं भक्षयन् अ. ७,८१,६; ६८४
 अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५
 आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
 आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३
 ईड्यः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 ईशिषे सर्वस्य जगतः २,३६,१; ९१९
 ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३,८३; १२०
 गृणानः दिवः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 गोजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
 त्राता मरुताम् वा. य. १८,२०; ६७
 त्रिदिवम् आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३
 दिवः गृणानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 देवः वा. य. ८,२; १०८
 युक्षः १,१३६,६; २०८
 ना ८,२५,१५; ३५८
 पुरुहूतः अ. १७,१,११; १४४
 प्रथमः २,३६,१; ९१९
 प्रद्यौः २,३६,५; ९२३

प्रियधामा अ. १७,१,१०; १४३
 ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५
 भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
 भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
 भूर्णिः ८,२५,१५; ३५८
 मीढ्वान् ८,२५,१४; ३५७
 वनीयान् ८,२५,१५; ३५८
 वशी ८,६७,८; १२
 वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५
 विश्वजित् अ. १७,१,१२; १४४
 विषासहिः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 श्रुतः ८,६७,८; ९२
 सजोषाः ८,२५,१४; ३५७
 सन्धनाजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सर्वविद् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहमानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३,८३; १२०
 सहीयान् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सहोजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 सासहानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८
 स्वर्जितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८

निपातभाक्-सोमदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अन्धः २,३७,३; ९२७
अमर्त्यः २,३७,४; ९२८
अमृतः २,३७,४; ९२८
आमृतः इन्द्राय २,३६,५; ९२३
तदोक्तः इन्द्रवः १,१५,१; ९०७
तुरीयं पात्रं (पात्रस्थम्) २,३७,४; ९२८
नृम्णवर्धनः २,३६,५; ९२३
प्रयः २,३७,४; ९२८
प्रस्थितम् २,३६,४; ९२२

प्रहृतः २,३६,१; ९१९
बाह्वोः सहः ओजः हितः (इन्द्रस्य) २,३६,५; ९२३
मत्सरासः (इन्द्रवः) १,१५,१; ९०७
मधु २,३६,४; ९२२
राजा अ. ५,२१,११; १८१
वषट्कृतः २,३६,१; ९१९
सुतः २,३६,५; ९२३
हितः २,३७,४; ९२८

निपातभाक्-मरुदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अजिषु प्रियाः २,३६,२; ९२०
उग्राः अ. ५,२१,११; १८१
ऋषिभिः शुभ्रासः २,३६,२; ९२०
दिवः नरः २,३६,२; ९२०
नरः ८,२५,१५; ३५८
नरः दिवः २,३६,२; ९२०
पृथिमातरः अ. ५,२१,११; १८१
पृथतीभिः यामन् २,३६,२; ९२०
प्रियाः अजिषु २,३६,२; ९२०
भरतस्य सूनवः २,३६,२; ९२०

भूर्णयः ८,२५,१५; ३५७
मीढ्वीपः ८,२५,१४; ३५७
यज्ञैः संमिश्राः २,३६,२; ९२०
यामन् पृथतीभिः २,३६,२; ९२०
वनुषः (वर्नीयांसः) ८,२५,१५; ३५८
शुभ्रासः ऋषिभिः २,३६,२; ९२०
सजोषसः ८,२५,१४; ३५७
संमिश्राः यज्ञैः २,३६,२; ९२०
सुदानवः १,१५,२; ९०८
सूनवः भरतस्य २,३६,२; ९२०

निपातभाक्-अश्विनौदेवताया गुणबोधकपदानि ।

दीद्यमी १,१५,११; ९१७
नरौ ८,२५,१५; ३५८
पुष्करस्तजा अ. ५,२५,३; १०९९
भूर्णी अ. ५,२५,३; १०९९
मीढ्वीसौ अ. ५,२५,१४; ३५७

यज्ञवाहसा १,१५,११; ९१७
वनीयांसौ ८,२५,१५; ३५८
बाजिनीवसू २,३७,५; ९२९
शुचित्रता १,१५,११; ९१७
सजोषसौ ८,२५,१४; ३५७

निपातभाक्-बृहस्पतिदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितः अ. ७,८१,६; ६८४
अक्षितं भक्षयन् अ. ७,८१,६; ६८४
अथर्वा अ. ४,१,७; १७७
आप्याययन् अंशुम् अ. ७,८१,६; ६८४
ऋतस्थाः दिवः अ. ४,१,४; १७४

ऋतस्थाः पृथिव्याः अ. ४,१,४; १७४
कविः अ. ४,१,७; १७७
गोपाः भुवनस्य अ. ७,८१,६; ६८४
जनिता विश्वेषाम् अ. ४,१,७; १७७
दिवः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७४
देवः पूर्व्यः अ. ४,१,६; १७६

देवता अ. ४,१,६; १७६
 देवबन्धुः अ. ४,१,७; १७७
 पिता अ. ४,१,७; १७७
 पूर्यः देवः अ. ४,१,६; १७६
 पृथिव्याः ऋतस्थाः अ. ४,१,४; १७४
 प्रजानन् अ. २,२६,२; १०३८

भक्षयन् अक्षितम् अ. ७,८१,६; ६८४
 भुवनस्य गोपाः अ. ७,८१,६; ६८४
 महान् अ. ४,१,४; १७४
 विश्वेषां जनिता अ. ४,१,७; १७७
 सम्राट् अ. ४,१,५; १७५
 स्वधामान् अ. ४,१,७; १७७

अदितेः, आदित्यानां च पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२०] १।४१।६ (कण्वो घौरः । आदित्याः)
 विश्वं लोकमुत्त स्मना ।

(अग्निः १४५६) ८।८४।३ (उशना काव्यः । अग्निः)
 रक्षा लोकमुत्त स्मना ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२२] २।२७।२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।

(३३१) ७।६४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 मित्रो अर्यमा ... वरुणो जुषन्त ।

[२४] २।२७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)

देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

(विश्वे देवाः ११९) १।१६४।२१ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
 विश्वे देवाः)

इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

[२७] २।२७।७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य जमं ।

(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमी वैवस्वती ऋषिका ।
 यमः)

... ... वरुणस्य धाम ।

[२९] २।२७।३ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।

(इन्द्रः १६६७) ५।२९।१ (गौरिवीतिः शाकल्यः । इन्द्रः)

[३७] २।२७।१७ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः)
 = २।२८।११ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)

= (विश्वे देवाः १५७) २।२९।७ (कूर्मो गार्त्समदो,
 गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)

माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाज्ञ आ विहं शूनमापेः ।
 मा रायो राजन्सुखमादध स्यां बृहद्भदेम विदधे सुवीराः ॥

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४१] ७।५२।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यन्वयध्वे ।

(विश्वे देवाः ३९९) ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । आदित्याः)

मा व एनो अन्यकृतं भुजेम ... ।

[४३] ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त ।

(विश्वे देवाः ४९५) ७।४२।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।
 [४३] ७।५२।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
 रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।
 (४७२) ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
 सवितुरियानः ।
 [४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
 यदद्य सूर उदिते ।
 (५२) ७।६६।१२ सूक्तैः सूर उदिते ।
 (विश्वे देवाः ५३०) ८।२७।१२ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वे देवाः)
 यदद्य सूर उद्यति ।
 विश्वदेवसो मध्यन्दिने ।
 (विश्वे देवाः ५३२) ८।२७।२१ यदद्य सूर उदिते ..
 मध्यन्दिने । विश्वदेवसो ... ।

[४५] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
 सुवाति सविता भगः ।
 (४५४) ५।८२।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
 [४६] ७।६६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
 उत स्वराजो अदितिः ।
 (इन्द्रः ३०१) ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 उत स्वराजो अदितिः ।
 [४७] ७।६६।७ प्रति वां सूर उदिते ।
 (६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रवरुणाः)
 [५०] ७।६६।१० अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
 (अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 [५२] ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
 यूयमृतस्य रथ्यः ।
 (विश्वे देवाः ५६१) ८।८३।३ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५४] ८।१८।१ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 एषां सुभ्रं भिक्षेत मर्त्यः ।
 (मरुतः ६०) ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 [५६] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (विश्वे देवाः २३८) ४।५५।१० (वामदेवो गौतमः ।
 विश्वे देवाः)
 [५६] ८।१८।३ भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)
 रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 [५६] ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 वरुणो मित्रो अर्यमा । अर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।
 (विश्वे देवाः ७९८) १०।१२६।७ (कुलमलर्बर्हिषः शैल्यषिः
 अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)
 वरुणो ... । अर्म ... सप्रथ आदित्यासो यदीमहे ।
 [३] ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । अदितिः)
 अंहोभिर्दुरुचक्रयः ।
 (२७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 [५७] ८।१८।१० (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 अप सेवत दुर्मतिम् ।

(आयुर्वेदः २३०८) १०।१७५।२ (ऊर्ध्वग्रावा सर्प
 आर्जुदिः । प्रावाणः)
 [५९] ८।१८।१२ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 तत् सु नः.....आदित्या यन्मुमोचति ।
 (९९) ८।६७।१८ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः
 बह्वो ना मरस्या जालबद्धाः । आदित्याः)
 तत् सु नो...आदित्या ... ।
 [६१] ८।१८।१४ दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।
 (अश्विनौ २२४) २।४१।८ (गुत्समदः शौनकः । अश्विनौ)
 दुःशंसो मर्त्यो रिपुम् ।
 [६३] ८।१८।१६ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
 आ अर्म पर्वतानां अपां वृणीमहे ।
 ८।३१।१० (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
 आ अर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।
 [६८] ८।१८।२१ नृवद् वरुण ऋत्यम् ।
 (विश्वे देवाः ५६२) ८।८३।४ (कुसीदी काण्वः ।
 विश्वे देवाः)
 वामं वरुण ऋत्यम् ।
 [६९] ८।१८।२२ प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन ।
 १०।५९।५ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः अश्वनीतिः)
 जीतावसे सु प्र तिरा न आयुः ।

- [७१] ८।१९।३५ (सोमरिः काण्वः । आदित्याः)
स्यामेहतस्य रथ्यः ।
(५२) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
यूयमृतस्य रथ्यः ।
- [७५] ८।४७।१ (त्रित आप्यः । आदित्याः)
महि वो महतामवो ।
(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः
बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
- [७९] ८।४७।१ वरुण मित्र दाशुषे ।
(२९४) ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्र दाशुषः ।
- [७९-८४] ८।४७।१-१३ (त्रित आप्यः । आदित्यः)
अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।
(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्यः ।
आदित्योषसः)
- [७६] ८।४७।१ स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।
(इन्द्रः ९) १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
- [८०] ८।४७।९ अदितिः शर्म यच्छतु ।
६।७५।१२ (पायुर्भरिद्वाजः । इषवः)
- [८०] ८।४७।९ (त्रित आप्यः । आदित्याः)

- माता मित्रस्य रेवतो अर्यम्णो वरुणस्य ।
(विश्वे देवाः ५९६) १०।३६।३ (लुशा धानाकः । विश्वे देवाः)
माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
- [८०] ८।४७।२ अर्यम्णो वरुणस्य च ।
(२०४) १।१३६।२ (परच्छेपो द्योदासिः । मित्रावरुणौ)
- [८५] ८।६७।१ (मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मन्यः बहवो वा
मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
सुमृतीकाँ अभिष्टये ।
(६) ८।६७।१० सुमृतीकामभिष्टये ।
- [८८] ८।६७।४ महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् ।
(७९) ८।४७।१ (त्रित आप्यः । आदित्याः)
... वरुण मित्र दाशुषे ।
- [८८] ८।६७।४ वरुण मित्रार्यमन् ।
(२७४) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [८८] ८।६७।४ अवांस्या वृणीमहे ।
८।२६।२१ (विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाजिरसः । वायुः)
- [९०] ८।६७।६ तेना नो अधि वोचत ।
(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
- [९९] ८।६७।१८ आदित्या यन्मुमोचति ।
(५९) ८।१८।१२ (इरेम्बिठः काण्वः । आदित्याः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१८५] ३।५९।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।
(विश्वे देवाः ४६५) ७।३६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)
जनं च मित्रो यातयति ब्रुवाणः ।
- [१८५] ३।५९।१ मित्रो दाधार वृथिवीमुत स्याम् ।
(विश्वे देवाः ४००) ६।५१।८ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
नमो दाधार ... ।
- [१८५] ३।५९।१ मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ।
(आयुर्वेदः ८३७) ७।४७।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः)
सिन्धुभ्यो हव्यं ... ।
- [१८७] ३।५९।३ अनमीवास इळया मदन्तः ।
(विश्वे देवाः १८९) ३।५४।२० (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः)

- ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
- [१८८] ३।५९।४ तस्य वयं सुमतौ यजियस्यापि मदे
सौमनसे स्याम ।
(अग्निः ४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
- [१९३] ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
जनाय वृक्तवर्हिषे ।
(अग्निः ९०५) ५।२३।३ (युष्मो विश्ववर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
जनासो वृक्तवर्हिषः ।
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभूवसुराजिरसः । इन्द्रः)
जनासो वृक्तवर्हिषः ।
(अश्विनौ ४००) ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
जनासो वृक्तवर्हिषः ।
(इन्द्रः २७९) ८।६।३७ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
जनासो वृक्तवर्हिषः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [१९६] १।२।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।
(३३६) ७।६।१।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।
(२५५) ५।६।१।१ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे ।
- [१९७] १।२।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृषौ ।
(२२२) १।१५।१।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।
- [२०१] १।२।६ (मेधातिथिः काण्वः । मित्रावरुणौ)
कर्ता नः सुराधसः ।
(इन्द्रः १४६५) ३।५।३।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
करदिशः सुराधसः ।
- [२०३] १।२।६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
ता सन्नाजा घृतासुती ।
(२३५) २।४।१।६ (गुत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
- [२०४] १।२।६।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।
(८०) ८।४।७।९ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
मित्रस्य ... अर्यम्णो वरुणस्य च ।
- [२०५] १।२।६।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सचेते ... । ... आदित्या दातुनस्पती ।
(२३५) २।४।१।६ (गुत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)
आदित्या दातुनस्पती । सचेते ... ।
- [२०६] १।२।६।४ अयं मित्राय वरुणाय श्रुतमः ।
(सोमः ९७६) २।१०।४।३ (पर्वतनारदौ काण्वौ,
काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । पवमानः सोमः)
यथा मित्राय ... ।
- [२१०] १।२।७।१ अस्मन्ना गन्तमुप नः ।
(२१२) १।२।७।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
- [२१०] १।२।७।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
सोमः शुक्रा गवाक्षिरः ।
(सोमः ५०५) २।६।४।२८ (कश्यपो मारीचः । पवमानः
सोमः)
- [२११] १।२।७।२ सोमासो दध्याक्षिरः ।
(इन्द्रः १८) १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
- [२१२] १।२।७।२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
(अश्विनौ ४५) (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
- [२१२] १।२।७।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
चारुर्दताय पीतये ।
(सोमः १४४) २।१७।८ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
- [२१२] १।२।७।३ अंशुं दुहन्त्यद्विभिः सोमं दुहन्त्यद्विभिः ।
(सोमः ५२२) २।६।५।१५ (भृगुर्वांरुणिर्जमदग्निर्भार्गवो
वा । पवमानः सोमः)
तीव्रं दुहन्त्यद्विभिः ।
- [२१६] १।१५।१।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
ऋतावानावृतावृषौ बृहत् ।
(३५०) ८।२५।४ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
... .. घोषतो बृहत् ।
- [२२२] १।२।५।२ ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।
(१९७) १।२।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
ऋतेन मित्रावरुणौ ।
- [२२५] १।२।५।४ प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।
(३२४) ७।६।१।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
शंसा मित्रस्य ।
(आयुर्वेदः १९५९) १०।१०।६ (यमो वैवस्वत ऋषिः ।
यमो)
- बृहन्मित्रस्य ।
(इन्द्रः २६६९) १०।८९।८ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)
प्र ये मित्रस्य ।
(२७) २।२७।७ (कूर्मो गात्सर्मदो, गुत्समदो वा । आदित्यः)
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य ।
(अग्निः १७६१) ४।५।४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
... वरुणस्य धाम ... मित्रस्य ।
- [२२६] १।२।५।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
अनश्नो जातो अनभीशुर्वर्वा ।
४।३६।१ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
... .. अनभीशुरुक्थो ।

[२१८] १।१५२।७ आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टि ।
 (३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गन्धूतिमुक्षतम् ।
 (२३६) ३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 [२२९] १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)

हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
 (इन्द्रः ३१५९) ४।४२।९ (त्रसदस्युः पौरुत्तस्यः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
 (इन्द्रः ३१९२) ७।८४।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२३३] २।४१।४ (गृत्समद [आत्तिरसः शौनहोत्रः पश्वाद्]
 भार्गवः शौनकः)
 अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
 (अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 अयं वां मधुमत्तमः सुतः... ।

[२३५] २।४१।६ ता सन्नाजा घृतासुती ।
 (२०३) १।१२६।१ (परच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 [२३५] २।४१।६ आदित्या दानुनस्पती । सचेते ।
 (२०५) १।१३६।३ (परच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 सचेते... । आदित्या दानुनस्पती ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२३६] ३।६२।१६ (विश्वामित्रो गाथिनः जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गन्धूतिमुक्षतम् ।
 (३३९) ७।६५।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
 आ नो मित्रावरुणा ... घृतैर्गन्धूतिमुक्षतमिळाभिः ।
 (अश्विनौ ३८९) ८।५।६ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 घृतैर्गन्धूतिमुक्षतम् ।
 [२३८] ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)
 गृणाना जमदग्निना ।
 (आयुर्वेदः १०८०) ७।९६।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 सरस्वती)
 गृणाना जमदग्निवत् ।

(अश्विनौ ५७९) ८।१०१।८ (जमदग्निर्भार्गवः ।
 अश्विनौ)
 गृणाना जमदग्निना ।
 (सोमः ४४१) ९।६२।१४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः
 सोमः)
 गृणानो जमदग्निना ।
 (सोमः ५३२) ९।६५।२५ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो
 वा । पवमानः सोमः)
 गृणानो जमदग्निना ।
 [२३८] ३।६२।१८ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 पातं सोममृतावृधा ।
 (अश्विनौ ४१) १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२५५] ५।६४।१ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 वरुणं वो रिषादसम् ।
 (१९६) (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)
 वरुणं च रिषादसम् ।

[२५६] ५।६४।२ विश्वासु क्षासु जोगुवे ।
 (अग्निः २८१) १।१२७।१० (परच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 [२६३] ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ऋतावृध ऋतावाना जनेजने ।

- [३६९] ८।१०१।२ (जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ)
राजाना ... ।
- (२७७) ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।
- [२६६] ५।६५।५ स्याम सप्रथस्तमे ।
(अग्निः २६८) १।९४।१३ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
स्याम...सप्रथस्तमे ।
- [२६६] ५।६५।५ अनेहसस्त्वोतयः ।
(७२-८४) ८।४७।१-१३ अनेहसो व ऊतयः ।
(उषा १८७-९१) ८।४७।१४-१८ (त्रित आप्त्यः ।
आदित्यः)
- [२७०] ५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ता वामेषे रथानाम् ।
(इन्द्रः ३०४३) ५।८६।४ (अत्रिर्मौमः । इन्द्राग्नी)
- [२७१] ५।६६।४ नि केतुना जनानाम् ।
(आयुर्वेदः ७७७) १।१९१।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
अप्तृणसूर्याः)
नि केतवो जनानाम् ।
- [२७४] ५।६७।१ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
वरुण मित्रार्थमन् ।
(८८) ८।६७।४ (मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणः
बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः)
(विश्वे देवाः ७९३) १०।१२६।२ (कुलमबर्हिषः
शैलूषिः अंहोसुखा वामदेव्यः । विश्वे देवाः)
- [२७५] ५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
आ यद्योनिं हिरण्यथं ... सद्यः ।
(सोमः ४९७) ९।६४।२० (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
आ यद्योनिं हिरण्यथं ... सीदति ।
- [२७५] ५।६७।२ धर्तारा चर्षणीनाम् ।
(इन्द्रः ३१३५) १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः ।
इन्द्रावरुणौ)
- [२७६] ५।६७।३ वरुणो मित्रो अर्थमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)
१।४१।१ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्थमणः)
- [२७६] ५।६७।३ पान्ति मर्त्यं रिषः ।
१।४१।२ (शुनःशेष आजीगर्तिः । वरुणमित्रार्थमणः)

- [२७७] ५।६७।४ ऋतावानो जनेजने ।
(२३६) ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना ... ।
- [२७७] ५।६७।४ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ते हि ... । अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।
(३) ८।१८।५ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
ते हि ... । अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।
- [२८६] ५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)
प्रातर...मध्यंदिन उदित्ता सूर्यस्य ।
(अश्विनौ २८९) ५।७६।३ (अत्रिर्मौमः । अश्विनौ)
- [२९२] ५।७१।१ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
आ नो गन्तं रिषादसा ।... इमम् ।
(अश्विनौ ४३७) ८।८।१७ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
... रिषादसेमम् ।
- [२९३] ५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
ईक्षाना पिप्यतं धियः ।
(इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी)
(सोमः १५३) ९।१९।२ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
- [२९४] ५।७१।३ उप नः सुतमा गतम् ।
(इन्द्रः ८१) १।१६।४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
उप ... गहि ।
- [२९४] ५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः मित्रावरुणौ)
वरुण मित्र दाशुषे ।
(७२) ८।४७।२ (त्रित आप्त्यः । आदित्याः)
वरुण मित्र दाशुषे ।
- [२९४] ५।७१।३ अस्य सोमस्य पीतये ।
(अश्विनौ ५) १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
- [२९५-९७] ५।७२।१-३ नि बर्हिषि सद्यं (३ सद्यं)
सोमपीतये ।
- [२९७] ५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
जुषेतां यज्ञमिष्टये ।
(अश्विनौ २९९) ५।७८।३ (सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)
जुषेतां यज्ञमिष्टये ।
(इन्द्रः ३०९४) ८।३८।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
जुषेतां यज्ञमिष्टये ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०७] ६।६।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मित्रावरुणौ)
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते ।

(अश्विनौ ३७१) ७।७।१४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अश्विनौ)
प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३०९] ७।५०।१ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
मा मां पद्येन रपसा विवत् स्मरुः ।
(अग्निः १२११) ७।५०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)
(विश्वे देवाः ५०८) ७।५०।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)

[३१०] ७।६०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।
(विश्वे देवाः ३८४) ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः ।
विश्वे देवाः)

विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

[३१०] ७।६०।२ ऋतु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[३११] ७।६०।३ अयुक्त सप्त हरितः सधस्थात् ।
(५५०) १।११।५।४ (कुत्स आश्विनसः । सूर्यः)

[३११] ७।६०।३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।
(अग्निः ६६४) ४।१।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव...जनिमान्स्थुम ।

[३१२] ७।६०।४ उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ।
(अश्विनौ २३८) ४।४।५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।

[३१२] ७।६०।४ आ सूर्यो अरुद्वल्लुकमर्णः ।
(विश्वे देवाः ३१८) ५।४।५।१० (सदापृण आत्रेयाः ।
विश्वे देवाः)

[३१२] ७।६०।४ मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
(विश्वे देवाः १४१) १।१८।३।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
विश्वे देवाः)

[३१३] ७।६०।५ शन्मासः पुत्रा अदितेरद्वधाः ।
२।१८।३ (कूर्मो गार्त्स्यमदो, गृत्समदो वा । वरुणः)
यूयं नः पुत्रा... ।

[३१४] ७।६०।६ अपि कर्तुं सुचेतसं वतन्तः ।
(अग्निः ११३३) ७।३।१० = ७।४।१० (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)
अपि कर्तुं सुचेतसं वतेम ।

[३१५] ७।६०।११ वाजस्य सानौ परमस्य रायः ।
(अग्निः ७३६) ४।१।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।

[३१५] ७।६०।११ उरु क्षयाय चक्रिरे ।
(अग्निः ७५) १।२६।८ (कण्वो घोरः । अग्निः)
[३२०] ७।६०।१२ = (३२७) ७।६।१७ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गां पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[३२१] ७।६।१ अग्नि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
(इन्द्रः ३००८) १।१०८।१ (कुत्स आश्विनसः । इन्द्राग्नी)
वामसि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

[३२४] ७।६।४ शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम ।
(२२५) १।१५।२।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)
प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

[३२६] ७।६।६ समु वां यज्ञं महयं नमोभिः ।
(विश्वे देवाः ४९७) ७।३।२।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।
विश्वे देवाः)

समु वो यज्ञं महयं ... ।

[३२७] ७।६।७ = (३२०) ७।६०।१२

[३२८] ७।६।४ आवाभूमी अदितेः त्रासीयां नः ।
(विश्वे देवाः २२२) ४।५।५।१ (वामदेवो गौतमः ।
विश्वे देवाः)

[३२९] ७।६।५ श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।
(विश्वे देवाः ८७) १।१२।१।६ (कक्षीवान् दीर्घतमस
औशिजः । विश्वे देवाः)

[३३०] ७।६३।६ = ७।६३।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[३३१] ७।६३।१ मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
(२२) २।२७।२ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा ।
आदित्यः)

[३३५] ७।६४।५ = (३४०) ७।६५।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

एष स्तोमो वरुणो मित्रं तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[३३५] ७।६४।५ = (३४०) ७।६५।५
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।
(इन्द्रः ३३२४) ४।५०।११ (वामदेवो गौतमः ।
इन्द्रावृहस्पती)

[३३६] ७।६५।१ प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ।
(६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रावरुणाः)
प्रति वां ... विधेम ।

[३३६] ७।६५।१ मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।
(१९६) १।१।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

... पूतदक्षं वरुणम् ।

[३३८] ७।६५।३ अपो न नावा दुरिता तरेम ।
(इन्द्रः ३१६८) ६।६८।८ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
इन्द्रावरुणौ)

[३३९] ७।६५।४ आ नो मित्रावरुणा... घृतैर्गन्ध्यूतिमुक्षतम् ।
(२३६) ३।६२।१६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।
मित्रावरुणौ)

[३३९] ७।६५।४ प्रति वामत्र वरमा जनाय ।
(अश्विनौ ३५९) ७।७०।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः
अश्विनौ)

प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।

[३४०] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
[३४०] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
[३४२] ७।६६।२ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
असुर्याय प्रमहसा ।
(३४३) ८।२५।३ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)

[३४६] ७।६६।२९ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
पातं सोममृतावृषा ।
(अश्विनौ ४१) १।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३४७] ८।२५।१ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।
(अग्निः १२९९) ८।२३।३० (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।

[३४९] ८।२५।३ = (३४२) ७।६६।२
[३५०] ८।२५।४ = (२१६) १।१५।१४ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
मित्रावरुणौ)

[३५३] ८।२५।७ अग्निं यूथेव पश्यतः ।
(अग्निः ६६४) ४।२।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
आ यूथेव ... पश्ये ।

[३५४] ८।२५।८ साम्राज्याय सुकृत् ।

१।२५।१० (शुनःशेष आजीर्गतिः । वरुणः)
साम्राज्याय सुकृत्तुः ।

[३६१] ८।२५।१८ उमे आ पमो रोदसी महिष्वा ।
(विश्वे देवाः १८४) ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वीर्यो वा । विश्वे देवाः)

[३६७] ८।२५।२४ विप्रा नविष्ठया मती ।
(इन्द्रः ९२६) १।८२।२ (गोतमो राह्वगणः । इन्द्रः)

[३६९] ८।२०।१२ (जमदग्निर्भार्गवः । मित्रावरुणौ)
राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
(२६३) ५।६५।२ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

[३६९] ८।२०।१२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
(अश्विनौ ४५) १।४७।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[४०६] १।२१।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)
सखाय आ नि धीदत ।

(सोमः २७४) ९।१०४।१ (पर्वतनारदौ काण्वौ,
काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । पवमानः सोमः)

[४०७] १।२४।३ (आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो
देवरातः । सविता)
ईशानं वार्याणाम् ।
(इन्द्रः १५) १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
[४१०] १।३५।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
हिरण्ययेन सविता रथेन ।
(अश्विनौ २५५) ४।४४।५ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ ।
अश्विनौ)
हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
(अश्विनौ ४१८) ८।५।३५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः ।
अश्विनौ)
हिरण्ययेन रथेन ।
[४१६] १।३५।८ हिरण्याक्षः सविता देव आगात् ।

(४३३) १।३८।४ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः
पश्चाद्] भार्गवः शौनकः । सविता)
अरमतिः सविता— ।
[४२६] १।३५।८ दधद् रत्ना दाशुषे वार्याणि ।
(अश्विनौ ३९) १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
धत्तं रत्नानि दाशुषे ।
[४१७] १।३५।२ उभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
१।२६०।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । द्यावापृथिवी)
द्यावापृथिवी... । धिषणे अन्तरीयते ।
[४१८] १।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)
सुमृळीकः स्वर्वा यास्वर्वाह् ।
(अश्विनौ १२७) १।११८।१ (कर्षीवान् औशिजो
दीर्घतमसः । अश्विनौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[४२०] १।३८।१ (गृत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्]
भार्गवः शौनकः । सविता)
उदु ष्य देवः सविता सवाय ।
(४६१) ६।७१।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
... सविता हिरण्यया ।
(४६४) ६।७१।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
... सविता दमूना हिरण्यपाणिः ।

(४६७) ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
... सविता ययाम हिरण्यधीम् ।
[४२३] १।३८।४ = (४१६) १।३५।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।
सविता)
[४३०] १।३८।११ (गृत्समदः शौनकः । सविता)
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति ।
(अग्निः ११५४) ७।८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[४४३] ४।५४।३ (वामदेवो गौतमः । सविता)
अचिन्ती यत् चक्रेमा दैव्ये जने ।
७।८९।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । वरुणः)
यत् ... दैव्ये जने... ।

चरामसि ... अचिन्ती ॥
[४४६] ४।५४।६ आदित्येर्नो अदितिः शर्मं यंसत् ।
(विश्वे देवाः ६५) १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः ।
विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[४५३] ५।८२।२ अस्य हि स्वयशस्तरम् ।
(अग्निः ८७७) ५।१७।२ (पूरुरात्रेयः । अग्निः)
[४५३] ५।८२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
न मिनन्ति स्वराज्यम् ।

(इन्द्रः २४४०) ८।९३।११ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४५४] ५।८२।३ (श्यावाश्व आत्रेयः सविता)
सुवाति सविता भगः ।
(४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)

[४५७] ५।८१।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
विश्वा वामानि धीमहि ।

(अश्विनौ ४८९) ८।२१।१८ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
(अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[४६१] ६।७१।१ उदु व्य देवः सविता हिरण्यया ।
(४२०) २।३८।१ ... देवः सविता सवाय ।

[४६३] ६।७१।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता)
रक्षा माकिनो अवशंस ईष्यत ।

६।७५।२० (पायुर्भारद्वाजः । ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावा-
पृथिवी-पूषाणः)

[४६४] ६।७१।४ उदु व्य देवः सविता दमूना ।

(४२०) २।३८।१ (युत्समद [आङ्गिरसः शौनहोत्र
पश्वाद्] भार्गवः शौनकः । सविता

... .. सविता सवाय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४६७] ७।३८।१ = (४२०) २।३८।१

[४६७] ७।३८।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हिरण्ययीममर्ति यामशिध्रेत् ।

(इन्द्रः १३५२) ३।३८।८ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापति-
र्वाक्यो वा विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)

[४७२] ७।३८।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता, [उत्तरार्धः-
भगो वा])

रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।

(४३) ७।५१।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः)
... .. रियानाः ।

[४७३] ७।४५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता)
हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।

(अग्निः १२५) १।७२।१ (पराशरः शाकल्यः । अग्निः)

[४७५] ७।४५।३ मर्तमोजनमघ रासते नः ।

(रुद्रः ११) १।११४।६ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः)
रास्ता च नो अमृत मर्तमोजनम् ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४७८] १०।१३९।२ (देवगन्धर्वो विश्वावसुः । सविता)
आपमिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।

(अग्निः २१२) १।७३।८ (पराशरः शाकल्यः । अग्निः)

[४७९] १०।१३९।३ रायो बुध्नः संगमनो वसूनाम् ।

(अग्निः १८८४) १।९६।६ (कुत्स आङ्गिरसः ।
द्रविणोदा अग्निः)

[४७९] १०।१३९।३ देव इव सविता सत्यधर्मा ।

१०।३४।८ (कवष ऐलषः, अक्षो मौजवान् वा । अक्षनिन्दा

[४८१] १०।१४९।२ (अर्चन् हिरण्यस्तूपः । सविता)

अतो द्यावापृथिवी अप्रयेताम् ।

१०।८१।१ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)

आदिद् द्यावापृथिवी अप्रयेताम् ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[५४७] १।११५।१ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

(अग्निः ७४६) (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं ।

(आयुर्वेदः ९९०) ७।१०१।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ

(वृष्टिकामः) कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः

तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

[५४९] १।११५।३ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)
परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ।
(अश्विनौ २३३) ३।५८।८ (विश्वामित्रो गाथिनः ।
अश्विनौ)
परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।
[५५०] १।११५।४ यदेदयुक्त हरितः सधस्यात् ।

(३११) ७।६०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
अयुक्त सप्त हरितः — ।
[५५६] ५।४०।५ (अत्रिर्भौमः । सूर्यः)
यत् त्वा सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
५।४०।९ (अत्रिर्भौमः । अत्रिः)
यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[५५८] ७।६१।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
(इन्द्रः १८७१) ६।१९।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रः)
पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
[५६०] ७।६१।३ ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(विश्वे देवाः ४८७) ७।३९।७ = ७।४०।७ (मैत्रावरुणि-
र्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
[५६४] ७।६३।४ दूरेअर्थस्तरणिर्आजमानः ।
(६७४) १०।८८।१६ (सूर्धन्वानाङ्गिरसां, वामदेव्यो वा ।
सूर्य-वैश्वानरौ)
अप्रयुच्छन् तरणिर्आजमानः ।
[६३१] ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्य (पूर्वार्धः)-
मित्रावरुणौ [उत्तरार्धः])

प्रति वां सूर उदिते ... नमोभिर्मित्रावरुणा ।
(३३६) ७।६५।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
— उदिते सूर्यैर्मित्रं ... वरुणम् ।
(४७) ७।६६।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
[६३१] ७।६३।५ विधेम नमोभिर्मित्रावरुणात हव्यैः ।
(अग्निः ९४८) ६।१।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)
विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।
[५६७] ७।६६।१६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः)
जीवेम अरदः शतम् ।
(६५०) १०।८५।३९ (सूर्यासावित्री ऋषिका ।
सूर्या-सावित्री)
जीवाति अरदः शतम् ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५६८] ८।१०१।११ (जमदग्निर्मर्गिवः । सूर्यः)
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ।

(आयुर्वेदः १०४४) १०।७५।९ (सिन्धुक्षित्प्रैयमेघः । नयः)
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५७३] १०।३७।४ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)
येन सूर्यं ज्योतिषा बाधसे तमः ।
(१००४) १०।११७।९ (कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा
भारद्वाजी । रात्रिः)
ज्योतिषा बाधसे तमः ।
[५७६] १०।३७।७ जीवाः प्रति पश्येम सूर्यं ।
(५८६) १०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)

प्रति पश्येम सूर्यं ।
[५७९] १०।३७।१० तत् सूर्यं द्रविणं वेदि चित्रम् ।
१।२३।१५ (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)
तदस्मात्तु द्रविणं वेदि— ।
[५८०] १०।३७।११ यद् वो देवाश्चक्रुः जिह्वा ।
(आयुर्वेदः १९९०) १०।१५।४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
इमा वो हव्या चक्रुः क्षुष्वम् ।

[५८६] १०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
सुसंदशं त्वा वयं प्रति ।
(इन्द्रः २२७) १।८२।३ (गोतमो राहुगणः । इन्द्रः)
सुसंदशं त्वा वयं मघवन् ।

[५८६] १०।१५८।५ प्रति पश्येम सूर्यं ।
(५७६) १०।३७।७ (सौर्योऽभितपाः । सूर्यः)

[५९०] १०।१७०।४ (विश्राट् सौर्यः । सूर्यः)
विश्राजन्त्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
(इन्द्रः २३६६) ८।९८।३ (नृमेघ आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[६५०] १०।८५।३९ = (५६७) ७।६६।१६

[६५३] १०।८५।४२ विश्वमायुर्व्यश्रुतम् ।

(अग्निः २४६७) १।९३।३ (गोतमो राहुगणः ।
अग्नीषोमौ)
विश्वमायुर्व्यश्रवत् ।

[६५४-५५] १०।८५।४३-४४ शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।
(सोमः १२२३) ६।७४।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
सोमारुद्रौ)
शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ।

[६६०] १०।८८।२ (आङ्गिरसो सूर्यन्वान्, वामदेव्यो वा ।
सूर्यवैश्वानरोऽग्निः)
आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
(अग्निः ६७६) ४।३।११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[६७४] १०।८८।१६ = (५६४) ७।६३।४

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[९०९] १।१५।३ (मेधातिथिः काण्वः । [ऋतवः] त्वष्टा) त्वं हि रत्नधा असि । (अग्निः ११२७) ७।१६।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः) [६९२] १०।१८।६ (संकुमुको यामायनः । त्वष्टा) दीर्घमायुः करति जीवसे वः । (आयुर्वेदः १९७७) १०।१४।१४ (यमो वैवस्वतः । यमः)	दीर्घमायुः प्र जीवसे । [७१७] १।२३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । पूषा) गोभिर्यवं न चर्कषद् । (इन्द्रः १०८६) १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः) यवं न चर्कषद् वृषा ।
--	---

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[७३३] ३।३२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा) बधूयुरिव योषणाम् । (इन्द्रः १४४८) ३।५२।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)	[७३४] ३।६२।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा) यो विश्वामि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । (अग्निः १७१४) १०।१८७।४ (वत्स आमेयः । अग्निः)
--	---

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[७३५] ६।४८।१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । पूषा) अवा अर्यो अरातयः । (इन्द्रः ३०५३) ६।५२।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी) अवा अर्यो अरातयः । [७४३] ६।५३।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । पूषा) पणीनामारया हृदया कवे । (७४५) ६।५३।७ पणीनां हृदया कवे । [७४३-४५] ६।५३।५-७ अथेमस्मभ्यं रन्धय ।	[७४५-४६] ६।५३।७-८ आ रिख किकिरा कृणु । [७४८] ६।५३।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा) गोषणि...अश्वसां वाजसामुव । नृवद्... । (सोमः २०) ९।२।१० (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः) गोषा...नृषा...अश्वसा वाजसा उत । [७५४] ६।५४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा) यजमानस्य सुन्वतः ।
---	--

(इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)	[७६६] ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा) इन्द्रो वृत्राणि जिह्रते । (इन्द्रः ४०१) ८।१७।८ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
[७५६] ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा) ईशानं राय ईमहे । ८।२६।१२ (विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाजिरसः । वायुः) ईशानं राय ईमहे । (इन्द्रः १८२२) ८।४६।६ (वशोऽद्वयः । इन्द्रः) (इन्द्रः ५२५) ८।५३ [बाल० ५] । १ (मेघ्यः काण्वः । इन्द्रः)	[७८७] १०।२६।९ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुक्रदा । पूषा) इमं नः शृणवद्वचम् । (अग्निः १३३१) ८।४३।२२ (विरूप आजिरसः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[७९६] ७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः) वयं भगवन्तः स्याम ।	(विश्वे देवाः १३८) १।१६४।४० (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)
--	---

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[८२०] १।२२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः) त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः । (इन्द्रः ३१४) ८।१२।२७ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः) यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे । [८२३] १।२२।२१ (मेधातिथिः काण्वः । विष्णुः) तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । (अग्निः ५१७) ३।१०।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः) तं त्वा विप्रा विपन्यवो — । [८२५] १।१५४।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । (इन्द्रः २८४०) १०।१८०।२ (जय ऐन्द्रः । इन्द्रः)	[८२८] १।१५४।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः) नरो यत्र देवयवो मदन्ति । (इन्द्रः २२७८) ७।९७।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रः) [८३०] १।१५५।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः) उरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे । (इन्द्रः ५८६) ८।६३।९ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः) उरु क्रमिष्ट जीवसे । [८४१] ७।२९।७ = ७।१००।७ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विष्णुः) वषट् ते विष्णवांस आ कृणोमि तन्मे जुषस्व क्षिपिविष्ट हव्यम् । वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा न ॥
---	---

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[९२३] २।३६।५ (गुत्समदः शौनकः । [ऋतवः] इन्द्रो नभश्च) तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः—।...पिब । (इन्द्रः २७६१) १०।११६।७ (अमियुतः स्थौरोऽमियूपो वा स्थौरः । इन्द्रः) तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पको ... पिब... । [९२४] २।३६।६ (गुत्समदः शौनकः । [ऋतवः] मित्रा- वरुणौ नभस्यश्च) जुषेयां यज्ञं बोधतं हवस्य मे । (अश्विनौ ५१२) ८।३५।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)	[९२५] २।३७।१ (गुत्समदः [आजिरसः शौनहोत्रः पश्वाद्] भार्गवः शौनकः । द्रविणोदा ऋतवश्च) अध्वर्यवः स पूर्णां वष्टयासिचम् । (अग्निः १२०२) ७।१६।११ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः) द्रविणोदा पूर्णां विवष्टयासिचम् । [९२५] २।३७।१ तस्मा एतं भरत तद्वशो । (इन्द्रः ११५१) २।१४।२ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः) तस्मा एतं भरत तद्वशाय ।
--	---

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[१००३] १०।१२७।१ (कुशिकः सौमरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । रात्रिः) विश्वो अधि श्रियोऽधित । (अग्निः ४०१) २।८।५ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः) विश्वो अधि श्रियो दधे ।	[१००४] १०।१२७।२ ज्योतिषा बाधते तमः । (५७३) १०।३७।४ ज्योतिषा बाधसे तमः । [१०१०] १०।१२७।८ उप ते गा इवाकरम् । (रुद्रः १४) १।११४।९ (कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः) उप ते स्तोमान् ... इवाकरम् ।
---	---

अदितेः, आदित्यानां च
वर्णानुक्रम-सूची ।

अंशो भगो वरुणो	८०८	अदित्यै रास्नासि विष्णोः	८४९	अनेहो मित्रार्यमन्	६८
अक्रविहस्ता सुकृते	२४४	अदित्यै रास्नास्यादितिः	११	अन्तरा मित्रावरुणा	३८१
अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा	३५५	अदित्सन्तं चिदावृणे	७४१	अन्तश्चरति रोचना	६९०
अगन्म स्वः खरगन्म	६२६	अदृश्रमस्य केतवो	५३६, ५९७	अन्नं पूर्वा रासतां मे	११२७
अमिर्मा गोप्ता परि	१६३	अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै	११७	अपचितः प्र पतत	६७८
अमे देवां इहा वह	९१०	अद्या देवा उदिता	५५२	अप त्वं परिपन्थिनं	७२०
अमेस्तनूरसि विष्णवे त्वा	८५३	अद्यो नो देव सवितः	४५५	अप त्वे तायवो यथा	५३५
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि	६५५	अद्य रात्रि वृष्टधूमं	१०३७, १०४५	अपपापं परिक्ष्वं	११३३
अघ्निग्रा विष्णो मा त्वा	८५१	अद्या चिन्नु यद्विषामहे	३७३	अपवासे नक्षत्राणाम्	१११५
अचित्ता यच्चकृमा	४४३	अद्या नो विश्वसौभग	७२३	अपश्यं गोपाम्	६०८
अजाश्वः पशुपा वाजस्पत्यो	७७२	अधारयतं पृथिवीमुत	२४१	अप स्तेनं वासो	१०४९
अति नः सश्वतो नय	७२४	अद्या हि काव्या युवं	२७१	अपादेति प्रथमा	२२४, ३९५
अति विश्वान्यरुहद्	१०५३	अधि या बृहतो दिवो	३५३	अपाद्धोत्रादुत पोत्राद्	९२८
अतो देवा अवन्तु नो	८१८	अध्वनामध्वपते प्र मा	५९६	अपां नपातमवसे	४०४
अथो यानि च यस्मा ह	१०३९	अनमीवास इळया	१८७	अपामीवामप स्निधम्	५७
अदब्धेभिः सवितः	४६३	अनर्वाणो ह्येषां पन्था	५५	अपि द्रुतः सविता देवो	४६९
अदब्धो दिवि पृथिव्यां	१४५	अनश्चो जातो अनमीशुः	२२६	अपो शु ण इयं शरुः	९६
अदर्शि गातुरुखे	२०४	अनागसो अदितये	४५७	अभयं मित्रावरुणौ	३९२
अदाभ्यो भुवनानि	४३७	अनु तन्नो जारुपतिः	४७२	अभि त्वं देवः सवितारम्	४८८
अदितिर्द्यौरदितिः	१	अनु पूर्वाण्योक्या	३६०	अभि त्वा देव सवितः	४०७
अदितिर्न उरुव्यतु	८०	अनु श्रुताममर्ति	२४३	अभि त्वा वर्चसा गिरः	६८६
अदितिर्नो दिवा पशुं	४	अनुहवं परिहवं	११३२	अभि नो नर्थ वसु	७४०
अदिते मित्र वरुणोत	३४	अनेहो न उरुवज्रः	८	अभि यज्ञं गृणीहि नो	९०९

अभि यं देव्यदितिः	४७०	अस्माकं देवा उभयाय	५८०	आ नो गन्तं रिशादसा
अभि ये मिथो वनुषः	४७१	अस्माकमूर्जा रथं	७८७	आ नो मित्र सुदीतिभिः
अभि यो महिना दिवं	१९१	अस्मिन्स्वेतच्छकपूत	३७५	आ नो मित्रावरुणा घृतैः
अभि वर्षतां पयसाभि	९८८	अस्य हि स्वयशस्तरं	४५३	आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टि
अभि स्यवसं नय	७१५	अस्या ऊ षु ण उप	७३१	आ पूषश्चित्रबर्हिषम्
अभीवृतं कृशनैः	४१२	अहगेवाभ्यमावास्या	१०८६	आप्रा रजांसि दिव्यानि
अभिरे विद्युन्नक्षत्रिये	१११४	अदश्च रात्री च	१०६९	आ मा पूषन्नुप द्रव
अभूद् देवः सविता	४४१	अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः	१०६८	आ मां मित्रावरुणेह
अमावास्या च पौर्णमासी	१०८९	अहोरात्रे इदं ब्रूमः	९९७	आ मित्रे वरुणे वयं
अमावास्ये न त्वदेतानि	१०८८	अहोरात्रे ऊर्वष्टावे	१०६४	आ मे धनं सरस्वती
अमूरा विश्वा वृषणौ	३२५	अहोरात्रे गच्छ स्वाहा	१०६२	आ मे महच्छतमिषग्
अमेव नः सुहवा	७०३, ९२१	अहोरात्रे नाषिके	१०७२	आयं गौः पृश्निरकमीद्
अयं वा मित्रावरुणा	२३३	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०६५	आ यद् योनिं हिरण्यं
अयं सहस्रमानवो	६२८	अह्ना प्रत्यङ् ब्राह्म्यो	१०७३	आ यद् वामीयचक्षसा
अयं सहस्रमृषिभिः	१२०	अह्ने पारावतान्	१०१३	आयमगन्तंसंवत्सरः
अयमा यात्यर्यमा	८१०	आ कृष्णेन रजसा	४१०	आयमगन्तसविता क्षुरेण
अयमेक इत्था पुरु	३५९	आगन् देव ऋतुभिः	४४०	आ यातं मित्रावरुणा ३०
अयं मित्राय वरुणाय	२०६	आगन् रात्री संगमनी	१०८७	आयुर्विश्वायुः परि
अयं मित्रो नमस्यः	१८८	आ चिकितान सुकतू	२६८	आ यो विवाय सचथाय
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः	५४२	आजामि त्वाजन्या परि	३८८	आ राजाना मद ऋतस्य
अयुक्त सप्त हरितः	३११	आजासः पूषणं रथे	७६४	आ रात्रि पार्थिवः रजः
अर्धमासाः परुषि ते	१०६६	आ तन् ते दस्र मन्तुमः	७२२	आ रिख किकिरा कृणु
अर्वाञ्चमय ययं	९२९	आ ते रथस्य पूषन्	७८६	आ रोहतायुर्जरसं
अव दिवस्तारयन्ति	६८५	आ ते स्वस्तिमीमहे	७७०	आ वक्षि देवां इह
अव वेदिं होत्राभिः	३१७	आदित्य चक्षुरा दस्त्व	१८०	आ वामश्वासः सुयुजो
अवोरिस्था वां छर्दिषो	३०८	आदित्य नावमारुक्षः	१५८	आ वामृताय केशिनीः
अशीतिभिस्तिष्ठामिः	१६७	आदित्या अव हि ख्यत	८२	आ वां भूषन् क्षितयो
अश्रमदियमर्थमन्	८११	आदित्यानामवसा	३८	आ वां मित्रावरुणा
अश्वा न या वाजिना	३०१	आदित्या विश्वे मरुतः	४०	आ विश्वदेवं सर्पतिं
अश्विना पिबतं मधु	९१७	आदित्यासो अदितयः	४१	आ शर्म पर्वतानाम्
अष्टाविंशानि शिवानि	११३०	आदित्यासो अदितिः	३२	आशसनं विशसनम्
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः	४१६	आदित्या ह जरितः	१६५	आशुभिश्चियान् वि मुचाति
असति सत् प्रतिष्ठितं	१५२	आदित्यो रुद्राः वसवः	१८३	इदं विष्णुर्वि चक्रमे
असंतापं मे हृदयम्	१२६	आ देवो यातु सविता	४७३	इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां
असपत्नं पुरस्तात्	५२४	आधीपर्णा कामशल्यां	३८५	इदं ह नूनमेषां
असावन्यो असुर	३७४	आधीषमाणयाः पतिः	७८४	इदं हिरण्यं गुल्गुलु
अस्तंयते नमो	१५६	आ धेनवो मामतेयम्	२२७	इनो वाजानां पतिः
अस्ति देवा अंहोः	९१	आ न इङ्गाभिर्विदधे	६०२	इन्द्र सोमं पिब ऋतुना
अस्मभ्यं तद्विवो अद्भ्यः	४३०	आ नः प्रजां जनयतु	६५४	इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः

इन्द्रं मित्रं वरुणम्	५५३	उत्तुदस्त्वोत्तुदतु	३८४	ऊती देवानां वयम्	२०९
इम आ यातमिन्दवः	२११	उत्थाय बृहती भव	४०२	ऋक्सामाभ्यामभिहितौ	६३७
इमं स्तोमं सक्रतवो	२२	उत्सूर्यो दिव एति	६२५	ऋजमुक्षण्यायने	३६५
इमं गोष्ठं पशवः	१०९८	उत् सूर्यो बृहदर्क्षीषि	५५८	ऋतमृतेन सपन्ता	२८२
इमं च नो गवेषणं	७६९	उदगादयमादित्यो	१५७, ५४६	ऋतवः पक्षार आर्तवाः	९५१
इमं नो देव सवितः	४९७	उदस्य बाह्व शिथिरा	४७४	ऋतवस्त ऋतुथा पर्व	९४७
इमा उ त्वा पुरुवसो	११८	उदिह्युदिहि० । द्विषश्च	१३९	ऋतवस्तमबध्नार्तवाः	९६५
इमा गिर आदित्येभ्यो	२१	उदिह्युदिहि० । याश्च	१४०	ऋतवस्ते यज्ञं वि	९४८
इमा गिरः सवितारं	४७६	उदु तिष्ठ सवितः	४६८	ऋतव स्थ ऋतावृधः	९३९
इमां त्वमिन्द्र मीद्वः	६५६	उदु त्वं जातवेदसं	५३४	ऋतस्य च वै स सत्यस्य	११३७
इमे चेतारो अनृतस्य	३१३	उदु त्यद् दर्शतं	५६५	ऋतस्य गोपावधि	२४८
इमे दिवो अनिमिषा	३१५	उदु व्य देवः सविता दमूना	४६४	ऋतावान ऋतजाता	५३
इमे मित्रो वरुणो	३१४	उदु व्य देवः सविता ययाम	४६७	ऋतावाना निषेदतुः	३५४
इयं ते पूषन्नाष्ट्रेण	७३२	उदु व्य देवः सविता सवाय	४२०	ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	९५०
इयं देव पुरोहितिः	३२०, ३२७	उदु व्य देवः सविता हिरण्यया	४६१	ऋतुभ्यष्ट्वार्तवैभ्यो	७०९
इयमेव सा या प्रथमा	१०७७	उदु व्य शरणे दिवो	३६२	ऋतुभ्यः स्वाहा	९४६
इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वप्रे	१७२	उदू अर्यो उपपक्तेव	४३५	ऋतूनां च वै स आर्तवानां	१०७१
इयं मद्रां प्र स्तृणीते	२९९	उद्यते नम उदायते	१५५	ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीन्	९६७
इरा पुंश्चली हसो	१०२३	उद्यन्नय मित्रमह	५४४	ऋतून् यज ऋतुपतीन्	९४२
इरावती धेनुमती	८४०	उद्वयं तमसस्परि ज्योतिः	५४३	ऋतेन ऋतमपिहितं	२३९
इरावतीर्वरुण धेनवो	२८५	उद्वयं तमसस्परि स्वः	६००	ऋतेन युप्त ऋतुमिश्च	१६२, ९७१
इषथ्योर्जश्च शारदावृत्	९३५	उद् वां चक्षुर्वरुण	३२१	ऋतेन मित्रावरुणौ	१९७
इषिरा योषा युवतिः	१०५२	उद् वां पृक्षासो मधुमन्तो	३११	ऋतेन यावृतावृधौ	२००
इहैव स्तं मा वि यौष्टं	६५३	उद्वेति प्रसवीता	५६२	ऋधगिरिस्था स मर्त्यः	३६८
उक्षा समुद्रो अरुणः	११५	उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः	५६१	एकादशभिरस्तुवत	९३७
उखां कृणोतु शक्या	१०	उप ते गा इवाकरं	१०१०	एतच्चन त्वो वि चिकेतद्	२२३
उच्छन्त्यां मे यजता	२६१	उप नः सुतमा गतं	२९४	एता देवसेनाः सूर्य	१८२
उत घा स रथीतमः	७६६	उप मा पेपिशत् तमः	१००९	एयमगन् पतिकामा	७९८
उत त्वामदिते मही	६	उपयामगृहीतोऽसि	१०७, ८६०	एष ते योनिश्चन्द्रमाः	९७६
उत नः सिन्धुरपां	३५७	उपयामगृहीतोऽसि मधवे	९३१	एष स्तोमो वरुण	३३५, ३४०
उत नो गोषर्णि धियम्	७४८	उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो	४२०	एष स्व ते तन्वो	९२३
उत यासि सवितः	४५०	उपावीरस्युप देवान्	६९४	एष स्य मित्रावरुणा	३१०
उत वां विष्णु मयासु	२३२	उमाभ्यां देव सवितः	५०१	एहि वां विमुचो नपाद्	७५६
उत स्या नो दिवा मतिः	५	उमे अस्मै पीपयतः	३५	ओर्वप्रा अमर्त्या	१००४
उत खराजो अदितिः	४६	उरु विष्णो विक्रमस्त्रो	८५९	ओषधयो भूतभयम्	८९१
उतादः परुषे गवि	७६७	उरुशंसा नमोवृधा	२३७	कः सप्त खानि वि ततर्द	१०७८
उतेदानीं भगवन्तः	७९५	उर्वश्च मा चमसश्च	१२३	कत्यग्रयः कति सूर्यासः	६७६
उतेशिषे प्रसवस्य	४५१	उषसे नः परि देहि	१०५१	कदा चन प्रयुच्छसि	१०९
उतो स मल्लमिन्दुभिः	७१७	उषाः पुंश्चली मन्त्रो	१०२२	कदा चन स्तरीरसि	१०८

कवी नो मित्रावरुणा	१९८	चन्द्रमा अप्स्वन्तरा	९७२, ९८९	तद् विष्णोः परमं पदं	८२१
कालः प्रजा असृजत	९०१	चन्द्रमा नक्षत्राणाम्	९८६	तद् वो अय मनामहे	५२
कालादापः समभवन्	९०२	चन्द्रमा नक्षत्रैः	९९०	तं नो द्यावापृथिवी	५७५
काले तपः काले ज्येष्ठं	८९९	चन्द्रमा मनसो जातः	९७३, ९७८	तन्मित्रस्य वरुणस्य	५५१
कालेन वातः पवते	९०३	चन्द्र यत् ते तपस्तेन	९८१	तपश्च तपस्यश्च	९३८
काले मनः काले प्राणः	८९८	चन्द्र यत् ते तेजस्तेन	९८५	तमस्य राजा वरुणः	८३६
कालेऽयमङ्गिरा देवो	९०६	चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन	९८३	तमु ष्टुहि यो अन्तः	५२०
कालो अश्वो वहति	८९२	चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन	९८४	तमु स्तोतारः पूव्यं	८३५
कालो भूतिमसृजत	८९७	चन्द्र यत् ते हरस्तेन	९८२	तमृतं च सख्यं च	११३६
कालोऽमृतं दिवमजनयत्	८९६	चन्द्राय स्वाहा चन्द्रमसे	९७५	तमृतवश्चातवाश्च	१०७०
कालो यज्ञं समैरयद्	९०५	चित्तिरा उपवर्हणं	६३३	तराणिर्विश्वदर्शतो	५३७
कालो ह भूतं भव्यं च	९०४	चित्पतिर्मा पुनातु	४८७	तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो	११०८
काव्ययोरराजानेषु	३८२	चित्रं देवानाम्	५४७	तस्य ब्राह्मस्य । यदादित्यम्	१०९१
काव्येभिरदाभ्या	३४४	चित्राणि साकं दिवि	११२४	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य चतुर्थो	११२३
किमिह ते विष्णो परि	८४७	चित्रावसो स्वस्ति ते	१०११	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य तृतीयो	१०९०
कुहं देवो सुकृतं विद्वना	११०४	जीवान् नो अभि धेतन	८९	तस्य ब्राह्मस्य । योऽस्य प्रथमो	१०८२
कुहं देवानाममृतस्य	११०५	जुषेथां यज्ञं बोधतं	४००, ९२४	तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च	९५२
कृष्णं नियानं हरयः	५५४	जोषा सवितर्यस्य ते	५८३	तस्यामू सर्वा नक्षत्रा	१११९
केन देवाँ अनु क्षियति	११२०	जोष्यमे समिधं जोषि	९३०	तां वां धेतुं न वासरीं	२१२
को तु वां मित्रास्तुतो	२७८	ज्योतिष्मतीमदिति	२०५	तां सवितुर्वरेण्यस्य	५००
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	८१३	त आदित्या उरवो	२३	ता अर्षन्ति शुभ्रियः	६८७
गर्भं धेहि सिनीवालि	१०९९	तच्छुद्धैर्वहितं पुरं	६०६	ता जिह्वया सदमेदं	३०५
गर्भो देवानां पिता	५१४	तच्छुद्धैर्वहितं शुक्रं	५६७	तां जुषस्व गिरं मम	७३३
गायत्रेण त्वा छन्दसा	८४८	तत्तदिदस्य पौंस्यं	८३०	ता नः शक्तं पार्थिवस्य	२८१
गाह्वर्येण सन्त्य	९१८	तत् सवितुर्वरेण्यं	४३१	ता नः स्तिपा तनूपा	३४३
गाव इव ग्रामं यूयुधिः	४८३	तत् सवितुर्वृणीमहे	४५२	ता बाहवा सुचेतुना	२५६
गोर्णं भुवनं तमसा	६६०	तत् सु नः शर्म यच्छत	५२	ता भूरिपाशावन्तस्य	३३८
गुदा आसन्तिस्सिनीवाल्याः	१०९६	तत् सु नः सविता भवो	५६	ता माता विश्वेदेसा	३४९
गृणानां जमदग्निना	२३८	तत् सु नो नव्यं सन्त्यसे	९९	ता मे अश्व्यानां	३६६
गृभ्णाभि ते सौभगत्वाय	६४७	तत् सु वां मित्रावरुणा	२४०	तां पूषञ्छिवतमा०	६४८
गृह्णामि ते सौभगत्वाय	८०४	तत् सूर्यस्य देवत्वं	५५०	ता वामियानोऽवसे	२६४
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि	९६९	तत् सूर्यं रोदसी उभे	३६४	ता वामेपे रथानाम्	२७०
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा	९४१	तदमिराह तदु सोम	७२०	ता वां मित्रावरुणा	३७९
ग्रीष्मावेनं मासौ दक्षिणाया	९५६	तदस्य त्रियमभि	८२८	ता वां वास्तुन्युश्मसि	८२९
ग्रीष्मौ मासौ गोप्तरौ	९५५	तदृतं पृथिवि बृहत्	२७९	ता वां विश्वस्य गोपा	३४७
घृतेन त्वा समुक्षामि	९९३	तद् देवस्य सवितुः	४३४	ता वां सम्यग्बुद्धाणा	१८९, ३९७
चक्षुर्नो देवः सविता	५८४	तद् यस्यैवं विद्वान्	१०२५-२९	ता विप्रं धैये जठरं	३०४
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे	५८५	तद् वार्यं वृणीमहे	३५६	ता सम्राजा घृतासुतां	२३५
चतुर्भिः साकं नवतिं च	८३२	तद् विप्रसो विपन्यवो	८२३	ता हि क्षत्रं धारयेथे	३०३

ता हि क्षत्रमविद्वत्	२६९	त्वष्टा दुहित्रे बहत्	६९८	दैव्यावध्वर्यु आ गतः	६०१
ता हि देवानामसुरा	३३७	त्वष्टा मे दैव्यं वचः	७०४	दोषो गाय बृहद्	५१९
ता हि श्रेष्ठवर्चसा	२६३	त्वष्टा युनक्तु बहुधा	६९९	यावाभूमी अदिते	३२८
तिस्रो यावः सवितुः	४१४	त्वष्टा वासो व्यदधात्	८०६	यौरासीत् पूर्वचित्तिः	१०१२
तिस्रो भूमीर्धारयन्	२८	त्वष्टा वीरं देवकामं	६९७	यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो	१७९
तुचे तनाय तत् सु	६५	त्वां विष्णुर्वहन् क्षयो	३९९	यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं	१११०
तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ	९१९	त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः	१४७	द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	११३
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्	६४९	दमूना देवः सविता	५२३	द्रविणोदा ददातु नो	९१४
तुरण्यवोऽङ्गिरसो	४३	दर्शोऽसि दर्शतोऽसि	६८२	द्रविणोदा द्रविणसो	९१३
तृष्टमेतत् कटुकम्	६४५	दिक्षु चन्द्राय समनमन्	९९८	द्रविणोदाः पिपीषति	९१५
ते न आसन्नो वृकाणाम्	९५	दितेः पुत्राणामदितेः	१७	द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं	८८३
तेन भूतेन हविषा	९८७	दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	११२२	द्वे इदस्य क्रमणे	८३१
तेनेषितं तेन जातं	९००	दिवि क्षयन्ता रजसः	३३१	द्वे ते चक्रे सूर्ये	६४२
ते नो भद्रेण शर्मणा	६४	दिवि विष्णुर्व्यक्रस्त	८५२	द्वे समीची बिभृतः	६७४
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं	८७	दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११३५	द्वे सुती अशृणवं	६७३
ते स्याम देव वरुण	४९	दिवो धर्ता भुवनस्य	४३५	द्वौ च ते विशतिश्च ते	१०३४
ते हिन्विरे अरुणं	१०३	दिवो धामभिर्वरुण	३४५	धर्ता दिवो वि भाति	६०७
ते हि पुत्रासो अदितेः	३	दिवो रुक्म ऊरुचक्षा	५६४	धर्मणा मित्रावरुणा	२५४
ते हि ष्मा वनुषो नरो	३५८	दिवो वा विष्ण उत वा	८५४	धाता दधातु दाक्षुषे	७१२
ते हि सत्या ऋतस्पृशः	२७७	दिवो विष्ण उत वा	८६४	धाता दधातु नो रयिम्	७११
त्यान् तु क्षत्रियाँ अव	८५	दिव्यं सुपर्णं वायसं	६३०	धाता दाधार पृथिवीं	८१२
त्रिशङ्काभा वि राजति	६९१	दिव्यादित्याय समनमन्	१७८	धाता मा निर्ऋत्या	७०७
त्रिरन्तरिक्षं सविता	४३८	दिशो धेनवस्तासां	९९९	धाता रातिः सवितेर्दं	६९५, ७०८
त्रिदैवः पृथिवीमेषः	८४४	दत्तेरिव तेऽशुकम्	७३७	धाता विधाता भुवनस्य	७१०
त्रीणि पदा वि चक्रमे	८२०	दशेभ्यो यो महिना	६६५	धाता विश्वा वार्या दधातु	७१३
त्री रोचना दिव्या	२९	देव सवितः प्रसुव	४९१	धारयन्त आदित्यासो	२४
त्री रोचना वरुण	२८४	देव सवितरेष ते	४८२	ध्रुवा असदन्वृतस्य	८५०
त्वं रक्षसे प्रदिशः	१४९	देवं नरः सवितारं	४२३	नक्षत्राणि च मे यज्ञेन	११०७
त्वं विश्वेषां वरुणासि	३०	देवस्त्वा सविता मध्वा	५१२	नक्षत्राणि छन्दः	११०६
त्वं विष्णो सुमतिं	८४३	देवस्त्वा सवितोद्वपतु	४९९	नक्षत्राणि रूपेण	११११
त्वं तस्य द्रयाविनो	७२१	देवस्य चेततो महीं	५०४	नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्	१११३
त्वं तृतं त्वं पथेषु	१४८	देवस्य त्वा सवितुः	४८५	नक्षत्रेभ्यः स्वाहा	११०९
त्वं न इन्द्र महते	१४२	देवस्य वयं सवितुः	४६२	न तं तिग्मं चन त्यजो	७८
त्वं न इन्द्रोतिभिः	१४३	देवस्य सवितुर्भाग स्थ	५२८	न ते अदेवः प्रदिवो	५७२
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रः	१५१	देवस्य सवितुर्मतिं	५०७	न ते विष्णो जायमानो	८३९
त्वमिन्द्रासि विश्वजित्	१४४	देवस्य सवितुर्वयं	४३२	न दक्षिणा वि चिकिते	३१
त्वया हितमप्यम्	४२६	देवेभिर्दैव्यदिते	२	नपाता क्षवसो महः	३५१
त्वयि रात्रि वसामसि	१०३८	देवेभिर्निषितो	६६१	न पूषणं मेधामसि	७२७
त्वष्टा जायामजनयत्	७०१	देवेभ्यो हि प्रथमं	४४२	न प्रमिये सवितुः	४४४
त्वष्टा दधच्छुम्भमिन्द्राय	६९६				

नभश्च नभस्यश्च	९३४	पुनः पत्नीमग्निरदाद्	६५०	प्र विष्णवे शृणुमेतु	८२६
नमो दिवे बृहते	९०८	पुनः समव्यद् विततं	४२३	प्र वो मित्राय गायत	२७९
नमो मित्रस्य वरुणस्य	५७०	पुरा कूरस्य विसृपो	९७४	प्र स मित्र मर्तो अस्तु	१८६
न यः संपृच्छे न पुनः	३७१	पुरुषणा चिद्धस्त्यवो	२८८	प्र सा क्षितिरसुर	२१६
न यस्याः पारं दृशे	१०३१	पूर्णः कुम्भोऽधि कालः	८९४	प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां	२०३
न यस्येन्द्रो वरुणो	४२८	पूर्णा पश्चाद्भुत पूर्णा	१०७९	प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिः	२३०
नव दशभिरस्तुवत	१०६३	पूर्वापरं चरतो मायया	६७९	प्र हि त्वा पृषन्नजिरं	७२९
नवोनवो भवति जायमानो	९७२	पृषणं न्वजाश्वम्	७६२	प्र ह्यच्छा मनीषाः	७७९
नवोनवो भवसि जायमानो	६८०	पृषन् तव व्रते वयं	७५७	प्राणापानौ मा हासिष्टं	१३१
नहि तेषाममा चन	१०५	पृषन्नु प्र गा इहि	७५४	प्रातर्जितं मगमुप्रं हवामहे	१६८
नानौकांसि दुर्यो विश्वम्	४२४	पृषा गा अन्वेतु नः	७५३	प्रातर्जितं भगमुप्रं हुवेम	७२३
नाभिरहं रयीणां	१२७	पृषा त्वेत्तश्च्यावयतु	७७५	प्रातर्देवीमदिति	२८६
नास्माकमस्ति तत् तर	१००	पृषा राजानमाघृणिः	७१६	प्रोरोर्मित्रावरुणा	३१३
नि ग्रामासो अविक्षत	१००७	पृषा सुबन्धुर्दिव आ	७७४	बट् सूर्य श्रवसा	५६९
निरु खसारमस्कृतो	१००५	पृषेमा आशा अनु वेद	७७७	बाळस्था देव निष्कृतम्	२७४
नूनं तदस्य काव्यो	१७६	पूष्णश्चक्रं न रिष्यति	७५१	बभ्रमहौ असि सूर्य	५६८
नू मर्तो दयते सनिष्यन्	८४२	पौर्णमासी प्रथमा	१०८१	बहवः सूरक्षसो	५०
नू मित्रो वरुणो अर्यमा	३३०	प्रजापतिरनुमतिः	११००	वृहस्पुत्रः प्रसवीता	४३९
नुचक्षा एष दिवो	४७८	प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा	१६०	वृहद् वरुणं मरुतां	६७
नेह भद्रं रक्षस्त्रिने	८३	प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	१११२	वृहस्पतिर्म आत्मा	११५
पञ्चभिः पराङ् तपसि	१५०	प्र णो यच्छत्वर्थमा	८१७	वृहस्पते सवितः	५२७
पथस्पथः परिपतिं	७८८	प्रति तिष्ठ विराडसि	११०१	ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं	११२, १७१
परमेष्ठी त्वा सादयतु	५९८	प्रति वां सूर उदिते	४७, ३३६	ब्रह्म देवां अनु क्षियति	११२१
परि णो वृणजज्ञघा	७६	प्र तत् ते अथ शिपिविष्ट	८४६	ब्राह्मणादिन्द्र राघसः	९११
परि तृन्धि पणीना०	७४३	प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्याणि	८६२	ब्रूमो देवं सवितारं	७१४
परि पृषा परस्तात्	७५८	प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण	८२५	भग एव भगवां अस्तु	१७०, ७९६
परि यो रश्मिना दिवो	३६१	प्रत्यङ् देवानां विशः	५३८	भगं धियं वाजयन्तः	४२९
परिहृतेदना जनो	७७	प्रत्यर्थिर्यज्ञानाम्	७८३	भग प्रणेतर्भग सत्यराधो	१६९, ७९४
परावृतो ब्रह्मणा वर्मणा	१६१	प्रपथे पथामजनिष्ट	७७८	भगभक्तस्य ते वयम्	४०९, ७९१
परो मात्रया तन्वा	८३८	प्र पादौ न यथायति	१०६१	भगमुप्रोऽवसे जोहवाति	७९२
परो हि मल्लैरसि	७३८	प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य	७२८	भगस्ततक्ष चतुरः	८०७
पर्षि दीने गभीर आँ	७	प्र बाह्वा सिसृतं	३२९	भगस्ते हस्तमग्रहीत	८०५
पथेदमन्यदभवद्	४८२	प्र मित्रयोर्वरुणयोः	३४१	भगस्य नावमा रोह	६२३
पाकत्रा स्थन देवा	६२	प्र मित्राय प्रार्थम्णे	४०१	भगेन मा शांशपेन	८०१
पातं नो मित्रा पायुभिः	३९८	प्र यद् वां मित्रावरुणा	३०६	भगो युनक्त्वाशिषो	८००
पातं नो रुद्रा पायुभिः	२९०	प्रयन्तमित् परि जारं	२२५	भद्रा अश्वा हरितः	५४९
पिपर्तु नो अदितिः	२७	प्र यो जज्ञे विद्वानस्य	१७३	भद्रासि रात्रि चमसो	१०५९
पीपाय घेनुरदितिः	२३१	प्र यो वां मित्रावरुणा	३७०	भद्राहं नो मध्यंदिने	१०३०
पुण्ड्रं पूर्वा फल्गुन्यौ	११२६	प्र वां स मित्रावरुणौ	३२२	भवा मित्रो न श्रेष्ठो	८३३

भूताय त्वा नारातये	५९१	मित्रस्य चर्षणीधृतो	१९०	यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च	९९५
भूर्भुवः स्वर्गैरिव भूमना	५९३	मित्रा तना न रथ्या	३४८	यथा सूर्यो नक्षत्राणां	६१७
मंसीमहि त्वा वयम्	७८२	मित्राय पञ्च येभिरे	१९२	यथाहश्च रात्रौ च	१०१८
मधुश्च माधवश्च	९३२	मित्रावरुणयोर्भाग स्थ	३९६	यथाहान्यस्तुपूर्वं भवन्ति	७०५
मनो अस्या अन आसीद्	६३६	मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः	३८०	यदद्य कच्च वृत्रहन्	६०३
मन्दस्व होत्रादनु	९२५	मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती	३९१	यदद्य त्वा पुरुषदुत	७६८
मरुतः पिबत ऋतुना	९०८	मित्रो अंहोच्चिदादुर	२६५	यदद्य सूर उदिते	४४
महौ आदित्यो नमसा	१८९	मित्रो जनान् यातयति	१८५	यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा	५५७
महान्ता मित्रावरुणा	३५०	मित्रो देवेष्वायुषु	१९३	यदद्या रात्रि सुभगे	१०५०
महि ज्योतिर्बिभ्रतं	५७७	मित्रो नो अल्यंहति	८६	यदद्यातं शुभस्पती	६४१
महि त्रीणामवोऽस्तु	१०४	मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्	९९१	यदक्षिना पृच्छमानौ	६४०
महि वो महतामवो	७२, ८८	मूर्धा भुवो भवति नक्तम्	६६४	यदाविर्यदपीच्यं	८४
मही अत्र महिना	२१७	मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१२१	यदि जाग्रद्यदि स्वप्न	५९२
महीम् पु मातरं	१२	मेघन्तु ते वह्नयो येभिः	९२७	यदीदं मातुर्यदि वा	८८२
मह्यं त्वा मित्रावरुणौ	३९३	य इन्द्र इन्द्रियं दधुः	५०२	यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो	६६३
मा कस्याद्भुतकतू	२९१	य इमा विश्वा जातानि	४६०	यद् गोपावददितिः शर्म	३१६
मा काकम्बीरमुद् वृहो	७३६	य इमे उभे अहनी	४५९	यद् देवाः शर्म शरणं	८१
माकिर्नेशन्माकी	७५५	य उपरिष्टाज्जुहति	६२४	यद् त्यद् वां पुरुमीळहस्य	२१४
मातुर्दिधिषुमब्रवं	७६३	य एनमादिदेशति	७६५	यद् त्यन्मित्रावरुणा वृताद्	२१३
मा त्वा कव्यादभि	९९६	यं यज्ञं नयथा नरः	१९	यद् बंदिष्ठं नातिविधे	२४७
मा त्वा दभन्तसलिले	१४१	यः पूर्याय वेधसे	८३४	यद् यामं चकुर्निखनन्तो	८८०
मा नः सेतुः सिषेदयं	९२	यजामहे वां महः	२२९	यद् वः श्रान्ताय सुन्वते	९०
मा नो मृचा रिपूणां	९३	यज्जातवेदो भुवनस्य	६६३	यद् वो देवाश्चक्रम	५८१
मा नो हेतिर्विवस्वतः	१०१	यज्ञैः संमिथ्वाः पृषतीभिः	९२०	यं देवा अंशुमाप्याययन्ति	६८४
मा मां प्राणो हासीन्मो	१२९	यज्ञो देवानां प्रत्येति	११०	यं देवासोऽजनयन्त	६६७
माया वां मित्रावरुणा	२५१	यज्ञो हीळो वो अन्तरः	६६	यन्नूनमस्यां गति	२५७
मा विदन् परिपन्थिनो	६४३	यत् किं चेदं पतयति	१०४१	यमादित्यासो अद्भुहः	७०
माश्चानां भद्रे तस्करो	१०३६	यत् त आत्मनि तन्वां	५१७	यमु पूर्वमहुवे तमिदं	९२६
माहं मघोनो वरुण	३७	यत् ते देवा अकृण्वन्	१०८५	यं परिहस्तमबिभ्रः	७०२
मित्र एनं वरुणो वा	३८३	यत् प्राण ऋतावागते	९६६	ययोरोजसा स्कभिता	८७७
मित्रं वयं हवामहे	१९९	यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	९९४	यश्चिकेत त सुक्रतुः	२६२
मित्रं हुवे पूतदक्षं	१९६	यत्रा चकुरमृता	६६१	यश्चिद्धि त इत्था भगः	४०८
मित्रं न यं शिम्या गोषु	१८४	यत्रा वदेते अवरः	६७५	यस्मा अरासत क्षयं	७५
मित्रः पृथिव्योदकामत्	१९५	यत्रा समुद्रः स्कभितो	४८१	यस्मै पुत्रासो अदितेः	१०६
मित्रः सञ्ज्य पृथिवीं	१९४	यत् त्वा तुरीयमृतुभिः	९१६	यस्य ते पूषन्तस्ये	७३०
मित्रश्च नो वरुणश्च	२९७	यत् त्वा सूर्य स्वर्भानुः	५५६	यस्य ते विश्वा भुवनानि	५७८
मित्रश्च वरुणश्चासौ	८१६	यथा नो मित्रो वरुणो	२०२	यस्य त्यन्महित्वं	७८०
मित्रस्तन्नो वरुणो देवो	३३३	यथा प्रसूता सवितुः	१००१	यस्य त्री पूर्णा मधुना	८२७
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त	४२	यथा शाम्याकः प्रपतन्	१०४८	यस्य प्रयाणमन्वन्य	४४९

यस्यायं विश्व आर्यो	११९	यूयं राजानः कं	७१	रात्रि मातरुषे नः
यस्येदं प्रदिशि यद्	८७८	यूयमुग्रा मरुतः	१८१	रात्रीभिरस्मा अहभिः
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु	८६३	ये चिद्धि मृत्युबन्धवः	६९	रात्री माता नभः पिता
या गुङ्गूर्या सिनीवाली	१०९७	ये ते त्रिरहन्तसवितः	४४६	रात्री व्यस्यदायती
या त इन्द्र तनूरुषु	१४६	ये ते पन्थाः सवितः	४१९	रात्र्यै कृष्णं पित्राक्षम्
याति देवः प्रवता याति	४११	ये ते रात्रि नृचक्षधो	१०३२	रात्रा वयं ससवांसो
या ते अग्रा गोओपशा	७४७	ये ते रात्र्यनङ्गाहः	१०४६	रात्रा हिरण्यया मतिः
या देवीः पञ्च प्रदिशो	९६८	येन वृक्षां अभ्यभवो	८०२	रात्रो धारास्यावृणे
याद्राध्यं वरुणो योनिम्	४२७	येन सूर्ये ज्योतिषा	५७३	रात्रो बुध्नः संगमनो
या धर्तरा रजसो	२८७	येना पावक चक्षसा	५३९	रुचिरसि रोचोऽसि
या धारयन्त देवाः	३४२	येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०१७	रुजश्च मा वेनश्च मा
यानि नक्षत्राणि दिवि	११२९	ये मूर्धानः क्षितीनाम्	९४	रेवद् वयो दधाथे
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति	१०७५	ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति	१०४३	रेभ्यासीदनुदेयी
या प्लीहानं शोषयति	३८६	यो अथ सेन्यो वधो	३९०	वचो दधिप्रसन्ननि
यां पूषन् ब्रह्मचोदनीं	७४६	यो अथ स्तेन आयति	१०६०	वज्रापवसाध्यः कीर्तिः
यावन्तो मा सपत्नानाम्	६१८	यो अन्धो यः पुनःसरो	८०३	वयमु त्वा पथस्पते
यावन्मात्रमुषसो न	६७७	यो अस्मै हविषाविधत्	७५२	वयं मित्रस्थावसि
यावया वृक्यं वृकं	१००८	योऽथर्वाणं वितरं	१७७	वरुणः प्राविता भुवन्
या विःपत्नीन्द्रमसि	१०९४	यो नः कथिद् रिरिक्षति	६०	वरुणं वो रिशादसम्
या वो माया अभिद्रुहे	३६	यो नः पूषवधो वृको	७१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्
या सुबाहुः खङ्गुरिः	१०९३	यो नो भद्राहमकरः	१११७	वयं वन्दे सुभगे
यास्ते पूषन्नावो अन्तः	७७३	यो ब्रह्मणे सुमतिम्	३१९	वर्षाभिर्ऋतुनादित्या
यास्ते राके सुमतयः	१०८४	यो मित्राय वरुणाय	२०७	वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा
युक्तेन मनसा वयं	४९५	यो राजभ्य ऋतनिभ्यो	३२	वषट् ते विष्णवांस आ
युक्त्वाय सविता देवान्	४९६	यो वां गर्तं मनसा	३३४	वसन्तेन ऋतुना देवा
युजते मन उत युजते	४४७	यो वां यज्ञैः शशमानो	२१९	वस्योभूयाय वसुमान्
युजन्ति ब्रह्मरुषं	११६	यो विश्वाभि विपश्यति	७३४	वाचं सु मित्रावरुणौ
युजानः प्रथमं मनः	४९४	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं	६८३	वाजस्य नु प्रसवे
युनक्तु देवः सविता	५२६	यो होताऽऽसीत् प्रथमो	६६२	वाममद्य सवितर्वामसु
युयोत्ता शरमस्मदौ	५८	रक्षा माकिर्नो अघशंस	१०३५	वार्षिकावेनं मासौ
युवं वज्राणि पीवसा	२२२	रक्षोहणं वलगहनं	८५६	वार्षिकौ मासौ गोप्तरौ
युवं ह्यप्रराजावसीदतं	३७७	रक्षोहणो वो वलगहनः	८५८	वासन्तावेनं मासौ
युवं दक्षं धृतव्रत	९१२	रथं युजते मरुतः	२५२	वासन्तौ मासौ गोप्तरौ
युवं नो येषु वरुण	२६०	रथीतमं कपर्दिनम्	७६०	वि चक्रमे पृथिवीमेष
युवं मित्रेभ्यं जनं	२६७	राकामहं सुहवां	१०८३	विजनाच्छयावाः शितिपादो
युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिः	२२०	राजानावनभिद्रुहा	२३४	विदा देवा अघानाम्
युवाभ्यां मित्रावरुणा	२५८	रातिः सप्तपतिं महे	५०६	विद्या शरस्य पितरं
युवोर्हि मातादितिः	३७६	रात्रिरात्रिमरिष्यन्तः	१०४७	विद्यामादित्या अवसो
युष्मे देवा अपि ष्मसि	७९	रात्रिः केतुना जुषताः	१०१६	वि यामेषि रजस्पृथ्वहा

विद्युत् पुंश्चली स्तनयितुः	१०२४	विष्णोः क्रमोऽसि० अण्डु	८७३	शुचिरपः सूयवमा	३३
वि नः सहस्रं शुरुघो	५६०	विष्णोः क्रमोऽसि० यज्ञ	८७१	शुची ते चक्रे यात्या	६३८
वि पथो वाजसातये	७४२	विष्णोः क्रमोऽसि० ओषधी	८७२	शृण्वन्तं पूषणं वयम्	७५६
वि पूषचारया तुद	७४४	विष्णो रराटमसि विष्णोः	८५५	शैशिरावेनं मासौ	९६४
विभक्तारं हवामहे	४०५, ५०८	विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि	८६१	शैशिरेण ऋतुना देवाः	९४५
विभ्राजज्योतिषा स्वः	५९०	विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं	८२४	शैशिरौ मासौ गोप्तारौ	९६३
विभ्राजमान उपसाम्	५६३	वि सुपर्णो अन्तरिक्षाणि	४१५	श्रद्धा पुंश्चली मित्रो	१०२१
विभ्राड् बृहत् पिबतु	५८७	वृषभं वाजिनं वयं	१०८०	श्रायन्त इव सूर्य	६०४
विभ्राड् बृहत् सुभृतं	५८८	वृष्टिद्यावा रीत्यापा	२८३	श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ	१०६७
विमान एष दिवो मध्य	११४	वेद वै रात्रि ते नाम	१०४४	षष्टिश्च षट् च रेवति	१०३३
विमोक्तश्च मार्द्रपविश्व	१२४	वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं	८८१	स आर्तवानां पाशान्मा	९७०
वि यद् वाचं कीस्तासो	३०७	वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो	६७१	स एव सं भुवनानि	८९५
वि ये दधुः शरदं	५१	वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं	६७२	सं या दानूनि येमथुः	३५२
विवस्वते स्वाहा	८७९	व्यसे अधि शर्म तत्	७४	सं वर्चसा पयसा	६९३, ७००
विवस्वन्नादित्येष ते	१११	व्यस्यै मित्रावरुणौ	३८९	सं व सृजत्वयमा	८१५
विश्वव्यचाश्चमौषधयो	१११८	व्रतं कृणुतामिर्ब्रह्मणाभिः	१६६	संवत्सरं शशयाना	८८८
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय	६७०	व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा	२२६	संवत्सरस्य प्रतिमां	१०७६
विश्वस्य हि प्रचेतसा	२९३	शंसा मित्रस्य वरुणस्य	३२४	संवत्सराय पर्यायिणीं	८८६
विश्वस्य हि प्रेषितो	५७४	शकधूमं नक्षत्राणि यद्	१११६	संवत्सराय स्वाहा	८८४
विश्वस्य हि श्रुष्टये	४२१	शक्वरो स्थ पशवो मोप	१३३	संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि	८८५
विश्वानि देव सवितः	४५६	शभिध पूर्धिं प्र यंसि च	७२६	संस्तृष्टां वसुभी रुद्रैः	१०९५
विश्वा रूपाणि प्रति	४४८	शं नो भव चक्षसा	५७९	सखाय आ नि बीदत	४०६
विश्वासां भुवां पते	६०९	शं नो मित्रः शं वरुणः	६०५	सखासावस्मभ्यमस्तु	५३१
विश्वाहा त्वा सुमनसः	५७६	शमिता नो वनस्पतिः	५०३	स या नो देवः सविता	४७५, ५२१
विश्वे यद् वां मंहना	३०२	शम्या ह नाम दधिषे	१०५८	सजूर्देवेन सवित्रा सजूः	५९५
विश्वेषां वः सतां	२९८	शर्म वर्मैतदा हरास्यै	११०२	स धाता स विधर्ता	७०६
विश्वे हि विश्ववेदसो	२७६	शश्वद्धि वः सुदानवः	९७	संदानं वो बृहस्पतिः	५३३
विषासहिं सहमानं	१३४-१३८	शश्वन्तं हि प्रचेतसः	९८	सप्त चक्रान् वहति	८९३
वि शु द्वेषो व्यंहतिम्	१०२	शारदावेनं मासौ	९६०	सप्त त्वा हरितो रथे	५४१
विष्णुयौनि कल्पयतु	८७६	शारदेन ऋतुना देवा	९४३	स बुध्यादाष्ट्रं जनुषो	१७५
विष्णोः क्रमाणि पश्यत	८२१	शारदौ मासौ गोप्तारौ	९५९	समाभिरमिना गत	५१५
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा आशा	८६९	शिवां रात्रिमनुसूर्यं च	१०५६	समजन्तु विश्वे देवाः	६५८
विष्णोः क्रमोऽसि० ऋक्	८७०	शिवा नारीयमस्तमागन्	८०२	समध्वरायोषसो नमन्त	७९७
विष्णोः क्रमोऽसि० कृषि	८७४	शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतः	५३६	समानमेतदुदकम्	६२९
विष्णोः क्रमोऽसि० दिक्	८६८	शुक्रेषु ते हरिमाणं	५४५	समावर्तिं विष्टितो	४२५
विष्णोः क्रमोऽसि० द्यौ	८६७	शुकं ते अन्यद् यजतं	७७१	समित् तमधमश्चवद्	६१
विष्णोः क्रमोऽसि० अन्तरिक्षात्	८६६	शुकश्च शुचिश्च प्रैष्मावृत्	९३३	समुद्र ईशो लवतामभिः	१०००
विष्णोः क्रमोऽसि० पृथिवी	८६५	शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि	१५३	समु पूष्णा गमेमहि	७५०
विष्णोः क्रमोऽसि० प्राण	८७५	शुचा विद्धा व्योषया	३८७	समु वां यज्ञं मह्यं	३२६

समृद्धिरोज आकूतिः	८८९	सिंहस्य रात्र्युशती	१०५५	सोमः प्रथमो विविदे
सं पूषन्नध्वनस्तिर	७१८	सिनीवालि पृथुष्टुके	१०९२	सोमस्त्वा पात्वोषधीभिः
सं पूषन् विदुषा नय	७४२	सिनीवाली सुकपर्दा	९	सोमस्यांशो युषां पते
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः	७८९	सुगः पन्था अतृक्षरः	१८	सोमो ददद् गन्धर्वाय
सम्राजा उग्रा वृषभा	२५०	सुगो हि वो अर्थमन्	२६	सोमो बधूयुरभवद्
सम्राजा या घृतयोनी	२८०	सुत्रामाणं पृथिवी	१३	सोऽर्यमा स वरुणः
सम्राजावस्य भुवनस्य	२४९	सुनावमा रुहेयम्	१४	सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा
सम्राज्ञी श्वशुरे भव	६५७	सुप्रावीरस्तु स क्षयः	४५	स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा
स रत्नं मर्त्यो वसु	२०	सुमङ्गलीरियं वधूः	६४४	स्तोमस्य नो विभाविरि
सवितः श्रेष्ठेन रूपेण	५२५	सुषदा पश्चाद् देवस्य	५१३	स्तोमा आसन् प्रतिधयः
सविता ते शरीराणि	५११	सुपुमा यातमद्रिभिः	२१०	स्तोमेन हि दिवि देवासो
सविता ते शरीरैभ्यः	५०९	सुष्टुतिः सुमतीवृधो	५०५	स्मदर्भीश्च कशावन्ता
सविता पुनातु	५१०	सुसंष्टां त्वा वयं	५८६	स्वधास्तु मित्रावरुणा
सविता प्रसवानाम्	५१८	सुहवमग्ने कृत्तिका	११२५	स्वयंभूरसि श्रेष्ठो
सविता यन्त्रैः पृथिवीम्	४८०	सूक्तवाकं प्रथममादिद्	६६६	स्वराक्षसि सपत्नहा
सवितासि सत्यप्रसवः	४९३	सूर्य एकाकी चरति	९७७	स्वस्तिते मे सुप्रातः
सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनामि	४८६	सूर्य नावमारुक्षः	१५९	स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो
सवित्रा प्रथमेऽहन्	५३०	सूर्य ते द्यावापृथिवी	६२०	स्वस्त्ययोषसो दोषसश्च
सवित्रा प्रसवित्रा	५२९	सूर्य यत् ते तपस्तेन	६११	स्वाप्तदसि सूषा अमृतो
सवित्रे त्व ऋभुमते	५१६	सूर्य यत् ते तेजस्तेन	६१५	
सवित्रे स्वाहा	४९२	सूर्य यत् तेऽचिस्तेन	६१३	
स वेद सुष्टुतीनाम्	७८१	सूर्य यत् ते शोचिस्तेन	६१४	
स वै रात्र्या अजायत	१०१९	सूर्य यत् ते हरस्तेन	६१२	
स संवत्सरमूर्ध्वो	८९०	सूर्यरश्मिर्हरिकेशः	४७७	
स सूर्य प्रति पुरो न	५५९	सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः	६१६	
सखश्चिद्धि समृतिस्त्वेषी	३१८	सूर्याभ्यां स्वाहा	६२२	
सहश्च सहस्यश्च	९३६	सूर्याया वहतुः प्रागात्	६३२	
स हि दिवः स पृथिव्या	१७४	सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः	५९४	
स हि रत्नानि दाशुषे	४५४	सूर्यो दिवोदकामत्	६२१	
सा नो अद्य यस्या वयं	१००६	सूर्यो देवीमुषसं	५४८	
सा पश्चात् पाहि सा पुरः	१०४२	सूर्यो नो दिवस्पातु	५८१	
सा मा सत्योक्तिः परि	५७१	सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां	६१९	
सावीर्हि देव प्रथमाय	५२२	सूर्यो माहः पात्वमिः	१३०	
				हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसः
				हविष्पान्तमजरं
				हस्त आधाय सविता
				हिरण्यनिर्णिगयो अस्य
				हिरण्यपाणिमूतये
				हिरण्यपाणिः सविता
				हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ
				हिरण्यरूपा उषसो
				हिरण्यस्तूपः सवितः
				हिरण्यहस्तो असुरः
				हेमन्तेन ऋतुना देवाः
				हेमनावेनं मासौ
				हेमनौ मासौ गोप्तरौ

॥ इति अदितिः, आदित्याश्च समाप्ताः ॥



दैवत-संहिता ।

(१०)

विश्वे देवाः

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल

[स्व. नारायणजी पुरुषोत्तम विश्वस्तनिधिके संबंधी निवासी विश्वस्तोंने
संपूर्ण 'दैवत-संहिता' के मुद्रणके लिये १५०००) रु०
दिये, इस धनके भागसे यह विभाग मुद्रित हुआ है ।]

स्वाध्याय-मण्डल, पारडी

संवत् २०१६, शक १८८१, सन् १९५९

प्रकाशक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,
पोस्ट- ' स्वाध्याय मण्डल (पारडी) '
पारडी (जि. सुरत)

द्वितीय वार

मूल्य ५) रु.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.,
स्वाध्याय-मण्डल, भारत मुद्रणालय,
पोस्ट- ' स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '
पारडी (जि. सुरत)



विश्वेदेवा देवताका परिचय

यह एक देवता नहीं है

‘ विश्वेदेवाः ’ नामकी कोई एक देवता नहीं है। इसके पर्याय पद ‘ विश्वे देवाः, सर्वे देवाः, नानादेवताः, बहुदैवत्यं ’ इस तरह अनेक हैं। इन पदोंसे ही ‘ सब देवों ’ का बोध होता है। जहाँ मंत्रमें या सूक्तमें एकसे अधिक देवता होते हैं, और प्रत्येक देवताका पृथक् निर्देश करनेकी संभावना नहीं होती, वहाँके अनेक देवताओंका मिलकर निदर्शक नाम ‘ विश्वेदेवाः ’ है। ‘ अनेक देवता ’ ऐसा भी इसको हम कह सकते हैं। अतः जिन मंत्रोंमें या सूक्तोंमें अनेक देवता होते हैं, उनका देवता ‘ विश्वेदेवाः ’ समझा जाता है, उदाहरण के लिये देखिए—

इन्द्रवायू बृहस्पति मित्राग्नि पूषणं भगम् ।

आदित्यान् मारुतं गणम् ॥ (ऋ. १।१४।३)

इस एक मन्त्रमें नौ देवताएँ हैं, इसलिये नौ देवताओंका निर्देश करनेके स्थानपर ‘ विश्वेदेवाः ’ देवता कहा है। इससे बोध होता है कि, इस मन्त्रमें अनेक देवताएँ हैं।

सब देवताओंकी इकट्ठी प्रार्थना करनेके समयमें भी ‘ विश्वेदेवा ’ देवता मानी जाती है। वहाँ सब देव ऐसा अर्थ समझा जाता है, जैसा—

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् ।

(ऋ. २।४१।१३)

यहाँ सब देवोंकी इकट्ठी प्रार्थना है। यहाँ किसी एक देवताका निर्देश नहीं है। जहाँ गणदेवोंकी प्रार्थना होती है, वहाँ उन सब गण देवोंकी सामूहिकरूपसे ‘ विश्वेदेवा ’ कहा जाता है। वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत ये सब गण देव हैं। ये संघ करके रहते हैं।

अथर्ववेदमें ‘ नाना दैवत्यं, मन्त्रोक्ताः देवताः, बहु दैवत्यं, नाना देवताः ’ ऐसे अनेक नाम देवताओंमें आते हैं, उन सबका अर्थ ‘ अनेक देवता ’ इतना ही है। अर्थात् अनेक देवताओंका बोधक यह पद है। यह कोई एक देवता

नहीं। इस सूक्तमें जो अनेक देवता होंगे, वेही दूसरे सूक्तमें होंगे ऐसी भी बात नहीं। परन्तु सर्वत्र अनेक देवता मन्त्रमें वा सूक्तमें होंगे, यही साम्य यहाँ है।

विश्वेदेवाके विषयमें ब्राह्मण ग्रंथोंका

निर्वचन

विश्वेदेवा देवताके संबन्धमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके विवेचन मिलते हैं, उन्हें अब देखिये—

एते वै सर्वे देवा यद्विश्वेदेवाः ।

(को. ब्रा. ४।१४; ५।२)

एते वै विश्वेदेवा यत्सर्वे देवाः ।

(गो. ब्रा. उ. १।२०)

रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ३।१२।६; १२)

तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ४।३।१२६)

एते वै विश्वेदेवा रश्मयः । (श. ब्रा. २।३।१।७)

एते वै रश्मयो विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १२।४।४।६)

(प्राणा वै) विश्वेदेवाः । (वा. य. ३।८।१५)

(श. ब्रा. १४।२।२।३७)

ऋतवो विश्वेदेवाः ।

(वा. य. १।२।६१)

(श. ब्रा. ७।१।१।४३)

इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. २।४।४।१३; ३।१२।१४)

अथ यदेनं (अग्नि) एकं सन्तं बहुधा विहरन्ति

तदस्य वैश्वदेवं रूपम् । (ऐ. ब्रा. ३।४)

श्रोत्रं विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. ३।२।२।१३)

ता (दिशः) उ विश्वेदेवाः ।

(जै. उ. ब्रा. २।७।४; २।११।५)

स (प्रजापतिः) विश्वान्देवान्सृजत तान्

दिक्षुपादधात् । (श. ब्रा. ६।१।२।९)

दिशो हैतद्यजुरेतद्वै विश्वेदेवाः वैश्वानराः ।

(श. ब्रा. ६।५।२।६)

तस्य (प्रजापतेः) विश्वे देवाः पुत्राः ।

(श. ब्रा. ६।३।१।१७)

वैश्वदेवो हि वैश्यः ।

(तै. ब्रा. २।७।२।२)

विद्धु विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १०।४।१।९)

विशो विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. २।४।३।६; ३।९।१।१६; ५।५।१।१०)

वैश्वदेव्यो वै प्रजाः ।

(तै. ब्रा. १।६।२।५; १।७।१०।२)

पशवो वै वैश्वदेवम् ।

(कौ. ब्रा. १।६।३)

वैश्वदेवो वा अश्वः ।

(श. ब्रा. १३।२।५।४; तै. ब्रा. ३।९।२।४; ३।९।१।११)

वैश्वदेवी वै गौः ।

(गो. ब्रा. उ. ३।१९)

वैश्वदेवं अन्नम् ।

(तै. ब्रा. १।६।१।१०)

विश्वेषां वा एतद्देवानां रूपं यत्करम्भाः ।

(तै. ब्रा. ३।८।१।४)

सर्वमिदं विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ३।९।१।१४; ४।४।१।९; १८)

सर्वं वै विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १।७।४।२२; ३।९।१।१३; ४।२।२।३; ५।५।२।१०)

विश्वेदेवा एव सर्वम् ।

(गो. ब्रा. पू. ५।१५)

अनन्ता विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. १४।६।१।११)

विश्वे वै देवा देवानां यशस्वितमाः ।

(श. ब्रा. १३।१।२।८; तै. ब्रा. ३।८।७।२)

बृहस्पतिर्विश्वेदेवैरुद्रकामत् ।

(ऐ. ब्रा. १।२४)

वैश्वदेवं तृतीयसवनम् ।

(ऐ. ब्रा. ६।१५; श. ब्रा. १।७।३।१६; ४।४।१।११; जै. उ. १।३।७।४)

अथैनं उदीच्यां दिशि विश्वेदेवा ... अभ्यर्षिचन् वैराज्याय ।

(ऐ. ब्रा. ८।१४)

विश्वे त्वा देवा उत्तरतोऽभिषिञ्चन्त्वानुष्टुभेन छन्दसा ।

(तै. ब्रा. २।७।१।५)

विश्वेदेवा देवताके संबंधमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें इस तरहके वचन मिलते हैं। यहाँ प्रथम ही 'सर्वे देवाः' सब देव विश्वेदेव ऐसा कहा है, अर्थात् जितने भी देव हैं वे सब विश्वेदेव हैं। देव इनमेंसे छूटा नहीं है। आगे सूर्यके किरण विश्वेदेव हैं कहा है। किरण अथवा प्रकाशके किरण जितने भी हैं वे

सबके सब विश्वेदेव हैं। आगे प्राण और ऋतुको विश्वेदेवा कहा है। क्योंकि प्राण भी अनेक हैं और ऋतु भी बहुत हैं। इन और अग्नि विश्वेदेव हैं। अग्नि एक होते हुए भी उसको अनेक नामोंसे पुकारते हैं, इसलिये वे सब रूप विश्वेदेव हैं। श्रोत्र विश्वेदेव हैं, क्योंकि सब दिशाएँ ही श्रोत्र हैं और दिशा अनेक होनेके कारण उसे विश्वेदेव कहा है, वह ठीक ही है। प्रजापतिने सब देव उत्पन्न किये, वे विश्वेदेव हैं। प्रजापतिके जे पुत्र देव हैं, वे विश्वेदेव हैं। वैश्य तथा प्रजाजन भी विश्वेदेव हैं सब पशु भी विश्वेदेव हैं। गौ और घोड़ा भी विश्वेदेव हैं विश्वेदेव अनन्त हैं और यह सब जो भी इस विश्वमें हैं, वा सब विश्वेदेव ही है।

इस तरह सभी विश्व अर्थात् विश्वके अन्तर्गत पदार्थ मात्र हैं वे सब विश्वेदेव हैं। इसमें कोई वस्तु छूटी नहीं है। यह बात 'विश्वेदेवाः' पदसे भी समझमें आ सकती है। इस विश्वमें जो भी पदार्थ हैं, ये सब 'देव' हैं अतः वे 'विश्वेदेव' कहलाते हैं, यह ठीक ही है। अब तैत्तिरीय देवोंके विषय में यहाँ प्रसंगानुसार कुछ कहना चाहिये—

तैत्तिरीय देवताएँ

तैत्तिरीय देवताओंका उल्लेख निम्नलिखित मंत्रोंमें है—

(मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः । पुर उष्णिक् ।)

इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ (ऋ. ८।३।०।२)

ये त्रिंशति त्रयस्परो देहासो बर्हिःसदन् ।

विदन्नह द्वितासनन् ॥ (ऋ. ८।२।८।१)

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः त्रिष्टुप्)

ऐभिरग्ने सरथं यात्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यथाः ।

पत्नीवतः त्रिंशत् त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयश्च । (ऋ. ३।६।९)

(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः । अनुष्टुप्)

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।

तान्रोहिदश्च गर्विणश्च यस्त्रिंशत् आवह ॥ (ऋ. १।४।५।२)

(सृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्सन्तः । अस्मिन्श्चन्द्रे अधि यद्विरण्यं तेनायं कृणवद्वीर्याणि ॥ (अथर्व. १९।२।७।१०)

(गोपथः । रात्रिः । अनुष्टुप्)

द्वौ च ते विंशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः ।

तैमिनो अथ पायुभिः नु पाहि दुहितादिवः ॥

(अथर्व. १९।४।५)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुराधसः ।

वृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे ।

देवा देवैरवन्तु मा ॥ (वा. य. २०।११)

इन सात मंत्रोंमें ३३ देवताओंका स्पष्ट उल्लेख है ।

त्रयः त्रिंशत् देवाः ।

त्रिंशति त्रयः परः देवासः ॥

त्रिंशतं त्रीन् च देवान् ।

गिर्वणः त्रयः त्रिंशतं ॥

त्रयस्त्रिंशत् देवताः ।

देवाः त्रयस्त्रिंशः ॥

द्वौ + विंशतिः च + एकादश ।

ये सब उल्लेख ३३ देवोंकी गणना कर रहे हैं । ' तीन और तीस ' अथवा ' तीस और तीन ' इस तरह गणना ऊपरके मंत्रोंमें दीखती है । एक मंत्रमें २+२०+११=३३ ऐसी गणना है । तीन और तीसमें भी एक देव मुख्य और दस देव उसके साथवाले ऐसी गणना है । वही बात २+२०+११=३३ में है । तीन देव मुख्य और दस दसके तीन देवगण मिलकर तैंतीस देव होते हैं ।

तैंतीस देवोंमें ' तीन बार एकादश ' त्रया एकादश ' अर्थात् ११×३=३३ ऐसी देवोंकी गणना ऊपर दिये एक मंत्रमें की है । इससे ये तीन तरहके देवगण, ग्यारहकी संख्यामें प्रत्येक गण होनेसे, तैंतीस बने हैं । इससे खोज करनेवालेको पृथ्वी, अन्तरिक्ष और बुलोकमें ग्यारह ग्यारह देवगणोंका निवास है, ऐसा पता लगता है । इसके सूचक निम्नलिखित मन्त्र हैं—

तीन गुणा ग्यारह देव

(हिरण्यस्तूप आगिरसः । अश्विनौ । जगती)

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-

मश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नो रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषः

भवतं सचाभुवा ॥ (ऋ. १।३।११; वा. य. ३।४।७)

(परच्छेपो देवोदासिः । विश्वेदेवाः । त्रिष्टुप्)

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्ये-

कादश स्थ । अस्तुक्षितो महिनैकादश स्थ ते

देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ. १।१३।११)

(मृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

ये देवा दिव्येकादश स्थ० ये देवा अन्तरिक्ष

एकादश स्थ० । ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते

देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ (अथर्व. १९।२।११-१३)

(श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

विश्वेदेवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाद्विर्मसद्विर्मसुभिः सचा-

भुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥

(ऋ. ८।३।१३)

(नाभाकः काण्वः । अग्निः । महापंक्तिः)

अमिह्रीणि त्रिधातून्यास्तेति विदथा कविः ।

स त्रीरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः

परिष्कृतः । नभन्तामन्यके समे ॥ (ऋ. ८।३।१९)

(मेघ्यः काण्वः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

युवाँ देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददशे

पुरस्तात् । अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना

दीद्यमी ॥ (ऋ. ८।५।७२)

(कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः । त्रिष्टुप्)

तव त्वे सोम पवमान निष्ये विश्वे देवास्त्रय एका-

दशासः । दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा

नद्यः सप्त यद्वाहीः ॥ (ऋ. ९।९।२।४)

इन सात मंत्रोंमें तैंतीस देवोंकी गणना की है । ' त्रिभिः एकादशैः देवैः । त्रीन् एकादशान् । त्रयः एकादशासः । ' तीन गुणे ग्यारह देव हैं यह बात इन मंत्रोंसे सिद्ध होती है ।

ये तैंतीस देव ' दिवि एकादश, अन्तरिक्षे एकादश, पृथिव्यामेकादश ' इस तरह आकाशमें, अन्तरिक्षमें और भूमिपर ग्यारह ग्यारह हैं, ऐसा विवरण उक्त मंत्रोंमें ही किया है । इससे तैंतीस देव कहां कैसे रहते हैं, इसका पता लगता है । इन ग्यारह देवोंमें भी एक मुख्य और दस गौण अर्थात् उस एकके साथ या अधीन कार्य करते हैं । पृथ्वीपर अग्नि, अन्तरिक्षमें वायु और बुलोकमें सूर्य ये तीन देव संभवतः मुख्य होंगे और इनमेंसे प्रत्येकके अधीन दस दस देव रहते होंगे । पर ऐसा भी दीखता है कि अग्नि आदि देव इन तैंतीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर लाते हैं, इस विषयमें मन्त्रभाग देखिए—

(गोपथः । रात्रिः । अनुष्टुप्)

द्वौ च ते विंशतिश्च ते राज्येकादशावमाः ।

तेभिर्नो अथ पायुभिः नु पाहि दुहितादिवः ॥

(अथर्व. १९।४७।५)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुराधसः ।

बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे ।

देवा देवैरवन्तु मा ॥

(वा. य. २०।११)

इन सात मंत्रोंमें ३३ देवताओंका स्पष्ट उल्लेख है ।

त्रयः त्रिंशत् देवाः ।

त्रिंशति त्रयः परः देवासः ॥

त्रिंशतं त्रीन् च देवान् ।

गिर्यणः त्रयः त्रिंशतं ॥

त्रयस्त्रिंशत् देवताः ।

देवाः त्रयस्त्रिंशः ॥

द्वौ + विंशतिः च + एकादश ।

ये सब उल्लेख ३३ देवोंकी गणना कर रहे हैं । 'तीन और तीस' अथवा 'तीस और तीन' इस तरह गणना ऊपरके मंत्रोंमें दीखती है । एक मंत्रमें $२+२०+११=३३$ ऐसी गणना है । तीन और तीसमें भी एक देव मुख्य और दस देव उसके साथवाले ऐसी गणना है । वही बात $२+२०+११=३३$ में है । तीन देव मुख्य और दस दसके तीन देवगण मिलकर तैत्तीस देव होते हैं ।

तैत्तीस देवोंमें 'तीन वार एकादश' त्रया एकादश' अर्थात् $११ \times ३=३३$ ऐसी देवोंकी गणना ऊपर दिये एक मंत्रमें की है । इससे ये तीन तरहके देवगण, ग्यारहकी संख्यामें प्रत्येक गण होनेसे, तैत्तीस बने हैं । इससे खोज करनेवालेको पृथ्वी, अन्तरिक्ष और बुलोकमें ग्यारह ग्यारह देवगणोंका निवास है, ऐसा पता लगता है । इसके सूचक निम्नलिखित मन्त्र हैं—

तीन गुणा ग्यारह देव

(हिरण्यस्तुप आंगिरसः । अश्विनौ । जगती)

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यतं मधुपेय-

मश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषः

भवतं सचाभुवा ॥ (ऋ. १।३४।११; वा. य. ३४।४७)

(परुच्छेपो दैवोदासिः । विश्वेदेवाः । त्रिष्टुप्)

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्ये-

कादश स्थ । अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ. १।१३९।११)

(भृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप्)

ये देवा दिव्येकादश स्थ० ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ० । ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ (अथर्व. १९।२७।११-१३)

(श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

विश्वेदैवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाऽङ्गिर्मसङ्गिर्भृगुभिः सचाभुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥

(ऋ. ८।३५।३)

(नाभाकः काण्वः । अग्निः । महापंक्तिः)

अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्याक्षेति विदथा कविः ।

स त्रैरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतः । नमन्तामन्यके समे ॥ (ऋ. ८।३९।९)

(मेध्यः काण्वः । अश्विनौ । त्रिष्टुप्)

युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददशे पुरस्तात् । अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीद्यमी ॥ (ऋ. ८।५७।२)

(कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः । त्रिष्टुप्)

तव त्वे सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः । दश स्वधाभिरवि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नयः सप्त यद्हीः ॥ (ऋ. ९।९२।४)

इन सात मंत्रोंमें तैत्तीस देवोंकी गणना की है । 'त्रिभिः एकादशैः देवैः । त्रीन् एकादशान् । त्रयः एकादशासः ।' तीन गुणे ग्यारह देव हैं यह बात इन मंत्रोंसे सिद्ध होती है ।

ये तैत्तीस देव 'दिवि एकादश, अन्तरिक्षे एकादश, पृथिव्यामेकादश' इस तरह आकाशमें, अन्तरिक्षमें और भूमिपर ग्यारह ग्यारह हैं, ऐसा विवरण उक्त मंत्रोंमें ही किया है । इससे तैत्तीस देव कहां कैसे रहते हैं, इसका पता लगता है । इन ग्यारह देवोंमें भी एक मुख्य और दस गौण अर्थात् उस एकके साथ या अधीन कार्य करते हैं । पृथ्वीपर अग्नि, अन्तरिक्षमें वायु और बुलोकमें सूर्य ये तीन देव संभवतः मुख्य होंगे और इनमेंसे प्रत्येकके अधीन दस दस देव रहते होंगे । पर ऐसा भी दीखता है कि अग्नि आदि देव इन तैत्तीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर लाते हैं, इस विषयमें मन्त्रभाग देखिए—

अग्ने ! पत्नीवतः त्रिशतं त्रींश्च देवान् आवह ॥
(ऋ. ३।६।९)

अग्ने ! गिर्वणः त्रयास्त्रिशतं आवह ॥
(ऋ. १।४५।२)

अग्निः तीन एकादशान् यक्षत् ॥
(ऋ. ८।३९।९)

‘ हे अग्ने ! तैत्तीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ । ’ इसी तरह अश्विदेव भी तैत्तीस देवोंको लाते हैं—

हे अश्विना ! त्रिभिः एकादशैर्देवैः आयातं ॥
(ऋ. १।३४।११)

‘ हे अश्विदेवो ! तैत्तीस देवोंके साथ यहां आओ । ’ यहां ये अग्नि और अश्विदेव तैत्तीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं। अश्वी अपने रथपर तैत्तीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है—

ऐभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥
(ऋ. ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! इन तैत्तीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहां ले आओ । ’ यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है। तैत्तीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है। तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्रमें कहा है—

(गायित्री विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्याग्निं त्रिंशच्च देवा
नव चासपर्यन् । औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिर्त्सा आदि-
द्धोतारं न्यसादयन्त ॥ (ऋ. ३।९।९)

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्निकी पूजा करते हैं। यहाँ $३३३० + ९ = ३३३९$ देव हैं ऐसा कहा है।

१ ब्रह्मा = महा सूर्य

३ अग्नि-वायु-सूर्य

३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैत्तीस देव

३३३ विश्वेदेवाः

३३३९ विश्वेदेवाः

बादके ३३३ और ३३३९ वे देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं। इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैत्तीस कीटी अथवा तैत्तीस करोड़ देवताएं मानी गयी

हैं। कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैत्तीस करोड़ अणु जीवमात्राएँ हैं। अणुजीवमात्रा (Cells) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है। ये अणुपिण्ड करोड़ोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे (स्पेक्ट्रम्) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं। इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टी होती है। इसलिए विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें कहां हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है। विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कदां रहती हैं, इसका पता वैदिक वाज्यासे नहीं लगता है। कुछ थोड़े देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषद्में कहा है—

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत्,
दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णां प्राविशन्,
ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं
प्राविशन्,

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,
मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,
आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ।

(ऐ. उ. २।५)

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहां रहा है, इसका वर्णन यहां किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है—

विश्वान्तर्गत- देवता	शरीरान्तर्गत- देवतांश	शरीरमें- स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षु	नेत्र
दिशा	श्रोत्र	कर्ण
औषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप्	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है। वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है—

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन् ।
सर्वे संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १३ ॥
गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥
रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ २९ ॥
या आपो याश्च देवता या विराट् ब्रह्मणा सह ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नाग्रे ॥ ३१ ॥
तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥

(अथर्व. ११।८)

‘ जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच नामक देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके मानव देहमें घुस गये हैं । इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । आप, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट हुए हैं । शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है । सूर्य चक्षु हुआ, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्यके शरीरमें विभक्त भावसे रहे हैं । इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं । इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं । सब देवताएं, गौवें गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं । ’

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौवें गोशालामें रहनेके समान सब देवताएं इस शरीरमें रहती हैं, ‘ सर्वाः देवताः ’ का अर्थ ये तैत्तीस देवता ही हैं । देखिये—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३ ॥

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ २७ ॥

‘ इसके शरीरमें तैत्तीस देव शरीरके सब अवयवोंमें समाहित हुए हैं । इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैत्तीस देव विभक्त होकर रहे हैं । ’ इस तरह शरीरमें तैत्तीस देव अवयव बनकर रहे ऐसा वर्णन है । इस वर्णनमें तैत्तीस देवता शरीरके गात्रोंमें रहनेका वर्णन स्पष्ट है । मन्त्रमें इस विषयका जो अधिक वर्णन मिलता है वह ऐसा है—

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।

यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ १२ ॥

यत्र अमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।

समुद्रो यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २२ ॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानम् ॥ ३२ ॥

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।

अग्निं यश्चक्र आस्यम् ॥ ३३ ॥

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥

दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीः ० ॥ ३४ ॥ (अथर्व. १०।७)

‘ जिसमें भूमि—अन्तरिक्ष—द्यु ये तीन लोक हैं । जिसमें अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और मृत्यु हैं । नदियां नाडीरूपसे जहां रहती हैं । जहां वसु, रुद्र और आदित्य रहे हैं, द्युलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और भूमि जिसके पांव हुए हैं । सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि मुख बना है । वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और दिशाये ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं । ’

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका समानतया वर्णन है । परमात्माका शरीर विश्व है और जीवका शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैत्तीस देव हैं । परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये देवताएं रहती हैं । इनका मन्त्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।

व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकूर्ति आवहन् ॥ ४ ॥

इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।

त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥

ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।

पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते ॥ १० ॥

(अथर्व. ११।८)

दस देवोंसे दस देव—पुत्र उत्पन्न हुए । प्राण, अपान, चक्षु, श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, व्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम, अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए हैं । ये दस देवपुत्र बड़े देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन पुत्रोंको स्थान देकर वे देव अपने स्थानमें गये ।

अग्ने ! पत्नीवतः त्रिंशत् त्रींश्च देवान् आवह ॥

(ऋ. ३।६।९)

अग्ने ! गिर्वणः त्रयास्त्रिंशत् आवह ॥

(ऋ. १।४५।२)

अग्निः तीन एकादशान् यक्षत् ॥

(ऋ. ८।३९।९)

‘ हे अग्ने ! तैत्तीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ । ’ इसी तरह अश्विदेव भी तैत्तीस देवोंको लाते हैं—

हे अश्विना ! त्रिभिः एकादशैर्देवैः आयातं ॥

(ऋ. १।३४।१९)

‘ हे अश्विदेवो ! तैत्तीस देवोंके साथ यहाँ आओ । ’ यहाँ ये अग्नि और अश्विदेव तैत्तीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं। अश्वी अपने रथपर तैत्तीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है—

ऐभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥

(ऋ. ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! इन तैत्तीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहाँ ले आओ । ’ यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है। तैत्तीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है। तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्रमें कहा है—

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्याग्निं त्रिंशच्च देवा
नव चासपर्यन् । औक्षन् घृतैरस्तृणन् वर्धिरसा आदि-
द्वोतारं न्यसादयन्त ॥

(ऋ. ३।९।९)

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्निकी पूजा करते हैं। यहाँ $३३३० + ९ = ३३३९$ देव हैं ऐसा कहा है।

१ ब्रह्मा = महा सूर्य

३ अग्नि-वायु-सूर्य

३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैत्तीस देव

३३३ विश्वेदेवाः

३३३९ विश्वेदेवाः

बादके ३३३ और ३३३९ वे देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं। इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैत्तीस कोटी अथवा तैत्तीस करोड़ देवताएं मानी गयीं

हैं। कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैत्तीस करोड़ अणु जीवमात्राएँ हैं। अणुजीवमात्रा (Cells) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है। ये अणुपिण्ड करोड़ोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे (स्पेक्ट्रम्) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं। इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टि होती है। इसलिए विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें कहाँ हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है। विश्वान्तर्गत तैत्तीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कहाँ रहती हैं, इसका पता वैदिक वाङ्मयसे नहीं लगता है। कुछ थोड़े देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषद्में कहा है—

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,

वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,

आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत्,

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्,

ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं

प्राविशन्,

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,

मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,

आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ।

(ऐ. उ. २।५)

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहाँ रहा है, इसका वर्णन यहाँ किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है—

विश्वान्तर्गत-	शरीरान्तर्गत-	शरीरमें-
देवता	देवतांश	स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षु	नेत्र
दिशः	श्रोत्र	कर्ण
औषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप्	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है। वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है—

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन् ।
सर्वे संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १३ ॥
गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥
रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ २९ ॥
या आपो याश्च देवता या विराट् ब्रह्मणा सह ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नाग्रे ॥ ३१ ॥
तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥

(अथर्व. ११।८)

‘ जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच नामक देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके मानव देहमें घुस गये हैं । इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । आप, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट हुए हैं । शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है । सूर्य चक्षु हुआ, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्यके शरीरमें विभक्त भावसे रहे हैं । इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं । इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं । सब देवताएं, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं । ’

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान सब देवताएं इस शरीरमें रहती हैं, ‘ सर्वाः देवताः ’ का अर्थ ये तैत्तीस देवता ही हैं । देखिये—

यस्य त्रयस्त्रिंशदेवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३ ॥

यस्य त्रयस्त्रिंशदेवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ २७ ॥

‘ इसके शरीरमें तैत्तीस देव शरीरके सब अवयवोंमें समाहित हुए हैं । इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैत्तीस देव विभक्त होकर रहे हैं । ’ इस तरह शरीरमें तैत्तीस देव अवयव बनकर रहे ऐसा वर्णन है । इस वर्णनमें तैत्तीस देवता शरीरके गात्रोंमें रहनेका वर्णन स्पष्ट है । मन्त्रमें इस विषयका जो अधिक वर्णन मिलता है वह ऐसा है—

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।

यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ १२ ॥

यत्र अमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।

समुद्रो यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २२ ॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानम् ॥ ३२ ॥

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।

अग्निं यश्चक्र आस्यम् ॥ ३३ ॥

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥

दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीः ० ॥ ३४ ॥ (अथर्व. १०।७)

‘ जिसमें भूमि—अन्तरिक्ष—व्यु ये तीन लोक हैं । जिसमें अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और मृत्यु हैं । नदियां नाडीरूपसे जहां रहती हैं । जहां वसु, रुद्र और आदित्य रहे हैं, गुलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और भूमि जिसके पांव हुए हैं । सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि मुख बना है । वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और दिशाये ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं । ’

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका समानतया वर्णन है । परमात्माका शरीर विश्व है और जीवका शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैत्तीस देव हैं । परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये देवताएँ रहती हैं । इनका मन्त्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।

व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकूर्ति आवहन् ॥ ४ ॥

इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।

त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥

ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।

पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते ॥ १० ॥

(अथर्व. ११।८)

दस देवोंसे दस देव—पुत्र उत्पन्न हुए । प्राण, अपान, चक्षु, श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, व्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम, अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए हैं । ये दस देवपुत्र बडे देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन पुत्रोंको स्थान देकर वे देव अपने स्थानमें गये ।

पितृस्थानीय देवोंने पुत्ररूपी देवोंको शरीररूपी क्षेत्र निर्माण करके दिया और वे अपने स्थानमें गये । यही इन सभी मंत्रों का अतिस्पष्ट कथन है । तैत्तीस देव शरीरमें आकर रहे हैं, ऐसा मंत्रमें कहा भी है, परन्तु गणना करनेके समय आठ देवोंके ही नाम दिये हैं । उपनिषद्में भी ६।७ देवोंके नाम हैं और अन्य

अग्ने ! पत्नीवतः त्रिशतं त्रींश्च देवान् आवह ॥
(ऋ. ३।६।९)

अग्ने ! गिर्वणः त्रयास्त्रिशतं आवह ॥
(ऋ. १।४५।२)

अग्निः तीन एकादशान् यक्षत् ॥
(ऋ. ८।३९।९)

‘ हे अग्ने ! तैतीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ । ’ इसी तरह अश्विदेव भी तैतीस देवोंको लाते हैं—

हे अश्विना ! त्रिभिः एकादशैर्देवैः आयातं ॥
(ऋ. १।३४।११)

‘ हे अश्विदेवो ! तैतीस देवोंके साथ यहां आओ । ’ यहां ये अग्नि और अश्विदेव तैतीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं। अश्वी अपने रथपर तैतीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है—

प्रेभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥
(ऋ. ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! इन तैतीस देवोंको अपने रथपर बिठलाकर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहां ले आओ । ’ यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है। तैतीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है। तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्रमें कहा है—

(गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप्)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्याग्निं त्रिंशच्च देवा
नव चासपर्यन् । औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिर्रस्मा आदि-
क्षोतारं न्यसादयन्त ॥ (ऋ. ३।९।९)

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्निकी पूजा करते हैं। यहाँ $३३३० + ९ = ३३३९$ देव हैं ऐसा कहा है।

१ ब्रह्म = महा सूर्य

३ अग्नि-वायु-सूर्य

३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैतीस देव

३३३ विश्वेदेवाः

३३३९ विश्वेदेवाः

बादके ३३३ और ३३३९ वे देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं। इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैतीस कोटी अथवा तैतीस करोड़ देवताएं मानी गयीं

हैं। कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैतीस करोड़ अणु जीवमात्राएँ हैं। अणुजीवमात्रा (Cells) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है। ये अणुपिण्ड करोड़ोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे (स्पेक्ट्रम्) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं। इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टी होती है। इसलिए विश्वान्तर्गत तैतीस देवताएं शरीरमें कहां हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है। विश्वान्तर्गत तैतीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कहां रहती हैं, इसका पता वैदिक वाङ्मयसे नहीं लगता है। कुछ थोड़े देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषद्में कहा है—

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,

वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,

आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा अक्षिणी प्राविशत्,

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्,

ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं

प्राविशन्,

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,

मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,

आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ।

(ऐ. उ. २।५)

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहां रहा है, इसका वर्णन यहां किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है—

विश्वान्तर्गत-	शरीरान्तर्गत-	शरीरमें-
देवता	देवतांश	स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षु	नेत्र
दिशः	श्रोत्र	कर्ण
औषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप्	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है। वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है—

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन् ।
सर्वे संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १३ ॥
गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥
रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ २१ ॥
या आपो याश्च देवता या विराट् ब्रह्मणा सह ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नग्नये ॥ ३१ ॥
तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥

(अथर्व. ११।८)

‘ जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच नामक देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके मानव देहमें घुस गये हैं । इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं । आप, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट हुए हैं । शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है । सूर्य चक्षु हुआ, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्यके शरीरमें विभक्त भावसे रहे हैं । इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं । इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं । सब देवताएं, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं । ’

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान सब देवताएं इस शरीरमें रहती हैं, ‘ सर्वाः देवताः ’ का अर्थ ये तैत्तिरीय देवता ही हैं । देखिये—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३ ॥

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ २७ ॥

‘ इसके शरीरमें तैत्तिरीय देव शरीरके सब अवयवोंमें समाहित हुए हैं । इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैत्तिरीय देव विभक्त होकर रहे हैं । ’ इस तरह शरीरमें तैत्तिरीय देव अवयव बनकर रहे ऐसा वर्णन है । इस वर्णनमें तैत्तिरीय देवता शरीरके गात्रोंमें रहनेका वर्णन स्पष्ट है । मन्त्रमें इस विषयका जो अधिक वर्णन मिलता है वह ऐसा है—

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।

यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ ११ ॥

यत्र अमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।

समुद्रो यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २१ ॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानम् ० ॥ ३२ ॥

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।

अग्निं यश्चक्रे आस्यम् ० ॥ ३३ ॥

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥

दिशो यश्चक्रे प्रह्वानीः ० ॥ ३४ ॥ (अथर्व. १०।७)

‘ जिसमें भूमि-अन्तरिक्ष-द्यु ये तीन लोक हैं । जिसमें अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और मृत्यु हैं । नदियां नाडीरूपसे जहां रहती हैं । जहां वसु, रुद्र और आदित्य रहे हैं, कुलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और भूमि जिसके पांव हुए हैं । सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि मुख बना है । वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और दिशायें ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं । ’

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका समानतया वर्णन है । परमात्माका शरीर विश्व है और जीवका शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैत्तिरीय देव हैं । परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये देवताएं रहती हैं । इनका मन्त्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।

व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकृति आवहन् ॥ ४ ॥

इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।

त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥

ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।

पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते ॥ १० ॥

(अथर्व. ११।८)

दस देवोंसे दस देव-पुत्र उत्पन्न हुए । प्राण, अपान, चक्षु, श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, व्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम, अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए हैं । ये दस देवपुत्र बड़े देवोंसे उत्पन्न हुए हैं । इन पुत्रोंको स्थान देकर वे देव अपने स्थानमें गये ।

पितृस्थानीय देवोंने पुत्ररूपी देवोंको शरीररूपी क्षेत्र निर्माण करके दिया और वे अपने स्थानमें गये । यही इन सभी मंत्रों का अतिस्पष्ट कथन है । तैत्तिरीय देव शरीरमें आकर रहे हैं, ऐश्वर्य मंत्रमें कहा भी है, परन्तु गणना करनेके समय आठ देवोंके ही नाम दिये हैं । उपनिषद्में भी ६।७ देवोंके नाम हैं और अन्य

वेद मंत्रोंमें भी ८१० देवोंके नाम गिनाये हैं। अन्य देवोंके नाम और स्थान नहीं लिखे, इसलिये अन्य देवोंके अंश शरीरमें नहीं आये, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि तैत्तिरीय देवोंका निवास शरीरमें हुआ है ऐसा स्पष्ट कथन पूर्वोक्त मंत्रोंमें है, इतना ही नहीं, परन्तु त्रिलोकी अंश रूपसे शरीरमें रहती है ऐसा भी ऊपरके मंत्रोंमें कहा है। जब पूर्ण रूपसे त्रिलोकीका अंश शरीरमें आया है, तब तो उस त्रिलोकीके सभी देव शरीरमें आगये हैं, इसमें संदेह नहीं रह सकता। परन्तु सब तैत्तिरीय देवोंके नाम और स्थान शरीरमें कहाँ और कैसे हैं, यह वैदिक वाङ्मयमें किसी स्थानमें लिखा नहीं मिलता। इसकी खोज होना अत्यंत आवश्यक है। अब ऊपरके मंत्रोंके आधारसे शरीरमें जो देवोंके स्थान निश्चित हुए वे ये हैं, उनकी तालिका इस तरह बनती है—

विश्वमें देवता	शरीरमें देवता
ब्रुलोक	सिर
सूर्य, अंगिरस	नेत्र
आदित्य	नेत्र
अग्नि	मुख
दिशा	कान
अन्तरिक्षलोक	उदर, पेट
चन्द्रमा	मन
रुद्र, वायु	प्राण अपान
विद्युत्	जाठर अग्नि
नदियाँ	नाडियाँ
वृक्ष	केश
वसु, अग्नि	उष्णता
पृथ्वी	पांव

इस तरह यह तालिका तैत्तिरीय देवताएं विश्वमें और उनके पुत्र रूप देव शरीरमें कैसे कहाँ हैं, इस संबन्धका ज्ञान देनेके लिये विशुद्ध रूपसे तैयार करनी चाहिये। बड़े प्रयत्नसे यह साध्य हो सकती है, क्योंकि वैदिक साहित्यमें इसका संपूर्ण वर्णन कहीं भी नहीं है। थोड़े देवताओंका वर्णन वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें है, वैदिक समयमें गुरु अपने शिष्यको यह देवविद्या पढाता होगा, इस लिये उस समय थोड़ेसे संकेत मात्र उल्लेख जो इस समय वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें आये हैं, उतने पर्याप्त होते होंगे। परन्तु अब यह गुप्तविद्या बताने-वाला कोई गुरु नहीं रहा है, इसलिये विशेष खोजपूर्वक यह ज्ञान तालिका बद्ध करके रखना चाहिये।

शरीरमें देवताओंका स्थान

मनुष्यके पृष्ठवंशमें हड्डियोंकी माला है। इनमें दो हड्डियोंके टुकड़ोंका जो संधि है, वहाँ मज्जाकी ग्रंथी है। सिरसे लेकर गुदातक ये मज्जा केन्द्र ३३ हैं। इनमें गुदाके पासके ६७ अलग अलग नहीं हैं, परन्तु अन्य मज्जाग्रंथियाँ पृथक् पृथक् हैं और मानसिक ध्यान द्वारा प्रत्येक ग्रंथीको उत्तेजित किया जा सकता है।

योग साधनमें इनमेंसे आठ चक्र योगानुष्ठानके लिये लिये हैं। योगी लोग ध्यानसे देवताकी उपासना इन चक्रोंमें करते हैं और ग्रंथियोंको उत्तेजित करते हैं। ये ग्रंथियाँ उत्तेजित होनेसे उनमेंसे विशेष रस निकलता है, यह रस शरीरमें शोषित होनेसे दीर्घ जीवन, आरोग्य, बल, वीर्य, ज्ञानवर्धन आदि लाभ होते हैं। इसी तरह अन्य मज्जा केन्द्रोंमें जो देवतांश रहते हैं, उनके ज्ञानसे और ध्यानसे मनुष्यका लाभ होना संभव है। पाचन शक्तिका प्रदोष होना, संधिराभिसरण ठीक होना, विचार और स्मरणकी शक्तिका विकास, ब्रह्मचर्यका साधन, ऊर्ध्वरेता बनना, जीवन दीर्घ होना, मृत्युको दूर रखना, नारोग रहना आदि अनेक लाभ इससे होनेकी संभावना है।

पृष्ठवंशके इन केन्द्रोंके विशेष मालिश करनेसे भी लाभ होते हैं। इस विद्याका नाम 'किरोपॉट्रिक चिकित्सा' है। पर यह विद्या तब साध्य होगी जब प्रत्येक मज्जा केन्द्रकी शक्तिका अर्थात् देवताका यथावत् ज्ञान होगा। इसलिये इन ३३ देवताओंके ३३ केन्द्रोंका शरीरमें स्थान, कार्य और देवतासंबन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

इस ज्ञानसे व्यक्तिका हित है और वैदिक मंत्रोंसे जो अध्यात्मका अनुभव लेना है, वह इसी अनुष्ठानसे हो सकता है। अर्थात् अध्यात्म ज्ञान केवल गप्पें मारनेसे नहीं हो सकता, परन्तु विश्वव्यापक परम पिता परमात्माके अंशसे जो यह जीव अमृतपुत्र हुआ है, उसमें पितृतुल्य सब शक्तियाँ हैं, उनको जानना, देखना और उनका उपयोग करके अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। यही अनुष्ठान है। योगी लोग यह करते ही हैं। वही अन्योंको पूर्णरूपसे करना चाहिये। अध्यात्म-ज्ञानका प्रत्यक्ष फल यही है।

शरीरमें सिरका भाग ब्रुलोक है, छाती और पेट अन्तरिक्षलोक है, और गुदा मूत्राशयसे नीचेका सब भाग भूलोक है। इन तीन लोकोंमेंसे प्रत्येकमें एक एक देवता मुख्य है और उसके साथ दस देवतायें सहायक हैं। इनका स्थान पृष्ठवंशके

मज्जाकेन्द्र हैं। इन केन्द्रोंके अधीन शरीरके सब व्यापार हैं। इसलिये प्रत्येक देवता, उसका अंश शरीरमें कहां रहता है, कहां कहां उसका क्या कार्य चल रहा है, उसको स्वाधीन कैसा करना चाहिये, उत्तेजित कैसा करना चाहिये, उत्तेजनासे और स्वाधीनतासे कौनसे लाभ होते हैं, इत्यादि सब ज्ञान इस देव-विद्यासे जाना जाता है। योगमें जो गुप्त विद्या है वह यही विद्या है। यह विद्या गुप्त रखते रखते अब लुप्त ही हुई, उसकी खोज करना आजके खोजकर्ताओंका कार्य है।

तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान और स्थान अपने शरीरमें जानना चाहिये। यही अध्यात्मविद्या है और यही योगसाधनका भाग है। योगी लोग आज भी आठ मज्जाकेन्द्रों और वहांके आठ देवताओंको जानते और उनका अनुष्ठान ध्यानद्वारा करके लाभ उठाते हैं। पर इसको वे अतिगुप्त रखते हैं। हमें उसकी शास्त्रीय-तासे पूर्णरूपसे खोज करनी चाहिये।

तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान वैद्योंको भी होना चाहिये। पर वह बाहरके विश्वव्यापी देवताओंका ज्ञान है। इस ज्ञानसे ही उनकी चिकित्सा होती है। आजकल मृत्तिकाचिकित्सा, जल-चिकित्सा, अग्निचिकित्सा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, विद्युच्चिकित्सा, औषधिचिकित्सा आदि अनेक चिकित्साएँ प्रचलित हैं। ये सब चिकित्साएँ देवताओंके यथार्थ ज्ञानसे और उपयोगसे होती हैं।

इससे ज्ञात हुआ कि योगी अपने अन्दर ३३ देवताओंका अनुभव करता है और उनको उत्तेजित करके अन्दरही अन्दरसे विशिष्ट ग्रंथिस्थलोंको प्राप्त करके नीरोग बनकर दीर्घायु होता है। इसी तरह वैद्य इनही देवताओंके गुणधर्म जानकर उनसे नाना प्रकारकी चिकित्साएँ करके अपने रोगियोंके रोग दूर करके उनकी अपमृत्युसे बचाकर दीर्घायु बनाता है।

याजक लोक अग्नि सिद्ध करके उसमें विशिष्ट औषधियोंके हवन द्वारा इन ही तैत्तिरीय देवताकी प्रसन्नता प्राप्त करके भूमि-जल-वायुकी शुद्धिके द्वारा नीरोगताका साधन करके जनताका हित करते हैं। इस तरह ये सब इन तैत्तिरीय देवोंके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ रहे हैं और लाभ भी उठा रहे हैं। तैत्तिरीय देवोंकी यही वेदविद्या है। आज यह पूर्ण रूपसे हमारे हस्तगत नहीं है, पर इस ढंगसे प्रयत्न करनेपर यह कभी न कभी हस्तगत हो सकती है।

इसलिए ये तैत्तिरीय देव विश्वमें कौनसे और कहां हैं, वे मानव शरीरमें या प्राणीके शरीरमें कहां हैं और यज्ञमें उनका सम्बन्ध क्या है इसका पता लगाना चाहिये।

२ (दै. विश्वे देवा)

विश्वेदेव कितने हैं ?

अब हम इस बातका विचार करते हैं कि विश्वेदेवा देव-ताके अन्दर जो मन्त्र समाविष्ट हुए हैं उनमें कितने देवोंका अन्तर्भाव हुआ है और जिन यजुर्वेदके अध्यायोंमें नाना देव-ताओंके उद्देश्यसे हविर्भाग देनेका वर्णन है, उनमें कितनी देवताएँ लिखी हैं। इनका प्रथम प्रकरणशः विचार करेंगे। प्रथम निघण्टुके पञ्चम अध्यायमें पृथ्वी स्थानीय देवताएं ५२, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताएं ६८ और द्युस्थानीय देवताएं ३१ इस तरह १५१ देवतायें लिखी हैं, उनके स्थानानुक्रमिक भाव ये हैं—

पृथ्वी स्थानीय ५२ देवतायें

(निघण्टु ५।१)

१ अग्निः = जो हवनके लिये तथा पकानेके लिये जलाया जाता है।

२ जातवेदाः = जिससे वेद प्रकट हुए वह यज्ञाग्नि।

३ वैश्वानरः = सब मानवोंको यज्ञमार्गपर चलानेवाला अग्नि।
(निघण्टु ५।२)

४ द्रविणोदाः = धन देनेवाला यज्ञाग्नि

५ इष्मः = समिधाओंसे प्रदीप्त होनेवाला

६ तनू-न-पात् = शरीरको न गिरानेवाला, (तन्-नपात्)
सूर्यरूपी शरीरका पुत्र विद्युत्, उसका पुत्र अग्नि,
सूर्यका पोता, गौका पोता घी, (गौ-दूध-घी), घी

७ नराशंसः = मनुष्यों द्वारा प्रशंसित यज्ञाग्नि

८ इळः = (इडः) स्तुत्य अग्नि

९ बर्हिः = दर्भ, आसन

१० द्वारः = द्वार, यज्ञशालाके द्वार

११ उषासानक्ता = उषःकाल और रात्रीका समय

१२ दैव्याहोतारा = अग्नि और वायु, दिव्य होता

१३ तिस्रो देवीः = भारती, इळा, सरस्वती ये तीन देवियाँ

१४ त्वष्टा = बढई, विश्वरचनाका कार्य करनेवाला

१५ वनस्पतिः = वनस्पति, यूप, समिधा, लकड़ी

१६ स्वाहाकृतयः = स्वाहाकारपूर्वक आहुति देना।

(निघण्टु ५।३)

१७ अश्वः = घोड़ा

१८ शक्रुनिः = पक्षी, कपिजल

१९ मण्डूकाः = मेंढक, जलजन्तु

२० अक्षाः = पासे (खेलनेके)

२१ आवाणः = सोम कूटनेके पत्थर

२२ नराशंसः = वीरोंकी, नरोंकी जिसमें प्रशंसा की जाती है वह यज्ञ

२३ रथः = रथ, गाडी, वाहन

२४ दुन्दुभिः = ढोल, चर्मवाद्य

२५ ह्युधिः = तर्कस, बाणोंकी थैली

२६ हस्तघ्नः = दस्ताना

२७ अभीक्ष्वः = लगाम

२८ धनुः = धनुष्य

२९ ज्या = धनुष्यकी डोरी

३० ह्युः = बाण

३१ अम्बाजनी = चाबूक

३२ उलूखलं = उखली

३३ वृषभः = बैल, (गायका भी उपलक्षण)

३४ दुघणः = काष्ठकी गदा, घन

३५ पितुः = अन्न

३६ नद्यः = नदियां

३७ आपः = जल

३८ ओषधयः = औषधियां

३९ रात्रिः = रात्री

४० अरण्यानी = वनश्री, अरण्य

४१ श्रद्धा = श्रद्धा

४२ पृथिवी = भूमि

४३ अप्वा = भय, रोग, दुःख

४४ अग्न्यायी = अग्निकी ज्वाला

४५ उलूखलमुसके = उखली और मुसली

४६ हविर्धानो = हवि और उसका पात्र, लाज

४७ छावापृथिवी = यु और पृथिवी

४८ विपाद्-शुतुद्री = इस नामकी दो नदियां

४९ आर्त्नी = धनुष्यकी दोनों कोटियां, दो नोकें

५० शुनासीरौ = हल और हलसे खींची जानेवाली नाली, रेखा

५१ देवी जोष्टी = सुख देनेवाली देवता

५२ देवी ऊर्जाहुती = बल देनेवाली आहुति देवता ।

अन्तरिक्ष स्थानीय ६८ देवताएं

(निघण्टु ५।४)

१ वायुः = वायु

२ वरुणः = वरुण, जलदेव

३ रुद्रः = गर्जना करनेवाला विद्युद्देव

४ इन्द्रः = विद्युद्देव

५ पर्जन्यः = मेघ, वृष्टी

६ बृहस्पतिः = बड़ा पालक मेघ

७ ब्रह्मणस्पतिः = बड़ा पालक मेघ

८ क्षेत्रस्य पतिः = खेतका पालक, मेघ

९ वास्तोष्पतिः = घरका पालक, मेघ

१० वाचस्पतिः = वाणीका रक्षक, मेघ

११ अपां न पात् = जलोंको न गिरानेवाला

१२ यमः = वायु

१३ मित्रः = वायु, प्राणवायु, मेघ

१४ कः = सुखदायी, वायु, मेघ, जल

१५ सरस्वान् = बहनेवाला वायु, मेघ

१६ विश्वकर्मा = सब कर्म करने करानेवाला, वायु

१७ तार्क्ष्यः = पक्षीके समान संचार करनेवाला वायु

१८ मन्युः = क्रोध, उत्साह बढानेवाला वायु, उत्साह

१९ दधिष्ठा = वायु, मेघ

२० सविता = प्रेरक वायु

२१ त्वष्टा = सुखानेवाला, वायु

२२ वातः = वायु, गन्ध लानेवाला वायु

२३ अग्निः = विद्युत्का अग्नि

२४ वेनः = प्रकाश, किरण समूह

२५ असुनीतिः = प्राणवायु

२६ ऋतः = जल, जलभरा मेघ

२७ इन्द्रुः = चन्द्रमा, सोम, पर्वतपर उगनेवाला सोम

२८ प्रजापतिः = पर्जन्य, वायु

२९ अहिः = मेघ, जो बढता रहता है वह मेघ

३० अहिर्बुध्न्यः = मेघ, सूक्ष्म भापवाला मेघ

३१ सुपर्णः = किरण जिसपर पड़े ऐसा मेघ

३२ पुरुरवा = गर्जनेवाला मेघ

(निघण्टु ५।५)

३३ इधेनः = पक्षी

३४ सोमः = सोमवल्ली

- ३५ चन्द्रमाः = चन्द्र
 ३६ मृत्युः = मारनेवाला, काल
 ३७ विश्वानरः = विश्वका नेता, वायु
 ३८ धाता = धारक वायु
 ३९ विधाता = धारक वायु
 ४० मरुतः = मरने तक प्राणरूप से कार्य करनेवाला वायु
 ४१ रुद्राः = प्राणवायु
 ४२ ऋभवः = कारीगर, वायु
 ४३ अङ्गिरसः = अंगोंमें कार्य करनेवाला रस, संचालक व्यान वायु
 ४४ पितरः = पितर
 ४५ अथर्वाणः = स्थिरता रखनेवाला प्राण पितर
 ४६ भृगवः = मृत्यु, प्राण
 ४७ आप्त्याः = प्राप्तव्य, प्राण
 ४८ अदितिः = उषा
 ४९ सरमा = मेघगर्जना, वाणी
 ५० सरस्वती = स्रोत, झरना
 ५१ बाक् = वाणी, मेघगर्जना
 ५२ अनुमती = चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा, एक कला जिसमें कम है ऐसी पूर्णिमा
 ५३ राका = पूर्णिमा, पूर्णचन्द्रमा युक्त
 ५४ सिनीवाकी = चतुर्दशी युक्त अमावास्या, इस दिन थोड़ासा चन्द्रमा दीखता है
 ५५ कुहूः = जिस अमावास्यामें चन्द्रमा नहीं दीखता
 ५६ यमी = रात्री
 ५७ उर्वशी = विद्युत्, रात्री
 ५८ पृथिवी = विस्तृत रात्री
 ५९ इन्द्राणी = विद्युत्प्रभा
 ६० गौरी = बिजलीकी श्वेत रोशनी
 ६१ गौः = जल देनेवाली मेघपंक्ति
 ६२ धेनुः = जल देनेवाली मेघपंक्ति
 ६३ अघ्न्या = जल देनेवाली मेघपंक्ति
 ६४ पथ्या = अन्तरिक्ष, अवकाश, मार्ग देनेवाला अवकाश
 ६५ स्वस्ति = रहनेका उत्तम स्थान, कल्याण
 ६६ उषाः = उषःकाल
 ६७ हृत्वा = जल वृष्टी, अन्न उत्पन्न करनेवाली वृष्टी
 ६८ रोदसी = गर्जना करनेवाली विद्युत् ।

*

द्युस्थानीय ३१ देवताएँ

(निषण्ड ५।६)

- १ अश्विनौ = आधीरात्रीके पश्चात् आकाशमें उदय होनेवाले दो नक्षत्र
 २ उषाः = उषःकाल
 ३ सूर्यः = सूर्य, प्रभा
 ४ वृषाकपायी = बलवान् जलशोषक सूर्य
 ५ सरण्यू = त्वष्टृपत्नी, विद्युत्प्रभा
 ६ त्वष्टा = त्वष्टा, विद्युत्, सूक्ष्म करनेवाला
 ७ सविता = उदयके पूर्वका सूर्य जिसका सूक्ष्म अंश क्षितिजपर दीख रहा है
 ८ भगः = अर्धोदित सूर्य
 ९ सूर्यः = पूर्णोदित सूर्य
 १० पूषा = किरणोंसे पुष्ट हुआ एक प्रकारका सूर्य
 ११ विष्णुः = सूर्य (पूर्ण प्रकाशित)
 १२ विश्वानरः = तीसरे प्रहरका सूर्य
 १३ वरुणः = चतुर्थ प्रहरका सूर्य
 १४ केशी = क्षितिजपर पहुंचा हुआ किरणोंवाला सूर्य
 १५ केशिनः = अस्त होनेवाला किरणमात्रावाशिष्ट सूर्य
 १६ वृषाकपिः = अस्त हुआ सूर्य
 १७ यमः = अस्तंगत सूर्य
 १८ अजएकपात् = जिसका एक ही किरण दीखता हो ऐसा सूर्य
 १९ पृथिवी = बड़ा व्यापक धुलोक
 २० समुद्रः = नीला आकाश, जो समुद्र जैसा दीखता है
 २१ दध्यङ् = मेघाच्छादित आकाश जिससे किञ्चित् वृष्टी होती हो
 २२ अथर्वा = शान्त आकाश, अचल सूर्य
 २३ मनुः = सूर्य (जिसकी प्रहमाला एक रेषामें आगयी हो) जो मन्वंतर करता है
 २४ आदित्याः = सूर्य किरण
 २५ सप्त ऋषयः = सूर्यके सात किरण, सात नक्षत्र (सप्तर्षि)
 २६ देवाः = नक्षत्र, ग्रह, किरण
 २७ विश्वेदेवाः = सब देव, किरण
 २८ साध्याः = सूर्यरश्मी, किरण

२९ वसवः = सूर्यरश्मी, किरण

३० वाजिनः = सूर्यरश्मी, किरण

३१ देवपत्न्यः = देवोंकी दीप्तियाँ, शक्तियाँ।

इस तरह पृथ्वी स्थानमें ५२ + अन्तरिक्ष स्थानमें ६८ + और बुस्थानमें ३१ मिलकर १५१ देवताएं निघण्टुमें गिनी हैं। इनमें कुछ पुनरुक्त हैं, परन्तु उनका अर्थ स्थानभेदसे पृथक् करके बोध लेना उचित है।

द्वादश आदित्य

इस स्थानपर निघण्टु ५१६ में दिये बुस्थानीय देवताओंके नाम ३१ दिये हैं। इनमें बारह आदित्योंके नाम हैं।

त्वष्टा, सविता, भग, सूर्य, पूषा, विष्णु, विश्वानर, वरुण, केशी (केशिनः), वृषाकपि, यम, अज-एकपात्।

ये द्वादश आदित्योंके नाम हैं। 'केशी' और 'केशिनः' ये दो नाम किरणोंकी न्यूनता और अधिकतासे हैं, इसलिये ये एकके ही मानना योग्य है।

द्वादश आदित्य ये सूर्य उदयसे सूर्य अस्त होने तकके सूर्यके हैं, तथा सूर्यास्तके पश्चात् भी जो प्रकाश रहता है उसका इनमें अन्तर्भाव हुआ है, ऐसा इनके अर्थोंसे प्रतीत होता है।

शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि, द्वादश आदित्य वर्षके १२ महिने हैं। शतपथका यह अर्थ लेनेसे ये पद प्रतिदिनके सूर्यके मानना असंभव होता है। अतः यदि इन पदोंके ये अर्थ रखते हुए इनके साथ १२ महिनोंकी संगति लगानी है, तब तो हमें उत्तरीय ध्रुवके पास ही जाकर वहाँ इन द्वादश आदित्योंका साक्षात्कार करना होगा। क्योंकि वहाँ एक एक महिनेतक एक एक आदित्यकी स्थिति रहती है।

अर्थात् उषा एक महिना रहती है यह पाठक 'उषा देवता' की भूमिकामें देख सकते हैं, उसके पश्चात् सूर्यके कुछ किरण दीखनेकी दशा करीब एक मास तक रह सकती है। इसी तरह बारहों आदित्य प्रत्येक एक एक मास रहकर एक वर्षकी पूर्ति करते हैं। यह स्थिति भूमंडलपर किसी भी अन्य स्थानमें नहीं है। अतः यदि बारह आदित्य बारह महिनोंके दर्शक हैं, तब तो यह स्थिति उत्तरीय ध्रुवके समीपकी ही है। हमारे यहाँ ये बारह आदित्य एक ही दिनमें अपना साक्षात् दर्शन देते हैं। हमारे एक दिनकी आदित्यकी बारह प्रकारकी अवस्थाएं उत्तरीय ध्रुवके पास ३६५ दिनोंमें दीखती हैं और प्रत्येक स्थितिके लिये करीब करीब एक मास लगता है।

यहाँ सूर्य उदयसे पुनः सूर्य उदय तक ये १२ आदित्य आते हैं। पर यहाँ इन आदित्योंका १२ महिनोंके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। 'यम' नाम उस आदित्यका है जिसमें आदित्यकी अस्तके बादकी स्थिति है। 'यम' पदका अर्थ 'युगल' है। अर्थात् यह स्थिति दो मास रहनी चाहिये क्योंकि 'यम' का अर्थ ही 'दो' है।

उत्तरीय ध्रुवके पास ही पूरे दो महिनोंकी बड़ी गहरी रात्री होती है जहाँ बिलकुल सूर्य दर्शन नहीं होता। वस्तुतः वहाँ छः मास सूर्य दर्शन नहीं होता, परन्तु उन छः महिनोंमें ये दो महिने ऐसे होते हैं कि मिसकी गहरी निशा कह सकते हैं, शेष ४ महिनोंमें कुछ न कुछ प्रकाश रहता है अर्थात् यह प्रकाश सूर्यविष न दीखते हुए ही आता है।

'यम' पदकी सार्थकता वर्षके उन दो महिनोंके साथ है कि जिनमें सूर्य और प्रकाश बिलकुल नहीं होता। उषाके सूक्तोंमें बड़ी अंधेरी रात्रीका जो वर्णन दीखता है वह भी यहाँ सार्थ होना संभव है।

इस विचारसे यह सिद्ध होता है कि जो शतपथने बारह आदित्योंके साथ बारह महिनोंका सम्बन्ध जोड़ दिया है वह उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें प्रतिवर्ष दीखनेवाली स्थिति है। समस्त लीजिये कि सूर्य उदय हो रहा है, एक अंश, सूर्यका चौथा भाग क्षितिजपर आगया है तो वह चौथा भाग वैसा का वैसा ही क्षितिजपर एक मास तक दीखता रहेगा। इसका अर्थ बिलकुल उतना ही नहीं अपितु एक मासके बाद एक दो अंश ऊपर चढ़ेगा। यह प्रतिदिन इतना थोड़ा ऊपर चढ़ेगा कि प्रतिदिन उसके चढ़नेका पता तक नहीं लगेगा। यहाँ हमारे देशमें एक घण्टेका उषःकाल रहता है। एक घण्टेमें यहाँ उषः काल समाप्त होता है और सूर्य ऊपर आने लगता है। उत्तरीय ध्रुवके पास यह उषःकाल एक मास तक रहता है। एक मास उषःकाल होनेके बाद सूर्यका उदय होता है। आगेकी सूर्यकी अवस्थाएँ भी इसी तरह एक एक मासमें बढ़ती जाती हैं।

इसीलिये सूर्यकी एक अवस्था एक मास रहनेके कारण एक एक आदित्यका नाम एक एक मासको दिया गया और बारह आदित्योंके बारह महिने माने गये।

यहाँ एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये, वह यह कि जैसा हमारे देशमें मध्याह्नमें सूर्य आकाशके मध्यमें बिलकुल सिरपर आता है वैसा उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें कभी नहीं आता। अधिकसे अधिक सूर्यका ऊपर चढ़ना वहाँ उतना ही होता है

जितना हमारे इस प्रदेशमें सेवरेके नौ-दस बजे तक होता है । बस, यही सूर्यकी ऊपर चढ़नेकी परिचीमा है । यहां तक सूर्य चढ़ गया तो उसको ' विष्णु ' नाम मिलता है । यह विष्णु एक मास तक रहता है । उसके पश्चात् वह नीचे उतरने लगता है और एक एक मासतक उसको अन्यान्य नाम प्राप्त होते हैं ।

इस तरह बारह महिनेके बारह सूर्य ' ठीक एक मास तक एक एक वही सूर्यकी स्थिति ' रहनेसे उत्तरीय ध्रुवप्रदेशमें ही दीखते हैं । किसी अन्य स्थानमें सूर्य एक मास तक एक ही स्थितिमें रहता ही नहीं ।

कई पुराणोंमें प्रतिमास सूर्यका न्यूनाधिक उष्णता मान मानकर बारह महिनोंके बारह सूर्य माने हैं । पर रात्रिमें सूर्य बिलकुल ही नहीं रहता, इस बातको वे भूल गये दीखते हैं । उत्तरीय ध्रुवमें रात्रि और दिनका कोई भेद ही नहीं है, वहां तो पूरे एक मास तक एक प्रकारका सूर्य अपने इर्द गिर्द प्रदक्षिणा करता हुआ देखनेवालेको दीखता है । दूसरे मासमें उससे न्यून वा अधिक प्रकाशवाला, इस तरह बारह महिने दीखता रहता है । ' यम ' संज्ञक युगल महिने पूर्ण अंधेरेके हैं इसीलिये वे युगल कहलाते और वह सूर्यकी ही एक स्थिति मानी गयी है ।

दो महिने रात्रिके, उदयपूर्वकी उषाका एक मास और अस्त-पूर्वके सायंसमयका एक मास, ऐसे चार महिने सूर्यदर्शन बिलकुल नहीं होता, शेष ८ महिने न्यून वा अधिक सूर्य दर्शन होता है इनमें भी २ मास कम शेष ६ मास सूर्य दर्शन होता है । इसीलिये अदितिके ८ पुत्र कहे हैं । जिन आठ महिनोंमें न्यूनाधिक सूर्य दर्शन या सूर्यप्रकाश होता है, वे ८ आदित्य हैं । बाकी ' मार्तण्ड ' अर्थात् (मृत-अण्ड) जिनमें सूर्य रूप अण्डा मरा पड़ा रहता है अर्थात् दीखता नहीं ।

यह सब ठीक ही उत्तरीय ध्रुवकी प्रत्यक्ष स्थिति है । पाठक इसका अधिक विचार करें ।

वाजसनेयी संहिताके ३० वें तथा काण्वसंहिताके ३४ वें अध्यायमें नरमेघके १८४ अर्पण १७३ देवताओंके उद्देश्यसे हैं- (मंत्र ५) १ ब्रह्म, २ क्षत्र, ३ मरुत् ४ तपस्, ५ तमस्, ६ नारक, ७ पाप्मा, ८ आक्रया, ९ काम, १० अतिकुष्ट, ११ नृत्त, १२ गीत, १३ धर्म, १४ नरिष्टा, १५ नर्म, १६ हस, १७ आनन्द, १८ प्रमद, १९ मेधा, २० धैर्य, २१ तपस्, २२ माया, २३ रूप, २४ शुभ, २५ शरव्या, २६ हेति, २७ कर्म, २८ दिष्ट, २९ मृत्यु, ३० अन्तक, ३१ नदी, ३२ ऋक्षीका, ३३ पुरुषव्याघ्र, ३४ गंधर्व-अप्सरस्, ३५ प्रयुज, ३६ सर्प-देव-जन,

३७ अय, ३८ ईर्यता, ३९ पिशाच, ४० यातुधान, ४१ संधि, ४२ गेह, ४३ आर्ता, ४४ निर्ऋति, ४५ आराधि, ४६ निष्कृति, ४७ संज्ञान, ४८ प्रकामोद्य, ४९ वर्ण, ५० बल, ५१ उत्साद, ५२ प्रसुद्, ५३ द्वार, ५४ खप्र, ५५ अधर्म, ५६ पवित्र, ५७ प्रज्ञान, ५८ आशिक्षा, ५९ उपशिक्षा, ६० मर्यादा, ६१ अर्म, ६२ जव ६३ पुष्टि, ६४ वीर्य, ६५ तेजस्, ६६ इरा, ६७ कीलाल, ६८ भद्र, ६९ श्रेयस्, ७० आध्यक्ष, ७१ भा, ७२ प्रभा, ७३ ब्रध्नस्य विष्टपं, ७४ वर्षिष्ठं नाकं, ७५ देवलोक, ७६ मनुष्यलोक, ७७ सर्वलोक, ७८ अवन्ततिवध, ७९ मेघ, ८० प्रकाम, ८१ ऋत्वि, ८२ वैरह्य, ८३ विविक्ति, ८४ औपद्रष्ट्य, ८५ बल, ८६ भूमन्, ८७ प्रिय, ८८ अरिष्टि, ८९ स्वर्ग, ९० वर्षिष्ठ नाक, ९१ मन्यु, ९२ क्रोध, ९३ योग, ९४ शोक, ९५ क्षेम, ९६ उत्कूल-निकूल, ९७ वपु, ९८ शील, ९९ निर्ऋति, १०० यम, १०१ यम, १०२ अथर्वा, १०३ संवत्सर, १०४ परिवत्सर, १०५ इदावत्सर, १०६ इद्वत्सर, १०७ वत्सर, १०८ संवत्सर, १०९ ऋतु, ११० साध्य, १११ सरस्, ११२ उपस्थावरा, ११३ वैशन्ता, ११४ नड्वला, ११५ पार, ११६ अवार, ११७ तीर्थ, ११८ विषम, ११९ स्वन, १२० गुहा, १२१ साजु, १२२ पर्वत, १२३ बीभत्सा, १२४ वर्ण, १२५ तुला, १२६ पश्चादोष, १२७ विश्व भूत, १२८ भूति, १२९ अभूति, १३० आर्ति, १३१ वृद्धि, १३२ संशर, १३३ अक्षराज, १३४ कृत, १३५ त्रेता, १३६ द्वापर, १३७ आस्कंद, १३८ मृत्यु, १३९ अन्तक, १४० क्षुध, १४१ दुष्कृत, १४२ पाप्मा, १४३ प्रतिश्रुत, १४४ घोष, १४५ अन्त, १४६ अनंत, १४७ शब्द, १४८ महस्, १४९ क्रोधा, १५० अवस्वर, १५१ वन, १५२ अन्यतोऽरण्य, १५३ नर्म, १५४ हास्य, १५५ यादस्, १५६ महस्, १५७ महस् १५८ महस्, १५९-१६१ नृत्त, १६२ आक्रन्द, १६३ अमि, १६४ पृथिवी, १६५ वायु, १६६ अन्तरिक्ष, १६७ बुलोक, १६८ सूर्य, १६९ नक्षत्र, १७० चन्द्रमाः, १७१ अहः, १७२ रात्रि, १७३ प्रजापति ।

यद्यपि ये १७३ देवताएं यहाँ हैं, तथापि इनमें कई पुनरुक्त हैं, अतः उनको पृथक् करनेसे १६० के करीब ये देवतायें होती हैं । इनमें अन्तिम कुछ थोड़ी अन्य अन्तरिक्ष आदि स्थानकी हैं, शेष सब पृथ्वीपरकी ही हैं । कुछ कालवाचक हैं, कुछ गुणवाचक हैं, कुछ स्थानवाचक हैं ।

वा० यजुर्वेदमें अनेक अध्यायोंमें अनेक देवताओंका उल्लेख है, उनमें अध्याय १८;२२;२४;२५;२९ और ३९ में अनेक देवताएं हैं, पर इनमें बहुतसी देवताएं पूर्वस्थानमें दी हैं । इन

सब देवताओंका यहाँ पुनः पुनः निर्देश करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

निघण्टुमें कही देवताएं अनेक हैं, उनमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युस्थानमें जो ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, वे स्थूल अक्षरोंमें मुद्रित की हैं। तथापि उनमें मतभेदके लिये बड़ा स्थान है, अतः यहाँ तक यह ३३ देवताओंका प्रश्न अनिर्णीतरा ही आज तक रहा है ऐसा हम यहाँ कह सकते हैं।

जो तो ८ वसु, ११ रुद्र व १२ आदित्य मिलकर ३१ और इन्द्र और प्रजापति मिलकर ३३ देव शतपथानुसार मानते हैं, वे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और द्युलोकमें ११ बता नहीं सकते। उनके मतसे अन्तरिक्षमें ११ प्राण माने जायेंगे तो और बारहवां इन्द्र वहाँ आकर बैठता है और द्युलोकमें उनके मतसे १२ आदित्य मानने पड़ते हैं और वसु तो केवल आठ ही पृथ्वी पर रह जाते हैं, पर वे भी पृथ्वीपर नहीं हैं, जो वे ८ गिनते हैं। इस तरह इस गिनतीमें तीन स्थानोंमें ग्यारहकी व्यवस्था नहीं होती। अतः जो मन्त्र तीन स्थानोंमें ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, ऐसा कहते हैं, उनकी गिनती कुछ और ही होगी और शतपथकी कुछ और ही है।

हमारे मतसे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और द्युस्थानमें ११ यह जो गणना वेद मन्त्रोंमें दीखती है वह गणना अभी-तक किसी भी वैदिक ग्रंथमें स्पष्टतया नहीं बतायी है। उसकी खोज करनी चाहिये। हमने इस विषयमें बहुत ही खोज की, पर अभीतक उसकी व्यवस्था ठीक तरह समझमें नहीं आयी। अर्थात् यह खोज अधूरी ही रही है। जो सुविज्ञ पाठक वेदकी खोज करते हैं, वे इन ३३ देवताओंके ग्यारह ग्यारह विभागोंकी खोज करें और उनको तीनों विभागोंमें यथास्थान निश्चित करके बतावें। इसी तरह इन तैत्तिरीय देवताओंमें ये सब तीन चार सौ देवताएं किस तरह अन्तर्भूत होती हैं अर्थात् किस एक मुख्य देवताके साथ कितनी देवताएं माननी चाहिये, इसका भी निश्चय होना चाहिये।

यहाँ एक कठिनता भी है। पूर्वोक्त निघण्टुकी देवताओंमें पृथ्वी देवता पृथ्वी-अन्तरिक्ष-द्यु इन तीनों स्थानोंमें लिखी है। अर्थात् पृथ्वीस्थानको छोड़कर अन्य दोनों स्थानोंमें इसका अर्थ 'विस्तृत स्थान' इतना ही है। इस तरह पुनरुक्त देवता नामोंका निश्चय होना संभव है। वा. यजु. अ. ३० में भी कई देवता नाम पुनरुक्त हैं। संभवतः उन का भी ऐसा ही निर्णय होगा।

यजुर्वेदके कुछ देवता

अब हम यहाँ यजुर्वेदके कुछ देवताओंके नाम देते हैं— (अ. १।२०) आपिः (प्राप्त करनेवाला), स्वापिः (उत्पन्न रीतिसे प्राप्त करनेवाला), अपिजः (पुनः पुनः उत्पन्न होनेवाला), क्रतुः (यज्ञ), वसुः (निवास हेतु), अहर्पतिः (दिनका स्वामी), मुग्धः (मोह उत्पन्न करनेवाला), मुग्धः वेनंशिनः (सुग्ध होकर नाशको प्राप्त होनेवाला), विनंशिन आन्त्याय (अन्त्य स्थानमें रहनेवाला विनाशकर्ता), अन्त्यः भौवनः (अन्तिम भुवनमें रहनेवाला), भुवनस्पतिः (भुवनोंका पति), अधिपतिः (मुख्य स्वामी)। ये १२ देवताएं वा. य. अ. ९ में हैं।

(अ. २२) बाईसवें अध्यायमें निम्नलिखित देवताएं हैं— (इसमें अग्न्यादि प्रसिद्ध देवताओंको छोड़ा है इतना पाठक स्मरण रखें)— अर्पा मोद, हिंकार, हिंक्रत, क्रन्दत्, अवक्रन्द, प्रोथत्, प्रप्रोथ, गन्ध, घ्रात, निविष्ट, उपविष्ट, सन्दिता, वरगत्, आसीन, शयान, स्वपत्, जाग्रत्, कूजत्, प्रबुद्ध, विजृम्भमाण, विचृत, संहान, उपस्थित, आयन, प्रायण। (अ. २२।७)

यहाँ आसीन (बैठनेवाला), शयान (सोनेवाला) इत्यादि पद प्राणियोंकी अवस्थाओंके वाचक हैं, और ये यहाँ देवता वाचक पद हैं यह ध्यानमें रखना योग्य है।

इसी तरह अगली कण्डिकामें निम्नलिखित देवताओंके नाम हैं— यत्, धावत्, उद्राव, उद्रुत, शृकार, शृकृत, विषण्ण, उत्थित, जव, बल, विवर्तमान, विवृत्, विधून्वान, विभूत, शुश्रूषमाण, शृम्भत्, ईक्षमाण, ईक्षित, वीक्षित, निमेष, (अति सः) खानेवाला, (पिबति सः) पीनेवाला, (मूत्रं करोति सः) मूत्र करनेवाला, (कुर्वत्) करनेवाला, कृत। (२२।८)

ये नाम प्राणियोंकी अवस्थाओंके हैं। ये इस अध्यायमें छोड़के अवस्थाएं करके वर्णन किया है। परन्तु सब प्राणियोंके लिये ये पद लग सकते हैं। ये सब पृथ्वीस्थानीय देवता हैं।

इस तरहकी अन्य देवतायें पाठक इस विभागमें देख सकते हैं।

निघण्टुमें गिनाये देवताओंका उपयोग मंत्रोंमें देखकर भी उनका निर्णय हो सकता है। वह कार्य जिस समय इन मंत्रोंका अर्थ हम करेंगे, उस समय होना संभव है। इस छोटीसी भूमिका में वह नहीं हो सकता।

देवतासम्बन्धी विचार

देव कितने हैं ? वे जड़ हैं या चेतन ? कहाँ रहते और क्या करते हैं ? इत्यादि प्रश्न वेद-स्वाध्यायीके समक्ष उपस्थित होते और समाधान न होनेपर उस विचारको व्यग्र करते हैं।

वेदके देवता-सम्बन्धी निर्णयके लिये ही निरुक्तके दैवत-काण्डकी सृष्टि हुई है और निरुक्त-निर्माणके अन्य प्रयोजनोंके साथ देवता-विनिर्णय भी एक प्रयोजन कहा गया है। यथा—

(१) अथाऽपि याज्ञे दैवतेन बहवः प्रदेशा भवन्ति ।
तदेतेनोपेक्षितव्यम् ॥ (निरु. १।६।१७)

और याज्ञ कर्ममें देवतासम्बन्धी बहुतसे भाग होते हैं वे इस निरुक्तशास्त्रसे ही जानने योग्य हैं।

यज्ञ-प्रकरणमें अनेक देव प्रस्तुत होते हैं उनका सम्यक्-ज्ञान निरुक्त-शास्त्रसे ही होता है।

ते चेद्भूयुलिङ्गज्ञा अत्र स्म इति । (निरु. १।६।१७)

यदि देवता-ज्ञानके अभिमानी यह कहें कि लिङ्गसे देवताका बोध होता है और हम उन लिङ्गों (चिह्नों, संकेतों) को जानते हैं, फिर निरुक्तकी क्या आवश्यकता ? तो वे सुने—

इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्तीति
वायुलिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं चाग्नेये मन्त्रे ॥ (निरु. १।६।१७)

‘ इन्द्रं न त्वा ’ इस अभिदेवताके मंत्रमें वायु और इन्द्रका भी लिङ्ग पाया जाता है।

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्वेति तथाऽभिर्मान्यवे मन्त्रे ॥ (निरु. १।६।१७)

‘ अग्निरिव मन्यो ’ इस मन्यु-देवताके मंत्रमें अग्निका लिङ्ग पाया जाता है। अतः केवल लिङ्ग-ज्ञान दैवत-ज्ञानका परम साधन नहीं, निरुक्त-ज्ञानकी भी आवश्यकता है।

(२) नैघण्टुकमिदं देवता-नाम, प्राधान्येनेदमिति ॥
(निरु. १।६।२०)

निघण्टुमें देवता-नाम दो प्रकारके हैं, नैघण्टुक और प्राधान्य।

तद्यदन्यदैवते मन्त्रे निपतति, नैघण्टुकं तत् ॥
(निरु. १।६।२०)

जो नाम अन्य देवताके मन्त्र में आ पड़ता है वह नैघण्टुक कहलाता है।

तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां,
तद् दैवतमित्याचक्षते । तदुपरिष्ठाद् व्याख्या-
स्यामो नैघण्टुकानि नैगमानीह । (निरु. १।६।२०)

और जो नाम प्राधान्य-स्तुतिवाले देवताओंके हैं उनका नाम दैवत है। उनको हम आगे कहेंगे। यहाँ नैघण्टुक और नैगम नाम कहते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं।

उपर्युक्त समग्र वाक्योंसे यह प्रतीत होता है कि निघण्टुशास्त्र में जितने नाम पड़े गये हैं वे मुख्यतः देवता-नाम हैं। तथा निघण्टु और निरुक्त हमें देवता निर्णय सम्बन्धमें कुछ न कुछ बता सकते हैं।

देवता-ज्ञान दुरुह है। इस विषयमें निरुक्तकार यास्क कहते हैं—

शाकपूणिः संकल्पयाञ्चके, सर्वा देवता जाना-
मीति । तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्बभूव । तां न
जज्ञे । तां पप्रच्छ, विविदिषाणि त्वेति ॥

(निरु. २।२।८)

शाकपूणि आचार्यके मनमें अहंकार उत्पन्न हुआ और उन्होंने विचारा कि ‘ मैं सब देवताएँ जानता हूँ । ’ उनके आगे एक ‘ उभय-लिङ्ग देवता ’ आ खड़ी हुई। उसको वे नहीं जान सके। उन्होंने उसे पूछा ‘ मैं तुझे जानना चाहता हूँ । ’

हमें वेदकी देवताओंका विचार करना है क्योंकि वे ही संसारमें कार्य कर रही हैं परन्तु वे शाकपूणि-जैसे नैरुक्ताचार्य के लिये भी दुर्ज्ञेय हैं।

यास्क महर्षिने देवता-सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है, उसका सार यह है— (निरुक्त । दैवत-काण्ड)

अथातो दैवतम् । तद् यानि नामानि प्राधा-
न्यस्तुतीनां देवतानां तद् दैवतमित्याचक्षते ॥

अब यहाँसे आगे दैवत प्रकरण चलेगा। जो नाम प्राधान्य स्तुतिवाली देवताओंके हैं उन्हींका एक नाम दैवत है। ऐसा आचार्य लोग कहते हैं। मंत्रोंकी देवताएँ प्रधान और अप्रधान दो प्रकारकी हैं। और वे प्रधान और अप्रधानरूपसे एक मंत्रमें भी स्तुत होती हैं।

सैषा देवतोपपरीक्षा । यत्काम ऋषिर्यस्यां
देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते,
तदैवतः स मन्त्रो भवति ।

वह यह देवता-सम्बन्धी विचार किया जाता है। जिस देवताकी कामनासे प्रेरित होकर ऋषि (स्तोता) जिस देवतामें अपनी अर्थ-सिद्धि चाहता हुआ स्तुतिका

प्रयोग करता है उस देवतावाला वह मन्त्र होता है।

तात्पर्य यह कि, स्तोता जिस देवताकी स्तुति करता है, स्तुतिवाले मंत्र (वाक्य) की वही देवता होती है। मंत्रोंके विषय देवता कहलाते हैं अतः देवता-भेदसे—

**तास्त्रिविधा ऋचः । परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः
आध्यात्मिक्यश्च ।**

ये तीन प्रकारकी ऋक् हैं। परोक्षकृता, प्रत्यक्षकृता, और आध्यात्मिकी।

**तत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिर्यु
ज्यन्ते प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य ॥ १ ॥**

‘ इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः ’ (ऋ. १०।८९।१०)

‘ इन्द्रमिदं गायिनो बृहत् ’ (ऋ. १।७।१)

परोक्ष रूपसे की हुई स्तुतियों, जिनमें आराध्य देव सम्मुख नहीं होता, नामकी समग्र विभक्तियोंसे युक्त और प्रथम पुरुषकी क्रियामें होती हैं। जैसे— ‘ इन्द्र ही दिव और इन्द्र ही पृथिवीका शासक है, ’ ‘ हे गायकों ! इन्द्रको ही बृहत् साम गाओ ’ इत्यादि।

**अथ प्रत्यक्षकृता मध्यमपुरुषयोगास्त्वमिति
चैतेन सर्वनाम्ना ।**

‘ त्वमिन्द्र ! बलादधि ’ (ऋ. १०।१५३।२)

‘ वि न इन्द्र ! मृधो जहि ’ (ऋ. १०।१५२।४)

प्रत्यक्षकृता स्तुतियों मध्यमपुरुषमें होती हैं और त्वं, यूयम् आदि सर्वनामसे युक्त। जैसे— ‘ हे इन्द्र ! तू बलसे उत्पन्न हुआ है, ’ ‘ हे इन्द्र ! तू हमारे शत्रुओंको मार दे ’ इत्यादि।

**अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्ष-
कृतानि स्तोतव्यानि ॥**

‘ मा चिदन्यद् वि शंसत ’ (ऋ. ८।१।१)

परन्तु कहीं कहीं प्रत्यक्षरूपमें स्तोता प्रस्तुत होते हैं और स्तोतव्य परोक्ष में आ जाते हैं। जैसे ‘ हे सखा लोगो ! इन्द्रसे भिक्षाकी प्रशंसा मत करो । ’

तात्पर्य यह कि कहीं आप सर्वत्र प्रत्यक्षकृता ऋक्को देवता ही न समझ लें, वे स्तोताओंके लिये भी प्रयुक्त होती हैं।

**आध्यात्मिक्यश्च उत्तमपुरुषयोगाः । अहमिति
चैतेन सर्वनाम्ना । यथैतदिन्द्रो वैकुण्ठी, लबसूक्तं,
वागाम्मृणीयमिति ।**

आध्यात्मिकी स्तुतियों उत्तमपुरुषमें और अहं (मैं) इस सर्वनामसे युक्त। इनके उदाहरण— इन्द्र, वैकुण्ठ, लब और वागाम्मृणीय सूक्त हैं।

निरुक्तकारने मन्त्रोंका वर्गीकरण करके वेद-वर्णित देवताओंका ज्ञान सरल बना दिया है।

**अपि हादेवता देवतावत्स्तूयन्ते, यथाश्वप्रभृती-
न्योपधिपर्यन्तानि ॥ ४ ॥**

और अदेवताएं भी देवता-सदृश स्तुति प्राप्त करती हैं। जैसे— घोड़ेसे लेकर ओषधि-पर्यन्त पदार्थ।

अतः देवताविषयक विचार करनेमें, स्तुतिके कारण, इन्हें देवता नहीं मान लेना चाहिये।

माहाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते ।

कहीं कहीं ऐश्वर्याधिक्यके कारण एक ही देवता बहुत नाम और कार्यसे स्तुति प्राप्त करती है। अर्थात् एक होने पर भी अनेक नाम और अनेक कार्य उसके बताये जाते हैं वास्तवमें उसका आत्मा (शरीर) अनेक नहीं होता। ऐसे स्थलोंपर नाम और कार्य भिन्न होनेसे उन्हें अनेक देवता नहीं मान लेना चाहिये।

एकस्याऽऽत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति ।

कहीं-कहीं एक शरीरवाली देवताके अनेक देव प्रत्यङ्ग बन कर आते हैं। अर्थात् भिन्न होने पर भी शरीरके अङ्ग-समान वर्णित होते हैं।

ऐसे स्थलोंपर एकत्ववादसे देवोंके अनेकत्वमें बाधा नहीं पड़ती।

तिष्ठ एव देवता इति नैरुक्ताः । अग्निः पृथिवी-

स्थाना, वायुर्वन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थानः सूर्यो युस्थानः ॥

तीन ही देवताएँ हैं ऐसा निरुक्त-मतानुयायी मानते हैं।

अग्नि पृथिवी स्थानमें, वायु वा इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानमें, सूर्य यु-स्थानमें।

तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नाम-

धेयानि भवन्ति । अपि वा कर्म-पृथक्त्वात् । यथा-

होताऽध्वर्युर्ब्रह्माद्गाता- इत्यपि एकस्य सतः ।

उन तीनोंके ऐश्वर्यके कारण, एक एक देवताके बहुत नाम होते हैं। अथवा कर्मवैभिन्न्यसे अनेक नाम पड़ते हैं जैसे एक होने पर भी कार्यभेदसे वही मनुष्य कभी होता, कभी अध्वर्यु और कभी ब्रह्मा या उद्गाता भी कहलाता है।

अथाकारचिन्तनं देवतानाम् ।

अब देवताओंके आकारका विचार करेंगे, वे मनुष्यसदृश हैं अथवा मनुष्यसे भिन्न आकारवाली ?

**पुरुष-विधाः स्युरित्येकम् । चेतनावद् हि स्तुतयो
भवन्ति, तथाऽभिधानानि ।**

मनुष्य-सदृश शरीर और ज्ञानवाली हैं ऐसा एक मत है। क्योंकि उनकी स्तुतियाँ चेतन प्राणियोंके समान हैं और नाम भी।

अर्थात् चेतनके जैसे गुण-कर्म होते हैं वैसे इन देवताओंके भी हैं अतः ये भी मनुष्य-सदृश देहवाली हैं ।

अपुरुष-विद्या: स्युरित्यपरम् । अपि तु यद् दृश्यते ।

अपुरुषत्रिधं तत् । तद्यथा-अग्निर्वायुरादित्यः पृथिवी चन्द्रमा इति ।

‘पुरुष-भिन्न आकारवाली हैं’ ऐसा दूसरा मत है । क्योंकि यह जो कुछ दीखता है वह पुरुष (मनुष्य) से भिन्न आकृतिवाला है । जैसे अग्नि, वायु, आदित्य (सूर्य), पृथिवी और चन्द्रमा ।

अपि वा **उभय-विद्या:** स्युः । अपि वा पुरुष विधाना-मेव सतां कर्मात्मान एते स्युः । यथा यज्ञो यजमानस्य ।

अथवा दोनों प्रकारकी हैं । अथवा पुरुष-सदृश मानें तो दूसरी अचेतन देवताओंको चेतन देवताओंका कर्म मान लेंगे । जैसे यज्ञ भी देवता और यजमान भी देवता हों तो यज्ञ यजमानका कर्म माना जाता है । इस प्रकार माननेमें कोई दोष उपस्थित नहीं होगा ।

तिस्र एव देवता इत्युक्तं पुरस्तात् । तासां **भक्तिसाह-चर्यं** व्याख्यास्यामः ।

तीन ही देवता हैं ऐसा पहले कह चुके हैं । उनके भक्ति और साहचर्य कहेंगे ।

अथैतान्यग्निभक्तीनि । अयं लोकः, प्रातःसवनं, वसन्तो, गायत्री, त्रिवृत-स्तोमो, रथन्तर साम । ये च **देवगणाः समाम्नाताः** प्रथमे स्थाने । अग्रायी-पृथिवी-इला इति त्रियः । अथाऽस्य कर्म, वहनं च हविषा, आवाहनं च देवतानां, यच्च किञ्चिद् दार्ष्टिं विषयिकं अग्निकर्मैव तत् । अथास्य संस्तविका देवा **इन्द्रः, सोमो, वरुणः, पर्जन्यः, ऋतवः ।**

अब अग्निके भक्तिनाम कहते हैं । पृथिवी ही इसका लोक, प्रातःसवन ही सवन, वसन्त ही ऋतु, गायत्री ही छन्द, त्रिवृत ही स्तोम, रथन्तर ही इसका साम है । पृथिवी स्थानमें पठित देवगण ही इसके साथी हैं । अग्रायी, पृथिवी और इला ये ही त्रियाँ । हविका वहन, देवताओंका आवाहन और जो कुछ दृष्टिमें आता है वह सब अग्निका कर्म । और इन्द्र, सोम, वरुण, पर्जन्य और ऋतु ये इसके साथ स्तोतव्य (स्तुति-भागी) देव हैं ।

अथैतानीन्द्रभक्तीनि । अन्तरिक्षलोको, माध्यन्दिनं सवनं, ग्रीष्मस्त्रिष्टुप्, पञ्चदश स्तोमो, बृहत् साम । ये च **देवगणाः समाम्नाता मध्यमे स्थाने ।** याश्च त्रियः । अथास्य कर्म, रसाऽनुप्रदानं, वृत्रवधः, या च का

३ दै. (विश्वे देवा)

च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत् । अथाऽस्य संस्तविका देवाः ।

अग्निः, सोमो, वरुणः, पूषा, बृहस्पतिर्ब्रह्मण-स्पतिः-पर्वतः, कुत्सो-विष्णुर्वायुः ।

ये इन्द्रभक्ति नाम हैं जो इन्द्रके साथ पढे जाते हैं । अन्त-रिक्ष ही लोक, माध्यन्दिन ही सवन, ग्रीष्म ऋतु, त्रिष्टुप् छन्दः, पञ्चदश स्तोम, बृहत् ही साम । मध्यम स्थानमें पठित देवगण ही साथी । मध्यम स्थानमें पठित त्रियाँ ही इसकी त्रियाँ । रसका देना, वृत्रका वध और जो कुछ बलका काम है वह इन्द्रका कर्म । और अग्नि, सोम, वरुण, पूषा, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुत्स, विष्णु और वायु ये देव इन्द्रके साथ स्तुति प्राप्त करनेवाले हैं ।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि । असौ लोकः, तृतीयसवनं, वर्षा, जगती, सप्तदशः स्तोमो, वैरूपं साम । ये च **देव-गणाः समाम्नाता उत्तमे स्थाने ।** याश्च त्रियः । अथाऽस्य कर्म, रसाऽऽदानं, रश्मिभिश्च रसधारणं, यच्च किञ्चित् प्रवहितं-आदित्यकर्मैव तत् । **चन्द्रमसा, वायुना, संवत्सरेण-** इति संस्तवः ।

ये आदित्यसम्बन्धी नाम हैं । यौ लोक, तृतीय-सवन ही सवन, वर्षा ऋतु, जगती छन्दः, सप्तदश स्तोम, वैरूप साम । तु-स्थानी देवगण साथी और वहाँ पढी गई त्रियाँ त्रियाँ हैं । रसका आकर्षण करना, किरणोंसे रसका धारण तथा जो कुछ गुप्त (अकथित) कर्म है वह इसका कर्म है । चन्द्रमा वायु और संवत्सरके साथ इसका स्तवन होता है ।

एतेष्वेव स्थान व्यूहेषु- ऋतुच्छन्दःस्तोम-पृष्ठस्य भक्तिशेषमनुकल्पयीत ।

प्रयोग करता है उस देवतावाला वह मन्त्र होता है।

तात्पर्य यह कि, स्तोता जिस देवताकी स्तुति करता है, स्तुतिवाले मंत्र (वाक्य) की वही देवता होती है। मन्त्रोंके विषय देवता कहलाते हैं अतः देवता-भेदसे—

तास्त्रिविधा ऋचः । परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः

आध्यात्मिक्यश्च ।

ये तीन प्रकारकी ऋक् हैं। परोक्षकृता, प्रत्यक्षकृता, और आध्यात्मिकी।

तत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिर्भुज्यन्ते प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य ॥ १ ॥

‘ इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः ’ (ऋ. १०।८९।१०)

‘ इन्द्रमिदं गायिनो बृहत् ’ (ऋ. १।१।१)

परोक्ष रूपसे की हुई स्तुतियें, जिनमें आराध्य देव सम्मुख नहीं होता, नामकी समग्र विभक्तियोंसे युक्त और प्रथम पुरुषका क्रियामें होती हैं। जैसे ‘ इन्द्र ही दिव और इन्द्र ही पृथिवीका शासक है, ’ ‘ हे गायको ! इन्द्रको ही बृहत् साम गाओ ’ इत्यादि।

अथ प्रत्यक्षकृता मध्यमपुरुषयोगास्त्वमिति चैतेन सर्वनाम्ना ।

‘ त्वमिन्द्र ! बलादधि ’ (ऋ. १०।१५३।२)

‘ वि न इन्द्र ! मृधो जहि ’ (ऋ. १०।१५२।४)

प्रत्यक्षकृता स्तुतियें मध्यमपुरुषमें होती हैं और त्वं, यूयम् आदि सर्वनामसे युक्त। जैसे— ‘ हे इन्द्र ! तू बलसे उत्पन्न हुआ है, ’ ‘ हे इन्द्र ! तू हमारे शत्रुओंको मार दे ’ इत्यादि।

अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्षकृतानि स्तोतव्यानि ॥

‘ मा चिदन्यद् वि शंसत ’ (ऋ. ८।१।१)

परन्तु कहीं कहीं प्रत्यक्षरूपमें स्तोता प्रस्तुत होते हैं और स्तोतव्य परोक्ष में आ जाते हैं। जैसे ‘ हे सखा लोगो ! इन्द्रसे भिक्षकी प्रार्थना मत करो । ’

तात्पर्य यह कि कहीं आप सर्वत्र प्रत्यक्षकृता ऋक्को देवता ही न समझ लें, वे स्तोताओंके लिये भी प्रयुक्त होती हैं।

आध्यात्मिक्यश्च उत्तमपुरुषयोगाः । अहमिति चैतेन सर्वनाम्ना । यथैतदिन्द्रो वैकुण्ठी, लवसूक्तं, वागाम्भृणीयमिति ।

आध्यात्मिकी स्तुतियें उत्तमपुरुषमें और अहं (मैं) इस सर्वनामसे युक्त। इनके उदाहरण— इन्द्र, वैकुण्ठ, लव और वागाम्भृणीय सूक्त हैं।

निरुक्तकारने मन्त्रोंका बर्गीकरण करके वेद-वर्णित देवताओंका ज्ञान सरल बना दिया है।

अपि ह्यदेवता देवतावत्स्तूयन्ते, यथाश्वप्रभृती-न्यापधिपर्यन्तानि ॥ ४ ॥

और अदेवताएं भी देवता-सदृश स्तुति प्राप्त करती हैं। जैसे— घोड़ेसे लेकर ओषधि-पर्यन्त पदार्थ।

अतः देवताविषयक विचार करनेमें, स्तुतिके कारण, इन्हें देवता नहीं मान लेना चाहिये।

महाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते ।

कहीं कहीं ऐश्वर्याधिक्यके कारण एक ही देवता बहुत नाम और कार्यसे स्तुति प्राप्त करती है। अर्थात् एक होने पर भी अनेक नाम और अनेक कार्य उसके बताये जाते हैं वास्तवमें उसका आत्मा (शरीर) अनेक नहीं होता। ऐसे स्थलोंपर नाम और कार्य भिन्न होनेसे उन्हें अनेक देवता नहीं मान लेना चाहिये।

एकस्याऽऽत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति ।

कहीं-कहीं एक शरीरवाली देवताके अनेक देव प्रत्यक्ष बन कर आते हैं। अर्थात् भिन्न होने पर भी शरीरके अङ्ग-समान वर्णित होते हैं।

ऐसे स्थलोंपर एकत्ववादसे देवोंके अनेकत्वमें बाधा नहीं पड़ती।

तिस्त्र एव देवता इति नैरुक्ताः । अग्निः पृथिवी-

स्थानो, वायुवेन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थानः सूर्यो युस्थानः ॥

तीन ही देवताएँ हैं ऐसा निरुक्त—मतानुयायी मानते हैं। अग्नि पृथिवी स्थानमें, वायु वा इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानमें, सूर्य यु-स्थानमें।

तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नाम-

धेयानि भवन्ति । अपि वा कर्म-पृथक्त्वात् । यथा-

होताऽध्वर्युर्ब्रह्मोद्गाता- इत्यपि एकस्य सतः ।

उन तीनोंके ऐश्वर्यके कारण, एक एक देवताके बहुत नाम होते हैं। अथवा कर्मवैभिन्न्यसे अनेक नाम पड़ते हैं जैसे एक होने पर भी कार्यभेदसे वही मनुष्य कभी होता, कभी अध्वर्यु और कभी ब्रह्मा या उद्गाता भी कहलाता है।

अथाकारचिन्तनं देवतानाम् ।

अब देवताओंके आकारका विचार करेंगे, वे मनुष्यसदृश हैं अथवा मनुष्यसे भिन्न आकारवाली ?

पुरुष-विधाः स्युरित्येकम् । चेतनावद् हि स्तुतयो भवन्ति, तथाऽभिधानानि ।

मनुष्य-सदृश शरीर और ज्ञानवाली हैं ऐसा एक मत है। क्योंकि उनकी स्तुतियाँ चेतन प्राणियोंके समान हैं और नाम भी।

अर्थात् चेतनके जैसे गुण-कर्म होते हैं वैसे इन देवताओंके भी हैं अतः ये भी मनुष्य-सदृश देहवाली हैं ।

अपुरुष-विद्या: स्युरित्यपरम् । अपि तु यद् दृश्यते ।

अपुरुषविधं तत् । तद्यथा-अग्निर्वायुरादित्यः पृथिवी चन्द्रमा इति ।

‘पुरुष-भिन्न आकारवाली हैं’ ऐसा दूसरा मत है । क्योंकि यह जो कुछ दीखता है वह पुरुष (मनुष्य) से भिन्न आकृतिवाला है । जैसे अग्नि, वायु, आदित्य (सूर्य), पृथिवी और चन्द्रमा ।

अपि वा **उभय-विद्या:** स्युः । अपि वा पुरुष विधाना-

मेव सतां कर्मात्मान एते स्युः । यथा यज्ञो यजमानस्य ।

अथवा दोनों प्रकारकी हैं । अथवा पुरुष-सदृश मानें तो दूसरी अचेतन देवताओंको चेतन देवताओंका कर्म मान लेंगे । जैसे यज्ञ भी देवता और यजमान भी देवता हों तो यज्ञ यजमानका कर्म माना जाता है । इस प्रकार माननेमें कोई दोष उपस्थित नहीं होगा ।

तिस्र एव देवता इत्युक्तं पुरस्तात् । तासां **भक्तिसाह-चर्यं** व्याख्यास्यामः ।

तीन ही देवता हैं ऐसा पहले कह चुके हैं । उनके भक्ति और साहचर्य कहेंगे ।

अथैतान्यग्निभक्तीनि । अयं लोकः, प्रातःसवनं, वसन्तो, गायत्री, त्रिवृत्-स्तोमो, रथन्तर साम । ये च **देवगणाः समाप्नाताः** प्रथमे स्थाने । अग्रायी-पृथिवी-इला इति त्रियः । अथाऽस्य कर्म, वहनं च हविषा, आवाहनं च देवतानां, यच्च किञ्चिद् दार्ष्टिं विषयिकं अग्निकर्मैव तत् । अथास्य संस्तविका देवा **इन्द्रः, सोमो, वरुणः, पर्जन्यः, ऋतवः ।**

अब अग्निके भक्तिनाम कहते हैं । पृथिवी ही इसका लोक, प्रातःसवन ही सवन, वसन्त ही ऋतु, गायत्री ही छन्द, त्रिवृत् ही स्तोम, रथन्तर ही इसका साम है । पृथिवी स्थानमें पठित देवगण ही इसके साथी हैं । अग्रायी, पृथिवी और इला ये ही त्रियः । हविःका वहन, देवताओंका आवाहन और जो कुछ दृष्टिमें आता है वह सब अग्निका कर्म । और इन्द्र, सोम, वरुण, पर्जन्य और ऋतु ये इसके साथ स्तोतव्य (स्तुति-भागी) देव हैं ।

अथैतानीन्द्रभक्तीनि । अन्तरिक्षलोको, माध्यन्दिनं सवनं, ग्रीष्मऋषुप्, पञ्चदश स्तोमो, बृहत् साम । ये च **देवगणाः समाप्नाता मध्यमे स्थाने ।** याश्च त्रियः । अथास्य कर्म, रसाऽनुप्रदानं, वृत्रवधः, या च का

च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत् । अथाऽस्य संस्तविका देवाः ।

अग्निः, सोमो, वरुणः, पूषा, बृहस्पतिर्ब्रह्मण-स्पतिः-पर्वतः, कुत्सो-विष्णुर्वायुः ।

ये इन्द्रभक्ति नाम हैं जो इन्द्रके साथ पढे जाते हैं । अन्त-रिक्ष ही लोक, माध्यन्दिन ही सवन, ग्रीष्म ऋतु, त्रिष्टुप् छन्दः, पञ्चदश स्तोम, बृहत् ही साम । मध्यम स्थानमें पठित देवगण ही साथी । मध्यम स्थानमें पठित त्रियाँ ही इसकी त्रियाँ । रसका देना, वृत्रका वध और जो कुछ बलका काम है वह इन्द्रका कर्म । और अग्नि, सोम, वरुण, पूषा, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुत्स, विष्णु और वायु ये देव इन्द्रके साथ स्तुति प्राप्त करनेवाले हैं ।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि । असौ लोकः, तृतीयसवनं, वर्षा, जगती, सप्तदशः स्तोमो, वैरूपं साम । ये च **देव-गणाः समाप्नाता उत्तमे स्थाने ।** याश्च त्रियः । अथाऽस्य कर्म, रसाऽऽदानं, रश्मिभिश्च रसधारणं, यच्च किञ्चित् प्रवह्नि-आदित्यकर्मैव तत् । **चन्द्रमसा, वायुना, संवत्सरेण-** इति संस्तवः ।

ये आदित्यसम्बन्धी नाम हैं । यौ लोक, तृतीय-सवन ही सवन, वर्षा ऋतु, जगती छन्दः, सप्तदश स्तोम, वैरूप साम । यु-स्थानी देवगण साथी और वहाँ पढी गई त्रियाँ त्रियाँ हैं । रसका आकर्षण करना, किरणोंसे रसका धारण तथा जो कुछ गुप्त (अकथित) कर्म है वह इसका कर्म है । चन्द्रमा वायु और संवत्सरके साथ इसका स्तवन होता है ।

एतेष्वेव स्थान व्यूहेषु- ऋतुच्छन्दःस्तोम-पृष्ठस्य भक्त्येषामनुकल्पयीत ।

इन तीन स्थानोंमें ही ऋतु, छन्दः, स्तोम और पृष्ठ (साम) की शेष कल्पनाएँ कर लेनी चाहिये ।

यास्क महर्षिने तीन स्थानोंके तीन व्यूह बनाये हैं और वे समग्र देवता, छन्द, ऋतु आदिको उन्हींमें बाँट देना चाहते हैं । यह क्रम उनका अपना नहीं, वेदसे लिया हुआ है । प्रमाण के लिए दो एक मन्त्र उद्धृत करता हूँ ।

(१) **वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्-रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ... आदित्यास्त्वा कृण्वन्तु जागतेन छन्दसा ... ॥** (यजु० ११।५८)

इस मंत्रमें वसु रुद्र और आदित्योंके साथ गायत्री, त्रिष्टुप् और जगतीका सम्बन्ध स्पष्ट है । ये देवगण क्रमसे पृथिवी, अन्तरिक्ष और यौ-लोकके हैं, अतः इन लोकोंके साथ भी इन छन्दोंका सम्बन्ध है ।

अग्नेर्भागोऽसि, दीक्षाया आधिपत्यं, ब्रह्म स्पृतं, त्रिवृत
स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि, विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं
पञ्चदशः स्तोमो, नृचक्षसां भागोऽसि, धातुराधि-
पत्यं, जनित्रं स्पृतं, सप्तदशः स्तोमा ००० ॥

(यजु० १४।२४)

यहां अग्नि, इन्द्र और नृचक्षस् (आदित्यों) के साथ त्रिवृत, पञ्चदश और सप्तदश स्तोमोंका सम्बन्ध स्पष्ट है। प्रथम मंत्रमें वसुका अर्थ अग्नि, रुद्रका अर्थ इन्द्र और आदित्यका अर्थ सूर्य लें तो दोनों मंत्र निरुक्तके तीन व्यूहोंको बहुत कुछ प्रमाणित कर देते हैं। इसी प्रकार ऋतु और पृष्ठसम्बन्धी मंत्र भी बहुत हैं जो प्रयोजन न होनेसे यहां नहीं लिखे जाते।

अन्तमें दैवत-काण्डकी भूमिकाका उपसंहार करते हुए ऋषि लिखते हैं—

इतीमा देवता अनुकान्ताः ॥ (निरु० ७।३।१३)

इस प्रकार ये देवताएँ कह दी गईं।

निरुक्तकारने सम्पूर्ण देवताओंकी व्याख्या अपनं ढंगसे की है। उन्होंने सारे देवोंको तीन स्थानोंमें बाँट दिया है यथा—

अग्निः पृथिवीस्थानः। तं प्रथमं व्याख्यास्यामः।

(निरु० ७।४)

अग्नि पृथिवी-स्थानी देव है, उसकी प्रथम व्याख्या करेंगे। परन्तु वेदमें अग्नि शब्द केवल पृथिवीस्थ अग्निका ही वाचक नहीं, अतः उन्हें कहना पडा।

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति। अप्येते उत्तरे ज्योतिषी
अग्नी उच्येते ॥

(निरु० ७।४)

कोई ऐसा न मान ले कि यह पृथिवीस्थ अग्नि ही अग्नि है, मध्यम और उत्तम स्थानवाले देव भी अग्नि कहलाते हैं।

अन्तमें कहा—

यस्तु सूक्तं भजते, यस्मै हविर्निरुप्यतेऽयमेव सोऽग्निः।

निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी अनेन नामधेयेन भजते ॥

(निरु० ७।४)

जो अग्नि सूक्तका सेवन करता, जिसके निमित्त हवि दिया जाता है वह यही पृथिवीस्थ अग्नि है। अन्तरिक्ष और द्यु-लोकस्थ ज्योतिषी गौरुरूपसे अग्नि नाम धारण करती हैं।

अग्निका दूसरा नाम 'जातवेदाः' है। उसके विषयमें भी ऐसा ही कहते हैं—

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति। अप्येते उत्तरे ज्योतिषी

जातवेदसी उच्येते ॥ यस्तु सूक्तं भजते यस्मै हविर्निरु-

प्यतेऽयमेव सोऽग्निर्जातवेदाः। निपातमेवैते उत्तरे

ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजते ॥ (निरु० ७।५)

अर्थात् अन्तरिक्षस्थ और द्युलोकस्थ देव भी जातवेदाः हैं, परन्तु मुख्यतया जातवेदाः यह अग्नि ही है।

वैश्वानर, द्रविणोदा आदि नामोंपर भी यास्क ऋषिका ऐसा ही मत है। यास्कके मतसे जातवेदाः वैश्वानर आदि नामवाले भिन्न देव नहीं हैं, पृथिवी पर इस अग्निके ही ये नाम हैं, इनको भिन्न-भिन्न देव नहीं मानना चाहिये। अग्नि और पृथिवीसे सम्बद्ध नामोंकी व्याख्या करके मध्यम स्थानकी ओर चलते हैं—

अथ मध्यस्थाना देवताः। तासां वायुः

प्रथमगामी भवति।

(निरु० १०।१)

अब मध्यस्थानी देवोंकी व्याख्या करते हैं। उनमें वायु प्रथम है।

इस प्रकरणके देखनेसे पता चलता है कि इन्द्र मित्र वरुण रुद्रादि नाम वायुके ही हैं। मरुत्, रुद्र, ऋभु, पितर आदि गणनाम वायु-समूहके प्रतीत होते हैं। अदिति, सरमा, सरस्वती, इन्द्राणी आदि स्त्रियोंके नाम मध्यस्थानमें होनेवाली वाणी है। उषा आदि प्रत्यक्ष स्त्रीवाचक नामोंको छोड़कर शेष नाम उस वाणी (गर्जना) के ही हैं।

मध्यस्थानके पश्चात् महर्षि द्युस्थानकी ओर बढ़ते हैं—

अथातो द्युस्थाना देवताः। तासामश्विनौ प्रथमा-

ऽऽगामिनौ भवतः ॥

(निरु० १२।१)

अब हम द्यु-स्थानी देवताओंका वर्णन करेंगे। उनमें अश्विनौ प्रथम श्रेणीमें आनेवाले हैं।

ये अश्विनौ कौन हैं? यह प्रश्न जगत्के सम्मुख आज भी जटिल है। यास्कके मतमें मध्यम और उत्तम दोनों स्थानोंके देव मिलकर जिनमें उत्तम स्थानके देव आदित्यकी प्रधानता रहती है, अश्विनौ कहलाते हैं।

तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भम्

अनुत्तमो भागो हि मध्यमः। ज्योतिर्भाग

आदित्यः।

(निरु० १२।१)

उनका समय आधी रातके पश्चात् प्रकाशके प्रवेश होनेपर आरम्भ होता है। उसका अन्धकारयुक्त भाग मध्यम देव और प्रकाशमय भाग आदित्य है।

वायु और आदित्य अश्विनौ हैं। वास्तवमें आधी रातके पश्चात् सूर्य प्राची दिक्में अपनी आभा दर्शाने लगता है। सूर्य उस अवस्थामें अश्विनौ नामसे प्रसिद्ध होता है।

सविता, भग, सूर्य, विष्णु आदि नाम उस आदित्य (सूर्य) के ही हैं। ये नाम काल और कार्यके भेदसे पड़े हैं। उषाः, सूर्या, वृषाकपायी, सरण्यु नाम आदित्यके प्रकाश (आभा) के हैं। इन पदार्थोंके ये नाम कैसे पड़े हैं और वेदके किन मंत्रोंके

आधार पर ऐसा अर्थ करना पडा है, यह विस्तृत व्याख्या निरुक्तमें ही देखिये ।

युस्थानके देवगण —

अथातो युस्थाना देवगणाः । तेषामादित्याः प्रथमा-
गमिनो भवन्ति ।

अब हम यु-स्थानी देवगणका वर्णन करेंगे उनमें आदित्य-
गण प्रथम आते हैं । आदित्य, सप्त-ऋषि, विश्वेदेव, साध्य,
वसु आदि देव-गण सूर्यकी किरणोंके नाम हैं ।

चाहे देवोंकी गणना तीनमें हो या अधिकमें, नैरुक्त लोग
तीनसे अधिक देव माननेको उद्यत नहीं । वसु और आदित्य
सूर्य-रश्मियों या अग्नि-अर्धियोंमें समाविष्ट हो जाते हैं और
रुद्र-गण वायु-दलमें । इस प्रकार वसु, रुद्र और आदित्योंकी
कोई भिन्न सत्ता नहीं रहती । कई लोग विश्वेदेवको सर्वे देव
मानकर उनकी आदित्य-गणके सदृश कोई संख्या नहीं मानते ।
परन्तु यु-स्थानी देवगणमें विश्वेदेव और साध्योंकी गणना
होनेसे वे आदित्यादि गणसे भिन्न गण हैं । वेदकी शैलीसे भी
यही प्रतीत होता है—

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, रुद्रा-
स्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, आदित्यास्त्वा
धूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, विश्वे त्वा देवा
वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा
धूपयतु, वरुणस्त्वा धूपयतु, विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥

(यजु. ११।६०)

ये विश्वेदेव वसु, रुद्र और आदित्यसे भिन्न हैं तथा
विश्वानरके पुत्र हैं । क्योंकि उन्हें अनेकत्र वैश्वानर कहा गया
है । ये सूर्यके रश्मि हों तो भी वसु रुद्र और आदित्यसे पृथक्
ही माने जायेंगे ।

३३ की संख्या

विश्वेदेव तैत्तिरीय —

(१) नहि वो अस्यर्भको देवासो न कुमारकः ।

विश्वे सतोमहान्त इव ॥ १ ॥

(२) इति स्तुतासो असथा रिशादसो,

ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।

मनोदेवा यज्ञियासः ॥ २ ॥

(३) ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।

अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥

(ऋ० ८।३०)

(४) ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बहिरासदन् ।

विदन्नह द्वितासनन् ॥ १ ॥

(ऋ० ८।२८)

*

(५) ये देवासो दिव्येकादशं स्थ,

पृथिव्यामध्येकादश स्थ,

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ,

ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ० १।१३९।११,

यजु० ७।१९)

इन मंत्रोंकी देवता विश्वेदेव हैं । ये तैत्तिरीय हैं और दिव्
अन्तरिक्ष और पृथिवीपर ग्यारह-ग्यारहकी संख्यामें रहती हैं ।
अब सिद्ध हो गया कि ये विश्वेदेव सम्पूर्ण देव नहीं हैं किन्तु
वसु आदिसे पृथक् ३३ की संख्यामें रहते हैं ।

विश्वेदेवकी संख्या ३३३९ है—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्नि त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतेरस्तुणन् बहिरस्सा आदिदधोतारं न्यसाद्यन्त ॥

(ऋ० ३।९।९; १०।५२।६; यजु० ३३।७)

ऋ० ३।९।९ में इस मंत्रकी देवता अग्नि है, अन्यत्र विश्वे
देव देवता हैं । विचारणीय प्रश्न है कि ये विश्वेदेव ३३ हैं या
३३३९ हैं अथवा विश्वेदेव ३३ हैं और सर्वेदेव ३३३९
अथवा विश्वेदेवका सर्वत्र सर्वेदेव ही अर्थ है और ने ३३ या
३३३९ दोनोंमें हो सकते हैं । विश्वेदेव ३३ हैं और वे ही
३३३९ भी, तो परस्पर विरोध आयेगा । यदि सम्पूर्ण देव
३३ की संख्यामें हैं और वे ३३३९ की संख्यामें भी, तो
विरोध है । हाँ, यदि हम विश्वेदेव ३३ और सम्पूर्ण देव
३३३९ माने तो कुछ संगति लग सकती है । निरुक्तकारने
विश्वेदेवाः का अर्थ 'सर्वे देवाः' किया है, परन्तु
उनके मतमें 'देवाः' यह भी गण है । यह सूर्य रश्मिका नाम
है तब 'सर्वे देवाः' विश्वेदेवाः का पर्याय नाम होगा अर्थ
तो आदित्य रश्मि ही लेना पड़ेगा । वे शाकपूणि आचार्यका
मत उद्धृत करते हैं—

'यत् किंचिद् बहुदैवतं तद् वैश्वदेवानां स्थाने युज्यते ।

यदेव विश्वलिङ्गमिति शाकपूणिः ॥' (निरुक्त १२।४)

अर्थात् बहुत देवतावाला मंत्र विश्वेदेवके स्थानमें पढा
जाता है जब अन्य विश्वेदेवयुक्त गायत्र मंत्र न मिले ।

यद्यपि यास्क इसके विरोधी हैं तथापि यह सम्भव है कि
सर्वेदेवताके मंत्र विश्वेदेवताके बनाये गये हों । तब ३३३९
संख्याके मंत्र सर्वेदेवताके हैं ऐसा मानना पड़ेगा ।

पुराणोंमें विश्वेदेव अन्य देवोंसे पृथक् हैं । ब्राह्मणमें भी,
'रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वेदेवाः' (शं०
३।१।२।६) इत्यादि स्थलोंमें विश्वेदेव पृथक् हैं और वे सूर्यके
रश्मि (किरण) हैं ।

यह देवता-विषय बहुत गहन तथा और अधिक मननीय
है क्योंकि यह अनुसन्धान अन्तिम नहीं है ।

अग्नेर्भागोऽसि, दीक्षाया आधिपत्यं, ब्रह्म स्पृतं, त्रिवृत्
स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि, विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं
पञ्चदशः स्तोमो, नृचक्षसां भागोऽसि, धातुराधि-
पत्यं, जनित्रं स्पृतं, सप्तदशः स्तोमा ००० ॥

(यजु० १४।२४)

यहां अग्नि, इन्द्र और नृचक्षस् (आदित्यों) के साथ त्रिवृत्, पञ्चदश और सप्तदश स्तोमोंका सम्बन्ध स्पष्ट है। प्रथम मंत्रमें वसुका अर्थ अग्नि, रुद्रका अर्थ इन्द्र और आदित्यका अर्थ सूर्य लें तो दोनों मंत्र निरुक्तके तीन व्यूहोंको बहुत कुछ प्रमाणित कर देते हैं। इसी प्रकार ऋतु और पृष्ठसम्बन्धी मंत्र भी बहुत हैं जो प्रयोजन न होनेसे यहां नहीं लिखे जाते।

अन्तमें देवत-काण्डकी भूमिकाका उपसंहार करते हुए ऋषि लिखते हैं—

इतीमा देवता अनुकान्ताः ॥ (निरु० ७।३।१३)

इस प्रकार ये देवताएँ कह दी गईं।

निरुक्तकारने सम्पूर्ण देवताओंकी व्याख्या अपनं ढंगसे की है। उन्होंने सारे देवोंको तीन स्थानोंमें बाँट दिया है यथा—

अग्निः पृथिवीस्थानः । तं प्रथमं व्याख्यास्यामः ।
(निरु० ७।४)

अग्नि पृथिवी-स्थानी देव है, उसकी प्रथम व्याख्या करेंगे। परन्तु वेदमें अग्नि शब्द केवल पृथिवीस्थ अग्निका ही वाचक नहीं, अतः उन्हें कहना पड़ा।

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे ज्योतिषी
अग्नी उच्येते ॥ (निरु० ७।४)

कोई ऐसा न मान ले कि यह पृथिवीस्थ अग्नि ही अग्नि है, मध्यम और उत्तम स्थानवाले देव भी अग्नि कहलाते हैं।

अन्तमें कहा—

यस्तु सूक्तं भजते, यस्मै हविर्निरुप्यतेऽयमेव सोऽग्निः ।

निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी अनेन नामधेयेन भजते ॥

(निरु० ७।४)

जो अग्नि सूक्ता सेवन करता, जिसके निमित्त हवि दिया जाता है वह यही पृथिवीस्थ अग्नि है। अन्तरिक्ष और धु-लोकस्थ ज्योतिषी गौणरूपसे अग्नि नाम धारण करती हैं।

अग्निका दूसरा नाम 'जातवेदाः' है। उसके विषयमें भी ऐसा ही कहते हैं—

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे ज्योतिषी
जातवेदस्य उच्येते ।...यस्तु सूक्तं भजते यस्मै हविर्निरु-
प्यतेऽयमेव सोऽग्निर्जातवेदाः । निपातमेवैते उत्तरे
ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजते ॥ (निरु० ७।५)

अर्थात् अन्तरिक्षस्थ और धुलोकस्थ देव भी जातवेदाः हैं, परन्तु मुख्यतया जातवेदाः यह अग्नि ही है।

वैश्वानर, द्रविणोदा आदि नामोंपर भी यास्क ऋषिका ऐसा ही मत है। यास्कके मतसे जातवेदाः वैश्वानर आदि नामवाले भिन्न देव नहीं हैं, पृथिवी पर इस अग्निके ही ये नाम हैं, इनको भिन्न-भिन्न देव नहीं मानना चाहिये। अग्नि और पृथिवीसे सम्बद्ध नामोंकी व्याख्या करके मध्यम स्थानकी ओर चलते हैं—

**अथ मध्यस्थाना देवताः । तासां वायुः
प्रथमगामी भवति ।** (निरु० १०।१)

अब मध्यस्थानी देवोंकी व्याख्या करते हैं। उनमें वायु प्रथम है।

इस प्रकरणके देखनेसे पता चलता है कि इन्द्र मित्र वरुण रुद्रादि नाम वायुके ही हैं। मरुत्, रुद्र, ऋभु, पितर आदि गणनाम वायु-समूहके प्रतीत होते हैं। अदिति, सरमा, सरस्वती, इन्द्राणी आदि स्त्रियोंके नाम मध्यस्थानमें होनेवाली वाणी है। उषा आदि प्रत्यक्ष स्त्रीवाचक नामोंकी छोड़कर शेष नाम उस वाणी (गर्जना) के ही हैं।

मध्यस्थानके पश्चात् महर्षि धुस्थानकी ओर बढ़ते हैं—

**अथातो धुस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमा-
ऽऽगामिनौ भवतः ॥** (निरु० १२।१)

अब हम धु-स्थानी देवताओंका वर्णन करेंगे। उनमें अश्विनौ प्रथम श्रेणीमें आनेवाले हैं।

ये अश्विनौ कौन हैं ? यह प्रश्न जगत्के सम्मुख आज भी जटिल है। यास्कके मतमें मध्यम और उत्तम दोनों स्थानोंके देव मिलकर जिनमें उत्तम स्थानके देव आदित्यकी प्रधानता रहती है, अश्विनौ कहलाते हैं।

तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भम्

**अनुत्तमो भागो हि मध्यमः । ज्योतिर्भाग
आदित्यः ।** (निरु० १२।१)

उनका समय आधी रातके पश्चात् प्रकाशके प्रवेश होनेपर आरम्भ होता है। उसका अन्धकारयुक्त भाग मध्यम देव और प्रकाशमय भाग आदित्य है।

वायु और आदित्य अश्विनौ हैं। वास्तवमें आधी रातके पश्चात् सूर्य प्राची दिक्में अपनी आभा दर्शाने लगता है। सूर्य उस अवस्थामें अश्विनौ नामसे प्रसिद्ध होता है।

सविता, भग, सूर्य, विष्णु आदि नाम उस आदित्य (सूर्य) के ही हैं। ये नाम काल और कार्यके भेदसे पड़े हैं। उषाः, सूर्या, वृषाकपायी, सरण्यू नाम आदित्यके प्रकाश (आभा) के हैं। इन पदार्थोंके ये नाम कैसे पड़े हैं और वेदके किन मंत्रोंके

आधार पर ऐसा अर्थ करना पडा है, यह विस्तृत व्याख्या निरुक्तमें ही देखिये ।

युस्थानके देवगण—

अथातो युस्थाना देवगणाः । तेषामादित्याः प्रथमा-
गामिनो भवन्ति ।

अब हम यु-स्थानी देवगणका वर्णन करेंगे उनमें आदित्य-
गण प्रथम आते हैं । आदित्य, सप्त-ऋषि, विश्वेदेव, साध्य,
वसु आदि देव-गण सूर्यकी किरणोंके नाम हैं ।

चाहे देवोंकी गणना तीनमें हो या अधिकमें, नैरुक्त लोग
तीनसे अधिक देव माननेको उद्यत नहीं । वसु और आदित्य
सूर्य-रश्मियों या अग्नि-अर्धियोंमें समाविष्ट हो जाते हैं और
रुद्र-गण वायु-दलमें । इस प्रकार वसु, रुद्र और आदित्योंकी
कोई भिन्न सत्ता नहीं रहती । कई लोग विश्वे देवको सर्वे देव
मानकर उनकी आदित्य-गणके सदृश कोई संख्या नहीं मानते ।
परन्तु यु-स्थानी देवगणमें विश्वे देव और साध्योंकी गणना
होनेसे वे आदित्यादि गणसे भिन्न गण हैं । वेदकी शैलीसे भी
यही प्रतीत होता है—

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, रुद्रा-
स्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, आदित्यास्त्वा
धूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, विश्वे त्वा देवा
वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा
धूपयतु, वरुणस्त्वा धूपयतु, विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥

(यजु. ११।६०)

ये विश्वे देव वसु, रुद्र और आदित्यसे भिन्न हैं तथा
विश्वानरके पुत्र हैं । क्योंकि उन्हें अनेकत्र वैश्वानर कहा गया
है । ये सूर्यके रश्मि हों तो भी वसु रुद्र और आदित्यसे पृथक्
ही माने जायेंगे ।

३३ की संख्या

विश्वे देव तैत्ति स हैं—

(१) नहि वो अस्यर्भको देवासो न कुमारकः ।

विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ १ ॥

(२) इति स्तुतासो असथा रिशादसो,

ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।

मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ २ ॥

(३) ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।

अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥

(ऋ० ८।३०)

(४) ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिःसदन् ।

विदचह द्वितासनन् ॥ १ ॥

(ऋ० ८।२८)

(५) ये देवासो दिव्येकादशे स्थ,

पृथिव्यामध्येकादशे स्थ,

अप्सुक्षितो महिनैकादशे स्थ,

ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ (ऋ० १।१३९।११,
यजु० ७।१९)

इन मंत्रोंकी देवता विश्वे देव हैं । ये तैत्ति स हैं और दिव्
अन्तरिक्ष और पृथिवीपर ग्यारह-ग्यारहकी संख्यामें रहती हैं ।
अब सिद्ध हो गया कि ये विश्वे देव सम्पूर्ण देव नहीं हैं किन्तु
वसु आदिसे पृथक् ३३ की संख्यामें रहते हैं ।

विश्वे देवकी संख्या ३३३९ है—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्तुणन् बर्हिःरस्मा आदिदधोतारं न्यसादयन्त ॥

(ऋ० ३।९।९; १०।५२।६; यजु० ३३।७)

ऋ० ३।९।९ में इस मंत्रकी देवता अग्नि है, अन्यत्र विश्वे
देव देवता हैं । विचारणीय प्रश्न है कि ये विश्वे देव ३३ हैं या
३३३९ हैं अथवा विश्वेदेव ३३ हैं और सर्वे देव ३३३९
अथवा विश्वे देवका सर्वत्र सर्वे देव ही अर्थ है और वे ३३ या
३३३९ दोनोंमें हो सकते हैं । विश्वे देव ३३ हैं और वे ही
३३३९ भी, तो परस्पर विरोध आयेगा । यदि सम्पूर्ण देव
३३ की संख्यामें हैं और वे ३३३९ की संख्यामें भी, तो
विरोध है । हाँ, यदि हम विश्वे देव ३३ और सम्पूर्ण देव
३३३९ माने तो कुछ संगति लग सकती है । निरुक्तकारने
विश्वे देवाः का अर्थ ' सर्वे देवाः ' किया है, परन्तु
उनके मतमें ' देवाः ' यह भी गण है । यह सूर्य रश्मिका नाम
है तब ' सर्वे देवाः ' विश्वे देवाः का पर्याय नाम होगा अर्थ
तो आदित्य रश्मि ही लेना पड़ेगा । वे शाकपूणि आचार्यका
मत उद्धृत करते हैं—

‘ यतु किंचिद् बहुदैवतं तद् वैश्वदेवानां स्थाने युज्यते ।

यदेव विश्वलिङ्गमिति शाकपूणिः ॥ ’ (निरुक्त १२।४)

अर्थात् बहुत देवतावाला मंत्र विश्वे देवके स्थानमें पडा
जाता है जब अन्य विश्वे देवयुक्त गायत्र मंत्र न मिले ।

यद्यपि यास्क इसके विरोधी हैं तथापि यह सम्भव है कि
सर्वे-देवताके मंत्र विश्वे-देवताके बनाये गये हों । तब ३३३९
संख्याके मंत्र सर्वे-देवताके हैं ऐसा मानना पड़ेगा ।

पुराणोंमें विश्वे देव अन्य देवोंसे पृथक् हैं । ब्राह्मणमें भी,
‘ रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वे देवाः ’ (श०
३।९।२।६) इत्यादि स्थलोंमें विश्वे देव पृथक् हैं और वे सूर्यके
रश्मि (किरण) हैं ।

यह देवता-विषय बहुत गहन तथा और अधिक मननीय
है क्योंकि यह अनुसन्धान अन्तिम नहीं है ।

‘विश्वे देवाः’ के मंत्रोंके संबंधमें विचार

वेदोंमें उपलब्ध देवताओंके वर्णनपरक विभिन्न सूक्त पद लेनेसे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि वे सभी देव असाधारण क्षमतासे युक्त होते हैं तथा वे अत्यन्त सफलतापूर्वक जनताकी लगातार सेवा करते हुए लोगोंको अटल, अडिग एवं अविचल भक्ति और उपासना प्राप्त करनेमें बड़ी स्पृहणीय और विराट् सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वेद मन्त्रोंमें अतीव लोकप्रिय नेता, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक या प्रभुका बड़ा ही प्रभावोत्पादक एवं सजीव चित्रण देखने मिलता है। जनता एवं उपासकों, भक्तों और अनुयायियोंकी रक्षा करनेका गुरुतर कार्य भार सुचारुरूपसे प्रचलित रखकर समूची बुराईयों और सारे दुश्मनों, विरोधियों एवं स्वार्थी शत्रुओंको पराभूत कर विनष्ट करने या मार भगानेसे वैदिक सुकवि और द्रष्टा ऋषि देवोंके निकटतम संपर्कमें रहनेके लिए बड़े समुत्सुक दीख पड़ते हैं और उन्हें आदर-पूर्वक समीप बुलाकर सोम आदि वस्तुओंके प्रदानसे भली-भाँति सुखागत कर उनके पराक्रमों तथा गुणोंका सुन्दर ढंगसे वर्णन करते हुए उनकी सराहना करते हैं। वेदमन्त्रोंके द्रष्टा किस भाँति देवताओंको समीप आनेके लिए निमन्त्रण देते हैं या देवोंका आवाहन करते हैं यह निम्न मन्त्रोंमें देखने योग्य है।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत ।

(ऋ. १।३।८)

‘ हे संरक्षणकर्ता तथा मानवोंके धारण करनेहारे सभी देवो ! इधर आओ । ’

विश्वे देवासो ... सुतमा गन्त तूर्णयः ।

(ऋ. १।३।८)

‘ हे समूचे देवो ! हमने जो सोमरस निचोड़ रखा है उसके निकट शीघ्रतापूर्वक चले आओ । ’ क्योंकि हम—

विश्वान् देवान् हवामहे । (ऋ. १।२३।१०)

‘ सभी देवोंको इधर उपस्थित रहनेके लिये बुलाते हैं । ’

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं ... अवसे ह्वमहे वयम् ।

(ऋ. १।८९।५)

‘ उम प्रभुत्व प्रस्थापित करनेवाले एवं स्थावर जंगमके अधिपति तुल्य इन्द्रको हम अपने संरक्षणार्थ बुलाते हैं । ’

... विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ।

(ऋ. १।८९।७)

‘ सारे देव हमारे समीप संरक्षणकी आयोजना लेकर पहुँच जायें । ’

त्रितः ... देवान् हवत ऊनये । (ऋ. १।१०५।१७)

‘ त्रित ऋषि अपने संरक्षणार्थ देवोंको बुलाता है । ’

त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्र-तूर्येषु शंभुवः ॥

(ऋ. १।१०६।२)

‘ वे विख्यात आदितिके पुत्रो ! सबके द्वारा विस्तारित कार्यके लिए आ पहुँचो और हे द्योतमान एवं देवतारूपी ! हमारे शत्रु-वधोंके कार्योंमें दितकारक बनो । ’

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं ... ऋषिरव्हदृतये ।

(ऋ. १।१०६।६)

‘ कुत्स ऋषिने वृत्रके वध करनेहारे इन्द्रको अपने संरक्षणके लिए बुलाया । ’

उप नो देवा अवसा गमन्वक्त्रिसां सामभिः

स्तूयमानाः ।

(ऋ. १।१०७।२)

‘ अंगिरसोंके सामोंमें प्रशंसित होते हुए देव हमारे पास संरक्षण योजनासे युक्त हां पधारें । ’

धृतव्रता आदित्या ... आरे मत् कर्त ... आगाः ।

शृण्वतो वो ... देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः ॥

(ऋ. २।२९।१)

‘ हे व्रतधारी आदित्यो ! अपराध, दोषको मुझसे दूर कर दो और मैं तुम्हारी की हुई अच्छी बातको जानता हुआ सुनते हुए तुम देवतारूपी आदितिके पुत्रोंको संरक्षण कार्यको अच्छी तरह निभानेके लिए इधर बुलाता हूँ । ’

विश्वे देवास आगत शृणुना म इमं हवम् ।

एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ (ऋ. २।४१।१३, ६।५२।७)

‘ सारे देवो ! इधर आओ, मेरी इस पुकारको सुन लो, और इस कुशासन पर बैठ जाइए । ’

... देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ।

(ऋ. २।४१।१५)

‘सभी देव जिनकी देन पुष्टीकारक होती हैं मेरी इस पुकारको सुन लें ।’

सूकेभिर्वो वचोमिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे
हुवधै ॥ (ऋ. ५।४५।४)

‘हे इन्द्र एवं अग्नि ! तुम्हें मैं देवोंसे स्वीकृत तथा भली-भाँति कहे वचनोंसे संरक्षणके लिए बुलाता हूँ ।’

इन उपर्युक्त मन्त्रोंसे वैदिक ऋषियोंके अन्तस्त्रालमें देवोंके साक्षिध्वकी लालसा किस भाँति जागृत थी सो अत्यन्त स्पष्ट होगा । तथा और भी देखिए—

सुगावो देवाः सदनं अकर्म य आजग्मेदं
सवनं जुषाणाः । भरमाणा वहमाना हवीं
व्यस्मे धत्त वसवो वसूनि ॥ (वा. यजु. ८।१८)

हे देवतागण ! आपके लिए हम सुखदायक घर बना चुके हैं जो तुम इस सवनका सेवन या स्वीकार करते हुए इधर आने लगे; सबको बसानेवाले देवो ! हविर्भागोंको भरपूर देते हुए एवं उन्हें इष्ट स्थानमें पहुँचाते हुए हमारे लिए धन भाण्डारोंकी यहाँपर धर दो ।’

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः ।

वसवो रुद्रा अवसे न आगमञ्छृण्वन्तु मरुतो
हवम् ॥ (ऋ. ८।५४) [वाल. ६] ३

‘सभी देव मिलजुलकर हमारे लिए समीप आ जायँ, वसु एवं रुद्र हमारे संरक्षणके लिए आवें तथा मरुत्वीर भी हमारी पुकार सुन लें ।’

वयमिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना ।
देवा वृधाय ह्वमहे ॥ (ऋ. ८।८३।६)

‘हे अच्छे दान शूर देवो ! हम तो घरमें रहते हुए या मार्ग परसे आवागमन करते हुए तुम्हें ही वृद्धिका कार्य करनेके लिए बुलाते हैं ।’

इस प्रकार देवोंको बुलाकर वैदिक मन्त्रोंके दर्शन करनेहारे प्रतिभाशाली कवि उनसे कैसी प्रार्थना करते हैं तथा अपनी आकांक्षाओंको किस तरह उनके सम्मुख पेश करते हैं यह निम्न मन्त्रोंमें देखने योग्य है—

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं
कृणुतं सुम्नमिष्टये । (ऋ. १०।३६।६)

‘हे अश्विनी ! तुम दोनों हमारे यज्ञको सुलोकको छूनेवाला याने अति उच्च कोटिका तथा शीघ्र हिसारहित होनेवाला बना

दो और हमारा इच्छित सिद्ध हो जाय इस हेतु सुखका निर्माण कर डालो ।’

उपह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृष्वं सख्याय
शंभुवम् । रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि... ॥

(ऋ. १०।३६।७)

‘मैं पवित्रतामय वायुमंडलका सृजन करनेहारे एवं तेजस्वी वीर मरुतोंके दलको अपने निकट बुलाता हूँ ताकि मित्रताके लिए वह सुखदायक प्रतीत होवे और हम उत्कृष्ट कीर्ति पानेके लिए धनसंपदाको बढ़ानेके ढंग सोचते हैं ।’

यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।

जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यशस्तद् देवानामवो
अद्या वृणीमहे । (ऋ. १०।३६।१०)

‘हे देवो ! हम तुमसे जो मांगते हैं उसे दे डालो; वीरतायुक्त, धनसंपन्न यश एवं जयिष्णु कार्यक्रम हमें मिल जाय; अतः आज हम देवोंके उस संरक्षणके ढंगको अपने लिए चुन लेते हैं ।’

ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते
वरुणस्य देवाः । ते सौभगं वीरवद् गोमदमो
दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ (ऋ. १०।३६।१३)

‘जो सारे देव सत्यके प्रेरणकर्ता सविता एवं मित्र तथा वरुणके निर्दिष्ट, व्रतके अनुकूल कार्य करते हैं वे हमें वीरता पूर्ण, गोधन संकुल अच्छे ऐश्वर्यवाले कार्य और अनूठा धन दे डालें ।’

यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।

कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ (ऋ. ६।५१।१५)

‘हे देवो ! तुम तो सचमुच चतुर्दिक द्योतमान एवं अच्छे दान शूर हो तथा तुममें इन्द्र प्रमुख है; मार्गपरसे यात्रा करते समय मिलजुलकर रक्षा करनेवाले तुम देव हमारे लिए सुखका प्रबन्ध कर डालो ।’

आत्मरक्षाका भाव मानवमें किस तीव्रतासे उमड़ पड़ता है यह निम्न मन्त्रमें दीख पड़ता है—

अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः
पिन्वमानाः । अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु
मा पितरो देवहृता ॥ (ऋ. ६।५२।४)

‘प्रतिदिन उत्पन्न होते हुए उषःकाल मुझको बचाएँ प्रति-पल जलसे पूर्ण होती हुई नदियाँ मेरी रक्षा करें, अटल रूपसे

खड़े पहाड़ मेरा संरक्षण करें तथा देवोंकी बुलानेमें पितर अपने संरक्षणकी छत्रछायामें मुझे रख दें ।’

द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां
सुविताय मातरा । उपा उच्छन्त्यप बाधता-
मघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ (ऋ. १०।३५)

‘ आज हमें दोष रहित, महान् एवं मातृतुल्य द्यावापृथिवी सुरक्षित रखें ताकि हमारी भलाई हो जाए; उदित होती हुई उषा पापको दूर कर दे और हम चाहते हैं कि भलीभाँति धनकने-वाला अग्नि हितकारक बने ।’

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वे-
ऽवसे सजोषाः । समस्मे इषं वसवो ददीरन्
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ (ऋ. ७।४८।४)

‘ हे देवो ! हमारे लिए तुम धनसंपदाका निर्माण करो, और तुम सभी मिलकर हमारी रक्षा करनेके लिए कटिवद्ध रहो; हे वसुओ ! हमें तुम अन्नसामग्री भलीभाँति देते रहो और कल्याण कारण साधनोंसे हमेशा हमारे संरक्षणका गुरुतर कार्यभार संपन्न करो ।’

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः ... ।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेषु
इत् वो अन्तमा मदेम ॥ (ऋ. ६।५२।१४)

‘ मेरे कथनको सभी यज्ञमें बैठने योग्य देव सुनलें; मैं कभी निन्दनीय वचन तुम्हारे लिए न कहूँ और तुम्हारे किये सुख-कारक प्रबंधोंमें हम तुम्हारे अत्यन्त निकटवर्ती होकर आनन्दित बनें ।’

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा
नमसा विवासे । अस्मिन् नो अद्य विदथे
यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥
(ऋ. ६।५२।१७)

‘ दर्भमय आसनके बिछानेपर और अग्निके भलीभाँति प्रदीप्त होनेपर बड़े सूक्तसे एवं नमनसे मैं उपासन करता हूँ । आज हमारे इस यज्ञमें उपस्थित होकर सारे तुम पूजनीय देव हमारे दिये हुए इस हविके परिणामस्वरूप हर्षित बनें ।’

इदं देवा शृणुतये यज्ञिया स्थ... पाशे स बद्धो
दुरिते नि युज्यताम् यो अस्माकं मन इदं
हिनस्ति ॥ (अथर्व. २।१२।२)

‘ हे देवो ! जो तुम यजनीय हो तो इस मेरे वचनको सुन लो; जो कोई हमारे इस मनको हिंसित करे अर्थात् कष्ट दे वह फंदेमें बँधा जाकर बुराईमें गिर जाय ।’

देवोंका निम्नलिखित वर्णन देखने योग्य है—

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः ।
विश्वे सन्तो महान्त इत् ॥ (ऋ. ८।३०।१९)

‘ हे देवो ! तुममें कोई न छोटा शिशु है न बालक अपितु सारे ही निश्चयपूर्वक बड़े हैं ।’

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेपां नकिरा
मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ (ऋ. ९।२८।४)
‘ जैसा देव इच्छा करते हैं वैसे ही निश्चयपूर्वक बन जाता है । उनके इस सामर्थ्यको न कोई विनष्ट कर पाता है, कृपण मानव भी इनके सामने झुक जाते हैं ।’

सदा देवा अरेपसः । (सामवेद ४४२)

‘ देव हमेशा निर्दोष रहते हैं ।’

इसी कारण इन देवोंकी मनःपूर्वक प्रशंसा की जाती है । देवोंके संरक्षणका परिणाम निम्न मंत्रमें बताया है—

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं प्रायन्ते स
जोषसः ॥ (ऋ. ८।२७।१७)

‘ जिसकी रक्षाका भार हाथमें दान लेकर मित्र, वरुण एवं अर्यमा मिलकर उठाते हैं वह बिना युद्ध ठाने धन पाता है और सुगम साधनोंसे मार्गका अन्त पा लेता है अर्थात् मार्गपर यातायात करनेमें उसे तनिक भी कठिनाई नहीं प्रतीत होती है ।’ इसी कारण उनकी सराहना की जाती है ।

अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्या-
प्यम् । प्र ण पूर्वस्यै सुविताय वोचत मक्षु सुस्त्राय
नव्यसे ॥ (ऋ. ८।२७।१०)

‘ हे शत्रुविध्वंसक देवो ! तुममें सच्चसुच बंधुता एवं सजाती-यताके भाव विद्यमान हैं इसलिए अब हमसे शीघ्र भली भाँति कह दो कि पूर्वकालीन भलाई एवं नये ढंगके सुखको पानेके लिए हम क्या करें ।’

वि नो देवासो अद्रुहोऽछिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद् दुरादसवो नू चिदन्तितो वरुथमादधर्षति ॥
(ऋ. ८।७७।९)

‘ द्रोह न करनेहारे एवं सबको बसानेवाले हे देवो ! हमें वह छिद्ररहित याने त्रुटिरहित स्वीकरणीय सुख दे डालो जिसे न कोई दूरसे या समीपसे ही आक्रान्त करनेका साहस कर सके । ’

देवदेवं वोऽवसे देवदेवमभिष्टये । देवदेवं हुवेम वाजसातये गुणन्तो देव्या धिया ॥ (ऋ. ८।२७।१३)

‘ अपनी रक्षाके लिए तुममेंसे प्रत्येक देवको हम बुलाते हैं, अपनी इच्छा पूर्ण हो इसलिए हरएक देवको निमंत्रित करते हैं और द्योतमान बुद्धिशक्तिसे निष्पादित स्तोत्रोंसे प्रशंसा करते हुए अन्नकी प्राप्ति हो इस हेतुसे प्राति देवको हम समीप आनेके लिए विनति करते रहें । ’

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः । ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवो विदः ॥ (ऋ. ८।२७।१४)

‘ सारे देव तो अपने साथ देन लेकर और एक विचारवाले होकर तथा एकत्रित रूपसे मनुको दान देते हैं और हमारी इच्छा है कि वे आज हमारे लिए और हमारी सन्तानके लिए भी धनके दाता बनें । ’

‘ विश्वे देवा ’ सूक्तोंके स्मरणीय वाक्य

वैदिक कवि विभिन्न देवोंकी स्तुति करते हुए उनसे क्या अपेक्षा रखते हैं तथा उनके सम्मुख किस तरह अपनी आवश्यकताओंका विवरण करते हुए अपनी महत्वपूर्ण एवं शाश्वतिक मांग प्रस्तुत करते हैं, इस विषयपर निम्न मंत्रांशोंसे पर्याप्त प्रकाश पड़ता है और साथ ही वैदिक सूक्तों एवं मंत्रोंके दर्शनकर्ताओंके जीवन विषयक दृष्टिकोणको भी अत्यधिक प्रस्फुट करनेमें बड़ी भारी सहायता मिल सकती है ।

शत्रुओं तथा बुराइयोंको सुदूर भगाकर सुख एवं भलाईकी अक्षुण्ण प्राप्ति मानवमात्रका प्रमुख उद्देश्य है और वैदिक सूक्तोंमें इसकी एक प्रबलतम झलक हमें देखने मिलती है । दुश्मनों तथा बुराइयोंके मटियामेट होनेपर आर्थिक सुस्थितिका सुप्रबंध समाधानकारक ढंगसे करके सुदीर्घ जीवनका सुदीर्घ कालतक इष्ट-मित्रों एवं पुत्र-पौत्रों समेत उपभोग लेना भी मानवका दूसरा एक अतिप्रबल अदम्य उद्देश्य है और इसकी भी झलक वेदमंत्रोंमें यथेष्ट उपलब्ध होती हैं । अस्तु, वेदके ही शब्दोंमें वैदिक

ऋषियोंकी अदम्य लालसासे परिचित होनेके लिए निम्न वचनोंकी ओर ध्यान देना चाहिए ।

ते असभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः ।

बाधमाना अप द्विषः ॥ (ऋ. १०।१०।३)

‘ (ते अमृताः) वे अमरपनका उपभोग लेनेवाले देव (मर्त्येभ्यः असभ्यं) मरणशील हम मानवोंको, (द्विषः अप बाधमानाः) द्वेष करनेवालोंको दूर मार भगाते हुए (शर्म यंसन्) सुखका प्रदान करें । ’

... ऊतये ... हवामहे । रथं न दुर्गात् ... विश्व-

स्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ (ऋ. १।१०।६।१)

‘ हम संरक्षणार्थ देवों तथा दिव्य दल बलको बुलाते हैं और जिस प्रकार बीहड़ स्थानमेंसे या दुर्गम जगहसे रथको खींच बाहर निकालते हैं उसी तरह, हे देवो ! हमें समूचे पाप या कष्टमेंसे पूर्णतया बाहर निकाल हमारा बेड़ा पार कर दो । ’

... यूयं द्वेषांसि सनुतयुयोत ... अद्या च नो

मृलयत अपरं च ॥ (ऋ. २।२९।२)

‘ तुम द्वेषोंको गुप्तस्थानमें भेजकर हमसे दूर करो और आज तथा बादमें भी सुख देते रहो । ’

यूयं नो स्वस्ति दधात । (ऋ. २।२९।३)

**... देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमा-
नाय मह्यम् ... मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ।**

(ऋ. २।२९।४)

‘ तुम हमारे कल्याणका प्रबंध करो; हे देवो ! तुम ही सच-मुच हमारे आस हो और ऐसे वे तुम याचना करनेवाले मुझको सुख दे दो, क्योंकि तुम्हारे जैसे आसोंके मौजूद होनेपर हमें थकावट न होने पाय । ’

आरे पाशा आरे अद्यानि देवा । (ऋ. २।२९।५)

‘ हे देवो ! फंदे और पाप हमसे दूर रहें । ’ अर्थात् कभी जालों तथा पापोंके चँगुलमें हम न फँस जायें ।

यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् । (ऋ. ३।५४।२०)

‘ वीर मरुत हमें कल्याणकारक सुखका प्रदान करें । ’

... अवन्तु नः । मरुतो मृलयन्तु नः ।

(ऋ. १।२३।१२)

‘ वीर मरुत हमारी रक्षा करें और हमें सुख दे दें । ’

देवा नो ... सदमित् वृधे असन् ... रक्षितारो
दिवे दिवे । (ऋ. १।८९।१)

‘ प्रतिदिन रक्षाका कार्य सुचारुरूपसे चलाते हुए देव हमेशा हमारे संवर्धनार्थ चेष्टाशील रहें । ’

मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा
गमन्निह । (ऋ. १।८९।७)

‘ मननशील तथा विद्वानोंके दृष्टिकोणको साथ रखनेवाले सभी देव हमारे लिए संरक्षणकी आयोजना बनाकर इधर पधारें । ’

देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः
प्रतिरन्तु जीवसे । (ऋ. १।८९।२)

‘ हम देवोंकी मित्रताको प्राप्त करें और हमारा जीवन अक्षुण्ण रूपसे प्रचलित रहे इसलिए देव हमारी आयुष्य रेखाको बड़ा दें । ’

... विश्वा द्वेषांसि सनुतयुयोत ... (ऋ. १०।१००।९)

‘ सभी द्वेषभावोंको हमसे दूर करो । ’

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन ... (ऋ. १०।६३।१२)

‘ हे देवो ! द्वेषभावको हमसे हटा दो । ’

गोभिः ध्याम यशसो जनेष्वा ।

सदा देवास इळया सचेमहि ॥ (ऋ. १०।६४।११)

‘ हम गोधनसे युक्त होकर जनतामें यशस्वी बन जायें और हे देवो ! हमेशा हम अन्नसे युक्त रहें । ’

... उरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।१२)

‘ हमारे हितके लिए विशाल सुख दे डालो । ’

ते ... अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा
स्वस्तये । (ऋ. १०।६३।७)

‘ ऐसे वे देवो ! तुम भयरहित सुखका प्रदान करो और भलाई हो जाय इसलिए हमारे लिए सुगम एवं सुन्दर मार्ग बना दो अर्थात् हमें बीहड़ सबकोपर न चलना पड़े । ’

मा प्र गाम पथा वयं ...

मान्तः स्थुर्नो अरातयः । (ऋ. १०।५७।१)

‘ हम मार्ग छोड़कर दूर भटकते न चलें और हमारे शत्रुओंको अन्दर स्थान न मिले । अर्थात् हम मार्गभ्रष्ट न हों तथा शत्रु हमारे भीतर जगह न पा सकें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए । ’

विश्वे नो देवा अवसागमन्तु ।

विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे । (ऋ. १०।३५।१३)

‘ सभी देव संरक्षणकी आयोजना साथ लेकर हमारे निकट पहुँच जायें और समूचा द्रव्य एवं बल हमारे लिए रहे । ’

मा दुर्धिदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत ... । (ऋ. १०।३६।२)

‘ बुरे ज्ञानवाली पीडा हमपर शासन न करें । ’ ज्ञानका दुरुपयोग करनेवाली बुरी मनोवृत्तिका शासन या प्रभुत्व प्रस्थापित न होने पाय ।

अवन्तु नो अमृतासस्तुरासः (ऋ. ५।४२।५)

‘ अमरपनको प्राप्त हुए देव त्वरापूर्वक कार्य करनेवाले बनकर हमारी रक्षा करे । ’

देवो देवः सुहवो भूतु मंह्यं । मा नो माता
पृथिवी दुर्मतौ घात । (ऋ. ५।४२।१६)

‘ मेरे लिए हर एक देव सुगमतापूर्वक बुलानेयोग्य बन जाय और हमें भूमाता दुर्बुद्धिमें न रखे । ’

सदा सुगः पितुर्माँ अस्तु पन्था । (ऋ. ३।५४।२१)

‘ मार्ग हमेंशा सुखपूर्वक तथा अन्न युक्त रहें । ’ यह अभिलाषा तो यात्रियों एवं विदेशोंमें जानेवाले लोगोंके अन्तस्तलमें ही जाग्रत हुआ करती है और वैदिक कवि यात्रा करनेके अभ्यस्त थे ऐसा स्पष्ट होता है ।

अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः । (अथर्व. ५।३।५)

वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विद्वा दुरिता
स्याम । (ऋ. १०।३१।१)

‘ हम लोग अच्छे वीर एवं अक्षीण और निर्दोष शरीरवाले बनें, सभी बुराइयोंको लौघते चलें । ’



दैवत--संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

१० विश्वे देवाः ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३।७-९)

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

ओमांसश्वर्षणीधृतो	विश्वे देवास आ गन्त	। दाश्रांसो दाशुषः सुतम्	*७
विश्वे देवासो अप्तुरः	सुतमा गन्त तूर्णयः	। उस्मा इव स्वसंराणि	८
विश्वे देवासो अस्त्रिध	एहिमायासो अद्रुहः	। मेधं जुषन्त वह्नयः	९ ३

॥ २ ॥ (ऋ० १।१४।१-१२)

(४-१८) मेघातिथिः । काण्वः । गायत्री ।

ऐभिरग्ने दुवो गिरो	विश्वेभिः सोमपीतये	। देवोभिर्याहि यार्क्षि च	१
आ त्वा कण्वा अहूषत	गृणन्ति विप्र ते धियः	। देवोभिरग्ने आ गहि	२ ५
इन्द्रवायू बृहस्पतिं	मित्राग्निं पूषणं भगम्	। आदित्यान् मारुतं गणम्	+३
प्र वो अग्रियन्त इन्द्रवो	मत्सरा मादयिष्णवः	। द्रप्सा मध्वश्चमूषदः	४
ईळते त्वामवस्यवः	कण्वासो वृक्तवर्हिषः	। हविष्मन्तो अरंकृतः	५
घृतर्षष्ठा मनोयुजो	ये त्वा वहन्ति वह्नयः	। आ देवान्तसोमपीतये	६
तान् यजत्राँ ऋतावृधो	ऽग्ने पत्नीवतस्कृधि	। मध्वः सुजिह्व पायय	७ १०
ये यजत्रा य ईड्या	स्ते ते पिबन्तु जिह्वया	। मध्वोरग्ने वर्षट्कृति	८
आकीं सूर्यस्य रोचनाद्	विश्वान् देवाँ उषर्बुधः	। विप्रो होतेह वक्षति	९
विश्वेभिः सोम्यं मध्व	ग्ने इन्द्रेण वायुना	। पिबा मित्रस्य धामभिः	१०
त्वं होता मनुर्हितो	ऽग्ने यज्ञेषु सीदसि	। सेमे नो अध्वरं यज	११
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे	हरितो देव रोहितः	। तामिदुवाँ इहा वह	१२ १५

* ऋ. १,३,७ = वा० य० ७,३३ । + ऋ० १,१४,३ = वा० य० ३३,४५ ।

१ दै. (विश्वे देवाः)

॥ ३ ॥ (ऋ० १।२३।१०-१२)

विश्वान् देवान् हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः १०
जयतामिव तन्यतु मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ११
हस्काराद् विद्युतस्पर्शतो जाता अवन्तु नः । मरुतो मूळयन्तु नः १२ १८

॥ ४ ॥ (ऋ० १।८९।१-१०)×

(१९-३७) गोतमो राह्वगणः । १-५, ७ जगती; ६ विराट्-स्थाना; ८-१० त्रिष्टुप् ।

आ नो मद्राः कर्तवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिर्दः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असु अम्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे १
देवानां मद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सुख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे २ २०
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमर्दिति दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ३
तन्नो वातो मयोश्च वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोश्च वस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ४
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ६
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ७ २५
मद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा मद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ८
शतमिह शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मर्या रीरिषतायुर्गन्तौः ९
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षं मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् +१० १८

× ऋ० १।८९।१-१० = वा० य० २५, १४-२३;

॥ ऋ० १।८९।१० = अथर्व. ७, ६, १;

+ ऋ० १।८९।६, ८ = सा० १।८७४-७५ ।

॥ ५ ॥ (क्र० ११९०१-९) × गायत्री; ९ अनुष्टुप् ।

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः	१	
ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महौभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा	२	३०
ते असभ्यं शर्म यंसन्मृता मर्त्येभ्यः । बाधमाना अप द्विषः	३	
वि नः पथः सुविताय चियन्तिवन्द्रो मरुतः । पूषा भगो वन्द्यासः	४	
उत नो धियो गोअग्राः पूषन् विष्णवेवयावः । कर्तो नः स्वस्तिमर्तः	५	
मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः	६	
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता	७	३५
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमो अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः	८	
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्रमः	९	३७

॥ ६ ॥ (क्र० ११९०५१-१९)

(३८-५६) अत्र आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । पङ्क्तिः; ८ यवमध्या महाबृहती; १९ त्रिष्टुप् ।

चन्द्रमा अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।		
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्यतो वित्तं मे अस्य रोदसी	+१	
अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम् ।		
तुजाते वृष्ण्यं पर्यः परिवाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी	२	
मो षु देवा अदः स्वर्गं रव पादि दिवस्परि ।		
मा सोम्यस्य शंभुवः शूने भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी	३	४०
यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति ।		
कं ऋतं पूर्य गतं कस्तद् विभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी	४	
अमी ये देवाः स्थनं त्रिष्वारोचने दिवः ।		
कद् वं ऋतं कदनृतं कं प्रत्ना व आहुतिर्वित्तं मे अस्य रोदसी	५	
कद् वं ऋतस्य धर्षसि कद् वरुणस्य चक्षणम् ।		
कदर्यम्णो महस्पथाऽति क्रामेम दूढयो वित्तं मे अस्य रोदसी	६	
अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित् ।		
तं मा व्यन्त्याध्योऽवृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी	७	
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पशवः ।		
मूषो न शिश्रा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी	८	४५

× क्र० १,९०,६-९ = वा० य० १३,२७ = २९; ३६,९ ।

+ वा० य० ३३,९०; अथर्व. १८,४,८९; सा० ४१७

अमी ये सुप्त रश्मय—स्तत्रा मे नाभिरातता ।	
त्रितस्तद् वेदाप्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी	९
अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः ।	
देवत्रा नु प्रवाच्य सग्रीचीना नि वावृतु—वित्तं मे अस्य रोदसी	१०
सुपर्णा एत आसते मध्य आरोधने दिवः ।	
ते संधन्ति पथो वृकं तरन्तं यद्धतीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी	११
नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् ।	
ऋतमर्षन्ति सिन्धवः सत्यं तातान् सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी	१२
अग्रे तव त्यदुक्थ्यं देवेष्वस्त्याप्यम् ।	
स नः सत्तो मनुष्वदा देवान् यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य रोदसी	१३ ५०
सत्तो होता मनुष्वदा देवाँ अच्छा विदुष्टरः ।	
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी	१४
ब्रह्मा कृणोति वरुणो गातुविदं तमीमहे ।	
व्यूर्णोति हुदा मति नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रोदसी	१५
असौ यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः ।	
न स देवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी	१६
त्रितः कूपेऽवहितो देवान् हवत ऊतये ।	
तच्छ्रुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नहूरणादुरु वित्तं मे अस्य रोदसी	१७
अरुणो मा सकृद् वृकः पथा यन्तं ददर्श हि ।	
उज्जिहीते निचाय्या तष्टेव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी	१८ ५५
एनाङ्गुषेण वयमिन्द्रवन्तो ऽभि ध्याम वृजने सर्ववीराः ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१९ ५६

॥ ७ ॥ (ऋ० १।१०६।१-७)

(५७-६६) कुत्स आङ्गिरसः । जगती, ७ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अर्दिति हवामहे ।	
रथं न दुर्गाद् वंसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अहंसो निषिपपर्तन	१
त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः । रथं न दुर्गाद्०	२
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवीपुत्रे कतावृधा । रथं न दुर्गाद्०	३ ५९

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ४ ६०
 बृहस्पते सदुमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत् ते मनुर्हितं तदीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ५
 इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं सचीपतिं काटे निर्बाळह् कृषिरह् दूतये । रथं न दुर्गाद् ० ६
 देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ७ ६३

॥ ८ ॥ (क्र० १।१०७।१-३) त्रिष्टुप् ।

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्न—मादित्यासो भवता मृलयन्तः ।
 आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्ववृत्वा—दंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्
 उप नो देवा अवसा गम्—न्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः ।
 इन्द्रं इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् २ ६५
 तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्नि—स्तदर्यमा तत् सविता चनो धात् ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ३ ६६

॥ ९ ॥ (क्र० १।१२१।१-१५)

(६७-९६) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । (इन्द्रो वा) । त्रिष्टुप् ।

कदित्था नूः पात्रं देवयुतां श्रवद् गिरां अङ्गिरसां तुरण्यन् ।
 प्र यदानङ्गिश्च आ हर्म्यस्यो—रु क्रैसते अध्वरे यजत्रः १
 स्तम्भीद्ध द्यां स धरुणं प्रुषाय—दृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः ।
 अनु स्वजां महिषश्चक्षत त्रां मेनामश्वस्य परि मातरं गोः २
 नक्षद्वमरुणीः पूर्व्यं राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु धून् ।
 तक्षद् वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे ३
 अस्य मदे स्वयं दा क्रताया—पीवृतमुस्त्रियाणामनीकम् ।
 यद्ध प्रसर्गे त्रिककुम्भिवर्त—दप द्रुहो मानुषस्य दुरो वः ४
 तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणं भुरण्यू ।
 शुचि यत् ते रेक्ण आर्यजन्त सबर्दुघायाः पर्य उस्त्रियायाः ५
 अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उपसो न सूरः ।
 इन्दुर्येभिराष्ट खेदुहव्यैः सुवेण सिञ्चञ्जराभि धाम ६
 स्त्रिध्मा यद् वनधितिरपस्यात् सूरौ अध्वरे परि रोधना गोः ।
 यद्ध प्रभासि कृत्व्यां अनु धू—ननर्विशे पश्चिषे तुराय ७ ७३

अष्टा महो दिव आदो हरीं इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम् ।	
हरिं यत् ते मन्दिनं दुक्षन् वृधे गोरमसमद्रिभिर्वाताप्यम्	८
त्वमायसं प्रति वर्तयो गो—दिवो अश्मानमुपनीतमृध्वा ।	
कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्व—ञ्छुणमनन्तैः परियासि वृधैः	९ ७५
पुरा यत् स्वरस्तमसो अपीते—स्तमद्रिवः फलिंगं हेतिमस्य ।	
शुष्णस्य चित् परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः	१०
अनु त्वा मही पाजसी अचक्रे द्यावाक्षामा मदतामिन्द्र कर्मन् ।	
त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो वराहुम्	११
त्वमिन्द्र नयो याँ अवो नृन् तिष्ठा वातस्य सुयुजो वहिष्ठान् ।	
यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्थ ततश्च वज्रम्	१२
त्वं सरो हरितो रामयो नृन् भरच्चक्रमेतशो नायमिन्द्र ।	
प्रास्य पारं नवति नाव्याना—मपि कर्तमवर्तयोऽयज्युन्	१३
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरितादभीके ।	
प्र नो वाजान् रथ्योऽश्वबुध्या—निषे यन्धि श्रवसे सूनृतायै	१४ ८०
मा सा ते अस्सत् सुमतिर्वि दसद् वाजप्रमहः समिषो वरन्त ।	
आ नो भज मधवन् गोष्वर्यो मंहिष्ठास्ते सध्मादः स्याम	१५ ८१

॥ १० ॥ (क्र० १।१२२।१-१५) त्रिष्टुप् ; ५-६ विराड् रूपा ।

प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळहुषे भरध्वम् ।	
दिवो अस्तोष्यसुरस्य वीरै—रिपुष्येव मरुतो रोदस्योः	१
पत्नीव पूर्वहूति वावृध्या उपासानक्ता पुरुधा विदानि ।	
स्त्रीर्नात्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः	२
ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान् ।	
शिशीतमिन्द्रापर्वता युवं न—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः	३
उत त्या मे यशसा श्वेतनायै व्यन्ता पान्तौशिजो हुवध्यै ।	
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः	४ ८५
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नशे ।	
प्र वः पूष्णे दावन् आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः	५ ८६

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमो—त श्रुतं सदेने विश्वतः सीम् ।	
श्रोतुं नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धुरद्भिः	६
स्तुषे सा वा वरुण मित्र राति—र्गवाँ शता पृक्षयामेषु पजे ।	
श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासो अगमन्	७
अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः ।	
जनो यः पजेभ्यो वाजिनीवा—नश्वावतो रथिनो मह्यं सूरिः	८
जनो यो मित्रावरुणावभिधु—गपो न वाँ सुनोत्यक्षण्याधुक् ।	
स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त आप यदीं होत्राभिर्ऋतावा	९ ९०
स ब्राधतो नहुषो दंसुजूतः शर्धेस्तरो नरां गूर्तश्रवाः ।	
विसृष्टरातिर्याति बाळहसृत्वा विश्वासु पृत्सु सदुमिच्छरः	१०
अध गमन्ता नहुषो हवै सूरः श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।	
नभोजुवो यन्निर्वस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते	११
एतं शर्धे धाम यस्य सूरै—रित्यवोचन् दशतयस्य नंशे ।	
द्युम्नानि येषु वसुताती रारन् विश्वे सन्वन्तु प्रभृथेषु वाजम्	१२
मन्दांमहे दशतयस्य धासे—द्विर्यत् पञ्च बिभ्रतो यन्त्यन्ना ।	
किमिष्टाश्च इष्टरश्मिरेत ईशानासस्तरुष ऋञ्जते नृन्	१३
हिरण्यकर्ण मणिग्रीवमर्ण—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।	
अर्यो गिरः सद्य आ जग्मुषीरो—स्नाश्वाकन्तुभयैष्वसे	१४ ९५
चत्वारो मा मशशरस्य शिश्न—स्त्रयो राज्ञ आयवसस्य जिष्णोः ।	
रथो वाँ मित्रावरुणा दीर्घाप्साः स्यूमगमस्तिः सूरौ नाद्यौत्	१५ ९६

॥ ११ ॥ (ऋ० १।१३९।१, ११)

(९७-९८) परुच्छेपो दैवोदासिः । १ अत्यष्टिः, ११ त्रिष्टुप् । x

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धौ दिव्यं वृणीमह
इन्द्रवायू वृणीमहे ।

यद्ध ऋणा विवस्वति नामा सदायि नव्यंसी ।

अध प्र स्र न उप यन्तु धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः

१

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्

११ ९८

॥ १२ ॥ (ऋ० १।१६४।१-४१)

(९९-१३९ दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप्, १२, १५, २३, २९, ३६, ४१ जगती ।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य आता मध्यमो अस्यश्रः ।	
तृतीयो आता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्वपतिं सप्तपुत्रम्	१
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।	
त्रिनाभिं चक्रमजरमनर्वं यन्मेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः	२ १००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वः ।	
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम	३
को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति ।	
भूम्या असुरसृगात्मा कं स्वित् को विद्रांसमुषं गात् प्रष्टुमेतत्	४
पार्कः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामिना निहिता पदानि ।	
वत्से वृष्कयेऽधि सप्त तन्तून् तत्तिरे कवय ओतवा उ	५
अचिकित्वाश्चिकितुषश्चिदत्र कवीन् पृच्छामि विद्वाने न विद्वान् ।	
वि यस्तस्तम्भ षष्ठिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि खिदेकम्	६
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः ।	
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वविं वसाना उदकं पदापुः	७ १०५
माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे ।	
सा बीभत्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः	८
युक्ता माताऽऽसीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः ।	
अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूपं त्रिषु योजनेषु	९
तिस्रो मातृस्त्रीन् पितृन् बिभ्रदेकं ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति ।	
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविद्रं वाचमविश्वमिन्वाम्	१०
द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वति चक्रं परि धामृतस्य ।	
आ पुत्रा अग्रे मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विश्वतिश्च तस्थुः	११
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् ।	
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षष्ठर आहुरपितम्	१२ ११०
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।	
तस्य नार्क्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः	१३ १११

सर्नेभि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति ।	
सूर्यस्य चक्षु रजसैत्यावृतं तस्मिन्नापिता भुवनानि विश्वा	१४
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति ।	
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रजन्ते विकृतानि रूपशः	१५
स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षणां वि चैतदुन्धः ।	
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेतु यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत्	१६
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं विभ्रती गौरुदस्थात् ।	
सा कद्रीची कं स्विदधं परागात् कं स्वित् सूते नहि यूथे अन्तः	१७ ११५
अवः परेण पितरं यो अस्या—नुवेदं पर एनावरेण ।	
कवीयमानः क इह प्र वोचद् देवं मनः कुतो अधि प्रजातम्	१८
ये अर्वाञ्चस्तां उ पराच आहु—र्ये पराञ्चस्तां उ अर्वाच आहुः ।	
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति	१९
द्वा सुपर्णा सुयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।	
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्व—त्यनश्नन्नन्यौ अभि चाकशीति	२०
यत्रां सुपर्णा अमृतस्य भाग—मर्निमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।	
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश	२१
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे ।	
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्व्रे तन्नोन्नश्चद्यः पितरं न वेद	२२ १२०
यद् गायत्रे अधि गायत्रमार्हितं त्रैष्टुभाद् वा त्रैष्टुभं निरतक्षत ।	
यद् वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः	२३
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्क—मर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।	
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ऽक्षरेण मिमते सप्त वाणीः	२४
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् रथंतरे सूर्य पर्यपश्यत् ।	
गायत्रस्य समिधस्तिष्ठ आहु—स्ततो मद्वा प्र रिरिचे महित्वा	२५
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।	
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नो ऽभीद्वो धर्मस्तदु षु प्र वोचम्	२६
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् ।	
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय	२७ १२५

गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ ।	
सुक्काणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पर्यते पर्योभिः	२८ १२६
अयं स शिङ्ङक्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता ।	
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद् भवन्ती प्रति वन्निमौहत	२९
अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् भ्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम् ।	
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिर्मर्त्यो मर्त्येना सयोनिः	३०
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परां च पृथिभिश्चरन्तम् ।	
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः	३१
य ई चकार न सो अस्य वेद य ई ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात् ।	
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्वहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश	३२ १३०
द्यौर्म पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् ।	
उत्तानयोश्चम्ब्रोइर्योनिरन्तरा पिता दुहितुर्गर्भमाधात्	३३
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।	
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम	३४
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।	
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम	३५
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि ।	
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः	३६
न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनेद्धो मनसा चरामि ।	
यदा मार्गन् प्रथमजा ऋतस्यादिद् वाचो अश्रुवे भागमस्याः	३७ १३५
अपाङ् प्राडैति स्वधया गृभीतो ऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ।	
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्ययुन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्	३८
ऋचो अक्षरं परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।	
यस्तन्न वेद किमुचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते	३९
सूयवसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।	
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमृदुकमाचरन्ती	४०
गौरीर्ममाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।	
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्	४१ १३९

॥ १३ ॥ (ऋ० १।१८६।१-११)

(१४०-१५०) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।
 अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा १ १४०
 आ नो विश्व आस्क्रा गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।
 भुवन् यथा नो विश्वे वृधासः करन्त्सुषाहा विथुरं न शवः २
 प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे ऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।
 असद् यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः ३
 उप व एषे नमसा जिगीषोषासानक्ता सुदुधैव धेनुः ।
 समाने अहन् विमिमानो अकं विष्टुरूपे परासि सस्मिन्नूधन् ४
 उत नोऽर्हिर्बुध्न्योऽङ्गे मयस्कः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः ।
 येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति ५
 उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत् सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।
 आ वृत्रहेन्द्रश्चरणिप्रास्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः ६ १४५
 उत न ई मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।
 तमीं गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नसन्त ७
 उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः सद् रोदसी समनसः सदन्तु ।
 पृषदश्वासोऽवनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः ८
 प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति ।
 अघ्न यदेषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रपायन्तु सेनाः ९
 प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति ।
 अद्वेषो विष्णुर्वीर्यं क्रभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् १०
 इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदेनी च भूयाः ।
 नि या देवेषु यतते वसूयुर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ११ १५०

॥ १४ ॥ (ऋ० २।२९।१-७)

(१५२-५७) कूर्मो गात्समदो, गुत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत् कर्त रहस्ररिवागः ।
 शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः
 *

यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो यूयं द्रवांसि सनुतयुयोत । अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च	२
किमु नु वः कृणवामापरिण किं सनेन वसव आप्येन । यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात	३
हये देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् । मा वो रथो मध्यमवाळुते भून्मा युष्मावत्स्वापिपु श्रमिष्म	४
प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास । आरे पाशा आरे अघानि देवा मा मार्धि पुत्रे विमिव ब्रभीष्ट	५ १५५
अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् । त्राध्वै नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वै कर्तादवपदो यजत्राः	६
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान आ विदं शूनमापेः । मा रायो राजन्त्सुयमादव स्था बृदद् वदेम विदथे सुवीराः	७ १५७

॥ १५ ॥ (ऋ० २।३।१-७)

(१५८-६७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती, ७ त्रिष्टुप् । अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा । प्र यद् वयो न पतन्वस्मानस्परि श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः	१
अधं स्मा न उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विश्व वाजयुम् । यदाशवः पद्याभिस्तिव्रतो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः	२
उत स्य न इन्द्रो विश्वर्षणिर्दिवः शर्धेन मारुतेन सुक्रतुः । अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिर्भा रथं महे सनये वाजसातये	३ १६०
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टाग्राभिः सजोषा जूजुवद् रथम् । इळा भगो बृहद्वोत रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती	४
उत त्ये देवी सुभगे मिथुदृशोपासानक्ता जगतामपीजुवा । स्तुषे यद् वा पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे	५
उत वः शंसमुशिजामिव श्मस्यर्हिर्बुध्न्योऽज एकपादुत । त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधेऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि	६
एता वो वक्ष्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम् । श्रवस्यवो वाजं चकानाः सप्तिर्न रथ्यो अहं धीतिमदयाः	७ १६४

॥ १६ ॥ (ऋ० २।४१।१३-१५) गायत्री ।

विश्वे देवासु आ गतं शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत
तीव्रो वो मधुमाँ अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिबत काम्यम्
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम्

१३ १६५

१४

१५ १६७

॥ १७ ॥ (ऋ० ३।२०।१,५)

(१६८-६९) गायत्री कौशिकः । त्रिष्टुप् ।

अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः ।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अश्वरं वावशानाः
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं सवितारं च देवम् ।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वयं रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे

१

५ १६९

॥ १८ ॥ (ऋ० ३।५४।१-२२)

(१७०-२२१) प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । त्रिष्टुप् ।

इमं महे विदध्याय शुषं शश्वत् कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः ।
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्रः
महिं महे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामो म इच्छश्चरति प्रजानन् ।
ययोर्हि स्तोमं विदधेषु देवाः संपर्यवो मादयन्ते सचायोः
युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु महे षु णः सुविताय प्र भूतम् ।
इदं दिवे नमो अग्ने पृथिव्यै सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्
उतो हि वाँ पूर्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः ।
नरश्चिद् वाँ समिथे शूरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः
को अद्वा वेदु क इह प्र वोचद् देवाँ अच्छा पथ्याइ का समेति ।
ददृश एषामवमा सदाँसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु
कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट ऋतस्य योना विघृते मदन्ती ।
नाना चक्राते सदनं यथा वेः समानेन क्रतुना संविदाने
समान्या विर्युते दूरेअन्ते ध्रुवे पदे तस्थतुर्जागरूकैः ।
उत स्वसारा युवती भवन्ती आदु ब्रुवाते मिथुनानि नाम
विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो महो देवान् विभ्रती न व्यथेते ।
एजद् ध्रुवं पत्यते विश्वमेकं चरत् पतत्रि विषुणं वि जातम्

१ १७०

२

३

४

५

६ १७५

७

८ १७७

सनां पुराणमध्यैम्यारा—न्महः पितुर्जनितुर्जामि तन्नः ।	
देवासो यत्र पनितार एवै—रुरां पथि व्युते तस्थुरन्तः	९
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवी—मृदूदराः शृणवन्नमिजिह्वाः ।	
मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः	१०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्व—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः ।	
देवेषु च सवितः श्लोकमश्रे—रादुस्मयमा सुव सर्वतातिम्	११ १८०
सुकृत् सुपाणिः स्वर्वा कृतावा देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात् ।	
पूषण्वन्तं क्रभवो मादयध्व—मूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमंतष्ट	१२
विद्युद्रंथा मरुतं कष्टिमन्तो दिवो मर्या कृतजाता अयासः ।	
सरस्वती शृणवन् यज्ञियासो धाता रयिं सहवीरं तुरासः	१३
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्ममर्का भगस्येव कारिणो यामनि गमन् ।	
उरुक्रमः कंकुहो यस्य पूर्वा—न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः	१४
इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमान उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।	
पुरंदरो वृत्रहा धृष्णुषेणः संगृभ्या न आ भरा भूरिं पश्वः	१५
नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा सजात्यमश्विनोश्चारु नाम ।	
युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा	१६ १८५
महत् तद् वः कवयश्चारु नाम यद्ध देवा भवथ विश्व इन्द्रै ।	
सखं ऋभुभिः पुरुहूत प्रियेभि—ग्निमा धियं सातये तक्षता नः	१७
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो ऽदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।	
युयोतं नो अनपत्यानि गन्तोः प्रजावान् नः पशुमां अस्तु गातुः	१८
देवानां दूतः पुरुष प्रसूतो ऽनागान् वोचतु सर्वताता ।	
शृणोतु नः पृथिवी द्यौरुतापः सूर्यो नक्षत्रैरुर्वान्तरिक्षम्	१९
शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळ्या मदन्तः ।	
आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म मद्रम्	२०
सदा सुगः पितुमां अस्तु पन्था मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त ।	
भगो मे अग्ने सरुये न मृध्या उद् रायो अश्यां सदनं पुरुक्षोः	२१ १९०
स्वदस्व हव्या समिषो दिदी—ह्यस्मज्ज्यक् सं मिमीहि श्रवांसि ।	
विश्वो अग्ने पृतसु ताज्जेषि शत्रू—नहा विश्वा सुमना दीदिही नः	२२ १९१

॥ १९ ॥ (ऋ० ३।५।१-२२)

उषसः पूर्वा अध यद् व्युषु—महद् वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः व्रता देवानामुप नु प्रभूषन् महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१
मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः । पुराण्योः सन्नोः केतुरन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	२
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीधे पूर्याणि । समिद्धे अग्रावृतमिद् वदेम महद् देवानामसुरत्वमेकम्	३
समानो राजा विभृतः पुरुत्रा शर्ये शयासु प्रयुतो वनानु । अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद् देवानामसुरत्वमेकम्	४ १९५
आक्षित् पूर्वास्वपरा अनुरुत् सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः । अन्तर्वतीः सुवते अप्रवीता महद् देवानामसुरत्वमेकम्	५
शयुः परस्तादध नु द्विमाता ऽबन्धनश्चरति वत्स एकः । मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद् देवानामसुरत्वमेकम्	६
द्विमाता होता विदथेषु सग्रा—लन्वग्रं चरति क्षेति बुधः । प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद् देवानामसुरत्वमेकम्	७
शरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् । अन्तर्मतिश्चरति निषिधं गो—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	८
नि वैवेति पलितो दूत आ—स्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन । वपूषि बिभ्रदुभि नो वि चष्टे महद् देवानामसुरत्वमेकम्	९ २००
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पार्थः प्रिया धामान्यमृता दधानः । अग्निष्ठा विश्वा भुव्नानि वेद महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१०
नाना चक्राते यम्याऽ वपूषि तयोरन्यद् रोचते कृष्णमन्यत् । श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद् देवानामसुरत्वमेकम्	११
माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुधे धापयेते समीची । ऋतस्य ते सदसीळे अन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१२
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः । ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१३ २०४

प्र ये धामानि पुन्याण्यर्चान् वि यदुच्छान् वियोतारो अमूराः । विधातारो वि ते दधुरजस्ता ऋतधीतयो रुरुचन्त दुस्माः	२	२३०
प्र पस्त्याइमदिति सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम् । उभे यथा नो अहनी निपाते उषासानक्ता करतामदब्धे	३	
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्था—मिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः । इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तममवद् वरुथम्	४	
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरत्रि भगस्य । पात् पतिर्जन्यादहंसो नो मित्रो मित्रियादुत न उरुष्येत्	५	
नू रौदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः । समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो धर्मस्वरसो नद्योइ अप व्रन्	६	
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् । नहि मित्रस्य वरुणस्य धासि—मर्हीमसि प्रमियं सान्वग्नेः	७	२३५
अग्निरीशे वसव्यस्या—ऽग्निर्महः सौभगस्य । तान्यस्मभ्यं रासते	८	
उषो मधोन्या वह स्रुते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति	९	
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत्	१०	२३८

॥ २४ ॥ (ऋ० ५।२६।९)

(२३९) वसूयव आत्रेयः । गायत्री ।

एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः । देवासः सर्वथा विशा	९	२३९
---	---	-----

॥ २५ ॥ (ऋ० ५।४१।१-२०)

(२४०-२३) भौमोऽग्निः । त्रिष्टुप्, १६-१७ अतिजगती, २० एकपदा विराट् ।

को नु वा मित्रावरुणावृतायन् दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे । ऋतस्य वा सदसि त्रासीथा नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान्	१	२४०
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायु—रिन्द्रं ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त । नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळहुपे सजोषाः	२	
आ वां येष्ठाऽश्विना हुवच्ये वार्तस्य पत्नम् रथ्यस्य पुष्टौ । उत वां दिवो असुराय मन्म ग्रान्धासीव यज्यवे भरध्वम्	३	
प्र सक्ष्णो दिव्यः कर्णहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः । पूषा भगः प्रभृथे विश्वभौजा आजि न जग्मुराश्वतमाः	४	२४३

प्र वो रयि युक्ताश्चै भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः ।	
सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा मरुतस्तुराणाम्	५
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमकैः ।	
इषुधयव क्रतुसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः	६ २४५
उप व एषे वन्द्येभिः शूषैः प्र यद्ही दिवश्चितयद्भिरकैः	
उषासानक्ता विदुषीव विश्वमा हा वहतो मर्त्यीय यज्ञम्	७
अभि वो अर्चे पोष्यावतो नृन् वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः ।	
धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीरोषधी राय एषे	८
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः ।	
पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धन्तः शंस नयो अभिष्टौ	९
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति ।	
गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना	१०
कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद् राये चिकितुषे भगाय ।	
आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः	११ २५०
शृणोतु न ऊर्जा पतिगिरः स नभस्तरियाँ इषिरः परिज्मा ।	
शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि सुचो बबृहाणस्याद्रेः	१२
विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः ।	
वर्यश्चन सुभ्व आर्व यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्तैः	१३
आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्माऽपश्चाच्छा सुमखाय वोचम् ।	
वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः	१४
पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरून्नी वा शक्रा या पायुभिश्च ।	
सिषक्तु माता मही रसा नः सत् सूरिभिर्ऋजुहस्तं ऋजुवनिः	१५
कथा दाशेम नर्मसा सुदानूनेवया मरुतो अच्छौक्तौ प्रश्रवसो मरुतो अच्छौक्तौ ।	
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धा दुस्साकं भूदुपमातिवनिः	१६ २५५
इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवासो वनते मर्त्यो वः ।	
अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जगसीत	१७
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः ।	
सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः	१८ २५७

पद्या वस्ते पुरुषा वपूँष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं ररिहाणा ।	
ऋतस्य सन्न वि चरामि विद्वान् महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१४ २०५
पदे इव निहिते दुस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत् ।	
सध्रीचीना पथ्याङ्गे सा विषूची महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१५
आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सवर्दुर्धाः शशया अप्रदुग्धाः ।	
नव्यानव्या युवतयो भवन्ती महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१६
यदुन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन् युथे नि दधाति रेतः ।	
स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१७
वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासुः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः ।	
षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१८
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान ।	
इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१९ २१०
मही समैरक्ष्मवा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यृष्टे ।	
शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद् देवानामसुरत्वमेकम्	२०
इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति हितमित्रो न राजा ।	
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा महद् देवानामसुरत्वमेकम्	२१
निषिष्व्वरीस्त ओषधीरुतापो रयिं त इन्द्र पृथिवी विमर्ति ।	
सखायस्ते वामभाजः स्याम महद् देवानामसुरत्वमेकम्	२२ २१३

॥ २० ॥ (ऋ० ३।५६।१-८)

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि ।	
न रोदसी अद्भुता वेधाभिर्न पर्वता निनमै तस्थिर्वासः	१
षड् भारो एको अचरन् बिभर्त्युतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः ।	
तिस्रो महीरुपर्वास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दश्येका	२ २१५
त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान् ।	
त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम्	३
अभीक आसां पदवीरवो ध्यादित्यानामह्ने चारु नाम ।	
आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग् व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन्	४ २१७

त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीना—मुत त्रिमाता विदथेषु सग्राद् ।
 क्रतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्या—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः
 त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्वः ।
 त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भर्ग त्रातर्धिषणे सातये धाः
 त्रिरा दिवः सविता सौषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।
 आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सुवार्य
 त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः ।
 क्रतावान इषिरा दूळभास—स्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः

॥ २१ ॥ (ऋ० ३।८।८)

(२२२-२८) गायिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।
 सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्

॥ २२ ॥ (ऋ० ३।५७।१-६)

प्र मे विविक्कां अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् ।
 सद्यश्चिद् या दुदुहे भूरि धासे—रिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्थाः
 इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न ग्रीताः शशयं दुदुहे ।
 विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुममश्याम्
 या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्ति नमस्यन्तीर्जानते गर्भमसिन् ।
 अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूषि
 अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा ।
 इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यज्ञत्राः
 या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यते उरुची ।
 तयेह विश्वा अवसे यज्ञत्रा—ना सादय पायया चा मधूनि
 या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा—सश्चन्ती पीपयद् देव चित्रा ।
 तामसभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो राखं सुमतिं विश्वजन्याम्

॥ २३ ॥ (ऋ० ४।५५।१-१०)

(२२९-३८) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ८-१० गायत्री ।

को वस्त्राता वसवः को वरुता द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नः
 सहीयसो वरुण मित्र मर्तात् को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः

३ दै. (विश्वे देवाः)

५

६

७ २१०

८ २२१

८ २२२

१

२

३ २२५

४

५

६ २२८

१ २२९

अभि न इळा युथस्य माता स्मन्नदीभिर्बुधशी वा गृणातु ।
 उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणाना ऽभ्युर्वाना प्रभृथस्यायोः
 सिषक्तु न ऊर्ज्यस्य पृष्टेः

१९

२० २५९

॥ २६ ॥ (ऋ० ५।४२।१-१०, १२-१८) त्रिष्टुप्, १७ एकपदा विराट् ।

प्र शंतमा वरुणं दीर्घिती गी—मित्रं भगमदिति नूनमश्याः ।

पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्व—तूर्तपन्था असुरो मयोभुः

१ २६०

प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् ।

ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्य—हं मित्रे वरुणे यन्मयोभु

२

उदीरय कवितमं कवीना—मुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन ।

स नो वसन्ति प्रयता हितानि चन्द्रार्णि देवः सविता सुवाति

३

समिन्द्र णो मनसा नेपि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।

सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञिर्यानाम्

४

देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम् ।

ऋभुक्षा वाज उत वा पुरंधि—रवन्तु नो अमृतासस्तुरासः

५

मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णो—रजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि ।

न ते पूर्वे मघवन् नापरासो न वीर्यं नृतनः कश्चनाप

६ २६५

उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।

यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरुवसुरागमञ्जोहुवानम्

७

तवोतिभिः सचमाना अरिष्ठा बृहस्पते मघवानः सुवीराः ।

ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्रदाः सुभगास्तेपु रायः

८

विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः ।

अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विषः सूर्याद् यावयस्व

९

य ओहते रक्षसो देववीता—वचक्रोभिस्तं मरुतो नि यात ।

यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात् तुच्छयान् कामान् करते सिष्विदानः

१०

दर्भूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभवतृष्टाः ।

सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः

१२ २७०

प्र स्र महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम् ।

य ओहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अकुणोदिदं नः

१३ २७१

प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तं—मिळस्पतिं जरितनूनमश्याः ।

यो अब्दिमाँ उदनिमाँ इयतिँ प्र विद्युता रोदसी उधमाणः १४

एषः स्तोमो मारुतं श्रुधो अच्छा रुद्रस्य सूनूर्युवन्यूरुदश्याः ।

कामो राये हवते मा स्वस्त्यु—पं स्तुहि पृषदश्वो अयासः १५

प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीरोषधी राये अश्याः ।

देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धातु १६

उरौ देवा अनिवाधे स्याम

१७ २७५

समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभ्रुवा सुप्रणीती गमेम ।

आ नो रयिं बहत्तमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभगानि १८ २७६

॥ २७ ॥ (क्र० ५।४३।१-१७) त्रिष्टुप्, १६ एकपदा विराट् ।

आ धेनवः पर्यसा तूर्ण्यथा अर्मर्धन्तीरुपं नो यन्तु मध्वा ।

महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभ्रुवो जरिता जौहवीति १

आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्वै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे ।

पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम् २

अध्वर्यवश्चक्रुवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम् ।

होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय ३

दश क्षिपो युज्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारां सुहस्ता ।

मध्वो रसं सुगभस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशुः ४ २८०

असावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय ।

हरी रथे सुधुरा योगै अर्वा—गिन्द्रं प्रिया कृणुहि हूयमानः ५

आ नो महीमरमतिं सजोषा धां देवी नमसा रातहव्याम् ।

मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञा—माग्रे वह पथिभिर्देवयानैः ६

अज्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वृषावन्तं नाग्निना तपन्तः ।

पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि ७

अच्छा मही बृहती शंतमा गी—र्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्वै ।

मयोभ्रुवां सुरथा यातमर्वा—ग्गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम् ८

प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्या—ऽहं पूष्ण उत वायोरेदिक्षि ।

या राधसा चोदितारां मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन् ९ २८५

आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः ।	
यज्ञं गिरौ जरितुः सुष्टुतिं च विश्वं गन्त मरुतो विश्वं ऊती	१०
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् ।	
हवै देवी जुजुषाणा घृताचीं शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु	११
आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदर्ने सादयध्वम् ।	
सादद्योनिं दम आ दीदुवांसं हिरण्यवर्णमरूपं सपेम	१२
आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोर्मभिर्हुवानः ।	
आ वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः	१३
मातृष्पदे परमे शुक्र आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो अगमन् ।	
सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे	१४ २९०
बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्रे धियाजुरो मिथुनासः सचन्त ।	
देवोदेवः सुहवो भूतु मद्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धातु	१५
उरौ देवा अनिबाधे स्याम	१६
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।	
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि	१७ २९३

॥ २८ ॥ (क्र० ५।४४।१-१५)

(२९४-३०८) काश्यपोऽवत्सारः (१० क्षत्र-मनस-एवावद-यजत-साधि-अवत्साराः, ११ विश्ववार-यजत-मायी-अवत्साराः, १२ अवत्सारेण सह सदापृण-यजत-बाहुवृक्त-श्रुतवित्-तयाः, १३ सुतंभरश्च) । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तं प्रत्नथां पूर्वथां विश्वथेमथां ज्येष्ठतांति बर्हिषदं स्वर्विदम् ।	
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिरा ऽऽशुं जयन्तमनु यासु वर्षसे	१
श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्वर्विरोचमानः ककुभांमचोदते ।	
सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्कृत आसु नाम ते	२ २९५
अत्यै हविः संचते सच्च धातु चाऽरिष्टगातुः स होता सहोभरिः ।	
प्रसर्त्तानो अनु बर्हिषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः	३
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्य क्रतावृधः ।	
सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति	४
संजर्ह्यराणस्तर्हभिः सुतेगृमं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः ।	
धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्षस्व पत्नीरभि जीवो अघ्वरे	५ २९८

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायाया दधिरे सिध्रयाप्स्वा ।	
मंहीमस्मभ्यसुरुषामुरु ज्रयो बृहत् सुवीरमनपच्युतं सहः	६
वेत्यग्रुर्जनिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यैः कविः ।	
घ्नंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गय—मस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः	७ ३००
ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुन ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते ।	
यादृश्मिन् धायि तमपस्यया विदुद् य उ स्वयं वहते सो अरं करत्	८
समुद्रमासामव तस्ये अग्रिमा न रिष्यति सर्वनं यस्मिन्नायता ।	
अत्रा न हार्दि कवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी	९
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिरेवावदस्य यजतस्य सध्रैः ।	
अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शर्विष्ठं वाजं विदुषा चिदध्यैम्	१०
इयेन आसामदितिः कक्ष्योइ मदो विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः ।	
समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते	११
सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित् तयो वः सचा ।	
उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गुणं भजते सुप्रयावभिः	१२ ३०५
सुतंभरो यजमानस्य सत्पेति—विश्वासामूधः स धियामुदञ्चनः ।	
भरद् धेनू रसवच्छिभ्रिये पयो ऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्	१३
यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।	
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः	१४
अग्निर्जीगार तमृचः कामयन्ते ऽग्निर्जीगार तमु सामानि यन्ति ।	
अग्निर्जीगार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः	१५ ३०८

॥ २९ ॥ (ऋ० ५।४।१-११)

(३०९-१९) सदापृण आज्ञेयः । त्रिष्टुप् ।

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थै—रायत्या उषसो अचिनो गुः ।	
अपावृत्त ब्रजिनीरुत् स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीर्देव आवः	१
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादो—र्वाद् गवां माता जानती गात् ।	
धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणैव सुमिता दृहत द्यौः	२ ३१०
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूव्याय ।	
वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौ—राविवासन्तो दसयन्त भूमं	३ ३११

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टै—रिन्द्रा न्वग्नी अर्वसे हुवध्वै ।	
उक्थेभिर्हिष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति	४
एतो न्वद्य सुच्योऽ भवाम प्र दुच्छुनां मिनवामा वरीयः ।	
आरे द्वेषांसि सनतर्धामा—ऽयाम प्राञ्चो यजमानमच्छ	५
एता धियं कृणवामा सखायो ऽप या मातां क्रणुत व्रजं गोः ।	
यया मनुर्विशिशिग्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम्	६
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रि—रार्चन् येन दश मासो नवग्वाः ।	
ऋतं यती सरमा गा अविन्दुद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार	७ ३१५
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिराङ्गिरसो नवन्त ।	
उत्स आसां परमे सधस्थं ऋतस्य पथा सरमा विदुद् गाः	८
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे ।	
रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवां कविर्दीदयद् गोषु गच्छन्	९
आ सूर्यो अरुहच्छक्रमणो ऽयुक्त यद्भरितो वीतपृष्ठाः ।	
उद्रा न नावमनयन्त धीरा आश्रुवतीरापो अर्वागतिष्ठन्	१०
धियं वो अप्सु र्दधिषे स्वर्षा ययार्तरन् दश मासो नवग्वाः ।	
अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः	११ ३१९

॥ ३० ॥ (ऋ० ५।४६।१-८)

(३१०-३७) प्रतिक्षत्र आग्नेयः । (७-८ देवपत्न्यः) । जगतीः १,८ त्रिष्टुप् ।

हयो न विद्रां अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम् ।	
नास्थां वशिम विष्टुचं नावृतं पुनर्विद्वान् यथः पुरएत ऋजु नैपति	१ ३२०
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।	
उभा नासत्या रुद्रो अघ्न ग्राः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त	२
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वतां अपः ।	
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये	३
उत नो विष्णुरुत वातो अस्मिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत् ।	
उत ऋभवं उत राये नो अश्विनो—त त्वष्टोत विश्वानु मंसते	४
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद् दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे ।	
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद् वरुध्यं वरुणो मित्रो अर्यमा	५ ३२४

उत त्वे नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यः स्वामणे भुवन् ।
 भगो विभक्ता शवसावसा गम—दुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्
 देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वार्जसातये ।
 याः पार्थिवासो या अपामर्षि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत
 उत मा व्यन्तु देवपत्नी—रिन्द्राण्यः प्राय्यश्विनी राट् ।
 आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्

६ ३२५

७

८ ३२७

॥ ३१ ॥ (ऋ० ५।४७।१-७)

(३२८-३४) प्रतिरथ आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती ।
 आविर्वासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदेने जोहुवाना
 अजिरासस्तदप ईर्यमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम् ।
 अनन्तास उरवो विश्वतः सी परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः
 उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश ।
 मध्ये दिवो निर्हितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ
 चत्वार ई विभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते ।
 त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान्
 इदं वपुर्निवर्चनं जनास—श्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः ।
 द्वे यदी विभूतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्याङ्गे सर्वन्धू
 वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरौ वयन्ति ।
 उपग्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ
 तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरसभ्यमिदमस्तु शस्तम्
 अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सार्दनाय

१

२

३ ३३०

४

५

६

७ ३३४

॥ ३२ ॥ (ऋ० ५।४८।१-५)

(३३५-३९) प्रतिभानुरात्रेयः । जगती ।

कर्दु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वर्क्षत्राय स्वयंशसे महे वयम् ।
 अमेन्यस्य रजसो यदुभ्र आ अपो वृणाना वितनोति मायिनी
 ता अन्नत वयुनं वीरवक्ष्णं समान्या वृतया विश्वमा रजः ।
 अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः
 ४ दे. (विश्वे देवाः)

१

२ ३३६

आ ग्रावभिरह्न्यैभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघति मायिनि ।
 शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नाहा ३
 तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्षसः ।
 सचा यदि पितुमन्तामिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे ४
 स जिह्वया चतुरनीक ऋज्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम् ।
 न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम् ५ ३३९

॥ ३३ ॥ (ऋ० ५।४९।१-५)

(३४०-४४) प्रतिप्रभ आत्रेयः, (५ तृणपाणिः) । त्रिष्टुप् ।

देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः ।
 आ वा नरा पुरुषुजा ववृत्त्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन् १ ३४०
 प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्रान्तसूक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य ।
 उप ब्रुवीत नर्मसा विज्ञानञ्ज्येष्ठं च रत्नं विभजन्तमायोः २
 अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उस्रः ।
 इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्निरहानि भद्रा जनयन्त दुस्माः ३
 तन्नो अनर्वा सविता वरुणं तत् सिन्धव इषयन्तो अनु गमन् ।
 उप यद् वोचं अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाज्ररत्नाः ४
 प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः ।
 अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम ५ ३४४

॥ ३४ ॥ (ऋ० ५।५०।१-५)

(३४५-६०) स्वस्त्यात्रेयः । अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

विश्वो देवस्य नेतुर्मतो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुष्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे १ ३४५
 ते ते देव नेतुर्ये चेमां अनुश्रसे । ते राया ते ह्याइपृचे सचेमहि सचथ्यैः २
 अतो न आ नृनर्तिशी नतः पत्नीर्दिशस्यत ।
 आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युयोतु यूयुविः ३
 यप्र वह्निरभिर्हितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः । नृमणां वीरपस्त्वो ऽर्णा धीरेव सनिता ४
 एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रायिः ।
 शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे ५ ३४९

॥ ३५ ॥ (ऋ० ५।५।१।१-३,८-१५)

१-३ गायत्री; ८-१० उष्णिक्; ११-१३ जगती त्रिष्टुप्; १४-१५ अनुष्टुप् ।

अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूर्मेभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये	१	३५०
ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम् । अग्नेः पिबत जिह्वया	२	
विप्रैभिर्विप्र सन्त्य प्रार्थ्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये	३	
सज्जर्विश्वेभिर्देवेभि रश्विभ्यामुषसां सज्जः । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	८	
सज्जमित्रावरुणाभ्यां सज्जः सोमेन विष्णुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	९	
सज्जरादित्यैर्वसुभिः सज्जरिन्द्रेण वायुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	१०	३५५
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।		
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुनां	११	
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे सोमै स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।		
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः	१२	
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।		
देवा अवन्त्वमवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः	१३	
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।		
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि	१४	
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददताम्रता जानता सं गमेमहि	१५	३६०

॥ ३६ ॥ (ऋ० ६।२।१९,११)

(३६१-६२) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य ।		
प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च	९	
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः ।		
ये अग्निजिह्वा ऋतुसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय	११	३६२

॥ ३७ ॥ (ऋ० ६।४।१-१५)

(३६३-४२५) ऋजिश्वा भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १५ शकरी ।

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभि र्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्रयन्ता ।		
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः	१	
विशोर्विश ईड्यमध्वरे ष्वहस्रक्रतुमरतिं युवत्योः ।		
दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य क्रतुमरुषं यजध्वे	२	३६४

अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिपिशे स्ररो अन्या ।
 मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत क्रुच्यमाने
 प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रथि विश्ववारं रथग्राम् ।
 द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविर्मियक्षसि प्रयज्यो
 स मे वपुच्छदयदुश्चिनोयो रथो विरुक्मान् मनसा युजानः ।
 येन नरा नासत्येषयध्वै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च
 पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।
 सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुष्वम्
 पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् ।
 आभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत्
 पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानल्लर्कम् ।
 स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा
 प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम् ।
 होता यक्षद् यजतं पस्त्याना मग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा
 भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ ।
 बृहन्तमुष्वमजरं सुषुम्न मृधग्धुवेम कविर्नैषितासः
 आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् ।
 अचिप्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्या नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्
 प्र वीराय प्र तवसे तुरायाऽजा युथेवं पशुरक्षिरस्तम् ।
 स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विपः
 यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद् विष्णुर्मनवे बाधिताय ।
 तस्य ते शर्मभुपदद्यमाने राया मदेम तन्वाश्च तनां च
 तन्नोऽहिर्बुध्नयो अङ्गिरकैस्तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।
 तदोषधीभिराभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये
 न नो रथि रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह क्रतस्य गोपाम् ।
 क्षयं दाताजरं येन जना न्तस्पृधो अदेवीरभि च क्रमां
 विश्व आदेवीरभ्यश्नवाम

३ ३६५

४

५

६

७

८ ३७०

९

१०

११

१२

१३ ३७५

१४

१५ ३७७

॥ ३८ ॥ (ऋ० ६।५०।१-१५) विष्टुप् ।

हुवे वो देवीमर्दितं नमोभिर्मृत्नीकाय वरुणं मित्रमग्निम् । अभिज्ञदामर्यमणं सुशेवं त्रातृन् देवान्तसंवितारं भगं च सुज्योतिषः सूर्यं दक्षपितृन् ननागास्वे सुमहो वीहि देवान् । द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद् रोदसी शरणं सुषुम्ने । महस्करथो वरिवो यथा नो ऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हुतासो वसवोऽधृष्टाः । यदीमर्मे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्नाम देवान् मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्घ्यज्वा । श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते अमि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन । श्रवदिद्विष्टुषं च स्तवानो रासद् वाजो उर्य महो गृणानः ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धातं तोकाय तनयाय शं योः । यूयं हि ह्य मिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः आ नो देवः संविता त्रार्यमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् । यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णते द्राशुषे वार्याणि उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्याः । स्यामहं ते सदमिद् रातौ तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः उत त्या मे हवमा जगम्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा । अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं त्वैतं नरा दुरितादुभीकै ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः । दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मृळता च देवाः ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळहुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः । ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः उत स्य देवः संविता भगो नो ऽपां नपादवतु दानु परिः । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी संमुद्रैः	१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३	३८० ३८५ ३९०
---	---	-------------------

उत नोऽर्हिर्बुध्न्यः शृणो—त्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः ।	
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु	१४
एवा नपातो मम तस्य धीभि—भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।	
या हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासौ भूता यजत्राः	१५ ३९२

॥ ३९ ॥ (ऋ० ६।५।११-१३) त्रिष्टुप्, १३-१५ उष्णिक्, १३ अनुष्टुप् ।

उदु त्यच्चक्षुर्मर्हि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम् ।	
ऋतस्य शुचिं दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत्	१
वेदु यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः ।	
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्य—न्नभि चष्टे सरो अर्थ एवान्	२
स्तुप उ वो मह ऋतस्य गोपा—नदिति मित्रं वरुणं सुजातान् ।	
अर्यमणं भगमदब्धधीती—नच्छा वोचे सध्न्यः पावकान्	३ ३९५
रिशादंसः सत्पतीरदब्धान् महो राज्ञः सुवसनस्य दातृन् ।	
यूनः सुक्षत्रान् क्षयतो दिवो नृ—नादित्यान् ग्राम्यदिति दुवोयु	४
द्यौश्शेषितः पृथिवि मातरधु—गर्भे भ्रातर्वसवो मूळता नः ।	
विश्व आदित्या अदिते सजोपाँ अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त	५
मा नो वृकाय वृक्ये समसा अघायते रीरधता यजत्राः ।	
यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां यूयं दक्षस्य वर्चसो बभूव	६
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।	
विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वै रीरिषीष्ट	७
नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत ग्राम् ।	
नमो देवेभ्यो नम ईश एपां कृतं चिदेनो नमसा विवासे	८ ४००
ऋतस्य वो रथ्यः पुतदक्षा—नुतस्य पस्त्यसदो अदब्धान् ।	
ताँ आ नमोभिरुचक्षसो नृन् विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः	९
ते हि श्रेष्ठवर्चस्त उ न—स्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति ।	
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्नि—ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः	१०
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन् पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः ।	
सुशर्माणः स्वर्वसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः	११ ४०३

नू सुद्वानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता ।
 आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्वन्द १२
 अप त्वं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् । द्रविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् १३ ४०५
 ग्रावाणः सोम नो हि कै सखित्वनार्य वावशुः । जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः १४
 यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा १५
 अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणाक्तिं विन्दते वसु १६ ४०८

॥ ४० ॥ (ऋ० ६।५२।१-१७) त्रिष्टुप्, ७-१२ गायत्री, १४ जगती ।

न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिरामिः ।
 उब्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि ह्यितामतियाजस्य यष्टा १
 अतिं वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात् ।
 तर्पुषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शौचतु द्यौः २ ४१०
 किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः ।
 किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान् ब्रह्मद्विषे तर्पुषि हेतिमस्य ३
 अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।
 अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासो ऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ४
 विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 तथा कर्द्व वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ५
 इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।
 पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभ्युरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ६
 विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिनि षीदत ७ ४१५
 यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ८
 उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृळीका भवन्तु नः ९
 विश्वे देवा ऋतावृधं ऋतुभिर्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पर्यः १०
 स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्रेण स्त्वष्टमान् मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ११
 इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज । चिकित्वान् दैव्यं जनम् १२ ४२०
 विश्वे देवाः शृणुतेमं हव मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ ।
 ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् १३ ४२१

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियां उमे रोदसी अपां नपाञ्च मन्म ।	
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुमेध्विद् वो अन्तमा मदेम	१४
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्ये ।	
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षप उस्ता वरिवस्यन्तु देवाः	१५
अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ऽस्मिन् हवै सुहवा सुष्टुतिं नः ।	
हळांमन्यो जनयद् गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्ये	१६
स्तीर्णे वहिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।	
अस्मिन् नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम्	१७ ४२५
॥ ४१ ॥ (ऋ० ७।३४।१-१५, १८-२५)	
(४२६-५०८) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । द्विपदा विराट्, २२-२५ त्रिष्टुप् ।	
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत् सुतष्टो रथो न वाजी	१
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः	२
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वी-वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः	३
आ धूर्षस्मै दधाताश्वा-निन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः	४
अभि प्र स्थाताहैव यज्ञं यातेव पत्सन् तमनां हिनोत	५ ४३०
तमनां समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम्	६
उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम	७
ह्वयामि देवां अयातुरग्रे सार्धभूतेन धियं दधामि	८
अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम्	९
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः	१० ४३५
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीना-मनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायुं	११
अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्ष्व-द्युं कृणोत शंसं निनित्सोः	१२
व्येतु दिद्युद् द्विषामशैवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम्	१३
अवीक्षो अग्निहव्याभमोभिः प्रेष्टो अस्मा अधायि स्तोमः	१४
सज्जदेवेभिर्रपां नपातं सखायं कृष्वं शिवो नो अस्तु	१५ ४४०
उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु श्वधन्तो अर्यः	१८
तपन्ति शत्रुं स्वर्णं भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम्	१९
आ यज्ञः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान्	२० ४४३

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादस्मे अरमतिर्वसुयुः	२१
ता नो रासन् रातिषाचो वसू—न्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।	
वरुत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः	२२ ४४५
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आप—स्तद् रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।	
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः	२३
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाता—मनुं द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा ।	
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम वरुणं धियध्वै	२४
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि—राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।	
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	२५ ४४८

॥ ४२ ॥ (ऋ० ७।३।१-१५) त्रिष्टुप् ।

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातह्न्या ।	
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ	१
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः ।	
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु	२ ४५०
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधार्मिः ।	
शं रोदसी बृहती शं नो अद्भिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु	३
शं नो अग्निज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।	
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः	४
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं हशये नो अस्तु ।	
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः	५
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।	
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलापः शं नस्त्वष्टा ग्रामिरिह शृणोतु	६
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।	
शं नः स्वरूपां मितयो भवन्तु शं न प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः	७ ४४५
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।	
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः	८
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।	
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः	९ ४५७

शं नो देवः सविता त्रायमाणः	शं नो भवन्तुषसो विभातीः ।	
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः	शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः	१०
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।	
शमभिषाचः शम्भु रातिषाचः	शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः	११
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	शं नो अर्वन्तुः शम्भु सन्तु गावः ।	
शं न ऋभवं सुकृतः सुहस्ताः	शं नो भवन्तु पितरो हवेषु	१२ ४६०
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	शं नोऽर्हिर्बुधयः शं समुद्रः ।	
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु	शं नः पृथिवीर्भवतु देवगोपा	१३
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्ते	दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।	
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो	गोजाता उत ये यज्ञियांसः	१४
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां	मनोर्यजत्रा अमृतां ऋतज्ञाः ।	
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य	यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	+ १५ ४६३

॥ ४३ ॥ (ऋ० ७।३६।१-९)

प्र ब्रह्मेतु सदानादृतस्य	वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः ।	
वि सानुना पृथिवी संस्र उर्वी	पृथु प्रतीक्रमध्येधे अग्निः	१
इमां वा मित्रावरुणा सुवृक्ति	मिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ।	
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो	जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः	२ ४६५
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या	अपीपयन्त धेनवो न सदाः ।	
महो दिवः सदाने जायमानो	ऽर्चिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्	३
गिरा य एता युनजद्वरीं त	इन्द्रं प्रिया सुरथा शूर धायू ।	
प्र यो मन्थं रिरिक्षतो मिना	त्या सुकृतुमर्यमणं ववृत्त्याम्	४
यजन्ते अस्व सख्यं वयंश्च	नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन् ।	
वि पृक्षो वावधे नृभिः स्तवान	इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्	५
आ यत् साकं यशसो वावशानाः	सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता ।	
याः सुष्वयन्त सुदुधाः सुधारा	अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः	६
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना	धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु ।	
मा नः परि ख्यदक्षरा चर	न्त्यवीवृधन् युज्यं ते रयिं नः	७ ४७०

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पृषणं विदुध्वं न वीरम् ।
 भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरंधिम् ८
 अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।
 उत प्रजायै गृणते वयो धुर्य्यं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९ ४७२

॥ ४४ ॥ (ऋ० ७।३।७।१-८)

आ वो बार्हिष्ठो बहव स्तवध्वै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः ।
 अभि त्रिपृष्ठैः सर्वनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महर्भिः पृणध्वम् १
 यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दशं ऋभुक्षणो अमृक्तम् ।
 सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्दयध्वम् २
 उवोचिथ हि मघवन् देष्णं महो अर्भस्य वसुनो विभागे ।
 उभा ते पूर्णा वसुना गर्मस्ती न सूनृता नि यमते वसुव्या ३ ४७५
 त्वमिन्द्र स्वयंशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्यका ।
 वयं नु ते दाश्वांसः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः ४
 सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् याभिर्विवेषो हर्यश्च धीभिः ।
 ववन्मा नु ते युज्याभिरुती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ५
 वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः ।
 अस्तं तात्या धिया रयि सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी ६
 अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः ।
 उप त्रिवन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृण्वन्त मर्ताः ७
 आ नो राधांसि सवितः स्तवध्व्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।
 सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८ ४८०

॥ ४५ ॥ (ऋ० ७।३।९।१-७)

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत् प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति ।
 भेजाते अद्रीं रथ्येव पन्थांमृतं होता न इषितो यजाति १
 प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषा मा विशपतीं वीरिंट इयाते ।
 विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतो वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् २
 जमया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः ।
 अर्वाक् पथ उरुजयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ३ ४८३

ते हि यज्ञेषु यज्ञियांस ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः ।

ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यध्रे श्रुष्टी भगं नासत्या पुरंधिम्
आग्ने गिरो दिव आ प्रथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम् ।

४

आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियांनां नक्षत् कामं मर्त्यानामसिन्वन् ।

५ ४८५

धाता रयिमविदस्यं सदासां संक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैः ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।

६

यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७ ४८७

॥ ४६ ॥ (७।४०।१-६) +

ओ श्रुष्टिर्विदुथ्याइ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम् ।

यदद्य देवः सविता सुवाति स्यामांस्य रत्निनो विभागे
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युमकतमिन्द्रो अर्यमा ददातु ।

१

दिदैष्टु देव्यदिति रेकणो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च
सेदुगो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्ये पृषदश्चा अवाथ ।

२

उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः ।

३ ४९०

सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्वन्नरिष्ठान्
अस्य देवस्य मीळहुषो वया विष्णोरिषस्य प्रभृथे हविर्भिः

४

विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत्
मात्रं पूषन्नाघृण इरस्यो वरून्त्री यद् रातिषाचश्च रासन् ।

५

मयोधुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु

६ ४९३

॥ ४७ ॥ (ऋ० ७।३१।२) जगती । ×

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम

१ ४९४

॥ ४८ ॥ (ऋ० ७।४१।१-६) त्रिष्टुप् ।

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दुर्नुर्भन्यस्य वेतु ।

प्र धेनव उदुप्रतो नवन्त युज्यातामद्रीं अध्वरस्य पेशः

१ ४९५

सुगस्ते अग्रे सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च । ये वा सन्नन्नरुषा वीरुवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः	२
सम्भु वो यज्ञं महयन् नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके । यजस्व सु पूर्वणीक देवा—ना यज्ञियामरमतिं ववृत्याः	३
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् । सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमिर्यत्यै	४
इमं नो अग्रे अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रै यशसं कृधी नः । आ नक्तो बर्हिः सदतामुषासो—शन्ता मित्रावरुणा यजेह	५
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्यस्तौत् । इषं रयिं पप्रथद् वार्जमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६ ५००

॥ ४९ ॥ (ऋ० ७।४३।१-५)

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्वै । येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विश्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः	१
प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्ति—रुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः । स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधू—ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः	२
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु । आ विश्वाचीं विदध्यामनक्त्व—ग्रे मा नो देवताता मृधस्कः	३
ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः । ज्येष्ठो वो अद्य मह आ वध्वना—मा गन्तन् समनसो यति छ	४
एवा नो अग्रे विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्काः । राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५ ५०५

॥ ५० ॥ (ऋ० ७।४४।१) जगती ।

दुधिकां वः प्रथममश्विनोषस—मग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पति—मादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः	१ ५०६
--	-------

॥ ५१ ॥ (ऋ० ७।४८।४) त्रिष्टुप् ।

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः । समस्मे इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	४ ५०७
---	-------

॥ ५२ ॥ (ऋ० ७।५०।३) जगती ।

यच्छलमलौ भवति यन्नदीषु यदोपधीभ्यः परि जायते विषम् ।
विश्वे देवा निरितस्तत् सुवन्तु मा मां पथेन रपसा विदुत् त्सरुः

३ ५०८

॥ ५३ ॥ (ऋ० ८।२५।१०-१२)

(५०९-५११) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

उत नो देव्यदिति रुरुष्यतां नासत्या । उरुष्यन्तु मरुतो वृद्धशंसः १०
ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः । अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ११ ५१०
अग्नते विष्णावे वयमरिष्यन्तः सुदानवे । श्रुधि स्वयावन्तिसन्धो पूर्वचित्तये १२ ५११

॥ ५४ ॥ (ऋ० ७।२७।१-२२)

(५१२-५२) मनुर्वैवस्वतः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतीष्वहती) ।

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिर्ध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिं देवां अवो वरेण्यम् १
आ पशुं गांसि पृथिवीं वनस्पतीं नुपासा नक्तमोषधीः ।
विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः २
प्र सू न एत्वध्वरोऽग्ना देवेषु पूर्यः ।
आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ३
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन् वृधे रिशादंसः ।
अरिष्टेभिः पायुभिर्विश्ववेदसो यन्तां नोऽवृकं छर्दिः ४ ५१५
आ नो अद्य समनसो गन्ता विश्वे सुजोषसः ।
ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदनं पस्त्ये महि ५
अभि प्रिया मरुतो या वो अश्या हव्या मित्र प्रयाथन ।
आ बर्हिरिन्द्रो वरुणस्तुरा नर आदित्यासः सदन्तु नः ६
वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आनुषक् ।
सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्वाग्रयः ७
आ प्र यात मरुतो विष्णो अश्विना पूषन् माकीनया धिया ।
इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभिर्वृषा यो बृत्रहा गृणे ८
वि नो देवासो अद्रुहो ऽच्छिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद् दूराद् वसवो न चिदन्तितो वरुथमादधर्षति ९ ५२०

अस्ति हि वः सजात्यै रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम् ।

प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे १०

इदा हि व उपस्तुति—मिदा वामसं भक्त्यै ।

उप वो विश्ववेदसो नमस्यु—रां असूक्ष्मन्यामिव ११

उदु प्य वः सविता सुप्रणीतयो ऽस्थादूध्वो वरेण्यः ।

नि द्विपादश्चतुष्पादो अर्थिनो ऽर्विश्रन् पतयिष्णवः १२

देवदेवं वोऽवसे देवदेवमभिष्टये ।

देवदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया १३

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः ।

ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः १४ ५२५

प्र वः शंसाम्यद्रुहः संस्थ उपस्तुतीनाम् ।

न तं धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्य यो वो धामभ्योऽर्विधत् १५

प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।

प्र प्रजाभिर्जायते धर्मेणस्पर्ध—रिष्टः सर्व एधते १६

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।

अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः १७

अजै चिदस्मै कृणुथा न्यश्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम् ।

एषा चिदस्मादुशनिः पुरो नु सास्तेधन्ती वि नश्यतु १८

यदद्य सूर्य उद्यति प्रियक्षत्रा ऋतं दुध ।

यन्निगुचि प्रबुधि विश्ववेदसो यद् वा मध्यंदिने दिवः १९ ५३०

यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छुर्दिर्यम वि द्राशुषे ।

वयं तद् वो वसवो विश्ववेदस उप स्थेयाम मध्य आ २०

यदद्य सूर उदिते यन्मध्यंदिन आतुचि ।

वामं धत्त मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे २१

वयं तद् वः सम्राज आ वृणीमहे पुत्रो न बहुपाय्यम् ।

अश्याम तदादित्या जुह्वतो हवि—र्येन वस्योऽनश्नामहै २२ ५३३

॥ ५१ ॥ (ऋ० ८।२८।१-५) गायत्री, ४ पुरउणिक् ।

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बहिरासदन् । विदन्नहं द्वितासन्नन् १ ५३६

वरुणो मित्रो अर्यमा	स्मद्रातिगाचो अग्रयः । पत्नीवन्तो वर्षट्कृताः	२	५३५
ते नो गोपा अपाच्या	स्त उदुक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात् सर्वया विशा	३	
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्	तदेपां नकिरा मिनत् । अरावा च न मर्त्यः	४	
समानां सप्त क्रष्टयः	सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे	५	५३८

॥ ५६ ॥ (क्र० ८।२९।१-१०)

(कश्यपो वा मारीचः) । द्विपदा विराट् ।

बभ्रुरेको विषुणः सूनरो	युवाङ्ग्यङ्क्ते हिरण्ययम् ।	१	
योनिमेक आ संसादु द्योतनो	ऽन्तर्देवेषु मेधिरः	१।	२ ५४०
वाशीमेको बिभर्ति हस्त	आयसीमन्तर्देवेषु निधुविः ।	३	
वज्रमेको बिभर्ति हस्त	आर्हितं तेन वृत्राणि जिघ्रते	२।	४
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त	आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेपजः	५	
पथ एकः पीपाय तस्करो यथा	एष वेद निघ्नीनाम्	३।	६
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे	यत्र देवासो मदन्ति ।		७ ५४५
विभिर्द्वा चरत एकया सह	प्र प्रवासेव वसतः	४।	८
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि	सम्राजा सुर्पिरासुती ।		९
अर्चन्त एके महि साम मन्वत	तेन सूर्यमरोचयन्	५।	१० ५४८

॥ ५७ ॥ (क्र० ८।३०।१-४)

१ गायत्री, २ पुरउष्णिक्, ३ बृहती, ४ अनुष्टुप् ।

नहि वो अस्त्यर्भको	देवासो न कुमारकः । विश्वे सतोर्महान्त इत्	१	
इति स्तुतासो असथा रिशादसो	ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः	२	५५०
ते नस्त्राध्वं तैऽवत	त उ नो अधि वोचत ।		
मा नः पथः पित्र्यान्मानवादाधि	दूरं नैष्ट परावतः	३	
ये देवास इह स्थन	विश्वे वैश्वानरा उत ।		
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो	गवेऽश्वाय यच्छत	४	५५२

॥ ५८ ॥ (क्र० ८।५४ [बाल० ६] ३-४)

(५५३-५४) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोर्बृहती)

आ नो विश्वे सजोषसो	देवासो गन्तनोप नः ।		
वसवो रुद्रा अवसे न आ गम	ञ्छुण्वन्तु मरुतो हवम्	३	५५३

पूषा विष्णुर्हवन् मे सरस्व—त्यवन्तु सप्त सिन्धवः ।

आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतुं पृथिवी हवम्

४ ५५४

॥ ५९ ॥ (ऋ० ८।१८ [वाल० १०] । १-३)

(५५५-५७) मेध्यः काण्वः । (१ ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप् ।

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति ।

यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत् का स्वित् तत्र यजमानस्य संवित्

१ ५५५

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः ।

एकैवोषाः सर्वमिदं वि भा—त्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्

२

ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषुप्तं भूरिवारम् ।

चित्रामघ्ना यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वा हुवे अति रिक्तं पिबध्वै

३ ५५७

॥ ६० ॥ (ऋ० ८।६९।११ [पूर्वाध्वः])

(५५८) प्रियमेध आङ्गिरसः । पंक्तिः ।

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।

११ ५५८

॥ ६१ ॥ (ऋ० ८।८३।१-९)

(५५९-६७) कुसीदी काण्वः । गायत्री ।

देवानामिदवो महत् तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामिस्सभ्यमृतये

१

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासंश्च प्रचेतसः

२ ५६०

अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्वथ । यूयमृतस्य रथ्यः

३

वामं नो अस्त्वर्यमन् वामं वरुण शंस्यम् । वामं ह्यावृणीमहे

४

वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत्

५

वयमिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे

६

अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम् । इता मरुतो अश्विना

७ ५६५

प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ऽध द्विता समान्या । मातुर्गर्भे भरामहे

८

यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अघा चिद् व उत ब्रुवे

९ ५६७

॥ ६२ ॥ (ऋ० १०।३।१-११)

(५६८-७९) कवष ऐलूषः । त्रिष्टुप् ।

आ नो देवानामुप वेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवसे यजत्रः ।

तेभिर्वयं सुखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम

१ ५६८

६ दै. (विश्वे देवाः)

परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्या—दृतस्य पथा नमसा विधासेत् ।	
उत खेन क्रतुना सं वदेत्—श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्	२
अघायि धीतिरसंसृगमंशा—स्तीर्थे न दुस्समुप यन्न्यूमाः ।	
अभ्यानश्म सुवितस्य शूषं नवेदसो अमृतानामभूम	३
नित्यश्चाकन्यात् स्वपतिर्दमूना यस्मा उ देवः सविता जजान ।	
भगो वा गोभिर्यभेमनज्यात् सो अस्मै चारुदलदयदुत स्यात्	४
इयं सा भूया उषसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समार्यन् ।	
अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः	५
अस्येदेषा समतिः पप्रथाना ऽभवत् पूर्या भूमना गौः ।	
अस्य सनीळा असुरस्य योनौ समान आ भरणे बिभ्रमाणाः	६
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्ठतक्षुः ।	
संतस्थाने अजरे इतऊती अहानि पूर्वीरुपसो जरन्त	७
नैतावदेना पुरो अन्यद—स्त्युक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति ।	
त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधावान् यदीं सूर्यं न हरितो वहन्ति	८
स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि ह वाति भूम ।	
मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानो ऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम्	९
स्तरीर्यत् स्रत सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा ।	
पुत्रो यत् पूर्वं पित्रोर्जनिष्ट शम्यां गांर्जगार यद्ध पृच्छान्	१०
उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहु—रुत श्यावो धनमादत्त वाजी ।	
प्र कृष्णाय रुशदपिन्वतोध—ऋतमत्र नकिरस्मा अपीपेत्	११

॥ ६३ ॥ (ऋ० १०:३३।१)

प्र मा युयुजे प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण ।	
विश्वे देवासो अघ मामरक्षन् दुःशासुरागादिति घोष आसीत्	१

॥ ६४ ॥ (ऋ० १०:१५।१-१४)

(५८०-६०७) लुशो घानाकः । जगती, १३-१४ त्रिष्टुप् ।

अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उपसो व्युष्टिषु ।	
मही द्यावापृथिवी चेततामपो ऽद्या देवानामव आ वृणीमहे	१

दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन्तिसन्धून् पर्वताञ्छर्युणावतः ।
 अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः
 द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।
 उषा उच्छन्त्यप वाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे
 इयं न उस्ता प्रथमा सुदेव्यं रेवत् सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।
 आरे मय्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ४
 प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
 भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ५
 अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्रयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।
 आयुक्षातामश्विना तूतजिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ६ ५८५

श्रेष्ठं नो अद्य संवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि ।
 रायो जनिर्त्री धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ७
 पिपर्तु मा तद्वतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्याऽऽमन्महि ।
 विश्वा इदुस्ताः स्पृष्टुर्देति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ८
 अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे ।
 आदित्यानां शर्मेणि स्था भूरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ९
 आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्वि देवा ईळे सादया सप्त होतृन् ।
 इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे १०
 त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः ।
 बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ११ ५९०

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।
 पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे १२
 विश्वे अद्य मरुतो विश्वे ऊती विश्वे भवन्त्वग्रयः समिद्धाः ।
 विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे १३
 यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः ।
 यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः १४ ५९३

॥ ६५ ॥ (ऋ० १०।३६।१-१४)

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा	द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वता अप	आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः	१
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस	ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः ।	
मा दुर्विदत्रा निरृतिर्न ईशत	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	२ ५९५
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो	माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।	
स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	३
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सधतु	दुष्वभ्यं निरृतिं विश्वमत्रिणम् ।	
आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	४
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा	बृहस्पतिः सामभिर्ऋको अर्चतु ।	
सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	५
दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना	जीराध्वरं कणुतं सुम्रमिष्टये ।	
प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	६
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं	पावकमुष्वं सख्यायं शंभुवम् ।	
रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	७ ६००
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे	देवाव्यं सुहवमध्वरभ्रियम् ।	
सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	८
सनेम तत् सुसनितां सनित्वभि	र्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः ।	
ब्रह्मद्विपो विष्वगेनो भेररत	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	९
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन	यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।	
जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यश	स्तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	१०
महदुद्य महतामा वृणीमहे	ऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।	
यथा वसु वीरजातं नशामहे	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	११
महो अग्नेः समिधानस्य शर्म	प्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।	
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सर्वांमनि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	१२ ६०५
ये सवितुः सत्यसंवस्य विश्वे	मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः ।	
ते सौभगे वीरवद् गोमदमो	दधातन द्रविणं चित्रमस्मे	१३ ६०६

सविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात् ।
सविता नः सुवतु सर्वतांति सविता नो रासता दीर्घमायुः

१४ ६०७

॥ ६६ ॥ (ऋ० १०।५२।१-६)

(६०८-१३) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य ।
प्र मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि १
अहं होता न्यसीदं यजीयान् विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।
अहरहरश्चिनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद् भवति साहुतिर्वाम् २
अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्यूहे यत् समञ्जन्ति देवाः ।
अहरहर्जायते मासिमास्य—था देवा दधिरे हव्यवाहम् ३ ६१०
मां देवा दधिरे हव्यवाह—मपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।
अग्निर्विद्वान् यज्ञं नः कल्पयाति पश्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ४
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा वरिवः कराणि ।
आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेया—मथेमा विश्वाः पृतना जयाति ५
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिर्रस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ६ ६१३

॥ ६७ ॥ (ऋ० १०।५६।१-७)

(६१४-२०) बृहदुक्थो वामदेव्यः । त्रिष्टुप्, ४-६ जगती ।

इदं त एकं पर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेषने तन्वोश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे १
तनूष्टे वाजिन् तन्वं नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम् ।
अहुतो महो धरुणाय देवान् दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः २ ६१५
वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सुवितः स्तोमं सुवितो दिवै गाः ।
सुवितो धर्मं प्रथमानु सत्या सुवितो देवान्सुवितोऽनु पत्नं ३
महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुम् ।
समविष्यचुरुत यान्यत्विषु—रैषां तनूषु नि विविशुः पुनः ४
सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः ।
तनूषु विश्वा भुवना नि यैमिरे प्रासारयन्त पुरुष प्रजा अनु ५ ६१८

द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदुः—मास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा ।
 स्वां प्रजां पितरः पितृयं सह आवरेष्वदधुस्तन्तुमातृतम्
 नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
 स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वा ऽऽ वरेष्वदधादा परेषु

॥ ६८ ॥ (क्र० १०।५७।१-६)

(६२१-२६) बन्धुः श्रुतयन्धुर्गोपायनाः । गायत्री ।

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः । मान्तः स्थुर्नो अरातयः १
 यो यज्ञस्य प्रसाधनं—स्तन्तुर्देवेष्वामृतः । तमाहुतं नशीमहि २
 मनो न्वा हुवामहे नाराशमेन सोमिनः । पितॄणां च मन्मभिः ३
 आ त एतु मनः पुनः कृत्वे दक्षाय जीवमे । ज्याक् च सूर्यं दृशे ४
 पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः । जीवं व्रातै सचेमहि ५ ६२५
 वयं सोम व्रते तव मनस्तनृषु विभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ६ ६२६

॥ ६९ ॥ (क्र० १०।६१।१-२७)

(६२७-६०) नाभानेदिष्टो मानवः । त्रिष्टुप् ।

इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा ब्रह्म कृत्वा शच्यामन्तराजौ ।
 क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्टाः परित् पक्थे अहन्ना सप्त होतृन् १
 स इद् दानाय दभ्याय वन्व—ञ्च्यानः सदैरमिमीत् वेदिम् ।
 तूर्वयाणो गूर्तवचस्तमः क्षोद्रो न रेत इत ऊति सिञ्चत् २
 मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
 आ यः शर्याभिस्तुविनुम्णो अस्या—ऽश्रीणीतादिशं गभस्तौ ३
 कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।
 वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वासा नेषमस्मृतधू ४ ६३०
 प्रथिष्ट यस्य वीरकर्मणिष्ण—दनुष्ठितं नु नर्यो अपौहत् ।
 पुनस्तदा बृहति यत् कृनाया दुहितुरा अनुभृतमनर्वा ५
 मध्या यत् कर्त्तव्यमभवदुभीके कामं कृत्वाने पितरि युवत्याम् ।
 मनानग्रेतो जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ ६
 पिता यत् स्वां दुहितरमभिष्कन् क्षमया रेतः संजग्मानो नि पिञ्चत् ।
 स्वाध्व्योऽजनयन् ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ७ ६३१

स ई वृषा न फेनमस्यदुजौ संदा परैदप दुभ्रचेताः ।	
सरत् पदा न दक्षिणा परावृड् न ता तु मे पृश्न्यो जगृभे	८
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्धि रग्नि न नग्न उप सीदुदधः ।	
सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत्	९ ६३५
मक्षू कनायाः सुख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमग्मन् ।	
द्विर्हसो य उप गोपमागु रदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन्	१०
मक्षू कनायाः सुख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतमित् तुरण्यन् ।	
शुचि यत् ते रेकण आयजन्त सबर्दुघायाः पर्य उस्त्रियायाः	११
पश्वा यत् पश्वा वियुता बुधन्ते ति ब्रवीति वक्तरी रराणः ।	
वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रविणमुप क्षु	१२
तदिह्वस्य परिषद्दानो अग्मन् पुरू सदन्तो नार्षदं विभित्सन् ।	
वि शुष्णस्य संप्रथितमनुर्वा विदत् पुरुप्रजातस्य गुहा यत्	१३
भर्गो ह नामोत यस्य देवाः स्वर्ण ये त्रिषधस्थे निषेदुः ।	
अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतऋतस्य होताधुक्	१४ ६४०
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तये यजध्वै ।	
मनुष्वद् वृक्तबर्हिषे रराणा मन्दू हितप्रयसा विश्वु यज्यु	१५
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः ।	
स कक्षीर्वन्तं रेजयत् सो अग्नि नेमि न चक्रमवैतो रघुद्रु	१६
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा सबर्धु धेनुमस्वै दुहध्वै ।	
सं यन्मित्रावरुणा वृज्ज उक्थै र्येष्टेभिर्यमणं वरुथैः	१७
तद्वन्धुः सूरिर्दिवि तै धियंधा नाभानेर्दिष्टो रपति प्र वेनेन् ।	
सा नो नाभिः परमास्य वा घ्राऽहं तत् पश्वा कतिथश्चिदास	१८
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थ मिमे मे देवा अयमास्मि सर्वैः ।	
द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्येदं धेनुरदुहजायमाना	१९ ६४५
अघासु मन्द्रो अरतिर्विभावा ऽव स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट् ।	
ऊर्ध्वा यच्छेणिर्न शिशुर्दन् मक्षू स्थिरं शेवूधं स्रत माता	२०
अघा गाव उपमाति कनाया अनु श्वान्तस्य कस्य चित् परैयुः ।	
श्रुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं या काश्चघ्नस्य वावृधे सृनुताभिः	२१ ६४७

अध त्वमिन्द्र विद्वद्युसान् महो राये नृपते वज्रबाहुः ।	
रक्षां च नो मघोनः पाहि सूरि—ननेहसस्ते हरिषो अभिष्टौ	२२
अध यद् राजानां गर्विष्ठौ सरत् सरण्युः कारवे जरण्युः ।	
विप्रः प्रेष्ठः स ह्येषां बभूव परां च वक्षदुत पर्पदेनान्	२३
अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ वृथा रभन्त ईमहे तद् नु ।	
सरण्युरस्य सूनुरश्चो विप्रश्चामि श्रवसश्च सातौ	२४ ६५०
युवोर्यदिं सख्यायासे शर्धीय स्तोमं जुजुषे नमस्वान् ।	
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः पूर्वीव गातुदीशत् सूनृतीयं	२५
स गृणानो अद्भिर्देवानिति सुबन्धुर्ममसा सुक्तैः ।	
वर्धदुक्थैर्वचोभिरा हि नूनं व्यध्वैति पर्यस उस्त्रियायाः	२६
त ऊ षु णो महो यजत्रा भूत देवास ऊतये सजोषाः ।	
ये वाजाँ अनयता वियन्तो ये स्था निचेतारो अमूराः	२७ ६५३

॥ ७० ॥ (ऋ० १०।२।१-७)

(१-६ अङ्गिरसो वा) । ५ अनुष्टुप् ; प्रगाथः = (६ बृहती ७ सप्तोष्टृहती) ।

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानश ।	
तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु प्रतिं गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	१
य उदाजन् पितरो गोमयं वस्वृ—तेनाभिन्दन् परिवत्सरे वलम् ।	
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रतिं गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	२ ६५५
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिव्य—प्रथयन् पृथिवी मातरं वि ।	
सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रतिं गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	३
अयं नाभा वदति वल्गु वो गूहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन ।	
सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु प्रतिं गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	४
विरूपास इदृषय—स्त इद् गम्भीरवेपसः ।	
ते अङ्गिरसः सूनव—स्ते अग्नेः परिं जज्ञिरे	५
ये अग्नेः परिं जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि ।	
नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः सचा देवेषु मंहते	६
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।	
सहस्रं मे ददतो अष्टकर्ण्यः श्रवो देवेष्वक्रत	७ ६६८

॥ ७१ ॥ (ऋ० १०।६३।१-१४, १७)

(६६१-९१) गयः प्लातः । जगती, १७ त्रिष्टुप् ।

परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुग्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।	
ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः	१
विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।	
ये स्थ जाता अदितेरन्वस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम्	२
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पर्यः पीयूषं द्यौरदितिरद्विर्वाहाः ।	
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वमसस्तां आदित्यां अनु मदा स्वस्तये	३
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः ।	
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये	४
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुर्परिहृता दधिरे दिवि क्षयम् ।	
तां आ विवासु नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये	५ ६६५
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति घ्नन् ।	
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं कर्द् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये	६
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होत्रभिः ।	
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये	७
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।	
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये	८
भरेष्विन्द्र सुहव हवामहेऽहोमुचै सुकृतं दैव्यं जनम् ।	
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये	९
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।	
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये	१० ६७०
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः ।	
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये	११
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।	
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये	१२
अरिष्टः स मतो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मेणस्परि ।	
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये	१३ ६७३

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
 प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसि—मरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये
 एवा प्लतेः सुनुरवीवृधद् वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।
 ईशानासो नरो अमर्त्येना—ऽस्तावि जनो दिव्यो गयेन

१४

x १७ ६७५

॥ ७२ ॥ (ऋ० १०।६४।२-१६) जगती; १२, १६ त्रिष्टुप् ।

कथा देवानां कृतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनमहे ।
 को मृळाति कतमो नो मयस्करत् कतम ऊती अभ्या ववर्तति
 क्रतूयन्ति कर्तवो हत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः ।
 न मर्हिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत
 नरा वा शंसं पूषणमगोह्य—मग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा ।
 सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वार्तमुपममक्तुमश्विनां
 कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः ।
 अज एकपात् सुहवैर्भिर्ऋकभि—रहिः शृणोतु बुध्योऽहं हवीमानि
 दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि ।
 अतर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विष्टुरूपेषु जन्मसु
 ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितर्द्रवः ।
 सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धने समिथेषु जग्निरे
 प्र वो वायुं रथयुजं पुरेधिं स्तोमैः कृणुध्वं सरुयाय पूषणम् ।
 ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः
 त्रिः सप्त सप्ता नद्यो महीरपो वनस्पतीन् पर्वताँ अग्निमूतये ।
 कुशानुमस्तृन् तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रिथं हवामहे
 सरस्वती सरयुः सिन्धुरूमिभि—र्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ।
 देवीरापो मातरः स्रदयित्त्वो घृतवत् पयो मधुमन्नो अर्चत
 उत माता बृहद् दिवा शृणोतु न—स्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।
 ऋमुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः
 रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयो भद्रा रुद्राणाँ मरुतामुपस्तुतिः ।
 गोभिः व्याम यशसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि

१

२

३

४

५ ६८०

६

७

८

९

१० ६८५

११ ६८६

यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम् ।	
तां पीपयत् पर्यसेव धेनुं कुविद् गिरो अधि रथे वहाथ	१२
कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ ।	
नाभा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः	१३
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना याज्ञिये इतः ।	
उभे विभृत उभयं भरीमभिः पुरु रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः	१४
वि वा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिररमतिः पर्नीयसी ।	
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवश्नन्त मतिभिर्मनीषिणः	१५ ६९०
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः ।	
उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रो ऽपीपयद् गयो दिव्यानि जन्म	१६ ६९१

॥ ७३ ॥ (ऋ० १०।६५।१-१५)

(६९२-७२०) वसुकर्णो वासुकः । जगती, १५ त्रिष्टुप् ।

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः ।	
आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः	१
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वाङ्गे समोकसा ।	
अन्तरिक्षं मह्या पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन्	२
तेषां हि मद्धा महतामनर्वणां स्तोमाँ इयम्यृतज्ञा ऋतावृधाम् ।	
ये अप्सवमर्णवं चित्राघसस्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः	३
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमी पृथिवी स्कम्भुरोजसा ।	
पृक्षा इव महयन्तः सुरातयो देवाः स्तवन्ते मनुषाय सूरयः	४ ६९५
मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राज्ञा मनसा न प्रयुच्छतः ।	
ययोर्धाम धर्मेणा रोचते बृहद् ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ	५
या गीर्वैर्तेनि पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः ।	
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्विषा विवस्वते	६
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधं ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते ।	
द्यां स्कभित्व्यप आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनित्वी तन्वीङ्गे नि मामृजुः	७
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समोकसा ।	
द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते घृतवत् पयो महिषाय पिन्वतः	८ ६९९

प॒र्जन्या॒वातां वृष॒भा पु॒रीषि॑णे—न्द्रवा॒यू वरु॑णो मि॒त्रो अ॒र्य॒मा ।	
दे॒वाँ आ॒दित्याँ अ॒दि॒तिं ह॒वामहे॒ ये पा॒थि॒वासो दि॒व्यासो॑ अ॒प्सु ये	९ ७००
त्वष्टा॑रं वा॒युमृ॑भवो य ओ॒हते॒ दै॒व्या हो॒तारा उ॒षसे॑ स्व॒स्तये॑ ।	
बृ॒हस्प॑तिं वृ॒त्रखा॑दं सु॒मेध॑सं—मि॒न्द्रि॒यं सोमं॑ ध॒नसा उ॑ ई॒महे	१०
ब्र॒ह्म गा॑मश्च॒ जन॑यन्त॒ ओष॑धी—र्व॒नस्प॑तीन् पृ॒थि॒वीं प॑र्व॒तां अ॒पः ।	
सूर्य॑ दि॒वि रो॒हय॑न्तः सु॒दान॑व आ॒र्या व्र॑ता वि॒सृज॑न्तो अ॒धि क्ष॑मि	११
भु॒ज्युम॑हंसः पि॒पृथो॑ नि॒रश्वि॑ना॒ श्याव॑ पु॒त्रं व॑ध्मि॒मत्या अ॑जि॒न्वत॑म् ।	
क॒मद्यु॑वं वि॒मदा॑यो॒हथु॑र्यु॒वं वि॑ष्णा॒प्त्वं वि॑श्व॒क्राया॑व सृ॒जथः॑	१२
पा॒वीर॑वी त॒न्यतु॑रे॒कपा॑दुजो दि॒वो अ॒र्ता सि॒न्धुरा॑पः स॒मुद्रि॑यः ।	
वि॒श्वे दे॒वासः ऋ॒णव॑न् व॒चांसि॑ मे॒ सर॑स्वती स॒ह धी॑भिः पु॒रंध्या॑	१३
वि॒श्वे दे॒वाः स॒ह धी॑भिः पु॒रंध्या॑ म॒नोर्य॑ज॒त्रा अ॒मृता॑ ऋ॒तज्ञाः॑ ।	
रा॒तिपा॑चो॒ अभि॑षाचः स्व॒र्विदुः॑ स्व॒र्गिरो॒ ब्रह्म॑ स॒कृत् जु॑षेर॒त	१४ ७०५
दे॒वान् वसि॑ष्ठो अ॒मृता॑न् व॒वन्दे॒ ये वि॒श्वा भु॑व॒नाभि॑ प्र॒तुस्थुः॑ ।	
ते नो॑ रा॒सन्तामृ॑रु॒गाय॑मद्य॒ यूयं॑ पा॒त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः	* १५ ७०६

॥ ७४ ॥ (ऋ० १०।६६।१-१४)

दे॒वान् हु॒वे बृ॒हच्छ्र॑वसः स्व॒स्तये॑ ज्योति॒ष्कृतो॑ अ॒ध्वर॑स्य प्र॒चेत॑सः ।	
ये वा॒वृधुः॑ प्र॒तरं॑ वि॒श्ववे॑दस॒ इन्द्र॑ज्येष्ठासो अ॒मृता॑ ऋ॒तावृ॑धः	१
इन्द्र॑प्र॒सृता वरु॑णप्रशिष्टा॒ ये सूर्य॑स्य ज्योति॒षो भा॒गमा॑न॒शुः ।	
म॒रुद्ग॑णे वृ॒जने॑ म॒न्म धी॑महि॒ माघो॑ने॒ यज्ञं॑ ज॒नय॑न्त॒ सूर॑यः	२
इन्द्रो॑ वसु॒भिः परि॑ पातु नो॒ गय॑—मा॒दित्यै॒र्नो अ॒दि॒तिः श॑र्म॒ यच्छ॑तु ।	
रु॒द्रो रु॒द्रेभि॑र्दे॒वो मृ॑ळयाति न—स्त्वष्टा॑ नो॒ आ॒भिः सु॒वि॒ताय॑ जि॒न्वतु॑	३
अ॒दि॒तिर्घा॑वा॒पृथि॑वी॒ ऋतं॑ म॒ह—दि॒न्द्रावि॑ष्णू॒ मरु॑तः स्व॒र्बृ॒हत् ।	
दे॒वाँ आ॒दित्याँ अव॑से ह॒वामहे॒ वस॑न् रु॒द्रान्त॑स॒वितार॑ सु॒दंस॑सम्	४ ७१०
सर॑स्वान् धी॒भिर्वरु॑णो धृ॒तव्र॑तः॒ पूषा॑ वि॒ष्णुर्म॑हि॒मा वा॒युरा॑श्वि॒ना ।	
ब्र॒ह्म॒कृतो॑ अ॒मृता॑ वि॒श्ववे॑दसः॒ शर्म॑ नो॒ यंस॑न् त्रि॒वरू॑थम॑हंसः	५
वृषा॑ य॒ज्ञो वृ॑षणः स॒न्तु य॒ज्ञिया॑ वृष॒णो दे॒वा वृ॑ष॒णो ह॒विष्क॑रतः ।	
वृष॑णा॒ द्यावा॑पृथि॒वी ऋ॒ताव॑री॒ वृषा॑ प॒र्जन्यो॑ वृष॒णो वृ॑ष॒स्तुमः॑	६ ७११

* ऋ० १०, ६५, १५ = ऋ० १०, ६६, १५ ।

अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये पुरुप्रशस्ता वृषणा उप ब्रुवे ।	
यानीजिरे वृषणो देवयज्यया ता नः शर्म त्रिवरुथं वि यंसतः	७
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अश्वराणामभिश्रियः ।	
अभिहोतार ऋतसापो अद्रुहो ऽपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये	८
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता ऽऽप् ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।	
अन्तरिक्षं स्वरा परुरुतये वशं देवासस्तन्वीड नि मामृजुः	९ ७१५
धर्तारो दिव ऋभवं सुहस्ता वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः ।	
आप् ओषधीः प्र तिरन्तु नो गिरो भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम्	१०
समुद्रः सिन्धु रजो अन्तरिक्षमज एकपात् तनयितुर्णवः ।	
अहिर्बुध्न्यः शृणवद् वचांसि मे विश्वे देवास उत सूरयो मम	११
स्याम वो मनवो देववीतये प्राश्नं नो यज्ञं प्र णयत साधुया ।	
आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत	१२
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।	
क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे विश्वान् देवाँ अमृताँ अप्रयुच्छतः	१३
वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये ।	
प्रीता इव ज्ञातयः काममेत्या ऽस्मे देवासोऽव धूनुता वसु	१४ ७२०

॥ ७१ ॥ (ऋ० १०।९२।१-१५)

(७११-३५) शार्यातो मानवः । जगती ।

यज्ञस्य वो रुथ्यं विशपतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभार्वसुम् ।	
शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जर्धुरद् वृषां केतुर्यजतो द्यामशायत	१
इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदधेस्य सार्धनम् ।	
अक्तुं न यद्दुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निसते	२
बळस्य नीथा वि पुणेश्व मन्महे वया अस्य ग्रहुता आसुरत्तवे ।	
यदा घोरासो अमृतत्वमाशता दिजनस्य दैव्यस्य चर्किरन्	३
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरु व्यचो नमो मय्यारमतिः पर्णीयसी ।	
इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरे ऽथो भगः सविता पूतदक्षसः	४
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवस्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे ।	
येभिः परिज्मा परियन्नुरु जयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते	५ ७२५

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः ज्येनासो असुरस्य नीळयः । तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः	६
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये । प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृपदनेषु कारवः	७
सुराश्चिदा हरितो अस्य रीरम्—दिन्द्रादा कश्चिद् भयते तवीयसः । भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्चसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः	८
स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्से क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन । येभिः शिवः स्ववा एवयावभि—दिवः सिपक्ति स्वयंशा निकामभिः	९
ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः । यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद् देवा दक्षैर्मृगवः सं चिकित्रिरे	१० ७३०
ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः । देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरहिरे	११
उत स्य न उशिजामुर्विया कवि—रहिः शृणोतु बुधयो हवीमनि । सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुपी अस्य बोधतम्	१२
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो ऽपां नपादवतु वायुरिष्टये । आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदक्षिना सुहवा यामनि श्रुतम्	१३
विशामासामभयानामचिक्षितं गीर्भिरु स्वयंशसं गृणीमसि । आभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वण—मुक्तोर्युवानं नृमणा अघा पतिम्	१४
रेमदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम् । येभिर्विहाया अमवद् विचक्षणः पार्थः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति	१५ ७३५

॥ ७६ ॥ (क्र० १०१३.१-१५)

(७३६-५०) तान्वः पार्थः । प्रस्तारपङ्क्तिः, २-३, १३ अनुष्टुप्, ९ अक्षरैः पङ्क्तिः,

११ न्यङ्कुसारिणी, १५ पुरस्ताद्बृहती ।

महिं द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारीं यद्धी न रोदसी सदै नः । तेभिर्नः पातं सद्यस एभिर्नः पातं शूषणि	१
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो देवान्त्संपर्यति । यः सुज्ञेर्दोषश्चुत्तम आविवासात्येनान्	२
विश्वेषाभिरज्यवो देवानां वार्महः । विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः	३
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा । कद् रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः	४ ७३९

उत नो नक्तमपां वृषण्वसू सूर्यामासा सदनाय सधन्या ।	
सचा यत् साद्येषा—महिर्बुधेषु बुधयः	५ ७४०
उत नो देवावश्विना शुभस्पती ग्रामभिर्मित्रावरुणा उरुष्यताम् ।	
महः स राय एषते ऽति धन्वेव दुरिता	६
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः ।	
ऋभुर्वाज ऋभुक्षणः परिज्मा विश्ववेदसः	७
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरी जूजुवानस्य वाजिना ।	
दुष्टं यस्य सामं चिद् ऋधग् यज्ञो न मानुषः	८
कृधी नो अहयो देव सवितुः स च स्तुषे मुघोनाम् ।	
सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मि न योयुवे	९
एषु द्यावापृथिवी धातं मह—दुस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः ।	
पृथं वाजस्य सातये पृथं रायोत तुर्वणे	१० ७४५
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टं कूचित् सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा पाद्यभिष्टये ।	
मेदतां वेदता वसो	११
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये द्युतद्यामानं वावृधन्त नृणाम् ।	
संवर्ननं नाक्ष्यं तष्टेवानपच्युतम्	१२
वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी ।	
नेमर्धिता न पौस्या वृथेव विष्टान्ता	१३
प्र तद् दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मुघवत्सु ।	
ये युक्त्वाय पश्च शता—स्मयु पथा विश्राव्येषाम्	१४
अधीन्वत्र सप्ततिं च सप्त च । सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पाथ्यः	
सद्यो दिदिष्ट मायवः	१५ ७५०

॥ ७७ ॥ (ऋ० १०।१००।१-१२)

(७५१-६२) दुवस्युर्वान्दनः । जगती, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्र दृष्टं भवन् त्वावदिद् भुज इह स्तुतः सुतपा बोधि नो वृधे ।	
देवेभिर्नः सविता प्रावर्तु श्रुत—मा सर्वतातिमर्दिति वृणीमहे	१
भराय सु भरत भागमृत्विधं प्र वायवे शुचिपे क्रन्ददिष्टये ।	
गौरस्य यः पर्यसः पीतिमानश्च आ सर्वतातिमर्दिति वृणीमहे	२ ७५२

आ नो देवः सविता साविपद् वयं ऋजूयते यजमानाय सुन्वते ।	
यथा देवान् प्रतिभूषेम पाकवदा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	३
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा राजा सोमः सुवितस्याध्येतु नः ।	
यथायथा मित्रधितानि संदधु—रा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	४
इन्द्र उक्थेन शर्वसा परुर्दधे बृहस्पते प्रतरीतास्यार्युषः ।	
यज्ञो मनुः प्रमतिर्नः पिता हि क—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	५ ७५५
इन्द्रस्य तु सुकृतं दैव्यं सहो ऽग्निर्गृहे जरिता मेधिरः कविः ।	
यज्ञश्च भूद् विदथे चारुरन्तम आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	६
न वो गुहा चक्रम भूरि दुष्कृतं नाविष्यं वसवो देवहेळनम् ।	
मार्किनो देवा अनृतस्य वर्षस आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	७
अपामीवां सविता साविपद्भ्यग् वरीय इदं सेधन्त्वर्द्रयः ।	
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृह—दा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	८
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवोऽस्तु सोतरि विश्वा द्वेषांसि सनुतयुधोत ।	
स नो देवः सविता पायुरीड्य आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	९
ऊर्जं गावो यवसे पीवो अत्तन ऋतस्य याः सदेने कोशे अङ्घ्वे ।	
तनूरेव तन्वो अस्तु भेषज—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	१० ७६०
ऋतुप्रावा जरिता शश्वतामव इन्द्र इद् भद्रा प्रमतिः सुतावताम् ।	
पूर्णमूर्धदिव्यं यस्य सिक्तय आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	११
चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृधो जरणिप्रा अधृष्टाः ।	
रजिष्ठया रज्या पश्व आ गो—स्तूर्तर्पति पर्यग्रं दुवस्युः	१२ ७६१

॥ ७८ ॥ (क्र० १०।१०१।१-१२)

(७६३-७८) बुधः सौम्यः । (ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप्; ४, ६ गायत्री; ५ बृहती; ९-१२ जगती ।

उर्ध्व्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बृहवः सनीळाः ।	
दधिक्रामग्निमुषसं च देवी—मिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वे वः	१
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नार्वमरित्रपरणी कृणुध्वम् ।	
इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः	२
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।	
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत् सूर्यः पृक्मेयात्	३ ७६५

सीरां युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरां देवेषु सुमया	४
निराहावान् कृणोतन् सं वरत्रा दधातन ।	
सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपक्षितम्	५
इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम्	६
प्रीणीताश्चान् हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित् कृणुध्वम् ।	
द्रोणाहावमवतमश्मचक्रं मंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणाम्	७
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।	
पुरः कृणुध्वमार्यसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दंहता तम्	८ ७७०
आ वो धियै यज्ञियां वर्ते ऊतये देवां देवीं यजतां यज्ञियामिह ।	
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पर्यसा मही गौः	९
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोणस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः ।	
परि ष्वजध्वं दशं कक्ष्याभि रूमे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त	१०
उमे धुरौ वह्निरापिबद्मानो ऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः ।	
वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम्	११
कपृष्णरः कपृथमुद् दधातन चोदयत खुदत वाजसातये ।	
निष्टिग्न्यः पुत्रमा व्यावयोतय इन्द्रं सवार्ध इह सोमपीतये	१२ ७७४

॥ ७९ ॥ (क्र० १०।१०९।१-७)

(७७५-८१) जुह्वर्ब्रह्मजाया, ब्राह्मः ऊर्ध्वनाभा वा । त्रिष्टुप्, ६-७ अनुष्टुप् ।

तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे ऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा ।	
वीळुहरास्तप उग्रो मयोभू रापो देवीः प्रथमजा ऋतेन	१ ७७५
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहणीयमानः ।	
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसी दग्निर्होता हस्तगृह्णा निनाय	२
हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन् ।	
न दूताय प्रह्वै तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य	३
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः ।	
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धा दधाति परमे व्योमन्	४
ब्रह्मचारी चरति वेर्विषद् विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम् ।	
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः	५ ७७९

८ वै. (विश्वे देवाः)

पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत । राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ६ ७८८
पुनर्दायं ब्रह्मजायां कृत्वा देवैर्निकिल्बिषम् । ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वायो—रुगायमुपासते ७ ७८९

॥ ८० ॥ (ऋ० १०।१।४।१-१०)

(७८१-९१) सध्रिवैरूपो, घर्मो वा तापसः । त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतु—स्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम ।
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेष्ण विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् १
तिस्रो देष्ट्राय निर्र्जतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति बह्वयः ।
तासां नि चिक्वुः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु २
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते ।
तस्यां सुपर्णा वर्षणा नि षेदतु—र्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ३
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे ।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तित—स्तं माता रेळ्हि स उ रेळ्हि मातरम् ४ ७८५
सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभि—रेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्तसोमस्य मिमते द्वादश ५
षट्त्रिंशोश्च चतुरः कल्पयन्त—श्छन्दांसि च दधत आद्वादशम् ।
यज्ञं विमाय कवयो मनीष ऋक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ६
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त ।
आमानं तीर्थं क इह प्र वोच—धेनं पथा प्रपिबन्ते सुतस्य ७
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यावद् द्यावापृथिवी तावदित् तत् ।
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्टितं तावती वाक् ८
कश्छन्दसां योगमा वेदु धीरः को धिष्यां प्रति वाचं पपाद ।
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहु—र्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्वित् ९ ७९०
भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति रथस्य घूर्षु युक्तासो अस्थुः ।
श्रमस्य द्वायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः १० ७९१

॥ ८१ ॥ (ऋ० १०।१२।१-८)

(७९२-९९) शैलूषिः कुल्लमलबहिषो, वामदेव्यांऽहोमुग्वा । उपरिष्ठाद्बृहती, ८ त्रिष्टुप् ।

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः १ ७९१

तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् ।	
येना निरंहसो युयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः	२
ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
नर्यिष्ठा उ नो नेषणि पर्षिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः	३
युयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः	४ ७९५
आदित्यासो अति स्त्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
उग्रं मरुद्भी रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः	५
नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः	६
शुनमस्सभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः	७
यथा ह त्यद् वंसवो गौर्यं चित् पदि पिताममुञ्चता यजत्राः ।	
एवो ष्वस्ममुञ्चता व्यंहः प्र तर्यिष्ते प्रतरं न आयुः	८ ७९९

॥ ८२ ॥ (ऋ० १०।१२।१-९)

(८००-८०८) विहव्य आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

ममाग्निं वचो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।	
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम	१ ८००
मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।	
ममान्तरिक्षमरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामे असिन्	२
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।	
दैव्या होतारो वनुषन्तु पूर्वे ऽरिष्ठाः स्याम तन्वा सुवीराः	३
मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या ऽऽकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।	
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अग्निं वोचता नः	४
देवीः षष्ठ्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।	
मा हासाहि प्रजया मा तनूभिर्मा रंधाम द्विषते सौम राजन्	५
अग्ने मनुं प्रतिनुदन् परेषा—मदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् ।	
प्रत्यश्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते—इमेषां चित्तं प्रबुधां वि नैशत्	६ ८०५

धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं त्रातारमभिमातिषाहम् ।

इमं यज्ञमाश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात्

७

उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसदुस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः

स नः प्रजायै हर्यश्च मृळयेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः

८

ये नः सपत्ना अप ते भवन्तिवन्द्राग्निभ्यामव वाधामहे तान् ।

वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोघं चेत्तारमधिराजमक्रन्

९ ८०८

॥ ८३ ॥ (क्र० १०।१३७।१-७)

(८०९-१५) [सप्तर्षयः]- १ भरद्वाजः, २ कश्यपः, ३ गोतमः, ४ अत्रिः, ५ विश्वामित्रः, ६ जमदग्निः,

७ वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १

द्राविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं ते अन्य आ वात परान्यो वातु यद् रपः २ ८१०

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत इर्यसे ३

आ त्वागमं शन्तातिभिर्रथो अरिष्टनातिभिः । दक्षं ते भद्रमाभार्प परा यक्ष्मं सुवामि ते ४

त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ५

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचार्तनीः । आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ६

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।

अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि

७ ८१५

॥ ८४ ॥ (क्र० १०।१४।१-६)

(८१६-२१) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव ।

प्र नो यच्छ विशस्पते धनुदा असि नस्त्वम्

१

प्र नो यच्छ त्वर्यमा प्र भगुः प्र बृहस्पतिः । प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः २

सोमं राजानुमवसे ऽग्निं गीर्भिर्हवामहे । आदित्यान् विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ३

इन्द्रवायु बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे । यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ४

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ५ ८१०

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय । त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ६ ८११

॥ ८५ ॥ (क्र० १०।१५।५)

(८१२) शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

परीमे गार्मनेषत् पर्यग्निमहषत् । देवेष्वक्रतु श्रवः क इमाँ आ दधर्षति

५ ८१२

॥ ८६ ॥ (ऋ० १०।१५७।१-५) X

(८२३-२७) भुवन आप्तयः, साधनो वा भौवनः । द्विपदा त्रिष्टुप् ।

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः	१	
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चाऽऽदित्यैरिन्द्रः सह चीकलपाति	१।	२
आदित्यैरिन्द्रः सर्गणो मरुद्भि रसाकं भूत्वविता तनूनाम्		३ ८२५
हत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः	२।	४
प्रत्यश्चर्ममनयञ्छचीभि रादित् स्वधार्मिषिरां पर्यपश्यन्	३।	५ ८२७

॥ ८७ ॥ (ऋ० १०।१६५।१-५)

(८२८-३२) नैर्ऋतः कपोतः । त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोतं इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।		
तस्मा अर्चाम कृण्वाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे		१
शिवः कपोतं इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहेषु ।		
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु		२
हेतिः पक्षिणी न दमात्यस्मानाष्ट्यां पदं कृणुते अग्निधाने ।		
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीद्विह देवाः कपोतः		३ ८३०
यदुल्लको वदति मोघमेतद् यत् कपोतः पदमग्नौ कृणोति ।		
यस्य दूतः प्रहित एष एतत् तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे		४
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदुमिषुं मदन्तुः परि गां नयन्त्वम् ।		
मंयोपयन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात् पतिष्ठः		५ ८३२

॥ ८८ ॥ (ऋ० १०।१६७।३)

(८३३) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मेणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मेणि ।		
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातुर्विधातः कलशां अभक्षयम्		३ ८३३

॥ ८९ ॥ (ऋ० १०।१८१।१-३)

(८३४-३६) १ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो भारद्वाजः, ३ धर्मः सौर्यः । त्रिष्टुप् ।

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामाऽऽनुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।		
धातुर्धुतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः		१ ८३४

अविन्दुन्ते अतिहितं यदासीद् यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ।

धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः

२ ८३५

तेऽविन्दुन् मनसा दीध्याना यजुः ष्कन्नं प्रथमं देवयानम् ।

धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन् धर्ममेते

३ ८३६

॥ ९० ॥ (ऋ० १०।१८४।१-२)

(८३७-३८) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते १

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ देवा वा धत्तां पुष्करसजा २ ८३८

॥ ९१ ॥ [८३९-७६] (वा० य० २।१२-१३, १८)

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव १२

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तेनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु ।

विश्वे देवाम इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ

१३ ८४०

संस्तवमागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः ।

इमां वार्चमभि विश्वे गृणन्त आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादध्वम्

१८ ८४१

॥ ९२ ॥ (वा० य० ४।११)

देवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिर्ष्टये वर्चोधां यज्ञवांसं सुतीर्था नो असद्वशे ।

ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११ ८४२

॥ ९३ ॥ (वा० य० ५।३०, ३५)

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि

३०

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित्

३५ ८४४

॥ ९४ ॥ (वा० य० ६।१९, २४)

घृतं घृतपावानः पिवतु वसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।

दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा

१९ ८४५

विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ

२४ ८४६

॥ ९५ ॥ (वा० य० ७।२१) ×

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः

२१ ८४७

× वा० य० ७।१२, १९, ३३-३४ = दै० [विश्वे देवाः] २३४, ९८, १, १६५, ३१५; वा० य० ८, ८ ।

॥ ९६ ॥ (वा० य० ८।१५, १९, ४७, ५७-५८)

समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सः सूरिभिर्मघवन्त्सः स्वस्त्या ।	
सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानां स्वाहा	१५
याँ२ आवह उशुतो देव देवाँस्तान् प्रेरय स्वे अग्ने स्वधस्यै ।	
जक्षिवाःसः पपिवाःसश्च विश्वेऽसु घर्मः स्वरातिष्ठतानु स्वाहा	१९
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णामि	४७ ८५०
विश्वे देवा अःशुषु न्युप्तः ५७। विश्वे देवाश्चमसेषुनीतः	५८ ८५२

॥ ९७ ॥ (वा० य० ९।३३)

विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम्	३३ ८५३
---	--------

॥ ९८ ॥ (वा० य० ११।५८, ६०, ६५)

विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्	५८
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्	६० ८५५
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्	६५ ८५६

॥ ९९ ॥ (वा० य० १२।७०)

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वेदेवैरनुमता मरुद्भिः ।	
ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वमानास्मान्त्सीति पर्यसाभ्यावष्टस्व	७० ८५७

॥ १०० ॥ (वा० य० १४।७, १०, २६)

सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजूर्विश्वैदेवैः सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्रये त्वा वैश्वानराया-	
श्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा	७
अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा	
देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता	
वरुणो देवता	२०
ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामधिपत्यं भूतः स्पृतं त्रयस्त्रिंशः स्तोमः	२६ ८६०

॥ १०१ ॥ (वा० य० १५।१४, ५४)

अधिपत्यसि बृहती दिग्विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता	
त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे	
अव्यथायै स्तभीताः शक्रवरैवृते सामनीं प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षं ऋषयस्त्वा	
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च	
ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु	१४ ८६१

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूते सःमृजेथामयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

*५४ ८६२

॥ १०२ ॥ (वा० य० १७।७३)

आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीद साधुया ।

अस्मिन्त्सधस्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

७३ ८६३

॥ १०३ ॥ (वा० य० १८।७६)+

धामच्छदुधिरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्राचन्तु नः शुभे ७६ ८६४

॥ १०४ ॥ (वा० य० २०।११)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुरार्धसः ।

बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरवन्तु मा

११ ८६५

॥ १०५ ॥ (वा० य० २१।१७)

उषे यङ्ही सुपेक्षसा विश्वे देवा अमर्त्याः । त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पृष्ठवाङ् गौर्वयो दधुः १७ ८६६

॥ १०६ ॥ (वा० य० २१।५, २८)

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि

५

विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा

*२८ ८६८

॥ १०७ ॥ (वा० य० २४।२७, ४०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान् २७। खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां पृषतः ४० ८७०

॥ १०८ ॥ (वा० य० २५।५-६)*

पार्श्व विश्वेषां देवानामुत्तरम् ५। विश्वेषां देवानां प्रथमा कीर्कसा ६ ८७१

॥ १०९ ॥ (वा० य० २७।२२)

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम् । विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २२ ८७३

॥ ११० ॥ (वा० य० २९।६०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालः

६० ८७४

* वा० य० १८, ६१ ।

+ वा० य० १८, ३१; ३३, ४४, ५२-५३, ७७, ९१, ९४; ३४, ५३ = दै० [विश्वे देवाः] ४८२, ५९४, ४२१, ४१७, ५२६-२७, ३९१ ।

x वा० य० ३९, १३ । क वा० य० २५।१४-२३, ४३ = दै० [विश्वे देवाः] १२-२८, ८२७ ।

॥ १११ ॥ (वा० य० ३६।१७) +

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
 वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
 शान्तिः सा मा शान्तिरेधि

१७ ८७५

॥ ११२ ॥ (वा० य० ३९।६)

विश्वे देवा द्वादशे

६ ८७६

॥ ११३ ॥ (अथर्व० १।९।१-२) ❁

(८७७-१०४३) अथर्वा । १ वसवः, इन्द्रः, पूषा, वरुणः, मित्रः, अग्निः, आदित्याः, विश्वे देवाः;
 २ देवाः, सूर्यः, अग्निः, हिरण्यं । त्रिष्टुप् ।

असिन् वसु वसवो धारयन्तिवन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः ।
 इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु
 अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिरस्तु सूर्यो अग्निरुत वा हिरण्यम् ।
 सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम्

१

२ ८७८

॥ ११४ ॥ (अथर्व० १।१५।१-४)

सिन्धवः, (वाताः, पतत्रिणः) । अनुष्टुप्, २ भुरिक्पथ्या पङ्क्तिः ।

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः ।

इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि

१

इहैव हवमा यात म इह सैस्त्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।

इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रायिः

२ ८८०

ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदुमक्षिताः । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ३

ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदुकस्य च । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ४ ८८२

॥ ११५ ॥ (अथर्व० १।२७।१-४)

(स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः, इन्द्राणी च । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः ।

अमूः पारे पृदाक्स्त्रिषप्ता निर्जरायवः ।

तासां जरायुर्भिव्यमक्ष्याइवपि व्ययामस्यघ्रायोः परिपन्थिनः

१

विषूच्येतु कृन्तती पिनाकमिव विभ्रती ।

विष्वक् पुनर्भुवा मनोऽसमृद्धा अघ्रायवः

२ ८८४

+ अथर्व १९।२।१, १४; = दे० [विश्वे देवाः] १०६९, १०८२ । ❁ अथर्व १, ९, ३-४ = दे० [अग्निः] २१४२-४३ ।

९ [दे० विश्वे देवाः]

न बृहवः समशकन् नार्भका अभि दाधृषुः । वेणोरद्रा इवाभितोऽसमृद्धा अघायवः ३ ८८
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं वहतं पृणतो गृहान् । इन्द्राण्येतु प्रथमाजीतामुपिता पुरः ४ ८८

॥ ११६ ॥ (अथर्व० २।३४।१-५)

१ पशुपतिः, २ देवाः, ३ अग्निः विश्वकर्मा, ४ वायुः प्रजापतिः, ५ आर्शाः । त्रिष्टुप् ।
य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम् ।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम् १
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः ।
उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पार्थः २
ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
अग्निष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः ३
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।
वायुष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः ४ ८९
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे प्राणमङ्गैभ्यः पर्याचरन्तम् ।
दिवं गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पृथिभिर्देवयानैः ५ ८९

॥ ११७ ॥ (अथर्व० ३।३।२-३, ५-६) +

२ इन्द्रः, ३ वरुणः सोमः इन्द्रः, ५ इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः, ६ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पदा
भुरिक्पङ्क्तिः, ५-६ अनुष्टुप् ।

दूरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रमा च्यावयन्तु सख्याय विप्रम् ।
यद् गायत्रीं बृहतीमर्कमस्मै सौत्रामण्या दधृपन्त देवाः २
अञ्जस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विद्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३
ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत । इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ५
यस्ते हव्यं विवदत् सजातो यश्च निष्टयः । अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहाव गमय ६ ८९

॥ ११८ ॥ (अथर्व० ३।४।१-२, ४-७) *

इन्द्रः, २ पञ्च प्रदिशः, ४ अश्विनौ, मित्रावरुणौ, विश्वे देवाः, मरुतः, ५ धावापृथिवी ।
त्रिष्टुप्, १ जगती ४-५ भुरिक् ।

आ त्वा गन् राष्ट्रे सह वर्चसोर्दिहि प्राड् विशां पतिरेकुराट् त्वं वि राज ।
सर्वीस्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तुपसद्यो नमस्यो भवेह १ ८९

+ अथर्व० ३, ३, १, ४ = दै० [अग्निः] २१५९ । दै० [अश्विनौ] ६७२ । * अथर्व० ३, ४, ३ = दै० [अग्निः] २१६०

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः । वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदिं श्रयस्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वध्मनि अश्विना त्वाग्ने मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु । अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वध्मनि आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उमे स्ताम् । तदयं राजा वरुणस्तथाह स त्वायमह्वत् स उपेदमहि इन्द्रैन्द्र मनुष्याइः परैहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः । स त्वायमह्वत् स्वे सुधस्थे स देवान् यक्षत् स उ कल्पयाद् विशः पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सर्वाः संगत्य वरीयस्ते अक्रन् । तास्त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वशेह	२ ४ ५ ६ ७	९०५ ९०६
--	-----------------------	------------

॥ ११९ ॥ (अथर्व० ३।८।१-६)

१ मित्रः, पृथिवी, वरुणः, वायुः, अग्निः; २ धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, आदितिः; ३ सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः; ४ विश्वे देवाः, ५-६ सामनस्यम् । त्रिष्टुप्; २, ६ जगती;

४ चतुष्पदा विराड् बृहतीगर्भा, ५ अनुष्टुप् ।

आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेश्यन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः । अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद् राष्ट्रं संवेश्यं दधातु धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः । हुवे देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्या अहमुत्तरत्वे । अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव सजातैरिद्धोऽप्रतिब्रुवद्भिः इहेदसाथ न परो गमाथेयो गोपाः पुष्टपतिर्व आजत् । अस्मै कामाथोप कामिनीर्विश्वे वो देवा उपसंयन्तु सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि । अमी ये विव्रता स्थन तान् वः सं नमयामसि अहं गृष्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत । मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्तमानं एत	१ २ ३ ४ ५ ६	९०५ ९०६ ९०७
---	----------------------------	-------------------

॥ १२० ॥ (अथर्व० ३।१०।१, ५-७, ११-१३) *

अष्टका, १ धेनुः, ५ एकष्टका, ६ जातवेदाः, पशवः, ७ रात्रिः, यज्ञाः, ११ देवाः, १२ इन्द्रः, देवाः, १३ प्रजापतिः । अनुष्टुप्; ५-६, १२ त्रिष्टुप्; ७ व्यवसाना षट्पदा विराड्गर्भातिजगती ।

प्रथमा ह व्युवास सा धेनुरभवद् यमे । सा नः पर्यस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् १ ९०८

×अथर्व० ३, ८, २ = दै० [अदितिः०] ७०८। *अथर्व० ३।१०, २-४, ८-१० = दै० [अदितिः] ७०९, ८८७, ९४९, १०७५-७७।

वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत हविष्कृष्वन्तः परिवत्सरीणम् ।

एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम्

५ ९०९

इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय ।

ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां समानां मयि रन्तिरस्तु

६ ९१०

आ मां पुष्टे च पोषे च रात्रि देवानां सुमतौ स्याम ।

पूर्णां देवे परां पत सुपूर्णां पुनरा पत । सर्वान् यज्ञान्तर्ष्वञ्जतीपमूर्जं न आ भर

७

इडया जुह्वतो वयं देवान् घृतवता यजे । गृहानलुभ्यतो वयं सं विशेमोप गोमतः

११

एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् ।

तेन देवा व्यसिहन्तु शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः

१२

इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितारि प्रजापतिः । कामान्स्माकं पूरय प्रति गृह्णाहि नो हविः

१३ ९१४

॥ १२१ ॥ (अथर्व० २।१५।१-८)

(पण्यकामः) । विश्वे देवाः, इन्द्राग्नी । अष्टुप, १ मृरिफ, ४ ज्यवसाना पदपदा

बृहतीगर्भा विराडत्यष्टिः ५ विराड्जगती, ७ अनुष्टुप, ८ निष्टुप् ।

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतुं पुरता नो अस्तु ।

नूदन्नरारिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम्

१ ९१५

ये पन्थानो बहवो देवयानां अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।

ते मां जुपन्तां पर्यसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि

२

इध्मेनाग्र इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तस्मे बलाय ।

यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम्

३

इमामग्ने शरणि मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम् ।

शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलिनं मा कृणोतु ।

इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च

४

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।

तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि बध

५

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।

तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः

६ ९२०

उप त्वा नमसा वयं होतवैश्वानरस्तुमः । स नः प्रजास्वात्मसु गोषु प्राणेषु जागृहि७

विश्वाहां ते सदमिद् भरेमाश्वायेव तिष्ठते जातवेदः ।

रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम

८ ९२१

॥ १२२ ॥ (अथर्व० ५।८।१-९)×

नानादैवत्यः, १-२ अग्निः, ३ विश्वे देवाः, ४-९ इन्द्रः । अनुष्टुप्, २ ज्यवसाना षट्पदा
जगती, ३-४ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः, ६ आस्तारपङ्क्तिः, ७ द्व्युष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः,
९ ज्यवसाना षट्पदा द्व्युष्णिग्गर्भा जगती ।

- वैकङ्कतेनेष्मेन देवेभ्य आज्यं वह । अग्ने तां इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् १
इन्द्रा याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु ।
इम एन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे । तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् २
यदुसावमुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।
मा तस्याग्निर्हव्यं वांक्षीद्वै देवा अस्य मोषं गुर्ममैव हवमेतन् ३ ९२५
अतिं धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत ।
अविं वृकं इव मशीत स वो जीवन्मा मौचि प्राणमस्यापि नह्यत ४
यममी पुरोदधिरे ब्रह्माणमपभूतये । इन्द्र स तै अभस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ५
यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे ।
तनूपां परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि ६
यानसावतिसरांश्चकार कृणवच्च यान् ।
त्वं तानिन्द्र वृत्रहन् प्रतीचः पुनरा कृधि यथामुं तूणहां जनम् ७
यथेन्द्र उद्धाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम् । कृण्वेहमधरांस्तथामूलंश्चतीभ्यः समाभ्यः ८ ९३०
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्नुग्रो मर्मणि विध्य । अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेघेह तव ।
अनु त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव ९ ९३१

॥ १२३ ॥ (अथर्व० ६।३।१-३)

१ इन्द्रापूषणौ, अदितिः, मरुतः, अपां नपात्, सिन्धवः, विष्णुः, द्यौः, २ द्यावापृथिवी,
ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः, ३ अश्विनौ, उषासानक्ता, अपां नपात्,
त्वष्टा । जगती, १ पथ्याबृहती ।

- पातं न इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः ।
अपां नपात् सिन्धवः सप्त पातन् पातु नो विष्णुरुत द्यौः १
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः २
पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्तोत न उरुष्यताम् ।
अपां नपादभिहृती गयस्य चिद् देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ३ ९३४

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ६।४।१-३) +

१ त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः; २ अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः; ३ अश्विनौ, द्यौष्पिता । पथ्याबृहती, २ संस्तारपङ्क्तिः, ३ त्रिपदा विराङ्गायत्री ।
 त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः । पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः १ ९३५
 अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।

अप तस्य द्वेषो गमेदभिहुतो यावयच्छत्रुमन्ति तम् २
 धियो समश्विना प्रावतं न उरुष्या णं उरुज्मन्नप्रयुच्छन् । द्यौश्चस्पितर्यावयं दुच्छुना या ३

॥ १२५ ॥ (अथर्व० ६।५।३)

अग्निः, सोमः, ब्रह्मणस्पतिः । अनुष्टुप् ।

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः ३ ९३८

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ६।४०।१-३)

१ द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तक्रपयः; २ सविता, इन्द्रः; ३ इन्द्रः ।

१-२ जगती, ३ अनुष्टुप् ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।
 अभयं नोऽस्तुर्वीन्तरिक्षं सप्तक्रपीणां च हविषाऽभयं नो अस्तु १
 अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु ।
 अशन्विन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्धुः २ ९४०
 अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् । इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृषि ३ ९४१

॥ १२७ ॥ (अथर्व० ६।६२।१-३)

रुद्रः, वैश्वानरः, वातः, द्यावापृथिवी । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेपिरो नमोभिः ।
 द्यावापृथिवी पर्यसा पर्यस्वती क्रतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् १
 वैश्वानरीं सुनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।
 तथा गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् २
 वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
 इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम स्र्यमुच्चरन्तम् ३ ९४४

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ६।६४।१-३)

सामनस्यम्, १ विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, (त्रिष्टुप्) ।

सं जानीध्वं सं पृच्छध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भ्रातृ यथा पूर्वे संजानाना उपासते १ ९४५

+ अथर्व० ६।२।१-२, ३ = दै० [अदितिः] ७०४, ८०८ । दै० [अश्विनौ] ६७३ ।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम् ।

समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् २

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३ ९४७

॥ १२९ ॥ (अथर्व० ६।६८।१-३)

१ सविता, आदित्याः, रुद्राः; २ अदितिः, आपः, प्रजापतिः; ३ सविता, सोमः, वरुणः ।

१ पुरोविराडतिशाकरगर्भा चतुष्पदा जगती; २ अनुष्टुप्; ३ अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आयमगन्तमविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।

आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत् प्रचेतसः १

अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा । चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे २

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।

तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्चवानयमस्तु प्रजावान् ३ ९५०

॥ १३० ॥ (अथर्व० ६।७३।१-३)

सामनस्यम्, वरुणसोमाग्निवृहस्पतिवसवः ३ वास्तोष्पतिः । १, ३ भुरिक्; २ त्रिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्वृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रियमुपसंयातु सर्वं उग्रस्य चेतुः संमनसः सजाताः १

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तराकूतिर्यो वो मनसि प्रविष्टा ।

तान्त्सीवयामि हविषा धृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २

इहैव स्तु माप याताध्यस्मत् पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु ।

वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु ३ ९५३

॥ १३१ ॥ (अथर्व० ६।७४।१-३)

सामनस्यम्, नाना देवताः, त्रिणामा । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनींसि समु व्रता । सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् १

संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हृदः । अथो भगस्य यच्छ्रान्तं तेन संज्ञपयामि वः २ ९५५

यथादित्या वसुभिः संवभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहणीयमानाः ।

एवा त्रिणामन्नहणीयमान इमान् जनान्संमनसस्कृधीह ३ ९५६

॥ १३२ ॥ (अथर्व० ६।९७।१, ३)

देवाः १ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक् ।

अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निरभिभूः सोमो अभिभूरिन्द्रः ।

अभिर्यज्ञं विश्वाः पृतना यथासान्येवा विधेमामग्निहोत्रा इदं हविः १ ९५७

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमजम् प्रमृणन्तमोजसा

×३ ९५८

॥ १३३ ॥ (अथर्व० ६।९९।१-३)

इन्द्रः, सोमः, सविता च । अनुष्टुप्, ३ भुरिगृहती (सौम्या सावित्री) ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वां हूणाद्भुवे । ह्ययाम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् १
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन् न उदीरते । इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्यः २ ९६०
परि दद्य इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रार्यतां नः । देवं सवितः सोमं राजन्तसुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३ ९६१

॥ १३४ ॥ (अथर्व० ७।७०।१-५)

इयेनः, देवाः १ त्रिष्टुप्, २ अतिजगतीगर्भा जगती, ३-५ अनुष्टुप्
(३ पुरःककुम्भती) ।

यत् किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा ।
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य १
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य घ्नन्त्वनृतेन सत्यम् ।
इन्द्रैषिता देवा आज्यमस्य मध्रन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति २
अजिराधिराजौ इयेनौ संपातिनाविव । आज्यं घृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघ्रायति ३
अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नद्याम्यास्यम् । अग्नेर्देवस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ४ ९६५
अपि नद्यामि ते बाहू अपि नद्याम्यास्यम् । अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ५ ९६६

॥ १३५ ॥ (अथर्व० ७।९८।१)

इन्द्रः, विश्वे देवाः । विराट् ।

सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।
सं देवैर्विश्वदेवैर्भिरुक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१ ९६७

॥ १३५ ॥ (अथर्व० १९।१५।५-६) +

मन्त्रोक्ताः । ५ जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु
अभयं मित्रादभयमभित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु

६ ९६९

× अथर्व० ६, ९७, २ = दै० [अक्षितिः०] ३९४ । + अथर्व० १९, १५, १ = दै० [इन्द्रः] ५६० ।

॥ १३७ ॥ (अथर्व० १९।१६।१-२)

मन्त्रोक्ताः । १ अनुष्टुप् ; २ ज्यवसाना सप्तपदा बृहतीगर्भातिशकरी ।

असुपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा अचीपतिः १ ९७०
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।

इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादक्षिनावभितः शर्म यच्छताम् ।

तिरश्चीनध्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म २ ९७१

॥ १३८ ॥ (अथर्व० १९।१७।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १-४ जगती; ५, ७, १० अतिजगती; ६ भुरिक्; ९ पञ्चपदाऽतिशकरी ।

अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात् तस्मिन् क्रमे तस्मिन् क्रमे तां पुरं प्रैमि ।

स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा १

वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० २

सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ३

वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ४ ९७५

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ५

आपो मौषधीमतीरेतस्या दिशः पातु तासु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि ।

ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु ताभ्यं आत्मानं परि ददे स्वाहा ६

विश्वकर्मा मा समक्षपिभिरुदीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । सा मा रक्षतु० ७

इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ८

प्रजापतिर्मा प्रजननवानत्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ९ ९८०

बृहस्पतिर्मा विश्वेदेवैरूर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० १० ९८१

॥ १३९ ॥ (अथर्व० १९।१८।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १, ८ साक्षी त्रिष्टुप् ; २-६ आर्च्यनुष्टुप्, (५ सप्ताडाच्यनुष्टुप्) ;

७, ९-१० (द्विपदा) प्राजापत्या त्रिष्टुप् ।

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासात् १

वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् २

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् ४ ९८५

सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवः प्रतीच्या दिशोऽभिदासात् ५

अपस्त ओषधीमतीर्रच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात् ६ ९८७

१० दै, (विश्वे देवाः)

विश्वकर्मणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव उदीच्या दिशोऽभिदासात्	७	
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात्	८	
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव ध्रुवाया दिशोऽभिदासात्	९	९९०
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु । ये माघायव ऊर्वाया दिशोऽभिदासात्	१०	९९१

॥ १४० ॥ (अथर्व० १९।१९।१-११)

चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताश्च । पङ्क्तिः, १,३,९ भुरिगृह्णी; १० स्वराद्; २,४-८,११ अनुष्टुप्गर्भा ।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।	
तामा विशत् तां प्र विशत् सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु	१
वायुरन्तरिक्षोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	२
सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	३
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	४ ९९१
सोम ओषधीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	५
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	६
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	७
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	८
इन्द्रो वीर्यैश्चोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	९ १००
देवा अमृतोदक्रामस्तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	१०
प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	११ १००

॥ १४१ ॥ (अथर्व० १९।२०।१-४)

बहुदैवत्यम् । १ त्रिष्टुप् ; २ जगती ; ३ पुरस्ताद्गृह्णी; ४ अनुष्टुप्गर्भा ।

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः ।	
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषाऽस्मान् परि पातु मृत्योः	१
यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।	
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्मणि बहुलानि सन्तु	२
यत् ते तनूष्वनघ्नन्त देवा द्युराजयो देहिनः । इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान् पातु विश्वतः	३ १००
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः । वर्म मे विश्वे देवाः क्रन् मा मा प्रापत् प्रतीचिका	४ १००

॥ १४२ ॥ (अथर्व० १९।२३।१-२९)

मन्त्रोक्ताः चन्द्रमाश्च । १ आसुरी गायत्री; २-७; २०, २३, २७ दैवी त्रिष्टुप्; ८, १०-१२, १४-१६ प्राजापत्या गायत्री, १७, १९, २४-२५, २९ दैवी पंक्तिः; ९, १३, १८, २२, २६, २८ दैवी जगती; (१-२९ एकावसानाः) ।

आथर्वणानां चतुर्केच्येभ्यः स्वाहा १।	पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा २।	षष्ठ्येभ्यः स्वाहा ३
सप्तर्चेभ्यः स्वाहा ४।	अष्टर्चेभ्यः स्वाहा ५।	नवर्चेभ्यः स्वाहा ६
दशर्चेभ्यः स्वाहा ७।	एकादशर्चेभ्यः स्वाहा ८	
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा ९।	त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा १०।	चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा ११
पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा १२।	षोडशर्चेभ्यः स्वाहा १३।	सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा १४ १०२०
अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा १५।	एकोनविंशतिः स्वाहा १६।	विंशतिः स्वाहा १७
महत्काण्डाय स्वाहा १८।	तृचेभ्यः स्वाहा १९।	एकर्चेभ्यः स्वाहा २०
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा २१।	एकानृचेभ्यः स्वाहा २२।	रोहितेभ्यः स्वाहा २३
सूर्याभ्यां स्वाहा २४।	त्रात्याभ्यां स्वाहा २५।	प्राजापत्याभ्यां स्वाहा २६
विषासद्यै स्वाहा २७।	मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा २८।	ब्रह्मणे स्वाहा २९ १०३५

॥ १४३ ॥ (अथर्व० १९।२४।१-८)

ब्रह्मणस्पतिः, बहुदैवत्यम् । अनुष्टुप् ; ४-६, ८ त्रिष्टुप् ; ७ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन् । तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन १	
परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् क्षत्रेऽधि जागरत् २	
परीमं सोमनायुषे महे श्रोत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् श्रोत्रेऽधि जागरत् ३	
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।	
बृहस्पतिः प्रार्यच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ४	
जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिश्चस्तिपा उ ।	
शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ५ १०४०	
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिश्चस्तिपा उ ।	
शतं च जीवं शरदः पुरुचीर्वस्रानि चारुर्वि भजासि जीवन् ६	
योगेयोगे तवस्तरं वार्जेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमृतये ७	
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विश्वस्व ।	
तदभिराह तद् सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ८ १०४३	

॥ १४४ ॥ (अथर्व० ५।३।३-६)×

(१०४४-४७) बृहद्विवोऽथर्वा । ३-४ देवाः, ५ द्रविणोदाः, ६ देवीः । त्रिष्टुप् ।

मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।

ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वार्तः पवतां कामायास्मै ३

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।

एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मेह ४ १०४५

मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।

दैवा होतारः सनिषन्न एतदरिष्टाः स्याम तन्वासुवीराः ५

दैवीः षड्वीरुरु नः कृणोतु विश्वे देवास इह मादयध्वम् ।

मा नो विददभिमा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्रेष्या या ६ १०४६

॥ १४५ ॥ (अथर्व० १।१६।१-४)

(१०४८-५१) चातनः । आग्निः, इन्द्रः, वरुणः, (२-४ दधत्यं सीसम्) । अनुष्टुप्, ४ ककुम्भती अनुष्टुप्

येमावास्यांते रात्रिमुदस्युर्वाजमत्त्रिणः । अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमग्निं ब्रवत् १

सीसायाध्याह वरुणः सीसायाग्निरुपावति । सीसे म इन्द्रः प्रायच्छत् तदङ्ग यातुचातनम् २

इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्त्रिणः । अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः ३ १०५०

यदि नो गां हंसि यद्यश्च यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ४ १०५१

॥ १४६ ॥ (अथर्व० १।१९।१-४)

(१०५२-९०) ब्रह्मा । ईश्वरः, (१ इन्द्रः, २ देवीः मनुष्येषवाः, ३ रुद्रः, ४ देवाः) । अनुष्टुप्,

२ पुरस्ताद्बृहती, ३ पथ्यापकृतिः ।

मा नो विदन् विध्याधिनो मो अभिध्याधिनो विदन् ।

आराच्छरव्या अस्मद् विपूचीरिन्द्र पातय १

विष्वश्चो अस्मच्छरवः पतन्तु ये अस्ता ये चास्याः ।

दैवीर्मनुष्येषवो ममामित्रान् वि विध्यत २

यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्ठ्यो यो अस्माँ अभिदासति ।

रुद्रः श्ररव्य यैतान् ममामित्रान् वि विध्यत +३

यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषन्छपाति नः ।

देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ४ १०५५

× अथर्व० ५, ३, ७, ९-१० = दै० [सोमः] ११८७; दै० [अदितिः०] ७१०; दै० [रुद्रः] १५५ ।

+ अथर्व० १, १९, ३ = दै० [रुद्रः] ११२ ।

॥ १४७ ॥ (अथर्व० १।२६।१-२)*

१ देवाः, २ इन्द्रः, भगः, सविता गायत्री, २ त्रिपदा एकावसाना सास्त्री त्रिष्टुप्,
४ एकावसाना पादनिचृत् ।

आरेऽसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत् । आरे अश्मा यमस्यथ १
सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्राधाः २ १०५७

॥ १४८ ॥ (अथर्व० ३।२३।१-६)

चन्द्रमाः, योनिः, द्यावापृथिवी । अनुष्टुप्, ५ उपरिष्ठाद् भूरिगृहती, ६ स्कंधोग्रीवी बृहती ।

येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत् त्वत् । इदं तदुन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि १
आ ते योनिं गर्भं एतु पुमान् वाणं इवेषुधिम् ।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः २
पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम् ।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ३ १०६०
यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च । तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा मृष्वर्धेनुका भव ४
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भं एतु ते ।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव ५
यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव ।
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावृन्त्वोषधयः ६ १०६३

॥ १४९ ॥ (अथर्व० ६।५५।१) जगती ।

ये पन्थानो बृहवो देवयानां अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
तेषामज्यानि यतमो बहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे १ १०६४

॥ १५० ॥ (अथर्व० ६।११४।१-३) अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चक्रुमा वयम् । आदित्यास्तस्माच्चो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत १ १०६५
ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः । यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २
मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः । अक्रामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३ १०६७

॥ १५१ ॥ (अथर्व० ७।२४।१)

इन्द्रः, अग्निः, विश्वे देवाः, मरुतः, सविता, प्रजापतिः, अनुमतिः । त्रिष्टुप् ।

यन्न इन्द्रो अखेनद् यदग्निर्विश्वे देवा मरुतो यत् स्वर्काः ।
तदुस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिरिति यच्छात् १ १०६८

॥ १५२ ॥ (अथर्व० १९।९।१-१४)

(शान्तातिः ?) । शान्तिः, बहुदेवत्यम् । अनुष्टुप् : १ विराडुरोबृहती ; ५ पञ्चपदा पद्यापेक्षिः ।

१ पञ्चपदा ककुम्भती ; १२ त्र्यवसाना सप्तपदाष्टिः ; १४ चतुष्पदा संकृतिः ।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वीन्तरिक्षम् ।

शान्ता उदुन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः १

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।

शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः २ १०७०

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता । ययैव संसृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः ३

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् । येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ४

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।

यैरेव संसृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः ५

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्थमा ६

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वांछमन्तकः ।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ७ १०७५

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हेतं च यत् । शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः ८

नक्षत्रमुल्काभिहेतुं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शम् सन्तु कृत्याः ।

शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शम् नो भवन्तु ९

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा । शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः १०

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्रयः । शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ११

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्रयः ।

तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु ।

विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु १२ १०८०

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।

सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु १३

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।

ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं

यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः

१४ १०८९

॥ १५३ ॥ (अथर्व० १९।४३।१-८)

ब्रह्म, बहुदैवत्यम् । ऽयवसाना शंकुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।

अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे । अग्नये स्वाहा १

यत्र ब्रह्मविदो० । वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे । वायवे स्वाहा २

यत्र ब्रह्मविदो० । सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे । सूर्याय स्वाहा ३ १०८५

यत्र ब्रह्मविदो० । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे । चन्द्राय स्वाहा ४

यत्र ब्रह्मविदो० । सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे । सोमाय स्वाहा ५

यत्र ब्रह्मविदो० । इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे । इन्द्राय स्वाहा ६

यत्र ब्रह्मविदो० । आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोषं तिष्ठतु । अद्भ्यः स्वाहा ७

यत्र ब्रह्मविदो० । ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे । ब्रह्मणे स्वाहा ८ १०९०

॥ १५४ ॥ (अथर्व० २।१२।१-८)

(१०९१-९८) भरद्वाजः । १ द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्, २ देवाः, ३ इन्द्रः, आदित्या-
वसवोऽङ्गिरसः पितरः, ५ सोम्यासः पितरः, ६ मरुतः, ७ यमसादनम्,

ब्रह्म, ८ अग्निः । त्रिष्टुप्, २ जगती, ७-८ अनुष्टुप् ।

द्यावापृथिवी उर्व०न्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः ।

उतान्तरिक्षमुरु वार्तगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने १

इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति ।

पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।

वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ३

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्योभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

इष्टापूर्तमेवतु नः पितृणामाशुं ददे हरसा दैव्येन ×४

द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रमध्वम् ।

अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्छित्वपकामस्य कर्ता ५ १०९५

अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम् ।

तपूषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति ६ १०९६

सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते वृश्चामि ब्रह्मणा । अयां यमस्य सार्धेनमभिर्दूतो अरैकृतः ७
आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि । अग्निः शरीरं वेवेद्वमुं वागपि गच्छतु ८ १०९८

॥ १५५ ॥ (अथर्व० २।१८।३-५)

(१०९९-११०१) शम्भुः । द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, ५ भुरिक् ।

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।
मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा बधिषुमो अमित्राः ३
द्यौष्टा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कणुतां संविद्वाने ।
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४ ११००
हममम आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।
मातेवासा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदध्रियथासत् ५ ११०१

॥ १५६ ॥ (अथर्व० २।१६।४, ६, ८) +

(११०२-४) पतिवेदनः । ४ इन्द्रः, ६ धनपतिः, ८ औषधिः । ४ त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप्, ८ निष्टुप्पुरउष्णिक् ।

यथाखरो मघवंश्चारुष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव ।
एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी संप्रिया पत्याविराधयन्ती ४
आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कणु । सर्वं प्रदक्षिणं कणु यो वरः प्रतिक्राम्यः ६
आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिक्राम्यः । त्वमस्य भेषोषधे ८ ११०४

॥ १५७ ॥ (अथर्व० ३।१९।१-८)

(११०५-२०) वसिष्ठः । विश्वे देवाः, चन्द्रमाः, इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ पथ्याबृहती, ३ भुरिबृहती,

५ त्रिष्टुप्, ६ ज्यवसाना पदपदा त्रिष्टुप्ककुम्भतीर्गर्भातिजगती,

७ विराडास्तारपङ्क्तिः, ८ पथ्यापङ्क्तिः ।

संक्षितं म इदं ब्रह्म संक्षितं वीर्यं बलम् ।
संक्षितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामसि पुरोहितः १ ११०५
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् २
नीचैः पद्यन्तामघरे भवन्तु ये नः सूरि मघवानं पृतन्वान् ।
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुश्रयामि स्वानहम् ३
तीक्ष्णीयांसः परशोरशेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ४ ११०८

+ अथर्व० २, ३६, १, ३ = दै० [अग्निः] २३३९-४० । अथर्व० २, ३६, २ = दै० [सोमः] १२४३ ।

अथर्व० २, ३६, ५, ७ = दै० [अदितिः] ६२३, ७९९ ।

एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि ।

एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वेऽेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः

५

उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः ।

पृथग् घोषा उलुलर्यः केतुमन्त उदीरिताम् । देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया ६ १११०

प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः ।

तीक्ष्णेष्वोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अवलानुग्रवाहवः

७

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।

जयामित्रान् प्र पद्यस्व जह्येषां वरैवरं मामीषां मोचि कश्चन

८ १११२

॥ १५८ ॥ (अथर्व० ३।२२।१-६)

वर्चः, बृहस्पतिः, विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, १ विराट् त्रिष्टुप्, पञ्चपदा परानुष्टुप् विराडतिजगती,
४ व्यवसाना षट्पदा जगती ।

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदित्या यत् तन्वः संबभूव ।

तत् सर्वे समदुर्महमेतद् विश्वे देवा अदितिः सजोषाः

१

मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेततु । देवासो विश्वधायसस्ते माज्जन्तु वर्चसा

२

येन हस्ती वर्चसा संबभूव येन राजा मनुष्येष्वप्स्यन्तः ।

येन देवा देवतामग्र आयन् तेन मामद्य वर्चसाम्ने वर्चस्विनं कृणु

३ १११५

यत् ते वर्चो जातवेदो बृहद् भवत्याहुतेः ।

यावत् सूर्यस्य वर्च आसुरस्य च हस्तिनः ।

तार्वन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा

४

यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत् समश्नुते ।

तार्वत् समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम्

५

हस्ती मृगाणां सुषदामतिष्ठावान् बभूव हि ।

तस्य भगेन वर्चसाभि विश्वामि मामहम्

६ १११८

॥ १५९ ॥ (अथर्व० १२।११।५-६)×

बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप् ।

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५ १११९

अथर्व० १९, ११, १-४ = दै० [विश्वे देवाः] ४५९-६२ ।

१ दै. (विश्वे देवाः)

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यामिदमस्तु अस्तम् ।

अशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय

६ १११

॥ १६० ॥ (अथर्व० १९।२२।१-२१)

(११११-४१) अङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः । १ साम्युष्णिक्, ३, ११ प्राजापत्या गायत्री; ४, ७, ११, १७ देवी जगती; ५, १२-१३ देवी त्रिष्टुप्; २, ६, १४-१६, २० देवी पङ्क्तिः, ८-१० आसुरी जगती; १८ आसुर्यनुष्टुप्; १९ चतुष्टुप् त्रिष्टुप् (१-२० एकावसानाः) ।

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा	१	षष्ठाय स्वाहा	२
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा	३	नीलनखेभ्यः स्वाहा	४
हरितेभ्यः स्वाहा	५	क्षत्रेभ्यः स्वाहा	६
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा	७	प्रथमेभ्यः स्वाहा	८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	९	तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	१० १११
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	११	उत्तमेभ्यः स्वाहा	१२
उत्तरेभ्यः स्वाहा	१३	ऋषिभ्यः स्वाहा	१४
शिखिभ्यः स्वाहा	१५	गुणेभ्यः स्वाहा	१६
महागणेभ्यः स्वाहा	१७	सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा	१८
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा	१९	ब्रह्मणे स्वाहा	२० ११४
ब्रह्मज्येष्ठा संमृता वीर्याणि ब्रह्माग्ने ज्येष्ठं दिवमा ततान ।			
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः			×२१ ११४

॥ १६१ ॥ (अथर्व० ४।८।१-७)

(११४१-४९) अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः, आपः, राज्याभिषेकः, १ राजा, २ देवाः, ३ विश्वरूपः, ४-५ आपः । अनुष्टुप्; १, ७ भुरिक्, त्रिष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्वभूव ।

तस्य मृत्युश्चरति राजस्यं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम्

१

अभि प्रेहि मार्ष वेन उग्रश्चेत्ता संपलहा ।

आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रवन्

२

आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषंस्त्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः ।

महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ

३ ११४

× अथर्व० १९।२२।२१ = अथर्व० १९, २३, ३०

व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे वि क्रमस्व दिशो महीः ।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः

४ ११४५

या आपो दिव्याः पर्यसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम् ।

तासां त्वा सर्वासामपामभि षिञ्चामि वर्चसा

५

अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पर्यस्वतीः ।

यथासौ मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करतु

६

एना व्याघ्रं परिष्वजानाः सिंहं हिंन्वन्ति महते सौभगाय ।

समुद्रं न सुभ्रुवस्तास्थिवांसं मर्मज्यन्ते द्वीपिनमस्वन्तः

७ ११४८

॥ १६२ ॥ (अथर्व० ७।११८।१)

चन्द्रमाः, वरुणः, देवः । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनामु वस्ताम् ।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु

१ ११४९

॥ १६३ ॥ (अथर्व० ६।१२३।१-५)

(११५०-५४) भृगुः । त्रिष्टुप्, ३ द्विपदा साम्यनुष्टुप्, ४ एकावसाना

द्विपदा प्राजापत्या भुरिगनुष्टुप् ।

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शैवधिमवहाज्जातवैदाः ।

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स जानीत परमे व्योमिन्

१ ११५०

जानीत स्मैनं परमे व्योमिन् देवाः सधस्था विद लोकमत्र ।

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टापूतं स्म कृणुताविरस्मै

२

देवाः पितरः पितरो देवाः । यो अस्मि सो अस्मि

३

स पचामि स ददामि स यजे स दुत्तान्मा यूषम्

४

नाकै राजन् प्रति तिष्ठ तत्रैतत् प्रति तिष्ठतु । विद्धि पूतस्थं नो राजन्तस देव सुमना भव ५ ११५४

॥ १६४ ॥ (अथर्व० १९।२७।१-१५)

(११५५-६९) भृग्वङ्गिराः । त्रिवृत्, चन्द्रमाश्च । अनुष्टुप्, ३, ९ त्रिष्टुप्, १० जगती (१);

११ आर्च्युष्णिक्, १२ आर्च्युनुष्टुप्, १३ साम्नी त्रिष्टुप् (११-१३ एकावसानाः)

गोभिष्टा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः । वायुष्टा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः १

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः । माध्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु २

तिस्रो दिवस्तिस्त्रः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।

त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः

३ ११५७

त्रीन्नाकांस्त्रीन्समुद्रांस्त्रीन् ब्रह्मांस्त्रीन् वैष्टपान् । त्रीन् मातरिश्च नस्त्रीन्सूर्यान् गोमूत्रं कल्पयामि ते ४
 घृतेन त्वा समुक्षाम्यश्च आज्येन वर्धयेन् । अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दधन् ५
 मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दधन् । भ्राजन्तो विश्ववदसो देवा देव्येन धावत ६ ११६०
 प्राणेनाग्निं सं सृजति वारतः प्राणेनः संहितः । प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ७
 आयुषाऽऽयुः कृता जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः । प्राणेनात्मन्वता जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ८
 देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत् पृथिभिर्देवयानैः ।
 आपो हिरण्यं जुगुप्सुर्वृद्धिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः ९
 त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुप्सुस्वपुनतः ।
 अस्मिन्श्चन्द्रे अधि यद्विरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि १०
 ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ११ ११६५
 ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १२
 ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १३
 असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मां दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १४
 दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
 इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादुक्षिनावभितः शर्म यच्छताम् ।
 तिरश्चीनभ्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म १५ ११६९

॥ १६५ ॥ (अथर्व० ६।१०।१-१)

(११७०-७८) ज्ञान्तातिः । १ पृथिवी, श्रोत्रं, वनस्पतिः, अग्निः, २ प्राणः, अन्तरिक्षं, वयः, वायुः, ३ द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः । द्वैपदम्, १ सास्त्री त्रिष्टुप्, २ प्राजापत्या वृहती, ३ सास्त्री वृहती ।

पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्योऽग्नयेऽधिपतये स्वाहा १ ११७०
 प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा २
 दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा ३ ११७५

॥ १६६ ॥ (अथर्व० ६।११।१-३)

चन्द्रमाः, १ देवजनाः, मनवः, विश्वा भूतानि, पवमानः, २ पवमानः, ३ सविता ।

गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा १
 पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतांतये २
 उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सुवेन च । अस्मान् पुनीहि चक्षसे ३ ११७५

॥ १६७ ॥ (अथर्व० ६।२३।१-३)

रुद्रः, १ यमो मृत्युः शर्वः, २ भवः शर्वः, ३ विश्वे देवाः मरुतः अग्निषोमौ वरुणः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋतो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् १

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्रं उत राज्ञे भवाय ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु २

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्निषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम ३ ११७८

॥ १६८ ॥ (अथर्व० ६।५३।१-२) ×

(११७९-८०) बृहच्छुक्रः । १ द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता, भगः, २ वैश्वानरः,
१ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अनु स्वधा चिक्रितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च १

पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु ।

वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तर्स्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा २ ११८०

॥ १६९ ॥ (अथर्व० ६।६३।१-३) *

(११८१-८३) बृहन्नः । १ निर्ऋतिः, २ यमः, ३ मृत्युः । जगती, २ अतिजगतीगर्भा ।

यत् ते देवी निर्ऋतिराबन्ध दाम ग्रीवास्त्रविमोक्थं यत् ।

तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमर्जमद्धि प्रहृतः १

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।

यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे २

अयस्मये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।

यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाक्रमधि रोहयेमम् ३ ११८३

॥ १७० ॥ (अथर्व० ६।१०३।१-३)

(११८४-८६) उच्छोचनः । इन्द्राग्नीः १ बृहस्पतिः सविता मित्रो अर्यमा भगो अश्विनौ, २-३ इन्द्रोऽग्निः,
अनुष्टुप् ।

सुदानं वो बृहस्पतिः सुदानं सविता करत् । सुदानं मित्रो अर्यमा सुदानं भगो अश्विनौ १

सं परमान्तसमवमानथो सं द्यामि मध्यमान् । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् २ ११८५

अमी ये युधमायन्ति केतून् कृत्वानीकशः । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् ३ ११८६

× अथर्व० ६, ५३, ३ = दै० [अदितिः०] ७०० ।

अथर्व० ६, ६३, ४ = दै० [अग्निः] १७१६ ।

॥ १७१ ॥ (अथर्व० ६।१२०।१-३)

(११८७-८९) कौशिकः । अन्तरिक्षं, पृथिवी, द्याः, अग्निः । १ जगती, २ पङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप् ।

यदुन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम ।

अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्

१

भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः ।

द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा मावं पत्सि लोकात्

२

यत्रा सुहादः सुकृतो मदन्ति विहाय रागं तन्वैः स्वायाः ।

अश्लोणा अङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्

३ ११८

॥ १७२ ॥ (अथर्व० १४।१।५३-५८)

(११९०-९५) सूर्या सावित्री । अनुष्टुप् ।

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५३ ११९

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । तेजो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५४

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५५

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । यशो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५६

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । पयो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि ५७

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ५८ ११९

॥ १७३ ॥ [११९३-९८] (अथर्व० २०।१९८।५)

ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादुदिः । सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्सते ५ ११९

॥ १७४ ॥ (अथर्व० २०।१३५।४, १०)

वी मे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचरे । सुसत्यमिद् गवामस्यसि प्रखुदसि ४

देवा ददुत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम् । युष्मो अस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत १० ११९

देवाः ।

॥ १७५ ॥ (क्र० १।२७।१३)

(११९९) आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् ।

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवम्भ्यो नम आशिनेभ्यः ।

यजाम देवान् यदि श्वकनवास मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः

१३ ११९

॥ १७६ ॥ (ऋ० १।४५।१० [उत्तरार्धः] ।

(१२००) प्रस्कण्वः काण्वः । (सुदानवः देवाः) । अनुष्टुप् ।

अयं सोमः सुदानवस्तं पात तिरोअह्वयम्

१० १२००

॥ १७७ ॥ (ऋ० १।९४।८ [त्रयः पादाः])

(१२०१) कुत्स आङ्गिरसः । जगती ।

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।

तदा जानीतोत पुष्यता वचः

८ १२०१

॥ १७८ ॥ (ऋ० १।१६४।५०)

(१२०२) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्मीणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः

५० १२०२

॥ १७९ ॥ (ऋ० ७।१०४।११)

(१२०३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परः सो अस्तु तन्वाइ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।

प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्

११ १२०३

॥ १८० ॥ (ऋ० ८।६३।१२)*

(१२०४) प्रगाथः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।

यः शंसते स्तुवते धार्मि पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्मां अवन्तु देवाः

१२ १२०४

॥ १८१ ॥ (ऋ० ८।८०।१०)

(१२०५) एकधूर्नोघसः । त्रिष्टुप् ।

अवीवृधद् वो अमृता अमन्दी देक्युर्देवा उत याश्च देवीः ।

तस्मा उ राधः कृणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१० १२०५

॥ १८२ ॥ (ऋ० १०।५१।२,४,६,८)

(१२०६-११) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् ।

क्वाह मित्रावरुणा क्षियन्त्यग्नेर्विश्वाः समिधो देवयानीः

२

होत्रादुहं वरुण बिभ्यदायं नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः ।

तस्य मे तन्वो बहुधा निर्विष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः

४ १२०७

अग्नेः पूर्वे आतरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीनुः ।
 तस्माद्धिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेमोरेविजे ज्यायाः
 प्रयाजान् मे अनुयाजौश्च केवला—नूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।
 घृतं चापां पुत्रपं चौपधीना—मग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः

६

८ १२८

॥ १८३ ॥ (ऋ० १०.५३.४-५)

तदद्य वाचः प्रथमं मंसीय येनासुरा अभि देवा असाम ।
 ऊर्जाद उत यज्ञियामः पञ्च जना मर्म होत्रं जुषध्वम्
 पञ्च जना मर्म होत्रं जुपन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
 पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वसान्

४ १२९

५ १२९

॥ १८४ ॥ (ऋ० १०.७२.१-२)

(१२१२-२०) बृहस्पतिर्लोक्यः, बृहस्पतिराङ्गिरसो वा, अदितिदीक्षायणी वा । अनुष्टुप् ।

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया । उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे १
 ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारं हवाधमत् । देवानां पूर्व्ये युगे ऽसंतः सदजायत २
 देवानां युगे प्रथमे ऽसंतः सदजायत । तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदुस्परि ३
 भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त । अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाददितिः परि ४ १२९
 अदितिर्हजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ५
 यदेवा अदः संलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रणुरपायत ६
 यदेवा यतयो यथा भुव नान्यपिन्वत । अत्रा समुद्र आ गूळ्ह—मा सूर्यमजमर्तन ७
 अष्टौ पुत्रासो अदिते—र्ये जातास्तन्वस्परि । देवाँ उप प्रैत् सप्तभिः परां मार्ताण्डमास्यत् ८
 सप्तभिः पुत्रैरदिति—रुप प्रैत् पूर्व्य युगम् । प्रजायै मृत्यवे त्वत् पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ९ १२९

॥ १८५ ॥ (ऋ० १०.८५.१-७)

(१२२१) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च । ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः १७ १२९

॥ १८६ ॥ (ऋ० १०.९८.१-१२)

(१२२२-३३) देवापिराष्टिषेणः (वृष्टिकामः) । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।
 आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वा—न्तस्पर्जन्यं शंतनवे वृषाय

१ १२९

आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापे अभि मामगच्छत् ।

प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वार्चमासन् २

अस्मे धेहि द्युमतीं वार्चमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।

यया वृष्टिं शतनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ३

आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्तिव—न्द्रं देह्यधिरथं सहस्रम् ।

नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान् देवापे हविषा सपर्य ४ १२२५

आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।

स उत्तरस्मादधरं समुद्र—मपो दिव्या असृजद्वर्ष्याँ अभि ५

अस्मिन्त्समुद्रे अभ्युत्तरस्मि—न्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।

ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ६

यद्देवापिः शतनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत्

देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वार्चमस्मा अयच्छत् ७

यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।

विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ८

त्वां पूर्वं ऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।

सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदुश्चोप याहि ९ १२३०

एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।

तेभिर्वर्षस्व तन्वः शूर पूर्वी—दिवो नो वृष्टिर्मिषितो रिरिहि १०

एतान्यग्ने नवति सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्णा इन्द्राय भागम् ।

विद्वान् पथ ऋतुशो देवयाना—नप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ११

अग्ने वार्धस्व वि मृधो वि दुर्गहा ऽपामीवामप रक्षांसि सेध ।

अस्मात् समुद्राद् बृहतो दिवो नो ऽपां भूमानमुप नः सृजेह १२ १२३५

॥ १८७ ॥ [१२३४-६३] (वा० य० १८)

देवानामसि वह्नितम् × संहितम् पप्रितम् जुष्टतम् देवहूतम् ८ १२३

॥ १८८ ॥ (वा० य० १७, २१)

नमो देवेभ्यः ७ १२३

देवा गातुविदो गातुं विच्चा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञं × स्वाहा वार्ते धाः × २१ १२३

× वा० य० ८, २१ = अथर्व० ७, ९७, ७-८ ।

१२ [दे० विश्वे देवाः]

॥ १८९ ॥ (वा० य० ६।११)

स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाः

११ १२३५

॥ १९० ॥ (वा० य० ७।३, १२, १७, २२, २६)

देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः ×३। देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु

१२

देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु

१७ १२४८

देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि २२। देवानामुत्क्रमणमसि

२६ १२४९

॥ १९१ ॥ (वा० य० ८।१८, २७, ४३, ६०)

सुगा वो देवाः सदेना अकर्म य आजग्मेदः सर्वनं जुषाणाः ।

भरमाणा वहमाना हवीः ऽप्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा

१८

देवानां सुमिदसि

२७

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति ।

एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्

४३ १२४८

देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यान्न्तरिक्षमगन् यज्ञस्ततो

मा द्रविणमष्टु पितॄन् पृथिवीमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं कं च

लोकमगन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्

६० १२४९

॥ १९२ ॥ (वा० य० ९।३५-३६)

विश्वदैवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात् सद्भ्यः स्वाहा

३५

ये देवा विश्वदैवनेत्राः पश्चात् सदस्तेभ्यः स्वाहा

३६ १२४८

॥ १९३ ॥ (वा० य० १५।५०)

तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भर्तृभिरुत वा हिरण्यैः ।

नार्कं गृष्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीयं पृष्ठे अभि रोचने दिवः

५० १२४९

॥ १९४ ॥ (वा० य० १७।५६)

दैव्याय धर्त्रे जोष्टे देवश्रीः श्रीमनाः शतपयाः ।

परिशृष्टं देवा यज्ञमाधन् देवा देवेभ्यो अघ्वर्यन्तो अस्थुः

५६ १२५८

॥ १९५ ॥ (वा० य० १८।६०)

एतं जानाथ परमे व्योमन् देवाः सधस्था बिद रूपमस्य ।

यदागच्छात् पथिभिर्देवयानैरिष्टापुर्त्तं कृणवाथाविरसौ

६० १२५९

॥ १९६ ॥ (वा० य० १९।१२)

देवा यज्ञमर्तन्वत भेषजं भिषजाश्विना । वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः १२ १९

॥ १९७ ॥ (वा० य० २०।१४)

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।

अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः

१४ १९

॥ १९८ ॥ (वा० य० २१।५३)

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिः होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने

वसुभेयस्य व्यन्तु यज

५३ १९

॥ १९९ ॥ (वा० य० २६।१९)

अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्चैरनु सर्वेण पुष्टैः ।

अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु

१९ १९

॥ २०० ॥ (वा० य० २८।११)

देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु

११ १२

॥ २०१ ॥ (वा० य० २९।२०)

देवा इदस्य हविरद्यमायन् यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यक्षिष्ठत्

२० १९

॥ २०२ ॥ (वा० य० ३१।१४-१५, २१)

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमर्तन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इक्ष्मः शरद्विः १४

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबधन् पुरुषं पशुम्

१५

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् तस्य देवा असन् वशे

२१ १९

॥ २०३ ॥ (वा० य० ३३।७, ४८, ८९)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिस्स्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त

७

अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।

उभा नासत्या रुद्रो अध याः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त

४८

प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।

अच्छा वीरं नयं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः

८९ १९

लिङ्गोक्ताः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० १।१३।६-७)

(१२६४-६५) परुच्छेपो दैवोदासिः । ६ अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुपे सुमृळीकार्य मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग्जीर्वन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि

६

ऊंती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसोमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तददयाम मघवानो वयं च

७ १२६५

॥ २०५ ॥ (ऋ० २।३२।८)

(१२६६) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनदोत्रः पञ्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती ।

इन्द्राणीमह ऊतये वरुणानीं स्वस्तये

८ १२६६

॥ २०६ ॥ (ऋ० १०।१४।७-९)

(१२६७-६९) वैवस्वतो यमः । (पितरो वा) । त्रिष्टुप् ।

प्रेहि प्रेहि पृथिभिः पूर्वेभिर्—र्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।

उमा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

७

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापुतेन परमे व्योमन् ।

हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः

८

अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।

अहोभिरङ्गिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै

९ १२६९

॥ २०७ ॥ [१२७०-१२९३] (वा० य० १।१२, १४)

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवः उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रुमिभिः ।

देवीरापो अग्नेगुवो अग्नेपुवोऽग्र इममद्य यज्ञं नयताग्ने यज्ञपतिः सुधातुं यज्ञपतिं

देवयुवम्

१२ १२७०

शर्मास्यवधूतः रक्षोऽवधूता अरातयोऽदित्यास्त्वगंसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु ।

अद्विरसि वानस्पत्यो प्रावासि पृथुर्बुधः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु

१४ १२७१

॥ २०८ ॥ (वा० य० २।१.५, १५, २०, २२, ३२)

कुष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बहिषे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

बहिरसि सुगम्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

१ १२७२

समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदुभिर्शस्त्यै ।

सवितुर्वाह स्थ ऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्य आ त्वा वसवो रुद्रा
आदित्याः सदन्तु ५

अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूजेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।

अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेना-
पोहामि ।

इन्द्राभ्योरुज्जितिमनूजेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि । इन्द्राग्नी तमपनुदतां १५

अग्रेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मां दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि
दुराग्रन्या अविषं नः पितुं कृणु ।

सुषदा योनौ स्वाहा वाङ्मये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभग्निन्यै स्वाहा २० १२७५
सं बर्हिर्इक्ता हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सं मरुद्भिः ।

समिन्द्रो विश्वदेवेभिरइक्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा २२

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय

नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे

नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो

देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त

३२ १२७७

॥ २०९ ॥ (वा० य० ३।५,२-१०)

भूर्भुवः स्वर्धौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिष्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ५

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ९

सजूर्देवेन सवित्रा सजूर् राज्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा १० १२८०

॥ २१० ॥ (वा० य० ४।७,२६)

आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा

सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा ।

आपो देवीर्बृहतीर्विश्वश्मभुवो धावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष ।

बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ७ १२८१

शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।
सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे
सहस्रपोषं पुषेयम्

२६ १२८९

॥ २११ ॥ (वा० य० ५।२, ७, ९)

अग्नेर्जेनित्रमसि वृषणौ स्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरुरवा असि ।
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा
छन्दसा मन्थामि

२

अश्वरुशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।

आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।

आप्याययास्मान्सखीन्तसन्त्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।

एष्टा रायः प्रेपे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

७

तप्तार्यनी मेऽसि विचार्यनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात् ।

विदेदग्निर्नमो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि योऽस्यां पृथिव्यामसि

यत् तेऽनाष्टुष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नमो नामाग्ने अङ्गिर आयुना

नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत् तेऽनाष्टुष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा

दधे विदेदग्निर्नमो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां

पृथिव्यामसि यत् तेऽनाष्टुष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे ।

अनु त्वा देववीतये

९ १२८५

॥ २१२ ॥ (वा० य० ६।७, २, ६५-६६, १८, २०-२१, २३, २६)

उपावीरस्युषं देवान् देवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।

देवं त्वष्टृर्वसुं रम हव्या ते स्वदन्ताम्

७

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि ।

अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूध्यः ।

अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

९

मनेस्त आप्यायतां वाक् आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतांश्च

श्रोत्रं तु आप्यायताम् ।

यत् ते क्रूरं यदास्थितं तत् तु आप्यायतां निष्ठायतां तत् ते शुष्यतु शमहोभ्यः ।

ओषधे त्रायस्व स्वर्धिते मेनश्च हिंसीः

१५ १२८८

रक्षसां भागोऽसि निरस्तुं रक्ष इदमहं रक्षोऽभितिष्ठामीदमहं रक्षोऽवबाध
इदमहं रक्षोऽधमं तमो नयामि ।

घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथा वायो वे स्तोकानामगिराज्यस्य वेतु स्वाहा
स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्

१६

सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।

रेडस्यग्निष्ठा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन् वातस्य त्वा ध्राज्यै पुष्णो रक्षा
ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः

१८ १२९०

ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः

१

देव त्वष्टर्भूरि ते सथ संमेतु सर्लक्ष्मा यद्विष्टरूपं भवाति ।

देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु

२०

समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव संवितां गच्छ स्वाहा

मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दांश्चसि गच्छ स्वाहा

द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं

नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं

ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा

२१

हविष्मंतीरिमा आपो हविष्माँर आविवासति ।

हविष्मान् देवो अश्वरो हविष्माँर अस्तु सूर्यः

२३

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हवै मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।

श्रोतां ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः संविता हवै मे स्वाहा

२६ १२९४

॥ २१३ ॥ (वा० य० ७।२-३, १५, १८, २०, २२, २३, २७-२८, ४५-४७) +

मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम

सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वृन्तरिक्षमन्वेमि

२ १२९५

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा

त्वा सुभव सूर्याय देव्येभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवांश्चो यस्मै त्वेडे तत्

सत्यमुपरिपुता भङ्गेन हतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा

३ १२९६

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तुम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहृता यत् स्वाहायाङ्ग्रीत् १५ १९९७

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीक्ष्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।

सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्कौ मन्थिनोऽधिष्ठानमसि १८

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः ।

पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु त्वं पाह्यभि सर्वनानि पाहि २०

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वत उक्थाव्यं गृह्णामि

यत् त इन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वेय ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवभ्यस्त्वा

देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२२ १९००

मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे

गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं

यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रा-

विष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२३

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे

वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतुदक्षाभ्यां मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुभ्यां मे वर्चोदसौ

वर्चसे पवथाम्

२७

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वाऽऽयुष मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवथाम्

२८

रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विमजतु ।

ऋतस्य पथा प्रेतं चन्द्रदक्षिणा विं स्वः पश्य व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ४५

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयं सुधातुदक्षिणम् ।

असद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत

४६ १९०१

अग्रये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्त्वमशीयाऽऽयुर्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्र-

हीत्रे रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्त्वमशीय प्राणो दात्र एधि

वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्त्वमशीय

त्वग्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु

सोऽमृतत्त्वमशीय हयो दात्र एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे

४७ १९०

॥ २१४ ॥ (वा० य० ८।९, ५४-५९)

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त इन्द्रोऽरिन्द्रियावतः पत्नीवतो
ग्रहो२ ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादहमवस्ताद्यदुन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत् ।

अहं सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत्

९

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः ।

सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षार्यां पूषा सोमक्रयण्याम्

५४

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट

उरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः

५५

गोह्यमाणः सोम आगतो वरुण आसन्धामासन्नोऽग्निराग्नीध्र इन्द्रो हविर्धानेऽथ-

वोपावह्रियमाणः

५६ १३१०

विश्वे देवा अंशुषु न्युप्तो विष्णुराग्नीतृपा आप्यायमानो यमः सूयमानो

विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी

संकुश्रीः

५७

विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतोऽसुहोमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोऽभ्यावृत्तो नृचक्षाः

प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराञ्चसाः

५८

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा

स्कभिता रजांसि वीर्येभिर्वीरतां शर्विष्ठा । या पत्येते अप्रतीता सहोभि-

विष्णू अग्नं वरुणा पूर्वहूतौ

+ ५९ १३१३

॥ २१५ ॥ (वा० य० ९।९-१२, २४, ३१-३६)

जवो यस्ते वाजिभिर्हितो गुहा यः श्येने परीक्षो अचरच्च वाते ।

तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः ।

वाजिनो वाजजितो वाजंथ सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत

५९

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकंथ रुहेयम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकंथ रुहेयम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकंमरुहम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यप्रसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकंमरुहम्

१० १३१५

+ वा० य० ८।६० = दे० [विश्वे देवाः] १२४६ ।

* अथर्व० ६, ९२, २ पाठभेदेन ।

१३ [दे० विश्वे देवाः]

बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत ।

इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत

११

एषा वः सा सत्या संवार्गभूद्यया बृहस्पतिं वाजमजीजपताजीजपत बृहस्पतिं वाजं
वनेस्पतयो विमुच्यध्वम् ।

एषा वः सा सत्या संवार्गभूद्ययेन्द्रं वाजमजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं०

१२

वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवन्नानि सम्राट् ।

अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्तस नो रयिं सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा

२४

अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत् तमुजेषमश्विनी द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतां

तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींलोकानुदजयत् तानुज्जेषं सोमश्चतुरक्षरेण

चतुष्पदः पशुनुदजयत् तानुज्जेषम्

३१

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिश उदजयत् ता उज्जेषं सविता षडक्षरेण षडृतुनुद-

जयत् तानुज्जेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशुनुदजयंस्तानुज्जेषं

बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत् तामुज्जेषम्

३२ १३१०

मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतं स्तोममुदजयत् तमुज्जेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुद-

जयत् तामुज्जेषमिन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत् तामुज्जेषं विश्वे देवा

द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयंस्तामुज्जेषम्

३३

वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशं स्तोममुदजयंस्तमुज्जेषं रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण

चतुर्दशं स्तोममुदजयंस्तमुज्जेषमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशं

स्तोममुदजयंस्तमुज्जेषमर्दितिः षोडशाक्षरेण षोडशं स्तोममुदजयत्

तमुज्जेषं प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशं स्तोममुदजयत् तमुज्जेषम्

३४

एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसङ्गथः स्वाहा

यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासङ्गथः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चा-

त्सङ्गथः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुत्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासङ्गथः

स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसङ्गथो दुर्वस्वङ्गथः स्वाहा

३५

ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदुस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदुस्तेभ्यः

स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदुस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रा-

वरुणनेत्रा वा मरुत्नेत्रा वोत्तरासदुस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्रा

परिसदो दुर्वस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा

३६ १३१४

॥ २१६ ॥ (वा० य० १०।५, २, २१, २३, २८, ३१)

सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे त्विषिर्भूयात् ।

अग्रये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
 बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाऽश्वाय स्वाहा
 भगाय स्वाहाऽर्यम्णे स्वाहा

५ १३२५

आविर्मर्या आवित्तो अग्निर्गृहपतिरावित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा आवित्तौ मित्रावरुणौ
 धृतव्रताववित्तः पूषा विश्ववेदा आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावा-
 वित्तादितिरुशर्मा

९

इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि ।

अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा
 समिन्द्रियेण

२१

अग्रये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्ये-
 न्द्रियाय स्वाहा ।

पृथिवि मातर्मा मा हिंसीमो अहं त्वाम्

२३

अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मस्त्वं ब्रह्माऽसि सविताऽसि सत्यप्रसवो
 वरुणोऽसि सत्यौजा इन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः ।

बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रक्ष्य

२८

अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ।

वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिस्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा

३१ १३३०

॥ २१७ ॥ (वा० य० ११।५८, ६६)

वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि पृथिव्यसि धारया मरिचि
 प्रजाथं रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय रुद्रास्त्वा
 कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि धारया मरिचि प्रजाथं
 रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानायादित्यास्त्वा कृण्वन्तु
 जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि द्यौरसि धारया मरिचि प्रजाथं रायस्पोषं
 गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः
 कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि दिशोऽसि धारया मरिचि प्रजाथं
 रायस्पोषं गौपत्यं सुवीर्यं सजातान् यजमानाय

५८ १३३१

आकूतिमग्निं प्रयुज॑त् स्वाहा॒ मनो॑ मेधामग्निं प्रयुज॑त् स्वाहा॒ चित्तं॑ विज्ञातमग्निं
प्रयुज॑त् स्वाहा॒ वाचो॑ विधृतिमग्निं प्रयुज॑त् स्वाहा॒ प्रजाप॑तये मनवे
स्वाहाऽग्नये॑ वैश्वानराय॒ स्वाहा॑

६६ १३३२

॥ ११८ ॥ (वा० य० १०।४५, ५४, ७४)

अपेत॑ वीत॒ वि च॑ सर्पतातो॒ येऽत्र॒ स्थ पुरा॑णा ये च॒ नूत॑नाः ।

अदा॑द्यमोऽवसानं॑ पृथिव्या॒ अक्र॑न्निमं॒ पितरों॑ लोकम॒स्मै

४५

लोकं॑ पृ॒ण छि॑द्रं पृ॒णार्थो॑ सीद॒ ध्रुवा॑ त्वम् ।

इन्द्रा॑ग्नी त्वा बृ॒हस्पति॑र॒ग्निन् योना॑वसीपदन्

५४

स॒जूरब्दो॑ अय॒वोभिः॑ स॒जूर॒षा अरु॑णीभिः ।

स॒जोष॑साव॒श्विना॒ द॒शसो॑भिः स॒जूरः॒ सूर॒ एत॑शेन स॒जूर्वैश्वान॑र इ॒ड्या घृ॑तेन॒ स्वाहा॑

७४ १३३५

॥ ११९ ॥ (वा० य० १३।२, ३८)

अ॒पां पृ॒ष्ठम॑सि यो॒निर॑ग्नेः स॒मुद्र॑म॒भितः॑ पि॒न्व॑मानम् ।

वर्ष॑मानो म॒हौ॒र आ च॑ पु॒ष्करे॑ दि॒वो मा॒त्रया॑ वरि॒म्णा प्र॑थस्व

२

स॒म्यक् स्र॑वन्ति स॒रितो॑ न धेना॒ अन्त॑र्हृ॒दा मन॑सा प॒यमा॑नाः ।

घृ॒तस्य॑ धारा॒ अभि॑चाक॒शीमि॑ हि॒र॒ण्ययो॑ वे॒तसो॑ म॒ध्ये अ॒ग्नेः

३८ १३३७

॥ १२० ॥ (वा० य० १४।९-१०, १७-१९, २३-२६)

मूर्धा॑ वयः प्र॒जाप॑तिश्छन्दः॒ क्षत्रं॑ वयो म॒रुत॑न्द॒ छन्दो॑ विष्ट॒म्भो वयो॑ऽधि-

पति॑श्छन्दो॒ विश्व॑कर्मा॒ वयः॑ परमे॒ष्ठी छन्दो॑ व॒स्तो वयो॑ वि॒वलं॑ छन्दो

वृ॒ष्णिर्वयो॑ विशा॒लं छन्दः॑ पु॒रुषो॑ वयस्त॒न्द्रं छन्दो॑ व्या॒घ्रो वयो॑ऽना॒धृष्टं॑

छन्दः॑ सि॒धो वय॑श्छ॒दिश्छन्दः॑ प॒ष्ठवा॑द् वयो बृ॒हती॑ छन्द॒ उ॒क्षा वयः॑

क॒कुप् छन्द॑ ऋ॒षभो॑ वयः स॒तो बृ॒हती॑ छन्दः

९

अ॒न॒ह्वान् वयः॑ प॒ङ्क्तिश्छन्दो॑ धेनु॒र्वयो॑ जग॒ती छन्द॑स्त्र्य॒विर्वय॑स्त्रि॒ष्टुप् छन्दो॑

दि॒त्यवा॑द् वयो॒ विराट्॑ छन्दः प॒ञ्चा॒विर्वयो॑ गाय॒त्री छन्द॑स्त्रि॒वत्सो॑ वय॒ उ॒ष्णिक्

छन्द॑स्तु॒र्यवा॑द् वयोऽनु॒ष्टुप् छन्दो॑ लो॒कं ता॑ इन्द्र॒म्

१०

आयु॑र्मे पाहि प्रा॒णं मे॑ पा॒ह्यपानं॑ मे॒ पाहि॑ व्या॒नं मे॑ पाहि चक्षु॑र्मे पाहि श्रो॒त्रं मे॑

पाहि॑ वाचं॒ मे पि॒न्व॒ मनो॑ मे जि॒न्वाऽऽत्मानं॑ मे पाहि॒ ज्योति॑र्मे य॒च्छ

१७ १३४०

मा छन्दः॑ प्र॒मा छन्दः॑ प्र॒ति॒मा छन्दो॑ अ॒सीव॑यश्छन्दः॒ प॒ङ्क्तिश्छन्द॑ उ॒ष्णिक्

छन्दो॑ बृ॒हती॑ छन्दोऽनु॒ष्टुप् छन्दो॑ वि॒राट् छन्दो॑ गाय॒त्री छन्द॑स्त्रि॒ष्टुप्

छन्दो॑ जग॒ती छन्दः॑

१८ १३४१

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक्
 छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाश्छन्दोऽश्वश्छन्दः १९
 आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुण एकविंशः प्रतूर्तिरष्टादश-
 स्तपो नवदशोऽभीवर्त्तः सविंशो वर्चो द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो
 योनिश्चतुर्विंशो गर्भोः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रिंशः प्रतिष्ठा
 त्रयस्त्रिंशो ब्रह्मस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशो नाकः षट्त्रिंशो विवर्त्तोऽष्टाच-
 त्वारिंशो धर्त्रं चतुष्टोमः २३

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि
 विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदश स्तोमो नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधि-
 पत्यं जनित्रं स्पृतं सप्तदश स्तोमो मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं
 दिवो वृष्टिर्वातं स्पृत एकविंश स्तोमः २४

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विंश स्तोम आदित्यानां
 भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भो स्पृताः पञ्चविंश स्तोमोऽदित्यै भागोऽसि
 पूष्ण आधिपत्यमोजं स्पृतं त्रिणव स्तोमो देवस्य सवितुर्भागोऽसि
 बृहस्पतेराधिपत्यं समीचीर्दिशं स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः २५ १३४५

यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिंश स्तोमं ऋभूनां
 भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतं स्पृतं त्रयस्त्रिंश स्तोमः २६ १३४६

॥ २२१ ॥ (वा० य० १५।३-१९)

षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वर्चो द्रविणम् ।

अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।

स्तोमं पृष्ट्वा घृतवर्तीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्व ३

एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः शम्भूश्छन्दः परिभूश्छन्द आच्छच्छन्दो मनश्छन्दो
 व्यच्छच्छन्दः सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः सरिरं छन्दः ककुप्छन्दस्त्रिकुप्छन्दः
 काव्यं छन्दो अङ्कुपं छन्दोऽक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ्क्तिश्छन्दो विष्टारप-
 ङ्क्तिश्छन्दः क्षुरोभ्रजश्छन्दः ४

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरञ्छन्दो
 निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः सुस्तुप्छन्दोऽनुष्टु-
 प्छन्द एवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो
 विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो अङ्काङ्गं छन्दः

रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व प्रतिना धर्मेना धर्मं जिन्वान्वित्या दिवा दिवं
जिन्व सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जिन्व
विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व प्रवयाह्वाहर्जिन्वानुया रात्र्या रात्रौ जिन्वोशिजा
वसुभ्यो वस्रज्जिन्व प्रकृतेनादित्येभ्य आदित्याज्जिन्व ६ १३५०

तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व सस्सर्पेण श्रुताय श्रुतं जिन्वैडेनौषधी-
भिरोषधीजिन्वोत्तमेन तनूभिस्तनूजिन्व वयोधसाधीतिनाधीतं जिन्वाभिजिता
तेजसा तेजो जिन्व ७

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि
तेजसे त्वा ८

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते
त्वाक्रमोऽस्याक्रमाय त्वा संक्रमोऽसि संक्रमाय त्वोत्क्रमोऽस्युत्क्रमाय
त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वाधिपतिनोजोजि जिन्व ९

राश्यसि प्राची दिग् वसवस्ते देवा अधिपतयोऽग्निर्हेतीनां प्रतिधर्ता त्रिवृत्
त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु रथन्तुरऽ
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्षं ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया
वरिष्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वं संविद्वाना नार्कस्य
पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु १०

विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते देवा अधिपतय इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता
पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
बृहत्साम प्रतिष्ठित्या० ११ १३५१

सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा अधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्ता
सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
वैरूपऽसाम प्रतिष्ठित्या० १२

स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवा अधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्तकविऽ-
शस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु निष्केवल्यमुक्थमव्यथायै स्तम्नातु
वैराजऽसाम प्रतिष्ठित्या० १३ १३५७

अधिपत्न्यसि बृहती दिग् विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्ता
त्रिणवत्रयास्त्रिंशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे
अव्यंथायै स्तम्नीताः शाक्वरैवते सामनी प्रतिष्ठित्या ०

१४

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ ।
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुङ्क्षणवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वृधः
प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विभ्यो यश्च
नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः

१५

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

मेनका च सहज्न्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षांसि प्रहेतिस्तेभ्यो ०

१६ १३६०

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो ०

१७

अयमुत्तरात् संयद्रसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ०

१८

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ ।

उर्वशी च पूर्वचिच्छिप्साप्सरसाववस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत् प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ० १९ १३६३

॥ २२२ ॥ (वा० य० १७।४८, ५२) +

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।

तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु

४८

यस्य कुर्मो गृहे हविस्तममे वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ५२ १३६५

॥ २२३ ॥ (वा० य० १८।३७)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि

३७ १३६६

॥ २२४ ॥ (वा० य० २०।३, १३, १७-१८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याया-

न्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यज्ञसेऽभिषिञ्चामि

३ १३६७

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।

मा५सं म उपनतिर्वस्वस्थि मजा म आनतिः

१३

यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।

यच्छुद्धे यदर्थे यदेनश्चक्रमा वयं यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावयजनमसि

१७

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराणो देव रिपस्पाहि

१८ १३७०

॥ २२५ ॥ (वा० य० २१।४१-४३, ६०-६१) ×

होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतुर्यज ।

होता यक्षत् सरस्वतीं मेघस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतुर्यज ।

होता यक्षदिन्द्रमृषस्य वपाया मेदसो जुषताः हविर्होतुर्यज

४१

होता यक्षदुश्चिनौ सरस्वतीमिन्द्रं सुत्रामाणमिमे सोमाः सुरामाणश्छागेन

मेघैर्ऋषभैः सुताः शष्पैर्न तोकममिल्लजैर्महस्वन्तो मद्रा मासरेण परिष्कृताः

शुक्राः पयस्वन्तोऽमृताः प्रस्थिता वो मधुश्चुतस्तानुश्चिना सरस्वतीन्द्रः

सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताः सोम्यं मधु पिबन्तु मदेन्तु व्यन्तु होतुर्यज

४२

होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य हविष आत्तामद्य मघ्यतो मेदु उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः

पुरा पौरुषेभ्यः गृभो घस्ता नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमानाः सुमत्क्षराणाः

शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोग्णितः शितामत

उत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करत एवाश्चिना जुषताः हविर्होतुर्यज

४३

सूपस्या अद्य देवो वनस्पतिरभवदक्षिभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेघेणन्द्राय

ऋषभेणाश्वैस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुश्चिना

सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान्

६०

त्वामद्य ऋष आर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ सङ्गतेभ्य

एषं मे द्वेषु वसु वार्यायक्ष्यत इति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा

आ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि मद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः

सक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि

६१ १३७५

॥ २२६ ॥ (वा० य० २३।८, १३, १८-२०, २६-२७, ६३)

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽऽदित्यास्त्वाञ्जन्तु
जागतेन छन्दसा ।

भूर्भुवःस्वर्लाजीश्छाचीश्न्यव्ये गव्ये एतदन्नमत्त देवा एतदन्नमद्धि प्रजापते ८
वायुष्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या ।

एष स्य राथ्यो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरेदगन् ब्रह्माऽऽकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये १३

प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मां नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्चकः सुमद्रिकां काम्पीलवासिनीम् १८

गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां
त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम ।

आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् १९

ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णवाथां वृषा वाजी रेतोधा
रेतो दधातु २० १३८०

ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ भारः हरन्निव । अथास्यै मध्यमेधताः शीते वाते पुनन्निव २६

ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रयताद्विरौ भारः हरन्निव । अथास्यै मध्यमेजतु शीते वाते पुनन्निव २७

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्पुर्णवे ।

दुधे ह गर्भमृत्विषं यतो जातः प्रजापतिः ६३ १३८३

॥ २२७ ॥ (वा० य० ६६।१-२)

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चाऽन्तरिक्षं च सन्नते ते

मे सं नमतामद आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमतामद आपश्च वरुणश्च
सन्नते ते मे सं नमतामदः ।

सप्त सप्तसदो अष्टमी भूतसाधनी सकामाँर अश्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना १

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्याः शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु २ १३८५

१४ [दे० विश्वे देवाः]

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशं बध्नन्निन्द्राय
छागेम् ।

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन ।

अघत्तं मेदुस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत् पुरोडाशेन । त्वामद्य ऋषे २३

देवो वनस्पतिर्वेवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यजं ४३ १३८७

॥ २१९ ॥ (वा० य० २९।३७)

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।

पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा मार्किनो अघशंस इशत ४७ १३८८

॥ २२० ॥ (वा० य० ३२।१५) ×

मेघां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेघां धाता ददातु मे स्वाहा १५ १३८९

॥ २२१ ॥ (वा० य० ३५।३, ११) ❀

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।

वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः ३ १३९०

अपाषमप किंविषमप कृत्यामपो रपः । अपामार्गं त्वमसदप दुःष्वप्यं सुव ११ १३९१

॥ २२२ ॥ (वा० य० ३६।१)

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये सामं प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।

वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ १ १३९२

॥ २२३ ॥ (वा० य० ३८।४, १५)

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व ।

स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् ४

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिर्वेभ्यः ।

स्वाहा पितृभ्य उर्ध्वर्बहिर्भ्यो धर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां

स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः १५ १३९३

× वा० य० ३३, ५७-५८ = दे० [अदितिः०] १९६; सा० ८५७; दे० [अश्विनौ] ३ । वा० य० ३४, ४६ = दे० [विश्वे देवाः] ८०८ ।

* वा० य० ३५, ४ = दे० [आयुर्वेद०] ३०५ ।

॥ २३४ ॥ (सा० २९९)

(१३९५-९७) वामदेवो गौतमः । बभूवुः । बृहती ।

^{१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २}
त्वष्टा नो देव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।

^{२ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः

२९९ १३९५

॥ २३५ ॥ (सा० ५९१) एकपाज्जगती ।

^{३ १ २ २ ३ ३ २}
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम्

५९१ १३९६

॥ २३६ ॥ (सा० ६११) महापङ्क्तिः ।

^{१ १ ३ १ २ २ १ २ २ ३ २}
यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रवृहस्पती ।

^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।

^{३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
यशसाऽस्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम्

६११ १३९७

॥ २३७ ॥ (सा० ३६८)

(१३९८) त्रित आप्त्यः । अनुष्टुप् ।

^{३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २}
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।

^{१ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
कद्र ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः

३६८ १३९८

॥ २३८ ॥ (सा० ४४२)

(१३९९) त्रसदस्युः । द्विपदा विराट् ।

^{२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः

४४२ १३९९

॥ २३९ ॥ (सा० ४५३)

(१४००) कवष पेल्लूषः । द्विपदा विराट् ।

^{२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २}
वि सुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः

४५३ १४००

॥ २४० ॥ (सा० ४५५)

(१४०१) आत्रेयः । द्विपदा विराट् ।

^{३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र

४५५ १४०१

॥ २४१ ॥ (सा० १५०३-४) *

(१४०२-३) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

^{२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ १ २}
अग्ने विश्वेभिरभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत ।

^{१ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः

१५०३ १४०२

^१ प्र स ^{२२} विश्वेभिरग्निभिरग्निः ^{३१ २ ३ १} स यस्य ^{२२} वाजिनः ।
^{१ २} तनये ^{३ २} तौके ^{३ २ ४} अस्मदा ^{३ २ ४} सम्यङ्वाजैः ^३ परीवृतः

१५०४ १४०३

॥ २४२ ॥ (सा० १८७२)

(१४०४) पायुर्भरद्वाजः । अनुष्टुप् ।

^{२ ३} या नः ^{१ २ ३} स्वोऽरणा ^{२ ३} यश्च ^{२ ३} निष्ठयो ^{१ २} जिघांसति ।
^{३ १} देवास्तं ^{२ २} सर्वं ^{३ २ ३} ध्रुवन्तु ^{२ ३} ब्रह्म ^{१ २} वर्म ^{२ ३} ममान्तरं ^{१ २} शम ^{२ ३} वर्म ^{२ ३} ममान्तरम्

१८७२ १४०४

नानादेवताः ।

॥ २४३ ॥ (वा० य० ९२०)

आपये स्वाहा स्वापये स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा
 ऽहर्षतये स्वाहा ऽह्वे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनश्शिनाय स्वाहा
 विनश्शिनं आन्त्यायनाय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा
 ऽधिपतये स्वाहा ॥ २० ॥

१४०५-१६

॥ २४४ ॥ (वा० य० १०५)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
 बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा ऽश्याय स्वाहा
 भगाय स्वाहा ऽर्यणे स्वाहा ॥ ५ ॥

१४१७-२८

॥ २४५ ॥ (वा० य० ११६०, ६५)

वर्मवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व—
 दादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन
 छन्दसाङ्गिरस्व—दिन्द्रस्त्वा धूपयन्तु वरुणस्त्वा धूपयन्तु विष्णुस्त्वा धूपयन्तु ॥ ६० ॥

१४२९-३५

वसवस्त्वाऽऽच्छन्दन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व—
 दादित्यास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा
 आच्छन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥ ६५ ॥

१४३६-३९

॥ २४६ ॥ (वा० य० १४।२८-३१)

एकयास्तुवत प्रजा अभ्रीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पति-
रधिपतिरासीत् पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् सप्तभिरस्तुवत सप्त
ऋषयोऽसृज्यन्त धाताऽधिपतिरासीत् ॥२८॥ १४४८-४३

नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तादितिरधिपत्यासी—देकादशभिरस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्त्तवा अधि-
पतय आसँ—स्त्रयोदशभिरस्तुवत मासा असृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत् पञ्चदशभिरस्तुवत
क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोऽधिपतिरासीत् सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पञ्चवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपति-
रासीत् ॥२९॥ १४४४-४८

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ता—मेकविंशत्यास्तुवतैकशफाः पञ्चवो
ऽसृज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत् त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः पञ्चवोऽसृज्यन्त पूषाऽधिपतिरासीत्
पञ्चविंशत्यास्तुवतारण्याः पञ्चवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत् सप्तविंशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी
व्यैतां वसवो रुद्रा आदित्या अनुव्यायँस्त एवाधिपतय आसन् ॥ ३० ॥ १४४९-५३

नवविंशत्यास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासी—देकत्रिंशतास्तुवत प्रजा असृज्यन्त
यवाश्चायवाश्चाधिपतय आसँ—स्त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरा-
सीत् ॥३१॥ १४५४-५६

॥ २४७ ॥ (वा० य० १८।१६-१८,२१)

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे
पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१६॥

मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे
मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १७ ॥

पृथिवी च म इन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे
नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१८॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे
ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलयः शकवरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२२॥ १४५७-८५

॥ २४८ ॥ (वा० य० २२।५-८, २०, २२-३४)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि—न्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ।

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः ॥५॥

१४८६-९१

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा ऽपां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा
विष्णवे स्वाहे—न्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा

॥६॥ १४९२-१५०१

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा
प्रग्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहा—पविष्टाय स्वाहा
सन्दिताय स्वाहा चल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा श्यानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा
जाग्रते स्वाहा कूर्जते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा
संश्रानाय स्वाहा—पस्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥ १५०१-२५
यते स्वाहा धावते स्वाहा—हृवाय स्वाहा—हुताय स्वाहा शूकराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा
निर्पणाय स्वाहा—त्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा
विचृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधृताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा
शृण्वते स्वाहे—क्षमाणाय स्वाहे—क्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा
यदत्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा
कृताय स्वाहा ॥८॥

१५११-५०

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहा ऽऽधिमाधीताय स्वाहा मनः
प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताया—ऽदित्यै स्वाहा ऽदित्यै मही स्वाहा ऽदित्यै
सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा
पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा
त्वष्ट्रे तुरीषाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुषाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयषाय स्वाहा
विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥

१५५१-७१

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्युः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो
जायतां दोग्धीं धेनुर्वोढानङ्गनाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषां जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो घुवास्
यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥

१५७२

प्राणाय स्वाहा उपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा
वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥२३॥

१५७३-७२

प्राच्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा दीच्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा
ध्वार्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा
॥२४॥

१५८०-९१

अद्भ्यः स्वाहा वार्यः स्वाहा दकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा सर्वन्तीभ्यः स्वाहा
स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहा
उर्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥२५॥

१५९२-१६०३

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा उभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा
स्तनयते स्वाहा उवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहा उवर्षते स्वाहा ग्रं वर्षते स्वाहा
शीघ्रं वर्षते स्वाहा दृहते स्वाहा दृहीताय स्वाहा पुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा
पुष्वाभ्यः स्वाहा ऋदुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥२६॥

१६०४-२१

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा न्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा
दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा उश्नाभ्यः स्वाहा उर्वै दिशे स्वाहा उर्वार्यै दिशे स्वाहा
॥२७॥

१६२२-३१

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा उहोरात्रेभ्यः स्वाहा उर्धमासेभ्यः स्वाहा
मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहा उत्तरेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा उदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूर्लेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा
पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहा षधीभ्यः स्वाहा ॥२८॥

१६३२-५४

पृथिव्यै स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा उद्भ्यः स्वाहा षधीभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा
परिप्लवेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥२९॥

१६५५-६६

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विशुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा
गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शुपाय स्वाहा
स॒स॒र्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा
दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥

१६६७-८०

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा
नभस्याय स्वाहे वाय स्वाहा र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा
तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऽहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥

१६८१-९३

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा कर्तवे स्वाहा स्वः स्वाहा
मूर्धने स्वाहा व्यश्रुविने स्वाहा ऽन्त्याय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा
भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥

१६९४-१७०५

आर्युयज्ञेन कल्पता५ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ऽपानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा
व्यानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा दानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा
चक्षुर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा
मनो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ऽऽत्मा यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा स्वर्ग्यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा
यज्ञो यज्ञेन कल्पता५ स्वाहा ॥३३॥

१७०६-११

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्या५ स्वाहा शताय स्वाहे कशताय स्वाहा व्युष्टये स्वाहा
स्वर्गाय स्वाहा ॥३४॥

१७११-१७

॥ १४९ ॥ (वा० य० १४।१-४०)

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवि आग्नेयो रराटे पुरस्तात्
सारस्वती मेघधस्ताद्वन्वो राश्विनावधोरांमौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाम्या५
सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोः स्त्वाष्टौ लोमशसंवथौ सुक्थ्यो वायव्यः श्वेतः पुच्छ
इन्द्राय स्वपस्याय वेद द्वैष्णवो वामनः ॥१॥

१७२८-३७

रोहितो धूम्रोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणवभ्रुः शुक्रवभ्रुस्ते वारुणाः
शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सवित्राः श्रित्तिबाहुरन्यतः शित्तिबाहुः
समन्तशित्तिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥ १७३८-४१
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्वेतः श्वेताश्वोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णा ग्रामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥

१७४३-४७

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरुध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूलोहितोर्णी पलक्षी ताः सारस्वत्यः
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्राः कृष्णग्रीवः शितिकक्षोऽञ्जिसक्थस्त ऐन्द्राग्राः
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्त उपस्याः ॥ ४ ॥ १७४८-५२

शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यव्यो वाचे अविज्ञाता अदित्यै सरूपा धात्रे
वत्सतय्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥ ५ ॥ १७५३-५७

कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाः रोहिता रुद्राणां
श्वेता अवरोकिण आदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ६ ॥ १७५८-६२

उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रवैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः
शुकरूपा वाजिनाः कल्मषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ ७ ॥ १७६३-६७

एता ऐन्द्राग्रा द्विरूपा अग्नीषोमीया वामना अनङ्गाह आशवैष्णवा वशा मैत्रावरुण्यो
ऽन्यत अन्यो मैत्र्यः ॥ ८ ॥ १७६८-७२

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याः अविज्ञाता अदित्यै
सरूपा धात्रे वत्सतय्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥ ९ ॥ १७७३-७८

कृष्णा भौमा धूम्रा अन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः शबला वैद्युताः सिन्धुमास्तारकाः ॥ १० ॥
१७७९-८३

धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान् वर्षाभ्यो ऽरुणाञ्छरदे
पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥ ११ ॥ १७८४-८९

त्र्यव्यो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै त्रिवत्सा अनुष्टुभे
तुर्यवाह उष्णिहे ॥ १२ ॥ १८१०-१४

पृष्ठवाहो विराज उक्षाणो बृहत्या ऋषभाः ककुभे ऽनङ्गाहः पङ्क्त्यै
धेनवोऽतिच्छन्दसे ॥ १३ ॥ १९९५-९९

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतय्यः सारस्वत्यः
श्यामाः पौष्णाः पृश्नयो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥ १४ ॥
१८००-१८०७

उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः पृथ्व्यो मारुताः कायास्तूपराः ॥ १५ ॥

१८०८-१८११

अग्नयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्थान् मरुद्भ्यो
गृहमेधिभ्यो वष्किहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः सःसृष्टान् मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो
ऽनुसृष्टान् ॥ १६ ॥

१८१३-१७

उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः प्राशुक्ला माहिन्द्रा
बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥ १७ ॥

१८१८-१९

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणां सोमवतां बभ्रवो धुम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिपदां
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥ १८ ॥

१८१९-२५

उक्ताः सञ्चरा एताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः
श्वेताः सौर्याः ॥ १९ ॥

१८२६-२९

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्
वर्षाभ्यस्तिस्तिरीञ्छरदे वर्तिका हेमन्ताय ककरा-
ञ्छिराय विककरान् ॥ २० ॥

१८२०-३५

समुद्राय विशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूका नद्भ्यो मत्स्यान् मित्राय कुलीपयान्
वरुणाय नाक्रान् ॥ २१ ॥

१८३६-४०

सोमाय हृत्सानालभते वायवे बलाका इन्द्राग्निभ्यां कुञ्जान् मित्राय मद्रून्
वरुणाय चक्रवाकान् ॥ २२ ॥

१८४१-४५

अग्नये कुटूरुनालभते वनस्पतिभ्य उलूका नग्नीषोमाभ्यां चाषा नश्विभ्यां मयूरान्
मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥ २३ ॥

१८४६-५०

सोमाय लुबानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः कुलीका देवजामिभ्यो
ऽग्नये गृहपतये पारुणान् ॥ २४ ॥

१८५१-५५

अर्धे पारावतानालभते रात्र्यै सीचापू रहोरात्रयोः सन्धिभ्यो जतू मासेभ्यो दात्यौहा-
न्तसैवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥ २५ ॥

१८५६-६१

भूम्या आखूनालभते ऽन्तरिक्षाय पाङ्क्त्रान् दिवे कशान् दिग्भ्यो नकुलान्
बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः ॥ २६ ॥

१८६१-६६

वसुभ्य ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरुनादित्येभ्यो न्यङ्कून् विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषता
—न्त्साध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥ २७ ॥

१८६७-७१

ईशानाय परस्वत् आलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्
बृहस्पतये गवयाँस्त्वष्ट्र उष्ट्रान् ॥ २८ ॥

१८७२-७६

प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन आलभते वाचे प्लषाँश्चक्षुषे मशका
—ञ्छोत्राय मृङ्गाः ॥ २९ ॥

१८७७-८०

प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारुण्यो मेषो
यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गव्यी
क्षिप्रश्वेनाय वतिक्रा नीलङ्गोः कर्मिः समुद्राय शिशुमारो
हिमवते हस्ती ॥ ३० ॥

१८८१-९०

मयुः प्राजापत्य उलो हलिष्णो वृषदुः शस्ते धात्रे दिशां कङ्को
धुङ्क्षाऽऽग्नेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुंकरसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः ॥ ३१ ॥

१८९१-९८

सोमय कुलुङ्ग आरुण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायो—रिन्द्रस्य गौरमृगः
पिद्रो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥ ३२ ॥

१८९९-१९०४

सौरी बलाका शार्गः सृजयः श्याण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्
श्वाविद् भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे
सरस्वते शुक्रः पुरुषवाक् ॥ ३३ ॥

१९०५-१९१०

सुपर्णः पार्जन्य आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजो
ऽलज आन्तरिक्षः प्लवो मद्रुर्मत्स्यस्ते नदीपतयै
द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥ ३४ ॥

१९११-१९१६

पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां
कृकवाकुः सावित्रो हंसो वातस्य नाक्रो मर्करः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य
ह्रियै शल्यकः ॥ ३५ ॥

१९१७-२२

एण्यहो मण्डको मूर्पिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश आश्विनः कृष्णो रात्र्या
ऋक्षो जतूः सुपिलीका त इतरजनानां जहका वैष्णवी ॥ ३६ ॥

१९२३-२८

अन्यवापोऽर्धमासानां मृशयो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणां मयामुद्रो मासां कश्यपो
रोहित कुण्डणाचीं गोलत्तिका तेऽप्सरसां मृत्युर्वेऽमितः ॥ ३७ ॥

१९२९-३४

वर्षाहूर्कृतूनां मायुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वसनां कपिञ्जलः
कपोत उल्लूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेघः ॥ ३८ ॥

१९३५-४०

श्वित्र आदित्यानां मुष्टो घृणीवान् वार्धनसस्ते मृत्या अरण्याय ममरो रुरु रौद्रः
क्वयिः कुटरुर्दात्याहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥ ३९ ॥

१९४१-४६

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षस्ते रक्षसां मिन्द्राय स्रक्करः
सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरण्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ ४० ॥

१९४७-५२

॥ २५० ॥ (वा० य० २५।१-९)

शार्दं दुद्धि—रवकां दन्तमूलैर्मृदुं वस्वैस्तेगान् दःष्टाभ्यां सरस्वत्या अग्रजिह्वं
जिह्वाया उत्साद—मवक्रन्देन तालु वाजः हनुभ्यामप आस्येन वर्षणमाण्डाभ्यां
—मादित्यां इमश्रुभिः पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्यां
शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माण्य—वार्या इक्षवोऽवार्याणि पक्ष्माणि
पार्या इक्षवः ॥ १ ॥

१९५३-७२

वातं प्राणेना—ऽपानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तर—
—मनुकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयितुं निर्वाधेना—ऽशनिं मास्तिष्केण
विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यां श्रोत्रं श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदुनीमधरकण्ठेना—
ऽपः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभि—रदिति शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जर्जल्येन शीर्ष्णा
सैक्रोशैः प्राणान् रेष्माणं स्तुपेन ॥ २ ॥

१९७३-९०

मशकान् केशै—रिन्द्रः स्वर्पसा वहेन बृहस्पतिः शकुनिसादेन कूर्माञ्छुर्फै—
—राक्रमणं स्थूराभ्यामृक्षलाभिः कपिञ्जलाञ्जवं जह्वाभ्यामध्वानं बाहुभ्यां
जाम्बीलेनारण्यमग्निमतिरुग्भ्यां पूषणं दोभ्यामश्विनावत्साभ्यां रुद्रः रोराम्याम् ॥ ३ ॥

१९९१-२००३

अग्नेः पक्षति—वायोर्निपक्षति—रिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्य—दित्यै पञ्चमी—
—न्द्राण्यै षष्ठी मरुतां सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्य—र्यग्णो नवमी धातुर्दशमी—
—न्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥ ४ ॥

२००४-२०१६

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षति—मित्रस्य तृतीया
ऽपां चतुर्थी निर्ऋत्यै पञ्चम्यु—ग्रीषोमयोः षष्ठी सर्पाणां सप्तमी
विष्णोरष्टमी पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमी—न्द्रस्यैकादशी
वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं
विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥ ५ ॥

२०१७-३१

मरुतां स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीया
ऽऽदित्यानां तृतीया वायोः पुच्छ—मग्रीषोमयोर्भासदौ
क्रुञ्चौ श्रोणिभ्या—मिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां
मित्रावरुणावल्गाभ्या—माक्रमणं स्थूराभ्यां बलं कुष्टाभ्याम् ॥ ६ ॥

२०३२-४२

पूष्णं वनिष्ठुना ऽन्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभि—विहृतं आन्त्रै—रपो बस्तिना
वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन प्रजां रेतसा चाषान् पित्तेन प्रदुरान् पायुना
कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥ ७ ॥

२०४३-५३

इन्द्रस्य-क्रोडो ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवो ऽदित्यै भस—
—जीमूतान् हृदयौपशेना—ऽन्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां
दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभि—रुपलान् प्लीहा
वल्मीकान् क्लोमभि—ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्ती—हृदान् कुक्षिभ्यां
समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥ ८ ॥

२०५४-७०

विधृतिं नाभ्यां घृतं रसेना—ऽपो यूष्णा मरीचिर्विप्रुङ्भि—नीहारमूष्मणा
शीनं वसया प्रुष्वा अश्रुभि—हृदुनीर्दुषीकाभि—रस्ना रक्षांसि चित्राण्यङ्गै—
—र्नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा ॥ ९ ॥

२०७१-८३

॥ २५१ ॥ (वा० य० २९।५८-६०)

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः
शिल्पो वैश्वदेव ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्माष ऐन्द्राग्रः संहितो
ऽधोरागः सावित्रो वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेतवः ॥ ५८ ॥

२०८४-९४

अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनङ्गा नभोरांमौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्मष आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेधी
वारुणः पेतवः ॥५९॥

२०९५-२१०२

अग्नये गायत्राय त्रिवृते रार्थन्तरायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय
बाहतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो
मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंशाभ्यां वैराजाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय
त्रिणवायं आक्वराय चरुः सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादशकपालः
ग्राजापत्यश्चरु रदित्यै विष्णुपत्न्यै चरु रग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालोऽनुमत्या
अष्टाकपालः ॥६०॥

२१०३-२११२

॥ २५२ ॥ (चा० य० ३०।५-२२)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं
नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीब माक्रियाया अयोगं कामाय पुंश्चल
मतिक्रुष्टाय मागधम् ॥५॥

२११३-२२

नृत्ताय सुतं गीताय शैलूप धर्माय सभाचरं नरिष्टायै भीमलं नर्माय रम
हसाय कारि मानन्दाय स्त्रीपखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधाय रथकारं
धैर्याय तक्षाणम् ॥६॥

२१२३-३२

तपसे कौलालं मायायै कर्मारं रूपाय माणिकारं शुभे वप शरव्याया ह्युकार
हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्ज मृत्यवे मृगयु
मन्तकाय श्वनिनम् ॥७॥

२१३३-४२

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठ मुक्षीकाभ्यो नेपादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं
गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्य उन्मत्तं सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपद
मयेभ्यः कितव मरियताया अकितवं पिशाचेभ्यो बिदलकारी
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥

२१४३-५२

सन्धये जारं गेहायोपपति मार्त्यं परिवित्तं निर्ऋत्यं परिविविद्वान मराध्या एदिधिषुःपति
निष्कृत्यै पेशस्कारी संज्ञानाय स्मरकारी प्रकामोद्यायोपसदं
वर्णीयानुरुधं बलायोपदाम् ॥९॥

२१५३-६२

उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वाभ्यः सामः स्वप्नायान्धमधर्माय बधिरं
पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षाया अभिप्रश्निनं
मर्यादायै प्रश्नविवाकम् ॥१०॥

२१६३-७९

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्चपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालं
मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपः श्रेयसे वित्तधं
मार्घ्यक्षयायानुक्षत्तारम् ॥११॥

२१७३-८२

भायै दारवाहारं प्रभाया अग्नयेधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं
देवलोक्याय पेक्षितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारः सर्वेभ्यो लोक्येभ्य उपसेक्तारं
मवक्रत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासःपल्पूलीं प्रक्रामाय रजयित्रीम् ॥१२॥

२१८३-९२

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्टायायानुक्षत्तारं
बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या अश्वसादः
स्वर्गाय लोकाय भागदुधं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥१३॥

२१९३-२२०२

मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तारः शोकायाभिसर्तारं क्षेमाय विमोक्तारं
मुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतः शीलायाञ्जनीकारी निर्ऋत्यै कोशकारीं
यमायासम् ॥१४॥

२२०३-१२

यमाय यमस्यमर्थर्वेभ्योऽवतोक्ताः संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजाता
मिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जराः संवत्सराय पलिक्नी
मृष्टुभ्योऽजिनसम्धः साध्येभ्यश्चर्मसम् ॥१५॥

२२१३-२२२२

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं
पाराय मार्गारमवाराय केवती तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनालः स्वनेभ्यः पर्णिकं
गुहाभ्यः किरातः सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्

२२२३-३४

बीमत्सायै पौलकसं वर्णीय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादोषाय ग्लाविनं
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरुणमभूत्यै स्वपनमात्यै जनवादिनं
व्यूढ्या अपगल्भः सःश्वराय प्रच्छिदम् ॥१७॥

२२३५-४४

अक्षराजाय कितवं कृतायाऽऽदिनवदुर्षं त्रेतायै कन्तिनं द्वापरायाधिकल्पिनं—

—मास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोच्यच्छ—मन्तकाय गोघाते क्षुधे यो गां
विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मनं सैलगम् ॥१८॥ २२४५-५४
प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भष—मन्ताय बहुवादिनं—मनन्ताय मूकः शब्दायाडम्बराघातं
महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्म—मवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनप—
—मन्यतौरण्याय दावपम् ॥१९॥ २२५५-६४

नर्माय पुँश्चलः हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं तान् महसे
वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान् नृत्तायाऽऽनन्दाय तलवम् ॥२०॥ २२६५-७०

अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठमर्पिणं वायवे चाण्डाल—मन्तरिक्षाय वःशनुतिनं
दिवे खलतिः सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किमिरं चन्द्रममं किलाम—महो शुक्रं पिङ्गाक्षः
रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥२१॥ २२७१-८०

अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्लं
चातिकृष्णं चातिकुल्लवं चातिलोमशं च । अशूद्रा अत्राक्षणास्ते प्राजापत्याः ।

मामघः पुँश्चली कितवः क्लीबोऽशूद्रा अत्राक्षणास्ते प्राजापत्याः ॥२२॥ २२८१-८२

॥ २५३ ॥ (वा० य० ३९।१-२, ११-१३)

स्वाहा प्राणेभ्यः सार्षपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहा अग्नये स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा
वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥१॥ २२८३-८९

दिवेभ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा अद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।
नाभ्ये स्वाहा पुताय स्वाहा ॥२॥ २२९०-९६

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहो—द्यासाय स्वाहा ।
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥१॥ २२९७-२३०५

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा ।
निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥२॥ २३०६-१३

यमाय स्वाहा अन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याः स्वाहा ॥१३॥ २३१४-२०

विश्वे देवाः - पुनरुक्त - मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[१] १।१।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)

विश्वे देवास आ गत ।

(१६५) १।४१।१३ (गुत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)

(४१५) ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

[४] १।१४।१ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

विश्वेभिः सोमपीतये ।

(इन्द्रः ४१२) ८।२१।४ (सोमरिः काण्वः । इन्द्रः)

[६] १।१४।२ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

इन्द्रवायू बृहस्पतिं । आदित्यान् मारुतं गणम् ।

(८१९) १०।१४।४ (अमिस्तापसः । विश्वे देवाः)

इन्द्रवायू बृहस्पतिं ।

(अमिः १०६५) ६।१६।२४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।

अमिः)

आदित्यान् मारुतं गणम् ।

[८] १।१४।५ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

वृकवर्हिषः ।

हविष्मन्तो अरंकृतः ।

(अश्विनौ ४००) ८।५।१७ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

वृकवर्हिषो हविष्मन्तो— ।

[९] १।१४।६ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

वहन्ति प्रयांसि वीतये ।

आ देवान्सोमपीतये ।

(अमिः १०८५) ६।१६।४४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।

अमिः)

वहामि प्रयांसि वीतये ।

आ देवान्सोमपीतये ।

[१४] १।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

त्वं होता मनुहिता ।

सेमं नो अध्वरं यज ।

१६ दै० [विश्वे देवाः]

(अमिः १०५०) ६।१६।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।

अमिः)

त्वं ।

(अमिः २८) १।२६।१ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अमिः)

सेमं ।

[१५] १।१४।२२ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः ।

(मरुतः २८०) ५।५६।६ (श्यावाश्व आत्रियः । मरुतः)

युक्ष्वं ह्यरुषी रथे युक्ष्वं रथेषु रोहितः ।

[१६] १।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

मरुतः सोमपीतये ।

(मरुतः ३९७) ८।९४।३ = (मरुतः ४०३) ८।९४।९

(विन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः)

[१५] १।८९।७ (गोतमो राहुगणः । विश्वे देवाः)

विश्वे नो देवा अवसा गमन्तिह ।

(५२२) १०।३५।१३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।

[३८-५५] १।१०५।१-१८ विसं मे अस्व रोदसी ।

[४२] १।१०५।५ (त्रित आप्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा विश्वे देवाः)

त्रिष्वा रोचने दिवः ।

(इन्द्रः २३०६) ८।६९।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[४५] १।१०५।८ (त्रित आप्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)

सं मा तपन्त्यमितः सपत्नीरिव पर्शवः ।

मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माभ्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ॥

(इन्द्रः २५३२) १०।३३।२ (कवष ऐलूषः । इन्द्रः)

सं मा ।

(इन्द्रः २५४०) १०।३३।३ (कवष ऐलूषः । इन्द्रः)

मूषो न ।

[५०] १।१०५।१३ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)

देवेष्वप्यप्यम् ।

(अश्विनो ४६७) ८।१०।३ (प्रगार्थो घौरः काण्वः । अश्विनी)

देवेष्वप्यप्यम् ।

[५१] १।१०५।१४ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।

विश्वे देवाः)

देवो ।

अग्निर्हव्या सुपूति देवो देवेषु मेधिरः ।

(अग्निः १९२८) १।१४२।११ (दीर्घ-मा औचथ्यः ।

[आप्रसूक्त] = वनस्पतिः)

अनसृजन्नुप रमना देवान् यक्षि वनस्पते ।

अग्निर्हव्या सुपूति देवो देवेषु मेधिरः ।

(अग्निः १९४०) १।१८८।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।

[आप्रसूक्त] = वनस्पतिः)

उप रमन्या वनस्पते । अग्निर्हव्यानि मिषवदत् ।

[५२] १।१०५।१६ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।

विश्वे देवाः)

दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

(इन्द्रः १२२६) २।२२।४ (गृध्रमदः शौनकः । इन्द्रः)

दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।

[५३-६२] १।१०६।१-६ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्माञ्चो बहसो निष्पपत्तम् ।

[५८] १।१०६।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

त आदित्यो जा गता सर्वतानये ।

(५०) १।०३५।११ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

[६३] १।१०६।७ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्माता त्रायतामप्युच्यन् ।

(२३५) ४।५५।७ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)

[६५] १।१०७।२ उप नो देवा अवसा गमन्तु ।

(५९२) १।०३५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।

[६५] १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ।

(अदितिः ० ४१६) ४।५४।६ (वामदेवो गौतमः । सविता)

(७०९) १।०६६।३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

... .. शर्म यंसत् ।

[६६] १।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

तस्य तदर्थमा तत् सविता चनो धात् ।

(३७६) ६।४९।१४ (ऋजिश्वा भरद्वाजः । विश्वे देवाः)

तस्यो तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।

[७१] १।१२१।५ (कक्षीवान् दर्धतमस आंशजः । विश्वे देवाः
इन्द्रो वा)

राधः सुरतस्तुरणे ।

शुचि यत्ते रेकण आयजन्त सवर्धुधायाः पय उज्जियायाः ।

(६३७) १।०६१।११ (नामानिदिष्टो मानवः । विश्वे देवाः)

राधो न रेत कृतामिन् तुरण्यन् ।

शुचि यत्ते रेकण आयजन्त ... ।

[७९] १।१२१।१३ (कक्षीवान् दर्धतमस आंशजः । विश्वे देवाः
इन्द्रो वा)

भरश्चक्रमेतसो नायामन्द्र ।

(इन्द्रः १७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्र्यः । इन्द्रः)

भरश्चक्रमेतसः सं रिराति ।

[८४, ९५] १।१२२।३, १४ तस्यो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।

[८७] १।१२२।६ (कक्षीवान् दर्धतमस आंशजः ।

विश्वे देवाः)

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवमा ।

(अदितिः ० ३०९) ७।६१।५ (मैत्रावरुणिवीरिष्ठः ।

मित्रावरुणो)

[९२] १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य मन्दाः ।

(७३९) १।०९३।४ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः)

ते वा राजानो ... ।

[९७] १।१२९।१ भीतयो देवो अवसा न भीतयः ।

(इन्द्रः १०२२) १।१३२।५ (परुच्छेपो देवोदाविः । इन्द्रः)

[१०१] १।१६४।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)

सप्त स्वगारा अभि सं नवन्ते ।

१।०७१।३ (गृध्रस्पर्तिराङ्गिरसः । ज्ञानम्)

तां सप्त रमा अभि सं नवन्ते ।

[११२] १।१६४।२१ इतो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

(अदितिः ० ५४) २।२७।४ (कुर्वो गार्त्समदो, गृध्रमदो
वा । आदित्यः)

देवा विश्वस्य ... ।

[१२८, १३६] १।१६४।३०, ३८ जमरयो मर्येना सवोभिः ।

- [१२९] १।१६४।३१ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)
 = १०।१७७।३ (पतङ्गः प्राजापत्यः । मायाभेदः)
 अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिमिश्चरन्तम् ।
 स सप्रोचीः स विष्टूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ॥
- [१३८] १।१६४।४० अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
 (अदितिः० ७९६) ७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)
 तेन वयं ।
- [१४१] १।१८६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
 मित्रो अर्थमा वरुणः सजोषाः ।

- (अदितिः० ३१२) ७।६०।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 मित्रावरुणौ)
- [१४२] १।१८६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
 प्रेष्ठ वो अतिथिं गृणीषऽग्निं ।
 (अग्निः १४५४) ८।८४।१ (उशना काव्यः । अग्निः)
 अतिथिं स्तुषे । अग्निं ... ।
- [१४३] १।१८६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)
 उषासानक्ता सुदुषेव धेनुः ।
 (अग्निः १९७९) ७।२।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 [आप्रीसूक्तं] = उषासानक्ता)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [१५२] २।२९।२ (क्रमो गार्त्समदो गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)
 यूयं द्वेषांसि सनुतयुषोत ।
 (७५९) १०।१००।९ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
 विश्वा द्वेषांसि सनुतयुषोत ।
- [१५७] २।२९।७ = (अदितिः० ३७) २।२७।१७ (क्रमो
 गार्त्समदो गृत्समदो वा । आदित्यः)
 माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूतिदाज्ञ आ विदं शूनमापेः ।
 मा रायो राजन्सुयमादव स्यां बृहद्भवेम विदथे सुवीराः ॥
- [१५८] २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
 आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
 (अश्विनौ ५०९) ८।३५।१ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
- [१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः [आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्वाद्]
 भार्गवः शौनकः । विश्वे देवाः)
 विश्वे देवास आ गत ।

- (१) १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
 (४१५) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
- [१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)
 (४५२) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
 विश्वे देवास आ गत शृणुता म हमं हवम् ।
 एदं वहिर्नि षीदत ॥
- (अश्विनौ ५४९) ८।७३।१० (गोपवन आत्रेयः सप्तव-
 ध्रिर्वा । अश्विनौ)
 शृणुतं म हमं हवम् ।
- [१६७] २।४१।१५ इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूवरातयः ।
 विश्वे मम श्रुता हवम् ॥
 (इन्द्रः ३२४८) १।२३।८ (मेघातिथिः काण्वः ।
 मरुत्वानिन्द्रः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१६९] ३।२०।५ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः)
 दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं ...।... हुवे ॥
 (७६३) १०।१०१।१ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवा
 ऋत्विग् वा)
 दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं...हुये ।
- [१७०] ३।५४।१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
 विश्वे देवाः)
 शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः ।

- (अग्निः ४६१) ३।१।१५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
- [१७२] ३।५४।३ सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।
 (अग्निः ११६) १।५८।७ (नोधा गौतमः । अग्निः)
- [१७४] ३।५४।५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
 विश्वे देवाः)
 को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् ।
 परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ॥

- १०।१२९।६ (प्रजापतिः परमेष्ठा । भावश्रुतम्)
को अन्ता ... ।
(७८३) १०।१२९।२ (सप्रिर्वैरूपो धर्मो वा तापसः ।
विश्वे देवाः)
परेषु या — ।
[१८०] ३।५४।११ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
त्रिरा दिवो विदधे पश्यमानः ।
(२१८) ३।५६।५ त्रिरा दिवो विदधे पश्यमानाः ।
[१८४] ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
उभे आ पयो रोदसी महिषा ।
(इन्द्रः १४७१) ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
(अदितिः ० ३६१) ८।२५।१८ (विश्वमना वैश्वः ।
मित्रावरुणौ)
[१८७] ३।५४।१८ अश्विनानि वरुणस्य व्रतानि ।
१।२४।१० (धुनःशेष आजीगर्तिः कुत्रिमो देवरातो
वैश्वामित्रो वा । वरुणः)
[१८९] ३।५४।२० ध्रुवक्षेमास इक्ष्वा मन्तः ।
(अदितिः ० १८७) ३।५२।३ (गाधिनो विश्वामित्रः ।
मित्रः)
अनमीवास इक्ष्वा ... ।
[१९१] ३।५४।२२ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
समिषो विहीक्ष्वाश्वः सं मिमीहि अवांसि ।
(अग्निः ७९१) ५।४।२ (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
(इन्द्रः १८७३) ६।१९।३ (मरदाजो भार्दस्पत्यः । इन्द्रः)
अस्वाश्वः सं मिमीहि अवांसि ।
[१९२-२१३] ३।५५।१-२२ महद्देवानामसुररथमेकम् ।
(इन्द्रः २६१७) १०।५५।४ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः)
महन्महत्वा असुररथमेकम् ।
[२००] ३।५५।९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)

- अन्तर्महोत्तरति रोचनेन ।
(अग्निः १५०७) १०।४।२ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
अन्तर्महोत्तरति रोचनेन ।
[२०४] ३।५५।१३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
अन्यस्या वसं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे वसुधः ।
(इन्द्रः २१०४) १०।२७।१४ (ऐन्द्रो वसुधः । इन्द्रः)
[२१०] ३।५५।१९ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।
(आयुर्वेदः १९५८) १०।१०।५ (यमी वै सती ऋषिका ।
यमः)
[२१२] ३।५५।२१ इमा च नः पृथिवी विश्वधाया उप क्षेति
हितमित्रो ।
न राजा । पुरःसदः शर्मन्तो न वीरा ... ।
(अग्निः २०७) १।७३।३ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
देवो न यः पृथिवी... राजा । पुरःसदः...वीरा... ।
[२१६] ३।५६।३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्विच्यो वा ।
विश्वे देवाः)
स रेतोधा वृषमः शान्तीनाम् ।
(आयुर्वेदः २९०) ७।१०।१६ (मित्रावरुणर्वसिष्ठः
(इष्टिकामः), कुमार आग्नेयो वा । पर्वण्यः)
[२१८] ३।५६।५ = (१८०) ३।५४।११ त्रिरा दिवो विदधे
पश्यमानाः (११ पश्यमानाः) ।
[२२०] ३।५६।७ राजाना मित्रावरुणा सुवाणी ।
(अग्निः १९३) १।७१।९ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
[२२२] ३।६।८ (गाधिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीधा ।
(४६२) ७।३५।१४ (मित्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवो जषन्त (इदं ब्रह्म) ।
(७१८) १०।६६।१२ (वसुधुर्वा वासुधः । विश्वे देवाः)
— रुद्रा वसवः सुदानयः (इमा ब्रह्म) ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थ मण्डलम् ।

- २२९] ४।४५।१ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
आव भूया अदिते आसीथा नः ।

- (अदितिः ० ३२८) ७।६२।४ (मित्रावरुणर्वसिष्ठः ।
मित्रावरुणौ)

[२३१] ४।५।३ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
 उभे यथा नो बहनी निपाते ।
 (आयुर्वेदः २२८५) १० ७६.१ (जरत्कर्णः सर्प ऐरावतः ।
 प्रावाणः)
 — बहनी सचामुवा ।
 [२३४] ४।५।६ समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
 (इन्द्रः ८०६) १।५।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [२३५] ४।५।७ = (६३) १।१०६।७
 [२३५] ४।५।७ नहि मित्रस्य वरुणस्य धामिम् ।
 (आयुर्वेदः ९०१) १०।३०।१ (कवष ऐलषः । आपः,
 अपां नपात् वा)
 महीं मित्रस्य ... ।

[२३७] ४।५।९ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
 उषो मघोन्या वह ।
 (उषाः ११६) ५।७९।७ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
 [२३७] ४।५।९ अस्मभ्यं वाजिनीवति ।
 (उषा ३६) १।९२।१३ (गोतमो राहुगणः । उषा)
 [२३८] ४।५।१० (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः)
 तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (अदितिः ० ५६) ८।१८।३ (इरिम्बिठिः काण्वः ।
 आदित्याः ।
 (अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनः शेष आजीगतिः । अग्निः)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२३९] (वसूयव आत्रेयः । विश्वे देवाः)
 देवासः सर्वया विद्या ।
 (मरुतः ४०) १।३९।५ (कण्वो घौरः । मरुतः)
 [२४१] ५।४।२ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
 ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त ।
 १।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)
 मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन् ।
 [२४५] ५।४।६ (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ... अकैः ।
 ... पुरंधीः ॥
 (६८२) १०।६४।७ (गयः छातः विश्वे देवाः)
 प्र वो वायुं रथयुजं पुंषि स्तोमैः कृणुध्वम् ।
 [२४७] ५।४।८ (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 वनस्पतीरोषधी राय एषे ।
 (१७४) ५।४।१६ वनस्पतीरोषधी राये अस्याः ।
 [२४९] ५।४।१० गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः ।
 (अग्निः १००९) ६।१२।४ (बार्हस्पत्यां भरद्वाजः ।
 अग्निः)
 सास्माकेमिरेतरी न शूषैरग्निः ।
 [२५१] ५।४।१६ (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धाद् ।
 ७।३४।१७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अहिर्बुध्न्यः)

[२६२] ५।४।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ।
 (४८८) ७।४०।१ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
 यदय देवः सविता सुवाति ।
 [२७४] ५।४।१६ = (२४७) ५।४।८ (भौमोऽग्निः ।
 विश्वे देवाः)
 [२७४] ५।४।१६ (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 देवो देवः सुहवो भूत महां मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ।
 (२९१) ५।४।१५ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
 [२७५] ५।४।१७ = (२९२) ५।४।१६ (भौमोऽग्निः ।
 विश्वे देवाः)
 उरौ देवा अग्निबाधे स्याम ।
 [२७६] ५।४।१८ (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 = (२९३) ५।४।१७ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
 = (अश्विनौ २९१) ५।७६।५ (अग्निर्भौमः । अश्विनौ)
 = (अश्विनौ २९६) ५।७७।५ (अग्निर्भौमः । अश्विनौ)
 समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
 आ नो रथिं बहूतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥
 [२८६] ५।४।१० (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
 विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।
 (५९२) १०।३५।३ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)
 विश्वे अय मरुतो विश्व ऊती ।

- [२८७] पा४३।११ (अत्रिमौमः । विश्वे देवाः)
आ नो दिवो बृहन्तः पर्वतादा ।
(अश्विनौ २९०) पा४३।१८ (अत्रिमौमः । अश्विनौ)
[२९१] पा४३।१५ = (२७४) पा४२।१६
[२९२] पा४३।१६ = (२७५) पा४२।१७
[२९३] पा४३।१७ = (२७६) पा४२।१८ =
(अश्विनौ २९१) पा४३।१५ = (अश्विनौ २९६) पा४३।१५
[३०७] पा४४।१४ यो जागार तमृचः कामयन्ते यो
जागार तमु सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम
आह ॥ (३०८) अमिर्जागार तमृचः ...
अमिर्जागार ... । अमिर्जागार तमयं ... ॥
[३०७-८] पा४४।१४-१५ (काश्यपाऽवस्मारः । विश्वे देवाः)
तवाहमस्मि सव्यं न्योकाः ।
[३११] पा४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
इन्द्रा न्वमी अवसे हुवन्तै ।
(इन्द्रः ३०४८) द्वा५९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रामी)
... .. अवसेह वज्रिणा ।
[३१८] पा४५।१० (सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः)
आ सूर्यो अरुहन्त्युक्रमणः ।
(अदितिः ० ३१२) ७।६०।४ (वसिष्ठो मैत्रायणः ।
मित्रायणौ)
[३२२] पा४६।३ (प्रतिक्रान् आत्रेयः । विश्वे देवाः)

- स्वः पृथिवीं धां अपः ।
हुवे विष्णु पृषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं ।
(५०६) ७।४४।१ (वसिष्ठो मैत्रायणः । दधिक्राव्युषोऽ-
भिभगेन्द्रविष्णुपृषन्नब्रह्मणस्पत्यादित्ययावापृथिव्यास्वः)
भगमृतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पृषणं
ब्रह्मणस्पतिं ... यावापृथिवी अपः स्वः ।
[३२७] पा४६।८ (प्रतिक्रान् आत्रेयः । देवपत्न्यः)
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
(४४५) ७।४४।२२ (वसिष्ठो मैत्रायणः । विश्वे देवाः)
[३५०] पा५१।६ (स्वत्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
देवेभिर्हव्यदातये ।
(आभिः ९२३) ५।२६।४ (वसुधव आत्रेयः । अग्निः)
[३५१] पा५१।२ सत्यधर्मानो जष्वरम् ।
(अग्निः १६) १।१२।७ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
सत्यधर्मानमध्वरे ।
[३५२] पा५१।३ (स्वत्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
प्रातर्वावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ।
(इन्द्रः ३०९७) ८।३८।७ (द्यावाश्च आत्रेयः । इन्द्रामी)
प्रातर्वावभिरा गत देवेभिः सोमपीतये ।
[३५३] पा५१।८ अग्निभ्यामुपना सजः ।
(आभिः ९९) १।४४।१४ (प्रस्तोत्रः काण्वः । अग्निः)
[३५३-५५५] पा५१।८-१० आ याह्यो जविषत् सुते रण ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [३६३] ६।४९।१ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
(आयुर्वेदः १९९१) १०।१५।५ (शङ्खा सामायनः । पितरः)
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु ।
(४०२) ६।५१।१० (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ।
[३६६] ६।४९।४ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा ।
(आयुर्वेदः १८२६) ३।३३।५ (विश्वामित्रो गार्धनः । नद्यः)
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ।
[३६७] ६।४९।५ येन वरा नासायेवध्वं वर्तिर्यायस्त्रनयाय-
रमने च ।
(अश्विनौ २०४) १।१८।३ (अमरुतो मैत्रायणः ।
अश्विनौ)

- [३७१] ६।४९।१० बृहन्तमृचमजं सुपुत्रम् ।
(इन्द्रः १९८८) ३।३२।७ (विश्वामित्रो गार्धनः । इन्द्रः)
बृहन्तमृचमजं युवानम् ।
[३७४] ६।४९।१२ प्र वीराय प्र तवसे वीराय ।
(इन्द्रः २०११) ६।३२।१ (मुहोत्रो भारद्वाजः इन्द्रः)
महे वीराय ।
[३७५] ६।४९।१३ यो रजसि विममे पार्थिवानि ।
१।१६०।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । यावापृथिवी)
वि यो ममे रजसी युक्तु ।
[३७६] ६।४९।१४ तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धाव ।
(६६) १।१०७।३ तद्वर्यमा तत् सविता ... ।
[३८१] ६।५०।४ अथा हुतासो वसवोऽष्टधाः ।
(३९२) ६।५०।१५ आ हुतासो वसवोऽष्टधाः ।

- [३८४] ६।५०।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।
(अदितिः ० ३१०) ७।६०।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
मित्रावरुणौ)
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।
(६६८) १०।६३।८ (गयः क्रातः । विश्वे देवाः)
... .. जगतश्च मन्तवः ।
- [३८५] ६।५०।८ आ नो देवः सविता त्रायमाणः ।
(४५८) ७।१५।१० (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
शं नो देवः ।
- [३८५] ६।५०।८ व्यूण्ते दाशुषे वार्याणि ।
(उषा १२५) ५।८०।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः)
व्यूण्वन्तो दाशुषे ... ।
- [३८६] ६।५०।९ उत त्वं सूनो सहस्रो नो अद्य ।
(अग्निः ११७) १।५८।८ (नोधा गौतमः । अग्निः)
अच्छिद्रा सूनो ... ।
- [३९०] ६।५०।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
भगो ... । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।
(६८५) १०।६४।१० (गयः क्रातः । विश्वे देवाः)
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः । ... भगो ।
- [३९२] ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
एवा भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।
(इन्द्रः २१८५) ७।२३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
एवा ... वसिष्ठसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।
- [३९४] ६।५१।२ ऋतु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
- [३९७] ६।५१।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
विश्व आदित्यो अदिते सजोषाः ।
(६७५) १०।६३।१७ = १०।६४।१७ (गयः क्रातः ।
विश्वे देवाः)
... .. अदिते मनीषी ।
- [३९७] ६।५१।५ असम्यं शर्म बहुलं वि यन्त ।
(मरुतः २७३) ५।५५।९ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)
... वि यन्तन ।
- [३९९] ६।५१।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
(अदितिः ४२) ७।५१।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्याः)
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।

- [४००] ६।५१।८ नमो दाधार पृथिवीमुत धाम् ।
(अदितिः ० १८५) ३।५९।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
मित्रो दाधार ... ।
- [४०२] ६।५१।१० = (३६३) ६।४९।१ सुक्षत्रासो वरुणो
मित्रो अग्निः ।
- [४०७] ६।५१।१५ यूयं हि द्या सुदानवः ।
(अदितिः ० ९०८) १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः ।
[ऋतवः] = मरुतः)
(५३७) ८।८३।९ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
- [४०७] ६।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।
(५६७) ८।८३।९ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
- [४०८] ६।५१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
स्वस्तिगामनेहसम् ।
(इन्द्रः २३१८) ८।६९।१६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
- [४११] ६।५१।३ ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिमस्य ।
(इन्द्रः १२५४) ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
- [४१३] ५।५१।५ पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
(इन्द्रः १५९१) ४।१५।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
पश्यात् सूर्य ... ।
- [४१५] ६।५१।७ = (१६५) २।४१।१३
- [४२०] ६।५२।२ इमं नो अग्ने अध्वरम् ।
(अग्निः ७२७) ५।४।८ (वसुभृत आत्रेयः । अग्निः)
अस्माकमग्ने अध्वरम् ।
- [४२०] ६।५२।२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
चिकित्वान् दैत्यं जनम् ।
(अग्निः १३५१) ८।४३।९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
- [४२१] ६।५२।३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ।
(इन्द्रः ३१७१) ६।६८।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।
इन्द्रावरुणौ)
... .. मादयेथाम् ।
(आयुर्वेदः १०८४) १०।१७।८ (देवश्रवा यामायनः । सरस्वती)
... .. मादयस्व ।
- [४२४] ६।५२।१६ अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ।
(सोमः १२२१) २।४०।५ (गृत्समदः सौनकः । सौमापूषणौ)
सौमापूषणाववतं धियं मे ।
- [४२५] ६।५२।१७ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नी ।
(अग्निः ६८५) ४।६।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [४४५] ७३४।२२ = (३२७) ५।४६।८
आ रोदसी वरुणानो ऋणोतु ।
[४४८] ७३४।२५ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः) =
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मरुतः)
तत्र इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधोर्वसिष्ठो जुषन्त ।
अमनस्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
(७१५) १०।६२।९ (वसुकर्णो वामुकः । विश्वे देवाः)
आप ओषधीर्वसिष्ठानि यज्ञिया ।
[४५८] ७३५।१० = (३८९) ६।१०।८
देवः सविता त्रायमाणः ।
[४६२] ७३५।१४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । विश्वे देवाः)
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ।
(आयुर्वेदः २२६६) ३।८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः ।
यूपाः, विश्वे देवा वा)
... रुद्रा वसवः सुनीया ।
(७१८) १०।६६।१२ (वसुकर्णो वामुकः । विश्वे देवाः)
—वसवः सुदानवः ।
दिश्याः पार्थिवास्तो गोजाता इत ये वसिष्ठायः ।
(१२११) १०।५३।५ (अग्निः सौवीकः । देवाः)
गोजाता ... ।
पार्थिवात् पार्थिवात् ... दिश्यात् ... ।
[४६३] ७३५।२५ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
देवानां ... समोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुहगायमथ ।
(७०५) १०।६५।१४ (वसुकर्णो वामुकः । विश्वे देवाः)
देवाः ... समोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
(७०६) १०।६५।१५ = १०।६६।१५
(वसुकर्णो वामुकः । विश्वे देवाः)
देवान् ... । ते नो रासन्तामुहगायमथ ।
[४६५] ७३६।२ जने च मित्रो यतति मुवाणः ।

- (अदितिः ० १८५) ३।५६।१ (गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः)
मित्रो जनान् यातयति मुवाणः ।
[४७७] ७३७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । विश्वे देवाः)
कदा न इन्द्र राय आ दणस्येः ।
(इन्द्रः ९९०) ८।९७।१५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
[४८४] ७३९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । विश्वे देवाः)
ते हि यज्ञेषु यज्ञियाम ऊमाः ।
(मरुतः ४१४) १०।७७।८ (स्यूमरार्धमर्भागवः । मरुतः)
[४८७] ७३९।७ = ७।४०।७ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
न रोदसी आमिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
(अदितिः ० ५६०) ७।६२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । सूर्यः)
ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं ॥
[४८८] ७।४०।१ यदय देवः सविता सुवाति ।
(२६२) ५।४२।३ चन्द्राण देवः सविता सुवाति ॥
[४९१] ७।४०।४ सुहवा देव्यदितिरनर्वा ।
(सोमः १२२२) २।४०।६ (गृत्समदः शौनकः । अदितिः)
अवतु देव्य ... ।
[४९२] ७।४०।५ विष्णोरेवस्य प्रभृये हविर्भिः ।
(मरुतः २०९) २।३४।११ विष्णोरेवस्य प्रभृयां हवामहे ।
[४९५] ७।४२।१ प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।
(अदितिः ० ४३) ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त ।
[४९७] ७।४२।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । विश्वे देवाः)
समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ।
(अदितिः ० ३०६) ७।६१।६ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)
समु वो यज्ञं महयं ... ।
[४९९] ७।४२।५ इमं नो अग्ने अश्वरं जुषस्व ।
(अग्निः ७९७) ५।४।८ (वसुधूत अभियः । अग्निः)
अस्माकमग्ने अश्वरं जुषस्व ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [५१०] ८।२५।११ (विश्वमना वैयश्वः । विश्वे देवाः)
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सन्धेमहि ।

- (अग्निः ४०२) २।८।३ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
अरिष्यन्तोः सन्धेमहि ध्याम ।

- [५१४] ८।२७।३ (मनुवैवस्वतः । विश्वे देवाः)
मरुसु विश्वभानुषु ।
(अग्निः २४५०) ४।१।३ (वामदेवो गौतमः । अग्नि-
वैरुणश्च)
- [५१५] ८।२७।४ यन्ता नोऽवृकं ऋदिः ।
(उषाः १८) १।४८।१५ (प्ररुणः काण्वः । उषाः)
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु ऋदिः ।
- [५१६] ८।२७।१० देवासो अस्याप्यम् ।
(५०) १।१०५।१३ देवेष्वस्याप्यम् ।
- [५१७] ८।२७।१३ देवदेवं वोऽवसे देवदेवं... देवदेवं हुवेम ।
(इन्द्रः ३०६) ८।१२।१९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
देवदेवं वोऽवसे इन्द्रम् ।
- [५१८] ८।२७।१३ देवदेवं हुवेम वाजसातये ।
(इन्द्रः १७४१) ५।३५।६ (प्रभूवसुराजिरसः । इन्द्रः)
पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये ।
- [५१९] ८।२७।१६ प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो
वराय दासति ।
(मरुतः ३८४) ७।५९।२ (मैत्रावरुणर्वैसिष्ठः । मरुतः)
- [५२०] ८।२७।१६ प्र प्रजामिर्जायते धर्मणस्पति ।
६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । यावापृथिवी)
- [५२१] ८।२७।१६ अरिष्टः सर्वं पृथते ।
१।४१।२ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)
- [५२२] ८।२७।१७ अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो ।
(अग्निः २४६) १।७९।३ (गोतमो राहुगणः । अग्निः)
अर्यमा ... परिजमा ।
- [५२३] ८।२७।१९ यदद्य सूर्य उद्यति ।
(अदितिः ० ४४) ७।६६।४ यदद्य सूर उदिते ।
- [५२४] ८।२७।२१ यदद्य सूर उदिते ।
(अदितिः ० ४४) ७।६६।४ (मैत्रावरुणर्वैसिष्ठः । आदित्याः)
- [५२५] ८।२८।२ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)
- [५२६] ८।२८।५ सप्तो अग्नि श्रियो धिरे ।
(अग्निः ४०१) २।८।५ (गृत्समदः शौनकः । अग्निः)
विश्वो अग्नि श्रियो द्ये ।
- [५२७] ८।२९।२ अन्तर्देवेषु मेधिरः ।

- (५१) १।१०५।१४ देवो देवेषु मेधिरः ।
- [५२८] ८।२९।९ सप्तजा सर्पिरासुती ।
(अदितिः ० २०३) १।१३६।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः ।
मित्रावरुणौ)
- वृतासुती ।
- [५२९] ८।३०।१ अर्मको देवासो न कुमारकः ।
(इन्द्रः २३१७) ८।६३।१५ (प्रियमेध आजिरसः ।
इन्द्रः)
- अर्मको न कुमारकः ।
- [५३०] ८।३०।३ त उ नो अग्नि वोचत ।
(मरुतः १०७) ८।२०।२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)
तेना नो अग्नि वोचत ।
- [५३१] ८।३०।११ (प्रियमेध आजिरसः । [अर्धर्च] विश्वे देवाः,
[उत्तरार्धः] वरुणः)
विश्वे देवा अमत्सत । वत्सं संशिक्षरीरिव ।
(सोमः ११५) ९।१४।३ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
- विश्वे ... ।
(सोमः ४०१) ९।६१।१४ (अमर्हीशुराजिरसः । पवमानः
सोमः)
- वत्सं ... ।
- [५३२] ८।३१।२ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)
वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)
- [५३३] ८।३१।३ यूयमृतस्य रथ्यः ।
(अदितिः ० ५२) ७।६६।१२ (मैत्रावरुणर्वैसिष्ठः । आदित्यः)
- [५३४] ८।३१।४ वामं नो अस्त्वर्चमन् वामं वरुण शंस्यम् ।
(अदितिः ० ६८) ८।१८।२१ (इरिम्बिठिः काण्वः ।
आदित्याः)
- अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् ।
- [५३५] ८।३१।९ यूयं हि ष्टा सुदानवः ।
(अदितिः ० ९०८) १।१५।२ (मेधातिथिः काण्वः ।
[ऋतवः] मरुतः)
- (४०७) ६।५१।१५ (ऋजिष्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५६९] १०।३।१२ (कथं ऐलूषः । विश्वे देवाः)

ऋतस्य पथा नमसा विवासेत् ।

(अग्निः २८४) १।१२।८।२ (पञ्चदशैर्देवोदातिः ।

अग्निः)

... नमसा हविष्मता ।

[५७४] १०।३।१७ (कथं ऐलूषः । विश्वे देवाः)

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो आवापृथिवी निहतश्रुः ।

१०।८।१४ (विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा)

[५७५] १०।३।१८ नैतावदेना परो अन्यदस्ति ।

(इन्द्रः २५११) १०।२।१।२१ (ऐन्द्रो वसुक्तः । इन्द्रः)

अथ इदेना परो — ।

[५८१] १०।३।५।२ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

दिवस्पृथिव्योरथ आ वृणीमहे ।

... भद्रं सोमः ... ।

२।२६।२ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)

... भद्रं मनः ... । ब्रह्मणस्पतेरथ आ वृणीमहे ।

[५८२-९२] १०।३।५।२-२२ स्वस्वमग्निं समिधानमीमहे ।

[५८५] १०।३।५।६ आयुक्षातामग्निना तूतानि रथम् ।

(अश्विनौ १६३) १।१५।७।१ (दीर्घेनमा औचथ्यः ।

अश्विनौ)

... यातवे रथम् ।

[५८९] १०।३।५।१० इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये मगम् ।

(६३९) १०।६३।९ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)

अग्निं मित्रं ... ।

[५९०] १०।३।५।११ त आदित्या आ गता सर्वतातये ।

(५८) १।१०।६।२ (कुत्स आश्रितः । विश्वे देवाः)

[५९१] १०।३।५।१२ पथे लोकाय तमयाय जीवसे ।

३।५३।१८ (गायिनो विश्वामित्रः । रथाज्ञानि)

बलं लोकाय ... ।

[५९२] १०।३।५।१३ विश्वे अय मरुतो विश्व ऊती ।

(२८६) ५।४३।१० (भीमोऽग्निः । विश्वे देवाः)

विश्वे गन्त मरुतो ... ।

[५९३] १०।३।५।१३ विश्वे भो देवा अवसा गमन्तु ।

(२५) १।८९।५ (गोतमो राहुगणः । विश्वे देवाः)

... अवसा गमन्तिह ।

[५९३] १०।३।५।१४ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

यं देवामोऽवथ वाजसार्ता यं ।

(६७४) १०।६३।१४ (गयः प्लातः । विश्वे देवाः)

[५९४] १०।३।५।१५ आनाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

(अग्निः ७१) १।३६।४ (कृष्णो धारः । अग्निः)

देवासस्त्वा वरुणो ... ।

[५९४] १०।३।५।१ = (५०६) ७।४४।१

इन्द्रं ... आदित्यान् आवापृथिवी अपः स्वः ।

[५९५-६०५] १०।३।५।२-१२ तदेवानामवो अथा वृणीमहे ।

अहं होता न्यमीदं यमीयान् ।

[६०९] १०।५।२।२ (गान्भीकाऽग्निः । विश्वे देवाः)

(अग्निः ७६०) ५।१।६ (शुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः)

[६१०-११] १०।५।२।३-४ अथा (४मां) देवा इधिरे

हव्यवाहम् ।

(अग्निः ११६२) ७।१।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)

[६११] १०।५।२।५ अथेमा विश्वाः पृतना जयाति ।

(इन्द्रः २३५१) ८।९।७ (तिरश्चाराश्रितः, युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)

... जयासि ।

[६१२] १०।५।२।६ (सौन्भीकाऽग्निः । विश्वे देवाः)

त्रीणि क्षता त्री सहस्राण्यग्निं शिशवश्च देवा नव आसपर्यन् ।

औक्षन् वृतेरस्तृणन् बर्हिरेसा आद्विद्धोत्तरं न्यसाद्वयन्त ॥

(अग्निः ५०८) ३।९।९ (गायिनो विश्वामित्रः । अग्निः)

[६१८] १०।५।५ (वृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वे देवाः)

तनूषु विश्वा भुवना मि वेमिरे ।

(इन्द्रः १६१) ८।२।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्रे ह विश्वा— ।

[६२०] १०।५।३।७ स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।

(अग्निः ३६२) १।१८९।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।

अग्निः)

[६२३] १०।५।३।३ वितृणां च मन्मभिः ।

८।४१।२ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)

- [६२४] १०।५७।४ ज्योक् च सूर्य इवो ।
 (आयुर्वेदः ८६८) १।२३।२१ (मेघातिथिः काण्वः ।
 आपः)
 (आयुर्वेदः ८८५) १०।९।७ (त्रिशीरास्त्वष्ट्रः, सिन्धुद्वीप
 आम्बरीषो वा । आपः)
 [६३७-३८] १०।६१।१०-११ (नामानेदिष्ठो मानवः । विश्वे देवाः)
 मक्षू कनायाः सख्यं नवगवाः (११ नवीयः) ।
 [६३८] १०।६१।११ श्रुचि यत् ते रेक्ण आयजन्त सबहु-
 चायाः पय उज्जियायाः ।
 (७१) १।१२।१५ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः ।
 विश्वे देवा इन्द्रो वा)
 [६४८] १०।६१।२२ रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरिन् ।
 (इन्द्रः ७९६) १।५४।११ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [६६०] १०।६२।७ व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।
 (सोमः ११६४) १०।२५।५ (ऐन्द्रो विमदः, प्राजा-
 पत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । सोमः)
 [६६०] १०।६२।७ श्रवो देवेष्वकृत ।
 (इन्द्रः ६१२) ८।६५।१२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 [६६४] १०।६३।४ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)
 देवासो अमृतस्वमानशुः ।
 (अग्निः १६२३) १०।५३।१० (देवाः । अग्निः)
 येन देवासो — ।
 [६६८] १०।६३।८ विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
 (३८४) ६।५०।७ विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।
 [६६९] १०।६३।९ = (५८९) १०।३५।१०
 अग्निं (१० इन्द्रं) मित्रं वरुणं सातये भगं ।
 [६७३] १०।६३।१३ अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते ।
 १।४१।२ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)
 अरिष्टः सर्व एधते ।
 [६७३] १०।६३।१३ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पति ।
 ६।७०।३ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । व्यावृथिवी)
 [६७४] १०।६३।१४ = (५९३) १०।३५।१४ यं देवासोऽवय
 वाजसातौ यं ।
 [६७५] १०।६३।१७ = १०।६४।१७ (गयः स्नातः । विश्वे
 देवाः)
 एवा स्नातेः सुनुस्वीवृद्धो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।

- ईशानासो नरो अमर्त्येनास्त्वावि जनो दिव्यो गयेन ।
 [६७५] १०।६३।१७ विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।
 (३९७) ६।५१।५ विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।
 [६७९] १०।६४।४ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)
 कविः ... । अहिः शृणोतु बुध्यो हवीमनि ।
 (७३२) १०।९२।१२ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
 कविरहिः ... ।
 [६८१] १०।६४।७ प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधि ।
 (२४५) ५।४१।६ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
 ... रथयुजं कृणुध्वं । ... पुरंधीः ।
 [६८५] १०।६४।१० त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।
 (३९०) ६।५०।१३ त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।
 [६८६] १०।६४।११ रणवः संदृष्टौ पितुर्मौ इव क्षयः ।
 (अग्निः ३३२) १।१४४।७ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 [६९०] १०।६४।१५ (गयः स्नातः । विश्वे देवाः)
 प्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहद् ।
 (७५८) १०।१००।८ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
 [६९२] १०।६५।२ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 अभिरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 (अग्निः ७१) १।३६।४ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 देवासस्त्वा वरुणो ... ।
 [६९२] १०।६५।१ आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् ।
 (७१०) १०।६६।४ इन्द्राविष्णू मरुतः ... ।
 [६९८] १०।६५।७ दिवक्षो अभिजिह्वा ऋतावृधः ।
 (अग्निः ९९) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 सुदानवोऽभिजिह्वा ऋतावृधः ।
 [७००] १०।६५।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)
 देवा आदिष्यो अदितिं हवामहे ।
 (७१०) १०।६६।४ देवा आदिष्यो अवसे हवामहे ।
 [७०५] १०।६५।१४ = (४६३) ७।३५।१५
 मनोर्यजन्ना अमृता ऋतज्ञाः ।
 [७०६] १०।६५।१५ = १०।६६।१५ (वसुकर्णो वासुकः ।
 विश्वे देवाः)
 देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनानि प्रतस्थुः ।
 ते नो रासन्तामुरगावमथ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
 [७०६] १०।६५।१५ = (४६३) ७।३५।१५
 ते नो रासन्ता० ... सदा नः ।

- [७०३] १०६६३ = (६५) ११०७२
आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु (२ यमत) ।
- [७१०] १०६६४ = (६९२) १०६५१ (वसुकर्णो वासुकः ।
विश्वे देवाः)
- [७१०] १०६६४ = (७००) १०६५२
- [७१५] १०६६९ आप ओषधीर्वनितानि याज्ञया ।
(४४८) ७३४२५ आप ओषधीर्वनितो जुषन्त ।
(मरुतः ३६९) ७५६२५ (मित्रावरुणैर्वसिष्ठः । मरुतः)
- [७१८] १०६६१२ आदित्या रुद्रा वसवः सुदानवः ।
(२२२) ३८८८ आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।
- [७१९] १०६६१३ देव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ।
(अग्निः १९४८) २३३७ (गृत्समदः शौनकः । [आग्नी-
सूक्त] देव्या होतारो प्रचेतसौ)
... प्रथमा विवुष्टरः ।
- [७१९] १०६६१३ ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।
(उषा ७४) ११२४३ (कक्षीवान् देवैर्नमस औक्षिजः ।
उषाः)
- [७२६] १०९२३ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः)
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ७१) १३६४ (कण्वो घोरः । अग्निः)
देवासस्त्वा वरुणो ... ।
- [७२७] १०९२३ सुरो इक्षीके वृषणम् पौस्वे ।
(इन्द्रः ३१५१) ४४१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रा-
वरुणौ)
- [७२८] १०९२३ = (६७९) १०६४४
- [७३६] १०९३१ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः)
महि यावापृथिवी भूतसुर्वी ।
(इन्द्रः ३१६४) ६१८४ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
इन्द्रावरुणौ)
महित्वा यौष पृथिवी भूतसुर्वी ।
- [७३९] १०९३४ ते या राजानो अमृतस्य मन्त्राः ।
(९२) ११२२११ श्रोता राजानो अमृतस्य ... ।
- [७३९] १०९३४ अर्यमा मित्रो वरुणः परिउमा ।
(अग्निः २४६) ११७९३ (गौतमो राहुगणः । अग्निः)
- [७४१] १०९३६ मरुः स राव पृथ्वे ।
(अग्निः ३५३) ११४९१ (दीर्घतमा औषध्यः । अग्निः)

- [७४६] १०९३११ सदा पाद्मभिश्चये ।
(इन्द्रः १००८) ११२९९ (पद्मच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
सदा पाद्मभिश्चये ।
- [७५०-६६] १०१००१-११ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः)
आ सर्वतातिमदिति वृणोमहे ।
- [७५८] १०१००८ = (६९०) १०६४१५
मावा यत्र मधुपुदुष्यते बृहद् ।
- [७५९] १०१००९ विश्वा द्वेषांसि सजुतयुयोत ।
(१५२) २१९९२ यूयं द्वेषांसि ... ।
- [७६३] १०१०११ (दुधः सोम्यः । विश्वे देवाः, ऋत्विजो वा)
दधिक्रामांसिमुषसं च देवीम् ।
(१६९) ३१०५५ (गायी कौशिकः । विश्वे देवाः)
- [७७१] १०१०१९ सा नो दुषीवशवसेव गत्यौ सहस्रवारा
पयसा मही गौः ।
(इन्द्रः ३१५०) ४४१५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)
- [७८३] १०११४२ = (१७४) ३५४५
परेषु या गुह्येषु अतेषु ।
- [७९२] १०१२६१ (शैन्वः कृत्स्नवर्हिषो, वामदेव्योऽ-
हौमुग्वा । विश्वे देवाः)
न तमहो न दुरितं ।
२१२३५ (गृत्समदः शौनकः । ऋत्विजः)
- [७९३] १०१२६२ वरुणमित्रायेमन् ।
(अदितिः ० २७४) ५६७१ (यज्ञत आग्नेयः । मित्रावरुणौ)
- [७९४-९८] १०१२६३-७ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
(अग्निः ३१) ११२६३ (शुनः ३५ आजीगर्तिः । अग्निः)
(अदितिः ० ५६) ८१८३ (हरिश्मिन्तिः काण्वः । आदित्याः)
- [७९८] १०१२६७ वामं यच्चत्सु सप्रिय आदित्यासो यदीमहे ।
(अदितिः ० ५६) ८१८३ (हरिश्मिन्तिः काण्वः । आदित्याः)
... यदीमहे ।
- [७९९] १०१२६८ यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि
पिताममुज्जता यजन्ताः ।
एवो वसन्मुज्जता वयं हः प्र तार्यसे प्रतरं न आयुः ॥
(अग्निः ७३९) ४१२१६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
- [८०७] १०१२८८ इन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ।
(इन्द्रः ८५४) ११०४८ (कृत्स्न आग्रिसः । इन्द्रः)
मा नो वधीन्द्र मा परा दाः ।

- [८१८] १०।१४१।३ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
 अग्निं गोमिह्वामहे ।
 (अग्निः १२१९) ८।११।६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
 [८१९] १०।१४१।४ इन्द्रवायू वृहस्पतिं सुहवेह ।
 (६) १।१४।३ (मेघातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)
 ... मित्राग्निं ।
 [८२१] १०।१४१।६ ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
 (इन्द्रः ६१) १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
 ब्रह्म .. यज्ञं च वर्धय ।
 [८२७] १०।१५७।५ (भुवन आप्ल्यः, साधनो वा भौमः ।
 विश्वे देवाः)
 आदित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
 (मरुतः १९१) १।१६८।९ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।
 मरुतः)
 [८२८] १०।१६५।१ (नैऋतः कपोतः । विश्वे देवाः)
 शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।
 (सोमः १२२३) ६।७४।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।
 सौमारद्वौ)
 शं नो भूतं द्विपदे— ।
 [८३४-३६] १०।१८१।१-३ (१ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो
 भारद्वाजः, ३ धर्मः सौर्यः । विश्वे देवाः)
 अतुष्टतानात् सवितुश्च विष्णोः ।

- [१२०२] १।१६४।५० (दीर्घतमा औचथ्यः । साध्याः)=
 १०।९०।१६ (नारायणः । पुरुषः)
 यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
 ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः ॥
 [१२११] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
 गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
 (४६२) ७।३५।१४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)
 [१२११] १०।५३।५ (सौचीकोऽग्निः । देवाः)
 पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वंहसन् ।
 (इन्द्रः ३३००) ७।१०४।२३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।
 पृथिव्यन्तरिक्षे [उत्तरार्धः])
 [१२१३-१४] १०।७२।२-३ असतः सद्जायत ।
 [१२२१] १०।८५।१७ (सूर्यासावित्री ऋषिका । देवाः)
 मित्राय वरुणाय च ।
 (सोमः ९३९) ९।१००।५ (रेभसून् काश्यपौ ।
 पवमानः सोमः)
 [१२६४] १।१३६।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । लिङ्गोक्ताः)
 मित्राय वोचं वरुणाय मीहुषे सुमृळीकाय मीहुषे ।
 (इन्द्रः १००२) १।१२९।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः ।
 इन्द्रः)
 मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ।

दैवतसंहितायां
विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः
(१) ऋग्वेदमन्त्राणाम् ।

अंशः
अकतुः
अक्षरम्
अग्निः
अग्नि-जिह्वा
अग्नि-दीप्तयः
अग्नी-पर्जन्यौ
अग्निवायुआदित्यपदाधानवेत्तारः
अग्निवायुसूर्याः
अग्नी-बोमौ
अन्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा
उपासकः
अग्निराः-रसः
अज एकपात्
अतिथिः
अत्रयः
अथर्वा
आदितिः
अग्निः
अग्नी (पत्नी-यजमानौ)
अध्वरः
अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्)
अनुमतिः
अन्तरिक्षम्
अपां नपात्
अप्याः
अभिषाचः
अर्णवः
अर्यमा
अर्वन्तः
अश्वः-श्वाः

अश्विना
असुरः
अ (स्तृ)-स्तारः
अहः
अहिर्बुध्न्यः
अहोरात्रे
आत्मज्ञान- अज्ञाने
आत्रेयः प्रतिक्षत्रः
आदित्यः
आदित्य सत्यं दुर्ज्ञेयम्
आदित्याः
आपः
इन्द्रवः
इन्द्रः
इन्द्राग्नी
इन्द्रापर्यती
इन्द्रापूपणी
इन्द्रामरुतो
इन्द्रावरुणौ
इन्द्रवायू
इन्द्राविष्णू
इन्द्रा-सोमा
इन्द्राणी
इळा
इळाः (भूमिस्थाना देवताः)
उक्षणः पशु
उर्वशी
उल्लुका
उषाः
उषासानक्तौ
ऋतवः
ऋत्विजः

ऋभवः
ऋभुक्षाः-क्षणः
ऋषयः (पशु)
ऋषयः (सप्त)
ओषधयः- धीः
कक्रुदः
कण्वः
कपोतः
कृशातुः
क्षत्रस्य पतिः
क्षयः
गायत्रम् (साम)
गिरयः
गुह्यः
गौः
गोजाताः
गोत्राशा (तान्वदिदिक्षा)
गोम पेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी
आहुतिः वा
गो- सवितृगौ (मेघवायू वा)
माः (देवपत्न्यः, पत्नीः)
प्रावाणः
घर्मः
घर्मा
चक्रम्
चन्द्रमाः
जगत (साम)
जनाः पशु
ज (निः)-नयः
जिह्वा
जीवात्म-परमात्मानौ

तत्त्वविद्
तनयितुः
तन्यतुः
तार्क्ष्यः
तिष्ठः
त्वष्टा
दक्षः
दधिक्राः
दिभ्याः
दिशः (मेघाः वा)
दीधितिः
देवः
देवगणः—संघः वा
देवाः
देवानां देवाः
देवो देवः
देवपत्नीः [पत्नीः, माः]
देवी
देवीः तिस्र
देवीः षट्
देहात्मानौ (देहात्मजीवात्मानौ-सायनाः)
द्यौः
द्यावापृथिवी [रोदसी]
द्युपृथिवी-अन्तरिक्षम् [तिस्रः निर्ऋतिः]
धर्ता
धर्मः
धाता
धिषणा
धीः
धियः
धेनुः
धेनवः
नक्षत्रम्
नक्षत्राणि
नद्यः
नमः
नरः
नराशंसः
नाभानेदिष्ठः

निर्ऋतिः
निशाः
नौः (दैवी)
पृतयः, सत्यस्य
पत्नीः [माः, देवपत्नीः]
पन्थाः
परमात्मा (आदित्यः वा)
परमेश्वरस्य अविषयत्वम्
पर्जन्यवाता
पर्वतः—तासः
पशुः
पार्थिवाः
पितरः
पुरन्धिः
पूषा
पृथिवी
पृश्निः
प्रजापतिः
प्रदिशः
प्रमतिः (अग्नेः)
प्रवाचनम् (देवानाम्)
प्रश्नाः
प्रश्नप्रतिवचनानि
बर्हिः
बृहत्
बृहदुक्थः
बृहस्पतिः
ब्रह्मा
ब्रह्मा
ब्रह्मजाया
ब्रह्मणस्पतिः
भगः
भवित्रम्
भूतानि
भूमिः
भृगवः
भदः
मनः (मन आवर्तनम्)
मनीषा
मनीषिणः

मनुष्याः
मन्म
मरुतः
महौ
माता
मित्रः
मित्रावरुणा
मेघः
यजमानब्रह्माणौ
यजुः
यज्ञः
यमः
रथः
रथन्तरं साम
रश्मयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा)
राका
राजानः
रातिषाचः
रायः
रुद्रः—द्राः
रुद्रियः
रोदसी (एकवचनम्) (रुद्रस्य पत्नी)
रोदसी (द्विवचनम्) (द्यावापृथिवी)
वृत्सः
वनस्पतिः
वना
वनिनः
वरुणः
वसवः
वाक्
वाजः—जाः
वाजी [बृहदुक्थपुत्रः]
वाजिनः [अग्नि-वायु-सूर्याः]
वातः
वातापर्जन्या
वायुः
वास्तोष्पतिः
विद्युत्
विद्वान् पथः
विधाता

विट् (श्) सर्वा	सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य)	मृत्युः
विश्वे देवाः	समुद्रः	मूर्ध्निमासा
विष्णुः	सरमा	सोमः
वृकः (अरुणः)	सरयुः	सोमनामयः
वृषस्तुभः	सरस्वती (नदी)	सोमगर्भचक्रभ्रमणानि
वृष्टिः	सरस्वती (वाक्)	स्तोता
वेदिः	सविता	स्तोमः (देवस्तुतिः)
व्रजिनीः	साम	स्वः
व्रतानि	मिनीवाली	रवधवान् (प्रश्नोत्तराणि)
शंसः	सिन्धुः--न्धवः	स्वरूपा मिलयः
शमी (गोत्वेन निरूपिता)	सुकृतानि, सुकृतम् (सुकृता सुकृतानि)	स्वस्तिः
शम्भुः	सुतम्बरः (क्रापिः)	हविःकृताः
शरीरम्	सुपर्णः	हस्ती
वार्थणावन्तः	सुमतिः, आदित्यानाम्	होता
स्ववत्सरः	मुदवानि देवानाम्	होता देव्या
संसारः	सृष्ट्या	

विश्वे-देवाऽन्तर्गतानां देवतानां गुणबोधकपदानि ।

अंशः ५, ४२, ५; २६४

अक्षुः १०, ६४, ३; ६७८ । १०, १४, ९; १२६९

अक्षरम् १, १६४, २४; १२२ । ३, ५५, १; १९२

अर्कम् १२२

गायत्रम् १२२

मैत्रुमम् १२२

महत् १९२

वाक् १२२

अभिः १, १४, १-१२; ४-१५ । १०५, ४, १३-१४; ४१, ५०-

५१ । १०६, १; ५७ । १०७, ३; ६६ । १२२, ३, ५;

८४, ८६ । १३९, १; ९७ । १६४, १, १२; ९९, १०९ ।

१८६, ३; १४२ । ३, २०, १, ५; १६८-६९ । ५४, १,

३, १९, २१-२२; १७०, १७२, १८८, १९०-९१ । ५५,

२-१०; १९३-२०१ । ८, ८; २२२ । ५७, १, ४-६; २२३,

२२६-२८ । ४, ५५, ४, ७-८; २३२, २३५-३६ । ५, ४१, १,

४, १०; २४३, २४९ । ४२, ३; २६२ । ५, ४३, ६, १०,

१३-१५, २८२, २८६, २८९-९१ । ४४, ३-५, ८, १४-१५;

२९६-९८, ३०१, ३०७-८ । ४५, ४; ३१२ । ४६, २, ४,

३२१, ३२३ । ४७, ७; ३४४ । ४८, १, ४-५; ३३५, ३३८-

३९ । ४९, ३; ३४४ । ५०, ४; ३४८ । ५१, १-३, ८-१०,

१३-१४; ३५०, ३५३-५५, ३५८-५९ । ६, २१, ९; ३६१ ।

६, ४२, १-२, ९; ३६३-६४, ३७१ । ५०, १, ९; ३७८, ३८६ ।

५१, ५, १०, १३; ३९५, ४०२, ४०५ । ५२, ५-६, १२, १७;

४१३-१४, ४२०, ४२५ । ७, ३४, ८, १४, २५; ४३३, ४३९,

४४८ । ३५, ४; ४५२ । ३६, १; ४६४ । ३९, १, ४७;

४८१, ४८४-८७ । ४०, ३; ४९० । ४१, १; ४९४ । ४२, २-६;

४९६-५०० । ४३, २-३, ५, ५०२-३, ५०५ । ४४, १; ५०६ ।

८, २७, १-३; ५१२-१४ । ५८, २-३; ५३५-३६ । २९, २;

५४० । ८, ५८, २; ५५६ । ६९, ११; ५५८ । १०,

३१, १०; ५७७ । ३५, १, ३-४, ३; ५८०, ५८२-९२ ।

३६, ६, १२; ५९९, ६०५ । ५२, ३-४, ६; ६१०-११,

६१३ । ५६, १; ६१४ । ५७, २; ६२२ । ६१, २, १४,

१७, २०-२१; ६३५, ६४०, ६४३, ६४६-४७ । ६३, ९;

६६९ । ६४, ३-४, ८; ६७८ ७९, ६८३ । ६५, १; ६९२ ।

६६, ४, १३; ७१०, ७१९ । १०, ९२, १-४, ११, १४;

७२१-२४, ७३१, ७३४ । १००, ६; ७५६ । १०१, १; ७६३ ।

१०९, १-२; ७७५-७८ । ११४, ४; ७८५ । १२६, ५, ८;

७९६, ७९९ । १२८, १-२, ६; ८००-१, ८०५ । १४१, १,

३, ६; ८१६, ८१८, ८२१ । ८६, ५, २; ८२९ । १८१, २;

८३५ । १०, ९८, ८-१२; १२२९-१२३३ । १, १३६, ६-७;

१२६४-६५ ।

अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अक्तोः अतिथिः	७२१	अरिष्टगातुः	२९६	कृच्छ्रा चरन्	६११
अगोह्यः	६७८	अरुषः	३६४	केतुः	१९३
अजरः	२९६	अवमः	४१	केतुः अध्वरस्य	२२२
अजस्रपाः	७२२	अश्वः अग्नेः-		केतुः यजतः	७२१
अजस्रः	१७०	अरुषाः	४२६	केतुः यज्ञस्य	३६४
अतिथिः	४९८	रोहितः	४९६	क्रिविः	२९७
अतिथिः अक्तोः	७२१	वीरवाहाः	४२६	गोः निषिधं अन्तः चरन्	१९९
अतिथिः प्रेष्ठः	१४१	हरितः	४२६	गोपाः	२०१, ५३६, ८०५
अदब्धः	८०५	असिन्वन्	४८६	माः वसानः	२८९
अद्वस्तकृतुः	३६४	आक्षित् पूर्वास्तु	१९६	घृतघृष्टः	९९
अधास्तु मन्द्रः	६४६	आततः तन्तुः देवेषु	६२२	घृतेन आहुतः	५२२
अधिक्षित्, अभयानां विशाम्	७३४	आश्वत्तमाः	२४३	चतुरनीकः	३३२
अध्यक्षः	८००	आहुतः	६२२	चरन् अन्वग्रम्	१९८
अध्वक्	६४०	आहुतः घृतेन	५९९	चरन् बहुकृच्छ्रा	६११
अध्वरस्य केतुः	२२२	इध्मं सनिता	६३५	चादः	७५६
अनीकैः (युक्तः) दिव्यैः दम्येभिः	१७०	इन्द्रवान्	५८०	चाद वसानः	३३९
अनूरुत्, अपरा	१९६	इन्द्रस्य सुकृतम्	७५६	चिकित्वान् दैन्यं जनम्	४२०
अन्तः चरन्, गोः निषिधम्	१९९	इवस्पतिः	२३२	अरिता	७५६
अन्तः चरन्, महान् रोचनेन	२००	ईध्वः	१७०, ३६४	अभूरुत् हरिणीषु	७२१
अन्तमः	१९९, ७५६	ईशे महः सौभगस्य	२३६	जातः शम्भ्यां पित्रोः	५७७
अन्तर्मातिः	१९९	ईशे वसव्यस्य	२३६	जातवेदाः	२२८, २८६, ६४०
अन्वग्रं चरन्	१९८	उग्रः	७७५	जीवः	२९८
अप-म्भुक्तः	६११	उदक्तः	५३६	ज्योतिरनीकः	४९२
अपरा अनूरुत्	१९६	उपदिदः	६३५	तन्नपात्	७२२
अपाच्याः	५३६	उषसः पुरोहितः	७२२	तन्तुः देवेषु आततः	६२२
अपां नपात्	८५	ऋजुगाथः	२९८	तपः	७७५
अबन्धनः	१९७	ऋतं महत्	७१०	तुर्वणिः शस्त्रिभिः	१४२
अभीशवः अग्नेः-	२९७	ऋतधीतिः	४०२	तृतीयः भ्राता (आदित्यस्य)	२९
ऋतावृधः	२९७	ऋतस्य होता	६४०	त्रितः	२४३
यम्यः	२९७	ऋतावान्	४८७	त्रिधातु श्रृंगः	२८९
सर्वशासाः	२९७	एकः	१९७	त्रिधृत्	६११
सुयन्तवः	२९७	एकः एव	५५६	दधानः प्रिया अमृता धामानि	२०१
सुयुजः	२९७	ओमभिः विश्वेभिः हुवानः	२८९	दस्मः	३४२
अमृघः	२८९	ओषधीः वसानः	२८९	दिवः शिशुः	३६४
अरतिः	६४६	कण्वहोता	२४३	दिवः सजोषाः	२४३
अरतिः युवत्योः	३६४	कविः	६७९, ७५६	दिव्यः	२४३
अरि यतन्	३३९	कवीनां कवितमः	२६२	दूतः	४१, २००
				दूतः देवानाम्	१८८

१८ दै. (विश्वे देवाः)

देवः	१५, ५१	प्रेष्ठः	४३९	वर्षेधि विभ्रान् नः अभिविचष्टे	२००
देवानां कृतः	१८८	प्रेष्ठः आतिथिः	१४१	वयाकिनं (मोमं) सञ्जर्जराणः	२९८
देवेन्द्रः	६७८	बर्हिः अनु प्रगमर्गणः	२९६	वयोधाः	२८९
देव्यं सहः	७५६	बहुधा गमिन्द्रः	५५६	वराः (व० व०)	६२०
द्यौतनः	५४०	बुधः	१९८	वराणः	३३९
द्विगोदाः	३२३, ७३१	बृहद्विदः	२८९	वर्षमः (पाणी)	३३८
द्विबन्धुः	६४३	भगः	३३२	वयस्कृताः (व० व०)	५३५
द्विमाता	१९७, १९८	भद्रः	३४२	वमर्हा	८४
द्विवर्तनः	६४६	भर्गः इनाम यस्य	६४०	वगव्यस्य ईशे	२३६
धनदाः	८१६	भ्राता	३९७	वमानः श्रावधीः	२८९
धर्मासिः	२८९	भ्राता तृतीयः (आदित्यस्य)	९९	वमानः माः	२८९
धर्ता प्रजायाः	६३५	मतिः	१९९	वमानः चाम	३३९
धर्मन	७२२	मध्यमः	७८५	वधुः	२२८, ३५८
धामन	३३५	मध्ये द्विताः	२९६	वधुर्पतिः वसुनाम्	४१३
नराशंसः	६०	मनुर्हितः	१४	वसुनां वधुर्पतिः	४१३
पञ्चयाम	६११	मन्दः अधासु	६४६	वाङ्मः	१६८, ३४८
पत्नीवान्	५३५	मन्युं परेषा प्रतिनुदन्	८०५	वाजं सान्ता	६३५
परस्तान् शयुः	१९७	महाः सौभगस्य ईशे	२३६	वाजा	६०
पलितः	२००	महत् ऋतम्	७१०	विदथस्य साधनम्	७२२
पुत्रः पर्वः	५७७	महान् रोचनेन अन्तः चरन्	२००	विदथेषु मध्राः	१९८
पुरन्धिः	३६१	महं (वतु०)	३३५	विदथः	१७०
पुरस्तान्	५३६	माधरः	५१, ५४०, ७५६	विदुष्टः	५०, ५१
पुरुषा	१९५	यजतः केतुः	७२६	विप्रः	५, १२, ३५२
पुरुष प्रसूतः	१८८	यज्ञः	४१, ७५६	विभावभूः	७२१
पुरोहितः	५१२, ७१९	यज्ञस्य केतुः	३६४	विभावा	३७१, ६४६
पुरोहितः उवसः	७२०	यज्ञस्य प्रसाधनः	६००	विभूतः	१९५
पुर्वणीकः	४९७	यज्ञस्य रथः	७२१	विशस्पतिः	८१६
पूर्वः पुत्रः	५७७	यत्न आरम्भ	३३९	विशां अभयान् अधिक्षिन्	७३४
पूर्वासु आक्षिन्	१९६	यर्वायुत्	६३५	विशां विस्पतिः	७२१
प्रजायाः धर्ता	६३५	यष्टा	६४३	विशां होता	७२१
प्रतिनुदन् परेषा मन्युम्	८०५	यज्ञः	७२२	विस्पतिः विषाम्	७२१
प्रथमः	७१०	युवस्योः अरतिः	३६४	विश्वभोजः	२४३
प्रथमा पुरोहितः	७१९	युवा	२९६	विश्वानरः	१००
प्रयुतः	१९५	रथ्यः यज्ञस्य	७०१	विश्वो भुवनानि वेद	२०१
प्रसर्माणः बर्हिः अनु	२९६	रराणः	२८९	विश्वे (व० व०)	५९२
प्रसाधनः यज्ञस्य	६२२	राजा	१९५	विष्णुः	२०१
प्रसूतः	१८८	रोचनेन महान् अन्तः चरन्	२००	विष्णुः	२०१
प्रसूतः पुरुष	१८८	वक्त्रराजस्यः	४०२	विष्णुः	२९६
प्राचीनरस्मिः	५९९	वत्सः	१९७	वीरुष्टः	७७५
प्रियः	३३५	वनेषाट्	६४६	वृषभः	२८९

वृषा	२९६, ७२१	सत्पतिः	४०५	सुधितः	४९८
वैतरणः	६४३	सनिता इध्मम्	६३५	सुपर्णः	७८५
वैद्युतं तेजः	३३५	सनिता वाजम्	६३५	सुप्रीतः	४९८
वैद्युताग्निः	३३५	सन्त्यः	३५२	सुमनाः	१९१, ८१६
वैश्वानरः	३५८	सप्ततन्तुः	६११	सुशंसः	४१४
शक्तिः अग्नेः-		समानः	१९५	सुशेव्यः	२९०
मायिनी	३३५	समिधानः	४२५, ५८२-५९१, ६०५	सुस्वरुः	२९८
वृणाना	३३५	समिद्धः	१९४, ५०६, ५९२	सुहवः	४१४
शम्यां पित्रोः जातः	५७७	समिद्धः बहुधा	५५३	सूनुः सहस्रः	३६४, ३८६
शयुः परस्तात्	१९७	सम्राट् विदथेषु	१९८	सौभागस्य ईशे	२३६
शास्तिभिः तुर्वणिः	१४२	सर्वताता	१८८	स्थिरः	६४३
शिशुः	२९६	सविता	३३९	स्वक्षत्रः	३३५
शिशुः दिवः	३६४	सहः दैव्यम्	७५६	स्वयशः	३२५
शुष्कासु शोचन्	७२१	सहस्रः सूनुः	३६४, ३८६	हरिणीषु जर्मुर्नत्	७२१
शेवृधः	६४६	सहसावन्	५०५	हव्यवाट्	६१०, ६११
शोचन् शुष्कासु	७२१	सहस्यः	५००	हव्याट्	४३९
शोचिष्केशः	२४९	सहोभरिः	२९६	हितः विस्तुहा मध्ये	२९६
श्रेष्ठवर्चाः	४०२	साधनं विदथस्य	७२२	हुवानः	२८६
सक्षणः	२४३	सीदन् योनि आ	५४०	हुवानः विश्वेभिः ओमाभिः	२८९
सचा	३३८	सुकृतं इन्द्रस्य	७५६	होता १२, १४, ५१, १९८, २९६, ३७१,	
सजोषाः	१४२, २४३	सुक्षत्रः	३६३, ४०२	६१३, ६४०, ७७६	
सज्जर्भुराणः सुतेष्टुभं वयाकिनम्	२९८	सुजिह्वः	१०	होता विश्वाम्	७२१
सत्तः	५०, ५१	सुद्रविणः	६४७		

अग्निजिह्वा ३, ५७, ५, २२७

उरुची २२७

मधुमती २५७

सुमेधा २२७

अग्निदीप्तयः ३, ५७, ४, २२६

ऊर्ध्वाः २२६

दर्शता २२६

भूरिवाराः २२६

यजत्राः २२६

अग्नीपर्जन्यौ ६, ५२, १६, ४२४

अन्यः इलां जनयत् [अग्निः] ४२४

अन्यः गर्भं जनयत् [पर्जन्यः] ४२४

सुहवा ४२४

अग्नि-वायु-आदित्यपदाधानवेत्तारः १, १६४, २३, १२१

(सवनत्रय-छन्दस्त्रय-विधानं वा ।)

गायत्रे अग्नि गायत्रम्-अग्निपदम् ।

त्रैष्टुभात् त्रैष्टुभं पदम्-वायुपदम् ।

जगति आहितं जगत्-आदित्यपदम् ।

अग्निवायुसूर्याः ३, ५६, ८, २२१ । १०, ६६, १०, ७१६ ।

१०, ११४, २, ७८३

इषिराः २२१

ऋतावानः २२१

दूळभासः २२१

निर्ऋतिः तिस्रः ७८३

वाजिनः ७१६

अग्नीषोमौ १०, ६६, ७, ७१३

पुरुप्रशस्ता वृषणा ७१३
 अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा उपासकः । १, १६४,
 १८; ११६
 कवीयमानः ११६
 अक्षिराः-रसः ५, ५५, ५-८; ३१३-१६ । ७, ४२, १, ४९५ ।
 १०, ६१, १०; ६३६ । १०, ६२, १-६; ६५४-६५९ ।
 १०, ९३, ३५; ७३५
 अग्नेः सूनवः ६५८
 अग्नेः परि अक्षिरे ६५९
 अच्युताः ६३६
 अदक्षिणासः ६३६
 ऋतं वदन्तः ६३६
 ऋषयः ६५८
 गम्भीरवेपसः ६५८
 अनुवा पूर्वः ७३५
 अक्षिरे अग्नेः परि ६५९
 द्विर्हंसः ६३६
 नवगवाः ३१५, ६३६
 पितरः ६५४-६५७
 पूर्वः अनुवा ७३५

यज्ञेन दक्षिणया समक्ताः ६५४
 विरूपासः ६५८, ६५९
 विश्वे ३१६
 सन्नायः ३१४
 सुभ्यः ३१३
 मुमेषमः ६५४-६५७
 सूनवः अग्नेः ६५८
 अत्र एकपात् २, ३१, ६; १६३ । ६, ५०, १४, ३९१ ।
 ७, ३५, १३; ४६१ । १०, ६४, ४, ६७९ । १०, ६५, १३;
 ७०४ । ६६, ११; ७१७
 दिवः धर्ता ७०४
 धर्ता दिवः ७०४
 अतिथिः ५, ५०, ३; ३४७
 अत्रयः ८, ९९, १०; ५४८
 अर्बन्तः ५४८
 सहि साम मन्वत ५४८
 सूर्य रोचयन् ५४८
 अथर्वा १०, ९२, १०; ७३०
 प्रथमः ७३०

आग्निदेवताया उपमासूची ।

अकतुं न यत्नम् ७२२
 अग्निवत् ३५३-५५
 आग्निं न २४३
 पितृमन्तं क्षयं इव ३३८
 पर्वतस्य धारा इव २२८
 पिता इव ४१४
 प्रति परशोः इव ३३८
 आग्निवः शिशुं न २९०
 सुप्यतः शूरस्य इव १९९
 ऊर्ध्वं श्रेणिः न ६४६

पुरोहितं अक्षस्य निषते ।
 अग्ने आ याहि, मुते रण ।
 प्रमृष्टे प्र अग्नेः ।
 भरद्वाज्ये विश्वे रतने दधानि ।
 असन्धन्ती प्रमतिः ।
 अग्निः सुशंसः सुहवः ।
 अस्य तां रीतिम् (पश्यामि) ।
 सुशोभ्यं वासं नमसा मृजन्ति ।
 अन्तमस्य प्रतीक्षानं ददशो विश्वमायत् ।
 शिशुः मक्षू दन् ।

अदितिः १,८९,३,१०; २१,२८ । १०५,१९; ५६ । १०६,
१,७; ५७,६३ । १०७,२-३; ६५-६६ । २,२९,३; १५३,
३,५४,१८,२०; १८७,१८९ । ४,५५,१,३,७; २२९ ।
२३१,२३५ । ५,४२,१-२; २६०-२६१ । ४६,३,६;
३२२,३२५ । ४९,३; ३४२ । ५१,११,१४; ३५६,३५९ ।
६,५०,१; ३७८ । ५१,३-५,११; ३९५-२७,४०३ । ७,
३५,९; ४५७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८३,४९१ ।
८,२५,१०; ५०९ । २७,५; ५१६ । १०,३६,३; ५९६ ।
६३,५,१०,१७; ६६५,६७०,६७५ । ६४,५,१३; ६८०,
६८८ । ६५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३-४; ७०९-१० ।
९२,११,१४; ७३१,७३४ । १००,१-११; ७५१-६१ ।

अदितिर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनर्वा ४९१
उरुव्यचाः ३२५
दुवोयु ३९६
देवी २३५, ३५६, ३७८, ४८९, ४९१, ५०२, ५१६
परुखा २३१
मही ५१६
माता मित्रस्य ५९६
माता वरुणस्य ५९६
यज्ञिया १८७
सर्वतोतिः ७५१-७६१
सुप्रणीतिः ६७०
सुसार्मा ६७०
सुहृवा ४९१
अदितेः विभूतिमत्त्वं सकलजगदात्मत्वं वा २८

अदितिर्देवताया उपमासूची ।

सूनुं न माता २६१ प्रति मे स्तोमं जगृभ्यात् ।
अग्निः ७,३५,३; ४५१
अग्नी (पत्नीयजमानौ) ७,३९,१; ४८१ । ४२,१; ४९५

अग्नी देवताया उपमासूची ।

रथ्वा इव पन्थाम् ४८१ भेजाते अग्नी ऋतम् ।
अध्वरः ८,२७,३; ५१४
अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्) १,१६४,३७; १३५
निष्पः १३५

मनसा (युक्तः) १३५

संनद्धः १३५

अनुमतिः १०,१६७,३; ८३३

अन्तरिक्षम् ३,५४,१९; १८८ । ३,८,८; २२२ । ५,४२,
१६; २७४ । ७,३५,५; ४५३ । १०,६६,११; ७१७ ।
१२८,२; ८०१ । ५३,५; १२११

उरु १८८

उरुलोकः ८०१

रजः ७१७

अपां नपात् १,१२२,४; ८५ । १८६,५; १४४ । २,३१,
६; १६३ । ५,४१,१०; २४९ । ६,५०,१३; ३९० ।
५२,१४; ४२२ । ७,३४,१५, ४४० । ३५,१३; ४६१ ।
१०,९२,१३; ७३३

आशुहेमा १६३

गर्भः वृष्णः भूम्यस्य २४९

दातु ३९०

पप्रिः ३९०

पेक्षः ४६१

विश्वदेव्यः ७३३

वृष्णः भूम्यस्य गर्भः २४९

शिवः ४४०

सखा ४४०

अप्याः ७,३५,११; ४५२

अभिषाचः ७,३५,११; ४५९

अर्णवः १०,६६,११; ७१७

अर्थमा १,८९,३; २१ । २०,१-३,९; २९-३१,३७ ।
१०५,६; ४३ । १०७,३; ६६ । १८६,२; १४१ । ३,५४,
१८; १८७ । ४,५५,४,६; २३२,२३८ । ५,४१,२;
२४१ । ४६,५; ३२४ । ६,५०,१; ३७८ । ५१,३;
३९५ । ५२,११; ४१९ । ७,३५,२; ४५० । ३६,४;
४६७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८९,४९१ । ८,२७,
१७; ५२८ । २८,२-३; ५३५-३६ । ८३,२,४; ५६०,
५६२ । १०,३२,४; ५७१ । ३६,१; ५९४ । ६१,१७;
६४३ । ६४,५; ६८० । ६५,१,९; ६९२,७०० ।
९२,६; ७२६ । ९३,४; ७३९ । १२६,१-७; ७९२-९८
१४१,२; ८१७ । १,१३६,६; १२६४ ।

अयमा देवताया गुणबोधकपदानि ।

(मित्रावरुणाभ्यां सहितत्वेन बहुवचम् ।)

अतूर्तपन्थाः	६८०
अपबाधमानाः द्विषः	३०
अपाच्याः	५३६
अप्रमूराः	३०
अमृताः	३०
अमृतस्य मन्त्राः	७३९
गोपाः	५३६
वर्षणीनां राजा	७९७
युक्षः	१२६४
द्विषः अपबाधमानाः	३०
नेता	७९७
पुरुजातः	४५०
पुरुषः	६८०
प्रचेतसः	५६०
मन्त्राः	७३९
महः (षष्ठी)	४३
यक्षिणः	१८७
युजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा वर्षणीनाम्	७९७
वसवानाः	३०
वसः	३०
वृषासः	५६०
वाम्	३७
सजोषसः	१४१, ५२८
सप्तहोता	६८०
सरातयः	५२८
सकतुः	४६७
सुशेवः	३७८
स्मद्रातिषावः	५३५
अर्वन्तः	७, ३२, १२; ४६० । १०, ६४, ६; ६८१
मितद्वः	६८१
वाजिनः	६८१
विश्वे	६८१
हवनश्रुतः	६८१

उपमासूची ।

मेघसाती इव ६८१ त्मना सहस्रसः ।

अश्वः-श्याः १, १६४, २-३; १००-१०१ । १०, ११४, १०; ७९१

एकः १००

सप्त १०१

सप्तनामा १००

रथस्य धूर्यु युक्तासः ७९१

अश्विनौ १, ८९, ३-४; २१-२२ । १२२, ४-५; ८५-८६ ।
 १८६, १०; १४२ । २, ३१, ४; ६६१ । ३, २०, १, ५;
 १६८-६९ । ५४, १६; १८५ । ५७, २; २२४ । ५, २६,
 ९; २३९ । ४१, ३; २४२ । ४२, १८; २७६ । ४३, ८,
 १७; २८४, २९३ । ४६, २, ४; ३२१, ३२३ । ४९, १ ।
 ३४० । ५१, ८, ११; ३५३, ३५६ । ६, ४९, ५; ३६७ ।
 ५०, १०; ३८७ । ७, ३५, ४; ४५२ । ३९, ४; ४८४ ।
 ४०, ५; ४९२ । ४१, १; ४९४ । ४६, १; ५०६ । ८, २५,
 १०; ५०९ । २७, ८; ५१९ । २२, ८; ५४६ । ८३, ७;
 ५६५ । १०, ३५, ६; ५८५ । ३६, ६; ५९२ । ५२, २;
 ६०९ । ६१, ३-४, १५; ६२९-३०, ६४१ । ६४, ३; ६७८ ।
 ६५, १२; ७०३ । ६६, ५; ७७१ । ९२, १३; ७३३ ।
 ९३, ५-७, ७४०-४२ । १२८, ७; ८०६ । १८४, २; ८३८

अश्विनौ देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदन्धा	१८५
अपां वृषण्यसू	७४०
अमृता	२७६
अर्धिमन्ता	६४१
उमा	८०६
चारु ययोः नाम	१८५
दिशः नपाता	६३०
देवौ	७४१, ८३८
द्वन्ता हवनेषु तिग्मम्	६२९
द्रा	५४६
विष्ण्या	२२
नपाता दिशः	६३०
नरा	३४०, ३६७, ३८७
नाम ययोः चारु	१८५

नासत्या	३२१, ३६७, ३८७; ४८४; ५०९, ६४१
पती	१६१
पान्ता	८५
पितरा	१८५
पुरुभुजा	३४०
पुष्करस्रजा	८३८
बन्धुपृच्छा	१८५
मन्दू	६४१
मयोभुवा	२८४
येष्टा	२४२
रथः अश्विनोः—	
तूतुजिः	५८५
मनसा युजानः	३६७
विरुक्मान्	३६७
रयिदौ रयीणाम्	१८५
रयीणां रयिदौ	१८५
रराणा वृक्तबर्हिषे	६४१
रुद्रा	७४२
रौद्रौ	६४१
विप्रा	३८७
वृक्तबर्हिषे रराणा	६४१
वृषणा	२२४
वृषण्वसू अपाम्	७४०
व्यन्ता	८५
शुभस्पती	७४१
सरथा	२८४
सुहवा	७३३
सुहस्ता	२२४
हवनेषु द्रवन्ता	६२९
द्वितप्रयसा	६४१

अश्विनौ देवताया उपमासूची ।

धुरं आणिः न नाभिम् २८४ यातं अर्वाग् गन्तं निधिम् ।

दूतः न २८४ शान्तमा गीः गन्तु हुवध्वै ।

प्रवासा इव ५४६ प्र वसतः ।

मनः न ६२९ येषु हवनेषु तिगमम् ।

ववन्वासा न ६३० इषं अस्मृतधू ।

असुरः ५, ४१, ३; २४२ । १०, ५६, ६; ६१९

दिवः २४२

स्वर्विद ६१९

उपमासूची ।

अन्धांसि इव २४२ असुराय मन्म प्र भरष्वम् ।

अस्तारः (अस्तु) १०, ६४, ८; ६८३

अहः १०, १४, ९; १२६९

अहिर्बुध्न्यः १, १८६, ५; १४४ । २, ६१, ६; १६३ । ४, ५५, ६; २३४ । ५, ४१, १६; २५५ । ६, ४२, १४; ३७६ । ५०, १४; ३९१ । ७, ३५, १३; ४६१ । १०, ६४, ४; ६७९ । ६२, ११; ७१७ । ९२, १२; ७३२ । ९३, ५; ७४० ।

उपमातिवनिः २५५

कविः ७३२

अहोरात्रे १, १२२, ४; ८५ । ३, ५५, ११, १५; २०२, २०६ । ४, ५५, ३; २३१ । ६, ४२, ३; ३६५

अदब्धे २३१

अन्यत् शुद्धं अन्यत् आविः २०६

अन्यत् रोचते अन्यत् कृष्णम् २०२

अन्या स्तुभिः पिपिशे सूरः अन्या ३६५

अरुषस्य दुहितरा ३६५

अरुषी २०२

अहनी २३१

ऋच्यमाने ३६५

नाना वर्षषि चक्राते २०२

पथ्या २०६

पदे दस्मे अन्तः निहिते इव २०६

पावके ३६५

मातरा ८५

मिथस्तुरा ३६५

विचरन्ती ३६५

विरूपे ३६५

विषूची २०६

श्यावी २०२

सध्रीचीना २०६

खसारौ २०२

उपमासूची ।

पदे इव निहिते २०६ दस्मे अन्तः ।

आत्मज्ञानाज्ञाने १,१६४,३९; १३७
जीवात्मनः परमार्थिकं रूपम् (सायनाचार्याः)
आत्रेयः (ऋषिः) प्रतिक्षत्रः ५,४६,१; ३२०
विद्वान् ३२०

उपमासूची ।

हयः न ३२० विद्वान् अयुजि स्वयं पुरि ।

आदित्यः १,१०५,१६; ५३ । १२२,३; ८४ । १६४,
१,७-८; १०,३१,३३; ९९,१०५-६,१०८,१२९,१३१ ।
३,५५,१४; २०५ । ५,४१,९; ६४८ । ६,५१,१; ३२३ ।
१०,६१,१८; ६४४ । ६६,१३; ७१९ । १०९,१; ७७५

आदित्यदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अकूपारः	७७५
अदब्धः	३२३
अनिपद्यमानः	१२९
अनीकम्	७०
आचरन् पथिभिः	१२९
आप्लवः	२४८
ऋतः	२०५, ३२३
गोपाः	१२२
वक्षुः त्यत्	३९३
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१
त्यत् वक्षुः	३९३
दर्शतः	३९३
नर्यः	२४८
पथिभिः आचरन्	१२२
पनितः	२४८
परिजमा	८४
पलितः	९९
पिता	१०६, १३१
पुरोहितः प्रथमः	७१९
प्रथमः पुरोहितः	७१९
प्रियः मित्रयोः वरुणयोः	
यज्जः	२४८, ३२३
योनिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
वसानः विपूषीः	१२२
वसानः सध्रीषीः	१२२
वामः	९९, १०५

विः	१०५
विश्वपतिः	२२
विपूषीः वसानः	१२९
शुचिः	३९३
सध्रीषीः वसानः	१२२
समपुत्रः	९९
होता	९९

आदित्यसत्यम् (दुर्जयम्) [परमेश्वरस्य अविषयस्यम्,
सायनाचार्याः ।] १,१६४,४-६; १०२-१०४
आदित्याः १,१४,३-४; ६-७ । १०६,२; ५८ । १०७,१-२;
६४-६५ । २,२९,१; १५१ । ३१,१; १५८ । ३,२०,५;
१६९ । ५४,१०,२०; १७९,१८९ । ८,८; २२२ । ५,
५१,१०,१२; ३५५,३५७ । ६,५०,११; ३८८ । ५१,
४-५; ३९६ ९७ । ७,३५,६,१४; ४५४,४६२ । ४४,१;
५०६ । ८,२७,३,६,२०; ५१४,५१७,५३३ । ८३,५,८;
५६३,५६६ । १०,३५,९,११-१२; ५८८,५९०-९१ । १०,
३६,१; ५९३ । ६३,३,५,७,१३,१७; ६६३,६६५,६६७,
६७३,६७५ । ३५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३-४,१२;
७०९-१०,७१८ । १२६,५,७; ७९६,७३८ । १२८,९;
८०८ । १४१,३; ८१८ । १५७,२-३; ८२४-२५ । ९८,१;
१२२२

आदित्यानां गुणबोधकपदानि—

अमिजिह्वाः	१७९
अदब्धः	३९३
अग्निवर्हाः	६६३
अपरिहृता	६६५
हविराः	१५१
ईशानासः वामस्य	५६३
उक्थशुभ्माः	६६३
ऋद्वराः	१७९
कवयः	१७९
क्षयन्तः	३९६
तुराः	५१७
दातारः सुवसनस्य	३९६
दिव्याः देवाः	३८८, ७००
देवाः दिव्याः	३८८, ७००
भूतवताः	१५१

नरः	३९६, ५१७
पप्रथानाः	१७९
प्रचेतसः	५६३
मधुमत् पयः येभ्यः माता पिन्वते	६६३
महः	३९६
युवानः	१७९, ३९६
राजानः	३९६
रिशादसः	२९६, ५६३
वनर्षदः	१५८
वामस्य ईशानासः	५६३
विश्वे	३९७, ६७५
वृषभराः	६६३
श्रवस्यवः	१५८
सजोषसः	५९०
सप्ततयः	३९६
सम्राजः	१७९, ५३३, ६६५
सुक्षत्राः	३९६
सुदानवः	५६६, ७१८
सुवसनस्य दातारः	३९६
सुवृधः	६६५
स्वप्रसः	६६३
हृषीवन्तः	१५८

आदित्यानां उपमासूची ।

पुत्रः न ५३३ बहुपाय्यं आ वृणीमहे ।
 आपः ३, ५४, १९; १८८ । ५५, २२;
 २१३ । ५६, ४, ७; २१७, २२० ।
 ५, ४१, ११-१२; २५०-५१ । ४६, ३;
 ३२२ । ६, ५०, ७; ३८४ । ७, ३४,
 २-३, २३, २५; ४२७-२८, ४४६,
 ४४८ । ३५, ८; ४५६ । ४४, १; ५०६ ।
 ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३६, १; ५९४ ।
 ६४, ८-९; ६८३-६८४ । ६५, १३;
 ७०४ । ६६, १०; ७१६ । १०९, १;
 ७७५ । १३७, ६; ८१४ । १४, ९;
 १२६९ ।

**आपो देवताया गुणबोधक-
पदानि ।**

अद्रेः बबुहाणस्य परि सुचः	२५१
अमीवचातनीः	८१४

१९ दै. (विश्वे देवाः)

क्षरन्तीः	४२७
जगतः विश्वस्य जनित्रीः	३८४
जनित्रीः विश्वस्य स्थातुः जगतः	३८४
देवीः	२१७, ६८४, ७७५
परि सुचः बबुहाणस्य अद्रेः	२५१
पृथक् व्रजन्तीः	२१७
पृथ्वीः	४२८
प्रथमजाः	७७५
बबुहाणस्य अद्रेः परि सुचः	२५१
भिषजः	३८४
भेषजीः	८१४
भेषजीः सर्वस्य	८१४
महीः	६८३
मातरः	६८४
मातुतमाः	३८४
मातुषीः	३८४
विश्वस्य जगतः जनित्रीः	३८४
विश्वस्य स्थातुः जनित्रीः	३८४
व्रजन्तीः पृथक्	२१७
शुभ्राः	२५१
समुद्रियः	७०४
सर्वस्य भेषजीः	८१४
सूदयित्वः	६८४
स्थातुः विश्वस्य जनित्रीः	३८४

उपमासूची ।

पुरो न २५१ शुभ्राः आपः शृण्वन्तु ।
 इन्द्रवः १, १४, ४; ७
 चमूषदः ७
 द्रप्साः ७
 मत्सराः ७
 मध्वः ७
 मादयिष्णवः ७
 इन्द्रः १, १४, ३-४, १०, ६-७, १३ ।
 ८९, ५-६; २३-२४ । ९०, ४, ९; ३२,
 ३७ । १०५, ८; ४५ । १०६, १, ६;
 ५७, ६२ । १०७, २-३; ६५-६६ ।
 १२१, १-१५; ६७-८१ । १६४, ३३;
 १३१ । १८६, ६-८; १४५-४७ ।
 २, ३१, ३; १६० । ३, ५५, १७; २०८

[पर्जन्यात्मा] । १८ [कालात्मा],
 २०-२२; २०९, २११-१३ । ५७, १-
 ३; २२३-२२५ । ४, ५५, ७, १०;
 २३५, २३८ । ५, ४१, २; २४१ ।
 ४२, ४-६, १३; २६३-६५, २७१ ।
 ४३, ५; २८१ । ४४, १-२; २९४ २५ ।
 ४५, १, ४; ३०९, ३१२ । ४६, २; ३२१ ।
 ४८, ३; ३३७ [सूर्यरूपः] उत्तरार्धस्य
 वा । ४९, ३; ३४२ । ५१, १०, १४;
 ३५५, ३५९ । ६, २१, २, ११; ३६१-
 ३६२ । ५०, ६; ३८३ । ५१, ११;
 ४०३ । ५२, ६, ११; ४१४, ४१९ ।
 ७, ३४, ३-४; ४२८-२९ । ३५, ५-६;
 ४५३-५४ । ३६, ४; ४६७ । ३७,
 ३-८; ४७५-८० । ३९, ४-५; ४८४-
 ८५ । ४०, २; ४८९ । ४१, १; ४९४ ।
 ४२, ५; ४९९ । ४४, १; ५०३ । ८,
 २७, ६, ८; ५१७, ५१९ । २९, ४;
 ५४२ । ६९, ११; ५५८ । ८३, ७;
 ५६५ । १०, ३१, १; ५६८ । ३५,
 १०; ५८९ । ३६, १, ५; ५९४, ५९८ ।
 ५२, ५; ६१२ । ५७, १; ६२१ । ६१,
 ११-१३, १५, २१-२२; ६३७-६३९,
 ६४१, ६४७-४८ । ६३, ९; १४; ६६९,
 ६७४ । ६४, ७, १०, १२; ६८२, ६८५,
 ६८७ । ६५, १, १०; ६९२, ७०१ ।
 ६६, ३, ६; ७०९, ७१२ । ७२, ५-८, १४;
 ७२५-७२८, ७३४ । ९३, ८-२, ११;
 ७४३-४४, ७४६ । १००, १-२, ५-६,
 ११-१२, ७५१-५२, ७५५-५६, ७६१-
 ६२ । १०१, १, १२; ७६३, ७७४ ।
 १२६, ५; ७९६ । १२८, २, ७-८;
 ८०१, ८०६-८०७ । १४१, ५; १८० ।
 १५७, १-३; ८२३-२५ । १६७, ३;
 ८३३ । ९८, १; १२२२ । १, १३६,
 ६-७; १२६४-१२६५ ।

इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंहोसुक्	६६९
अजूर्यन्	२६५

अद्रिवस्	७६	जुजुषाणः	२८१	पर्वन्यः	७१२
अद्रि विष्यन्	३०९	जुजुवानः	७४३	पर्वन्यात्मा इन्द्रः	२०८
अनर्वा	६३९	ज्येष्ठतातिः	२९४	पाश्र्वे नृन्	६७
अन्यासु रोरवाति	२०८	तराणिः	७२	पायुः	४८०
अप्रतीतः	२६५	तरुणः	१४६	पिता १३१ (उत्तरार्धः),	७५५
अप्रयुच्छन्	२३५	तर्वायान्	७२८	पुरन्दरः	१८४
अभिमातिवाहः	८०६	तस्थुषःपतिः	२३	पुराणिः	२६४, ४८४, ६८१
अभिष्टिः	७६२	तुरः-रासः	२६४, ५१७	पुरुषः	८०७
अमृतः	२६४	तुरणः	७१	पुरुहुतः	७५, १८६, ८०७
अरुणीः राट्	६९	तुरः विशाम्	६९	प्रतीचीनः	२९४
अर्यः	८१	तुविष्टमः	१५५	प्रथमः	५१९
अवः शश्वताम्	७६१	त्राता	२३५, ८०६	प्रमतिः	७५५
अहा वि वर्तयन्	३३७	त्रिककुम्भः	७०	प्रमीतः सुतावताम्	७६१
अहा सं वर्तयन्	३३७	त्रितः	१६३	बर्हिषद्	२९४
आशुः	२९४	त्रिबन्धुः	४७९	भगः	२०८
आहनाः	२७१	दस्मः	३४२	भद्रः	३४२
ईशानः	२३	दिश्यः	४८०	भरः	७५२
उक्कयचाः	८०७	देवः	४५३	भीमः	७२८
ऋते ते नाम	२९५	देवानां शंसः	५६८	भुवनस्य पतिः	८०६
ऋभुः	६८	दैव्यः जनः	६६२	मघवा ८१, २८५, ४७५, ७५१, ८३३	
ऋभुसाः १६३, २४१, २६४, ४७६, ६८५, ७४३		धनानी सजितः	२६४	मनुः	७५५
ऋभुभिः सखा	१८६	धाता धातृणाम्	८०६	मरुवान्	२९५, १२२२
कारुः	६३८	धातृणां धाता	८०६	महः-हे (चनु०)	२७१
कालारमा इन्द्रः	२१९	धिर्योजन्वः	२३	महिषः	६८
ऋतुप्राः	७६२	भृणुषेणः	१८४	मायाभिः परः	२९५
ऋतुप्रावः	७६१	नरः गोः	६८	मिनानः कृपा वक्षणासु	२७१
क्षमावान्	२०८	नरां सुरमिष्टमः	१४६	यज्ञत्रः	६७, ५६८
गिर्वेणः	२८३	नर्यः	७८	यज्ञः	७५५
गृणानः	२८३	नाम ऋते ते	२४५	यानिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
गोः नरः	६८	नार्षदः	६३९	रजस्तस्पतिः	४५३
घनं वृत्राणि	५४२	नि दधाति रेतः अन्यस्मिन् यूये	२०८	रथः इन्द्रस्य-	
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१	नृपतिः	६४८	अरिष्यन्	६७४
चर्वणिप्राः	१४५	नृन् पात्रम्	६७	प्रातर्यावा	६७४
चित्रभालुः	७६२	पतिः	७३४	रथयुक्	६८२
जगतः पतिः	२३	पतिः जगतः तस्थुषः च	२३	रराणः	६३८
जनः दैव्यः	६६९	पतिः भुवनस्य	८०६	राट् अरुणीः	६९
जयन्	२९४	पत्यमानः विश्वैः कीर्त्यैः	१८४	राजा	२०८, २२२
जरिता	७६१	परः मायाभिः	२९५	कृपा मिनानः वक्षणासु	२७१
जिष्णुः	२६५, ४५३	परिजमा	७२५	रेतः नि दधाति अन्यस्मिन् यूये	२०८
				रोरवाति अन्यासु	२०८

वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१
वज्रः इन्द्रस्य-	
पार्यः	७८
मन्दी	७८
वृत्रहा	७८
वज्रं हस्ते बिभर्ति	५४२
वज्रबाहुः	६४८
वज्री	४२९
वज्रिवान्	८०
वन्द्यः	३२
वसुः	७४४
वसोः वसुत्वा	६३८
वसुत्वा वसोः	६३८
वसूनि विन्दमानः	२११
वाजः	२६४
वाजप्रमहः (संबो०)	८१
विद्वान्	३६२
विन्दमानः वसूनि	२११
विवर्तयन् अहा	३३७
विशां तुरः	६९
विश्वचर्षाणिः	१६०
विश्वधायाः	२१२
विश्वैः वीर्यैः पत्यमानः	१८४
विष्यन् अद्रिम्	३०९
वीरः	२०९, २११, ३८३
वीर्यैः विश्वैः पत्यमानः	१८४
वृजनः	२९४
वृत्रखादः	७०१
वृत्रहा	६२, १४५, १८४, ५१९
वृत्राणि घ्नन्	५४२
वृद्धश्रवाः	२७
वृषभः	२०८
वृषा	२२५, ५१९, ७२८
शंसः देवानाम्	५६८
शचीपतिः	६२
शतक्रतुः	४५
शश्वतां अवः	७६१
शूरः	४६७
संवर्तयन् अहा	३३७

सखा ऋभुभिः	१८६
सचित्	६८२
सचेताः	६८२
सजितः धनानाम्	२६४
सहसः सूनुः	३६२
सहसावान्	७४४
साधुः	४७६
सुकृतः	६६९
सुकृतुः	१६०, २९५
सुगोपाः	२९५, ४०३
सुतपाः	७५१
सुतावतां प्रमतिः	७६१
सुत्रात्राः	४०३
सुनीथः	४०३
सुमेधाः	७०१
सुरभिष्टमः नराम्	१४६
सुशरणः	२७१
सुशर्मा	४०३
सुहवः	६६९
सुतः सहसः	३६२
सूरः	७३, ७९
स्तवानः	३८३
स्तुतः	७५१
स्वयशाः	४७६
स्वर्विद्	२९४
स्वर्विरोचमानः	२९५
स्ववान्	४०३
हरिवान्	२६३, ४७६, ६४८
हरी इन्द्रस्य-	
धायू	४६७
प्रिया	४६७
वाजिना	७०३
सुरथा	४६७
हयैश्च	४७७, ८०७
हस्ते वज्रं बिभर्ति	५४२
हिरण्यबाहुः	४२९
हृयमानः	२८१
इन्द्रदेवताया उपमासूची ।	
उषसः न सूरः ७२ प्र रोचि अस्याः ।	

रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोः ७६२ सुतृषति	
पर्यग्रं दुवस्युः ।	
मूषः न शिक्षा ४५ व्यदन्ति मा आध्यः ।	
राधः न ६३७ रेतः ऋतमित् तुरण्यन् ।	
शर्मसदः न वीराः २१२ पुरःसदः	
(मरुतः) ।	
सपत्नीः इव ४५ पर्शवः अभितः तपन्ति ।	
स्वर् न ६३९ त्रिषधस्ये देवाः निषेदुः ।	
हितमित्रः न राजा २१२ उप क्षेति	
पृथिवीम् ।	
इन्द्र-अग्नी । ५, ४६, ३; ३२२ । ७, ३५	
१; ४४९ । १०, ६५, २; ६९३ ।	
१२८, ९; ८०८ ।	
तन्वा समोकसा मिथः हिन्वाना	
वृत्रहस्येषु सत्पती ६९३	
सत्पती वृत्रहस्येषु समोकसा तन्व ।	
हिन्वाना मिथः ६९३	
इन्द्रा-पर्वता १, १२२, ३; ८४	
इन्द्रा-पूषणा ७, ३५, १; ४४९	
इन्द्रा-मरुतः २, २९, ३; १५३	
इन्द्रा-वरुणा ७, ३५, १; ४४९	
रातहव्या ४४९	
इन्द्र-वायू १, १३९, १; ९७ । १०, ६५,	
९; ७०० । १४१, ४; ८१९	
पुरीषिणा ७००	
वृषभा ७००	
सुहवा ८१९	
इन्द्रा-विष्णु ४, ५५, ४; २३२ । १०, ६६	
४; ७१०	
इन्द्रा-सोमा ७, ३५, १; ४४९	
इन्द्राणी २, ३२, ८; १२६६	
इळा ३, ५५, १४; २०५ । ५, ४१, १२-	
२०; २५८-२५९ । १०, ३६, ५;	
५०८ ।	
अभ्यूष्वाना २५८	
उर्वशी २५८	
ऊर्ध्वा तस्यौ २०५	
गुणाना २५८	
त्र्यवि रेरिहाणा २०५	

अद्विवस्	७६	जुजुषाणः	२८१	पञ्च-यः	७१२
अद्वि विष्णुन्	३०९	जुजुवान्	७५३	पञ्च-यमा इन्द्रः	२०८
अनर्वा	६३२	जिह्वतातः	६३५	पात्रं पुनः	६७
अन्यासु रोरवाति	२०८	नराणिः	७७	पायुः	४८०
अप्रतीतः	२६५	नरुणः	१५६	पञ्च १३२ (नराणां)	७५५
अप्रशुच्छन्	२३५	नर्वागान्	७७८	पुनः-पुनः	१८४
अभिमातिषाहः	८०६	नरुषुषःपतिः	२३	पुनःपुनः	२६५, ४८५, ६८१
अभिष्टिः	७६२	पुनः-रायः	२६५, ५१७	पुनःपुनः	८०७
अमृतः	२६४	पुनः	७१	पुनःपुनः	७५, १८६, ८०७
अरुणीः राट्	६९	पुनः विशाम	६९	पनीषानः	२९४
अर्यः	८१	पुनःपुनः	१५५	पञ्चम	५१९
अवः शश्वताम्	७६१	प्राता	२३५, ८०६	प्रमतिः	७५५
अहा वि वर्तयन्	३३७	प्रिककुम्भ	७०	प्रमतिः पुनःपुनः	७६१
अहा सं वर्तयन्	३३७	प्रिनः	१६३	वर्द्धयन्	२९४
आशुः	२९४	प्रिबन्धुः	५७२	महाः	२०८
आहनाः	२७१	दस्मः	३५३	महाः	३५३
ईशानः	२३	दिभ्यः	५८०	महाः	७५३
उद्वयस्याः	८०७	देवः	५५३	महाः	७२८
ऋते ते नाम	२९५	देवानां शंसः	५६८	पुनःपुनः पायः	८०६
ऋभुः	६८	देव्याः जनः	६६२	महावा ८१, २८५, ५७५, ७५१, ८३३	
ऋभुषाः १६३, २५१, २६४, ४७६, ६८५, ७४३		भनानी सञ्चितः	२६४	मनुः	७५५
ऋभुभिः सखा	१८६	भाता भानूनाम्	८०६	महावान्	२७५, १२२९
काकः	६३८	भानुनां भाता	८०६	महाः इ (ननु)	२७१
कालारमा इन्द्रः	२१९	भियैश्चन्द्रः	२३	महादिवः	६८
क्रतुप्राः	७६२	भृगुषेणः	१८४	मायाभिः परः	२९५
क्रतुप्रावः	७६१	नरः गोः	६८	मिनातः कृपा वरुणासु	२७१
क्षमावान्	२०८	नरा सुरभिहमा	१४६	यमयः	६७, ५६८
गिर्वेणः	२८३	नर्यः	७८	यमः	७५५
गुणानः	२८३	नाम ऋते मे	२५५	योनिः ज्ञानयोः अम्बाः	१३१
गोः नरः	६८	नार्यदः	६३७	रजमस्यानिः	४५३
ग्रन् वृत्राणि	५४२	नि दधाति रेतः अन्यस्मिन् यूये	२०८	रक्षा इन्द्राय	
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१	सुपतिः	६४८	अरिभ्यन्	६७४
वर्षणिप्राः	१४५	नृन् पापम्	६७	प्रातर्वावा	६७४
विश्रभासुः	७६२	पतिः	७३४	रघुपुत्र	६८९
जगतः पतिः	२३	पतिः जगतः तस्मिन् च	२३	रराणः	६३८
जनः देव्यः	६६९	पतिः भुवनस्य	८०६	राट् अरुणीः	६९
जयन्	२९४	पत्यमानः विधेः वीर्यैः	१८४	राजा	२०८, २२९
जरिता	७६१	परः मायाभिः	२९५	कृपा मिनातः वरुणासु	२७१
जिष्णुः	२६५, ४५३	परिज्या	७२५	रेता नि दधाति अन्यस्मिन् यूये	२०८
				रोरवाति अन्यासु	२०८

वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१
वज्रः इन्द्रस्य-	
पार्यः	७८
मन्दी	७८
वृत्रहा	७८
वज्रं हस्ते बिभर्ति	५४२
वज्रबाहुः	६४८
वज्री	४२९
वज्रिवान्	८०
वन्धः	३२
वसुः	७४४
वसोः वसुत्वा	६३८
वसुत्वा वसोः	६३८
वसूनि विन्दमानः	२११
वाजः	२६४
वाजप्रमहः (संबो०)	८१
विद्वान्	३६२
विन्दमानः वसूनि	२११
विवर्तयन् अहा	३३७
विशां सुरः	६९
विश्वचर्षणिः	१६०
विश्वधायाः	२१२
विश्वैः वर्तमानः	१८४
विध्यन् आद्रिम्	३०९
वीरः	२०९, २११, ३८३
वीर्यैः विश्वैः पत्यमानः	१८४
वृजनः	२९४
वृत्रहः	७०१
वृत्रहा	६२, १४५, १८४, ५१९
वृत्राणि घ्नन्	५४२
वृद्धश्रवाः	२७
वृषभः	२०८
वृषा	२२५, ५१९, ७२८
शंसः देवानाम्	५६८
शचीपतिः	६२
शतक्रतुः	४५
शश्वतां भवः	७६१
शरः	४६७
संवर्तयन् अहा	३३७

सखा ऋभुभिः	१८६
सचित्	६८२
सचेताः	६८२
सजितः धनानाम्	२६४
सहसः सनुः	३६२
सहसावान्	७४४
साधुः	४७६
सुकृतः	६६९
सुकृतुः	१६०, २९५
सुगोपाः	२९५, ४०३
सुतपाः	७५१
सुतावतां प्रमतिः	७६१
सुत्रात्राः	४०३
सुनीथः	४०३
सुमेधाः	७०१
सुरभिष्टमः नराम्	१४६
सुशरणः	२७१
सुशर्मा	४०३
सुहवः	६६९
सुनुः सहसः	३६२
सूरः	७३, ७९
स्तवानः	३८३
स्तुतः	७५१
स्वयशाः	४७६
स्वर्विद्	२९४
स्वर्विरोचमानः	२९५
स्ववान्	४०३
हरिवान्	२६३, ४७६, ६४८
हरी इन्द्रस्य-	
धायू	४६७
प्रिया	४६७
वाजिना	७०३
सुरथा	४६७
हर्षश्चः	४७७, ८०७
हस्ते वज्रं बिभर्ति	५४२
हिरण्यबाहुः	४२९
हूयमानः	२८१

इन्द्रदेवताया उपमासूची ।

उषसः न सूरः ७२ प्र रोचि अस्याः ।

रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोः ७६२ सुतूर्षति	
पर्यग्रं दुवस्युः ।	
मूषः न शिश्रा ४५ व्यदन्ति मा आध्यः ।	
राघः न ६३७ रेतः ऋतमित् तुरण्यन् ।	
शर्मसदः न वीराः २१२ पुरःसदः	
(मरुतः) ।	
सपत्नीः इव ४५ पश्वः अभितः तपन्ति ।	
स्वर् न ६३९ त्रिपथस्थे देवाः निपेदुः ।	
हितमित्रः न राजा २१२ उप क्षेति	
पृथिवीम् ।	
इन्द्र-अग्नी । ५, ४६, ३; ३२२ । ७, ३५	
१; ४४९ । १०, ६५, ९; ६९३ ।	
१२८, ९; ८०८ ।	
तन्वा समोकसा मिथः दिव्याना	
वृत्रहल्येषु सत्पती ६९३	
सत्पती वृत्रहल्येषु समोकसा तन्व ।	
दिव्याना मिथः ६९३	
इन्द्रा-पर्वता १, १२२, ३; ८४	
इन्द्रा-पूयणा ७, ३५, १; ४४९	
इन्द्रा-मरुतः २, २९, ३; १५३	
इन्द्रा-वरुणा ७, ३५, १; ४४९	
रातहव्या ४४९	
इन्द्र-वायू १, १२९, १; ९७ । १०, ६५,	
९; ७०० । १४१, ४; ८१९	
पुरीषिणा ७००	
वृषभा ७००	
सुहवा ८१९	
इन्द्रा-विष्णु ४, ५५, ४; २३२ । १०, ६६	
४; ७१०	
इन्द्रा-सोमा ७, ३५, १; ४४९	
इन्द्राणी २, ३२, ८; १२२६	
इडा ३, ५५, १४; २०५ । ५, ४१, १९-	
२०; २५८-२५९ । १०, ३६, ५;	
५०८ ।	
अभ्यूर्वाणा २५८	
उर्वशी २५८	
ऊर्वा तस्यौ २०५	
गृणाना २५८	
अयर्वि रेतिहाणा २०५	

पद्या	२०५
पुरुषा वपुषि वस्ते	२०५
बृहद्दिवा	२५८
रेरिहाणा अविम	२०५
इळाः (भूमिस्थानाः देवताः आयनाचार्याः)	
१, १८६, १; १४०	
उक्षाणः पञ्च १, १०५, १०; ४७	
महो दिवः मध्ये तस्थुः ४७	
उर्वशी ५, ४१, १९-२०; २५८-२५९।	
[देवसंघः भरुणः वा]	
अभ्युष्णिना आयोः प्रभृथस्य	
गृणाना बृहद्दिवा २५८	
उल्लकः १८, १६५, ४; ८३१	
उषाः १, ९०, ७; ३५। ३, २०; १, ५;	
१६८-१६९। ५५, ६; १९९। ४,	
५५, ९; २३७। ५, ४५, १-२; ३०९-	
३१०। ४७, १; २२८। ४८, २। ३३६।	
५१, ८; ३५३। ६, ५२, ४; ४१२।	
७, ३५, १०; ४५८। ३९, १; ४८१।	
४२, ५; ४९९। ८, २७, २; ५१३।	
५८, २; ५५६। १०, ३५, २-६; ५८१-	
५८५। १०, २४, ३; ६७८। १०, १;	
७६३।	
उषादेवताया गुणबोधकपदानि।	
अर्कं व्युतं वसाता	८३
अनमीवाः	५८५
अपरा	३३६
अपाची	३३६
आ विवासन्ती	३२८
उच्छन्ती	५८३
उक्षा	५८३
एका एव इदं सर्वं विभाति	५५६
यवा माता	२१०
जानती	३१०
जायमाना	४१२
जूर्णिः	४८१
जोह्वाना पितृभ्यः आ	३२८
दुहितुः बोधयन्ती	३२८
देवी	१६९, ७६३

पितृभ्यः आ जोह्वाना	३२८
पूर्वाः	१९२
प्रतोची	४८१
प्रथमा	५८३
प्रयुजती	३२८
बोधयन्ती दुहितुः	३२८
भद्राः	५८४
मघोनी	२३७
मर्नाषा	३२८
मही	३२८
माता	३२८
युवतिः	३२८
रेवती	५८३
वसाना व्युतं आकम्	८३
वाजिनीवती	२३७
विभाति एका एव इदं सर्वम्	५५६
विभातीः	४५८
व्युतं अर्कं वसाना	८३
अथ सूर्यस्य सुदशी	८३
सिधते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४
सुदशी सूर्यस्य अथ	८३
सूतता	२३७
सूर्यस्य रश्मिभिः सिधते	५८४
उषासानके १, १२२, २; ८३। १८६,	
४; १४३। २, ३१, ५; १६२। ४, ५५,	
३; २३१। ५, ४१, ७; २४६। १०,	
३६, १; ५९४।	

गुणबोधकपदानि ।

अदंघे	२३१
अपाजुवा जगताम्	१६२
जगता अपाजुवा	१६२
पुरुषा विदामे	८३
बृहती	५९४
मिथुदशा	१६२
यक्षी	२४६
विदामे पुरुषा	८३
विशुषी विश्वम्	२४६
विश्वं विशुषी	२४६
सुपेक्षसा	५९४
सुभगे	१६२

उपमासूची ।

पत्नी इव ८३ पूर्वार्हा वायुभ्यो ।
 ऋतवः १, १६४, १५; ११३। ५, ४३,
 ८; ३२७

गुणबोधकपदानि ।

अतः जनानाम्	३२७
कथयः	१६३
जनीनी ऋतुः	३२७
देवताः	१६३
यमाः यमः	१६३
यः यमाः	१६३
साकं जाना यमस्य एकतमम्	१६३
ऋतवः ७, ४३, २; ५०२। ८, ५८, १;	
५५५। १०, १०१, १-११; ७६३-७६३।	

गुणबोधकपदानि ।

अनूनातः	५५५
कल्पयन्तः यज्ञं बहुधा	५५५
कथयः	७६६
धाराः	७६६
बहवः	७६३
बहुधा यज्ञं कल्पयन्तः	५५५
प्राज्ञाणः	५०५
यज्ञं बहुधा कल्पयन्तः	५५५
युक्तः	५५५
गच्छायः	७६३-७६३
सन्ततगः	५५५
सनीलाः	७६३
समनसः	७६३

उपमासूची ।

अन्तः याना इव ७७३ वरानि द्विजानि ।
 यवसा इव गन्वी ७७१ सा नः दुर्हायना ।
 देवः न रातिः ५०२ यज्ञः प्र एतु ।
 ऋतवः ३, ५४, १९, १८। १८१, १८७।
 ५, ४२, १२; २७०। ४६, ४; ३२३।
 ५१, ६३; ३५८। ७, ३५, १२; ४६०।
 ३६, ८; ४७१। २७, १-२; ४७३-
 ४७४। १०, ९३, ७; ७४२। ६५, १०;
 ७०१। ६६, १०; ७१६।

गुणबोधकपदानि ।

अपसः	२७०
ऊर्ध्वप्रावाणः	१८१
ऋभुक्षणः	४७३-४७४
दमूनसः	२७०
दिवः धर्तारिः	७१६
देवाः	३५८
धर्तारिः दिवः	७१६
पुरन्धिः	४७१
पूषण्वन्तः	१८१
यज्ञियासः	१८७
रातिपाच्यः	४७१
वाजः	४७१
वाजाः	४७३
विभ्वा	३२३
सुकृतः	४६०
सुशिप्राः	४७३
सुहस्ताः	२७०, ७०१, ७१६
स्वधावन्तः	४७४
स्वर्देशः	४७४
ऋभुक्षाः-क्षणः	१, १८६, १०; १४९ । ५, ४१, २; २४१ । ४२, ५; २६४ । ६, ५०, १२; ३८९ । १०, ६४, १०; ६८५ । १०, ९२, ११; ७३१ । ९३, ७-८; ७४२-७४३ ।

गुणबोधकपदानि ।

अमृतासः	२६४
सुरासः	२६४
दैव्यः	३८९
पुरन्धिः	२६४
वाजः	२६४, ३८९
विभ्वा	३८९
विश्ववेदसः	७४२
ऋषयः (पञ्च)	५, ४४, १२; ३०५
नामानि- १ तयः	३०५
२ बाहुवृक्तः	३०५
३ यजतः	३०५
४ श्रुतवित्	३०५
५ सदाष्टणः	३०५

पञ्च नामानि ५, ४४, १०; ३०३

१ एवावदः, २ क्षत्रः, ३ मनसः, ४ यजतः, ५ सन्निः च ।

त्रयाणां नामानि- ५, ४४, ११; ३०४

१ मायी, २ यजतः, ३ विश्ववारः च ।

ऋषयः (सप्त) १०, १०९, ४; ७७८

तपसे ये निषेदुः ७७८

पूर्वे ७७८

सप्त ७७८

ओषधीः-धयः १, ९०, ६; ३४ । ३, ५४, २१; १२० । ५५, २२; २१३ । ५७, ३; २२५ । ५, ४१, ८, ११; २४७, २५० । ४२, १६; २७४ । ६, २१, ९; ३६१ । ४९, १४; ३७६ । ५२, ६; ४१४ । ७, ३४, २३, २५; ४४६, ४४८ । ३५, ५, ७; ४५३, ४५५ । ८, २७, २; ५१३ । १०, ६६, १०; ७१६ ।

गुणबोधकपदानि ।

जामयः	२२५
धेनवः	२२५
नमस्यन्तीः	२२५
पुत्रं वावशानाः	२२५
प्रस्वः	४५५
माध्वीः	३४
वावशानाः पुत्रम्	२२५
कक्रुदः ३, ५४, १४;	१८३
जनित्रीः	१८३
युवतयः	१८३
कण्वः (ऋषिः)	१०, ३१, ११; ५७८
कृष्णः	५७८
नृपदः पुत्रः	५७८
पुत्रः नृपदः	५७८
वाजी	५७८
इयावा	५७८
कपोतः	१०, १६५, १-५; ८२८-३२
इषितः	८२८-८२९
दूतः निर्ऋत्याः	८२८
निर्ऋत्याः दूतः	८२८
शङ्खनः	८२९
शिवः	८२९

कृत्वातुः १०, ६४, ८; ६८३
 क्षेत्रस्य पतिः १०, ६६, १३, ७१९
 गयः १०, ६४, १६; ६९१

ऋतज्ञाः	६९१
कविः	६९१
चकानः द्रविणसः	६९१
द्रविणसः चकानः	६९१
द्रविणस्युः	६९१
विप्रः	६९१
तुवीरवान	६९१

गायत्रम् (साम) १, १६४, ९५; १२३

गिरयः ५, ४१, ११; २५०

वृक्षकेशाः २५०

गुह्यः २, ३९, ८; १२६६

गौः (गावः) १, १६४, १७, २६-२९, ४०; ११५, १२४-२७, १३८ । ७, ३५, १२; ४६० । १०, ६५, ६; ६९७ । १००, १०; ७६० ।

गुणबोधकपदानि ।

अध्या	१२५, १३८
अभिधिता ध्वसनी	१२७
अभीष्टता येन (वर्त्सेन)	१२७
अश्विभ्यां पयः दुहा	१२५
आचरन्ती	१३८
इच्छन्ती वर्त्सम्	१२५
दुहा पयः अश्विभ्याम्	१२५
दुहाना पयः	६९७
धेनुः	१२४
ध्वसनी अधिधिता	१२७
धर्मं सुक्ताणं वावशाना	१२६
पयः दुहा अश्विभ्याम्	१२५
पयः दुहाना	६९७
प्रभुवाणा	६९७
भगवती	१३८
वर्त्सं इच्छन्ती	१२५
(वर्त्सेन) येन अभीष्टता	१२७
वसुपत्नी	१२५

वावशाना सुक्ताणं धर्मम्	१२६
विद्युत् भवन्ती	१२७
वतनीः	६९७
सुदुषा	१२४
सूयवसाद्	१३८
सुक्ताणं धर्मं अभि वावशाना	१२६
द्विजकृण्वती	१२५

गोजाताः ७, ३५, १४; ४६२

गोयाम्ना (तान्व-दिदिक्षा) १०, २३, १५; ७५०

गोक्षपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोक्षपिणी आहुतिः वा । १, १६४, १७; ११५

कदाची ११५

वर्त्सं भवः परेण पदा विधत्ता ११५

गो सजितारं वा मेधवायू १, १६४, २६; १२४

' गो ' पदानि-

धेनुः १२४

सुदुषा १२४

' सांवत् ' पदानि-

अर्माद्रः १२४

गोपुरु १२४

धर्मः १२४

सुहस्तः १२४

मा, माः (देवपत्न्यः) पत्नीः न ५, ४१, ६; २४५ । ४२, १२; २७० । ४३, २; ४८२ । ४६, २, ७-८; ३२१, ३२६-३२७ । ५०, ३; ३४७ । ६, ४९, ७; ३६९ । ५०, १३, १५; ३१०, ३९२ । ७, ३४, २०, २२-२३; ४४३, ४४५-४४६ । ३५, ६; ४५४ । १०, ६४, १०; ६८५ । ६६, ३; ७०१ । ९२, १४; ७१४ । ८, ८०, १०; १२०५ ।

गुणबोधकपदानि ।

अध्याः	३२२
अपां मते (वर्त्मानाः)	३२६
अरमतिः	२८२
इष्टुः श्वः	२४५
उद्यतीः	३२६
ऋतज्ञा	२८२
ऋतवापः	२४५
मा	२८२

माः	३२१, ३६९, ३९२, ४५४, ७०९, ७३४
जनयः	३२७, ३९०, ६८५
दशस्यन्तीः	२७०
देवपत्नीः	३२७
पत्नीनामानि—	३२७
अमायी	३२७
अश्विनी	३२७
इन्द्राणी	३२७, १२६६
रोदसी	३२७, ४४५
वरुणानी	३२७, ४४५
देवी	२८९
देवीः	३२६, १९०५
पत्नीः	२४५, ४४३
पार्थिवासः	३२६
पुरन्धीः	२४५
पत्नीः वृष्णः	२७०
वृहती	२८२
मही	२८२
राट्	३२७
रातह्व्या	२८२
रातिषाचः	४४५
वरुत्रीः	४४५
वसवः	३९२
वस्वीः	३४७
विश्वतष्टाः	२७०
विश्वः	७३४
वृष्णः पत्नीः	२७०
शुभ्राः	२७०
सुहवाः	३२६
स्तुतासः	३९२
हुतासः	३९२
प्रावाणः १, ८९, ४; २२ । ७, ३५, ७; ४५५ । १०, ३६, ४; ५९७ । ६४, १५; ६९० । ९२, १५; ७३५ । १००, ८-९; ७५८-७५९ ।	
अद्रयः	७५८
ऊर्ध्वः-ध्वः	७३५, ७५९

मधुपुद्	६२०, ७५८
मयोभुवः	२२
सोमसुतः	२२
धर्मः ५, ४३, ७; २८३ = धर्म पात्रम् । १०, १८१, ३; ८३६ । = हविः ।	

उपमासूची ।

पितुः न पुत्रः सपत्ति प्रेष्ठः २८३ धर्मः अग्नि आ असादि । वपावन्तं न २८३ अग्निना तपन्तः अजन्ति । धर्मा १०, ११४, १; ७८२ = अग्निः आदित्यश्च । चक्रम् १०, १६४, २, ११; १००, १०९	
अग्निः	१०९
अजरम्	१००
अनर्वम्	१००
जराय न	१०९
त्रिनाभि	१००
द्वादशारम्	१०९
विश्वः भुवना यत्र अधि तस्थुः	१००
सप्त शतानि विशातिश्च पुत्राः मिथुनासः अत्र तस्थुः १०९	
चन्द्रमाः १, १०५, १; ३८ । १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, १४; ७३४ ।	
अक्षोः युवा	७३४
युवा अक्षोः	७३४
सुपर्णः	३८
जगत् (साम)	१, १६४, २५; १२३
जनाः पञ्च ६, ५१, ११; ४०३ । १०, ५३, ४-५; १२१०-११	
ऊर्जादः	१२१०
गोजाताः	१२११
यज्ञियासः	१२१०-१२११
सुगोपाः	४०३
सुनीयाः	४०३
सुशर्मणिः	४०३
स्ववसः	४०३
जनयः (जनिः)	१०, ६४, १०; ६८५
जिह्वा	१०, १३७, ७; ८१५
वाचः पुरोगवी	८१५
जीवात्म-परमात्मानौ	१, १६४, २०; ११८

द्वा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते	११८
सद्युजा	११८
सुपर्णा	११८
जीवात्मा-साहु पिप्पलं अति ।	११८
परमात्मा-अनश्नन् अभि चाकर्षाति ।	११८
तत्त्वविद्	११४
कविः	११४
तनयित्सुः	१०, ६६, ११; ७१७
तन्यतुः	१०, ६५, १३; ७८४
पाक्षीरवा	७०४
तार्क्ष्यः	१, ८९, ६; २४
अरिष्टनेमिः	२४
तिथ्यः	१०, ६४, ८; ६८३
त्वष्टाः	१, १८६, ६; १४५ । २, ३१, ४; १६१ । ३, ५४, १२; १८१ । ५५, १९; २१० । ५, ४१, ८; २४७ । ४६, ४; ३२३ । ६, ४९, ९; ३७१ । ५०, १३; ३९० । ५२, ११; ४१९ । ७, ३४, २०-२२; ४८३-४४५ । ३५, ६; ४५४ । ८, २८, ३; ५४१ । १०, ६४, १०; ६८५ । ६६, ३; ७०९ । ९२, ११; ७३१ । १८४, १, ८३७ ।

त्वष्टादेवताया गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः	४४४
ऋतावान्	१८१
ऋभवा	३७१
देवः	१८१, २१०, ३७१, ७३१
देवेषु अन्तः निर्धविः	५४१
निर्धविः देवेषु अन्तः	५४१
पत्न्यानां यजतः	३७१
पिता	६८५
पोष्यावान्	२४७
प्रजाः विविधाः अजान	५१०
प्रजाः विविधाः पुषोष	५१०
प्रथमभाक्	३७१
भ्रष्ट आर्यसीं वाशीं हस्ते	५४३
भुवनस्य सक्षणिः	१६१
यजतः पत्न्यानाम्	३७१
यशः	३७१

वयाधाः	३७१
वसूयुः	४४४
वाशीं हस्ते विभ्रन्	५४३
विश्वरूपः	२१०
सर्धाणः भुवनस्य	१६१
सर्वना	२१०
सुकृन्	१८१
सुगर्भाभिः	३७१
सुदशः	४४५
सुपाणिः	१८१, ३७१, ४४३
सुशरणः	४४५
सुहवः	३७१
स्ववान्	१८१
दक्षः	१, ८९, ६; २१
अग्निधः	२१

दधिकाः ३, २०, १, ५; १६८-१६९ । ७, ४४, १; ५०६ । १०, १०१, १; ७६३ ।

दिन्याः ७, २५, ११, १४; ४५९, ४६२

दिशः (वा मेघाः) ३, ५५, १६; २०७

अप्रदुरधाः २०७

अशिधीः २०७

धेनवः २०७

नगानगवाः २०७

भवन्तीः २०७

सुवलयः २०७

शशयाः २०७

सबर्तुधाः २०७

दीधितिः १, १८६, ११; १५०

आविप्राणी १५०

यजत्रा १५०

वसूयुः १५०

सदनी १५०

देवः १, १०६, ७; ६३

अप्रयुक्कन् ६३

देवगण-संघः वा १, १२२, ८; ८९ । ५, ४१, २०; २५९ । ६, ५१, १२; ४०४ । ७, ४२, २; ४९६ । १०, ५७, ५; ६२५

गुणबोधकपदानि ।

जनः	८९
जनः दैव्यः	६२५
जनिमा देवानाम्	४९६
जन्म देवानाम्	४०४
देवानां जनिमा	४९६
देवानां जन्म	४०४
दैव्यः जनः	६२५
पञ्चभ्यः वाजिनीवान्	८९
महिमयः	८९
महा सूरिः	८९
वाजिनीवान् पञ्चभ्यः	८९
सूरिः अश्ववतः रथिनः मह्यम्	८९
देवाः [' विश्वे देवाः ' द्रष्टव्यम्]	
देवानां देवाः	७, ३२, १५, ४६३
अमृताः	४६३
ऋतज्ञाः	४६३
मनोः यजत्राः	४३३
यज्ञियानां देवानां यज्ञियाः	४६३
देवो देवः ५, ४२, १६, २७४। ४३, १५, २९१। ८, २७, १३, ५२४	
सुहवः	२७४, २९१
देवपत्नीः [' माः ' द्रष्टव्यम्]	
देवी ५, ४१, १८, २५७। १०, १४१, २, ८१७	
द्रवन्ती	२५७
मृळ्यन्ती	२५७
सुदानुः	२५७
देवीः (तिरुः)	३, ५६, ५, २१८
अप्याः	२१८
ऋतावरीः	२१८
योषणाः	२१८
विदधे दिवः त्रिः आ पत्यमानाः	२१८
देवीः (षट्)	१०, १२८, ५, ८०४
देहात्मानौ (देहात्म-जीवात्मानौ-सायनाचार्याः)	१, १६४, ३८, १३६
देहः-आत्मा-	
अन्यं नि चिक्युः अन्यं न नि चिक्युः	
मर्त्यः अमर्त्यः, मर्त्येन सयोनिः	
२० दै० [विश्वे देवाः]	

स्वधा	स्वधया गृभीतः
देहात्मानौ-वियन्ता, विषूचीना, शश्वन्ता,	
१३६	
यौः १, ८९, ४, २२। ९०, ७, ३५। १०५, १९, ५६। १०६, ७, ६३। १०७, ३, ६६। १६४, २, ३३, १०७, १३१। ३, ५४, २३९, १९, १७१-१७२, १७८, १८८। ५५, १२-१३, २०३-२०४। ५, ४१, ११, २५०। ४३, २, २७८। ४५, २-३, ३१०-११। ४६, ३, ३२२। ६, ५०, १३, ३९०। ५१, ५, ३२७। ५२, २, ४१०। ७, ३४, २३, ४४६। ४३, १, ५०१। १०, ३६, २, ५९५। ५६, ३, ६१६। ६३, १०, ६७०।	

द्यौर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनेहाः	६७०
अन्यस्याः वत्सं रिहती	२०४
उरु	१७८
ऋतावरी	५९५
जनिता	१३१, १७८
दक्षिणायाः धुरिं युक्ता	१०७
दुहिता	१८८
धेनुः	२०४
पन्थाः व्युतः	१७८
पिता २२, ३५, १३१, १७८, २७८, ३९७	
प्रचेतसः	५९५
बन्धुः	१३१
महः	१७१, १७८
माता	१०७
युक्ता दक्षिणायाः धुरि	१०७
रिहती अन्यस्याः वत्सम्	२०४
व्युतः पन्थाः	१७८
सुमिता	३१०

उपमासूची ।

स्थूणा इव ३१० यौः सुमिता दहत ।	
द्यावापृथिवी (रोदसी) १, १०५, १-१८, ३८-५५। १०६, ३, ५९। २, ३१, ४, १६१। ३, ५४, ३-४, ६-१०, १७२-	

७३, १७५-७९। ५५, १२, २०, २०३, २११। ५६, १, ७, २१४, २२०। ३, ८, ८, २२२। ५७, ४, २२६। ४, ५५, १, ३, ६, २२९, २३१, २३४। ५, ४३, २, २७८। ४९, ५, ३४४। ५१, ११, ३५६। ६, ५०, ३, ३८०। ५२, १४, ४२२। ७, ३४, २३-२४, ४४६-४४७। ७, ३५, ३, ५, ४५१, ४५३। ३९, ७, ४८७। ४०, २, ४८९। ४४, १, ५०६। १०, ३५, १-३, ५८०-५८१। ३६, १, ५९४। ६३, ९, ६६९। ६४, १४, ६८९। ६५, ८, ६९९। ६६, ४, ६, ७१०, ७१२। २२, ११-१२, ७३१-७३२। ९३, १, १०, ७३६, ७४५। १, १३६, ६, १२६४।	
---	--

द्यावापृथिवी (रोदसी)

देवताया गुणबोधकपदानि ।	
अदितिः	२२९
अद्भुता	२१४
अमृधे	२७८
उमे १११, २३१, ४२२, ४४६, ६८९	
उर्वी	२२०, ४४७, ७३६
ऋतस्य योना	१७५, ६९९
ऋतावरी	१७३, ७१२
ऋतावृधा	५९
क्षयतः समोक्षसा	६९९
चम्वा	२११
जागरुके	१७६
दूरेभन्ते	१७६
देवपुत्रे	५९
देवान् बिभ्रती	१७७
देवी	५९
द्यावाक्षामा	२२२, ५९४
द्यावाभूमी	२२९
धिषणे	३८०
धेनु	२०३
परिक्षिता	६९९
पितरा	६९९
पिता माता	२७८

पूर्वजावरी	६९९
विभ्रती देवान्	१७७
बृहती	४५१
भवन्ती	१७६
भूरिरेतसा	७३१
मदन्ती	१७५
मधुवत्सा	१७८
मही	२११, ५८०, ५८२, ६८९, ७३६
मातरा	५८२, ६८९
मिथुनानि नाम	१७६
यज्ञमी	२७८
सुवनी	१७३
योना ऋतस्य	६७५, ६८९
रोदसी	३८५, ५५५, २१४, २२०, २२६, २८४, ३८०, ४४६, ७३६, १०४४
वरुणाय सप्त	६९९
विष्टने	१७५
विष्टुत	१७६
वृषणा	७१२
वार्मानुषी	७३२
संविदानि	१७५
महर्षे	२०३
ममान्या	१७६
समाची	२०३, २११
समोकसा क्षयतः	६९९
सप्तते वरुणाय	६९९
सुर्मक	२२६
सुष्टुने	३८०
सुष्टुता	२७८
स्वसारा	१७६

द्यावापृथिवी (रोदसी)

देवताया उपमासूची ।

नारी यज्ञी न ७३६ रोदसी सर्वे नः ।
यथा वेः १७५ नाना जकाते ध्वनम् ।
समुद्रं न सञ्चरणे सनिष्यवः २३४ स्तुवात
देवी अप्येभिः इष्टैः ।
यु-पृथिवी- अन्तरिक्षम् १०, ११४, २; ७८३
विष्णुः निर्ऋतिः ७८३

वर्ता ७, ३५, ३; ४५१
धर्मः १०, ५६, ३; ६१६
धाना ३, ५४, १३; १८२ । ७, ३५, ३; ४५१ । १०, १६७, ३; ८३३ । १८१, १३; ८३४-३६ । १८४, १; ८३७
मिथुना ३, ५६, ६; २१९ । ५, ४१, ८; २४७ । १०, ३५, ७; ७८६ ।

जनित्री रायः ५८६
भन्या २४७
रायः जनित्री ५८६
योः ७, ३४, ९; ४३४
देवी ४३४

मिथुः ७, ३५, १२; ४५९ । १०, ६५, १३-१४; ७०४-७०५ ।
--

भेनुः ३, ५७, १; २२१
अमोपाः २२३
चरन्ती २२३
पनिताः अस्याः इन्द्रः आभिध २२३
प्रयुता २२३
मनीषा २२३

भेनवः ५, ४२, १; २७७ । ७, ३६, ३; ४६६ । ४२, १; ४९५ ।

अमर्षन्तीः २७७
उदयुतः ४९५
गुण्यर्थाः २७७
पयसा मग्वा (युक्ताः) २७७
बृहतीः २७७
मग्वा पयसा (युक्ताः) २७७
मयोमुक्तः २७७
मम २७७
सूदाः ४६६

नक्षत्रम् १, ९०, ७; ३५ । ७, ४२, ५; ४९२ । ८, १७, २; ५१३ ।

नक्षत्राणि ३, ५४, १९; १८८
नद्यः ५, ४१, १४; २५३ । ४२, १२; २६३ । ४३, १; २७७ । ४५, २; ३१० । ४६, ६; ३२५ । ७, ३६, ६; ४६९ । १०, ६४, ८; ६८३ ।

अभिधानाः २५३
अर्णाः २५३
स्वादीभर्णाः ३१०
मिरः २५३
नन्दायाः २५३
प्रिःमम ६८३
यावः २५३
धन्वर्णस्यः ३१०
परनीः वृष्णः २७०
पयसा स्वेन पीयमानाः ४६९
पीयमानाः स्वेन पयसा ४६९
यज्ञायः ४६९
वावशानाः ४६९
विभ्रतायाः २६३
वृष्णः परनीः २७०
मग्वाः ६८३
सुदीलयः ३२५
सुष्टुषाः ४६९
सुभाराः ४६९

नमः ६, ५१, ८-९; ४००-४०१
नरः ('नृ' बहुवचनम्) ५, ५०, ३; ३४७
नराणां ७, ३५, २; ४५० । १०, ६४, ३; ६७८ । ९, २, १; ७३१ ।

अष्टमः ७३१
शमः ४५०
नामानेदिष्टः (मन्त्रप्रवृत्ता) १०, ६१, १२; ६४५

निशाः = वज्रिनीः ५, ४५, १; ३०९
निर्ऋतिः ५, ४१, ६; २५५ । १०, ३६, २; ५९५ । ११४, २; ७८३

निष्ठाः ७८३
दुर्विदया ५९५

नीः (देवी) १०, ६३, १०; ६७०
अनागाः ६७०
अक्षवन्ती ६७०
देवी ६७०
स्वरित्रा ६७०

पतयः सत्यस्य ७, ३५, १२; ४६०
पत्नीः [' देवपत्नीः (माः) ' द्रष्टव्यम्]

पन्थाः ३, ५४, २१; १९० । ५, ५१, १४-१५, ३५९-३६० । ६, ५१, १६; ४०८ ।	
अनेहाः	४०८
पथ्या	३५९
पितृमान्	१९०
रेवती	३५९
भुगः	१९०
स्वस्तिगा	४०८

उपमासूची ।

सूर्याचन्द्रमसौ इव ३६० पन्थां स्वस्ति
अनु चरंम ।

परमात्मा (आदित्यः वा) १, १६४, २१-
२२, ३१; ११९-१२०, १२९

अनिपथमानः	१२९
आचरन् पथिभिः	१२९
इनः	११९
गोपाः	१२९
गोपाः विश्वस्य भुवनस्य	११९
भीरः	११९
पतिभिः आचरन्	१२९
पिता	१२०
भुवनस्य विश्वस्य गोपाः	११९
मध्यदः	१२०
वसानः विषूचीः	१२९
वसानः सध्रीचीः	१२९
विषूचीः वसानः	१२९
सध्रीचीः वसानः	१२९
सुपर्णाः	२१९-१२०

परमेश्वरस्य आविषयत्वम् १, १६४,
४-७; १०९-१०५ ।

पर्जन्यः १, १६४, ३३; १३१ । ५, ४२,
१३-१४; २७१-२७२ । ६, ५२, ६;
४१४ । ७, ३५, १०; ४५८ । ३६, ३;
४६६ । ४२, १; ४९५ । १०, ६६, ६;
७१२ । ९५, ५; ७२५ ।

अदिमान्	२७२
आहनाः	२७१
इक्ष्वापती	२७२

उक्षमाणः रोदसी विद्युता	२७२
उदनिमान्	२७२
कन्दजः	४९५
गर्भः दुहितुः	१३१
जठरे रोदवत्	७२५
जायमानः दिवः सद्ने	४६६
दिवः सद्ने जायमानः	४६६
दुहितुः गर्भः	१३१
पिता १३१ (उत्तरार्धः)	
महे (चतु०)	२७१
मिनानः रूपा वक्षणासु	२७१
रुवन्	२७२
रूपा मिनानः वक्षणासु	२७१
रोदसी उक्षमाणः विद्युता	२७२
रोदवत् जठरे	७२५
वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१
विद्युता रोदसी उक्षमाणः	२७२
वृषभः	४६६
सुशरणः	२७१
स्तनयन्	२७२
पर्जन्यवाता ६, ४९, ६; ३६८।५०, १२; ३८९, १०, ६५, ९; ७००।६६, १०; ७१६ ।	

पुरीषिणा	७००
वृषभा	३६८, ७००
परितः-तासः ३, ५४, २०; १८९, ५३, १; २१४ । ४, ५५, ५; २३३ । ५, ४१, ९; २४८ । ४५, ३; ३११ । ४६, ३, ६; ३२२, ३२५ । ६, २१, ९; ३६१ । ४९, १४; ३७६ । ५२, १, ४; ४०२, ४१२ । ७, ३४, २३; ४४६।३५, ८; ४५६ । ३७, ८; ४८० (पर्वतः) । ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३५, २; १८१ । ३६, १; ५९४ । ६४, ८; ६८३ ।	

गुणबोधकपदानि ।

इक्ष्वा मदन्तः	२०
तस्थिर्वांसः	२१४
ध्रुवक्षेमांसः	२०
ध्रुवयः	४५६

ध्रुवासः	४१२
मदन्तः इक्ष्वा	२०
वसवो न वीराः	२४८
सुभ्वः	४०९
सुशस्तयः	३२५

उपमासूची ।

वसवः न वीराः २४८ पर्वताः स्वै-
तवः सन्तु ।

पशुः ८, २७, २; ५१३
पार्थिवाः ७, ३५, १२, १४; ४५९, ४६२
पितरः १, १०९, ३; ५९ । ३, ५२, २;
१९३ । ६, ५२, ४; ४१२।७, ३५, १२;
४६० । १०, ५६, ४, ६; ६१७, ६१९ ।
५७, ३, ५; ६२३, ६२५ । १०, १४,
७-९; १२६७-१२६९

पदज्ञाः	१९३
पूर्वै	१९३
मुप्रवाचनाः	५९

पुरन्धिः ७, ३५, २; ४५० । ३९, ४;
४८४ । १०, ६५, १३; ७०४

पूषा १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ५-६;
२३-२४ । ९०, ४-५; ३२-३३ ।
१०६, ४; ६० । १२२, ५; ८६ ।
१८६, १०; १४९ । २, ३१, ४; १६१ ।
३, ५७, २; २२४ । ५, ४१, ४;
२४३ । ४३, ९; २८५ । ४६, २-३, ५;
३२१-३२२, ३२४ । ४९, ३; ३४२ ।
५१, ११; ३५६ । ६, २१, २; ३२१ ।
४९, ८; ३७० । ५०, ५; ३८१ । ५१,
११; ४०३ । ७, ३५, ९; ४५७ । ३६,
८; ४७१ । ३२, २; ४८२ । ४०, ६;
४९३ । ४१, १; ४९४ । ४४, १;
५०६ । ८, २७, ८; ५१९ । २९, ६;
५४४ । ५४, ४; ५५४ । १०, ३६,
३, ७; ६७८, ६८२ । ६५, १; ६९२ ।
६६, ५; ७११ । ९२, १३; ७३३ ।
९८, १; १२२२ ।

पूषादेवताया गुणबोधकपदानि ।

अदब्धः	२३
अध्वर्धसज्वा	३८२

९२, १०; ७३० । १००, ५; ७५५ ।
१०९, ५; ७७२ । १२८, ७; ८०६ ।
१४१, २-५; ८१७ ८२० । १६७, ३,
८३३ । ९८, १-३, ७; १२२२-
१२२४, १२२८ ।

गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः ६२०
अरुषः २८८
दीदिवान् २८८
धनानां सनिता २६६
नीलपृष्ठः २८८
पुरुषसुः २६६
प्रथमः २६६
वृहन् २८८
रत्नधेयः २६६
वेधाः २८८
शम् ३७
शम्भविष्टः २६६
सनिता धनानाम् २६६
सर्वगणः ३५७
सादशोनिः २८८
हिरण्यवर्णः २८८

उपमासूची ।

जुह्वे न देवा ७७९ जाया अन्वविन्दत्
बृहस्पतिः ।

दत्तः आ १२२३ देवः अजरः ।

ब्रह्मा ७, ३५, ७; ४५५ । ३६, १; ४६४ ।
८, ५८, २; ५५६ । १०, ६१, ७; ६३३ ।
१०, ११४, ८; ७८९ ।

एकं वा इदं सर्वं वि बभूव ५५६

ब्रह्मा ८, ५८, ३; ५५७ । १०, ५२, २;
६०९ । १४७, ३; ८१८

अतिरिक्तः ५५७
वेतुमान् ५५७
उयोतिष्मान् ५५७
त्रिचक्रः ५५७
भूरिवारः ५५७
रथः ५५७

समिद्ध ६०९
सुखः ५५७
सषट् ५५७
ब्रह्मजाया १०, १०९, ३-४; ७७७-७८
उपनीता ब्राह्मणस्य ७७७-७८
जाया ७७७-७८
भीमा ७७७-७८
ब्रह्मणस्पतिः ५, ४२, ९; २६८ । ४६, ३;
३२२ । ७, ४१, १; ४९४ । ४६, १;
५०६ । ८, २७, १; ५१२ । १०, ६५,
१; ६९२ ।

भगः १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ३;
२१ । ९०, ४; ३२ । २, ३१, ४;
१६१ । ३, २०, ५; १६९ । ५४, २१;
१९० । ५६, ६; २१९ । ४, ५५, ५,
१०; २३३, २३८ । ५, ४१, ४, ११;
२४३, ५५० । ४२, १, ५; २६०,
२६४ । ४६, २-३, ६; ३२१-३२२,
३२५ । ४८, ५; ३३९ । ४९, १, ३ ।
३४०, ३४२ । ५१, ११; ३५६ ।
६, ४९, १४; ३७६ । ५०, १, १३;
३७८, ३९० । ५१, ३, ११; ३५५,
४०३ । ७, ३५, २; ४५० । ३६, ८;
४७१ । ३९, ४; ४८४ । ४०, २;
४८९ । ४१, १; ४९४ । ४४, १;
५०६ । १०, २१, ४; ५७१ । ३५,
१०-११; ५८९-५९० । ६३, ९;
६६९ । ६४, १०; ६८५ । ६६, १०;
७१६ । ९३, ४, ७; ७३९, ७४२ ।
१४१, २; ८१७ । १, १३६, ६;
१२६४ ।

भगो देवताया गुणबोधक- पदानि ।

अविता धियः ४७१
आश्वत्थतमः २४३
कण्वहोता २४३
विकित्वान् २५०
जाता २१९, २३८
त्रितः २४३

दिवः २४३
दिव्यः २४३
देवः २३३, ३४०
धियः अविता ४७१
पुरन्धिः ३७६
बृहद्भिवा १६१
रण्वः ६८५
रत्नं विभजन् आयोः ३४०
रथस्पतिः ६८५, ७४२
रातिः ७१६
वन्धः ३२
विभक्ता ३२५
विभजन् रत्नं आयोः ३४०
विश्वभोजाः २४३
शंसः ६८५
सक्षणः २४३
सजोषाः २४३
भवित्रम् ७, ३५, ९; ४५७
भूतानि १०, १३७, ५; ८१३
विश्व ८१३
भूमिः ७, ३६, ८; ४७१
अरमतिः ४७१
महोः ४७१
भृगवः १०, ९२, १०; ७२०
मदः ५, ४४, ११; ३०४
अदितिः ३०४
कक्ष्यः ३०४
उथेनः ३०४
मनः (मन आवर्तनम् ।) १०, ५७, ३-
५; ६२३-६२५
मनीषा ७, ३४, १; ४२६
देवी ४२६
शुक्रा ४२६
मनीषिणः १०, ६४, १५; ६९०
मनुष्याः १०, १०९, ६; ७८०
मन्म १०, ३६, ५; ५९८
सुप्रकेतम् ५९८
महतः १, १४, ३-४; ६-७ । २३, १०-१२;
१६-१८ । ८६, ३, ७; २१, २५ ।

९०, ४-५; ३२-३३। १०६, १; ५७।
 १०७, २; ६५। १०८, १; ८२। १०९,
 ८-९; १४७-१४८। २, ३१, ३; १६०।
 ४१, १५; १६७। ३, ५४, १३, २०;
 १८२, १८९। ५५, २१; २१२। ४,
 ५५, ५; २३३। ५, २६, ९; २३९।
 ४१, २, ५, ११, १३-१४, १६, २०;
 २४१, २४४, २५०, २५२-५३, २५५,
 २५९। ४२, १०, १५; २६९, २७३।
 ४३, १०; २८६। ४४, ४; ३१२।
 ४६, २-३, ५; ३२१-३२२, ३२४।
 ६, २१, ९; ३६१। ४८, ६, ११-१२,
 ३६८, ३७३-३७४। ५०, ४-५, ११;
 ३८१-३८२, ३८८। ५०, २, ११;
 ४१०, ४१९। ७, ३४, १८-१९,
 ४४-४५; ४४१-४४२, ४४७-४४८।
 ३५, ९; ४५७। ३६, ७९; ४७०, ४७२।
 ३९, ३, ५; ४८३, ४८५। ४०, ३, ४९०।
 ४२, ५; ४९९। ८, २५, १०-११;
 ५०९-५१०। ९७, १, ३, ५, ८, १२,
 १५-१६; ५१२, ५१४, ५१६, ५१९,
 ५२३, ५२६-५२७। ९८, ५; ५३८।
 ५४, १; ५५३। ८३, ७; ५६५।
 १०, ३५, १३; ५९२। ३६, ४, ७;
 ५९७, ६००। ५२, २; ६०९। ६३,
 ९, १४; ६६२, ६७४। ६४, ११-१३;
 ६८६-८८। ६५, १; ६९२। ६६,
 २४, ७०८-७१०। ९०, ५, ११;
 ७२५-७२६, ७२९, ७३१। ९३, ४, ९;
 ७३९, ७४४। १२६, ५; ७२६।
 १२८, २; ८०१। १३७, ५; ८१३।
 १५७, ३; ८२५। १, १३६, ७,
 १२६५।

‘मरुतः’ देवताया
 गुणबोधकपदानि।

अग्निजिह्वाः	२५
अनुहः	५२६
अश्रुताः	३८१
अयासः	१८२, २७३

अरिपयन्तः	५१०
अमुरस्य नीलयाः	७२३
अग्निधः	२१
दत्था वृधन्तः	३७३
उग्राः	१६
ऋतजाताः	१८२
ऋतयः गता तेषाम्	५३८
ऋष्टिमन्तः	१८२
ऋध्नः	६००
एकयावः	३३, ७२२
एवाः	२५२
कवयः	३६८, ३७३
क्राणाः	७२६
गणः मरुताम्	८१३
गणः मारुतः	६००
गोजाताः	३८८
जगतः स्थाता	३६८
जाताः विद्युतः अतः परि	१८
नवसः	३७४
तुरासः	१८२, ३७४
तुराणा एवाः	२४४
दधानाः वार्यम्	२५२
दम्माः	२५२
दिवः मर्याः	१८२
दिवः श्येनायः	७२६
दिविधयः	३२४
द्युधानि सप्त तेषाम्	५३८
नक्षन्तः	३७३
नरः	१७, ३७३
नीलयाः अमुरस्य	७२६
परि जाताः विद्युत अतः	१८
पावकः	६००
पुरःसदः	२१२
पूषणः	७३९
पृथिमातरः	१६, २७
पूषदधाः-श्वासः	२५, १४७, २७३, ४२०
मनवः	२५
मन्दसानाः	४७०
मरुता गणः	८१३

मरुतगः	१६७, ७०८
मर्याः दिवः	१८२
महान्तः	२५०, २५२
महामेनासः	४४२
माधोनः	७०८
मारुतः गणः	६००
मारुतं शर्धः	५७, २७३, ३२१
मिश्रयुजः	८, १०७
यजतम्	३२४
यज्ञियासः	१८२, ३७३
यमिन्-यी	७२५
युवानः	३७३
युवन्ववः	२७३
रथाः (रथयन्तः)	८, १४७
रायस्पोषः	६००
रिशादसः	८, १४७
रुदः	७२५
रुदाः	६८६, ७०९, ७२६
रुद्रस्य सूनवः	२७३, ३८१
रुद्रियाः	२५०
वन्धासः	३२
वयान	२५२
वसवः	३८१
वभयः	७४४
वाजिनः	४७०
वार्य दधानाः	२५२
विदधेषु जग्मयः	२५
विद्युदधाः	१८२
विधे	४४७
विश्वरूपयः	७२६
विश्वभानवः	५१४
वीरः	३७४
वृजनः	७०८
वृद्धशवसः	५०९
वृद्धसेनाः	१४७
वाम्भू	६००
शर्धः मारुतम्	५७, २७३, ३२१
शर्मयदः	२१२
शुभयावानः	२५
शुभाः	४८३

श्वेनासः दिवः	७२६
श्रियः सप्त तेषाम्	५३८
सत्यश्रुतः	३६८
सप्तः	५३८
सप्तः ऋषयः बुध्नानि श्रियः तेषाम्	५३८
समनसः	१४७
सहासः	४४७
सुदानवः	२५५, ५१०
सुप्रणीतयः	५५३
सुभ्वः	२५२
सुमन्त्रः	२५३
सुहवः	६००
सूनवः रुद्रस्य	२७३, ३८१
सूरचक्षसः	२५
स्थाता जगतः	३६८
स्वर्काः	४५७
दितासः	३८१
हृतासः	३८१

उपमासूची ।

इष्टुध्या इव ८२ दिवः अस्तोषि असुरस्य वीरैः ।

जयतां इव १७ तन्मयतुः मरुतां एति ।

पितृमान् इव क्षयः ६८६ रण्वः संदृष्टौ ।

यूथा इव पशुरक्षिः अस्तम् ३७४ प्र तवसे तुराय अज ।

स्त्वभिः न नाकम् ३७४ स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य ।

मही ५, ४१, १५; २५४

ऋजुवनिः २५४

ऋजुहस्ता २५४

माता २५४

रक्षा २५४

माता १०, ६४, १०; ६८५

दिवा ६८५

बृहत् ६८५

मित्रः १, १४, ३-४; ६-७, ८, ९, ३; २१।

९०, १-३, ९; २९-३१, ३७। १०५,

१९; ५६। १०६, १, ७; ५७, ६३।

१०७, ३, ६६। १२२, ७; ८८। १३९,

१; ९७। १८६, २; १४१। २, २९, १;
१५१। ३, ५४, १०; १७२। ५५, ६;
१९७। ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२९,
२३३, २३५, २३८। ५, २६, ९; २४१।
४१, २; २४१। ४२, २-२; २६०-२६१।
४६, २, ५; ३२१, ३२४। ४९, ३, ५;
३४२, ३४४। ५, २१, ९; ३६१। ४२, १;
३६३। ५०, १; ३७८। ५१, ३, १०;
३९५, ४०२। ५२, ११; ४१९। ७,
३६, २; ४६५। ३९, ५, ७; ४८५, ४८७।
४०, २, ४; ४८९, ४९१। ८, २७, ६,
१५, १७; ५१७, ५२६, १२८। २८,
२-३; ५३५-५३६। ८३, २; ५६०।
१०, ३१, ९; ५७६। ३५, १०; ५८९।
३६, १, १२-१३; ५९४, ६०५-६०६।
६३, ९; ६६९। ६४, १२; ६८७।
६५, १, ५, ९; ६९२, ६९६, ७००। ९२,
६; ७२६। ९३, ४; ७३९। १०९, २;
७७६। १२६, १-७; ७९२-७९८।
८१, १७; १२२१। ९८, १; १२२२।
१, १३६, ६-७; १२६४-१२६५।
मित्रस्य धामानि १, ८९, ३; २१

अन्वर्तिता	७३६
अपबाधमानाः द्विषः	३०
अप्रमूराः	३०
अमृताः	३०
अमृतस्य राजानः	७३९
ऋतधीतिः	४०२
ऋतावान्	४८७
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
जनं यतति	४६५
दस्मः	३४२
दिव्यं शर्धः	९७
द्विषः अपबाधमानाः	३०
नेता	७९७
प्रचेतसः	५६०
ब्रुवाणः	४६५
भद्रः	३४२

मन्त्राः	७३९
यतति जनम्	४६५
युजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा चर्षणीनाम्	७९७
वक्मराजसत्यः	४०२
वसवानाः	३०
वस्त्रः	३०
विद्वान्	२९
वृधासः	५६०
शम्	३७
शर्धः दिव्यम्	९७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषसः	५२८
सत्यसवः	६०६
सम्राट्	६९६
सरातयः	५२८
सुक्षत्रः	३३३, ४०२
स्मन्नातिषाचः	५३५

मित्रावरुणौ १, १२२, ६, ९-१०, १५;
८७, ९०-९१, ९६। २, २९, ३; १५३।
३१, १; १५८। ३, २०, १; १६९।
५६, ७; २२०। ५, ४१, १, २४०।
४६, ३; ३२२। ४७, ७; ३३४। ५१,
९, १४; ३५४, ३५९। ६, ४९, १;
३६३। ७, ३५, ४; ४५२। ३६, २;
४६५। ४१, १; ४९४। ४२, ५;
४९९। ८, २९, ९; ५४७। १०, ६१,
१७, २३, २५; ६४३, ६४९, ६५१।
९३, ६; ७४१। ५१, २; १२०६।

मित्रावरुणौ देवताया

गुणबोधकपदानि ।

असुरा	४६५
उपमा	५४७
उशन्ता	४९९
दिवि द्वा सदः चक्राते	५४७
राजाना	३३०, ६४९
शुभस्पती	७४१
सम्राजा दिवि	५४७

९०, ४-५; ३२-३३ । १०६, १, ५७ ।
 १०७, २; ६५ । १२२, १; ८२ । १८३,
 ८-९; १४७-१४८ । २, ३१, ३; १६० ।
 ४१, १५; १६७ । ३, ५४, १३, २०;
 १८२, १८९ । ५५, २१; २१२ । ४,
 ५५, ५; २३३ । ५, २६, ९; २३९ ।
 ४१, २, ५, ११, १३-१४, १६, २०;
 २४१, २४४, २५०, २५२-२५३, २५५,
 २५९ । ४२, १०, १५; २६९, २७३ ।
 ४३, १०; २८६ । ४५, ४; ३१२ ।
 ४६, २-३, ५; ३२१-३२२, ३२४ ।
 ६, २१, ९; ३६१ । ४८, ६, ११-१२;
 ३६८, ३७३-३७४ । ५०, ४-५, ११;
 ३८१-३८२, ३८८ । ५२, २, ११;
 ४१०, ४१९ । ७, ३४, १८-१९,
 २४-२५; ४४१-४४२, ४४७-४४८ ।
 ३५, ९; ४५७-४६, ७९; ४७०, ४७२ ।
 ३९, ३, ५; ४८३, ४८५-४८०, ४८९० ।
 ४२, ५; ४९९ । ८, २०, १०-११;
 ५०९-५१० । २७, १, ३, ५, ८, १२,
 १५-१६; ५१२, ५१४, ५१६, ५१९,
 ५२३, ५२६-५२७ । २८, ५; ५३८ ।
 ५४, १; ५५३ । ८३, ७; ५६५ ।
 १०, ३५, १३; ५९० । ३६, ४, ७;
 ५९७, ६०० । ५२, २; ६०९ । ६३,
 ९, १४; ६३२, ६७४ । ६४, ११-१३;
 ६८६-८८ । ६५, १; ६९२ । ६६,
 २४, ७०८-७१०-७२, ५-६, ९, ११;
 ७२५-७२६, ७२९, ७३१ । ७३, ४, ९;
 ७३९, ७४४ । १२६, ५; ७२६ ।
 १२८, १; ८०१ । १३७, ५; ८१३ ।
 १५७, ३; ८२५ । १, १३६, ७,
 १२६५ ।

‘मरुतः’ देवताया
 गुणबोधकपदानि ।

अभिजिह्वाः	२५
अद्भुतः	५२६
अघृष्टाः	३८१
अयासः	१८२, २७३

अरिप्यन्तः	५१०
असुरस्य नीलवः	७२३
अग्निधः	२१
इत्या वृधन्तः	३७३
उग्राः	१६
कलनाताः	१८२
कृष्टयः सप्त तेषाम्	५३८
कृष्टिमन्तः	१८२
कृष्णः	६००
एवगावः	३३, ७२९
एवाः	२५२
कवयः	३६८, ३७३
काणाः	७०३
गणः मरुताम्	८१३
गणः मारुतः	६००
गोजाताः	३८८
जगतः स्थाना	३६८
जानाः विद्युतः अतः परं	१८
नवगः	३७४
तुरासः	१८२, ३७४
तुराणा एवाः	२४४
दधानाः वार्यम्	२५२
दस्माः	२५२
दिवः मर्याः	१८२
दिवः श्येनासः	७२६
दिविक्षयः	३२४
वृष्टानि सप्त तेषाम्	५३८
मक्षन्तः	३७३
नरः	१७, ३७३
नीलवः असुरस्य	७२६
परि जानाः विद्युत अतः	१८
पावकः	६००
पुरःसदः	२१२
पूषणः	७३९
पृथ्निमातरः	१६, २७
पूषदक्षाः-श्वासः	२५, १४७, २७३, ४२०
मनवः	२५
मन्दसानाः	४७०
मरुता गणः	८१३

मरुतगणः	१६७, ७०८
मर्याः दिवः	१८२
महान्तः	२५०, २५२
महासिनासः	४४२
माघोनः	७०८
मारुतः गणः	६००
मारुतं वार्यः	५७, २७३, ३२१
मिश्रयुजः	८, १८७
यजतम्	३२४
यज्ञियासः	१८२, ३७३
ययिन्-यो	७२५
युवानः	३७३
युवन्गवः	२७३
रथाः (रथवन्तः)	८, १४७
रायम्पोषः	६००
रिशादसः	८, १४७
रुद्रः	७२५
रुद्राः	६८६, ७०९, ७२६
रुद्रस्य सूनवः	२७३, ३८१
रुद्रियः	२५०
वन्थासः	३२
वयान	२५२
वसवः	३८१
वस्यः	७४४
वाजिनः	४७०
वार्यं दधानाः	२५२
विदग्धेषु जग्मयः	२५
विद्युदधाः	१८२
विधे	४४७
विश्वकृष्टयः	७२६
विश्वमानवः	५१४
वीरः	३७४
वृजनः	७०८
वृद्धशवसः	५०९
वृद्धसेनाः	१४७
वाम्भू	६००
वार्यः मारुताम्	५७, २७३, ३२१
वर्मसदः	२१२
शुर्मयावानः	२५
शुभ्राः	४८३

श्वेनासः दिवः	७२६
श्रियः सप्त तेषाम्	५३८
सत्यश्रुतः	३६८
सप्तः	५३८
सप्तः ऋष्टयः युत्रानि श्रियः तेषाम्	५३८
समनसः	१४७
सहासः	४४७
सुदानवः	२५५, ५१०
सुप्रणीतयः	५५३
सुभ्रवः	२५२
सुमखः	२५३
सुहवः	६००
सूनवः रुद्रस्य	२७३, ३८१
सूरचक्षसः	२५
स्थाता जगतः	३६८
स्वर्काः	४५७
हितासः	३८१
हृतासः	२८१

उपमासूची ।

इष्टुध्या इव ८२ दिवः अस्तोषि असुरस्य वीरैः ।

जयतां इव १७ तन्यतुः मरुतां एति ।

पितृमान् इव क्षयः ६८६ रण्वः संदृष्टौ ।

यूथा इव पशुरधिः अस्तम् ३७४ प्र तवसे तुराय अज ।

रतुभिः न नाकम् ३७४ स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य ।

महीं ५, ४१, १५; २५४

ऋजुवनिः २५४

ऋजुहस्ता २५४

माता २५४

रक्षा २५४

माता १०, ६४, १०; ६८५

दिवा ६८५

बृहत् ६८५

मित्रः १, १४, ३-४; ६-७, ८९, ३; २१।

९०, १-३, ९; २९-३१, ३७। १०५,

१९; ५६। १०६, १, ७; ५७, ६३।

१०७, ३, ६६। १२२, ७; ८८। १३९,

१; ९७। १८६, २; १४१। २, २९, १;

१५१। ३, ५४, १०; १७९। ५५, ६;

१९७। ४, ५५, १, ५, ७, १०, २२९,

२३३, २३५, २३८। ५, २६, ९; २४१।

४१, ०; २४१। ४२, १-२; २६०-२६१।

४६, २, ५; ३२१, ३२४। ४९, ३, ५;

३४२, ३४४। ६, २१, ९; ३६१। ४९, १;

३६३। ५०, १; ३७८। ५१, ३, १०;

३९५, ४०२। ५२, ११; ४१९। ७,

३६, २; ४६५। ३९, ५, ७; ४८५, ४८७।

४०, २, ४; ४८९, ४९१। ८, २७, ६,

१५, १७; ५१७, ५२६, १२८। २८,

२-३; ५३५-५३६। ८३, २; ५६०।

१०, ३१, ९; ५७६। ३५, १०; ५८९।

३६, १, १२-१३; ५९४, ६०५-६०६।

६३, ९; ६६९। ६४, १२; ६८७।

६५, १, ५, २; ६९२, ६९६, ७००। ९२,

६; ७१६। ९३, ४; ७३९। १०९, २;

७७६। १२६, १-७; ७९२-७९८।

८५, १७; १२२१। ९८, १; १२२२।

१, १३६, ६-७; १२६४-१२६५।

मित्रस्य धामानि १, ८९, ३; २१

अन्वर्तिता ७५६

अपबाधमानाः द्विषः ३०

अप्रमूराः ३०

अमृताः ३०

अमृतस्य राजानः ७३९

ऋतधीतिः ४०२

ऋतावान् ४८७

गोपाः ५३६

चर्षणीनां राजा ७९७

जनं यतति ४६५

दस्सः ३४२

दिव्यं शर्धः ९७

द्विषः अपबाधमानाः ३०

नेता ७९७

प्रचेतसः ५६०

ब्रुवाणः ४६५

भद्रः ३४२

मन्त्राः ७३९

यतति जनम् ४६५

युजः ५६०

राजानः अमृतस्य ७३९

राजा चर्षणीनाम् ७९७

वक्त्रराजसत्यः ४०२

वसवानाः ३०

वस्त्रः ३०

विद्वान् २९

वृधासः ५६०

शम् ३७

शर्धः दिव्यम् ९७

श्रेष्ठवर्चाः ४०२

सजोषसः ५२८

सत्यसवः ६०६

सम्राट् ६९६

सरातयः ५२८

सुक्षत्रः ३३३, ४०२

स्मद्रातिषाचः ५३५

मित्रावरुणौ १, १२२, ६, ९-१०, १५;

८७, ९०-९१, ९६। २, २९, ३; १५३।

३१, १; १५८। ३, २०, १; १६९।

५६, ७; २२०। ५, ४१, १; २४०।

४६, ३; ३२२। ४७, ७; ३३४। ५१,

९, १४; ३५४, ३५९। ६, ४९, १;

३६३। ७, ३५, ४; ४५२। ३६, २;

४६५। ४१, १; ४९४। ४२, ५;

४९९। ८, २९, ९; ५४७। १०, ६१,

१७, २३, २५; ६४३, ६४९, ६५१।

९३, ६; ७४१। ५१, २; १२०६।

मित्रावरुणौ देवताया

गुणबोधकपदानि ।

असुरा ४६५

उपमा ५४७

उशान्ता ४९९

दिवि द्वा सदः चक्राते ५४७

राजाना ३३०, ६४९

शुभस्पती ७४१

सम्राजा दिवि ५४७

सर्पिरासुती	५४७
सुपाणी	२२०
सुप्रयन्ता	३६३

उपमासूची ।

दृषं न ४६५ सुवृत्तिं कृण्वे ।
धन्वा इव ७४१ दुरिता अति एति ।
गातुः पूर्वा इव ६५१ सूनृतायै दाशत ।
वयः न १५८ वस्मनस्परि प्र पतन् ।
पशुषः वाजान् न २४० त्रासोर्था नः ।
सूरः न ९६ रयूम गभस्तिः रथः अर्थान् ।
मेघः १, १६४, २६; १२४ । (मेघलक्षणा-
धेतुः) १६४, २६; १२० । मयस्थानः
वायुर्वा ।

धनुः	१२४
परिव्रातः मातुः योनी	
बहुप्रजा	१३०
मातुर्योनी परिव्रातः	१३०
सुदुषा	१२४
यजमान-ब्रह्माणौ १०, ११४, ३; ७८४	
वृषणा	७८४
सुपर्णा	७८४
यजुः १०, १८१, ३; ८३६	
यज्ञः ७, ३४, ५-७; ४३०-४३२ । ३५, ७; ४५५ । ४३, २; ५०२ । १०, ६६, ६; ७१२ । ११४, ६-७; ७८७-७८८ ।	
आप्नानः	७८८
केतुः	४३१
तीर्थः	७८८
वीरः	४३१

देवतारहितमन्त्रे

गुणबोधकपदानि ।

जीराध्वरः	५९९
दिविस्पृक्	५९९

उपमासूची ।

पृथिवी न भूम ४३२ मारं विभर्ति ।
यमः १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, ११;

७३१ । १६५, ४; ८३१ । १४, ७९;
१२६७-१२६९ ।

कपोतः यस्य दूतः	८३१
दिवि (-मथः)	६७८
दूतः यस्य कपोतः	८३१
मदन स्वधया	१२६७
मृत्युः	८३१
राजा	१२६७
स्वधया मदन्	१२६७

रथः १, १६४, २६; १००-१०१
एकचक्रः १००
एकः सप्तनामा अश्वः यं वहति १००
सप्त अश्वः यं वहन्ति १०१
सप्तचक्रः १०१
सप्तनामा एकः अश्वः यं वहति १००
सप्त युधान्त १००
रथन्तरं साम १, १६४, २५; १२३। १०,
१८१, १; ८३४ ।

रथमयः (सूर्यस्य, आदित्यस्य वा) १,
९०, ८; ३३। १०५, ९, ११; ४६, ४८।
१६४, ३, ७, १६; १०१, १०५, ११४।
१६४, २१-२२, ३६; ११९-१२०,
१२४ । ५, ६४, ४; २९७ । ४७, २;
३२९ (सूर्यो देवता) ।

गुणबोधकपदानि ।

आजिरासः	३२९
अनन्तासः	३२९
अनं द्यमानाः	३२९
अभीषावः	२९७
अमृतस्य नाभि आ तस्थिर्वांसः	३२९
अर्धगर्भाः	१३४
आ तस्थिर्वांसः अमृतस्य नाभिम्	३२९
ईयमानाः अपः	३२९
उसः	३२९
जलाश्रयः	२९७
गावः	३६
पन्थाः	३२९
परिभुवः	१३४

भुवनस्य रेतः	१३४
मध्वदः	१२०
माध्याः	३६
यम्यः	२९७
रेतः भुवनस्य	१३४
विपाश्रितः	१३४
सप्त	४६, १३४
सर्वशामाः	२९७
सुपर्णाः	४८, ११९-१२०
सुयन्तवः	२९७
सुयुजः	२९७
स्त्रियः सतीः पुंयः आहुः	११४
राका ५, ४२, १२; २७० । २, ३२, ८; १२६६ ।	

दशायन्ता	२७०
वहतिवा	२७०
शुभ्राः	२७०
राजानः	१०, १०९, ६; ७८०
सर्वं कृण्वानाः	७८०

रातिपावः ७, ३५, ११; ४५९। ४०, ६;
४९३ [देवपत्न्यः] ।

रायः ७, ३५, २; ४५०
मदः-माः १, १२२, २; ८१। २, ३१, १;
१५८ । ३, २०, ५; १६५-८, ८;
२२२ । ५, ४१, २; २४१ । ४६, २;
३२१। ५१, १३; ३५८। ६, ४३, १०;
३७२। ५०, १२; ३८९। ७, ४०, ५;
४२२ । ४१, १; ४९४ । ८, २९, ५;
५४३। ५४, ३; ५५३। १०, ५१, १-२;
६२७-६२८। ६४, ८; ६८३। ६५, १;
८२२ । ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,
७१८ । ९२, ९; ७२९ । ९३, ४, ७;
७३२, ७४२ x । १२६, ५; ७९६ ।
१२८, ९; ८०८

'रुद्रः' देवताया

गुणबोधकपदानि ।

अजरः	३७२
अप्याः	३८८
आयुधं तिस्रं हस्ते विभक्त	५४३

x अत्र ' रुद्रा ' इतिपदं वर्तते । द्विवचनत्वात् आश्विनोः विशेषणम् ।

उग्रः	५४३, ७९६
ऋष्वः	३७२
क्षयद्वीरः	७२९
गूर्तवचस्तमः	६२८
च्यवानः	६२८
जलाषः	४५४
जलाषमेषजः	५४३
तिग्मं आयुधं हस्ते बिभ्रत्	५४३
तूर्वयाणः	६२८
दभ्याय वन्वन्	६२८
दानाय वन्वन्	६२८
नृणां स्तुतः	७३९
नृभिः स्तवानः	४६८
पिता भुवनस्य	३७२
बिभ्रत् हस्ते तिग्मं आयुधम्	५४३
बृहन्	३७२
भुवनस्य पिता	३७२
मीढ्वान्	८२, २४१
रुद्रा [द्विवचनत्वेन अश्विनोः विशेषणं अत्र वर्तते]	७५२
वन्वन् दभ्याय	६२८
वन्वन् दानाय	६२८
शिकसे (चतुः)	७२९
शिबः	७२९
शुचिः	५४३
सुदानवः	७१८
सुपुत्रः	३७२
स्तवानः नृभिः	४६८
स्तुतः नृणाम्	७३९
खवान्	७२९
हस्ते तिग्मं आयुधं बिभ्रत्	५४३

उपमासूची ।

क्षौदः न ६२८ रेत इत ऊति सिञ्चत् ।	
रुद्रियः १०, ६४, ८; ६८३	
रोदसी (एकवचनम्-रुद्रस्य पत्नी) । ६, ५०, ५; ३८२ । १०, २२, ११; ७३१ ।	
देवी	३८२
रोदसी (द्विवचनम्-द्यावापृथिवी-इत्यर्थे)। [' द्यावापृथिवी ' द्रष्टव्यम्]	
२१ दै० [विश्वे देवाः]	

वत्सः (गोः)	१, १६४, २९; १२७
वनस्पतिः	१, ९०, ८; ३६ । ५, ४१, ८; २४७ । ४२, १६; २७४ । ७, ३४, २३; ४४६ । ८, २७, २; ५१३ ।
मधुमान्	३६
वना	५, ४१, ११; २५०
वनिनः	७, ३४, २५; ४४८ । ३५, ५; ४५३
वरुणः	१, ८९, ३; २१ । ९०, १-३, ९; २९-३१, ३७ । १०५, ६, १५, १९; ४३, ५२, ५६ । १०६, १, ७; ५७, ६३ । १०७, ३; ६६ । १२२, ७; ८८ । १८६, २-३; १४१-१४२ । २, २९, १, ७; १५१, १५७ । ३, ५४, १०, १८; १७९, १८७ । ५५, ६; १९७ । ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२९, २३२- २३३, २३५, २३८ । ५, २६, ९; २३९ । ४१, २; २४१ । ४२, १-२; २६०- २६१ । ४६, २, ५; ३२१, ३२४ । ४९, ३, ५; ३४२, ३४४ । ६, २१, ९; ३६१, ४२, १; ३६३ । ५०, १; ३७८ । ५१, ३, १०; ३९५, ४०२ । ७, ३४, १०-११, २४-२५; ४३५-४३६, ४४७- ४४८ । ३५, ६; ४५४ । ३६, २; ४६५ । ३९, ५, ७; ४८५, ४८७ । ४०, २, ४; ४८९, ४९१ । ८, २७, ३, ६-७, १५, १७; ५१४, ५१७-५१८, ५२६, ५२८ । २८, २-३; ५३५-५३६ । ८३, २, ४; ५६०, ५६२ । १०, ३१, ९; ५७६ । ३५, १०; ५८९ । ३६, १, १२-१३, ५९४, ६०५-६०६ । ६१, २४, २६; ६५०, ६५२ । ६३, ९; ६६९ । ६४, १२; ६८७ । ६५, १, ५, ९; ६९२, ६९६, ७०० । ६६, ५; ७११ । ९२, ६; ७२६ । ९३, ४; ७३९ । १०२, १-२; ७७५-७७६ । १२६, १-७; ७९२- ९८ । १६७, ३; ८३३ । ५१, ४, ६; १२०७-१२०८ । ८५, १७; १२२१ ।

९८, १; १२२२ । १, १३६, ६-७; १२६४-६५ । १०, १४, ७; १२६७	
---	--

वरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अदब्धः	४६५
अदब्धानि व्रतानि यस्य	१८७
अनुतं क्षत्रं अस्य	४३६
अन्वर्तिता	७७६
अपबाधमानः द्विषः	३१
अपाच्यः	५३६
अप्रमृताः महोभिः	३०
अमृतः	३१
अरिगूर्तः	१४२
इनः	४६५
इन्द्रसखा	४४७
इषः पर्वत्	१४२
उग्रः	४३५
ऋजुनीतिः	२२
ऋतधीतिः	४०२
ऋतस्य नेता	४९१
ऋतावान्	४८७
क्षत्रं अनुतं (विश्वायु) अस्य	४३६
गात्रुवित्	५२
गृणानः	६५२
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
दस्मः	३४२
दाश्वान्	६९६
देवः	१२६७
देववान्	६५२
बुधः	४४७
द्विषः अपबाधमानः	३१
धृतव्रतः	५१४, ७११
नदीनां पेशः	४३६
नव्यः	५२
नेता	७९७
नेता ऋतस्य	४९१
पतिः	२३३
पदवीः	४६५
पर्वत् इषः	१४२

पेषः नदीनाम्	४३६
प्रचेताः	५६०
भद्रः	३४२
मन्दन् स्वधया	१२६७
मन्द्रः	७३९
महोभिः अप्रमूराः	३०
मीढवान्	१२६४
युजः	५६०
राजा ४९१, ५३९, ८३३, १२६७	
राजा वर्षणीनाम्	७९७
राजा राष्ट्रानाम्	४३६
राष्ट्रानां राजा	४३६
वक्त्रराजसत्यः	४०२
वसव नः	३०
वसुः	३०
विप्रः	६५०
विश्वायु क्षत्रं अस्य	४३६
वृधः	५६०
यतानि अदब्धानि अस्य	१८७
याम्	३७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषाः	५२८
सालसवः	६०६
सम्राट्	६९६
सरण्युः अस्य सूनुः अश्वः	६५०
सरस्वान्	७११
सलिलः	७७५
सहस्रवक्षाः	४३५
सुकीर्तिः	१४२
सुक्षत्रः	३६३, ४०२
सुबन्धुः	६५२
सुरातिः	५२८
सुशंसः	४५४
सूरिः	१४२
स्मद्रातिपावः	५३६
स्वधया मदन	१२६७

उपमासूची ।

अभिः वने न ५७६ शोकं व्यसृष्ट ।
वसवः १, १०६, १-६, ५७-६२, ३१,

१, १५८ । ३, २०, ५; १६९ । ८, ८।
२२२ । ५७, ४; २२४ । ४, ५५, १
२२९ । ५, ४१, १८; २५७ । ४९, ५;
३४४ । ५१, १०; ३५५ । ६, ५०, ११;
३८८ । ५१, ५; ३९७ । ७, ३५, ६,
१४; ४५४, ४६२ । ३९, ३; ४८३ ।
४८, ४; ५०७ । ८, ५४, ३; ५५३ ।
१०, ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,
७१८ । १००, ७, ९; ७५७, ७५९ ।
१२६, ८; ७९९ । १२८, ९; ८०८ ।
१०, ९८, १; १२२२

गुणबोधकपदानि ।

उमयाः	४८३
देवाः	३८८, ४८३
पार्थिवाः	३८८
गुदानवः	५७-६२, ७१८
सुनीयाः	२२२

उपमासूची ।

रथं न युगात् ५७-६२ अहमः नः	
	निधिपतेन ।
वाक् १, १६४, ४१; १३९ । ७, ३६, ७;	
७४०	
अक्षरा	४७०
अष्टापदी	१३९
एकपदी	१३९
गौरीः	१-९
चतुष्पदी	१३९
चरन्ती	४७०
तक्षती सलिलानि	१३९
द्विपदी	१३९
नवपदी	१३९
बभ्रुवर्षी	१३९
सलिलानि तक्षती	१३९
सहस्राक्षरा	१३९
वाजाः-जाः १०, ३१, ५; ५७२ । ६४,	
१०; ६८५ । ९३, ७; ७४२	

उपमासूची ।

सवसा इव क्षा ५७२ इयं (स्तुतिः) भूयाः ।
वाजी (बृहदुक्तयुगः) । १०, ५६, १-३;

६१४-६१६
वाजिनः (अभि-वायु-सूर्याः) । १०, ६६,
१०; ७१६
वातः १, ८९, ४; २२ । ९०, ६; ३४ ।
१२२, ३; ८४ । १८६, १०; १४९ ।
५, ४१, ४; २४३ । ४६, ४; ३२३ ।
६, ५०, १२; ३८९ । ७, ३५, ४, ९;
४५२, ४५७ । ३६, ३; ४६६ । ४०,
६; ४९३ । ८, ५४, ४; ५५५ । १०,
३१, ९; ५७६ । ६४, ३; ६७८ ।
१२८, २; ८०१ । १३७, २-३; ८१०-
८११ । १४१, ५; ८२०

गुणबोधकपदानि ।

अपां वृषवान्	८४
अग्निधः	३२३
आश्वधामः	२४३
इधिरः	४५२
कण्वहीना	२४३
मिनः	२४३, ६७८
दिवः	२४३
दिग्भ्यः	२४३
दूतः देवानाम्	८११
देवानां दूतः	८११
भ्रजत्	४६६
परिजमा	४९३
मीढवान्	३८९
वाती द्वी	८१०
विश्वभोजः	८११
विश्वभोजः	२४३
सक्षणिः	२४३
सजोषाः	२४३
वाता-पर्वन्वा	१०, ६३, १०; ७१६
महिषस्य तन्यतोः	७१६
वायुः	१, १४, ३-४, १०; ६-७, १३ ।
	१६४, १, २६, ३२; २९, १२४, १३०
(मध्यस्थानः वायुः) ।	५, ४१, २, ६,
	१२; २४१, २४५, २५१ । ४२, १;
	२६० । ४३, ३, ९; २७९, २८५ ।
	५१, १०, १२; ३५५, ३५७, ४६, ४;

३६६ । ७, ३९, २; ४८२ । ४०, २;
४८९ । १०, ५६, १; ६१४ । ६४, ७;
६८२।६५, १; ६९२। ६६, ५; ७११।
९२, १३; ७३३ । ९३, ४, ७; ७३९,
७४२ । १००, २; ७५२ । १०९, १;
७७५ । ११४, १; ७८२

वायुः-गुणबोधकपदानि ।

अतूतर्पन्थाः	२६०
अमीढः	१२४
अश्रः	९९
असुरः	२६०
(आदित्यस्य) मध्यमः भ्राता	९९
आयुः	२४५
इषिरः	२५१
ऊर्जा पतिः	२५१
कविः	३६६
क्रन्ददिष्टिः	७५२
गोधुक्	१२४
घर्मः	१२४
चोदिता मतीनाम्	२८५
चोदिता वाजस्य	२८५
तवीयान्	२८५
तुरः	२८५
देवः	२४५-२७५
द्युतद्यामा	३६६
द्रविणोदाः	२८५
नभस्तरीयान्	२५१
नियुता	३६६
नियुत्वान्	४८२
पञ्चहोता	२६०
पत्यमानः	३६६
पनिता	२४५
परिज्मा	२५१, ७३९, ७४२
परिवीतः मातुर्योनौ	१३०
प्रुषद्योनिः	२६०
प्रथय्युः	३६६
बहुप्रजाः	१२०
बृहद्रथिः	३६६
भ्राता मध्यमः आदित्यस्य	९९

मतीनां चोदिता	२८५
मध्यमः भ्राता अस्य (आदित्यस्य)	९९
मयोभूः	२६०
मातरिश्वा	७७५, ७८२
मातुर्योनौ परिवीतः	१३०
रथप्राः	३६६
रथयुक्	२४५
वाजस्य चोदिता	२८५
विप्रः	२४५
विश्ववारः	३६६
विश्ववेदाः	७४२
शुचिपाः	७५२
सचित्	६८२
सुचेताः	६८२
सुहस्तः	१२४
वास्तोष्पतिः ५, ४१, ८; २४७ । १०, ६१, ७-९; ६३३-६३५	
दभ्रचेताः	६३४
व्रतपाः	६३३

उपमासूची ।

वृषा न फेनं अस्यत् आजौ ६३४ स्मत् आ परैदप ।	
विद्युत्	१, १६४, २९; १२७
विद्वान् पथः	५, ४६, १; ३२०
पुर एता	३२०
विधाता ६, ५०, १२; ३८९। १०, १६७, ३; ८३३	
विद् (श्) सर्वा- ५, २६, ९, २३९ । ८, २८, ३; ५३६	
देवाः ['विश्वे' इति उपपदरहितनिर्देशः ।] १, ८९, १-२, ८-९; १९-२०, २६-२७। २०, १-३; २९-३१ । १०५, ३, ७, १२-१४, १७; ४०, ४२-४४, ४९- ५१, ५४ । १०६, २, ७; ५८, ६३ । १०७, २; ६५ । १२२, ५, ७; ८६, ८८। १३९, १, ११; ९७-९८। १६४, १०; १०८ । १८६, १०-११; १४९- १५० । २, २९, १-६; १५१-१५६ । ३१, २, ७; १५२, १६४ । ३, २०, १;	

१६८ । ५४, २, ५, २१; १७१, १७४, १९० । ५५, १-२२; १९२-२१३ । ५६, २; २१४ । ४, ५५, १-२; २२९- २३० । ५, २६, ९; २३९ । ४१, १७; २५६ । ४२, १७; २७५ । ४३, १६; २९२ । ४६, २; ३२१ । ४९, ५; ३४४ । ५०, ३; ३४७ । ५१, १३; ३५८ । ६, ४९, १४; ३७६ । ५०, १-२, ९, ११, १३; ३७८-७९, ३८६, ३८८, ३९० । ५१, ६, ८-९, १२, १५; ३९८, ४००-४०१, ४०४, ४०७ । ५२, ५, १५; ४१३, ४२३ । ७, ३४, १, ८-९, १२-१३, १५, १८-१९; ४२६, ४३३- ४४, ४३७-३८, ४००-४२ । ३५, ११; ४५२। ३९, ६; ४८६ । ४०, १; ४८८। ४२, २-३, ६; ४९६-४९७, ५०० । ४३, १-५; ५०१-५०५ । ८, २, २७, १, ९-११, १८; ५२१, ५२०-२२, ५२९ । २८, १, ४; ५३४, ५२७ । ८३, १, ३, ६, ९; ५५२, ५६१, ५६४, ५६७ । १०, ३५, १, १०, १२, १४; ५८०, ५८९, ५९१, ५९३ । ३६, २-१२; ५९५-६०५ । ५२, ३-६; ६१०-६१३ । ५६, २-४; ६१५-६१७ । ६१, ७; २७; ६३३, ६५३ । १०, ६२, ७; ६६० । ६३, १-२, ४, ८, १२, १४; ६६१-६२, ६६४, ६६८, ६७२, ६७४ । ६४, १-२, १०-१२, १४; ६७६-७७, ६८५-८७, ६८९ । ६५, ३ ४, ७, ९, ११, १५; ५९४-९५, ६९८; ७००, ७०२, ७०६। ६६, १-२, ४, ८-९, १४; ७०७- ८, ७१०, ७१२, ७१४-१५, ७२० । ९२, ६, १०; ७२६, ७३० । ९३, २; ७३७ । १००, १, ३, ७; ७५१, ७५३, ७५७ । १०२, ३-७; ७७७-८१ । ११४, १-३; ७८२-८४। १२६, १, ८; ७९२, ७९९ । १२८, २-३, ७; ८०१- २, ८०६ । १३७, १, ५; ८०९, ८१३ । १४१, २; ८१७ । १५५, ५; ८२२ ।	
--	--

१५७, ४-५; ८२६-८२७। १६५, २-३; ८२८-३०। १, २७, १३; ११९९। ४५, १०; १२००। ९४, ८; १२०१। १६४, ५०; १२०२। ७, १०४, ११; १२०३। ८, ६३, १२; १२०४। ८०, १०; १२०५। १०, ५१, २, ४, ६, ८; १२०६-९। ५३, ४-५; १२१०-११। ७२, १-९; १२१२-२०। ८५, १७; १२११। ९८, ४, ६; १२१५, १२२७। १, १३६, ७; १२६५

विश्वदेवाः ।

['विश्वे' इति उपपदसहितनिर्देशः ।]
१, ३, ७-९; २-३। १४, १-२२; ४-१५। २३, १०; १६। ८९, ७; २५। १२१, १-१५; ६७-८१ [इन्द्रः वा]। १२२, ३, ११-१४; ८४, ९२-९५। १८६, २-४; १४१-१४३। २, ४१, १३-१५; १६५-६७। ३, ५४, १७; १८६। ५७, २, ५; २२४, २२७। ४, ४४, ६, २९९। ४५, ११; ३१९। ४६, ६; ३३३। ५१, १-३, ८, १३, ३५०-५३, ३५८। ६, २१, ११; ३६२। ४९, १५; ३७७। ५०, १४-१५; ३९१-३९२। ५१, ७। ३९९। ५२, ७-८, १०, १३-१४, १७; ४१४-१५, ४१७, ४२१-२२, ४२५। ७, ३५, ११; ४१९। ३९, ४; ४८४। ४८, ४; ५०७। ५०, ३; ५०८। ८, २७, २, ४५, ११, १४, १९-२१; ५१३, ५१५-१६, ५२-५२५, ५३०-३३। ६०, १-४; ५४२-५४३। ५४, ३; ५५३। ६९, ११, ५५८। १०, ३१, १-३, ६; ५६८-७०, ५७३। ३३, १; ५७९। ३५, १३; ५९२। ३६, १३; ६०६। ४२, १-२; ६०८९। ६३, ६, ११; ६६६, ६७१। ६५, १३-१४; ७०४-७०५। ६६, ५, ११, १३; ७११, ७१७, ७१९। ९३, ३, ७, ७३८, ७४३। १२८, २, ४-५; ८०१, ८०३-४। १५७, १; ८२३। ९८, ८; १२२९

'देवाः' 'विश्वे देवाः' च
उभयोः मिलित्वा
गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वाः २५, ३६२, ३७९,
४२१, ६२८
अग्निहोतारः ७१४
अक्षसाः २३०
अक्षन्धाः-सः ४०१, १९
अक्षधर्धितयः ३९५
अक्षितः अक्षयः परि पृथिव्या जाताः ६६२
अक्षितः अक्षो पुत्रासः १२१९
अक्षुहः ३, ५२०, ७१४
अक्षुष्टाः ३९२
अक्षन् यान्तः ५६४
अक्षरं वाक्शानाः १६८
अक्षरस्य प्रथेतसः ७०७
अक्षराणां अभिप्रियाः ७१४
अनर्वाणः ६०४, ६७४
अनागयः ६६४
अनिमिषन्तः ६६४
अन्तरिक्षे स्थ ४२१
अयः जनयन्तः ७०२
अपवाधमानाः द्विषः ३२
अपरीतासः १९
अपिप्राणी सदनो वसुयुः च १५०
अप्सरः २
अप्याः ३८८
अप्रमूराः महोभिः ३०
अप्रयुक्तन्तः ७१९
अप्रायुवः १९
अप्सु एकादश ९८
अप्सु देवाः ७००
अभिहोतारः १५२
अभिधायः ४०७, ५६७
अभिप्रियाः अप्वराणाम् ७१४
अभिषाचः ७०५
अमूराः २३०
अमृताः ३१, ६५३, ७०५-७, ७११,
७१२, १२०७

अमृतबन्धवः १२१६
अमृतस्य राजानः ९२
अमृतस्य सूनवः ४१७
अर्भकः न अस्ति ५४९
अर्भकाः ११९९
अर्भः १२५
अर्बन्तः ४९३
अर्वाभिः १५६
अर्वाणाः ६६४
अर्धं जनयन्तः ७०२
अर्धो अक्षितः पुत्रासः १२१९
असुराः ५३१
आप्तमः ३
आहमायाः ६६४
आपयः १५४
आर्या मता विश्वमन्तः ७०२
आशानाः ११९२
इन्द्रज्येष्ठाः १६७, ४०७, ५६७, ७०७,
१२०४
इन्द्रप्रसूताः ७०८
ईक्ष्वाः ११
ईक्ष्वाणासः ९४
ईक्ष्वां भुवनस्य ६६८
ईक्ष्वाः १४०
ईक्ष्वाः १९
उपस्थ ४२१
उद्यच्छसः ४०१
उद्यन्तः ४८४
उद्यच्छसः १२
ऊमाः ४८४
ऊतताः ७०५
ऊतधीतयः २३०, ३५१
ऊतसावः ३६२, ३७९, ७१४
ऊतुभिः हवनश्रुतः ४१८
ऊतस्य गोपाः ३९५
ऊतस्य धाराः दुहानाः ५०४
ऊतस्य परस्वसदः ४०१
ऊतस्य रथ्यः ४७१, ५६१

ऋतावृधः	१०, ३९१, ४१८, ६९४, ६९८, ७०७
ऋदूराः	१७९
एकादश अप्सु	९८
एकादश दिवि	९८
एकादश पृथिव्याम्	९८
एहिमायासः	३
ओमासः	१
ओषधीः जनयन्तः	७०२
कवयः	१७९, १८६
कविशस्ताः	३९१
कुमारकः न	५४९
कतवः	१९
क्षत्रियाः	७१४
क्षियन्तः	५६४
गणः	३०५
गां जनयन्तः	७०२
गिरः	४८५
गोजाताः	३८८
गोपाः	४०७
गोपाः ऋतस्य	३९५
धर्मस्वरसः	२३४
चन्द्राः	४८७
चर्षणीधृतः	२
चित्रराधसः	६९४
जगतः मन्तवः विश्वस्य	६६८
जग्मयः विदग्धेषु	२५
जनः	३६३
जनः दैव्यः	६२५, ६६९
जनयन्तः अपः	७०२
जनयन्तः अश्वम्	७०२
जनयन्तः ओषधीन्	७०२
जनयन्तः गाम्	७०२
जनयन्तः पर्वतान्	७०२
जनयन्तः पृथिवीम्	७०२
जनयन्तः ब्रह्म	७०२
जनयन्तः वनस्पतीन्	७०२
जनानां प्रयुजः	५७९
जाताः अद्भ्यः परि	

पृथिव्याः अदितेः	६६२
ज्योतिष्कृताः	७०७
ज्योतीरथाः	६६४
तनूनां रथ्यः	३९८
तुराः-रासः	४०८, ५६८, ५९३
तुविजाताः	६६६
तूर्णयः	३
त्रयः च त्रिशत् च	५५०
त्रातारः	३७८
त्रिंशति परः त्रयः	५३४
त्रिषु स्थन	४२
त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिशत् च	६१३
दक्षपितरः	३७२
दक्षस्य रथ्यः	३९८
दधानाः पुष्टिं प्रियरथे	८८
दशस्यन्तः	३८८
दस्माः	२३०
दाश्वांसः	२
दिवक्षसः	६२८
दिवः मध्ये तस्थुः	४७
दिवि एकादश	९८
दिवि सूर्य रोहयन्तः	७०२
दिवेदिवे रक्षितारः	१९
दिव्याः	३८८, ७००
दीधितिः विश्वेषां देवानाम्	१५०
दीर्घधृतः	७८३
दुहानाः ऋतस्य धाराः	५०४
दैव्यः जनः	६२५, ६६२
द्यविस्थ	४२१
द्विजन्मानः	३७९
द्विषः अपबाधमानाः	३१
धृतव्रताः	१५१, ७१४
न अर्मकः	५४९
न कुमारकः	५४९
नभोजुवः	९२
नरः	४०१
नाम येषां चारु महत्	१८६
नामानि विश्वा येषां नमस्यानि, यज्ञियानि, वन्थानि	६६२

निचेतारः	६५३
निरुधानासः	८८
नृचक्षसः	६६४
परनीवन्तः	१०
पर्वतासः	१२०४
पर्वतान् जनयन्तः	७०२
पार्थिवासः	३८८, ७००
पावकाः	३९५
पुत्रासः अदितेः अष्टौ	१२१९
पुष्टिं दधानाः प्रियरथे	८८
पूतदक्षाः	४०१
पूषरातयः	१६७
पृथिवीं जनयन्तः	७०२
पृथिव्या एकादश	९८
पृथ्निमातरः	२५
पृषदश्वाः	२५
प्रचेतसः	६६८, १२२१
प्रचेतसः अध्वरस्य	७०७
प्रयुजः जनानाम्	५७९
प्रातर्यावीणः	३५२
प्रावितारः	५१३
प्रियक्षत्राः	५२०
बृहन्तः	६०४
बृहच्छ्रवसः	७०७
बृहद्दिवा	७१४
ब्रह्म	७०२
ब्रह्मकृताः	७११
भद्राः	१९, १२१६
भुवना ईशिरे	१२२१
मध्ये तस्थुः महो दिवः	४७
मनवः	२५
मनुप्रीतासः	६६१
मनोः यज्ञत्राः	७०५
मनोः यज्ञियाः	६०३
मन्तवः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च	६६८
मन्त्राः	३९१
मन्त्राः	९२
मयोभुवः	४९३
महयन्तः	६९५

महान्तः	६०४, ६७४, ११९९
महिमघः	८९
महोभिः अप्रमृताः	३०
मेहनाः	१२०४
यजताः	३७९
यजत्राः १०-११, २६, १५६, १६४, ३९२, ३९८, ४०१, ४२१, ४२५, ५०४, ६५३, ६७१, ७९९	
यजत्राः मनोः	७०५
यज्ञानिष्कृतः	७१४
यज्ञियाः १८७, २६३, ४८४, ५५०, ७१२	
यज्ञियाः मनोः	६०३
यज्ञियाः यज्ञेषु	७३८
यज्ञेषु यज्ञियाः	७३८
यान्तः अभवन्	५६४
युज्याः	४८६
युवानः	१४०, ११९२
रक्षितारः दिवेदिवे	१९
रथ्यः ऋतस्य	४०१, ५६१
रथ्यः तनूनाम्	३९८
रथ्यः दक्षस्य	३९८
रथ्यः वचसः	३९८
राज्ञानः	९२
रातिषाचः	३७६, ७०५
रिशादसः	५१५, ५२१, ५५०
रुद्राः	१२०४
रोहयन्तः दिवि सूर्यम्	७०२
सन्धसः रथ्यः	३९८
वनस्पतीन् जनयन्तः	७०२
वन्ध्याः	२४६
वरिवोविदः	५२५
वक्त्रप्रशिष्टाः	७०८
वक्त्राः	७२६
वसवः ५७-६२, २२२, ३९२, ३९७, ३९९, ५१३, ५२०, ५३१, ७५७	
वसवानाः	३०
वस्तः	३०
वह्नयः	३, ७८३
वावशानाः अभवन्	१६८
विदधेयु जमयः	२५

विधानारः	२३०
वियानारः	२३०
विधाः	४०१
विश्वमहसः	७३८
विश्वदेवाः	३९९, ४५९
विश्ववेदसः ५१३, ५१५, ५२२, ५३०, ५३१-५३२, ७०७, ७११, ७४२	
विश्वेषां देवानां दीप्यतिः	१५०
विश्वजन्तः आर्या मता	७०२
वृषदह्ये भरद्वाजी सञ्जोषाः	१२०४
वृषासः	१४१
वृषणः	७१२
वृषासः	५५९
वैश्वानराः	५५२
मता विश्वजन्तः आर्या	७०२
शम्भुवः	४०, ५८
शुभंयावानः	२५
शुषाः	२४३
श्रुतरथे पुष्टिं दधानाः	८८
सञ्जोषसः १६८, ५१६, ५५३, ६५३	
सञ्जोषसः वृषदह्ये भरद्वाजी	१२०४
सतो महान्तः	५४९
सत्याः	३७९
सत्यधर्माणः	३५१
सधन्यः	३९५
सान्धवः	२३४
सपर्यवः	१७१
समनसः	५०४, ५१६
समन्यवः	५२५
सरातयः	५२५
सर्वे	८०१
सामभिः स्तूयमानाः	६५
सुकृतः	६६९
सुजाताः	३९५
सुजयोतिषः	१६८, ३७९
सुदानवः ५७-६२, ४०४, ५६४, ५६७, ७०२, १२००	
सुदुषाः	५०४
सुमित्र्यः	६२४

सुमुळोकाः	४१७
सुरातयः	६९५
सुप्रताः	३६३
सुसंरुधाः	१२१७
सुनवः अमृतस्य	४१७
सूरयः	६९५, ७१७
सूरचक्षमः	२५
सूर्य दिवि रोहयन्तः	७०२
सुताः	३९१-३९२
स्तूयमानाः मामाभिः	६५
स्थातुः मन्तवः विश्वस्य	६६८
स्वतवसः	१४९
स्वर्गिरः	७०५
स्वर्वन्तः	३७९
स्वर्विदः	७०५
स्वायः	६३३
हवनश्रुतः ऋतुभिः	४१७
हुवानाः	३९१

'देवाः, विश्वे देवाः' च देवतानां
उपमासूची ।

उमा इव स्वसराणि २ सुतं आ गन्त
तूर्णयः ।
ऋषिबन् ७२० देवान् स्वस्तये इच्छाणाः ।
कर्मारः इयः १२१३ ब्रह्मणस्पतिः
समधमत् ।
गीरः न क्षत्रोः २२०८ अभिजे जयायाः ।
गया ह त्वत् गीर्षं चित् पदि पितामसुबत्
७२९ एवमु वसुवः अस्मात् अहं विमुबत् ।
गीर्षं न ५७० ऊमाः दस्मं उपयन्ति ।
दिवि इव ज्योतिः ६६५ स्वं आ मिमीमा ।
नोभिः अपः न ५३१ विष्पिता पुठ अति
पर्वध ।
पथसा इव धेनुम् ६८७ मे धियं पीपयत् ।
पिता इव कितवम् १५५ यूयं मा कृशास ।
पितृवत् ७२० वसिष्ठासः वाचं अकृत ।
पुत्रासः न मातरं विभृथाः ५०३ देवाः
आ सवन्तु ।
पृक्षाः इव ६२५ मद्यन्तः देवाः मनुष्या
स्ववन्ते ।

प्रीताः इव ज्ञातयः ७२० अस्मे वसु कामं
अव धनुत ।
यथा भुवनानि यतयः १२१८ समुद्रे अत्र
आ गूळहं सूर्यं अजभर्तन ।
मनुष्वत् ५१ सत्तः होता विदुष्टरः ।
रथः न वाजी ४२६ शुक्रा देवी प्र एतु ।
रथीः इव अध्वानम् १२०८ आतरः अर्थ-
मर्तं अन्वावरीतुः ।
राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ७७७ न दूताय
प्रहे तस्य एषा ।
वनिनः न शाखाः ५०१ ब्रह्माणि विप्राः
विष्वक् वि दन्ति ।
विं इव १५५ मा माधि पुत्रे प्रभीष्ट ।
वृकः व तृष्णजं मृगमुष्टं आध्यः यन्तिः
सप्तिः न रथ्यः १६४ यजत्रा धीतिं अस्याः ।
स्वरं न ४४२ तपन्ति शत्रुं भूमा ।
विष्णुः १,९०,५,९; ३३,३७ । १६४,
२६; १३४ । १८६, १०; १४९ ।
३,५४,१४; १८३। ५५,१०; २०१।
५,४६,२-४; ३२१-३२३ । ४९,३;
३४२ । ५१,९; ३५४ । ६,२१,९;
३६१ । ४९,१३; ३७५ । ५०,१२;
३८९ ७,३५,९; ४५७ । ३६,९;
४७२। ३९,५; ४८५ । ४०,५; ४९२।
४४,१; ५०६ । ८,२५,१२; ५११ ।
२७,८; ५१९,२९,७; ५४५। ५४,४;
५५४ । ८३,७; ५६५ । १०,६५,१;
६९२ । ६६,५; ७११ । ९२,११;
७३१ । १२८,२; ८०३ । १४१,३;
५; ८१८,८२० । १८१,१-३; ८३४-
८३६ । १८४,१; ८३७ ।
' विष्णुः ' - गुणबोधकपदानि ।
अघ्नन् ५११
अद्वेषः १४९
उरुक्रमः १४९, १८३
उरुगायः ५४५
एषः हविर्भिः ४९२
गोपाः २०१
त्रीणि विचक्रमे ५४५

दधानः प्रिया अमृता धामानि २०१
दस्सः ३४२
देवः ४९२
धामानि प्रिया अमृता दधानः २०१
पाति परमं पाथः २०१
पुरुदस्सः १८३
भद्रः ३४२
भुवनानि विश्वा वेद २०१
महिमा ७११
मीद्वान् ३८९, ४९२
विचक्रमे त्रीणि ५४५
वेद विश्वा भुवनानि २०१
शम् ३७
सिन्धुः ५११
सुदानुः ५११
स्वयावा ५११
हविर्भिः एषः ४९२
वृकः (अरुणः) १,१०५,१८; ५५ ।
अरुणः ५५

उपमासूची ।

तथा इव पृष्ठयामयी ५५ उज्जिहीते
निचाध्य ।
वृषस्तुभः १०,६६,६; ७१२
वृष्टिः १,१६४,९,३३; १०७,१३१
गर्भः १०७, १३१
नाभिः १३१
पुत्रः १०७
वत्सः १०७
वेदिः ७,३५,७; ४४५। १०,११४,३;
७८४
धृतप्रतीका ७८४
चतुष्कपदां ७८४
युवतिः ७८४
वयुनानि वस्ते ७८४
वस्ते वयुनानि ७८४
सुपेशा ७८४
व्रजिनीः (निशाः) ५,४५,१; ३०९
व्रतानि ७,३५,९; ४५७

शंसः ७,३५,२; (प्र. पा.) ४५०। २;
(वृ. पा.) ४५०। १०,३१,१; ५६८
शंसः = नराशंसः । (४५०)
सत्यस्य सुयमस्य शंसः (४५०)
देवानां शंसः
शमी (गोत्वेन निरूपिता) १०,३१,
१०; ५७७
शम्भुः । ७,३५,१०; ४५८
शरीरम् १,१६४,३०; १२८
अनत् १२८
जीवम् १२८
तुरगात् १२८
परुल्यानां मध्ये आ ध्रुवं (शेते) १२८
शये १२८
शर्यावन्तः १०,३५,२; ५८१
संवत्सरः १, १६४, ३, १०, १२-१४;
१०१, १०८, ११०-११२ । ३, ५६,
२-५; २१५-२१८
गुणबोधकपदानि ।
अक्षः भूरिभारः १११
अजरम् ११२
अर्पितं सप्तचक्रे षष्ठरे ११०
आवृतं रजसा ११२
चक्षुः सूर्यस्य ११२
चक्रम् १११-११२
त्रिपाजस्यः २१६
त्रिमाता २१८
त्र्यनीकः २१६
त्र्युधा प्रजावान् २१६
द्वादशाकृतिः ११०
पञ्चपादः ११०
पञ्चारः १११
पिता ११०
पुरीषी ११०
पुरुधा २१६
प्रजावान् त्र्युधा २१६
माहिनावान् २१६
रजसा आवृतम् ११२
रेतोधाः शश्वतीनाम् २१६

विचक्षणम्	११०
विद्वेषु सम्राट्	२१८
विश्वरूपः	२१६
वृषभः	२१६
शश्वतीनां रेतोधाः	२१६
षष्ठरम्	११०
सनाभिः	१११
सनेमि	११२
सप्तचक्रम्	११०
सम्राट् विद्वेषु	२१८
सूर्यस्य चक्षुः	११२

संसारः १, १६४, ३२; १३०
परिवर्तः मातुर्योनी १३०
बहुप्रजा १३०
मातुर्योनी परिवर्तः १३०
सत्यस्य पतयः (पतयः सत्यस्य) ७,
३५, १२; ४६०
समुद्रः ६, ५०, १३-१४; ३९०-३९१ ।
७, ३५, १३; ४६१ । १०, ६६, १२;
७१७

सर्मा ५, ४५, ७-८; ३१५-३१६
सर्गः १०, ६४, ९; ६८४

मही ६८४
वक्षणी ६८४
सरस्वती (नदी) १, ८९, ३; २१ । ३,
५४, १३; १८१ । ५, ४२, १२; २७० ।
४३, ११; २८७ । ४६, २; ३२१ ।
६, ५०, १२; ३८९ । ५२, ६; ४१४ ।
७, ३५, ११; ४५२ । ३६, ६; ४३९ ।
४०, ३, ६; ४२०, ४९३ । ८, ५४, ४;
५५४ । १०, ६४, २; ६८४ । ६५, १;
१३; ६९२, ७०४ । १४१, ५; ८२० ।
१८४, २; ८३८ । २, ३२, ८; १२६६

गुणबोधकपदानि ।

उशती शर्मो वाचम्	२८७
वृताची	२८७
जुलुवाणा हवम्	२८७
दक्षस्यन्ती	२७०
मिन्धमाता	४१४

वृद्धिना	२७०
मयस्कृतम्	२१
मही	६८४
मीलद्रुषी	३८९
यजमा	३८७
वक्षणी	६८४
वक्षणी	४२३
वाचं शर्मो उशती	२८७
शर्मो वाचं उशती	२८७
शुभ्रा	२७०
समर्थी	४६१
मिन्धमाता	४६२
सुभगा	२१
हवं जुलुवाणा	२८७

सरस्वती (वाक्) ६, ४९, ७; ३२९ ।
७, ३९, ५; ४८१ ।

कन्या ३६९
चित्रायुः ३६९
पावीरवी ३६९
वीरपत्नी ३६९

सविता १, १०६, ७; ६३ । १०७, ३;
६६ । १६४, २६; १२४ । १८६, १;
१४० । २, ३१, ६; १६३ । ३, २०, ५;
१६९ । ५४, ११; १८० । ५५, १९;
२१० । ५६, ३ ७; २१९, २२० । ४,
५५, १०; २३८ । ५, ४२, ३, ५; २६२,
२६४ । ४६, ३; ३२२ । ४८, ५;
३३२ । ४९, १-२, ४; ३४०-३४१,
३४३ । ५०, १-२, ४-५; ३४५,
३४६, ३४८-३४९ । ६, २१, ९; ३६१ ।
४९, १४; ३७३ । ५०, १, ८, १३;
३७८, ३८५, ३९० । ७, ३१, १०;
४५८ । ३७, ८; ४८० । ४०, १;
४८८ । ८, २७, १२; ५२३ । १०, ३१,
४; ५७१ । ३५, ७; ५८६ । ३६,
१२-१४; ६०५-६०७ । ६४, ७;
६८२ । ६६, ४; ७१० । ९३, ९;
७४४ । १००, १, ३, ८-९; ७५१,
७५३, ७५८-७५९ । १२८, ७; ८०६ ।

१४१, ५; ८२० । १८१, १-३; ८३४-
८३६

सविता-गुणबोधकपदानि ।

अनर्वा	३४३
अप्रयुक्तम्	६३
अभिमातिवाहः	८०६
असीदः	१२४
अयुरा	३४१
आयोः अयेष्टं रत्नं विभजन्	३४१
आयोः रत्नं विभजन्	३४०
ईश्वरः	७५९
उपशो न प्रतीकम्	३८५
ऊर्ध्वः	५२३
कवीनां कवितामः	२६२
गोभुक्	१२४
धर्मः	१२४
अज्ञान पुरुषा प्रजाः	२१०
अयेष्टं रत्नं आयोः विभजन्	३४१
प्राता	६३, ८०६
प्रायमाणः	३८५
प्रीः आ पत्यमानः विद्वे	१८०
स्वप्ना	२१०
दक्षान	३८५
देवः ६३, १४०, १६९, २१०, २६२, ३४०-३४१, ३४५, ३४९, ३८५, ३९०, ४५८, ४८८, ६८२, ७४४, ७५३, ७५९	
गुतानः	८३६
चातुरा धाना	८०६
सुभगाः	३४८
मेता	३४५, ३४९
पतिः भुवनस्य	८०६
पायुः	७५९
पुषां पुरुषा प्रजाः	२१०
प्रजाः पुरुषा अज्ञान	२१०
प्रजाः पुरुषा पुषां	२१०
भुवनस्य पतिः	८०६
यजतः	३८५
रत्नवा	५८६
रत्नं विभजन् आयोः	३४०-३४१

रत्नी	४८८
रथरूपतिः	३४९
वरुण्यः	५२३
वाजी	८९०
विद्यथे त्रिः आ पत्यमानः	१८०
विभजन् आयोः रत्नम्	३४०
विभजन् आयोः रत्नं ज्येष्ठम्	३४१
विश्वानरः	१४०
विश्वरूपः	२१०
सत्यसवः	६०६
सुजिह्वः	१८०
सुदंसस्	७१०
सुहस्तः	१२४
द्विरण्यपाणिः	१८०

उपमासूची ।

उषसः न प्रतीकम् ३८५ सविता देवः ।
 रश्मि न ७४४ चर्षणीनां चक्रं नि योयुवे
 साम १,१६४,२५; १२३
 सिनीवाली १०,१८४,२; ८३८ । २,
 ३२,८; १२६६
 सिन्धुः-न्धवः १,९०,६; ३४ । १०५,
 १२,१९; ४९,५६ । १०६,७; ६३ ।
 १०७,९; ४६ । १२२,६; ८७ ।
 ३,५६,५; २१८ । ४,५५,३; २३१ ।
 ५,४९,४; ३४३ । ६,५२,४,६;
 ४१२,४१४ । ७,३५,८; ४५६ ।
 ८,५४,४; ५५४ । १०, ३५, २;
 ५८१ । ६४,९; ६८४ । ६५,१३;
 ७०४ । ६६,११; ७१० । ९२,५;
 ७२५

गुणबोधकपदानि ।

इषयन्तः	३४३
त्री षधस्थाः	२१८
देवी	२३१
पिन्वमानाः	४१२
मही	६८४
मातरः	५८१
वक्षणीः	६८४
श्रोतुरातिः	८७

२२ दै० [विश्वे देवाः]

सप्त	५५४
सुश्रोतुः	८७
सुकृतानि सुकृतां ७,३५,४; ४५२	
सुतम्भरः (ऋषिः) ५,४४,१३; ३०६	
उदञ्चनः	३०६
ऊधः विश्वासां धियाम्	३०६
विश्वासां धियां ऊधः	३०६
सत्पतिः	३०६
सुमतिः आदित्यानाम् १,१०७,१; ६४	
अर्वाची	६४
वरिविवित्तरा	६४

सुपर्णः १०,११४,४-५; ७८५-८६
 सुहवानि देवानाम् ७,३५,३; ४५१
 तृनुता १०,१४१,२; ८१७
 सूर्यः १,९०,८; ३६ । १०५,१२; ४९ ।
 १०६,७; ६३ (सविता वा) । १६४,२५;
 १२३ । २,३१,६; १६३ [सूर्यः
 सायनाचार्याः] । ३,५४,६; १७५ ।
 ५५,६-७; १९७-१९८ । ५,४४,४,
 ७-१०; २९७,३००-३०३ । ४५,
 १-२, ९-१०; ३०९-३१०, ३१७-
 ३१८ । ४७, ३-७; ३३०-३३४ ।
 ४८,३; ३३७ [इन्द्रात्मा सूर्यः] ।
 ४९,३; ३४२ । ६,५०,२; ३७९ ।
 ५१,१-२; ३९३-३९४ । ५२,५;
 ४१३ । ७,३५,८; ४५६ । ३६,१;
 ४६४ । ४४,१; ५०६ । १०,३१,९;
 ५७६ । ३५,२,८; ५८१, ५८७ ।
 ५६,१-२,७; ६१४-६१५, ६२० ।
 ६४,३; ६७८ । १०,९२,७,१४,७२७,
 ७३४ । ११४,१; ७८२ । १४१,
 ३; ८१८ । १८१,३; ८३६ । १,१३६,
 ६; १२६४

सूर्यः- गुणबोधकपदानि ।

अग्रुः	३००
अजः	१६३
अन्वप्रं चरति	१९८
अप्रयुच्छन्	६३

अबन्धनः	१९७
अरुषः	३३०
अर्कः	७८२
अर्यः	३९४
अश्मा	३३०
अहा विवर्तयन्	३३७
अहा संवर्तयन्	३३७
उक्षा	३३०
उच्चरन्	४१३
उरुचक्षाः	४५६
उसः	३४२
एकः	५५६
एकपात्	१६३
एकः वत्सः	१९७
कविः	१७५, ३००, ३१७
चरति अन्वप्रम्	१९८
जनित्रं परमं संवेशनम्	६१४
जनिवान्	३००
ज्योतिः तृतीयम्	६१४
ज्योतिः दिवि	६१५
तृतीयं ज्योतिः	६१४
त्राता	६३
दिवि ज्योतिः	६१५
दिवो मध्ये निहितः	३३०
देवः	६३, ३०९
देवानां जन्म सनुतः वेद	३२४
द्यौः	३३४, १२६४
द्विमाता	१९७-१९८
निहितः मध्ये दिवः	३३०
नृचक्षाः	१७५
परमं जनित्रं संवेशनम्	६१४
पश्यन् मर्तेषु ऋजु वृजिना	३९४
पुरुस्तात् शयुः	१९७
पृश्निः	३३०
भुध्रः	१९८
बृहन्	३३४, १२६४
मधुमान्	३६
युवा	३१७
ऋतुः	३१७

वत्सः एकः	१९७
विदधानि प्रीणि वेद	३९४
विदधेयु सम्राट्	१९८
विप्रः	३९४
विवर्तयन् अहा	३३७
विश्वं अनु प्रभूतः	५५६
विश्वाः उद्याः स्पष्टान् एति	५८७
ग्रजिना पश्यन् मर्तेषु ऋजु	३९४
ग्रथा	३३३
वेद देवानां मनुनः अन्म	३९४
वायुः परस्तान्	१९७
व्येनः	३१७
संवर्तयन् अहा	३३७
गंवैशनं परमे जानन्नन्	६१४
समाधः	३१७
समुद्रः	३३०
समुद्रः आसी स्तुतीनाम्	३०२
सम्राट् विदधेयु	१९८
सहसामानः	७८१
सुपर्णः	३३०
मुमहः	३७९
सूरः	३९४, ७२७
स्तुतीनां आसी समुद्रः	३०२
सोमः	५७६
स्वः	३०९
स्वावमुः	३००
होता	१९८

उपमासूची ।

अमति न ३१० अथि वि सात् ।	
उद्रा न नावम् ३१८ धीराः तं अनयन्त ।	
रुक्मः न दिवः ३९३ उदिता व्यर्थात् ।	
सूर्यामासा १०, ६४, ३; ६७८ । २२,	
१२; ७३२ । ९३, ५; ७४०	
दिविक्षिता	७३२
विचरन्ता	७३२
सदनाय सधन्या	७३२
सोमः १, १४, ४ (इन्द्रः), ७, १०, १३ ।	
८९, ३; २१ । २, ४१, १४; १६६ ।	
५, ४३, ४; २८० । ४६, ४; ३२३ ।	

५१, ९, १२; ३५४, ३५७ । ३, ५१, १, १४; ४०६ । ५२, ३; ४११ । ७, ३५, ७, ४५५ । ११, १; ४९४ । ८, २९, १; ५३२ । १०, ३५, २; ५८१ । ३६, ८; ६०१ । ५२, २; ६०९ । ५७, ६; ६२३ । ६१, १६; ६४२ । ६५, १, २, १०; ६९२, ६९३, ७०१ । १००, ४; ७५४ । १०९, १-२; ७७५-७७६ । १२८, ५; ८०४ । १४१, ३; ८१८ । १६७, ३; ८३३ । १, ४५, १०; १२०० । १३६, ६; १२९४
--

सोमदेवताया

गुणबोधकपदानि ।

अंशुः	२८०
अग्नि हिरण्ययम्	५३९
अवरथाः	६०१
अवां पुरुः	६०१
अभिधातिपाः	४११
अहणीयमानः	७७६
आहुतिः देवानाम्	६०९
इन्द्रवः	७
इन्द्रियः	६०१
गिरिष्ठाः	२८०
गोपाः ब्रह्मणः	४११
गृतथीः	६८३
चगूपदः	७
जीवधन्यः	६०१
तिरो अहयः	१२००
तीजः	१६६
देवानां आहुतिः	६०९
देवान्यः	६०१
द्वप्सः	७
पतिः भुवनस्य	३५७
बन्धः	५३९
ब्रह्मा	६०९
ब्रह्मणः गोपाः	४११
भुवनस्य पतिः	३५७
मत्सरः-राः	१६६, ७

मधुमान्	१६६
मधु रोम्यम्	१३
मधुः	७
मधुः रमः	२८०
मयोम	७७५
मादागिष्णवः	७
गुवा	५३९
राजा ६४२, ७५४, ७७६, ८०४, ८३३	
विप्रः	६४२
विपुणः	५३९
नि गेनुः	६४२
नेभाः	६४२
भृकः	२८०
समिद्ध	६०९
गरांसः	६०१
मुवानः	५८१
मुदयः	६०१
मुनरः	५३९
सोम्यं मधु	१३
स्तुनः	६४२
हिरण्यं अग्नि	५३९

उपमासूची ।

नेमि न चर्क अर्वाता
रघुद्रु ६४२ गदावन्तं रेभयत् ।
सोमजामयः १०, ९९, १०; ७३०
सोमसूत्रैचकभ्रमणानि १, १६४, १९; ११७

उपमासूची ।

पुरा न युक्ताः ११७ तानि रजसः वहन्ति ।
स्तोता १०, १३७, ४; ८१२
स्तोमः (देवस्तुतिः) १०, ९३, १२-१४; ७४७-७४९
उपमासूची ।
तना न सूर्ये ७४७ मे स्तोमं वायुधन्त ।
तथा इव अनपच्युनम् ७४७ मे स्तोमं । वायुधन्त ।
नेमधिता न पौंस्या ७४८ राया युक्ता हिरण्यमी वावर्त ।
वृथा इव विष्टान्ता ७४८ हिरण्यमी वावर्त ।

संवन्नं न अश्व्यम् ७४७ मे स्तोमं
वावृधन्त ।
स्वः १०, ३६, १; ५९४ । ६५, १; ६९२ ।
६६, ४; ७१०
बृहत् ६९२, ७१०
स्वधावान् (प्रश्नोत्तराणि) १०, ३१, ७-९;
५७४-५७६

स्वरूपां मितयः ७, ३५, ७; ४५५
स्वस्तिः ४, ५५, ३; २३१
हविष्कृतः १०, ६६, ६; ७१२
वृषणः ७१२
हस्तौ १०, १३७, ७; ८१५
अनामयित्नु ८१५
दशशाखौ ८१५

होता ७, ३९, १; ४८१ । १०, ३५, १०;
५८९ । ६४, १५; ६९०
इषितः ४८१
सप्त ५८९
होतारा दैव्या १०, ६६, १३; ७१९
पुरोहिता ७१९
प्रथमा ७१९

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(२) यजुर्वेद-मन्त्राणाम् ।

अंशः १०, ५; १३२५
अक्षरपंक्तिः छन्दः १५, ४; १३४८
अक्षाः १०, २८; १३२९
अग्निः ८, १९; ८४९ । १४, ७, २०;
८९८-८९९ । १५, ५४; ८६२ । १७,
७३; ८६३ । १८, ७६; ८६४ । २७,
५२; ८७३ । ८, २७; १२४४ । १५,
५०; १२४९ । १७, ५६; १२५० ।
२०, १४; १२५३ । ३३, ७; १२६१ ।
३३, ४८; १२६२ । ३, ९-१०; १२७९-
१२८० । ४, ७; १२८१ । ५, २, ९;
१२८३, १२८५ । ६, १६, २१, २६,
१२८९, १२९२, १२९४ । ९, ३१;
१३१९ । १०, ५, ९, २३; १३२५,
१३२६, १३२८ । ११, ६६; १३३२ ।
१५, १५, ५२; १३५९, १३६५ । १८,
३७; १३६६ । २१, ६१; १३७५ ।
२३, १३; १३७७ । २६, १; १३८४ ।
२८, २३; १३८६ । ३२, १५; १३८९ ।
३५, ३; १३९०
अंगिराः १२८५
अनाधृष्टं ते नाम १२८५
असितग्रीवः १३७७

आकृतिं प्रयुक् १२८१
आकृतिं प्रयुक् १३३२
आयुः १२८५
ऋषिः १३७५
ऋषीणां नपात् १३७५
गृहपतिः १३२६, १३२८
चित्तं प्रयुक् १३३२
जातवेदाः ८७३
ओष्ट्रा १२५०
ज्योतिः १२७९
तपस् दीक्षा १२८१
दीक्षा तपः १२८१
देवः ८६४, १२८५, १३७५
देवता ८५९
देवानां समिद्ध १२४४
दैव्यः १२५०
धर्ता १२५०
धामच्छद् ८६४
नभः नाम १२८५
पुरः (स्थः) १३५९
पूषा सरस्वती १२८३
प्रयुक् आकृतिम् १२८१, १३३२
प्रयुक् चित्तम् १३३२

प्रयुक्त मनः मेघाम् १३३२, १२८१
प्रयुक्त वाचो विधृतिम् १३३२
प्रयुक्त विज्ञानम् १३३२
मनः मेघां प्रयुक् १२८१, १३३२
मेघां मनः प्रयुक् १२८१, १३३२
वर्चः १२७९
वाचो विधृतिं प्रयुक् १३३२
विज्ञानं प्रयुक् १३३२
वैश्वानरः ८५८, १२९२, १३३२
सज्जुः रात्र्या १२८०
सज्जुः सवित्रा १२८०
सरस्वती पूषा १२८१
सूर्यरश्मिः १३५९
हरिकेशः १३५९
होता १३७५
अग्निः (भूः) ३, ५; १२७८
अग्निः (सोमः) ८, ५६; १३१०
अग्नीषोमौ २, १५; १२७४ । ६, ९;
१२८७
अग्नेः पुरीषम् १५, ३; १३४७
अग्नेः भागः १४, २४; १३४४
अध्व्या नामानि ८, ४३; १२४५

अदितिः	१२४५	अनुपपन्नः १४, १०, १८; १३३९, १३४१ । १५, ५; १३४९	१३३५। ११, ४१-४३, ६०; १३७१-१३७४ । २८, ४; १३९३
इडा	१२४५	अन्तरिक्षम् ३६, १७; ८७५ । ४, ७; १३८१ । ६, ७१; १३९० । ७, ७; १३९५ । २६, १; १३८४	गुणबोधकपदानि ।
काम्या	१२४५	अन्तरिक्षं छन्दः १४, १९; १३४२ । १५, ६; १३५०	आवृत्तिः ८५८
चन्द्रा	१२४५	अन्तर्यामिः प्रहः ७, ७७; १३०७	उभा १२६२
ज्योता	१२४५	अन्धः (सोमः) ८, ५४; १३०८	दशोभिः सप्तः १३३५
मही	१२४५	अपानः २३, १८; १३७८	नामन्या १२६२
रत्ना	१२४५	अपामार्गः ३५, ११; १३९९	भिषज्जा १२५२, १२५४
विश्रुतिः	१२४५	अन्धः १३, ७४; १३२५	आद्यान्वारिषः विवर्तः १४, २३; १३४३
सरस्वती	१२४५	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अष्टादशः प्रवृत्तिः १४, २३; १३४३
हव्या	१२४५	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	असुः (सोमः) ८, ५८; १३१२
अङ्गाङ्गं छन्दः	१५, ५; १३४९	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	असुरः (सोमः) ८, ५५; १३०९
अङ्गुपं छन्दः	१५, ४; १३४८	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	आम्ब [वसु] २०, १३; १३६८
अजा	४, २६; १२८०	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अमीत्यः छन्दः १४, १८; १३४१
अजाः छन्दः	१४, १९; १३४०	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अथर्वा (सोमः)	८, ५६; १३१०	अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अद्वारादि ६, २१; १२९२
अदितिः ९, ३४; १३२२ । १०, ९; १३२६ । १४, ४८; १३६४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अदित्यै भागः १४, २३; १३४३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अद्वारादि ६, २१; १२९२
अधरारणिः ५, ४; १२८३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अधिपतिः १५, १०; ८६१		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अधिपतिः छन्दः १४, ९; १३३८		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अधीतम् १५, ७; १३५१		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अधरः ६, २३; १२२३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
तपसः तपूः १२८२		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
प्रजापतेः वर्णः १२८२		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
उरुशर्वा १३२६		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
उर्वशी १२८३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
देवः १२९३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
हविष्मान् १२९३		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अनः (शकटम्) १, ८; १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
देवानां वह्नितमम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
देवानां जुष्टतमम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
देवानां देवहृततमम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
देवानां पशिततमम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
वह्नितमं देवानाम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
वह्नितमं सज्जिततमम् १२३४		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अनाधृष्टः छन्दः १४, ९; १३३८		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
अनुपद १५, ८; १३५२		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०
		अथर्वाभिः सप्तः १३३५	अहः १५, ६; १३५०

X शतपथ-ब्राह्मणतः एतेषां मन्त्राणां देवता ' ईश्वरः ' ।

आदिशः	६, १९; ८४५
आपः	६, २४; ८४६ । ३६, १७; ८७५ । १, १२; १२७० । ४, ७; १२८१ । ६, २३, २६; १२९३, १२९४ । २०, १८; १३७०, २६, १; १३८४
अग्नेगुवः	१२७०
अग्नेपुवः	१२७०
देवीः	१२७०, १२८१
बृहतीः	१२८१
भागधेयीः	८४६
विश्वेषां देवानाम्	१२९३
विश्वशम्भुवः	१२८१
विश्वेषां देवानां भागधेयीः	८४६
शान्तिः	८७५
हविष्मतीः	१२९३
आभिचारिकम्	७, १८; १२९८
आयुः	५, २; १२८३
आज्यम्	१२८३
आशीः	८, ६०; १२४६
आश्विनं ग्रहः	७, २७; १३०२
आहवनीयः	२, ५; १२७३
इध्मः	२, १; १२७२
अग्नये जुष्टः	१२७२
आखरेष्टः	१२७२
कृष्णः	१२७२
जुष्टः अग्नये	१२७२
इन्द्रः	५, ३०; ८४३ । ८, १५; ८४८ । १४, २०; ८५९ । १८, ७६; ८६४ । २७, ५२; ८७३ । १९, १२; १२५२ । २१, ५३; १२५४ । २८, ११; १२५६ । २, २२; १२७६ । ५, ७; १२८४ । ७, १५, २२-२३; १२९७, १३००- १३०१, १०-१२; १३१५-१३१७ । ९, ३३; १३२१ । १०, ५; १३२५ । १२; १३२६ । २३; १३२८ । २८; १३२९ । ३१; १३३० । १७, ४८;

१३६४ । २०, ३, ४१-४२, ६०, १३६७, १३७१-७२, १३७४ । २८, २३; १३८६ । ४३; १३८७ । ३२, १५; १३८९ । ३८, ४; १३९३	
देवः	८६४, १३८७
देवता	८५९
धामच्छद्	८६४
बृहद्वाङ्	१३००
मघवान्	८४८
वयस्वान्	१३००
वयोधाः	१३८७
विशौजाः	१३२९
वृद्धश्रवाः	१३२६
सुत्रामा	१३३०, १३७२, १३७४
इन्द्रः मरुतश्च	८, ५५; १३०९ [सोमः]
इन्द्रः	८, ५६; १३१० [सोमः]
इन्द्राग्नी	२, १५; १२७४ । ७, २३; १३०१; १२, ५४; १३३४

उपमासूची ।

कुमाराः विशिखाः इव	१७, ४८; १३६४
यत्र बाणाः संपतन्ति ।	
इन्द्राबृहस्पती	७, २३; १३०१
इन्द्रावरुणौ	७, २३; १३०१
इन्द्राविष्णू	७, २३; १३०१
इन्द्रस्य भागः	१४, २४; १३४४
इष्टका	१४, ७; ८५८ । २०; ८५९ । २६; ८६० । १५, १४; ८६१ । ५४; ८६२ । + १४, ९-१०, १७-१९, २३- २६; १३३८-४६ । १५, ३-१९; १३४७-६३
अधिपत्नी	८६१
बृहती दिक्	८६१
ईश्वरः	२३, १९-२०; १३७९-८०×
गणपतिः गणानाम्	१३७९
गणानां गणपतिः	१३७९
गर्भधः	१३७९

निधिपतिः निधीनाम्	१३७९
निधीनां निधिपतिः	१३७९
प्रियपतिः प्रियाणाम्	१३७९
प्रियाणां प्रियपतिः	१३७९
रेतोधाः	१३७९
वाजी	१३७९
वृषा	१३७९
उक्थम्	१५, १०; ८६१
वैश्वदेवामिमार्ते उक्थे	८६१
उक्थ्यम्	७, २८; १३०३
उक्थ्यग्रहः	७, २२; १३००
उखा	११, ५८, ६०, ६५; ८५४-५६, ११, ५८; १३३१
ध्रुवा अन्तरिक्षम्	१३३१
ध्रुवा दिशः	१३३१
ध्रुवा द्यौः	१३३१
ध्रुवा पृथिवी	१३३१
उत्क्रमः	१५, ५; १३५३
उत्क्रान्तिः	१५, ५; १३५३
उत्तरारणिः	५, २; १२८३
पुरुषाः	१२८३
उदीची दिक् सम्राट्	१५, १३; १३५७
उद्दिशः	६, १९; ८४५
उद्गाता*	२३, २७; १३८२

उपमासूची ।

गिरौ भारं हरन् इव	२३, २७; १३८२ ।
ऊर्ध्वं एवं उच्छ्रयतात् ।	
शान्तिं वाते पुनन् इव	२३, २७; १३८२ ।
मध्वं एजतु ।	
उपमृत २, १५; १२७४	
उपांशुः ग्रहः	७, ३, १२९६, १७, १३०२
उपांशुसवनम् (ग्रहः)	७, ३; १२९६ । २७; १३०२
उपावीः	६, ७; १२८६
तृणविशेषः	१२८६

+ अतोऽनन्तरं ' इष्टका ' आरोपित देवतानां नामानि खतन्त्रतया संगृहीतानि वर्तन्ते ।

* ' उवट-महीधर-भाष्यकारमते एतयोः मन्त्रयोः ' अश्वः ' देवता । शतपथब्राह्मणतः ' ईश्वरः ' देवता ।

* शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता ' राष्ट्रश्रीः ' ।

उर्वशी	५, २; १२८३
अधरारणिः	१२८२
उल्लखलम्	१, १४; १२७१
अग्निः	१२७१
आवा	१२७१
पृथुबुध्नः	१२७१
वानस्पत्यः	१२७१
उषा	१२, ७४; १२३५
सज्जुः अरुणीभिः	१२३५
उपाधानो	२१, १७; ८६६
मारी	८६६
मुपेशरा	८६६
उष्णिक् छन्दः	१४, १०; १२३७ ।
	१४, १८; १२४१
आर्क्ष (वाक्)	३६, १; १२२७
शतवः १३, ७; ८५८ । २, ३२; १२०७	
पट्	१२७७
धारः (उमन्तः)	१२७७
जीवः (वर्षाः)	१२७७
मन्युः (शिशिरः)	१२७७
रसः (वसन्तः)	१२७७
शोषः (ग्रीष्मः)	१२७७
स्वधा (शरद्)	१२७७
पितृणां स्वरूपभूताः	१२७७
श्रमवः	१४, २३; ८६०
श्रमूणां भागः	१४, २६; १२४६
श्रमयः	१५, १०; ८६१
एकत्रिंशः क्रतुः	१४, २३; १२४३
एकत्रिंशः धरुणः	१४, २३; १२४३
एवः छन्दः १५, ४-५; १२४८-१२४९	
येन्द्रवायवः प्रहः	७, ६७; १२०२
ओषधयः	३२, १७; ८७५
ओषधयः	१५, ७; १२५१
ओषधिः	६, १५; १२८८
कक्रप् छन्दः १४, ९; १२३८ । १५, ४; १२४८	
काव्यं छन्दः	१५, ४; १२४८
कुम्भं प्रति वचनम्	२०, १७; १२६९
कृषिः छन्दः	१४, १९; १२४२

कृष्णजिनम्	१, १४; १२७१
आदिद्याः लक	१२७१
जर्म	१२७१
श्रुगो प्रजः छन्दः	१५, ४; १२४८
शर्माः पञ्चविंशः	१४, २३; १२४३
शान्ती छन्दः १४, १०; १२३७ । १८; १२४१	
शिरः छन्दः	१५, ५; १२४२
शार्ङ्गपत्नः शर्मा	२, २०; १२७५
अनन्धायुः	१२७५
अशीतमः	१२७५
शोः छन्दः	१४, १९; १२४२
शोः (दक्षिणा)	७, ४७; १२०६
शाः (देवपत्न्यः)	३२, ४; १२०६
शान्धः	५, ३०; ८४२
शुद्धस्य ध्रुवः	८४३
प्रहः (गोमयात्रम्) ७, २१; ८४७ । ८, ४७; ८५० । ७, १२; १२३९ । १७; १२४० । २२; १२४१ । ३; १२२६	
शान्तिप्रहः	१२४०
प्राणाः ६, २६; १२९४ । ३८, १५; १२९४	

उपमासूची ।

विदुषः न गङ्गाम् ६, २६; १२९४ शमोन्	
मे उपम ।	
शोप	१०, ५; १२२५
श्वश्रुः	३२, १; १२२७
चतुर्विंशः शोनिः	१४, २३; १२४३
चतुर्विंशः धर्मम्	१४, २३; १२४३
चतुर्विंशः व्रजस्य विष्टम्	१४, २३; १२४३
चतुर्विंशः	१२४३
चत्वारिंशः स्तोमः	१५, ३; १२४७
चन्द्रमाः १४, २०; ८५९ । २, २१; १२३६ । २३, १३; १२७७	
अकृष्णः	१२७७
देवः	१२३६
देवता	८५९
वृक्षा	१२७७
मनसस्पतिः	१२३६

चर्म	१०, ५; १२२५
गोमस्य त्रिविधः	१२२५
उपमासूची ।	
नव उव १०, ५; १२२५ मे त्रिविधः स्यात् ।	
चान्दमः (आमाः) ७, २६; १२४२	
५, ९; १२८५	
देवानां उक्तमणम्	१२४२
छदिः छन्दः १४, ९; १२३८ १५, ५; १२४२	
छन्दांसि	६, २१; १२१२
जगती छन्दः १४, १०, १८; १२३७, १२४१	
जानघ्रं अमः	५, २; १२८३
शकलम्	१२८३
जुष्टः	२, १५; १२७४
जनयः (जनुभिः) १५, ७; १२५१	
जम्बु छन्दः १४, ३; १२३८ । १५, ५; १२४२	
जृणम्	६, ७; १२८६
उपावीः	१२८६
जजः १५, ७-८; १२५१-५२	
जयत्रिंशः प्रतिष्ठा १४, २३; १२४३	
जयोविंशः सम्भरणः १६, २३; १२४३	
त्रिककुप् छन्दः १५, ४; १२४८	
त्रिणव शोमः १४, २३; १२४३	
त्रिष्टुप् १५, ९; १२५३	
त्रिष्टुप् आश्रुः १४, २३; १२४३	
त्रिष्टुप् छन्दः १४, १०-१८; १२३७, १२४१	
रवक्	२०, १३; १२६८
आमतिः	१२६८
आनतिः	१२६८
रवहा	६, ७; १२८६
देवः	१२८६
दक्षिणाः ७, ४५, ४७; १२०४, १२०६	
दक्षिणामिः	२, २०; १२७५
संवेशपतिः	१२७५
दक्षिणा दिक् (विराट्) १५, ११; १२५५	
दर्मा (दृपणौ) ५, २; १२८३	

दिशः ६, १९; ८४५
 दुन्दुभिः ९, ११-१२; १३१६-१३१७
 दूरोद्दणं छन्दः १५, ५; १३४९
 देवाः ४, ११; ८४२ । १४, ७; ८५८ ।
 २०, ११; ८६५ । २, ७-११; १२३५-
 ३६ । ६, ११; १२३७ । ७, ३, १२,
 १७; १२३८-१२४० । ८, १८;
 १२४३ । ९, ३५-३६; १२४७ ४८ ।
 १५, ५०; १२४९ । १७, ५६; १२५० ।
 १८, ६०; १२५१ । १९, १२; १२५२ ।
 २०, १४; १२५३ । २६, १९;
 १२५५ । २८, ११; १२५६ । २९, २०;
 १२५७ । ३१, १४-१५, २१; १२५८-
 १२६० । ३३, ७, ४८, ८९; १२६१-
 १२६३ । ७, २२; १३०० । ९, ३५-
 ३६; १३२३-१३२४ । १७, ५२;
 १३६५ । २१, ६१; १३७५ । २३, ८;
 १३७६ । २६, २; १३८५ । २९, ४७;
 १३८८

गुणबोधकपदानि ।

अग्निनेत्राः १३२३
 आज्यपाः १२५६
 उत्तरासदः १३२३
 उपरिसदः १३२३
 ऋतावृधः १३८८
 गातुविदः १२३६
 जुषाणाः १२५६
 त्रयाः एकादश ८६५
 त्रयस्त्रिंशः ८६५
 त्रीणि शता त्रीं सहस्राणि त्रिंशत्
 नव च १२६१
 दक्षकतवः ८४२
 दक्षिणासदः १३२३
 दुवखन्तः १३२३
 परमे व्योमन् १२५१
 पश्चात्सदः १३२३
 पुरःसदः १३२३
 बृहस्पतिपुरोहिताः ८६५
 मनोज्ञाताः ८४२

मनोजुजः ८४२
 मन्थिपाः १२४०
 मरीचिपाः १२३८
 मरुक्नेत्राः १३२३
 यमनेत्राः १३२३
 वयोनाधाः - ८५८
 विश्वदेवनेत्राः १२४७, १२४८;
 १३२३
 शुक्रपाः १२३९
 सधःस्थाः १२५१
 सुराधसः ८६५
 सोमनेत्राः १३२३
 अनेहसा १३८८
 विश्वशंभुवौ १३२६
 शिवे १३८८
 द्यावापृथिवी ४, ७; १२८१ । ९, ७;
 १२८४ । ३, १६, २१; १२८९,
 १२९२ । १०, ९; १३२६ । २९, ४७;
 १३८८ । ३८, १५; १३९४
 द्यौः ३६, १७; ८७५ । २६, १; १३८४ ।
 १५, ६; १३५०
 द्यौ छन्दः १४, १९; १३४२
 द्वाविंशः वर्चः १४, २३; १३४३
 द्वेषः ६, १८; १२९०
 धर्मः १५, ६; १३५०
 घाता ३२, १५; १३८९
 विषणाः ६, २६; १२९४
 देवीः १२९४
 धीः ४, ११; ८४२
 दैवी ८४२
 यज्ञवाहस् ८४२
 वर्चोधाः ८४२
 सुतीर्था ८४२
 सुमृडीका ८४२
 ध्रुवम् ७, २८; १३०३
 नक्षत्राणि छन्दः १४, १९; १३४२
 नभः ६, २१; १२९२
 दिव्यम् १२९२
 नवदशः तपः १४, २३; १३४३
 निकायः छन्दः १५, ५; १३४९

निर्ऋतिः ९, ३५; १३२३
 वृचक्षाः सोमः ८, ५८; १३१२
 वृचक्षां भागः १४, २४; १३४४
 न्यग्रोधः २३, १३; १३७७
 पंक्तिः छन्दः १४, १०, १८; १३३९,
 १३४१
 पञ्चदश भान्तः १४, २३; १३४३
 पदपंक्तिः छन्दः १५, ४; १३४८
 पयः ३८, ५; १३९३
 परमात्मा २३, ६३; १३८३
 प्रथमः १३८३
 सुभूः १३८३
 स्वयम्भूः १३८३
 परमेष्ठी (सोमः) ८, ५४; १३०८
 परमेष्ठी छन्दः १४, ९; १३३८
 परिभूः छन्दः १५, ४; १३४८
 पर्जन्यः १५, १९; १३६३
 अर्वाग्वसुः १३६३
 उपरि १३६३
 वैष्णव्यौ १२७०
 पवित्रे (दमौ) १, १२; १२७०
 पशुः ६, २, १५; १२८७, १२८८
 पितरः २, ३२; १२७७ । १२, ४५;
 १३३३ । २९, ४७; १३८८ । ३५,
 १५; १३९४ ।
 ऊर्ध्वबर्हिषः १३९४
 चर्मपावानः १३९४
 सोम्यासः १३८८
 पितरः नाराशंसाः (सोमः) ८, ५; १३१२
 पुरुषः (जगद्बीजम्) ३१, १४-१५;
 १२५८-१२५९ । १३, ३८; १३३७
 मध्ये अग्नेः १३२७
 वेतसः १३२७
 हिरण्ययः १३२८

उपमासूची ।

सरितः न १३, ३८; १३३७ धेना
 सम्यक् खवन्ति
 पुरुरवाः (उत्तरारतिः) ५, २; १२८

पुष्करपत्रम्	१३, २; १३३६
अग्नेः योनिः	१३३३
अपां पृष्ठम्	१३३६
पुष्करं वर्षमानः	१३३६
पूतशुद्धाहवर्णायां	७, २८; १३०३
पुषा ३३, ४८; १३६२। ६, ९; १३८७।	
२, ३०; १३३०। १०, ५, ५; १३२५-	
१३३६। १८, ३७; १३६३। २०, २;	
१३६७। २९, ४७; १३८८। ३५, १५;	
१३९४	
विश्ववेदाः	१३३६
पुषा (सोमः)	८, ५४; १३०८
पृथिवी ३६, १७; ८७५। ३, ५; १३७८।	
५, ९; १८९। १०, २३; १३२८।	
१५, ६; १३१०। २६, १; १३८४	
अष्टमी	१३८३
तप्तगनी	१३८५
देवयजनी	१३७८
भूः	१३७८
भूतसाधनी	१३८४
माता	१३८८
विशायनी	१३८५
पृथिवी छन्दः	१४, १९; १३४२
प्रच्छन्न छन्दः	१५, ५; १३४९
प्रजापतिः ९, २४, ३४; १३१८, १३२२।	
१३, ९; १३२६। ११, ६६; १३३२।	
२३, ८, ६३; १३७६, १३८३। ३२,	
१५; १३८९	
प्रजानन्	१३१८
मनुः	१३३२
वाजस्य प्रसवः	१३१८
समाट्	१३१८
प्रजापतिः (सोमः)	८, ५४; १३०८
प्रजापतिः छन्दः	१४, ९; १३३८
प्रातपद्	१५, ८; १३५२
प्रतिमा	१४, १८; १३४१
प्रतिरवाः	३८, १५; १३९४
प्रतीची दिक् समाट्	१५, १२; १३५६
प्रविशः	६, १९; ८४५

पमा	१४, १८; १३४१
प्रज्ञा	१५, ९; १३५३
प्रस्तरः	७, ५; १३७३
कर्मसदाः	१३७३
स्यामगः	१३७३
प्राची दिक् रात्री	१५, १०; १३५४
प्राणः ३३, १८; १३७८। २६, १;	
१३९२	
शक्तिः २, १; १३७२। २, २२; १३७२	
जुष्टं शुभम्	१३७२
विद्यन् छन्दः	१४, ९; १३३८
वृद्धा छन्दः	१५, ५; १३४९
वृद्धी छन्दः १४, ९, १८; १३३८,	
१३४१	
वृद्धी दिक् आपिपनी १५, १४; १३५८	
बृहस्पतिः २, १०-१३; ८२९, ८४०।	
१४, २०; ८५८। १५, १०; ८६१।	
१८, ७६; ८६४। ४, ७; १३८१।	
२, १०-१२, ३२; १३१५-१३१७,	
१३२०। १०, ५; १३२५। १२,	
५४; १३३४। १७, ४८; १३३४	
देवः	८६४
देवता	८५८
धामच्छब्दः	८६४
प्रातिपत्ती हेतोनाम्	८६१
हेतोनां प्रातिपत्ती	८६१
अक्षयस्वपतिः ३३, ८९; १३६३। १७, ५२;	
१३६५	
अक्षा २, १२; ८३२। १८, ७६; ८६४।	
३६, १७; ८७५। १०, २८; १३२९	
देवः	८६४
धामच्छब्दः	८६४
आक्षयः	७, ४६; १३०५
आर्षेयः	१३०५
आर्षिः	१३०५
पितृमान्	१३०५
पैतृमत्याः	१३०५
सधातुदक्षिणः	१३०५
आक्षयः	२९, ४७; १३८८

अक्षः (सोमः)	८, ५८; १३१२
अगः ३३, ४८; १३६२। १०, ५; १३२५	
अवः (वायुः)	३, ५; १३७८
वाः (अग्निः)	३, ५; १३७८
अजः छन्दः	१५, ५; १३४९
मजा	२०, १३; १३५८
आर्षातिः	१३५८
मनः	३६, १; १३९२
मनः छन्दः १४, १९; १३४२। १५, ४;	
१३४८	
मन्था	७, १८; १३९८
मन्था (सोमः)	८, ५७; १३११
मयन्दे छन्दः	१४, ९; १३३८
महतः १३, ७०; ८५७। १४, २०; ८५९।	
३३, ४८; १३६२। २, २२; १३७६।	
९, ३२; १३२०। १०, २१, २३;	
१३३७-१३३८	
देवता	८५२
माकने शर्षः	१३६२
मा छन्दः	१४, १८; १३४१
मांसम्	२०, १३; १३७८
उपनिः	१३७८
मित्रः ३३, ४८; १३६२। ९, २३; १३११	
मित्रः (सोमः)	८, ५५; १३०९
मित्रा भागः	१४, २४; १३४१
मित्रावर्णी ६, २१; १३९२। ७, २३;	
१३०१। १०, ९, २१; १३२६-१३२७	
प्राप्ती	१३२६
मेघावर्णः ग्रहः	७, २७; १३०२
यजमानः (सप्तः)	१०, २८; १३२९
आभिभूः	१३२९
बहुकारः	१३२९
भयस्करः	१३२९
भयस्करः	१३२९
यजमान-आशीः	३, ५; १३७८
उपमासूची ।	
योः इव भूमा ३, ५; १३७८ अहं	
भूयासम् ।	
पृथिवी इव वरिष्णा ३, ५; १३७८ अहं	
भूयासम् ।	

यजुः (मनः) ३६, १; १३९२
यज्ञः ८, ६०; १२४६। ६, २१, १२९२।
१५, १८; १३६२
उत्तरात् १३६२
संयद्गुः १३६२
यन्ता १८, ३७; १३६६
यमः १२, ४५; १३३३
यमः (सोमः) ८, ५७; १३११
यमस्यः भृत्याः १२, ४५; १३३३
नूतनाः १३३३
पुराणाः १३३३
यवानां भागः १४, २६; १३४६
यामः (प्राणः) ३६, १; १३२२
रक्षाः १, १४; १२७१। ६, १६; १२८९
रज्जुः ५, ३०; ८४३
इन्द्रस्य स्युः ८४३
रथः १०, २१; १३२७
इन्द्रस्य वज्रः १३२७
रथन्तरं छन्दः १५, ५; १३४९
रात्रिः १५, ६; १३५०
रायस्पोषः १५, ७; १३५१
रुद्रः ३३, ४; १२६२। १०, २८; १३२९
सुशोकाः १३२९
रुद्रः (सोमः) ८, ५८; १३१२
रुद्राः १४, २०; ८५९। २, ५; १२७३।
९, ३४; १३२२। ११, ५८; १३३१।
२३, ८; १३७६
देवता ८५९
ल्लेपः ७, ३; १२३८
लोकं पृणा १२, ५४; १३३४
ध्रुवाः १३३४
लोमानि २०, १३; १३६८
प्रयतिः १३६८
वनस्पतिः २१, ६०; १३७४
सूपस्थाः १३७४
देवः १३७४
वनस्पतयः ३६, १७; ८७५। ९, १२;
१३१७। २८, ४३; १३८७

वपाश्रपण्यौ ६, १६; १२८९
वयः छन्दः १५, ५; १३४९
वयस्कृत् छन्दः १५, ५; १३४९
वरिवः छन्दः १५, ४; १३४८
१५, ५; १३४९
वरुणः १४, २०; ८५९। ३३, ४८;
१२६२। ९, ३३; २३२२। १०, २८;
१३२९। २०, १८; १३७०। २६, १;
१३८३। ३२, १५; १३८९
देवता ८५९
सत्यौजाः १३२९
वरुणः (सोमः) ८, ५६; १३१०
वसा ६, १९; ८४५। ६, १८; १२९०
अन्तरिक्षस्य हविः ८४५
रेट् १२९०
वसवः १४, २०; ८५९। ८, १८;
१३४३। २, ५, २२; १२७३, १२७६।
९, ३४; १३२२। ११, ५८; १३३१।
२३, ८; १३७६। १५, ६; १३५०
देवता ८५९
भरमाणाः १२४३
वहमानाः १२४३
वसूनां भागः १४, २५; १३४५
वाक् ३६, १; १३९२
वाक् कल्याणी २६, २; १३८५
वाक् छन्दः १४, १९; १३४२
वातः १४, २०; ८५९
देवता ८५९
वातः (सोमः) ८, ५८; १३१२
वायुः २३, १३; १३७७। २६, १;
१३८४। ३२, १५; १३८९। ३५,
३; १३९०
ऊर्ध्वनामाः १२८९
दक्षिणा १३६०
मारुतः १२८९
विश्वकर्मा १३६०
वायुः (भुवः) २, ५; १२७८। ६, १६;

१२८९। १५, १६; १३६०
वायुः (सोमः) ८, ५७; १३११
वावाताX २३, २६; १३८१
उपमासूची ।
गिरौ भारं हरन् इव १३८१ ऊर्ध्वानां
उल्लापय ।
शीते वाते पुनन् इव १३८१ अस्यै मर्ध्वं
एधताम् ।
वासस् (दक्षिणा) ७, ९७; १३०६
विदिषाः ६, १९; ८४५
विधर्ता १५, १४; ८६१
विधाः १४, ७; ८५८
विधृती (तृणद्वयम्) २, ५; १२७३
वियत् छन्दः १५, ५; १३४९
विराट् छन्दः १४, १०, १८; १३३९,
१३४१
विवधः छन्दः १५, ५; १३४९
विवृत् १५, ९; १३५३
विशालं छन्दः १४, ९; १३३८। १५
५; १३४९
विश्वकर्मा (सोमः) ८, ५४; १३०८
विश्वे देवाः २, १३, १८; ८४०-८४१।
५, ३०, ३५; ८४३-८४४। ६, १९,
२४; ८४५-८४६। ७, २१; ८४७।
८, १९, ४७, ५७; ८४९-८५१। ८,
५८; ८५२। ९, ३३; ८५३। १०,
५८, ६०, ६५; ८५४-८५६। १२, ७०;
८५७। १४, ७, २०, २६; ८५८-८६०।
१५, १४, ५४; ८६१-८६२। १७, ७३;
८६३। १८, ७६; ८६४। २१, १७;
८६६। २२, ५, २८; ८६७-८६८।
२४, २७, ८७०। २५, ५-६; ८७१-
८७२। २७, ५२; ८७३। २९, ६०;
८७४। ३६, १७; ८७५। ३९, ६;
८७६। २, २२; १२७६। ९, ३३;
१३२१। ११, ५८; १३३१। ३६, १;
१३९२। ३८, १५; १३९४

X शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता ' श्रीः '

२३ दे० [विश्वे देवाः]

तुरीयः	१०४८
दैवः	८८९, ९६५
प्रजया संरराणः	८८९
याजुहा	१०४८
वर्धयन् भाष्येन	११५९
वसुवान्	९८२
विश्वकर्मा	८८९
संरराणः प्रजया	८८९
सजातैः इदः	९०४

उपमासूची ।

तिष्ठते अथाय इव ९२२ विश्वाहा ते इत
सदं भरेम ।

अग्नीषोमा	६, ९३, ३; ११७८
अंगिरसः	२, १२, ४-५; १०९४-९५
आग्निरसानां आथाः पञ्चानुवाकाः	१९, २२, १; ११२२
अदितिः	३, ८, २; ९०३ । ६, ३१, १; ९३२ । ६, ४, १-२; ९३५-९३६ । ६८, २; ९४९ । २, २८, ५; ११०१ । ३, २२, १; १११३ । ६, १२, २; ११८८

गुणबोधकपदानि ।

जनित्रम्	११८८
देवी	९०३
मध्यमेष्टाः सजातानाम्	९०३
छत्रपुत्रा	९०३
सजातानां मध्यमेष्टाः	९०३

उपमासूची ।

माता इव ११०१ अस्ते शर्म यच्छ ।	
अनुमतिः	७, २४, १; १०६८
अन्तकः	१९, ९, ७; १०७५
अन्तरिक्षम्	६, ४०, १; ९३९ । १९, १५, ५; ९६८ । १७, २; ९७३ । १९, २; ९९३ । ५, ३, ३; १०४४ । १९, ९, १, १४; १०६९, १०८२ । २, १२, १; १०९१ । १९, २७, ३; ११५७ [बहुवचनम्] । ६, १०, २; ११७१ । १२०, १-२; ११८७-८८

गुणबोधकपदानि ।

उरु	१०६९, १०९१
उरुलोकः	१०४४
त्रीणि	११५७
प्राता	११८८
अपां नपात्	६, ३, १, ३; ९३२, ९३४
अभिचाराः	- १९, ९, ९; १०७७
अमृतम्	१९, १९, १०; १००१
अर्थमा	६, ४, २; ९३६ । १९, ९, ६; १०७४ । ६, १०३, १; ११८४
अभिना	३, ४, ४; ८९८ । ६, ३, ३; ९३४ । ४, ३; ९३६ । १९, १६, २; ९७१ । २०, १; १००३ । ३, २२, ४; १११६ । १९, २७, १५; ११६२ । ६; १०३, १; ११८४

देवाः	९३४
पुष्करस्तज्ज	१११६
शुभस्पती	९३४
अष्टर्षाः	१९, २३, ५; १०११
अष्टादशर्षाः	१९, २३, १५; १०२१
अहः	१०, २०, ४; १००६
आदित्यः	१९, ९, १०; १०७८
आदित्याः	१, ९, १; ८७७ । ३, ८, ३; ९०४ । ६, ४८, १; ९४८ । ७४, ३; ९५६ । १९, १६, २; ९७१ । १७, ४; ९७५ । ६, ११४, १-२; १०६५-६६ । १९, ९, ११; १०७९ । २, १२, ४; १०२४ । २, २७, १५; ११६९

गुणबोधकपदानि ।

अद्वणीयमानाः	९५६
उप्राः	९५६
यजत्राः	१०६६
यज्ञवाहसः	१०६६
उपमासूची ।	
यथा आदिरयाः अद्वणीयमानाः वसुभिः	
मरुद्भिः संवभूतः ९५६ एवा इह इमान्	
जनान् संमनसः कृधि ।	
आपः	६, ६२, १; ९४२ । ६८, २; ९४९ । १९, १७, ६; ९७७ । १८, ६; ९८७ ।

९, १; १०६९ । ४३, ७; १०८९ ।
४, ८, १-७; ११४२-४८ । १९, २७, ३; ११५७ । २७, २; ११६३

गुणबोधकपदानि ।

इषिरः	९४२
उदन्वर्ताः	१०६९
ओषधीमतीः	९७७, ९८७
त्रिभुजः	११५७
दिग्भ्याः	११४५-४७
पयस्वतीः	११४५, ११४७
पविष [स] स्वजानाः भ्याग्रं सिंहम्	११४८

उपमासूची ।

गुह्यः समुद्रं न ११४८ अप्सु अन्तः	
नमिवांसं द्विपिनं मर्त्ययन्ते ।	
आशाः	१९, ११, ६; ९६९
सर्वाः	९६९
आशाः	२, ३४, ५, ८९१ । १९, २४, ५- ६; १०४०-४१ । २७, ८; ११६२
इन्द्रः	१, ९, १; ८७७ । ३, ३, २-३, ६; ८९२-९३, ८९५ । ४, १, ८९६ । ८, १; ९०३ । १०, १२; ९१३ । १५, १, ६; ९१५, ९२० । ५, ८, २, ४-९; ९२४, ९२६-३१ । ६, ४०, २-३; ९४०-४१ । ९७, १, ३; ९५७-९५८ । ९९, १-३; ९५९-९६१ । ७, ९८, १; ९६७ । १९, १६, १; ९७० । १७, ८; ९७१ । १८, ८; ९८९ । १९, ९; १००० । २०, ३; १००५ । २४, २, ७-८; १०३७, १०४२-४३ । १, १६, २; १०४९ । १९, १; १०५२ । २६, २; १०५७ । ७, २४, १; १०६८ । १९, ९, ६, १२; १०४४, १०८० । ४३, ६; १०८८ । २, १२, ३; १०९३ । २, ३६, ४; ११०२ । ३, १९, १-८; ११०५-१२ । १९, २७, १, ९; ११५१, ११६३ । ६, १०३, २-३; ११८५-८६ । २०, १, २८, ५; ११९६

गुणबोधकपदानि ।

अभिभूः	९५७
अरातिं नुदन्	९१५
ईशानः	९१५
उग्रः	९३१, ९५८-९५९
उपसथः	८९६
एकजः	९५९
एकराट्	८९६
ओजसा प्रमृणम्	९५८
गोजितः	९५८
ग्रामजितः	९५८
वेत्ता	९५९
जयन्	९५८
तवस्तरः	१०४२
दस्यूनां हन्ता	९१३
दूरे चित् सन्	८९२
धनदाः	९१५
नमस्यः	८९६
नुदन् अरातिम्	९१५
पुरेता	९१५
पुरुनामा	९५९
प्रमृणन् ओजसा	९५८
मज्जवान् • ११०२, १११०, ११९६	
मज्जवान्	९७९, ९८९
महिमा	९१३
राजा	८९६
वज्रबाहुः	९५८
वणिक्	९१५
विप्रः	८९२
विशाम्पतिः	८९६
वीरः	९५८
वृत्रहा	९१९, ९३१
शचीपतिः	९१३, ९७०
सखा	१०५७
हन्ता दस्यूनाम्	९१३

उपमासूची ।

अविं वृकः इव ९२६ (शत्रुं) मथनीत ।
यथा आखरः मृगाणां सुषदा बभूव ११०२
एवा नारी सं श्रिया अविराधयन्ती अस्तु ।

यथा इन्द्रः अधस्पदं चक्रे ९३० तथा अहं
अमून् अधरान् कण्वे ।
कुलिशेन इव वृक्षम् १०९३ तं वृक्षामि ।
इन्द्राग्री ३, ३, ५; ८९४ । १९, १६, २;
९७१ । २०, १; १००३ । २७, १५;
११६९ । ६, १०३, १-३; ११८४-८६
इन्द्राणी १, २७, १-४; ८८३-८८६

उपमासूची ।

वेणोः अद्गा इव ८८५ अभितः अथायवः
असमृद्धाः ।
इन्द्रापूषणा ६, ३, १; ९३२
इन्द्रियाणि १९, ९, ५; १०७३
पञ्च १०७३
ब्रह्मणा संशितानि १०७३
मनः षष्ठानि १०७३
संशितानि ब्रह्मणा १०७३
ईश्वरः १, १९, १-४; १०५२-१०५५
उत्तमाः १९, २२, १२; ११३२
उत्तराः १२, २२, १३; ११३३
उत्पाताः १९, ९, ७; १०७५
पार्थिवान्तरिक्षाः १०७५
उपोत्तमाः १९, २२, ११, १३३१
उरुगायः २, १२, १; १०९१
अद्भुतः १०९१
उल्का १९, ९, ८-९; १०७६-७७
उषासानका ६, ३, ३; ९३४
ऋषभः १९, २७, १; ११५५
ऋषयः १२, २२, १४; ११३४
एकर्चाः १२, २३, २०; १०२६
एकादशर्चाः १२, २३, ८; १०१४
एकानृचाः १९, २३, २२; १०२८
एकाष्टका ३, १०, ५; ९०९ । १०, १२-
१३; ९१३-९१४

गुणबोधकपदानि ।

इन्द्रपुत्रा	९१४
दुहिता प्रजापतेः	९१४
प्रजापतेर्दुहिता	९१४
सोमपुत्रा	९१४

एकोनविंशतिः १९, २३, १६; १०२२
ओषधयः १९, १९, ५; ९९६ । ३, २३,
६; १०६३ । १९, ९, १, १४; १०६९,
१०८१ । २, ३६, ८; ११०४ [एक व.]

गुणबोधकपदानि ।

दैवीः १०६३
यासां द्यौः पिता १०६३
यासां पृथिवी माता १०६३
यासां समुद्रः मूलम् १०६३
वीरुधः १०६३
कृताकृतम् १२, ९, २; १०७०
कृत्याः १९, ९, ९; १०७७
क्षुद्राः १९, २३, २१; १०२७ । २२, ६;
११२६
क्षेत्रस्य पानी २, १२, १; १०९१
गणाः १९, २२, १६; ११३६
गावः १२, २, ८; १०७६ । १४, २, ५३-
५८, ११९०-११९५
लोहित क्षीराः १०७६
प्रहाः १९, २, ७, १०; १०७५, १०७८
चान्द्रमसाः १०७८
दिविचराः १०७५
प्रावा ६, ३, २; ९३३
चक्षुः ६, १०, ३; १०७२
चन्द्रमाः चन्द्रः वा १, २७, १-४; ८८३-
८६ । १९, १९, ४; ९९५ । ३, २३, २-६;
१०५८-६३ । १९, ४३, ४; १०८६
(चन्द्रः) । ३, १९, १-८; ११०५-
१२ । ४, ८, १-७; ११४२-४८ । ७,
११८, १; ११४९ । १९, २७, २; ११५६
(चन्द्रः) । ५, २७, १-५; ११५५-६२ ।
६, १९, १-३; ११७३-७५

गुणबोधकपदानि ।

राजा	११४९
वृत्रहा	११५६
सोमः	११४९
चतुर्ऋचः	१९, २३, १; १००७
चतुर्दशर्चाः	१९, २३, ११; १०१७

जरिमा	२,२८,३; १०९२
जातिवेदाः	३,१०,६; ९१०। १५,८; २२२। ५,८,२; ९२४। १८,१६,५; ९७१। ३,२२,४; २११६। १९,२७, १५; ११६२
तृचाः	१९,२३,१९; १०२५
तृतीयाः शंखाः	१९,२२,१०; ११३०
त्रयोदशर्चाः	१९,२३,१०; १०१६
त्रिहत्	१९,२७,१-१५; ११५९- ११६३
खट्वा	३,८,२; ९०३। ६,३,३; ९३४। ६,४,१; २३५
देवः	९३४
दक्षिणाः (दानानि)	१९,१९,६; ९२७
दधत्यं सीसम्	१,१६,२-४; १०४९-५१
दधी	३,१०,७; ९११
गुणबोधकपदानि ।	
पूर्ण	९११
यज्ञान् सम्भुजती	९११
सम्भुजती यज्ञान्	९११
सपूर्ण	९११
वशाः	१९,२३,७; १०१३
विवा	१९,१५,६; ९६९। १९,१९,३; ९९४
दिशः	१९,२०,२; १००४
देवाः [पदम् ' विश्वे देवाः ' ।]	
देवजनाः	६,१९,१; ११७३। २३,१; ११७६
देवताः	१९,२७,१०; ११६४
त्रयस्त्रिंशत्	११६४
देवयानाः पन्थानः	३,१५,२; ९१६
देवोपसर्गाः	१९,९,९; १०७७
द्यौः	६,३,१; ९३२। १९,९,१,१४; १०६९,१०८२। २,२८,४; ११००। १९,११,६; ११२०। २७,३; ११५७। ६,१०,३; ११७२। ५३,१; ११७९। १२०,१-२; ११८७-११८८
गुणबोधकपदानि ।	
सिखा	११५७
पिता	११८७,११८८

प्रचेताः	११७२
बृहत् सादनम्	११७०
शान्ता	१०६९
सादनं बृहत्	११२०
द्यावापृथिवी	३,४,५; ८९९। ६,३,२; ९३३। ४०,१; ९३९। ६०,१; ९४२। १९,१५,५; ९३८। १७, ५; ९७३। २०,४; १००३। ३,२३, १-६; १०५८-६३। ५, १२, १, ५; १०९१, १०९५। २, २८, ४; ११००

गुणबोधकपदानि ।

उमे	८९९, ९६८
ऋतावरी	९४२
पयसा पयस्वती	९४२
यज्ञिये	९४२
सिधे	८९९
संविदाने	११००
यौथिपता	६,४,३; ९३७
द्वादशर्चाः	१९,२३,९; १०१५
द्वितीयाः शंखाः	१९,२२,९; ११२९
धनपतिः	२,३६,६; ११०३
धाता	३,८,२; ९०३। १९,२०,१; १००३। १९,९,१२; १०८०
धूमकेतुः	१९,९,१०; १०७८
धेनुः	३,१०,१; ९०८
नक्तम्	१९,१५,६; ९६९
नक्षत्राणि	१९,१९,४; ९९५। १९,९,९; १०७७ (एकवचनम्)। ६,१०,३; ११७२
वन्काभिहतम्	१०७७
नद्यः	१९,१९,७; ९९८
नवर्चाः	१९,२३,६; १०१२
नाकाः	१९,२७,४; ११५८
त्रयः	११५८
निष्ठाताः	१९,९,९; १०७७
वस्त्राः	१०७७
निर्गतिः	७,७०,१-२; ९६२-९६३। ६,६३,१-२; ११८१-११८२
देवी	११८१

निर्हतम्	१९,९,८; १०७३
नीलनखाः	१९,२२,४; ११२४
पञ्चदशर्चाः	१९,२३,२२; १०१८
पञ्चर्चाः	१९,२३,२; १००८
पतत्रिणः	१,१५,१-४; ८७९-८८२
पत्नी क्षेत्रस्य	२,१२,१; १०९१
पर्यायिकाः	१९,२२,७; ११२७
पर्जन्यः	६,४,१; ९३५
पथमानः	६,१९,१-२; ११७३-११७४
पथवः	३,१०,६; ९१०

गुणबोधकपदानि ।

ग्राम्याः	९१०
विश्वरूपाः	९१०
सप्त	९१०
पद्मपतिः	२,३४,१; ८८७
पितरः	२,१२,४-५; १०९४-९५
सोम्यासः	१०९५
पूर्वा रूपाणि	१९,९,२; १०७०
पूषा	१,९,१; ८७७। १९,२०,१; १००३
पृथक् सहजी	१९,२२,१९; ११३९
पृथिवी	३,८,१; ९०२। १९,३९,१; ९९२। १९,९,१,१४; १०६९, १०८२। २,०८,४; ११००। १९, २७, ३; ११५७ [बहुवचनम्]। ६, १, १; ११७०। ५३,१; ११७९। १२०,१; ११८७

गुणबोधकपदानि ।

तिष्ठः	११५७
प्रचेताः	११७२
माता	११८७
शान्ता	१०६९
प्रजाः	१९,१९,११; १००२
प्रजापतिः	३,१०,१३; ९१४। १५,६; ९२०। ६,६८,२; ९४२। १९,१७, ९; ९८०। १८,९; ९९०। १९, ११; १००२। १९,२०,२; १००४। ७,२४,१; १०६८। १९,२,६,१२; १०७४, १०८०

गुणबोधकपदानि ।

पतिः भुवनस्य	१००४
प्रजननवान्	९८०, ९९०
भुवनस्य पतिः	१००४
सत्यधर्मा	१०६८
प्रजापतेः दुहिता	३, १०, १३; ९१४
इन्द्रपुत्रा	९१४
सोमपुत्रा	९१४
प्रथमः (शंखाः)	१९, २२, ८; ११२८
प्रदिशः ३, ४, २; ८९७ । १९, २०, २;	
१००४	
देवीः	८९७
पञ्च	८९७
प्राजापत्यौ	१९, २३, २६; १०३२
प्राणः १९, २७, ७; ११६१ । ६, १०, २;	
११७१	
बृहस्पतिः ६, ७३, १-२; ९५१-९५२ ।	
१९, १७, १०; ९८१।१८, १०; ९९१ ।	
२०, १; १००३ । २४, ४, ८; १०३९,	
१०४३ । १९, ९, ६, ११; १०७४,	
१०७९ । ३, २२, १-६; १११३-१८ ।	
६, १०३, १; ११८४ । १४, २, ५३-	
५८, ११९०-९५	
विश्वदेवान्	९९१
ब्रह्माः	१९, २७, ४; ११५८
त्रयः	११५८
ब्रह्मा+ह्मा १९, १९, ८; ९९९ । २३,	
१९; १०३५ । ९, १२; १०८०	
(ब्रह्मा) । ४३, ८; १०९० (ब्रह्मा) । २,	
१२, ६-७; १०९६-९७ । १९-२२,	
२०-२१; ११४०-११४१ (ब्रह्मा)	
ब्रह्मचारिणः	१९, १९, ८; ९९९
ब्रह्मणस्पतिः ६, ४, १; ९३५।५, ३; ९३८ ।	
७४, १; ९५४ । १९, २४, १; १०३६	
भगः ६, ४, २; ९३६ । ७४, १-२;	
९५४-९५५ । १, २६, २; १०५७ ।	
६, ५३, १; ११७९ । १०३, १; ११८४	
भवः	६, ९३, २; ११७७
भव्यम्	१९, २, २; १०७०

भूतम्	१९, ९, २; १०७०
भूतानि विश्वा	६, १९, १; ११७३
भूतकृतः १९, १६, २; ९७१ । २७, १५;	
११६२	
भूमिः १९, ९, ८; १०७६ । ६, १२०,	
२; ११८०	
तीर्थतीः	१०७६
माता	११८०
वेप्यमान्त	१०७६
मङ्गलिकाः	१९, २३, २८; १०३४
मनः	१९, ९, ४; १०७२
परमेष्ठिन्	१०७२
ब्रह्मसंशितम्	१०७२
मनवः	६, १९, १; ११७३
मनुष्येषवः	१, १९, २; १०५३
अस्ताः	१०५३
अस्याः	१०५३
दैवीः	१०५३
विश्वञ्चः	१०५३
शरवः	१०५३
मरुतः ३, ४, ४; ८९८ । ६, ३, १; ९३२ ।	
६, ४, २; ९३६ । ६, ७४, ३; ९५६ ।	
७, ९८, १; ९६७ । ५, ३, ३; १०४४ ।	
७, २४, १; १०६८ । २, १२, ६;	
१०९६ । ३, १२, ६; १११० । ६, ९३,	
३; ११७८	
इन्द्रवन्तः	१०४४
विश्ववेदसः	११७८
स्वर्काः	१०६८
महर्षयः	१९, ९, ११; १०७९
देवाः	१०७९
महाकाण्डः	१९, २३, १८; १०२४
महागणाः	१९, २२, १७; ११३७
मातरिश्वा १९, २०, २; १००४ । १९,	
२७, ४; ११५८ [बहुवचनम्] ।	
त्रयः	११५८
मित्रः १, ९, १; ८७७ । ३, ८, १; ९०२ ।	
६, ४, २; ९३६ । १९, १९, १; ९९२ ।	
१९, ९, ६-७; १०७४-७५ । २, २८, ५;	

११०१ । ३, २२, २; ११२४ । ६,	
१०३, १; ११८४	
मित्रराजा	११०१
मित्रावरुणा ३, ४, ४; ८९८ । १९, ११,	
६; ११२०	
उमा	८९८
सृत्युः १९, ९, १०; १०७८ । ६, ९३, १;	
११७६ । ६, ६३, २-३; ११८२-८३	
अधमारः	११७६
निर्ऋतः	११७६
वम्हः	११७६
यज्ञः ३, १०, ७; ९११ (बहुवचनम्) ।	
६, ९७, १; ९५७ । १९, १९, ६; ९९७	
अभिभूः	९५७
यमः १९, २०, १; १००३ । ६, ९३, १;	
११७६ । ६, ६३, २-३; ११८२-८३	
सृत्युः	११८२
यमस्य सादनम्	२, १२, ७; १०९७
योनिः ३, २३, २-६; १०५८-६३	

उपमासूची ।

बाणः इव इषुधिम् १०५९ पुमान् गर्भः	
ते योनिं आ एतु ।	
राजा ३, ४, ६-७; ९००-९०१ । ४, ८,	
१; ११४२ । ६, ९३, २; ११७७	
राज्याभिषेकः ४, ८, १-७; ११४२-४८	

उपमासूची ।

सुभुवः समुद्रं न ११४८ अप्सु अन्तः	
तस्थिवासं द्वीपिनं मर्त्यजन्तु ।	
रात्रिः	३, १०, ७; ९११
राहुः	१९, ९, १०; १०७८
रुद्राः ६, ६८, १; ९४८ । १९, १७, ३;	
९७४ । १९, १९, ३; १०५४ (छः) ।	
१९, ९, १०, ११; १०७८-७९ । ३,	
२२, २; १११४ (छः) । ६, ९३, २-३;	
११७६-७८	
तिग्मतोजसः	१०७८
रोहिताः	१९, २३, २३; १०२९
लोकाः	१९, ९, १२; १०८०

वनस्पतयः १९, ९, १४; १०८२ । ६,
१०, १; ११७०
वर्षाति ६, १०, २; ११७१
वरुणः १, २, १; ८७७३, ३, ३; ८९३ ।
४, ५; ८९९१, ८, १; ९०२ । ६, ४, २;
९३६ । ६८, ३; ९५० । ७३, १-२;
९५१-९५२ । १९, १७, ४; ९७५ ।
१८, ४; ९८५ । २०, १; १००३ ।
१, १६, २; १०४९ । १९, ९, ६-७
१८७४-७५ । २, २८, ५; ११०१ ।
३, २२, २; १११४ । ७, ११८, १;
११४९ । ६, ९३, ३; ११७८

गुणबोधकपदानि ।

आदित्यवान् ९८५
पुतयक्षः ११७८
मित्रराजा ११०१
राजा ८९३, ८९९, १००३
वर्षः ३, २२, १-६; १११३-१८
वसवः १, २, १; ८७७६, ६८, १; ९७८ ।
७३, १-२; ९५१-९५२ । ७४, ३;
९५६ । ७, ९८, १; ९६७ (वसुः) ।
१९, १७, १; ९७२ । ९, ११, १०७९ ।
२, १२, ४; १०९४
वाक् १९, ९, ३; १०७१
देवी १०७१
परमेष्ठिनी १०७१
महासंशिता १०७१
वातः १, १५, १-४; ८७९-८८२ (वाताः) ।
६, ६२, १, ९४२ । ५, ३, ३; १०४४ ।
१९, २७, २; ११५६ । २७, २; ११६१
वृत्रहा ११५६
वातबोधकम् २, १२, १; १०९१
वातापवर्जम् ६, ९३, ३; ११७८
वायुः २, ३४, ४; ८९०३, ८, १, ९०२ ।
६, ६८, १; ९४८ । १९, १७, २, ९७३ ।
१८, २; ९८३ । १९, २; ९९३ । ४३,
२, १०८४ । २७, १; ११५५ । ६,
१०, २; ११७१ । ५३, १; ११७९
अधिपतिः ११७१

अन्तर्क्षवान् ९८३
देवः ८९०
प्रजया संरारणः ८९०
प्रजापतिः ८९०
संरारणः प्रजया ८९०
वास्तोष्पतिः ६, ७२, ३; ९५३
विशतिः १९, २३, १७; १०२३
विदग्धाः १९, २२, १८; ११३८
सर्वे आत्तरसः ११३८
विश्वान् १९, ९, ७; १०७५
विश्वकर्मा १९, १७, ७; ९७८ । १८, ७,
९८८
सप्तशतवान् ९८८
विश्वे देवाः १, ९, १; ८७७ । ३, ३, ५;
८९४ । ३, ४, ४; ८९८ । ३, ८, ४;
२०५ । ७, ८, १; ९६७ । १९, १०, १०;
९८१ । १९, २०, ४; १००६ । ५, ३;
४, ६; १०४५, १०४७ । ६, ११४, ३;
१०६७ । ७, २४, १; १०६८ । १९,
९, १२, १४; १०८०, १०८२ । २,
१२, ५; १०९५ । २८, ५; ११०१ ।
३, १९, १-८; ११०५-१२ । ३, २२,
१-५; १११३-१८ । ६, १२३, १-५;
११५०-५४ । ६, ९३, ३; ११७८ ।
१४, २, ५३-५८; ११९०-९५
[विश्वे देवाः कवलंन ' देवाः इति ' पदेन
निर्देशः] । १, ९, २; ८७८ । २, ३४,
२, ८८८ । ३, ३, २; ८९२ । ३, १०,
७, ११-१२; ९११-९१३ । ३, १५,
५-६; ९१९-९२० । ५, ८, ३; ९२५ ।
६, ६४, १-३; ९४५-९४७ । ६, ९७, १;
९५७ । ७, ७०, २; ९६३ । १९,
१२, २०; १००१ । २०, ३; १००५ ।
२४, १; १०३६ । ५, ३, ३, ५;
१०४४, १०४६ । १, १९, ४; १०५५ ।
१, २६, १; १०५६ । ६, ५५, २;
१०६४ । ६, ११४, १; १०६५ । १२,
९, ११-१२, १४; १०७९, १०८०,
१०८२ । २, १२, २; १०८२ । ३,
२२, २; १११४ । ११, ११, ५;

१११९ । ४, ८, २; ११४३ । ७,
११८, १; ११४९ । १९, २७, ६-७;
११६०-६१ । १९, २७, ११-१३;
११६५-६७ । २०, १२८, ५; ११९६ ।
२०, १३५, ४, १०; ११९७-९८

गुणबोधकपदानि ।

अन्तर्क्षे एकादश ११६६
अमृताः १११९
इन्द्रज्येष्ठाः १११०
इन्द्राक्षिताः ९६३
आतक्षाः १११९
आस्विजः देवानाम् १११९
एकादश अन्तर्क्षे ११६६
एकादश दिवि ११६५
एकादश शृंगव्याम् ११६७
दिवि एकादश ११६५
देवानां आस्विजः १११९
देहिनः १००५
गुराजयः १००५
पृथिव्या एकादश ११६७
आजन्तः ११६०
मनोः यजत्राः १११९
महर्षयः १०७९
यजत्राः मनोः १११९
यज्ञिवासः १११९
विश्वदेवाः ९६७
विश्ववायसः १११४
विश्वदेवसः ११६०, ११७८

उपमासूची ।

यथा पूर्वे संज्ञानानां देवाः भागं उपासते
९४५ तथा मनांसि सं जानताम् ।
यथा अहं विश्वाः पृतनाः अमि असासि
९५७ एवा विभेम अमिहोत्रा इहं हविः ।
विश्वकपः ४, ८, ३; ११४४
विश्वा भूतानि ६, १९, १; ११७३
विश्वसहिः १९, २३, २७; १०३३
विष्णुः ६, ३, १, ९३५५, ३, ३; १०४४ ।
१२, २, ६; १०७४

सूर्यः	१९, १९, ९; १०००
वृषा	१९, २७, १; ११५५
वेदाः	१९, ९, १२; १०८०
वैश्वानरः	३, १५, ७; ९२१ । ६, ६२, १; ९४२ । ६, ५३, २; ११८०
अदब्धः	११८०
तनूपाः	११८०
वैश्वानरी	६, ६२, २-३; ९४२-९४४
इडा	९४४
वैष्टपाः	१९, २७, ४; ११५८
त्रयः	११५८
त्रायौ	१९, २३, २५; १०३१
शंखाः तृतीयाः	१९, २२, १०; ११३०
शंखाः द्वितीयाः	१९, २२, ९; ११२९
(शंखाः) प्रथमाः	१९, २२, ८; ११२८
शचीपतिः	१९, २७, १४; ११६८
शर्वः	६, ९३, १-२; ११७६-११७७
अस्ता	११७६
नीलशिखण्डः	११७६
शान्तयः	१९, ९, १४; १०८२
शान्तानि	१९, ९, १३; १०८१
शिखिनः	१९, २२, १५; ११३५
शुकः	६, ५३, १; ११७९
बृहन्	११७९
श्येनः	७, ७०, ३; ९६४
अजिराधिराजौ	९६४
संपातिनौ	९६४

उपमासूची ।

अजिराधिराजौ सम्पातिनौ श्येनौ

इव ९६४

यः कश्च नः अभि अघायति ।

श्रोत्रम् ६, १०, १; ११७०

षडृचाः १९, २३, ३; १००९

षष्ठः १९, २२, २; ११२२

षोडशर्चाः १९, २३, १३; १०१९

सप्तशतयः ६, ४०, १; ९३९ । १९, १७, ७; ९७८ । १९, ९, १२; १०८०

सप्तदशर्चाः १९, २३, १४; १०२०

सप्तर्चाः १९, २३, ४; १०१०

सप्तमाष्टमौ १९, २२, ३; ११२३

समुद्रः १९, १९, ७; ९३८ । १९, २७, ३-४; ११५७-११५८

चत्वारः ११५७

त्रयः ११५८

सरस्वती ६, ८, २; ९३३

देवी ९३३

सुभगा ९३३

सविता ३, ८, २-३; ९०३-९०४ ।

३, १५, ६; ९२० । ६, ४०, १-२; ९३९-९४० । ६, ६८, १, ३; ९४८, ९५० । ९९, ३; ९६१ । १९, १६, १; ९७० । २०, १; १००३ । २४, १, ८; १०३६, १०४३ । २, २३, २; १०५७ । ७, २४, १; १०६८ । १९, २७, ४; ११६८ । ६, १९, ३; ११७५ । ६, ५३, १; ११७२ । ६, १०३, १; ११८४ । १-३; ९५४-९५६

चित्रराधा १०५७

देवः १०३६

सत्यधर्मा १०६८

सादनं यमस्य २, १२, ७; १०९७

सामगाः २, १२, ४; १०९४

तिस्रः अशीत्यः १०९४

सामनस्यम् ३, ८, ५ ६; ९०६-९०७ । ६, ६४, १-३; ९४५-९४७ । ६, ७४, १-३; ९५४-९५६

उपमासूची ।

यथा अहणीयमानाः उग्राः आदित्या

वसुभिः मरुद्भिः संबभूवुः ९५६ एवा

इमान् जनान् इह संमनसः कृधि ।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते

९४५ तथा सं वः मनांसि जानताम् ।

सिन्धवः १, १५, १-४; ८७९-८८२ । ६, ३, १; ९३२

सप्त ९३२

सीसं दधत्यम् १, १६, २-४; १०४९-५१

उपमासूची ।

यथा नः अवीरहा असः १०५१ (तथा)

त्वा सीसेन विध्यामः ।

सूर्यः १, ९, २; ८७८ । ६, ६२, ३; ९४४ । १९, १७, ५; ९७६ । १८, ५; ९८६ । १९, ३; ९९४ । २०, ४; १००६ । ४३, ३; १०८५ । २७, २, ४, ७; ११५६, ११५८ [बहुवचनम्], ११६१ । ६, १०, ३; ११७२

गुणबोधकपदानि ।

अधिपतिः ११७२

गोसारः त्रयः ११५८

त्रयः गोसारः ११५८

द्यावापृथिवीवान् ९८६

विश्वतोमुखः ११६१

सूर्यौ १९, २३, २४; १०३०

सोमः ३, ३, ३; ८७३ । ८, ३; ९०४ । १५, ६; ९२० । ६, ३, २; ९३३ । ५, ३; ९३८ । ४०, १; ९३९ । ६८, १, ३; ९४८, ९५० । ७३, १-२; ९५१-९५२ । २७, १; ९५७ । ९९, ३; ९६१ । १९, १७, ३; ९७४ । १८, ३; ९८४ । १९, ५; ९९६ । २०, १; १००३ । २४, ३-४, ८; १०३८-३९, १०४३ । ४३, ५; १०८७ । ७, ११८, १; ११४९ । १९, २७, २; ११५६ । ६, ५३, १; ११७२

गुणबोधकपदानि ।

अभिभूः ९५७

राजा ९४८, ९५०, १००३, १०३९, ११४९

रुद्रवान् ९८४

स्वोमः १९, २७, ३; ११५७

त्रिवृत् ११५७

स्वर्गः ६, १२०, ३; ११८९

हरिताः १९, २२, ५; ११२५

हिरण्यम् १, ९, २; ८७८

होतारः ५, ३, ५; १०४६

देवाः १०४६

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(४) सामवेद-मन्त्राणाम् ।

अग्निः	१५०३-४; १४०२-३	गावः	४४४; १३९९	यावापृथिवी	६११; १३९७
सहस्रकृत	१४०२	विश्वधायासः शुनयः	१३९९	पर्जन्यः	२९९; १३९५
अमयः विश्वे	१५०३-४; १४०२-३	त्वष्टा	२९९; १३९५	मरुतस्त्वष्टिः	२९९; १३९५
अदितिः	२९९; १३९५	देवाः	३६८, ४४२, १८७२; १३९८-९९, १४०४	मित्रः	४५५; १४०१
इन्द्रः	४५३, ४५५, १४००-१४०१	अरेपसः	१३९९	वदणः	४५५; १४०१
इन्द्रवृहस्पती	६११; १३९७			विश्वे देवाः	५९१, १३९६

(५) विश्वे-देवाऽन्तर्गता यजुर्वेदीय

नाना-देवताः ।

अंशः	१०, ५; १४२६	अमीषामौषध, ८, २३; १७६९, १८४८।	अनन्तः	३०, १९; २२५८	
अंशस्यपतिः	२२, ३१; १६२३	२५, ५; २०२२	अनुमातिः	२४, ३०; १९०३। २९, ६०; २११२	
अकूपारः	२४, ३१; १९२१	अभ्युल्लयः	१८, ०२; १४८५	अनुष्टुभः	२४, १२; १७९३
अक्षराजः	३०, १८; २२४५	अतिकुष्टः	३०, ५; २१, २	अन्नः	३०, १९; २२५७
अग्निः १०, ५; १४१७। १८, १६;		अतिष्ठन्तः	२४, १३; १७२९	अन्तकः	३०, ७, १८; २१४२, २२५१। ३९, १३; २३१५
१४५७। १८, २२; १४७५। २२,		अति यत्	२२, ८; १५४६	अन्तरम्	२५, २; १९७७
६, २७; १४९२, १६९२। २४, २, ६,		अथर्वाणः	३०, १५; २२१४	अन्तरिक्षम्	१८, १८; १४७०। २२,
९, १४, २३, ३१। १७६९, १७५८,		अदितिः	१४, २९; १४४४। १८, २२;	२७, २९; १६२५, १३५६। २४, १०।	
१७७३, १८००, १८४६, १८९४।		१४८३। २२, २०; १५५७। २४,		२६, ३४; १७८०, १८६३, १९१४।	
२५, ३-४; २०००, २००४। २९,		५, ९; १७५५, १७७६। २५, २, ४, ८;		२५, ८; २०५९। ३०, २१; २२७४।	
५८-६०; २०८४, २१००, २१०३।		१९८८, २००८, २०५१, २०५७।		३९, १; २२८६	
३०, २१; २२७१। ३९, १; २२८५		२९, ६०; २११०		अन्त्यः	२२, ३२; १७०१
अग्निः अनीकवान् २४, १६; १८१३।		अदितिः महा	२२, २०; १५५८	अन्यः मौवनः	९, २०; १४१४। २२,
२९, ५९; २०९५		अदितिः सुमृष्टीका	२२, २०; १५५९	३२; १७०२	
अग्निः गृहपतिः	२४, २४; १८५५	अधर्मः	३०, १०; २१६५	अन्धाह्वयः	२५, ७; २०४४
अग्निः वैश्वानरः	२९, ६०; २१११	अधिपतिः	९, २०; १४१६। २२, ३०,	अन्यतोरण्यम्	३०, १९; २२६४
अमामरुतः	२४, ७; १७६६	३२; १६७४, १७०४			
अमाविष्णु	२४, ८; १७७०	अध्या	२५, ३; १९९८		

अपानः २२, २३, ३३; १५७४, १७०८
अपां मोदः २२, ६; १७७४
अपिजः ९, २०; १४०७ । २२, ३२;
१६२६
अप्सरसः २४, ३७; १९३३
अभिभूः २२, ३०; १६७३
अभूतिः ३०, १७; २२४१
अभ्रः २२, २६; १६०६
अयवाः १४, ३१; १४५५
अयाः ३०, ८; २१४९
अरण्यम् २२, ३९, १९४३ । २५, ३;
१९९९
अराधि ३०, ९; २१५७
अरिष्टिः ३०, १३; २२००
अर्कः १८, २२; १४७७
अर्णवः २२, २५; १६०१
अर्धमासाः २२, २८; १६३४ । २४,
३७; १९२९
अर्माः ३०, ११; २१७३
अर्यमा १०, ५; १४२८ । २५, ४; २०१२
अर्वाची दिक् २२, २४, २७; १५८१,
१५८३, १५८५, १५८७, १५८९,
१५९१, १६३१
अवन्तः ३०, १२; २१९०
अवका २५, १; १९५४
अवक्रन्दः २२, ७; १५०५ । २५, १;
१९५९
अवरस्परः ३०, १९; २२६२
अववर्षत् २२, २६; १६१२
अवस्फूर्जत् २२, २६; १६१०
अवाची दिक् २२, २४; १५९०
अवान्तरदिशः २४, २६; १७६६
अवारः ३०, १६; २२२८
अवार्याः २५, १; १९७०-७१
अशानिः २५, २; १९८१
अश्विनौ २४, १, ३, २३, ३६; १७३१,
१७४३, १८४९, १९२५ । २५, ३;
२००२
अश्वमेधः १८, २२; १४८०
अशुः २२, ३०; १६६७

अहः (१) २४, २५, ३६; १८५६,
१९२३ । ३०, २१; २२७९
अहर्पतिः ९, २०; १४१०
अहर् सुगधः ९, २०; १४११
अहोरात्रे १४, ३०; १४४९
अहोरात्राणि २२, २८; १६३३
अहोरात्रयोः सन्धयः २४, २५; १८५८
आक्रमणम् २५, ३, ६; १९९५, २०४१
आक्रया ३०, ५; २१२०
आत्मा २२, ३३; १७१६
आदित्याः ११, ६०, ६५; १४३१,
१४३८ । १४, ३०; १४५३ । २२,
२८; १६४६ । २४, ६, २७, ३९;
१७६१, १८६९, १९४१ । २५, १, ६;
१९६२, २०३५
आधि आधीतः २२, २०; १५५४
आध्यक्ष्यः ३०, ११; २१८२
आनन्दः ३०, ६, २०; २१२९, २२७०
आन्त्यायनः विनशी ९, २०; १४१३
आपः २२, २५, २९; १५९२, १६६१ ।
२४, २१, ३७; १८३८, १९३१ । २५,
१-२, ५, ७, ९; १९६१, १९८३,
२०२०, २०४७, २०७३ । ३९, २;
२२९३
आपिः ९, २०; १४०५
आयनः २२, ७; १५२४
आयासः ३९, ११; २२९७
आयुः २२, ३३; १७०६
आतेवाः १४, २६; १४४५ । २२, २८,
१६३८
आर्तिः ३०, ९, १७; २१५४, २२४२
आशाः २२, २७; १६२९
आशिक्षा ३०, १०; २१७०
आसीनः २२, ७; १५१४
आस्कन्दः ३०, १८; २२४९
इतरजनाः २४, ३६; १९२७
इदावत्सरः ३०, १५; २२१७
इद्वत्सरः ३०, १५; २२१८
इन्द्रः १०, ५; १४२३ । ११, ६०;
१४३३ । १४, २९; १४४७ । १८,

१६-१८; १४५७-७४ । २२, ६, २७;
१४९८, १६२४ । २४, १, ३२, ४०;
१७३६, १९०२, १९४९ । २५, ३-५,
८; १९९२, २००६, २०१४, २०२७,
२०५४ । २९, ५८, ६०; २०९०,
२१०४
इन्द्राणी २५, ४; २००९
इन्द्रामी २२, ५; १४८७ । २४, ४, ८;
१५, १७, २२; १७५१, १७६८,
१८०९, १८१९, १८४३ । २५, ५;
२०१७ । २९, ५८; २०९२
इन्द्रावृहस्पती २४, ७; १७६४ । २५,
६; २०३९
इन्द्राविष्णू २४, ७; १७६३
इरा ३०, ११; २१७८
इषः २१, ३१; १६८७
ईक्षमाणः २२, ८; १५४२
ईक्षितः २२, ८; १५४३
ईयता ३०, ८; २१५०
ईशानः २४, २८; १८७२
उग्रं वर्षत् २२, २६; १६१३
उत्कूलनिकूलाः ३०, १४; २२०८
उत्थितः २२, ८; १५३३
उत्सादः २५, १; १९५८
उत्सादाः ३०, १०; २१६२
उदकम् २२, २५; १५९४
उदानः २२, ३३; १७१०
उदीची २२, २४; १५८६
उद्गृहीतः २२, २६; १६१६
उद्गृह्णन् २२, २६; १६१५
उद्गावः २२, ८; १५२८
उद्गृह्णतः २२, ८; १५२९
उद्यासः ३९, ११; २२३०
उपयामः २५, २; १९७५
उपलाः २५, ८; २०६४
उपविष्टः २२, ८; १५११
उपशिक्षा ३०, १०; २१७१
उपस्थावराः ३०, १६; २२२४
उपस्थितः २२, ७; १५२३

चर्वी	२२, २७; १६३०
उषा:	२४, ४; १७५२
उष्णिह्	२४, १९; १७९४
ऊर्जः	२२, ३१; १६८८
ऊर्वा दिक्	२२, २४; १५८८
अधीका:	३०, ८; २१४४
अतवः	२२, २८; १६३७। २४, ३८; १९३९
आतिः	३०, १३; २१९३
आभवः	३०, १५; २२२१
आषमः	२४, ३०; १८८६
एकः	२२, ३४; १७२२
एकधातम्	२२, ३४; १७२५
ओषधयः	२२, २८-२९; १६५४, १६६२
औषद्रूपम्	३०, १३; २१९३
कः	२२, २०; १५५१। २४, १५; १८१२। २२, २०; १५५२
ककुम्	२४, १३; १७९७
कतमः	२२, २०; १५५३
कविजलाः	२५, ३; १९९६
कर्णौ	२५, २; १९८४
कर्म	३०, ७; २१३९
कामः	२४, ३९; १९४६। ३०, ५; २१२१
कीलालः	३०, ११; २१७९
कुर्वत्	२२, ८; १५४९
कुञ्जत्	२२, ७; १५१७
कूप्याः	२२, २५; १५९८
कूर्माः	२५, ३; १९९४
कुस्माः	२५, ७; २०५२
कृतः	२२, ८; १५५०। ३०, १८; २२४६
कृष्णः	२५, १; १९६८
कटुः	९, २०; १४८८। २२, ३२; १६९७
कन्दत्	२२, ७; १५०४
कुम्भी	२५, ६; २०३८
कीचः	३०, १४; २२०४
कीवाः	३०, १८; २२६१
क्षत्रम्	३०, ५; २११४
क्षिप्रवेगः	२८, ३०; १८८७

क्षुम्	३०, १८; २२५२
क्षेमः	३०, १४; २२१७
गणपतिः	२२, ३०; १६७०
गणधीः	२२, २०; १६७१
गन्धः	२२, ७; १५०८
गन्धर्वाः	२४, ३७; १९३०
गन्धर्वाभारतः	३०, ८; २१४६
गायत्री	२४, १०; १७९०
गिरयः	२५, ८; २०६३
गीतम्	३०, ६; २१२४
गुरुमाः	२५, ८; २०६६
गुहाः	३०, १६; २२००
गेहम्	२०, ९; २१५४
ग्रीष्मः	२४, ११, २०; १७८५, १८३१
घर्मः	१८, २२; १४७६। ३९, १२; २३१०
धृतम्	२५, ९; २०७२
घोषः	१०, ५; १४२४। ३०, १९; २२५६
धातः	२२, ७; १५०१
ज्जकवाकी	२५, ८; २०६१
जङ्घः	२२, २३, ३३; १५७६, १७१२। २५, २०; १८७९
जन्मः	२०, २८-३०; १६११, १६५२, १६७७। ३९, २; २२९१
जन्ममाः	२४, ३५; १९१७। ३०, २१; २२७८
जराचराणि	२२, २९; १६६५
जापाः	२५, ७; २०५१
जितम्	२५, २; १९८७
जितं विज्ञाता	२२, २०; १५५६
जिज्ञाणि	२५, ९; २०८०
ज्योती	२४, १२; १७९२
जम्बुकः	२५, ९; २०८३
जवः	२२, ८; १५३४। २५, ३; १९९७। ३०, ११; २१७४
जाग्रत्	२२, ७; १५१६
जीमूताः	२५, ८; २०५८
ज्योतिः	२२, ३०, ३१; १६७८, १७१८
तपस्	२२, ३०; १६९१। ३०, ५, ७; २११६, २१३३। ३९, १२; २३०६

तपस्यः	२०, ३०; १६९२
तप्तः	३९, १२; २३०२
तप्यता	३९, १२; २३०७
तायमानः	३९, १२; २३०८
तमसः	३०, ११; २११७
तारकाः	२४, १०; १७८३
निधन्यः	२२, २५; १५९५
तीर्थाणि	३०, १६; २२२९
तुरीयः स्वप्नः	२२, २०; १५६७
तृ-था	३०, १७; २२३७
तत्रग	३०, ११; २१७७
तेदनी	२५, २; १९८५
त्वष्टा	१८, १७; १४६६। २२, २०; १५६६। २४, १४, २४, २८, ३१; १७३४, १७५०, १८५०, १८७६, १८९५। २५, ५; २०४६
तथा तुरीयः	२२, २०; १५६७
तथा तुरीयः	२२, २०; १५६८
त्रिभुजः	२४, १२; १७९१
त्रिता	३०, १८; २२४७
त्र्यम्बकः	२४, १८; १८२५
त्र्यक्षणा दिक्	२२, २४; १५८१
विनि	१८, २२; १४७६
विना पतयत्	२२, २०; १५८०
विशः	१८, १८, २२; १४७४, १४८५। २२, २७; १६७८। २४, २३, ३१; १८६५, १८९३। २५, ८; २०५६। ३९, २; २२९०
विष्टम्	३०, ७; २१४०
वृक्षतम्	३०, १८; २२५३
देवाः सर्वे	२२, ५; १४९०
देवजामयः	२४, २४; १८५४
देवानां पत्न्यः	२४, ५, ९, २४; १७५७, १७७८, १८५३
देव-शोकः	३०, १२; २१८७
वीः	१८, १८, २२; १४७१, १४८४। २२, २७, २९; १६७७, १६५७। २४, १०, २६; १७८१, १८६४। २५, ८; २०६२। ३०, २१; २२७५। ३९, १; २२८८

द्यावापृथिवी २२, २८; १६४० । २४,
१४, ३४; १८०७, १९१६। २५, १, ५;
१९६५, २०३० । ३९, १३; २३२०
द्वा २२, ३४; १७२३
द्वापरः ३०, १८; २२४८
द्वारः ३०, १०; २१६५
धर्मः ३०, ६; २१२५
धाता १४, २८; १४४३ । १८, १७;
१४६४ । २४, ५, ९, ३१; १७५६,
१७७६, १८९२ । २५, ४, २०१३
धार्याः २२, १५; १६००
धावत् २२, ८; १५२७
धूमः २२, २६; १६०५
धैर्यम् ३०, ६; २१३२
नक्षत्राणि १८, १८; १४७३। २२, २८-
२९, १६३२, १६६० । २५, ९;
२०८१ । ३०, २१; २२७७ । ३९, २,
२२९२
नक्षत्रियः २२, २८; १६३३
नङ्गुलाः ३०, १६; २२२६
नद्यः ३०, ८; २१४३
नदीपतिः २२, ३४; १९१५
नभः २२, ३११६८५। २५, ८; २०६०
नभस्यः २२, ३१; १६८६
नरन्ध्रिषः पूषा २२, ८; १५६५
नरिष्ठा ३०, ६; २१२६
नर्मः ३०, ६, २०; २१२७, २२६५
नाकः वर्षिष्ठः ३०, १२; २१८६
नाभिः ३३, २; २२९५
नारकम् ३०, ५; २११८
नासिके २५, २; १९७४
निभूययः विष्णुः २२, ८; १५६५
निमेषः २२, ८; १५४५
निर्झतिः २२, ३८; १९३९। २५, २, ५;
१९८९, २०२१ । ३०, २, १४;
२१५६, २२११
निविष्टः २२, ७; १५१०
निवेद्यः २५, २; १९७२
निवण्णः २२, ८; १५३२

निष्कृतिः ३०, ९; २१५८ । ३९, १२;
२३११
नीलङ्गुः २४, ३०; १८८८
नीहारः २३, २६; १६२१ । २५, ९;
२०७५
वृत्तम् ३०, ६, २०; २१२३, २२६९
पञ्चक्तिः २४, १३; १७२८
पतिः भुवनस्य ९, २०; १४१५
पतिः भूतानाम् १४, २८; १४४२
पन्थाः २५, १; १९६४
पप्रोथः २२, ७; १५०७
परमेष्ठी १४, ३१; १४५६
परिह्वः २२, २९; १६६४
परिवत्सरः ३०, १५; २२१६
पर्जन्यः २४, ३, ६, २१, ३४; १७४७,
१७६२, १८३७, १९११
पर्वताः ३०, १६; २२१४
पवित्रम् ३०, १०; २१६८
पशुपतिः रुद्रः २४, ३; १७४४
पश्चादोषः ३०, १७; २२३८
पाप्मा ३०, ५, १८; २११९, २२५४
पारम् ३०, १६; २२२७
पार्याः २५, १; १९६९, १९७२
पावका सरस्वती २२, २०; १५६१
पितरः २४, ३८; १९३६
पितरः अग्निष्वात्ताः २४, १८; १८२४
पितरः बर्हिषदः २४, १८; १८२३
पितरः सोमवन्तः २४, १८; १८२२
पिबति यत् २२, ८; १५४७
पिशाचाः ३०, ८; २१५१
पुरुषः त्वष्टा २२, १०; १५६८
पुरुष व्याघ्रः ३०, ८; २१४४
पुष्टिः ३०, ११; २१७५
पुष्पाणि २२, २८; १६५२
पूतः ३९, २; २२९६
पूषा १०, ५; १४२१। १४, ३०; १४५१।
१८, १६; १४६१। २२, २०; १५६३।
२४, ७, १४, ३२; १७६७, १८०४,
१९०० । २५, ३, ५, ७; २००१,

२०२५, २०४३ । २९, ५८-५९;
२०८७, २०९७
पूषा नरन्ध्रिषः २२, २०; १५६५
पूषा प्रपथ्यः २२, २०; १५६४
पृथिवी १८, १८, २२; १४६९, १४८१।
२२, २७, २९; १६२४, १६५५। २५,
९; २०८२। ३०, २१; २२७२। ३९,
१; २२८४
प्रकामः ३०, १२; २१९२
प्रकामोच ३०, ९; २१६०
प्रजा २५, ७; २०५०
प्रजापतिः १४, २८, ३१; १४४०,
१४५६। २२, ५, ३२, १४८६, १७०५।
२४, १, २९-३१; १७२८, १८७७,
१८८१, १८९१ । २९, ६०; २१०२।
३०, २२; २२८१-८२
प्रज्ञानम् ३०, १०; २१६९
प्रतिश्रुत्का २४, ३२; १९०४। ३०, १२;
२२५५
प्रतीची दिक् २२, २४; १५८४
प्रदराः २५, ७; २०५२
प्रपथ्यः पूषा २२, २०; १५६४
प्रबुद्धः २२, ७; १५१९
प्रभा ३०, १२; २१८४
प्रमद् ३०, ६; २१३०
प्रमुद् ३०, १०; २१६४
प्रयुजः ३०, ८; २१४७
प्रसवः २२, ३२; १६९५
प्राची दिक् २२, २४; १५८०
प्राणः १८, २२; १४७९। २२, २३, ३२;
१५७३, १७०७
प्राणाः २५, २; १९९०
प्राणाः साधिपतिकाः ३९, १; २२८३
प्रायणः २२, ७; १५२५
प्रायश्चित्तिः ३९, ११; २३१२
प्रायासः ३९, ११; २२९८
प्रियः ३०, १३; २१९९
प्रुष्णत् २२, २६; १६१७
प्रुष्वाः २२, २६; १६१९। २५, ९; २०७७
प्रोषत् २२, ७; १५०६

फलानि २२, ४८; १६५३
 बलम् २२, ८१; १५३५। २४, ३८;
 १९३७। २५, ६; २०४२। ३०, ९,
 १३; २१६२, २१९७
 बाह्याः ५५, ४; १९७८
 बीभत्सा ३०, १७; २०३५
 बृहती २४, १३; १७०६
 बृहती सरस्वती २२, २०; १५६२
 बृहस्पतिः १०, ५; १४२२। १४, ४९;
 १४४८। १८, १६; १४६५। २२, ६;
 १४९९। २४, २, ४८; १७४१, १८७५
 बृहस्पतिः (वावस्पतिः) २४, ३४;
 १९१३। २५, २-४; १९९३, २०११।
 २९, ५८, ६०, २०८८, २१०७
 ब्रह्मस्य विष्टपम् ३०, १८; २१९७
 ब्रह्म २२, २२; १५७२। ३०, ५; २११३।
 ३९, १३; २३१७
 ब्रह्महत्या ३९, १३; २३१८
 ब्रह्मणस्पतिः १४, २८; १४२१
 ब्रह्मा २२, ३३; १७१७
 ब्रह्मः १०, ५; १४२७
 ब्रह्मा ३०, ११; २१८०
 भा ३०, १२; २१८३
 भुवनस्य पतिः ३, २०; १४१५। २२, ३०;
 १७०४
 भूतानि विष्वा ३०, १७; २२२९
 भूतानां पतिः १८, २८; १४४२
 भूतिः ३०, १७; २२४०
 भूमन् ३०, १३; २१९८
 भूमिः २४, १०, २६, ३३; १७७९,
 १८६२, १९०८
 भेषजम् ३९, १२; २३१३
 भौवनः आन्त्या ९, २०; १४१४। २२,
 ३१, १७०३
 भंडस् ३०, १९-२०; २२६०, २२६८
 मतिः २४, ३९; १९४२
 मधुः २२, ३१; १६८१
 मनः २२, २३, ३३; १५७९, १७१५
 मनः प्रजापतिः २२, २०; १५५५

मनुष्यानां २४, ३०; १८८४
 मनुष्यश्रेष्ठः २०, १२; २१८८
 मनुष्यः २४, ३३; १९०९। ३०, १४;
 २००३
 मरीचिः २५, ९; २०७४
 मरुतः १८, १७; १४६७। २२, २८;
 १६४७। २४, ४, १४-१५, ४०;
 १७४८, १८०५, १८११, १९५०।
 ५५, ५, ६; २०१०, २०३२। २९, ५८-
 ५९; २०९१, २०९९। ३०, ५; २११५
 मरुतः क्रीडनः २४, १३; १८१३
 मरुतः गृहभाषनः २४, १२; १८१५
 मरुतः गान्धर्वनाः २४, १६; १८१४
 मरुतः स्वतन्त्रः २४, १६; १८१७
 मर्यादा ३०, १०; २१७२
 मालम्बुचः २२, ३०; १६७९
 मन्त्रकाः २५, ३; १९९१
 मही आदिनिः २२, २०; १५५८
 महन्द्रः २४, १७; १८२०
 माधवः २२, ३१; १६८२
 माया ३०, ७; २१३४
 मायुः २४, ३०; १९०१
 मामाः २२, २८; १६३६। २४, २५,
 ३७; १८५०, १९३२
 मित्रः १८, १७; १४६३। २२, ६;
 १५००। २४, ८, २१-२२, २८, ३२,
 १७७१, १८३९, १८४४, १८७३,
 १९०६। २५, ५; २०१९
 मित्रावरुणा २४, २८, २३; १७८२,
 १७७१, १८५०। २५, ६; २०४०।
 २९, ६०; २१०६
 मुखं अहः ९, २०; १४११
 मुखः वेनांशनः ९, २०; १४१२
 मुखं करोति यन् २२, ८; १५४८
 मूर्धन् २२, ३२; १६९९
 मूलानि २२, २८; १६४२
 मृग्युः २४, ३७; १९३४। ३०, ७,
 १८; २१४१, २२५०। ३९, १३;
 २३१६

मृद २५, १; १९५५
 मेषः २२, २६; १६०७
 मेषः ३०, १२; २१२१
 मेषा ३०, ६; २१३१
 मोदः अपाध २२, ६; १४९४
 मृजः २२, ३३; १७२१
 यन् २२, ८; १५२६
 यमः २४, ३, ३०; १७४५, १८८३।
 ५५, ४; २०१३। २०, १४-१५,
 २२१०-१३। ३९, १३; २३१४
 यमी २२, ५; २०२९
 यवाः १४, ३१; १४५५
 यानूषानाः ३०, ८; २१५२
 यादय (दः) ३०, ४०; २२६७
 योगः ३०, १४; २२०५
 योनिमि २४, ४०; १९४८। २५, ६;
 २०७९
 यमयः २२, २८; १६४३
 राशिः २४, २५, ३६; १८५७, १९२६।
 ३०, २१; २२८०
 रजः २४, ३९; १९४४। २५, ३; २००३
 रजः पशुपतिः २४, २; १७४४
 रक्षाः ११, ६०, ६५; १४३०, १४३७।
 १४, ३०; १४५३। २२, २८; १६४५।
 २४, ३, ६, ७; १७४६, १७६०,
 १८६८। २५, ६; २०३४
 रूपम् ३०, ७; २१३५
 रोगमन् (रोगा) २५, २; १९९०
 लोकः स्वर्गः ३०, १३; २२०१
 लोकाः सर्वे ३०, १२; २१८९
 उत्तरः ३०, १५; २२१९
 वनम् ३०, १२; २२६३
 वनस्पतयः २२, २८-२९; १६५१,
 १६६३। २४, २३, ३५; १८४७,
 १९१८
 वपुस् (पुः) ३०, १४; २२०९
 वरुणः ११, ६०; १४३४। १४, ३०;
 १४५०। १८, १७; १४६४। २२, ५,
 ९; १४९१, १५०१। २४, २, १५,

२१-२२, २८, ३०, ३८; १७३९,
१८१०, १८४०, १८४५, १८७४,
१८८२, १९४० । २५, ४-५; २०१५,
२०२८ । २९, ५८-५९; २०९४,
२१०२ । ३९, २; २२९४
वर्णम् ३०, ९, १७; २१६१, २२३६
वर्षत् (न) २२, २६; १६११
वर्षाः २४, ११, २०; १७८६, १८३२
वर्षिष्ठः नाकः ३०, १२-१३; २१८६,
२२०२
वल्गत् २२, ७; १५१३
वल्मीकाः २५, ८; २०६५
वसन्तः २४, ११, २०; १७८४, १८३०
वसुः ९, २०; १४०९, २२, ३०; १६६८
वसवः ११, ६०, ६५; १४२९, १४३६ ।
१४, ३०, १४५३ । २२, २८; १६४४ ।
२४, ६, २७, ३८; १७५९, १८६७,
१९३८
वाक् २२, २३, ३३; १५७८, १७१४ ।
२४, ५, २९, ३१; १७५४, १८७८,
१८९६
वाजम् २२, ३२; १६९४ । २५, १; १९६०
वाजी " २५, ७; २०४२
वाजिनः २४, ७, ३९; १७६५, १९४५
वातः २२, २६; १६०४ । २४, ३५;
१९२० । २५, २; १९७३
वायुः १४, ३०; १४५२ । २२, ५-६;
१४८८, १४९६ । २४, १, ९, २२,
३०, ३४; १७३५, १७७५, १८४२,
१८८१, १९१२ । २५, ४, ६; २००५,
२०३६ । ३०, २१; २२७३
वारः (र) २२, २५; १५९३
विचृतः २२, ७; १५२१
विजृम्भमाणः २२, ७; १५२०
विद्युत् २४, १०; १७८२ । २५, १;
१९६६
विद्योतमानः २२, २६; १६०८
विधूतः २२, ८; १५३९
विधून्वानः २२, ८; १५३८

विष्टतिः २५, ९; २०७१
विनंशी आन्त्यायनः ९, २०; १४१३
विभूः २२, ३०; १६६९
विद्यासः ३९, ११; २३००
विराट् २४, १३; १७९५
विवर्तमानः २२, ८; १५३६
विवस्वान् २२, ३०; १६७०
विविक्तिः ३०, १३; २१९५
विष्टतः २२, ८; १५३७
विश्वकर्मा २४, १७; १८२१
विश्वे देवाः ११, ६०, १५; १४३२,
१४३९ । १८, १७; १४६८ । २२, ५;
१४८९ । २२, २८; १६४८ । २४,
५, १४, २७, ४०; १७५३, १८०६,
१८७०, १९४७, १९५२ । २५, ५-६;
२०३१, २०३३ । २९, ५८-६०;
२०८९, २०९८, २१०५ । ३९, १३;
२३१९
विश्वानि भूतानि ३०, १७; २२३९
विषमाः ३०, १६; २२३०
विष्णुः ११, ६०; १४३५ । २२, ६;
१४९७ । २४, १, ३६; १७३७,
१९२८ । २५, ५; २०२४ । २२, २०;
१५६९
विष्णुः निभूयपः २२, २०; १५७०
विष्णुः शिपिविष्टः २२, २०; १५७१
विरहुतः २५, ७; २०४३
वीक्षितः २२, ८; १५४४
वीर्यम् ३०, ९; २१७६
वृषणः २५, १, ७; १९६२, २०४८
वैनंशिनः सुग्धः ९, २०; १४१२
वैरहत्यः ३०, १३; २१९४
वैशन्ताः ३०, १६; २२२५
वैश्वानरः २५, ८; २०७०
वैश्वानरः अग्निः २९, ६०; २१११
वैश्वानराः विश्वे देवाः ११, ६०, ६५;
१४३२, १४३९
व्यश्लुविन् २२, ३२; १७००
व्यानः २२, २३, ३३; १५७५, १७०९

व्यूद्धिः ३०, १७; २२४३
व्यूष्टिः २२, ३४; १७२६
शाक्वरयः १८, २२; १४८५
शतम् २२, ३४; १७२४
शब्दः ३०, १९; २२५९
शयानः २२, ७; १५१५
शरद् २४, ११, २०; १७८७, १८३३
शरण्या २४, ४०; १९५१ । ३०, ७;
२१३७
शाखाः २२, २८; १६५०
शादः २५, १; १९५३
शार्दूलः २४, ३०; १८८५
शिपिविष्टः विष्णुः २२, २०; १५७१
शिशिः २४, ११, २०; १७८९, १८३५
श्रीकायत् २२, २६; १६१८
श्रीघ्नं वर्षत् २२, २६; १६१४
शीनः २५, ९; २०७६
शीलम् ३०, १९; २२१०
शुक (च) ३९, ११; २३०२
शुकः २२, ३१; १६८३
शुक्रः २५, १; १९६७
शुचिः २२, ३१; १६८४
शुनासीरः २३, १९; १८१७
शुभम् ३०, ७; २१३६
शुभ्रमाणः २२, ८; १५४०
शृकारः २२, ८; १५३०
शृकृतः २२, ८; १५३१
शृषः २२, ३०; १६७५
शृष्वत् २२, ८; १५४१
शोकः ३०, १४; २२०६ । ३९, ११;
२३०५
शोचत् ३९, ११; २३०३
शोचमानः ३९, ११; २३०४
श्रेयस् ३०, ११; २१८१
श्रोत्रम् २२, २३, ३३; १५७७, १७१३ ।
२४, २९; १८८० । २५, २; १९८३
श्लोकः १०, ५; १४२५
संयासः ३९, ११; २२९९
संवत्सरः १४, २९; १४४६ । २२, २८;

१६३९। २४, २५; १८६०। ३०, १५;
२२१५, २२२०

संसारः ३०, १७; २२४४
संसर्गः २२, ३०; १६७६
संहानः २२, ७; १५२२
सम्भाराः उक्ताः [पूर्व संशोक्ताः] २४, १५,
१७, १९; १८०८, १८१८, १८२६
संज्ञानम् ३०, ९; ५१५९
सत् २५, २; १९७६
सन्धितः २२, ७; १५१२
सम्भयः अहोरात्रयोः २४, २५; १८५८
सन्धिः ३०, ९; २१५३
समाः १८, १८; १४७२
समानः २२, ३३; १७११
समुद्रः २२, २५; १६०२। २४, २१, ३०;
१८३६, १८८९। ५५, ८; २०६९
सरांसि ३०, १६; २२२३
सरस्वान् २४, ३३; १२१०
सरस्वती १०, ५; १४२०। १८, १६;
१८६०। २२, २०; १५६०। २४, १,
४, १४, ३३, १७३०, १७४२, १८०३,
१९०७। २५, १, ५; १९५७, २०१८।
२९, ५८-५९; २०८५, २१०१
सरस्वती पावका २२, २०; १५६१
सरस्वती बृहती २२, २०; १५६२
सरिरः २२, २५; १५०३

सरीसृपाः २२, २९; १८६६
सर्पः २४, ३६; १९२४। २५, ५, ७,
२०२३, २०४५
सर्पदेवजनाः ३०, ८; २१८८
सर्वे लोकाः ३०, १३; २१८९
सविता १०, ५; १४१९। १८, १६;
१४५९। २२, ६; १४९९। २४, २,
१४, २५; १७४०, १८०२, १९१९।
२९, ५८, ६०; २०९३, २१०८
सहस्र (हाः) २२, ३१; १६८९
सहस्रः २५, ३१; १६९०
साध्याः २४, २७; १८७१। ३०, १५;
२०२२
सान्निह ३०, १६; २०३३
समृद्धीका आदिताः २२, २०; १५५८
सूयाः २२, २५; १५९९
सूर्यः १८, २२; १४७८। २२, ७८ २९;
१६४२, १६५८। २४, १९, ३३;
१८२९, १९०५। ३०, ३१; २२७६।
३९, १; २२८२
सूर्य-यमा २४, १; १७३३
सोमः १०, ५; १४१८। १४, २१;
१४५४। १८, १६; १४५८। २२, ६,
२७; १४९३, १६२३। २४, २, ९, १४,
२२, २४, ३२; १७३८, १७४४,
१८०१, १८४१, १८५१, १८९२।

२५, ४; २००७। २९, ५८; २०८६
सोमपुत्राणी २४, १; १७३२
स्तनयान् २२, २६; १६०९
स्तनयिन्नुः २५, १; १९८०
स्तन्याः २५, १; १९५६
स्यन्दमानाः २२, २५; १५९७
स्यन्दन्यः २२, २५; १५९६। २५, ८;
२०६७
स्वनाः ३०, १६; २२३९
स्वपन् २२, ७; १५१६
स्वप्नः ३०, १०; २१६६
स्वप्न २२, ३३-३३; १८९८, १७१९
स्वर्गः २२, ३३; १७३७
स्वर्गः लोकाः ३०, १३; २२०१
स्वर्गायः ९, २०; १४०६
स्वयः ३०, ६, २०; २१२८, २२६६
दिक्काः २२, ७; १५०२
दिक्काः २२, ७; १५०३
हिमवान् २४, ३०; १८९०
होनिः ३०, ७; २११८
होमन्तः २४, ११, २०; १७८८, १८३४
मदाः २५, ८; १०६८
मृगुनीः २२, २६; १६२०। २५, १;
२०७८
मृगः २४, ३५; १९२२

विश्वे-देवादेवता-मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अश्वशाय स्वाहा	१४२६
अश्वरुश्वष्ट्रे देव सोम	१२८४
अंशो भगो वरुणो मित्रो	९३६
अश्वरुपतये स्वाहा	१६९३
अक्षराजाय कितवम्	२२४५
अम इन्द्र वरुण मित्र देवाः ३२१, १२६२	
अमये कूटरुन्	१८४६
अमये गायत्राय त्रिवृते	२१०३
अमये गृहपतये पारुष्णान्	१८५५
अमये गृहपतये स्वाहा	१३२८
अमये त्वा मह्यं वरुणो ददातु	१३०६
अमयेऽनीकवते प्रथमजान्	१८१३
अमयेऽनीकवते रोहितान्	२०९५
अमये पीवानम्	२२७१
अमये वैश्वानराय द्वादशकपालः २१११	
अमये स्वाहा १४१७, १४९२, १६२२, २२८५	
अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु	९८२
अग्निमतिस्तभ्याम्	२०००
अग्निमद्य होतारमवृणीत	१३८६
अग्निमुषसमश्विना दक्षिणां	१६८
अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा	६९२
अग्निरीशे वसवस्य	२३६
अग्निरुक्थे पुरोहितो	५१२
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्	१३१९
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते	३०८
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा	१२७९
अग्निर्देवता वातो देवता	८५२
अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात्	९७२
अग्निश्च पृथिवी च सञ्जते	१३८४
अग्निश्च म इन्द्रश्च मे	१४५७
अग्निश्च मे	१४७५
अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे	४२४

२५ है. (विश्वे देवाः)

अग्नीषोमयोरुज्जितिमुनूजेषं	१२७४
अग्नीषोमयोर्भासदौ	२०३७
अग्नीषोमयोः षष्ठी	२०२२
अग्नीषोमाभ्यां चाषान्	१८४८
अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये	७१३
अग्ने अच्छा वदेह नः	८१६
अग्ने तव ल्यदुक्थ्यं	५०
अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि	१२७५
अग्नेः पक्षतिः	२००४
अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं	१२०८
अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा	१२३३
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषाम्	८०५
अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ	१२८३
अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं १३४४	
अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	१४०२
अग्ने सुतस्य पीतये	३५०
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः	८७३
अघ्नते विष्णवे वयम्	५११
अङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे	१४८५
अचिकित्वाश्चिकितुषश्चिदत्र	१०४
अच्छा मही बृहती शतमा गीः	२८४
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एतु	४७२
अच्छा विवाक्मि रोदसी सुमेके	२२६
अजिराधिराजौ श्येनौ	९६४
अजिरासस्तदप ईयमानाः	३२९
अग्ने चिदसै कृणुथा न्यञ्जनं	५२९
अज्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्राः	२८३
अनिकुष्ठाय मागधम्	२१२२
अति धावतातिसरा	९२६
अति नो विष्पिता पुरु	५६१
अति वा यो मरुतो मन्यते नो	४१०
अतीव यो मरुतो मन्यते नो	१०९६
अतो न आ नूनतिथीन्	३४७

अत्यं हविः सञ्जते सञ्च धातु च	२९६
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्	९३१
अथर्वभ्योऽवतोकाः	२२१४
अथैतानष्टौ विरूपानालभते	२२८१
अदत्रया दयते वार्याणि	३४२
अदितिः शीर्ष्णा	१९८७
अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महद्	७२०
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम्	२८
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या	१२१६
अदितिश्च मे	१४८२
अदितिः इमंश्च वपतु	९४९
अदित्यै पञ्चमी	२००८
अदित्यै पाजस्यम्	२०५५
अदित्यै भसत्	२०५७
अदित्यै मह्यै स्वाहा	१५५८
अदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुः	२११०
अदित्यै सुमृढीकायै स्वाहा	१५५९
अदित्यै स्वाहा	१५५७
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु	८९३
अद्भ्यः स्वाहा १५९२, १६६१, २२९३	
अद्भ्यो मत्स्यान्	१८३८
अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरोमणि	५८८
अद्य रमता नहुषो हवं सुरैः	९२
अद्य त्वमिन्द्र विद्वद्यस्मान्	६४८
अद्य प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु	७२
अद्य यद् राजाना गविष्टौ	६४९
अद्य स्मा न उदवता सजोषसो	१५९
अद्या गात्र उपमाति कनायाः	६४७
अद्या न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ	६५०
अद्यापि धीतिरसत्प्रमंशाः	५७०
अद्यासु मन्द्रो अरतिर्विभावा	६४६
आधि न इन्द्रैषां	५६५

अधिपतये स्वाहा	१४१६, १६७४,
१७०४	
अधिपत्यमि बृहती दिग्	८६१, १३५८
अधोन्मय सप्तति च	७५०
अधोरामः सावित्री	२०९३
अधोरामी सावित्री	२०९६
अध्वर्यवश्चक्रवांसो मधूनि	२७९
अध्वानं बाहुभ्याम्	१९९८
अनच्छये तुरगात्तु जीवम्	१२८
अन्यान् वयः पक्ष्मच्छन्दो	१३३९
अनृवाहः पक्ष्म	१७१८
अनन्ताय मूकः	२२५८
अनमित्रे नो अधराद्	९४१
अनमीवा उषस आ चरन्तु नः	५८५
अनु नदुर्वा रोदती जिहानाम्	४४७
अनु त्वा मही पाजसी अश्वके	७७
अनुमत्या अश्वकपालः	२११२
अनु वारंरनु पुण्याम्	१२५५
अनूकाशेन बाह्यं	१९७८
अनूनादत्र हस्त्यतो अग्निः	३१५
अन्तकाय गोघातम्	२२५६
अन्तकाय शनिनम्	२१४२
अन्तकाय स्वाहा	२३१५
अन्तरिक्षं च म इन्द्र म	१४७०
अन्तरिक्षं पुरीतता	२०५९
अन्तरिक्षाय पाक्कत्रान्	१८६३
अन्तरिक्षाय वः शनिर्नम्	२२७४
अन्तरिक्षाय स्वाहा	१६२६, १६५६,
२०८६	
अन्ताय बहुवादिनम्	२२५७
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा	१४१४,
१७०२	
अन्त्याय स्वाहा	१७०१
अन्त्याहीनस्थूलमुदया	२०४४
अन्यत एन्मो मेयः	१७७२
अन्यतोरण्याय दावपम्	२२६४
अन्यवापोऽर्धमासानाम्	१९२९
अन्यस्या वसंतं रिहती मिमाय	२०४
अप आस्थेन	१९६१
अ प सं वृजिनं रिपुम्	४०५

अप न्यभुः पौरुषेयं वधं	१००३
अपः शुष्ककण्ठेन	१९८५
अपश्यं गोपामनिपथमानम्	१२९
अपस्त ओषधीमनां श्रेष्ठन्तु	९८७
अपाघमप किंतिवपमप	१३९१
अपाङ् प्राङ्ति स्वधया गृभीतो	१३६
अपां चतुर्थी	२०२०
अपात्री त उमौ बाहु	९६५
अपादिन्द्रो अपादिभिः	५५८
अपानाय स्वाहा	१५७४
अपानेन नासिके	१९७४
अपानो यज्ञेन कल्पना स्वाहा	१७०८
अपामीवा साविता सावित्र्यम्	७५८
अपामीवामप विश्वामनाहुतिम्	६७२
अपामुद्रो	१९३१
अपां पृष्ठमग्निं योनिरग्नेः	१३३६
अपां वेदं जीवधन्यं भगमदे	६०१
अपां मोदाय स्वाहा	१४९४
अपिजाय स्वाहा	१४०७, १६२६
अपि नद्यामि ते बाहु	२६६
अपि पन्थामगन्महि	४०८
अपेत वीनं वि च सर्वतातो	१२६९,
१३३३	
अपो यूष्णा	२०७३
अपो वसिन्ता	२०४७
अपुष्टम् त्य इन्द्रवन्तो अमयो	५८०
अमये यावापृथिवी हृदास्तु नो	९३९
अमये नः करत्यन्तरिक्षम्	९६८
अमये मित्रादभममित्रान्	९६९
अभि त्यं वारं गिर्येणसमर्थे	१८३
अभि त्वा वर्चसाधिपतः	११४७
अभि त्वेन्द्र वरिमतः	९५९
अभि न इळा यूषस्य माता	२५८
अभि प्र स्वाताहि व यज्ञं	४३०
अभि प्रिया मरुती या वो	५१७
अभि प्रेहि माप वेनः	११४३
अभिभुञ्जे स्वाहा	१६७३
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिवाः	१३२९
अभिभूर्यज्ञो अभिभूरभिः	९५७
अभि यं देवी निर्गतिविधीषो	४७९

अभि वो अर्चं पोग्यावतो नृन्	२४७
अभि वो देवी धियं दधिभवम्	४३४
अभीक आसी पद्वारवोधि	२१७
अभूत्यै स्वपनम्	२२४१
अभ्राय स्वाहा	१६०६
अमी ये देवा स्थन	४२, १४९८
अमी ये पञ्चक्षणी	४७
अमी ये सप्त रश्मयः	४६
अमी ये शुभमायिनि	११८६
अमूः परि पृदाक्वः	८८३
अयं यो होता किं स यमस्य	६१०
अयं स शिक्ते येन गौरभायता	१२७
अयं सोमः सुदानवः	१२००
अयं स्तुतो राजा वसिष्ठ वेधाः	६४२
अयं हि नेता नरुण ज्ञानस्य	४९१
अयं दक्षिणा विश्वकर्मा नरय	१२६०
अयं नामा वदति वरुण वो एहं	६५७
अयमुत्तरान् गंयद्रुस्तस्य	१३६२
अयमुपयेर्वाग्भुस्तस्य	१३६३
अयं पथादिभ्योऽन्तरस्य	१३६१
अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिः	१५५९
अयस्मये दूषदं वेधिव इह	११८३
अयंभ्यः कितवम्	२१४९
अरण्याय सुमरो	१९४३
अराया एदिधिपुः पतिम्	२१५७
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते	६७३
अरिष्टया अश्वसाद	२२००
अरुणाच्छरदे	१७८७
अरुणो मा मरुद् वृकः	५५
अरुणस्य दुहितरा विरूपे	३६५
अर्कश्च मे	१४७७
अर्कन्त एके महि साम	५४४
अर्णवाय स्वाहा	१६०१
अर्धमिद् वा उ अर्धिनः	३९
अधर्माय धधिरम्	२१६७
अर्धमासेभ्यः स्वाहा	१६३५
अर्धमो हस्तिपम्	२१७३
अर्धमणं बृहस्पतिम्	८२०
अर्धमा जो अदितिर्यज्ञियाखी	१८७

अर्यम्णे स्वाहा	१४२८
अर्यम्णो नवमी	२०१२
अर्वाच्ये दिशे स्वाहा १५८१, १५८३, १५८५, १५८७, १५८९, १५९१, १६३१	
अर्वाचो अद्या भवता यजत्रा	१५६
अलज आन्तरिक्षः	१९१४
अवक्रस्त्यै वधायोपमन्थितारं	२१९०
अवकां दन्तमूलैः	१९५४
अवक्रन्दाय स्वाहा	१५०५
अवक्रन्देन तालु	१९५९
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना	५९
अवन्तु मामुषसो जायमाना	४१२
अवः परेण पर एनावरेण	११५
अवः परेण पितरं यो अस्य	११६
अवरस्पराय शङ्खधम्	२२६१
अवालिता रैद्राः	१७४६
अववर्षते स्वाहा	१६१२
अवसृष्टा परा पत शरव्ये	१११२
अवस्फूर्जते स्वाहा	१६१०
अवाच्ये दिशे स्वाहा	१५९०
अवाराय केवर्त	२०२८
अवार्या इक्षवो	१९७०
अवाय्याणि पक्ष्मीणि	१९७१
अविज्ञाता अदित्यै १७५५, १७७६	
अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद्	८३५
अविष्टो अस्मान् विश्वास्तु विश्व	४३७
अवीचो अग्निर्हव्याजमोभिः	४३९
अवीवृधद् वो अमृता अमन्दीद्	१२०५
अशनिं मस्तिष्केण	१९८१
अशीतिभिस्तिसृभिः सामगोभिः	१०९४
अश्वमेधश्च मे	१४८०
अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते	१७२८
अश्विना त्वाग्ने मित्रावरुणोभा	८९८
अश्विनावत्साम्याः	२००२
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै	१३३०
अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै	१३९३
अश्विभ्यां मयूरान्	१८४९
अष्टचैभ्यः स्वाहा	१०११
अष्टादशचैभ्यः स्वाहा	१०२१

अष्टा महो दिव आदो हरी इह	७४
अष्टौ पुत्रासो अदितेः	१२१९
असपत्नं पुरस्तात् पश्चाच्चोऽ७०, ११६८	
असवे स्वाहा	१६६७
असावि ते जुजुषाणाय सोमः	२८१
असौ यः पन्था आदित्यो	५३
अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो	५२१
अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं	९७
अस्ना रक्षाः	२०७२
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भः	३११
अस्माकं मित्रावरुणावर्तं रथम्	१५८
अस्मिन्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्	१२१७
अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तु	८७७
अस्मे धेहि शुमतीं वाचमासन्	१२१४
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो	१२०४
अस्मै प्रामाय प्रदिशश्चतस्रः	९४०
अस्य देवस्य मीळहुषो वयाः	४९२
अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः	८७८
अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना	५७३
अस्य मदे स्वयं दा ऋताय	७०
अस्य वामस्य पलितस्य	९९
अस्य स्तुषे महिमघस्य राघः	८९
अहं सो अस्मि यः पुरा	४४
अहं होता न्यसीदं यजीयान्	६०९
अहं शुभ्णामि मनसा मनासि	९०७
अहर्पतये स्वाहा	१४१०
अहोरात्रयोः सन्धिभ्यो	१८५८
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१६३४
अहे पारावतानालभते	१८५६
अहे मुग्धाय स्वाहा	१४११
अहे शुक्रं पिङ्गाक्षम्	२२७९
अर्कीं सूर्यस्य रोचनाद्	१२
आकृतिमग्निं प्रयुज्य स्वाहा	१३३१
आकृत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा	१२८१
आ कन्दय धनपते	११०३
आक्रमणं स्थूराभ्याम् १२९५, २०४१	
आक्रयाया अयोर्गुं	२१२०
आक्षिप्तं पूर्वास्वपरा अनूक्त	१९६
आखुः कशो मान्थालस्ते	१९३६

आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्याः	४८५
आग्नेयः कृष्णग्रीवः	२०८४
आग्नेयः कृष्णोऽजः	२१००
आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिः	३३७
आङ्गिरसानामाचैः	११२१
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां	४३५
आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः	१२४९
आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्ताद्	८६३
आ त एतु मनः पुनः	६२४
आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे	१२१२
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषन्	११४४
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोक्ष्ये	७७२
आ ते नयतु सविता नयतु	११०४
आ ते योनिं गर्भं एतु	१०५२
आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे	१३०३
आत्मा यज्ञेन कल्पता स्वाहा	१७१६
आ त्वा कृष्वा अहूषत	५
आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसा	८९६
आ त्वागमं शन्तातिभिः	८१२
आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा	१००७
आ दधामि ते पदं	१०९८
आदित्या इमश्रुभिः	१९६३
आदित्यानां तृतीया	२०३५
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथाः	२२२
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त	४६२
आदित्यासो अति स्त्रियो	७७६
आदित्यास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु जागतेन	१४३८
आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन	१४३१
आदित्येभ्यः स्वाहा	१६४६
आदित्येभ्यो न्यङ्कून्	१८६२
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः	८२५
आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान्	१२२३
आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्म	२५३
आ धर्णसिर्वृहदिवो रराणो	२८९
आ धूर्वस्मै दधताश्चान्	४२९
आ धेनवः पयसा तूर्पर्या	२७७
आ धेनवो धुनयन्तामाश्वीः	२०७
आध्यक्षायानुक्षत्तारम्	२१८२
आ न इळाभिर्विदधे सुशस्ति	१४०

आनन्दाय तत्त्वम्	२२७०	आर्तिवेभ्यः स्वाहा	१२३८	इन्द्र उच्यते शक्यता परमेश्वर	७५५
आनन्दाय श्रीषखं	२२२९	आर्त्यं जनार्दनं	२२४०	इन्द्रं कृत्वा प्रवृत्तं शक्तिपति	६२
आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वान्	२८६	आर्त्यं पारितं	२२५१	इन्द्रज्येष्ठा मरुताः	१६७
आ नो अय समनसो	५१६	आर्तिवेष्ठा होत्रमूर्धन्योदन	१२२६	इन्द्र तस्य मयवन् स्वावादिः भुज	७५१
आ नो दिवो वृद्धतः पर्वनादा	२८७	आ वात वाहि भेषजं	८११	इन्द्रं ते मरुत्वन्तमुच्यते	९८९
आ नो देवः सविता त्रायमाणो	३८५	आ वातस्य ध्रजतो गन् इत्या	४६३	इन्द्रमुजं सोमं त्रिं दुहितामि	९१४
आ नो देवः सविता सावित्रः वयः ७५३		आ वो गंधर्वाश्चैना द्रुवायै	२४०	इन्द्रप्रसूता वयस्यप्राप्ता	७०८
आ नो देवानामुप वेतु शंसा	५६८	आयिर्मर्त्या आबिर्ना अमिः	१२२६	इन्द्रमहं वीजं नोदयामि	९१५
आ नो द्रव्या मधुमन्तो विश्वान्	१२२५	आ वधसे नीलपुत्रं वृद्धन्ते	२८८	इन्द्रं मित्रं वज्रमास्त्रमन्य	५७
आ नो बर्हिः सधमादे वृद्धादि	५८९	आ वो धियं यज्ञियो वर्त क्तये	७७१	इन्द्रवायु वृद्धयति	६, ८१९
आ नो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतो	१९	आ वो गन्धयुक्तं गुवीरं	२१२	इन्द्रस्य मन्त्राय त्रयान्	१३०९
आ नो मदीमर्मात राजापाः	२८२	आ वो रुण्युर्माशितो हुवायै	८६	इन्द्रः सुपाया वृषणा युद्धता	२२४
आ नो राधासि सवितः स्तवयै	४८०	आ वो वाह्यो वहुन् स्तवयै	४७३	इन्द्रस्यो वृषयस्त्र	१४३३
आ नो रुद्रस्य रुनयो नमन्ताम्	२८१	आशाभ्यः स्वाहा	१६२९	इन्द्रस्य कोटा	२०५४
आ नो विश्व आम्ना गमन्तु देवाः	१४१	आशिक्षायै प्रथिनम्	२१७०	इन्द्रस्य गोमृगाः	१९०१
आ नो विश्व राजाधरो	५५३	आशुश्रितृद्धान्तः पञ्चदशो व्योमा	१३४३	इन्द्रस्य गुनीया	२००६
आप इद वा उ भेषजाः	८१४	आश्विनायोरामो बाहोः	१७३१	इन्द्रस्य नु गृह्णते देवो नदः	७५६
आपये स्वाहा	१४०५	आशीनाय स्वाहा	१५१४	इन्द्रस्य वभोऽमि मित्रावरुणयोः	१३२७
आ पर्वतस्य मरुतामर्वासि	२३३	आ सुवृत्ती नमसा वर्तययै	२७८	इन्द्रस्य सम्यक् इन्द्रस्य	८४३
आ पशुर्गासि पृथिवीं वनस्पतीन्	५१३	आ सूर्यो अरुहस्तुकमर्णो	३१८	इन्द्रस्यैकादशी	२०१४, २०२७
आपश्चिदस्मि पिबन्त पृथ्वीः	४२८	आ सूर्यो यातु मत्ताधः	३१७	इन्द्राग्निर्वा कृत्वा	१८४३
आ पुत्रासो न मातरं विभृताः	५०३	आरुहन्दाय समास्थातुं	२२४९	इन्द्राग्निर्वा स्वा जुष्टं पोक्षामि	१४८७
आपो मौषधीमर्गितस्या दिशः	९७७	इक्ष्वा जुद्धतो वयं देवान्	९१२	इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिभि रवः	२३२२
आ प्र देव परमस्याः परावतः	८९९	इक्ष्वायसपदं धृतवत् सरीसृपं	५१०	इन्द्राग्नी वृषदग्निषु गन्तवो	६९३
आ प्र यात मरुतो विष्णो	५१९	इक्षे रन्ते हव्ये काव्ये चन्द्रे	१२४५	इन्द्र वन्योः पक्षिभिः	२०१७
आ ब्रह्मन् माक्ष्णो ब्रह्मवर्चसो	१५७२	इति विन्तु प्रजायै पशुमर्यै	२५६	इन्द्राग्नी वृद्धा	२००९
आ मा पुष्टे च पोष्ये च	९११	इति स्तुतासो अक्षया शिक्षादगो	५५०	इन्द्रावृद्धयन्तो कर्माणां	२०३६
आ यत साक्ष यक्षामो वावशानाः	४६९	इदं यत् परमेशिनं मनः	१०५२	इन्द्राय त्रैलोक्यं पञ्चदशान्	२१०४
आयनाय स्वाहा	१५२४	इदं वसुनिवचनं जनासः	३३९	इन्द्राय सुपाया	१९४९
आ यज्ञः पानीर्यमन्त्रयच्छा	४४३	इदं विष्कन्धं सहते	१०५०	इन्द्राय स्वयं पाययेदहं	१७३६
आयमग्निसविता क्षुरण	६४८	इदं न एकं पर क्त एकं	६१४	इन्द्राय स्वाहा १४२३, १४९८, १६२४	
आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः	९०२	इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया	१०९२	इन्द्रा याहि मे हवामिदं	९२४
आयासाय स्वाहा	२२९७	इदमिथा रीदं गृहीतवा	६२७	इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वापतो	६६०
आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाहि	१३४०	इदमिन्द्र शृणुहि सोमप	१०९३	इन्द्रेन्द्र मनुष्याः परेहि	९००
आयुर्मे ज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०६	इदावत्सरायातीत्स्वरीम्	२२१७	इन्द्रे भुजं शक्षमानास आशत	७९७
आ युवानः कवयो यज्ञियासो	३७३	इदा हि व उपस्तुति	५२२	इन्द्रो अग्नें युमना अस्तु विवहा	७५४
आयुषोऽऽयुःकृता जीवायुमान्	११६२	इद्वत्सरायातिष्कद्वी	२२१८	इन्द्रो नोदिप्रमवसागमिष्टः	४१४
आरण्योऽजो नकुलः शास्त्रा	१९००	इद्वत्सराय इच्छमानो धृतेन	९१७	इन्द्रो मा भक्ष्वानेतस्या दिशः	२७९
आरेऽसावस्मवस्तु हेतिः	१०५६	इन्द्रस्वपसा बहेन	१९९२	इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयम्	७०९

इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमानः	१८४
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत्	१०००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः	१०१
इमं वीरमनु हर्षध्वम्	९५८
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम्	१३९६
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीमि	१७९
इमं नो अग्ने अश्वरं जुषस्व	४९९
इमं नो अग्ने अश्वरं होतः	४२०
इममग्न आयुषे वर्चसे नय	११०१
इममज्जस्पामुभये अकृण्वत	७२२
इमं महे विदध्याय शूषं	१७०
इमां वा मित्रावरुणा सृष्टिं	४६५
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः	२१२
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि	१०७३
इमा लु कं भुवना सीषधाम	८२३
इमामग्ने शरणि मीमृषो नो	९१८
इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी	१०७१
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः	१३३
इयं सा भूया उषसामिव क्षा	५७२
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्राः	१५०
इयं न उक्षा प्रथमा सुदेव्यं	५८३
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थम्	६४५
इराक्ष्य कीनाक्षं	२१७८
इर्यताया अकितवं	२१५०
इषाय स्वाहा	१६८७
इष्कृताहावमवतं	७६८
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेद	१०५
इहेदसाथ न परो गमाथेयौ	९०५
इहैव स्त माप याताध्यस्वत्	९५३
इहैव हवमा यात म इह	८८०
ईक्षमाणाय स्वाहा	१५४२
ईक्षिताय स्वाहा	१५४३
ईळते त्वामवस्यवः	८
ईशानाय परस्वत आलभते	१८७२
उक्ताः सञ्चराः १८०८, १८१८, १८२६	
उक्षाणो बृहत्या	१७९६
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः	३३०
उग्रं वर्षते स्वाहा	१६१३
उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहुः	५७८

उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीः	३२७
उत त्यन्नो मास्तं शर्ध आ गमद्	३२४
उत त्या मे यशसा श्वेतनायै	८५
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता	६४१
उत त्या मे हवमा जगम्यातं	३८७
उत खे देवी सुभगे मिथूदशा	१६२
उत खे नः पर्वतासः सुशस्तयः	३२५
उत खे नो मरुतो मन्दसाना	४७०
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या	३८६
उत देवा अवहितं	८०९
उत यावापृथिवी क्षत्रमुक्	३८०
उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा	१४५
उत न ई मतयोऽश्वयोगाः	१४६
उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः	१४७
उत न एषु नृषु श्रवो धुः	४४१
उत नो देवावश्विना शुभस्पती	७४१
उत नो देव्यदितिः	५०९
उत नो धियो गोअग्राः	३२
उत नो नक्तमपां वृषण्वस्	७४०
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना	७४२
उत नो विष्णुस्त वातो अश्विधो	३२३
उत नोऽहिर्बुध्न्यो मयस्कः	१४४
उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोतु	३९१
उत माता बृहद् दिवा शृणोतु नः	६८५
उत वः शंसमुशिजामिव श्मसि	१६३
उत स्य देवः सविता भगो नः	३९०
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिः	१६१
उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिः	१६०
उत स्य न उशिजामुर्विया कविः	७३२
उतो हि वां पूर्व्या आविविद्रे	१७३
उत्कूलानिकूलभ्यस्त्रिष्ठिनं	२२०८
उत्तमेभ्यः स्वाहा	११३२
उत्तरेभ्यः स्वाहा	११३३
उत्थिताय स्वाहा	१५३३
उत्सादेभ्यः कुञ्जं	२१६३
उदकाय स्वाहा	१५९४
उदस्य शुष्माद् मानुर्नर्त	४३२
उदानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१०
उदीच्यै दिधे स्वाहा	१५८६

उदीरय कवितमं कवीनाम्	२६२
उदु त्यच्छुर्महि मित्रयोरां	३९३
उदु ग्य वः सविता सुप्रणीतयो	५२३
उद्गृहीताय स्वाहा	१६१६
उद्गृहते स्वाहा	१६१५
उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनानि	१११०
उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः	७६३
उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि	८६२
उद्यासाय स्वाहा	२३०१
उद्ग्राताय स्वाहा	१५२९
उद्ग्रावाय स्वाहा	१५२८
उन्नत ऋषभो वामनस्त	१७६३
उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठः	१७६४
उप त्वा नमसा वयं होतः	९२१
उपध्वस्ताः सावित्राः	१८०२
उप नः सूनवो गिरः	४१७
उप नो देवा अवसा गमन्तु	६५
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिः	१३०७
उपयामगृहीतोऽर्षीन्द्राय त्वा	१३००
उपयामगृहीतोऽस्याप्रयणो	१२९९
उपयाममधेरणौष्ठेन	१९७५
उपलान् प्लीहा	२०६४
उप व एषे नमसा जिगीषा	१४३
उप व एषे वन्दोभिः शूषैः	२४६
उपविष्टाय स्वाहा	१५११
उपशिक्षाया अभिप्रश्निनं	२१७१
उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं	२६६
उपस्थावराभ्यो दाशं	२२२४
उपस्थिताय स्वाहा	१५२३
उप ह्वये सुदुर्घा धेनुमेतां	१२४
उप ह्वये सुहवं मास्तं गणं	६००
उपावीरस्युप देवान् दैवीः	१२८६
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	११३१
उभाभ्यां देव सवितः	११७५
उभे धुरौ वहिरापिन्दमानो	७७३
उरुव्यवा नो महिषः शर्म यंसद्	८०७
उरौ देवा अनिबाधे स्याम २७५, २९२	
उर्यै दिधे स्वाहा	१६३०
उलो हलिङ्गो	१८९२

उपोविष्य हि मघवन देव्यः	४७५
उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुः	१९९
उषासानक्ता वृहती उपेशसा	५९४
उषे यद्धा सुपेशसा	८६६
उषो मघान्या वह	२३७
उष्ट्रो घृणीवान् वाघ्रीनसस्ते	१९४२
ऊनी देवानां वयमिन्द्रवन्तो	१२६५
ऊर्ज गावो यवसे पीवो अश्वान	७६०
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिबन्त	१४०१
ऊर्जाय स्वाहा	१६८८
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्विगी	१३८२
ऊर्ध्वमिनामुच्छ्रय गिगी	१३८१
ऊर्ध्वयै दिशे स्वाहा	१५८८
ऊर्ध्वो अग्निः सुमर्तं वस्यो अश्वान् ४८१	
ऊर्ध्वो ग्रावा वगवोऽस्तु सोमरि ७५९	
ऊर्ध्वलामिः कपिश्वान्	१९९६
ऊर्ध्वीकाभ्यो नैषादं	२१४४
ऊर्ध्वो जतुः सुबिलीका	१९९७
ऊर्ध्वं वाचं प्र पश्ये मनो यजुः	१३९९
ऊर्ध्वा कपोतं जुदत प्रणोदम्	८३२
ऊर्ध्वो अक्षरं परमे व्योमन्	१३७
ऊर्जुनीती नो वरुणो	२९
ऊर्जनीतय आ गत	३५१
ऊर्जये स्तेनहृदयं	२९९३
ऊर्जस्यतेनार्दित्या यजत्रा	१०६६
ऊर्जस्य वो रथ्यः पूतदक्षान्	४०१
ऊर्जस्य हि प्रसिधिर्योऽह व्यचो ७०४	
ऊर्जुभ्यः स्वाहा	१६३७
ऊर्जे स विन्दते युधाः	५२८
ऊर्जुभ्योऽग्निनसन्धः	२२२१
ऊर्जुर्जमुक्ता ऊर्जुर्विद्यतां मदः ७४३	
ऊर्जुणा भागोऽसि विश्वेषां देवानाम्	८६०
ऊर्ज्यो मयूरः सुपर्णस्ते	१९३०
ऊर्जसाः ककुभे	१७९७
ऊर्जसाय गवयी	१८८६
ऊर्जिभ्यः स्वाहा	११३४
एक एवामिर्बहुधा समिद्धः	५५६
एकमिन्द्रास्तुवत प्रजाः	१४५५
एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त	१४४०

एकैर्बभूवः स्वाहा	१००६
एकनिष्कान्यास्तुवतैकशकाः	१४५०
एकजनाय स्वाहा	१७२५
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश	७८५
एकस्मै स्वाहा	१७००
एकादशभिस्तुवत अश्वानो	१४४५
एकादशैर्बभूवः स्वाहा	१०१४
एकानृचैर्बभूवः स्वाहा	१००८
एकाष्टका तपसा तपमाना	९९३
एकोनविंशतिः स्वाहा	१०२२
एव्यक्ता	१९०३
एतं धर्मं धाम यस्य सूरः	९३
एतं शोभांमन्दास्मयुधैर् कृषिन्	७४६
एतं मघस्थाः परि वो ददामि	११५०
एतं जानाथ परमे व्योमन्	१०५१
एतं ते देव गवितर्यज्ञे	८३९
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये	७४७
एता ऐन्द्राग्राः १७६८, १८०९, १८१९	
एता भियं कृणवामा सन्धायो	३१४
एतान्यग्ने नवर्तं सहसा	१०३२
एतान्यग्ने नवर्तनैव त्वे	१०२१
एता वो वश्मयुयता यजत्राः	१६४
एताः शुनालीरोयाः	१८२७
एतां न्वथ सुभ्यो भवाम	३१३
एतं मरुतो अभिना	२३९
एताः शूर्येण वयमिन्द्रवन्तो	५६
एता व्याघ्रे परिवस्वजानाः	११४८
एन्द्रो बर्हिः सीदन् पिबन्तामिळा ५९८	
एवश्छन्दो वरिदछन्दः	१३४८
एवा कविस्तुवीर्या अतज्ञा	६९१
एवामि सहस्यं वसिष्ठो	५००
एवा नपातो मम तस्य धीभिः	३९९
एवा नो अग्ने विश्वा दशस्य	५०५
एवा प्लतेः सूरुर्वाधुधद् वो	६७५
एष ते देव नेता	३४९
एष ते निर्जते भागस्तं जुषस्व १३२३	
एषः स्तोमो मारुतं धर्मो अरुहा २७३	
एषा वः सा सत्या संवागभूद् १३१७	
एवामहमायुधा सं स्यामि	११०९

एह यातु वरुणः सोमो	९५१
ऐन्द्रः प्राणो अजं भद्रं निर्दायद् १२९१	
ऐन्द्राभनः सः हिनो	२०९२
ऐन्द्रोऽरुणो	२०९०
ऐभिर्गमे दुवो गिरा	४
ऐषु यावापयिवी धानं महन्	७४५
ओमानमापो मानवीर्यक	३८४
ओमामधर्षणीभूतो	१
ओ ध्राष्ट्रिर्दध्या गमेन्	४८८
ओषध्याभ्यः स्वाहा १६५४, १६६२	
ओषध्याभ्यामुधारां	२६९६
कतमस्मै स्वाहा	१५५३
कथा कविस्तुवायान कथा गिरा ६७९	
कथा दाशम नमसा मुदानूत	२५५
कथा देवानां कलमस्य यामनि	६७६
कथा महे हरिषाय ब्रवाम	२५०
कादन्धा नः पात्रे देवगतां	६७
कदु प्रियाय धामि मनोमहे	३३५
कद वः कलस्य धर्मासि	४३
कदुक्तरः कपूयमुद् दधातन	७७४
कपोत उन्धकः शशन्ने	१२३९
कर्णाभ्यां ओजः	१९८३
कर्णा यामा	१७४५
कर्मणे उयाकारं	२१३०
कन्धविद्धो लोहिनाहिः	१८९६
कम्भाषा आभिमाकताः	१७६६
कविर्नक्षत्रा अभि यामवष्ट	१७५
कश्छन्दसा योगमा वेद धीराः	७९०
कम्मे स्वाहा	१५५२
कामाय पिकः	१२४६
कामाय वैधलम्	२१२१
काय स्वाहा	१५५१
कायास्तुवराः	१८१२
किं दिवदने क उ म वृक्ष आस ५७४	
किमज्ञ स्वा ब्रह्मणः शोम गोपा ४११	
किम् नु वः कृणवामापरेण	१५३
कीलाजय मराकारं	२१७२
कुर्वते स्वाहा	१५४२
कुलीका देवजामिभ्यः	१८५४

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः ६८८	क्रोष्टा मायोः १९०१	घृतेन सीता मधुना समज्यतां ८५७
कूजते स्वाहा १५१८	क्वयिः कुटुर्दाल्यौहस्ते १९४५	घोषाय भषम् २२५६
कूप्याभ्यः स्वाहा १५१८	क्षत्राय राजन्यं २११४	घोषाय स्वाहा १४२४
कूर्माञ्छकैः १९९४	क्षिप्रश्चेनाय वर्तिका १८८७	घ्राताय स्वाहा १५०९
कूर्माञ्छकपिण्डैः २०५३	क्षुदेभ्यः स्वाहा १०२७, ११२६	चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां २०६१
कृकवाकुः सावित्रो १९१९	क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं २२५२	चक्षुर्यज्ञेन कलरतां स्वाहा १७१२
कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते १९५१	क्षेमाय विमोक्तारम् २२०७	चक्षुषे मशकान् १८७९
कृणोमि ते प्राजापत्यम् १०६२	खड्गो वैश्वदेवः १९४७	चक्षुषे स्वाहा १५७६
कृताय स्वाहा १५५०	खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां ८७०	चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा १०१७
कृतायाऽऽदिनवदर्शं २२४६	गणपतये स्वाहा १६७२	चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य ७८८
कृधी नो अद्वयो देव सवितः ७४४	गणश्रिये स्वाहा १६७१	चतुष्कर्पा युवतिः स्रपेशा ७८४
कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे १७२९	गणानां त्वा गणपतिं हवामहे १३७९	चत्वार ई बिभ्रति क्षेमयन्तो ३३१
कृष्णग्रीवः शितिकक्षो १७५१	गणेभ्यः स्वाहा ११३६	चत्वारो मा मशकारस्य शिखः ९६
कृष्णग्रीवा आग्नेयाः १७५८, १७७३, १८००	गन्धर्वाप्सरोभ्यो ब्राह्मं २१४६	चन्द्रमसे किलासम् २२७८
कृष्णाक्षिरत्पाञ्जः १७५२	गन्धाय स्वाहा १५०८	चन्द्रमा अप्सवन्तरा ३८
कृष्णान् वर्षाभ्यो १७८६	गर्भं चेहि सिनीवालि ८३८	चन्द्रमा नक्षत्रैरुदकाम् ९९५
कृष्णाः पृषन्तल्लैयम्बकाः १८२५	गायत्रेण प्रति मिमोते अर्कम् १२२	चन्द्राय स्वाहा १६४१, १६५९, १६७७, २२९१
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः १८२४	गिरा य एता युनजद्वरी त ४६७	चराचरेभ्यः स्वाहा १६६५
कृष्णा भौमा १७७९	गिरीन् प्लाशिभिः २०६३	चाषान् पितेन २०५१
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् ६३०	गीताय शैल्यं २१२४	चित्तं मन्याभिः १९८६
कृष्णा वारुणाः १८१०	गुहाभ्यः किरातं २२३२	चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः ७६२
कृष्णाय स्वाहा १९६८	गेहायोपपतिम् २१५४	चित्राण्यज्ञैः २०८०
कृष्णो रात्र्याः १९२६	गोधा कालका दार्वाघाटस्ते १९१८	जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् १२३
कृष्णोऽस्याखरेष्ठाऽमये त्वा १२७२	गोभिर्धृवा पात्वृषभो वृषा त्वा ११५५	जनो यो मित्रावरुणावभिधुग् ९०
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् १७४	गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः १८५३	जयतामिव तन्मयतुः १७
को ददर्श प्रथमं जायमानम् १०२	गौरीमीमेदनु वत्सं मिषन्तं १२६	जरां सु गच्छ परि धत्स्व १०४०
को नु वां मित्रावरुणावृतायन् २४०	गौरीभिमाय सलिलानि तक्षति १३९	जवं जङ्घाभ्याम् १९९७
को मा ददर्श कतमः सन्देवो १२०६	गलौभिर्गुल्मान् २०६६	जवाय स्वाहा १५३४
को वः स्तोमं राघति यं जुजोषथ ६६६	ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं २२६८	जवायाश्वपं २१७४
को वस्त्राता वसवः को वरुता २२९	ग्रावाणः सोम नो हि कं ४०६	जवो यस्ते वाजिन्निहितो १३१४
कतवे स्वाहा १४०८, १६९७	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जहका वैष्णवी १९२८
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामवः ७६१	ग्रीष्माय कलविङ्कान् १८३१	जाग्रते स्वाहा १५१७
क्रतूयन्ति क्रतवो हस्तु धीतयो ६७७	घर्मश्च मे १४७६	जानीत स्मैनं परमे व्योमन् ११५१
क्रन्दते स्वाहा १५०४	घर्माय स्वाहा २३१०	जाम्बीलेनारण्यम् १९९९
क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो ७२६	घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुः ७८२	जिह्वाया उत्सादम् १९५८
क्रुद्धौ श्रोणिभ्याम् २०३८	घृतं रसेन २०७२	जीमूतान् हृदयौपशेन २०५८
क्रोधाय निसरं २२०४	घृतं घृतपावानः पिबत ८४५	जुम्बकाय स्वाहा २०८३
क्रोशाय तूणवधम् २२६१	घृतपृष्ठा मनोयुजो ९	ज्मया अत्र वसवो रन्त देवाः ४८३
	घृतेन त्वा समुक्षाम्यमे ११५०	

उपोविथ हि मघवन् देष्णं	४७५
उषसः पूर्वा अध यद् व्युपुः	१९०
उषासानका वृद्धनी उपेशमा	५९४
उषे यङ्गा सुपेशमा	८६६
उषो मघोन्या वह	२३७
उषो घृणीवान् बाघीनसस्ते	१९४२
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो	१२६५
ऊर्ज गावो यवसे पीवो अतन	७६०
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिबन्त	१४०१
ऊर्जाय स्वाहा	१६८८
ऊर्ध्वमेनमुन्मृश्याद्विगी	१३८२
ऊर्ध्वमिनामुन्मृश्याय गिरौ	१३८१
ऊर्ध्वमि दिवो स्वाहा	१५८८
ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अत्रेष्ट ४८१	
ऊर्ध्वो प्राजा वसवोऽस्तु सौमरि	७५९
ऊक्षलाभिः कपिभजान्	१९९६
ऊक्षीकाभ्यो नैवार्य	२१४४
ऊक्षो जतुः सुषिलीका	१९९७
ऊर्ध्वं वाचं प्र परो मनो यजुः	१३९२
ऊर्ध्वा कपोतं तुदत प्रणोदम्	८३२
ऊर्ध्वो अक्षरे परमे व्योमन्	१३७
ऊजुनीती नो वरुणो	२९
ऊजुर्धातय आ गत	३५१
ऊनये स्तेनहृदयं	२१९३
ऊतस्योर्नादाय्या यजत्रा	१०६६
ऊतस्य वो रथः पूतदक्षान	४०१
ऊतस्य हि प्रसितैर्योऽय व्यचो	७७४
ऊतुभ्यः स्वाहा	१६३७
ऊते स विन्दते युधः	५२८
ऊभुभ्योऽजिनसन्धः	२२२१
ऊभुर्ऊभुक्षा ऊभुर्विधतां मघः	७४३
ऊभूणां भागोऽसि विधेया देवानाम्	८६०
ऊभ्यो मयूरः सुपर्णस्ते	१९३०
ऊषभाः ककुभे	१७९७
ऊषभाय गवयी	१८८६
ऊषिभ्यः स्वाहा	११३४
एक एवामिर्बृद्धा समिद्धः	५५६
एकत्रिंशतास्तुवत प्रजाः	१४५५
एकमास्तुवत प्रजा अधीयन्त	१४४०

एकर्वेभ्यः स्वाहा	१०२६
एकर्वेभ्यः स्वाहा	१४५०
एकशताय स्वाहा	१७२५
एकः सुपर्णः स समृद्धमा विवेका	७८५
एकस्मै स्वाहा	१७००
एकादशभिस्तुवत अतवो	१४४५
एकादशर्वेभ्यः स्वाहा	१०१४
एकानृचैभ्यः स्वाहा	१००८
एकाष्टका तपसा तप्यमाना	९१३
एकोनविंशतिः स्वाहा	१०२२
एव्यङ्को	१९०३
एतं शर्वं धाम यस्य सूरः	९३
एतं शोर्ध्वमन्त्रास्मयुधैः कृषिन्	७४६
एतं मघस्था परि वो ददामि	११५०
एतं जानाथ परमे व्योमन्	१०५१
एतं ते देव गवितर्मज्ञे	८३०
एतं मे स्तोमं तना न सूर्य	७४७
एता ऐन्द्राणाः १७६८, १८०९, १८१९	
एता भियं कृणवामा सन्नायो	३१४
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा	१०३२
एतान्यग्ने नवतिर्नव स्वे	१०३१
एता वो वस्युयता यजत्राः	१६४
एताः शुनासीरीयाः	१८२७
एतां न्वथ सुभ्यो मवाम	३१३
एतं मरुतो अभिना	२३९
एनाऽग्नयेण वयमिन्द्रवन्तो	५६
एना व्यघ्रो पारिषस्वजानाः	११४८
एन्द्रो अहिः सीदत पिबन्तामिळा	५९८
एवमृच्छन्वो वरिषमृच्छन्वः	१३४८
एवा कविस्तुवीरवा अतक्ता	६९१
एवामि सहस्यं वसिष्ठो	५००
एवा नपातो मघ तस्य धीभिः	३९२
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य	५०५
एवा प्लतेः सुतुरधीवधद् वो	६७५
एष ते देव मेता	३४९
एष ते निर्जते भागस्तं जुषस्व	१३२३
एषः स्तोमो मरुतं शर्वो अरुधा	२७३
एषा वः सा सत्या संवागभूद्	१३१७
एषामहमायुधासं स्यामि	११०९

एह यातु वरुणः सोमो	९५१
ऐन्द्रः प्राणो अत्रे अत्रे निर्दायद्	१०९१
ऐन्द्रावन्तः स हिती	२०९२
ऐन्द्रोऽरुणो	२०९०
ऐभिर्मे दुवो गिरौ	४
ऐग्य यावापृषिवो धानं महः	७४५
ओमानमापो मानुषीमृक्	३८४
ओमामधर्षणाधुना	१
ओ आर्षिर्दिश्या सोमो	४८८
ओषधोभ्यः स्वाहा १६५४, १६६२	
ओषधयूयायानुक्षत्तारं	२१९६
कतमस्मै स्वाहा	१५५३
कथा कविस्तुवीरवान कया गिरा	६७९
कथा वाशोम नममा युदानन्	२५५
कथा देवानो कतमस्य यामान	६७६
कथा महे रुद्रियय जनाम	२५०
कादन्धा नः पात्रे देवयतो	६७
कद प्रियाय धामि मनामहे	३३५
कद व कतस्य धर्षासि	४३
कपूलाः कपुधमुद् दधानत	७७४
कपोत उन्मकः शशस्ते	१२३९
कर्णाभ्यां ओजः	१९८३
कर्णा यामा	१७४५
कर्मण ज्याकारं	२१३०
कन्विहो नाहितहिः	१८९६
कम्भाया आग्निमाकताः	१७६६
कविर्नुक्ष्वा अभि यामनष्ट	१७५
कदृच्छन्वो योमया वेद धीराः	७९०
कम्मे स्वाहा	१५५२
कामाय पिकः	१९४६
कामाय वैश्वस्य	२१२१
काय स्वाहा	१५५१
कायास्तुपराः	१८१५
किं सिद्धं क उ स इक्ष आस	५७४
किमत्र स्वा ब्रह्मणः सोम गोवो	४११
किम् नु वः कृणवामापरेण	१५३
कीलान्नाय मरुकारं	२१७२
कुर्वते स्वाहा	१५४२
कुर्वाका देवजामिभ्यो	१८५४

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः ६८८	क्रोष्टा मायोः १९०१	घृतेन सीता मधुना समज्यतां ८५७
कूजते स्वाहा १५१८	क्वयिः कुटर्दाल्यौहस्ते १९४५	घोषाय भषम् २२५६
कूप्याभ्यः स्वाहा १५१८	क्षत्राय राजन्यं २११४	घोषाय स्वाहा १४२४
कूर्माञ्छकैः १९९४	क्षिप्रयेनाय वर्तिका १८८७	घ्राताय स्वाहा १५०९
कूर्माञ्छकपिण्डैः २०५३	क्षुदेभ्यः स्वाहा १०२७, ११२६	चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां २०६१
कृकवाकुः सावित्रो १९१९	क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं २२५२	चक्षुर्यज्ञेन कलरतां स्वाहा १७१२
कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते १९५१	क्षेमाय विमोक्तारम् २२०७	चक्षुषे मशकान् १८७९
कृणोमि ते प्राजापत्यम् १०६२	खड्गो वैश्वदेवः १९४७	चक्षुषे स्वाहा १५७६
कृताय स्वाहा १५५०	खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां ८७०	चतुर्दशर्चभ्यः स्वाहा १०१७
कृतायाऽऽदिनवदर्श २२४६	गणपतये स्वाहा १६७२	चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य ७८८
कृधी नो अद्वयो देव सवितः ७४४	गणश्रिये स्वाहा १६७१	चतुष्कपर्दा युवतिः स्रपेशा ७८४
कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे १७२९	गणानां त्वा गणपतिं हवामहे १३७९	चत्वार ई बिभ्रति क्षेमयन्तो ३३१
कृष्णग्रीवः शितिकक्षो १७५१	गणभ्यः स्वाहा ११३६	चत्वारो मा मशकारस्य शिश्वः ९६
कृष्णग्रीवा आग्नेयाः १७५८, १७७३, १८००	गन्धर्वाप्सरोभ्यो ब्राह्मं २१४६	चन्द्रमसे किलासम् २२७८
कृष्णाक्षिरत्पाञ्जः १७५२	गन्धाय स्वाहा १५०८	चन्द्रमा अप्सवन्तरा ३८
कृष्णान् वर्षाभ्यो १७८६	गर्भं घेहि सिनीवालि ८३८	चन्द्रमा नक्षत्रैरुदकामत् ९९५
कृष्णाः पृषन्तल्लैयम्बकाः १८२५	गायत्रेण प्रति मिमोते अर्कम् १२२	चन्द्राय स्वाहा १६४१, १६५९, १६७७, २२९१
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः १८२४	गिरा य एता युनजद्वरी त ४६७	चराचरेभ्यः स्वाहा १६६५
कृष्णा भौमा १७७९	गिरीम् प्लाशिभिः २०६३	चाषान् पितेन २०५१
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद् ६३०	गीताय शैल्यं २१२४	चित्तं मन्याभिः १९८६
कृष्णा वारुणाः १८१०	गुहाभ्यः किरातं २२३२	चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः ७६२
कृष्णाय स्वाहा १९६८	गेहायोपपतिम् २१५४	चित्राण्यज्ञैः २०८०
कृष्णो रात्र्याः १९२६	गोधा कालका दार्वाघाटस्ते १९१८	जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् १२३
कृष्णोऽस्याखरेष्ठाऽग्नये त्वा १९७२	गोभिष्ट्वा पात्यृषमो वृषा त्वा ११५५	जनो यो मित्रावरुणावभिधुग् ९०
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् १७४	गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः १८५३	जयतामिव तन्यतुः १७
को ददर्श प्रथमं जायमानम् १०२	गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं १२६	जरां सु गच्छ परि धत्स्व १०४०
को नु वा मित्रावरुणावृतायन् २४०	गौरीभिमाय सलिलानि तक्षति १३९	जवं जङ्घाभ्याम् १९९७
को मा ददर्श कतमः सन्देवो १२०६	गलौभिर्गुल्मान् २०६६	जवाय स्वाहा १५३४
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ ६६६	ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं २२६८	जवायाश्वपं २१७४
को वखाता वसवः को वरुता २२९	ग्राबाणः सोम नो हि कं ४०६	जवो यस्ते वाजिजिहितो १३१४
कृतवे स्वाहा १४०८, १६९७	ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु ५९७	जहका वैष्णवी १९२८
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामवः ७६१	ग्रीष्माय कलविङ्कान् १८३१	जाग्रते स्वाहा १५१७
क्रतूयन्ति कृतवो हस्तु धीतयो ६७७	घर्मश्च मे १४७६	जानीत स्मैनं परमे व्योमन् ११५१
क्रन्दते स्वाहा १५०४	घर्माय स्वाहा २३१०	जाम्बलिनारण्यम् १९९९
क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो ७२६	घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुः ७८९	जिह्वाया उत्सादम् १९५८
क्रुधौ श्रोणिभ्याम् २०३८	घृतं रसेन २०७२	जीमूतान् हृदयौपशेन २०५८
क्रोधाय निसरं २२०४	घृतं घृतपावानः पिबत ८४५	जुम्बकाय स्वाहा २०८३
क्रोशाय तूणवधम् २२६१	घृतपृष्ठा मनोयुजो ९	ज्मया अत्र वसवो रन्त देवाः ४८३
	घृतेन त्वा समुक्षाम्यमे ११५०	

उयायांसमस्य यत्तुनस्य केतुना	३०१
उयातिरसि विश्वरूपे	८४४
उयातिर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७१८
उयातिर्यज्ञे स्वाहा	१६७८
उयातिर्यज्ञेन केतुमन्तं त्रिचक्रं	५५७
त आदित्या आ गता गर्वाताये ५८, ५९०	
त ऊ पु णो महो यजत्राः	६५३
तनु नः सविता भगः	२३८
तदश वाचः प्रथमं मर्त्याय	१७१०
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने ३३४, ११२०	
तदिन्वम्य परिपद्मानो अमन	६३९
तद्दि वयं गृणामहे	७९३
तद्गन्तुः सूरिर्दिधि ते भियंभा	६४४
तनुष्ट याजन् नन्वे नयन्ती	६१५
तन्नुना रायस्पोषेण रायस्पोषे	१३५१
तज इन्द्रस्तु वरुणस्तदग्निः	६६
तज दग्धो वरुणो मित्रो अग्निः	४४८
तजो अनर्वा सविता वरुण	३४३
तजो देवा वरुणत गुप्रवाचनं	५९१
तजो रायः पर्वताभाज आपः	४४६
तजो वातो मयोभु वानु भवजं	५२
तजोऽर्द्धिर्गुण्यो अर्द्धिर्गुण्यः	५७६
तपानि शशुं स्वर्ण भूमा	४४५
तपसे कालाळे	२१३३
तपसे श्रद्धं	२११६
तपसे स्वाहा	१६९१, २३०६
तपस्याय स्वाहा	१६९२
तप्तायनी मेऽसि बितायनी मे	१२८५
तप्ताय स्वाहा	२३०९
तप्यते स्वाहा	२३०७
तप्यमानाय स्वाहा	२३०८
तपसे तदकरं	२११७
तमीक्षानं जगत्तास्त्युषस्वति	२३
तं परनीमिरनुगच्छेम देवाः	१२४९
तं प्रमथा पूर्वथा विश्वमेमथा	२९४
तवोतिभिः सचमाना आरुषा	२६७
ता वो देवाः सुमतिमूर्जवन्तीम्	२५७
ता अस्तत वयुनं वीरवक्षणं	३३६
ता उभौ वसुरः पदः संप्रसारय १३८०	

ता नो रामन रातिषानो वसूनि	४४५
तान् पूर्वथा नितिदा ह्रमहं वयं	२१
तान यजत्रां ज्ञानाग्रधः	१०
तामस्य राति परशोर्वि प्रातः	२२८
तिममेको विभर्ति ह्रम आग्रधं	५४३
तिमोभिरस्तुवत मन्त्राग्रधं	१४४१
तिमो दिवसिप्रः पृथिवीः	११५७
तिमो देवाय निमनीरुपासत	७८३
तिमो मानुकीन पितृन् विभ्रदकः	१०८
तिमनीभ्या स्वाहा	१५९५
तीक्ष्णीयाम परशोरमः	११०८
तीर्थेभ्य आन्दे	२२२९
तीर्थो वो मधुमा अयं	१६६
तुजं नरान पर्वताः गन्तु	२४८
तुभ्यं पयो गन्तु पितृगवनीतो	७१
तुभ्यं वाह उणिहं	१७९४
तुभ्यं वाणिजं	२३३७
तुभ्यंभ्यः स्वाहा	१०२५
तृतीयंभ्यः शशुंभ्यः स्वाहा	११३०
ते अस्मभ्यं शर्म यंतन	३१
तेमान दन्तुभ्याः	१९५६
ते पा राजानो अग्रतम्य मन्त्राः	७३९
तेजमेऽजपालम्	२१७७
ते ते देव जेतये	३४६
तेजनीमभरकण्ठन	१९८४
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन्	४०३
ते नः सन्तु युजः सदा	५६०
ते नक्षात्रं तेऽवत	५५१
ते नूनं मोऽयमृतये	७९४
ते नो अर्थन्तो हवनधृतो हव	६८१
ते नो गोपा अपाचयाः	५३६
ते नो नावमुकयत	५१०
ते नो मित्रो वरुणो अर्बमायुः	२४१
ते नो रायो शुमन्तो वाजवन्तो	३८८
ते नो रुद्रः सरस्वती सजाषाः	३८९
तेऽवदन् प्रथमा मन्त्राकविषे	७७५
तेऽविन्दन् मनसा दीप्याना	८३६
तेषां हि महा महतामनर्षणा	६९४
ते जीवन्त जीवमा यजत्राः	५०४

ते हि यावाप्राथिवी भूरिरेतया	७३१
ते हि यावाप्राथिवी मानरा मही	६८९
ते हि प्रजया अभरन्त विश्वः	७३०
ते हि यज्ञाय याजयाम ऊमाः	४८४
ते हि अष्टवर्गवस्त त नः	४०२
ते हि वस्यो वसयानाः	३०
तमना समस्तु हिनात यज्ञ	४३१
त्रयांश्च जनास्तुवत भूतानि	१४५६
त्रयांश्च देवतास्त्राणि च	११६४
त्रया देवा एकादश	८६५
त्रयांश्च भिरस्तुवत मायाः	१४४६
त्रयांश्च भ्यः स्वाहा	१०१६
त्रयांश्च जन्तुमानवत भूतः	१०५१
त्रयांश्च नो अष्टवर्गवस्त त नः	११७८
त्रयांश्च नो देवाः	८९३
त्रिना कृणुष्वहिना	५४
त्रिपात्रम्यो यूपमो विश्वभ्यः	२१६
त्रिपा दिवः यावतवीर्याणि	२१९
त्रिपा दिवः सविता सोमर्वाति	२२०
त्रिपलमा वृणवा गीवन्तानि	२२१
त्रिपलमा अनुदुमे	१७९३
त्रिपदां त्रिपते स्वा	१२५३
त्रिः सप्त सप्ता नयो महं यो	६८३
त्रिणि शता त्री महमप्यमि ६१३, १२६१	
त्रिण्येक उरगायो वि चक्रम	५४५
त्रिजाकोर्ध्वसमस्तुवत	११५८
त्री यथम्या सिन्धवास्त्रः कर्वाणाम्	२१८
त्रिनाये काभ्यनं	२२४७
त्र्यययो माययै	१७९०
त्वं सुरा हरितो रामयो नून	७९
त्वं होता मनुर्हिता	१४
त्वं नो अमे आभिनिः	८२१
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः	८०
त्वमायमं प्राति वर्धयो गोः	७५
त्वमिन्द्र नयो यो अर्बो नून	७८
त्वमिन्द्र स्वयशा क्रमुषाः	४७६
त्वमीशिषे पशुतो पार्ष्वानो	१०९९
त्वष्टा च म इन्द्रध मे	१४६६
त्वष्टा नो देव्यं वचः	१३९५

स्वष्टा मे देव्यं ऋचः	९३५
त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते	७०१
त्वष्टुर्दशमी	२०२६
त्वष्ट्र उष्ट्रान्	१८७६
त्वष्ट्रे कौलीकान्	१८५२
त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा	१५६७
त्वष्ट्रे पुरुषपाय स्वाहा	१५६८
त्वष्ट्रे स्वाहा	१५६६
त्वां विशो वृणतां राज्याय	८९७
त्वामय ऋष आर्षेय ऋषीणां	१३७५
त्वां पूर्व ऋषयो गोभिरायन्	१२३०
त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्यो	१७३४
दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते	६८०
दक्षिणायै दिशे स्वाहा	१५८२
दक्षिणां वः प्रथममश्विनोषसम्	५०६
दधिक्राममिमुषसं च देवीं	१६९
दमूनसो अपसो ये सुहस्ताः	२७०
दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं	२८०
दशर्चेभ्यः स्वाहा	१०१३
दिरभ्यः स्वाहा	१६२८, २२९०
दिरभ्यो नकुलान्	१८६५
दितिश्च मे	१४८३
दित्यवाहो जगैलै	१७९१
दिवं वृक्षाभ्यां	२०६२
दिवक्षसो आग्निजिह्वा ऋतावृधः	६९८
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे	५८१
दिवा पतयते स्वाहा	१६८०
दिविस्पृषां यज्ञमस्माकमश्विना	५९९
दिवे कशान्	१८६४
दिवे खलति	२२७५
दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११७२
दिवे स्वाहा	१६२७, १६५७, २२८८
दिवो मादित्या रक्षन्तु	९७१, ११६९
दिशश्च म इन्द्रश्च मे	१४७४
दिशां कङ्को	१८९४
दिशां जत्रवो	२०५६
दिष्टाय रज्जुसर्जं	२१४०
दुष्कृताय चरकाचार्यं	२२५३
दूरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रम्	८९२

२६ दै. (विश्वे देवाः)

देवं वो अय सवितारमेषे	३४०
देवदेवं वोऽवसे	५२४
देवलोकाय पेशितारं	२१८७
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः	२१०
देवस्य त्वा सवितुः । अश्विनोः	१३६७
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	१२८७
देवस्य त्वा सवितुः सरस्वत्यै	१३६६
देवस्याहं सवितुः सवे	१३१५
देवा अमृतनोदकामस्तां	१००१
देवा आज्यपा जुषाणाः	१२५६
देवा इदस्य हविरयमायन्	१२५७
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे	७७८
देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्	८२८
देवा गातुविदो गातुं	१२३६
देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु	११९८
देवा देवानां भिषजा	१२५४
देवानां युगे प्रथमं	१२१४
देवानां समिदसि	१२४४
देवानां दूतः पुरुष प्रसूतो	१८८
देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रो	११६३
देवानां तु वयं जाना	१२१२
देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा	१२४६
देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे	७०६
देवान् हुवे गृहं छवसः खस्तये	७०७
देवानामसि वह्निताम	१२३४
देवानामिदवो महत्	५५९
देवानामुष्कमणमसि	१२४२
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः	३२६
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋज्यतां	२०
देवाः पितरः पितरो देवाः	११५२
देवा यज्ञमतन्वत भेषजं	१२५२
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो	५२५
देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु	१२४०
देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु	१२३२
देवीः षड्वीरु नः कृणोत	८०४
देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्य	१२४१
देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः	१२३८
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु	६३, २३५
देवो भगः सविता रायो अंशः	२६४

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	१३८७
देवीः षड्वीरु नः कृणोत	१०४७
देवीं धियं मनामहे	८४२
दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः	१२५०
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित	७१९
द्यावा नो अय पृथिवी अनागसो	५८२
द्यावापृथिवी अतु मा दीधीथां	१०९५
द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं	१०९१
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता	७१५
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा	१६४०, २३२०
द्यावापृथिवीयः कूर्मः	१९१६
द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां	१९६५
द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं	२०३०
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र	१३१
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः	८७५
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतसः	५२५
द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ	११७९
द्यौश्च म इन्द्रश्च मे	१४७१
द्यौश्च मे	१४८४
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	११००
द्यौष्पितः पृथिवी मातरधुग्	३९७
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा	१०१५
द्वादशारं नहि तज्जराय	१०९
द्वापरायाधिकल्पिनम्	२२४८
द्वाभ्यां स्वाहा	१७२३
द्वाभ्यः सामः	२१६५
द्वाविमौ वातौ वातः	८१०
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया	११८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	११२९
द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदम्	६१९
द्विमाता होता विदथेषु सम्राट्	१९८
द्विरूपा अग्नीषोमीया	१७६९
द्यतारो दिव ऋभवः सुहस्ता	७१६
धर्माय सभाचरं	२१२५
धाता च म इन्द्रश्च मे	१४६५
धाता धातृणां भुवनस्य यस्पतिः	८०६
धाता रातिः सवितेर्दं जुषन्ताम्	९०३
धातुर्दशमी	२०१३
धामच्छदभिरिन्द्रो ब्रह्मा	८६४

धार्याभ्यः स्वाहा	१६००
धावते स्वाहा	१५०७
धियं वो आसु दधिषे स्वर्षा	३६९
धिये समक्षिना प्रावते न	९३७
धुक्त्वा आमियी	१८९५
धूमाय स्वाहा	१६०५
धूमा आन्तरिक्षा	१७८०
धूमान् वसन्तायालमंत	१७८४
धूमा बभूवनाकाशाः	१८९२
धृतवता आदित्या इषिरा	१५१
धृतवताः क्षत्रिया यशनिष्कृता	७१४
धेनवोऽन्तरिक्षन्दमे	१७९२
धैर्याय तक्षणम्	२१३२
नक्षत्रमृत्कामिहतं वामस्तु नः	१०७७
नक्षत्राणि न म इन्द्रमे	१४७२
नक्षत्राणि वषण	२०८१
नक्षत्रिभ्यः स्वाहा	१६३३
नक्षत्रभ्यः किमिरं	२२७७
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा	१६३२, १६६०, २२९०
नक्षत्रमरुणीः पूर्वा राट्	६९
नक्षत्राभ्यः शौक्लं	२२२६
न तमहो न दुरितं	७९२
न तद् दिवा न पुषिभ्यान् मन्ये	४०९
न ता भिमन्ति मायिनो न धाराः	२१४
नदीभ्यः पौषिष्ठम्	२१४३
न वह्वा समशकन्	८८५
नम उदयेण	२०६०
नमसे स्वाहा	१६८५
नमस्याय स्वाहा	१६८६
नमो कृपाः पार्जन्याः	१७४७, १७६२
नम इदुमं नम आ विवासे	४००
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां	१२६४
नमो देवेभ्यः	१२३५
नमो महद्भ्यो अर्मकेभ्यो नमो	११९९
नमो वः पितरो रसाय	१२७७
नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिभ्रमतेजो	११८२
नरा वा शंसं वृषणमगोष्ठम्	६७८
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह	६०
नरिष्ठायै भीमकं	२१२६

नर्माय पुंश्रुत्	२२६५
नर्माय रेभ	२१२७
नवदशाभिरस्तुवन शुद्धार्थी	१४४९
नवभिस्तुवना पितरऽभूजयन्त	१४४४
नवर्चभ्यः स्वाहा	१०६३
नवर्चः शल्यास्तुवन वनस्पतयो	१४५४
न वि जानामि यदिवदमांसं	१३५
न वो शुद्धा नक्तम भूरि तुक्तं	७५७
नम्यं तनुकम्यं हितं	४९
न हि वो अस्त्यभेदा	५४९
नाकं राजन प्राति निष्ठ तत्र	११५४
नाको मकरः कुर्यापयः	१९०१
नाना वक्रानि यस्या वपुर्वि	२०२
नाभ्ये स्वाहा	२२९५
नारकाय वाहृणं	२११८
नाबा न क्षोदः प्रादवाः पुषिभ्याः	६२०
नासत्या म पितरा बभूवुस्ता	१८५
नित्यधाकन्यान् स्वपातवमुना	५७१
निमेवाय स्वाहा	१५४५
मिराहोवान क्रुणोतन	७६७
मिर्ऋति निर्ऋतेत्येन	१९८८
मिर्ऋत्यै कोशकारा	२२११
मिर्ऋत्यै पञ्चमी	२०२१
मिर्ऋत्यै पारिविदिदानम्	२१५६
निविष्टाय स्वाहा	१५१०
निर्वेति पालतो दूत आसु	२००
निर्वेभ्यं मूर्धा	१९७९
निषण्णाय स्वाहा	१५३२
निष्कृत्यै पेशस्कारा	२१५८
निष्कृत्यै स्वाहा	२३११
निष्पिध्वरीस्त आषधीकृतापो	२१३
नीलैः पयन्तामधरे भवन्तु	११०७
नीलज्जोः कृमिः	१८८८
नीलमन्त्रेभ्यः स्वाहा	११२४
नीहारमूष्मणा	२०७५
नीहाराय स्वाहा	१६२१
नू देवासे वरिवः कर्तना नो	५०७
नू नो रयि रथ्यं वर्षाणिप्रां	३७७
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान्	३६२

नू रोदसी अभिपूतं वसिष्ठैः	४८७
नू रोदसी अहिना युग्येन	२३४
नू सद्यन्तं इदम्यं नोशा देवाः	४०४
नृबधसे अनामघन्तो अर्हणा	२६४
नृणाय सुतं	२१२३
नेतार ऊ पु शास्त्रिणः	७९७
नेतावदेना परे अन्यदस्ति	५७५
पञ्च जना मम ह्येनं तुषन्तां	१२११
पञ्चदशाभिरस्तुवन क्षत्रम्	१४४७
पञ्चवर्षाभ्यः स्वाहा	१०१८
पञ्चपादं पितरः द्वादशाकृति	११०
पञ्चभिस्तुवन भूताभ्युजयन्त	१४४२
पञ्चर्चभ्यः स्वाहा	१००८
पञ्चारे षष्ठे पार्वण्यमाने	१११
पञ्चावसिष्ठभूमे	१७९१
पञ्चविंशत्यास्तुवनारण्याः	१४५२
परनीव पूर्वहानि वाहृभ्या	८३
पञ्च एका पौषाय तस्करे	५४४
पञ्चस्पथाः पार्वणि वचस्पथा	३७०
पथ्या रेवतीर्बहुधा विहृपाः	९०१
पदे इव निहिते दशमे अन्ताः	२०६
पदेपदे मे जग्मि मि धाय	२५४
पथा वस्ते पुरुकपा वपुर्वि	१०५
पञ्चानं भूभ्या	१९६४
परः क्षी अस्तु तन्वा तना च	१२०३
परमेष्ठयभिर्षातः प्रश्नापतः	१३०८
परावतो ये दिपयन्त आर्य	६६१
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरा	६९९
परि चन्मर्तो द्विवर्णं समन्यान्	५६९
परि दद्या इन्द्रस्य बाहु	२६१
परि वत्त भत्त नो वर्यसेमं	१०३९
परिवर्चभ्यः स्वाहा	१६६४
परिवारसरायावजाताम्	२२१६
परीदं वासो अभिधाः स्वस्तये	१०४१
परांम सीममायुषं महे	१०३८
परीमिन्द्रमायुषं महे	१०३७
परीमे गामनेयत	८२२
पर्जन्यवाता वृषभा पुषिभ्या	३६८
पर्जन्याय मन्त्रकान्	१८३७

पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणा	७००
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा	११२७
पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्	२२३४
पवमानः पुनातु मा कृत्वे	११७४
पवित्राय भिषजं	२१६८
पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः	१२७०
पश्चादोषाय ग्लानिनं	२२१८
पश्चा यत् पश्चा वियुता बुधन्त	६३८
पष्ठवाहो विराजः	१७९५
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन्	१०३
पातं न इन्द्रापूर्णा	९३२
पातो नो देवाश्विना शुभस्पती	९३४
पातो नो यावापृथिवी अभिष्टये	९३३
पाप्मने क्लीबम्	२११९
पाप्मने सैलगम्	२२५४
पाराय मार्गारम्	२२२७
पार्या इक्षवः	१९७२
पायाणि पक्षमाणि	१९६९
पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम्	८७१
पावीरवी कन्या चित्रायुः	३६९
पावीरवी तन्यतुरैकपादजो	७०४
पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन्	६३३
पिद्वो ऋग्वकुः कक्रटस्ते	१९०३
पिपर्तु मा तदतस्य प्रवाचनं	५८७
पिशङ्गाञ्छिशिराय	१७८९
पिशाचिभ्यो विदलकारौ	२१५१
पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु	११८०
पुनन्तु मा देवजनाः	११७३
पुनर्दयि ब्रह्मजायां	७८१
पुनर्नः पितरो मनो	६२५
पुनर्वै देवा अददुः	७८०
पुमांसं पुत्रं जनय	१९६०
पुरा यत् सूरस्तमसो अपीतैः	७६
पुरुषमृगश्चन्द्रमसो	१९१७
पुरुषव्याप्राय दुर्मदं	२१४५
पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा	१८९७
पुष्ट्यै गोपालं	२१७५
पुष्पेभ्यः स्वाहा	१६५२
पूताय स्वाहा	२२२६

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो	१२०१
पूरुषं वनिष्ठुना	२०४३
पूरुषं दीर्घ्याम्	२००१
पूषा च म इन्द्रश्च मे	१४६१
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशः	१३२०
पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वति	५५४
पूष्णे नरन्विषाय स्वाहा	१५६५
पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा	१५६४
पूष्णे स्वाहा	१४२१, १५६३
पूष्णां नवमी	२०२५
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः	१३२
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा	११३९
पृथिवी च म इन्द्रश्च मे	१४६९
पृथिवी च मे	१४८१
पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो	१३४२
पृथिवीं त्वचा	२०८२
पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः	१०८२
पृथिव्यै पीठसर्पिणं	२२७२
पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्यो	११७०
पृथिव्यै स्वाहा १६२५, १६५५, २२८४	
पृथ्व्यो मारुताः	१८०५, १८११
पृथिस्तिरश्चीनपृथिः	१७४८
पृथती क्षुद्रपृथती स्थूलपृथती	१७४२
पृथतो हेमन्ताय	१७८८
पृथदश्वा मरुतः पृथिमातरः	२५
पृष्ठं यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७२०
पौष्णः श्यामः	२०८७
पौष्णो रजतनाभी	२०९७
प्रकामाय रजयित्रीम्	२१९२
प्रकामोद्यायोपसदं	२१६०
प्रकाशेनान्तरम्	१९७७
प्रजाः रेतसा	२०५०
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे	८९१
प्रजापतये च वायवे च	१८८१
प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८६
प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनः	१८७७
प्रजापतये स्वाहा	१७०५
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु	९९०
प्रजापतिः प्रजामिदकामत्	१००२

प्रजापतिर्मा प्रजननवान्सह	९८०
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	२१६९
प्र तद् दुःशीमे पृथ्वाने वेने	७३९
प्र तव्यसो नमोऽक्तिं तुरस्य	२८५
प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत	४४४
प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वा	१३५२
प्रति प्रयाणमधुरस्य विद्वान्	३४१
प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात्	२६१
प्रतिश्रुत्काया अर्तनं	२२५५
प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः	१९०४
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा	१५८४
प्रत्यश्चर्मकमनयच्छचीभिः	८२७
प्रथमभाजं यशसं वयोधां	३७१
प्रथमा ह व्युवास सा धेनुः	९०८
प्रथमेभ्यः स्वाहा	११२८
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नाम	८३४
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णद्	६३१
प्रदरान् पायुना	२०५२
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो	७३३
प्र जु यदेषां महिना चिकित्रे	१४८
प्र नो यच्छत्वर्थमा	८१७
प्र परस्यामदिति सिन्धुमर्कैः	२३१
प्रप्रोथाय स्वाहा	१५०७
प्रबुद्धाय स्वाहा	१५१९
प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त	४९५
प्र ब्रह्मैतु सदनादतस्य	४६४
प्रभाया अग्नयेधं	२१८४
प्र भ्रातृत्व सुदानवो	५६६
प्रमदे कुमारपुत्रं	२१३०
प्र मा युयुज्जे प्रयुजो जनानां	५७९
प्रमुखन्तो भुवनस्य रेतो	८८८
प्रमुदे वामनं	२१६४
प्र मे विविक्वां अविदन्मनीषां	२२३
प्र यज्ञ एतु हेतवो न सतिः	५०२
प्र याः सिंघते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४
प्रयाजान् मे अनुयाजांश्च केवलान्	१२०९
प्रयुग्मभ्य उन्मत्तः	२१४७
प्रयुजती दिव एति ब्रुवाणा	३२८
प्र ये धामानि पूर्याभ्यर्चान्	२३०

प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुः	३४४
प्र रुद्रेण यथिना यन्ति सिन्धवः	७२५
प्र व एको मिमय भूर्गोमा	१५५
प्र व एते सयुजो नामक्षिप्रय	२०७
प्र वः पान्तं रभुमन्ववाऽन्धो	८२
प्र तः शोशाम्यदृढः	५२६
प्र वायुमन्त्रा गृह्णी मनीषा	३६६
प्र वायुजे सुप्रया वदिरयामु	४८०
प्र वीराय प्र तवंगं नुराय	३७८
प्र वो भिन्नान् उन्दतो	७
प्र वो महीमर्मन्ति कृणुन्तं	४७१
प्र वो गम्भीर देवयन्तो अर्चन्	५०१
प्र वो रथि युक्ताय भगवन्	२४४
प्र वो वायु रभयुजं कृणुन्तं	२४५
प्र वा वायु रभयुजं प्रीथि	६८५
प्र शनमा वरुण दीधती गीः	२६०
प्र शुक्रैर्देवी मनीषा	४४६
प्र सक्षणा दिव्यः कण्ठाहाता	२४३
प्र स क्षयं तिष्ठति वि महीरवा	५२७
प्रसवाय स्वाहा	१६९५
प्र स विश्वेभिरग्निभिः	१४०३
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुन्तमु	२७२
प्र सू न एवभवरो	५१४
प्र सू मंहे गुशरणाय मेधां	२७१
प्राक्ष्ये दिशे स्वाहा	१५८०
प्राजापत्यस्वाहा	२१०९
प्राजापत्याभ्यां स्वाहा	१०८२
प्राणाय मे	१४७९
प्राणाय मे वचोदा वचरो	१३०२
प्राणाय स्वाहा	१५७३
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा	१३७८
प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो	११७१
प्राणेनाग्निं मे सृजति वातः	११३१
प्राणो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०७
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे	४९४
प्रायणाय स्वाहा	१५२५
प्रायश्चित्ते स्वाहा	२३१२
प्रायासाय स्वाहा	२२९८
प्राशस्त्या महिन्द्रा	१८२०

पियाय पियवदिनम्	२१९९
प्राणोनाश्चान्तिं हितं जयाय	७६०
प्रणते स्वाहा	१३१७
प्रया अश्रुभिः	२०७७
प्रयान्यः स्वाहा	१३१९
प्रयो पार्थः प्र स्फुरन्तं	८८६
प्रयो जयता नर उग्रो यः	११११
प्रथं नो अतिथिं युगोये	१५२
प्रति प्राट् पथभिः पूर्योभः	१३६७
प्रभु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्यनु	१३६३
प्रयः त्यामः प्रथिवामन्तरिक्षं	२७४
प्रो आनानावयम कृणुन्तं	१४०
प्रानय वरुण मित्रमिन्द्रं	३६१
प्राने स्वाहा	१५०६
प्राणमाणाः सोम आगतो	१३१०
प्रवो मनुमन्त्रयन्ते नदीपतये	१९१५
प्रतोहाकणः शुष्ठाकर्णो	१७५०
प्रतन्व्यः स्वाहा	१६५३
प्रत्यूहो हिनोर्णो पतन्वा	१७४९
प्रतस्य नाथा वि पणथ मन्मथ	७२३
प्रथयः सौम्याः	१७७४, १८०१
प्रथयो भूधनकाशाः	१८२३
प्रयुक्तानवान्तरिक्षाभ्यः	१८६६
प्रयस्व हणवन्तः शुक्लवन्तः	१७३७
प्रयस्वो विष्णु सूनरो	५३९
प्रयः सौम्यः	२०८६
प्रयः कृष्टाभ्याम्	२०४२
प्रयाय स्वाहा	१५३५
प्रयायाजगरो	१९२७
प्रयायानुचर	२१२७
प्रयायोपदाम्	२१६२
प्रयुक्ता वैश्वकर्माणाः	१८२१
प्रयुक्ता वैश्वदेवाः	१८०६
प्रियत्साये पीलकसं	२२३५
प्रुहव बयो वृहते तुभ्यममं	२९१
प्रुहन्तो दिव्याः	१७८१
प्रुहस्पतये गवयान्	१८७५
प्रुहस्पतये पाक्कताय	२१०७
प्रुहस्पतये वाक्स्पतये	१९१३

प्रुहस्पतये स्वाहा	१४२२, १४२९
प्रुहस्पतिः शक्रानसादेन	१९९३
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९१
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९४
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९२
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९३
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९५
प्रुहस्पतिनावगृष्टो नानेजो गोपु	११९०
प्रुहस्पतिः ने विश्वेदेववन्तधुन्तु	९९१
प्रुहस्पतिर्मा विश्वेदेवैरुच्यथाः	९८१
प्रुहस्पतिथ म उन्दय मे	१४६२
प्रुहस्पतिं प्रानि मे देवतामिहि	१२२२
प्रुहस्पतिरधर्मा	२०११
प्रुहस्पतिं वाजं जय प्रुहस्पतये	१३१६
प्रुहस्पतेन मद्रोमभः सुगे कृधि	६१
प्रुहस्पते विष्टपायांनयकारं	२१८५
प्रुहस्पते जनयन्त आशपीः	७०१
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	७७९
प्रुहस्पते मे मृता वीर्याणि	११४१
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	११६३
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	२११३
प्रुहस्पते स्वाहा १०२५, ११४०, १३१७	
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१०८०
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१०९९
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१३१८
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	५१
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१७१७
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१३०५
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१३८८
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१४२७
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	२१
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	२१८०
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	७५१
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	६६९
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	६४०
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	२१८३
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	७०३
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	१४१५, १७०३
प्रुहस्पते चरान् वेगिषद् विषः	३७२

भूतो भूतेषु पय आ दधाति	११४२	मरुताः सप्तमी	२०१०	मा वः प्राणं मा वोऽपानं	११६०
भूत्यै जागरणम्	२२४०	मरुताः स्कन्धा	२०३२	मासां कश्यपो	१९३२
भूमिर्मातादितिनो जनित्रं	११८८	मरुत्वतो अग्रतीतस्य जिष्णोः	२३५	मा सा ते अस्मत् सुमतिर्वि	८१
भूमे परिष्कन्दं	२१९८	मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः	१८१६	मासेभ्यः स्वाहा	१६३६
भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति	७३१	मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः	१८१४	मासेभ्यो दालौहान्	१८५९
भूम्या आखुनालभते	१८६२	मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो	१८१७	माहं मघोनो वरुण प्रियस्य	१५७
भूर्जज्ञ उत्तानपदो	१२१५	मरुद्भ्यः स्कन्हा	१६४७	मित्रः पृथिव्योदकामत्	९०२
भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना	१२७८	मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो	१८१५	मित्रश्च म इन्द्रश्च मे	१४६३
भेषजाय स्वाहा	२३१३	मरुद्भ्यो वैश्यं	२११५	मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च	१११४
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा	६३६	मर्माणि ते वर्मणा छादयामि	११४९	मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च	४८९
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो	६३७	मर्यादायै प्रश्रविवाकम्	२१७२	मित्रस्य तृतीया	२०१९
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्धिः	६३५	मलिम्लुचाय स्वाहा	१६७९	मित्राय कुलीपयान्	१८३९
मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा	१०३४	मशकान् केशैः	१९९१	मित्राय गौरान्	१८७३
मण्डूको मूषिका तित्तिरस्ते	१९२४	महत्काण्डाय स्वाहा	१०२४	मित्राय मद्गून्	१८०४
मधवे स्वाहा	१६८१	महत् तद् वः कवयश्चारु नाम	१८६	मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे	६९६
मधु नक्तमुतोषसो	३५	महदथ महतामा वृणीमहे	६०४	मित्राय स्वाहा	१५००
मधुमतीर्न इषस्कृषि यत् ते	१२९५	महसे वीणावादं	२२६०	मित्रावरुणाभ्यां कपोतान्	१८५०
मधुमाञ्जो वनस्पतिः	३६	महागणेभ्यः स्वाहा	११३७	मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं	१३०१
मधु वाता ऋतायते	३४	महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी	७३६	मित्रावरुणाभ्यामातुष्टुमाभ्यां	२१०६
मध्या यत् कर्त्तव्यमभवदभीके	६३२	महि महे दिवे अर्चो पृथिव्यै	१७१	मित्रावरुणावल्गाभ्याम्	२०४०
मनसा होमैर्हरसा धृतेन	११७७	महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे	६१७	मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतः	१३२१
मनसे स्वाहा	१५७९	मही समैरचम्वा समीची	२११	मिम्यक्ष येषु रोदसी तु देवी	३८२
मनस्त आप्यायतां वाक्	१२८८	महो अग्नेः समिधानस्य शर्मणि	६०५	सुगन्धाय वैनः शिनाय स्वाहा	१४१२
मनुष्यराजाय मर्कटः	१८८४	मह्यं यजन्तां मम यानीष्टा	१७४५	सूर्ध्या वयः प्रजापतिश्छन्दः	१३३८
मनुष्यलोकाय प्रकरितारः	२१८८	मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या	८०३	सूर्ध्वे स्वाहा	१६९९
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य	८४०	मागधः पुँश्चली कितवः	२२८२	मूलेभ्यः स्वाहा	१६४९
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं	६२९	मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दः	१३४१	मूलवे गोव्यच्छम्	२२५०
मनो न्वा हुवामहे	६२३	माता च यत्र दुहिता च धेनु	२०३	मृत्यवे मृगयुम्	२१४१
मनो यज्ञेन कल्पताः स्कन्हा	१७१५	माता पितरमृत आ भमाज	१०६	मृत्यवेऽमृतः	१९३४
मन्दामहे दशतयस्य घासेः	९४	मनुष्यदे परमे शुक्र आयोः	२९०	मृत्यवे स्वाहा	२३१६
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं	७६४	मात्रं वृषक्षाघृण इरस्यो	४९३	मदं बर्ध्वैः	१९५५
मन्यवेऽयस्तापं	२२०३	माधवाय स्वाहा	१६८२	मेघाय स्वाहा	१६०७
ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा	८४	मा नो विदन् विव्याधिनो	१०५२	मेदस्वता यजमानाः	१०६७
मम देवा विहवे सन्तु सर्वे	८०१, १०४४	मा नो वृक्राय वृक्ये समस्मा	३९८	मेधां मे वरुणो ददातु	१३८९
ममाग्ने वचो विहवेष्वास्तु	८००	मां देवा दधिरे हव्यवाहम्	६११	मेघाय वासः पत्नूली	२१९१
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां	८०२, १०४६	मा प्र गाम पथो वयं	६२१	मेघायै रथकारं	२१३१
मयुः प्राजापत्यः	१८९१	मायायै कर्मारः	२१३४	मो पु देवा अदः खः	४०
मरीचिर्विप्रुडभिः	२०७४	मारुतः कल्माषः	२०९१, २०९९	मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवाः	१९३
मरुतश्च म इन्द्रश्च मे	१४६७	मा व एनो अन्यकृतं भुजेम	३९९	य ई चकार न सो अस्य वेद	१३०

य ईश्वरे भुवनस्य प्रवर्तना	६६८
य ईशे पशुपालाः पशूनां	८८७
य उदाजन पितरो योमयं वय	६५५
य श्वेतम सूर्यमारोहयन् दिवि	६५६
य शोहनं रक्षमां देववीती	२६७
यः सप्तर्षो गोऽगपत्तो	६०५५
यच्छतमत्वा भवति यक्षदीपु	५०८
यजन्ते अरय मन्त्रं तयत्र	२६८
यज्ञं च नमन्यं च प्रजा च	८२४
यज्ञं वृन्नाम्यवमं	४१
यज्ञस्य वो रथं पिबति विशां	७७१
यज्ञेन यजमय जन्त देवाः	१००२
यज्ञायज्ञे स मायौ	७३७
यज्ञो दाक्षिणाग्निदत्तामा	९७७
यज्ञो देवानां प्रलोत सुम्नभू	६४
यज्ञो यज्ञेन कान्तात् स्वाहा	१७२१
यज्ञे स्वाहा	१५२६
यत् किं ज्ञातां मनसा यय	९६१
यत् ते तनुष्वनजन्त देवाः	१००५
यत् ते देवी निर्झतिरायवन्ध	११८१
यत् ते वषां जातवेदो	१११६
यत् पिबति तर्कं स्वाहा	१५४७
यत् पुरुषेण हविषा देवाः	१२५८
यत्र बाणाः स्रग्पनन्ति	१३६४
यत्र ब्रह्मविदो० । आपो मा तत्र	१०८९
यत्र ब्रह्मविदो० । इन्द्रो मा तत्र	१०८८
यत्र ब्रह्मविदो० । चन्द्रो मा तत्र	१०८६
यत्र ब्रह्मविदो० । अग्ना मा तत्र	१०९०
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	१०८३
यत्र ब्रह्मविदो० । वायुरा मा तत्र	१०८४
यत्र ब्रह्मविदो० । सूर्यो मा तत्र	१०८५
यत्र ब्रह्मविदो० । सोमो मा तत्र	१०८७
यत्र बहिरभिहितो	३४८
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागम्	११९
यत्रा गृहार्दः सुकृतो मदन्ति	११८९
यथाक्षरो मघवेष्टः करेण प्रियो	११०२
यथादित्या वसुभिः संभूयुः	९५६
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्	५३७
यथा हृत्स्य वसवो गीर्धे विद्	७७९

यिन्द्र आचने लक्ष्मी	१२०
यस्यमां यानं कल्पानां भावदानं	१२१
यदानं तस्मै स्वाहा	१२२
यदयं सुम् अर्चने	५२
यदयं सुम् उर्वारं	५३
यदन्यासं प्रियंवांमुनं वा	१२७
यदन्यासं वृषभो रौरवांनं	२०८
यदमावभृतो देवाः	२०९
यदापो अग्न्या इति यक्षणां	१३७
यदा वीरस्य रेवतो दुर्गाय	४८
यदि नो वां हविं	१०५१
यदि प्रमुदंयपुरां अमा	५०८
यदनुकां यदांनं गोपमोः	८३१
यद गायत्रे आंनं गायत्रमांनं	१०१
यद प्रभे यदरणे यन् अमायां	१३६९
येवा अदः गान्धर्वे	१०१७
येवा देवहंनं देवामः १०६५,	१०५३
येवांयः शनये पुरांइतो	१००८
येवा यन्थो यथा	१०१८
यद वाभिषिचं अमरा अन्नं यन्	५३१
यं स्वा देवांयः प्रभुचानां अंनं	१००९
यं देवासांइत्य वाज्रमाती ५२३, ६७४	
यज्ञ इन्द्रो भस्मनः यथाः	१०६८
यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा	१५४८
यममी पुरादधिरे	९०७
यमस्य प्रयोदशी	२०१६
यमाय कृष्णे	१८८३
यमाय यमसूम्	२०१३
यमाय स्वाहा	३३१४
यमायासूम्	३२१२
यमृषिभो बहुधा कल्पयन्तः	५५५
यमो मृगयधमरो निर्मयो	११७६
यम्यै प्रयोदशी	२०२९
यवानां भागोऽस्ययवानांभाषियस्यं	१२४६
यशो मा यावापृथिवी	१३९७
यस्ते हवं विवदन्	८९५
यस्मिन् यस्ते मन्वदः सुपर्णा	१२०
यस्य कूर्मो गृहे हविस्तममे	१३६५
यस्य कूर्मो हविर्गृहे	९३८

या अयो विष्णोः प्रथमा	११४३
यो आरुह उन्नतो दय	८०९
या युःपूर्वा मनीषाया	१२६६
या यीर्वाणि यीर्वा निष्ठा	६९७
या जामयो मय इन्द्रोऽन्त आर्ति	२२५
या युष्मानो नानातरा रक्षसा	९६३
या युष्मिन्ना कण्ड विष्णोमीम	२१५२
या मे अक्ष योऽक्षेव प्राग	२२८
या मे विष्ठा मधुमती युष्मिन्ना	२२७
यादये आरुहो	२२६७
यादये दक्षे नानातरा	२२९
यानमायिषायाः प्राग	२२९
यानि कोन विष्ठा नानातरा	१०८१
यानि चकार युष्मन्ना नानातरा	१००४
यानि अक्षो विष्ठा	१०३१
यो मे विष्ठा मया दक्ष देवाः	६८७
यावन्नातः पदश विष्ठा	१११७
यावन्नातः पदश विष्ठा	१०६३
युष्मा मया दक्षो विष्ठा देवाः	१०७
युष्मा मया दक्षो	१५
युष्मा मया विष्ठा मया	७६५
युष्मा मया विष्ठा मया	१७१
युष्मा मया विष्ठा मया	६४१
युष्मा मया विष्ठा मया	७५
युष्मा मया विष्ठा मया	४७४
युष्मा मया विष्ठा मया	४०७, ५६७
युष्मा मया विष्ठा मया	१५१
युष्मा मया विष्ठा मया	६५९
युष्मा मया विष्ठा मया	११७
युष्मा मया विष्ठा मया	४२३
युष्मा मया विष्ठा मया	८२०
युष्मा मया विष्ठा मया	११९६
युष्मा मया विष्ठा मया	५३४
युष्मा मया विष्ठा मया	११२४
युष्मा मया विष्ठा मया	११६६
युष्मा मया विष्ठा मया	११६५
युष्मा मया विष्ठा मया	११६७
युष्मा मया विष्ठा मया	११११
युष्मा मया विष्ठा मया	४६२

ये देवा विश्वदेवनेत्राः	१२४८
ये देवास इह स्थन	५५२
ये देवासो दिव्येकादश स्थ	९८
ये नदीनां संस्रवन्ति	८८१
येन देवं सवितारं परि	१०३६
येन धनेन प्रपणं चरामि	९१९, ९२०
येन वेहद् बभूविथ	१०५८
येन हस्ती वर्चसा संबभूव	१११५
ये नः सपत्ना अप ते भवन्तु	८०८
येनावपत् सविता क्षुरेण	९५०
ये पन्थानो बहवो देवयानाः	९१६, १०६४
ये बध्यमानमनु दीध्यानाः	८८९
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः	६६३
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः	६६७
येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०४८
ये यजत्रा य ईज्याः	११
ये यज्ञेन दक्षिण्या समक्ता	६५४
ये सर्पिषः संस्रवन्ति	८८२
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे	६०६
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन	६०३
यो अद्य सेन्यो वधो	९६०
यो अर्वन्तं जिघांसति	१४९१
योगाय योक्तारं	२२०५
योगेयोगे तवस्तरं	१०४२
यो जागार तमृचः कामयन्ते	३०७
यो नः स्वो यो अरणः सजातः	१०५४
यो नः स्वोऽरणो यश्च	१४०४
योनिमेक आ ससाद द्योतनो	५४०
यो यज्ञस्य प्रसाधनः	६२२
यो रजांसि विममं पार्थिवानि	३७५
यो वः शुभो हृदयेषु	९५२
यो वो देवा घृतस्तुना	४१६
रक्षसां भागोऽसि निरस्तः	१२८९
रणवः संदष्टौ पितृमां इव क्षयो	६८६
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां	४८६
रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व	१३५०
रश्मिभ्यः स्वाहा	१६४३
रात्रा रात्राणां पेशो नदीनाम्	४३६
राश्यसि प्राची दिश्वसवस्ते	१३५४

रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	२२८०
रात्र्यै सीचापूः	१८५७
रिशादसः सत्पतारदब्धान्	३९६
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाः	१२६०
रुद्रं रौराभ्याम्	२००३
रुद्राणां द्वितीया	२०३४
रुद्रास्त्वाऽऽच्छन्दन्तु त्रैष्टुभेन	१४३७
रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन	१४३०
रुद्रेभ्यः स्वाहा	१६४५
रुद्रेभ्यो रुरुन्	१८६८
रुरु रौद्रः	१९४४
रूपाय मणिकारं	२१२५
रूपेण वो रूपमभ्यागां तुयो	१३०४
रेभदत्र जनुषा पूर्वा अङ्गिरा	७३५
रेष्माणं स्तुपेन	१९९०
रोहिण्यस्त्रयवयो वाचे	१७५४
रोहिता रुद्राणां	१७६०
रोहितेभ्यः स्वाहा	१०२९
रोहितो धूम्रोहितः	१७३८
रोहितं कुण्डूणाची गोलत्तिका	१९३३
लोकं पृण छिद्रं पृणाथो	१३३४
लोपाश आश्विनः	१९२५
लोमानि प्रयतिर्मम त्वञ्च	१३६८
वज्रमेको बिभर्ति दस्त आहितं	५४२
वत्सतयः सारस्वत्यः	१८०३
वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः	१७५७, १७७८
वत्सराय विजर्जरां	२२१९
वनस्पतिभ्य उल्लूकान्	१८४७
वनस्पतिभ्यः स्वाहा	१६५१, १६६३
वनाय वनपम्	२२६३
वपुषे मानस्कृतं	२२०९
वयं वो वक्तृवर्हिषो	५१८
वयं सोम व्रते तव	६२६
वयं तद् वः सम्राज आ वृणीमहे	५३३
वयमिद् वः सुदानवः	५६४
वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु	९८५
वरुणश्च म इन्द्रश्च मे	१४६४
वरुणस्त्वा धूपयतु	१४३४
वरुणस्य द्वादशी	२०१५, २०२८

वरुणाय चक्रवाकान्	१८४५
वरुणाय नाकान्	१८४०
वरुणाय महिषान्	१८७४
वरुणाय स्वाहा	१५०१, २२९४
वरुणायारण्यो मेषः	१८८२, १९४०
वरुणो मादिलैरेतस्या दिशः	९७५
वरुणो मित्रो अर्यमा	५३५
वर्णाय हिरण्यकारं	२२३६
वर्णायानुसुधं	२१६१
वर्म मे द्यावापृथिवी	१००६
वर्षते स्वाहा	१६११
वर्षाभ्यस्तित्तिरीन्	१८३२
वर्षाहृष्टतूनाम्	१९३५
वर्षिष्ठाय नाकाय परि	२१८६, २२०२
वल्गते स्वाहा	१५१३
वल्मीकान् क्लोमभिः	२०६५
वशा द्यावापृथिवीयाः	१८०७
वशा मैत्रावरुणयोः	१७७१
वसन्ताय कपिजलानालभते	१८३०
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशः	१३२२
वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण	१३३१
वसवस्त्वाऽऽच्छन्दन्तु गायत्रेण	१४३६
वसवस्त्वाज्जन्तु गायत्रेण छन्दसा	१३७६
वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण	१४२९
वसवे स्वाहा	१४०९, १६६८
वसिष्ठासः पितृवद् वाचमकृत	७२०
वसुभ्य ऋक्षयानालभते	१८६७
वसुभ्यः स्वाहा	१६४४
वसूनां कपिजलः	१९३८
वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं	१३४५
वाग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७१४
वाचे कुश्वः	१८९८
वाचे प्लुषीन्	१८७८
वाचे स्वाहा	१५७८
वाजं हनुभ्याम्	१९६०
वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये	१३१८
वाजाय स्वाहा	१६९६
वाजिनं शेपेन	२०४९
वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः	६१६

वातं प्राणेन	१९७३	वि नो देवासां अद्भुता	५२०	विश्वे देवाः शृणुतमं हवं मे	४२१
वाताय स्वाहा	१९०४	विर्भिर्भिर्भय सन्त्य	३५०	विश्वे देवाः सह धीमिः पुरं या	७०५
वानस्पत्या आवाणी घोषमफा	९०९	विभिर्दो नरत एकया सह	५४५	विश्वे देवास आ गत	१६५, ४१५
वामना अनन्वाह आभावेणयाः	१७७०	विभुने स्वाहा	१६६९	विश्वे देवासां आतुरः	२
वामं नो अस्मर्थमन्	५६६	वि मे पुत्रा पत्यन्ति कामाः	१९४	विश्वे देवासां प्रसिधः	३
वामस्य हि प्रचेतसः	५६३	विश्वामाय स्वाहा	२३००	विश्वेभिः सोम्यं मय	१३
वायवे स्वाण्डालम्	२२७३	विश्वामाय दक्षिणा दिगु कदान्त	१३५५	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एव मे	८४७
वायवे स्वा जुष्टं प्रोक्षाम	१४८८	विश्वाम इत्ययस्ते	६५८	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जयच्छन्दमं	८५०
वायवे वन्द्याः	१८४२	विश्वतमानाय स्वाहा	१५३६	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं ८६७, १४८९	
वायवे स्वाहा	१४९६, २२८७	विश्वगने स्वाहा	१६७०	विश्वेभ्यो देवेभ्यः पूषतान् ८६९, १८७०	
वायव्यः श्वतः पुनः	१७३५	विश्वेकस्यै क्षत्तारम्	२१९५	विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ८६८, १३४८,	
वायुं तदन्तरिक्षवन्मृच्छन्तु	९८३	विश्वनाय स्वाहा	१५३७	२३१९	
वायुः पुनानु सविता पुनानु	१३९०	विश्वामायामभयानामधिरातं	७३४	विश्वेभ्यो देवेभ्यो जगनेभ्यः	८७४,
वायुस्तन्तिक्षणीदक्षामन	९९२	विश्वोदय ईशम वर्यु	३६४	२१०५	
वायुर्मन्तिरक्षितस्या दिशः	९५२	विश्वकर्माणेन यमक्रावन्तगच्छन्तु ९८८		विश्वेभ्यो नृतेभ्यः सिन्धुतं	२२३९
वायुपुत्रा पञ्चतर्कव्यसितमीवः	१३७७	विश्वकर्मा मा ममकथिभिः	९७८	विश्वे यमत्रा अधि चोचनोतये	६७१
वायोः पुच्छम्	२०३६	विश्वदानीं गुमनसः क्याम	४१३	विश्वे देवान्मुत्तारम्	२०३१
वायोर्निपक्षतिः	२००५	विश्वदेवनेभ्यो देवेभ्यः	१२४७	विश्वे देवानां पूषतः	१९५२
वाङ्मनः कृष्ण एकाक्षितपात्र परत्वः	२०९४	विश्वस्माकां आर्क्षतिः वाय्वदसो	५३६	विश्वे देवानां प्रथमा	८७२, २०३३
वाङ्मनः परत्वः	२१०२	विश्वान् देवान् हवामहे	१६	विश्वे देवानां मागधेयी स्व	८४६
वाङ्मनः स्वाहा	१५९३	विश्वहा ते सदमिह भरेम	९२२	विश्वेषामिह जयते देवानां	७३८
वावर्ते मेवां राया	७३८	विश्वो हि यो नमस्त्वामि वन्द्या	६६२	विश्वे दिग्मा मनरे विश्वेदेवो	५१५
वाक्षमेको विभर्ति हस्ते	५४१	विश्वे अथ मरुतो विभ कनी	५९२	विश्वो देवस्य ननुर्मतो	१४५
वासवसीव वारसम्भं नः	४७८	विश्वे अस्या भुवि माहिनायाः	३१६	विश्वेभ्यो मेनान्	२२३०
विशतिः स्वाहा	१०२३	विश्वे च मे देवा इन्द्रध मे	१४६८	विश्वामाय स्वाहा	१०३३
विश्वताय स्वाहा	१५२१	विश्वे स्वा देवा वैश्वानरा आशुदन्तु	८६६, १४३९	विश्वो होत्रा विश्वपदोर्नि वायं	६९०
विश्वममाणाय स्वाहा	१५२०	विश्वे स्वा देवा वैश्वानराः कृष्णन्तु ८५४		विश्वेभ्यो नृतेभ्यो	८८४
वि तन्वते धियो अस्मा अपासि	३३३	विश्वे स्वा देवा वैश्वानरा भूयन्तु ८५५,		विश्वेभ्यो निभूयपाय स्वाहा	१५७०
विदा विन्तु महाततो येव एवा	२५२	१४३२		विश्वेभ्यो विविधाय स्वाहा	१५७१
विदा विदो विभ्यजिमुक्यैः	३०९	विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो	१७७	विश्वेभ्यो स्वाहा	१४९७, १५६९
विदुः प्रथिव्या दिवो जनित्रं	४२७	विश्वे देवा अ-शुष्टुन्तुमः ८५१, १३११		विश्वेभ्यो स्तोमासः पुरस्त्वमर्काः	१८३
विदुतं कनीनकाभ्यां १९६६, १९८९		विश्वे देवा जतातुभः	४१८	विश्वेभ्योपाः परमं पाति पायः	२०१
विदुत्रया मरुत ऋद्धिमन्तो	१८२	विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण	८५३	विश्वेभ्योनि क-पयन्तु	८३७
विद्योतमानाय स्वाहा	१६०८	विश्वे देवा द्वादशे	८७६	विश्वेभ्यो भूयन्तु	१४३५
विधुताय स्वाहा	१५३९	विश्वे देवा नो अथा स्वस्त्य	३५८	विश्वेभ्यो भूयन्तु	२०२४
विधुन्मानाय स्वाहा	१५३८	विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यक्षिमाः	४२२	विश्वेभ्यो अस्मद्वरवः	१०५३
विधुति नाभ्या	२०७१	विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यक्षिमाः	४२२	विश्वेभ्यो अस्मद्वरवः	१०५३
विनश्चिन्त आन्त्यायनाय स्वाहा	१४१३	विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यक्षिमाः	४२२	विश्वेभ्यो अस्मद्वरवः	१०५३
वि नः पथा सुविताय	३२	विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यक्षिमाः	४२२	विश्वेभ्यो अस्मद्वरवः	१०५३

विहृत आन्त्रैः	२०४६
वीक्षिताय स्वाहा	१५४४
वीणावादे पाणिघ्नं तूणवधम्	२२६९
वीमे देवा अक्रंसत	११९७
वीरस्य तु स्वश्वस्य जनासः	२०९
वीर्यायाविपालं	२१७६
वृषणमाण्डाभ्याम्	१९६२, २०४८
वृषदः शस्ते धात्रे	१८९३
वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञियाः	७१२
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं	२४९
वेत्यमुर्जनिवान् वा अति स्पृधः	३००
वेद यज्ञाणि विदथान्येषां	३९४
वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्यः	९२३
वैरहत्याय पिशुनं	२१९४
वैशन्ताभ्यो वैन्दं	२२२५
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ	२०९८
वैश्वानरं मस्मना	२०७०
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं	९४४
वैश्वानरीं सूनुतामा रभध्वं	९४३
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु	९४२
वैष्णवो वामनः	१७३७
व्ययमा वरुणश्चेति पन्थाम्	२३२
व्यशुविने स्त्रहा	१७००
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे	११४५
व्यानाय स्वाहा	१५७५
व्यानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०९
व्युष्टयै स्वाहा	१७२६
व्युष्टया अल्पगल्भः	२२४३
व्येतु दिशुद् द्विषामशेषा	४३८
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो	७७०
व्रात्याभ्यां स्वाहा	१०३१
शं रुद्राः शं वसवः	१०७९
शतमिन्तु शरदो अन्ति देवाः	२७
शताय स्वाहा	१७२४
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः	४४९
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु	४५४
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	४६०
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु	४५६
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः	४५५

शं नो अग्निज्योतिरर्नाको अस्तु	४५२
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	४६१
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः	४५७
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः	१०७८
शं नो देवः सविता त्रायमाणः	४५८
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	४५९
शं नो द्यावापृथिवी पूवेद्वतौ	४५३
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु	४५१
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु	४५०
शं नो भूमिर्वैप्यमाना	१०७६
शं नो मित्रः शं वरुणः	३७
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वान्	१०७५
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः	१०७४
शबला वैद्युताः	१७८२
शब्दायाङ्म्बराघातं	२२५९
शयानाय स्वाहा	१५१५
शयुः परस्तादध तु द्विमाता	१९७
शरदे वर्तिका	१८३३
शरव्याया इषुकारः	२१३७
शर्मास्यवधूतः रक्षोऽवधूता	१२७१
शाखाभ्यः स्वाहा	१६५०
शादं दक्षिः	१९५३
शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी	१०६९
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं	१०७०
शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः	१९०६
शार्दूलाय रोहिद्	१८८५
शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे	१९०२
शिखिभ्यः स्वाहा	११३५
शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः	२०८८
शितिबाहुरन्यतः शितिबाहुः	१७४१
शितिभ्रवो वसूनाः	१७५९
शितिरेन्द्राऽन्यतः शितिरन्द्रः	१७४०
शिल्पा वैश्वदेवो	१७५३
शिल्पो वैश्वदेवः	२०८९
शिवः कपोत इषितो नो अस्तु	८२९
शिशिराय विककरान्	१८३५
शीकायते स्वाहा	१६१८
शीघ्रं वर्षते स्वाहा	१६१४
शीर्णं वसया	२०७६

शीलायाङ्गनीकारी	२२१०
शुक्लरूपा वाजिनाः	१७६५
शुक्रं त्वा शुक्लेण क्रीणामि	१२८२
शुक्राय स्वाहा	१६८३
शुक्लाय स्वाहा	१९६७
शुचये स्वाहा	१६८४
शुचे स्वाहा	२३०२
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो	१७४३
शुनमस्मभ्यमूतये	७९८
शुभे वपः	२१३६
शुश्रूषमाणाय स्वाहा	१५४०
शूकराय स्वाहा	१५३०
शूकृताय स्वाहा	१५३१
शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य	१९९
शूषाय स्वाहा	१६७५
शृणोतु न ऊर्जा पतिर्गिरः सः	२५१
शृण्वते स्वाहा	१५४१
शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो	१८९
शोकाय स्वाहा	२३०५
शोकायामिसर्तारं	२२०६
शोचते स्वाहा	२३०३
शोचमानाय स्वाहा	२३०४
श्यामाः पौष्णाः	१७६७, १८०४
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते	१७४४
श्येन आसामदितिः कक्ष्यो मदो	३०४
श्रिये सुहशीरुपरस्य याः स्वः	२९५
श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा	८७
श्रयधे वित्तधम्	२१८१
श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं	५८६
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१३
श्रोत्राय भृङ्गाः	१८८०
श्रोत्राय स्वाहा	१५७७
श्लोकाय स्वाहा	१४२५
श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभः	१९४८
श्वाविद् भौमी	१९०८
श्वित्र आदित्यानाम्	१९४१
श्वेता अवरोकिण आदित्यानां	१७६
श्वेता वायव्याः	१७७५, १८२१
श्वेताः सौर्याः	१८२